ओ३म्

सार्वदेशिक साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वेदामृत

परिवार में योगक्षेम हो

वास्तोष्पते शग्मया संसदा ते,
सक्षीमहि रण्वया गातुमत्या।
पाहि क्षेम उत योगे वरं नो
यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥
ऋग्० ७-५४-३, तैत्ति० ३ ४-१०-१ ॥

हिन्दी अर्थ– हे गृहपति यज्ञिय अग्नि ! हम तुम्हारी शक्तिशाली, मनोरम और प्रगतिशील सगति से युक्त हो। तुम हमारी योग और क्षेम मे रक्षा करो। तुम सब हमें सदा कल्याण प्रदान करके सुरक्षित रखो।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९० दयानन्दाब्द १६५ दूरभाष : ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे
वर्ष २९ अंक १] माघ कृ० १ सं० २०४६ १४ जनवरी १९९०

सच्ची धर्म निरपेक्षता तथा भारतीय संविधान

आर्य सत्याग्रह अर्द्धशताब्दी समारोह में विधिवेताओं का निर्णय

हैदराबाद। आर्य सत्याग्रह की स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष मे आयोजित समारोह मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा स्थापित केन्द्रीय कानूनी समिति ने भी भाग लिया। समिति के सयोजक श्री विमल वधावन एडवोकेट के अतिरिक्त उच्चतम न्यायालय के वरिष्ठ एडवोकेट श्री बलराज जी त्रिखा और बाबू नवनीतलाल जी एडवोकेट और हैदराबाद उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त मुख्य न्यायाधीश श्री गोपालराव एकबोटे, श्री निरञ्जनराव, श्री सत्य नारायण, श्री नन्दकुमारसिह श्री मनोहर प्रसाद माथुर आदि कई वकीलो ने भाग लिया। वकीलो के लिए आयोजित इस विशेष गोष्ठी का विषय था सच्ची धर्म निरपेक्षता तथा भारतीय सविधान। इस बैठक की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने की।

श्री विमल वधावन ने अपने भाषण मे सच्चे धर्म निरपेक्ष राज्य की कामना करते हुए कहा कि भारत का प्रत्येक नागरिक अपने आपको पहले भारतीय समझे और उसके बाद अपना सम्बन्ध किसी धर्मविशेष के साथ रखे। ऐसी भावना की अपेक्षा तभी की जा सकती है जब सरकार की ओर से भी धर्म और जाति के आधार पर भेद भाव की नीतिया न अपनाई जाए। इसी आधार पर श्री वधावन ने केन्द्रीय कानूनी समिति की ओर से चार सूत्रीय कार्यक्रम सरकार के समक्ष रखने की घोषणा की और आर्य जनता मे अपील की कि इस दिशा मे अपना पूरा समर्थन दे।

चार सूत्रीय कार्यक्रम

१—सविधान के अनुच्छेद ३७० और २९ १० को हटाया जाय।
२—नैतिक शिक्षा को भारतीय शिक्षा प्रणाली मे मुख्य विषय के रूप मे जोडा जाय।
३—सभी भारतवासियो के लिए एक समान कानून बनाया जाय।
४—गोहत्या बन्द करने के लिए कानून बनाया जाय।

श्री वधावन ने कहा सरकार यदि सच्चे मन से इन सुझावो का क्रियान्वित करेगी तो देश का सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक उत्थान सम्भव होगा। उन्होने कहा जिस प्रकार आर्य समाज के वीर पुरुषो ने १९३९ मे हैदराबाद सत्याग्रह आन्दोलन किया था, आज उसी प्रकार के आन्दोलन की काशमीर तथा पंजाब के लिए आवश्यकता है।

उच्चतम न्यायालय के वरिष्ठ एडवोकेट श्री बलराज त्रिखा और बाबू नवनीतलाल एडवोकेट ने अपने भाषणो मे आर्य जनता की देशभक्ति पूर्ण भावनाओ की सराहना की और कहा कि हिन्दू तो जन्म से ही धर्मनिरपेक्ष है परन्तु यदि दूसरे धर्म और जातिया भी इस दिशा मे सहयोग करें तो सच्चे धर्म निरपेक्ष राज्य की स्थापना सम्भव है। श्री गोपाल राव एकबोटे तथा श्री निरजनराव ने भी सम्मेलन मे अपने-अपने विचार रखे।

भाजपा ने मान के निर्णय को दुर्भाग्यपूर्ण बताया

नई दिल्ली ७ जनवरी भारतीय जनता पार्टी ने लुधियाना की ११ जनवरी की पजाब सम्बन्धी रैली के बारे मे अकाली दल मान के अध्यक्ष सिमरनजीत सिह मान के रुख पर खेद व्यक्त किया है।

पार्टी ने कहा है कि पजाब जैसी जटिल समस्या के हल के लिए राष्ट्रीय सहमति और उसमे अकाली पार्टी तथा कांग्रेस (इ) सहित सभी पार्टियो के भाग लेने की जरूरत है।

पार्टी के महासचिव कृष्णलाल शर्मा ने एक वक्तव्य मे रैली मे भाग न लेने के श्री मान के फैसले को अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण बताया। उन्होने कहा कि श्री मान को झूठी प्रतिष्ठा का सवाल बनाने और पूर्वाग्रह रखने के बजाय पजाब समस्या को हल करने के सामूहिक राष्ट्रीय प्रयास मे शामिल होना चाहिए।

श्री शर्मा ने कहा कि यदि श्री मान अखिल भारतीय सिख छात्र महासघ तथा दमदमी टकसाल को बात-चीत मे शामिल करने की वकालत करना चाहते हैं तो उन्हे सबसे पहले दोनो सगठनो को हिंसा और हत्या का रास्ता छोडने तथा भारत के सविधान मे आस्था व्यक्त करने के लिए कहना चाहिए। उन्होने कहा कि भाजपा गोली की बात करने निर्दोष लोगो की हत्या करने और खालिस्तान की वकालत करने वालो से किसी भी प्रकार की बात-चीत के विरुद्ध है। उन्होने केन्द्र सरकार को चेतावनी दी है कि तुष्टीकरण की नीति अपनाने की भूल न करे और किसी भी पार्टी या गुट को वीटो का अधिकार न दे।

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

सम्पादकीय—

आर्य सत्याग्रह हैदराबाद की अर्ध शताब्दी समारोह पर एक दृष्टि

शोलापुर मे मनाई जाने वाली आर्य सत्याग्रह शताब्दी के स्थगित होने पर सार्वदेशिक सभा द्वारा मनाये जाने के निश्चय पर आर्य जनता ने महान स्वागत किया। सभा ने श्री प० रामचन्द्रराव वन्देमातरम वरिष्ठ उपप्रधान को इस आयोजन की पूरी जिम्मेदारी सौंपी। श्री वन्देमातरम जी ने हैदराबाद राज्य [आ०प्र] की व्यवस्था सम्बन्धी समितियो का गठन कर स्वागत समिति का चयन भी कर दिया।

जिसके अध्यक्ष श्री नारायण स्वामी मद्रास बनाये गये और आयोजन को पूर्णरूपेण सफल बनाने हेतु युद्ध स्तर पर कार्य प्रारम्भ हो गया।

श्री वन्देमातरम जी की चिन्ता ?

क्या सारे भारत से आर्य जन आयेंगे भी या नही। हमने व्यवस्था तो बहुत की है। सभा प्रधान श्री आनन्दबोध सरस्वती ने धैर्य दिलाकर कहा कि आर्य समाजी दयानन्द के नाम पर दीवाना है आप देखें तो सही, हमने बड़े-बड़े आयोजन किये तथा देखे हैं आर्य जन विश्वास से अधिक पहुँचे हैं-- हैदराबाद मे भी यही हुआ भी ? पत्रकारो और जनता का अनुमान २०-२५ हजार आर्य नर-नारी वहा पहुँचे। जो आवास भोजन आदि की व्यवस्था की हुई थी वह सब कम पड गई। इतनी संख्या में नर-नारी पहुँचकर सत्याग्रह के बलिदानियों को अपनी श्रद्धांजलि भेंट की।

आयोजन का आरम्भ—शिविर से

आर्य नेता प० वन्देमातरम जी ने आर्य जन से पूर्व ३०० तीन सौ आर्य वीरो तथा नर-नारियो के द्वारा आर्य वीर दल के शिविर लगाकर प्रारम्भ किया। प्रात: नगर मे भिन्न-२ क्षेत्रो मे प्रभात फेरी निकालकर नगर को गुञ्जायमान कर दिया। ऐसी प्रभात फेरियां सम्भवत. कभी न निकाली गई हो।

प्रभात फेरी के पश्चात स्नानादि से निवृत होकर प्रात श्री प० विश्वमित्र जी के द्वारा यज्ञ सात दिन तक निरन्तर किया गया। यज्ञ का कार्यक्रम भी दर्शनीय होता था उसके साथ साथ भिन्न-भिन्न विद्वानो के समयोचित भाषण प्रवचन भी होते रहे. जलपान के बाद दिन भर स्वाध्याय की प्रक्रिया और साय व रात्रि में आर्य वीरो को दिशाबोध निरन्तर दिया जाता रहा।

एक सप्ताह तक चलने वाले शिविर मे भोजन, जलपान आदि की व्यवस्था पर कितना व्यय हुआ होगा। इसका अनुमान आप लगा सकते हैं। माननीय प० वन्देमातरम जी की सूझबूझ का ही यह सुफल था। एक सप्ताह पूरे होने पर यज्ञ शिविर की पूर्णाहुति सम्पन्न कर अगले दिन अर्धशताब्दी समारोह मे लग गए।

केशव आर्य मैमोरियल विद्यालय का दृश्य

शिविर के समय पर सार्वदेशिक सभा मन्त्री प० सच्चिदानन्द शास्त्री तथा उपप्रधान एव यज्ञ के ब्रह्मा प० राजगुरु शर्मा भी एक आयोजन से ४-५ दिन पूर्व वहा पधार चुके थे।

केशव आर्य विद्यालय के विशाल प्रांगण मे विशाल पडाल तथा भव्य आकर्षक यज्ञशाला श्री प० राजगुरु जी शर्मा के निर्देशन मे निर्माण किए गए।

प्रथम दिन समय पर यज्ञ प्रारम्भ हुआ आर्यों की उपस्थिति भी उत्साहवर्धक व दर्शनीय थी। मैदान खचाखच भरा हुआ था। सन्यासी शिरोमणि

(शेष पृष्ठ १२ पर)

॥ ओ३म् ॥

परिपत्र—

कार्यालय :
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
महर्षि दयानन्द भवन,
रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

सन १९९० तदनुसार संवत् २०४६-४७
आर्य पर्वों की सूची

क्रम	नाम पर्व	अ० तिथि	चन्द्र तिथि	संवत्	वार
१.	मकर संक्रान्ति	१४-१-९०	माघ कृष्ण ३	२०४६	रविवार
२.	बसन्त पंचमी	३१-१-९०	माघ शुदी ५	२०४६	बुधवार
३.	सीताष्टमी	१८-२ ९०	फाल्गुन कृष्णा ८	२०४६	रविवार
४.	दयानन्द बोध रात्रि	२३-२-९०	फाल्गुन कृष्णा १३	२०४६	शुक्रवार
५.	लेखराम तृतीया	२८ २-९०	फाल्गुन शुदी ३	२०४६	बुधवार
६.	नव सस्येष्टि	११-३-९०	फाल्गुन शुदी १५	२०४६	रविवार
७	आर्य समाज स्थापना दिवस	२७-३-९०	चैत्र शुदी १	२०४७	मगलवार
८.	राम नवमी	३-४-९०	चैत्र शुदी ९	२०४७	मगलवार
९.	हरि तृतीया	२४-७-९०	श्रावण शुदी ३	२०४७	मगलवार
१०.	श्रावणी उपाकर्म	६-८ ९०	श्रावण शुदी १५	२०४७	सोमवार
११	श्री कृष्ण जन्माष्टमी	१४-८ ९०	भाद्रपद बदी ८	२०४७	मगलवार
१२.	विजया दशमी	२९ ९-९०	अश्विनि शुदी १०	२०४७	शनिवार
१३	गुरु विरजानन्द दिवस	२-१०-९०	अश्विनि शुदी १३	२०४७	मगलवार
१४	महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस	१८-१०-९०	कार्तिक बदी १५	२०४७	गुरुवार
१५.	श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	२३-१२-९०	पौष शुदी	२०४७	रविवार

नोट :— सभी आर्य समाजे इन पर्वों को सोत्साह मनावे। देशी तिथियो मे घटबढ़ के कारण पर्व दिवस मे परिवर्तन हो सकता है।

सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

श्री स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान सप्ताह

ग्राम रूपापुर और चिटकोहूरा बाजार पटना के कई स्थानो मे श्री स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान सप्ताह के अवसर पर हवन यज्ञ के बाद श्री रामलखनसिंह श्री शिवधर आर्य, श्रीमती विद्यावती देवी का भजन उपदेश १६ से २३ दिसम्बर ८९ तक हुआ। हजारो की संख्या मे जनता उपस्थित होकर लाभ उठा रही थी।

—जयपालसिंह, प्रधान

वेद प्रचार

८, ९, १० दिसम्बर को स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती 'वेदभिक्षु' ने आर्य समाज मन्दिर रजपुरा (बदायूं) मे ओजस्वी वाणी तथा सरल भाषा मे वेद प्रचार बडी धूमधाम से किया। उनके तप, त्याग एव स्वाध्याय से महिला सम्मेलन एव पुरुष सम्मेलन दोनो ही विशेष रूपसे प्रभावित हुए।

मन्त्री आर्य समाज रजपुरा

बसन्त मेला

गुरुकुल महाविद्यालय कण्वाश्रम (कोटद्वार) मे बसन्त मेला १ व २ फरवरी १९९० को होगा।

विरोधी प्रचार के बावजूद सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित सत्याग्रह अर्द्ध शताब्दी अपूर्व सफलता पूर्वक सम्पन्न

पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज

हैदराबाद मे निजाम सरकार हिन्दू आर्य सिख इन सभी के साथ सौतेली माता का सा या उससे भी बुरा सलूक करती थी। जनता को धार्मिक कामो मे शिक्षा सम्बन्ध मे मन्दिर, पाठशाला, व्यायामशाला यज्ञशाला, अखाडा इत्यादि बनाने की स्वतन्त्रता न थी। स्वीकृति मागने पर अनेक प्रकार की अडचन डाली जाती थी और तग किया जाता था।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने इन रुकावटो को हटाने तथा हिन्दू मुसलमानो से समान व्यवहार करने के लिए रियासत के राज्यचक्र निजामशाह से बातचीत करने आर्य नेताओ को हैदराबाद भेजा था किन्तु उस प्रयत्न का कोई लाभ न हुआ। अन्ततोगत्वा आर्य समाज ने सत्याग्रह आन्दोलन करने का निश्चय कर लिया। सार्वदेशिक सभा द्वारा सत्याग्रह की घोषणा करने पर सारे आर्य जगत् मे एक अपूर्व जोश तथा उत्साह उत्पन्न हो गया था देश के सभी प्रान्तो से सत्याग्रही आने लगे और इस सत्याग्रह को बडे ही सुनिश्चित ढग से आर्य नेताओ ने चलाया। महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज के पश्चात् एक एक सर्वाधिकारी के साथ बडी बडी सख्या मे सत्याग्रही सत्याग्रह करते थे। २८००० सत्याग्रही निजाम की जेलो मे पहुच गए थे और बहुत से जाने को तैयार थे।

३० सत्याग्रही इस सत्याग्रह मे आहूत हुये। जेलो मे सत्याग्रहियो को सभी प्रकार के कष्ट, यातनाय दी गई जो नही दी जा सकती थी और इन यातनाओ से आर्य सत्याग्रहियो के धैर्य हौसले जोश मे आश्चर्यजनक वृद्धि होती थी जिसका कारण था उनका धार्मिक बल यह सत्याग्रह सत्य धर्म पर आधारित था। आर्य समाज के नेताओ ने इसका सचालन ऐसे सयम तथा सयत प्रकार से किया था जिसे देख देश के बडे बडे राजनैतिक नेता आश्चर्य चकित थे इस आर्य सत्याग्रह की अर्द्ध शताब्दी हैदराबाद मे लगातार दो सप्ताह अर्थात् दो बार मनाई गई। प्रथम बार आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश ने मनाई तथा दूसरी बार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने एक सप्ताह पश्चात् मनाई। इसमे कई राजनैतिक लोग आये। लोकसभा के पूर्व अध्यक्ष श्री बलराम जाखड जी आन्ध्र प्रदेश के मुख्यमन्त्री डा० चेन्ना रेड्डी जिसने स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कहने पर आर्य सत्याग्रहियो को दो सौ रुपए मासिक देने की बजाय तीन सौ रुपए मासिक देना स्वीकार किया आन्ध्र की राज्यपाल कुमुदबेन जी जोशी श्री हरकिशनलाल जी भगत ने आर्य सत्याग्रहियो को श्रद्धाजलि भेट करते हुए बहुत प्रभावशाली शब्दो मे आर्य समाज के कार्यो की प्रशसा की।

प्रथम समारोह को देखने का अवसर नहीं मिला किन्तु दूसरी मे देश के सभी प्रान्तो से आर्य उत्साह और बडी सख्या मे पहुच, जितनी आशा नही थी। क्योकि दूसरी अर्द्ध शताब्दी के विरोध मे पहली के कई पक्षीय सज्जनो ने बडे बडे इश्तिहार बाजारो मे लगाये हुये थे। आन्ध्रप्रदेश महाराष्ट्र से आये कई लोगो ने बताया कि हम पत्र भेजे गये थे कि इस २८-२९ दिसम्बर की अर्द्ध शताब्दी मे कोई न जाये। सम्भव है कि इस विरोध से इसका अधिक प्रचार हुआ और लोग बडी सख्या मे पहुचे। किन्तु आर्य समाजो मे इस प्रकार का कटु विरोध होना बहुत ही दुख तथा लज्जा की बात है और फिर उस विरोध को जन जन तक जो आर्य समाज का जानना भी नही उसे बताना आर्य समाज के लिए लोगो मे अश्रद्धा पैदा करना है। ऐसा करना आर्य मात्र के लिए अपराध है। परस्पर बातचीत से जिसमे द्वेष भावना न हो, सब बातो का समाधान हो सकता है। यदि आर्यों मे द्वेष न हो तो उसकी बात आज नहीं तो कल अवश्य ही मानी जायेगी। एक धर्म के मानने वालो मे द्वेष कहा से आ गया। धर्म का ह्रास होने से द्वेष की उत्पत्ति होती है। जो आर्य पक्षीय लोगो मे कभी कभी कही कही उत्पन्न हो जाता है। लडाई समाज को निर्बल अपयशस्वी बनायेगी लोभ रहित अपराध रहित द्वेषरहित आर्यों मे बहुत लोग है हर प्रान्त मे है। प्रान्तीय सभाये उनकी बात माने, प्रान्तीय सभाओ से निष्पक्ष लोग केन्द्रीय सार्वदेशिक सभा मे आये। इस प्रकार केन्द्रीय सार्वदेशिक सभा की नियमन्त्रण शक्ति बढेगी और आर्य समाज मे बल आयेगा जिससे आर्यसमाज देश मे सुधार के अनेक कार्य कर सकेगा। यदि केन्द्र निर्बल हो गया तो आर्य समाज कोई बडा सघर्ष (देशव्यापी कार्य मे) कैसे कर सकेगा। इसलिये केन्द्र को बलवान शक्तिशाली बनाना आर्यो के लिये एक अत्यन्त आवश्यक कार्य है।

पंजाब मे बिगाड़ का महीना

एक महीने मे पजाब के माहौल मे दो नाटकीय परिवर्तन आए हैं। हत्याए विश्वनाथ प्रतापसिह सरकार के बनने से पहले भी हो रही थी अब भी हो रही है। फर्क यह है कि पहले हत्यारे अपना राजनीतिक डर लगभग खो चुके थे और वे मैदान छोडते उग्रवादियो की बढती कुठा की पहचान बन गई थी पर अब हत्याओ को राजनीतिक प्रतिष्ठा फिर से मिल गई है दूसरा परिवर्तन यह है कि उग्रवाद का भरपूर निशाना बनने के बावजूद हिन्दुओ का आत्मविश्वास इतना नही डिगा था। वे पजाब छोडने की अफवाहो पर अमल नही कर रहे थे आज उनमे उग्रवाद का डर नई शक्ल मे पैदा हो रहा है। वे असमजस मे है।

ऐसा इस लिए हुआ है कि पजाब सकट का हल तलाशने का कोई ठीक ठाक समझ वि०प्र० सरकार ने नही दिखाई है। सत्ता मे आने के बाद सच्चाइयो के कडवे यथार्थ को देखने के बजाए सरकार इस चुनावी नारे के तहत हरकत मे आ गई कि सकट राजीव सरकार की कुनीतियो से पैदा हुआ है इसलिए घडी की सुइया लौट कर १९८४ ही नहीं १९६६ तक वापस जा रही है। जेल से रिहा होने के बाद सिख छात्र महासघ के महामन्त्री सन्धु कहते है कि सार्वभौम खालिस्तान ही उनका परम लक्ष्य है। नव निर्वाचित सासद मान इतना खुलकर नही कह सकते। वे इसी बात को थोडा अलग जायके मे कहते हैं कि उनका राजनीतिक लक्ष्य आत्म निर्णय के अधिकार से सम्पन्न इलाका पाना है, सधू ज्यादा ईमानदार है, जो कहते हैं कि मान का लक्ष्य खालिस्तान की ओर एक कदम है। विमल खालसा 'पूर्ण आजादी' की बात सरेआम कर रही है। मान के कुछ साथी एक या दूसरा बहाना बनाकर लोकसभा मे शपथ लेने से बच रहे है। जिन्होने शपथ ली उनमे एक लापता हैं। उग्रवादियो

(शेष पृष्ठ १० पर

उपासना के लिए सज्जा

ईश्वर की उपासना करने वाले 'योगाभ्यासी' को प्रातःकाल सूर्योदय से कम से कम दो घण्टे पूर्व तो अवश्य ही उठ जाना चाहिए। साधक मन में 'ओ३म्' का स्मरण करता हुआ बिस्तर से उठ जाये। हाथ मुंह धोकर उष:पान करे (पानी पीये)। पानी पीकर 'प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे' ... इत्यादि प्रातःकालीन पांच मन्त्रों का अर्थ सहित पाठ करे।

पुनः शौच स्नान, व्यायाम तथा स्नान करे। तत्पश्चात किसी शान्त एकान्त शुद्ध स्थान पर स्वच्छ-मोटे आसन पर ध्यान के लिए बैठे, और ध्यानात्मक आसनों (पद्मासन, सिद्धासन आदि) में से, सरलता पूर्वक बिना कष्ट के कोई एक आसन लगाये। समस्त शारीरिक चेष्टाओं को बन्द करके स्थिरता पूर्वक सीधा होकर बैठें, अर्थात सिर, गर्दन तथा कमर तीनों सीधे हों, यह ध्यान रखे।

आसन पर बैठने के पश्चात 'मानव जीवन का लक्ष्य क्या है,?" अथवा "मुझे यह मनुष्य शरीर क्यों मिला है ?" इस विषय पर इस प्रकार से विचार करें—'समस्त सांसारिक दुःखों से छूट कर ईश्वर को प्राप्त करना ही मानव-जीवन का परम लक्ष्य है"। वेदों तथा ऋषि-कृत ग्रन्थों में वर्णित इस लक्ष्य को योगाभ्यासी अपने मन में दोहराये और इसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अत्यन्त पुरुषार्थ से योगाभ्यास करे।

लक्ष्य पर विचार करके, यह निश्चय करे कि—इस आसन पर मैं ईश्वर का साक्षात्कार करने के लिए बैठा हूं। अब एक घण्टे तक मैं ईश्वर की ही स्तुति, प्रार्थना, उपासना करूंगा, अन्य किसी सांसारिक विषय का ध्यान नहीं करूंगा।

योगाभ्यासी साधक के लिये यह अति आवश्यक है कि उपासना काल में वह अपने समस्त सांसारिक सम्बन्धों को भुला दे, जिनका सम्बन्ध शरीर के कारण है अर्थात इस समय पति-पत्नी, माता-पिता, पुत्र-पुत्री, तथा मित्र-सम्बन्धी आदि समस्त प्राणियों को और भूमि-भवन, धन सम्पत्ति आदि समस्त जड़ वस्तुओं का भी स्मरण न करे।

इसके अतिरिक्त दूसरा कार्य यह भी आवश्यक है कि 'शरीर को आत्मा मानने विषयक' अपने मिथ्याज्ञान को दूर कर दे, जैसे कि—मैं पुरुष हूं, मैं स्त्री हूं, मैं जवान हूं, मैं बूढ़ा हूं, मैं काला हूं, मैं गोरा हूं, मैं निर्बल हूं, मैं बलवान हूं, मैं सुन्दर हूं, मैं कुरूप हूं, मैं लम्बा हूं, मैं नाटा हूं, इत्यादि गुणों वाला अपने को मानना, क्योंकि ये सब नित्य आत्मा के गुण न होकर अनित्य, विकारी, परिवर्तनशील जड़ शरीर के गुण हैं।

परमार्थ के लिए सांसारिक एवं शारीरिक सम्बन्धों को भुलाकर साधक अपनी वृत्ति को अन्तर्मुखी बनाये क्योंकि ऐसा किये बिना वह आत्मा—परमात्मा का ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता।

इसके पश्चात योगाभ्यासी स्वस्वामी सम्बन्ध को समझकर हटाने का प्रयास करे अर्थात यह निश्चय पूर्वक मन में बिठा ले कि यह शरीर तथा शरीर से सम्बन्धित जितने भी विद्या, धन, बल प्रतिष्ठा, योग्यता तथा अन्य गुण मेरे पास विद्यमान हैं, इन सबका आदि मूल परमेश्वर ही है, मैं नहीं हूं। क्योंकि न तो मुझ में इतना ज्ञान है और न इतना बल कि मैं इन शरीरादि समस्त प्राकृतिक पदार्थों को बना सकूं और इन की रक्षा कर सकूं। ईश्वर ने महती दया करके, ये सब पदार्थ मुझे भोग तथा अपवर्ग की प्राप्ति करने के लिए साधन के रूप में दिये हैं। मैं तो इन सब साधनों का प्रयोक्ता मात्र हूं स्वामी तो वास्तव में ईश्वर ही है।

स्वस्वामी सम्बन्ध को ज्ञान पूर्वक नष्ट करने के पश्चात् योगाभ्यासी "व्याप्य व्यापक" सम्बन्ध को समझे। यह सारा संसार व्याप्य है और ईश्वर व्यापक है, अर्थात् कोई ऐसा कण नहीं है, जिसमें ईश्वर विद्यमान न हो जैसे अग्नि की भट्ठी में लोहे के गोले को रख देने पर, गोले में अग्नि सर्वत्र व्यापक हो जाती है, इसी प्रकार से ईश्वर संसार की प्रत्येक वस्तु में समाया हुआ है। इस व्याप्य-व्यापक सम्बन्ध के माध्यम से, ईश्वर के साथ अपनी निकटता का और अधिक अनुभव करने के लिए ऐसा भी समझना चाहिए कि "मैं ईश्वर में डूबा हुआ हूं, और सूक्ष्म होने के कारण ईश्वर भी मुझ में विद्यमान है। मैं ईश्वर में ही चलता हूं, ईश्वर में ही बैठता हूं, ईश्वर में ही खाता हूं, ईश्वर में ही सोता हूं, अनादि काल से मैं ईश्वर में ही रहता आया हूं और अनन्त काल तक ईश्वर में ही रहूंगा। मैं ईश्वर से कभी भी अलग नहीं हो सकता।"

व्याप्य-व्यापक सम्बन्ध की स्थिति बना लेने के पश्चात योगाभ्यासी 'मन-इन्द्रियों के जड़त्व' को समझने का प्रयास करे। इस विषय पर निम्न प्रकार से चिन्तन करे—'मेरा मन एक यन्त्र के समान जड़ वस्तु है, वह अपने आप किसी विषय का चिन्तन नहीं करता। मैं चेतन जीवात्मा जिस किसी बाह्य या आन्तरिक विषय को जानने की इच्छा कर मन को प्रेरित करता हूं, उसी विषय का ज्ञान मेरा मन मुझे करा देता है। जैसे फोटोग्राफर की इच्छा के बिना कैमरे में अपने आप चित्र नहीं उतरते, वैसे ही मेरी इच्छा तथा प्रेरणा के बिना मेरा मन किसी भी वस्तु का ज्ञान नहीं कराता। इसलिए मैं इस जड़ मन को, आत्मिक-ज्ञान से अपने नियन्त्रण में रखता हुआ एक घण्टे तक ईश्वर के अतिरिक्त अन्य किसी विषय में नहीं लगाऊंगा।"

उपरिलिखित सज्जा करने के पश्चात अब योगाभ्यासी ईश्वर की शीघ्र तथा सरलता से अनुभूति करने के लिए 'ईश्वर प्रणिधान' की स्थिति का सम्पादन करे। 'सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, निराकार ईश्वर मेरी आत्मा में स्थित है। वह मेरे प्रत्येक शारीरिक, वाचनिक तथा मानसिक कर्मों को प्रतिक्षण देख, सुन, जान रहा है। कोई भी कर्म मैं उससे छिप कर नहीं कर सकता।"

जैसे दूरदर्शन प्रसारण कक्ष में बैठा उद्घोषक यह जानता है कि 'चाहे मुझे दिखाई न दे, किन्तु लाखों की आंखें तथा कान मुझे देख व सुन रहे हैं' ऐसा विचार कर वह कोई भी अनुचित क्रिया नहीं करता तथा असद्र वाक्य नहीं बोलता। वैसे ही योगाभ्यासी अपने मन में माने कि "ईश्वर मेरे पास माता-पिता के समान उपस्थित है, और अत्यन्त प्रेम पूर्वक, पवित्र हृदय से की गई स्तुति-प्रार्थना को सुन रहा है। मेरी प्रार्थना सुनकर वह परम दया-मय, कृपा करके, अवश्य ही मेरी मनोकामना पूरी करेगा, इसमें किंचित मात्र भी संशय नहीं है।

साधक को सन्ध्योपासना करने से पूर्व उपर्युक्त प्रकार से सज्जा अवश्य ही कर लेनी चाहिए, जिससे कि उसे उपासना में सफलता मिल सके और ईश्वर से परम आनन्द और ज्ञान की प्राप्ति कर सके।

ज्ञानप्रकाश आर्य बन्धु
प्रकाशक—दर्शन-योग विद्यालय, आर्य वन विकास क्षेत्र,
रोजड़, पत्रालय-सागपुर जि० साबरकांठा,
गुजरात पिन-३८३३०७

क्या रोग पूर्व जन्म के पापों का परिणाम है

डा० लक्ष्मी नारायण शर्मा

आयुर्वेद में उल्लेख है—'पूर्वजन्म कृत पाप व्याधि रूपेण पीडति'' अर्थात् पूर्व जन्म में किए हुए पाप कर्म मनुष्य को रोग बनकर सताते हैं।

यह एक आध्यात्मिक तथ्य भले ही हो, लेकिन आज के वैज्ञानिक और तर्कशील युग में यह उक्ति सहसा विश्वसनीय प्रतीत नहीं होती। पर आज भी लोक व्यवहार में ऐसी बातें सुनने को मिलती हैं कि अमुक व्यक्ति ने अमुक मित्र या सम्बन्धी के साथ धोखा किया जिसका फल यह हुआ कि मरते समय उसके शरीर में कीड़े पड़ गये। इस विषय को स्पष्ट करने के लिए मैं अपनी देखी एक घटना का उल्लेख कर रहा हूं।

मैं उन दिनों मेरठ जिले के एक काफी बड़े गांव में चिकित्सा-कार्य करता था। गांव के एक कुम्हार ने अपनी कुछ कमाई के ७०० रु० सुरक्षित रखने के ख्याल से एक महाजन के पास धरोहर के रूप में रख दिये कुम्हार काफी बूढ़ा था, एक दिन अचानक उसे भगवान ने बुला दिया, किन्तु मरने से पहले उसने कुम्हारी को बता दिया कि महाजन के पास उसके ७०० रुपये रखे हैं। गांवों में आजकल भी लेन देन में ज्यादा लिखत पढ़त नहीं चलती, साख साख पर लेन देन और व्यापार करते हैं। कुम्हार के पास भी उन रुपयों की कोई लिखत पढ़त नहीं थी।

कुम्हारी जब रुपए लेने महाजन के पास पहुंची, तो महाजन साफ मुकर गया। कुम्हारी ने पंचायत में दाद फरियाद की लेकिन किसी प्रमाण के अभाव में पंच भी कोई निर्णय नहीं दे सके। अन्त में कुम्हारी ने कहा कि "महाजन मन्दिर चलकर कसम खा जाए, तो मैं रुपयों का दावा छोड़ दूंगी।

महाजन ने पांच पंचों के बीच मन्दिर में जाकर कसम खा ली। कहते हैं, मन्दिर से निकलते वक्त महाजन का चेहरा स्याह पड़ गया था।

छः मास बाद महाजन के पेट में दर्द रहने लगा, बहुत इलाज हुआ, परन्तु दर्द ठीक नहीं हुआ। अन्त में पता चला कि पेट में 'कैंसर' हो गया है। तीन मास कष्ट भोगकर महाजन मर गया। लोगों ने कहा, महाजन के पेट में कुम्हार घुस गया था, जो उसे खा गया।'

प्रश्न उठता है कि क्या कुम्हार के रुपये हड़प लेने के फलस्वरूप उसे कैंसर हुआ था ?

इसके उत्तर की खोज में एक अन्य घटना का उल्लेख करना होगा। अमेरिका के डाक्टर नारमन विन्सेंट पीले ने अपनी एक विचित्र रोगिणी के रोग के सम्बन्ध में लिखा है। डा० पीले मनोवैज्ञानिक होने के साथ साथ ही गिरजे में परामर्शदाता मन्त्री भी थे इस नाते वे कष्ट पीड़ित व्यक्तियों की सहायता करते थे एक दिन न्यूजर्सी के एक गिरजे में जब पीले महोदय अपना प्रवचन समाप्त कर नीचे आये, तो एक महिला ने उनसे कहा—"क्या संसार में मेरे कष्ट का कोई इलाज नहीं है ? मेरी स्थिति यह है कि मैं जब भी गिरजे में आती हूं तभी शरीर पर तेज खुजली शुरु हो जाती है।" यह कहकर उस महिला ने पीले महोदय को अपनी बांहें उघाड़ कर दिखाई जिन पर खुजली के लाल लाल चकत्ते उभरे हुए थे। महिला ने बताया कि वह जब भी गिरजे में आकर कुर्सी पर बैठ जाती है तभी खुजली शुरु हो जाती है। अन्त में वह कहने लगी कि यदि मेरा यही हाल रहा, तो मैं गिरजे में आना बन्द कर दूंगी।"

पीले महोदय ने महिला से मुस्कुराते हुए कहा—'कई बार लोगों के मन पर मेरे प्रवचनों की विचित्र प्रतिक्रियाएं होती हैं। लेकिन आपका मामला कुछ भिन्न दिखाई देता है।'

डा० पीले को इसी बीच यह सन्देह हुआ कि सम्भव है कुर्सी में कोई ऐसा सामान हो, जो उस महिला को एलर्जी पैदा करता हो। अपने सन्देह निवारण के लिए उन्होंने महिला से पूछा— क्या किसी भी गिरजे में जाने पर आपकी यही दशा होती है या इसी गिरजे के साथ यह बात है ?"

"मैं चाहे किसी भी गिरजे में जाऊं मेरा यही हाल होता है महिला ने बताया।

पीले महोदय सोच विचार में पड़ गए। अन्त में उन्होंने महिला से कहा—"मैं तुम्हारे पारिवारिक डाक्टर से बात करना चाहूंगा शायद उनकी राय जानकर मैं तुम्हारी समस्या सुलझा सकूं।'

महिला ने अपनी स्वीकृति दे दी। डा० पीले ने तुरन्त उस डाक्टर को फोन किया। डाक्टर ने उत्तर में कहा—'मैं समझता हूं इस महिला को अन्दरूनी चमला (इन्टरनल एग्जिमा) है। यह मानसिक रूप से अन्दर ही अन्दर अपने को उधेरती रहती है। लेकिन मुझे इसके सही कारण का पता नहीं चल पाया है। सच तो यह है कि यह मेडिकल केस नहीं है। यह आपके मनोवैज्ञानिक क्षेत्र का केस है। आप रोगिणी का मनो विश्लेषण करके पता चलाये।'

डा० पीले ने अपने ढंग से रोगिणी का जीवन इतिहास मालूम करना शुरु किया और तब यह रहस्य प्रकाश में आया कि यह महिला किसी बड़ी फर्म में एकाउण्टेण्ट के पद पर काम करती है और विगत रुपये गोलमाल करके अपने मालिक का धन चुरा रही है महिला ने आंखों में आंसू भर कर पीले महोदय से कहा कि उसने चोरी की शुरूआत बहुत छोटी रकम से की थी और हर बार इस नियत से पैसे निकालती थी कि जल्दी ही वह उन्हें पूरा कर लेगी लेकिन वह कभी पूरा नहीं कर पाई और अब वह रकम बढ़कर कई हजार डालर तक पहुंच गई है।

डा० पीले ने कहा— इस कष्ट से छुटकारा पाने के लिए तुम्हें फर्म के मालिक के सामने सब कुछ स्वीकार कर लेना चाहिए और उड़ाई हुई रकम की अदायगी शुरु कर देना चाहिए।'

महिला कहने लगी— किन्तु ऐसा करने से तो मालिक मेरे ऊपर बरस पड़ेगा, साथ ही मेरी नौकरी भी चली जाती रहेगी।' हां ऐसा तो होगा ही" डाक्टर ने कहा— लेकिन अपने ईमान और आत्मा को खो देने की अपेक्षा नौकरी खो देना कहीं अच्छा है।"

प्रारम्भ में वह महिला इसके लिये तैयार नहीं हुई, लेकिन पीले महोदय के सतत अनुरोध से अन्त में वह फर्म के मालिक के पास पहुंची और सारी बातें खोलकर अपना अपराध स्वीकार कर लिया। स्वभावतः मालिक उस पर बुरी तरह बिगड़ा लेकिन अन्त में उसने कहा— चूंकि तुमने स्वयं सब कुछ स्वीकार किया है और तुम्हारा इरादा रुपया अदा करने का है इसलिये मैं तुम्हारे खिलाफ कोई कारवाही नहीं करूंगा मैं तुम्हें जागरूक आत्मा की महिला मानता हूं क्योंकि तुमने अन्तरात्मा की प्रेरणा से सब कुछ स्वीकार किया है। अलबत्ता वह महिला नौकरी से हटा दी गई। इसके बाद उसे कभी गिरजे में बैठने पर खुजली नहीं उठी।

इससे मिलता जुलता केस डाक्टर क्लार्क डब्ल्यू लैब ने अपने एक रोगी के सम्बन्ध में लिखा। उनका वह रोगी, सिर दर्द थकावट ऊंचे रक्त चाप दिल की धड़कन तथा हाजमे की शिकायत से पीड़ित था। डाक्टर लैब की अच्छी से अच्छी औषधि से भी उसे जब कोई फायदा नहीं हुआ तो अन्त में डाक्टर ने कहा कि तुम कोई गलत काम कर रहे हो जिससे तुम्हारा मन बोझिल है। तुम भीतर ही भीतर घुटते हो, मुनासिब है कि तुम अपने मन की बात खुलकर कहो, वर्ना इन रोगों से तुम्हारा पीछा कभी नहीं छूटेगा।"

शुरु में रोगी यही कहता रहा मेरे मन में कोई मैल नहीं है' लेकिन अन्त में उसे डाक्टर के सामने अपना भेद खोलना पड़ा रहस्य यह था कि उसका पिता बहुत बड़ी जायदाद छोड़ कर मरा था और उसे सम्पत्ति का प्रबन्ध नियुक्तकर गया था। रोगी का छोटा भाई यूरोप में रहता था। अपने भाई के पास वह जायदाद की आमदनी का बहुत थोड़ा भाग भेजता था बड़ा हिस्सा खुद हड़प जाता था। डा लैब ने रोगी से आग्रह किया कि वह अपने भाई को सारी बातें साफ साफ लिख दे और हजम किया हुआ रुपया लौटा दे। लेकिन, रोगी इस बात पर तैयार नहीं हुआ। कहने लगा—मैं अपने भाई को कैसे अपनी बेईमानी की बात लिख सकता हूं। वह मुझ पर बहुत विश्वास करता है।"

(शेष पृष्ठ ६ पर)

स्वामी प्रज्ञानन्द जी सिद्धान्ती बझेड़ा (अलीगढ़) का संक्षिप्त जीवन परिचय (२)

—ब्र. मनुदेवार्य, गुरुकुल कृष्णपुर, मन्धना, (फर्रुखाबाद)

१९५६ में सञ्चालित आर्य भाषा (हिन्दी) रक्षा आन्दोलन में आपने ११ अक्तूबर को चण्डीगढ़ में सत्याग्रह किया तो आपको दस (पुलिस) ने आपको कैद कर अम्बाला कारागार भेज दिया। १५ दिन बाद जब अपने नियमानुसार न्यायाधीश कारागार आया तो उसने आप तथा आपके दल के समस्त लोगों को बुलवाकर आपसे पूछा—आपने धारा ४४ का उल्लंघन किया है ?

स्वामी जी—हाँ ! किया है।

न्यायाधीश—क्या कल फिर करोगे ?

स्वामी जी—हाँ ! अवश्य करेंगे।

न्यायाधीश—ऐसा कब तक होगा ?

स्वामी जी—जब तक मा० ताराचन्द जी जीवित हैं। तब तक न जाने कितनी बार ऐसा होगा।

न्यायाधीश—आपको दो महीने की कैद तथा १०) जुर्माना देना होगा।

स्वामी जी—मैं जुर्माना नहीं दूंगा। जुर्माना तो आपको देना चाहिए। क्योंकि मैं हिन्दी रक्षा के निमित्त आपकी जेल में आया हूं।

न्यायाधीश ने ऐसा प्रत्युत्तर सुनकर दो माह की कैद को तीन माह में बदल दिया।

अम्बाला कारागार से निकल आप गुरुकुल देवबन्धु महाराजा प्रताप प्रहलाद नगर, पत्रालय-विघाड़ा, बुलन्दशहर (वर्तमान गाजियाबाद) पहुँच वेद प्रचार में संलग्न हो गए। तत्पश्चात् शिक्षा हेतु गुरुकुल कठपुर; तिलहर (शाहजहांपुर) पहुँच कुछ काल पर्यन्त पाणिनीय अष्टाध्यायी के सूत्र कण्ठस्थ किए। किन्तु यहाँ वाद यन्त्र चोरी चले जाने तथा आर्थिक सहायता न मिलने से यह स्थान छोड़ पुनः गुरुकुल विघाड़ा आकर वेद प्रचार में जुट गए।

७ नवम्बर १९६६ को संसद भवन (दिल्ली) के समक्ष गौरक्षा आन्दोलकों पर गोली चलाए जाने असख्य लोगों की जानें गईं परन्तु दो अपरिचित युवकों द्वारा आपको सुरक्षित रख लिया। २४ दिसम्बर १९६६ को शास्त्रार्थ महारथी स्व० श्री अमर स्वामी जी महाराज के दल में सम्मिलित हो आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली से गौरक्षा हेतु सत्याग्रह किया। ३० अप्रैल १९६७ तक आप चार बार कारागार गए।

१९७० में आप अपने शिष्य रामसिंह एवं कुसम सिंह के पास दिल्ली पधारे। वहाँ ईसा मतावलम्बियों से अत्यधिक वाद-विवाद होने के कारण उन्होंने आपको प्रसाद रूप में विष दे दिया। शिष्यों द्वारा चिकित्सोपरान्त ३६ घण्टे में आपको चेतना आई।

१९६० से ७० तक आपका अधिकांश समय आपके गुरु श्री रामस्वरूप जी आजाद की जन्मभूमि फिरोजपुर में व्यतीत हुआ। वहाँ आर्यवीर श्री मोहनलाल जी आर्य भजनोपदेशक ने आपकी सेवा सुश्रूषा। फिरोजपुर में तथा अपने निवास स्थान पर आप प्रतिदिन अग्निहोत्र अवश्य करते थे।

१७ अक्तूबर १९७६ को देशभक्त प्रभावक ब्रह्मचारी जयदेव ने स्व जन्मभूमि बझेड़ा में आर्य महासम्मेलन का आयोजन कर अमर स्वामी जी से संन्यास की दीक्षा ली। ११२ वर्षीय स्व० श्री स्वामी भीष्म जी ब्रह्मचारी की अनुमति से आपको "प्रज्ञानन्द सिद्धान्ती" नाम से समलङ्कृत किया गया।

दिसम्बर १९७६ में अलीगढ़ संपाल स्थान (रेलवे स्टेशन) पर किसी युवक ने आपको प्रसाद रूप में खाने को कुछ देना चाहा परन्तु आपने नकार दिया। तो फिर उसने कोई मादक पदार्थ आपको सुंघाया जिससे आपको वहीं मूर्छा आ गई। जनश्रुति से पता चला कि कोई द्रव्य उस व्यक्ति ने आपके मुख में डाला जिससे आपको दो-तीन बार वमन हो कुछ जागृति हुई। ऐसी स्थिति से किसी सज्जन ने उठाकर आपको दुखियों वाली रेलगाड़ी में डाल दिया और आप दिल्ली पहुँच गए। वहाँ से आप एक अन्य सज्जन के माध्यम से भाई मोहन लाल जी के पास फरीदाबाद पहुँचे। और २२ दिवसीय औषधोपचारोपरान्त स्वस्थ हो पुनः आर्य धर्म के प्रचार में संरत हो गये।

बझेड़ा के कालीदेवी के मठ मे प्रति होली दीपावली पर अत्याचारियों द्वारा भेड़ा-बकरो की नृशंस हत्या का कुकृत्य किया जाता था। बहुत समझाने पर भी जब वे न माने तो आपने अनशन का आदेश देकर आरक्षियों द्वारा उसे दो बार बन्द कराया।

एक बार आपके ग्राम के मन्दिर पर एक हृष्ट-पुष्ट निर्भीक ब्रह्मचारी प्रवासरत थे। पौराणिक बन्धुओ ने उन्हें आपके विरुद्ध भड़काते हुए कहा कि स्वामी प्रज्ञानन्द अभिवादन में "नमस्ते" ही करते हैं, नमोनारायण या राम-राम नहीं करते। ब्रह्मचारी जी कुछ लोगों के साथ आपके पास पहुँचे और पारस्परिक अभिवादन मे नमोनारायण कहा। जब प्रत्युत्तर में आपने नमस्ते शब्द का ही उच्चारण किया तो वे बोले—सन्यासियों को "नमोनारायण" शब्द का ही प्रयोग करना चाहिए नमस्ते का नहीं। इस पर आपने वेद, बाल्मीकि रामायण, महाभारत, गीता तथा पुराणों के अनेक उद्धरण देकर नमस्ते को ही सार्वभौम अभिवादन के योग्य बताया और फिर आपने ब्रह्मचारी जी से नमो नारायण की पुष्टि में प्रमाण मांगा तो वे असमर्थ रहे और कहा कि किसी भी प्राचीन ग्रन्थ में अभिवादन के रूप में इसका प्रयोग हुआ ही नहीं है, केवल नमस्ते का ही सर्वत्र प्रयोग हुआ है। अतः नमस्ते को ही उचित अभिवादन माना गया।

जनवरी १९८३ में आप दिल्ली से खुर्जा आए। वहाँ वैद्य श्री हरदेव सहाय जी के औषधालय पर शराब के विरुद्ध एक गोष्ठी हो रही थी। क्योंकि शराब का ठेका आबादी के मध्य होने से सज्जन लोग शराबियों से

(शेष ८ पृष्ठ पर)

पूर्व जन्म के पाप

(पृष्ठ ५ का शेष)

डा० लैब सिरजे के सलाहकार भी थे अतः वे बराबर उस रोगी के स्वीकारोक्त के लिए समझाते रहे। अन्त में यह व्यक्ति तैयार हो गया। उसने भाई को पत्र लिखा एवं बड़ी रकम का चेक उसके साथ नत्थी कर दिया। डा० लैब ने अपने सामने वह पत्र उससे 'लेटर बाक्स' में छुड़वाया। पत्र छोड़ कर उस रोगी ने एक सन्तोष की सांस ली। डाक्टर की आंखों में आंखें डालकर वह कहने लगा, "धन्यवाद ! डाक्टर साहब। मैं महसूस कर रहा हूँ जैसे कोई बहुत बड़ा बोझ मेरे सिर से उतर गया है। मैं शरीर में बड़ा हल्कापन अनुभव कर रहा हूं। मुझे विश्वास हो रहा है कि सारे रोग दूर हो गए हैं। और मैं स्वस्थ हो गया हूं।" और वास्तव में उस दिन के बाद उसे किसी कष्टदायक लक्षण ने नहीं सताया।

उपरोक्त दोनों घटनाएं इस बात को प्रमाणित करती हैं कि वह एकाउन्टेंट महिला और अपने भाई के हिस्से का रुपया हड़पनेवाला व्यक्ति दोनों ही बेईमानी या पापकर रहे थे और उनका वह पाप उन्हें रोग बनकर सता रहा था।

पता—स्वास्थ्य विहार, ओल्ड सीलमपुर
पो० गांधी नगर, दिल्ली-३१
(प्रकाशित मन से साभार)

गायत्री महामन्त्र

' स्व० स्वामी समर्पणानन्द का एक प्रेरक लेख '

कर्मयोगी कहते हैं कि कर्म करो। भगवान है या नहीं इस झगड़े में क्या मिलेगा ?

भक्तियोगी कहते हैं कि नाम जपते रहो। यही सबसे बड़ा कर्म है।

परन्तु बिना नाम-जपन तो आलस्य और अकर्मण्यता का ही प्रच्छन्न और इसीलिये अति भयंकर भूल रूप है।

दूसरी ओर भक्तिहीन कर्म चाबीहीन घड़ी के समान है एक बार घड़ी खड़ी हो गई तो दुबारा कौन चलाए। भक्तिहीन कर्मयोग निरी मूर्खता है। भक्ति का भण्डार तो है पर हम उससे लाभ नहीं उठाते।

भगवान भक्तों की बुद्धि को प्रेरणा देता परन्तु भक्त नाम से आलसी और अकर्मण्य का तो नहीं।

"धियो यो नः प्रचोदयात्।" हम उसका ध्यान करें जो हमारी बुद्धियों और कर्मों को प्रेरणा दे। यह भक्तियोग है।

परन्तु यह प्रेरणा किसको मिलती है क्या कर्महीन आलसियों को ? कदापि नहीं। प्रेरणा उन्हें मिलती है जो निरन्तर उसे अपने अन्दर धारण करते हैं। यह कर्मयोग है। यह कर्मयोग कैसे है :—

प्रभु को अपने अन्दर धारण करना सर्वश्रेष्ठ कर्म है। प्रश्न उठता है कि प्रभु क्या कोई कुर्त्ता, धोती, पगड़ी एवं अंगरखा है जो धारण किया जाता है। इसका उत्तर वेद इन शब्दों में देता है :—

"स्वस्तिपन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।"

ऋ० ५. ५१. १५.

हम सूर्य और चन्द्र के समान स्वस्ति मार्ग पर चलें।

इस भाव को ऋ० १०. २. ३ मन्त्र मे इस प्रकार स्पष्ट किया गया है।

आ देवानामपि पन्थामगन्म यच्छक्नवाम तदनुप्रवोढुम्।

हम, जिस सुन्दर शासन व्यवस्था मे सूर्य चन्द्रादि देव, उस प्रभु की आज्ञानुसार चलते हैं उसी के अनुसार अपने जीवन रथ को वहन करने में समर्थ हुए हैं। उतने अंश तक ही हमने देव-मार्ग का अनुसरण किया।

बस यह अनुसरण कर्म ही मनुष्य को प्रभु से प्रेरणा लेने का अधिकारी बनाता है।

इस प्रकार 'धीमहि' में कर्मयोग और 'धियो यो नः प्रचोदयात्' मे समर्पणात्मक भक्ति-योग का अद्भुत समन्वय है।

यह देवो का अनुसरण ज्ञान, प्रयत्न और सुख अथवा सच्चिदानन्द इन तीन अंगों में बटा हुआ है प्रभु के जितने गुण वेद में वर्णित हैं, वे ज्ञान, प्रयत्न और सुख इन तीनों अंगों में हैं। हमें सुखस्वरूप बनाना है। इसलिये आवश्यक है कि हम सम्यग् ज्ञान प्राप्त करें और तदनुकूल प्रयत्न अथवा आचरण करें।

हमने ठीक ज्ञान और ठीक प्रयत्न किया है या नहीं, इसका प्रमाण है कि हमने पूर्ण सुख प्राप्त किया है या नहीं ? बस यह ज्ञान 'भूः' है, प्रयत्न 'भुवः' है और सुख 'स्व' है।

यन्नदुःखेन सम्भिन्नम् न च ग्रस्तमनन्तरम्।
अभिलाषोपनीतम् च तत् सुखं स्वः पदास्पदम्।

बस इस भूः, भुवः, स्वः का ही संक्षिप्त रूप 'ओ३म्' है। ध्वनि-मात्र का आदि मूल अ और स्थान कण्ठ है।

मध्य उ और स्थान मुख का मध्य है। म् सब संगीतमय ध्वनियों का अन्त है और सच पूछिये तो ध्वनिमात्र का अन्त है क्योंकि यही एक अक्षर है जो मुख बन्द करने पर भी बोला जा सकता है। इसका स्थान ओष्ठ है।

मकार ही एक ऐसा अक्षर है जो मुख बन्द करने पर भी बोला जा सकता है। इसीलिये यह समाप्ति का सूचक है और मधुर होने के कारण संगीतमयता का सूचक है। इसीलिये यह 'स्वः' का अर्थात् परम सुख का प्रतीक है। यदि इनमें से एक-एक अंग का ही अभ्यास करें तो मनुष्य का पूर्णपरिपाक न होगा। पूर्ण परिपाक करने वाला तो 'भूर्भुवः स्वः' का समन्वय है। इसलिये उस समन्वय को भर्गः ठीक परिपाक करने वाला कहा गया है।

परन्तु यह रूप पूर्ण रूप से धारण किया गया तब समझना चाहिये जब यह स्वादुतम अन्न के समान आग्रहपूर्वक वरण करके खाया जाय। जो अन्न खिन्न मन से जैसे-तैसे गले से नीचे उतार लिया जाता है वह 'भक्षेनेन्यम्' भले ही हो 'वरेण्यम्' नहीं कहला सकता।

यह स्वाद भी साधारण नहीं अलौकिक हो जिसे तत् कहकर अनिर्वचनीयता का रूप दे दिया।

अब इस मन्त्र में परमात्मा को 'सविता' के नाम से कहा गया है, इसीलिये इस गायत्री को (गेयगीत की) सावित्री कहा गया है।

सविता का अर्थ है शासन का स्रोत सू धर्थ है शासन करना। 'सविता' का अर्थ हुआ शासन करने वाला। राष्ट्र मे जब राजा राज्य के नियमों का निर्माण करता है तब 'सविता' जब दण्ड देता है तब 'यम' जब अधिकारों का निर्णय करता है तो 'अर्यमा' जब शक्ति दिखाता है तो इन्द्र कहलाता है। परन्तु इन्द्र को भी शासन सत्ता सविता से ही प्राप्त होती है।

ऋग्वेद में स्पष्ट शब्दों में कहा है :—

सवितायन्त्रः पृथिवीमरम्णात् ऋ० १०। १४९। १

सविता ने राज्य को नियन्त्रित करने वाले नियमों से धरती को रमणीय रमणीय बना दिया। बस यह नियम बनाने वाला (विधान निर्मात्री सभा का रूप) रूप ही सविता रूप है।

हम भू र्भुवः स्वः' स्वरूप ओ३म् के उस परिपाक प्रगल्भ सविता रूप को जो अति वरेण्य है सदा धारण करें जिससे समर्पण की भावना पूरी हो और वह हमारी बुद्धियो को मुक्ति-मार्ग चलावे।

इस प्रकार :—

१. ओ३म्—सच्चिदानन्द का विकसित रूप।
२. भूः—ज्ञान।
३. भुवः—कर्म।
४. स्वः—सुख है।
५. तत् अनिर्वचनीय।
६. देवस्य—दिव्य-शक्ति सम्पन्न।
७. सवितुः—नियम-निर्माण के अधिष्ठाता के।
८. भर्गः—परिपाक प्रगल्भ।
९. वरेण्यम्—वरणीयतम रूप को।
१०. धीमहि—हम (केवल अकेला मैं नहीं सब) सब धारण करें। अनुकरण द्वारा आत्मसात् करें।
११. यः—जो।
१२. नः—हमारी बहुवचन (सर्वहित का सूचक)।
१३. धियः—कर्म और प्रज्ञा को।
१४. प्रचोदयात्—सन्मार्ग पर चलावे।

इस प्रकार इन १४ अंगो से युक्त गायत्री को श्वास प्रश्वास के संगीत में मिलाकर मनुष्य अपने जीवन में उस स्थान पर आ पहुँचे जहाँ हमारे जीवन का नेता यह गायत्री मन्त्र हमें पहुँचाना चाहता है, तो इसके पीछे-पीछे (अनु) चलते-चलते वहीं हम स्थित हो जावे जहाँ इसका ठहरने का स्थान है तो हम कह सकेंगे कि हमने गायत्री का अनु-स्थान-अनुष्ठान कर लिया। यह गायत्री का अनुष्ठान।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

स्वामी प्रज्ञानन्द जी सिद्धान्ती

(पृष्ठ ६ का शेष)

आतंकित थे। जब आपको यह ज्ञात हुआ तो आपने इसके विरुद्ध विज्ञापन प्रकाशित कराके आमरण अनशन प्रारम्भ कर दिया। गुप्तचरों ने आपके पास आकर 'आप अनशन तोड़ दें शराब का ठेका यहां नहीं रहेगा' इस प्रकार कहा परन्तु आप तो दृढ़व्रती थे आपने उनकी एक नहीं मानी और अनशन अनवरत बनाये रखा। ७२ बहत्तर घण्टे पश्चात् बुलन्दशहर के जिलाधीश तथा खुर्जा के तहसीलदार आदि अधिकारियों ने आकर शराब के ठेके को वहां से पृथक कर दिया और स्वयं जिलाधीश महोदय ने अपने हाथों से स्वामी जी को दुग्धपान कराके अनशन व्रत से उठाया। तत्पश्चात् सब लोगों ने मिलकर वैदिक विधि विधानानुसार पवित्र देवयज्ञ का अनुष्ठान कर यज्ञशेष (प्रसाद) वितरण किया।

आप एक निर्भीक सन्यासी हैं। इसलिये नेत्रहीन होते हुए भी समस्त भारत वर्ष का एकाकी ही परिभ्रमण करते हैं। एक समय २० सितम्बर १९८७ को आप यज्ञ हेतु दिल्ली जा रहे थे। अलीगढ़ से पलवल मार्ग में यमुना पुल तक आपको गन्त्री (बस) मिली, पुल पर दूसरी गन्त्री की प्रतीक्षा कर ही रहे थे कि भारवाहन (ट्रक) को भर रहे दूधियाओं ने आग्रह पूर्वक आपको वाहन में बिठा लिया। आपके अतिरिक्त वाहन में २०-२५ व्यक्ति अन्य भी थे। वाहन के कुछ दूर जाने पर चालक की असावधानी से वह राजपथ (सड़क) से नीचे गिर पड़ा पांच व्यक्तियों का घटना स्थल पर ही प्राणान्त हो गया। शेष सब पीड़ितों (घायलों) को आरक्षियों ने पलवल चिकित्सालय में पहुँचा दिया। इस आकस्मिक दुर्घटना में आपके भी दाएं पैर की हड्डी कूल्हे पर से टूट गई। पलवल में उचित व्यवस्था न होने के कारण आप तथा कुछ अन्य लोगों को बादशाह खान अस्पताल फरीदाबाद में भर्ती किया गया। चार व्यक्ति वहां मर गये तथा तीन के पैर काटे गये। आपके पैर में लोहे का सरिया डालकर उस पर कुछ भार लटकाकर पलंग पर सीधा लिटा के पैर को घुड़िया के ऊपर टांग दिया इस प्रकार दो मास तक महान कष्ट सहे और १८ दिन तक तो पलंग के ऊपर भी शौचादि के लिये वहीं बैठाया गया। श्री प० बाल दिवाकर जी हंस [दिल्ली] अपनी देवी जी सहित चिकित्सालय में ही आपसे मिलने आए अन्य भी अनेक लोग आपसे मिलने आते थे। दो मास के चिकित्सा काल में श्री हंस जी तथा अन्य सभी भक्तों ने आपको यथासामर्थ्य आर्थिक सहयोग प्रदान किया। चिकित्सालय से अवकाश की सूचना पाकर आपके प्रिय शिष्य श्री रत्नसिंह जी आर्य, आचार्य गुरुकुल सिकन्दराबाद (बुलन्दशहर) तथा उनके अभिन्न मित्र श्री विजयसिंह जी सिसोदिया अपने यान (टैक्सी) द्वारा आपको आपकी जन्मभूमि ग्राम बरहेड़ा सकुशल पहुँचा गए।

यहां आपको छः महीने तक केवल चारपाई पर ही रहना पड़ा इस समयान्तराल में अन्य ग्रामीण जनों का भी उपचार चलता रहा। टूटी हुई पैर की हड्डी जुड़ तो गई परन्तु गांठ पड़ने से पैर मुड़ता नहीं है। फलतः आप अब भी चौकी पर ही बैठकर शौचादि करते हैं।

१९७६ से ८४ तक आप प्रतिवर्ष त्रिदिवसीय वार्षिकोत्सवों का समायोजन कराते रहे हैं। १९८५-८६ में आपने सामवेद तथा यजुर्वेद पारायण महायज्ञों के साथ वार्षिक समारोह सम्पन्न कराये। ये सभी सम्मेलन आप अक्तूबर मास में ही कराते आए हैं। परन्तु सितम्बर १९८७ में दुर्घटनाग्रस्त होने से आप अक्तूबर मास में यज्ञ न करा सके। तो आपने यह यज्ञ १ से ७ माघ १९८८ को अथर्ववेद पारायण महायज्ञ के साथ सम्पन्न कराया। इस यज्ञ में माननीय श्री प० बालदिवाकर जी हंस तथा श्रीमती पुष्पावती सेतान [बाई जी] से ५०० रुपये लेकर सम्मिलित हुए।

आपका प्रचार क्षेत्र हरियाणा, दिल्ली तथा इसके निकटवर्ती उत्तरप्रदेश के पश्चिमी जनपद रहे हैं। आपके हृदय रूपी समुद्र में वेद एवं धर्मप्रचार की उमंग सदा ही हिलोर लेती रहती है। अब पर्यन्त आपका सम्पूर्ण जीवन समाजोत्थान में ही व्यतीत हुआ है समाज सेवा के लिए आप कृत संकल्प हैं। यही कारण है कि नेत्रहीन तथा पैर से विकलांग होते हुए भी आप आत्मनिष्ठा एवं कर्त्तव्यपरायणता के साथ आर्य जगत में लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान तथा आर्ष पाठविधि के पोषक श्रीयुत आचार्य चन्द्रदेव जी शास्त्री कुलपति महर्षि दयानन्दार्ष गुरुकुल कृष्णपुर मझना [फर्रुखाबाद] द्वारा सञ्चालित वैदिक प्रचार मण्डल के साथ प्रचार कार्य में सोत्साह सुसंलग्न हैं। ●

हालैण्ड के प्रसिद्ध आर्य पंडित भारत यात्रा पर

संसार को सुन्दर दिशा निर्देशन देने वाला आर्यसमाज संसार के प्रत्येक कोने में अपनी सशक्त जीवन्तता को प्रमाणित कर रहा है।

इसी सन्दर्भ मे जानकारी देते हुए प्रसन्नता हो रही है कि हालैंड के सुप्रसिद्ध आर्य पण्डित प्रभाकर आर्यसमाज के सभापति श्री जीवन गणेश जी सपत्निक इस समय भारत यात्रा पर आये हुए हैं। आर्य समाज के लिए समर्पित प्राण श्री जीवन गणेश जी का अपना जीवन भी स्वयं मे आर्यत्व का उदाहरण है।

३ दिसम्बर प्रातः ८ बजे श्री आनन्दकुमार शास्त्री एम० ए० (सुरीनामवासी) श्रीयुत् सोमदेव जी शास्त्री (आसन) तथा श्री हरवीर शास्त्री आदि आर्यजनो ने हवाई अड्डे पर उनकी आगवानी की।

अभी तक पण्डित जी गुरुकुल महाविद्यालय झज्झर कन्या गुरुकुल राजेन्द्रनगर तथा वेद विद्यालय गुरुकुल गौतमनगर आदि अनेक महत्त्वपूर्ण आर्य स्थलो का भ्रमण कर चुके हैं।

पण्डित जी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध से मिले और हालैण्ड आर्यसमाज के बारे मे स्वामी जी को जानकारियां प्रदान की। स्वामी जी ने उनकी कर्मठता एवं आर्यसमाज के प्रति समर्पित निष्ठत्व की भूरि भूरि प्रशंसा की।



आर्यसमाज प्रभाकर हालैण्ड के श्री जीवन गणेश जी सपत्निक

जानकारी देते हुए पण्डित जी ने बताया कि हालैण्ड मे इस समय ३७ आर्यसमाज मे आर्य सिद्धान्त व महर्षि की विचारधारा को प्रचारित करने मे संलग्न हैं। प्रभाकर आर्यसमाज के विषय मे विशेष जानकारी देते हुए पण्डित जी ने बताया कि वहां प्रत्येक रविवार को साप्ताहिक सत्संग के साथ साथ सप्ताह में तीन दिन हिन्दी पाठशाला एवं आर्य वीर दल की शाखा भी चलती है। समाज मे इस समय १० पण्डित एवं पण्डिताए काम कर रही हैं, जो परिवारो मे हवनादि कराने के साथ साथ आर्य समाज के सभी कार्यों मे सहायता प्रदान करते हैं। उन्होने बताया कि प्रभाकर आर्य समाज के सदस्यो की संख्या ५०० से भी ऊपर है।

इसी भांति आर्य सभा समाज का विवरण देते हुए उन्होने बताया कि यह समाज भी श्री पण्डित जयपाल के सभापतित्व मे निरन्तर विकास की ओर है। हिन्दी पाठशाला एवं आर्य वीर दल की शाखा इस समाज में भी सुचारू रूप से चल रही है।

भारत मे अनेक समाज गुरुकुल एवं आर्य शिक्षा संस्थाओ को देखने के बाद पण्डित जी ने प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होने इसके लिए स्वामी आनन्दबोध के नेतृत्व की सराहना की।

पण्डित जी ने कहा कि यहां आकर मुझे विशेष प्रेरणा प्राप्त हुई है वे हालैण्ड पहुंचकर पुनः आर्यसमाज के लिए सशक्त काम करने का विशेष मन बना है।

इस समय पण्डित जी दयानन्द वेद विद्यालय गुरुकुल गौतमनगर मे ठहरे हुये हैं।

गुरुकुल के आचार्य श्री हरिदेव जी से उन्होने कहा कि इस गुरुकुल के स्नातक श्री रामपाल जी शास्त्री ने हालैण्ड मे जाकर आर्यसमाज संस्कृत एवं हिन्दी के प्रचार के साथ साथ आर्य वीर दल का प्रचार बहुत सुन्दर ढंग से किया। उन्होने बताया कि श्री रामपाल जी ने वहां ८ जगह आर्य वीर दल की स्थापना की तथा विशेषरूप से युवाओ मे आर्य समाज के प्रति विशेष भावना का उजागर किया। उन्होने इसके लिए आचार्य हरिदेव जी गुरुकुल तथा श्री रामपाल शास्त्री के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की।

—रामपाल शास्त्री
गौतमनगर, नई दिल्ली ४९

गायत्री

(पृष्ठ ७ का शेष)

यहां इस लघु लेख की समाप्ति से पूर्व एक बात की ओर विशेष ध्यान दिलाना आवश्यक है इसीलिए उसको विशेष रूप से पृथक करके वर्णन करते हैं। यह है सविता देवता का स्वरूप। परन्तु इसका निरूपण करने से पूर्व हम यह स्पष्टकर देना चाहते हैं कि यह शब्द किस धातु से बना है। यह शब्द 'षू प्रेरणे' इस तुदादि गण की धातु से बना है। इसके लिये दो ही प्रमाण पर्याप्त हैं।

पहिला तो 'विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आसुव।' यह प्रसिद्ध मन्त्र है, इसमे 'परासुव' और आसुव पद स्पष्ट रूप से तुदादिगण की सूचना दे रहे हैं।

ऋग्वेद मे ४ ५३, ३ मन्त्र में सविता के साथ पढा हुआ प्रसुवन शब्द स्पष्टतया तुदादिगण की 'षू प्रेरणे' इस धातु की ओर निर्देश कर रहा है।

इसी प्रकार ऋग्वेद ३, ३३, ६ में कवियों की वाग्धारा कहती है— 'तस्य वयम् प्रसवे याम उर्वी' उस इन्द्र के शासन में हम दूर तक चल रही यहां प्रसव शब्द का अर्थ बच्चा जनना नहीं किन्तु शासन है। इसी प्रकार वेद में सवितु प्रसवेऽश्विनो र्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्' यह तीनो एक साथ आते हैं जिसका अर्थ है कि यह कर्म सविता के शासन में अश्विनो के साधन से पूषा के हाथो से हो रहा है, सो सविता देवता वही है जब किसी राष्ट्र के प्रताप का उदय होता है। उससे पूर्व राष्ट्र के उत्साहमय अभ्युदय की उषा आती है फिर राज्य का नियम निर्माण होता है फिर शासन। यही बात ऋग्वेद ५ ८२ २ इस मन्त्र के 'अनुप्रयाणं मुषसो विराजति इन शब्दो मे कही है। सविता देव उषा के प्रयाण के पीछे विराजमान होता है।

यही बात सायणाचार्य ने ऋग्वेद १० १३६ १ मन्त्र की व्याख्या मे इन शब्दो में स्पष्ट कही है। 'उषस प्रादुर्भावानन्तर सूर्यस्योदयात् पूर्वं य कालस्तदभिमानी देव सवितोच्यते।' अर्थात् उषा के प्रादुर्भाव के पश्चात् सूर्योदय से जो काल है, उसी समय का सूर्य सविता कहलाता है। बस, स्पष्ट है कि व्यक्ति के जीवन से लेकर मानव राष्ट्र के जीवन तक कर्मयोग के उत्साह के जन्म के पश्चात् कर्म मे लगने से पूर्व भावी कार्यक्रम के सम्पूर्ण नियम बना लेने चाहिये। कर्मयोग में हाथ-पैर किन्तु उससे पूर्व हमारी बुद्धियों को नियम बनाने के निमित्त ठीक प्रेरणा मिलनी चाहिये यही सविता देवता का काम है सो इसी समय 'धियो यो न प्रचोदयात्' यह प्रार्थना कितनी ठीक बैठती है। यह सहृदयों के रसास्वादन का विषय है वाग्विलास का नहीं बस इसको जानकर सावित्री का मर्म समझ में आता है। प्रभु की कृपा हो कि हम इसे समझ कर गायत्री का ठीक अनुष्ठान करने में समर्थ हों।

बिगाड़ का महीना

(पृष्ठ ३ का शेष)

ने उन्हे अपहृत कर मार दिया है। एक सासद तब तक शपथ नही लेना चाहता जब तक लम्बी कृपाण लेकर उन्हे लोकसभा मे जाने की इजाजत नही मिलती। जोड मेले मे मान नौजवानो से कहते हैं कि सिखो का मान भग करने वाले सेना, पुलिस और प्रशासन अधिकारियो की सूचिया बनाओ ताकि 'उनके साथ वही सलूक हो जो उन्होने सिखो से किया।' जनरल वैद्य के हत्यारे जिंदा सुक्खा की रिहाई को पजाब का वातावरण सुधारने की शर्त बनाया जा रहा है ताकि अच्छे माहौल मे सरकार से सवाद हो सके। स्कूल-कालेजो के हिन्दू लडको को होस्टल खाली करने या जान से हाथ धोने की धमकिया दी जा रही हैं। कुछ मैडीकल कालेज बन्द हो चुके हैं। मान बात चीत से पहले उग्रवादियो को भरोसा देने की बात कह रहे हैं और उग्रवादी हैं कि हर रात बसो पर गोलिया चलाकर फिर से दहशत फैला रहे हैं।

ये सब परिवर्तन एक महीने मे हुये हैं और यह वह महीना है, जब केन्द्र सरकार काग्रेस पर तमाम सकट का ठीकरा फोडते हुये नया माहौल बनाने की शुभाकाक्षा दिखा रही है। १९८४ के दगा दोषियो को सबक सिखाने और ५९वा सविधान सशोधन वापस लेने के वायदे कर उम्मीद बाधी जा रही है कि पजाब का माहौल ठीक हो जायेगा, पर क्या कोई अकाली नेता अब ये मागें कर भी रहा है? जो मागें वे कर रहे है और जो सरकार करना चाह रही है उसमे कही कोई तालमेल है? प्रकाशसिंह बादल कह रहे हैं कि उन्हे वि०प्र० सरकार में भरोसा है, पर क्या मान-विमल वगैरह को भी है? क्या बादल अब सिख मुख्यधारा के प्रवक्ता भी रह गए हैं? कभी उग्र तेवर दिखाकर बादल ने लौंगोवाल का 'बल्ब फ्यूज कर दिया था। अब मान ने बादल को वही राह दिखा दी है। अगर ज्यादा चतुराई दिखाकर वि० प्र० सिंह ने मान से समझौता कर लिया तो मान को बादल बनाकर ज्यादा उग्र अदाज वाले नए मान पैदा हो जायगे। पजाब सकट इतना आसान नही कि खुली जीप में अमृतसर घूमने के ऐलान से सुलझ जाये।

[नवभारत टाइम्स ३० १२ ८९ से साभार]

बृहद्यज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज मैनपुरी के निष्ठावान सभासद ठा० महावीर सिंह जू द्वारा अपने ज्येष्ठ पुत्र कु० ध्रुवपाल सिंह जी 'अटल' की पचासवीं वर्षगाठ के उपलक्ष्य मे दि० ७ १२ ८९ से १२ १२ ८९ तक यज्ञ किया गया अथर्ववेद पारायण बृहद यज्ञ, बृहद प्रीतिभोज के साथ सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

गोहत्या के विरोध मे प्रस्ताव

गोरक्षा समिति को समाचार पत्रो मे यह समाचार पढकर अत्यन्त कष्ट एव क्षोभ हुआ है कि महानगर परिषद बम्बई ने ७५ हजार किलो ग्राम गो मास के लिये निविदा आमन्त्रित की है। भारत के ८५ प्रतिशत नागरिको की धार्मिक भावनाओं का अनादर एवम् सर्वथा निक मान्यताओं का उल्लंघन करने के लिये यह समिति बम्बई महानगर परिषद के इस कुकृत्य की घोर निन्दा करती है तथा केन्द्रीय एव राज्य सरकार से माग करती है कि दोषी व्यक्तियो को तुरन्त कठोर दण्ड दिया जाये और भविष्य मे इस सम्बन्ध मे सतकता बरती जाये ताकि देशमे साम्प्रदायिक सद्भाव बना रहे।

—डा० स ममेत मलिक

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का बलिदान दिवस दिनाक २३ दिसम्बर को महर्षि दयानन्द जी के पावन जन्म गृह मे श्री श्याम जी भाई आर्य की अध्यक्षता मे मनाया गया। इस अवसर पर उपदेशक विद्यालय के अध्यापक श्री वरुण कुमार जी एवम् स्वामी ब्र० मनमोहन ब्र० देशराज ब्र० सुधीर व ब्र० धर्मप्रकाश ने अपने अपने विचार बहुत प्रभावपूर्ण हृदय से व्यक्त कीए।

सभा सचालक ब्र जगजीवनलाल सिद्धान्ताचार्य ने किया।

—वरुण आर्य
अन्तर राष्ट्रीय उपदेशक
विद्यालय टकारा

जम्मू-कश्मीर का विशेष दर्जा और धारा ३७० दोनों कायम रहेंगे : सईद

मुजफ्फरनगर ७ जनवरी। केन्द्रीय गृहमन्त्री मुफ्ती मोहम्मद सईद ने आज यहां कहा है कि जम्मू व कश्मीर के सम्बन्ध में धारा ३७० को नहीं हटाया जायेगा। उन्होंने यह भी कहा कि आतंकवादियों व देशद्रोहियों से सख्ती से निपटा जाएगा।

श्री सईद यहां लोक सर्किट हाउस में पत्रकारों से वार्ता कर रहे थे। उन्होंने कहा कि जम्मू-कश्मीर भारत का अन्य राज्यों की तरह ही अभिन्न अंग है और वहां राज्यपाल और न्यायपालिका दूसरे राज्यों के समान ही है। उन्होंने यह स्वीकार किया कि वहां कानून एवं व्यवस्था नाम की कोई चीज नहीं रह गई है। उन्होंने कहा कि पंजाब व जम्मू कश्मीर की समस्या को बातचीत के द्वारा वहां के लोगों का विश्वास जीत कर हल करना होगा। उन्होंने कहा कि जहां तक आतंकवाद का सवाल है सरकार उससे सख्ती से निपटेगी।

पंजाब समस्या के सम्बन्ध में एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि पंजाब समस्या का बातचीत के जरिये सुलझाया जाएगा और इस सम्बन्ध में सर्वदलीय बैठक हाल ही में बुलाई जा रही है। अकाली दल (मान) के अध्यक्ष सिमरनजीत सिंह मान की इस शर्त के बारे में पूछे जाने पर कि अगर कांग्रेस पार्टी इस बैठक में भाग लेगी तो वह नहीं जाएंगे।

श्री मुफ्ती ने कहा कि हमने कांग्रेस (इ) अध्यक्ष राजीव गांधी को इस बैठक में आने का निमन्त्रण दिया है और चूंकि कांग्रेस (इ) भी एक पार्टी है उसे हम कैसे नहीं आमन्त्रित कर सकते हैं।

बम्बई में भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी ने कहा है कि कश्मीर से ३७० धारा को हटा लेना चाहिए। जनता दल के नेता श्री मुफ्ती मोहम्मद सईद ने कहा है कि काश्मीर में ३७० धारा कायम रहेगी। इस समय भारतीय जनता पार्टी और जनता दल की संयुक्त सरकार है। आपस में दोनों पार्टियों के नेताओं के विचारों में मतभेद है।—सम्पादक

रूबिया के बदले उग्रवादियों को रिहाई पर प्रदर्शन

नई दिल्ली, ४ जनवरी। भारतीय युवक कांग्रेस (इ) ने केन्द्र सरकार से हाल ही में गृहमन्त्री मुफ्ती मोहम्मद सईद की बेटी डा० रूबिया को छुड़ाने के बदले पांच खुंखार उग्रवादियों को रिहा करने के मामले की न्यायिक जांच की मांग की है।

भारतीय युवक कांग्रेस (इ) के सैंकड़ों कार्यकर्ताओं ने आज इस मांग के समर्थन में प्रधानमन्त्री के निवास पर प्रदर्शन किया और प्रधान मन्त्री को एक ज्ञापन दिया।

भारतीय युवक कांग्रेस (इ) के नेता मुकुल वासनिक ने कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि यदि प्रधान मन्त्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने यदि एक सप्ताह के भीतर इस मामले की सही जानकारी जनता के सामने नहीं रखी तो युवक कांग्रेस (इ) देश व्यापी आन्दोलन शुरू करेगी।

दिल्ली युवक कांग्रेस (इ) के अध्यक्ष सुशील शर्मा और सांसद जी पी राय कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि हम लोकतन्त्र में विश्वास रखते हैं और इस मामले का हल लोकतान्त्रिक तरीके से चाहते हैं।

प्रदेश युवक इंका के सचिव मुकेश शर्मा ने कहा है कि यदि सरकार ने तुरन्त उग्रवादियों को गिरफ्तार नहीं किया तो युवक इंका कार्यकर्ता आंदोलन तेज करने के साथ गिरफ्तारियां देंगे। प्रदर्शनकारियों में गुरु सुरेन्द्र सिंह श्री सुभाष चौधरी व विनोद नारायण झा भी शामिल हैं।

हैदराबाद की अर्द्ध शताब्दी

(पृष्ठ ३ का शेष)

श्री १०८ स्वामी सर्वानन्द जी महाराज तथा श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के आसन पर विराजमान के प्रवचन के बाद यज्ञ सम्पन्न हुआ। कार्य तीन दिन निरन्तर पूर्णाहुति के साथ पूर्ण हुआ। गुरुकुल गौतम नगर के आचार्य जी अपने विद्यार्थियों के साथ यज्ञवेदी पर शोभायमान थे।

ध्वजारोहण

श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती सार्वदेशिक सभा के प्रधान द्वारा ध्वजारोहण का कार्य सम्पन्न होना था। हजारों आर्यवीर तथा आर्यजनों के मध्य राष्ट्रीयगीत के साथ ध्वजारोहण का कार्य किया गया और सभा प्रधान जी ने आर्य जनता को अपना उद्बोधन भाषण दिया।

जयति ओम ध्वज व्योम विहारी के गान पर आर्यों का उत्साह देखने लायक था। जिधर देखो आर्यों का समूह ही दिखाई देता था। आर्यों की भीड़ इतनी आ चुकी थी कि मध्याह्न के भोजन में भी अव्यवस्था हो गई। इस समय पं० रामचन्द्र राव वन्देमातरम के व्यथा अन्तर की देखने लायक थी। व्यथा के साथ सन्तोषप्रद प्रसन्नता थी कि आर्यों का आगमन, जिसकी आशा इतनी नहीं थी।

तीन दिन के आयोजन

मध्यान्होत्तर स्वागताध्यक्ष के भाषण के पश्चात वीतराग स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का आर्यों को आशीर्वचन और स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का अध्यक्षीय भाषण देने के बाद पं० वन्देमातरम जी ने इस आर्य सत्याग्रह के आयोजन तथा उसके उद्देश्य पर प्रकाश डाला। उमड़े जनसमूह का क्या ठिकाना।

दूर-दूर से पुस्तक विक्रेता भी महर्षि के उद्गारों को देने हेतु पुस्तक के रूप में वहां पधारे थे। जनता ने हजारों रुपये का साहित्य ऋषि के चित्र अपने अपने घरों को ले गये।

भोजन की व्यवस्था

पं० वन्देमातरम जी के विशेष सहयोगी करोड़पति आर्य श्रेष्ठी राजस्थानी होटल के मालिक श्री पूरणमल जी व श्री आशाराम जी ने जो निष्ठा के साथ भोजन व्यवस्था में योगदान दिया। वह भी अपने में अनुपम थी वह धन्यवाद के पात्र हैं जो भोजन खिलाकर ही विश्राम करते थे।

अगले दिन यज्ञ पूर्ण कर शोभायात्रा की तैयारी—

शोभायात्रा

केशव भवन से प्रारम्भ ८ मील की यात्रा पर चले आर्यजनों का दो मील लम्बा जलूस जैसा कि हैदराबाद में कभी निकला भी न था प्रारम्भ होकर शहर की परिक्रमा करके चला।

अवर्णनीय दृश्य

अभी शोभा यात्रा मार्ग के आधे में ही थी कि भगवान इन्द्रदेव ने अपनी मूसलाधार वर्षा से जनमानस का जो स्वागत किया। यदि शीतकाल होता तब क्या होता। वर्षा मूसलाधार पड़ती रही और आबाल वृद्ध नर-नारी उत्साह के साथ शोभायात्रा को अन्तिम पूर्ण कर ही विश्राम लिया आर्यों का उत्साह दर्शनीय था। महर्षि दयानन्द की जय, आर्य समाज अमर रहे के गगन भेदी नारों से नगर गुञ्जायमान हो रहा था। शोभायात्रा में भीगे हुए लोगों ने वापस आकर ही वस्त्र बदले।

तृतीय दिवस—यज्ञ की पूर्णाहुति सम्पन्न हुई। शोभा सामान शीघ्र सारा सामान अब कार्यवाही कहां हो? आर्य जन केशव हाल में पहुँचे। वहां पर मंच सजा था।

विधिवेत्ताओं की सभा

आज का विचारणीय विषय विधि विशेषज्ञों द्वारा आर्य जनता को बताना था कि आप लोग जहां भी अपने कदम उठायेंगे, वहीं पर हम आपका सहयोग करेंगे। समय समय पर विधिवेत्ताओं ने आर्य समाज की सहायता भी की है। संस्कृत भाषा का केस सुप्रीम कोर्ट से बहाल कराया आदि की चर्चा भी की।

अन्तिम अध्याय कुछ विशेष राजनीति के महान योद्धा श्री इस दिन पधारे और उन्होंने भी आर्य सत्याग्रह में भाग लेने वाले वीरों तथा अमर बलिदानियों के प्रति श्रद्धा के भाव प्रकट किए।

प्रमुख व्यक्ति थे—सुश्री कुमुद बैन जोशी राज्यपाल आन्ध्र प्रदेश तथा मुख्य मन्त्री डा० चेन्ना रेड्डी-आन्ध्र, पूर्व लोक सभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड़ और सांसद श्री एच. के. एल. भगत।

श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के आशीर्वचन और आर्य समाज उपलब्धियों की चर्चा करने के बाद आर्य सत्याग्रहियों को प्रशस्ति पत्र भी प्रदान किये गये। यह सार्वदेशिक सभा के कार्य की विशेष उपलब्धि रही। आर्य जनता को अनेक अनेक बधाई जो अपने ऋषि के नाम पर सभी आयोजनों को सफल करने हेतु वहां पर पहुंची है।

अन्त में आयोजन के कर्णधार व सूत्रधार श्री पं० रामचन्द्रराव वन्देमातरम सदा हो जिन्होंने इस दुष्कर कार्य को वहन करने में सक्षम रहे।

... कश्मीर

... म

जम्मू ७ जनवरी। अधिकृत कश्मीर में लगभग दस हजार कश्मीरी युवकों को हथियार चलाने का प्रशिक्षण दिया जा रहा है और इनमें से कुछ सीमा पार कर भारतीय क्षेत्र में घुस आये हैं। यह जानकारी अधिकारिक सूत्रों ने दी है।

सूत्रों ने बताया कि केन्द्र सरकार ने राज्य सरकार को सूचित किया है कि १२ कश्मीरी युवक अधिकृत कश्मीर में हथियार चलाने का प्रशिक्षण लेकर गत सप्ताह घाटी में और कश्मीर के उग्रवादी तत्वों के गिरोह में शामिल हो गए। सूत्रों ने बताया कि प्रशिक्षण लेकर आये—कश्मीरी युवकों की पहचान हो गई है।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

महाराजपुर। स्थानीय आर्य समाज महाराजपुर जिला छतरपुर में दिनांक २३ दिसम्बर ८९ को पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान दिवस पर प्रात. ८ बजे प्रभातफेरी निकाली गई जिसमें महर्षि दयानन्द विद्या मन्दिर के सभी छात्र, आर्य समाज के सभासद एवं गणमान्य नागरिक सम्मिलित हुए। प्रभातफेरी के पश्चात आर्य समाज मन्दिर में स्वामी जी के जीवन पर विभिन्न वक्ताओं ने प्रकाश डाला। आर्य प्रतिनिधि सभा म० प्र० व विदर्भ के प्रचारक श्री वेदपाल जी आर्य भजनोपदेशक इस अवसर पर उपस्थित थे उन्होंने स्वामी जी के बलिदान के सम्बन्ध में अत्यन्त सरल एवं मृदु भाषा में भजनोपदेशकों द्वारा प्रकाश डाला। श्री वेदपाल जी के अतिरिक्त आर्य समाज महाराजपुर पुस्तकाध्यक्ष श्री सूरजपाल जी आर्य, श्री दयाराम जी आर्य कोषाध्यक्ष एवं श्री दीनदयाल जी आर्य एवं श्री महादेव प्रसाद जी आर्य ने प्रकाश डाला सभी वक्ताओं ने इसी बात के ऊपर बल दिया कि स्वामी जी ने देश की अखण्डता व एकता के लिये जो बलिदान दिया है। —मन्त्री आर्य समाज महाराजपुर

वधुओं की आवश्यकता

सुस्थापित निजी व्यवसायरत ग्रेजुएट पुत्र आकाहारी (२४, २२, वर्षीय कद ५' १०" व ५' ८") इकहरे बदन मित्तल भाइयों हेतु सुशिक्षित, स्वस्थ, सुन्दर, कन्याओं की आवश्यकता है। वैश्य मात्र ग्राह्य फोटो सहित विवरण भेजें। दहेज नहीं।

ओ० एम० मित्तल
कमान अस्पताल (N C)
द्वारा ५६ ए. पी. ओ.

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वेदामृत

परिवार में योगक्षेम हो

उपोहश्च समूहश्च, क्षत्तारौ ते प्रजापते ।
ताविहा वहतां स्फातिं, बहुं भूमानमक्षितम् ॥
अथर्व० ३-२४-७ ॥

हिन्दी अर्थ—हे प्रजा के पालक परमात्मन् ! धन का संग्रह और संवर्धन ये दोनों तेरे अग्रदूत हैं। ये दोनों यहां समृद्धि को लावें। ये बहुत अधिक अक्षय परिपूर्णता को भी दें।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९० वर्ष २९ अंक २] दयानन्दाब्द १६५ दूरभाष : ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे
माघ कृ० १० सं० २०४६ २१ जनवरी १९९०

सरकार की दुर्बल नीति से--काश्मीर में पाक आतंकवादियों की भारत विरोधी गतिविधियां

हिन्दुओं का पलायन : राज्यपाल का त्यागपत्र

दिल्ली १४ जनवरी। आज सायं काश्मीरी पंडितों का एक शिष्टमण्डल सार्वदेशिक सभा के कार्यालय में सनातन धर्म सभा दिल्ली के प्रधान श्री मनोहरलाल कुमार के साथ सभा प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती से मिला। बारामूला, श्रीनगर हुब्बाकदल, अनन्तनाग, सोपुर तथा अन्य उपनगरों के पंडितों ने स्वामी जी को बताया कि समूची काश्मीर घाटी में आतंकवादियों की गोलियों और पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारों से भयानक परिस्थिति पैदा हो गई है। हिन्दुओं की दुकाने, मन्दिर तथा अन्य स्थानक बन्द करने के अलावा कोई चारा नही है। राज्यपाल ने भी त्यागपत्र दे दिया है। पाकिस्तानी अराजक तत्व नगर और ग्रामीण क्षेत्रों में दन दना रहे हैं। हिन्दुओं की स्थिति बडी दयनीय बन चुकी है। उनकी अवस्था को कोई देखने व सुनने वाला नहीहै।

अब्दुल्ला सरकार फेल हो चुकी है। भारत सरकार की कोई नीति नही है। इससे पूर्व आर्यसमाज हजूरी बाग के पुरोहित पं० नेत्रपाल शास्त्री भी दिल्ली आकर स्वामी जी से मिल चुके है।

श्री मनोहरलाल कुमार ने स्वामी जी से निवेदन किया कि वह इन काश्मीरी पंडितों के साथ प्रधानमन्त्री श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह से मिलकर काश्मीरी हिन्दुओं का सुरक्षा का प्रबन्ध करावें।

गुरुकुल प्रभात आश्रम में गायत्री महायज्ञ की पूर्णाहुति

नए ब्रह्मचारियों का यज्ञोपवीत संस्कार

मेरठ १४ जनवरी। गुरुकुल प्रभात आश्रम (भोलाझाल) मेरठ में गायत्री महायज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर मेरठ व आसपास के क्षेत्रों से हजारों आर्य नर-नारियों ने भाग लिया। गुरुकुल के आचार्य श्री स्वामी विवेकानन्द जी महाराज ने पूर्णाहुति का कार्यक्रम में पूर्ण वैदिक विधि के अनुसार सम्पन्न कराया और नये ब्रह्मचारियों का यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर प्रो० शेरसिंह जी की धर्मपत्नी पंडिता प्रभात शोभा ने पांच हजार रुपए का दान दिया। इस उत्सव में स्वामी आनन्दबोध सरस्वती अनेक सन्त महात्मा, प्रो० शेरसिंह, लाला मनोहरलाल, श्रीमती शकुन्तला गोयल और प्रि० माधोसिंह तथा अन्य अनेक गणमान्य लोगों ने भाग लिया।

१३ जनवरी को एक विद्वत गोष्ठी का कार्यक्रम श्री निरूपण विद्यालंकार के संयोजकत्व में हुआ। पर्यावरण और वैदिक यज्ञों के महत्व पर लगभग ३० शोध प्रबन्ध पढ़े गए।

इस अवसर पर श्री इन्द्रराज जी की अपील पर लाला मनोहर लाल जी ने २ लाख और श्री राधेलाल जी सर्राफ ने ५० हजार रुपए के दान का वचन दिया।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने अपने भाषण में कहा कि इस समय देश में सन् १९४७ के इतिहास की पुनरावृत्ति हो रही है। भारत खतरनाक मोड़ पर खड़ा है। देश की राजनीतिक पार्टिया केवल वोटों की राजनीति चला रही हैं। ऐसी स्थिति में आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं को महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों और मान्यताओं को मूर्तरूप देने के लिए भारी बलिदान करने के लिए तैयार रहना पड़ेगा।

इस अवसर पर आर्य वीर दल के प्रधान सचालक श्री बाल दिवाकर हंस भी उपस्थित थे।

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

श्मशान घाट लोधी रोड, नई दिल्ली के लिए अपील

यह श्मशान घाट नई दिल्ली मे लोधी होटल के सामने स्थित है और दक्षिण दिल्ली क्षेत्र के निवासियो की आवश्यकता की पूर्ति करता है। इसका प्रबन्ध आर्य समाज लोधी रोड (जोर बाग) द्वारा किया जाता है जिसने अपने सीमित साधनो से ही इसे वर्तमान अवस्था तक पहुँचाया है। फिर भी अभी बहुत कुछ काम करना बाकी है। लकडी रखने के लिये कोई 'शेड' नही है जिसके कारण बरसात के दिनो मे बड़ी कठिनाई होती है। यह 'शेड' बनवाने मे अन्दाजन १ लाख रु० खर्च आयेगा। शव दाह के लिये जो वर्तमान 'शेड' बने हुए हैं उनकी भी मरम्मत करवानी है।

समिति के सदस्य इस पुनीत कार्य के लिये धन संग्रह अभियान के अन्तर्गत आपके पास भी पहुँचेंगे। आपसे प्रार्थना है कि आप इस कार्य के लिये अपना पूरा सहयोग उन्हे प्रदान करें।

दान राशि आप अपने क्षेत्र के प्रतिनिधि को दे सकते हैं अथवा सीधे नकद/चैक द्वारा श्री नवनीतलाल एडवोकेट १९/१ निजामुद्दीन पूर्व, नई दिल्ली-११००१३ को भेज सकते हैं। चैक आर्य समाज लोधी रोड (जोर बाग) के नाम देय हो। यदि इनकम टैक्स एक्ट १९६१ के अधिनियम ८० जी० के अन्तर्गत छूट लेनी हो तो चैक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' नई दिल्ली के नाम बनवाकर भेजें। पत्र में दान राशि किसलिये भेजी जा रही है इसका संकेत अवश्य करें।

मदन मोहन जोसल।	रतन प्रकाश गुप्ता
प्रधान	कोषाध्यक्ष
श्री नवनीत लाल एडवोकेट	जे० एन० मलिक
१९/१, निजामुद्दीन (पूर्व)	सुपरिन्टेन्डिंग इन्जीनियर (रिटा०)
नई दिल्ली-११००१३	बी० ७१ निजामुद्दीन (पश्चिम)
	नई दिल्ली-११००१३

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

द्वारा प्रकाशित साहित्य

आचार्य शंकराचार्य शास्त्री का धर्म अभिनय लेखक—अमर स्वामी सरस्वती	१)२५
महर्षि पत्र व्यवहार	२)५०
चौदहवीं का चांद हिन्दी	१२)००
चौदहवीं का चांद उर्दू	१२)००
कल्याण मन्जरी	१२)००
दयानन्द और विवेकानन्द	१२)००
वैदिक युग आदि मानव	१९)००
न्याय दर्शन (ले०—स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती)	१५)००
सांख्य दर्शन	१५)००
वैशेषिक दर्शन	१५)००
वेद दर्शन (ले०—कर्मनारायण कपूर)	५)००
वैदिक सनातन धर्म	६)००
आत्मा का स्वरूप	२)५०
पूजा किसकी	०)७५
धर्म के नाम पर राजनैतिक षडयन्त्र	६)००
ब्रह्मा कुमारी ढोल की पोल	०)६०
आर्य समाज	०)५०

प्राप्ति स्थान—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

भारतीय मुसलमान 'पाकिस्तान न जायें

श्री मोहम्मद नईमखान की अपील

लाहौर के मुस्लिम वक्फ अलायन्स के संयोजक श्री मोहम्मद नईमखान ने भारतीय मुस्लिम महिलाओ से अपील की है कि वे पाकिस्तान न जाये। उन्होने बताया कि वाघा सीमा और कस्टम के रेलवे अधिकारी उनके साथ गुण्डागर्दी और लूट खसोट का व्यवहार करते हैं। मगर सरकार ने कोई कार्यवाही नही की। श्री खान ने अखबारो में छपी खबरो के आधार पर बताया कि इस घिनौने कारोबार मे कई पाकिस्तानी मन्त्री भी शामिल हैं।

कर्णसिंह ने राजदूत के पद से इस्तीफा दिया

प्रधानमन्त्री ने २७ दिसम्बर से आज तक मिलने का समय नहीं दिया।

नई दिल्ली, १३ जनवरी, अमेरिका मे भारत के राजदूत डा० कर्णसिंह ने नई सरकार की सलाह पर अपने पद से इस्तीफा दे दिया। वे पाच महीने तक इस पद पर रहे।

प्रधानमन्त्री विश्वनाथ प्रतापसिंह को एक पत्र में डा० कर्णसिंह ने लिखा है कि वे विदेशमन्त्री इन्द्रकुमार गुजराल की सलाह पर इस्तीफा दे रहे हैं। डा० सिंह ने गुरुवार को श्री गुजराल से भेंट की थी। डा० सिंह का पत्र आज प्रेस के लिए जारी किया गया।

डा० कर्ण सिंह ने कहा है कि उन्हे इस बात का दुःख है कि २७ दिसम्बर को ही वाशिंगटन से नई दिल्ली पहुचने के बावजूद प्रधानमन्त्री ने अब तक मिलने का समय नही दिया।

डा० कर्णसिंह ने लिखा है कि वे २६ दिसम्बर को वाशिंगटन से रवाना हुए और दूसरे दिन नई दिल्ली पहुचे। उन्होने भारत पहुचने से पहले ही प्रधानमन्त्री से मुलाकात के लिए समय मांगा। उन्होंने लिखा है कि किसी कारणवश यह भेंट अब तक सम्भव नही हो पाई। डा० कर्णसिंह के अनुसार कूटनीतिक पद के अलावा जम्मू काश्मीर की तेजी से बिगडती स्थिति पर भी उनके कुछ विचार थे जिस पर वह प्रधानमन्त्री के साथ चर्चा करना चाहते थे।

डा० कर्णसिंह ने लिखा है कि वह पिछले ४० वर्षों से सार्वजनिक जीवन से जुडे हुए है और इस बीच उनको पांच प्रधानमन्त्रियों के साथ काम करने का अवसर मिला। उन्होंने कहा कि मेरे जीवन का दर्शन पद लिप्सा नही रही है बल्कि जिस जगह भी रखा जाऊ वहा गरिमा जीवन्तता एव समर्पण के भाव से काम करना है।

उन्होंने लिखा है कि मैंने अमेरिका मे अपने संक्षिप्त प्रवास के दौरान काम का पूरा लुत्फ उठाया और विदेशमन्त्री के कहने पर मैं राजदूत के पद से इस्तीफा दे रहा हूँ।

अपील

आर्य समाज झिंझाना जि० मुजफ्फरनगर मे आर्य समाज का एक प्लाट है। इस पर विधर्मियों और समाज विरोधी लोगो ने कब्जा करने का प्रयत्न किया था कई वर्षों तक मुकद्दमा चला और अब उच्चतम न्यायालय से आर्य समाज को न्याय मिल गया है। आर्य समाज की ओर से प्लाट की चारदीवारी तथा यज्ञशाला का निर्माण हो चुका है। अतिथिशाला प्रचार भवन तथा अन्य निर्माण के लिए बहुत बड़ी राशि की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस कार्य मे अधिक से अधिक सहयोग करें। अपना बैंक ड्राफ्ट आर्य समाज झिंझाना के नाम पर पंजाब नेशनल बैंक झिंझाना शाखा का बनवाकर भिजवाने की कृपा करें। आर्य समाज सहयोगी बन्धुओ के प्रति हार्दिक आभारी रहेगा।

अशोक [illegible]	[illegible]
प्रधान	मन्त्री

मोही के निर्मोही को मेरा शत शत प्रणाम

११ जनवरी को श्रद्धेय श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जन्म दिन था। यद्यपि उनका जन्म लुधियाना के समीप मोही नाम के एक गांव में हुआ था परन्तु वह अपना सारा जीवन भर निर्मोही रहे। किसी के साथ उनका ऐसा मोह न था जिसके कारण वह अपने जीवन के उद्देश्य को छोड़ सकें, मोही का भी एक इतिहास है। स्वामी जी महाराज के पिता जी उनके जन्म से बहुत पहले राजस्थान में मोही नाम के एक गांव में रहते थे, वहीं रहते हुये उन्होंने बहुत कुछ राजस्थान की वीर गाथाएं भी सुनी थीं उन पर उनका भी प्रभाव था जब वहां सेवा काल समाप्त हो गया तो उसके पश्चात् वह लुधियाना के इस गांव में आ गए और इसका नाम भी मोही रख दिया गया। यहीं स्वामी जी महाराज का जन्म हुआ। यहीं उनका पालन पोषण हुआ और फिर एक दिन वह इसी गांव को छोड़कर चले गये और फिर वापिस नहीं आये। उन्होंने अपना घर-बार क्यों छोड़ा इसकी एक लम्बी कहानी है परन्तु एक सम्पन्न और समृद्ध परिवार को छोड़ जाना किसी के लिये भी आसान नहीं होता। स्वामी जी के पिता अपने बच्चों के लिये जो कुछ भी कर सकते थे, करते थे। उन्हें ऊंची से ऊंची शिक्षा भी देना चाहते थे और वह शिक्षा प्राप्त करते करते ही स्वामी जी महाराज कुछ साधु सन्तों के सम्पर्क में आ गये और इनके साथ से उनके जीवन में कुछ ऐसा परिवर्तन हुआ कि वह अपना घर बार छोड़ कर चले गये। उस समय तक उनका विवाह भी हो चुका था यद्यपि उनकी कोई सन्तान न थी परन्तु युवा पत्नी का आकर्षण भी उन्हें न रोक सका। उस समय तक स्वामी जी महाराज को यह भी पता न था कि उनसे बहुत पहले एक और युवक ने भी अपना घर इसी तरह छोड़ा था और जब आगे चल कर उन्हें उसी युवक के विषय में पता चला तो स्वामी जी महाराज ने अपने आपको महर्षि दयानन्द को सर्पमित कर दिया और फिर अपने जीवन का एक-एक क्षण महर्षि की विचारधारा के प्रचार व प्रसार में लगा दिया।

श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जन्म एक सिख परिवार में हुआ था। छोटी आयु में वह अपने घर में गुरुवाणी का पाठ भी सुना करते थे, उसने भी उन्हें प्रभावित किया था और जब उन्होंने महर्षि दयानन्द के विचारों को सुना तो वह इस परिणाम पर पहुंचे कि दोनों में अधिक अन्तर नहीं है। किसी ने उन्हें सुझाव दिया कि क्यों नहीं वह आर्य समाज के द्वारा अपने देश और समाज की सेवा करते। उस समय तक स्वामी जी महाराज के विचारों में क्रान्ति आ चुकी थी। पहले वह गुरुग्रन्थ साहेब का पाठ किया करते थे फिर उन्होंने साथ-साथ गीता का पाठ भी प्रारम्भ कर दिया और कुछ समय के पश्चात् उन्होंने वेदों का अध्ययन भी प्रारम्भ कर दिया। इस प्रकार उनका व्यक्तित्व दो नदियों का संगम बन गया। गुरुवाणी और वैदिक विचार धारा। इन दोनों ने मिल कर हमें स्वतन्त्रानन्द दे दिया।

आर्य समाज के पिछले १०० वर्ष के इतिहास में कई उन महान् व्यक्तियों का जिकर आता है जिन्होंने आय समाज की सेवा के लिये अपना सर्वस्व लगा दिया था और उनमें कई बड़े बड़े संन्यासी भी थे। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज, स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज, श्री नारायण स्वामी जी महाराज और कुछ अन्य भी थे। श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज की गणना उन्हीं सन्यासियों में होती है जिन्होने अपनी अद्वितीय योग्यता, तप और त्याग से मानवता की सेवा की थी। यदि हम उनके विषय में कुछ लिखने लगे तो एक बहुत बड़ा ग्रन्थ बन जायेगा। मेरे विचार में आयसमाज में किसी दूसरे सन्यासी, नेता या उपदेशक ने देश देशान्तर मे आर्यसमाज का इतना प्रचार न किया होगा जितना कि स्वामी जी महाराज ने किया था। वह बर्मा गये, मोरिशस गये, दक्षिण अफ्रीका गये, सिंगापुर गये और कई दूसरे देश में भी उन्होंने जाकर वैदिक धर्म का प्रचार किया। अपने देशों में तो उन्होंने कोई प्रान्त न छोड़ा था, जहां वह न पहुंचे हों। उन्हें जहां कोई बुलाता था, वह वहां पहुंच जाते थे और उनके जीवन के अन्तिम दिनों में स्थिति यह थी कि जितने निमन्त्रण उन्हें प्राप्त होते थे उन सब को पूरा करना उनके लिये सम्भव न होता था। कई बार सोचता हूँ कि कहीं उनकी अन्तिम बीमारी का कारण यही तो न था। उन्हे अपने आप पर इतना संयम था कि एक निश्चित कार्यक्रम में निश्चित समय के अनुसार उनकी प्रति दिन की जीवनचर्या चलती थी। वह दिन के बारह बजे के बाद भोजन नही किया करते थे, जिस दिन मिल जाये तो भोजन कर लिया करते थे, न मिले, न किया करते थे। कई बार भिक्षा मांग कर भी भोजन किया करते थे ऐसे सन्यासी बहुत कम मिलेंगे, जिन्होंने ऐसा कठोर जीवन व्यतीत किया हो जैसा कि श्री स्वामी जी महाराज ने किया था।

स्वामी जी ने अपनी गतिविधियां केवल धर्म प्रचार तक ही सीमित न रखी थी। वह एक महान् देश भक्त थे इसलिये उन्होंने आजादी की लड़ाई में भी सक्रिय भाग लिया था। इसी संघर्ष में आकर उस समय की सरकार ने उन्हें पकड़ कर लाहौर के शाही किले में बन्द कर दिया था क्योंकि स्वामी जी महाराज का अपना जीवन संघर्षमय था। इसलिये जब एक बार लोहारु रियासत मे धर्म प्रचार को रोकने का प्रयास किया गया तो स्वामी जी महाराज ने वहां जाकर भी सत्याग्रह किया था। वहा पुलिस की लाठिया खाकर वह पूरी तरह जख्मी भी हो गये परन्तु उस वक्त तक उन्होने रियासत को न छोड़ा जब तक जिस उद्देश्य को पूरा करने के लिये वह वहा गये थे, वह पूरा न हो गया।

स्वामी जी महाराज की दूसरी अग्नि परीक्षा १६३६मे हैदराबाद में हुई जब वहां निजाम के विरुद्ध सत्याग्रह शुरु हुआ। उसके सचालक महात्मा नारायण स्वामी जी थे परन्तु वह यह दायित्व उठाने को तब तक तैयार न हुये जब तक उन्होंने श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज को अपना सहायक बनाने के लिये तैयार न कर लिया। यह सत्याग्रह लगभग छः माह चलता रहा और इतना समय स्वामी जी महाराज, महात्मा नारायण स्वामी जी के साथ शोलापुर और हैदराबाद में ही रहे।

जैसा कि मैंने ऊपर लिखा है, स्वामी जी पर दो विचारधाराओं का प्रभाव था गुरुमत और वैदिक धम, वह दोनो मे अधिक अन्तर

(शेष पृष्ठ ६ पर)

मदुरै में आर्यसमाज मन्दिर का शिलान्यास

मदुरै। दक्षिण भारत में आर्यसमाज के प्रचार संयोजक श्री एम० नारायण स्वामी ने जानकारी देते हुए कहा कि आगामी २३ जनवरी को बड़े उल्लास के साथ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती मदुरै में आर्य समाज मन्दिर का शिलान्यास करेंगे। इस समारोह की अध्यक्षता हैदराबाद के प्रमुख सेनानी और आर्य वीर पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव जी करेंगे।

श्री नारायण स्वामी जी ने बताया कि मीनाक्षीपुरम् में हरिजनों के इस्लामीकरण के पश्चात् आर्य समाज दक्षिण भारत में विशेष रूप से जागरूक होकर वैदिक धर्म के प्रचार में लगा हुआ है। मदुरै में गत वर्ष लगभग दो लाख रुपए की भूमि आर्य समाज मन्दिर के निर्माण के लिए क्रय की गई थी, अब इसमें भवन निर्माण की योजना चल रही है। —प्रचार विभाग

दक्षिण भारत प्रचार केन्द्र

एक आदर्श संन्यासी

लेखक : श्री स्वामी सर्वानन्द सरस्वती अध्यक्ष यति मण्डल दयानन्द मठ दीना नगर

सन् १९२५ मे जन्म शताब्दी मथुरा में हुई। उसी समय आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने लाहौर में उपदेशक विद्यालय बनाने का निश्चय किया। इसका आचार्य पद ग्रहण करने के लिए सभा ने पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज से प्रार्थना की। सभा अधिकारियों ने स्वामी जी महाराज से कहा, भोजन का प्रबन्ध हम करेंगे, इसे आप स्वीकार करने की कृपा करें। स्वामी जी महाराज ने कहा, मेरे भोजन का कोई प्रबन्ध न करें और स्वामी जी महाराज विद्यालय मे रहते हुए १२ वर्ष तक एकबार ही दोपहर भिक्षा का भोजन करते थे। प्रातः सायंकाल दूध आदि का कोई प्रबन्ध नहीं था कईवर्ष तक सभा के वेद प्रचार अधिष्ठाता भी रहे। शनिवार, रविवार को आर्यसमाज के उत्सव भुगताने के लिए आर्यसमाजों का प्रोग्राम बना लेते थे। एक बार स्वामी जी स्टेशन पर गये और पैसे देकर बाबू से कहीं का टिकट मांगा, बाबू ने कहा स्वामीजी महाराज आपके पैसे कुछ कम हैं। स्वामी जी ने कहा, जहां का टिकट इतने पैसो से मिलता है वहां का दे दो। हम वहीं जाकर धर्म का प्रचार करेंगे। यह कितना ऊंचा आदर्श है धर्म प्रचार का।

स्वामी जी महाराज दूसरों को किसी कार्य के लिए कहने की बजाय पहले स्वयं उसको करते थे। उपदेशक विद्यालय के आरम्भ की एक घटना है, मलेरिया के दिन थे बहुत से विद्यार्थियो को ज्वर आ रहा था, जो स्वस्थ विद्यार्थी थे वे उन रोगी विद्यार्थियो की सेवा करते थे। समय पर दूध; खिचड़ी आदि देते और पात्र रोगियों के पास ही पड़े रहते। इस प्रकार रोगियो के पास बहुत से जूठे बर्तन जमा हो गये। स्वामी जी महाराज रोगियो को देखने आये तो उनके समीप जूठी थालियां, गिलास-कटोरियां पड़ी थीं। स्वामी जी महाराज ने किसी विद्यार्थी को भी बर्तन उठाकर मांजने को नहीं कहा। अपितु सारे बर्तन एकत्रित करके थोड़ी दूर पर स्नानागार और कुआं था वहां ले जाकर साफ करने लग गये। वहां पर बहुत से लोग स्नानादि करने आये थे। कई लोग और विद्यार्थी स्वामी जी को बर्तन साफ करते हुए देख रहे थे। कईयो ने आगे बढ़कर स्वामी जी महाराज से बर्तन लेने का यत्न किया कि हम साफ करेंगे, किन्तु स्वामी जी ने उनकी एक न सुनी और बर्तन स्वयं साफ करते रहे। इस प्रकार सब बर्तन धो मांजकर भोजनशाला मे रख दिये। उस दिन के पश्चात कोई पात्र कहीं पर जूठा न देखा गया। जो विद्यार्थी जिस रोगी को दूध दवा आदि देता तुरन्त उन बर्तनो को साफ करके उचित स्थान में रख देता। यह था स्वामी जी महाराज का उपदेश देने का एक बहुत उत्तम प्रकार, जो कभी निरर्थक नहीं जाता था।

जिन दिनो स्वामी जी महाराज वेद प्रचार अधिष्ठाता भी नहीं थे उन दिनो भी शनिवार इतवार को समाजो के उत्सव भुगताने प्रायः जाते थे। और कई बार स्वामी वेदानन्दजी भी साथ होते थे। सभा के भजनोपदेशक श्री भक्तराम जी ने अम्बाले के आसपास की एक आर्य समाज की घटना सुनाई। आर्य समाज के उत्सव पर कई उपदेशक और भजनीक पहुँचे हुए थे। प्रातःकाल स्वामी जी महाराज ने उपदेश दिया, दोपहर तक अन्य व्याख्यान और भजन भी हुए। भोजन के समय एक आर्य सज्जन ने कहा; आप सब का भोजन मेरे घर पर होगा कृपा करके मेरे साथ चलिए। सभी उपदेशक तथा स्वामी जी महाराज उस व्यक्ति के साथ भोजन के लिए उसके घर पर पहुँच गए। उस व्यक्ति ने भोजन के लिए सबको आसन पर बैठा दिया और सबके सामने थालियों में थोड़ी-थोड़ी सब्जी और एक-एक फुलका रखकर कहा महाराज सब भोजन करो और फिर वह अन्दर घर मे चला गया हमने समझा और रोटी लाने गया है हमने एक-एक फुलका खा लिया और शेष का इन्तजार करते रहे, किन्तु वह व्यक्ति लौट कर आया ही नहीं, हम सब थोड़ी देर बैठे रहे, हमें उसके इस व्यवहार पर दुःख और क्रोध था किन्तु स्वामीजी महाराज ने कहा कोई विशेष कारण हो गया होगा जिससे वह लौट कर नही आया। कोई बात नहीं अबको सायंकाल खा लेना। इस प्रकार स्वामीजी महाराज ने हम सबको शान्त किया। उपदेशकों ने स्वामी जी महाराज से निवेदन किया कि महाराज हम तो सांयकाल खा लेंगे किन्तु आप तो कल दोपहर तक भूखे रहेंगे, क्योंकि आप तो सांयकाल भोजन नहीं करते। स्वामी जी ने कहा ऐसा होता है, कोई बात नहीं। कितनी सहनशीलता है संन्यासी की। एक-एक शब्द उपदेश दे रहा है।

स्वामीजी महाराज सन्यासी होते हुए बहुत बड़े प्रबन्धक भी थे। सच्चाई के लिए किसीका लिहाज नहीं करते थे उनमें कठोरता भी थी और कोमलता भी बहुत थी। यदि कोई हृदय से अपने अपराध को मानकर क्षमा मांग लेता तो उसके पश्चात उसे कुछ नही कहते थे। उपदेशक विद्यालय में एक विद्यार्थी ने दूसरे विद्यार्थी के सिर मे कुल्हाड़ी मारी। प्राण घातक जख्म था उसके सिर में। तुरन्त डाक्टरों को बुलाया गया और बहुत यत्न करने पर वह विद्यार्थी बच सका। मारने वाले को बुलाया और उससे पूछा तूने क्यों मारा वह विद्यार्थी रोने लगा और कहने लगा महाराज उसने मुझसे ऐसी बात कह दी जिससे मुझे क्रोध आ गया और मैं अपने को सम्भाल नहीं सका मुझे क्षमा करें मैं भविष्य मे ऐसी गलती नहीं करूंगा। इससे आगे स्वामी जी महाराज ने कुछ भी नहीं कहा, कितनी क्षमा शीलता है सन्यासी की।

लाहौर छावनी आर्यसमाज मे उत्सव के समय में सर्वधर्म सम्मेलन रखा हुआ था। सभी लोग पर्याप्त से अपने-अपने मजहब धर्म की विशेषताओं का प्रतिपादन कर रहे थे। मुसलमान भी अपनी बारी में बोल चुके थे। किन्तु अन्त मे उन्होंने फिर समय मांगा जबकि सम्मेलन का समय समाप्त हो चुका था। स्वामी जी महाराज के इंकार करने पर मुसलमान फसाद करने पर तैयार हो गये। स्वामीजी महाराज ने खड़े होकर कहा समय नहीं मिलेगा। बहुत हल्ला-गुल्ला होने लगा, स्वामी जी महाराज ने बड़ी ऊंची आवाज से लोगों को सम्बोधन करके कहा सम्मेलन समाप्त हो गया सब लोग यहां से चले जाएं। स्वामी जी महाराज के स्वभाव में भय के लिए, अनियम के लिये, असत्य के लिये कोई स्थान नही था। उनका जीवन एक खुली किताब थी उसे किसी ओर से भी देखें पूर्णता मिलेगी। जिस धर्म और काम ने बड़े बड़ों का धैर्य हिला दिया है वे स्वामी जी महाराज के चाकर थे। हैदराबाद सत्याग्रह की सफलता में स्वामी जी महाराज के धैर्य; उनके तप; उनकी सूझ-बूझ का भी एक भाग है।

स्वामी जी महाराज ने एक दिन बातचीत करते हुए सुनाया था कि सत्याग्रह के समय कार्य की इतनी भीड़ थी कि एक बार तीन रात तक सोने का समय नहीं मिला चौथी रात्रि में निद्रा ने दबा लिया और थोड़ी देर सोना पड़ा। स्वामीजी के स्वभाव में निंदा और स्तुति ये दोनों नहीं थी अपने किये काम कभी जितलाते नहीं थे कि हमने ये काम किया है। बड़ी से बड़ी गर्मी में उन्होंने कभी हाथ में पंखा नहीं लिया। पसीने को परने से पूछ लिया करते थे। शीत काल में कभी भी अग्नि नहीं तापी और न कोई गर्म कपड़ा पहना। शिमला जाएं चाहे जोगमर जाएं रात्रि को अपने एक कम्बल मे ही सोते थे। एक बार मठ मे एक निर्मला साधु आया जो बहुत तपस्वी था सर्दी के दिनो मे एक चद्दर मे ही सोता था, दिन में उसी चद्दर को ही लपेट लेता था। यह साधु प्रायः स्वामी जी महाराज के पास बैठा रहता था और रात्रि में स्वामी जी महाराज की कुटिया में चटाई पर पड़े हुए, ओढ़ कर सो जाता। उसने मठ निवासियो से कहा मैं बहुत साधुओं, महन्तों, मण्डलेश्वरों के समीप रहा हूं वे लोग थोड़ी देर के बाद कह देते हैं कि जाओ अपना काम करो, यहां क्या बैठे हो किन्तु मैंने स्वामीजी महाराज जैसा कोई महात्मा नहीं देखा। इनके पास कोई बैठा रहे या चला जावे, ये कभी कुछ नहीं कहते उनके जीवन में कुछ ऐसी बातें होती हैं जो दूसरों से छुपाकर रखनी पड़ती हैं किन्तु स्वामी जी महाराज का तो एक ही जीवन है जिसमें छुपाने की कोई बात ही नहीं। स्वामी जी महाराज के इस प्रकार के जीवन को देखकर वह एक कट्टर आर्य समाजी बन गया और जहां कहीं जाता है आर्य समाज का यशोगान करता है, और आर्य समाज का वैदिक धर्म का प्रचार करता है। स्वामी जी महाराज के सम्पर्क में जो भी आया वह

(शेष पृष्ठ ९ पर)

वेदों का दुनिया में महत्व

श्री कुलभूषण आर्य, कलकत्ता

वेदम् मे वेदम् पुरुषम् महान्तम् आदित्य वर्णम् तमसा परस्तात् तुमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्या पन्था विद्यते अनाय ॥

जब हम इस विषय को आरम्भ करतें हैं तो हमें बहुत बातों का ध्यान रखना पडता है। सबसे महत्वपूर्ण है कि वेद क्या है? प्रभु ने यह ससार बड़ी ही बुद्धिमत्ता से रचा है और ससार की हर वस्तु (पदार्थ) प्रभु के बनाये नियमों के अनुसार चल रही है न केवल संसार में जड़ वस्तुएं परन्तु पशु पक्षी भी उसी नियम का पालन कर रहे हैं। फिर मनुष्य कैसे प्रभु के नियमों ,को अनदेखी कर सकता है। यद्यपि मनुष्य प्रत्येक वस्तु के बारे में भिन्न प्रकार से सोचता हैं परन्तु मनुष्य प्रभु की कृपा के बिना कुछ नही कर सकता। इसलिये प्रभु ने मनुष्य को वेद ज्ञान द्वारा मार्गदर्शन दिया।

आज का मानव सोचता है कि मैं संसार में जो चाहूँ कर सकता हूँ और कभी-कभी मानवता को समूल नष्ट करने की बात भी सोचता है। प्रभु संसार में कई चीजों का निर्माण करता और समाप्त भी करता है। संसार की प्रत्येक वस्तु इसके अन्तर्गत आ जाती है। प्रभु के तरीके अद्भुत हैं जो मनुष्य की बुद्धि से परे की चीज है। राजा, महाराजा, योद्धाओं को मृत्यु के पीछे भी प्रभु ही का नियम काम कर रहा है। मनुष्य कभी मृत्यु के बारे मे सोचता नहीं परन्तु वह मरता है। मनुष्य को सगे सम्बन्धी और प्रत्येक वस्तु को छोडकर एक न एक दिन चला जाता है क्योंकि यह भी प्रभु के नियम के अन्तर्गत है।

मनुष्य प्रभु की शक्ति को नहीं जानता, बहुत कम लोग प्रभु की शक्ति के बारे में जानते हैं और उन शक्तियों की पुष्टि करते हैं क्योंकि उन्होने प्रभु को जाना है। मनुष्य प्रभु मे विश्वास नही रखता क्योकि वह उसे नही देख सकता है। प्रभु बड़े-बड़े कामों को करता है परन्तु मनुष्य की पहुंच कम होने के कारण वह उस प्रभु को बहुत कम जानता है। वेद कहते हैं कि उस प्रभु की शक्तियों को जानो। इस दुनिया में मनुष्य के अलावा उस प्रभु की शक्तियों को कोई नही जान सकता। वेद मनुष्य की आन्तरिक शक्तियो को प्रज्ज्वलित करते हैं ताकि मनुष्य उस प्रभु को जान सके।

वेद का दूसरा महत्व यह है कि वह मनुष्य को अपनी आत्मा के ज्ञान के लिये सामर्थ्यवान बनाते हैं। वह क्या है, क्या वह केवल शरीर है या इससे आगे भी कुछ और है। वेद कहते हैं कि मनुष्य का आत्मा मरता नही, परन्तु मनुष्य मरता हुआ दृष्टिगोचर होता है। वह कौन सी चीज है जो शरीर के मर जाने पर भी नहीं मरती। यद्यपि यह जानना बहुत कठिन है कि कौन मरता है और कौन नही मरता। वेद इस बात को प्रकट करते हैं और सब प्रश्नों का उत्तर वेद के पास है।

यह मनुष्य की धारणा है कि मनुष्य, पशुओं के स्वरूप से धीरे-धीरे मनुष्य के रूप में आया। मनुष्य ने यह भी धारणा बना रखी है कि ज्ञान मनुष्य के जन्म के बाद आता है परन्तु इसमें कुछ भी सच्चाई नहीं है। मनुष्य की दोनों धारणाएं मिथ्या हैं क्योंकि मनुष्य सृष्टि के निर्माण के बारे में नहीं सोचता। मनुष्य को सबसे पहले यह सोचना चाहिए कि बिना बनाये कोई चीज बनती नहीं।

आइये हम इस संसार के बारे में वेद से अलग होकर सोचें और कैसे वेद मनुष्य की स्थिति में सुधार ला सकता है और कैसे वेद, मनुष्य को, वेद और प्रभु के बारे मे जानने के बाद प्रसन्नता और आत्म अनुभूति होती है। संसार भौतिक और जड़ परमाणुओं से बना है और चेतन का भला जड़ परमाणु क्या कर सकते हैं। चेतन का भला चेतन केवल ज्ञान द्वारा कर सकता है। प्रभु जो चेतन है यह परमचेतन प्रभु अपने ज्ञान वेद द्वारा मनुष्य को अपनी शक्तियों को सही रूप में समझने का ज्ञान देते हैं अन्यथा मनुष्य ससार में आकर ज्ञान रहित कुछ भी न कर पायेगा।

वेद का तीसरा लाभ, प्रभु के प्रसाद के रूप में है। प्रभु ने सृष्टि के आदि में वेद मनुष्य के हृदय में प्रतिष्ठित किये और चारों वेद चार ऋषियों के अन्त:करण में प्रतिष्ठित किये गये। वेदका अर्थ ज्ञान है, वह ज्ञान जो सामान्य ज्ञान से ऊंचा है। यह प्रभु की वाणी ज्ञान के रूप में है ताकि मनुष्य जान सके, प्रभु अपने और संसार के बारे में। आगे वेद तीन अनादि सत्ताओं के बारे में बतलाते हैं और इनका आपसी सम्बन्ध क्या है? संसार इन तीन सत्ताओं का मूर्तरूप है। वह है परमात्मा, आत्मा और प्रकृति।

हम प्रभु की रचना को वास्तविक समझते हैं, कुछ समय के लिये, परन्तु रचना अनादि नही है। संसार की प्रत्येक वस्तु नश्वर है और हम देखते हैं कि समय बीतने के साथ-साथ प्रत्येक वस्तु भी नष्ट हो रही है। हम प्रतिदिन के जीवन में देखते हैं कि काल बीतने पर दूध-दही सब्जियां, फल भी नष्ट हो जाते हैं, यदि कुछ दिन पड़े रहें, या इस्तमाल न किये जाय। वेद भगवान कहते हैं कि इन सब नश्वरों में एक पदार्थ है जो अनादि है जिसे हम प्रकृति कहते हैं। जब हम सृष्टि के क्रम को जानने लगते हैं तो मनुष्य यह भी जान जाता है कि शरीर भी नश्वर है परन्तु इस शरीर में भी एक अनश्वर है, अनादि है जो शरीर के साथ मरता नही। वह आत्मा है। इसी प्रकार निर्मित सृष्टि भी नश्वर है परन्तु इस सृष्टि मे भी एक अनादि अनश्वर है जिसे परमात्मा कहते हैं।

मनुष्य के जीवन का वास्तविक ध्येय उस प्रभु को जानना है ताकि हम प्राकृति के बन्धन से मुक्त हो जायें, वेद इस ओर भी इशारा करते हैं। वेद कहते हैं यह तभी सम्भव है यदि हम प्रभु को जाने। प्रभु के जानने का महत्व बहुत अधिक है प्रभु को जान लेने से हम ससार के प्रत्येक निर्मित पदार्थ के बारे मे जान जाते हैं यह लाभ ससार के दूसरे लाभों से कही अधिक है इससे अधिक वेदो की महत्ता और क्या हो सकती है। वेद कहते हैं कि प्रभु को जान लेने से संसार की अधिकतर समस्याओ का समाधान हो जाता है।

यद्यपि यह संसार सम्पूर्ण प्रभु की व्यवस्था में हैं परन्तु आत्मायें भी निर्माण कार्य से सहयोगी हैं।

आत्मा केवल अपने स्वार्थ के लिये इस ससार में निर्माण का कार्य करता है, परन्तु परमात्मा के निर्माण कार्य में उसका अपना-कोई स्वार्थ नही है। केवल निस्वार्थभाव से प्रभु आत्मा के सुख के लिये सारी सृष्टि की रचना करते हैं। यह भी वेद द्वारा प्रतिपादित हैं।

वेद कहते हैं कि प्रभु ने मनुष्य में बड़ी शक्ति दी है परन्तु अपने को प्रभु ने मनुष्य की जानकारी से अलग कर लिया है ताकि मनुष्य दी हुई शक्ति से प्रभु को जान सके, परन्तु मनुष्य का आत्मा सृष्टि में उलझा हुआ अनेक ऐसे कार्यों में लगा है जिसने प्रभु को जानने में पर्दे का काम किया हुआ है।

आज हम संसार मे देखते हैं हर प्रकार का दुख आतंक, भय, आक्रोश, कारण, मनुष्य ने ससार मे अपनी वास्तविकता को नहीं पहचाना और न ही उसने अपने आपको जानने की कोशिश की। जब मनुष्य का आत्मा प्रभु को जाने बिना इस शरीर को छोड़ता हैं, तब मनुष्य का आत्मा अन्धकारमय संसार में योनियो मे चला

(शेष पृष्ठ ९ पर)

रक्त बैंक गन्ना

डा० राजीव लोचन भटनागर

कदाचित आपको मालूम हो कि चीनी में सफेदी लाने के लिए विषैले तत्वों (रसायनों) का प्रयोग किया जाता है। चूंकि जनता सफेदी पर आकर्षित होती है, अतः मिल वालों को अपने ग्राहकों की प्रसन्नता के लिए यह सब कुछ करना पड़ता है। इस प्रकार विषैले तत्वों के प्रयोग से बनी चीनी के प्रयोग करने पर भावनायें भड़कती हैं। अपराध, बलात्कार, हत्यायें बढ़ती हैं। यदि मुझे इन्साफ बनने, आदर्श नागरिक होकर परिवार, समाज और देश में सुख लाने की लालसा हो, तब गन्ने, गुड़, खीरे, देसी खाण्ड का प्रयोग करके देख लें, नक्शा ही बदल जायगा।

सफेद चीनी के प्रयोग से पहले गुर्दे खराब होते हैं, फिर मधुमेह की शुरुआत होती है। शनै शनै हड्डियां गलने लगती हैं। हृदय रोग का कारण भी चीनी का प्रयोग ही है, क्योंकि सफेद चीनी गर्म होने के कारण नस-नस फूंक देती है। रक्त को दूषित कर देती है। इसी से अजीर्ण, अम्लता, पायरिया, पोलियो, जुकाम, दांतो की सड़न, मधुमेह और हृदयरोग होते हैं। वास्तव में चीनी पूरे भोजन की शक्ति को नष्ट कर देती जबकि गुड़ अकेला ही पूरे भोजन की अवश्य पूर्ति करता है।

गन्ने में विटामिन ए० बी० सी० प्रचुरता से पाये जाते हैं। कैल्सियम के कार्बनिक लवण, फास्फोरस, लोहा मैगनीज की मात्रा भी सर्वाधिक होती है।

स्वास्थ्य के लिए कैल्सियम से फास्फोरस की मात्रा दुगने से भी अधिक चाहिये। चीनी फास्फोरस कारक है। चीनी के प्रयोग से उक्त अनुपात उलट जाता है और शरीर में विष की मात्रा बढ़ने से दिल डूबने लगता है। पेट के अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं। जहां गन्ना, गुड़, खाना पचाते हैं वहां चीनी को हमें कठिन परिश्रम से पसीना निकालकर) पचाना पड़ता है।

गन्ना रसों का भण्डार है। पोषक है। इसका रस जिस शरीर में जाता है वैसे ही शुद्ध का रक्त बना कर रक्ताल्पता दूर करता है। शक्तिदायक होने से संक्रामक रोगों से रक्षा करता है। कैसे आश्चर्य की बात है कि गन्ने के रस से गर्मी दूर और गुड़ से सर्दी दूर होती है। गन्ने का ताजा रस स्वादिष्ट, पौष्टिक, एवं रक्त शोधक होता है। सीसिया जवान को भी रक्त, मांस, मज्जा से हृष्ट पुष्ट कर देता है। यह बल-वीर्य पोषक, रतिशक्ति-वर्धक पीले मुख पर लालिमा लाकर नस नस में जवानी का संचार कर देता है। गोदांतो के विकारों को दूर करने के साथ २ दांतो को मजबूत एवं चमकीले मोती जैसा बना देता है। यह फेफड़ो की झिल्ली को मुलायम करता है, भूख और पाचन में सहायक होता है। जाड़ो में चावल की खीर गन्ने के रस में बनाकर खाने पर रक्त बढ़ता है।

गन्ने का शीरा भी बड़ा लाभकारी है। यह भी पौष्टिक होता है। शरीर बलवान बना देता है। यह शुक्र जनक होने के साथ २ वातो की दुर्बलता को दूर करता है।

पुराने गुड़ को दवाई रूप में भी प्रयोग किया जाता है। इसमें विटामिन बी की बहुलता होती है जिसके प्रयोग से स्मरण शक्ति तेज होती है।

लेकिन जोश में होश न खोयें। भोजन के तुरन्त बाद गन्ना न चूसें और न ही रसपान करें।

नये वर्ष में नये रूप में आपके सुन्दर स्वास्थ्य की शुभ कामनाओं सहित—

आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक साप्ताहिक के पाठको से निवेदन है कि जिन सज्जनों ने वार्षिक शुल्क अभी तक कार्यालय में नहीं भिजवाया है, वह कृपया शीघ्र वार्षिक शुल्क भेजकर सहयोग प्रदान करें। मनिआर्डर भेजते समय अपना पूरा पता व ग्राहक संख्या लिखने का कष्ट करें। वार्षिक शुल्क २५)रुपए है।

बार-२ वार्षिक शुल्क भेजने की परेशानी से बचने का सरल उपाय, एक बार २५०) रुपए भेज कर सार्वदेशिक साप्ताहिक के आजीवन सदस्य बन सकते हैं।

—व्यवस्थापक सार्व० साप्ताहिक

वेदों का महत्व

(पृष्ठ ३ का शेष)

जाता है वहां फिर प्रभु को जानने का मौका नहीं मिलता क्योंकि वहां न प्रकाश की बात है न वहां ज्ञान की बात है।

संसार में मनुष्य वेदों से कैसे लाभ उठा सकता है, वेद स्वयं कह रहे हैं, मेरे पास आओ, मैं तुम्हें रास्ता दिखलाऊंगा। मैं तुम्हारी आत्मा में ज्ञान का प्रकाश करूंगा। वेद कहते हैं कि प्रकाश अन्दर से पैदा होता है और वही प्रकाश हमें प्रकाशित करता है। जिसको प्राप्त कर हम दुखों का अन्त कर सकते हैं, प्रभु के पास पहुंच सकते हैं और मुक्ति को प्राप्त कर सकते हैं। प्रभु को जान लेने पर हम मृत्यु के भय को पार कर जाते हैं और दुखों से भी छूट सकते हैं। सब जानते हैं कि हम मृत्यु के हाथों से मुक्त नहीं हैं, मरना जरूर है वेद कहते हैं, मृत्यु को मरने से पहले जानो और उस प्रभु की शरण में आओ, जो हमें इस दुख से छुटकारा दिला सकता है।

वेद कहते हैं कि संसार की प्रत्येक वस्तु को जाने और प्रभु की भक्ति करो, जो सारे संसार का निर्माण करता है और हमें मुक्ति प्रदान करता है क्योंकि ,प्रकृति बन्धन का कारण है परन्तु प्रभु मुक्ति का कारण है। संसार का कोई कानून हमारी मुक्ति के रास्ते को बाधित नहीं कर सकता। संसार में मनुष्य को यह बहुत बड़ा लाभ है। यह लाभ केवल मनुष्य की आत्मा ही उठा सकती है।

उपसंहार—अब हमने वेदों के महत्व को जान लिया है, इस संसार में। ज्ञान, वेद, हमें हर प्रकार की चिन्ता से मुक्त करते हैं। और हमारे मृत्यु भय का निवारण करते हैं। वेद, क्योंकि हर चीज का सच्चा ज्ञान है, हमें अज्ञान से ज्ञान की ओर अन्धकार से प्रकाश की ओर मृत्यु से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

प्रभु ने वेद का ज्ञान हमें सृष्टि के आरम्भ में दिया है। हमारे पूर्वज बहुत विद्वान् थे और उन्होंने वेदों के महत्व पर अपनी मोहर लगा दी है। अब यह मनुष्य पर निर्भर करता है कि वह संसार में अपने मार्ग का स्वयं चुनाव करे। संसार में दोनों रास्ते मनुष्य के लिये खुले हैं।

यह सत्य बात है कि मनुष्य संसार में लाभ के लिये पैदा हुआ है। वेद हमें उस लाभ का वास्तविक ज्ञान कराते हैं। सारे लाभ प्रभु की ओर से आते हैं और प्रभु ही सारे लाभों का उद्गम स्थान है। हमें प्रभु सब वस्तुएं प्राप्त कराते हैं और मनुष्य भौतिक और आध्यात्मिक ज्ञान का लाभ उठा सकता है, इसमें भय कुछ भी नहीं है।

प्रभु को क्यों जाने, यह सत्य है कि इस संसार के निर्माण में प्रायः दो अरब साल (१ ९७,४९ २९०८९) व्यतीत हो चले हैं। यह बहुत अधिक समय है। मनुष्य का आत्मा बार-बार जन्म के कारण प्रकृति के बन्धन में रहा है उसने हमेशा अज्ञान का सामना किया है, इस कारण मनुष्य का अन्तर्मन बुराइयों के, अज्ञान के कारण बहुत गन्दा हो गया है। हमें अपने अन्तर्मन को साबुन से साफ करना होगा और वह साबुन है प्रभु का नाम। इसके साथ हमें सत्य का आचरण भी करना होगा। हमें यम और नियमों का पालन भी करना होगा। शनैं शनै, धीरे-धीरे, फल का प्रकाश सामने उपस्थित होगा। हमें धैर्य रखना होगा, अन्ततः हम कठिनाइयों पर काबू पा लेंगे। यही वेद का आदेश है और किसी वस्तु को जान लेने से इसकी आध्यात्मिक प्राप्ति भी होती है और वेद का अनुसरण करने से प्रभु का दर्शन भी होता है।

रुबिया अपहरण कांड पर केन्द्र सरकार की खामोशी खतरनाक सिद्ध हो सकती है

—एम. जे. अकबर

आखिर कु० रुबिया सईद के अपहरणकर्ताओं के बारे में कोई अब रुचि क्यों नहीं ले रहा ?

स्पष्ट रूप से यह एक ऐसा मामला है, जिसमें कोई भी अत्यन्त विवेक और सावधानी के साथ ही आगे कदम उठा सकता है क्योंकि इस दुखद कांड से एक व्यक्तिगत व भावनात्मक तत्व भी जुड़ा हुआ है। कु० रुबिया सईद के अपहरण से न केवल सारा देश और सरकार ही स्तब्ध रह गये बल्कि इसमें उस पिता की चिंता व दुख भी शामिल थे, जिन्होंने कि इस सारे कांड के रहस्यों से पर्दा उठाने में महत्वपूर्ण व निष्पक्ष भूमिका निभानी थी। खैर, जब केन्द्रीय गृहमन्त्री मुफ्ती मोहम्मद सईद की पुत्री अपने पिता की बाहों में वापस लौट आई तो उनकी पार्टी के सभी कार्यकर्ताओं, नेताओं तथा अन्य सभी लोगों ने राहत की सांस ली।

राष्ट्रीय मोर्चा सरकार को शायद अच्छी तरह यह राय दी गई है कि वह इस मामले को अब यहीं पर छोड़ दे।

किसी भी अपहृत व्यक्ति के साथ दो प्रकार के व्यवहार किये जाते हैं। या तो उसकी आंखों पर पट्टी बंधी रहती है, जिससे कि वह अपने अपहरणकर्ताओं तथा उनके स्थान, रास्ते व उनकी गतिविधियों के बारे में कुछ भी नहीं जान सके। क्या कु० सईद की आंखों पर पट्टी बांधी गई थी ? अगर नहीं, तो फिर देश को उन्हें वह सब विवरण बताना चाहिए, जिससे कि उनका अपहरण करने वालों को पकड़ा जा सके तथा उन्हें दंडित किया जा सके। वह इस प्रकार के सामान्य विवरण तो बता ही सकती हैं, जैसे कि—वह कौन सा वाहन था जिसमें बिठाकर उन्हें उनके अपहरणकर्ता ले गये थे ?

—वह कौन सा रास्ता था जिससे उन्हें ले जाया गया ?

—क्या उन्हें श्रीनगर में ही छुपाया गया या उन्हें अन्यत्र कहीं ले जाया गया ?

—वह कौन सी जगह थी जहां उन्हें अपहरण करने के बाद रखा गया था ?

—वह अपने अपहरणकर्ताओं को शायद पहचान न पायें, या उनके नाम न बता पायें, पर वह उनका हुलिया तो बता ही सकती हैं। जब उन्हें बंधक बना कर रखा गया तो उनके साथ क्या गुजरी ? उनके लिए खाना कौन लाता था ? क्या उन्हें किसी परिवार के पास रखा गया था ?

—क्या यह केन्द्र सरकार का कर्त्तव्य नहीं था कि वह इस कांड के बारे में बाद में भी जांच पड़ताल व अन्य कार्रवाई करती ? आखिर क्या कारण था कि उन्हें जिस जगह बंधक बना कर रखा गया था उस जगह पर छापा नहीं मारा गया ?

—कुमारी सईद के अपहरणकर्ताओं पर निगाह रखने व उन्हें पकड़ने के लिए क्या कदम उठाए गए ? क्या वे अपराधी और राष्ट्रद्रोही नहीं हैं ? सरकार ने अचानक उन लोगों का पता लगाने के कार्य में रुचि लेना क्यों बन्द कर दिया। जिन्होंने कि एक भारतीय लड़की का अपहरण किया और यह अपहरण इसलिये किया क्योंकि वह लड़की भारत के गृहमन्त्री की पुत्री थी।

—और अन्तिम प्रश्न यह है कि आखिर इस अपहरण कांड की सारी कहानी के बारे में अचानक खामोशी क्यों धारण कर ली गई। क्या यह भी कोई राजनीति तो नहीं है ?

इन प्रश्नों के उत्तर पूछने के पीछे कोई राजनीति नहीं है। सरकार की खामोशी के कारण कुछ चीजें पृष्ठभूमि में घटित होती सी लगती हैं, जो कि काफी खतरनाक सिद्ध हो सकती हैं। कुछ लोगों को इस बात का भ्रम हो सकता है कि दिल्ली में सत्तारूढ़ सरकार अब इस मामले को आगे नहीं बढ़ा रही तो देश के लोग भी खामोशी धारण किए रहेंगे। इस मामले पर कोई भी खामोश नहीं है। हर मोहल्ले, हर चाय की दुकान, हर गांव में इस कांड पर लोग चर्चा करते रहे हैं और अब जब सरकार ने खामोशी धारण कर रखी है तो इस बारे में अनेक अफवाहें प्रचलित हैं। यह अफवाहें खतरनाक भी सिद्ध हो सकती हैं। इस प्रकार के वातावरण में इस प्रकरण को लेकर परस्पर सन्देह की भावनाएं भी उत्पन्न हो सकती हैं और यह एक साम्प्रदायिक स्वरूप भी धारण कर सकती हैं। यह एक कटु सत्य है। इसे रोक पाने का केवल एक ही तरीका है कि देश की जनता के सामने इस सारी कहानी के वास्तविक तथ्यों को सामने लाया जाए। वह तथ्य ऐसे हों कि तर्क की कसौटी पर खरे उतरें और पूर्णत विश्वसनीय हों।

दिल्ली में सत्तारूढ़ सरकार अपनी खामोशी से यही धारणा उत्पन्न कर रही है कि वह कुछ बात छिपा रही है। भगवान करे कि यह बात सच न हो। ●

अनमोल छन्द

लेखक : पण्डित नन्दलाल 'निर्भय' भजनोपदेशक
ग्राम पोस्ट बहीन, जिला फरीदाबाद

आदर्श उपदेशक

उपदेशक के गुण अब सुनलो, सज्जन वृन्द लगा कर ध्यान।
खोटा खरा कौन उपदेशक कर लेना अब सब पहचान ॥
वेद, शास्त्रों का पण्डित हो, स्वाभिमानी, स्वाध्याय शील।
मधुर वचन जो सबसे बोले, सच्चाई की करे दलील ॥
चरित्रवान, ईमानदार जो, वीर, साहसी, ईश्वर भक्त।
सज्जन का सम्मान करे जो, दुर्जन को हो पूरा सख्त ॥
एक बात का ध्यान रखे जो औरों को जो दे उपदेश।
उस अच्छाई को अपने, जीवन में धारे, वीर हमेश ॥
सत्य मार्ग दिखलाये जग को, दुष्टों से ना खावे भय।
"निर्भय' सच्चे उपदेशक की होती है दुनिया में जय ॥

आदर्श नेता

नेता किसको कहते हैं लो, नेता की परिभाषा जान।
जिसमें ये नेता गुण हैं, उसको नेता मान ॥
देशभक्त, ईमानदार, विद्वान, साहसी अरु निर्भीक।
ईश्वरभक्त, सदपथगामी, को नेता कहना है, ठीक ॥
अबला, दीन, अनाथों से जो, करता सदहृदय से प्यार।
मानवता के हत्यारों से, कभी नहीं जो माने हार ॥
पक्षपात से दूर रहे जो, सदा सत्य का देता साथ।
सच्चा नेता वही जगत में, विश्व नवाता उसको माथ ॥

आदर्श पत्रकार

पत्रकारिता की कीमत को, नहीं जानते हैं नादान।
पत्रकारिता का दुनिया में मूल्य बड़ा लो सच मान ॥
देशभक्त, विद्वान, साहसी, समझदार, लेखक, गम्भीर।
संकट में जो फंसे राष्ट्र को, जागरूक करता रणधीर ॥
लालच में ना फंसे कभी भी, आशावादी हो निर्भीक।
ऐसे सच्चे पत्रकार को, पत्रकार कहना है ठीक ॥
सच्चे पत्रकार करते हैं, सचमुच जगती का कल्याण।
नन्दलाल "निर्भय" गाता है, सकल विश्व उनके यश गान ॥

कनाडा की राजधानी आटवा में वेद प्रचार की गूंज

अमरीका के उत्तर मे कनाडा का विशाल देश स्थित है। क्षेत्रफल मे तो यह अवश्य बडा है, परन्तु जनसंख्या बहुत कम है। भारत की भांति वहां पर बढ़ती आबादी की समस्या नहीं है क्योंकि वहा की सरकार योजनाबद्ध ढंग से विस्थापितों को या विदेशों से आने वाले लोगों को बसाती है। ३ मास से अधिक की अवधि वहां ठहरने के फलस्वरूप, मुझे कुछ जानकारी प्राप्त हुई। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि वहां पर दस हजार के आस पास भारतीय रहते हैं। इनमे वे भी शामिल हैं जो अफ्रीकन देशो कीनिया, मोजाम्बिक, युगान्डा तथा दक्षिण अफ्रीका से आकर वहां बस गये। कनाडा की सरकार उदार होने के कारण सभी नागरिको के साथ एक जैसा व्यवहार करती है क्योंकि विधान अनुसार सभी के अधिकार बराबर हैं।

पिछली जनगणना के अनुसार आटवा की जनसंख्या आठ लाख के निकट बैठती है। इन दस हजार भारतीयों में वे भी हैं जो इसी शताब्दी मे भारत से चलकर वहां के नागरिक बन चुके हैं कुछ अन्य देशो से भी आकर इनमे मिल गये। इनकी अच्छी खासी संख्या होने के कारण एक नया संगठन बनना स्वाभाविक बन गया क्योंकि कम संख्या के लोग प्रायः संगठित होकर ही अपनी संस्कृति तथा अधिकारो की रक्षा सुगमता से कर सकते हैं। वे प्राय. गुरुद्वारा मे जाते थे, परन्तु जब गुरुद्वारा में भिण्डरावाला का विशाल चित्र लग गया और जोश भरे प्रवचन आरम्भ हो गए, तो वे वहा से हटकर अपना अलग मंच बनाने पर बाध्य हो गये। डा० जिन्दल ने जो वहा पर एक प्रसिद्ध व्यक्ति हैं, एक एकड़ से अधिक भूमि मन्दिर के निर्माण हेतु इस संगठन को देदी। आज वहां पर एक विशाल भवन "हिन्दू टेम्पल" के नाम से खड़ा हो गया है। इसी मन्दिर मे ही आर्य समाज लगती है। यह स्थान मेरे निवास स्थान से बीस मील की दूरी पर था। परन्तु ऐसे नगर मे जहां घर घर मे कारें हैं, २० मील की दूरी बहुत नहीं मानी जाती। हिन्दू वहां पर बड़ी श्रद्धा एवं निष्ठा के साथ आते हैं।

पहले दिन जब मुझे आमन्त्रित किया गया तो मैंने वेद के एक मन्त्र की व्याख्या की जिसे सब लोगो ने श्रद्धा के साथ श्रवण किया।

रविवार २७ अगस्त १९८९ को मुझे आर्य समाज आटवा मे एक विशेष आयोजन पर आमन्त्रित किया। उस दिन वैदिक कानवोकेशन था। यह प्राय. प्रतिवर्ष किया जाता है जिसमे भारतीय बच्चों को जो १३ वीं कक्षा में ८० प्रतिशत से अधिक अंक लेकर उत्तीर्ण होते हैं, उनको सम्मानित किया जाता है। कनाडा सरकार ऐसे छात्रो को धनराशि के रूप में सहायता देती है। परन्तु आर्य समाज ने इस प्रथा को दीक्षान्त समारोह के रूप में मनाया बच्चो को यज्ञोपवीत दिए गए। उनको इसका महत्व भी बताया गया और मुख्य संस्कारो की महत्ता पर प्रकाश डालने को कहा गया। मैंने स्वामी दयानन्द द्वारा बताए संस्कारों एवं यज्ञो (ब्रह्मयज्ञ देवयज्ञ पितृयज्ञ, अतिथि यज्ञ तथा बलिवैश्व देव यज्ञ) की व्याख्या एवं महत्व बताया। जिसको श्रोतागण बड़ी तन्मयता से सुनते रहे।

श्री बलदेव राज नागी ने जो आर्य समाज आटवा के प्राण हैं, मेरे सुझाव को मानकर 'हिन्दी दिवस' मनाने की बात स्वीकार की। भारत मे हम हिन्दी दिवस १४ सितम्बर को ही मनाते हैं, परन्तु १४ सितम्बर को रविवारीय सत्संग मे हमने यह दिवस मनाया। जब उन्हे बताया गया कि रूस के लोग रूसी भाषा का, जर्मनी वाले जर्मन भाषा का, फ्रांस के निवासी फ्रेंच का, जापान वाले जापानी तथा चीन वाले चीनी भाषा का प्रयोग करते हैं, तो फिर हिन्दुस्तान से आए लोग क्यो न हिन्दी को प्रोत्साहन दें, तो वे इस बात से सहमत हो गए।

यज्ञ एवं हवन को रुचिकर बनाने में श्रीमती फूलादेवी सक्रिय रूप से वहा काम कर रही हैं। जब यज्ञ समाप्त हुआ, तो मेरे प्रवचन के पश्चात एक महिला ने मुझे पहचान लिया, क्योंकि जिस 'डेरावाल पत्रिका' का मैं दिल्ली मे सम्पादन करता हूं, वह उसके पास आटवा में पहुंचती है। जो यजमान बनता है, वह परिवार सत्संग मे आने वाले सभी लोगों के खाने का प्रबन्ध भी करता है। वहां हलवाई या मिठाई की दुकान का रिवाज नहीं, परन्तु महिलाएं घर से खाना आदि पका कर लाती हैं। आपसी सहयोग से महिलाएं काम को बांट लेती हैं और शांति पाठ के पश्चात यह खाना पंक्ति मे आए हुए व्यक्तियो को खिलाया जाता है। यह उनकी श्रद्धा एवं त्याग की भावना को प्रकट करता है।

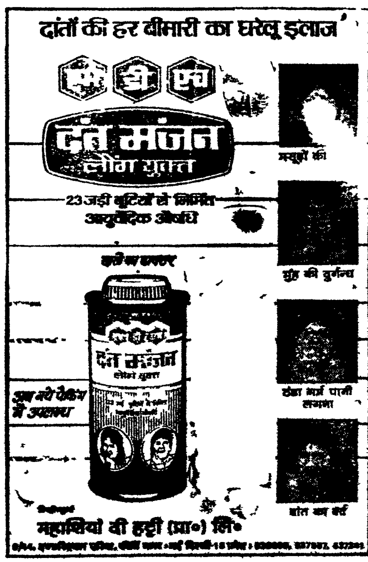
इन भारत वासियो पर वहां की संस्कृति का प्रभाव भी पड़ रहा है। १७ जुलाई को वहां एक नवयुवक अजय सिंघल का विवाह एक ईसाई लड़की सुसान डाबस के साथ हुआ। जिसमें ईसाई तथा हिन्दू रीति रिवाज दोनो अपनाए गए। अजय के माता पिता १९६० से उत्तरी भारत से वहां आप्रवासी बनकर गए थे। अजय का जन्म कनाडा मे ही हुआ था। वह सम्पत्ति बेचने, बिकवाने का धन्धा करता है।

यह भारतीय इस बात से सतर्क हैं कि कहीं उनके बच्चे अपनी संस्कृति को खो न बैठें। उन्होंने मुकुल हिन्दी स्कूल भी १९७१ से खोल रखा है। इसमें लगभग दो सौ छात्र-छात्राएं शिक्षा पाती हैं और भारतीय महिलाएं अध्यापन का कार्य करती हैं। इनसे मुझे साक्षात्कार करने से ज्ञात हुआ कि वे बड़ी लगन के साथ सब बच्चो को हिन्दी पढ़ा रही हैं। कनाडा सरकार इस स्कूल को तथा अन्य ऐसे विद्यालयों को जहां गुजराती, पंजाबी, उर्दू, मलयालम आदि भाषाएं पढ़ाई जाती हैं, आर्थिक सहायता भी प्रदान करती है।

बहुत से लोग जो हिन्दी नहीं जानते, उनके लिए आर्य समाज ने हवन मन्त्र तथा सन्ध्या मन्त्रो को रोमन लिपि में तैयार कराया है और यह काम अफ्रीका के कुछ देशो की सहायता से हुआ है। लगता है कि कीनिया के किसी सज्जन की सहायता से वे ऐसा कर पाए हैं।

—वीर भान वीर

सम्पादक : डेरावाल पत्रिका एवं सर्वीसरवर पत्रिका



आर्य जगत् के समाचार

प्रधानमन्त्री जी मान साहब से पंजाब में मारे गए निरपराध हिन्दू सिक्खों के नाम भी मांग लो ?

अमृतसर—राष्ट्रीय सुरक्षा समिति पंजाब के द्वारा अकाली दल (मान) के अध्यक्ष सिमरनजीतसिंह मान से मांग की गई है कि वह उन हत्यारो की भी सूची तैयार करें। जिन्होने १९८७ से लेकर अब तक राज्य मे ५ हजार सुहागिनो को विधवा किया है।

इसके साथ ही वह उन देश द्रोहियो की भी सूची तैयार करके दें—जिन्होने स्वर्ण मन्दिर परिसर मे मार कर उनकी लाशें वहीं मलबे मे दफना दी गई थी—बाद मे सफाई अभियान मे वह लाशें निकाली थीं।

जगह २ पर उन सिक्खो के नाम लिखे जा रहे हैं जिन्हे पुलिस दल के हाथों मारा गया है। क्या श्री मान ने अपने ससदीय क्षत्र तरनतारन का दौरा भी किया है। जहा देश द्रोहियो ने अनगिनत महिलाओ को विधवा बना दिया उनके बच्चे अनाथ कर दिये। क्या उन्होने इन महिलाओ और बच्चों को दर्द भरी चीखो को कभी सुना है।

पंजाब से हजारो हिन्दू लावारिस रूप मे पीरागढ़ी आदि कैम्पो मे पड़े हैं क्या उनके भी आंसू पोछने का ख्याल आया है उनके भी नाम नोट कर लो।

अनुकरणीय सात्विक सेवा

हैदराबाद जैन भवन, कच्छी भवन में श्री रामचन्द्रराव माधोराव गोपडे हैदराबाद वालो ने चौबीसो घण्टे निरन्तर रहकर देश के कोने-कोने से आये अतिथियो का सही-सही मार्ग दर्शन किया।

श्री आशाराम जी आर्य और श्रेष्ठी श्री पूर्णचन्द स्वामी राजधानी होटल हैदराबाद ने स्वय खडे रहकर निजी वाहनो कारो द्वारा आगत अतिथियो को साथ होटल तथा स्टेशन तक पहुंचाने मे आत्मीय सहायता दी।

—सम्पादक

आवश्यक सूचना

श्री रघुनन्दन प्रसाद आर्य वैदिक पुस्तक विक्रेता, नजीबाबाद वेदमदिर ज्वालापुर जिला हरिद्वार (उ० प्र०) मे लगभग एक वर्ष से रहते थे। इधर तीन मास से उनका कोई पता नहीं चलता है। उनका हुलिया यो है—रग गेहुआ, आयु लगभग ६० वर्ष, सिर व दाढ़ी मे लम्बे बाल, धोती पहनते हैं। उनका सामान आश्रम में है। यदि किसी को कुछ भी पता हो तो कृपया निम्न पते पर सूचित करें— —मन्त्री-वेद मन्दिर

(अशोक चित्रपट के सामने)

ज्वालापुर २४९४०७, जि० हरिद्वार (उ० प्र०)

मोही के निर्मोही

(पृष्ठ १ का शेष)

न समझते थे। सिख इतिहास और गुरुवाणी का जितना अध्ययन उन्होने किया था, बहुत कम व्यक्तियो ने किया होगा। वह चाहते थे कि सत्यार्थ प्रकाश के विषय मे सिख जनता को जो भ्रान्तिया हैं, वह दूर हो जाए। इसलिये उन्होने सत्यार्थ प्रकाश का पजाबी अनुवाद भी किया था। स्वामी जी महाराज का सबसे बडा स्मारक दीनानगर मे दयानन्द मठ है जहा स्वामी जी के परम शिष्य श्री स्वामी सर्वानन्द जी अपने महान् आचार्य के पद चिन्हो पर चलते हुए उनकी परम्पराओ को जीवित रख रहे हैं।

स्वामी जी के जन्म दिन पर मैं उनके चरणो मे अपनी श्रद्धाजलि भेंट करते हुए परम पिता परमात्मा से यही प्रार्थना करता हूँ कि मोही के इस निर्मोही ने अपने तप और त्याग से जो ज्योति जलाई थी वह सदा जलती रहे और हम सबका उसी प्रकार मार्ग दर्शन करती रहे, जिस प्रकार स्वामी जी महाराज अपने जीवन काल में करते थे।

—वीरेन्द्र

पं० मुंशीराम जी शर्मा सोम का देहावसान

कानपुर। संस्कृत हिन्दी तथा वैदिक वाङ्मय के प्रसिद्ध विद्वान सौम्य-मूर्ति सरल स्वभाव वाले प० मुंशीरामजी शर्मा का दिल का दौरा पड़ने पर लम्बी बीमारी के उपरान्त देहावसान हो गया। वह ८९ वर्ष के थे। उन्हे अविलम्ब हृदयरोग सस्थान मे भर्ती कराया गया। काफी समय से बीमार थे।

मान्यवर पडित जी डी० ए० वी० कालेज कानपुर मे हिन्दी विभाग अध्यक्ष एव प्रोफेसर पद से सेवा करते हुए पद निवृत्त हुए थे। अध्यापन कार्य के साथ साहित्यिक सेवा मे पुस्तकें भी लिखी। आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त थे।

श्री पडित जी के परिवार मे दो पुत्र, और दो पुत्रियां हैं। आपका अन्तिम सस्कार गगा तट पर वैदिक रीति से सम्पन्न किया गया।

आपने क्रान्तिकारी आन्दोलनो में भी सक्रिय भाग लिया। भारत की आजादी के लिये अपने प्रिय शिष्यो शिव वर्मा, जयदेव कपूर जैसे युवको को बलिदान की प्रेरणा देने वाले आचार्य सोम आज हमारे मध्य नहीं रहे।

समस्त आर्य जगत उनके निधन से दुःखी है प्रभु से प्रार्थना है कि उन्हे सदगति प्राप्त हो और पारिवारिक जनो को दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

—सच्चिदानन्द शास्त्री

गायत्री महायज्ञ सम्पन्न

नई दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द-बोध सरस्वती ने कहा कि आर्य समाज ने गोहत्याबन्दी, शराबबन्दी व अंग्रेजी हटाओ, भारतीय भाषाए लाओ एक राष्ट्रव्यापी त्रिसूत्री कार्यक्रम देश की प्रगति के लिये शुरू किया हुआ है। यह विचार स्वामी आनन्दबोध ने राष्ट्रीय हिन्दू मच द्वारा आर्य समाज मन्दिर करौल बाग मे हिन्दू चेतना जागरण के लिए आयोजित गायत्री महायज्ञ के अवसर पर अध्यक्षीय भाषण मे व्यक्त किये। स्वामी जी ने आगे कहा कि कश्मीर मे धारा ३७० हटाये जाने की भी आर्यसमाज बहुत पहले से ही माग करता आ रहा है और कोई देशभक्त इस सबसे असहमत नही हो सकता है।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि नव-निर्वाचित सासद श्री कालका दास ने कहा कि उनका दल भारतीय जनता पार्टी धारा ३७० को हटाने, समान सिविल कानून अल्पसंख्यक आयोग के स्थान पर मानवाधिकार आयोग की स्थापना, गोहत्याबन्दी आदि के लिए पूर्णतया वचनबद्ध है। उन्होने कहा कि स्वामी दयानन्द ने सबसे पहले सामाजिक कुरीतियो को दूर करने का अभियान चलाया था उसे और तेज किया जाना चाहिए। मच के अध्यक्ष श्री प्रेमनाथ जोशी एव श्री सुरेन्द्र सिंह ने भी हिन्दू जागरण के सम्बन्ध में प्रेरक विचार प्रकट किये। इससे पूर्व प्रान्तीय आर्य महिला सभा एव भाजपा नेता श्रीमती शकुन्तला आर्य ने अन्य विभिन्न सस्थाओ के पदाधिकारियों के साथ साथ श्री कालका दास जी का पुष्पहारो द्वारा स्वागत किया। समाज के प्रधान श्री अजय भल्ला ने मच सचालन किया।

एक आदर्श संन्यासी

(पृष्ठ ४ का शेष)

स्वामी जी महाराज का श्रद्धालु बन गया और प्रत्येक आने वालो ने, लोगो से यही कहा स्वामी जी मुझसे बहुत प्यार करते हैं। सबको स्वामी जी महाराज उचित ठीक परामर्श देते थे और मनुष्यमात्र के हित की कामना करते थे। ईसाई और मुसलमान भी उनके पास बैठते और अपने जीवन के बारे मे परामर्श लेते। एक बार मुसलमानो के एक नेता मुजफ्फरशाह ने कहा कि काश ! ऐसा महात्मा इस्लाम मे होता तो बहुत बड़ा ऊंचा स्थान पाता। स्वामी जी महाराज का जीवन प्रत्येक मनुष्य के लिये मार्ग दर्शन की एक खुली किताब है। प्रभु आर्य समाज को इस प्रकार के अनेक सन्त प्रदान करे, जिससे आर्यों तथा उनके द्वारा मनुष्य मात्र का कल्याण हो सके। ●

शोक समाचार

—श्री ब्रह्मानन्द जी जिज्ञासु, भूतपूर्व पुस्तकाध्यक्ष (आर्य समाज, मुजफ्फरपुर) के प्रमुख कर्मठ समाज-सेवी एवं धार्मिक विचारधारा के पालक विष्णुदेव नारायण जी (आर्यसमाज मुजफ्फरपुर के सदस्य) का निधन दिनांक २-१२-८९ शनिवार को ११ बजे दिन मे अकस्मात् हो गया।

आर्य समाज, मुजफ्फरपुर के रविवारीय अधिवेशन मे शोक प्रस्ताव पारित करके दिवंगत आत्मा की सद्गति की प्रार्थना तथा शोक-संतप्त उनके परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट की गई।

—विद्यानन्द दूबे मन्त्री
आर्य समाज मुजफ्फरनगर

—आर्य समाज सण्डीला के प्रबल समर्थक वरिष्ठ समाज सेवी एवं दानवीर पूर्व कोषाध्यक्ष एवं उपप्रधान श्री बाबूरामजी का आकस्मिक निधन दिनांक १८-८-८९ को रात्रि ११ बजे हो गया है। आर्य समाज सण्डीला शोक व्यक्त करता है।

—आर्य समाज सण्डीला के अनुयायी एवं वर्तमान कोषाध्यक्ष श्री त्रिभुवनदयाल जी के वयोवृद्ध पिता बलदीनजी का निधन दिनांक २१ ७।८९ को सायं ३-३० बजे हो गया है।

उपरोक्त दिवंगत आत्माओं को शान्ति प्रदान करने के लिए आर्यसमाज सण्डीला परमात्मा से प्रार्थना करती है।

—सत्यप्रकाश मन्त्री
आर्य समाज सण्डीला

—श्री कालूसिंह जी भाटी कार्यकर्ता प्रधान महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास, जोधपुर, की कार दुर्घटना मे आकस्मिक मृत्यु हो जाने के कारण स्मृति भवन मे सभी सभाओ की शोक सभा आयोजित की गयी। शोक सभा की अध्यक्षता श्री रमेशचन्द्र जी भाटिया ने की। शोक सभा मे अपने विचार प्रकट करते हुए विभिन्न वक्ताओ ने श्री कालूसिंह भाटी को महान समाजसेवी, दानी, साम्प्रदायिकता का सच्चा विरोधी और राष्ट्रभक्त बताया। आपके निधन से जोधपुर,नगर ही नही बल्कि समस्त आर्य जगत और हिन्दू समाज का अपूरणीय क्षति हुई है। आप विभिन्न संस्थाओ से जुडे हुए समर्पित और निष्ठावान कार्यकर्ता थे। समस्त आर्य समाजो सार्वदेशिक आर्य वीर दल, महिला आर्य समाज सरदारपुरा और महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन के सदस्यो ने उनके निधन पर अपनी भाव भरी श्रद्धांजलि अर्पित की।

—मन्त्री

—महाराजपुर। स्थानीय आर्यसमाज के निरीक्षक उत्साही एवं समाज-सेवी कार्यकर्ता तथा नगर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष श्री रामसेवक जी मन्त्री के पिताजी श्री बाबूराम चौरसिया का ६६ वर्ष की उम्र मे दिनांक १८-१०-८९ को निधन हो गया।

दिवंगत आत्मा की शांति के लिए आर्य समाज मन्दिर में शोक सभा का आयोजन किया गया। परमात्मा परिवार को इस महान दुःख को सहन करने की क्षमता प्रदान करें।

—जयनारायण आर्य मन्त्री
आर्य समाज महाराजपुर

—अत्यन्त दु.ख के साथ सूचित किया जाता है कि हमारी आर्य समाज के श्री वीरइन्द्र आनन्द का देहावसान दिनांक १२ १२-८९ को हो गया है। तदथ पगडी रसम एव श्रद्धांजलि समारोह का कार्यक्रम दिनांक १७ १२-८९ दिन रविवार को दोपहर २ बजे से ४ बजे तक आर्य समाज नारायणा विहार (सी) ब्लाक के (हाल) सभागार में सम्पन्न हुई।

—सुमन मन्त्री

—आर्य समाज हरदेवेन्द्र नगर कानपुर-७ के भूतपूर्व प्रधान एवं वरिष्ठ गुण नियन्त्रक प्रबन्धक एच० ए० एल० प्रतिष्ठान श्री हरवंसलाल नेरा के समधी माननीय इन्द्रसेन के निधन पर आर्य समाज अपने साप्ताहिक सत्संग दिनांक १५-१०-८९ को दो मिनट मौन रखकर दिवंगत आत्मा की सद्गति एवं संतप्त परिवार के लिये धैर्य प्रदान करने के लिये परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना किया गया। —मन्त्री आर्य समाज हरदेवेन्द्र नगर कानपुर-७

—खण्डवा आर्य समाज के उपप्रधान श्री बाबूलाल जी चौधरी एवं मन्त्री लक्ष्मीनारायण भार्गव ने जानकारी दी कि विगत दिनों खण्डवा आर्य समाज के प्रधान श्री माधवीभाई भानुशालीके पिता एवं श्री शंकरलाल जी एव श्री रमेशचन्द्र जी बम्बई वालों का स्वर्गवास उनके गृह नगर बम्बई में लगभग एक सौ एक वर्ष की आयु मे हो गया।

बाबूलाल चौधरी　　लक्ष्मीनारायण,भार्गव
उपाध्यक्ष　　मन्त्री
आर्य समाज खण्डवा　　आर्य समाज खण्डवा

—आर्य समाज के कर्मठ सभासद वयोवृद्ध श्री बलबीरसिंह का दिनांक २०-१०-८९ को निधन हो गया वे बड़े ही विनम्र उत्साही एवं कर्तव्यनिष्ठ थे उनके निधन से आर्य समाज को गहरा दुःख हुआ है। २०-१०-८९ को अन्तरंग सभा की बैठक में तथा दिनांक २२-१०-८९ को सत्संग सभा में शोक प्रस्ताव पारित कर दिवंगत आत्मा की सद्गति एवं शान्ति तथा दु खी परिवार को धैर्य प्रदान करने के लिए ईश्वर से दो मिनट मौन रख प्रार्थना किया गया।

—रामजी आर्य मन्त्री

लाला लाजपतराय बलिदान दिवस सम्पन्न

लुधियाना १७ नवम्बर।

आर्य युवक सभा लुधियाना द्वारा निर्भीक महान स्वतन्त्रता सेनानी शेरे-पंजाब लाला लाजपतराय के बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में एक श्रद्धांजलि समारोह का आयोजन किया गया। समारोह के आरम्भ में शान्ति एवं सद्भावना के लिए यज्ञ किया गया। इस यज्ञ में आर्य जनता ने श्रद्धापूर्वक भाग लिया। इस यज्ञ को आर्य समाज के पुरोहित पं० सुन्दर लाल शास्त्री जी ने सम्पन्न कराया। इस यज्ञ में सामवेद के मन्त्रों का अर्थ सहित पाठ करके देश की एकता और अखण्डता के लिए आहुतियां दी गई।

इस समारोह में श्री ललित कुमार सहायक महामन्त्री, आर्य युवक सभा पंजाब, श्री ज्ञानचन्द जी वर्मा, श्री अजय कुमार जी और स्वतन्त्रता सेनानी श्री जयचन्द जी अजमा ने लाला जी को श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हुए देश के प्रति किए गए उनके उपकारों पर प्रकाश डाला।

समारोह के मुख्य अध्यक्ष आर्य युवक सभा पंजाब के प्रधान श्री रोशन लाल शर्मा ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि लाला लाजपतराय ऐसे महापुरुष हुए हैं, जिन पर पूरे देश को गर्व है। उन्होंने पंजाब की धरती पर जन्म लेकर भारतवर्ष को आजाद कराने के संकल्प को पूरा करने के लिए आजीवन संघर्ष किया तथा अपने प्राणों की आहुति दे दी।

मन्त्री, आर्य युवक सभा लुधियाना

आर्यवीर दल प्रान्तीय संचालक का दौरा सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्यवीर दल पश्चिम उत्तर प्रदेश बिन्दकी, फतेहपुर के सह संचालक माननीय डा० बालकृष्ण आर्य विकल, प्रान्त का तूफानी दौरा करके १७-१२-८९ को कार्यालय आ गये हैं। माननीय संचालक जीने १५ दिवसीय यात्रा में लखनऊ, हरदोई, शाहजहांपुर, बरेली, पीलीभीत फतेहपुर आदि जिलों का दौरा किया सभी स्थानों में संचालक जी का शानदार स्वागत किया गया। मुरादाबाद, अमरोहा, फतेहपुर आदि स्थानों पर शिविर लगाने का आश्वासन मिला संचालक जी का यह भ्रमण संगठन हेतु सफल रहा।

—वेदप्रकाश गुप्ता

स्वामी श्रद्धानन्द निर्भीक सेनानी थे

कानपुर नगर की समस्त आर्य समाजों की ओर से आर्य उप प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सन्तरामसिंह एडवोकेट की अध्यक्षता में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस आर्य समाज गोविन्दनगर में मनाया गया। सभा का संचालन करते हुये केन्द्रीय आर्य सभा व आर्य उपप्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्यामप्रकाश शास्त्री ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द स्वतन्त्रता आन्दोलन के निर्भीक सेनानी थे। इस सभा में मारीशस आर्य समाज की मन्त्री श्रीमती रश्मि लालबिहारी व पुस्तकाध्यक्ष जयचन्द लालबिहारी का स्वागत किया गया। अल्मोड़ा से आये स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती ने स्वामी श्रद्धानन्द के राष्ट्रवादी विचारों को अपनाने पर बल दिया। अन्य वक्ताओं में श्री ओमप्रकाश आर्य, वेदप्रकाश आर्य, वेदमित्र आर्य, भगवानदास गुप्त ने अपने विचार व्यक्त किए।

इसी अवसर पर आर्य सेवा संस्थान की मासिक पत्रिका 'आर्य सम्पदा' का विमोचन भी हुआ।

उपमन्त्री आर्य उपप्रतिनिधि सभा
कानपुर महानगर

निर्वाचन

—आर्यसमाज भीम गंज मण्डी कोटा ज० चुनाव दि० १३-११-८९ को सम्पन्न हुए निम्न पदाधिकारी सर्वसम्मति से चुने गये।

श्री रामनारायण जी-प्रधान, श्री ओ३म प्रकाश वासुदेव-मन्त्री, श्री प्रेमनाथ कौशल-कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज कोसी कला का निर्वाचन सम्पन्न। निम्न पदाधिकारी निर्वाचित हुए। सर्वश्री श्रीराम आर्य-प्रधान, अशोक कुमार आर्य, मन्त्री ओमप्रकाश आर्य-कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज मार्टाऊन माधोपुर का वार्षिक निर्वाचन सर्वसम्मति से निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ है। सर्वश्री सरस्वती प्रसाद-प्रधान, रामजीलाल आर्य मन्त्री हरिनारायण गुप्त-कोषाध्यक्ष।

कुरान के कामिक्स के रूप में प्रकाशन पर आपत्ति

पेरिस, १२ जनवरी। कुवैत के इस्लामी न्याय शास्त्र के प्रमुख मोहम्मद फैदुल्ला ने कुरान कामिक्स के रूप में प्रकाशित किये जाने की आलोचना की है तथा उन्होंने इसके लेखक युसुफ सिद्दीकी को दूसरा सुल्मान रश्दी बताया है।

दूसरी तरफ योरुप में शिया मुसलमानों के आध्यात्मिक नेता आयतुल्ला मेहदी रुहानी का कहना है कि कुरान का एक सचित्र संस्करण १५ वर्ष पूर्व ईरान में प्रकाशित हुआ था और इसे देखते हुए यह कामिक के प्रकाशन में कोई आपत्तिजनक बात नहीं पाते। उन्होंने पेरिस में अपने निवास पर एक भेंट में भाषा और शताब्दियों के इतिहास का जिक्र करते हुए कामिक पुस्तकों को २० वीं शताब्दी की भाषा बताया। उन्होंने कहा, "यदि कामिक पुस्तकों से युवा लोगों को अल्लाह के उपदेशों से अवगत होने में मदद मिले तो मैं इन पुस्तकों के प्रकाशन को प्रोत्साहित करूंगा।

लेकिन मोहम्मद फैदुल्ला ने कहा है कि इसे [illegible] पैदा हो सकता है जैसा भारतीय मूल के लेखक सुल्मान रश्दी के उपन्यास 'द सेटेनिक वर्सेज' को लेकर हुआ था।

द सेटेनिक वर्सेज में इस्लाम की निन्दा करने का आरोप लगाते हुए ईरान के दिवंगत आध्यात्मिक नेता आयतुल्ला रुहुल्ला खोमैनी ने गत फरवरी में लेखक सुल्मान रश्दी की हत्या का फतवा जारी किया था और तब से रश्दी गुप्त स्थान पर छिपे हुए हैं।

कुवैत के समाचार पत्र 'अल कबास' ने मोहम्मद फैदुल्ला के हवाले से कहा कि इस कामिक ने पाक कुरान की पवित्रता का मजाक उड़ाने का [illegible] किया है। उन्होंने इस कामिक की भर्त्सना करते हुए पेरिस में अरब तथा इस्लामी दूतावासों से अपील की कि वे इस्लामी मूल्यों के इस प्रकार के [illegible] को रोकने के लिए सरकारी निकायों पर दबाव डालें।

टंकारा का ऋषि मेला

महर्षि दयानन्द की जन्म भूमि में २२, २३, २४ फरवरी शिवरात्रि पर विशाल ऋषि मेला का आयोजन किया गया है। आर्य परिवारों को टंकारा ले जाने के लिए दिनांक २०-२-९० को आर्यसमाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग नई दिल्ली से स्पेशल बस चलेगी। टंकारा के साथ मार्ग में देखेंगे—दादर, नगर हवेली, दमन बम्बई खंडाला, महाकालेश्वर, गोवा [illegible] [illegible] अजन्ता एलोरा की गुफायें, इन्दौर का कांच मन्दिर, आगरा का ताजमहल मथुरा की कृष्ण जन्मभूमि। आज ही १०३५/- रु० प्रतियात्री किराया देकर अपनी सीटें बुक करालें।

—रामचन्द्र आर्य (आर्य [illegible])
४६६, [illegible], [illegible], हरियाणा

वेदप्रचार, [illegible] पटना

(१) आर्य समाज मानसी (खगड़िया) के तत्वावधान में दिनांक ११ से १२ नवम्बर ८९ को वैदिक धर्म प्रचार का व्यवस्था की गयी। आर्य जगत के सुप्रसिद्ध गवेषक डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी एवं प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री दयानन्द सत्यार्थी के प्रोग्राम होते रहे।

(२) गोगरी जमालपुर गौशाला (खगड़िया) में उत्सव के अवसर पर श्री दयानन्द सत्यार्थी के भजनोपदेश दिनांक ८, ९ व १० नवम्बर ८९ को हुए हजारों की संख्या में लोगों ने मेले में आकर वैदिक धर्म के सन्देश को सुना।

(३) आर्य गोष्ठी—विश्व प्रसिद्ध सोनपुर मेले में १४-११-८९ को आर्य विचार गोष्ठी का आयोजन बिहार राज्य के उपदेशक एवं भजनीकों के तत्वावधान में किया गया। इस अवसर पर डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी ने युवा उपदेशकों एवं भजनीकों द्वारा बिहार में आर्यसमाज को समुन्नत करने को प्रोत्साहित किया तथा जातिवाद के विरोध में क्रान्तिकारी अभियान [illegible] का आह्वान किया।

—स्वामी [illegible]

आर्य युवा म[illegible]

आर्य वीर दल दिल्ली आर्य प्रति[illegible] का छठा आर्य युवा महासम्मेलन दिल्ली स्थित स्कूलों के छात्र [illegible] [illegible] चित्रकला, संगीत वाद-विवाद, भाषण, निबन्ध [illegible] प्रतियोगिताओं का स्वर्णिम अवसर। प्रतियोगिताओं में भाग लेकर [illegible] पुरस्कार प्राप्त करें। पुरस्कार वितरण समारोह, दिनांक १७ फरवरी १९९० नेहरू [illegible] नई दिल्ली में होगा।

डा० धर्मपाल (प्रधान) [illegible] (महामन्त्री)

यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न

आर्य समाज बीरगंज की ओर से ब्रह्मचारी शम्भू कुमार आर्य का यज्ञोपवीत संस्कार वैदिक यज्ञ के द्वारा १७-११-८९ को श्री रामकुमार मण्डल जी के निवास स्थान ग्राम भगवाही (बघवाहा) जिला पूर्णिया बिहार में आचार्य प० पिताम्बर शर्मा के द्वारा सम्पन्न हुआ। यज्ञ में भाग लेने वाले श्री रामनारायण आर्य उपप्रधान आर्य समाज बीरगंज तथा नेपाल से सत्यनारायण आर्य मन्त्री आर्य समाज [illegible] जिला सुनसरी तथा ग्रामीण लोगों ने भाग लेकर यज्ञ की शोभा को बढ़ाया तथा ब्रह्मचारी शम्भू कुमार आर्य को सभी लोगों ने आशीर्वाद दिया।

—राम नारायण आर्य

रजत जयन्ती समारोह आर्य समाज बागपत (मेरठ)

बागपत ७-१-९०। यहां आर्य समाज बागपत के रजत जयन्ती समारोह के समापन दिवस पर पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने अपने सारगर्भित भाषण द्वारा उपस्थित जन समुदाय को धर्म की हटाओ, हिन्दी को सम्मान दो, शराब के ठेके बन्द कराओ गायों की रक्षा करो का आह्वान करते हुए गांवों की दशा उन्नत करने तथा ग्रामीण बच्चों के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की अपील की। उन्होंने कश्मीर के सम्बन्ध में बोलते हुए कहा कि अब सरकार को धारा ३७० खत्म कर देनी चाहिए। स्वामी जी ने इस अवसर पर ४२ निर्धनों को कम्बल वितरित किये।

समारोह में श्री बालदिवाकर हंस, प० इन्द्रराज जी, श्री रामचन्द्र 'विकल' एम०पी०, श्री अजयसिंह जी ने भाग लिया। स्वामी [illegible] वेदाचार्य के प्रवचन, श्री [illegible] पथिक का संगीत, बहिन [illegible] व शकुन्तला आर्या मेरठ के सन्देश गीतों दिन चले। अन्तिम रात्रि में आर्य कवि सम्मेलन का आयोजन आर्य नेता मा० मुरारीलाल वि० शास्त्री की अध्यक्षता में हुआ जिसमें हरिहर स्नेही ने प्रथम स्थान पाया। समाज के प्रधान श्री [illegible] [illegible] [illegible] आर्य [illegible] [illegible] समारोह का सफल संचालन समाज के मन्त्री मा० [illegible] गौड़ ने किया।

—[illegible] प्रकाश गौड़, मन्त्री आर्यसमाज बागपत

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वेदामृत

परिवार में धर्म और ऐश्वर्य हो

ओजश्च तेजश्च सहश्च बलं च।
वाक् चेन्द्रियं च श्रीश्च धर्मश्च ॥
अथर्व १२-५-७ ॥

हिन्दी अर्थ—परिवार में ओज, तेज, शक्ति, बल, भाषण शक्ति, हृष्ट-पुष्ट इन्द्रियां, लक्ष्मी और धर्म का निवास हो।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

सृष्टि सम्वत् १९६०८५३०९० दयानन्दाब्द १६५ दूरभाष : ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे
वर्ष २६ अंक ३] माघ शु० २ स० २०४६ २८ जनवरी १९९०

दक्षिण भारत में आर्यसमाज के प्रचार केन्द्र की मजबूती के लिए मदुरै में आर्यसमाज मन्दिर का शिलान्यास

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती दक्षिण भारत के व्यापक दौरे पर

मीनाक्षीपुरम् सम्मेलन के बाद दक्षिण में आर्यसमाज के व्यापक प्रचार प्रसार के लिए सार्वदेशिक सभा ने सराहनीय कदम उठाए हैं। मुख्यतः दक्षिण भारत में प्रचार का केन्द्र मदुरै में रखा गया है। वहा एम० नारायण स्वामी इस केन्द्र के संयोजक हैं। गत वर्ष सार्वदेशिक सभा के प्रयत्नों से लगभग पौने दो लाख रुपए में आर्य समाज भवन के लिए वहां भूमि क्रय की गई थी। अब उसमें निर्माण कार्य प्रारम्भ करने के लिए २५ जनवरी १९९० को आर्य समाज मन्दिर का शिलान्यास सभा प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती के द्वारा किया गया है। इस केन्द्र की स्थापना से सुदूर दक्षिण के समुद्र तट कन्याकुमारी तक केरल, मीनाक्षीपुरम्, तमिलनाडु के अनेक जिलों में व्यापक स्तर पर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में बहुत अधिक सहायता मिलेगी। मीनाक्षीपुरम् में पहले से ही यज्ञशाला, विद्यालय आदि का निर्माण किया जा चुका है। तमिलनाडु के कई क्षेत्रों में इस केन्द्र के माध्यम से काफी संख्या में आर्य समाजों की स्थापना भी हो चुकी है।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने गत २१ जनवरी को दक्षिण भारत के व्यापक दौरे पर रवाना होने पर बताया कि वह आन्ध्र प्रदेश, मद्रास, मदुरै तथा मीनाक्षीपुरम् के विभिन्न क्षेत्रों का लगभग एक सप्ताह तक दौरा करगे और आर्य समाज के कार्यकलापों का निरीक्षण करेंगे। हैदराबाद से पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव तथा अन्य अनेक महानुभाव भी स्वामी जी के साथ दौरे में रहेंगे।

गणतंत्र दिवस समारोह पर अलगाववादियों द्वारा भारतीय संविधान तथा राष्ट्रध्वज के अपमान की योजना

सिख २६ जनवरी न मनाएं : गुरुद्वारों में सिख ध्वज को सलामी दें

सिख छात्र फेडरेशन की अपील

अमृतसर, १९ जनवरी। अखिल भारतीय सिख छात्र फेडरेशन ने सिख समुदाय से आगामी गणतन्त्र दिवस समारोह का बहिष्कार करने का आह्वान किया है। फेडरेशन ने अपील की है कि २६ जनवरी को गुरुद्वारों में केसरी निशान साहिब सिख ध्वज को सलामी भी दी जाये। कल फेडरेशन की बैठक के नतीजों से पत्रकारों को अवगत कराते हुए इसके अध्यक्ष मंजीतसिंह और महासचिव हरमिन्दर सिंह सन्धू ने कहा कि जिस भारतीय संविधान के तहत गणतन्त्र का गठन हुआ था उसे १९५० में ही संविधान सभा के सिख प्रतिनिधियों ने नामंजूर कर दिया था।

उन्होंने कहा कि इस सविधान के तहत आपरेशन ब्लू स्टार कराया गया, अकाल तख्त ध्वस्त किया गया और दिल्ली तथा अन्य स्थानों पर सिखों की हत्या की गयी वह सिखो को मान्य नहीं है।

इधर जम्मू-कश्मीर के उग्रवादी संगठन हुज्बे इस्लामी ने कश्मीरियों से कहा है कि वह आगामी २६ जनवरी को काला दिवस मनाए। इसी रोज सिवल कर्फ्यू लगाए। हुज्बे इस्लामी के आदेश के अनुसार २६ जनवरी को जुम्मे की नमाज के बाद भारतीय झण्डे जलाए जायेंगे तथा शाम ढलते ही रोशनियां बुझा दी जायेंगी। उन्होंने सरकारी कर्मचारियों से भी २६ जनवरी का बहिष्कार करने को कहा है। (वीर अर्जुन १९-१-९० से समार)

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

अथ श्री रिश्वत नारायण व्रत कथा माहात्म्यम्

—आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री

नेता चेयरोसीमम, चकमादान दक्षिणाम् ।
एकदाऽपृच्छन् चमचा चापलूसी विचक्षणा ॥
किन्तत् व्रत महा प्रज्ञ सर्व कार्य प्रसाधकम् ।
यस्या चरणमात्रेण लोको वश मुपैति हि ॥
अति श्रद्धा समेनाना चमसाना विश्वास्मनाम् ।
भक्ति भाव द्रवीभूतो रहस्य प्रत्युवाच स ।
धुन्धकारी पुराकाले इयमेव प्रश्न जगौ ॥
मोहक सर्व लोकाना, क्षीर सागर शायिनम् ॥
तदोचे स महाप्रीत, गुण्डा कल्याणकृत प्रभु ।
मदीयैषा प्रजा सर्वा पापाच प्रचारिणी ॥
श्रोतृणा सर्वत्राणाय, कथा कलि प्रतारिणीम् ।
परमा शोभनामिताम् निर्वाचन जितावनीम् ॥
तिकडम् जीविनीमेता, काले परामट् दायिनीम् ।
सर्व शोभा समा पन्ना सर्व वेष निवासिनीम् ॥
सर्वलोक मनोहारि सिद्धाऽशुफल प्रदाम् ।
आर्दली कथित सायावत् पगवण्डी विछायिनीम् ॥
धर्मार्थ काम मोक्षाणा मूला धार मधुक्षयाम् ।
सर्वम गलमागलयो प्रनिसद्धगति मतीम् ॥
मैदाने खेलिनीयेता सरस्वती धकेलिनीम् ।
कुटीराद हर्म्य पर्यन्त धप्याहृत प्रवेशिनाम् ॥
सवर्ण रूपारूप्यरूपा सर्व वेश धराम्बराम् ।
अनेक रूप रूपो ना सर्व लोक नमस्कृताम् ॥
अमोघ शस्त्र रूपा वै सर्ववाच्छा विरोधिनीम् ॥
ऋषिवत् पूजाचरणं वन्द्या परम पावनीम् ।
अष्टोत्तर सहस्र श्री भूषिता कमलासनाम ॥
श्री श्री रिश्वत नारायण व्रत रूपा कथामिमाम् ।
लोकोद्धाराय महात्मय श्रणुध्व श्रावयामि व. ॥
एतत् कथा श्रवणेन वर्षेभ्यो विलम्बिना ।
अभियोगा झटिस्यावै, नमाचीयन्त एकद ॥
परमिटाति च भ्रान्तानि, मन्यन्ते नैव सशय ।
कानि तानि च कार्यास्मि, सिद्धयेरन रिश्वतेनवो ॥

एक समय आश्वासन के चकमा देने मे प्रवीण, चापलूसी मे विष्णात चमचो ने झुकक" श्रद्धाभाव से प्रणाम कर चेयरासीन नेता जी से विनत भाव से पूछा—हे महाराज महामते! इस कलयुगी मर्त्य लोक मे सब कार्यो मे सिद्धि देने वाला कौन सा व्रत है ? जिसके करने से सारे ससार के चपरासी से लेकर मन्त्री तक के महाप्राणी वश मे हो जाते हैं।

आत्मा स्वरूप श्रद्धाभाव सम्पन्न अपने चमचो की अखण्ड भक्ति से द्रवीभूत हृदय होकर नेता जी इस रहस्यमय व्रत के विषय मे कहने लगे। कि हे मेर परम प्यारे चमचो ! प्राचीन काल मे एक धुन्धकारी नाम के यातुधान शिरोमणि ने भी क्षीर सागर मे सोने वाले भगवान लक्ष्मी पति विष्णु से भी सब लोका के वशीकारक इसी प्रश्न को किया था। तब गुण्डो और मुसटण्डो के कल्याणकारी भगवान ने जिस व्रत का परमोपदेश उसे दिया था वही मैं आज तुम लोगो को सुनाऊगा भगवान कमलापति बोले कि हे धुन्धकारी ! जैसे मैंने सृष्टि के आदि मे अपनी दैवी माया से देवताओ, साधुओ और ऋषिमुनियो की रचना की थी, उसी भाति मैंने अपनी आसुरी माया से गुण्डा मुसटण्डा, निकडमी, धोखेबाज, साधुरक्तचूसक कलियुगी महापुरुषो की भी रचना की था। ये भी सब पाप और अप्राप प्रचारिणी मेरी ही तो औरस सन्तान हैं तो तुम्हारे और साथ आये श्रोताओ को सर्वलाभ प्रदायिनी कलियुग प्रचारिणी परम सुहावनी शत्रु बल हरावनी विरोधी उठावनी, इलेक्शन जितावनी, परामट दिलावनी तिकडम जीवनी ईर्ष्यालु-रक्त-पोषिनी, सब शोभा विलासिनी सदा वेष निवासिनी, सबजन मनोहारिणी, विर्भय विहारिणी, आशुफल प्रदायिनी विधाता के लिखे भाग्य को मिटायिनी, अर्दली से मन्त्री तक पगदण्डी बिछायिनी, धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष मूलाधार।

'सर्व मगल माङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
त्रिलोकी तिकडमे देवीनारायणि नमोऽस्तुते।"

(यह स्तुति करते हुए नेताजी समेत सभी प्रणाम करते हैं)

फिर इसी पावनी प्रसग को आगे बढाते हुए नेताजी सतत प्रवाह से कहते गए कि हे प्यारे भक्तो मैदान मे खेलिनी और सरस्वती धकेलिनी, कुटिया से महलो तक बेरोक टोक प्रवेशिनी स्वर्णरूप, रजतरूप, सर्ववस्तु वेश धारिणी, हर एक हृदय हारिणी अनेक रूप रूपा, अमोघ शस्त्ररूपा, सर्वलोका नमस्कृता, निखिल बाधा बाधिनी ऋषिवत् पवित्राचरणवाली, वन्दनीय एक हजार आठ श्री श्री विभूषित, कमलासना श्री श्री रिश्वत नारायण व्रत कथा को सब लोगो के उद्धार के लिए मैं कह रहा हू। आप सब समाधिस्थ होकर सुनिये।

इस कथा के श्रवण करने मे वर्षो के लटके हुए मुकदमे चिरकाल से अटके हुए परमिट और अटके हुए काम एक ही झटके मे हल हो जाते हैं।

●

वेद प्रचार मण्डल दिल्ली देहात का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

वे० प्र० म० दिल्ली देहात का ग्यारहवा वार्षिकोत्सव दि० १-१-९० को आर्य समाज, महरौली मे समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। क्षेत्रीय युवा नेता श्री राजेन्द्र कुमार ने ध्वजारोहण किया तथा मुख्य अतिथि चौ० महेन्द्र सिंह (पी० के० भट्ठे वाले) थे जिन्होने सहर्ष इक्यावन सौ रुपये दान भी दिया। मुख्य वक्ताओ मे डा० सुरेन्द्र प्रकाश, पं० आनन्द आर्य, श्री मागेराम आर्य, श्रीमती सरलापाल, श्री भीम पहलवान, श्री रामसरन दास आर्य, स्वामी पूर्णानन्द महाराज, श्री उदय श्रेष्ठ आदि थे।

(क्षेत्रपाल आर्य), प्रचार सचिव

पंजाब व काश्मीर को १० वर्ष के लिए सेना के सुपुर्द करो

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की मांग

१८ जनवरी। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने प्रधानमन्त्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह को पंजाब व काश्मीर की वर्तमान स्थिति पर एक विशेष पत्र लिखकर मांग की है कि पंजाब और काश्मीर को दस वर्ष के लिए सेना के हवाले कर दिया जावे।

प्रधान मन्त्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह को लिखे एक पत्र में स्वामी जी ने यह भी कहा है कि पूरी सीमा पर एक सुरक्षा पट्टी बनाई जाए और वहां सेवा निवृत्त सैनिकों के परिवारों को बसाकर उन्हें मताधिकार दिया जाए। ऐसा करने पर ही आतंकवादियों को पाकिस्तान से मिलने वाली मदद प्रभावी ढंग से रोकी जा सकेगी। स्वामी जी ने ऐसी ही सलाह पूर्व प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी को भी दी थी।

आर्य नेता ने पंजाब की स्थिति की विस्तार से चर्चा करते हुए पत्र में कहा है कि वर्तमान लोकसभा में मान गुट के ६ सदस्य चुने गये हैं। इनके चुनाव के तरीकों से आप अवश्य ही जानकार होंगे। यह भी भली प्रकार से स्पष्ट है कि यदि उग्रवाद की सहायता से ये लोग चुनाव न जीतते तो इनमें से कुछ को फांसी की सजा और कुछ को उम्र कैद की सजा मिलनी निश्चित थी, परन्तु इन्हें जेलों से रिहा किया गया और सभी मुकदमे भी वापस ले लिये गये। इससे उग्रवादियों का उत्साह बढ़ा और सारी सुरक्षा व्यवस्था के मनोबल को ठेस पहुँची। आज उग्रवादी अपने आपको 'पंजाब का स्वामी' मानते हैं। जिस तरह वे आदेश जारी करते हैं उस तरह तो राज्यपाल भी नहीं करते। अधिकारियों को धमकियां दी जा रही हैं, व्यापारियों और डाक्टरों से लाखों रुपये वसूल किये जा रहे हैं। उन पुलिस अफसरों की सूचियां प्रकाशित की जा रही हैं, जिन्हें दण्ड देने का इरादा है। सिमरनजीत सिंह मान कानून के अनुसार काम करने वाले बड़े-बड़े अफसरों को हिटलर बता रहे हैं और उनके विरुद्ध उसी तरह कार्रवाई करने की धमकी दे रहे हैं, जैसे दूसरे महायुद्ध के बाद नाजियों के खिलाफ की गई थी। पुलिस थानों पर हमले हो रहे हैं। अर्द्ध सैनिक बलों को निशाना बनाकर मौत के घाट उतारा जा रहा है। एक एक सप्ताह में कई-कई लाख की फिरौतियां वसूल की जा रही हैं। मैं नहीं समझता कि आप सुरक्षा कर्मियों की मनःस्थिति का अन्दाजा नहीं लगा सकते कि जिस प्रकार अपने परिवार व अपनी जान की परवाह किये बिना देश के वीर पुलिस अफसर उग्रवादियों से टक्कर लेते हैं और सरकार उन्हीं में से कुछ उग्रवादी नेताओं को अकारण रिहा कर देती है और इसके विपरीत पुलिस अधिकारियों से जवाब तलब होता है। पिछले एक महीने में लगभग ५० सुरक्षा सैनिक उग्रवादियों के साथ मुठभेड़ में मारे गये हैं। क्या इन मुठभेड़ों को भी झूठी मुठभेड़ का नाम दिया जा सकता है।

आज तक की परिस्थिति पर यदि गम्भीरता पूर्वक विचार किया जाय तो स्पष्ट होगा कि यदि पंजाब में विधान सभा चुनाव करवा दिये गये तो बड़ा भारी अनर्थ होगा। यदि ११७ में से लगभग ८० सीटें मान ग्रुप के उन उग्रवादियों, उनके रिश्तेदारों इत्यादि को इनाम में मिलेंगी जिन्होंने देश की बड़ी-बड़ी हस्ती के खून से अपनी प्यास बुझाई थी। आप इसका भी भलीभांति अन्दाजा लगा सकते हैं कि इस प्रकार के लोगों की सरकार पंजाब में क्या-क्या गुल खिलायेगी। ऐसी सरकार पर नियन्त्रण तो दूर सहयोग की अपेक्षा भी केन्द्र सरकार को एक पूरा न होने वाला स्वप्न लगेगा। ऐसी सरकार सत्ता सम्भालते ही विधान सभा में प्रथम प्रस्ताव खालिस्तान का पास करायेगी, जिससे आपके लिए एक नया वैधानिक संकट पैदा हो जाएगा।

कश्मीर की चर्चा करते हुए अपने पत्र में स्वामी आनन्दबोध ने लिखा है कि कश्मीर में भी पाकिस्तानी उग्रवादियों की गतिविधियां और तेज होती जा रही हैं। पिछले एक महीने से कश्मीर में कोई ऐसा एक भी दिन नहीं निकला जब घरों, दुकानों, स्कूलों को जलाया न गया हो, मन्दिरों को तबाह न किया गया हो। पथराव, आगजनी, लूटपाट तो नित्यप्रति की घटनाएं बन चुकी हैं। भारत के झण्डों को जलाना और पाकिस्तानी झण्डे फहराना तो सामान्य सी बात हो गई है। सैंकड़ों परिवार जिनमें अल्पसंख्यक समुदायों के लोग हैं, कश्मीर से पलायन कर चुके हैं और देश के अन्य हिस्सों में असहाय और बेघर होकर पड़े हैं।

इमाम को कर्ज की अदायगी!

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के नेतृत्व में नई सरकार ने काम-काज शुरू कर दिया है। मतदाता, जिन्होंने चाहे किसी भी दल के लिये अपना मत दिया हो, जानना चाहते हैं कि नई सरकार किस अर्थ में गत सरकार से भिन्न है। इसके काम की शैली, निर्णय लेने की प्रक्रिया कैसी है और कथनी सिद्ध करने के उपकरण क्या हैं? यह सत्य है कि पहले कदम पर ही किसी सरकार के गुण दोषों का निर्णय न उचित है न वांछनीय, लेकिन यह भी सत्य है कि पहला कदम ही भावी दिशा का आभास करा देता है। विश्वनाथ प्रताप सिंह के नए मन्त्रिमण्डल के गठन से पूर्व यह अनुमान था कि गृहमन्त्रालय जो एक अरसे से आकारहीन मन्त्रियों के कारण प्रभावहीन स्थिति में था, अब फिर एक बार अपनी खोई हुई गरिमा प्राप्त करेगा। अर्थात् उम्मीद थी कि विवेक और योग्यता की दृष्टि से कोई कद्दावर व्यक्ति इस मन्त्रालय की बागडोर सम्भालेगा। लेकिन राजा ने मुफ्ती मुहम्मद सईद को चुना। मुफ्ती कश्मीर की राजनीति की उपज हैं। इस बार जनता दल के मुस्लिम समर्थक दल के कारण उ० प्र० के मुजफ्फरनगर निर्वाचन-क्षेत्र से जीते हैं। चुनाव से पूर्व बाबरी मस्जिद को उनका समर्थन और भाजपा के विरुद्ध विषवमन जगजाहिर है। इसके अलावा मुफ्ती कभी पर्यटन जैसे हल्के-फुल्के विभाग से ज्यादा किसी नाजुक मन्त्रालय को सम्भालने योग्य नहीं माने गये। सबसे बढ़कर विडम्बना तो यह है कि कश्मीर में पाकिस्तान समर्थक तत्वों को प्रोत्साहन देने तक के आरोप मुफ्ती पर लग चुके हैं।

आम चर्चा है कि जामा मस्जिद के इमाम अब्दुल्ला बुखारी के साथ जनता दल अध्यक्ष और वर्तमान प्रधानमन्त्री विश्वनाथ प्रताप सिंह का एक गुप्त समझौता हुआ है, जिसके तहत ही मुफ्ती गृहमन्त्री बने हैं।

कुछ भी हो, यह बात तर्क-संगत लगती है कि राजा मानते हैं कि चुनाव के दौरान भाजपा के साथ एक मंच पर न आने और मुस्लिम कट्टरपंथियों को दुलारने का प्रतिफल उन्हें मुस्लिम वोटों के रूप में मिला है। इसीलिए जो काम भारतीय सेकुलरवाद के आदि उद्घोषक पं० नेहरू से लेकर, 'जिसके समर्थन से वोट मिले, उसकी जीहुजूरी' का बेढब सिद्धान्त मानने वाले राजीव गांधी तक नहीं कर सके, वही काम राजा ने मुफ्ती को गृह मन्त्रालय सौंपकर कर दिया।

सेकुलरिज्म का नाम लिया गया, पर असलियत यह थी कि मुसलमानों को खुश करना था। क्या वजह है कि योग्यता और कुशलता में मुफ्ती से कई गुना बढ़कर आरिफ मोहम्मद खान को राजा ने इस पद के लिये उपयुक्त नहीं माना? क्या कारण नहीं है जो इलाहाबाद उप चुनाव में आरिफ को न बुलाने का था? जैसे उस समय शहाबुद्दीन और हाजी मस्तान की मदद अधिक 'कारगर' मानी गई थी क्या उसी प्रकार मुफ्ती को गृह मन्त्रालय दिया जाना अधिक प्रभावकारी नहीं माना गया? और क्या कारण रहा कि उत्तर प्रदेश में मोहम्मद आजम खान जैसे व्यक्ति को राज्य-मन्त्रिमण्डल में शामिल कर पुरस्कृत किया गया। यह वही आजम खान हैं जो भारत माता को डायन कहने के कारण कुख्यात हो चुके हैं और जो बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी के पदाधिकारी हैं।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आर्य जगत् की महान् विभूति स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती



महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त ईश्वर आस्था पर सदा अनुरक्त लौकिक एषणाओं से सदा विरक्त गुरुकुल शिक्षा के परम भक्त और ३७ वर्षों तक वैदिक धर्म के प्रचार में सतत अनुरत स्वनामधन्य स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती का जन्म माघ कृष्णा दशमी सं० १९१८ में पंजाब प्रान्त के लुधियाना मण्डल के जगरावां कस्बे में एक प्रतिष्ठित धार्मिक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री पं० रामप्रताप था और आपका जन्म का नाम कृपाराम था। आपकी शिक्षा दीक्षा यद्यपि फारसी भाषा से प्रारम्भ हुई किन्तु आपने संस्कृत भाषा तथा व्याकरण का ज्ञान अपने विद्वान पिताजी से ही प्राप्त कर लिया था आपका ज्ञान तत्कालीन पौराणिक परम्पराओं के अनुरूप ११ वर्ष की अवस्था में ही गृहस्थ जीवन में बांध दिया गया था किन्तु जन्म जन्मान्तरों के शुभ संस्कारों की प्रबलता और महर्षि दयानन्द के जादू भरे सत्संगों के प्रभाव ने पं० कृपाराम को दर्शनों का प्रकाण्ड विद्वान युक्ति तीरों का महारथी और शास्त्रार्थ समर का धुरन्धर विद्वान बना दिया। आप स्वयं ही अपने व्याख्यानों में कहा करते थे कि मुझे स्वामी दयानन्द के व्याख्यान सुनने का तीन बार सौभाग्य प्राप्त हुआ। यद्यपि आपके विचारों पर कुल परम्परागत नवीन वेदान्त का प्रभाव था किन्तु महर्षि दयानन्द के व्याख्यानों से ऐसा अमिट रंग चढ़ा कि पारिवारिक पौराणिक समस्त मिथ्या भ्रान्तियों का मूल समूल नष्ट हो गया। आपके जीवन के कतिपय आदर्श तथा अनुकरणीय जीवन संस्मरण इस प्रकार हैं —

(१) गुरुकुल शिक्षा के परम भक्त— आपका यह दृढ़ विश्वास था वैदिक शिक्षा के प्रचार में सर्वोच्च बाधक है लार्ड मैकाले द्वारा चलाई पाश्चात्य शिक्षा और उसका मुकाबला गुरुकुल शिक्षा के बिना कदापि नहीं हो सकता। और वेद विद्या के सत्य निर्भ्रान्त प्रकाश के प्रसार में प्रबल बाधक हैं— पौराणिक घोर घनों की काली छाया और उसको छिन्न भिन्न करने के लिए महर्षि दयानन्द द्वारा बताई आर्ष शिक्षा के क्रम से पढ़े विद्वान स्नातक ही समर्थ हो सकते हैं। इसलिए आपने इस दृढ़ विश्वास को साकार रूप देने के लिए आपने महाविद्यालय गुरुकुल ज्वालापुर गुरुकुल बदायूं गुरुकुल पोठोहार गुरुकुल विरालसी, गुरुकुल सिकन्दराबाद जैसी संस्थाओं की स्थापना की।

(२) लेखनी के धनी—आर्य समाज से सम्बद्ध साहित्य की सर्जना में जिन प्रतिष्ठित विद्वानों के नाम लिए जाते हैं उनमें आपका नाम अग्रगण्य एवं सर्वोपरि है। आपने पत्र पत्रिकाओं का संचालन कर जन जन तक वैदिक मान्यताओं का प्रसार बड़ी ही विद्वत्ता तथा उत्साह से किया। आपके विषय में यह प्रसिद्ध है कि आप प्रतिदिन एक लघु पुस्तिका (ट्रैक्ट) लिखकर तैयार कर दिया करते थे। उनमें कुछ तो अब भी दर्शनानन्द लिखी छोटी छोटी पुस्तिकायें पाठकों पर जादू सा प्रभाव डालती हैं और पाठक बड़ी उत्सुकता से पढ़ता पढ़ता भी थकता नहीं है। यह सब आपकी लेखन शैली की अपूर्वता तथा युक्ति तीरों का ही कमाल है। दर्शनों के तो आप उद्भट विद्वान एवं पारदर्शी थे इस लिए न केवल आपने चार दर्शनों पर भाष्य लिखे प्रस्तुत दर्शनों पर छाई अद्वैतवाद की छाया को हटाकर दर्शनों का यथार्थ स्वरूप जन जन तक पहुँचाया है।

(३) शास्त्रार्थ समर का अद्वितीय योद्धा—महर्षि दयानन्द की मृत्यु के बाद जिन महात्माओं विद्वानों व सन्तों ने वैदिक धर्म को फैलाकर पिछली शताब्दी को आर्य समाज का स्वर्ण युग बनाया, उनमें प्रखर मेधा सम्पन्न एक शिरोमणि स्वामी दर्शनानन्द का नाम अग्रगण्य है। यद्यपि इस शताब्दी में शास्त्रार्थ समर के धुरन्धर एक से एक बढ़कर हुए हैं जिनको आर्यसमाज के इतिहास में सदा ही स्मरण किया जाता रहेगा किन्तु आपकी अद्भुत शास्त्रार्थ शैली विचित्र ही थी आप प्रमाणों के प्रवाह में विशेष न बहकर तर्क की कसौटी पर ही विपक्षी विद्वानों को धराशायी कर दिया करते थे। आपकी वाणी में तो सरस्वती का ही वास था और भाषण में अलौकिक ओजस्विता थी। दर्शन शास्त्रों के अवगाहन में तो आप ऐसे कुशल तैराक थे कि शंकराचार्य कुमारिल भट्ट जैसे दिग्गज विद्वानों की मान्यताओं की धज्जियां उड़ाकर पीछे छोड़ देते थे यह आपकी सर्वाति शायी विशेषता थी। आज भी अनेक विद्वान आप की युक्तियों का अवलम्बन कर शास्त्रार्थ समर के महारथी अनायास ही बन जाते हैं। जैसे एक अच्छा पहलवान अखाड़े में आकर छिपकर नहीं बैठ सकता वैसे ही शास्त्रार्थ की चर्चा हो रही हो और स्वामी जी वहां न पहुँचे हों यह कदापि सम्भव नहीं था। मृत्यु से छः घण्टे पहले भी आपने यह घोषणा करवा दी थी कि जिसे शास्त्रार्थ करना हो वह अवश्य आ जाये। कहीं मेरे पीछे यह न कहना कि हमें शास्त्रार्थ करना था। ऐसे महान शास्त्रार्थ महारथी, वैदिक धर्म धुरन्धर, ईश्वर विश्वासी सच्चे संन्यासी के पावन जीवन से हमें भी कुछ सीखना चाहिये और वैदिक धर्म के प्रचार में दृढ़ संकल्प होकर लग जाना चाहिये। स्व० पं० हरिशंकर शर्मा कविरत्न के हृदयोद्गार के साथ हम इस सच्चे सन्त को हृदय से नमन करते हैं —

तुम त्यागमूर्ति तुम तेज पुञ्ज तुम पावन पुण्य प्रभाकर थे।
ऋषि दयानन्द के परम भक्त तुम वैदिक धर्म दिवाकर थे॥
तुम शास्त्रार्थ संग्राम सिंह विजय प्रतिवादि भयंकर थे।
तुम धर्म धाम तुम कृपाराम दर्शनानन्द शिवशंकर थे॥

जाग्रत हो वैदिक गणतन्त्र

लेखक राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति
मुसाफिर खाना, सुलतानपुर (उ० प्र०)

जन जन का फिर भाग्य जगाए ज्योतिर्मय सा यह जनतन्त्र।
भारत की धरती पर पर फिर से जाग्रत हो वैदिक गणतन्त्र॥
वर्ण व्यवस्था पुन देश में, वेदों की स्थापित हो।
ऊंच नीच के भावों से अब मनुज नहीं सन्तापित हो॥
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र सब भद्र भाव रख आपस में।
एक दूसरे के सहयोगी बन हों हर्षित हों बस में॥
आश्रम की गरिमा से मानव महिमामण्डित बने सहज।
वसुन्धरा पर फले वैदिक युग का सौम्य सुखों का ध्वज॥
समता समरसता की सरिता, समृद्धि की हो सदा प्रवाहित।
बन्धु सुगन्धित बहे धरा पर सबोए महिमण्डल का हित॥
जन जन में आये नवजीवन, सत्य धर्म का बिगुल बजे।
दया प्रेम का परोपकार का साज धरणि पर आज सजे॥
ध्वज लिरपा अम्बर में फहरे, लेकर वेदों का सन्देश।
त्याग तथा बलिदान भावना, जगे हृदय में आज विशेष॥

गुरुकुल समस्याएं और उनका समाधान

(आर्ष गुरुकुल संस्थाओं के संचालन में उत्पन्न कठिनाइयां तथा उनके निवारण के उपाय)

—ज्ञानेश्वरार्यः दर्शनाचार्य, आर्य वन, गुजरात-३८३३०७

किसी भी कार्य मे सफलता प्राप्ति हेतु चार बातें आवश्यक होती हैं— (१) लक्ष्य प्राप्ति की तीव्र इच्छा (२) समुचित साधन (३) अपेक्षित परिश्रम और (४) समस्याओ का समाधान करने की क्षमता। इनमें से किसी एक के भी अभाव मे कोई भी कार्य सफलता पूर्वक सम्पादित नहीं हो पाता। आज आर्ष गुरुकुल संस्थाओ के संचालन मे अनेक कठिनाईयां उत्पन्न हो गयी हैं, ऐसा आर्यजन अनुभव करते है। गुरुकुल शिक्षा संस्थाओ में उत्पन्न समस्याओ के समाधान के लिए भी हमे उपर्युक्त चार बातो की ओर ध्यान देना होगा। इसके साथ २ समस्याओ का समाधान ऋषियो द्वारा बताये गये सविधान को समक्ष रखकर करेंगे, तो कठिनाइयां कम आयेंगी और सफलता अधिक व शीघ्र मिलेगी। गहराई में जाने से यह स्पष्ट पता चलता है कि हम लोग या तो आर्ष शिक्षा पद्धति को ठीक प्रकार से समझ नहीं पाते हैं, या अनेक कारणो से इसे पूर्णतया लागू नहीं कर पा रहे हैं। अस्तु।

विद्यमान आर्ष गुरुकुल संस्थाओ मे जो समस्यायें उत्पन्न हो गई हैं, उनके कारण और निवारण के उपाय यहां प्रस्तुत किये जाते हैं।

(१) आज गुरुकुलो में पूर्ण विद्वान, तपस्वी, आदर्श आचार्यों का प्रायः अभाव सा दिखाई देता है। इसका एक प्रमुख कारण है कि गुरुकुल संस्थायें उन आचार्यों की अनिवार्य आर्थिक आवश्यकताओ की भी पूर्ति नहीं कर पाती। यदि आचार्यों को उचित वेतनादि और अन्य आवश्यक सुविधाएं प्रदान की जायें, तो इस समस्या का समाधान पर्याप्त सीमा तक हो सकता है। इसके अभाव मे गुरुकुलो के ही स्नातको को विवश होकर आधुनिक पद्धति के महाविद्यालयो की शरण लेनी पडती है।

(२) गुरुकुल के विद्यार्थियो का जो स्तर बनना चाहिए, वह आध्यात्मिक प्रशिक्षण अर्थात यम नियमो का पालन एव योगाभ्यास के अभाव मे बन नहीं पाता। प्रायः गुरुकुलो मे उच्च स्तर के योगाभ्यासी, आध्यात्मिक प्रशिक्षको के कुशल निर्देशन का अभाव-सा देखा जाता है। यदि तपस्वी एव आदर्शवादी, योगनिष्ठ, योगप्रशिक्षक, आचार्य गुरुकुलो मे प्रतिदिन क्रियात्मक योगप्रशिक्षण का कार्यक्रम रखें, तो वर्तमान मे गुरुकुलो के विद्यार्थियो मे जो उच्छृंखलता, अनुशासनहीनता आदि दोष पाये जाते हैं, इनका निवारण सहज ही हो सकता है।

(३) गुरुकुल के आचार्य, प्रबन्धक तथा सहयोगियो (=दानी महानुभावो) में प्रायः अनेक प्रकार का मतभेद देखा जाता है जिसके कारण एक लक्ष्य का निर्धारण नहीं हो पाता। इससे शक्ति बट जाती है और पारस्परिक मतभेद के कारण गुरुकुल की उन्नति नहीं हो पाती। यदि आचार्य, प्रबन्धक और सहयोगी मिलकर वेदादि सत्य शास्त्रो के आधार पर पक्षपातरहित होकर एक लक्ष्य का निर्धारण कर लें, अपना-अपना कार्य बांट लें और दूसरे के कार्य में अनावश्यक हस्तक्षेप न करे, तो शीघ्र ही गुरुकुल शिक्षा पद्धति आधुनिक युग मे भी विकसित एव लोकप्रिय बन सकती है।

(४) आज प्रायः जनता का मस्तिष्क ऐसा बन चुका है कि घर मे जो बच्चा अधिक उच्छृंखल, अनुशासन हीन हठीला मन्द-बुद्धि हो अथवा पडौस में कोई निर्धन, अनाथ, दीन-हीन या विद्याध्ययन मे असमर्थ विद्यार्थी हो, उसे गुरुकुल मे भेज दिया जाय, वहां उसका सुधार हो जायेगा। अर्थात गुरुकुल को सुधारगृह (=जेल समझते हैं। इससे गुरुकुल शिक्षापद्धति को अत्यन्त आघात पहुँचा है। यदि गुरुकुलो मे बुद्धिमान, अनुशासनप्रिय, कुलीन, चरित्रवान और देशधर्म पर बलिदान होने की भावना रखने वाले सुयोग्य विद्यार्थियो को परीक्षा करके प्रवेश दिया जावे और उनके निर्माण मे पूरा बल लगाया जाये, तो गुरुकुल शिक्षा पद्धति उद्धार हो सकता है।

(५) बुद्धिमान चरित्रवान आर्य परिवारो के बालक, जो वैदिक विद्वान बनने के इच्छुक होते हैं, वे भी गुरुकुलों में अधिक दिन तक टिकनहीं पाते। इसका एक बहुत बडा का 'गुरुकुलो मे पौष्टिक, सात्विक एव सन्तुलित भोजन का अभाव होना है। १०-१२ वर्ष के बालक के शारीरिक, बौद्धिक एव मानसिक विकास काल मे यदि उसे पौष्टिक, सात्विक और सन्तुलित भोजन पर्याप्त मात्रा मे दिया जाय, तो गुरुकुलो मे ऐसे सुयोग्य विद्यार्थी आ सकते हैं जो भोजन की प्रतिकूलता के कारण नहीं आ पाते।

(६) आजकल पाश्चात्य पद्धति से चलने वाले विद्यालयो, महाविद्यालयो देखा जाता है कि विद्यार्थियो की बहुमुखी प्रतिभा के विकास के लिए पुस्तकें, मानचित्र, पत्र-पत्रिकाएं, श्यामपट्ट इत्यादि अनेक प्रकार के शिक्षा के साधन प्रचुर मात्रा मे उपलब्ध कराये जाते हैं। गुरुकुलो में प्राय इन सुविधाओ का अत्यधिक अभाव अनुभव किया जाता है, जिसके कारण गुरुकुल के विद्यार्थी शिक्षा के क्षेत्र मे विशेष प्रगति नहीं कर पाते। फिर उनसे वैदिक शास्त्रो पर शोध-कार्य, नवीन आविष्कार करना और देश-विदेश मे वैदिक ज्ञान-विज्ञान का बुद्धिजीवियो मे प्रचार-प्रसार करने की आशा रखना तो बहुत दूर की बात है। अतः गुरुकुलो मे शिक्षा के साधन पर्याप्त मात्रा मे उपलब्ध कराये जाने चाहिए।

(७) आधुनिक शिक्षा पद्धति मे विद्यार्थियो के सर्वांगीण विकास के लिए उन्हें अनेक प्रकार की आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध होती हैं, जैसे आवास के लिए पर्याप्त कक्ष (=कमरे), शौचालय, स्नानगृह, पुस्तकालय, भोजनालय, पाचक, लिपिक (=क्लर्क), कर्मचारी, बिजली पानी, पंखे, खेल के साधन इत्यादि। गुरुकुलो मे इन सुविधाओ का भी प्राय अभाव रहता है। इन सुविधाओ के अभाव मे विद्यार्थियो का बहुत-सा समय और शक्ति व्यर्थ नष्ट होते हैं। यदि ये सुविधायें गुरुकुलो मे भी उपलब्ध हो सके, तो विद्यार्थी प्रत्येक क्षेत्र मे अधिक प्रगति कर सकते हैं।

(७) गुरुकुलो के स्नातक आजकल के इस भौतिकवादी संसार में अपनी गुरुकुलीय परम्पराओ—वेशभूषा, खानपान, दिनचर्या आचार-विचार, सन्ध्या-यज्ञादि की सुरक्षा इस कारण से नहीं कर पाते हैं, क्योंकि गुरुकुलो में इन परम्पराओ का वैज्ञानिक महत्व, लाभ और जीवन के लक्ष्य से इनका सम्बन्ध कम समझाया जाता है। विद्यार्थी भी इतने स्तर के नहीं होते, जो इनका महत्व समझे और किसी महान लक्ष्य को सामने रख कर चले। इससे १०-१५ वर्ष तक गुरुकुलो द्वारा विद्यार्थियो पर लगायी जाने वाली शक्ति लगभग व्यर्थ हो जाती है, जब वे नगर मे आते ही कुछ ही दिनो मे अधिकांश गुरुकुलीय परम्पराओ को त्याग देते हैं। अत विद्यार्थी अच्छे स्तर के हो और उन्हें गुरुकुलीय वैदिक परम्पराओ का महत्व वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझाया जाये, तो गुरुकुलो की शक्ति का सदुपयोग हो सकता है और गुरुकुल शिक्षा पद्धति सफल हो सकती है।

(९) समाज द्वारा गुरुकुल शिक्षा पद्धति की उपेक्षा किये जाने का एक अन्य कारण है—गुरुकुल के विद्यार्थियो को व्यावहारिक प्रशिक्षण का कम दिया जाना। प्राय. जन साधारण का यह आक्षेप रहता है कि गुरुकुल के ब्रह्मचारी रेल बस मे यात्रा करना, टिकट का आरक्षण कराना, समीपस्थ यात्रियो से वार्तालाप करना, थूकना छींकना खासना सभ्यता से बात करना आदि, दूरभाष, डाक आदि से सम्बन्धित कार्य, आधुनिक यन्त्रो का संचालन (=कूलर मिक्सर आकाशवाणी टेपरिकार्डर दूरदर्शन यन्त्र आदि का चलाना बन्द करना) और ऐसी ही अनेक आधुनिक सामान्य जानकारियो से अनभिज्ञ होते हैं। इतना ही नहीं, इन दैनिक जीवन की आवश्यक जानकारियां के अभाव मे जब वे गुरुकुल से नगरो मे आते हैं, तो चौथी पांचवीं कक्षा मे पढने वाले ९-१० वर्ष के छोटे से बालक की अपेक्षा भी स्वय मे हीन भावना का अनुभव करते हैं। परिणाम स्वरूप अपनी सभी वैदिक परम्पराओ को हेय मानकर भौतिकवादी बनने मे पूरा बल लगा देते हैं। यदि गुरुकुलो मे

दैनिक जीवन मे काम आने वाली ये सामान्य जानकारियां ब्रह्मचारियो को भौतिकवादियो में सफलता से प्रचार प्रसार कर सकते हैं।

(१०) उपर्युक्त अनेक समस्याओ का एक प्रधान कारण है—आर्थिक साधनो की न्यूनता। किसी भी गुरुकुल संस्था को आरम्भ करने से पूर्व विद्यार्थियो के लिए आवश्यक सुविधाएं पहले से ही जुटा लेनी चाहिए। इसके लिए गुरुकुल की कोई स्थायी आय हो। स्थायी आय के लिए या तो गुरुकुल के पास कोई स्थिर निधि हो अथवा प्रतिनिधि सभाएं, स्थानीय आर्य समाज और आर्य सज्जन मासिक सहयोग छात्रवृत्ति के रूप मे गुरुकुलो को भेजें। इसके बिना आचार्य और विद्यार्थियो का बहुत-सा समय व शक्ति धन संग्रह, अन्न संग्रह, खेती बाड़ी, मकान बनाने और गुरुकुल के वार्षिक उत्सव आदि कार्यों मे व्यर्थ नष्ट हो जाते हैं। और विद्या की उन्नति नही हो पाती।

(११) आर्थिक समस्याओ को हल करने के दृष्टिकोण से अनेक गुरुकुल संस्थाएं पत्र पत्रिका पुस्तक प्रकाशन, रसायनशाला (=फार्मेसी) मुद्रणालय (=प्रिंटिंग प्रेस) चिकित्सालय, कृषि गोशाला, प्रचार आदि अनेक कार्यों को प्रारम्भ कर देती हैं। अनेक बार इन कार्यों को आरम्भ करने का लक्ष्य आर्थिक समस्या को सुलझाना भी नहीं होता, बल्कि गुरुकुल की ख्याति अथवा समाज सेवा के लिए भी ये कार्य अपना लिये जाते हैं। यदि किसी संस्था का 'विद्यार्थियो का निर्माण करना' ही मुख्य लक्ष्य हो, तो अनेक कार्यों मे शक्ति को विकेन्द्रित न करके उत्तम वैदिक विद्वानो का निर्माण किया जा सकता है, जो 'कृण्वन्तोविश्वमार्यम्' साकार करने मे परम कारण है। समाज-सेवा के दृष्टिकोण से यदि पत्र पत्रिका, चिकित्सालय, फार्मेसी आदि का संचालन करना ही हो, तो इन कार्यों को गुरुकुलो से पृथक् आर्य संस्थाएं करें। गुरुकुलों के साथ इन कार्यों को नही जोड़ना चाहिए।

(१२) गुरुकुलो मे उपर्युक्त अनेक समस्याओ के होते हुए भी, जो कुछ सामान्य सा विद्यार्थियो का निर्माण हो पाता है, उसका भी लाभ विद्यार्थी ठीक प्रकार से उठा नही पाते, जब वे गुरुकुल के अवकाश के दिनो मे नगरस्थ अपने घरों मे चले जाते हैं। घर जाने पर आस-पड़ोस के भ्रष्ट बालको के साथ उठने बैठने खेलने कूदने के कारण उनसे गन्दी आदतें सीख लेते हैं। परिणामस्वरूप गुरुकुल मे प्राप्त शिक्षा का कोई लाभ उठाना तो दूर रहा बल्कि वापस गुरुकुल मे आकर अन्य विद्यार्थियो को भी बिगाड़ देते हैं। अत यह आवश्यक है कि विद्यार्थियो को अवकाश काल में घर न भेजा जाय।

(१३) गुरुकुलो मे आर्य जन अपने बच्चो को भेजते से इसलिए भी संकोच करतेहैं कि गुरुकुल के स्नातक के सामने व्यवसाय(नोकरी=रोजगार) की समस्या रहती है। गुरुकुलो के स्तर को देखते हुए माता पिता यह विचार करते है कि गुरुकुल से पढ़कर हमारा बालक किसी सम्मानजनक उच्च पद (आई ए एस न्यायाधीश, बैंक मैनेजर या पायलेट आदि) को प्राप्त नही कर पायेगा। यदि हम इसे गुरुकुल में पढ़ायेंगे तो आज के भौतिकवादी जीवन की दौड़ मे यह पिछड़ जायेगा। इसका समाधान इस प्रकार से हो सकता है कि हम दो प्रकार के संस्थान बनायें। इस प्रकार के संस्थान मे आधुनिक शिक्षा के साथ साथ वैदिक परम्पराओ का प्रशिक्षण भी द जिसम कि इन संस्थानो मे पढ़कर विद्यार्थी लोग समाज मे उपर्युक्त उच्च पदो को प्राप्त करके, वैदिक आदर्शों से युक्त होकर राष्ट्र का नवनिर्माण करें।* और दूसरे प्रकार के संस्थान मे केवल वे ही विद्यार्थी लिये जायें जिनका लक्ष्य आजीवन ब्रह्मचारी रहकर वैदिक वाङ्मय का गहन अध्ययन करके तपस्या पूर्वक योगाभ्यास से आत्मोन्नति करके आदर्श संन्यासी बनकर देश विदेश म निष्काम भाव से वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार करना ही हो।

इन दोनों प्रकार के गुरुकुलो को बनाकर वर्तमान युग में आर्ष गुरुकुल पद्धति का उद्धार और वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार विश्वास से किया जा सकता है तथा के भौतिकवाद से पीड़ित मानव कल्याण का मार्ग दिखाया जा सकता है। आशा है बुद्धिजीवी लोग इन सुझावो से लाभ उठाने का प्रयत्न करेंगे।

* लेकिन इन संस्थानो का नाम गुरुकुल न रखा जाय।

गणतन्त्र दिवस

गणतन्त्र ! स्वागत ते, गणतन्त्र ! स्वागत ते।
तव गौरव पुरस्तात्, कीर्ति श्रिय तनोति ॥१॥

राष्ट्रोद्धृतावपूर्वा शक्ति तनोषि नित्यम्।
त्वदयानमेव ज्योति, क्रान्तेश्च दाववह्निन ॥२॥

सस्मृत्य गौरव ते वीरा गुणानुरक्ता।
भक्ता स्वदेश-भक्ता, शूलि मुदा श्रितास्ते ॥३॥

त्व देशभक्ति - भाव समता क्रियाऽनुरागम्।
धर्मान्धता - विराम तनुषे च लोकतन्त्रम् ॥४॥

कार्ये प्रभाषणे च, स्वातन्त्र्यमेव लेभे।
स्वत्वाधिकार - रक्षा सृष्ट त्वयैव सत्यम् ॥५॥

त्वा प्राप्तुमेव सत्य शान्तैश्च क्रान्तिशीलै।
आत्माहुति प्रदत्ता भूमिर्धुता मुदैव ॥६॥

साम्राज्यवादिनस्ते, त्वा वीक्ष्य भीतभीता।
कृत्यैर्निजैर्जघन्यै, भस्मान्तभावमाप्ता ॥७॥

सम्पूर्ण शक्ति युक्त लब्ध तु भारतीयै।
गणतन्त्रमेतदेव क्रान्ति तनोतु लोके ॥८॥

गुण-गौरवाभिवृद्धि धन-धान्य सौख्य वृद्धिम्।
सद्भाव स्नेह वृद्धि सिद्धि तनोतु सद्य ॥९॥

त्वदरक्षणेऽनुरक्ता, भक्त्यार्पिताऽऽत्मदेहा।
क्रान्तेर्दवाग्नि दूता कुर्वन्तु देश स्वर्गम् ॥१०॥

—डा० कपिलदेव द्विवेदी
कुलपति गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर हरिद्वार

स्वतन्त्रता प्राप्ति में आर्य समाज का योगदान

ब्रह्मानन्द आजाद आर्य समाज चेम्बूर बम्बई-७४

अंग्रेजों के आधीन पराधीन भारत को स्वतन्त्र कराने में आर्य समाज का अमूल्य और अकथनीय योगदान रहा है।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का इतिहास लिखने वाले श्री पट्टाभि सीतारमैया ने कांग्रेस के इतिहास में लिखा है कि स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने वालों में ८० प्रतिशत आर्य समाजी ही आन्दोलनकारी थे। कांग्रेस का इतिहास यह बताता है कि ७० प्रतिशत आर्य समाजी आन्दोलनकारी थे, इसी से आप आर्य समाज का स्वतन्त्रता प्राप्ति हेतु किए गए संघर्ष का सहज अनुमान लगा सकते हैं कि आर्य समाज को स्वदेश, स्वराज्य, स्वभाषा एवं स्वसंस्कृति से कितना लगाव था और है। हो भी क्यों न क्योंकि आर्य-समाज का जन्म भी इसीलिए हुआ था।

स्वतन्त्रता महामन्त्र के दाता, युग प्रवर्तक तथा "स्वतन्त्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है" को भारत भू पर घोषणा करने वाले तिलक को स्वतन्त्रता की प्रेरणा देने वाले युग पुरुष आचार्य प्रवर गुरुदेव दयानन्द स्वदेश, स्वतन्त्रता, स्वराज्य एवं नागरी भाषा तथा वैदिक संस्कृति के प्रबल एवं सर्वप्रथम समर्थकों में अग्रगण्य हैं। कांग्रेस के जन्म से पूर्व ही ऋषि ने अपनी अमर रचना "सत्यार्थ प्रकाश" के ६वें सम्मुल्लास में लिखा कि "कोई कितना ही यत्न करे जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि होता है। अथवा मतमतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराए का पक्षपात शून्य माता पिता के समान कृपा, न्याय दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं।

इलाहाबाद उच्च न्यायालय इस अभियोग का साक्षी है कि स्वतन्त्रता का शंखनाद करने वाली तथा आर्यों के सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य की प्रार्थना करने वाली ऋषि की अमर अक्षय रचना "आर्याभिविनय" से तत्कालीन अंग्रेजों में भय व्याप्त हो गया, अत: कुटिल अंग्रेजों ने इस पुस्तक पर अभियोग चलाया पर ऋषि दयानन्द अपने कण्टकाकीर्ण मार्ग से विचलित नहीं हुए। ऋषि ने पं० श्याम जी कृष्ण वर्मा को इंगलैण्ड जाकर स्वतन्त्रता हेतु कार्य करने की प्रबल प्रेरणा दी थी। और पं० श्याम जी ने इंगलैंड जाकर इण्डिया हाउस की स्थापना की और इसी के माध्यम से भारतीय विद्यार्थियों में स्वतन्त्रता का बीजारोपण किया फलस्वरूप सावरकर, धींगरा जैसे एक नहीं अनेक क्रान्तिकारियों का जन्म हुआ कि जिन्होने पराधीनता के प्रबल पाशों में जकड़ी हुई मातृभूमि को स्वतन्त्र कराने का आजन्म व्रत धारण कर अपने तुच्छ सुखों का परित्याग कर भारतीय स्वतन्त्रता के इतिहास में अपना विशेष स्थान बनाया।

इधर भारत मे ऋषि की अमर रचनाओ का असर कि जिसमें स्वदेश, स्वराज्य, स्वभाषा, स्वाधीनता तथा स्वसंस्कृति की सर्वत्र चर्चा थी सम्पूर्ण भारत में बढ़ा, फलस्वरूप स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय रामप्रसाद बिस्मिल, सरदार भगतसिंह आदि क्रान्तिकारियों का जन्म हुआ। इन क्रान्तिकारियों के क्रिया-कलापों से अंग्रेज सरकार की जड़ें हिल गयीं। अंग्रेज इनसे अत्यन्त भयभीत हो गए और उन्हें जमे अंगद के पांव उखड़ते नजर आए।

उस समय स्वामी दयानन्द के अकाट्य तर्कों तथा उनकी जादू भरी वाणी से मुन्शीराम जो कि अपनेको बड़ा तार्किक मानते थे की वाणी ही न जाने कहां खो गयी। ऋषि का उन पर ऐसा जादू चला कि पंडित मुन्शीराम पहले स्वयं पावन और फिर पतित पावन बन गए और फिर देखते देखते महात्मा से स्वामी श्रद्धानन्द बन गए। स्वामी दयानन्द सरस्वती से ही प्रेरणा प्राप्त कर मुन्शीराम जी ने गुरुकुल खोला और वहां पर प्राचीन आर्ष शिक्षा प्रणाली पर आधारित शिक्षा देने लगे इसी शिक्षा के साथ उन विद्यार्थियों में स्वतन्त्रता की भावना भी भरने लगे। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने स्वयं स्वतन्त्रता हेतु कांग्रेस में सम्मिलित हो गए और इसके सक्रिय कार्यकर्ता बन गए।

जलियां वाला बाग के रोंगटे खड़े कर देने वाले, निरापराधियों के प्रमुख हत्यारे जनरल ओ डायर की इस अमानवीयता पूर्ण नरसंहार दुष्कृत्य को देखकर कोई भी कांग्रेसी पंजाब में होने वाले अधिवेशन का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेकर यमराज को आमन्त्रण देना नहीं चाहता था, कांग्रेस का मनोबल पूर्णत: गिर चुका था। ऐसे समय में निर्भीक श्रद्धानन्द ने ही सम्मेलन की अध्यक्षता स्वीकार कर सबको आश्चर्य चकित ही नहीं कर दिया अपितु अपने पौरुषत्व का परिचय दिया था। यह बात अलग है कि मुस्लिमों को पूर्णत: सन्तुष्ट रखने वाली कांग्रेस पार्टी से उनका सम्बन्ध अधिक दिनो तक न बना रह सका, फलस्वरूप स्वामी जी ने हिन्दू महा सभा की स्थापना की अस्तु—तथापि स्वामी जी ने जो अविस्मरणीय कार्य देश की स्वतन्त्रता हेतु किए वह स्वर्णाक्षरों में लेखनीय हैं। गुरुकुल से स्वतन्त्रता की घुट्टी पीने के उपरान्त शिक्षित दीक्षित स्नातको ने स्वतन्त्रता प्राप्ति में अपना अमूल्य एवं अकथनीय योगदान दिया।

स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन में एक नहीं अनेकों उदाहरण ऐसे मिलते हैं कि जिनमें स्वामी जी ने अंग्रेजो के राज्य का सर्वथा विरोध किया है। निर्भीक दयानन्द परमपिता परमात्मा के सिवा अन्य किसी से न भय खाते थे, तभी तो एक अंग्रेज अधिकारी के यह कहने पर कि "आप अंग्रेजों के अखण्ड राज्य के लिए ईश्वर से प्रार्थना करें" स्वामी जी ने जिस निर्भीकता से प्रत्युत्तर दिया था जो सुनकर उस अधिकारी ने उन्हें विद्रोही फकीर की संज्ञा दी थी। स्वामी जी ने भूमिगत रहकर अनेक स्वतन्त्रता सेनानियों को जो कि सुप्रसिद्ध १८५७की असफल क्रांतिके पश्चात अंग्रेजो के दमनचक्र से पूर्णत: हताश निराश हो चुके थे, को प्रोत्साहित कर मातृभूमि को मुक्त कराने की प्रेरणा दी। तत्कालीन रजवाड़ों में जाकर राजाओ को भी इस पुण्य कार्य में सहयोग देने की प्रेरणा की। जहां-जहां स्वामी जी गए वहां-वहां सुप्त प्राय: पराधीन देशवासियो में स्वतन्त्रता का अलख जगाया, परिणामस्वरूप चतुर्दिक से अंग्रेजों को उखाड़ फेंकने की प्रतिक्रिया तीव्र हो गई। इधर सुराजप्रिय कांग्रेस पार्टी का उदय हुआ, पश्चात इसकी विचारधारा में परिवर्तन हुआ और यह स्वराज्य के लिए संघर्ष करने लगी। "कांग्रेस के असहयोग आन्दोलन, विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार आदि आन्दोलन से "तथा गरमदल के कार्य कर्ताओ द्वारा कार्य किया।" दोनों के क्रिया कलापो से अंग्रेज अत्यधिक भयभीत हो चुके थे। परिणामत: स्वामी जी कुढ़कर अंग्रेजो ने स्वामी जी समाप्त करने का षड्यन्त्र रचा, और इसमे सफलता भी पायी।

अंग्रेजों की कुटिलता का शिकार स्वामी जी हुए। परन्तु स्वामी जी ने स्वयं की की ज्योति बुझा कर अपनी ज्योति से लाखों ज्योतियां प्रज्वलित कर भारत ही नहीं वरन समग्र भूतल के मनुष्यमात्र को एक नई दिशा प्रदान की। यावत चन्द्र दिवाकर है तावत् ऋषि का नाम रहेगा। अन्तत: अंग्रेजो को एक दिन भारतभूमि को छोड़ कर जाना ही पड़ा।

आज इतिहास इन सब तथ्यों को नहीं बताता। स्वतन्त्रता प्राप्ति में कांग्रेस का ही सर्वाधिक योगदान इतिहास मे उद्धृत है, और यही हमारे नौनिहालो को पढ़ाया भी जाता है कि यदि कांग्रेस, गांधी और नेहरू न होते तो शायद स्वतन्त्रता कभी न मिलती। मेरा अभिप्राय यहां यह लेश-मात्र भी नहीं है कि कांग्रेस गांधी और नेहरू का स्वतन्त्रता प्राप्ति मे कुछ भी योगदान नही है इनका भी बहुत योगदान है। परन्तु आज आर्य समाज का उल्लेख इतिहास के पृष्ठों मे नगण्य है।" जो जाति अपने इतिहास को भुला देती है, वह पूर्णत: नष्ट होती है" अत: अपने इतिहास को कभी भी विस्मृत नही करना चाहिए। यही उन ज्ञात-अज्ञात मातृभूमि को स्वतन्त्र कराने वाले सेनानियो के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक साप्ताहिक के पाठको से निवेदन है कि जिन सदस्यो ने वार्षिक शुल्क अभी तक कार्यालय मे नहीं भिजवाया है, वह कृपया शीघ्र वार्षिक शुल्क भेजकर सहयोग प्रदान करे। मनिआर्डर भेजते समय अपना पूरा पता व ग्राहक संख्या लिखने का कष्ट करें। वार्षिक शुल्क २५) रुपए है।

बार-२ वार्षिक शुल्क भेजने की परेशानी से बचने का सरल उपाय, एक बार २५०) रुपए भेज कर सार्वदेशिक साप्ताहिक के आजीवन सदस्य बन सकते हैं।

—व्यवस्थापक सार्व० साप्ताहिक

२६ जनवरी : गणतन्त्र दिवस

—डा० भारतेन्दु द्विवेदी—

२६ जनवरी—गणतन्त्र दिवस स्वतन्त्र भारत का सबसे महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय पर्व है। इस दिन समस्त अबला-वृद्ध भारतीयो का मन आनन्द की तिरगो से उद्वेलित रहता है। जहा एक ओर दिल्ली के लालकिले पर ध्वाजारोहण और दिल्ली की आकर्षक परेड देखने के लिए प्रत्येक भारतीय का मन लालायित रहता है, वही सम्पूर्ण राष्ट्र इस राष्ट्रीय पर्व की विविध रगारग कार्यक्रमो से मनाता है। इस राष्ट्रीय पर्व को मनाने का सौभाग्य दिया हमारे क्रान्तिकारी स्वाधीनता के दिवाने महात्मा गाधी, सुभाषचन्द्र बोस, भगतसिह, चन्द्र शेखर आजाद, लाला लाजपत राय जैसे सैकडो हजारो क्रान्तिकारी नेताओ ने।

यद्यपि हमें स्वतन्त्रता १५ अगस्त १९४७ को प्राप्त हो गयी थी, परन्तु हम पूर्ण स्वतन्त्र २६ जनवरी १९५० को हुए। उस दिन स्वतन्त्र भारत का सविधान लागू हुआ। स्वाधीनता से पूर्व २६ जनवरी स्वाधीनता दिवस के रूप मे मनाया जाता था। ३१ दिसम्बर १९२९ और १ जनवरी १९३० की मध्य रात्रि मे लाहौर मे रावी नदी के तट पर श्री जवाहर लाल नेहरू ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप मे तिरगा ध्वज फहराने हुए कहा था कि स्वतन्त्रता आन्दोलन का मुख्य उद्देश्य पूर्ण स्वराज्य की प्राप्ति होगी। इस अवसर पर देश भक्तो ने प्रतिज्ञा की थी कि वे तब तक चैन की सास नही लेंगे, जब तक पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त नही हो जाती। इस अवसर पर यह निश्चय किया गया था कि २६ जनवरी १९३० स्वाधीनता दिवस के रूप मे मनाया जायेगा और इस दिन पूरे देश मे अधिक से अधिक लोगो तक स्वतन्त्रता का घोषणा-पत्र पहुचाया जायेगा। इस घोषणा पत्र ने प्रत्येक भारतीय के मन मे स्वतन्त्रता प्राप्ति की भावना जागृत की। तब से स्वाधीनता के पूर्व तक २६ जनवरी को क्रान्तिकारी नेता स्वाधीनता दिवस के रूप में मनाते रहे। इस दिवस के महत्व के कारण ही १९५० मे भारत का नया गणतन्त्रीय सविधान तैयार हो जाने पर २६ जनवरी को ही सविधान लागू करने का फैसला किया गया।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारत ने विविध क्षेत्रो मे पर्याप्त उन्नति की है, तथापि व्यक्ति का नैतिक पतन जितना अधिक हुआ है वह चिन्ता का विषय है। इस नैतिक पतन के कारण ही प्रत्येक नागरिक त्रस्त हैं। इसका मूलभूत कारण हमारी शिक्षा और धर्म को पृथक् पृथक् रखने की नीति है। धर्म ही एक मात्र ऐसा साधन है, जो व्यक्ति को आचार, कर्त्तव्य नैतिकता आदि गुणो की शिक्षा प्रदान करता रहे। स्वतन्त्र भारत में आज भी वोटो की राजनीति के कारण हमारे देश की कोई राष्ट्रभाषा है और न सस्कृति है। इसी प्रकार कुछ अन्य भी मूलभूत कार्य थे जिनका निर्णय स्वतन्त्रता प्राप्ति के साथ ही जाना चाहिए था परन्तु आज तक नही हो सका।

गणतन्त्र दिवस के अवसर पर देश के स्वतन्त्रता सग्राम मे प्राणो की बलि देने वाले, अपने यौवन की उमगो को राष्ट्र को समर्पित कर देने वाले उन शहीदो के प्रति मात्र श्रद्धाजलि प्रकट कर देने से हमारा कर्त्तव्य पूर्ण नही हो जाता। उन शहीदो के प्रति हमारी सबसे अच्छी श्रद्धाजलि शहीदो द्वारा देखे गये स्वतन्त्र भारत के उज्ज्वल भविष्य को साकार करने की प्रतिज्ञा होगी।

आर्यसमाज की वर्तमान में प्रासंगिकता

—डा० गंगाराम, अलीगढ़—

आर्य समाज ने १८७५ मे अपनी स्थापना से लेकर अब तक अनेक महत्वपूर्ण धार्मिक सामाजिक, शैक्षणिक और देशोत्थान के कार्य किये है जिनसे भारत मे हुये नवोत्थान को देखा जा सकता है। इसलिये यह प्रश्न उठता है कि क्या आर्य समाज की आज भी प्रासागिकता है?

आर्य समाज एक आन्दोलन है। इसके सतत जारी रहने की आवश्यकता है। आन्दोलन यदि ठडा हो जाता है तो फिर मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रो मे नाना प्रकार की बुराइया प्रारम्भ हो सकतीहैं। फिर भारतीय समाज को आज भी पूर्ण बुराई रहित नहीं कहा जा सकता। इसीलिये आर्यसमाज की आज भी परम आवश्यकता है।

आर्यसमाज का मत यह है कि धर्म एक है, ईश्वर एक है तथा धर्म के शाश्वत मूल्य सर्वत्र एक है। क्या यह कहना सही नही है कि भारत में आज भी धर्म के स्थान पर बाह्य आडम्बरो को धर्म समझ लिया जाता है? क्या कब्र पूजा धर्म है? क्या नर-बलि, पशु-बलि पक्षी-बलि आदि धर्म हैं? क्या शिव के नाम पर भाग पीना धर्म है? इसी प्रकार अन्य नाना प्रकार के अन्ध विश्वासो में श्रद्धा रखना धर्म है? आर्यसमाज इनको धर्म नही मानता अपितु मानव जाति के अभ्युत्थान मे इन्हे बाधक मानता है। इसीलिए वैदिक धर्म जैसे सत्य धर्म के प्रचार प्रसार के लिए आर्य समाज की परम आवश्यकता है।

सामाजिक क्षेत्र मे भी आर्यसमाज की आज भी महती आवश्यकता है। आज भी भारतीय समाज जन्मना जाति-पात, अस्पृश्यता नीच-ऊच, सती प्रथा दहेज प्रथा, भ्रूण हत्या आदि जैसी अनेक सामाजिक बुराइयो से ग्रसित है। इसलिये समाज मे मानव द्वारा मानव के शोषण को रोकने के लिए आज भी आयसमाज की महती आवश्यकता है।

हालाकि शिक्षा के क्षेत्र मे आर्य समाज ने अनेक महत्वपूर्ण कार्य किये हैं। देश मे आर्यसमाज ने अनेक गुरुकुल स्थापित किये है। आर्य समाज द्वारा सस्थापित अनेक डी०ए०वी० विद्यालयो और महाविद्यालयो का जालबिछा हुआहै। लेकिन फिर भी क्या वर्तमान शिक्षा पद्धति मे उन भारतीय नैतिक मूल्यो का ह्रास नहीं दिखाई देता जिन्हे हमारे प्राचीन वेदादि सत्य शास्त्रो ने प्रतिपादित किया था? क्या आज की शिक्षण सस्थाय सही मायने मे सदाचार का केन्द्र है? क्या वर्तमान शिक्षा सस्थाओ मे प्रचलित पाश्चात्य सह शिक्षा प्रणाली उचित है? इसीलिए भारत को भारत बने रहने की दृष्टि से शिक्षा के क्षेत्र मे भी आर्यसमाज की महती आवश्यकता है।

आज जब कि खण्डित हिन्दुस्तान की एकता और अखण्डता पुन पुन खतरे मे है आर्यसमाज की आवश्यकता को राष्ट्रीय दृष्टि से नकारा नही जा सकता। आर्यसमाज का मत है कि व्यक्ति से सस्था बडी होती है तथा सस्थाओ से बडा देश होता है। अत लोगो मे उत्कृष्ट देशभक्ति की भावना उत्पन्न करने की दृष्टि से आर्यसमाज की प्रासागिकता सदैव बनी रहेगी।

पंजाब व काश्मीर को १० वर्ष के लिए सेना के सुपुर्द करो

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की मांग

१८ जनवरी। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने प्रधानमन्त्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह को पंजाब व काश्मीर की वर्तमान स्थिति पर एक विशेष पत्र लिखकर मांग की है कि पंजाब और काश्मीर को दस वर्ष के लिए सेना के हवाले कर दिया जावे।

प्रधान मन्त्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह को लिखे एक पत्र में स्वामी जी ने यह भी कहा है कि पूरी सीमा पर एक सुरक्षा पट्टी बनाई जाए और वहां सेवा निवृत्त सैनिकों के परिवारों को बसाकर उन्हें मताधिकार दिया जाए। ऐसा करने पर ही आतंकवादियों को पाकिस्तान से मिलने वाली मदद प्रभावी ढंग से रोकी जा सकेगी। स्वामी जी ने ऐसी ही सलाह पूर्व प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी को भी दी थी।

आर्य नेता ने पंजाब की स्थिति की विस्तार से चर्चा करते हुए पत्र में कहा है कि वर्तमान लोकसभा में मान गुट के ६ सदस्य चुने गये हैं। इनके चुनाव के तरीकों से आप अवश्य ही जानकार होंगे। यह भी भली प्रकार से स्पष्ट है कि यदि उग्रवाद की सहायता से ये लोग चुनाव न जीतते तो इनमें से कुछ को फांसी की सजा और कुछ को उम्र कैद की सजा मिलनी निश्चित थी, परन्तु इन्हें जेलों से रिहा किया गया और सभी मुकदमे भी वापस ले लिये गये। इससे उग्रवादियों का उत्साह बढ़ा और सारी सुरक्षा व्यवस्था के मनोबल को ठेस पहुंची। आज उग्रवादी अपने आपको 'पंजाब का स्वामी' मानते हैं। जिस तरह वे आदेश जारी करते हैं उस तरह तो राज्यपाल भी नहीं करते। अधिकारियों को धमकियां दी जा रही हैं, व्यापारियों और डाक्टरों से लाखों रुपये वसूल किये जा रहे हैं। उन पुलिस अफसरों की सूचियां प्रकाशित की जा रही हैं, जिन्हें दण्ड देने का इरादा है। सिमरनजीत सिंह मान कानून के अनुसार काम करने वाले बड़े-बड़े अफसरों को हिटलर बता रहे हैं और उनके विरुद्ध उसी तरह कार्रवाई करने की धमकी दे रहे हैं, जैसे दूसरे महायुद्ध के बाद नाजियों के खिलाफ की गई थी। पुलिस थानों पर हमले हो रहे हैं। अर्द्ध सैनिक बलों को निशाना बनाकर मौत के घाट उतारा जा रहा है। एक एक सप्ताह में कई-कई लाख की फिरौतियां वसूल की जा रही हैं। मैं नहीं समझता कि आप सुरक्षा कर्मियों की मनःस्थिति का अन्दाजा नहीं लगा सकते कि जिस प्रकार अपने परिवार व अपनी जान की परवाह किये बिना देश के वीर पुलिस अफसर उग्रवादियों से टक्कर लेते हैं और सरकार उन्हीं में से कुछ उग्रवादी नेताओं को अकारण रिहा कर देती है और इसके विपरीत पुलिस अधिकारियों से जवाब तलब होता है। पिछले एक महीने में लगभग ५० सुरक्षा सैनिक उग्रवादियों के साथ मुठभेड़ में मारे गये हैं। क्या इन मुठभेड़ों को भी झूठी मुठभेड़ का नाम दिया जा सकता है।

आज तक की परिस्थिति पर यदि गम्भीरता पूर्वक विचार किया जाय तो स्पष्ट होगा कि यदि पंजाब में विधान सभा चुनाव करवा दिये गये तो बड़ा भारी अनर्थ होगा। यदि ११७ में से लगभग ८० सीटें मान ग्रुप के उन उग्रवादियों, उनके रिश्तेदारों इत्यादि को इनाम में मिलेंगी जिन्होंने देश की बड़ी-बड़ी हस्ती के खून से अपनी प्यास बुझाई थी। आप इसका भी भली-भांति अन्दाजा लगा सकते हैं कि इस प्रकार के लोगों की सरकार पंजाब में क्या-क्या गुल खिलायेगी। ऐसी सरकार पर नियन्त्रण तो दूर सहयोग की अपेक्षा भी केन्द्र सरकार को एक पूरा न होने वाला स्वप्न लगेगा। ऐसी सरकार सत्ता सम्भालते ही विधान सभा में प्रथम प्रस्ताव खालिस्तान का पास करायेगी, जिससे आपके लिए एक नया वैधानिक संकट पैदा हो जाएगा।

कश्मीर की चर्चा करते हुए अपने पत्र में स्वामी आनन्दबोध ने लिखा है कि कश्मीर में भी पाकिस्तानी उग्रवादियों की गतिविधियां और तेज होती जा रही हैं। पिछले एक महीने से कश्मीर में कोई ऐसा एक भी दिन नहीं निकला जब घरों, दुकानों, स्कूलों को जलाया न गया हो, मन्दिरों को तबाह न किया गया हो। पथराव, आगजनी, लूटपाट तो नित्यप्रति की घटनाएं बन चुकी हैं। भारत के ध्वज को जलाना और पाकिस्तानी झंडे फहराना तो सामान्य सी बात हो गई है। सैंकड़ों परिवार जिनमें अल्पसंख्यक समुदायों के लोग हैं, कश्मीर से पलायन कर चुके हैं और देश के अन्य हिस्सों में असहाय और बेघर होकर पड़े हैं।

इमाम को कर्ज की अदायगी!

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के नेतृत्व में नई सरकार ने काम-काज शुरू कर दिया है। मतदाता, जिन्होंने चाहे किसी भी दल के लिये अपना मत दिया हो, जानना चाहते हैं कि नई सरकार किस अर्थ में गत सरकार से भिन्न है। इसके काम की शैली, निर्णय लेने की प्रक्रिया कैसी है और कार्य सिद्ध करने के उपकरण क्या हैं? यह सत्य है कि पहले कदम पर ही किसी सरकार के गुण दोषों का निर्णय न उचित है न वाञ्छनीय, लेकिन यह भी सत्य है कि पहला कदम ही भावी दिशा का आभास करा देता है। विश्वनाथ प्रताप सिंह के नए मन्त्रिमण्डल के गठन से पूर्व यह अनुमान था कि गृह-मन्त्रालय जो एक अरसे से आकारहीन मन्त्रियों के कारण प्रभावहीन स्थिति में था, अब फिर एक बार अपनी खोई हुई गरिमा प्राप्त करेगा। अर्थात् उम्मीद थी कि विवेक और योग्यता की दृष्टि से कोई कद्दावर व्यक्ति इस मन्त्रालय की बागडोर सम्भालेगा। लेकिन राजा ने मुफ्ती मुहम्मद सईद को चुना। मुफ्ती कश्मीर की राजनीति की उपज है। इस बार जनता दल के मुस्लिम समर्थक रुख के कारण उ० प्र० के मुजफ्फरनगर निर्वाचन-क्षेत्र से जीते हैं। चुनाव से पूर्व बाबरी मस्जिद को उनका समर्थन और भाजपा के विरुद्ध विषवमन जगजाहिर है। इसके अलावा मुफ्ती कभी पर्यटन जैसे हल्के-फुल्के विभाग से ज्यादा किसी नाजुक मन्त्रालय को सम्भालने योग्य नहीं माने गये। सबसे बढ़कर विडम्बना तो यह है कि कश्मीर में पाकिस्तान समर्थक तत्वों को प्रोत्साहन देने तक के आरोप मुफ्ती पर लग चुके हैं।

आम चर्चा है कि जामा मस्जिद के इमाम अब्दुल्ला बुखारी के साथ जनता दल अध्यक्ष और वर्तमान प्रधानमन्त्री विश्वनाथ प्रताप सिंह का एक गुप्त समझौता हुआ है, जिसके तहत ही मुफ्ती गृहमन्त्री बने हैं।

कुछ भी हो, यह बात तर्क-संगत लगती है कि राजा मानते हैं कि चुनाव के दौरान भाजपा के साथ एक मंच पर न आने और मुस्लिम कट्टरपंथियों को दुलारने का प्रतिफल उन्हें मुस्लिम वोटों के रूप में मिला है। इसीलिए जो काम भारतीय सेकुलरवाद के आदि उद्घोषक पं० नेहरू से लेकर, 'जिसके समर्थन से वोट मिलें, उसकी जीहजूरी' का बेढब सिद्धान्त मानने वाले राजीव गांधी तक नहीं कर सके, वही काम राजा ने मुफ्ती को गृह मन्त्रालय सौंपकर कर दिया।

सेकुलरिज्म का नाम लिया गया, पर असलियत यह थी कि मुसलमानों को खुश करना था। क्या वजह है कि योग्यता और कुशलता में मुफ्ती से कई गुना बढ़ती आरिफ मोहम्मद खान को राजा ने इस पद के लिये उपयुक्त नहीं माना? क्या कारण नहीं है जो इलाहाबाद उप चुनाव में आरिफ को न बुलाने का था? जैसे उस समय शहाबुद्दीन और हाजी मस्तान की मदद अधिक 'कारगर' मानी गई थी क्या उसी प्रकार मुफ्ती को गृह मन्त्रालय दिया जाना अधिक प्रभावकारी नहीं माना गया? और क्या कारण रहा कि उत्तर प्रदेश में मोहम्मद आजम खान जैसे व्यक्ति को राज्य-मन्त्रिमण्डल में शामिल कर पुरस्कृत किया गया। यह वही आजम खान हैं जो भारत माता को डायन कहने के कारण कुख्यात हो चुके हैं और जो बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी के पदाधिकारी हैं।

(शेष पृष्ठ ९ पर)

आर्य जगत् की महान् विभूति स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त, ईश्वर आस्था पर सदा अनुरक्त, लौकिक एषणाओं से सदा विरक्त, गुरुकुल शिक्षा के परम-भक्त और ३७ वर्षों तक वैदिक धर्म के प्रचार में सतत अनुरत स्वनामधन्य स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती का जन्म माघ कृष्णा दशमी सं० १९१८ में पंजाब प्रान्त के लुधियाना मण्डल के जगरावां कस्बे में एक प्रतिष्ठित धार्मिक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री पं० रामप्रताप था और आपका जन्म का नाम कृपाराम था। आपकी शिक्षा दीक्षा यद्यपि फारसी भाषा से प्रारम्भ हुई, किन्तु आपने संस्कृत भाषा तथा व्याकरण का ज्ञान अपने विद्वान् पिताजी से ही प्राप्त कर लिया था आपका ज्ञान तत्कालीन पौराणिक परम्पराओं के अनुरूप ११ वर्ष की अवस्था में ही गृहस्थ जीवन में बांध दिया गया था किन्तु जन्म जन्मान्तरों के शुभ संस्कारों की प्रबलता और महर्षि दयानन्द के जादू भरे सत्संगों के प्रभाव से पं० कृपाराम को दर्शनों का प्रकाण्ड विद्वान्, युक्ति तीरों का महारथी और शास्त्रार्थ समर का धुरन्धर विद्वान् बना दिया। आप स्वयं ही अपने व्याख्यानों में कहा करते थे कि मुझे स्वामी दयानन्द के व्याख्यान सुनने का अनेक बार सौभाग्य प्राप्त हुआ। यद्यपि आपके विचारों पर कुल परम्परागत नवीन वेदान्त का प्रभाव था किन्तु महर्षि दयानन्द के व्याख्यानों से ऐसा अमिट रंग चढ़ा कि पारिवारिक पौराणिक समस्त मिथ्या भ्रान्तियों का मूल समूल नष्ट हो गया। आपके जीवन के कतिपय आदर्श तथा अनुकरणीय जीवन संस्मरण इस प्रकार हैं —

(१) गुरुकुल-शिक्षा के परम भक्त— आपका यह दृढ़ विश्वास था वैदिक शिक्षा के प्रसार में सर्वोच्च बाधक है लार्ड मैकाले द्वारा चलाई पाश्चात्य शिक्षा और उसका मुकाबला गुरुकुल शिक्षा के बिना कदापि नहीं हो सकता। और वेद विद्या के सत्य विभ्रान्त प्रकाश के प्रसार में प्रबल बाधक हैं— पौराणिक घोर घनों की काली छाया और उनको छिन्न भिन्न करने के लिए महर्षि दयानन्द द्वारा बताई आर्ष शिक्षा के क्रम से पढ़े विद्वान स्नातक ही समर्थ हो सकते हैं। इसलिए आपने इस दृढ़ विश्वास को साकार रूप देने के लिए आपने महाविद्यालय गुरुकुल ज्वालापुर, गुरुकुल बदायूं, गुरुकुल पोठोहार, गुरुकुल विरालसी, गुरुकुल सिकन्दराबाद जैसी संस्थाओं की स्थापना की।

(२) लेखनी के धनी—आर्य समाज से सम्बद्ध साहित्य की सर्जना में जिन प्रतिष्ठित विद्वानों के नाम लिए जाते हैं उनमें आपका नाम अग्रगण्य एवं सर्वोपरि है। आपने पत्र पत्रिकाओं का सञ्चालन कर जन जन तक वैदिक मान्यताओं का प्रसार बड़ी ही विद्वत्ता तथा उत्साह से किया। आपके विषय में यह प्रसिद्ध है कि आप प्रतिदिन एक लघु पुस्तिका (ट्रैक्ट) लिखकर तैयार कर दिया थे। उनमें कुछ तो अब भी 'दर्शनानन्द लिखी छोटी-छोटी पुस्तिकायें पाठकों पर जादू सा प्रभाव डालती हैं और पाठक बड़ी उत्सुकता से पढ़ता पढ़ता भी थकता नहीं है। यह सब आपकी लेखन शैली की अपूर्वता तथा युक्ति तीरों का ही कमाल है। दर्शनों के तो आप उद्भट विद्वान एवं पारदर्शी थे। इसीलिए न केवल आपने चार दर्शनों पर भाष्य लिखे, प्रत्युत दर्शनों पर छाई अद्वैतवाद की छाया को हटाकर दर्शनों का यथार्थ स्वरूप जन जन तक पहुँचाया है।

(३) शास्त्रार्थ-समर का अद्वितीय योद्धा—महर्षि दयानन्द की मृत्यु के बाद जिन महात्माओं विद्वानों व सन्तों ने वैदिक-धर्म को फैलाकर पिछली शताब्दी को आर्य समाज का स्वर्ण युग बनाया, उनमें प्रखर मेधा सम्पन्न, तर्क शिरोमणि स्वामी दर्शनानन्द का नाम अग्रगण्य है। यद्यपि इस शताब्दी में शास्त्रार्थ समर के धुरन्धर एक से एक बढ़कर हुए हैं, जिनको आर्यसमाज के इतिहास में सदा ही स्मरण किया जाता रहेगा, किन्तु आपकी अद्भुत शास्त्रार्थ शैली विचित्र ही थी आप प्रमाणों के प्रवाह में विशेष न बहकर तर्क की कसौटी पर ही विपक्षी विद्वानों को धराशायी कर दिया करते थे। आपकी वाणी में तो सरस्वती का ही वास था और भाषण में अलौकिक ओजस्विता थी। दर्शन शास्त्रों के अवगाहन में तो आप ऐसे कुशल तैराक थे कि शंकराचार्य व कुमारिल भट्ट जैसे दिग्गज विद्वानों की मान्यताओं की धज्जियां उड़ाकर पीछे छोड़ देते थे यह आपकी सर्वाधिक आश्चर्यजनक विशेषता थी। आज भी अनेक विद्वान् आप की युक्तियों का अवलम्बन कर शास्त्रार्थ



समर के महारथी अनायास ही बन जाते हैं। जैसे एक अच्छा पहलवान अखाड़े में आकर छिपकर नहीं बैठ सकता, वैसे ही शास्त्रार्थ की चर्चा हो रही हो और स्वामी जी वहां न पहुँचे हो, यह कदापि सम्भव नहीं था। मृत्यु से छः घण्टे पहले भी आपने यह घोषणा करवा दी थी कि जिसे शास्त्रार्थ करना हो वह अवश्य आ जावे। कहीं मेरे पीछे यह न कहना कि हमें शास्त्रार्थ करना था। ऐसे महान् शास्त्रार्थ महारथी, वैदिक-धर्म धुरन्धर, ईश्वर विश्वासी सच्चे सन्यासी के आदर्श जीवन से हमें भी कुछ सीखना चाहिये और वैदिक धर्म के प्रसार में दृढ़ संकल्प होकर लग जाना चाहिये। स्व० पं० हरिशंकर शर्मा कविरत्न के हृदयोद्गार के साथ हम इस सच्चे सन्त को हृदय से नमन करते हैं —

तुम त्यागमूर्ति तुम तेज पुंज तुम पावन पुण्य प्रभाकर थे।
महर्षि दयानन्द के परम भक्त तुम वैदिक धर्म दिवाकर थे॥
तुम शास्त्रार्थ संग्राम सिंह, निर्भय प्रतिवादि भयंकर थे।
तुम धर्म धाम तुम कृपाराम, दर्शनानन्द' शिवशंकर थे॥

जाग्रत हो वैदिक गणतन्त्र

लेखक : राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति

मुसाफिर खाना, सुलतानपुर (उ. प्र.)

जन जन का फिर भाग्य जगाए ज्योतिर्मय सा यह जनतन्त्र।
भारत की धरती पर पर फिर से जाग्रत हो वैदिक गणतन्त्र॥
वर्ण व्यवस्था पुनः देश में, वेदों की स्थापित हो।
ऊंच नीच के भावों से अब, मनुज नहीं सन्तापित हो॥
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र सब भद्र भाव रखें आपस में।
एक दूसरे के सहयोगी बनें, इन्द्रियां हो वश में॥
आश्रम की गरिमा से मानव, महिमामण्डित बने सहर्ष।
वसुन्धरा पर फैले वैदिक, युग का सौम्य सुखों का हर्ष॥
समता समरसता की सरिता, समृद्धि की हो सदा प्रवाहित।
वायु सुगन्धित बहे धरा पर, सबोए महिमण्डल का हित॥
जन जन में आये नवजीवन, सत्य धर्म का बिगुल बजे।
दया प्रेम का परोपकार का, साज धरणि पर आज सजे॥
ध्वज तिरंगा अम्बर में फहरे लेकर वेदों का सन्देश।
त्याग तथा बलिदान भावना, जगे हृदय में भाव विशेष॥

सम्पादक के नाम पत्र

(१)

श्री सम्पादक जी,

सार्वदेशिक साप्ताहिक के माध्यम से भारतीयता को बचाए रखने के लिए आपका प्रयास सराहनीय है। काफी सुन्दर विवरण सार्वदेशिक में प्रकाशित हो रहा है। इधर आपने 'मेरी विदेश यात्रा' डा० कपिलदेव द्विवेदी की प्रकाशित की, जो काफी रुचिकर लगी। विदेशों के सम्बन्ध में महत्त्वपूर्ण जानकारी मिली। लन्दन विश्व विद्यालय तथा फ्रैंकफर्ट विश्व विद्यालय में डा० कपिलदेव द्विवेदी जी ने व्याख्यान दिया वेदों से सम्बन्धित विषयों पर इससे भारतीय संस्कृति की महत्ता का परिचय मिलता है। वेदों का महत्त्व विदेशों में कितना लोकप्रिय है इस विदेश यात्रा विवरण से ज्ञात हुआ।

डा० द्विवेदी की इस यात्रा विवरण के प्रकाशन के लिए साधुवाद स्वीकार करें। पंजाब में हिन्दी श्री वीरेन्द्र जी का लेख भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है अतः धन्यवाद। —श्री प्रदीप कुमार

श्रीकृष्णपुरी, पटना

(२)

श्री सम्पादक जी, मैं सार्वदेशिक का नियमित पाठक हूँ। आपकी इस साप्ताहिक की जितनी प्रशंसा की जाए कम है। अभी हाल ही में आपने प्रसिद्ध विद्वान डा० कपिल द्विवेदी की 'मेरी विदेश यात्रा' प्रकाशित करने हेतु धन्यवाद देता हूँ। डा० द्विवेदी ने संक्षेप में अपनी विदेश की अति महत्त्वपूर्ण जानकारी दी है। इस विद्वान की यात्रा विवरण से ज्ञात हुआ कि विदेशों में लोगों का झुकाव भारतीय संस्कृति की ओर है वह आधुनिकता के स्थान पर शान्ति की खोज में भटक रहे हैं।

मैं विदेशों में भारतीय संस्कृति तथा वेदों के प्रचार के लिए आपके इस पत्र के माध्यम से डा० द्विवेदी को धन्यवाद देता हूँ। मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि डा० कपिल देव द्विवेदी जी से विदेश यात्रा का विस्तृत विवरण लिखवा कर सार्वदेशिक द्वारा पुस्तक रूप मे प्रकाशित किया जावा उचित होगा। सार्वदेशिक में उच्चकोटि के लेख प्रकाशित करने हेतु धन्यवाद।

—डा० विभुराम मिश्र

एम. ए. पी. एच. डी. डी. लिट्०

२४५, मुट्ठीगंज इलाहाबाद

(३)

महोदय, सार्वदेशिक पत्र आपके सम्पादन में अच्छे लेख प्रकाशित कर रहा है। पंजाब मे हिन्दी श्री वीरेन्द्र जी तथा गुरु का अध सत्यार्थप्रकाश श्री सच्चानन्द आर्य व उर्दू का अखण्डनाव घातक काफी अच्छा लगा। इससे पूर्व मेरी विदेश यात्रा डा० कपिलदेव द्विवेदी की पढ़ी। विदेशों के सम्बन्ध में इस यात्रा विवरण से महत्त्वपूर्ण तथ्य पता चलते हैं। इस विवरण और विस्तृत होना चाहिए था। सार्वदेशिक में इसी तरह अच्छे लेख प्रकाशित करते रहें। —श्रीमती विद्या सदासिया

निकट सीटी पोस्ट आफिस होशंगाबाद

इमाम को कर्ज की अदायगी

(पृष्ठ ३ का शेष)

इस बिन्दु पर उसी पुराने सवाल—सेकुलरिज्म पर लौट आना पड़ता है। यह कैसा सेकुलरिज्म है जो बिना किसी मजहबी भेद-भाव के केवल प्रतिभा को मान्यता देने के बजाय, किसका मजहब क्या है और किस मजहब के मानने वाले को ऊंचा पद देकर किसे खुश किया जा सकता है इस आधार पर निर्णय की प्रेरणा देता है? जरा हमारे नेतागण इस बात को साफ करें कि सेकुलरिज्म का मतलब मजहब के आधार पर भेदभाव है या सबको समान समझना? जो लोग राजीव सरकार से खिन्न थे, उनके लिए नाराजगी का कारण मात्र भ्रष्टाचार ही नहीं था। यह बात नई सरकार के कर्णधार ध्यान में रखें। अगर इमाम के समर्थन का कर्ज राष्ट्रीय भावनाओं को आहत करके चुकाना है तो यह बाजी बहुत महंगी पड़ेगी।

एक समर्पित व्यक्तित्व श्री दरबारी लाल

श्री दरबारी लाल के नेतृत्व में १९७२ में दिल्ली के अशोक विहार क्षेत्र में कुमारी हंसराज माडल स्कूल खोला गया। यह स्कूल आज भारत का सबसे बड़ा स्कूल माना जाता है इसमें लगभग ४०० अध्यापक और ६००० छात्र छात्राएं हैं।

कुशल प्रशासक और उच्च कोटि के प्रबन्धक के अतिरिक्त आप आर्य समाज की गतिविधियों में सक्रिय भाग लेते हैं। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के कार्यकारी प्रधान होने के नाते आपने देश के कोने कोने में आर्य समाजों की स्थापना करने में योगदान दिया है। वे आर्य समाज अशोक विहार के प्रधान है। तथा आर्य समाज अनारकली मन्दिर नई दिल्ली के भी कार्यकारी प्रधान हैं। आप सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के गत १५ वर्षों से सदस्य हैं। आर्य समाज स्थापना के शताब्दी समारोह में प्रतिनिधित्व करने के लिए आप नैरोबी और लन्दन गए। आपने वहां भी डी, ए. वी. संस्थाएं खोली है।

वहां आर्य समाज की भी स्थापना की है। प्रत्येक स्कूल में धर्मशिक्षक नियुक्त किया जाता है। जो बच्चों मे नैतिक शिक्षा का प्रचार करता है। इन शिक्षकों को अन्य स्नातक प्रशिक्षित शिक्षको के समान ही वेतन दिया जाता है जिससे उनका सम्मान बना रहे, आपके ही सत्प्रयत्नों से ही संभव हो सका है! —सम्पादक

ईसाइयों के गढ़ में वेद प्रचार

बिहार राज्य के नवादा जिले मे मढ़ गुलनी ईसाई गतिविधि का केन्द्र है। चर्च के सामने ही आर्य समाज का भवन जीर्ण शीर्ण अवस्था में खड़ा है आगे कुछ दुकानें बनी है उसकी भी व्यवस्था सही सलामत नहीं है अभी तक चेंहरा की चहारदिवारी भी नहीं बनी है गेट बना हुआ लोहे का समाज के हाल में कूड़ो के अम्बार पर पड़ा है। बाहर एक यज्ञशाला बनी है उसी मे पाठशाला भी चलती है बरामदे की फर्श उखड़कर धूल धूसरित हो गयी है। १९ दिसम्बर को डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी के द्वारा प्रचार कार्य सम्पन्न हुआ जिसमें युवको से अपील की गयी कि वे डा० दुःखवराम की कृति की रक्षा करें। युवको ने आर्य समाज में जागृति लाने और उत्सव करने का वचन दिया।

सुनहरा मौका

शिवरात्रि के उपलक्ष्य मे आर्य समाजो की लाईब्रेरी हेतु निम्नलिखित पुस्तकें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आधे मूल्य में दी जा रही है। तीन सौ तीस रुपये का साहित्य १६५ रुपये मे।

नोट :—आर्डर भेजते समय २५ प्रतिशत धन अग्रिम भेजें।

	रुपये
१—वेदार्थ कल्पद्रुम	६०)
२—संस्कृत सत्यार्थ प्रकाश	६०)
३—दयानन्द दिव्य दर्शन	५०)
४—वेद विबन्ध स्मारिका	३०)
५—वैदिक कोष संग्रह	१५)
एक सैट	
६—आर्य निदेशिका	१५)
७—दिल्ली स्मारिका	५)
८—मोरीशस स्मारिका	१०)
९——Strom in Punjab	८०)
१०—वैदिक धर्म की रूपरेखा	५)
	३३०)

प्राप्ति स्थान :—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

कसाइयों से १५० गाय मुक्त कराई गईं

सुरेहती (महेन्द्रगढ़) नव-वर्ष को प्रथम बेला १ जनवरी ९० को राजस्थानी कसाई बनजारों से डेढ़ सौ गउयें छुड़ाई गई। गोवध रक्षा समिति के सदस्य शास्त्री रामपाल सुरेहती ने अपने साथियों के साथ मिलकर इन बनजारों को घेर कर गउयें मुक्त कराई। तुरन्त सूचना मिलते ही समिति के अध्यक्ष ब्र० ओमस्वरूप आचार्य गुरुकुल डिकाडला सुरेहती पहुँचे और तीन चार दिन में गांव गांव में गउओं को बांटा गया। श्री गौशाला लोहारू में भी २५ गऊवें छोड़ी गई। सुरेहती गांव का विशेष योगदान रहा। इसी गोरक्षक दल ने दीपावली से पहले बाटड़ा में भी ३०० गऊओं को छुड़वाया था। हरियाणा राज्य गौशाला संघ ने कई बार हरियाणा सरकार से इन बनजारों पर रोक लगाने की मांग की है। संघ ने सभी हरियाणा की गौशालाओं की एक बैठक २१ जनवरी को गौशाला जिवाना में बुलाई थी ताकि हरियाणा से जा रहे गोवध पर प्रतिबन्ध लगाया जावे।

—ब्र० ओमस्वरूपार्य, उपाध्यक्ष हरियाणा राज्य गौशाला संघ

बसेड़ा (सहारनपुर) में आर्य वीर दल शाखा

ग्राम बसेड़ा (सहारनपुर) में आर्य वीर दल की शाखा प्रारम्भ हो गई। २५ आर्य वीरों का प्रशिक्षण चल रहा है। श्री रामकुमार शाखा संचालक, सोहनलाल आर्य उपशाखा नायक नियुक्त किया है।

शाखा श्री अनिल कुमार आर्य एम० ए० शिक्षक आर्य वीर दल के सद्प्रयास से यह शाखा चालू हुई है।

पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी में भूमिशोधन यज्ञ

आर्य जगत को यह जानकर महती प्रसन्नता होगी कि पाणिनी कन्या महाविद्यालय वाराणसी को महान प्रयासों के पश्चात् जिस भू भाग की अपूर्व उपलब्धि हुई है उसमें "भूमिशोधन यज्ञ" दिनांक २६ जनवरी तदनु पौ०शु०कृ० ३ माघ २०४६ से विद्यालय परिसर द्वारा प्रारम्भ किया गया है जिसकी पूर्णाहुति १४ जनवरी मकर सक्रान्ति पर्व पर हुई। परम प्रभु की कृपा के लिए अपनी हार्दिक कृतज्ञता अर्पित करने हेतु यह यज्ञ रचाया है। जिसमें विशेष रूप से विद्यालय परिवार ही भाग ले रहा है। यज्ञीय धूम-गन्धि एवं भजन संगीत से इस समय विद्यालय में आनन्द सरिता निरन्तर प्रवाहित हो रही है।

विद्यालय का आगामी वार्षिकोत्सव इस नवीन भू भाग में ही १३, १४, १५ अप्रैल ९० को धूमधाम से होगा जिसमें सभी आर्य भाई बहिन सोत्साह भाग लेकर पुण्य अर्जित करें ऐसी प्रार्थना है।

इस भू भाग को क्रय करने हेतु जो स्नेह एवं सहयोग आर्य भाई बहिनों द्वारा मिला है उसके लिए सबका विशेष धन्यवाद है। —प्रज्ञादेवी आचार्या

पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी

त्रिनगर में दौड़ प्रतियोगिता व सम्मेलन

नई दिल्ली, दिसम्बर (स०) केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् त्रिनगर के तत्वावधान में आयोजित दौड़ प्रतिस्पर्धाओं में प्रवीण कुमार (शास्त्री नगर), रामबाबू (शालीमार बाग), राजेन्द्रसिंह (पूठ गांव) क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय रहे। महर्षि दयानन्द पार्क, केशव पुरम, लारेंस रोड, वीरग कालोनी, गणेश पुरा, मेन रोड त्रिनगर से होते हुए आर्य-समाज लेखराम नगर त्रिनगर में सम्पन्न इस प्रतियोगिता में ३०० धावकों ने ५ किलोमीटर का रास्ता तय किया। अमर शहीद प० रामप्रसाद 'बिस्मिल' के बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित दौड़ स्पर्धा का उद्घाटन प्रि० एम. एल. गुप्ता (डी ए वी माडल स्कूल नरेला) ने देश की एकता व अखण्डता का आह्वान करते हुए किया।

शिविर सम्पन्न

अपार हर्ष का विषय है कि आर्य समाज मऊनाथ भंजन की ओर से एक जनपदस्तरीय आर्य वीर दल कार्यकर्ता शिविर दिनांक १२-१२-८९ से ३१ १२ ८९ तक आयोजित किया गया। इसमें जिले तथा आस पास के स्थानों से ४० (चालीस) प्रशिक्षार्थियों ने भाग लिया। इसके व्यायाम शिक्षक श्री अभेद मुनी जी थे तथा कार्यक्रम की देखरेख पूर्वी उ.प्र. के उपसंचालक ब्रह्मचारी नरेन्द्र लाल ने किया। शिविर में यज्ञ, व्यायाम वर्धक आसन के आर्यसमाज एवं आर्य वीर दल से सम्बन्धित विषयों पर प्रतिदिन बौद्धिक कार्यक्रम भी हुआ। सायंकाल अस्त्र-शस्त्र चालन का भी प्रशिक्षण दिया गया।

—दुर्गाशंकरसिंह, मन्त्री
आर्य वीर दल

सम्पादक के नाम पत्र

(१)

श्री सम्पादक जी,

सार्वदेशिक साप्ताहिक के माध्यम से भारतीयता को बचाए रखने के लिए आपका प्रयास सराहनीय है। काफी सुन्दर विवरण सार्वदेशिक में प्रकाशित हो रहा है। इधर आपने 'मेरी विदेश यात्रा' डा० कपिलदेव द्विवेदी की प्रकाशित की, जो काफी रुचिकर लगी। विदेशो के सम्बन्ध मे महत्वपूर्ण जानकारी मिली। लन्दन विश्व विद्यालय तथा फ्रैंकफर्ट विश्व विद्यालय में डा० कपिलदेव द्विवेदी जी ने व्याख्यान दिया वेदो से सम्बन्धित विषयो पर इससे भारतीय संस्कृति की महत्ता का परिचय मिलता है। वेदो का महत्व विदेशो मे कितना लोकप्रिय है इस विदेश यात्रा विवरण से ज्ञात हुआ।

डा० द्विवेदी को इस यात्रा विवरण के प्रकाशन के लिए साधुवाद स्वीकार करे। पजाब मे हिन्दी श्री वीरेन्द्र जी का लेख भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है अतः धन्यवाद।

—श्री प्रदीप कुमार
श्रीकृष्णपुरी, पटना

(२)

श्री सम्पादक जी, मैं सार्वदेशिक का नियमित पाठक हूँ। आपकी इस साप्ताहिक की जितनी प्रशसा की जाए कम है। अभी हाल ही में आपने प्रसिद्ध विद्वान डा० कपिल द्विवेदी की 'मेरी विदेश यात्रा' प्रकाशित करने हेतु धन्यवाद देता हूँ। डा० द्विवेदी ने सक्षेप मे अपनी विदेश की अति महत्वपूर्ण जानकारी दी है। इस विद्वान की यात्रा विवरण से ज्ञात हुआ कि विदेशो मे लोगो का झुकाव भारतीय संस्कृति की ओर है वह आधुनिकता के स्थान पर शान्ति की खोज मे भटक रहे हैं।

मैं विदेशो मे भारतीय संस्कृति तथा वेदो के प्रचार के लिए आपके इस पत्र के माध्यम से डा० द्विवेदी को धन्यवाद देता हूँ। मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि डा० कपिल देव द्विवेदी जी से विदेश यात्रा का विस्तृत विवरण लिखवा कर सार्वदेशिक द्वारा पुस्तक रूप मे प्रकाशित किया जावा उचित होगा। सार्वदेशिक में उच्चकोटि के लेख प्रकाशित करने हेतु धन्यवाद।

—डा० विष्णुराम मिश्र
एम ए पी एच डी डी लिट्०
२४५, मुट्ठीगज इलाहाबाद

(३)

महोदय, सार्वदेशिक पत्र आपके सम्पादन मे अच्छे लेख प्रकाशित कर रहा है। पजाब मे हिन्दी श्री वीरेन्द्र जी तथा गुरु का बाग सत्यार्थप्रकाश श्री दयानन्द आर्य व उर्दू का अवसरवादी घातक काफी अच्छा लगा। इससे पूर्व मेरी विदेश यात्रा डा० कपिलदेव द्विवेदी की पढ़ी। विदेशों के सम्बन्ध मे इस यात्रा विवरण से महत्वपूर्ण तथ्य पता चलते हैं। इस विवरण और विस्तृत होना चाहिए था। सार्वदेशिक मे इसी तरह अच्छे लेख प्रकाशित करते रहे।

—श्रीमती विद्या अदालिया
निकट सीटी पोस्ट आफिस होशंगाबाद

इमाम को कर्ज की अदायगी

(पृष्ठ ३ का शेष)

इस बिन्दु पर उसी पुराने सवाल—सेकुलरिज्म पर लौट आना पड़ता है। यह कैसा सेकुलरिज्म है जो बिना किसी मजहबी भेद-भाव के केवल प्रतिभा को मान्यता देने के बजाय, किसका मजहब क्या है और किस मजहब के मानने वाले को ऊंचा पद देकर किसे खुश किया जा सकता है इस आधार पर निर्णय की प्रेरणा देता है? जरा हमारे नेतागण इस बात को साफ करें कि सेकुलरिज्म का मतलब मजहब के आधार पर भेदभाव है या सबको समान समझना? जो लोग राजीव सरकार से खिन्न थे, उनके लिए नाराजगी का कारण मात्र भ्रष्टाचार ही नहीं था। यह बात नई सरकार के कर्णधार ध्यान मे रखें। अगर इमाम के समर्थन का कर्ज राष्ट्रीय भावनाओ को आहत करके चुकाना है तो यह काफी बहुत महंगी पड़ेगी।

एक समर्पित व्यक्तित्व श्री दरबारी लाल

श्री दरबारी लाल के नेतृत्व मे १९७२ मे दिल्ली के अशोक विहार क्षेत्र में कुमारी हसराज माडल स्कूल खोला गया। यह स्कूल आज भारत का सबसे बड़ा स्कूल माना जाता है इसमे लगभग ४०० अध्यापक और ६००० छात्र छात्राए हैं।

कुशल प्रशासक और उच्च कोटि के प्रबन्धक के अतिरिक्त आप आर्य समाज की गतिविधियो मे सक्रिय भाग लेते हैं। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के कार्यकारी प्रधान होने के नाते आपने देश के कोने कोने मे आर्य समाजों की स्थापना करने मे योगदान दिया है। वे आर्य समाज अशोक विहार के प्रधान हैं। तथा आर्य समाज अनारकली मन्दिर नई दिल्ली के भी कार्यकारी प्रधान हैं। आप सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के गत १५ वर्षों से सदस्य हैं। आर्य समाज स्थापना के शताब्दी समारोह मे प्रतिनिधित्व करने के लिए आप नैरोबी और लन्दन गए। आपने वहा भी डी, ए वी संस्थाए खोली हैं।

वहा आर्य समाज की भी स्थापना की है। प्रत्येक स्कूल मे धर्मशिक्षक नियुक्त किया जाता है। जो बच्चो मे नैतिक शिक्षा का प्रचार करता है। इन शिक्षको को अन्य स्नातक प्रशिक्षित शिक्षको के समान ही वेतन दिया जाता है जिससे उनका सम्मान बना रहे, आपके ही सत्प्रयत्नो से ही सभव हो सका है।

—सम्पादक

ईसाइयों के गढ़ में वेद प्रचार

बिहार राज्य के नवादा जिले मे मठ गुलनी ईसाई गतिविधि का केन्द्र है। चर्च के सामने ही आर्य समाज का भवन जीर्ण शीर्ण अवस्था मे खड़ा है आगे कुछ दुकाने बनी हैं उसकी भी व्यवस्था सही सलामत नहीं है अभी तक चेहरा की चहारदिवारी भी नहीं बनी है गेट बना हुआ लोहे का समाज के हाल में कूड़ो के अम्बार पर पड़ा है। बाहर एक यज्ञशाला बनी है उसी मे पाठशाला भी चलती है बरामदे की फर्श उखड़कर धूल धूसरित हो गयी है। १९ दिसम्बर को डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी के द्वारा प्रचार कार्य सम्पन्न हुआ जिसमे युवको से अपील की गयी कि वे डा० दु.खवराम की कृति की रक्षा करे। युवको ने आर्य समाज मे जागृति लाने और उत्सव करने का वचन दिया।

कसाइयों से १५० गाय मुक्त कराई गईं

सुरेहती (महेन्द्रगढ) नव-वर्ष की प्रथम वेला। जनवरी ९० को राजस्थानी कसाई बनजारों से डेढ सौ गउयें छुडाई गईं। गोवध रक्षा समिति के सदस्य शास्त्री रामपाल सुरेहती ने अपने साथियों के साथ मिलकर इन बनजारों को घेर कर गउयें मुक्त कराई। तुरन्त सूचना मिलते ही समिति के अध्यक्ष ब्र० ओमस्वरूप आचार्य गुरुकुल डिकाडला सुरेहती पहुँचे और तीन चार दिन में गाव गाव में गउओं को बांटा गया। श्री गोशाला लोहरू में भी २५ गऊवें छोडी गईं। सुरेहती गांव का विशेष योगदान रहा। इसी गोरक्षक दल ने दीपावली से पहले बाटडा में भी ३०० गऊओं को छुडवाया था। हरियाणा राज्य गोशाला संघ ने कई बार हरियाणा सरकार से इन बनजारों पर रोक लगाने की माग की है। संघ ने सभी हरियाणा की गोशालाओं की एक बैठक २१ जनवरी को गोशाला भिवानी में बुलाई थी ताकि हरियाणा से जा रहे गोवध पर प्रतिबन्ध लगाया जावे।

—ब्र० ओमस्वरूपार्य, उपाध्यक्ष हरियाणा राज्य गोशाला संघ

बसेड़ा (सहारनपुर) में आर्य वीर दल शाखा

ग्राम बसेडा (सहारनपुर) में आर्य वीर दल की शाखा प्रारम्भ हो गई। २५ आर्य वीरों का प्रशिक्षण चल रहा है। श्री रामकुमार शाखा संचालक, सोहनलाल आर्य उपशाखा नायक नियुक्त किया है।

शाखा श्री अनिल कुमार आर्य एम० ए० शिक्षक आर्य वीर दल के सद्प्रयास से यह शाखा चालू हुई है।

पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी में भूमिशोधन यज्ञ

आर्य जगत को यह जानकर महती प्रसन्नता होगी कि पाणिनी कन्या महाविद्यालय वाराणसी को महान प्रयासों के पश्चात् जिस भू भाग की अपूर्व उपलब्धि हुई है उसमें "भूमिशोधन यज्ञ" दिनांक २६ जनवरी तदनु पौ०शु०क० ३ माघ २०४६ से विद्यालय परिसर द्वारा प्रारम्भ किया गया है जिसकी पूर्णाहुति १४ जनवरी मकर सक्रान्ति पर्व पर हुई। परम प्रभु की कृपा के लिए अपनी हार्दिक कृतज्ञता अर्पित करने हेतु यह यज्ञ रचाया है। जिसमें विशेष रूप से विद्यालय परिवार ही भाग ले रहा है। यज्ञीय सुगन्धि एवं भजन संगीत से इस समय विद्यालय में आनन्द सरिता निरन्तर प्रवाहित हो रही है।

विद्यालय का आगामी वार्षिकोत्सव इस नवीन भू भाग में ही १३, १४, १५ अप्रैल ९० को धूमधाम से होगा जिसमें सभी आर्य भाई बहिन सोत्साह भाग लेकर पुण्य अर्जित करें ऐसी प्रार्थना है।

इस भू भाग को क्रय करने हेतु जो स्नेह एवं सहयोग आर्य भाई बहिनों द्वारा मिला है उसके लिए सबका विशेष धन्यवाद है। —प्रज्ञादेवी आचार्या

पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी

त्रिनगर में दौड़ प्रतियोगिता व सम्मेलन

नई दिल्ली, दिसम्बर (स०) केन्द्रिय आर्य युवक परिषद् त्रिनगर के तत्वावधान में आयोजित दौड प्रतिस्पर्धाओं में प्रवीण कुमार (शास्त्री नगर), रामबाबू (शालीमार बाग), राजेन्द्रसिंह (पूस गांव) क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय रहे। महर्षि दयानन्द पार्क, केशव पुरम, लारेंस रोड, वारग कालोनी, गणेश पुरा, मेन रोड त्रिनगर से होते हुए आर्यसमाज लेखराम नगर त्रिनगर में सम्पन्न इस प्रतियोगिता में ३०० धावकों ने ५ किलोमीटर का रास्ता तय किया। अमर शहीद प० रामप्रसाद 'बिस्मिल' के शहीद दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित दौड स्पर्धा का उद्घाटन प्रि० एम. एस. गुप्ता (डी ए वी मॉडल स्कूल नरेला) ने देश की एकता व अखण्डता का आह्वान करते हुए किया।

शिविर सम्पन्न

अपार हर्ष का विषय है कि आर्य समाज मऊनाथ भजन की ओर से एक जनपदस्तरीय आर्य वीर दल कार्यकर्ता शिविर दिनाक १२-१२-८९ से ३१ १२ ८९ तक आयोजित किया गया। इसमें जिले तथा आस पास के स्थानों से ४० (चालीस) प्रशिक्षार्थियों ने भाग लिया। इसके व्यायाम शिक्षक श्री प्रमोद मुनी जी थे तथा कार्यक्रम की देखरेख पूर्वी उ.प्र के उपसंचालक ब्रह्मचारी नरेन्द्र लाल ने किया। शिविर में यज्ञ, व्यायाम दर्शक भाव के आर्यसमाज एव आर्य वीर दल से सम्बन्धित विषयों पर प्रतिदिन बौद्धिक कार्यक्रम भी हुआ। सायंकाल अस्त्र-शस्त्र चालन का भी प्रशिक्षण दिया गया।

—पुर्णचन्द्रसिंह, मन्त्री आर्य वीर दल

गुरुकुल येडशी (महाराष्ट्र) आर्यवीर दल शिविर सम्पन्न

गुरुकुल रामलिंग येडशी (महाराष्ट्र) मे ८ से ११ नवम्बर १९८९ तक पूज्य डा० आचार्य श्री देवव्रत जी के मार्गदर्शन मे ५० युवको का आर्य वीर दल का प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। इस शिविर मे पूना, खण्डवा, लातूर केज, बार्शी, येडशी व धर्माबाद आदि नगरो के युवको ने उत्साह से भाग लिया।

शिविर के समापन दिन कई युवको ने अपने अपने गाव मे दैनिक शाखा लगाने, प्रतिदिन व्यायाम आसन करने, धूम्रपान, मद्यपान व मांस आदि अभक्ष्य पदार्थ सेवन कदापि न करने आदि का व्रत लिया, यज्ञोपवीत लिया। पूज्य आचार्य जी का सर्वाधिक योगदान शिविर को सफल बनाने मे रहा। पूज्य स्वामी विज्ञानन्द जी, मेरठ का भी उपदेश युवको के लिए बडा ही प्रभावशाली रहा।

इस शिविर को आर्थिक सहयोग करने वाले, बार्शी, धारूर, लातूर, सोलापुर, बोर्डी आदि के दानदाता रहे हैं जोकि धन्यवाद के पात्र हैं। शिविरार्थियो की भोजन की व्यवस्था बहुत ही सुन्दर ढग से श्री सोमनाथ स्वामी ने की थी। इस आर्यवीर दल के शिविर का संयोजन गुरुकुल रामलिंग येडशी के प्रधानाचार्य आचार्य सुभाषचन्द्र जी ने किया था।

उपद्रवी ग्रामीण क्षेत्रों में वार्षिकोत्सव

आर्य समाज लखना (पुनपुन-पटना) का ३०वा वार्षिकोत्सव बडे ही धूमधाम से विगत १८ से २२ दिसम्बर तक मनाया गया इस अवसर पर एशिया सुप्रसिद्ध चिकित्सक श्री डा० एस एम. आर्य पटना बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री बनारसी सिह "विजयी" इतिहास गवेषक डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी, नालन्दा, बहन धर्मशीला देवी जी मुजफ्फरपुर, दयानन्द सत्यार्थी समस्तीपुर महावीर सिह पटना आदिविद्वानो के भजन एव उपदेश हुए।

असम आर्य प्रतिनिधि सभा गौहाटी का भवन निर्माण कार्य प्रारम्भ

असम आर्य प्रतिनिधि सभा गौहाटी जिसको बने,प्राय ९ वर्ष हो गये हैं अपना भवन निर्माण कार्य शुरु करने वाली है इसके लिये ज्योति नगर (रीफाइनरी)के पास श्री पी०सी०गोयनका द्वारा जमीन दान दी गई है।

१—२१०००) रुपया श्री भगवानदास जी अग्रवाल एलमोनियम इण्डूसट्रीज (प्राइवेट) लिमिटिड तिनसुखिया।

२—२१०००) रुपया डा० नारायणदास भारतभूषण वटेटेरूल ट्रस्ट द्वारा इस शुभ कार्य के लिये अनुदान रूप में आये हैं।

—नारायणदास प्रधान

डा० मुन्शीराम शर्मा दिवंगत

आर्यसमाज मेस्टन रोड के सदस्य एव डी०ए०वी० कालेज कानपुर के हिन्दी विभाग के पूर्वाध्यक्ष डा० मुन्शीराम जी शर्मा सोम का देहावसान ११ जनवरी की अचानक हृदय गति रुक जाने के कारण ८९ वर्ष की अवस्था मे स्वर्गवास हो गया। आप हिन्दी साहित्य के साहित्यकारो में से एक आप हैं आपकी हिन्दी की अनेक रचनाये हैं उसी प्रकार सस्कृत साहित्य पर भी वैदिक सिद्धान्तो पर भी आपकी रचना चतुर्वेद मीमासा प्रसिद्ध ग्रन्थ है आप एक लेखक भी थे आपके लेख एव रचनाये आर्य पत्रो मे प्रकाशित होती रहती थी यह उद्गार समाज मेस्टनरोड के साप्ताहिक अधिवेशन मे व्यक्त करते हुये परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत को सदगति प्रदान कर तथा उनके पुत्रो, पुत्रियो एव इष्ट-मित्रो एव इष्ट मित्रो आर्य समाज से सम्बन्धित आर्यों को सहन करने की शक्ति देवे कि इस असह्य दुःख सहन कर सके।

—विजयपाल शास्त्री

साहित्य समीक्षा

आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री द्वारा लिखित

दर्शन-तत्व विवेक का द्वितीय भाग

भारतीय दर्शन शास्त्र मनीषी ऋषि प्रणीत आर्य विचारो का वह गम्भीर निचोड है, जिसको समझने के लिये तप पूत जीवन की नितान्त आवश्यकता है। यद्यपि पाश्चात्य विचारको, तथा कतिपय अनार्य विद्वानो ने दर्शन शास्त्रो की अप्रतिम विषय-वस्तु मे विविध कुतर्कों के द्वारा यह दर्शाने का प्रयत्न किया है कि ये सभी ग्रन्थ विभिन्न सिद्धान्तो का प्रतिपादन करते हैं जो आधारहीन हैं यद्यपि कुछ ग्रन्थो पर आर्य भाषा उपलब्ध हैं, जिनको सूत्र भाषा को समझने मे समग्र चेतना शक्ति और बौद्धिक साथ को कठो परिश्रम करना पडता है परिणाम स्वरूप जिस फल की प्राप्ति होती है उससे पूर्ण बोध नहीं होता।

पूज्य आचार्य जी ने साधनामय निस्वार्थ जीवन के इस दार्शनिक विचार-धारा को अपने अमूल्य ग्रन्थ "दर्शन-तत्व विवेक" में जिस सहजता के साथ व्यक्त किया है वह उनके गहन अध्ययन और बौद्धिक परिपक्वता का परिचायक है। ऋषि दयानन्द के विचारो के सही मूल्याकन मे यह अभूतपूर्व ग्रन्थ महान सहायक एव प्रेरणा प्रद है ऐसी मेरी सहमति है। कोई भी तत्ववेत्ता भारतीय दर्शन को सुगमता से समझ कर अपने जीवन को इस ग्रन्थ के अध्ययन से सफल बना सके तो मैं आचार्य जी के प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि समझूं गा।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान सार्वदेशिक सभा

पुस्तक का मूल्य ७५) रुपये

१—प्राप्ति स्थान —
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन
रामलीला मैदान नई दिल्ली १

२—आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री शोध संस्थान
६४/१६ फरीदाबाद, हरियाणा

वार्षिकोत्सव

—आर्यसमाज मुसाढी (नालन्दा) का ३३वा वार्षिकोत्सव ९,१०, ११ फरवरी १९९० को मनाया जा रहा है। जिसमे आर्य जगत के ख्याति प्राप्त विद्वान पूज्य स्वामी मोक्षानन्द जी सरस्वती (मथुरा), ब्रह्मानन्द जी नैष्ठीक (देहरादून), भजनोपदेशिका श्रीमती मनोरमा आर्या (अलीगढ) इत्यादि पधार रहे हैं। —सत्येन्द्रकुमार आर्य,

—आर्य समाज सान्ताक्रुज का ४५वा वार्षिकोत्सव रविवार दिनाक २१ १-९० से २८-१-९० तक मनाया जायेगा।

इस अवसर पर यजुर्वेद महायज्ञ श्री अर्जुनदेव जी शास्त्री एम ए वेद शिरोमणी (आगरा) के ब्रह्मत्व में सम्पन्न होगा।

इस उत्सव पर माननीय महात्मा आर्य भिक्षु जी, अध्यक्ष वान प्रस्थ आश्रम ज्वालापुर। सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री ओम्प्रकाश जी वर्मा, श्रीमती शिवराजवती आर्या, श्री रामदास नाइक, अध्यक्ष स्थायी समिति बम्बई महानगर पालिका, श्री मधु देवलेकर एम० एल० सी० श्री प्रकाशचन्द्र त्यागी अध्यक्ष सस्कृत विभाग भारतीय विद्या भवन बम्बई। श्रीमती लज्जारानी गोयल श्रीमती इन्दु विशनोई कुमारी अदिति, श्री प्रकाशचन्द्र शास्त्री श्री डा० सोमदेव जी शास्त्री, श्री कैप्टिन देवरत्न आर्य, श्री ओकारनाथ आर्य आदि के व्याख्यान तथा भजनोपदेश होगे।

धर्मवीर हकीकतराय बलिदान दिवस—बसन्त मेला

अखिल भारतीय हकीकतराय सेवा समिति और आर्यसमाज सरोजिनी नगर नई दिल्ली के तत्वावधान मे धर्मवीर हकीकतराय बलिदान दिवस एव बसन्त मेला रविवार ४ फरवरी १९९० को प्रात ८॥ बजे से दोपहर २ बजे तक आर्य समाज मन्दिर Y ब्लाक, सरोजिनी नगर नई दिल्ली मे बडे समारोह पूर्वक मनाया जायेगा।



आर्यसमाज बागपत (मेरठ) के रजत जयन्ती समारोह के अवसर पर स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जन-समुदाय को सम्बोधित करते हुए। साथ में श्री स्वामी चन्द्रवेश व मन्त्री श्री सत्यप्रकाश गौड।

आर्य समाज कानपुर का ११०वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज, मेस्टन रोड कानपुर का ११०वा वार्षिकोत्सव शिवरात्रि-पर्व के अवसर पर बृहस्पतिवार, २२ फरवरी से रविवार, २५ फरवरी, १९९० तक समारोह पूर्वक श्रद्धानन्द पार्क मे मनाया जायेगा। इस अवसर गायत्री महायज्ञ का प्रबन्ध भी किया जायेगा। वार्षिकोत्सव पर आर्य जगत के सन्यासी विद्वान एव भजनोपदेशक आ रहे हैं जिसमे स्वामी [illegible] जी सरस्वती, श्री प्रो० रत्नसिंह जी एम० ए०, श्री प्रो० उत्तमचन्द [illegible] एम० ए० "शरर" श्रीयुत महेन्द्रपालसिंह जी (पूर्व इमाम) श्रीयुत कुंवर [illegible] आर्य भजनोपदेशक, श्री प० देवीप्रसाद जी डा० वेदपालसिंह जी आदि की पधारने की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है।

—डा० विजयपाल शास्त्री मन्त्री

जयन्ती समारोह

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) के संस्थापक श्री स्वामी दर्शनानन्द जी सरस्वती महाराज का १२०वा जयन्ती समारोह दिनाक २१ जनवरी से २४ जनवरी १९९० तक आर्य किशोर एव विद्वत्कला परिषद् के तत्वावधान मे कुलभूमि मे बडी धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ।

—डा० हरिगोपाल शास्त्री, प्राचार्य

नयी आर्य समाजो को स्थापना

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के सुयोग्य भजनोपदेशक प० ब्रह्मानन्द आर्य वानप्रस्थी व श्री नेमप्रकाश धनुधर व जुगुल किशोर प्रचारक व नवल किशोर आर्य ओमलाल ढोलक वादक व अमरलाल नककारा वादक ने दिसम्बर १९८९ लाहोरी नगर सरैया व बेना परछिया बोधी खुर्द जिला लखीमपुर खीरी में नवीन आर्य समाज की स्थापना की। ३० महिलाओ ने यज्ञोपवीत धारण किये तथा ५० व्यक्तियो ने शराब अण्डा मांस छोडने की शपथ ली।

—सुरेशचन्द्र तिवारी
तहसील प्रधान आर्य उपप्रतिनिधि सभा, हरदोई
कार्यालय—कोठिला, पो० बेहटा गोकुल
जि० हरदोई (उ० प्र०) पि० २४११२५

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली मे मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म् सार्वदेशिक साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख्य पत्र

सृष्टि सम्वत् १९६०८५३०६० दयानन्दाब्द १६५ दूरभाष ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे
वर्ष २६ अंक ४] माघ शु० ९ स० २०४६ ४ फरवरी १९९०

दक्षिण भारत में आर्यसमाज के बढ़ते कदम

मदुरै में आर्य समाज मन्दिर का शिलान्यास

तिरुनावल्ली में दयानन्द हस्पताल, संस्कृत विद्यालय, गुरुकुल तथा गौशाला की स्थापना

सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तूफानी दौरे से दिल्ली

दिल्ली ३० जनवरी। सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती दक्षिण भारत के अपने १० दिवसीय तूफानी दौरे से आज प्रात दिल्ली लौट आये हैं। स्वामी जी ने इस विस्तृत दौरे मे हैदराबाद मद्रास, मदुरै, तिरुनावल्ली, तिनकाशी, मीनाक्षीपुरम् आदि क्षेत्रो की यात्रा की। वह दक्षिण भारत की सुखद यात्रा से बहुत आश्वस्त होकर लौटे हैं।

स्वामी जी दिल्ली से २१ जनवरी को आन्ध्रा एक्सप्रेस से हैदराबाद के लिए चले थे। २२ जनवरी को वह ज्यो ही काजी पेट रेलवे स्टेशन पर पहुचे वहा वारगल के सैकडो आर्य समाजी कार्यकर्त्ता उनके स्वागत के लिए खडे थे। वहा पर स्वामी जी का भव्य स्वागत हुआ। सिकन्दराबाद रेलवे स्टेशन पर सायकाल ५ बजे ज्यो ही गाडी रुकी प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव तथा हैदराबाद के आर्य वीर तथा आर्य जन बडी सख्या मे वहा स्वागत के लिए खडे थे। २२ जनवरी को स्वामी जी हैदराबाद मे रुके और २३ को पुन मद्रास के लिए ट्रेन से प्रस्थान किया। श्री नरसिंह रेड्डी श्री वैंकटरमण नायडू, श्री राजवीर आर्य, श्री रामाराव तथा श्री गोविन्दराव भी हैदराबाद से स्वामी जी के साथ उनके पूरे दौरे तक साथ रहे। रास्ते मे वारगल के महबूबाबाद रेलवे स्टेशन पर भारी सख्या मे आर्य बन्धु स्वागत के लिए एकत्र थे। वारगल से मद्रास तक के अनेक स्टेशनो पर स्वामी जी का स्वागत बराबर होता रहा।

२४ की प्रात वह मद्रास रेलवे स्टेशन पर पहुचे वहा आर्य समाज मद्रास के प्रधान श्री जयदेव आर्य तथा मन्त्री श्री टी० कन्नन स्वामी जी के स्वागत के लिए उपस्थित थे। वहा से स्वामी जी आर्य समाज मन्दिर मद्रास गए। दिन के विश्राम के बाद रात को वेगी एक्सप्रेस से उन्होने मदुरै के लिए प्रस्थान किया। २५ जनवरी की प्रात मदुरै रेलवे स्टेशन पर स्वामी जी को लेने के लिए श्री एम० नारायण स्वामी, आर्य समाज के प्रधान एव मन्त्री तथा अन्य अनेक आर्य जन उपस्थित थे। स्वामी जी वहा आर्य भवन के मालिक श्री वीरेन्द्र के आतिथ्य में रहे। मदुरै मे मुख्य कार्यक्रम आर्यसमाज भवन का शिलान्यास था। आर्य समाज भवन के लिए गत वर्ष सार्वदेशिक सभा के प्रयत्नो से १,८५,०००-०० रुपए में भूमि क्रय की गई थी। भवन का शिलान्यास का कार्यक्रम बडे उत्साह पूर्वक आयोजित किया गया था। इस अवसर पर मदुरै के आर्य नर नारी, बडे-बडे विद्वान् व्यापारी आदि बडी सख्या में पधारे हुए थे। मदुरै के भूतपूर्व मेयर विशेष अतिथि के रूप मे उपस्थित थे। आर्य समाज भवन का शिलान्यास स्वामी जी के कर कमलो से बडे उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। मदुरै से स्वामी जी मोटर से तिरुनावल्ली गए। वहा दयानन्द होमियोपैथिक डिस्पैंसरी का उद्घाटन स्वामी जी ने किया। वहा के प्रसिद्ध डा० श्री रामचन्द्रन जी ने इस डिस्पैंसरी के लिए ५० हजार रुपया दान में दिया था। उद्घाटन समारोह के पश्चात् पुन डाक्टर साहब ने ५० हजार रुपया और देने की घोषणा की।

डा० रामचन्द्रन जी संस्कृत, तमिल और अग्रेजी के बहुत बडे विद्वान हैं। वहा से वह श्री सीताराम जी प्रमुख धार्मिक महानुभाव के घर गए वहा भारी जन सभा का आयोजन हुआ। ओ३म पताका फहराने के पश्चात स्वामीजी ने जनसमुदाय को उद्बोधन करते हुए कहा दक्षिण भारत के धर्म प्रेमी बन्धुओ वेद हमारी संस्कृति के मूलाधार हैं। हमारी धार्मिक तथा सांस्कृतिक एकता एक महान उपलब्धि है। इसके पश्चात वहा ऋषिलगर मे सैकडो लोगो ने भोजन किया इसकी व्यवस्था भी श्री सीताराम तथा उनको

शेष पृष्ठ २ पर)

श्री एम० नारायण स्वामी

दक्षिण भारत मे आर्य समाज के सयोजक श्री एम० नारायण स्वामी ने मीनाक्षीपुरम् सम्मेलन के पश्चात् पूरे दक्षिण भारत के शहरो, कस्बो व गाव-गाव मे आर्यसमाज के प्रचार के लिए अपने कदम बढाये हैं। स्वामी जी ने दिल्ली पहुचने पर बताया कि दक्षिण भारत के अपने ८ दिन के इस लम्बे दौरे में मैंने जो कुछ देखा और जो जन समर्थन उस क्षेत्र मे मिला वह अपने आप मे एक सुखद आश्चर्य है। श्री एम० नारायण स्वामी के पुरुषार्थ और प्रयत्नो से दक्षिण भारत मे आर्यसमाज नई करवट ले रहा है। एक समय आयेगा, जब आर्यसमाज की क्रान्ति का सूर्य दक्षिण से ही उदय होगा।

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

दक्षिणभारत में आर्यसमाज के बढ़ते कदम

(पृष्ठ १ का शेष)

विदुषी पत्नी की ओर से की गई थी। वहा से चलकर तिरुवारूर में ही स्वामी जी के द्वारा दयानन्द संस्कृत विद्यालय की स्थापना की गई। वहां पर स्वामी जी ने लडकियो के होस्टल, दयानन्द रयूरल सोशियल सर्विस सैन्टर आदि का भी निरीक्षण किया और ग्रामीण लोगो में अपने हाथ से मिठाई बांटी। तिरुनावल्ली नगर के बाहर गुरुकुल के लिए ढाई एकड भूमि का भी निरीक्षण किया। वहा के कार्यकर्ताओ ने बताया कि गुरुकुल की भूमि के साथ ५०० प्लाट भी हैं। इन प्लाटो का मात्र एक हजार रुपया प्रति प्लाट बेचकर उसका धन गुरुकुल के संचालन में व्यय किया जायेगा।

तिरुनावल्ली से स्वामी जी शिवकाशी गये। वहां श्री मुट्टू कुट्टी बी० काम० विद्वान नवयुवक इस समय महर्षि दयानन्द के नाम से एक सुन्दर गोशाला चला रहे हैं। वहा पर स्वामी जी ने निरीक्षण के उपरान्त पाया कि एक हजार दुधारू गायो से यह गोशाला सुशोभित है। बताया जाता है कि यहा से दूर दूर तक गोदुग्ध की सप्लाई होती है। इसके अतिरिक्त वहा दयानन्द नरसरी स्कूल, महिला सिलाई कढाई स्कूल भी चल रहे हैं। क्षेत्र की गरीब महिलाए तथा बच्चे इनका अच्छा लाभ उठा रही हैं।

२६ जनवरी को स्वामी जी जब मीनाक्षीपुरम पहुंचे तो वहा सारे गांव मे बडी हलचल थी दूर दूर से लोग वहा इकट्ठे हो रहे थे। पुलिस की भारी व्यवस्था थी। पूरे क्षेत्र की सडकें साफ कराई हुई थी। ऐसा प्रतीत होता था कि जैसे मीनाक्षीपुरम सम्मेलन के पश्चात उस क्षेत्र मे आर्यसमाज का व्यापक प्रभाव पड़ा है। इसीलिए स्वामी जी के लिये वहा विशेष प्रबन्ध किये गये थे। श्री अनन्तराम सेठन तथा अन्य लोग स्वामी जी के स्वागत के लिए पहले से ही प्रतीक्षा कर रहे थे।

मीनाक्षीपुरम मे सभा ने १९८२ मे ५ हजार वर्ग गज का जो प्लाट खरीदा था, उसमें यज्ञशाला तो पहले ही तैयार हो चुकी है अब विद्यालय भवन भी बनकर तैयार हो गया है। विद्यालय का उद्घाटन स्वामी जी ने किया। उसके पश्चात वहा यज्ञशाला में वृहद् यज्ञ का आयोजन किया गया। प० राजगोपाल शास्त्री ने यज्ञ के यजमान थे। वहां का कार्यक्रम आर्यसमाज के प्रति दक्षिण भारत के लोगो की श्रद्धा व आस्था का एक प्रतीक बन गया है।

मीनाक्षीपुरम से स्वामी जी महाराज कोट्टालम गए। वहा आर्यजनो ने समाज मन्दिर के लिए एक भूमि खण्ड खरीदा हुआ है। स्वामी जी ने इस भूमि का निरीक्षण किया और स्वागत के उपरान्त उन लोगो को प्रेरणा करते हुए आशीर्वाद प्रदान किया। इसके बाद तिनकाशी के वाटर फाल्स को देखते हुए स्वामी जी तथा अन्य सभी लोग मदुरै पहुंचे। वहां से २८ जनवरी को प्रात मद्रास पहुंचे। स्टेशन पर श्री जयदेव जी आर्य तथा श्री टी० कन्न तथा अन्य लोग स्वागतार्थ पहुंचे हुए थे। स्वामी जी यहा से सीधे आर्य समाज मन्दिर मद्रास गए। स्नान आदि के बाद आर्य समाज के विशाल सत्संग मे उन्होंने भाग लिया।

स्वामी जी का कहना है कि आर्य समाज मद्रास का यह सत्संग उच्च कोटि का था। उसमें बडी संख्या मे लोग पधारे हुए थे। आयोजन बहुत प्रभावशाली था। स्वामी जी ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन मे आर्य समाज मद्रास के पदाधिकारियो और सदस्यो को धन्यवाद देते हुए कहा कि दक्षिण भारत मे मीनाक्षीपुरम सम्मेलन के पश्चात आर्य समाज के लिये बड़े-बड़े दरवाजे खुले हैं। मद्रास आर्य समाज को इन परिस्थितियो से लाभ उठाने के लिये आगे बढकर काम करना चाहिए।

रात्रि मे मद्रास उच्च न्यायालय के मु० न्यायाधीश डा० आनन्दशर्मा की अध्यक्षता मे डी० ए० वी० हा० से० स्कूल (मद्रास) का वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ। स्वामी जी ने स्कूल के बच्चो को आशीर्वाद दिया और रात्रि को तमिलनाडू एक्सप्रेस से दिल्ली के लिये प्रस्थान किया और ३० की प्रात: दिल्ली पहुंचे।

अनुच्छेद ३७० हटाने और समान नागरिक संहिता की मांग

वकीलों द्वारा समर्थन

नई दिल्ली २७ जनवरी। आर्य समाज की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की कानूनी समिति की बैठक श्री विमल वधावन एडवोकेट की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई जिसमे सभी वकील सदस्यो ने चार सूत्रीय कानूनी कार्यक्रम के समर्थन में प्रस्ताव पारित किया जिसमें अनुच्छेद ३७० हटाने और समान नागरिक संहिता की मांग के साथ गोहत्याबन्दी, कानून और नैतिक शिक्षा के मुद्दो को भी जोड़ा गया है।

श्री वधावन ने कहा कि सच्चे धर्म निरपेक्ष समाज के लिए आर्य समाज ने हमेशा आवाज उठाई है और इस चार सूत्रीय कार्यक्रम को अब वकीलो द्वारा समर्थन मिलने पर इन मुद्दो पर सरकार का ध्यान शीघ्र ही आकर्षित होना चाहिये। इन मांगो को लेकर कानूनी समिति द्वारा वकीलो के हस्ताक्षर, अभियान की शुरुआत फरवरी मास मे की जायेगी तथा मार्च मे देश के प्रमुख न्यायविदो और न्यायमूर्तियो के साथ एक गोष्ठी का आयोजन भी किया जाएगा।

इस बीच समिति के सभी सदस्यो ने पंजाब और काश्मीर की समस्या की चर्चा करते हुए केन्द्र सरकार से मांग की कि जब तक दोनों राज्यो में शान्ति की स्थिति बहाल न हो जाए वहा विधान सभा के चुनाव न कराए जाए अन्यथा देश में कई वैधानिक संकट पैदा हो सकते हैं।

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा जिला राजकोट गुजरात के लिए आर्थिक अपील

इस वर्ष ऋषि बोधोत्सव २२, २३, २४ फरवरी १९९० तदनुसार गुरु-शुक्र, शनिवार; को ऋषि जन्म स्थली टंकारा में भव्य समारोह के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर एक सप्ताह तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ होगा देश देशान्तर से पधारेंगे ऋषि भक्त आर्य विद्वान तथा कलाकार इस अवसर पर ऋषि के चरणो मे अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे। अभ्यागतो के आवास, भोजन, का पूर्ण प्रबन्ध टंकारा ट्रस्ट की ओर से नि:शुल्क होगा। अत आपसे विनम्र निवेदन है कि आप इष्ट मित्रो सहित ऋषि बोधोत्सव पर टंकारा पधारिए और इस कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए अधिकाधिक आर्थिक सहयोग देकर पुण्य के भागी बनिए।

—रामनाथ सहगल, मन्त्री

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा

श्री सुखदेव शास्त्री महोपदेशक द्वारा मारीशस में वैदिक धर्म प्रचार

दिसम्बर मास मे मारीशस मे कल्याण केन्द्र ग्राम-मार-ला क्रो, मे, ग्राम बोवाकैई मे आर्य महिला मण्डल द्वारा, त्रिओले, श्रीमती धनवन्ती के घर, लाबाचीरग्राम और लाबामीर मे छः स्थानो पर यजुर्वेद पारायण यज्ञो का आयोजन उत्साह पूर्वक किया गया। हजारो की संख्या मे लोगो ने इनमें भाग लिया। इस बीच चार ईसाई परिवार भी शुद्ध किये गये और हवन करके यज्ञोपवीत देने के बाद उनके नाम भी परिवर्तन किये गये।

डा० मुन्शीराम शर्मा 'सोम' शान्तियज्ञ

पिथौरागढ। डा० मुन्शीराम जी शर्मा सोम ८९ वर्ष की अवस्था में संसार से चल बसे। वह साधू विद्वान थे। डी ए० कालेज कानपुर के हिन्दी विभागाध्यक्ष रहे। वह वेद, संस्कृत व हिन्दी की सरिता में स्नान करते थे और आर्य समाज के माध्यम से हर एक को मानवता के सन्देश देते थे। हिन्दी साहित्य की बडी सेवा की। सोम जी के लेख व कवितायें आर्यमित्र, सार्वदेशिक, आर्य जगत आदि में बहुधा पढने को मिला करती थी।

डा० राजेन्द्रकुमार पुनेठा, मन्त्री

पुण्यश्लोक पं० रासबिहारी तिवारी

—गोपी कृष्ण अरोड़ा, आई. ए. एस.

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास में काकोरी काण्ड "ब्रिटिशराज के कफन की कील" के नाम से याद किया जाता है। इसकी सम्पूर्ण योजना आर्य समाजियों ने बनाई थी। योजना पुरुष थे "स्व० प० रास बिहारी तिवारी" और कार्य जिसके अगुआ थे आर्य समाज के प्रमुख सदस्य श्री रोशनसिंह जिन्हें दण्ड स्वरूप फांसी की सजा हुई थी। श्री तिवारी जी ने उनके पुत्र श्री चन्द्रदेव को गुरुकुल वृन्दावन मे अध्ययनार्थ भेजा तथा शिक्षा के अतिरिक्त अन्य सभी व्ययों की व्यवस्था की। श्री चन्द्रदेव स्नातक बनने से पूर्व दो बार स्वतन्त्रता संग्राम मे जेल गये।

आर्य समाज के नेता तथा कार्यकर्ताओं के राष्ट्रीय संग्राम में योगदान पर एक स्वतन्त्र शोध की आवश्यकता है। —सम्पादक

दिसम्बर १९२७ मे काकोरी कांड के चार शहीद जब एक के बाद एक फांसी पर चढ़ाए गए तो "वतन" और "आजादी" की भावना सारे देश मे बिजली की तरह कौंध गयी थी। उसी समय साइमन कमीशन की नियुक्ति की घोषणा से देश तिलमिला उठा था। कांग्रेस के मद्रास अधिवेशन में पारित प्रस्ताव ने कमीशन के बहिष्कार को संगठित रूप प्रदान कर दिया। लाहौर में लाला लाजपतराय पर पुलिस के डंडो के प्रहार से उनकी मृत्यु ने बहिष्कार आन्दोलन को और भी उग्र बना दिया था।

साइमन कमीशन के लखनऊ आगमन के हफ्तो पहले से उसके बहिष्कार की व्यवस्थित योजना कार्यान्वित की जाने लगी। उस जमाने में मोटरें नहीं इक्के, तांगे, चलते थे। आज तो मन्दिरो में कीर्तन तथा मस्जिदों में अजान के लिए लाउडस्पीकर स्थायीरूप से लगे हैं। और किसी मीटिंग का ऐलान करने के लिए अगर जीप नहीं तो रिक्शा मे ही लाउडस्पीकर से ऐलान किया जाता है। उस जमाने में इस काम के लिए इक्के किराये पर लिए जाते थे। इक्के के एक डंडे पर कांग्रेस का झंडा बांध दिया जाता था और दो आदमी अगल-बगल बैठते थे और साथ मे एक ढोलक तथा एक कमची होती। थोड़ी दूर चलकर इक्का रोक दिया जाता था। एक आदमी ढोलक पर जोर-जोर कमची मारकर नगाड़े की तरह बजाता था और दूसरा इक्के पर ही खड़े होकर चिल्लाता था।

खलक खुदा का, मुल्क हिन्दोस्तान का।

हुक्म कांग्रेस कमेटी का—। इसके आगे जो भी ऐलान होता मीटिंग हो जुलूस निकालने की बात हो अथवा किसी राष्ट्रीय नेता का स्वागत करने के लिए स्टेशन पहुँचने की बात हो, ऐलान कर इक्का आगे बढ़ जाता था।

साइमन कमीशन के बहिष्कार का ऐलान हफ्तो पहले शुरू हो गया था। जैसे-जैसे वह दिन नजदीक आता गया इस प्रकार के ऐलानो के साथ उन्ही इक्को पर मुहल्ले मुहल्ले, छोटे-छोटे भाषण देना भी शुरू कर दिया गया था। स्ट्रीट कार्नर मीटिंगो का यही प्रारम्भिक रूप था।

प्रायः एक सप्ताह पहले बहिष्कार योजना का कार्यक्रम एक कदम और आगे बढ़ाया गया। हर मुहल्ले मे जुलूस निकाले जाने लगे और बड़ी बड़ी सभायें की जाने लगी। अमीनुद्दौला पार्क (वर्तमान नाम झंडे वाला पार्क) पूरे शहर की कार्यवाहियों का केन्द्र था क्योंकि वहीं कांग्रेस का कार्यालय तथा वहीं लखनऊ के तत्कालीन सर्वमान्य नेता बाबू मोहनलाल सक्सेना का निवास स्थान था। (श्री औषधालय के ऊपर, रास्ता पीछे से है। उस समय उस पट्टी में वही आखिरी इमारत थी)।

आरम्भ में तो अधिकारियो की ओर से कोई रुकावट नहीं डाली गयी लेकिन साइमन आगमन के एक दिन पहले २९ नवम्बर १९२८ को जब हुसैनगंज में बरही से एक छोटा सा जुलूस प० जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में और दूसरी और वैसा ही छोटा जुलूस प० गोविन्दवल्लभ पन्त के नेतृत्व में बाहर निकला तो घुड़सवार पुलिस ने रोका। रोका ही नहीं डंडे भी चलाये थे यद्यपि उच्चाधिकारियो के आदेश पर पुलिस और घुड़सवार तुरन्त बाद ही हटा लिये गये थे लेकिन यह खबर सारे नगर में फैल चुकी थी कि नेहरू जी पर डंडे पड़े। उस शाम की सभा की उपस्थिति विशाल हो गयी थी।

और ३० नवम्बर को साइमन कमीशन के आगमन वाले दिन प्रात ४ बजे एक साथ मुहल्ले-मुहल्ले नहीं मुहल्ले की हर गली के नुक्कड़ पर बिगुल बज उठे थे। तीन बार बिगुलो की पुकार के बाद २५ १०-१० की टुकड़िया झंडा लिए प्रभाती गाती हर ओर से निकल पड़ी। उन सबके कदम चारबाग स्टेशन की ओर थे और हर कदम पर उनकी संख्या में वृद्धि होती जा रही थी। मुख्य जुलूस अमीनुद्दौला पार्क से चला था, जिसमे प० जवाहरलाल नेहरू, प० गोविन्द वल्लभ पन्त, बाबू मोहनलाल सक्सेना, श्री चन्द्रभानु गुप्त प्रमुख थे। श्रीराम दवाखाना (जहां अब आर० टी० ओ० का दफ्तर है) के पास प० रासबिहारी तिवारी जुलूस सहित उसमे शामिल हो गए थे।

चारबाग स्टेशन उस समय पूरा बना नहीं था। जहां अब १ न० का प्लेट फार्म है वह बाहर निकलने का मार्ग था। उसके सामने खाली मैदान पड़े थे बीच की सड़क के इधर भी लाटूश रोड के दोनो ओर खुले मैदान थे। वह रेलवे की ही जमीन थी। जिसके बीच से लाटूशरोड निकलती थी।

हुसैनगंज से आती हुई बस जिस सड़क पर बाएं मुड़कर अपने स्टैण्ड पर जाती है उस समय वह निकासी की सड़क थी और उसी से सरकारी गाड़ियाँ आने वाली थीं, जुलूस को स्टेशन के अन्दर जाने के पहले चौराहे पर ही पैदल पुलिस ने रोक दिया था। अत लाटूशरोड के बाईं ओर के मैदान मे उपर्युक्त सड़क के मोड़ के सामने जुलूस खड़ा हो गया। सड़क के एक ओर जनता की भीड़ थी तो दूसरी ओर पुलिस और घुड़सवारो की भीड़ थी जिससे वह मैदान, जो अब रेलवे का खेल मैदान है पूरा भरा हुआ था।

इधर नारे लग रहे थे। झुंडो के बीच कोई कुछ हंसी की बात कह देता तो इतनी जोर के कहकहे उठते मानो नारे ही लग रहे हो। शायद यह नापसन्द हुआ या शायद बहिष्कार प्रदर्शन के लिये चुना गया। वह मोर्चे का स्थान असुविधाजनक था अथवा जो हो। अचानक उस ओर घुड़सवारो का एक झुंड घोड़ों को सरपट दौड़ाता आया और छोटे, बड़े-बूढ़े बच्चे सभी पर निर्दयता से डंडे बरसाना शुरू कर दिया। देखते-देखते कितने धराशायी

(शेष पृष्ठ ११ पर)

साइमन कमीशन (१९२७)

समस्त देश ने कांग्रेस के आवाहन पर साइमन कमीशन का बहिष्कार किया कमीशन इस भयानक विद्रोह की भावना को देखकर बम्बई से ही वापस चला गया। किन्तु १९२८ मे वह पुनः भारत आया। २६ नवम्बर को साइमन कमीशन के विरोध में सरकारी मनाही होने पर भी लखनऊ मे जुलूस निकाला गया। चन्द्रभान जुलूस निकालने के पक्षपाती थे। कुछ पुराने नेता इसका विरोध कर रहे थे। २८ नवम्बर के जुलूस मे प० जवाहरलाल, प० गोविन्दवल्लभ पन्त शरीक थे। पुलिस के निर्मम प्रहार से इनके भी चोटें आईं। ३० नवम्बर को कमीशन का लखनऊ आगमन था। प्रात ७ बजे बड़े जुलूस के साथ नेहरू जी, पन्त जी, चन्द्रभान स्टेशन की ओर बढ़े। जुलूस मे महिलायें भी थी। पुलिस ने जुलूस को बेकाबू देखा तो फौज बुलाई गई। पुलिस अफसर टिपसन बार बार लाठी प्रहार का हुक्म दे रहा था। किन्तु जनता ने साहस न छोड़ा। चन्द्रभानु गुप्त को छोटे कद का फायदा रहा। प० गोविन्द वल्लभपन्त और प० रासबिहारी तिवारी सबसे अधिक पुलिस की लाठियो का शिकार हुए। कमीशन का केसरबाग बटलर पार्क मे भोज था, विनोदी चन्द्रभानु ने अपने साथियो के साथ पतंग पर "साइमन-गो बैक" लिखकर इस युक्ति से उड़ाई कि ठीक भोज के समय पार्क में पतंग गिरी। उत्कट देश प्रेम और विद्रोह में विनोद गुप्त जी की खूबी रही है।

—स्वतन्त्र भारत से साभार

वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना : टी. वी. युग में

श्री ओमदत्त भारद्वाज एम० ए०, ब्यावरा (उ० प्र०)

जिसके लिए वेद का पढ़ना-पढाना और सुनना-सुनाना परमधर्म है उस यशस्वी आर्य जगत् के सामने वर्तमान समय की अनेक गम्भीर चुनौतियां उपस्थित हैं, इन्ही में एक है विशेषकर इस टी० वी०, वीडियो युग के युवाओ का ध्यान वेदों की ओर आकृष्ट करने की समस्या। जैसा कि नीचे दिए गए कुछेक सन्दर्भो से ज्ञात होता है आर्य जगत् के साथ युवाओं की यह समस्या पिछले कई दशकों से जुड़ी हुई उससे अपना समाधान मांगती आई है किन्तु त्रासदी यह है कि आज एक ओर तो वीडियो तकनीक जैसा प्रचार का चमत्कारी दृश्य-श्रव्य माध्यम है जिसकी सहायता से वेद का सन्देश शिक्षितों, अर्द्ध-शिक्षितों, शूद्रों और अतिशूद्रों तक पहुचाना अब दिवास्वप्न नही रह गया है वही दूसरी ओर विडम्बना है कि आर्य जगत् की पत्र पत्रिकाओ मे भी वेद प्रचार की भावी योजना जैसे विषय पर मौलिक चिंतन का प्राय: अभाव ही देखने में आ रहा है।

अस्तु कारण जो भी हों अब समय आ गया है जब कि निम्नांकित प्रकार के अनुत्तरित प्रश्नो का सुनिश्चित उत्तर खोजा जाय तथा तेजी से बदलती युग परिस्थिति के सन्दर्भ में वेदों के प्रचार की त्वरित प्रभावकारी रणनीति विकसित करने हेतु जाने-माने आर्य विद्वानों के प्रामाणिक दिशा-निर्देश प्रकाश में लाए जायें।

(१) अब से १५ वर्ष पूर्व का एक चित्र

इसी तारतम्य में १९७५ ई० में प्रकाशित एक लेख (लेखक श्री अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार, पुस्तक "महर्षि दयानन्द के सपनों का आर्यसमाज" पृ० १७०) में उल्लिखित कुछ बिन्दु"… (२) आर्य समाज को गन्धर्ववेद के अनुसार नृत्य, गीत, वाद्य इत्यादि को भी अपने सत्संगों और प्रचार कार्य में उचित स्थान देना चाहिए, कृष्ण की बांसुरी और नारद की वीणा के स्वर गुंजायमान होते रहें, गीत संगीत और नृत्य के अपनाए जाने से सत्संगों की शुष्कता दूर हो जायेगी।

(१२) आर्यसमाज फिल्म जगत् में प्रवेश करे, ऋषि दयानन्द के जीवन की अनेक ऐसी अनोखी घटनाएं हैं जिनका फिल्मीकरण हो सकता है। इसी प्रकार स्वामी श्रद्धानन्द, पं० लेखराम इत्यादि आर्य वीरों का जीवन फिल्माया जा सकता है वेद के कई सूक्त ऐसे हैं जिनकी शिक्षा का फिल्म बन सकता है।

(२) अब से एक दशक पुरानी एक मांग—
"दूर दर्शन पर वेद-कार्यक्रम प्रसारित हो"

यह माग किमी आर्यसमाजी की ओर से नही वरन् सार्वदेशिक मे प्रसारित एक समाचार से अनुसार भारत के अग्रणी परमाणु वैज्ञानिक डा०राजा रामन्ना द्वारा मद्रासमें दियेगये अपने एक भाषण मे उठायी गई थी। स्वर्गीय वैज्ञानिक ने भारत की आम जनता के लिये बन्द दरवाजे खोलने का आग्रह करते हुए टेलीविजन पर वेद कार्यक्रम प्रसारित करने की आवश्यकता पर जोर दिया था।

(३) वर्तमान समय की पुकार, रामायण, महाभारत और और विश्वामित्र जैसे टी० वी० सीरियल पर आर्यसमाज अपनी सुनिश्चित प्रक्रिया व्यक्त करें

उक्त सीरियल महर्षि दयानन्द की शब्दावलि में "विषसम्पृक्तान्न" के बतौर करोड़ो दर्शकों के बीच परोसे जा रहे हैं अतएव आर्य समाज का यह कर्तव्य हो जाता है कि इनके प्रतिकार हेतु "शुद्ध रामायण" और शुद्ध महाभारत पर वीडियो कैसट्स तैयार करायें।

(४) अन्तिम किन्तु सर्वाधिक महत्वपूर्ण सुझाव

यदि आर्यसमाज चाहता है कि आने वाली सदियों में वेद के पढ़ने-पढ़ाने और सुनने-सुनाने का परम धर्म निभाने वाली परम्परा जीवित रहे तो जैसे भी सम्भव हो उसे नीचे लिखे ग्रन्थों में से किसी एक को चुनकर उस पर वीडियो कैसेट (अंग्रेजी अनुवाद सहित) का निर्माण आरम्भ कराना ही होगा समय की यह ऐसी मांग है जिसे यदि सचमुच सुना गया तो आर्यसमाज के लिए वह युगान्तरकारी उपलब्धि सिद्ध हो सकती है। १. भक्ति की गंगोत्री, सामवेद : भक्ति, उपासना व अध्यात्म के नाम पर आज चहुं ओर जिस अनर्थ का साम्राज्य फैला है उसे देखते हुये यह आवश्यक प्रतीत होता है कि यदि वेदों पर कोई धारावाहिक बनाना ही हो तो सर्वप्रथम सामवेदों को आम जनता तक पहुचाया जाये ताकि मत-मतान्तरों की भक्ति और जिसे शुद्ध भक्ति कहा जाता है दोनों के बीच का अन्तर आम आदमी भी जान सके। सौभाग्य से सामवेद पर प० हरिशरण जी सिद्धान्तालंकार द्वारा रचित भक्तिपरक भाष्य आज उपलब्ध है जो प्रामाणिक व शुद्ध होने के साथ-साथ आम आदमी के लिये भी सुबोध बनाया हुआ है। बिना विशेष संशोधन परिवर्तन के यही वह भाष्य है जिसमें वीडियो तकनीकी का योग चार चांद लगा सकता है (प्रथम खण्ड का दोहा-चौपाई छन्दों में भाष्यानुसार पद्यानुवाद जो देखना चाहें सेवक से सम्पर्क करने की कृपा करें।

२. वैदिक स्तुति और वैदिक प्रार्थना की पृथक्-पृथक् गौरव और प्रत्येक का उदात्त स्वरूप दर्शाने वाला महान ग्रन्थ है महर्षि का प्रसिद्ध "आर्याभिविनय" इसके प्रत्येक मन्त्र पर पदार्थ, अन्वय, ऋषिभाष्य, व्याख्यान, भावार्थ, अंग्रेजी अनुवाद आदि दर्शाते हुए यदि यह ग्रन्थ फिल्माया जा सके तो सचमुच चमत्कार उत्पन्न कर सकता है (प्रथम २५मन्त्रों पर तैयार ऐसा ही विशद पद्यानुवाद सेवक के पास तैयार है।

३. भगवद्गीता का समर्पण भाष्य—भगवद्गीता का आशय कुछ कुछ बताने वाले तथाकथित भाष्य तो बीसियों हैं किन्तु जिसमें गीताकार, प्रवचनकार एवं श्रोता अर्जुन के साथ सच्चा न्याय किया है वैसा भाष्य स्वामी समर्पणानन्द जी की लेखनी हो लिख सकी है इसी का पद्यानुवाद सेवक ने स्वान्त: सुखाय तैयार किया है जो वीडियो प्रस्तुति के लिए दर्शनीयता के प्रचुर लक्षण भी रखता है।

४. वैदिक संस्कृति और उसके सच्चे इतिहास को न्याय दिलाने हेतु यह आवश्यक है कि निम्नांकित प्रामाणिक कोटि की बहुमूल्य किन्तु अचर्चित पुस्तको को फुटकर टी०वी० कार्यक्रम तैयार करने के प्रयोजन से स्रोत-ग्रन्थ घोषित किया जाय:—

१. वैदिक सम्पत्ति (पं० रघुनन्दन शर्मा

२. वेद विद्यानिदर्शन (ले० पं० भगवद्दत्त)

३ वैदिक संस्कृति का इतिहास (ले० प० भगवद्दत्त) इत्यादि।

इन पर आधारित ऐसे अनेक टी०वी० पाठ तैयार किये जा सकते हैं जिनके द्वारा भारत की अस्मिता के विरुद्ध पश्चिमी अन्धानुकरण की आंधी को पलटने तथा अग्रेजियत आदि के मिले-जुले षड्यन्त्रों को अनावृत करने वाला प्रभावकारी कदम आर्यसमाज उठा सकेगा। उदाहरणार्थ आर्य द्रविड़ संघर्ष, मनुष्य की विकासवादी उत्पत्ति, भाषा विज्ञान का मिथ्यावाद तथा विभिन्न सम्प्रदायों की ऐतिहासिक वास्तविकता इत्यादि अनेक ऐसे विवाद हैं जिनके विषय में सच्चाई करने का साहस आर्य जगत ही कर सकता है। ●

यजुर्वेद में अर्थशास्त्र

—डा० हीरानन्द सिंह, (गोण्डा महाविद्यालय)

वेद शब्द विद् धातु से बना है जिसका अर्थ होता है जानना। वेद ज्ञान का आदि कोष है, समस्त विषयो का आदि स्त्रोत, एक ऐसा असीम, अनन्त महासागर जिसमे से फूट फंसाकर विभिन्न विषय-धाराए एव लहरिया निकल आई हो। वस्तुत "विश्व के प्राचीनतम नैसर्गिक अमर काव्य वेद सम्पूर्ण ज्ञान-विज्ञान का कुबेर-कोष है। यह ज्ञान भक्ति की गगोत्री है तो विज्ञान का मान सरोवर भी। इस भण्डार अत्यन्त समृद्ध विपुल और व्यापक है। जिस तरह पृथ्वी सम्पूर्ण विटप-फल-फूल और लता वनस्पतियो का उद्गम-स्थल है, जो अनुकूल समय और ऋतु के आने पर विकसित होते हैं। प्राचीन काल, मध्यकाल अथवा आधुनिक काल मे वेदो के साक्षात श्रवण, अध्ययन, मनन, चिंतन तथा अनुशीलन से विज्ञान विकसित और विस्तृत होकर जगत को आलोकित करता रहा है। आधुनिक युग के विज्ञान के अनुसन्धित्सुओ और अनुशीलन कर्ताओ का ध्यान इस ओर गया है। इस सन्दर्भ मे वेद तथा वैदिक वाङ्गमय का विज्ञान परक सम्यक् विवेचन भी किया जा रहा है।'

वेद के चार विभाग हैं—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एव अथर्ववेद। यजुर्वेद मे अर्थशास्त्र की झलकिया यत्र-तत्र देखने को मिलती है, यथा—

अभ्रिरसि नार्यसि त्वया वयमग्नि शकेम खनितु सधस्थ आ। जागतेन छन्दसाङ्गिरस्वत् ॥

अर्थात् मनुष्य आर्थिक रूप स सुखी सम्पन्न तब तक नहीं हो सकता जब तक कि वह पृथ्वी की खुदाई करके खनिज पदार्थ को बाहर नही निकाले। अतएव उसे सोना आदि मूल्यवान पदार्थों को अग्नि के सहारे उत्पन्न करने हेतु पृथ्वी की खुदाई करनी चाहिए। इसके लिए भूगर्भ विद्या को अपनाकर बालू एव मिट्टी से सुवर्ण एव अन्य कीमती धातुओ को निकाल धन की मात्रा मे वृद्धि करनी चाहिए।२

मानव-जीवन मे धन सम्पदा को बढान एव जीवन को सुखी करने मे अग्नि का बहुत महत्व होता है। अतएव मनुष्य को अग्नि तथा इसके विभिन्न उपयोग की जानकारी प्राप्त कर इमका सदुपयोग करना चाहिए।४ विद्युत शक्ति आर्थिक विकास के लिए बहुत उपयोगी होती है। इससे आग्नेय अस्त्र एव यातायात (जैसे, विमान आदि) के निर्माण मे मदद लेने के लिए हमे इसे जानना एव इमका सदुपयोग करना चाहिए।५ इस तरह विमान के निर्माण एव यातायात के तेज साधन के रूप मे प्रयोग से धन प्राप्ति एव धन की मात्रा मे वृद्धि की जा सकती है। वस्तुत यातायात के पर्याप्त एव विकसित साधनो की उपलब्धता आर्थिक विकास की गति को तेजकर देती है। अतएव मनुष्यों को चाहिए कि पृथ्वी एव अन्तरिक्ष मे चलने वाले उत्तम यानो को बनावें एव उनसे अभिष्ट कामनाओ को सिद्ध करे। ६ साथ ही आर्थिक रूप से विकसित होने मे विद्युत उत्पन्न करने के तरीको को जानकर पर्याप्त मात्रा मे विद्युत शक्ति उत्पन्न की जानी चाहिए। ७ आर्थिक विकास की दृष्टि से जल विद्युत के महत्व को भी स्वीकार किया गया है। यथा—८

अपा पृष्ठ मसि योनिरग्ने समुद्रमभित पिन्वमानम्।
वर्धमानो महाऽआ च पुष्करे दिवो मात्रया वरिम्णा प्रथस्व ॥

अर्थात शक्ति के साधन के रूप मे जल विद्युत का बहुत महत्व होता है। अतएव इसका विकास एव विस्तार होना चाहिए। वस्तुत विद्युत शक्ति किसानो के लिए बडी उपयोगी होती है। इससे दरिद्रता पास नही फटकती।९

कृषि--शिक्षा कृषि को आगे बढाने मे सहायक होती है। अतएव इसके महत्व को भी उजागर किया गया है जिसे अधोलिखित मन्त्र मे देखा जा सकता है।

सीरा युञ्जन्ति कवयो युगा वितन्वते पृथक्।
धीरा देवेषु सुम्नया ॥

अर्थात् कृषि द्वारा आर्थिक विकास के लिए कृषि-विद्वानो की शरण मे आकर कृषि कार्य की नई एव श्रेष्ठ विधियाँ सीखनी एव उपयोग कर कृषि उत्पादन मे वृद्धि करनी चाहिए। कृषि को विकसित करने मे पशुओ एव बीजो का कोई कम महत्व नही होता। यह प्रस्तुत मन्त्र से स्पष्ट है।

सुनसु फाला वि कृषन्तु भूमि शुन कीनाशाऽअभि यन्तु वाहै।
शुना सीरा हविषा तोशमाना सुपिप्पलाऽओषधी कर्तनास्मै ॥

अर्थात आर्थिक विकास मे महत्वपूर्ण सहयोग कर सके इसके लिए गाय बैल आदि को काफी ध्यान देकर पालना चाहिए। साथ ही कृषि मे बीजो के योगदान के महत्व को स्वीकारते हुए बीज सुगन्ध आदि से युक्त कर बोना चाहिए जिससे कि बीज विभिन्न प्रकार के कीडो से आक्रान्त न हो जाए। किन्तु अच्छी पैदावार के लिए मिट्टी-जाच भी आवश्यक है। यथा

लाङ्गल पवीरवत्सु शेव सोम पित्सरु।
तदुद्वपति गामवि प्रफर्व्यं च पीवरी प्रस्थावद्र थवाहणम् ॥

अर्थात कृषि-कार्य को कुशलता के साथ सम्पादित करने के लिए एव खेतो से अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए बीज डालने के पूर्व मिट्टी की जाच परम आवश्यक होती है।

श्रमिको की कार्य क्षमता के निर्धारक तत्वो मे श्रमिको का स्वास्थ्य बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। अतएव स्वास्थ्य को बनाए रखने एव रोगो की चिकित्सा हेतु पेड-पौधो की जडी बूटियो का इस्तेमाल किया जाना चाहिए। किन्तु, जडी-बुटियो को प्राप्त करने के लिए पेडो की जडो को खोदकर निकालते समय पर्याप्त सावधानी बरती जानी चाहिए जिससे कि इस प्रयास मे सम्पूर्ण वृक्ष ही समाप्त न हो जाए।

आर्थिक विकास के लिये किये जा रहे प्रयत्नो के क्रम मे हिंसा-अहिंसा की आवश्यकता अनावश्यकता पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। उदाहरणार्थ—गाय और बैल जो क्रमश दूध देकर एव कृषि कार्य मे मदद कर कृषको के साथ सहयोग करते हैं उन्हे नही मारना चाहिए। अर्थात उनके प्रति अहिंसा की नीति अपनानी चाहिए। गाय और बैल की रक्षा हेतु कानूनी प्रावधान द्वारा दण्ड-व्यवस्था भी होनी चाहिए। इसी तरह भेड और ऊँट जो मनुष्य के सहायक होते हैं, को नही मारना चाहिए। मनुष्य के लिए

उपयोगी बकरे एवं मोर जैसी पशुओं एवं चिड़ियों की तो रक्षा की जानी चाहिए। इस तरह उपयोगी पशुओं की रक्षा करते हुए उन्हें प्रशिक्षित कर उनसे कई प्रकार के कार्य लेने चाहिए। वस्तुतः पशुपालन के बिना कृषि पर्याप्त रूप से विकसित नहीं हो सकती क्योंकि पशु जीवित रहने पर दूध देने, सामान ढोने, गाड़ी खींचने, खेत जोतने आदि मे काम आते और मर जाने पर जूते, बैग आदि वस्तुओं के निर्माण हेतु चमड़े, खाद तथा दवा बनाने के लिए अपनी हड्डियाँ देकर मनुष्य के आर्थिक विकास मे मदद करते हैं। आज के युग मे भी जबकि कृषि के क्षेत्र मे ट्रैक्टर, थ्रेसर जैसी नई मशीनों का आगमन हो चुका है, बहुत से कृषक इन कीमती वस्तुओं को अपनी आर्थिक विपन्नता के कारण नहीं खरीद पाते और लकड़ी के हल से ही खेती करते हैं। अतएव ऐसे किसानों की आर्थिक स्थिति उनके कृषि-कार्य मे काम आने वाले सधे हुए पशुओं एवं उनके उपयोग पर निर्भर करती है। इन पशुओं मे घोड़े एवं बकरियां भी शामिल हैं। घोड़े आदि पशुओं को अच्छी शिक्षा एवं अच्छा आहार देकर उन्हें मनोवांछित कार्यों में लगाया जा सकता है।

इसी तरह कृषि के लिये सिंचाई का विशेष महत्व होता है। इस दृष्टि से नदियों, तालाबों आदि की सुरक्षा करते हुए उनके जल का सदुपयोग कर कृषि को विकसित करना चाहिये। यह विचार अग्रलिखित मन्त्र मे द्रष्टव्य है :—

नमः स्रुत्याय च पथ्याय च नम काट्याय च नीप्याय च।
नमः कुल्याय च सरस्याय च नमो नादेयाय च वैशन्ताय च॥

किन्तु, ऐसी स्थिति में जबकि सिंचाई के कृत्रिम साधनों का भरपूर विकास नहीं हो पाया है, कृषि के लिये वर्षा के जल का अवर्णनीय महत्व है। अतएव ऐसे कार्य किये जाने चाहिए जिससे कि वर्षा की सम्भावना मे वृद्धि हो। इस विचार को प्रस्तुत मन्त्र मे देखा जा सकता है।

उपावसृजत्मन्या समञ्जन्देवानां पाथऽऋतुथा हवींषि।
वनस्पति शमिता देवोऽअग्निः स्वदन्तु हव्यं मधुनाघृतेन॥

अर्थात शुद्ध पदार्थों का ऋतु-ऋतु मे होम किया जाना चाहिए जिससे वह द्रव्य सूक्ष्म हो और क्रम से अग्नि, सूर्य तथा मेघ को प्राप्त होकर वर्षा के द्वारा सबका उपकार हो। श्रीमदभगवत गीता में भी कहा गया है।

अन्नाद्‌भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्न सम्भवः।
यज्ञाद्‌भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्म समुद्भवः॥

अर्थात सम्पूर्ण प्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं, अन्न की उत्पत्ति वृष्टि से होती है, वृष्टि यज्ञ से होती है और यज्ञ विहित कर्मों से उत्पन्न होने वाला है। फिलहाल एक विद्वान पंडित हरप्रसाद शर्मा ने वर्षों के अध्ययन और फिर प्रयोग के बाद दावा किया कि वैदिक यज्ञ अनुष्ठान से बारिश होती है। वेद पर आधारित उनके वृष्टि विज्ञान पर गौर किया जाना चाहिए। उनके दावे पर भारत सरकार के विज्ञान और टेक्नोलोजी विभाग ने ध्यान दिया और वृष्टि यज्ञ के लिए बाकायदा दस हजार रुपए का अनुदान दिया। वस्तुत यह एक सच्ची घटना है। यज्ञ की पूर्णाहुति ३१ मई की शाम के स्थान पर १ जून की सुबह की गई थी। उसी दिन दोपहर बाद ३ बजे आकाश मे बादल छा गए लेकिन वे डेढ़ दो घण्टे मे गायब हो गए। परन्तु दुबारा साढ़े सात बजे शाम को फिर से बादल घिर आये और बिजली तथा तेज हवाओं के साथ ८.३५ से लगभग आधा घण्टा तेज वर्षा हुई। यह समाचार अगले दिन (२ जून) को स्थानीय पत्रों दैनिक आज और जागरण आदि से प्रकाशित हुआ। अगले दिन ही इण्डियन फोरेस्ट तथा अन्य समाचार पत्रों के प्रतिनिधि आए और श्री हर प्रसाद शर्मा का साक्षात्कार लिया। यह वर्षा आगरा और मथुरा जनपद के अन्य स्थानों मे भी हुई। इन सभी बातों की तहकीकात मोसम विभाग और अन्य लोगों से की जा सकती है।

इसी प्रकार बचत के बिना पूंजी-निर्माण एवं पूंजी निर्माण के अभाव मे विनियोग, रोजगार, उत्पादन एवं अन्ततः आर्थिक विकास असम्भव हो जाता है। अतएव:

आसन्दी रूप राजासन्द्यै वेद्यै कुम्भी सुराधानी।
अन्तरऽउत्तर वेद्या रूप कारोतरो भिषक्॥

अर्थात कार्यों की प्रकृति को देखते हुए सम्बन्धित साधनों का संग्रह करना चाहिये जिससे कि उनका समय पर उपयोग किया जा सके।

आर्थिक विकास में व्यापार का बहुत महत्वपूर्ण योगदान होता है। इस दृष्टि से अनेक लहरों वाली, छिद्रहीन, अत्यन्त उत्तम, बड़ी नावों की अच्छी तरह परीक्षा करके जल मार्ग से समुद्र आदि के पार जाना एवं धन अर्जित कर सम्पत्ति बढ़ानी चाहिये। वास्तव मे, वाणिज्य के लेन-देन से कुछ दूर तक समस्या का समाधान किया जा सकता है। जैसे, बंगला देश मे कच्चा चमड़ा है पर बर्मा मे इनकी कमी है। दोनों देशों मे वाणिज्य में विनिमय चल सकता है। किन्तु धन की प्राप्ति मे सत्य व्यवहार अपनाना चाहिये। कुरान में भी कहा गया कि खुदा तुम्हारे गुप्त एवं खुले व्यवहार को जानता है। वह जानता है कि तुम अच्छे या बुरे किस कर्म के द्वारा आय अर्जित करते हो। इसलिए लोगों को धर्म पर चलते हुए पुरुषार्थ से धन अर्जित करना चाहिए। साथ ही उद्यमी बने रहने की सावधानी बरतनी चाहिए। क्योंकि धन का स्वभाव होता है कि जहां यह इकट्ठा होता है वहां के लोगों को निद्रालु, आलसी और कर्महीन कर देता है। अतएव धन पाकर भी मनुष्य को पुरुषार्थ ही करना चाहिए।

प्राणाय स्वाहापानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा। अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥

वस्तुतः आर्थिक विकास मे उद्यम बहुत ही प्रभावकारी एवं निर्धारक तत्व होता है। जो आलस्य को त्यागकर सिद्धि या सफलता के लिए यत्न करते वे सुखी और जो आलसी होते वे दरिद्रता को प्राप्त होते हैं। लेकिन लोगों का आलस्य छोड़कर उद्यमी बनना सम्बन्धित राज्य के राजा, प्रशासक या शासक पर निर्भर करता है। यदि राजा या शासक प्रजा के विकास या कल्याण के लिये प्रयत्न करने वाला है तो उक्त देश या राज्य की जनता तीव्र गति से आर्थिक विकास करेगी वरना पिछड़ेपन का शिकार होकर ही रह जाएगी। वस्तुतः जैसे सूर्य के उदय होते अन्धकार विनष्ट होकर प्रकाश होता है एवं सब लोग आनन्दित हो जाते हैं, वैसे ही कर्तव्यनिष्ठ धर्मात्मा राजा के होते प्रजा मे सब प्रकार के स्वस्थता होती है। वस्तुतः प्रकृति की असीम कृपा किसी भी अर्थ नैतिक अंचल में सम्पदा को कम नहीं करती, परन्तु शुभ हितैषियों के अभाव मे ही सामाजिक और अर्थनैतिक कार्यों में उन सम्पदाओं का उपयोग नहीं किया गया, इस कारण भौतिक जगत में मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकताएं (अन्न, वस्त्र, शिक्षा, चिकित्सा और वास स्थान) पूरी नहीं की जा सकी। यद्यपि किसी देश या राज्य की सम्पन्नता उसके कर्मचारियों की कार्यक्षमता पर भी निर्भर करती है। वस्तुतः जिस देश में पूर्ण विद्या वाले कर्मचारी हो वहा सबके सहयोग से सुख या धन की वृद्धि होती है। लेकिन लोगों या समाज के आर्थिक विकास मे सरकार या शासक (जो भी रूप हो) की बड़ी निर्णायक भूमिका होती है। ये लोगों (आम जनता) के जान-माल की रक्षा कर एवं अन्य कई प्रकार से धनोपार्जन करने के कार्य मे प्रजा या जनता की काफी मदद कर सकते हैं।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि यजुर्वेद मे वर्तमान समय के विकसित एवं विशद अर्थशास्त्र की गहरी आदि जड़े हैं और आज जो अर्थशास्त्र रूपी वृक्ष अपनी शाखाओं को अधिक फैलाये-छितराए दृष्टिगोचर होता है तथा यह जो इतना गहरा एवं पल्लवित, पुष्पित है, इसके उद्भव और विकास में यजुर्वेद का मूलाधार है।

आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक साप्ताहिक के पाठकों से निवेदन है कि जिन सदस्यों ने वार्षिक शुल्क अभी तक कार्यालय मे नहीं भिजवाया है; वह कृपया शीघ्र वार्षिक शुल्क भेजकर सहयोग प्रदान करें। मनिआर्डर भेजते समय अपना पूरा पता व ग्राहक संख्या लिखने का कष्ट करें। वार्षिक शुल्क २५) रुपए है।

बार-२ वार्षिक शुल्क भेजने की परेशानी से बचने का सरल उपाय, एक बार २५०) रुपए भेज कर सार्वदेशिक साप्ताहिक के आजीवन सदस्य बन सकते हैं।

—व्यवस्थापक सार्व० साप्ताहिक

वर्ण व्यवस्था-ऋग्वेद भाष्य भूमिका से

—पुष्कर लाल आर्य, कलकत्ता-७

सबसे उत्तम विद्या और श्रेष्ठ कर्म करने वालों को ही ब्राह्मण वर्ण का अधिकार देना, उनसे विद्या का प्रचार कराना, और उन लोगों को भी चाहिए कि विद्या के प्रचार में ही सदा तत्पर रहें। (क्षत्र च) अर्थात सब कामों में चतुरता, शूरपन, धीरज, वीर पुरुषों से युक्त सेना का रखना, दुष्टों को दण्ड देना और श्रेष्ठों का पालन करना, इत्यादि गुणों के बढ़ाने वाले पुरुषों को क्षत्रियवर्ण का अधिकार देना। (राष्ट्र च) श्रेष्ठ पुरुषों की सभा के अच्छे नियमों से राज्य को सब सुखों से युक्त करना, और उत्तम गुण सहित होके सब कामों को सदा सिद्ध करना चाहिए। (विशश्च) वैश्य आदि वर्णों को व्यापारादि व्यवहारों में भूगोल के बीच में जाने आने का प्रबन्ध करना और उनकी अच्छी रीति से रक्षा करनी आवश्यक है, जिससे धनादि पदार्थों की संसार में बढ़ती हो। (त्विषिश्च) सब मनुष्यों में सब दिन सत्य गुणों ही का प्रकाश करना चाहिए। (यशश्च) उत्तम कामों से भूगोल में श्रेष्ठ कीर्ति को बढ़ाना उचित है। (वर्चश्च) सत्यविद्याओं के प्रचार के लिए अनेक पाठशालाओं में पुत्र और कन्याओं का अच्छी रीति से पढ़ने-पढ़ाने का प्रचार सदा बढ़ाते जाना चाहिए। (द्रविण च) सब मनुष्यों को उचित है कि पूर्वोक्त धर्म से अप्राप्त पदार्थों की प्राप्ति की इच्छा से सदा पुरुषार्थ करना, प्राप्त पदार्थों की रक्षा यथावत करनी चाहिए, रक्षा किए पदार्थों की सदा बढ़ती करना और सत्य विद्या के प्रचार आदि कामों में बढ़े हुए धनादि पदार्थों का खर्च यथावत करना चाहिए। इस चार प्रकार के पुरुषार्थ से धनधान्यादि को बढ़ा के सुख को सदा बढ़ाते जाओ।

(आयुश्च) वीर्य आदि धातुओं की शुद्धि और रक्षा करना, तथा युक्ति पूर्वक ही भोजन और वस्त्र आदि का जो धारण करना है, इन अच्छे नियमों से उमर को सदा बढ़ाओ। (रूप च) अत्यन्त विषय-सेवा से पृथक रह के और शुद्ध वस्त्र आदि धारण से शरीर का स्वरूप सदा उत्तम रखना। (नाम च) उत्तम कर्मों के आचरण से नाम की प्रसिद्धि करनी चाहिए। जिससे अन्य मनुष्यों का भी श्रेष्ठ में उत्साह हो। (कीर्तिश्च) श्रेष्ठ गुणों के ग्रहण के लिए परमेश्वर के गुणों का श्रवण और उपदेश करते रहो, जिससे तुम्हारा भी यश बढ़े। (प्राणश्चापानश्च) जो वायु भीतर से बाहर आता है उसको 'प्राण' और जो बाहर से भीतर आता है, उसको 'अपान' कहते हैं। योगाभ्यास, शुद्ध देश में निवास आदि और भीतर से बल करके प्राण को बाहर निकाल के रोकने से शरीर के रोगों को छुड़ा के बुद्धि आदि को बढ़ाओ। (चक्षुश्च श्रोत्रं च) प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, ऐतिह्य, अर्थापत्ति, सम्भव और अभाव, इन आठ प्रमाणों के विज्ञान से सत्य का नित्य शोधन करके ग्रहण किया करो॥

(पयश्च रसश्च) जो पय अर्थात दूध, जल आदि, और जो रस अर्थात शंकर औषधि और घी आदि हैं, इनको वैद्यकशास्त्रों की रीति से यथावत शोध के भोजन आदि करते रहो। (अन्नं चान्नाद्यं च) वैद्यक शास्त्र की रीति से चावल आदि अन्न का यथावत संस्कार करके भोजन करना चाहिए। (ऋतं च सत्यं च) ऋत नाम जो ब्रह्म है, उसी की सदा उपासना करनी। जैसा हृदय में ज्ञान हो सदा वैसा ही भाषण करना और सत्य को ही मानना चाहिए। (इष्टं च पूर्तं च) इष्ट जो ब्रह्म है उसी की उपासना और जो पूर्वोक्त यज्ञ सब संसार को सुख देने वाला है, उस इष्ट की सिद्धि करने की पूर्ति, और जिस जिस उत्तम कामों के प्रारम्भ को यथावत पूर्ण करने के लिए जो-जो अवश्य हो सो-सो सामग्री पूर्ण करनी चाहिए। (प्रजा च पशवश्च) सब मनुष्य लोग अपने सन्तान और राज्य को अच्छी शिक्षा दिया करें, और हस्ती तथा घोड़ो आदि पशुओं को भी अच्छी रीति से सुशिक्षित करना उचित है। इन मन्त्रों में और भी अनेक प्रयोजन हैं कि सब मनुष्य लोग अन्य जो वर्ण के शुभ लक्षणों का ग्रहण करें॥

गणतन्त्र दिवस (जनवरी, १९९०)

लेखक : कुमारी सुशीला, 'सेवा समर्पण से'

गणतन्त्र के पुण्य पर्व पर, यह संकल्प बनाना है।
सेवा, समता, स्नेह, त्याग से आगे देश बढ़ाना है॥ टेक॥

सूरज और हवा-सा खुलकर सबके लिए स्वराज हो।
रोटी कपड़ा और मकान से, कोई न मोहताज हो॥
हमें तुम्हारी, तुम्हें हमारी, सबकी सबको लाज हो।
एक देश के हम सब वासी, सबको जीवन पाना है॥
गणतन्त्र के पुण्य पर्व पर…

गांधी जी के रामराज्य का, सभी अधूरा सपना है।
जन-जन के हित सर्वोदय की, कोरी काव्य कल्पना है॥
ऊंच नीच का भेद रहे क्यों, राज ताज जब अपना है।
जीओ और जीने दो सबको, यही लक्ष्य अपनाना है॥
गणतन्त्र के पुण्य पर्व पर…

वीरों की बलिदान कथायें, वीरो! भूल नहीं जाना:
कदम कदम पर बनी समाधि, मेले पर लगवाना॥
सिर झुकने से झुक जाए तो अच्छा है सिर का जाना।
हिमगिरि का सिर ऊंचा रखना, स्वाभिमान नहीं गिराना है॥
गणतन्त्र के पुण्य पर्व पर…

सीमाओं की गतिविधियों से, वीरो! सावधान रहना।
अब तक जो कुछ सहा सही है, आगे ना गलती जाना॥
जो स्वदेश पर आंख उठाए, उसे दो टूक उत्तर देना।
हमसे टक्कर लेना समझो, तूफानों से टकराना है॥
गणतन्त्र के पुण्य पर्व पर…

भ्रातृभाव को पुष्ट किया तो, अलगाववाद मिट जायेगा।
उग्रवाद का करो मुख काला, आतंकवाद थर्रायेगा॥
हत्या लूटमार का तांता, और न अब चल पायेगा।
कौन हमारा कौन पराया, यह सब भेद दर्शाना है॥
गणतन्त्र के पुण्य पर्व पर…

काश्मीर से कन्याकुमारी तक, देश प्रेम का भाव जगे।
भारत माता की शपथ ग्रहणकर, दृढ़ संकल्प का भाव उठे॥
अंगड़ाई ले मचले यौवन, सोई जनता जाग उठे।
भारत माता का दूध पिया है, उसका मूल्य चुकाना है॥

पंचम वेद वेदांग पुरस्कार १९९०

आर्य समाज सन्ताक्रुज बम्बई प्रवर्तित वेद वेदांग पुरस्कार १९९० हेतु आर्य जगत के प्रकाण्ड विद्वान एव अनेक ग्रन्थों के रचयिता, गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक श्री पण्डित हरिशरण जी सिद्धान्तालंकार एव वेदोपदेशक के लिए जीवन पर्यन्त भजनोपदेशक के रूप में आर्य जगत की सेवा करने वाले माननीय श्री ओम्प्रकाश जी वर्मा का चयन किया गया है।

पण्डित हरिशरण जी सिद्धान्तालंकार को वेद वेदांग पुरस्कार के रूप मे २१०००) इक्कीस हजार की थैली, सम्मान-पत्र, रजत ट्राफी, एवं शाल से तथा ओम्प्रकाश जी वर्मा को वेदोपदेशक पुरस्कार के रूप में ११०००) ग्यारह हजार की थैली, सम्मान-पत्र रजत ट्राफी एव शाल भेंटकर सम्मानित किया जायेगा।

उपरोक्त समारोह का आयोजन दिनांक ३१-१-९० को सायं बजे भारतीय विद्या भवन वातानुकूलित सभागार में किया जा रहा है। जो विद्वान इस समारोह में सम्मिलित होने के लिए पधारना चाहे वे सादर आमन्त्रित हैं।

—कैप्टिन देवरत्न आर्य, संयोजक
वेद वेदांग पुरस्कार समिति

आर्य जगत् के समाचार

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के तत्वावधान मे श्रद्धानन्द बलिदान दिवस दिनांक ७-१-९० को सैक्टर-६ आर्य समाज आर० के० पुरम मे स्वामी विद्यानन्द सरस्वती की अध्यक्षता मे मनाया गया। इस अवसर पर प्रो० विजय कुमार मलहोत्रा ससद सदस्य ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि वर्तमान समय मे आर्य समाज को अपने पुराने क्रान्तिकारी सभी आन्दोलनो को पुन जागृत करना होगा तभी भारत सरकार आर्य समाज के मन्तव्यो की ओर ध्यान देगी। इस अवसर पर सुनीती आर्य डा० महेश विद्यालकार, बोधराज पूर्व महानगर पार्षद, श्री सच्चिदानन्द शास्त्री महामन्त्री सार्वदेशिक सभा आदि नेताओ ने अपने विचार व्यक्त किये समारोह श्री रामशरणदास आर्य महामन्त्री दक्षिणी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के सदप्रयत्नो से सफल रहा है।

—जयप्रकाश शास्त्री, मन्त्री
दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल

वार्षिक उत्सव

१—आर्यसमाज छोटा गोविन्दपुर जमशेदपुर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न—इस्पात नगरी जमशेदपुर में दयानन्द आर्य विद्यालय के प्रांगण मे आर्यसमाज छोटा गोविन्दपुर जमशेदपुर का वार्षिक उत्सव बड़े ही धूमधाम से सम्पन्न हुआ इस अवसर पर आर्यजगत के महान विद्वान डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी नालन्दा, स्वामी ब्रह्मानन्द देहरादून ने भाग लिया।

२—आर्यसमाज मठ गुलनी(नवादा) तत्वावधान मे धर्म प्रचार कार्यक्रम विगत १७ दिसम्बर को डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी नालदा के द्वारा गुलानी ग्राम मे धर्म प्रचार कार्य स्थानीय मठ सवत के प्रांगण मे सम्पन्न हुआ।

३—आर्य समाज लखना (पटना) का वार्षिकोत्सव १८ से २२ दिसम्बर को धूमधाम से सम्पन्न हुआ इस अवसर पर स्वामी मोक्षानन्द मथुरा डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी नालदा श्री महावीरसिंह पटना धर्म शीला देवी मुजफ्फरपुर के पुरोग्राम सानन्द सम्पन्न हुए।

पुरोहित प्रशिक्षण शिविर

श्रीमद् दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठगदपुरी (बल्लभगढ) जिला फरीदाबाद ५१वे २, ३, ४ मार्च को होनेवाले वार्षिकोत्सव पर पुरोहित प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। यह प्रशिक्षण २६ फरवरी सोमवार से प्रारम्भ होकर एक सप्ताह तक चलेगा। सभी प्रशिक्षणार्थियो को एक सप्ताह में सोलह संस्कार कराने मे पारगत करा दिया जाएगा। प्रशिक्षण के अन्तिम दिन प्रमाण-पत्र भी दिए जायेंगे। भोजन एव आवास की नि शुल्क व्यवस्था है। केवल नामाकन हेतु ५१ रुपये लेने का प्रावधान है।

इच्छुक व्यक्ति सम्पर्क स्थापित कर अपना स्थान सुरक्षित करायें।

—प्रधानाचार्य

शोक समाचार

छोटी सादडी आर्यसमाज के मन्त्री श्री वृद्धिशकर जी उपाध्याय की धर्मपत्नि श्रीमती भगवती देवी का स्वर्गवास दिनाक २६-१२-८९ को हुआ उनका अन्तेष्टी संस्कार वैदिक रीति से श्री जगदीश प्रसाद जी एरन मन्त्री आर्यसमाज नीमच ने करवाया श्रीमती भगवती देवी महिला आर्यसमाज छोटी सादड़ी की मन्त्राणी थी वे ४२ वर्ष की थी। श्मशान मे श्रद्धांजलि दी गई व शोक सभा की गई मृत आत्मा को सदगति के लिये प्रभु से प्रार्थना की गई।

—विनयचन्द पचोरी

—रविवार दिनाक ७जनवरी १९९० को आर्यसमाज हौज खास, नई दिल्ली के साप्ताहिक सत्संग मे उपस्थित आर्यसमाज के सभी सदस्य एव उपस्थित अन्य सभी महानुभावो (स्त्री-पुरुष) आर्यसमाज हौज खास के संस्थापक सदस्य, प्रारम्भिक मन्त्री श्री शकरलाल जी पाली के ३० दिसम्बर १९८९ को हुए आकस्मिक निधन पर शोक अभिव्यक्त करते हैं। श्री पाली जी अनेक वर्षों तक नागपुर एव दिल्ली के उच्चतर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयो के प्रधानाचार्य एव डी०ए०वी० विद्यालयो के एक कुशल प्रबन्धक रहे हैं। वह एक अनुभवी शिक्षाविद एव सफल आर्योपदेशक आर्य सुधारक थे।

शुद्धि अभियान

गत वर्ष सरगुजा के सीतापुर नामक क्षेत्र मे सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान मे लगभग ६००० (छ हजार) आदिवासी ईसाईयो ने बनवासी आर्य महासम्मेलन में स्वेच्छा से वैदिक धर्म ग्रहण किया था।

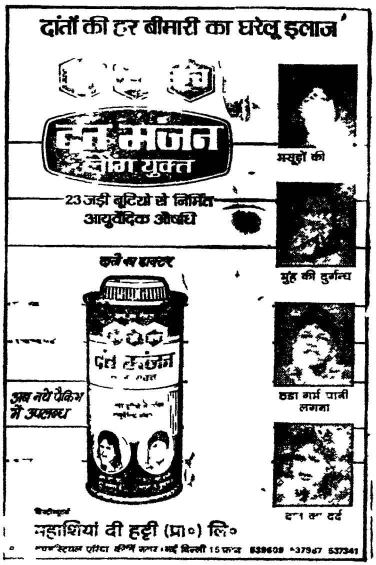
इसके उपरान्त सार्वदेशिक सभा की ओर से स्वामी सेवानन्द सरस्वती, प० वेदपाल वानप्रस्थी धर्ममुनि आदि लोगो के द्वारा गत ३१ दिसम्बर १९८९ ३-१ ९० को आर्यसमाज सीतापुर जिला सरगुजा में ३ दिनो मे वैदिक यज्ञ के पश्चात् ९७ आदिवासी ईसाई परिवारो के लगभग सवा हजार लोगो ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म ग्रहण किया।

निर्वाचन

आचार्य दत्तात्रेय आर्य प्रधान और रासासिह उपप्रधान निर्वाचित

आर्य समाज अजमेर का १०७वा वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न दिनाक ७-१-९० को श्री दत्तात्रय जी आर्य की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। समाज का सत्र १९८८-८९ का लगभग रुपये २१० लाख का आय व्यय का जाचा हुआ हिसाब तथा वार्षिक विवरण स्वीकार किया गया। इसी प्रकार आर्यसमाज के अन्तर्गत सचालित दयानन्द बाल सदन का विवरण भी प्रस्तुत हुआ जिसमे १५० बालक-बालिकाओ पर लगभग ६,००,००० रुपये व्यय हुआ।

समाज के अन्तर्गत दयानन्द कालेज आदि १२ छोटी बडी शिक्षण सस्थाओ का लगभग १.१० करोड आय व्यय का विवरण भी प्रस्तुत किया गया जिसके अनुसार इन सस्थाओ मे लगभग १०,००० हजार छात्र-छात्राय शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं तथा ४०० से अधिक अध्यापक-अध्यापिकाये कार्यरत हैं।



वैदिक यति मण्डल की सूचना

वैदिक यति मण्डल के सभी माननीय सदस्यो को सहर्ष सूचित किया जाता है कि गुरुकुल झज्जर की हीरक जयन्ती महोत्सव के शुभ अवसर पर २३ २४ एवं २५ फरवरी १९९० को गुरुकुल मे यति मण्डल की बैठक होगी अध्यक्ष महोदय पूज्यपाद श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का आग्रह है कि इस अवसर पर सभी सदस्य महानुभाव अवश्य पहुचें।

स्वामी सुमेधानन्द
मन्त्री वैदिक यतिमण्डल
दयानन्द मठ चम्बा

प० रामप्रसाद बिस्मिल बलिदान दिवस श्रद्धापूर्वक मनाया गया

लुधियाना, १९ दिसम्बर

आर्य युवक सभा लुधियाना द्वारा महान् स्वतन्त्रता सेनानी अमर शहीद प० रामप्रसाद बिस्मिल को श्रद्धाजलि भेंट करने के लिए प्रेम माडल हाई स्कूल धनकपुरी लुधियाना मे एक समारोह का आयोजन किया। समारोह के प्रारम्भ मे पजाब में शान्ति के लिये एव जनकल्याण की भावना से यज्ञ किया गया जिसकी अग्नि प्रेम माडल हाई स्कूल के प्रिंसिपल श्री प्रेम वर्मा ने प्रज्वलित तथा यज्ञ प० सुन्दरलाल शास्त्री ने सम्पन्न कराया।

मुख्य समारोह की अध्यक्षता श्री रणवीर भाटिया महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने की। समारोह के मुख्य अतिथि श्री रोशनलाल शर्मा प्रधान आर्य युवक सभा पजाब ने कहा कि अमर शहीद प० रामप्रसाद बिस्मिल युवकों के प्रेरणा स्रोत हैं। उन्होने देश को आजाद कराने के लिए जो बलिदान दिया भारतवासी उनके ऋणी रहेंगे। आज युवको को राष्ट्र निर्माण के कार्यों में रचनात्मक भूमिका निभानी चाहिए।

प्रथम वस्त्र वितरण समारोह

चौरासी क्षेत्र की पुण्य भूमि में दिनाक ३१ १२ ८९ रविवार को नवोदित महर्षि दयानन्द संस्थान दोमट मेरठ की ओर प्रथम वस्त्र वितरण समारोह सम्पन्न हुआ।

सर्वप्रथम आचार्य श्री धनकुमार आर्य विद्यावाचस्पति (जो आर्य समाजके उत्साही लगनशील और नवयुवक उपदेशक हैं)के आचार्यत्व में यज्ञ सम्पन्न कराया गया यज्ञोपरान्त श्री लालसिंह जी के सभा पतित्व में समारोह प्रारम्भ हुआ।

सभा का आरम्भ आचार्य श्री धनकुमार जी आर्य के मधुर भजनों तथा उपदेश से हुआ। कई आगन्तुक सज्जनो ने अपने विचार प्रस्तुत किये। प० कर्मसिंह जी वर्मा (दोमट) के कर कमलो द्वारा उचित पात्रों को ऊनी वस्त्र संस्थान द्वारा भेंट किये गये।

साहित्य समीक्षा

स्वनाम धन्य आचार्य श्री वैद्यनाथ जी शास्त्री की गणना आर्य समाज के मनीषी चिन्तनशील तत्ववेत्ताओ मे आदर के साथ की जाती है। इसकी पृष्ठभूमि मे सन्निहित है कुल परम्परा से पुष्पित एव पल्लवित होती हुई संस्कृत वाङ्मय की प्रवहमान वैदिक स्रोत स्विनी जिसने आचार्य जी को वैदिक सिद्धान्तो मन्तव्यो एव आदर्शों के साथ साथ राष्ट्रभक्ति के देदीप्यमान नक्षत्र पुञ्जो में गरिमय पद प्रदान किया। यही कारण है कि आपने जिस साहित्य का प्रणयन किया उसके विषय वस्तु मे ओत प्रोत है भारतीय दर्शन की तार्किक वस्तुनिष्ठ अलौकिक ज्ञान गगा। यदि उसमे निरन्तर स्नान किया जाय तो जीवन तत्व सफल हो सकेगा ऐसा पूर्ण विश्वास है।

अन्तत आर्ष सिद्धान्त सागर का विशद अध्ययन करने से यह स्पष्ट परिलक्षित है कि त्रैतवाद क्या है? भौतिक जगत मे बिखरे हुये धार्मिक विचारो की आधार भूमि क्या है? कुरान, पुराण और बाइबिल मानव जाति को सत्पथ से भटका कर कहा ले जा रहे हैं, जीवन की परिणति क्या है इत्यादि इस ग्रन्थ मे महर्षि दयानन्द के आर्ष विचारो का मूलभूत दर्शन देखकर पूर्णानन्द की अनुभूति होती है।

पुस्तक का मूल्य १२०) रुपये
प्राप्ति स्थान —
(१) सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
रामलीला मैदान नई दिल्ली
(२) आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री शोध संस्थान
६४/१६ फरीदाबाद (हरियाणा)

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

दिनाक २४ १२ १९८९ रविवार को आर्य समाज कठुआ मे राष्ट्रीय एकता के प्रतीक अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस मनाया गया। प्रात १० बजे हवन यज्ञ के पश्चात् कठुआ के प्रसिद्ध भजनीक मास्टर देशराज जी ने ईश्वर भक्ति और श्रद्धानन्द महिमा का भजन कहकर स्वामी के प्रति अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की।

श्री श्यामलाल जी व डा० कुलदीप जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदानी जीवन पर प्रकाश डाला। डा० कुलदीप जी सरक्षक आर्य समाज कठुआ आज के इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता थे।

हिन्दू शुद्धि सभा की बैठक

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा ट्रस्ट की आवश्यक बैठक बुधवार दिनाक १० १ ९० को साय ५ ३० बजे आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग नई दिल्ली के सभागार मे सम्पन्न हुई

—रामशरणदास आहूजा मन्त्री

गुरुकुल कागड़ी विद्यालय विभाग को आवश्यकता है

दो तीन सरक्षको की अर्थात् आश्रम मे अधिष्ठाताओ की एक आश्रम अध्यक्ष की। जो ब्रह्मचारियो की प्रात से रात्रि तक की सब गतिविधियो मे उनके साथ रहे। स्थान भोजन के अतिरिक्त उचित जीवन यात्रा व्यय दिया जाता है। रिटायर टीचर अथवा सेना से अवकाश प्राप्त महानुभावो की सेवाए अभीष्ट हैं। आर्य समाजी वैदिक धर्मी होना अनिवार्य है।

आचार्य
गुरुकुल कागड़ी हरिद्वार

संक्षिप्त समाचार

आर्य समाज सिसूटा में वैदिक धर्म प्रचार

चम्पारण जिला आर्य समाज के तत्वावधान में १ दिसम्बर से ६ दिस० तक प० चम्पारण में आर्य समाज सिकारपुर एवं आर्य समाज सिसूटा में वैदिक धर्म का प्रचार लगातार सम्पन्न हुआ, जिसमें आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान श्री महेन्द्रपाल आर्य आलिम, फाजिल (कलकत्ता) पधारे थे। उनके साथ जिला सभा के भजनोपदेशक पारसजी थे। श्री महेन्द्रपाल जी के उपदेश से सिसूटा ग्राम के नवयुवक बहुत प्रभावित हुए वे स्थानीय आर्य समाज के भवन निर्माण करने के लिए संकल्प लिए हैं।

—पी० के० शर्मा, मन्त्री
चम्पारण जिला आर्य सभा

कर्नाटक में आर्य वीर दल का प्रवेश

आर्य समाज गुलबर्गा (कर्नाटक) की ओर से १ से ५ जनवरी तक २० कार्यकर्ताओं का भवन में शिविर आयोजित किया जिसमें डा० देवव्रत आचार्य उपप्रधान संचालक ने प्रशिक्षण दिया। स्मरण रहे कि डा० देवव्रत जी आचार्य २० अक्टूबर से मध्य प्रदेश एवं महाराष्ट्र में क्रमशः गुरुकुल पेडली, आर्य समाज परली, आर्य समाज लातूर में आर्य वीर दल के शिविर लगाकर दल के कार्य को आगे बढ़ा रहे हैं।

कर्नाटक प्रान्त में आर्य वीर दल के कार्य को संचालित करने के लिए निम्न अधिकारियों की नियुक्ति श्री आचार्य जी द्वारा की गई।

प्रान्तीय संचालक—श्री राममोहन आर्य, दवीनिवर नवपुर

गुलबर्गा मण्डल—श्री गोविन्दराव आर्य

मण्डलपति—श्री हीरालाल आर्य मन्त्री

श्री चन्द्रकान्त आर्य

श्री रविकिरण आर्य

नगर नायक—श्री देवानन्द आर्य

उपनगर नायक—गुलबर्गा आर्य समाज के अधिकारियों ने आर्य वीरों को अपना पूरा सहयोग करने आश्वासन दिया।

आर्य समाज बेतिया में वेदपाठ एवं पूर्ण वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज बेतिया (पू० चम्पारण) द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी नेत्रदान शिविर सम्पन्न हुआ, जिसमें सैकड़ों मोतियाबिन्द के रोगियों के आँख का आपरेशन कर उन्हें नेत्र ज्योति प्रदान किया गया। इसी वर्ष नेत्रदान यज्ञ के साथ ही आर्य समाज का वार्षिकोत्सव भी २३ दिसम्बर से २५ दिसम्बर तक सम्पन्न हुआ। उत्सव के साथ ही बेतिया के आस-पास के गावों में भी वैदिक धर्म का प्रचार कार्य सम्पन्न हुआ।

—पी० के० शर्मा, मन्त्री
चम्पारण जिला आर्य सभा

श्री कृष्ण बलदेव महरोत्रा दिवंगत

आर्यजगत में यह समाचार बड़े ही दुःख के साथ सुना जायेगा कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व कोषाध्यक्ष, लखनऊ की अनेक अनेकों सामाजिक धार्मिक संस्थाओं के संस्थापक संचालक आर्य समाज के महास्तम्भ प्रसिद्ध उद्योगपति श्री कृष्णबलदेव महरोत्रा का लखनऊ में दिनांक ३१ दिसम्बर १९८९ को प्रातः देहावसान हो गया।

उनके शोक में नगर की अनेक शैक्षणिक सामाजिक संस्थायें, आर्यसमाजें, आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय एवं मुन्नारनगर, आलमबाग, चन्द्रनगर आदि अनेकों मोहल्लों की अनेकों दुकानें बन्द रहीं। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से आचार्य देवव्रत आर्यजी ने सम्पन्न कराया। इस अवसर उनके अन्तिम दर्शनार्थ लखनऊ नगर तथा बाहर से आया हुआ शोकाकुल जन समूह उमड़ पड़ा था। उनका जीवन आर्यजगत के प्रचार प्रसार के लिए समर्पित रहा। मृत्यु से कुछ दिन पूर्व तक वे सभा के वृहदधिवेशन में सम्मिलित हुए थे और सभा के कार्यों में रुचि लेते रहे थे।

सभा प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती उनके निधन पर गहरा शोक प्रकट करते हुए उन्हें अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की है और दिवंगत आत्मा की शांति के लिए तथा पारिवारिक जनों के धैर्य हेतु प्रभु से प्रार्थना की है।

—सम्पादक

हा ! हन्त !!

दयालु प्रकृति के पं० ब्रह्मदत्त शास्त्री बहादुरगढ़ हरियाणा का हृदय गति अवरुद्ध होने से देहावसान

बहादुरगढ़। आर्य जगत् के जाने माने श्री प० ब्रह्मदत्त जी शास्त्री (बहादुरगढ़) का गत २१ जनवरी १९९० रविवार को बातें करते करते हृदय गति अवरुद्ध होने से देहावसान हो गया।

शास्त्री जी श्री प० ब्रह्मप्रकाश शास्त्री एवं डा० वेदप्रकाश शास्त्री के बहनोई और श्री प० बाल दिवाकर जी हंस प्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल के मौसा थे। आप सुयोग्य अध्यापक के साथ २ आयुर्वेद के चिकित्सक और औषधि निर्माण विशेषज्ञ भी थे। आप वर्षों तक मस्तनाथ आयुर्वेदिक कालेज में अध्यापन का कार्य करते रहे।

दानवीर प्रकृति के इस ब्राह्मण ने जीवन भर अनेक निर्धन छात्रों को छात्रवृत्तियां देकर भक्ति की। अनेक संस्थाओं की मासिक आर्थिक सहायता करते थे।

आप दो कन्याओं (विवाहित) कमला शकुन्तला एम० ए० धर्मपत्नी श्री चन्द्रप्रकाश शास्त्री एम०ए० और निर्मला एम०ए० धर्मपत्नी श्री दयालु शास्त्री मन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा गाजियाबाद को छोड़ गये हैं। सार्वदेशिक सभा दिवंगत आत्मा को सद्गति और पारिवारिक जनों को धैर्य प्रदान कराने की प्रभु से प्रार्थना करता है।

—देवव्रती शास्त्री

शोक समाचार

आर्यसमाज कायमगंज ने डा० मुंशीराम शर्मा 'सोम' के आकस्मिक निधन पर आर्यसमाज मन्दिर में श्री जवाहरलाल आर्य (प्रधान) की अध्यक्षता में शोक सभा का आयोजन किया गया। वक्ताओं ने श्री शर्मा जी के जीवन पर प्रकाश डाला एवं शोक संवेदना व्यक्त की।

—मन्त्री

पं. रासबिहारी तिवारी

(पृष्ठ ६ का शेष)

हो गये। भगदड़ मच गयी। कारों की धूल में चिल्लाहट, पुकार और कराहने की आवाजों ने मिलकर एक भयानक वातावरण उपस्थित कर दिया था।

तभी कोई चिल्लाया था नेहरू जी को बचाओ। बहुत से भागते हुए लोग वापस मुड़कर दौड़े। आस पास खड़े लोगो ने नेहरू जी का घेर कर पुलिस के डंडो के विरुद्ध मानो उन्हें कवच पहना दिया था। डंडे उन्हीं पर पड़ते रहे नेहरू जी पर आंच नहीं आयी अन्य सभी पर लाठियां पड़ रही थीं। अचानक किसी ने या कईयों ने नेहरू जी को उठाकर प्रथम पंक्ति से काफी पीछे कर लिया। तभी घुड़सवार भी वापस हो गये। लेकिन पुलिस उस स्थान पर एकत्र हो गयी। अत प्रदर्शनकारी लगभग आधा फर्लांग दाहिनी ओर उसी पंक्ति मे पुन एकत्र हो गये, और नारो से आकाश गूंज उठा साइमन गो बैक। उसी समय मोटरो की एक कतार तेजी से गवर्नमेंट हाउस की ओर से निकल गयी। इन सारे प्रयासो के बावजूद सुनते हैं कि स्टेशन के अन्दर भी किसी ने नारा लगा ही दिया था साइमन गो बैक।

लाठीचार्ज के बाद जुलूस काफी छट गया था। प्रदर्शन के बाद जुलूस कांग्रेस दफ्तर वापस चला। रास्ते में लोग छूटते गये। कांग्रेस की ओर से स्टेशन पर भी और वापसी पर भी ऐलान किया गया था कि जिन लोगो को चोटें आयी हैं वे उनका विवरण कांग्रेस दफ्तर मे लिखवायें। मालूम नहीं कितनो ने लिखवाया। बहुतो ने तो नहीं ही लिखवाया।

शाम को अमीनुद्दौला पार्क मे विशाल सभा हुई। कांग्रेस नेताओ के अतिरिक्त दो प्रमुख वक्ता और थे। स्वामी रामतीर्थ के शिष्य नारायण स्वामी जो वेदान्त का विरक्ति भूल कर इस शान्तिपूर्ण बहिष्कार प्रदर्शन पर भी अमानुषिक आक्रमण से विचलित हो उठे थे और दूसरे थे आधुनिक लखनऊ के निर्माताओं में से एक पं० रासबिहारी तिवारी जो उस समय एम० एल० सी० थे। बांया हाथ पट्टियो से बंधा था अत एक ही हाथ से एक कागज दिखाकर उन्होंने कहा था यह वह नक्शा है जो अधिकारियो ने मुझे दिया था। इसमें प्रदर्शनकारियो के लिए खड़े होने का स्थान लाल स्याही से दिखाया गया था मानो यह चेतावनी पहले ही दे दी गयी थी कि खून बहाया जायेगा।

और जिस समय यह सभा हो रही थी उधर बटलर पार्क मे तालुकेदारों की ओर से साइमन और उनके साथियो की दावत हो रही थी। प्रदर्शन वहां हो सकना असम्भव था फिर भी हुआ। चौधरी खलीकुज्जमा के मकान की छत से बनी एक पतंग उसी क्षेत्र में गिरायी गयी जिस पर लिखा था—साइमन गो बैक। घटना विचित्र थी अत यह कह कर उसे और विचित्र बनाया गया कि वह काली पतंग ठीक साइमन साहब की मेज पर गिरी थी।

कुछ दिनो बाद जब कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन के बाद श्री चन्द्रभानु गुप्त ने मोतीलाल मेमोरियल सोसायटी की स्थापना की तो उसने वही मैदान जहां प्रदर्शन हुआ था। स्थान प्राप्त कर स्मारक के रूप मे प्रथम मोतीलाल मेमोरियल होम्योपैथिक अस्पताल उसके बाद बालसंग्रहालय और बाल क्रीडास्थल बनवाया गया। और बाकी जमीन पर रवीन्द्रालय बनाने के लिए राज्य सरकार को अनुमति दे दी गयी।

उपसंहार—साईमन कमीशन को आये और गये लगभग ४५ वर्ष बीत चुके साईमन। रिपोर्ट पर हुए गोलमेजसम्मेलनो मे हिन्दू मुस्लिम प्रथक निर्वाचन तो कायम रखा ही गया था हिन्दुओ मे भी सवर्ण और अनुसूचित जातियो के प्रथक निर्वाचन की योजना बनी थी। किन्तु वह योजना गांधी जी के अनशन और अन्तत अम्बेदकर समझौते के फलस्वरूप सफल न हो सकी। जो हो, अब तो यह सब इतिहास की बातें हैं। अब हम स्वतन्त्र हैं। बालिग मताधिकार पर संयुक्त निर्वाचन की व्यवस्था है।

रजि० नं० डी० (सी०) १७ सार्वदेशिक साप्ताहिक (४-२-१९९०) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U ११
R.N. 626/57 Licensed to post without prepayment Licence No. U 11 Post in D.P.S.O. on 5-2-1990

उत्सव

आर्य समाज कैलाश—ग्रेटर कैलाश-१ का वार्षिकोत्सव २७ नवम्बर से ४ दिसम्बर ८९ तक मनाया गया। मुख्य आकर्षण

प्रातः यज्ञ रात्रि वेद कथा। इससे पूर्व भजन

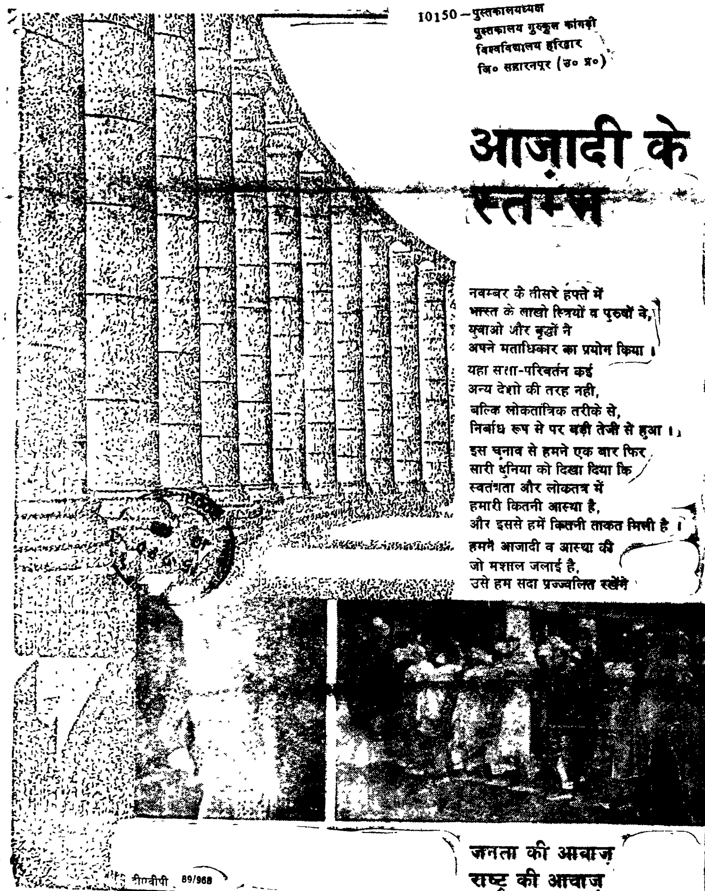
२ दिसम्बर (शनिवार)—वेद सम्मेलन, बाल प्रोत्साहन सम्मेलन धर्मरक्षा सम्मेलन

३ दिसम्बर (रविवार)—यज्ञ की पूर्णाहुति, राष्ट्रीय रक्षा सम्मेलन ऋषि लंगर

४ दिसम्बर (सोमवार) महिला सम्मेलन हुआ।

—विद्यासागर कालड़ा, मन्त्री

10150—पुस्तकालयध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी
विश्वविद्यालय हरिद्वार
जि० सहारनपुर (उ० प्र०)



सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख्य पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९० | दयानन्दाब्द १६५ | दूरभाष : ३२७४७७१ | वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

वर्ष २६ अंक ५] | फाल्गुन कृ० २ सं० २०४६ ११ फरवरी १९९०

देश की राष्ट्रवादी जनता के समक्ष ज्वलन्त प्रश्न?

ईरान में जामामस्जिद का इमाम बुखारी किसका प्रतिनिधि था

पिछले दिनों काश्मीर समस्या पर भारत सरकार का पक्ष रखने के लिए जामा मस्जिद दिल्ली के इमाम अब्दुल्ला बुखारी को ईरान भेजा गया था। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र के उक्त आरोप का समर्थन करते हुए कहा कि श्री वीरेन्द्र जी ने दैनिक प्रताप, दिल्ली के ५ फरवरी के अंक में यह प्रश्न उठाकर देश की राष्ट्रवादी जनता तथा भारत सरकार के नए कर्णधारों से पूछा है कि इमाम बुखारी जो हमेशा भारत की राजनीति में साम्प्रदायिकता का विष घोलता रहा है किस उद्देश्य को सामने रखकर श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह की सरकार ने उसे अपना प्रतिनिधि बनाकर ईरान भेजा था? श्री वीरेन्द्र के अनुसार काश्मीर मुद्दे पर भारत का पक्ष रखने के लिए विदेश मन्त्री श्री इन्द्रकुमार गुजराल ईरान जाने वाले थे किन्तु ईरान सरकार ने बहाना बनाकर श्री गुजराल को आने से रोक दिया, इस पर हमारी सरकार ने अपने प्रवक्ता के रूप में इमाम बुखारी को ईरान भेजा। क्या भारत सरकार के पास इमाम बुखारी के अलावा कोई योग्य व्यक्ति अथवा राष्ट्रवादी मुसलमान नहीं था जो वहां जा सकता था? वह न तो कोई कानूनी विशेषज्ञ है और न राजनीतिक नेता। वह केवल जामा मस्जिद का इमाम है वह देश के मुसलमानों का भी एकमात्र मान्य नेता नहीं है। वह हमेशा भारत के विरुद्ध ही बोलता रहा है। प्रधानमन्त्री विश्वनाथ प्रतापसिंह चुनाव से पूर्व उससे कई बार मिलते रहे ताकि अल्पसंख्यकों को खुश किया जा सके। भारत सरकार के नेताओं को यह सोचना चाहिए कि ऐसे व्यक्ति को अपना प्रतिनिधि बनाकर देश के लिए कितना बड़ा संकट पैदा हो सकता है।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि इमाम बुखारी ने ईरान से वापिस लौटकर काश्मीर के लोकप्रिय राज्यपाल श्री जगमोहन को तुरन्त हटाने के लिए जो वक्तव्य दिया है, उसे सार्वदेशिक के इसी अंक में प्रकाशित किया जा रहा है। उन्होंने गहरा खेद प्रकट करते हुए कहा कि नई सरकार भी कांग्रेस सरकार के उसी मार्ग का अवलम्बन कर रही है जिसके फलस्वरूप देश का दुर्भाग्य पूर्ण विभाजन हुआ था।

जगमोहन को हटाओ : विधान सभा चुनावों में समर्थन देने के लिए इमाम की शर्त

नई दिल्ली ४ फरवरी। जामा मस्जिद के शाही इमाम अब्दुल्ला बुखारी ने ईरान यात्रा से लौटने के बाद ही जम्मू कश्मीर के मामले मे वी०पी० सिंह सरकार पर दबाव डालने की मुहिम तेज कर दी है गत शुक्रवार को नायब इमाम अहमद बुखारी की मार्फत श्री वी०पी०सिंह व गृहमन्त्री मुफ्ती मोहम्मद सईद को विशेष सन्देश के जरिए इमाम ने विधानसभाई चुनावो मे मुस्लिम मतो की खातिर जनता दल के पक्ष में फतवा जारी करने के लिए दो शर्तें रखी हैं। जिसमें पहली शर्त जम्मू-कश्मीर के राज्यपाल पद से श्री जगमोहन को तुरन्त हटाकर अल्पसंख्यक समुदाय के किसी नेता को वहां का राज्यपाल बनाने तथा दूसरा बाबरी मस्जिद विवाद के पक्ष में १४ फरवरी को अयोध्या मे विश्व हिन्दू परिषद् के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करने की हिदायत दी गई है।

सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि गत ४८ घण्टे में नायब इमाम के जरिए इमाम बुखारी ने गृहमन्त्री को दो बार सन्देश भिजवाए हैं जिनमे जम्मू कश्मीर मे श्री जगमोहन की भूमिका को दमन की संज्ञा दी गई है तथा कल पांच फरवरी को विश्व हिन्दू परिषद् नेताओ को गृहमन्त्री की ओर से वार्ता हेतु भेजे दावतनामे पर आपत्ति की है।

उल्लेखनीय है कि इमाम बुखारी के कश्मीर घाटी व राम जन्म-भूमि मुद्दो पर केन्द्र सरकार पर पड रहे दबावो को विश्व हिन्दू परिषद् गम्भीरता से ले रही है तथा भाजपा की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष राजमाता सिंधिया के जरिए गृहमन्त्री को अवगत कराया गया है कि जम्मू कश्मीर में गवर्नर श्री जगमोहन की गतिविधियो से भाजपा ही नही अपितु प्रदेश का अल्पसंख्यक समुदाय भी सन्तुष्ट हैं तथा किसी भी साम्प्रदायिक दबाव में राज्यपाल को बदले जाने का भाजपा विरोध करेगी।

(शेष पृष्ठ २ पर)

कुछ तड़प कुछ झड़प

प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु' वेद सदन, अबोहर

आर्यमात्र से निवेदन —दिसम्बर १९८९ के 'दयानन्द सन्देश' में श्रीमान् पं० राजवीर शास्त्री के लेख में एक स्थान पर 'अछूत' शब्द का प्रयोग पढ़कर मेरे मन में यह विचार आया कि आर्यमात्र की सेवा में अपना यह निवेदन दोहराऊं कि भूलकर भी आर्यों को इस घृणित शब्द का प्रयोग नहीं करना चाहिए। अपने पिछड़े भाईयों के लिए हम दलित व दीन आदि शब्द का प्रयोग करके अपने भावों को प्रकट कर सकते हैं। हम अस्पृश्यता को जब मानते ही नहीं और इसको जड़मूल से उखाड़ने के लिए कई आर्यों ने बलिदान दिया, अनेकों के सिर फूटे स्थान स्थान पर आर्यों का लोगों ने बहिष्कार किया। आर्य समाज के बड़ों की तो बात छोड़िए मुरादाबाद में तो जलकूप पर दलित भाईयों को चढ़ाने के लिए यत्न करते हुए साहसी आर्य कुमारों के पौंगापन्थियों ने सिर फोड़ दिये। आर्य कुमार लहू की धार देकर अपने लक्ष्य की सिद्धि में पूर्ण सफल हुए।

यह हीन भावना —कुछ डी० ए० वी० कालेजों के प्राध्यापकों की लिखी इतिहास की एक पुस्तक मेरे सामने आई। छात्र कहते हैं कि 'आर्यों का आदि देश' विषय के सम्बन्ध में आप तो महर्षि दयानन्द का मत बताते हैं कि आर्य बाहर से नहीं आए और इस पक्ष में आप अनेक तर्क देते हैं परन्तु इस पुस्तक में तो ऋषि दयानन्द का नाम तक नहीं दिया। मैंने कहा, "इसी को हीनभावना कहते हैं।"

पंजाब विश्वविद्यालय के प्राध्यापक विद्याधर महाजन का ग्रन्थ देखिए कि विश्वविद्यालय के प्राध्यापक तो ऋषि दयानन्द व पार्वटिर का एतद्विषयक मत बड़े गर्व से देते हैं परन्तु आर्य कालेजों व डी० ए० वी० कालेजों के लोग मैक्समूलर के विचारों की ही रट-सी लिए बैठे हैं। यह हीन भावना नहीं तो और क्या है?

एक और उदाहरण —राजस्थान के एक जैन इतिहासकार का एक ग्रन्थ पढ़ रहा था। मुझे यह देखकर बड़ा आनन्द हुआ कि उसने भारतीय जन जागरण के लिए आर्य समाज व ऋषि दयानन्द की उपलब्धियों की तुलना और संस्थाओं व सुधारकों से करते हुए बड़े स्पष्ट शब्दों में ऐसे भाव प्रकट किए हैं कि समाज सुधार व कुरीति-निवारण के क्षेत्र में आर्यसमाज का कार्य बेजोड़ है। राजा राम मोहनराय या ब्राह्म समाज या स्वामी विवेकानन्द आदि ने अच्छे कार्य किए परन्तु स्वामी दयानन्द व आर्य समाज की सेनाओं के सामने ।

और यह एक ऐसा सत्य है जिसे कहते व लिखते हुए अब नामधारी आर्य समाजी व हमारे शोधकर्ता भी सकुचाते हैं। भला बताइए अस्पृश्यता निवारण के लिए किसी संस्था के किसी व्यक्ति ने जान वारी? धर्म रक्षा, जाति रक्षा, देश रक्षा के लिए रामकृष्ण मिशन के किसी साधु ने गोली खाई या छुरा खाया? ऋषि दयानन्द से लेकर वीर सुमेरसिंह तक हुतात्माओं व रक्त बहाने वालों की एक लम्बी पंक्ति है। आवश्यकता है कि आर्य आज अब भी काया व माया के मोह को तजकर आर्य पथिक पं० लेखराम के मार्ग पर चल इतिहास के नये नये पृष्ठ लिखिए।

ये स्मारिकाएं —आर्य समाजें यहां वहां अपने उत्सवों पर बड़ी बड़ी धनराशि व्यय करके स्मारिकाएं प्रकाशित करने लगी हैं। यह एक परम्परा सी बन गई है। ये स्मारिकाएं सुरक्षित भी नहीं रहतीं। लोग इन्हें एक प्रकार से विज्ञापन ही समझते हैं। हां! कहीं इनसे ही धन संग्रह में सुविधा हो तो यह बात दूसरी है अन्यथा इससे तो यही अच्छा है कि किसी पुराने आर्य विद्वान् की किसी उत्तम पुस्तक का प्रकाशन करके साहित्य की सुरक्षा की जावे।

हिसार आर्य समाज ने अभी अभी एक स्मारिका प्रकाशित की है। उसके पृष्ठ ६१ को पढ़ा तो ऐसा लगा कि लेखिका यह सिद्ध कर रही है कि घरों से भाग-भागकर जो लड़कियां विधर्मियों से या किसी भिन्न प्रान्त वाले से शादीकर रही हैं यह सब आर्य समाज । कैसी अच्छी उपलब्धि आर्य समाज की गिनाई है। करुणा ने एक मुसलमान से शादी की तो क्या उसे आर्य समाज ने प्रेरणा दी? आर्य समाज (Love Marriages) या लड़कियों को भगाने को जायज मानता है?

ऐसी आपत्तिजनक, निराधार सिद्धान्त विरुद्ध बातें छापने से क्या लाभ? इसका कारण यह है कि स्मारिका का सम्पादक जिन लोगों को बनाया जाता है, वे समय नहीं दे पाते और न ही उनका सम्पादकीय कार्यों का अनुभव होता है। चित्र छपवाने के व नाम के प्रलोभन वाले महानुभाव सर्वत्र मिल ही जाते हैं। यह आवश्यक नहीं कि किसी के पास कोई उपाधि है तो वह वैदिक सिद्धान्तों को भी जानता हो या आर्य समाज के इतिहास से भी परिचित हो।

भूल सुधार —इसी स्मारिका के पृष्ठ १९ पर श्री डा० भवानीलालजी भारतीय के लेख में छपा है कि श्री पं० कालीचरण जी मौलवी फाजिल ने ऋषि की आत्मकथा का फारसी अनुवाद छपवाया। लगता है कि भारतीय जी का कोई पुराना लेख छाप दिया गया है। परोपकारी में क्रमश: प्रकाशित मेरी पुस्तक 'आर्य समाज के उर्दू साहित्य' में मैंने इस पुस्तक की चर्चा करते हुए लिखा था कि यह ऋषि की संक्षिप्त जीवनी है। यहीं से भारतीय जी ने इसका नाम नोट किया और यह इसे आत्मकथा समझ बैठे। मैंने उन्हें पहले भी बताया था कि यह आत्मकथा का अनुवाद नहीं है। यह बात कई बार यह लिख चुके हैं अत: स्वाध्यायशील पाठकों को भ्रान्ति न रहे इसलिए मैं स्पष्ट करना चाहता हूँ कि यह फारसी भाषा में ऋषि की जीवनी है। मैंने एक से अधिक बार पढ़ी है और किसी पुस्तकालय में मैंने नहीं देखी। मेरे पुस्तकालय में इसकी एक दुर्लभ प्रति है।

एक और भूल सुधार —इस स्मारिका के पृष्ठ १३ पर इसी लेख की पादटिप्पणी में छपा है कि ऋषि के पूना के व्याख्यानों का अनुवाद पं० गणपत रामचन्द्र तथा महाशय श्रीनिवास राव ने पं० लेखराम की प्रेरणा से किया। यहां भी बात के न समझने से भूल हुई है। इस भ्रान्ति को दूर करने के लिए मैंने श्रीनिवास राव जी (आचार्य नरदेव जी के पूज्य पिताजी) का एक उर्दू लेख अनूदित करके वेदवाणी में छपवाया था।

इस विषय में अपनी पुस्तक तड़प वाले तड़पाती जिनकी कहानी' व रक्त साक्षी पं० लेखराम बृहद ग्रन्थ के पृष्ठ ३१८-३१९ पर भी इस प्रसंग की चर्चा की है। ऋषि के जीवन व ऋषि के ग्रन्थों के बारे में हमारी जानकारी जितनी गहरी व स्पष्ट हो उतना ही अच्छा व श्रेयस्कर है। यह ठीक है कि जोधपुर के श्री पं० गणपत रामचन्द्रजी ने महर्षि के पूना व्याख्यानों का हिन्दी अनुवाद किया परन्तु राव साहिब ने कोई अनुवाद नहीं किया। श्रीनिवास राव जी ने तो धर्मवीर लेखराम की प्रेरणा से अनुवाद करवाने का दायित्व अपने ऊपर लिया। ठाकुर गोविन्दसिंह जी व श्रीनिवास जी को लाहौर में वीर लेखराम जी ने यह आज्ञा दी। इन दोनों ने घर जाकर पं० भगवती प्रसाद जी शुक्ल कलब निवासी से अनुवाद करवाकर पं० लेखराम जी को लाहौर भेज दिया। आशा है हमारे पाठक अब इस तथ्य को नोट कर लेंगे। भ्रान्ति एक बार फैल जावे तो उसका निवारण अति कठिन हो जाता है।

जगमोहन को हटाओ

(पृष्ठ १ का शेष)

यह भी विदित हुआ है कि कल की गृहमन्त्री के साथ परिषद् की होने जा रही बैठक के बावजूद भाजपा की उपाध्यक्ष राजमाता सिंधिया आगामी १४ फरवरी को अयोध्या स्थित श्री रामजन्म भूमि निर्माण समारोह में कार सेवा हेतु जायेंगी। श्रीमती सिंधिया के साथ सिख जगत् के एक जत्थे ने भी कार सेवा में शामिल होने की घोषणा की है।

आवश्यक सूचना

सम्पादकीय—

आज के भारत का अस्तित्व क्या?

स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय-भारत का विभाजन करके द्विराष्ट्र का सिद्धान्त मानकर ही पाकिस्तान बनाया गया। उस समय सबने यह मान लिया, कि चलो अब हिन्दू राष्ट्रवाद का नारा फलेगा। परन्तु इन ४० वर्षों में जो देश की आचार संहिता बनी। वह कुछ इस प्रकार से बनी, जिसमे हिन्दू बड़े भाई हैं और छोटे भाइयों को (मुसलमानों) भी जियो और जीने दो के अधिकार के साथ उन्हें भी फलने-फूलने दिया जाय। ऐसा हुआ भी ?

परन्तु भारत की सरकार ने एक नारा दिया, और वह था धर्म निरपेक्षवाद का। इसमें राजनीति ने दखल दिया वोट—प्राप्ति का। राजनीति ने नया मोड़ लिया और वही पुरानी नीति अपनाई जाने लगी। विदेशी शक्तियों ने हमारे घर में फूट डालो राज करो की रीति चलने लगी। राज्यों में विद्रोही तत्व पनपाये जाने लगे और जगह-जगह पर दंगों में अध्याय जोड़ना शुरू कर दिया। भारतीय राजनीति में एक नयी आवाज आने लगी। यदि देश को चलाना है तो अल्प संख्यक समुदाय को खुश करके और उनकी मान्यताओं को मानकर ही शासन चलाया जा सकता है। इसका परिणाम यह हुआ कि अल्प संख्यक यह मानकर चलने लगे कि सरकार हमारे इशारे पर चलती है तो क्यों न उन्हें अपने इशारों पर ही चलाये। अमरीका की राजनीति में पाक के जरिये देश में फूट डालने की और अधिक प्रवृत्ति पैदा की गई। परिणाम यह हुआ कि जो भी राजनैतिक दल यह समझते थे कि अल्प संख्यक मुसलमान हमारे साथ है जैसा हम कहेंगे वह वैसा ही करेंगे। ऐसा नहीं हुआ बल्कि मुसलमानों ने जैसा चाहा वैसा होने लगा।

वर्तमान की दशा

हिन्दू अपने देश में हो एक राष्ट्र के नाम पर एक नहीं है और न इसे इस बात की चिन्ता है कि तुम्हारे साथ क्या व्यवहार किया जा रहा है। इस समय हिन्दू राष्ट्र देश में नहीं है। यह इस कारण नहीं कि देश का नाम भारत है १९४७ से पूर्व देश का नाम हिन्दुस्तान था तब भी देश में राष्ट्र हिन्दू नहीं था आज भी देश में राष्ट्र हिन्दू नहीं है। यह राष्ट्र के साथ हिन्दू शब्द न होने के कारण नहीं हैं वरन उस भावना के अभाव के कारण है जो राष्ट्र के लिये आवश्यक है।

जब से स्वराज्य हुआ है तभी से देश में हिन्दू क्या है इसका भाव ही मन में नहीं समाया। म० गांधी रामधुन का सदा ही गान करते रहे पर इस गान पर विरोधी की प्रतिक्रिया पर भी ध्यान देते। मुसलमान ने कभी भी मुहम्मद न रसूलिल्लाह के आगे किसी को भी न पैगम्बर माना और न महापुरुष ही माना।

१९२२ में गांधी जी ने खिला फत संस्था के लिये पूर्ण भारत देश की भलाई को निछावर कर दिया था उस समय गांधी जी देश के नेता के बादशाह माने जाने लगे थे।

इस महानुभाव ने मुसलमानों की सहानुभूति प्राप्त करने के लिये टर्की की जनता की इच्छा के विपरीत भारत तथा दुनिया भर की गैर मुसलमान जनता के हितों के विपरीत हिन्दुस्तान के भाग्य को खलीफा की गद्दी के लिये दांवी लगा दी थी।

सत्याग्रह असफल हुआ, खिलाफत के अनुयायियों ने देश में हिन्दुओं के रक्त की नदियां बहानी प्रारम्भ कर दी। परन्तु इस रामधुन के पुजारी को समझ नहीं आई कि वह अन्याय का पक्ष ले रहे हैं और भविष्य में ऐसा नहीं करेंगे। यह १९२२ की घटना थी इसके बाद-गांधी जी ने १९४७ में भी उस खिलाफत के अनुयायियों के आगे घुटने टेकने उचित समझें। उसके बाद गांधी जी यदि पीछे हट जाते या आततायियों का विरोध और उत्पीड़ितों को समठित करने में लग जाते तो देश का चित्र स्वराज्य प्राप्ति के बाद का वह न होता जो तब हुआ था।

आज ४० वर्ष की राजनीति में भी रामभक्त विरोधी तत्वों की ही सहायता की जा रही है गांधी जी का बलिदान या जीवन की बाजी देश की इच्छा के विरुद्ध (पाकिस्तानियों) उन्हीं को पचपन करोड़ रुपया दिलवाने के लिये लगा बैठे।

राष्ट्र के लक्षणों को एक एक कर देखें, कि ब्रिटिश काल के हिन्दुस्तान में और आज के कांग्रेस या अन्य दलों के काल में भारत कहां तक राष्ट्र सही बना है। जिस राष्ट्र की हम सही कल्पना बना कर चले थे। उस राष्ट्र में किसी महान शक्ति के अस्तित्व को स्वीकार करना जो मनुष्यों के जीवन से ऊपर हो और उच्छृंखल धूर्तों, गुटबाजों को सन्मार्ग दिखाने वाली हो। इसे कुछ परमात्मा कुछ ईश्वर को न मानने वाले उसे प्रकृति कहते हैं और कुछ लोग इस प्रकार के वातावरण को कर्मों का फल कहते हैं।

हम समझते थे कि देश में राष्ट्र का वह लक्षण जैसा ऊपर बताया है आज तक दिखाई नहीं दिया है।

आज का युग

वही गांधी युग के पुराने राग जिसके परिणाम स्वरूप आज भारत में हिन्दुओं के ही खून की नदियां बहाई जा रही हैं। देश का शासनतन्त्र अल्प संख्यकों के आगे घुटने टेक नीति अपना रहा है। देश का पश्चिमोत्तर तथा पूर्वोत्तर सीमायें खतरे में हैं देश की अन्दरूनी दशा चिन्तनीय है। देश की स्वतन्त्रता खतरे में हैं और शासन तन्त्र अपनी कुर्सी बचाने में, हज भवन बनाने में, उर्दू भाषा को द्वितीय स्थान देने में, चुनाव जीतने पर बुखारी के चरण चुम्बन करने में, रुबिया काण्ड में देशद्रोहियों को छुड़वाने में क्या नहीं किया।

२६ जनवरी को गणराज्य की धूमधाम में देश की समग्र जनता उल्लास मय थी उसका ध्यान भयंकर त्रासदी की ओर था ही नहीं। परन्तु तथ्यों से आंखें बन्द करने से तथ्य समाप्त नहीं हो जाते।

कश्मीर का शिष्टमण्डल सार्वदेशिक सभा में

विगत दिनों कश्मीर से हिन्दुओं का शिष्टमण्डल सार्वदेशिक सभा में सभा प्रधान जी से मिला था इस समय घाटी की जो स्थिति है सामने रखी। वह किसी राष्ट्र के लिए पराधीन देश के इन्सान में नरक के समान थी। कश्मीर में कानून की व्यवस्था का नाम नहीं है। वहां ज्वालामुखी का लावा बाहर निकल कर विध्वंसकारी लहरों से निकलकर इस सम्भाग को विनाश की ओर ले जा रहा है। प्रशासन नाम की कोई चीज ही नहीं है।

आज देश का हर अन्चल सुलग रहा है बम हर जगहों पर दागे जा रहे हैं। बहुमत हिन्दू असहाय होकर त्राहिमाम त्राहिमाम कर रहा है। इसे केवल धर्मनिरपेक्षता का नारा ही सुनाकर शान्त किया जा रहा है।

शिष्ट मण्डल की बात मैंने ऊपर कही हैं आज कश्मीर में पाक से नयी पीढ़ी के विद्रोही तत्वों के आ जाने से सारे समीकरण बदल गए है वहां का अल्पमत हिन्दू कश्मीर से भाग रहा है। आतंकवादी स्थान-स्थान पर विद्रोह का झण्डा खड़ा करके हिन्दुओं को जबर्दस्ती आगे रखकर जलूस निकालना, हिन्दुओं से कहलाना कि हिन्दुस्तानी कुत्तो, यहां से जाओ ?

अब यदि पुलिस या सेना की गोली चलेगी तो जुलूस के आगे चलने वाले हिन्दू ही मारे जायेंगे। यदि हिन्दू आगे चलने से मना करें तो आतंकवादियों के द्वारा गोली का निशाना बनाये जायेंगे।

कश्मीर की यह स्थिति एक दिन दिन में नहीं बनी, पिछले कई सालों

(पृष्ठ ४ पर)

करोड़ों की धन राशि-विवाद का गहरा मुद्दा बनी !

नई दिल्ली २फरवरी। श्री रामजन्म भूमि और बाबरी मस्जिद विवाद में 'विश्व हिन्दू परिषद्' के तेवर से—राजा की सरकार के हाथ जलने का अन्देशा पैदा होने से—सरकार इस विवाद की गर्म रेत में सर छुपाये शुतुरमुर्ग की स्थिति में पहुंचकर—पैदा हो रहे खतरे को नजरअन्दाज कर रही है।

विश्व हिन्दू परिषद् राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, बजरंग दल और हिन्दू सेना के बीच राम मन्दिर के निर्माण के लिए इकट्ठे हुए १४८ करोड रुपये को लेकर जबरदस्त फूट पड़ गई है नतीजा यह है कि पांचों शंकराचार्य, पीठों के अधीश्वर और अखाड़ों के महन्त इस पैसे पर अपना अधिकार जताने में लगे हुये हैं।

विश्व हिन्दू परिषद् ने ८४ करोड़ रुपये, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने २६ करोड़ रुपये, बजरंग दल ने १५ करोड रुपये और हिन्दू सेना ने २१ करोड रुपये इकट्ठे किये है। दो-ढाई करोड रुपया शंकराचार्यों के पास भी पहुचा है। हिन्दू धर्म के शंकराचार्यों का स्थान सबसे ऊंचा है। यही कारण है कि द्वारका पीठ के स्वामी स्वरूपानन्द जी महाराज शकराचार्य ने मांग की थी कि राम मन्दिर पर पारस्परिक हक निर्मोही अखाडे के साधुओं का है। उन्होंने ९नवम्बर को पिछले साल हुए राम मन्दिर के शिलान्यास पर ऐतराज कर उसे धर्म के खिलाफ हुआ शिलान्यास बताया था।

१८ से २३ जनवरी १९९० के बीच बनी सहमति में वी०पी०सिंह को खुशी थी कि विश्व हिन्दू परिषद व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के लोग मन्दिर निर्माण के काम को अगले साल तक स्थगित करने को तैयार हो गये थे। यही कारण रहा कि भाजपा की ओर से अटलबिहारी वाजपेयी और जसवन्त सिंह सांसदों ने इस तरह की अपीलें भी जारी कर दी थी।

राजा की इमाम के सामने दंडवत होने की स्थिति से हिन्दुओं के भीतर पैदा गुस्सा और सरकार द्वारा विश्व हिन्दू सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष व अमेरिका मे भारत के राजपूत कर्णसिंह के साथ सरकार के बुरे बर्ताब ने राम जन्मभूमि मन्दिर के निर्माण की सुलगती आग को भड़कने शोलो में तबदील कर दिया है। राजा कर्णसिंह ने अपना इस्तीफा देने से पहले राजा विश्वनाथ प्रतापसिंह से मिलने का समय मागा था। समय न मिलने से डा० कर्णसिंह का स्वाभिमान आहत हुआ और उन्होने इस सरकार के खिलाफ काम करने का मन बना लिया था।

डा० कर्णसिंह हिन्दू धर्मावलम्बियों में एक प्रतिष्ठित व्यक्तित्व के रूप मे जाने जाते हैं। यही कारण है कि १४८ करोड़ रुपये की धनराशि की बात के उछलने मे विश्व हिन्दू परिषद्,राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की जान सामत मे पड़ गई। अपनी पहले की रणनीति से इसी कारण इन दोनो सगठनो को पीछे हटना पड़ा। नतीजा यह रहा कि वी०पी० सिंह, लालकृष्ण आडवाणी, सांसद राम जेठमलानी, अटलबिहारी वाजपेयी, विश्व हिन्दू परिषद् के अशोक सिंघल और संघ के बाला साहब देवरस के बीच हुए गुप्त समझौते का भांडा चौराहे पर फूट गया है।

सरकार ने शाही इमाम और मुनि सुशील कुमार की अगुवाई मे समिति बनवाकर एक चाल खेली थी। चाल थी कि हिन्दू-मुसलमानो के भण्डेदारों को इस बात के लिए तैयार करना कि वे मन्दिर का निर्माण स्थगित करने से पीछे न हटें और विधान सभा चुनावों में राजा और भाजपा की वह गत न बने जो राजीव गांधी की लोकसभा चुनावों में हुई।

दिल्ली में राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चे ने आरोप लगाया कि सरकार वास्तव में राम जन्मभूमि के मसले पर राष्ट्रीय सहमति के खिलाफ ऐसी रणनीति पर चल रही है जो कि साम्प्रदायिक हिंसा और तनाव को ही हवा देगी। परन्तु इस मुद्दे पर जरूरी है कि वी०पी० सिंह १४८ करोड़ रुपये का हिसाब वसूलकर राम जन्मभूमि के निर्माण हेतु एक तिरुपतिबाला जी देवस्थानम् के तरीके का ट्रस्ट बनाएं तथा जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद के लिए मुस्लिम नेतृत्व के अपने अनुकूल नेताओं के स्थान पर सर्वमान्य नेताओं का पल्ला पकड़ें।

लेकिन अब बाजी न राजा के हाथ है, न शाही इमाम के, न राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के और न ही विश्व हिन्दू परिषद् के हाथ में। १ फरवरी से मुस्लिम नेताओं में शाही इमाम की तूती बोलनी बन्द हो गई है। जिन अरुण नेहरू की राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद विवाद को सुलगाने मे महत्वपूर्ण भूमिका थी, उन्ही अरुण नेहरू ने विधान सभा चुनावों में शाही इमाम के साहबजादे नायाब इमाम की लिस्टों में लिखे उम्मीदवारों को जद का उम्मीदवार बनने से रोकने का षड्यन्त्र कामयाबी से पूरा कर लिया है। इससे शाही इमाम का पूरा खानदान नाराज है।

दूसरी ओर विश्व परिषद् व संघ के ऊपर दबाव बना हुआ है कि वे उग्र हिन्दू स्टैंड लें। वरना अन्य हिन्दू संगठन राम जन्मभूमि का काम सम्भाल सकते है—जिससे पिछले लोकसभा चुनावों में किए गए हिन्दू साम्प्रदायिकता के ज्वार की तरह इन संगठनों के राजनैतिक आकाओं की लुटिया डूब सकती है।

गोरखपुर के महन्त अवैद्यनाथ ने विश्व हिन्दू परिषद् पर दबाव बनाया है—वहीं दूसरी ओर शाही इमाम के किनारे पड़ने से बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी भी अब मैदान में आ गई है। फिलहाल राज 'डिनर-डिप्लोमेसी' में जुटे हुए हैं और अब शायद उनके तरकश में भी १४ फरवरी के टकराव को टालने के लिए कोई ब्रह्मास्त्र नही है।

इस सबके चलते विधान सभा चुनावों में नतीजे अगर बहुत ज्यादा चौकाने वाले रहे—तो न राजा को आश्चर्य होना चाहिए और न राजीव गांधी को। (वीर अर्जुन ३-२-९० से)

भारत का अस्तित्व

(पृष्ठ ३ का शेष)

से जो भूलें हमसे हुई उन्ही का दण्ड आज देश को भोगना पड़ रहा है। भारत सरकार ने आज तक कश्मीर मे मुस्लिम चरित्र को बदलने का प्रयास ही नही किया। जो राजनीति का सबसे बड़ा अहम-प्रश्न था। सारे देश के साथ एक कानून होना, जैसा सरदार पटेल चाहते थे। इसलिये आज आवश्यकता है कि जूनागढ, भोपाल, हैदराबाद की भांति मुस्लिम साम्प्रदायिकता को एक सघ मे विलीन कर एक कानून मे बांधने का कौशल ही था।

आज कश्मीर के हिन्दुओ का ही नही किन्तु सम्पूर्ण देश के हिन्दू बहुमत की सुरक्षा अपेक्षित है। सारा देश का अस्तित्व ही खतरे में है—

आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक साप्ताहिक के पाठको से निवेदन है कि जिन सदस्यों ने वार्षिक शुल्क अभी तक कार्यालय मे नहीं भिजवाया है, वह कृपया शीघ्र वार्षिक शुल्क भेजकर सहयोग प्रदान करें। मनिआर्डर भेजते समय अपना पूरा पता व ग्राहक संख्या लिखने का कष्ट करें। वार्षिक शुल्क २५)रुपए है।

बार-२ वार्षिक शुल्क भेजने की परेशानी से बचने का सरल उपाय, एक बार २५०) रुपए भेज कर सार्वदेशिक साप्ताहिक के आजीवन सदस्य बन सकते हैं। —व्यवस्थापक सार्व० साप्ताहिक

हिन्दी बनाम अंग्रेजी—अंग्रेजी देश की जनता की भाषा नहीं?

—प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य, दयालसिंह कालेज, करनाल

अंग्रेजी पिछले २०० वर्षों से इस देश में पढ़ाई जाती रही है परन्तु दो से चार प्रतिशत लोग ही इसे अब तक जान पाए हैं। इससे देश की सांस्कृतिक एवं आर्थिक सम्पदा का भारी अपव्यय हुआ है। यदि हम अंग्रेजी वर्चस्व के सामाजिक एवं आर्थिक कुप्रभाव का विश्लेषण करें तो इसके परिणाम भयावह हैं। देश के अधिकांश लोग अपनी बौद्धिक एवं मानसिक क्षमता का उपयोग नहीं कर पाए हैं क्योंकि वे अंग्रेजी नहीं जानते। कुछ विशिष्ट गिने-चुने व्यक्ति ही समाज में उच्च पद प्राप्त कर लेते हैं। पब्लिक स्कूल एवं अंग्रेजी में शिक्षा कुछ लोगों तक ही सीमित है। अंग्रेजी के कारण देश के सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में भारी असमानता फैली है। अध्येताओं का कहना है कि अंग्रेजी के कारण देश में वर्ग प्रभुता तथा पूंजीवाद को बढ़ावा मिला है, नगर और ग्राम के लोगों में विभाजन हुआ है। अधिकांश नौकरियां अंग्रेजी पढ़े लिखे शिक्षित शहरी लोगों को प्राप्त होती हैं जिससे ग्रामीण जनता पिछड़ रही है। देखें—'दी ट्रिब्यून' चण्डीगढ़ ३०-३-८८, २५-४-८८ 'पालिटिक्स आफ इंगलिश'।

अंग्रेजी का इस देश की सामाजिक एवं सांस्कृतिक परम्पराओं से कोई सम्बन्ध नहीं है। इससे एक विशेष वर्ग को प्रोत्साहन मिला है। अंग्रेजी प्रतिष्ठा या बड़प्पन का प्रतीक हो गई है। आंकड़े यह बताते हैं कि यह अल्पसंख्यक सम्पन्न वर्ग ही चिकित्सा, इंजीनियरिंग, प्राविधि, प्रशासनिक तथा शिक्षा आदि सेवाओं के उच्च पदों पर अधिकार किए हुए है, इसके विपरीत देश की ९६ प्रतिशत जनता के बच्चों की शिक्षा माध्यमिक तथा पूर्व माध्यमिक स्तर पर ही समाप्त हो जाती है।

स्कूल स्तर से लेकर विश्वविद्यालय स्तर पर सैंकड़ों, हजारों विद्यार्थी अंग्रेजी में फेल होते हैं। छात्र वर्ष का अधिकांश समय अंग्रेजी पढ़ने में लगाते हैं फिर भी परीक्षा में अंग्रेजी का डर बना रहता है। केरल देश का सर्वाधिक पढ़ा-लिखा प्रदेश माना जाता है किन्तु वहां भी अंग्रेजी का अध्ययन के जो दुष्परिणाम सामने आये हैं वे चौंका देने वाले हैं। एक अध्ययन—'फैक्टर्स रिलेटिंग टु अन्डर अचीवमेंट इन इंगलिश—इन दी स्कूल आफ केरल'—जे० अर्मी अब्राहम -(इकनामिक एण्ड पालिटिकल वीकली दिल्ली जुलाई १६/१९७१) के अनुसार अंग्रेजी के कारण राष्ट्र की मानवीय एवं बौद्धिक क्षमता का भारी अपव्यय हुआ है। यद्यपि यह अध्ययन केरल तक सीमित है परन्तु यह स्थिति पूरे भारत पर लागू होती है।

जब केरल की यह स्थिति है तो देश के अन्य प्रदेशों का तो कहना ही क्या? यहां तक कि बंगाल में जिसे देश का सबसे जागरूक प्रान्त कहा जाता है और जो कभी ईस्ट इण्डिया कम्पनी का गढ़ था वहां भी बच्चे अंग्रेजी को भली भांति नहीं समझते। एक अध्ययन के अनुसार इंगलिश एजुकेशन आफ इंडिया—इम्पेसियली इन दी कन्टेक्स्ट आफ बंगाल—जे० के के चटर्जी (इकनामिक एण्ड पालिटिकल १ मई ७७) कलकत्ता जैसे महानगर में अंग्रेजी जानने का अर्थ कुछ शब्दों तक सीमित है।

यदि केरल और बंगाल जैसे प्रान्तों में अंग्रेजी अध्ययन की यह दशा है तो देश के अन्य प्रान्तों में अंग्रेजी शिक्षा के विषय में कहना ही क्या? हरियाणा का उदाहरण दिया जा सकता है। हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड (भिवानी) द्वारा प्रकाशित मैट्रिक परीक्षा परिणाम गजट, मार्च १९८१ (भाग दो पृष्ठ १६३०) तथा मार्च (भाग तीन पृष्ठ १०८७) की पास प्रतिशत तालिका के अनुसार दसवीं में अंग्रेजी में फेल होने वाले विद्यार्थियों की संख्या सर्वाधिक है। दशक के अन्त में स्थिति यहां तक बिगड़ गई कि १९८८ की दसवीं परीक्षा में छात्र अंग्रेजी में भारी संख्या में अनुत्तीर्ण हुए जिसके कारण बोर्ड को निर्णय लेना पड़ा कि अंग्रेजी में पास होना अनिवार्य नहीं।

यह तो रही स्कूल स्तर की बात। कालेज एवं विश्वविद्यालय स्तर पर भी अधिकांश छात्र अंग्रेजी में फेल होते हैं। विद्यार्थी सारा साल अंग्रेजी पर लगाते हैं, अंग्रेजी में ट्यूशन भी पढ़ते हैं। फिर भी परिणाम निराशाजनक होते हैं। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की १९८१-८२ की स्नातक कक्षाओं के परिणाम यही दर्शाते हैं। विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित अप्रैल १९८२ के रिजल्ट गजट (१) प्री-यूनिवर्सिटी, पृष्ठ २११ (२) बी ए/बी एस सी I पास कोर्स, पृष्ठ १६६ (३) बी ए/बी एस सी III पृष्ठ १६६ की पास प्रतिशत तालिका के अनुसार इन परीक्षाओं में अंग्रेजी के परिणाम ४४ प्रतिशत से ५१ प्रतिशत तक रहे हैं। दशक के अन्त में कालेजों में स्थिति यहां तक आ गई है कि कक्षाओं में वही अध्यापक सफल हैं जो अंग्रेजी के लिए अन्य विषयों की तुलना में पीरियड भी अधिक दिए जाते हैं। ग्यारहवीं तथा बारहवीं हिन्दी (कोर) के लिए ३ ४ पीरियड दिए जाते हैं जबकि अंग्रेजी (कोर) के लिए ८-९ पीरियड प्रति सप्ताह दिए जाते हैं। आज से २० वर्ष पूर्व जो जब लगभग पूरे पंजाब तथा हरियाणा में पंजाब यूनिवर्सिटी का क्षेत्राधिकार था, अंग्रेजी की यही स्थिति थी।

पंजाब यूनिवर्सिटी, चण्डीगढ़ द्वारा प्रकाशित प्री-यूनिवर्सिटी (ह्यूमेनिटिज) रिजल्ट गजट, अप्रैल १९७३' पृष्ठ ८८६ ८७ के अनुसार १९६९ से १९७३ तक की प्री-यूनिवर्सिटी की परीक्षाओं में अंग्रेजी के परिणाम क्रमश ५९ प्रतिशत, ४८ प्र श, ३३ प्र श, ५७ प्र श तथा ३४ प्रतिशत रहे हैं। यह उस वक्त की बात है। आज तो स्थिति यहां तक पहुंच गई है कि वर्ष १९८८-८९ से पंजाब के सभी विश्वविद्यालयों में अंग्रेजी का अध्ययन अनिवार्य विषय के रूप में समाप्त कर दिया गया है। इससे अधिक पंजाब, हरियाणा में अंग्रेजी की स्थिति के बारे में कहने की आवश्यकता नहीं।

इस प्रकार देश तथा देश की जनता एवं विद्यार्थियों के लिए अंग्रेजी शिक्षा के भयानक परिणाम हुए हैं। अंग्रेजी देश में आर्थिक एवं सामाजिक विषमता का कारण बनी है, एक वर्ग विशेष के प्रभुत्व का कारण बनी है फिर भी यह कहा जाता है कि हिन्दी लोगों पर थोपी जा रही है। स्थिति सर्वथा विपरीत है। वास्तव में अंग्रेजी देश पर लादी गई है। अंग्रेजी

के लगातार प्रयोग ने हिन्दी के राष्ट्रभाषा, देश की सम्पर्क भाषा बनने के मार्ग मे रोड़ा अटकाया है।

यह भी कहा जाता है कि हिन्दी भारतीय भाषाओं पर हावी हो रही है हिन्दी के कारण देश की अन्य भाषाओ का विकास रुक जायेगा वास्तु-स्थिति इसके विपरीत है। हिन्दी के विकास में भारतीय भाषायें बाधक नहीं है जितनी की अंग्रेजी। हिन्दी का भारतीय भाषाओ से टकराव नहीं है अपितु वे इसके विकासमे सहायक है। इसीलिये त्रिभाषा फार्मूला लागू किया गया था। त्रिभाषा फार्मूला राष्ट्र की एकता को सुदृढ करने हारा है। यह विद्यार्थियों के लिए बोझ नहीं है। केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान (सी० आई० आई० एल०) मैसूर द्वारा, किए गए एक अध्ययन 'दी लेंगुएज लोड' पृष्ठ १२६ के अनुसार भारत जैसे विशाल विविध भाषायी देश के लिए अनेक भाषाओं का अध्ययन आवश्यक एवं अनिवार्य है। आवश्यकता है आज त्रिभाषा फार्मूले को दृढ़ता से लागू करने की।

विज्ञान एव तकनीकी साहित्य के सन्दर्भ में भी हिन्दी पर दोष लगाया जाता है कि उसमे विज्ञान सम्बन्धी साहित्य का अभाव है परन्तु यहां भी अंग्रेजी आड़े आ रही है। अंग्रेजी जाननेवालों का ही विज्ञान एव तकनीकी पर एकाधिकार बना हुआ है। जनसाधारण विज्ञान के लाभो से वंचित है। राष्ट्रीय विज्ञान, तकनीकी एव विकास अध्ययन संस्थान द्वारा किए गए एक सर्वेक्षण—(इकोनामिक्स टाइम्स नई दिल्ली २०-१-८९) के अनुसार कृषि को छोड़कर अन्य क्षेत्रो मे विज्ञान एव तकनीकी का लाभ आम जनता तक बहुत कम पहुँचा है। विद्यार्थी भी अंग्रेजी नहीं समझ पाते। ऐसी स्थिति में युवा पीढ़ी के लिए अंग्रेजी के सहारे विज्ञान के गूढ़ विषयों को समझ पाना अत्यन्त कठिन हो गया है क्योंकि अंग्रेजी उनकी व्यवहार की भाषा नहीं है। वे जबरदस्ती उसको पढ़ रहे है।

वैज्ञानिक क्षेत्रो मे भी हमारे देश में सर्वोच्च कोटि का वैज्ञानिक कार्य नहीं हो पाता क्योंकि उसका माध्यम अंग्रेजी है। मौलिक अनुसंधान अंग्रेजी या विदेशी भाषाओ मे नहीं हो सकता। इसके लिए हमें रूस और चीन की तरह अपनी भाषाओ को अपनाना होगा।

अंग्रेजी देश की भाषा नहीं रही है। इसका पठन-पाठन उद्देश्यविहीन है। यह देश की परम्पराओं से जुड़ा हुआ नहीं है। इसका अध्ययन इसके पढने वालो की व्यवहार की भाषा के साथ जुड़ा हुआ नहीं है और साहित्य रचना भी इसमें नहीं हो सकती। साहित्य रचना या तो मातृभाषा में होती है या फिर राष्ट्रभाषा में हुआ करती है। किसी विदेशी या बाहरी भाषा में हम मौलिक लेखन नहीं कर सकते। दूसरे शब्दो में अंग्रेजी का अध्ययन राष्ट्र के भाषाई, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, सामाजिक तथा आर्थिक तत्वो से जुड़ा हुआ नहीं है।

इसके विपरीत हिन्दी जनता की भाषा है। यह देश की सांस्कृतिक एव सामाजिक परम्पराओ से जुड़ी हुई है। यह फिल्मों की भाषा है, देश की सर्वाधिक प्रचलित फिल्मे हिन्दी मे ही होती हैं। हिन्दी रेडियो की भाषा है आकाशवाणी के गानो की भाषा है। यह दूरदर्शन की भाषा है, दूरदर्शन के सर्वाधिक लोकप्रिय धारावाहिकों की भाषा है। रामायण की भाषा क्या थी? हिन्दी अंग्रेजी क्यो नहीं? क्योंकि वह जनता की भाषा नहीं देश की सांस्कृतिक एव भाषाई परम्परा से जुड़ी हुई नहीं। दूरदर्शन के अन्य महत्वपूर्ण धारावाहिक सीरियल की भाषा हिन्दी ही क्यों चुनी गई? क्योंकि देश की अधिकांश जनता इसको समझती है।

अत यदि हम हिन्दी को देश को, राष्ट्र की, जन-जन की सम्पर्क भाषा बनाना चाहते है तो हमें सभी स्तरो पर सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, शैक्षणिक एव वैज्ञानिक आदि स्तरो पर हिन्दी को अपनाना होगा। हिन्दी का विरोध राष्ट्र का विरोध है। हिन्दी का टकराव भारतीय भाषाओं से नहीं है उसका विरोध अंग्रेजी के साथ है और वह भी राष्ट्रभाषा के प्रश्न से, भाषा के रूप में नहीं। यदि हम १८५७ से लेकर १९४७ तक देश की आजादी की लड़ाई लड़ सकते है और देश को स्वतन्त्र करा सकते है, तो क्या आज हम अपनी भाषा को, जनता की भाषा को, भारत की भाषाओं को नहीं अपना सकते?

विनाश के कारण

कुछ भी न समझ, औरों की मानते नहीं हैं।
कमाते अपना हैं ! खाना ये जानते नहीं हैं।।

पचास में से पच्चीस भी स्मोक पी रहे हैं।
ऐसे लोग घर को फूंक तमाशा देख रहे हैं।।

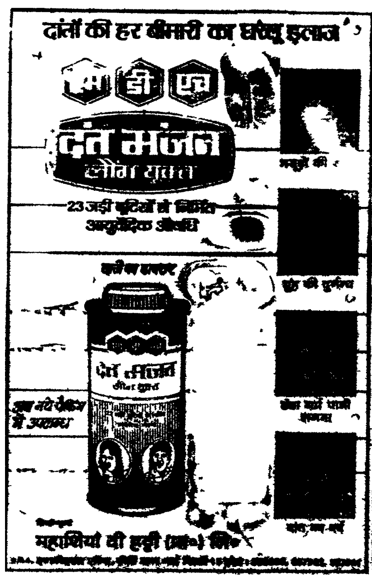
जरदा, पान-सुपारी खाना ये छोड़ते नहीं हैं।
सिनेमा देखने से भी मुंह मोड़ते नहीं हैं।।

बीड़ी, सिगरेट, शराब, तो कई भंग पी रहे हैं।
बहुत से तो अफीम के सहारे जी रहे हैं।।

गरीबी का कुछ ही ये लोग काम कर रहे हैं।
भगवान के नाम को यूं ही बदनाम कर रहे हैं।।

सन्ध्या हवन कभी ये प्रेम करते नहीं हैं।
ऐसे बुद्धिमान क्या जीवन में भूखे मरते नहीं हैं।।

—प्रेमचन्द सैनी, शाहपुरी दिल्ली



साम्प्रदायिकता क्या है ?

पं० गंगाप्रसाद विद्यार्थी एम०ए० जबलपुर

यदि हिन्दू यह कहें कि मैं हिन्दू हूं, या मुसलमान यह कहें कि मैं मुसलमान हूं, तो क्या यह साम्प्रदायिकता है ? क्या अपने मत मजहब दीन या धर्म की बातों का पालन करना साम्प्रदायिकता है? क्या ईश्वर, धर्म और धर्म-पुस्तक पर आस्था रखना साम्प्रदायिकता है ? क्या अपनी जाति विशेष सम्प्रदाय या धर्म वालों की सेवा करना और इसके लिए संस्था बनाना साम्प्रदायिकता है ? यदि नहीं, तो फिर साम्प्रदायिकता क्या है ? वस्तुतः दूसरे सम्प्रदाय या उसके लोगों को बुरा कहना या उनके खिलाफ साजिश करना साम्प्रदायिकता है। बहुमत की बात न मानकर उसके खिलाफ अल्पमत का पोषण करना साम्प्रदायिकता है।

किसी भी देश की एक निश्चित सीमा होती है और लिखित उसका एक निश्चित संविधान होता है। देश के किसी भू भाग या उसके कुछ लोगों को उस संविधान से बाहर रखना साम्प्रदायिकता है। देश के संविधान में स्वीकृत राजभाषा को राजकाज मे प्रयुक्त न करना भाषा सम्बन्धी साम्प्रदायिकता है। एक ही प्रदेश में दो-दो अलग-अलग राज्य क्यों नहीं बना देते। मुझे याद आता है कि जब स्वर्गीय सम्पूर्णानन्द जी उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री थे और उत्तर प्रदेश की राजभाषा हिन्दी स्वीकृत की गई थी तो उर्दू के कुछ हिमायती उनके पास पहुंचे। तो उन्होंने उनसे कहा कि मुझसे चाहे जितने उर्दू के स्कूल खुलवा लो, अध्यापक रखवा लो, पुस्तकें छपवा लो, ऐकेडेमी बनवा लो परन्तु राजभाषा हिन्दी ही रहेगी, तब दस वर्ष बाद यह शिकायत लेकर न आना कि हिन्दी न जानने के कारण हमारे लड़कों को सरकारी नौकरी नही मिल रही है।

कहते हैं कि जब कमाल पाशा तुर्की के अधिपति बने तो उन्होंने निश्चय कि तुर्क देश की भाषा तुर्की होगी, अरबी नही रहेगी। उनके सिपहसालारों ने उन्हें सलाह दी कि यह भाषा परिवर्तन करने में लगभग चौदह साल लगेंगे। कमालपाशा ने कहा ठीक है, परन्तु अब तुम तुरन्त यह समझ कर काम करो कि वे चौदह वर्ष इसी क्षण समाप्त हो चुके हैं। इसे कहते हैं काम करने की लगन, नही तो काम न करने के बहाने अनेक हैं। इसी प्रकार जब सरदार वल्लभ भाई पटेल भारत के प्रथम गृहमन्त्री बने तो उनसे भारत के सभी अंग्रेज कर्मचारियों को एक साथ छुट्टी पर विलायत रवाना कर दिया और रिटायर होने की अवधि तक उन्हे बिना कुछ काम किए इंगलैण्ड में तनख्वाह मिलती रही। पटेल का कहना था कि भारतीय अधिकारी अभी से जिम्मेदारी सम्भाल, भले ही अनुभव न होने से वे गलतियां कर बैठें। पर वे गलतियां जानबूझ कर नहीं की गई होंगी, तब अनुभव प्राप्त करने से पहिले समय क्यों गवाया जाय।

पूरे भारत वर्ष में अंग्रेजी जानने वालो की संख्या कुल जनसंख्या के तीन प्रतिशत से भी कम है फिर भी दूरदर्शन पर समस्त टेक्निकल कार्यक्रम और फोकस इत्यादि अंग्रेजी में ही होते हैं। जबकि ९७ प्रतिशत अंग्रेजी न जानने वालों से उन्हे कुछ लेना देना नहीं है। उनके बस समाचार और नाच गाने ही पर्याप्त हैं। क्या यह घोर साम्प्रदायिकता नही है ? (ग्रास कम्यूनल)।

जाति या जातियों पर आधारित संरक्षण भी इसी प्रकार का है। संविधान बनाने वालों ने सोचा था कि भारत सरकार और प्रान्तीय सरकारों के प्रयत्न से पिछड़ी जातियों की इतनी द्रुतगति से उन्नति की जायेगी कि इस पन्द्रह वर्षों में ही उन्हें संरक्षण की आवश्यकता न रहेगी। परन्तु पिछड़ी जातियों के शिक्षित व समृद्ध व्यक्ति यह संरक्षण जारी रखवाना चाहते हैं क्योंकि पिछड़ी जातियों के गरीब अशिक्षित बहुमत के नाम पर उनका स्वयं का लाभ है। इसी तरह कांग्रेस के भी ये संगठित वोट बैंक रहे हैं। अतएव कांग्रेसी भी उन पिछड़ी जातियों को शीघ्र उन्नत देशों में ले जाने मे दिलचस्पी नहीं रखते। वे तो चाहते हैं कि वे सदा ही उन पर आश्रित रहे जिससे वे उनके स्थिर वोट बैंक बने रहे। इसीलिए आरक्षण को किस्तों में बढ़ाते रहते हैं।

पिछड़े वर्गों के शत-प्रतिशत बच्चों को अनिवार्य और उत्तम शिक्षा दी जानी चाहिए उन्हें भोजन, वस्त्र, पुस्तकें, निवास, साबुन तेल व सभी आवश्यक वस्तुएं मुफ्त मिलनी चाहिए और कुछ जेब खर्च भी। इसी प्रकार प्रौढ़ों और वृद्धो को भी शिक्षित करना चाहिए और शिक्षित हो जाने पर उन्हें उचित नौकरियां भी मिलनी चाहिए। भले ही इसके लिए अरबों रुपए खर्च हो परन्तु केवल कागज पर नही और दलालो की मार्फत नही। नही तो सारी मलाई दलाल लोग ही चाट जायेंगे और पिछड़ी जातियों का वास्तविक लाभ बहुत ही मन्थर गति से होगा।

देश का भला केवल नए-नए कानून बनाने लम्बी चौड़ी बहसें करने और आंकडे छपाते रहने से नही होगा वह तो सम्पूर्ण संकल्प शक्ति के साथ कुछ अच्छा और उपयोगी करके दिखलाने से होगा। इसके लिये चपरासी से लेकर मन्त्री तक का चरित्र उत्तम बनाना होगा। आज देश में दिनों दिन चरित्र दुर्बल होता जा रहा है और किसी को इसकी तनिक भी चिन्ता नही है सभी को केवल रुपए पैसों की और भौतिक सुख समृद्धि की चिन्ता है।

दुर्बल और दुष्ट चरित्र के व्यक्ति ही साम्प्रदायिक समस्यायें और झगड़े उत्पन्न कराते रहते हैं। सभी कहते हैं। 'बुभुक्षितः किं न करोति पापम्' अरे भूखा पाप करे तो सह्य है। परन्तु यहा तो लखपति से करोडपति बनने के लिए ही सारी खुराफातें हो रही हैं। इसलिए चाहे जैसे हो लोगों को चरित्रवान् बनाना ही होगा।

शुभ विचारधारा

—डा० टी० आर० शर्मा, अमेरीका

१—माता पिता की सेवा करना पुण्य है। उनको सताना पाप है ॥

२—यदि हम अच्छी विचार धारा व अच्छी आदतो को अपनायेंगे, तब सांसारिक दुःखो से बच जायेंगे

३—आत्मा अनमोल हीरा है—इसको संसारिक कीचड़ मे मत खोओ।

४—मन को मित्र बनाने के लिए सत्संग व ज्ञान प्रतिदिन लेना चाहिए।

५—हम एक दूसरे से इस धरती पर लड़ने नहीं आए, अपितु सहयोग देने आये हैं।

६—अपने अभिमान व अहंकार के बन्दी मत बनो अपने बन्धुओं को हीन मत समझो, न ही उनका अपमान करो।

७—हमेशा प्रातः काल उठकर उत्साह पूर्वक वेद मन्त्रो का उच्चारण करते हुए योग अभ्यास व प्राणायाम व सत्संग व यज्ञ करने से मन प्रसन्न व शान्त रहता है।

८—महापुरुषो के सत्संग से मन के दुःख दूर भाग जाते हैं।

९—निराशावादी होना भीरुता का चिन्ह है। आत्म विश्वास से अग्रसर होकर जीवन मे आनन्द पाओ।

१०—अच्छा व्यवहार शालता की निशानी है—सो शुभ विचार बोलो व सोचो।

११—शूरवीर वो है, जो अज्ञानता को हटाता है।

१२—परिश्रम व सहयोग से सभी शुभ मनोकामनाएं सिद्ध होती हैं।

१३—जब मन सांसारिक आकर्षणों मे फंस जाता है तब जीवन अशान्त बन जाता है।

१४—अच्छे कर्म करने मे देर मत करो अपितु अवसर हाथ से जाता है। समझदारी है शुभ कर्म कर डालो।

हे इन्द्र नमस्ते लो मेरी

भारत माता के तपोपूत, हे इन्द्र नमस्ते लो मेरी।
इस भारत की सारी जनता, है ऋणी वीर नेता तेरी ॥

हे दयानन्द के सेनानी, हे वीर, बहादुर बलिदानी।
हे स्वतन्त्रता के दीवाने, महिमा तेरी जग ने जानी ॥
तुम सबसे आगे रहे सदा, जब बाजी युद्ध की रणभेरी।
इस भारत की सारी जनता है ऋणी वीर नेता तेरी ॥१॥

मानवता के सच्चे हामी तुम सदाचार के थे स्वामी।
निबलो विकलो के रक्षक थे तुम देशभक्त नेता नामी ॥
पावन जीवन था, कभी नहीं करते थे हेरा फेरी।
इस भारत की सारी जनता, है ऋणी वीर नेता तेरी ॥२॥

इतिहासकार तुम पत्रकार विद्वान निपुण साहित्यकार।
वैदिक मर्यादा के पालक, सच्चाई से था तुम्हें प्यार ॥
लिखने, कहने मे सत्य बात, तुम नहीं लगाते थे देरी।
इस भारत की सारी जनता, है ऋणी वीर नेता तेरी ॥३॥

यदि नेता तुमसे बन जाए, सब वैदिकपथ को अपनाए।
देवों की धरती भारत को, सारी दुनिया में चमकाए ॥
विश्वास हमे है भारत की, दुनिया बन जाएगी चेरी।
इस भारत की सारी जनता, है ऋणी वीर नेता तेरी ॥

तुम राम कृष्ण से थे त्यागी श्रद्धानन्द से थे वैरागी।
अन्याय अविद्या से जूझे, विद्या वाचस्पति बड़ नामी ॥
आजाद कराया भारत को अंग्रेज भगाए अन्धेरी।
इस भारत की सारी जनता, है ऋणी वीर नेता तेरी ॥५॥

सज्जन को थे तुम सज्जन जाते थे काल दुष्ट का मन।
देश धर्म के लिये समर्पित देश आपका था तन-मन धन ॥
अब आओ भारत में भारत माता दुष्टों ने है घेरी।
इस भारत की सारी जनता, है ऋणी वीर नेता तेरी ॥६॥

—प० नन्दलाल निर्भय सिद्धांत शास्त्री भजनोपदेशक
ग्राम पोस्ट बहीन जिला फरीदाबाद (हरियाणा)

संक्षिप्त समाचार

पं० गोपदेव जी शास्त्री द्वारा अनुदित तेलगु सत्यार्थप्रकाश का विमोचन

दि० २१-१२-८९ रविवार दिन को ३ ३० बजे आन्ध्र प्रदेश की गवर्नर श्रीमति कुमुदबेनजोशी ने विमोचन किया, डा०सि० नारायण रेड्डी, उपाध्यक्ष तेलगू विश्वविद्यालय, हैदराबाद, ने सभा का अध्यक्षता की। अनेक वक्ता सत्यार्थप्रकाश महर्षि दयानन्द तथा श्री शास्त्री जी के बारे मे भूरि,भूरि प्रशंसा की।

इस अनुवाद के प्रकाशक अम्बा रामार्य सत्यार्थप्रकाश ट्रस्ट" सिकन्दराबाद है। श्री शास्त्री जी अपने निजी धन १०००००) रुपये स्व० माता पिता के स्मरणार्थ स्थापना किया। इसका मुख्य उद्देश्य तेलगू सत्यार्थ प्रकाश का निरन्तर प्रकाशन होता रहे। पूर्ण योजना २ २५ लाख रुपये की है। शेष धन न्यास के सदस्य तथा अन्य सज्जनो ने दिया हैं।

इस संस्करण के विषय में कुछ शब्द—

आगे संस्करणो को छापने में सुविधा के लिये पूरे पुस्तक कम्प्यूटर टेप कम्पोजिंग करवा लिया गया तथा मुद्रण फिल्म बना कर आफसेट यन्त्रो पर छपाया गया है। साइज २०×३०/८ पेज,पूरे ९६८ पृष्ठ है। पूरा रेक्सिन जिल्द करवाया गया है। मूल्य ५०) रखा है।

गोरखपुर कमिश्नरी के आर्य बन्धु ध्यान से पढ़ें

जो आर्य समाजें नई पीढी का अपनी आर्य समाजो में प्रवेश उचित समझती हो—उनके सक्षम अधिकारियो से निवेदन है कि मैं उन आर्य समाजों मे आर्य वीर दल की स्थापना करके पूर्ण अनुशासित आर्य वीरो का निर्माण करने को उत्सुक हूं। कृपया निम्न पते पर सम्पर्क करें।

ब्रह्मचारी नरेन्द्रलाल आर्य उपसंचालक
आर्य वीर दल पूर्वी उत्तर प्रदेश गोरखपुर क्षेत्र
(क्षेत्रीय युवा कल्याण अधिकारी) स्थान—पो० सलटोवा गोपालपुर
(बस्ती) उ०प्र० पिन २७२१९०

शुद्धि समाचार

श्री देवेन्द्र जी आर्य समाज पुन्छ (जम्मू काश्मीर) से सूचित करते हैं कि पुन्छ नगर मे स्थानीय आर्य समाज और सनातन धर्म सभा ने मिलकर चार बाल्मीक परिवार के १९ सदस्यों (जिसमें स्त्रियां बच्चे भी सम्मिलित हैं) का शुद्धिकरण कर वैदिक धर्म मे प्रवेश किया। वेद मन्त्रो से उनका अभिनन्दन किया गया।

—देवेन्द्रकुमार, आर्यसमा पुन्छ

निर्वाचन

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा बुलन्दशहर का नव निर्वाचन आज दिनांक १९ १२-१९८९ को आर्यसमाज चौक बुलन्दशहर में दोपहर २ बजे सव समिति से सम्पन्न हुआ। इसमे निम्नप्रकार निर्वाचन हुआ।

१ प्रधान श्री लक्ष्मीप्रसाद अग्रवाल
२ मन्त्री श्री कृष्णपालसिंह
३ कोषाध्यक्ष श्री रामदास आर्य चुने गये।

—आर्यसमाज कमपुरा का वार्षिक निर्वाचन दिनांक १७-१२-८९ को साप्ताहिक सत्संग के पश्चात् प० देवेन्द्र आर्य की अध्यक्षता में सर्वसम्मति से यह निर्वाचन सम्पन्न हुआ जिसके अधिकारी निम्न हैं।

श्री हरिनारायण गुप्त प्रधान
श्री जगपतराय गुप्त मन्त्री
श्री मदनलाल आर्य कोषाध्यक्ष
श्री एम० आर० शर्मा लेखा निरीक्षक
श्री ओमप्रकाश आर्य संरक्षक चुने गये।

पुस्तक-समीक्षा

वैदिक धर्म एवं संस्कृति

ले० डा० धर्मचन्द्र विद्यालंकार

प्रकाशक—अमर ज्योति प्रकाशन मेरठ

पुस्तक मे वैदिक धर्म का यथार्थ स्वरूप का युक्ति सहित विवेचन प्रस्तुत समस्त प्रश्नो का सटीक समाधान है। आज का मानव धर्म के आडम्बरों है को ही जीवन का आधार मान कर भ्रमित था। साथही देश विदेशमे प्रचलित विभिन्न धर्मों को ही जीवन की मुक्ति का आधार मानकर चल रहा था लेखक ने इस पर गहन चिन्तन कर धर्म का सही स्वरूप देकर मानव के मस्तिष्क को सही दिशा दी है। वस्तुत भारतीय चिन्तन धारा का मूल स्रोत तो वेद है जिसके द्वारा मानव को विकसित करने का निराकरण किया है।

लेखक ने अपने प्रयास से गागर सागर मे भरने का सफल प्रयास किया है। पुस्तक का अध्ययन करने पर अपना यह अभिमत है कि विचारक विद्वान ने अपनी विशेष प्रतिभा का दिग्दर्शन कराया है।

जिससे विवेकी मानव समाज अवश्यमेव लाभान्वित होगा।

—सम्पादक

वेदों में नारी

लेखक—डा० कपिलदेव द्विवेदी, कुलपति, गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार तथा डा० भारतेन्दु द्विवेदी।

प्रकाशक—विश्वभारती अनुसन्धान परिषद् ज्ञानपुर (वाराणसी)।

पृष्ठ सख्या—(१७४+२४) मूल्य सजिल्द २५) अजिल्द १५)।

प्रस्तुत ग्रन्थ वेदों मे नारी इस सामजिक आवश्यकता की पूर्ति का एक समर्थ और सार्थक प्रयत्न है। भारतीय अध्यात्म, धर्म, दर्शन, सामाजिक राजनीतिक आधार आदिके मूल स्रोत वेदों मे ही निहित हैं। जिसमे वैदिक वाङ्मय मे निरूपित नारी की गौरवपूर्ण स्थिति और स्थान स्थान पर व्यक्त नारी विषयक सतुलित समन्वित दृष्टिकोण आज भी हमारे लिए सर्वथा प्रासगिक और उपयोगी हैं। समीक्ष्य ग्रन्थ मे चारो वेदो से विषय से सम्बन्धित सौ मन्त्रो का सकलन किया गया है। प्रत्येक मन्त्र का अन्वय कर शब्दार्थ तथा मन्त्र का हिन्दी और अग्रेजी मे अर्थ दिया गया है। इसके पश्चात् अनुशीलन के अन्तर्गत मन्त्र के मूल भाव का विस्तृत विवेचन और स्पष्टीकरण किया गया है। यह अश लेखक के प्रकाण्ड पाण्डित्य और उसके प्रामाणिक अनुभव का द्योतक है। प्रत्येक मन्त्र के अन्त मे आवश्यक टिप्पणी भी दी गयी है। मन्त्र विवेचन के पूर्व लेखक ने 'वैदिक वाङ्मय मे नारी' शीर्षक से एक विस्तृत और विद्वतापूर्ण भूमिका दी है, जिससे तद्युगीय नारी की दशा-दिशा का सम्यक बोध होता है।

डा० द्विवेदी जी व्याकरण, भाषा-विज्ञान, साहित्य और दर्शन के प्रतिष्ठित विद्वान हैं। इन विषयो पर इनके तीन दर्जन से अधिक ग्रन्थ प्रकाशित हैं। समीक्ष्य पुस्तक वेदामृतम् ग्रन्थमाला का सातवा पुष्प है। इस ग्रन्थमाला द्वारा डा० द्विवेदी अमृतमय वेदज्ञान को जनसामान्य तक पहुँचाने का श्लाघनीय कार्य कर रहेहैं। हमारा दृढ़ विश्वास है कि सरल सुबोध रूप में प्रस्तुत किए गए ये वेद मन्त्र व्यक्ति और समाज के लिए परम कल्याणकारी सिद्ध हो गे।

—डा० विश्नुराम मिश्र

एम० ए० पी० एच० डी०, डी० लिट्०

हिन्दी विभाग,

राजकीय महाविद्यालय ज्ञानपुर, (वाराणसी)

श्री सन्तराम उवाच

"क्रोधी स्वभाव को समाप्त करने के लिए क्रोध की प्रवृति की घोषणा न करो। पहले से ही शान्त-भाव धारण करो और कितने दिन बिना क्रोध के बीते इसकी गणना करते रहो।

इस बार एक दिन कुछ नहीं हुआ, इस प्रकार यदि तीस दिनो तक बिना क्रुद्ध हुए रह सको, तो यह प्रवृति धीरे-धीरे निर्बल होकर सर्वथा समाप्त हो जायगी।

श्रीकृष्ण कहते है

जन्म बीते बहुत मेरे और तेरे अर्जुन,
जानता मैं सभी तू न जाने परन्तप।
मैं अजन्मा अमर मैं स्वामी सर्व भूतों का,
अधीन कर प्रकृति मैं स्वमाया से प्रकटता।
जब जब ग्लानि धर्म की हो जाती है अर्जुन,
और बढ़ अधर्म जब करू अपने को सृजन।
साधुओ के त्राण को नाश को पापियो के,
धर्म-स्थापना के लिए होऊ मैं युग युग मे।
जन्म कर्म जो मेरे दिव्य जाने तत्व से,
देह छोड न जन्म ले पाये अर्जुन वह मुझ।
राग भय क्रोध तज मुझ मे मगन मेरी शरण,
ज्ञान तप से पुनीत आये मुझ मे बहुत जन।

श्री सन्तराम बी० ए० कहते हैं

आप कितने अच्छे मित्र है

अच्छा मित्र होने के लिए हम दूसरों को भी ज्ञान रहना आवश्यक है जितना कि हम अपने आपको है यह कोई ऐसी चीज नही जो सयोग से अपने आप घटित हो जाती हो। यह एक कठिन सद्गुण है जिसे हम अपने मे विकसित कर सकते है

क्या आप सचमुच शारीरिक और मानसिक रूप से ठीक हैं

व्यक्तिगत योग्यता को हम केवल शारीरिक क्षमता समझने के लिए तत्पर है। शरीर का ठीक होना महत्वपूर्ण है, परन्तु यह स्मरण रखना भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि शरीर और मन का आपस मे गहरा सम्बन्ध है। गलत ढग से सोचने से तनाव और दुख उत्पन्न होता है, जिसका शारीरिक कुशल क्षेम पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है। इसके विपरात शरीर का ठीक न होना जीवनी शक्ति को गुप्त रूप से क्षति पहुँचा कर और जीवन-सम्बन्धी हमारे दृष्टिकोण को बिगाड कर हमारे मानसिक कल्याण को प्रभावित करना है।

आत्म परीक्षा से उदधृत

ग्राम जजगा मे सात सौ आदिवासी इसाईयों ने वैदिक धर्म में प्रवेश किया

गौमांस और शराबमुक्त जीवन जीने का संकल्प

जजगा १२ जनवरी।

श्री धर्ममुनि जी वानप्रस्थ निभारा राजस्थान वेद प्रचार मण्डल मेवात, अरोडा (गुडगाव), स्वामी सेवानन्द सरस्वती हिन्दू शुद्धि सरक्षण समिति हरियाणा आदि सस्थाओ और महापुरुषो ने वृहद् यज्ञानुष्ठान मे लगभग सात सौ स्त्री पुरुषो को आदिवासी इसाई मत से निकाल कर पुन अपने पवित्र वैदिक धर्म मे प्रवेश कराया सभी इसाई आदिवासियो ने इसाई मजहब अपनाने का खेद व्यक्त किया और आजीवन भर गौमास, मास शराब आदि सेवन न करने की शपथ ली

सभी वैदिक धर्म प्रवेशार्थी को नये वस्त्र भेंट किये गये। यह कपडा वेद प्रकाश प्रधान हिन्दू शुद्धि समिति हरियाणा श्री परमानन्द पसारा समालखा, स्वामी दिव्यानन्द योग धाम ज्वालापुर, श्री सोहनलाल गुप्त जालन्धर एव प्रमप्रकाश पुरी ने कपडो का सहयोग दिया। इस कार्य मे श्री वेदपाल आर्य उपदेशक राजपुर जि० रामगढ (म. प्र.)ने प्रसारमे हार्दिक योगदान किया।

—सवाददाता

राष्ट्रभाषा हिन्दी का अपने देश में अपमान

आर्यसमाज सैक्टर-१५ फरीदाबाद के हम सब सभासद गम्भीर विचार विमर्श के बाद आपका ध्यान उस अप्रिय घटना की ओर आकर्षित करना चाहते हैं जब १४ १५ ११-१९८९ को नेहरू जन्म-शताब्दी समारोह मे हमारे भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी न देश के कोने कोने से आये हजारो बालक-बालिकाओ को अंग्रेजी भाषा मे भाषण देना प्रारम्भ किया तब गुजरात प्रदेश के एक साहसी बालिका अम्बिका ने उनसे अनुरोध किया कि क्योकि अधिकाश बच्चे अंग्रेजी नही जानते इसलिये आप हम सबको राष्ट्रभाषा हिन्दी मे सम्बोधित करे इस पर समारोह के प्रबन्धक तथा सुरक्षा कर्मचारियो ने उस बलिका को घर लिया तथा उसे डरा धमका कर सभा कक्ष से निकाल दिया इतना ही नहीं उस निपुण तथा असाधारण योग्य अम्बिका को पारितोषिक लेन के लिये तीनमूर्ति भवन नई दिल्ली मे घुसने तक नही दिया गया राष्ट्र भाषा हिन्दी की इस प्रकार अवहेलना बहुत खेदजनक है। जब विदेशो से आने वाले शासक रूसी, जापानी चीनी, फ्रासीसी इत्यादि अपनी-अपनी राष्ट्र भाषा मे यहा आकर बोलते हैं हमारे देश के शासको को राष्ट्र भाषा हिन्दी मे अपने देश के बच्चो को सम्बोधित करने में सकोच कैसा।

—दीनानाथ सेठ प्रधान

सोवियत संघ में वैदिक चित्रांकन

मास्को २ फरवरी। सोवियत संघ के कजाकिस्तान मे उत्तरी थ्येनशान पहाड़ियो से कुछ ऐसी चट्टानें मिली हैं जिन पर ऋग्वेद की रचनाओ के आधार पर चित्रांकन किया गया है।

एक चट्टान पर कल्पतरु की आकृति खुदी है। उस पर एक मानव सूर्य तथा चन्द्रमा बने हैं। इसके अतिरिक्त सांड की भी कई आकृतियां बनी हुई हैं।

कजाकिस्तान के पुरातत्वविदो के अनुसार आकृतियां यह दर्शाती हैं कि भारतीय यूरोपीय वंश के लोग दुनिया के इस हिस्से में भी रहते थे।



शिलान्यास धर्म के नाम पर धोखा था : शंकराचार्य

१६ फरवरी को धर्माचार्यों का सम्मेलन आहूत

नई दिल्ली ५ फरवरी। विश्व हिन्दू परिषद् द्वारा अयोध्या मे श्री राम जन्मभूमि शिलान्यास व निर्माण कार्यक्रम को गैर कानूनी धर्म विरोधी मान्यता देते हुए जगत गुरु शकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द जी महाराज ने कहा है कि इस सम्बन्ध मे १९ फरवरी को दिल्ली मे एक सम्मेलन आहूत किया जा रहा है जिसमे सभी धर्माचार्य यह तय करेगे कि राम मन्दिर का निर्माण कब से प्रारम्भ किया जाये।

आज यहा आयोजित एक सम्वाददाता सम्मेलन मे श्री शकराचार्य ने कहा है कि विश्व हिन्दू परिषद् वाले धर्म के नाम पर देश की जनता तथा हिन्दुओ को भारी धोखा दे रहे हैं। 'समरागण सूत्रधार' नामक पुस्तक का हवाला देते हुए उन्होने कहा है कि किसी भी मन्दिर के शिलान्यास के लिये मात्र चार (नन्दा भद्रा, जया, पूर्णा) शिलाओ के पूजन का धार्मिक विधान है लेकिन परिषद् वालो ने धार्मिक नियमो, शुभ मुहूर्त की खुली अवहेलना कर राम मन्दिर निर्माण के नाम पर पैसा बटोरने के उद्देश्य से पूरे देश मे लाखो शिलाओ का पूजन करवाया जो कि अधार्मिक कृत्य है।

उन्होने कहा कि श्री राम जन्म भूमि मन्दिर पर नव निर्माण करने का अधिकार निर्मोही अखाडे ने श्रीराम जन्म भूमि-पुनरुत्थान समिति को ही दिया है। इसलिये विश्व हिन्दू परिषद् को मन्दिर निर्माण का कोई हक नही है। परिषद पर तमाम आरोप लगाते हुए उन्होने कहा कि परिषद् न तो सनातन धर्म के प्रतिनिधियो की सस्था है और न ही उसका उस भूमि पर स्वामित्व है। विश्व हिन्दू परिषद् की धर्म ससद मे आर्य समाजी एव बौद्ध भी हैं। आर्य समाजी मूर्ति पूजा नही मानते हैं और बौद्धो के गुरु दलाईलामा का स्पष्ट कथन है कि यह कहना गलत है कि बौद्ध हिन्दू हैं ऐसी स्थिति मे परिषद् का निर्णय अनाधिकृत एव गैर कानूनी व धर्म विरोधी है।

उन्होने कहा कि विश्व हिन्दू परिषद् छल कपट व प्रपच के जरिये हिन्दू समुदाय को बरगला कर राम मन्दिर के नाम पर अथाह पैसा बटोरने मे लगी है उन्हे हिन्दू हितो से कोई सरोकार नही। उन्होने कहा कि इन लोगो के झूठ का इसी से पर्दाफाश हो जाता है कि ये नारा लगाते थे सौगन्ध राम की खाते हैं मन्दिर वही बनायगे। फिर भी राम जन्म भूमि से १९२ फीट दूर शिलान्यास क्यो किया गया? उन्होने कहा कि १४ फरवरी से वहा शुरू होने वाला निर्माण कार्य हिन्दुओं के लिये शून्य है क्योकि उक्त मन्दिर श्री राम जन्मभूमि स्थान पर बन ही नही रहा है।

उन्होने कहा कि वस्तुत शिलान्यास वहा होना चाहिए जहा राम जन्मभूमि है और इस सम्बन्ध मे उन्होने कहा कि शीघ्र ही राम जन्म भूमि स्थान पर शिलान्यास करने की तिथि निर्धारित की जायेगी।

काश्मीर की चिंताजनक स्थिति

नई दिल्ली। केन्द्र सरकार ने जम्मू कश्मीर मे पाकिस्तानी हस्तक्षेप के विरुद्ध सख्त नाराजगी जाहिर करते हुए गहरी चिन्ता व्यक्त की है पाकिस्तान के झूठे परपच पूर्ण दुष्प्रचार का जवाब देने के लिए सरकार ने अनेक कारगर कदम उठाए हैं। विदेशो मे भी पाक प्रचार को निष्प्रभावी करने के लिए विशेष दूत भेजे जा रहे हैं।

जम्मू काश्मीर के पूर्व मुख्यमन्त्री डा० फारूख अब्दुल्ला को भी प्रधानमन्त्री से बातचीत के लिए एक विशेष विमान से २९ जनवरी को दिल्ली बुलाया गया। उनके सहयोग से घाटी मे कारगर कदम उठाने पर विचार विमर्श किया गया।

महर्षि दयानन्द स्मृति मेला जोधपुर में २७, २८, २९ सितम्बर १९९० को आयोजित होगा

जोधपुर २८ जनवरी

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन की कार्यकारिणी की बैठक २ जनवरी १९९० को ... प्रधान श्री रतनलाल जी द्विवेदी की अध्यक्षता में हुई। इस बैठक में ... विशिष्ट ... रूप में ... हुए।

सर्वसम्मति से निश्चय किया गया कि २७, २८, २९ सितम्बर १९९० (तीन दिन) महर्षि दयानन्द स्मृति मेला धूमधाम के साथ जोधपुर में मनाया जाय। इस महान उत्तरदायित्व के निर्वाहार्थ निम्न सदस्यों की समिति का निर्वाचन किया गया—श्री रतनलाल द्विवेदी, मोहनलाल कछवाहा, श्री दाऊलाल जी सोनी, श्री मनसारामजी श्री भवरलालजी श्री रमेशचन्द्र भाटिया श्री सुखदेव जी आर्य, श्री नरदेव जी श्री मुकुन्ददास जी वानप्रस्थ, श्री कर्णेश कुमारसिंह जी, श्री मोतीलाल टाक।

—संवाददाता

महाशय मनफूलसिंह की स्मृति में मनफूलसिंह हाल के निर्माण हेतु चालीस हजार रुपये के दान की घोषणा

दिनांक ३० जनवरी।

कालका में प्रातः १० बजे स्मृति यज्ञ श्री प० बालदिवाकर हंस प्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। ये यज्ञ महाशय मनफूलसिंहजी की तीसरी पुण्य तिथि के अवसर पर आयोजित किया गया था। इस अवसर पर हरयाणा क्षेत्र के सैकड़ों आर्य समाज के कार्यकर्ता उपस्थित थे। यज्ञ में आर्य नेता चौ० वेदराज चौ० गंगाराम स्वामी विद्यानन्द जी ने महाशय जी को श्रद्धांजलि अर्पित की। श्री हंस जी की अपील पर क्षेत्रीय आर्य समाजियों ने महाशय मनफूलसिंह जी की स्मृति में आर्य समाज मन्दिर बनाने हेतु चालीस हजार रुपये दान की घोषणा की।

—संवाददाता

लवन में नेत्र शिविर सम्पन्न

रायपुर। विगत दिनों दयानन्द पब्लिक वेलफेयर ट्रस्ट रायपुर तथा श्री सत्यनारायण गुलाबी देवी लाहोटी चेरिटेबल ट्रस्ट रायपुर के संयुक्त तत्वावधान में स्वामी दयानन्द सरस्वती स्मृति में ऐतिहासिक निःशुल्क नेत्र शिविर का आयोजन लवन (बलौदा बाजार) में आयोजित किया गया था। इस शिविर में ६४ गांवों के १३३ मरीजों के सफल आपरेशन नेत्र विशेषज्ञ डा० विजय मेहरा अधीक्षक छत्तीसगढ़ धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय रायपुर द्वारा किये गये जिसका शुभारम्भ माननीय डा० एस० एस० कवर संयुक्त संचालक स्वास्थ्य सेवाएं रायपुर समाग के मुख्य आतिथ्य तथा प्रसिद्ध समाज सेवी श्री सत्यनारायण लाहोटी की अध्यक्षता में हुआ।

—सु० च० शर्मा
मैनेजिंग ट्रस्टी

शुद्धि संस्कार

जनवरी ७। दो ईसाई परिवार के सात सदस्य श्री के सबास्टियन शकुन्तला तथा श्री वि० जयप्रकाश रोसिकोवा उनके बच्चे सुनीता सुबाला, एवं विजयकुमार ने वैदिक धर्म स्वीकार किया। यह शुद्धि कार्यक्रम डा० वन्दनम सत्यम् के द्वारा व्यास वैदिक सेवा समाज में श्री के० सुब्बाराव जी के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। श्रीमती रोसिकोवा का नाम राधिका तथा सबास्टियन का नाम सुधाकर में बदल दिया गया। श्री टि० सुब्रह्मण्यम्, समाज के प्रधान श्री यम० सुब्रोधचन्द्र मन्त्री श्री एम० नारायणस्वामी वानप्रस्थी, श्री पि० सुब्बय्या, श्री के० पि० नरसिंहराव श्री वशिष्ट सत्यम्, डा० वन्दनम् सत्यम आदि ने आशीर्वाद दिये।

—महि० सूर्यनारायण, प्रधान

लेखक : डा० ... गंज, बरेली

काटते जो गला कि जीव रहे प्रभु का अभिनय वहां करते रहे।
लूटते हैं जो मुखौटा को लगा बन रहे याचिक वही छलते रहे।

जो सुरक्षा के शिविर से दीखते वे सजीले स्वप्न हैं ढहते रहे।
सभ्यता में खेल सा जो है बना कर्म से वे आदर्श बनते रहे।

कथनी घट है, भरी हाला वहां हाल को बेहाल कर हंसते रहे।
दिग्विजयी हैं कब क्या विश्वास हो दीपसे पर है तिमिर भरते रहे॥

व्याम हुआ और तारे भी छिपे बस गये सिहरन, कब बढ़के रहे
बाहुबली बन सुनकर उनकी नहीं हम गरल का पानकर चलते रहे॥

'ईश' जिनकी मिल नहीं पाये हम, जीवन और नाम को जपते रहे।
वन्दिनी प्रतिपल मनुजता दीखती दानवी क्यों मुक्त हैं करते रहे॥

चित्र स्वर्णिम हैं मिटाते जा रहे कालिमा से पृष्ठ सब भरते रहे
देखलो "ध्वेता हुआ वह पथ व युग, लूटकर प्रहरी वहां हंसते रहे॥

आर्य समाज लल्लापुरा, वाराणसी का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज के वार्षिकोत्सव दिनांक २५ से २८ दिसम्बर ८९ के अवसर पर प्रसिद्ध विद्वानों और भजनोपदेशकों के प्रवचन और भजनोपदेश से स्थानीय जनता ने भरपूर लाभ उठाया। नित्य प्रातः हवन के कार्यक्रम के साथ पाणिनी कन्या महाविद्यालय की छात्राओं का सस्वर वेदपाठ भी हुआ।

इस समारोह में आचार्य रामकृष्ण आर्य, कलकत्ता, श्री राम जवाहर शास्त्री मिर्जापुर, डा० वसन्त कुमार शास्त्री, अमेठी, डा० प्रज्ञादेवी, आचार्या पाणिनी कन्या महाविद्यालय, वाराणसी के प्रवचन एवं इलाहाबाद प० रामप्रसाद पाण्डेय वाराणसी श्री विशेश्वर आर्य किशोर सत्यप्रकाश आर्य मिर्जापुर तथा आर्य समाज लल्लापुरा के नवयुवक कलाकार श्री रविप्रकाश विजय कुमार एवं ओ३म् प्रकाश के मधुर प्रभावोत्पादक भजनोपदेश हुए।

—बुद्धदेव आर्य, व्यवस्थापक
आर्य समाज लल्लापुरा वाराणसी

वेद प्रचार

"पौराणिकों का गढ़ श्रीराम की राजधानी अयोध्या के पास कप्तानगंज (बस्ती) में नैष्ठिक ब्रह्मचारी सुरेशचन्द्र जोशी आर्य द्वारा वेद सप्ताह कार्यक्रम २५ जनवरी से २ फरवरी तक हुआ है। पौराणिकों से अति सघर्ष करने के बावजूद वेद एवं ऋषि दयानन्द के विचारों को समाज में बांटा गया। कार्यक्रम अति उत्तम रहा।

—ब्रह्मचारी नरेन्द्र आर्य
(उपसंचालक आर्य वीर दल पूर्वी उ० प्र०)

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९० वर्ष २५ अंक ६] | दयानन्दाब्द १६५ | दूरभाष : ३२७४७७१ | वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे
फाल्गुन कृ० ८ सं० २०४६ १८ फरवरी १९९०

वेदामृत

परिवार में संगठन से श्रीवृद्धि

इहैव हवमा यात म इह संस्रावणा उतेमं वर्धयता गिरः ।
इहैतु सर्वो यः पशुः अस्मिन् तिष्ठतु या रयिः ।।
अथर्व १-१५-२ ।।

हिन्दी अर्थ—हे देवो ! मेरे आह्वान पर यहां ही आइए। संगठन की वाणियां यहां इस (परिवार) को बढ़ावें। जो कुछ भी पशु-समृद्धि है, वह सारी यहां आवें। जो भी सम्पत्ति है, वह सब इस (परिवार) में रहे।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

मानवता को बचाने के लिए
महर्षि दयानन्द के आदर्शों पर आचरण जरूरी
आर्यसमाज हरफरी के विशाल जनसमूह के समक्ष स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का उद्‌बोधन

हरफरी (बदायूं) ७ फरवरी। आर्यसमाज हरफरी के वार्षिक उत्सव पर स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती ने कहा कि देश और हिन्दू जाति के सामने भारी खतरे उपस्थित हैं। यदि आप आर्य समाज, देश और हिन्दू जाति की रक्षा करना चाहते हो तो प्रतिज्ञा करो कि हम सब आबाल, वृद्ध सत्यार्थ प्रकाश आदि महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों का पारायण करें।

स्वामी जी दिल्ली से प्रात ७ ३० बजे कार से चलकर १० बजे डिबाई पहुंचे। सडक पर आर्य वीर दल के युवकों ने बैंड बाजे के साथ सभा प्रधान जी का भव्य स्वागत किया। आर्य वीरों के साथ स्वामी जी डिबाई आर्य समाज के पूर्व प्रधान जी के स्थान पर गए जहां एकत्र आर्य पुरुषों से स्वामी जी ने आपसी मतभेदों को भुलाकर एकजुट होकर आर्यसमाज की सेवा करने की अपील की। मार्ग में मथुरिया किसान इण्टर कालेज तथा दयानन्द विद्यालय के विद्यार्थियो को उपदेश करके स्वामी जी २ बजे नरौरा होकर हरफरी पहुंचे। यह गांव मुख्य सडक से १॥ किलोमीटर दूर खेतो के बीच है। कच्ची सडक पार करके हरफरी आर्यसमाज के पंडाल मे आस पास के ग्रामो से हजारो की संख्या में आबाल वृद्ध जन समूह मे अद्वितीय उत्साह देखकर स्वामी जी को बडी प्रसन्नता हुई।

सभा मंच पर सुप्रसिद्ध विद्वान आचार्य विशुद्धानन्द जी शास्त्री भी उपस्थित थे उन्होने जनता की ओर से स्वामी जी का अभिनन्दन किया।

राम जन्मभूमि मन्दिर का निर्माण ४ महीने के लिए स्थगित
प्रधानमन्त्री को अपील मंजूर : वायदा निभाने के लिए मौका

नई दिल्ली, ९ फरवरी। अयोध्या मे राम जन्म भूमि मन्दिर का निर्माण कार्य, जो पूर्व घोषणा के अनुसार १४ फरवरी से शुरू होने वाला था चार महीने के लिए स्थगित कर दिया गया है।

ऐसा प्रधानमन्त्री श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह की अपील पर किया गया है। श्री सिंह ने चार महीनों में श्री राम जन्म भूमि और बाबरी मस्जिद विवाद को हल करने का वायदा किया है।

निर्माण कार्य स्थगित किए जाने की घोषणा राम जन्म भूमि मुक्ति यज्ञ समिति के अध्यक्ष और सांसद महन्त अवैद्यनाथ ने आज तीसरे पहर यहां एक पत्रकार सम्मेलन मे की।

महन्त अवैद्यनाथ ने बताया कि प्रधानमन्त्री की अपील पर यज्ञ समिति की सर्वाधिकार प्राप्त ११ सदस्यीय समिति की बैठक में गम्भीरतापूर्वक विचार किया गया। समिति ने प्रधानमन्त्री के वचनों पर विश्वास करते हुए उनको समय देना उचित माना, इसीलिए सर्वसम्मति से यह निश्चय किया गया कि १४ फरवरी को अयोध्या में आरम्भ किया जाने वाला मन्दिर निर्माण कार्य स्थगित किया जाए।

समिति ने यह भी निश्चय किया कि तेरह फरवरी को अयोध्या मे संघर्ष समिति की बैठक बुलाई जाए और उसके समक्ष समस्त स्थिति का विवरण प्रस्तुत कर आगामी कार्य योजनाओ का निर्धारण किया जाए।

एक पत्रकार के यह कहने पर कि आपने कहा था कि मन्दिर का शिलान्यास शुभ लगन मुहूर्त देखकर किया गया है जब कि कुछ लोग इस पर प्रश्न चिह्न लगा रहे थे, क्या आज के निर्णय से लगन मुहूर्त अशुभ साबित नही हो गया, महन्त ने कहा शुभ लगन मुहूर्त दोबारा निकलवाया जाएगा।'

यह पूछने पर कि क्या अब आप नर्म रवैया नही अपनाने लगे उन्होने कहा—"हमारा राजनीति से कोई वास्ता नही।'

समिति की बैठक साढ़े पांच घण्टे तक चली। पता चला है कि पहले दौर की बैठक मे श्री अशोक सिंघल श्रीमती सिंधिया श्री लोढा, श्री डालमिया और श्री पोद्दारीवाल ने निर्माण कार्य स्थगित किए जाने का विरोध किया। उनका तर्क था कि हिन्दू समाज मे

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

पंजाब में क्या हो रहा है?

पंजाब के कम्युनिस्ट नेता श्री सत्यपाल डांग के लेख के कुछ अंश

पंजाब की स्थिति को सुधारने के सम्बन्ध मे अलग अलग व्यक्तियों के अलग अलग विचार सुनने में आते रहते हैं। पंजाब के कम्युनिस्ट नेता श्री सत्यपाल डांग के इस सम्बन्ध मे दिए गए वक्तव्य के कुछ अंश ९-२-९० के प्रताप मे प्रकाशित हुए है। हम अपने पाठकों की जानकारी के लिए उन्हें प्रस्तुत कर रहे हैं।

श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह की नई नीति के सम्बन्ध मे खालिस्तानी तथा आतंकवादी क्या सोचते हैं? और इस पर क्या असर हुआ है? बहुरियो नेताओ और राजनैतिक कार्यकर्ताओं के कत्ल का सिलसिला अभी तक जारी है। बम चल रहे हैं और अनेको लाशें उठाई जा रही हैं और पैसा ऐंठने की गरज से लोगो का अपहरण हो रहा है। जनवरी ९० के पहले सप्ताह मे अमृतसर जिला के चावल के केन्द्र राया में एक आतंकवादी संस्था के आदेश से एक बैठक बुलाई गई। इस मीटिंग मे यह निश्चय होना था कि किस ताजर ने कितना आतंकवादियो को देना है। इन आतंकवादियो का एक प्रतिनिधि इस बैठक मे शामिल हुआ। इस मीटिंग मे एक ताजर श्री रामरतन ने जो कांग्रेसी थे कहा कि एक न एक दिन तो हमे इन मांगो पर इन्कार करना होगा। तो क्यो न आज ही करें। इसका परिणाम यह हुआ कि चन्द दिनो बाद उन्हें गोली का निशाना बना दिया गया। श्री रामरतन का अन्तिम संस्कार भी न हुआ कि उसके बेटे को फोन पर कहा गया कि अगर उसने पूरी रकम न दी तो इसका अन्त भी ऐसा ही होगा। उसके सम्बन्धियो ने उसके चौथे की सूचना दी। इसमे कहीं इस बात का इशारा नहीं था कि उसे आतंकवादियो की गोली का निशाना बनना पड़ा था। यह जाहिर किया गया कि यह एक स्वाभाविक मृत्यु थी। अब कई स्कूलो से बड़ी बड़ी रकम मांगी जा रही है। आतंकवादी गांवो मे खुले आम अपनी बन्दूकें दिखाते हुए घूमते फिर रहे हैं। इनके आदेश पर कई कई दिन तक शहरो और देहातो मे बन्द हो रहे हैं। कई गुरुद्वारो मे आतंकवादियों का अधिकार है। भिण्डरवाले के दिनो मे सिर्फ दरबार साहब मे ही लोक अदालत लगती थी। अब तो कई स्थानो पर यह लगना शुरू हो गयी है। जहां जमींदारो से भारी रकम वसूल की जाती है। गन्ना न काटने का आदेश गुरुद्वारो के लाउडस्पीकरो पर जारी किये जाते हैं। पिछले दो तीन दिनो मे पुलिस और सिक्योरिटी के अफसर मारे गये हैं। इनकी तादाद पिछले वर्ष की तुलना मे कहीं ज्यादा है।

पहले हिन्दुओ ने गांवो से निकलना आरम्भ किया था इसके पश्चात सिख निकले इसके बाद स्टेट बिजली बोर्ड के कर्मचारी निकले और अब पुलिस वाले भी गांव छोड़ रहे हैं। एक वक्त आतंकवादियो ने हुक्म दिया कि स्कूल के बच्चो के लिए जो यूनीफार्म वह निश्चित करेंगे वही पहनी जाए और अध्यापको को वार्निंग दी गई है कि अगर उन्होने हिन्दी अंग्रेजी पढ़ाना बन्द न किया तो उनकी खैर नहीं। आतंकवादी पंजाब में थीओक्रासि शीघ्र ऐसा शासन चाहते है जो इनकी धुने और खास खास स्थानो पर अपनी मर्जी के अधिकारी चाहते हैं। अगर इनमे से एक भी ऐसी मांग मान ली जाये तो यह आतंकवादी और भी शेर हो जायेंगे।

यह अवस्था है पंजाब की। जनता दल के कई लोग यह कह रहे हैं कि पंजाब मे जमहूरी हुकूमत कायम की जाये। वह यह नहीं देखते कि आतंकवादी और खालिस्तानी कोई हुकूमत नहीं चाहते हैं और आम जमहूरी और कानूनी साधनो से ऐसे लोगो का मुकाबला नहीं किया जा सकता।

राम जन्म भूमि

(पृष्ठ १ का शेष)

पैदा हुआ उत्साह कोई गलत निर्णय लेने से ठंडा पड़ जायेगा। १४ फरवरी के कार्यक्रम मे भाग लेने के लिए कार्य कर्ताओं के जत्थे भी अयोध्या पहुंचने शुरू हो गए हैं। इस स्थिति में हम लोगो को क्या जवाब देंगे?" शंकराचार्य स्वरूपानन्द जी को उनका प्रचार करने का मौका नहीं मिलेगा?

कहा जाता है कि एक चरण में बैठक का वातावरण इतना कड़वा था कि ऐसी आशंका होने लगी कि कहीं समिति दो खेमों में न बंट जाए। इस पर श्री दीक्षित, श्री लोढा राजमाता और वामदेव जी महाराज ने हस्तक्षेप किया। रामचन्द्र परमहंस और चिन्मयानन्द जी महाराज ने भी अपने विचार प्रकट किये। तब यह तय हुआ कि यदि चार महीने की अवधि मे सरकार ने कुछ नहीं किया तो देशभर में सत्याग्रह आन्दोलन शुरू कर दिया जायेगा। आन्दोलन की रूपरेखा तैयार करने के लिए १३-१४ अप्रैल को सर्वाधिकार समिति की बैठक होगी। इस दौरान बजरंग दल के जत्थो की भर्ती जारी रखी जाए। बैठक मे यह भी तय हुआ कि समिति किसी ऐसी सर्वदलीय बैठक में शामिल नहीं होगी जिसे सरकार विवाद को निपटाने के लिए बुलायेगी। वह सिर्फ सरकारी समिति के समक्ष अपना पक्ष प्रस्तुत करेगी।

सबसे अधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने विश्व हिन्दू परिषद् के किसी भी नेता को इस सम्बन्ध मे कोई पत्र लिखकर यह नहीं सूचित किया कि आप लोग निर्माण कार्य को रोक दें। प्रधानमन्त्री इस मामले को सुलझाने का प्रयास कर रहे हैं।

आज के संवाददाता सम्मेलन में पहले की ही तरह भारी संख्या मे संवाददाता तथा फोटोग्राफर मौजूद थे। मन्दिर निर्माण कार्य को स्थगित किये जाने की घोषणा सुनकर एक पत्रकार ने कहा इन लोगो को चुनाव मे कांग्रेस (ई) को हराना था वो मकसद पूरा हो गया अब मन्दिर बने या बिगड़े इन्हे कुछ नहीं लेना देना। संवाददाता सम्मेलन मे ही जब एक पत्रकार ने अशोक सिंघल से पूछा कि क्या विधान सभा चुनावो को देखते हुए यह फैसला लिया गया है तो वे चुप्पी साध गये।

एक आदर्श जिलाधीश

श्री विजय कुमार आई ए एस उपायुक्त पानीपत एक महान व्यक्तित्व है। पूरे जिले मे उनकी कार्यकुशलता की चर्चा हो रही है। लोग उन्हें सुनकर ये कहते हैं कि मानो सत्संग में बैठे हैं। १८ जनवरी को गुरुकुल सिंघावला मे पधारे। श्री परमानन्द ब्लाक का शिलान्यास करने के पश्चात गुरुकुल को एक रंगीन टी.वी. भेंट दिया और एक कमरा लगभग पचास हजार रुपए की लागत से बनाया जायेगा। कुछ शौचालयो के निर्माण कराने की भी घोषणा की गई। उपस्थित शेष व्यक्तियो से शराब छोड़ने की प्रेरणा भी दी।

—ओमस्वरूपार्य, आचार्य आर्य गुरुकुल सिंघावला

गुरुकुल महाविद्यालय झज्जर का हीरक जयन्ती महोत्सव

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर का हीरक जयन्ती महोत्सव दिनांक १२ से २५ फरवरी १९९० तक मनाया जा रहा है। इस शुभ अवसर पर आर्य-जगत के सुप्रसिद्ध सन्यासी विद्वान आशीर्वाद एवं राजनेता पधार रहे हैं, जिनमें सर्वश्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज अध्यक्ष वैदिक यतिमण्डल, स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, स्वामी विद्यानन्द जी विदेह, स्वामी दीक्षानन्द जी, डा० सत्यपाल जी आदि पधार रहे हैं।

श्रीनगर से ४० हजार हिन्दू व सिखों का पलायन

श्रीनगर को भारत से काटने का षडयन्त्र

श्रीनगर घाटी पर कब्जा करने के पाक षड्यन्त्र के चार पड़ाव

जालन्धर, ८ फरवरी। उग्रवाद से पीड़ित श्रीनगर के तीन कश्मीरी शरणार्थी पलायन करके यहां आये। उनके मुंह से रोंगटे खड़े करने वाली दर्दनाक दास्तान सुनकर कलेजा फटने लगता है। विश्वास नहीं होता है कि श्रीनगर घाटी भारतका हिस्सा है या इसे काटकर पाकिस्तान के हवाले कर दिया गया है। श्रीनगर घाटी मे अल्पसंख्यक डेढ लाख हिन्दू सिख आबाद है जिनमें से ४०-५० हजार कश्मीरी अपने घर छोड़कर अन्य शहरो में या जम्मू में आ बसे हैं। इन पलायनकर्त्ताओ ने अपना नाम पता गुप्त रखने का वादा लेकर कश्मीर के बिगड़ते हालातो का ब्योरा दिया।

श्रीनगर घाटी में हिन्दू सिखों की हालत दयनीय है और उन पर बहुत जुल्म हो रहे हैं। जिस प्रमाण अल्पसंख्यक समुदाय के बसी बाजारो मे जाकर देखकर प्रमाण मिल सकता है। फिरकापरस्त मुसलमान छोटी-छोटी बात पर जुलूस निकालते हैं और उन निम्नलिखित क्षेत्रो के नाम हैं—

(१) हब्बा कदल, (२) टेकी पुरा, (३) करपनगर, (४) चोटा बाजार, (५) खुला बल, (६) माईं सुमा, (७) गनपत बाग, (८) बरबल शाह आदि। शरणार्थियो ने बताया कि जितनी खराब हालत इस समय श्रीनगर में है कभी नहीं हुई। फिरकापरस्त कश्मीरी मुसलमान हिन्दू सिखो को कहते हैं कि हमारे साथ जुलूस में शामिल हो और नमाज पढो, इन्कार करने पर धमकियां दी जाती हैं कि तुम सभी को खत्म कर दिया जायेगा। परिणामस्वरूप ४०-५० हजार हिन्दू सिख यहां पलायन कर गये हैं। अनन्तनाग से ४०० परिवार बारामूला मे से २०० परिवार निकल चुके है। दिसम्बर माह में उग्रवादियो ने अल्पसंख्यक समुदाय की २ लड़कियों के साथ सामूहिक बलात्कार किया परन्तु किसीभी समाचार-पत्र मे यह समाचार डर के कारण प्रकाशित नहीं हुआ। घाटी में लूटमार और आगजनी की घटनाएं पंजाब से कहीं अधिक है। लोग सरेआम पाकिस्तान सरकार के पक्ष में नारे लगाते हैं। एक प्रश्न के उत्तर मे कि जगमोहन के गवर्नर बनने के बाद स्थिति में कितना सुधार हुआ है, उन्होने कहा कि जगमोहन चाहे हालात से पूरी तरह वाकिफ है परन्तु वह भी बेबस है। जगमोहन को हालात पर काबू पाने के लिये अपनी शख्सियत और राजनैतिक पहलू को अलग रखना पड़ेगा। केवल प्रबन्धक बनकर वह सफल हो सकते है। उन्होने बताया कि गवर्नर जगमोहन ने चार्ज लेते ही श्रीनगर के कर्फ्यू व मुस्लिम क्षेत्रो का सहयोग और हमदर्दी प्राप्त करने के लिए दूध और सब्जियो के भरे ट्रक मुसलमानों में बांटने के लिए भेजे। पर कश्मीरी मुसलमान जनताकी धर्म के साथ इतना गहरा स्नेह है कि उन्होने दूध और सब्जियां लेने से इन्कार कर दिया। दूसरी तरफ गवर्नर ने यही ट्रक हिन्दू सिख क्षेत्रों मे बांटने के लिए भेजे परन्तु जमायते इस्लामी ने हिन्दुओ को धमकी दी कि अगर यह चीजें स्वीकार की तो बदला लिया जाएगा। अल्पसंख्यक समुदाय ने भयके कारण यह चीजें अस्वीकार कर दी।

एक कश्मीरी शरणार्थी ने बताया कि जमायत इस्लामी आदि फिरकापरस्त संस्थाओं ने गरीब कश्मीरी मुसलमानो के दिल जीतने के लिए, अनाज बांटने का ढंग अपनाया है, जिससे वह काश्मीर सरकार और कश्मीरी जनता में फर्क डालने में कामयाब हो गये हैं। अनाज इकट्ठी करने और बांटने का केन्द्र राईंदे खूब जानी दूटी के एक बड़े व्यापारी दुकान है। जिसकी कई शाखायें है। प्रश्न के उत्तर मे उन्होने बताया कि कश्मीर मे फिरकापरस्त मुसलमान और उग्रवादी संस्थाओ में एक दरजन से ज्यादा है। जिनमें जमायते इस्लामी, जम्मू-काश्मीर लिबरेशन फ्रन्ट, अल्ला टाईगर, पीपल्स लीग, इस्लामिक राईफल्ज, आप्रेशन बालाकोट, हुजब इस्लामी आदि संस्थायें सरगर्म हैं। जिनके पास आधुनिक हथियारों की कोई कमी नहीं। कश्मीर और पंजाब के उग्रवादियो में यह फर्क है कि सिख उग्रवादियों को हथियार चलाने और गुरिल्ला जंग की सिखलाई पाकिस्तान में दी जाती है जबकि काश्मीर में यह सिखलाई घाटी के पहाड़ी क्षेत्रों में दी जाती है। कुछ साल पहले काश्मीरियो को कमजोर और बुजदिल कहा जाता था। पर राजीव और अब्दुल्ला सरकार ने उनको हथियारो की सिखलाई देने की तरफ से आंखें बन्द रखी और पाक सरकार ने चुपचाप हजारो कश्मीरी मुसलमानो को मुजफ्फराबाद में गुरिल्ला जंग और हथियार चलाने मे माहिर बना दिया। अब यही कश्मीरी श्रीनगर की वादी के पहाड़ी मे दूसरे हजारो नौजवानो को हथियारो की सप्लाई और ट्रेनिंग दे रहे है। उनको पाकिस्तान से सिर्फ हथियार और निर्देश आते हैं।

अगर भारत सरकार और जगमोहन ने समय सिर कोई सख्त कदम न उठाये तो श्रीनगर घाटी बिना पाकिस्तानी हमले के खानाजंगी और गुरिल्ला लड़ाई का केन्द्र बन जायेगी। सच्चाई यह है कि कश्मीरी उग्रवादी संस्थायें कश्मीरी लोगो के घर-घर जाकर इस्लामी जेहाद का वास्ता देकर कहते हैं कि अपना एक बेटा इस्लामी जेहाद के लिए हमे दो। जिससे कश्मीरी उग्रवादियो की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। हिंदवाडा, कुपवाडा और पुणकर आदि गांवो मे उग्रवादियों के खुले आम ट्रेनिंग कैम्प लगते हैं। कश्मीरी पुलिस की पाकिस्तानी हिमायती मुसलमान पुलिस अफसरो का जुबानी हुक्म है कि वह ऐसे ट्रेनिंग कैम्पो को चलने दे। गुप्तचर विभाग केन्द्र सरकार और कश्मीर सरकार दोनों को यह रिपोर्ट भेजते रहे। परन्तु राजीव गांधी और फारुख अब्दुल्ला आंखें बन्द करके बैठे रहे। परिणाम आज सारा देश भोग रहा है।

कश्मीर घाटी में वर्तमान गड़बड़ सम्बन्धी कश्मीरी सूत्रो ने बताया कि पढ़े लिखे कश्मीरी जानते हैं कि कश्मीर तेजी से खानाजंगी की तरफ बढ रहा है। पाकिस्तान और उसके कश्मीरी एजेन्टो ने इसके चार पड़ाव निश्चित किये हुए हैं। जिनपर आजकल अमल हो रहा है।

(१) धार्मिक इस्लामी कट्टरपन (२) अल्पसंख्यक का कश्मीर से पलायन (३) जरब ए मोमिन (४) आप्रेशन बालाकोट कश्मीरी उग्रवादी पहले तीन पड़ाव पार कर चुके हैं। आप्रेशन बालाकोट का चौथा, पड़ाव पूरा करना है जिसका उद्देश्य श्रीनगर घाटी मे खानाजंगी और अफगान फौजियो से हमला करवाना है ताकि घाटी के किसी हिस्से पर कब्जा करके आजाद कश्मीर सरकार की स्थापना की जा सके।

केन्द्र की भूतपूर्व कांग्रेस सरकार के ४० वर्षों के राज, में जम्मू-कश्मीर मे अनगिनत रकम खर्च करके भी कश्मीरी मुसलमानो को मुख्य राष्ट्रीय धारा में नहीं ला सकी। जिसका लाभ पाकिस्तानी हितैषी मौलवियो ने लाभ उठाया और रातदिन मेहनत करके कश्मीरी मुसलमानोको कट्टर बना दिया। परिणामस्वरूप वह पकिस्तान को अपना धार्मिक और रूहानी केन्द्र मानते हैं। जिसका पाकिस्तान भरपूर फायदा उठा रहा है। कश्मीर घाटी में ४५००० अल्पसंख्यक हिन्दू सिखों के पलायन से पड़ाव का दूसरा हिस्सा शुरु हो गया। इसी षड्यन्त्र का तीसरा पड़ाव जरब-ए मोमिन है। जिसके अधीन पाकिस्तान का सबसे बड़े फौजी मश्क करने के लिए जम्मू-काश्मीर और पंजाब की सीमा क्यो चुनी गई। एक कश्मीरी शरणार्थी ने इससे पर्दे हटाते हुए कहा कि पाकिस्तान जरब ए-मोमिन जैसी बड़ी मश्क राजस्थान, रणकच्छ और गुजरात आदि सीमा पर कर सकते थे। परन्तु पाकिस्तान सेना के कमांडर इन चीफ जनरल असलम बेग ने जम्मू-कश्मीर और पंजाब से लगती सीमा को इसलिए चुना ताकि जम्मू-कश्मीर में सरगर्म उग्रवादियो का साहस बढ़ाया जा सके और इसकी आड़ में कश्मीरी मुजाहिदो को हथियारों की स्मगलिंग की जा सके। जिसमे पाक सफल रहा। इन विश्वसनीय सूत्रो ने बताया कि अब कश्मीरी उग्रवादियो के तीन उद्देश्य हैं—

(१) अल्पसंख्यको का कत्लेआम (२) सरकार के विरुद्ध सिवल नाफुरमानी की लहर (३) पुलो बिजलीघरो सहकारी इमारतो मे धमाके करना ताकि कश्मीर मे गिरते हालतो को यू एन. ओ मे पेश करके पाकिस्तान का पक्ष मजबूत किया जा सके। (वीर अर्जुन ९ २-९०)

अनुभव सिद्ध व्यक्तित्व

१—श्री पं० रामचन्द्रराव वन्देमातरम् (हैदराबाद)



कंटकाकीर्ण पथ के पथिक जिनकी चर्चा वाणी से तो सुनी थी पर श्रव्य के साथ दृश्य रूप न बन सकी थी। जिज्ञासा हुई कि यह वन्देमातरम् नामक तत्व क्या है। हैदराबाद निजामशाही के सीकचों तक सीमित काल कोठरियों मे भिची बन्द आवाज, केवल राज्य की सीमाओं मे प्रतिबन्धित व्यक्तित्व अन्धेरे में छिपा क्यों है ? मौन साधक, साधना में लीन, गम्भीर स्वभाव वाले व्यक्तित्व को जानने समझने और देखने की लालसा ने बरबस विचलित ही रखा। कई बार हैदराबाद जाने पर भी इस व्यक्तित्व को पाने की इच्छा अधूरी ही रही।

सौभाग्यवश यह बादलों और तूफानों में छिपा सूर्य सहसा प्रकाश मे आया। मैंने देखा जग ने देखा व जाना। आर्य समाज के रूप में जिसने नाना यातनायें सही, पर कभी मुखरित नहीं हुआ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के बृहदधिवेशन में आन्ध्र-प्रदेश का प्रतिनिधित्व करके प्रखर रूप मे प्रकट हुआ। साथ ही उनके तेज पूर्ण व्यक्तित्व को पहचानने मे हमारे नेतृवर्य को देर न लगी और इस विशाल सभा के वरिष्ठ उपप्रधान पद पर आसीन कर दिया।

अब समझने मे देर न लगी यह व्यक्तित्व ही 'वन्देमातरम्' है।

कौन वन्देमातरम् जिसने निजाम की कारा का बन्दी बनकर हर ध्वनि मे उच्चारण था किया 'वन्देमातरम्', हर बत की सजा पर मुखरित हो रहे थे पंडित वन्देमातरम्।

सार्वदेशिक सभा की योग्यतम टीम के नेता श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम् j

अंग्रेजी हकूमत से लड़ते-लड़ते निजामशाही के पैर उखाड़ दिये और हैदराबाद आर्य सत्याग्रह को अन्दर से प्राणो का संचार करने वालो में एक यह वीर वर वन्देमातरम् थे।

आर्य सत्याग्रह की सफलता का श्रेय इन जैसे असंख्य वीरों के मस्तक को ऊंचा किये था वही पर स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् सरदार पटेल का पुलिस ऐक्शन ? जिसमें पं० वन्देमातरम् स्व० प० नरेन्द्र भाई बंशीलाल, पं० विनायकराव जैसे योद्धा और अनेक आय जन हमारी फौज का नेतृत्व कर निजामशाही को मिटाने में लगे थे।

अपना राज्य अपनी स्टेट अपना घर स्वतन्त्र हुआ, परतन्त्रता की बेड़िया तोडी, मां के बन्धन काटे, मां का माथा ऊंचा किया।

ऐसे थे विशाल हृदय शक्ति के पुंज पं० वन्देमातरम् जी।

आज उस भूमि पर आर्य सत्याग्रह को अर्धशतक हुआ। लोगों में उत्साह जागा, भावना प्रधान आर्य जनो ने निश्चय किया। आर्य सत्याग्रह की अर्ध शताब्दी मनाई जाय। शोलापुर संचालन का केन्द्र था। वहां के आर्य वीरों के बढ़ते उत्साह से उत्साहित होकर सार्वदेशिक सभा ने प्रस्ताव पास कर राज्य की राजधानी हैदराबाद में अर्धशती को मनाने का निश्चय हो गया। तिथियां भी घोषित हो गईं।

परन्तु म्याऊं का ठौर कौन बनें ?

इतना बड़ा आयोजन फिर इसका अगुआ कौन बने ? सभा-प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने दृष्टि डाली कि नेतृत्व किसे दें। विचारपूर्वक सर्वसम्मति से कार्य सफलता के लिये नेतृत्व दिया जाय। पं० रामचन्द्रराव वन्देमातरम् ?

घोषा महल में कार्यालय खुल गया, प्रचार प्रारम्भ हो गया। अन्त में वह दिन भी आ गया, जिस शुभ घड़ी की प्रतीक्षा थी।

केशव आर्य मेमोरियल विद्यालय का प्रांगन जगमगा उठा, विशाल पडाल, विशाल यज्ञशाला और उसमें सम्मिलित होने आये लोगों का विशाल हुजूम समुद्र की तरह लहरें ले रहा था।

पं० वन्देमातरम् जी कल्पना से परे निराशा से आशा में उड़ने लगे प्रान्त के एक-एक आर्य वीर ने पंडित जी का साथ दिया।

उत्साह और उमंग भरा क्षण

शोभायात्रा अपने अभूतपूर्व पर भगवान की वृष्टि वर्षा परीक्षा-की कसौटी पर ? आबाल, वृद्ध, नर-नारी पं० वन्देमातरम् जी के उत्साह के साथ अपनी कसौटी पर खरे उतर रहे थे।

महान् आयोजन और उसके महान् आयोजकों की साधना में सिद्धि ही निहित थी।

लोगों ने देखा व्यक्तित्व वन्देमातरम् का ?

पूज्य संन्यासी शिरोमणि स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने अन्त में कहा—इस आयोजन की पूर्णता पर मेरी शुभ कामनायें स्वीकार करें। पं० वन्देमातरम् जी।

ऊंची-पगड़ी ऊंचा-भाल वाले!

२—पं० राजगुरु जी शर्मा, याज्ञिक



शीर्षक देखकर आप आश्चर्य चकित होंगे यह कौन दाढ़ी-मूछों वाला ऊंची पगड़ी, चौड़े भाल वाला याज्ञिक कौन है ?

देखा आपने पंडित राजगुरु जी शर्मा, याज्ञिक।

अपने कार्य की शैली अलग पूजा पद्धति की रचना शैली अलग, पगड़ी और सफेद मूछों के बीच चमकती बड़ी-बड़ी आखे। कांधे पर पड़ा रेशमी दुपट्टा, कैसा भव्य शोभायमान व्यक्तित्व।

बहुत सुनते थे इस व्यक्ति की चर्चा। अब की बार कुछ निकट से देखा, समझा, परखा।

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह की अर्धशताब्दी में विशाल महायज्ञ और उसके ब्रह्मा ऊपर अग्नि चिह्नों वाले पं० राजगुरु जी शर्मा। मुझे सभा-प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आदेश दिया कि आप सभा के मन्त्री हैं पं० वन्देमातरम् जी वहां इतने बड़े कार्य पर अकेले हैं वहां जाओ। मैं अविलम्ब हैदराबाद पहुंच गया। उसी दिन जिस व्यक्ति की चर्चा कर रहा हूं वह याज्ञिक पं० राजगुरु जी भी पहुंच गये। बस फिर क्या था योजना में—

मिल बैठे दीवाने दो।

निरन्तर २४ घण्टे तक पण्डाल यज्ञशाला दुकानें और केशव मेमोरियल भवन की व्यवस्था में ऐसे जुटे कि २४ घण्टे में भोजन भी नसीब नहीं हुआ। पड़ौस के एक अध्यापक जी अपने यहां से काफी बनाकर वे देते और चैतन्य होकर कार्यरत हो जाते।

यज्ञ की व्यवस्था में ब्रह्मा जी बल्ली पर चढ़कर बड़े बांध रहे हैं। मैं एक हाथ टूटे के साथ सहायक रूप में : लबकर सहायक रूप

(शेष पृष्ठ १० पर)

वेद चिन्तन का विषय है

श्री ओमप्रकाश विद्यावाचस्पति रावतभाटा, कोटा

वेदों के बारे में लोगों की यह आम धारणा है कि वेदो के मन्त्र समझ मे नही आते, वे इतने क्लिष्ट हैं कि जनसामान्य की समझ के परे है, और कुछ बात भी ऐसी हैं कि हम वेदमन्त्र पढते चले जाते हैं किन्तु उसका भाव समझ मे नहीं आता। इसीलिए हम उसे पढने मे भी रुचि कम लेते हैं। कुछ तो ऐसा कहते हैं कि वेद तो नीरस लगते हैं, उनके विषय ही शुष्क हैं। इस प्रकार की तमाम भ्रान्तियां जनमानस मे फैली हुई हैं।

वस्तुतः वेद चिन्तन का विषय है। यदि हम उसे सामान्य श्लोक की भांति समझने का प्रयत्न करेंगे, तो यह कदापि समझ मे नहीं आ सकता। इसका कारण यह है कि वे मात्र शब्दार्थ तक सीमित नही हैं। जो वेदमन्त्र शब्दार्थ तक सीमित लगते हैं उनका भी विशिष्ट भाव से गहरा सम्बन्ध होता है। एक-एक मन्त्र हफ्तो तक विचार करने पर, उसके प्रत्येक शब्द का विविध्यासन करने पर उसके तह तक पहुँचा जा सकता है। वेदमन्त्र हमे मार्ग दिखाता है, दिशा बताता है, लक्ष्य निर्धारित करता है, गन्तव्य स्थान की ओर इंगित करता है। जब हम उसके इशारे को समझ लेंगे, तब हमें उसका भाव समझने मे देरी नही लगेगी। उदाहरण के लिए एक आदमी अनजान है। उसे किसी गन्तव्य स्थान पर जाना है, मार्ग मालूम नही है तो उसका अर्थ होगा कि वह मार्ग को किसी दूसरे से पूछे। मार्ग बताने वाला उसे इशारा करके बताता है कि आप अमुक रास्ते से अमुक स्थान पर जा सकते हैं। यदि वह व्यक्ति उसके बताये इशारे पर जाता है तो निश्चित है कि वह उस स्थान पर पहुँच जाएगा। यह जरूर हो सकता है कि मार्ग में वह फिर भटक जाए, तो वह फिर किसी दूसरे से वही मार्ग पूछेगा और अन्त में अपना लक्ष्य प्राप्त कर लेगा। यहां पर ध्यान देने योग्य बात यह है कि रास्ता बताने वाला व्यक्ति राही को गन्तव्य स्थान तक नही पहुँचाता है, वह सिर्फ इशारा ही करता है। स्थान तो राही को स्वयं चलकर प्राप्त करना पडता है। यही बात वेदो के मन्त्रो के विषय मे भी है। प्रत्येक वेदमन्त्र हमें किसी लक्ष्य की ओर इशारा करता है। हमे उसके इशारे को समझना चाहिए।

इस इशारे को समझने के लिए हमे चिन्तन का सहारा लेना चाहिए और जब तक उसका इशारा समझ मे न आए, तब तक उस पर विचार करना चाहिए। इस प्रकार हमे एक-एक मन्त्र पर कई-कई दिन तक का समय लग सकता है।

अब हम कुछ सामान्य से दिखने वाले एक-दो मन्त्र पर अपना विचार प्रस्तुत करना चाहते हैं। अथर्ववेद का मन्त्र है—

भद्राह् नो मध्यन्दिने भद्राह् सायमस्तु न।
भद्राह् नो अह्नां प्राता रात्रीं भद्राहमस्तु न॥

उक्त मन्त्र का शब्दार्थ यह है कि हमारा प्रात.काल का समय कल्याणकारी हो, दोपहर का समय कल्याणकारी हो, सांय का समय कल्याणकारी हो और हमारी रात्रि भी कल्याणकारी हो। जब हम इसके प्रत्येक पद पर विचार करते हैं, उसका चिन्तन, मनन करते हैं तो उक्त मन्त्र का गन्तव्य स्थान या इशारा दिन-रात के प्रत्येक प्रहर के कल्याण पर जाता है। अब चिन्तन का सहारा लेकर इस पर विचार कीजिए। प्रातः का समय हमारा कल्याणकारी कैसे हो सकता है ?

प्रात:काल हमे ऐसा कौनस-सा उपाय करना चाहिए जिससे बिस्तर से उठने से लेकर ड्यूटी जाने तक हमारी आत्मा भद्र को प्राप्त करे। इसके लिए उचित होगा कि प्रातःकाल उठकर ईश-वन्दना करें, प्रभु का स्मरण करें तथा मन को पवित्र भावनाओ से जोडें। यह नही कि बिस्तर छोडते ही दूसरों की निन्दा शुरू कर दे या परिवार मे ही परस्पर दांत पीसना प्रारम्भ कर दें। ऐसा करने पर वह समय अभद्र मे बदल जाएगा। बहुधा लोग ऐसा कहते भी हैं कि अरे जी, तुमने तो हमारा सुबह-सुबह मुहूर्त ही खराब कर दिया। ऐसा भी लोग कहते हैं कि फलां व्यक्ति का सुबह नाम मत लेना, नहीं तो दिन भर भोजन नही मिलेगा आदि आदि। अतएव प्रात.काल को भद्रमय बनाने के लिए शान्त व पवित्र भावनाओ से मन व विचारो को जोड़ना चाहिए। उठते ही निन्दा, ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, बुरी बातें, चुगली, गन्दाली नही शुरू कर देनी चाहिए। (इसका गलत अर्थ यह मत लेना कि सुबह के बाद ये सब चीजें करनी चाहिए, यह मात्र उदाहरण हैं)।

दोपहर का समय कल्याणकारी बनाने के लिए हमे कौन-सा उपाय करना होगा ? प्राय: ऐसे समय पर लोग अपनी ड्यूटी पर होते हैं, काम कर रहे होते हैं। ऐसे समय मे हमें अपने कर्तव्य का पूरा-पूरा पालन करना चाहिए। जो समय हमे जिस काम के लिए निर्धारित किया गया है उसे परिश्रम और ईमानदारी से करना चाहिए। नही तो अपनी ड्यूटी पूरी न करने पर अधिकारी की निगाहो मे गिर सकते हैं, अविश्वास का पात्र बन सकते हैं। इस प्रकार वह समय हमारे लिए अभद्र बनता चला जाएगा। ऐसा देखा जाता है कि ड्यूटी समय मे न जाने कितने झगड़े-फसाद होते हैं। इसलिए इस समय को परिश्रम और ईमानदारी से व्यतीत करना चाहिए, तभी दोपहर भद्रमय हो सकता है।

हमारा सायंकाल कैसे कल्याणकारी हो सकता है ? इसके लिए हमे यह ध्यान रखना चाहिए कि सायंकाल काम से घर आते ही अपनी सारी थकान, सारा आक्रोश, सारी व्यथा परिवार पर नही उगला देना चाहिए, नही तो परिवार मे कुहराम मच जाएगा। जिन लोगो के बच्चे अपने पिता को घर आते ही देखकर दुबक जाते हैं या भयप्रद का वातावरण बन जाता है तो वह समय कल्याणकारी नही बन सकता। जब सायंकाल मन अशांत हो जाएगा तो रातभर नींद नही आएगी, जिससे स्वास्थ्य खराब हो जाएगा। इसलिए हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि सायंकाल अपने घर आने पर ऐसा वातावरण प्रस्तुत करना चाहिए जिससे आवास हेतु सब प्रसन्न रहे। कुछ लोगो के घर सुबह-शाम झगड़े हुआ करते हैं, बिना झगडा के कोई दिन ही खाली नही जाता तो आप ही बताइए वह समय कल्याणकारी कैसे

हो सकता है ? अतएव सायंकाल मंगलमय बनाने के लिए परिवार मे प्रसन्नता की स्थिति पैदा करनी चाहिए।

रही अन्त मे बात रात्रि के कल्याण की। रात्रि कल्याणकारी कैसे हो ? इसके लिए भी यही ध्यान रखना होगा। सोते समय दिमाग मे अशांति पैदा करने वाला विचार नही पनपना चाहिए। नही तो तनाव रहने पर नींद नही आएगी। स्वास्थ्य खराब हो जाएगा। सोते समय मन मे अशुद्ध विचार नही आने चाहिए अन्यथा बुरे स्वप्न मस्तिष्क मे आत्म विकारोंमे आत्मा कलुषित होगा। यदि सोते समय विचार पवित्र नही होगे तो शांति के अभाव में रात कभी भी कल्याणकारी नहीं हो सकती। इसलिए उसे कल्याणकारी बनाने के लिए ईशस्मरण करके प्रसन्न मुद्रा मे सोना चाहिए। ऐसा सोचना चाहिए कि हम परमपिता की अमृत गोदी मे विश्राम करने जा रहे हैं। रात मे झगड़ फसाद से दूर रहकर यदि आप इन बातो का ध्यान रखेंगे तो निश्चित है कि रात कल्याणकारी होगी।

इस प्रकार हम जितना ही इन चार प्रकार के समयो पर विचार करेंगे उतना ही उस मन्त्र के तह तक पहुँचते जाएंगे और एक समय ऐसा आएगा जब हमारे जीवन में वह मन्त्र छाया की भांति सुखद प्रतीत होने लगेगा। हम जितना ही इसकी गहराई में जाएंगे जितना ही चिन्तन करेंगे, उतने ही नए नए भाव मन मे पैदा होगे और वह मन्त्र हमारे मस्तिष्क मे बैठता जाएगा। यह तो मैंने थोडा सा अपना विचार प्रस्तुत किया। इसी प्रकार आप भी गहन चिन्तन करके मन्त्र का विशिष्ट भाव ग्रहण कर सकते हैं। इस पर कबीरदास की यह उक्ति स्पष्टतः चरितार्थ होगी है—

"जिन ढूंढा तिन पाइयां गहरे पानी पैठि"

डुबकी लगाने वाला ही मोती प्राप्त कर सकता है न कि तट पर बैठने वाला।

इसी प्रकार यजुर्वेद का बहुचर्चित मन्त्र है—

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव॥

आइए इस पर थोडी चर्चा करें। इस मन्त्र का अभिप्राय है—हे परमपिता परमात्मा! आप हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन आदि को दूर कीजिए और जो कल्याणकारी गुण हैं उसे प्राप्त कराइए। इस मन्त्र का चिन्तन, मनन करने पर यह पता चलता है कि इस मन्त्र का संकेत किस तरफ है ? इसका गन्तव्य स्थान कौन सा है ? हमे इसके इशारे पर कहां पहुँचना है ? क्या करना है ? वास्तव में इस मन्त्र मे परमपिता का आदेश है कि मानव समस्त कल्याणकारी चीजों को प्राप्त करे। वह कल्याणकारी चीजों को प्राप्त कैसे कर सकता है ? जब उसके अन्दर कोई दुर्गुण नहीं होगा कोई दुर्व्यसन नही होगा। क्योंकि दुर्गुणी और दुर्व्यसनी व्यक्ति कोई भी नेक काम नहीं कर सकता है। मुख्य ध्यातव्य बात है—दुर्गुणों से बचना और कल्याणकारी मार्ग पर चलना दुर्गुणों से हम तभी बच सकते हैं जब हम अपने मन, मस्तिष्क, चरित्र, व्यवहार कर्म आदि समस्त व्यापार पवित्र रखेंगे। ऐसा नही कि ईश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं दुर्गुण से बचने की और कर्म इसके विपरीत हो रहा है। सिर्फ प्रार्थना कर लेने से या वेदमन्त्र को पढ लेने से कल्याण नहीं होगा, जब तक कि हम उसे मस्तिष्क मे उतारकर चरित्र मे ढालेंगे नहीं। उक्त मन्त्र के तह तक पहुँचने के लिए हमें प्रतिदिन अपने विचार, कर्म, व्यवहार, चरित्र का प्रबल निरीक्षण करना होगा, स्वाध्याय करना होगा कि हम कहीं गलत काम तो नहीं कर रहे हैं मन मे बुरे विचार तो नही पनप रहे हैं, हमारे व्यवहार मे ईर्ष्या द्वेष की गन्ध तो नही है, चरित्र दूषित तो नही हो रहा है। यदि हम इन सब चीजों पर प्रतिदिन विचारकर शुभ कर्म करेंगे तो निश्चित है कि हमारा कल्याण होगा, हम भद्रता को प्राप्त करेंगे। मन मे जरा सी बुराई आने पर तुरन्त उक्त मन्त्र बोलकर उस पर विचार करने लगिए कि हम परमपिता परमात्मा से क्या प्रार्थना कर रहे हैं ? तुरन्त उस गन्दे विचार को मन्त्र के सहारे धो डालिए। तब हमारा कल्याण होगा। इसी प्रकार पल-पल वेद यह मन्त्र हमारे साथ जुडा हुआ सा लगेगा। यह तभी सम्भव हो सकता है जब हम उक्त मन्त्र पर खूब चिन्तन करेंगे, खूब मनन करेंगे, उसकी गहराई में जाने की कोशिश करेंगे। आप थोडे दिन मे देखेंगे कि वह मन्त्र हमारे लिए कितना ग्राह्य, सुखद, सरस तथा प्रिय लगने लगेगा।

इस प्रकार दो मन्त्र आपके सामने रखे। यह इतने ही तक सीमित नहीं है। इसका जितना ही चिन्तन करेंगे, उतना ही गहराई तक पहुँचेंगे। इसी तरह वेद का हर मन्त्र अपना विशिष्ट भाव लिए हुए है। हम जितना ही उसका चिन्तन करेंगे, मनन करेंगे, उतना ही वे हमारी समझ में आते जाएंगे। माना कि वेदो में मन्त्रो के विषय तमाम हैं, उन सबपर हम कितना चिन्तन करें। यह सम्भव भी नही है। इसके लिए यही उचित होगा कि हमें जो मन्त्र अपने जीवन के कल्याण हेतु अति निकट महसूस हो, जो अपनी पहुँच के अन्दर हो, उसी का खूब चिन्तन करें, मनन करें। इस बात को आप अनुभव करके देख सकते हैं। एक-दो मन्त्र का खूब चिन्तन, मनन करके उसकी यथार्थता का पता लगा सकते हैं और अन्त में आप इसी निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि वास्तव मे वेद चिन्तन का विषय है। ●

हम शाकाहारी ही क्यों रहें ?

रामनिवास लखोटिया, ग्रेटर कैलाश, नई दिल्ली

हमारे देश में कुछ वर्षों से परम्परागत शाकाहारी परिवारों में भी आधुनिक सभ्यता के नाम पर या कहिए स्वाद के नाम पर या तथा कथित उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति के लिए अण्डे और मांस के खान-पान का फैशन बढ़ रहा है। यह बात किसी से छिपी नही है कि शाकाहारी परिवारों की युवा पीढ़ी चोरी-छिपे फैशनेबल रेस्टोरेंटों या होटलों में मांस आदि का सेवन करते हैं। यह एक दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है। लेकिन केवल ऐसे व्यक्तियों को बुरा भला कहने से तो काम चलेगा नही। हमें धार्मिक एवं आध्यात्मिक पहलुओं के साथ-साथ वैज्ञानिक दृष्टि से भी यह सिद्ध करना होगा कि शाकाहार हर दृष्टि से मांसाहार से अधिक हितकर है। प्रस्तुत लेख में इसी बात का प्रयत्न किया गया है।

हमारा देश धर्म-प्रधान देश है। हमारी संस्कृति ने सदैव हमें यही सिखाया है कि सभी ईश्वर के तत्व हैं। हमारी संस्कृति प्रारम्भ से ही जीव-मात्र की रक्षा के पक्ष में रही है। हमारी जीवन पद्धति का आधार भी "अहिंसा" ही रहा है। अपने सुख एवं स्वाद के लिए निरीह पशु-पक्षियों की हत्या का निषेध ही हमारी सभ्यता का एक प्रमुख अंग है। इसी विचार-धारा से प्रभावित होकर आज विश्व भर में शाकाहारी व्यक्तियों की संख्या द्रुतगति से बढ़ रही है। हमारे ऋषि-मुनियों एवं सन्तों ने मांसाहार से विमुख रहने का ही सुझाव सदैव दिया है। आयुर्वेद के प्रकांड विद्वान चरक एवं सुश्रुत ने मांस व शराब की गणना तामसिक भोजन के रूप में की है। गीता में भगवान कृष्ण ने अपने प्रिय भोजन में केवल शाकाहारी भोजन एवं मीठे पकवान का ही वर्णन किया है। इसलिए धर्म, आध्यात्मिकता एवं अहिंसा की दृष्टि से हम केवल जीभ के स्वाद के लिए पशु-पक्षियों की हत्या से उत्पन्न मांसाहारी भोजन को कभी भी उचित स्थान नहीं दे सकते। एक प्राचीन कहावत के अनुसार 'जैसा खावे अन्न, वैसा होवे मन्न"। इसलिए मासाहार जैसे तामसिक एवं मृत भोजन से तो हम तामसिक वृत्ति के ही बनेगे। सभी जीवों में समानता एवं दिव्य भावना की दृष्टि से भी मांसाहार कभी भी उचित नहीं कहा जा सकता। इसी भावना से प्रेरित होकर कई विश्वप्रसिद्ध व्यक्ति शाकाहारी बने जैसे, गौतम बुद्ध, शेक्सपियर, और बर्नाड शा आदि।

लेकिन आज के वैज्ञानिक युग मे केवल धार्मिक विचार या भावनात्मक कारण ही शाकाहार के पक्ष मे पर्याप्त नहो समझे जाते। मांसाहार के बढ़ते हुए फैशन में निरन्तर अग्रसर व्यक्तियों से पूछताछ करने पर पता चलता है कि वे मासाहार को स्वास्थ्य की दृष्टि से शाकाहार से अधिक हितकर समझते हैं। और इसका मुख्य पहलू है प्रोटीन जो व्यक्ति मांसाहार के समर्थन में दलील देते हैं वे कहते हैं कि मास से ही अच्छी किस्म का प्रोटीन प्राप्त हो सकता है। इसमें कोई सन्देह नही कि प्रोटीन वह आवश्यक तत्व है जो हमारे शरीर में नए तन्तुओं का निर्माण करता है और पुराने तन्तुओं का पुनः निर्माण करता है। मांस में करीब २५ प्रतिशत प्रोटीन पाया जाता है, जब कि सोयाबीन में ३८ प्रतिशत, मूंगफली में ३० प्रतिशत और सामान्य दालों में लगभग २२-२५ प्रतिशत प्रोटीन पाया जाता है। यदि गेहूं, चावल, ज्वार, बाजरा, मक्का आदि के साथ पर्याप्त मात्रा में दाल एवं हरी सब्जियों का सेवन किया जाय तो प्रोटीन की आवश्यकता शाकाहारी बने रहने पर भी पूरी हो जाती है। आधुनिक वैज्ञानिक खोज से यह सिद्ध हो गया है कि एक शाकाहारी व्यक्ति मांसाहारी व्यक्ति से किसी भी हालत में कम स्वस्थ नहीं रहता, बल्कि अधिक स्वस्थ ही रहता है। भारत में गरीब बच्चों की कमजोरी का कारण प्रोटीन की कमी नहीं बल्कि पर्याप्त भोजन की कमी है जो उन्हें पर्याप्त शाकाहारी भोजन द्वारा प्राप्त कराई जा सकती है।

आजकल प्रायः यह सुनने में आ रहा है कि बच्चों को अण्डे आदि के सेवन से अधिक स्वस्थ बनाया जा सकता है। यह एक भ्रांति है जिसका निराकरण १९८५ के नोबेल पुरस्कार विजेता डा० माइकल एस० ब्राउन तथा डा० जोसेफ एल० गोल्डस्टीन नामक दो अमेरिकन डाक्टरों ने किया जब उन्होंने यह साबित कर दिया कि हृदयरोग के कारण ही अधिकाश मौतें होती हैं। उनके अनुसार कालस्टेरोल नामक तत्व को रक्त में जमाने से रोकना बहुत आवश्यक है। और कोलस्टेरोल अण्डों में सबसे अधिक मात्रा में पाया जाता है। यह वनस्पति में नही के बराबर होता है परन्तु मांस अण्डों और जानवरों से प्राप्त वसा में प्रचुर मात्रा में होता है। अब यह भी सिद्ध हो गया है कि अण्डा सुपाच्य नही है। बल्कि अण्डे के छिल्के पर लगभग १५,००० सूक्ष्म छिद्रों के द्वारा कई जीवाणु अण्डे में प्रवेश कर जाते है जो अण्डे को खराब कर देते हैं। इस प्रकार अब वैज्ञानिकों ने यह साबित कर दिया है जो व्यक्ति मास या अण्डे खाते हैं उनके शरीर में "रिस्पटरों" की संख्या में कमी हो जाती है जिससे रक्त के अन्दर कोलस्टेरोल की मात्रा अधिक हो जाती है। इससे हृदय रोग शुरू हो जाता है। इससे गुर्दे के रोग एवं पथरी जैसी बीमारियों को भी बढ़ावा मिलता है। यही कारण है कि "इन्टरनेशनल वेजिटेरियल यूनियन" एव अन्य शाकाहारी सस्थाओं द्वारा शाकाहार को विदेशो मे बहुत सम्मान की दृष्टि से देखा जा रहा है। १९८५ मे ६० लाख अमेरिकन शाकाहारी थे। लेकिन एक नवीनतम सर्वेक्षण के अनुसार अमेरिका के दो-तिहाई घरों में अब शाकाहार पर अधिक सुझाव हो गया है।

इसलिए हम सब सामान्यत. शाकाहारी परिवारों का धार्मिक एवं वैज्ञानिक दृष्टि से भी यह कर्त्तव्य बनता है कि फैशन की देखा-देखी या होड में हम मासाहारी न बनें। इसके अलावा जो मासाहारी परिवारों के सदस्य हैं उन्हे उपरोक्त कारणों से शाकाहारी के रूप में अपने आपको परिवर्तित करना चाहिए। सरकार से भी प्रार्थना है कि वह दूरदर्शन, रेडियो आदि के माध्यम से अण्डे व मांसाहार को प्रोत्साहन नहीं दें बल्कि शाकाहार को ही बढ़ावा देकर उसका उचित स्थान उसे दिलावे ताकि हर जीव की रक्षा हेतु ठोस कदम उठाने मे कामयाब हो सके।

अरुणाचल प्रदेश में बड़े पैमाने पर धर्मान्तरण :

अरुणाचल प्रदेश मे प्रतिवर्ष लगभग १२,००० हजार लोगों का धर्म परिवर्तन कर ईसाई बनाया जा रहा है। वैसे तो अरुणाचल प्रदेश मे प्रवेश हेतु इनर लाईन पास लेना पड़ता है और बिना इनर लाईन पास के अरुणाचल प्रदेश में प्रवेश वर्जित है। लेकिन ईसाई पादरी तथा धर्म प्रचारक बेरोक-टोक अरुणाचल प्रदेश में आते जाते हैं। इसके अलावा ये पादरी तथा धर्म प्रचारक गलत नामों पर इनर लाईन पास बनवाकर अरुणाचल प्रदेश में धर्मान्तरण तथा धर्म प्रचार का कार्य करते हैं कहने को तो शासन द्वारा धर्मान्तरण पर प्रतिबन्ध है परन्तु खेद तथा दुर्भाग्यपूर्ण तथ्य यह है कि देशभर मे सर्वाधिक वार्षिक धर्मान्तरण अरुणाचल प्रदेश में ही होता है। मार्च-अप्रैल के ईस्टर पर्व से पूर्व तथा दिसम्बर-जनवरी के बड़े दिन के पूर्व तथा पश्चात् लगभग क्रमशः ४,००० तथा ८,००० लोगों का धर्मान्तरण कर ईसाई बनाया जाता है। इस धर्मान्तरण का सचालन कार्य आसाम स्थित विभिन्न मिशनों को सौंपा गया है। जिनमें नार्थ लखीमपुर सिटी मिशन, हारमुत्ती कैथोलिक मिशन, शिला पत्थर मिशन, गौहाटी कैथोलिक मिशन का कथीड्रल तथा तेजपुर कथौलिक मिशन का कथीड्रल प्रमुख है। इन मिशनो के छात्रावासों मे अरुणाचल प्रदेश के लड़के-लड़कियों को रखकर उन्हे ईसाई धर्म में प्रशिक्षित करके उनका धर्मान्तरण कर दिया जाता है। उपरोक्त सभी मिशन आसाम में है तथा कुछ तो बिलकुल अरुणाचल प्रदेश की सीमा से लगे हुए है अतः अरुणाचल प्रदेश की सरकार इन पर कानूनी कार्यवाही नही कर सकती। इन मिशनो में प्रशिक्षित लड़के-लड़किया अपने परिवारों तथा मिशनरियों के बीच सम्पर्क सूत्र का कार्य करतेहैं। इन प्रशिक्षित लड़के-लड़कियोके परिवार जो में गरीबी अशिक्षा तथा अभाव से ग्रस्त होते है को आर्थिक सहायता देकर तथा इनकी अशिक्षा, अज्ञानता का लाभ उठाकर तथा खाद्य सामग्री जिनमे विदेशी दूध चावल चीनी इत्यादि बांट कर इनका धर्मान्तिरण करते हैं। विदेशो से भारी मात्रा में दूध का पावडर, मछली का पाउडर तथा प्रचुर मात्रा में धन आता है। इन चीजों का प्रयोग धर्मान्तरण मे किया जाता है।

विदेशों से प्रचुर मात्रा में धन गरीबों को आवासीय कालोनी, विद्यालय, तथा अस्पताल के नाम पर इन मिशनों को प्राप्त होता है और गृहमन्त्रालय तथा वित्त और विदेश मन्त्रालय इन पर कोई कार्यवाही नही कर पाते जब कि-वास्तविकता यह है कि उपरोक्त योजनाओं की आड़ में विदेश तथा गृह मन्त्रालय की आंख में धूल झोंका जाता है और इस तरह प्राप्त ४५ प्रतिशत धन का उपयोग धर्मान्तरण के लिए किया जाता है।

अरुणाचल प्रदेश में ईसाई मिशनों के सैकड़ों वेतन भोगी स्थानीय एजेन्ट कार्यरत हैं जो लोगों को धर्म परिवर्तन हेतु प्रेरित करके एक निर्दिष्ट स्थान पर नियत समय पर एकत्रित करते हैं यह स्थान सड़क मार्ग से करीब २० किलोमीटर दूर किसी दुर्गम स्थल पर होता है तथा यहा पर पुलिस और प्रशासकीय अधिकारियों और खुफिया विभाग के लोग पहुंचने में असमर्थ होते हैं। इन स्थानों पर धर्मान्तरण का कार्य इतने विशाल पैमाने पर होता है कि इनकी संख्या ४ हजार से ८ हजार तक होती है तथा इनमें बीसियों पादरी तथा उनके सहायक तीन-तीन दिनोंतक लगातार धर्मान्तरणकी प्रक्रियाको चलाते हैं। १९६५ में अरुणाचल प्रदेश में ईसाइयों की संख्या केवल १० हजार थी जो अब बढ़कर ७० हजार हो गयी है। स्मरणीय है कि अरुणाचल प्रदेश की आबादी केवल पांच लाख है तथा दस वर्ष के भीतर सम्पूर्ण अरुणाचल प्रदेश का ईसाइकरण करके उसको दूसरा मिजोरम बनाने की ईसाई मिशनों की योजना हैं। उल्लेखनीय है कि मिजोरम में ९८ प्रतिशत ईसाई हैं।

जयेन्तकुमार पाण्डेय, महामन्त्री
राष्ट्र रक्षा युवा आन्दोलन लखनऊ

दो कवित्त

(१)

नन्दिनी मनुजता अधीर और व्याकुल है।
किन्तु बात इसकी तुम धूल में मिलाते हो।।
उग्रवादी मुक्त हुए रूबिया के व्याज से ही।
जाने कितनी रूबियाये दाव पर लगाते हों।।
क्रूरता का नृत्य निर्बाध नित्य चलता है।
रक्षक हो नाम के न रोक जिसे पाते हो।।
शेखर, अशफाक और बिस्मिल का त्याग भूल।।
राष्ट्र हित मेट, स्वार्थ अन्धड़ बढाते हो।।

(२)

राम ने चलाये शर दानवता मेंटने को।
किन्तु तुम देख, सामना न कर पाते हो।।
कृष्ण ने सुदर्शन उठाया शिशुपाल देख।
किन्तु क्रूरता को देख तुम भाग जाते हो।।
हनुमान भक्त बन, डरते श्रृगालों से।
शेरों का चर्म ओढ़ गर्व भाव खाते हो।।
वीर प्रसूभारती है देख तुम्हे लज्जित सी।
किन्तु अपने पर तुम नेक न लजाते हो।।

—डा० महाश्वेता चतुर्वेदी बरेली

आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक साप्ताहिक के पाठको से निवेदन है कि जिन सज्जनों ने वार्षिक शुल्क अभी तक कार्यालय में नहीं भिजवाया है, वह कृपया शीघ्र वार्षिक शुल्क भेजकर सहयोग प्रदान करें। मनिआर्डर भेजते समय अपना पूरा पता व ग्राहक संख्या लिखने का कष्ट करें। वार्षिक शुल्क २५)रुपए है।

बार-२ वार्षिक शुल्क भेजने की परेशानी से बचने का सरल उपाय, एक बार २५०) रुपए भेज कर सार्वदेशिक साप्ताहिक के आजीवन ग्राहक बन सकते हैं।

—व्यवस्थापक सार्व० साप्ताहिक

आर्य धर्म वीरों ने बलिदान देकर एक नया इतिहास रचा है

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

नई दिल्ली ४ फरवरी। आर्य समाज भी आतंकवाद का शिकार होता रहा है। धर्मवीर लेखराम स्वामी श्रद्धानन्द आदि अनेक आर्यों ने बाल-हकीकत राय की तरह देश व धर्म के लिए बलिदान देकर एक नया इतिहास रचा है। ये उद्‌गार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध ने आज आर्य समाज सरोजनी नगर एवं अखिल भारतीय हकीकत राय सेवा समिति के संयुक्त तत्वावधान मे आयोजित हकीकत राय श्रद्धांजलि समारोह-बसन्तोत्सव कार्यक्रम मे व्यक्त किये।

स्वामी आनन्दबोध ने आगे कहा कि आज देश मे भी आतंकवाद बढ रहा है और यदि पाकिस्तान ने चौथी बार हमला करने की गलती की तो दुनिया के नक्शे से उसका नामोनिशान मिट जायेगा। उन्होने यह भी कहा कि स्वामी दयानन्द के सुधारवादी कार्यो को आगे बढाकर एवं उनके आदर्शों पर चलकर आज देश मे तथा संसार मे सच्ची शान्ति स्थापित की जा सकती है। स्वामी आनन्दबोध बोध ने आर्यजनो को जागरूक होकर आगे बढने का आह्वान किया ताकि वीर हकीकत राय के बलिदान का इतिहास फिर न दोहराया जाये।

इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने धर्मवीर हकीकत को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा कि उस वीर बालक ने धर्म की रक्षा के लिये एक अभूतपूर्व बलिदान दिया था और उसे स्मरण रखने का यही सच्चा उपाय है कि हम सब सजग होकर धर्मान्तरण की समस्या का सामना करें और किसी भी हिन्दू भाई को विधर्मी न होने दें। प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव ने कहा कि हकीकत राय एक पुण्य आत्मा एवं संस्कारी जीव था जिसने सर कटाना स्वीकार किया परन्तु सर झुकाना मंजूर नही किया। उन्होने आगे कहा कि आज हमे अपने बच्चो मे धर्म व समाज सेवा के अच्छे संस्कार डालने चाहिये ताकि वे अच्छे नागरिक बन कर राष्ट्र सेवा कर सके।

मूर्धन्य पत्रकार व आर्य जगत के सम्पादक श्री क्षितीश वेदालंकार ने कहा कि हकीकत राय के बलिदान से एक यह हकीकत सामने आती है कि आज शिक्षित पीढी धर्म प्रेमी नही है और उसे धर्मवीर हकीकत राय की कहानियां सुनाकर उनमे जागृति पैदा की जानी चाहिए।

आर्योपप्रतिनिधि सभा बिजनौर का निर्वाचन

श्री अरुण सर्वसम्मति से अध्यक्ष निर्वाचित

आर्योपप्रतिनिधि सभा बिजनौर गढवाल का वार्षिक अधिवेशन एवं निर्वाचन सभा प्रधान श्री जय नारायण अरुण की अध्यक्षता मे आर्य समाज बिजनौर के वेद भवन मे सम्पन्न हुई।

इस अवसर पर अधिवेशन मे बिजनौर गढवाल के कोने-कोने से पधारे हुए सैकड़ों प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए समारोह के मुख्य अतिथि श्री श्याम सुन्दर जी जिलाधिकारी ने आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द के क्रान्तिकारी विचारो और सामाजिक आन्दोलन की सराहना करते हुए बताया कि आज के बदलते हुए युग में जब कि नैतिक मूल्यों का निरन्तर ह्रास होता जा रहा है और जाति-पांति, ऊंच-नीच की भावना, आतंकवाद और हिंसा की वृत्ति प्रबल हो रही है आर्यसमाज को आगे आकर काम करने की आवश्यकता है।

यम-नियम बोध की माला

यम नियम बोध की माला, कितना जीवन मे ढाला।
दी तुम्हे बोध की माला, यह तुमने क्या कर डाला॥
अविद्या अस्मिता राग द्वेष पाचवां क्लेश है अभिनिवेश,
विनाश योग यदि अपनाओ हो दूर तभी यह सभी क्लेश।
क्या वानप्रस्थ या संन्यासी या ब्रह्मचर्य के अभिलाषी,
यदि यथा शक्ति सब योग करे चाहे गृहस्थ के सहवासी॥
जीवन मे योग निराला, लाता चित-चित उजियाला।
दी तुम्हे बोध की माला, यह तुमने क्या कर डाला॥
यम नियम पद के पालन लायें जीवन मे सुख आसन,
अष्टांग योग की माला मे है प्राणायाम निराला धन।
प्रत्याहार नियन्त्रण करता सर्व इन्द्रियो को वश करता,
निर्गुण सगुण ओ३म् के गुणका मन मनन धारणामे धरता।
प्रिय यही ज्ञान का प्याला, तुमने कितना चख डाला।
दी तुम्हे बोध की माला, यह तुमने क्या कर डाला॥
धारणा हृदय मे दृढ होती, यही ध्यान मे परिणति होती,
नित्य निरन्तर अभ्यास करे तब जाकर 'समाधि' मे गति होती।
यह योग पतञ्जलि का प्यारा परलोक लोक का उजियारा,
यही पतन से हमे बचावे यही आत्म उत्थान तुम्हारा॥
यह योग मुक्ति की शाला, क्या इसमे डाला ताला।
दी तुम्हे बोध की माला, यह तुमने क्या कर डाला।
यम प्रथम 'अहिंसा' कहलाती वैर छोड कर प्रीति बढाती,
सत्य' दूसरा 'अस्तेय' तीसरा सब चोरी इससे छुट जाती।
चौथा 'ब्रह्मचर्य' बुद्धि लाता, इन्द्रिय दुर्वासना हटाता,
पचम 'अपरिग्रह' धन धमंड स्वार्थ संग्रह दूर भगाता॥
यम ने समाज को पाला, क्यो यम मय कर डाला।
दी तुम्हे बोध की माला, यह तुमने क्या कर डाला॥
प्रथम नियम है 'शौच' सुहाना, भीतर बाहर रखे पवित्रता,
'संतोष' दूसरा दुख मे भी दूर करे जो शोकातुरता।
तीसरा नियम 'तप' तीव्र ताप, कर सहन बने श्रुति निष्ठ आप,
चौथा 'स्वाध्याय' निरत अध्ययन दे स्वयं ईश की अमिट छाप।
जीवन श्रुति अध्ययन वाला क्यो अनध्याय कर डाला।
दी तुम्हे बोध की माला यह तुमने क्या कर डाला॥
'ईश्वर प्रणिधान' समर्पण हो, मन आत्म ओ३म मे अर्पण हो।
सब मरने पर छुट जाता है जीवित ही स्वयं समर्पण हो।
यह नियम पांचवा बतलाया जो योग पतंजलि ने गाया,
आर्य जगत के दस नियमो मे, दयानन्द ने वही सुनाया।
प्रिय नियम निरूपण आला, क्या इन्हे नष्ट कर डाला।
दी तुम्हे बोध की माला, यह तुमने क्या कर डाला॥

—देवनारायण भारद्वाज, आजमगढ (उ० प्र०)

राजगुरु शर्मा

(पृष्ठ ४ का शेष)

मे था। काय अधशताब्दी का यज्ञ प्रारम्भ, गुरु जी अमृत वर्षा के साथ यज्ञ प्रारम्भ, उच्चासन पर—

सन्यासी शिरोमणि पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज तथा सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज, गुरुकुल गोतमनगर दिल्ली के ब्रह्मचारी और आर्यों का विशाल समूह ब्रह्मा जी के कार्य मे ध्यानावस्थित होकर विराजमान था।

राजगुरु जी के कार्य की चर्चा सुनते थे पर देखा कभी नहीं था। आखो से देखा और कानो ने सुना। अपने याज्ञिक पंडित राजगुरु जी शर्मा के पौरोहित्य मे पण्डित्य पूण यज्ञ का आयोजन।

श्रद्धा का सारा ताना बाना यज्ञ पर ही निर्भर है यदि प्रथम कार्य सुन्दरतम हो, तो मन में उल्लास पूर्ण हो जाता है। श्रद्धालु-जनो मे श्रद्धा का सचार करना कुशल याज्ञिक के हाथो में है।

प० राजगुरु शर्मा अपने इस पाण्डित्य पूर्ण कार्य में जहा निपुण है वहा उनके करने के साथ कथन मे भी ओज माधुर्य विद्यमान है आकर्षण का केन्द्र सारे समारोह को पूणता तक पहुचाने का श्रेय इस महायज्ञ को ही जाता है।

श्रद्धा समन्वित वेद मन्त्रोच्चारण के साथ आर्य नर नारी उल्लासमय वातावरण मे भाग लेते रहे।

प्रवचन भी सुना और यज्ञ में दक्षिणा भी दी। भारी महायज्ञ सानन्द सम्पन्न हुआ।

मैं तो कार्य प्रारम्भ के बाद फिर प० राजगुरु जी के समीप न आ सका। हा पूर्णाहुति के उपरान्त वह अपना सामान लेकर प० वन्देमातरम् जी के आवास पर आयें। मैं पडित जी के घर पर ही ठहरा था।

प० राजगुरु जी प० वन्देमातरम् जी से बोले—पडित जी मैंने कार्यकर्त्ता तो बहुत देखे पर इस छोटे से बौने शरीर मे जो नाना प्रकार से समय-समय पर टूटा है बडी क्षमता है कार्य करने की।

मेरे साथ निरन्तर रात-दिन लगा रहा।

प० वन्देमातरम् जी के इस महान् यज्ञ के आयोजन को सफलता की ले आने में प० राजगुरु जी शर्मा का निखरा व्यक्तित्व काफी सहायक रहा।

इस एक सप्ताह मे निकट से मैने याज्ञिक राजगुरु शर्मा को देखा, पहचाना और समझा।

कार्य का प्रारम्भ और पूणता की ओर ले जाना सीखना हो तो प० राजगुरु जी शर्मा के व्यक्तित्व और कृतित्व को देखना और जानना चाहिये।

—सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

अंग्रेजी हटाओ आंदोलन को सहयोग दीजिए

सम्पूर्ण भारत मे अंग्रेजी हटाने के लिए अनेक नगरो मे सस्थाये बनी हुई हैं और उनके माध्यम से गोष्ठिया, लेख, आदि कार्य होते रहते हैं। राजनेता भी अपने भाषणो मे अंग्रेजी हटाने की बात कहते रहते हैं। लेकिन बियालीस वर्ष मे अंग्रेजी हटी नही और अंग्रेजी की जड़ें गहरी फैल गई हैं। आम नागरिक के दैनिक व्यवहार मे अंग्रेजी समा गई है। अंग्रेजी हटाने के लिए उसी प्रकार सघर्ष करना होगा जिस प्रकार अंग्रेजी शासन को हटाने के लिए सघर्ष करना पडा था। सत्याग्रह करके जेलयात्रा करनी होगी और हो सकता है की कुछ व्यक्तियो को अपना बलिदान भी देना पड सकता है। देश के लाखो नागरिको को जुटना पडेगा और करोडों रुपया खर्च होगा और कम से कम बीस पच्चीस वर्ष लगेगा तब अंग्रेजी हटेगी। यदि शासन विद्यार्थियों की परीक्षाओ से अंग्रेजी की अनिवार्यता को हटा दे। और शिक्षा का माध्यम मातृभाषा कर दिया जावे तब भी हमारे दैनिक व्यवहार मे अंग्रेजी व्यापक हो गई है। उसके लिए जनता को अपनी मानसिकता बदलने में समय लगेगा और इस कार्य के लिए भी निरन्तर रोजाना प्रचार करना होगा। तब ही अंग्रेजी हटेगी।

—जगदीशप्रसाद वैदिक अध्यक्ष
अ०भा०अंग्रेजी हटाओ आंदोलन

प्रथम वेद महोत्सव १९९०

वेदोद्धारिणी प्रतिष्ठान के तत्वावधान में ५ से १० मार्च १९९० तक रामलीला ग्राउण्ड आसफअली रोड नई दिल्ली २ में अध्यात्मयोग एवं अधिदैवत से समन्वित एक अभूतपूर्व यज्ञ समारोह आधुनिक प्रक्रिया के अन्तर्गत २७ नक्षत्रों से युक्त २७ यज्ञकुण्डों द्वारा—

चतुर्वेद द्वादश दैवतेष्टि

ऋग्वेद से स्तुति, यजुर्वेद से यजन, सामवेद से गीति तथा अथर्ववेद से शमन एवं दैवत अवतिकरण। जिस यजमान पति पत्नी का जिस नक्षत्र में जन्म हुआ है वे उन्हीं नक्षत्र नाम वाले यज्ञ मण्डपों में विराजमान होंगे। तप पूत ब्र० कृष्णदत्त जी महाराज (बरनावा) का योगमुद्रा में वैदिक प्रवचन (५ से १० मार्च तक)। म० देवेश भिक्षु जी द्वारा अध्यात्मयोग प्रवचन तथा श्री रामचन्द्र जी विकल द्वारा क्रियात्मक योगाभ्यास प्रतिदिन ६ से ७ ३० तक। स्त्री पुरुषों की पृथक व्यवस्था। वेद संगोष्ठी—विषय (क) वैदिक स्वर और वेदार्थ (ख) आधुनिक प्रक्रिया में 'इष' और 'ऊर्ज'—शोधनिबन्ध प्रस्तुतकर्ता डा० सुधीरकुमार (जयपुर), वेदबन्धु प० सत्यव्रत शास्त्री विद्यावाचस्पति। भारतीय यजमान वर्ग—संरक्षक ११००/ रु० प्रतिष्ठित ५०१) रु० सम्पोषक २५१) रु० सदस्य ११००) रु०। विदेशस्थ यजमान वर्ग—संरक्षक ५०१) डालर प्रतिष्ठित २५१) डालर सम्पोषक १०१) डा० समादृत ५१) डालर सदस्य ५०१) डालर यह धन राशि एवं दान आप कास चैक/ड्राफ्ट अथवा M, O से वेदोद्धारिणी प्रतिष्ठान' के नाम से कार्यालय, वेदोद्धारिणी प्रतिष्ठान X १० पश्चिमी पटेलनगर नई दिल्ली ८ के पते पर भिजवाने की कृपा करें।

आप से सानुरोध प्रार्थना है कि आप अपने परिवार तथा इष्ट मित्रों सहित इस वेद महोत्सव में पधार कर इसकी शोभा बढ़ायें तथा वेद को गौरवान्वित करें एवं अपना अमूल्य योगदान घृत सामग्री भण्डारा (ऋषि लंगर) आदि के वस्तुओं से भी इस महायज्ञ को सफलीभूत करें।

प्रधान　　　　मन्त्री

महात्मा देवेश भिक्षु　　　　समित्पाणि शर्मा

शिविर सम्पन्न

श्री स्वामी विवेकानन्द स्मारक जू० हा० स्कूल सलेमपुर बुजुर्ग जनपद शाहजहांपुर में आर्य वीर दल का प्रशिक्षण शिविर दिनांक १० जनवरी से १४ जनवरी तक श्री स्वामी सेवानन्द योगाचार्य की अध्यक्षता में विधिवत सम्पन्न हुआ। जिसमें लगभग ७५ आर्य वीरों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

इसके बाद श्री स्वामी सेवानन्द योगाचार्य की अध्यक्षता में ही पुनः दूसरा शिविर ग्राम पिपरौ में दिनांक २८ जनवरी से ११ जनवरी तक आर्य वीर दल का प्रशिक्षण शिविर विधिवत सम्पन्न हुआ, जिसमें लगभग ५० आर्य वीरों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

—सु० पा० सिंह एम० ए०
श्री स्वामी विवेकानन्द स्मारक
जू० हा० स्कूल सलेमपुर बुजुर्ग
जनपद शाहजहांपुर (उ० प्र०)

शुद्धि

१४ १ ९० को चार ईसाई परिवार को शुद्ध कर वैदिक धर्म में दीक्षित किया गया। इनमें एक ऐंरले ड द्वीप (Ireland) की लड़की भी शुद्ध हुई। उसका नाम शान्तिदेवी रखा गया और १६ १-९० को उसकी विवाह वैदिक रीति से श्री राजेन्द्र जी के साथ सम्पन्न हुआ।

२९ १ ९० को एक मुस्लिम युवती को शुद्ध किया गया और उसको मधुलक्ष्मी नाम दिया गया।

जनवरी ९० में १४ ईसाई एवं एक मुस्लिम महिला शुद्ध होकर वैदिक धर्म में दीक्षित हुई।

मद नारायण स्वामी

रजि० न० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१८-२-१९९०) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U ३१
R. N. 626/57 Licensed to post without prepay ment License No.U 31 Post in D.P.S.O. on 16 2 1990

उठो आर्यो कदम बढ़ाओ !

जागे हैं दिन रात आर्यों, सोया कुल संसार जगाने ।
जगत गुरु ऋषि दयानन्द की, सारे जग को याद दिलाने ।।
पाखण्ड और अविद्या ने जब, भूमण्डल को दबा लिया था ।
पावन वैदिक ज्ञान निराला, हाय जगत ने भुला दिया था ।।
मानवता को दानवता ने, आतंकित हर तरह किया था ।
वेदामृत छोड़कर जग ने, मूर्खतावश जहर पिया था ।।
चेतन की पूजा तज कर के, जड़ता के नर, द्वार दिखाने ।
जागे हैं दिन रात आर्यों, सोया कुल संसार जगाने ।।१।।
कानून की दिन रात आर्यों, खबर नहीं भारत में आती ।
चोली हिन्दू जाति विश्व में, कहीं नहीं ढूंढे से पाती ।।
दिल्ली लाल किले के ऊपर, ध्वजा विदेशी का लहराती ।
विधवा नारि सधवा बनकर, नहीं कभी मंगल गाती ।।
झूम-झूम के गा जाते हम, स्वतन्त्रता के मधुर तराने ।
जागे हैं दिन रात आर्यों, सोया कुल संसार जगाने ।।२।।
छुआ-छात का, जाति-पाति का, दयानन्द ने रोग मिटाया ।
शूद्र जन्म से कर्मों से द्विज, शुभ कर्मों का बोध कराया ।।
जड़ पूजा को बन्द कराया, चेतन का पूजन बतलाया ।
बाल विवाह को बन्द कराया, नारी का सम्मान बढ़ाया ।।
महर्षि दयानन्द आए थे, दुनिया से अज्ञान मिटाने ।
जागे हैं दिन रात आर्यों, सोया कुल संसार जगाने ।३।।
वेद विमुख होकर के ये जग, पा अब कष्ट अपार रहा है ।
भौतिकता की चका चौंध मे, हो अन्धा संसार रहा है ।।
जगदीश्वर को भूल गया है, कर नित अत्याचार रहा है ।
मानव मानवता तज बैठा, बन धरती पर भार रहा है ।।
दया, धर्म, सच्चाई तज दो, पाप रहा है कर मन माने ।
जागे हैं दिन रात आर्यों, सोया कुल संसार जगाने ।।४।।
उठो आर्यो कदम बढ़ाओ, मिटता अब संसार बचाओ ।
अन्धकार मे भटके जग को, पावन वैदिक मार्ग बताओ ।।
अबला, दीन, अनाथ जनों को, हंस-हंस करके गले लगाओ ।
जगत गुरु ऋषि दयानन्द का, स्वप्न आज साकार कराओ ।।
करदो नाम अमर जगती मे, हो तुम देश भगत मरदाने ।
जागे हैं दिन रात आर्यों, सोया कुल संसार जगाने ।।५।।

—पं० नन्दलाल निर्भय सिद्धांत शास्त्री,
भजनोपदेशक, ग्राम पो० बहीन जिला फरीदाबाद (हरि०)

महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार १९९०

वैदिक धर्म, वैदिक साहित्य एवं आर्य समाज के प्रति समर्पित भाव से की गई श्लाघनीय सेवाओं के फलस्वरूप महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार निधि न्यास, आर्य समाज फुलेरा की ओर से २५०१ रुपये नकद, दयानन्द स्वर्ण/रजत पदक, उत्तरीय प्रशस्ति पत्र तथा अभिनन्दन-पत्र प्रति वर्ष ऋषि निर्वाण दिवस पर प्रदान किया जाता है। १९९० के पुरस्कार के लिये कोई भी आर्य विद्वान स्वयं अथवा या अन्य विद्वान का नाम पूर्ण विवरण तथा कृतियों सहित १५ अगस्त १९९० तक प्रस्तुत कर सकता है।

सम्पर्क सूत्र —मदनलाल शर्मा आचार्य, मन्त्री
आर्य समाज फुलेरा

आर्य समाज बसव कल्याण (कर्नाटक) हुतात्मा धर्मप्रकाश बलिदान अर्ध शताब्दी स्मृति समारोह सम्पन्न

आर्य समाज बसव कल्याण जिला बिदर (कर्नाटक) में दिनांक २६, २७, २८ जनवरी १९९० को हुतात्मा धर्मप्रकाश बलिदान अर्धशताब्दि समारोह श्री रामानन्द जी लाड प्रधान आर्यसमाज बसव कल्याण के नेतृत्व में सम्पन्न हुआ। जिसमे सामवेद पारायण यज्ञ गुरुकुल रामलीन मेडसी के प्रधानाचार्य आचार्य सुभाष जी के ब्रह्मत्व मे और चार ब्रह्मचारी के पठन पाठन से दिनांक २४ से २८ जनवरी को सम्पन्न हुआ। इस समारोह मे आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र तथा कर्नाटक प्रान्त के उत्साही सज्जनो ने बड़े हर्ष से भाग लिया।

सम्पादक के नाम पत्र

श्रीयुत सम्पादक जी;

नमस्ते !

मैं आपके समाचार पत्र "सार्वदेशिक" साप्ताहिक का नियमित पाठक हूं। समाचार पत्र के माध्यम से आर्यसमाज के भावी कार्यक्रमों, गतिविधियों योजनाओं इत्यादि की जानकारी होती रहती है।

१४-१-९० के सम्पादकीय नोट के लिये आपको बहुत-बहुत साधुवाद। 'आर्य सत्याग्रह हिन्दू रक्षा के अर्ध शताब्दी समारोह पर एक दृष्टि' संक्षिप्त रिपोर्ट इतने सुन्दर, रोचक ढंग से प्रस्तुत की गई है कि मुझे पढ़ने से ऐसा लगा कि मैं भी इस कार्यक्रम को शामिल होकर देख रहा हूं।

प्रकाशित लेख, सामयिक टिप्पणियां सम्पादकीय उच्चकोटि के होते हैं सैद्धांतिक होते हैं ये सब पठनीय होते हैं। समस्त लेखो को, कविताओं और श्लोको को समय से पुस्तक रूप मे भी प्रकाशित किया जाना चाहिए।

अन्त मे, पत्र हेतु सुन्दर लेखो के संकलन, वेदामृत मन्त्रो के चयन, पत्र के सुन्दर आवरण सज्जा, प्रकाशन के लिये आप, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के माननीय प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी व समस्त सार्वदेशिक परिवार धन्यवाद के पात्र हैं।

नव वर्ष की मंगल कामनाओं सहित—

—धर्मेन्दु द्विवेदी

(२) SBI 01
066.03

आदरणीय सम्पादक जी,

सादर नमस्ते !

मैं आपकी साप्ताहिक पत्रिका सार्वदेशिक की नियमित पाठक हूं। आपकी पत्रिका पूर्ण रूप से सामयिक है। इसमें सभी पठनीय सामग्री काफी शिक्षाप्रद एवं प्रेरणादायक होती है। सभी लेख तर्क संगत एवं मार्मिक होते हैं। इसका प्रत्येक सम्पादकीय लेख पढ़ने योग्य होता है। इसके साथ-साथ यह पत्रिका समाज में फैले पाखण्ड, धार्मिक अन्धविश्वास, रूढ़िवाद एवं सामाजिक अन्याय के खिलाफ संघर्ष करने के लिए भी प्रयत्नशील है। देश के सामाजिक धार्मिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रमें भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसके साथ-साथ यह पत्रिका महर्षि दयानन्द सरस्वती के मिशन को पूरा करने तथा वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार करने के लिए भी कृत संकल्प है। अतः सम्पूर्ण पत्रिका पढ़ने से यह कहा जा सकता है कि सार्वदेशिक पत्र आर्य समाज एवं वैदिक संस्कृति का सजग प्रहरी है। इस पत्रिका ने आर्य समाज की प्रमुख पत्र पत्रिकाओं में अपना स्थान बना लिया है। अतः अब भी यह पत्रिका बड़ी तेजी के साथ अपनी लोकप्रियता की ओर अग्रसर है। आशा है पत्रिका भविष्य में भी इसी तरह पाठको की सेवा करती रहेगी। सार्वदेशिक के उज्ज्वल भविष्य के प्रति शुभ कामनाएं।

—रामकुमार आर्य
वाटर सप्लाई वर्क्स जोशी चौहान बहालगढ़ (सोनीपत)

वेद प्रचार

आर्य सभा केसरिया, पूर्वी चम्पारण, बिहार के तत्वावधान मे दिनांक २१ से २९-१२-८९ तक वैदिक प्रचार कार्य सम्पन्न हुआ जो निम्न स्थानो पर हुआ। स्थान—(१) केसरिया आर्य मन्दिर, (२) हवेली बाजार, (३) साहेब गंज मुजफ्फरपुर तथा सिसवा पटना जहां नई सभा का गठन किया गया।

—मन्त्री, आ. स. केसरिया

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली मे मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म् सार्वदेशिक साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वेदामृत

परिवार सुख-सम्पन्न हो

रेवती रमध्वमस्मिन् योनावस्मिन्
गोष्ठे ऽस्मिन् लोके ऽस्मिन् क्षये।
इहैव स्त मापगात ॥

यजु० ३। २१ ॥

हिन्दी अर्थ—हे समृद्धि की देवियो ! तुम इस मूल स्थान मे इस गौशाला मे इस परिवार मे इस घर मे आनन्दपूर्वक रहो। तुम यही रहो, कभी यहा से न हटो।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९० दयानन्दाब्द १६५ दूरभाष। ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे
वर्ष २६ अक ७] फाल्गुन कृ० १५ स० २०४६ २५ फरवरी १९९०

दिल्ली उच्चतम न्यायालय के बाहर पंजाब से आये ४०० बेसहारा परिवारों का धरना

सार्वदेशिक सभा प्रधान द्वारा सहायता की मार्मिक अपील

दिल्ली २० फरवरी १९९०,

पजाब मे आतकवादियो की हिंसात्मक कार्यवाही के परिणाम स्वरुप बहुत से हिन्दू परिवार भागकर दिल्ली आ गये हैं और उन्होने उच्चतम न्यायालय परिसर के समीप सडक के फुटपाथ पर डेरा डाला हुआ है। उनकी सख्या लगभग ४०० है।

सूचना पाकर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तथा वरिष्ठ उप-प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव उनसे मिलने गये। यह बडे दुर्भाग्य की बात है कि बार-बार के प्रदर्शनो और अपीलो के बावजूद दिल्ली प्रशासन और दिल्ली के उप राज्यपाल द्वारा इन विस्थापितो के प्रति कोई भी सहानुभूति पूर्ण कार्यवाही नही की गयी। इस उपेक्षा के कारण वे लोग खुले आकाश के नीचे वर्षा मे भीगते रहे और उनमे से कई बीमार भी हो गये हैं। पजाब से हिन्दू परिवारो का पुन पलायन आतकवाद के प्रति सरकार की कमजोर नीति का ही परिणाम है।

सार्वदेशिक सभा द्वारा सहायता कार्य

सार्वदेशिक सभा की ओर से विस्थापितो को आटा और चीनी वितरित की गई। स्वामी जी समस्त आर्य समाजो और आर्य सस्थाओ से अपील करते हैं कि वे इन विस्थापित हिन्दू परिवारो की यथाशक्ति सहायता करें।

केन्द्रीय सरकार से भी यह अपेक्षा की जाती है कि वह इन बेसहारा परिवारो को रहने के लिए आश्रय तथा जीवन निर्वाह के लिए उपयुक्त साधन भी उपलब्ध कराये। अब तक इस प्रकार से पजाब से भागकर आये परिवारो को एक हजार रुपया प्रतिमास की सहायता सरकार द्वारा दी जाती रही है। इस कार्य मे किसी प्रकार की देर विस्थापितो के लिए कठिनाईया पैदा कर सकती है और सरकार मे उनका विश्वास खतम हो सकता है।

सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री



चित्र में बायें से खडे सदस्यो के नाम—प० वन्देमातरम रामचन्द्रराव कुमारी सरस्वती आर्य (अखिल भारतीय साईकल कीर्तिमान) श्री हितेश बी० पटेल, श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती श्री के० मोहन (राष्ट्रीय खिलाडी एव विश्व कीर्तिमान साईकल) श्री जितेन्द्र आर० सूरती (ब्लैक बेल्ट कराटे सूरत), श्री बालदिवाकर हस जी (सार्व० आर्य वीर दल प्रधान) एव श्री लक्ष्मीचन्द जी।

आर्यवीर रूस की यात्रा पर

आर्य वीर दल डेडियापाडा जि० भरुच (गुजरात) द्वारा आयोजित शान्ति सद्भावना और राष्ट्रीय एकता का विभिन्न राज्यो मे सन्देश देता हुआ १८ सदस्यीय दल श्री कृष्ण मोहन (भू०पू० राष्ट्रीय हाकी खिलाडी एव विश्व कीर्तिमान साइकिल) के नेतृत्व मे २६-१-९० को दिल्ली पहुँचा जहा भारत के उपराष्ट्रपति श्री डा० शकरदयाल शर्मा ने आर्य वीरो का स्वागत किया। इस दौड की मुख्य आकर्षण ४वर्षीया कुमारी योगिता आर्य हैं। दौड की प्रबन्धक कुमारी सरस्वती आर्य ने बताया कि आगामी ६ जुलाई को हम इस आर्य कन्या को स्काटलैण्ड इसके मुख्य प्रशिक्षक के मोहन के० साथ भेजेंगे। वहा से कन्या यदि २४ दिन मे २४८० किलोमीटर की दूरी तय कर लेती है तो विश्व की सबसे कम उम्र की कन्या हो जायेगी एव इसका नाम गिनीज बुक आफ रिकार्ड में लिखा जायेगा।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री



बाए से मुख्य अतिथि डा० शान्ति लाल सोमैया प० हरिशरण जी सिद्धातालकार का रजत ट्राफी देते हुए। मध्य मे श्री ओंकारनाथ आर्य प्रधान आर्य समाज सान्ताक्रुज।

गुरुकुल कांगड़ी के पुराने स्नातक वैदिक विद्वान

पंडित हरिशरण जी सिद्धांतालंकार को वेद वेदांग पुरस्कार

नई दिल्ली ५ फरवरी सस्कृत साहित्य तथा वैदिक विद्वान श्री पडित हरिशरण जी सिद्धातालकार को वैदिक विद्वानो की परम्परा मे वेद वेदांग पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान उन्हे बम्बई मे हुए एक समारोह मे दिया गया। विद्या भवन मे हुए इस समारोह की अध्यक्षता उद्योगपति डा० शान्तिलाल सोमैया ने की। उन्होने ८९ वर्ष के विद्वान पडित हरिशरण जी को एक नारियल दुशाला और २१ हजार रुपए की नकद राशि उन्हे भेंट की।



विशेष अतिथि आदरणीय प० सत्यकाम जी विद्यालकार भजनोपदेशक प० ओमप्रकाश जी वर्मा को अभिनन्दन पत्र देते हुए। दाए कैप्टन देवरत्न आर्य सयोजक वेद वेदाग पुरस्कार चयन समिति।

प्रसिद्ध गायक श्री ओमप्रकाश जी वर्मा भी सम्मानित

वेद प्रचार के काम के लिए पडित ओमप्रकाश वर्मा को आर्य समाज के क्षेत्र में महर्षि दयानन्द के मिशन मे सम्पूर्ण जीवन अर्पित करने पर सम्मान देकर ग्यारह हजार की राशि भेट की गई। समारोह मे प० हरिशरण ने वेद को माता बताते हुए कहा कि जिस परिवार मे वेद का पाठ रोज १० से १५ मिनट तक भी होता है वहा सदस्यो को आयु विद्या, ऐश्वर्य, सतान, यश कीर्ति और अन्त मे परमेश्वर की प्राप्ति होती है। उन्होने यह सुझाव भी

शोक समाचार

श्री घनश्याम जी गोयल परिवार का असहनीय वियोग

यह सूचना देते हुए अत्यन्त दुख होता है कि १० फरवरी १९९० दिन शनिवार को श्री वेदप्रकाश गोयल का निधन हो गया है। १४ जनवरी १९४० को जन्मे स्व० वेदप्रकाश जी का गोयल ग्रुप आफ कम्पनीज के विकास में बड़ा योगदान रहा है। वह माननीय श्री डी.डी गोयल तथा सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष श्री ओमप्रकाश गोयल के छोटे भाई थे।



अपने अदम्य उत्साह, कार्य कुशलता के कारण व्यापारिक क्षेत्र मे उन्होने बड़ी लोकप्रियता हासिल की थी। ईमानदारी व उच्च आदर्शों का एक अच्छा उदाहरण वह अपने पीछे छोड़ गए हैं। उनका जीवन बड़ा धार्मिक था। उनके जीवन के नैतिक मूल्यो की अमिट छाप लोगो के हृदयों में चिरकाल तक रहेगी। व्यापारिक सस्थाओ के अतिरिक्त उनका सम्बन्ध कई सामाजिक, शैक्षणिक, सास्कृतिक तथा अन्य प्रजा सेवी संस्थाओ से भी रहा था।

मैं आर्य जगत्, सार्वदेशिक सभा, सभा प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोधजी सरस्वती तथा सभा के समस्त अधिकारियो व सदस्यो की ओर से इस दुखद वियोग पर शोक सन्तप्त परिवार के प्रति हार्दिक सम्वेदना प्रकट करते हुए दिवगत आत्माकी सद्गति के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हू।

—वन्देमातरम रामचन्द्रराव
वरिष्ठ उपप्रधान
सार्वदेशिक सभा,

पाणिनी कन्या महाविद्यालय वाराणसी गणतन्त्र दिवस एवं बसंत पंचमी पर्व

इस वर्ष पाणिनी कन्या महाविद्यालय वाराणसी मे २६ जनवरी को राष्ट्रीय ध्वजोत्तोलन का कार्य विद्यालय की नवीन भूमि पर अत्यन्त समारोह पूर्वक किया गया। विद्यालयीय ब्रह्मचारिणियों की परेड एव अन्य खेल के कार्यक्रम विशेष प्रशसनीय थे। क्रीडाङ्गन गणमान्य अतिथियो से खचाखच भरा था। ध्वजोत्तोलन का कार्य आज के मुख्य अतिथि श्री कृष्णचन्द्र जी बेरी, अध्यक्ष हिन्दी प्रचारक प्रकाशन वाराणसी द्वारा सम्पन्न कराया गया।

नवीन भूमि की उपलब्धि के कारण इस वर्ष का बसन्त पचमी पर्व भी बहुत महत्वपूर्ण रहा। आज के दिन श्री रोशनलाल जी चड्ढा द्वारा एक नव निर्मित कक्षा शाला का भी उद्घाटन हुआ, जिसमे यज्ञ एव भजन सगीत के कार्यक्रम बहुत रोचक रहे। समारोह मे भोजन की व्यवस्था ब्रह्मचारिणियो द्वारा विद्यालय मे ही की गई थी। कन्याओं की इस पाकविद्या के गुण की भूरि-भूरि प्रशसा की गई।

—कु० माधुरी

दिया कि हर गृहस्थ विवाह के बाद बेटी को विदा करते हुए वेद भेंट कर रोज उसके पाठ की प्रेरणा दे। इससे उनका पति गृह में सदा कल्याण होगा।

पुरस्कार समिति के सयोजक आर्य समाज सान्ताक्रुज के कैप्टन श्री देवरत्न आर्य ने बताया कि उनकी सस्था हर साल एक विद्वान को इसी तरह से सम्मानित करती है। उद्योगपति डाक्टर शान्ति लाल सोमैया ने संस्कृत को भारतीय सस्कृति का आधार बताते हुए कहा आज आवश्यकता है कि देश के प्रत्येक कोने में संस्कृत के स्कूल खोले जायें।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनके समकालीन साहित्यकारों पर आर्यसमाज का प्रभाव

—डा० सत्यव्रत शर्मा 'अजेय' उपाचार्य—गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर

आर्यसमाज और उसका हिन्दी गद्य-शैली के विकास में योगदान

सन् १८७५ में स्वामी दयानन्द सरस्वती (१८२४-१८८३) ने आर्यसमाज की स्थापना कर हिन्दू धर्म का पुनरुद्धार किया। आधुनिक हिन्दी खड़ी बोली के निर्माता भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (१८५०-१८८५) तथा उनके समकालीन साहित्यकारों पर भी आर्य समाज का यत किञ्चित प्रभाव पड़ चुका था; क्योंकि उस समय आर्य समाज का इतना व्यापक प्रचार था कि उससे प्रभावित हुए बिना रहा नहीं जा सकता। राष्ट्र-प्रेम, आर्य भाषा (हिन्दी) प्रेम और विधवा-विवाह आदि अनेक विषय स्वामीजी ने ऐसे सुझाये थे कि वे सभी इन साहित्यकारों को प्रिय लगे। वस्तुतः धार्मिक दृष्टि से भी आर्य समाज का बहुत महत्व है। उसने धार्मिक आन्दोलन छेड़ कर भारतीय नवोत्थान को विशुद्ध दृष्टिकोण प्रदान किया।

स्वामी जी ने 'सत्यार्थ प्रकाश' लिखकर शुद्ध संस्कृत निष्ठ हिन्दी का स्वरूप प्रस्तुत किया, जिससे गद्य शैली का विकास हुआ।

"आर्य समाज की धारा से हिन्दी भाषा में एक नई शैली का प्रतिपादन हुआ। सत्यार्थ प्रकाश (१८७४) में स्वामी दयानन्द ने जैन, सिख आदि हिन्दू सम्प्रदायों तथा इस्लाम और ईसाई मतों की तीव्र आलोचना की है। इससे भाषा में बहुत-से गहन विषयों पर भी वाद-विवाद करने की शक्ति आ गई।"

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनका युग

हिन्दी साहित्य के इतिहास में भारतेन्दु-युग के पश्चात द्विवेदी युग का आरम्भ होता है। महावीर प्रसाद द्विवेदी (१८६४-१९३८) ने हिन्दी खड़ी बोली विकास को नवीन दिशायें दी और इससे पूर्व जो भाषा खड़ी बोली काव्य के लिये अनुपयुक्त समझी जाती थी। उसमें नवीन चेतना का संचार कर उसमें प्राण प्रतिष्ठा की—

'मृत हिन्दी को शक्ति से, लाकर दी संजीवनी।
महावीर आचार्य की, महावीर सी जीवनी॥

द्विवेदी जी स्वयं भी अच्छे कवि थे, इन्होंने अपने काव्य में मराठी की वर्णन-प्रधान शैली अपनाई। इनके काव्य में देश भक्ति, समाज-सुधार तथा उपदेशात्मकता विद्यमान है। फिर भी उनमें आचार्यत्व एवं नेतृत्व शक्ति मुख्य रूप से थी—

द्विवेदी जी ने स्वयं समकालीन गद्य पद्य साहित्य की विविध प्रवृत्तियों के क्षेत्र में साहित्यकारों का नेतृत्व किया।'

द्विवेदीयुगीन कवियों के काव्य में नवजागरण की स्पष्ट ध्वनि है, लोक-प्रतिष्ठा और स्वीकृति है—

"पश्चिम के सम्पर्क से जो बहुविध उत्थान आरम्भ हुआ, उससे भारतीय समाज बड़ी तेजी से बदलने लगा। सामाजिक क्षेत्र में विचारों के इस झकोर ने सभी केन्द्रोन्मुख प्रवृत्तियों को उकसाया, विशृंखल और विभाजित समाज को पुनः संगठित करने की भावना एकाधिक सामाजिक आन्दोलनों में प्रकट हुई। आर्य समाज और ब्रह्मसमाज दोनों उस समय क्षेत्रीय आन्दोलन थे, उनका धार्मिक पक्ष-भी नगण्य नहीं था पर विशेष महत्व उनकी सामाजिक भावना का ही था···दोनों ही क्षेत्रों में रूढ़ि-भार से मुक्ति का प्रयत्न था।"

द्विवेदी जी ने भाषा का परिमार्जन कर उसे शुद्धस्वरूप प्रदान किया। इसके मूल में उनकी कर्मठता, दृढ़ता और विचार सम्पन्नता है। उनकी भाषा सम्बन्धी अवधारणाओं को उनके मण्डल के कवियों ने ग्रहण कर उसे फैलाया और प्रतिष्ठित किया।

इनके द्वारा सम्पादित पत्रिका 'सरस्वती' अपने आप में एक संस्था थी। गद्य के साथ पद्य के लिए भी इन्होंने खड़ी बोली की निर्विकार उपयोगिता सिद्ध की। संशोधन के द्वारा अनेक कवियों और लेखकों का पथ प्रशस्त किया। भाषा-परिमार्जन में कामताप्रसाद गुरु, किशोरी दास वाजपेई, गौरी-शंकर मिश्र और चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने द्विवेदी जी का हाथ बटाया।

"द्विवेदी काल में राष्ट्रीय भावना और आदर्श की रूप रेखा बिल्कुल साफ हो गई थी। अब तक स्वामी दयानन्द ने धार्मिक दृष्टि से भारतीय गौरव की स्थापना कर दी थी। ··फलस्वरूप इस काल में प्राचीन संस्कृति का पुनर्जागरण हुआ।··· इस राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ हिन्दी तथा हिन्दू का गौरव बढ़ा।·····भारतेन्दु काल में रूढ़ियों का विरोध करना सुधार तक सीमित था परन्तु अब साहित्य में भावा आदर्शों की सृष्टि हुई और उसमें एक स्वच्छन्द भावना का विकास होने लगा। अब साहित्य में मध्यम वर्ग के साथ-साथ निम्नवर्ग—किसान, पीड़ित एवं दलितों का चित्रण होने लगा।"

द्विवेदी और आर्य समाज के तत्कालीन कर्णधार

आचार्य द्विवेदी ने सरस्वती का सम्पादन सन् १९०३ से १९२० तक किया। द्विवेदी जी कवि, लेखक और सम्पादक के अलावा सुधर समीक्षक भी थे। उनकी समीक्षा शक्ति से गुरुकुल कांगड़ी के संस्थापक युगपुरुष स्वामी श्रद्धानन्द जी भी प्रभावित हुए थे। प० पद्मसिंह शर्मा ने इसकी सूचना द्विवेदी जी को पत्र लिखकर इस प्रकार दी थी—

एस० डी० पी० प्रेस, जलधर सिटी २८-४-०५

"···· हिन्दी शिक्षावली' की समालोचना मैंने ला० मुंशीराम जी (जो इधर की आर्य समाजों के नेता और योग्य पुरुष हैं) को दिखलाई, वे उसे पढ़कर बड़े ही प्रसन्न हुए और कहने लगे कि ऐसे विद्वान, योग्य पुरुष हमें नहीं मिलते।

उनकी प्रेरणा से कुछ हिन्दी पुस्तकें आपकी सेवा में समालोचनार्थ भेजी जाती हैं। उनकी इच्छा है कि 'हिन्दी शिक्षावली' की तरह इनकी समालोचना पुस्तकाकार लिखी जाय। पण्डित जी! बड़ा अनर्थ हो रहा है। ये पुस्तकें यहां के 'कन्या महाविद्यालय' में पढ़ाई जाती हैं और यहां की देखा-देखी आर्यसमाजों के आधीन जितनी कन्या पाठशालाएं हैं, उनमें भी इनका प्रचार है। हां, इस अन्याय का कुछ ठिकाना है। जिन लोगों को शुद्ध नाम तक लिखना नहीं आता वे ग्रन्थकर्ता बने बैठे हैं।" —पद्मसिंह

इसी प्रकार उनके कुछ पत्रों के कतिपय अंश द्रष्टव्य हैं जिनसे 'सरस्वती' और आर्यसमाजियों की परस्पर नोक-झोंक का भी बोध होता है।

अजमेर, २२-९-०८

"····'सरस्वती' के 'वेद' और 'आर्य' के लेखों ने आर्यों में खलबली डाल दी है। ८-१० चिट्ठियां मेरे पास आ चुकी हैं। 'आर्य मित्र' आप पढ़ चुके। मैं भेजने को ही था। 'प्रचारक' में भी एक नोट निकला है।"

—पद्मसिंह शर्मा

ओम् अजमेर, २८-९-०८

"····'प्रचारक' में कोई सारगर्भित बात नहीं थी, सिर्फ सरस्वती' के लेखों का जिक्र करके आर्य प्रतिनिधि सभा से 'सरस्वती' के मुकाबले का पत्र निकालने की अपील की थी। पद्मसिंह

स्वामी श्रद्धानन्द ने ही मिस्टर गांधी को ८ अप्रैल १९१५ में अपनी प्रथम भेंट में 'महात्मा गांधी' कहकर सम्बोधित किया था। इन्होंने सन १९२० में दिल्ली से 'श्रद्धा' नामक साप्ताहिक पत्र निकाला। १९२४ में इन्होंने अपनी आत्मकथा 'कल्याण मार्ग का पथिक' लिखी। हिन्दी की २४ पुस्तकें आपकी प्रकाशित हुईं। आपके हिन्दी-प्रेम के सम्बन्ध में महात्मा गांधी का कथन है—

(क्रमशः)

अनुभव के ५ दिन

श्री ओमप्रकाश गोयल, कोषाध्यक्ष सार्व० सभा

जीवन यदा-कदा मानसिक विश्राम तथा जीवन के कुछ क्षण परिवर्तन हेतु यह निश्चय किया। कि चलो कही एकान्त शान्त वातावरण मे रहा जाय। विवेक जागा और हरिद्वार की यात्रा की जाय। एकान्त के लिये भी कोई सहयोगी चाहिये। विचार करने पर प० वाचस्पति उपाध्याय का नाम मस्तिष्क मे आया। बात करने पर मालूम हुआ, कि उन्हे समयाभाव है तब सार्वदेशिक सभा के सभामन्त्री का नाम पर दृढ निश्चय किया और उनसे साथ चलने का आग्रह किया। कहने मे तो देर लगी परन्तु स्वीकृति क्षण भर मे मिल गई। दिवस चलने का किस दिन रहे यह निश्चय करके कार द्वारा हरिद्वार प्रस्थान किया।

यात्रा का दृष्टिकोण क्या था —

१—दुनियादारी से हटकर मन-मस्तिष्क को शान्त चित्त बनाकर चिन्तन करना।

२—वहा की परिस्थितियो का अवलोकन।

यात्रा पर चलते ही माग मे हरित क्रान्ति के दर्शन, किसान की खुशहाली देख मन प्रसन्न हुआ।

ठीक ११ बजे गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर की पावन भूमि मे कदम रखे। शान्त वातावरण ब्रह्मचारियो का स्वस्थ दर्शन देख मन खिल उठा। थोडी देर ठहरकर गुरुकुल कागडी चले गये। विश्राम गृह में ठहरे और अपने मन अनुकूल व्यवस्था देखकर हृदय गद्‌गद् हो उठा।

व्यवस्थापक श्री सरदार जी से साक्षात्कार किया और उनकी व्यवस्था में पाच दिन रहने का निश्चय किया।

दिनचर्या प्रारम्भ

प्रात काल उठकर एक घण्टा भ्रमण करके फिर दैनन्दिन के कार्य म लगना भ्रमण करते हुए आश्रम से वेद-मन्त्रो की ध्वनि कानों मे पडी। विचार आया कि चलकर बच्चो को देखा जाय।

आश्रम मे पहुचकर निवास, बिस्तर स्वच्छ देखा फिर सन्ध्या-हवन म सम्मिलित हुये। आचार्य प० श्यामसुन्दर जी स्नातक बच्चो मे विद्यमान थे।

वे श्री शास्त्री जी को देखकर प्रसन्न हो उठे मेरा परिचय कराया गया। आचार्य जी ने बच्चो से वेद-पाठ श्लोक उच्चारण आदि सुनवाये। उसके बाद भोजनालय में गये उस दिन प्रात: खीर बनी थी। व्यवस्था को उत्तम देखकर मन आल्हादित हो गया और इच्छा हुई कि क्यो न एकबार ऐसे वातावरण में पुन रहा जाय।

गुरुकुल ज्वालापुर महाविद्यालय मे दुबारा गये और बच्चों के साथ ही बैठकर भोजन किया। सम्भवत ऐसा आनन्द जीवन मे कभी ही आया हो। प्रसन्न चित्त स्वस्थ साफ-सुथरे बच्चों को देखा।

आज एक नया विचार आया कि जो लोग यह कहते हैं कि नई पीढी नही आ रही है उन्हे देखना चाहिये कि इन विद्या मन्दिरों के सचालक किस प्रकार आने वाले बच्चो का निर्माण किन कठिनाइयों में रहकर चला रहे हैं। ऐसे भारत में कितने ही गुरुकुल शिक्षणालय है जहा पर भविष्य की इन निधियो को सुरक्षित करके निर्माण मे लगे हैं।

आशा के क्षण

महर्षि दयानन्द की आकाक्षाओ स्वामी श्रद्धानन्द तथा स्वामी दर्शनानन्द जैसे नाना तपस्वियो ने इन विद्या मन्दिरों का निर्माण करके हजारो स्नातक देश को दिये और आज भी दे रहे हैं।

निराशा दूर हुई

इन पाच दिनो मे आर्यसमाज से हटकर आचार्य श्रीराम शर्मा तथा स्वामी शुकदेवानन्द जैसे वीतराग सन्तो के भी दर्शन किये। रूप भिन्न था पर काम स्वामी दयानन्द का ही वह कर रहे थे। श्रीराम शर्मा आचार्य ने बडी कृपा की, वह किसी को भी दर्शन नही देते है पर आर्यसमाज का नाम सुनकर मिलने का समय दिया। उन्होने विगत आर्यसमाज की चर्चा के साथ भविष्य का नकशा बताया और कहा कि मैं थोडा बदलकर काम वही कर रहा हूँ। ऋषिकेश हरिद्वार और इन गुरुकुलो को देखकर आत्मा को शान्ति मिली कि—

भविष्य अन्धकारमय नही है आशा की किरणें फूटकर प्रकाशमान है।

इस प्रकार ५ दिन के प्रवास से वापस आया भविष्य मे इन्हें देखना है। ●

ज्ञानालोक धरणि पर फैले

अन्धकार का, अज्ञानों का—छाया धरती पर अधियारा।
गहन तिमिर मे भटक रहा है ऋषियो का यह भारत प्यारा ।।
पाखण्डो का कदम बढा है—धर्माडम्बर है अति विस्तृत।
वेद ज्ञान की पावन महिमा किया हमी ने है विस्मृत ।।
वर्ग वाद की जातिवाद की—भावना बढती है कलुषित।
सारा वातावरण धरणि का आज हुआ है घोर प्रदूषित ।।
नैतिकता का पतन हो रहा छाया है अन्याय प्रबल।
द्वेष घृणा की लपटें बढती दानवता बढ़ रही अचल ।।
सदाचार का समरसता का सद्भावो का पथ है बन्द।
प्रेम दया का, सहानुभूति का नहीं कहीं दिखता मकरन्द।
वैदिक सस्कृति सिसक रही है सत्य सनातन धर्म विलुप्त।
मानवता के तत्व समूचे हुए धरा पर अब हैं लुप्त ।।
हाहाकार मचा है जग में फैला है अति अत्याचार।
स्वार्थवाद व भोगवाद का बढ़ता भू पर पापाचार ।।
पशुवत सा मानव का जीवन आज बना महिमण्डल पर।
फैल गया है आज प्रदूषण धरती पर—नभमण्डल पर ।।
आज पुन शिवरात्रि पधारी, लिए हुए स्वर्णिम आलोक।
आओ ! लें हम ज्योति नयी सी—ज्योतिर्मय हो लोकालोक ।।
वेदो का पावन प्रकाश फिर करे प्रकाशित वसुन्धरा।
ज्ञानालोक धरणि पर फैले प्रमुदित हो यह विश्व धरा ।।
सत्य सनातन धर्म वेद का फिर से धरती पर फैले।
कल्मष—कलुषित भाव नष्ट हो—जो मानव मन में मटमैले ।।

—राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति सुलतानपुर (उ० प्र०)

महर्षि दयानन्द और योग

–भगवान देव 'चैतन्य', एम. ए. साहित्यालंकार

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का नाम स्मरण होते ही उनके बहुत से रूप हमारे समक्ष आते है। उन्होने धर्म, राजनीति, साहित्य, भाषा, व्याकरण आदि के साथ-साथ और भी अनेक क्षेत्रो में अपना अमूल्य सहयोग दिया है। वे बहुमुखी प्रतिभा के मालिक थे। इन सब रूपो से भी अलग उनका एक और रूप है जिसका मूल्यांकन आमतौर पर बहुत ही कम होता है। वह रूप है एक महान योगी का। उन्होंने सही स्पष्ट और तर्क की कसौटी पर खरी उतरने वाली ईश्वर के स्वरूप और उसे प्राप्त करने के मार्ग की परिभाषा की है। यह परिभाषा केवल किसी सुनी सुनाई बात या कल्पना की उपज नहीं है बल्कि अनुभव जन्य है। हालांकि उन्होंने पांच महायज्ञों के करने का विधान किया है मगर देव यज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथि यज्ञ तथा भूतयज्ञ केवल बाहरी ही कर्मकाण्ड में आ जाते हैं। व्यक्ति के धार्मिक जीवन के लिए ये परम आवश्यक है मगर ब्रह्मयज्ञ इन शेष समस्त यज्ञो से अधिक महत्वपूर्ण है। क्योंकि यह व्यक्ति की अन्तर्यात्रा का लेखा-जोखा है। इस मानव शरीर का मुख्य लक्ष्य उस परमपिता परमेश्वर को प्राप्त करना ही बताया गया है। इसी के लिए किये गये समग्र प्रयास का नाम ब्रह्मयज्ञ है। इसे व्यक्ति का दुर्भाग्य ही समझा जाना चाहिए कि इसी ओर वह अधिक ध्यान नहीं दे पाता है। व्यक्तिगत स्तर पर बहुत से व्यक्ति सही ढंग से ब्रह्मयज्ञ करते भी होगे मगर सामूहिक रूप से आर्यसमाज ने इस ओर ध्यान नही दिया। इसीलिए न तो महर्षि दयानन्द का और न ही आर्य समाज का योग सम्बन्धी स्वरूप आम चर्चा का विषय बन सका। बल्कि कई बार लोग इस बात पर प्रश्नचिन्ह भी लगाते हैं कि दयानन्द केवल समाज सुधार तक ही सीमित रहे. है। इसका सबसे बड़ा कारण तो यही है कि महर्षि दयानन्द जी एक उच्चकोटि के योगी होते हुए भी प्रदर्शन आदि से बहुत बहुत दूर रहे क्योंकि वे समस्त ऐषणाओं से दूर थे। योग का विषय एक ऐसा विषय है कि छोटी-मोटी जानकारी रखने वाला व्यक्ति भी लोगो को मूर्ख बनाना आरम्भ कर देता है। आज तथाकथित गुरुओ द्वारा योग के नाम पर भला क्या नही किया जा रहा है। ध्यान और योग के नाम पर विदेश और देश में लोगों को खूब लूटा जा रहा है। महर्षि दयानन्द जी एक महान योगी थे मगर वे अपने योगी होने का ढिंढोरा नहीं पीटते थे। उन्होने अठारह घण्टे की समाधि सिद्ध कर रखी थी। उन्होंने श्री ज्वालानन्द पुरी और श्री शिवानन्द गिरी जैसे योगियों से विधिवत योगाभ्यास की शिक्षा दीक्षा ली थी। अपने स्वरचित जीवन चरित्र मे महर्षि जी ने इन महानुभावो का इस बात के लिए बहुत ही आभार भी व्यक्त किया है। वे स्वय अपने योगी होने का प्रदर्शन नही करते थे मगर उनके जीवन की अनेक घटनायें इस बात की मुंह बोलती तसवीरें हैं। प्रयाग में भगवान दास नामक एक व्यक्ति ने छिपकर उनके आसन को धरती से ऊपर उठते हुए देखा था। कई लोगो ने उनसे चमत्कार आदि दिखाने के लिये कहा। मगर उन्होने किसी भी शर्त पर इस बात को स्वीकार नहीं किया मगर योग की सार्थकता और महानता के पक्ष में उन्होने एक बार एक जिज्ञासु को कहा था, 'किन्तु कोई चाहे तो योग रीति सीख सकता है कि जिससे वह स्वयं योगाभ्यास कर सिद्धियों को देख लेवें।" यही नहीं उनसे एक बार एक जिज्ञासु ने पूछा, "महाराज पातञ्जलि योग का विभूति पाद क्या सत्य है ?" योगीराज जी ने इसका उत्तर दिया था, 'आप यूं ही सन्देह करते हैं। योगशास्त्र तो अक्षरश: सत्य है। वह कोई पुराण की सी कल्पना नहीं है, किन्तु क्रियात्मक और अनुभव सिद्ध शास्त्र है। दूसरी विद्याओं में उत्तीर्ण होने के लिए आप लोग कई वर्ष व्यय करते है। इसके लिए यदि आप तीन मास तक मेरे पास निवास करें और मेरे अनुकूल योग क्रियाएं साधें तो आप इस शास्त्र की सिद्धियो का साक्षात स्वयं कर लेंगे।

आर्य समाज ने महर्षि जी द्वारा चलाए गये बहुत से कार्यों को आगे बढ़ाया है मगर इस ओर बहुत ही कम ध्यान दिया है जबकि मैं समझता हूं कि यह कार्य बहुत ही महत्वपूर्ण था। इससे जहां एक ओर आज ठगे जाने वाले लोगों को राहत मिलती थी वहीं दूसरी ओर लोगों को सच्चे योग की शिक्षा भी मिल सकती थी। इससे लोगो के समक्ष दयानन्द जी का योगी का रूप भी सामने आ जाना था। हम दयानन्द के योगी रूप को इसलिए सामने नहीं लाना चाहते हैं कि इससे दयानन्द जी के नाम को और चार चांद लग जाने थे बल्कि इससे कम से कम सही मूल्यांकन हो सकता था और उन लोगों के मुंह पर भी ताला लगना था जो महर्षि के इस रूप से अपरिचित हो हैं। कुछ वर्ष पूर्व रजनीश का एक शिष्य मेरे सम्पर्क में आया तो उसने महर्षि दयानन्द के बारे में ऐसा ही प्रश्न रखा था कि उन्होने ईश्वर की उपासना और ध्यान तथा योग के बारे में कुछ विशेष नहीं किया है। मैंने उस समय स्थिति को स्पष्ट करते हुए उसे कहा था कि जिस प्रकार से तुम्हारे रजनीश और महेश योगी आदि ने योग को उपहास का विषय बनाया है तथा वास्तविक गरिमा को समाप्त किया है वैसा योग का स्वरूप तो दयानन्द ने नहीं दिखाया है मगर जिस प्रकार से धर्म के बारे में उन्होंने दो टूक बातें कही हैं उसी प्रकार ईश्वर को प्राप्त करने के लिए भी उन्होंने केवल मात्र अष्टांगयोग को ही सम्मुख रखा है। अपनी बात की पुष्टि के लिये मैंने उन्हें "ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका" का !!उपासना विषय" नामक अध्याय प्रस्तुत किया। उन महाशय जी ने जब यह अध्याय तथा 'मुक्ति विषय" पढ़ा तो उनकी दयानन्द के प्रति इतनी अधिक रुचि बढ़ी कि उन्होने उनकी लगभग सभी पुस्तकें मंगवाकर पढ़ी और आर्य जगत के अन्य विद्वानो की पुस्तकें भी पढ़ी। आजकल ये मेरे मित्र हैं तथा अस्सी प्रतिशत से भी ऊपर वैदिक धर्मी हैं।

योग की ओर बहुत से कार्य करने की आज भी आवश्यकता है। मैं समझता हूं यदि सचमुच विश्व को आर्य (श्रेष्ठ) बनाना है तो उसके लिये योग की पद्धति को अपनाना होगा। अष्टांग योग की भट्टी में से गुजर कर ही मानव के भीतर दिव्यता का समावेश हो सकता है। मैंने बहुत बार सार्वदेशिक सभा को भी यह सुझाव दिया था कि योगेश्वर देव दयानन्द जी की बलिदान भूमि अजमेर में एक अद्भुत "योगसंस्थान" की स्थापना की जाए जहां पर समस्त विश्वभर के लोग योग पथ पर चलकर अपना जीवन सार्थक करसकें और आज योग केप्रति जितनी भी भ्रान्तियांहैं उनका निराकरण भी हो सके। महर्षि दयानन्द जी ने केवल और केवल मात्र अष्टांग योग को ही ईश्वर प्राप्ति और मुक्ति का साधन माना है। यदि हम लोग योग के सही स्वरूप का प्रचार प्रसार लोगों के समक्ष करेगे तो लोग स्वत: ही ईश्वर तथा उसे प्राप्त करने के बारे मे फैली अनेक प्रकार की भ्रान्तियो से बच जायेंगे और अपने जीवन को सार्थक कर सकेंगे। इस कार्य को प्राथमिकता देने की आवश्यकता है। इसके लिए योग व ध्यान आदि में पारंगत योगियो द्वारा शिविरो आदि का आयोजन भी स्थान-स्थान पर किया जाना चाहिए।

महर्षि दयानन्द जी ने अपना घर छोड़ती बार सच्चे शिव को प्राप्त करने और मृत्युजंयी बनने का जो स्वप्न देखा था उसे सार्थक करने के लिए उन्होने पूरे मनोयोग से तप और निष्ठा के साथ योग पथ का अवगाहन किया और अन्तत: वे मृत्युञ्जयी भी बने और सच्चे शिव कोभी प्राप्त किया। इन उपलब्धियों के पीछे योग की शक्ति ही थी। वे जितना भी कार्य कर पाए, चाहे वह समाज सुधार का था, शास्त्रार्थ का था, वेदभाष्य का था या ग्रन्थ ग्रन्थों की रचना का था, वह आम आदमी को इसीलिए अद्भुत सा लगता है। वास्तव में योगिक शक्ति के कारण ही वे इतने अल्प समय मे ही इतना कुछ कर पाए। उनका स्वप्न था कि समूचे विश्व को आर्य (श्रेष्ठ) बनाया जाए। आज उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज का लक्ष्य भी मुख्य रूप से सही है मगर इसके लिए कुछ ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है। इनमे से अष्टांगयोग का कार्यान्वयन सबसे प्रमुख है। यदि हम सही रूप मे इसे कार्यरूप दे पाए तो वह दिन दूर नहीं जब वास्तव में ही हम समूची मानवता को आर्यत्व (श्रेष्ठता) के पावन धाम तक पहुँचा सकेंगे। दयानन्द बोधोत्सव के पावन पर्व पर इससे बड़ा तथा पावन और कोई भी संकल्प नहीं होगा अत: हम आज यही प्रतिज्ञा लें कि हम सब पहले योगाभ्यास से स्वय को पवित्र करेंगे और फिर समूचे विश्व को।

विश्व को ऋषि दयानन्द की देन सत्यार्थ प्रकाश

डा० सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम०ए०, गोरखपुर

ऋषि दयानन्द का स्मरण आते ही एक अपार श्रद्धा से, हमारा मन अनुप्राणित होने लगता है। दयानन्द प्रकाश का सैनिक था। भगवान् की सृष्टि का प्रदीप्त योद्धा, मनुष्यो और उसके सामूहिक प्रयासो का शिल्पी, समस्याओ का निर्भीक एव सफल समाधान, दृढ आत्मशक्ति एव आत्म-विश्वास सम्पन्न और अजेय था। जब भावी सृष्टि विश्व के महापुरुषो और महात्माओ को देखेगी तब अद्वितीय विद्वत्ता एव महान् कार्यों से सम्पन्न एक व्यक्ति अनुपम तथा अतुलनीय स्पष्टता के साथ इसके सामने आएगा वह दृश्य ऐसा होगा कि अनेको पहाडो की चोटिया ऊपर नीचे जाती हुई, अपने अग प्रत्यगो को हरे वस्त्रो से आखो को मुग्ध कर रही हो परन्तु इनमे एक पर्वत शृम्भ सुदृढ वज्र के समान अपने शिखर की हरियाली के बीच वाले जगत की उच्चता को चूम रहा हो। एक निर्मल निर्झर घाटी को आरोग्यता तथा जीवन के जल से सीच रहा हो। मेरे मन पर दयानन्द का ऐसा ही प्रभाव पडता है। योगी अरविन्द के इन विचारो ने ऋषि दयानन्द को कितना ऊचा उठा दिया है।

ऋषि दयानन्द का जन्म १८२४ ई० मे हुआ था। १८६० ई० में वे सत्य ज्ञान प्राप्त करने के लिये आदर्श गुरु विरजानन्द जी महाराज के पास पहुचे। उस समय उनकी आयु ३६ वर्ष की थी। १८६३ ई० मे उन्होने गुरु से दीक्षा ली। दीक्षा के समय जब वे अर्थभाव के कारण लौग लेकर पहुचे तो गुरु ने कहा 'दयानन्द! इस दक्षिणा से काम न चलेगा। वत्स! मेरी सच्ची दक्षिणा तो यह होगी कि भारत मे दीन-हीन जन अनेक विधि दु खो मे पडे हुए हैं, जाओ उनका उद्धार करो कुरीतियो को दूर करो, आर्य जाति की बिगडी हुई दशा को सुधारो ऋषि शैली को प्रचलित कर आर्ष ग्रन्थो के पठन-पाठन मे लोगो की चित्त वृत्ति को लगाओ और लोगो को सच्चे ईश्वर का भक्त बनाओ।' स्वामीजी ने गदगद कठ से कहा कि गुरुदेव, मै मन सहित अपने आपको आपके चरणो मे अर्पित कर चुका हूँ अत जो आदेश हुआ है, इसका प्राणपण से आजन्म पालन करूगा।

इस प्रण को निभाने के लिए स्वामी दयानन्द ने १८६० ई० से १८६३ ई० तक अर्थात् कुल इन तीन वर्षों मे वास्तविक शिक्षा के अनुसार अपने जीवन का निर्माण शुरु किया और इसके बाद अपने जीवन काल मे उन्होने जितने व्याख्यान दिए, जितने ग्रन्थ लिखे, जितने शास्त्रार्थ किए वह इन तीन साल के अध्ययन का परिणाम था। उनकी इन तीन वर्ष की शिक्षा से मूल्यवान् आधार प्राप्त किया। इन तीन वर्षो के अध्ययन ने उनके जीवन, उनकी विचारधारा मे जो क्रान्ति उत्पन्न कर दी वह भारत के पिछले सौ वर्षों का इतिहास बन गया।

भारत मे दयानन्द ऋषि ने जो क्रान्ति की जो इनकलाब किया उसका मूल स्रोत सत्यार्थ प्रकाश था। सत्यार्थ प्रकाश १८७४ ई० मे लिखा गया। मुरादाबाद के राज जयकृष्णदास जब काशी मे डिप्टी कलक्टर होकर आए उन्ही दिनो ऋषि दयानन्द काशी पधारे। राज जयकृष्णदास ने ऋषि से कहा—'महाराज, आपके व्याख्यान अमृत की वर्षा कर रहे होते हैं पर जिन्हे आपके व्याख्यान सुनने का अवसर नही मिलता उन्हे आपके व्याख्यानो का लाभ नही मिलता। उनके लिए अगर आप ग्रन्थ रूप मे लिख दें तो जनता का बडा उपकार हो। ग्रन्थ के छपने का भार राजा जी ने अपने ऊपर ले लिया। ग्रन्थ छपा।

इस महत्वपूर्ण और विशाल ग्रन्थ को १८ बार पढ़ने के बाद गुरुदत्त विद्यार्थी ने कहा कि हर बार अध्ययन से उन्हे नया रत्न हाथ आता था।' इस ग्रन्थ को लिखने में साढे तीन महीने का समय लगा। जिन ग्रन्थो ने ससार के ढाचे को हिला दिया है, उनमें सत्यार्थप्रकाश के समय यूरोप मे लिखा गया "कैपिटल" ग्रन्थ है। कैपिटल ग्रन्थ जर्मनी के कार्लमार्क्स ने इगलैंड मे बैठकर ३४ वर्ष में लिखा जिसने विश्व मे नवीन आर्थिक दृष्टिकोण को जन्म दिया। किन्तु ऋषि दयानन्द को सत्यार्थप्रकाश केवल ३॥ महीने में लिखा गया जिसने विश्व मे नवीन सामाजिक, धार्मिक राष्ट्रीय दृष्टिकोण को जन्म दिया। इस सत्यार्थप्रकाश मे १७७ ग्रन्थो का हवाला है। इसमे १५४२ वेद मन्त्रो या श्लोको का हवाला दिया गया है। चारो वेद, सब ब्राह्मण ग्रन्थ सब उपनिषद्, छहो दर्शन, अठारह स्मृति सब पुराण, सूत्र ग्रन्थ, गृह्य सूत्र जैन बौद्ध ग्रन्थ बाइबिल, कुरान सबका उद्धरण ही नही रेफरेन्स भी दिया गया है। किस ग्रन्थ मे कौन सा मन्त्र या श्लोक या वाक्य कहा है उसकी सख्या क्या है। यह सब कुछ साढे तीन महीने के ग्रन्थ मे मिलता है। इस ग्रन्थ ने सारे ससार को हिला दिया। इस ग्रन्थ का विस्तृत वर्णन तो सम्भव नही परन्तु इसकी रूप रखा को हम इस प्रकार समझ सकते हैं—

यह चौदह समुल्लासो मे रचा गया है। समुल्लास का अर्थ है विभाग। इसमे १० समुल्लास पूर्वार्ध और ४ उत्तरार्ध मे बने हैं परन्तु अन्त के दो समुल्लास पश्चात् स्वसिद्धान्त भी दिए गये हैं।

—प्रथम समुल्लास मे ईश्वर के ओकारादि नाम की व्याख्या की गई है और ओ३म्' नाम ईश्वर का मुख्य नाम माना गया है।

—द्वितीय समुल्लास मे सन्तानो की शिक्षा का क्रम और विधि का उल्लेख है।

—तृतीय समुल्लास मे ब्रह्मचर्य पठन पाठन व्यवस्था सत्यासत्य के नाम और पढने पढाने की रीति का वर्णन है।

—चतुर्थ समुल्लास मे विवाह और गृहस्थाश्रम का विस्तार से वर्णन है। इस समुल्लास म वर्णाश्रम व्यवस्था का भी वर्णन किया गया है और साम्यवाद आदि से उसकी तुलना भी की जा सकती है।

—पञ्चम समुल्लास म वानप्रस्थ और सन्यास आश्रम की विधि पर प्रकाश डाला गया।

—षष्ठ समुल्लास मे राजधर्म के साथ-साथ राजा कौन हो सकता है? मन्त्री का चुनाव कैसे होता है? उसके क्या कार्य है? उसके कौन-कौन से गुण हैं? राजा की दिनचर्या का वर्णन है। अर्थात् शासन का पूरी तरह वर्णन है। शायद उससे अच्छा प्रजातन्त्र का रूप नही मिल सकता।

—सप्तम समुल्लास मे वेद और ईश्वर विषय की चर्चा की गई है। वेदो का वर्णन करते हुए उसे ईश्वर की विमल वाणी बताया है। और कहा गया है विश्व के सम्पूर्ण साहित्य भडार में किसी ग्रन्थ का अध्ययन मानव के विकास के लिए इतना हितकर तथा ऊचा उठाने वाला नही है जितना वेदो और उपनिषदो का है। ईश्वर क्या है? आत्मा और ईश्वर म क्या अन्तर है? इसका भी उल्लेख है।

—अष्टम समुल्लास में जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय का उल्लेख है

—नवम समुल्लास मे विद्या,अविद्या, बन्धन और मोक्ष की व्याख्या की गई है।

—दशम समुल्लास में आचार, अनाचार और भक्ष्याभक्ष्य विषय पर विचार किया गया है।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

सत्य का प्रचारक-दयानन्द

लेखक : प्रो० रत्नसिंह, गाजियाबाद

अपने पिता द्वारा शिवरात्रि व्रत ग्रहण करने का आदेश प्राप्त कर मूलशंकर ने शिवालय मे जाकर रात्रि जागरण प्रारम्भ किया। कुछ देर पश्चात् मन्दिर के पुजारी और मन्दिर मे आए हुए व्रतधारीगण निद्रा के वशीभूत हो गए परन्तु १४ वर्ष का बालक मूलशंकर (आगे चलकर दयानन्द) अकेला जागता रहा। चूहो को महादेव की पिण्डी के ऊपर दौडते देख कर उसके मन मे यह संशय उत्पन्न हुआ कि यह कैसा प्रबल प्रतापी संसार का स्वामी महादेव है जो अपने ऊपर से चूहा को भी नही हटा सकता। अपने संशय की निवृत्ति के लिए मूलशंकर ने अपने सोते हुए पिता को जगाया और उनसे प्रश्न किया "जो महादेव प्रबल पराक्रमी प्रसिद्ध है—वह थोडे से चूहो को भी भगाने मे समर्थ क्यो न हुए।" पिताने कहा 'निर्बुद्धि बालक यह उस महादेव की केवल प्रति मूर्ति है।" इस घटना का वर्णन करने के बाद महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन चरित्र के लेखक श्री बाबू देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय लिखते है "संसार मे जो सत्य ही चाहते हैं, सत्य के पिपासु होते हैं और जो सत्य के पिपासु कहला कर ही साधारण मानव श्रेणी के बहुत ऊंचे स्तर पर अवस्थित होते हैं वह प्रकृत सत्य को चाहते है सत्य की प्रति मूर्ति नहीं चाहते। इस कारण से मूल जी कृष्ण जी के उत्तर से सन्तुष्ट नही हो सके और उन्होने उसी क्षण उसी स्थान पर बैठ कर निश्चय कर लिया कि जब तक त्रिशूल धारी यथार्थ महादेव को न देखूंगा तब तक किसी प्रकार भी उसकी पूजा न करूंगा। मूलशंकर के इस दृढ निश्चय पर देवेन्द्र बाबू लिखते है।" १३ वर्ष के बालक होते हुए भी सत्य की जिज्ञासा मे मूल जी निर्भीक थे।" इस सत्य की खोज उसकी प्राप्ति और प्रचार के निमित्त दयानन्द ने अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। वह सत्य क्या था उसके बारे मे यहां विचार किया जाता है।

दयानन्द को सत्य कितना प्रिय था और उसके प्रति उनके हृदय मे कितनी आस्था थी इसे सिद्ध करने के लिए कुछ घटनाए प्रस्तुत की जाती हैं।

(१) महर्षि दयानन्द ने २४ जून, १८७७ ई० को लाहौर मे द्वितीय आर्य समाज की स्थापना करने के बाद इसके दस नियमो की रचना की। इन दस नियमो मे प्रथम पाच नियमों में प्रत्येक में सत्य शब्द रखा गया है।

(२) अपने अमर ग्रन्थ का नाम सत्यार्थ प्रकाश' रखा जिसके बनाने का मुख्य प्रयोजन "सत्य-सत्य अर्थ का प्रकाश करना है।"

(३) बम्बई मे प्रथम आर्य समाज की स्थापना के अवसर पर राजकृष्ण ने महर्षि दयानन्द से कहा "आर्य समाज के नियमो मे जीवब्रह्म के एकत्व के सिद्धान्त का समावेश होना चाहिए। पीछे से उसे छोड देंगे। ऐसा करने से हम अनेक लोगो को आर्य समाज की ओर आकर्षित कर सकेंगे।" इसके उत्तर मे महर्षि दयानन्द ने कहा" मैं आर्य समाज को असत्य पर कदापि स्थापित नही करूंगा।

(४) शाहपुरा से जोधपुर जाते समय मार्ग मे महर्षि दयानन्द २८/२९ मई १८८३ को अजमेर मे ठहरे। अजमेर के लोग इस बात को जानते थे कि जोधपुर नरेश एक वेश्या के फन्दे मे है और जोधपुर पहुंच कर महर्षि वहां के नरेश के इस दुराचार की खुले शब्दो मे आलोचना किए बिना रहेंगे नही। इससे महर्षि का अनिष्ट हो सकता है। इसी बात को ध्यान मे रखते हुए कुछ भक्तो ने भावी विपत्ति के भय से महाराज से हाथ जोडकर प्रार्थना की कि भगवन् वह मूल राक्षस का देश है आप वहां न जाइए। इस पर महर्षि ने कहा कि यदि लोग हमारी अंगुलियो की बत्तियां बना कर जला दें तो भी कोई चिन्ता नहीं। मैं वहां जाकर अवश्य ही सत्योपदेश करूंगा।

(५) जोधपुर मे राव राजा तेजसिंह ने डरते डरते महर्षि से निवेदन किया कि भगवन आप महाराजा के चरित्र के विषय मे कुछ न कहे। महर्षि को यह बात बहुत अखरी और उन्होने आवेश के साथ उनसे कहा कि आप मुझसे झूठ बुलवाना चाहते हैं मैं जो कुछ कहूंगा सत्य ही कहूंगा। महर्षि ने ऐसा ही किया और आखिर सत्य भाषण ही उनकी मृत्यु का कारण बना।

जिस सत्य के लिए दयानन्द ने अपने प्राणो की आहुति दे डाली उस सत्य का स्वरूप क्या है इस पर अब विचार करते हैं। सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका मे दयानन्द लिखते हैं जो पदार्थ जैसा है—उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है' सत्यार्थ प्रकाश पचम समुल्लास मे इस बारे मे यह लिखा है 'जो जो पदार्थ जैसा हो—उसको वैसा ही समझना, वैसा ही बोलना और वैसा ही करना भी। इन दोनो वाक्यो को मिला कर पढने से सत्य की परिभाषा के ये अंग बनते है —

(क) जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही समझना।
(ख) जैसा समझा है वैसा ही कहना।
(ग) जैसा कहना वैसा ही लिखना।
(घ) जैसा कहना और लिखना वैसा ही आचरण मे लाना।

कभी कभी ऐसा होता है कि पदार्थ को हम विपरीत समझ लेते हैं जैसे रज्जु को सर्प समझना। यह सत्य नही कहलाएगा। किसी बात के वास्तविक रूप को समझ कर उसे दूसरे के सामने प्रगट करने के लिए वाणी से ठीक वही बात कहना। उसमे छल प्रपंच या धोखा देने की नितान्त भी भावना न होनी चाहिए। किसी पदार्थ का सही-सही बोध और उसका वैसा ही बोलना तथा लिखना मात्र सत्य न कहलाएगा। दयानन्द का सत्य केवल सैद्धान्तिक नही है वरन वह आचारात्मक भी है। इसीलिए किसी वस्तु के यथार्थ ज्ञान को जब तक आचरण मे न लाया जायगा—वह सत्य न माना जाएगा। दयानन्द ने सत्य के आचरण पक्ष पर बहुत बल दिया। 'स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश' मे वे लिखते हैं "जो सत्य है उसको मानना-मनवाना और जो असत्य है उसको छोडना छुडवाना मुझको अभीष्ट है" दयानन्द के सत्य की दूसरी विशेषता उसकी सार्वभौमिकता है। वे लिखते हैं "जो-जो बात सबके सामने माननीय है उसको मानना अर्थात

ऋषि दयानन्द की देन सत्यार्थ प्रकाश

(पृष्ठ ६ का शेष)

—एकादश समुल्लास मे आर्यावर्तीय मतमतान्तर का खण्डन मण्डन विषयक चर्चा है।

—द्वादश समुल्लास मे चार्वाक, बौद्ध और जैन मत का विषय वर्णित है।

—त्रयोदश समुल्लास मे ईसाई मत का विषय है।

—चौदहवे समुल्लास मे मुसलमानो का विषय है और चौदह समुल्लासो के अन्त मे आर्यों के सनातन वेद निहित मन्त्र की विशेषत व्याख्या लिखी है। जिसको स्वामी जी ने यथावत् माना है। आर्यों को भी उसे यथावत् मानना चाहिए।

सत्यार्थ प्रकाश मे स्त्री की स्थिति की समस्या स्त्री शिक्षा की समस्या, कन्या के विवाह की समस्या, दहेज की समस्या, तलाक की समस्या विधवा की समस्या, जातिवाद एक चैलेंज है। इसे मिटाना आवश्यक है।

स्वामी दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश को हम क्रान्तिकारी विचारो का खजाना कह सकते हैं। यह विचार ऐसे हैं जिन्हे कोई इस युग में सोच भी नही सकता था। समाज की रचना जन्म' के आधार पर न होकर कर्म के आधार पर होनी चाहिए। दादा भाई नौरोजी और तिलक ने स्वराज्य शब्द का प्रयोग किया था। स्वामी दयानन्द ने आठवें समुल्लास में लिखा था "कोई कितना ही कहे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है।" हरिजनों की समस्या, गरीबी की समस्या, शिक्षा की समस्या, देशभाषा की समस्या, गौरक्षा की समस्या, चुनाव की समस्या, नसबन्दी की समस्या, भ्रष्टाचार की समस्या, नवयुवकों की समस्या। सत्यार्थप्रकाश सत्य का प्रकाशक है। आइए, इसे अपने जीवन में उतारें।

जैसे सत्य बोलना, सबके सामने अच्छा और मिथ्या बोलना बुरा है।

बहुधा ऐसा कहा जाता है कि सत्य सदैव कड़ुवा होता है। दयानन्द को यह बात स्वीकार्य नहीं है। सत्यार्थ प्रकाश चतुर्थ समुल्लास में मनुस्मृति का श्लोक "सत्यं ब्रूयात प्रियं ब्रूयात न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्..........उद्धृत करके उसका भाषा में अर्थ यह किया है "सदा प्रिय सत्य दूसरे का हितकारक बोले अप्रिय सत्य अर्थात काणे को काणा न बोले। दयानन्द को इस बात से तो सभी सहमत है कि व्यर्थ मे किसी व्यक्ति के साथ कटु वचन न बोले जाय। परन्तु ऐसी भी तो स्थिति उत्पन्न हो जाती है जबकि बिना छल, कपट प्रपंच के विशुद्ध हित की दृष्टि से कही सत्य बात सुनने वाले को चुभ जाती है। इस सम्बन्ध में दयानन्द का मत यही है कि कल्याणकारी वचन यदि सुनने में अप्रिय विदित हो तो उसके कहने में कोई दोष नहीं। सत्य का असली उद्देश्य तो सुनने वाले का हित करना है। ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के उपासना विषय में सत्य के बारे में जो दयानन्द ने योग दर्शन पर व्यास भाष्य को उद्धृत किया है। इस प्रकार है "एष सर्वभूतोपकारार्थं प्रवृत्ता न भूतोपघाताय। यदिचैवमप्य-भिधीयमाना भूतोपघात परैवस्यान्न सत्यं भवेत्, पापमेव भवेत्। अर्थात् यह सर्व प्राणियों के उपकारार्थ हो न कि प्राणियों के हनन के लिए और यदि इस प्रकार कही हुई वाणी प्राणी हनन करने वाली हो जावे तो वह सत्य नहीं पाप ही है।

क्या सदा सत्य व्यवहार करना सम्भव है, इसका उत्तर महर्षि दयानन्द ने व्यवहार भानु में दिया है। पूर्व पक्ष में वे लिखते हैं "क्यों जी! सर्वथा सत्य से तो कोई व्यापार सिद्ध नहीं हो सकता। देखो व्यापार में सत्य बात कह दें तो किसी पदार्थ का विक्रय न हो। हार-जीत के व्यवहारों में मिथ्या साक्षी खड़ी न करें तो हार हो जाए। इत्यादि हेतुओ से सब ठिकानो में सत्य भाषणादि कैसे कर सकते है।" इस प्रश्न का उत्तर रोचक ढंग से देने के लिए लालबुझक्कड़ का दृष्टान्त दिया गया है। इस दृष्टान्त का अभिप्राय लालबुझक्कड़ की महा मूर्खता दर्शाना है। इस दृष्टान्त के बाद दयानन्द लिखते है "जैसे जो मनुष्य महामूर्ख है वे ऐसा समझते है कि सत्य से व्यवहार का नाश और झूठ से ही व्यवहार की सिद्ध होती है। परन्तु जब किसी को कोई एक व्यवहार में झूठ समझ ले तो उसकी प्रतिष्ठा और विश्वास सब नष्ट होकर उसके सब व्यवहार नष्ट होते जाते हैं और जो सब व्यवहारो में झूठ को छोड़ कर सत्य ही कहते हैं उनको लाभ ही लाभ होते हैं—हानि कभी नहीं। ये निश्चित है कि न सत्य से परे कोई धर्म और न असत्य से परे कोई अधर्म है। इससे धन्य वे मनुष्य हैं जो सब व्यवहारों को सत्य से ही करते हैं और झूठ से युक्त कर्म किञ्चिनमात्र भी नहीं करते।

जीवन में सदा सत्य व्यवहार करने से जो लाभ प्राप्त होता है उसके बारे मे दयानन्द लिखते हैं कि "सत्य वादियों को सदा लाभ ही लाभ होता और झूठो की दुर्दशा होकर दिवालाही निकल जाते हैं। इसलिए सब मनुष्यों को अत्यन्त उचित है कि सर्वथा झूठ छोड़ कर सत्य ही से सब व्यवहार करें। जिससे धर्म-अर्थ-काम और मोक्ष को प्राप्त होकर सदा आनन्द में रहे।" (व्यवहारभानु) यही विचार सत्यार्थ प्रकाश दशम् समुल्लास में इस प्रकार व्यक्त किया है "विद्वानो का यही काम है कि सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करके परम आनन्दित होते हैं। वे ही गुण ग्राहक पुरुष विद्वान होकर धर्म, अर्थ; काम और मोक्ष रूपफलों को प्राप्त होकर प्रसन्न रहते हैं।" दयानन्द की दृष्टि में सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है।

(सत्यार्थ प्रकाश भूमिका)

जिस सत्य का जीवन में इतना अधिक महत्व है उसको त्याग कर असत्य की ओर मनुष्य क्यों झुक जाता है? इसका कारण यह है "मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जानने वाला है तदापि अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ; दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य में झुक जाता है। जो मनुष्य पक्षपाती होता है, वह अपने असत्यकोभी सत्य और दूसरे विरोधी मत वाले के सत्य को भी असत्य सिद्ध करने में प्रवृत्त होता है इसीलिए वह सत्य मत को प्राप्त नहीं हो सकता। (सत्यार्थ प्रकाश भूमिका)

इस कथन से यह सिद्ध है कि आत्मा की स्वाभाविक प्रवृत्ति सत्य की ओर हुआ करती है। सत्यार्थ प्रकाश सप्तम् समुल्लास में प्रश्नोत्तर रूप में लिखा है, (प्रश्न) जीव और ईश्वर का स्वरूप, गुण, कर्म और स्वभाव कैसा है। (उत्तर) दोनों चेतन स्वरूप है। स्वभाव दोनों का पवित्र, अविनाशी और धार्मिकता आदि है।" इससे स्पष्ट है कि जीवात्मा का स्वभाव पवित्र और धार्मिकता है। यह हम पहले ही लिख चुके है कि दयानन्द की दृष्टि में सत्य से बड़ा कोई धर्म नहीं है। सत्य की ओर स्वाभाविक प्रवृत्ति होने पर भी फिर हम असत्य को ग्रहण क्यों कर लेते हैं; इस पर दयानन्द कहते हैं "अपनी प्रयोजन की सिद्धि हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषो से।"

स्वार्थ, हठ व दुराग्रह से पृथक् रहने पर भी कई बार मनुष्य के जीवन मे ऐसे अवसर उपस्थित होते हैं जब वह सत्यासत्य का विवेक नहीं कर पाता। सत्य को असत्य और असत्य को सत्य समझ लेता है। ऐसी स्थित में सत्यासत्य की परीक्षा कैसे की जाये? इस सम्बन्ध में दार्शनिक क्षेत्र में भिन्न-भिन्न कसौटिया मिलती हैं। दयानन्द ने भी एक कसौटी उपस्थित की है जिसका प्रतिपादन 'सत्यार्थ प्रकाश' समु० ३, व्यवहारभानु तथा आर्योद्देश्य रतनमाला में किया गया है। यहां हम सत्यार्थ प्रकाश में दी हुई कसौटी उद्धृत करते हैं, जिसके पांच भाग हैं:—

(१) जो जो ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव और वेदों से अनुकूल है। वह वह सत्य और उसके विरुद्ध असत्य है।

(२) जो जो सृष्टिक्रम से अनुकूल वह वह सत्य और जो जो सृष्टिक्रम से विरुद्ध है वह सब असत्य है। जैसे कोई कहे कि बिना माता-पिता के योग से लड़का उत्पन्न हुआ, ऐसा कथन सृष्टि क्रम से विरुद्ध होने से सर्वथा असत्य है।

(३) 'आप्त' अर्थात् जो धार्मिक विद्वान, सत्यवादी, निष्कपटियो का संग उपदेश के अनुकूल है वह वह ग्राह्य और जो जो विरुद्ध वह वह अग्राह्य है।

(४) अपने आत्मा की पवित्रता विद्या के अनुकूल अर्थात् जैसा अपने को सुख प्रिय और दुःख अप्रिय है वैसे ही सर्वत्र समझ लेना कि मैं भी किसी को दुःख वा सुख दूंगा तो वह भी अप्रसन्न और प्रसन्न होगा।

(५) आठों प्रमाण अर्थात प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द ऐतिह्य, अर्था-पत्ति, सम्भव और अभाव।

इस कसौटी के बारे में यह ध्यान देने योग्य है कि सभी श्रेणियो के व्यक्तियो के सन्देह दूर करने की इसमें क्षमता है। वेद की प्रामाणिकता में अनास्था रखने वाले ईश्वरवादियों के लिए प्रथम अर्ध भाग कुछ सीमा तक पर्याप्त है क्योकि बिना वेद ज्ञान के ईश्वर का वास्तविक स्वरूप जानना सम्भव नही है। वेदो में आस्था रखने वालों के लिए कसौटी का प्रथम भाग पर्याप्त हैं। ईश्वर की सत्ता और वेद की प्रामाणिकता को न मानने वाले नास्तिकों के लिए दूसरा भाग पर्याप्त है। सृष्टिक्रम का अर्थ है कारण-कार्य नियम अर्थात बिना कारण के कोई कार्य उत्पन्न नहीं होता। जो व्यक्ति इस नियम मे भी विश्वास न रखता हो उसके लिए चतुर्थ और अन्तिम भाग बहुत महत्वपूर्ण हैं।

आने वाले दौर की धुंधली सी एक तस्वीर देख

यही तो खालिस्तान है

खालिस्तान अभी नहीं बना, यह बन जाए तो वह क्या होगा ? इसका कुछ अनुमान, जो कुछ आजकल पंजाब में हो रहा है उससे लगाया जा सकता है १० जनवरी को जालन्धर में पी ए पी के कार्यालय में पोलीस के एक बहुत बड़े अधिकारी की हत्या कर दी। दो दिन पहले सिमरनजीतसिंह मान ने कहा था कि हमने पुलिस के उन अफसरों की सूची तैयार कर ली है जिन्हें सजा दी जाएगी—इस सूची के मुताबिक अब अमल शुरू हो गया है—श्री गोविन्द राम इसके पहले शिकार हैं—इससे एक दिन पहले पुलिस के एक और अफसर की हत्या करने की कोशिश की गयी थी—जो कुछ भी गोविन्दराम के साथ किया गया वह दूसरों के साथ भी किया जाएगा। अब कमान एक ऐसे व्यक्ति के हाथ में है जो कलतक खुद भी पुलिस का अधिकारी था—इसने इन सब पुलिस अफसरों की सूची तैयार कर ली है जिन्हें इसने समाप्त करना है—पहली सूची में केवल पुलिस के अधिकारी हैं—दूसरी में शायद राजनैतिक लीडर हों और तीसरी में शायद पुराने अकाली भी हों जिनके खिलाफ मान और इसके साथी अकसर बोलते रहते हैं—सूरतगढ़ में मान अकाली दल और बादल अकाली दलमें जो टकराव हुआ है वह आने वाले हालात का दर्पण है इसलिए जो कुछ इस समय पंजाब में हो रहा है उससे हम अनुमान लगा सकते हैं कि खालिस्तान में क्या होगा ? आजकल पंजाब में लूट मार बहुत हो रही है—रात के समय कुछ हथियार बन्द नौजवान इन लोगों के घरों में घुस जाते हैं जिनके बारे में इन्हें यह पता होता है कि इनके पास कुछ धन अवश्य होगा—इन्हें पिस्तोल दिखाकर जो कुछ इनके पास होता है ले जाते हैं—और साथ ही कह जाते हैं कि अगर किसी को बताया तो तुम्हें गोली से उड़ा दिया जाएगा—प्रदेश की हालत इस कदर भयानक शकल अख्तियार कर गए हैं कि दमदमी टकसाल के बाबा ठाकुरसिंह को भी इसकी मजम्मत करनी पड़ी है और कहा है कि यह बन्द होना चाहिए आज सरकारी कार्यालयों में कोई बात गोपनीय नहीं रह सकती—हर कार्यालय में और हर विभाग में वह लोग बैठे हैं जो सारी रिपोर्ट खालिस्तानी हलकों में पहुँचा देते हैं—कलतक समझा जाता था कि पुलिस हालात पर काबू पा लेगी—परन्तु अगर पी-ए-पी के कार्यालय में भी यह सब कुछ हो सकता है जैसा कि १५ जनवरी को जालन्धर में हुआ है तो इसके बाद पुलिस से कोई आशा कैसे की जा सकती है—आज तो पंजाब पुलिस के डायरैक्टर जनरल सरदार के-पी-एस गिल खुद खतरे में हैं वह किसी और को क्या बचाएंगे—इस हालत में पंजाब को बचा सकती है तो सिर्फ सेना लेकिन वर्तमान सरकार से यह आशा नहीं की जा सकती कि वह कोई ऐसा पग उठाएगी—सम्भव तो प्रधानमन्त्री और उपप्रधानमन्त्री में यह फैसला न होगा कि अब पंजाब में क्या करना है—

प्रधानमन्त्री कहेंगे सेना भेज देनी चाहिए उपप्रधानमन्त्री कहेंगे नहीं—पुलिस भेजनी चाहिए प्रधानमन्त्री कहेंगे अच्छा के-पी एस गिल से पूछ लो उपप्रधानमन्त्री कहेंगे वह कौन होता है—मान से पूछो वह भी तो एक पुलिस अधिकारी रह चुका है—जिस देश की यह हालत हो कि प्रधानमन्त्री और उपप्रधानमन्त्री भिन्न २ रास्तों पर चल रहे हों इस देश का भगवान ही मालिक है—लेकिन मैं तो खालिस्तान की बात कर रहा था, मैं समझता हूँ कि खालिस्तान बन गया है नई सरकार इसे नहीं रोक सकती बल्कि इसे रूप में आने को प्रशस्त कर रही है—खालिस्तान के अर्थ हैं खालसा जी का राज—इसमें जो कुछ हो सकता है वह सब हमारे सामने आ रहा है—आज जबकि अकालियों के दो धड़े आपस में लड़ रहे हैं तो यह भी खालिस्तान की [illegible] सिख इतिहास में सदैव यह होता आया है कि जब कभी हुकूमत इनके हाथ में आती है वह आपस में लड़ पड़ते हैं—महाराजा रणजीतसिंह की मृत्यु [illegible]—इनके स्वर्गवास होने के पश्चात् [illegible] लड़ाई आरम्भ हो गयी जो और यह आजतक चल रही है—आज भी [illegible] अकाली दल तीन [illegible] में बंटा हुआ है—[illegible] कुछ समय में [illegible] के भी दो टुकड़े होंगे—जो ऐसी [illegible]

लुधियाना में हुई सिमरनजीतसिंह मान इसमें शामिल नहीं हुआ—वह कहता है कि इसमें शामिल होना तो समय नष्ट करना है क्योंकि इसका कोई उपयुक्त परिणाम नहीं निकलने वाला परन्तु अतिन्द्रपालसिंह ने जेल से जो वक्तव्य दिया है कि अधिक से अधिक लोगों को इसमें भाग लेना चाहिए—इस वक्तव्य के अर्थ हैं कि मान और अतिन्द्रपालसिंह के बीच लड़ाई की बुनियाद रख दी गई है।

जब जब अतिन्द्रपालसिंह जेल से बाहर आएगा उस समय पता चलेगा कि अकाली राजनीति क्या शकल अख्तियार करती है—

जो पंजाब में हो रहा है वह सिर्फ इसलिए कि आज भी पंजाब में खालसा की हुकूमत है केन्द्र में जो सरकार है वह बनी है—इसने एक राज्यपाल वहां भेज दिया है—वह हिलता ही नहीं प्रदेश में कहीं गोलियां चल रही हैं—कहीं बम चल रहे हैं पुलिस के अधिकारी और सिपाही भी मारे जा रहे हैं और सरकार नकरीबन समताज हो चुकी है—

कोई बताए कि खालिस्तान नहीं तो क्या है—अगर खालिस्तान बाकयादा बन भी जाए तो वह इससे उत्तम नहीं हो सकता—कोई रणजीत सिंह पैदा हो जाए वह हिन्दुओं और सिखों को साथ लेकर प्रदेश की हुकूमत चलाने की कोशिश करे तो और बात है वरना इस खालिस्तान में भी हुकूमत की बागडोर तो मान जैसे लोगों के हाथ में रहेगी—वह पुलिस के अफसरों की सूची बनाएंगे वह बादल अकाली दल और बरनाला अकाली दल की सूचियां बनाएंगे वह कह चुके हैं कि जनता का फतवा इन्हें मिल चुका है इसलिए वह जो कुछ भी करना चाहें कर सकते हैं—यह देश का दुर्भाग्य है कि सत्ता ऐसे लोगों के हाथ में आ गयी है जो न देश की राजनीति को समझते हैं न यह जानते हैं कि हुकूमत कैसे चलाई जाती है।

वह राजीव गांधी हो या विश्वनाथ प्रतापसिंह बूटासिंह हो या मुफ्ती मुहम्मद सईद देवीलाल हो या कोई और सब एक ही थैली के चट्टे बट्टे हैं सब मिल कर खालिस्तान की बुनियाद को पुख्ता कर रहे हैं।

(दैनिक प्रताप से साभार)

श्री सिमरनजीत सिंह मान एक विचित्र व्यक्तित्व

—पं० रामचन्द्र राव वन्देमातरम

सिमरनजीत सिंह मान बड़ा प्यारा नाम है। वर्तमान सिख इतिहास का एक विचित्र व्यक्तित्व है। परन्तु मान साहब उन लोगों के लिए एक पहेली बने हुए हैं जो आँखें होते हुए भी देख नहीं पाते।

"मान एक चतुर राजनीतिज्ञ है"

उक्त कथन के सम्बन्ध मे दो मत नहीं हो सकते। जहां अपनी हरकतो से अपने आपको उग्रवादियो का मित्र साबित करना चाहते है। वहीं वर्तमान-केन्द्र सरकार के प्रशंसक होने का भी दम भरते हैं। मान अपनी लम्बी तलवार लिए सर्वोच्च न्यायालय के जज से मिलते हैं। जेल में उसी तलवार के साथ अपने मित्रो से मिलने जाते हैं और अब इस बात की भी घोषणा किए हैं कि वे लोक सभा में अपनी तलवार के साथ ही पहुँचेंगे। यदि ऐसा करने मे कोई रुकावट पैदा की गई तो वे सर्वोच्च न्यायालय का दरवाजा खट खटाने की भी धमकी देते हैं।

यह कहा नहीं जा सकता है कि मान साहब की वर्तमान प्रधानमन्त्री वी० पी० सिंह से किस प्रकार दोस्ती है। परन्तु यह तथ्य है कि मान साहब उनसे अपनी पुरानी मित्रता का होना अपने वक्तव्यो द्वारा जाहिर करते है।

मान अपने वर्तमान वेशभूषा से एक मजहबी सिक्ख होने का भी परिचय देते हैं। श्री भिण्डरावाले को भी अपना आदर्श मानते हैं।

भिण्डरावाले की तुलना युद्ध नीति में विशेषज्ञ क्लास विट्ज के साथ करते हैं। इसका अर्थ क्या होता है, समझना वर्तमान केन्द्र सरकार के लिए सम्भवतः कठिन हो, परन्तु भारत का हर नागरिक यह जानता है कि मान भिंडरावाले के अनुयाई हैं और क्लास विटज के समान युद्धप्रिय हैं।

मान लोकसभा की सदस्यता अपने कुछ साथियो के साथ पाए हैं इस उद्देश्य से कि लोक सभा में खालिस्तान की सम्प्राप्ति के लिए एक मोर्चा बना लें।

अब पंजाब असेम्बली के लिए चुनाव की मांग कर रहे हैं। इसके पीछे जो उनका आशय है, वह सुस्पष्ट है। उग्रवादियो की धमकी और हत्याओं द्वारा पंजाब मे प्रजातन्त्रीय शक्तियो का निर्मूल कर खालिस्तान के समर्थन में सरकारी तन्त्र को हस्तगत करना चाहते हैं।

श्री मान साहब का शिक्षण पाश्चात्य ढग का रहा है। वे आई० पी० एस० की श्रेणी के पोलिस अफसर भी रह चुके हैं। इस नाते फरीदकोट में उन्होंने चार निहंगो को अपने हाथो मार दिया था। वे एक कट्टरपंथी सिख हैं। इस बात से भी पता लगता है कि आपरेशन ब्लूस्टार के बारे में एक पुलिस अफसर होते हुए भी राष्ट्रपति को लिखे गए पत्र मे अपना तीव्र विरोध व्यक्त करते हुए अपने पद से भी त्याग पत्र दिया।

श्रीमान की दृष्टि में वर्तमान खालिस्तान का संघर्ष १९२० में हुए क्रांति का सिलसिला है और तब तक समाप्त नहीं होगा जब तक आनन्दपुर प्रस्ताव के प्रकाश मे पंजाब मे खालिस्तान न बन जाए। उनका यह कहना कहां तक विश्वसनीय है कि उनका खालिस्तान भारतीय संघ का एक अंग बना रहेगा। हमारा नजर मे यह एक धोखा है। "अब जितना मिलता है, वह ले लो बाग के लिए संघर्ष चलाओ।" यही उनकी नीति है। श्री मान का यह अभिनय उग्रवादियों की हत्याओ से भी अधिक खतरनाक है। सरकार और जनता इस तथ्य को समझें।

आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक साप्ताहिक के पाठको से निवेदन है कि जिन सदस्यों ने वार्षिक शुल्क अभी तक कार्यालय मे नही भिजवाया है, वह कृपया शीघ्र वार्षिक शुल्क भेजकर सहयोग प्रदान करें। मनिआर्डर भेजते समय अपना पूरा पता व ग्राहक संख्या लिखने का कष्ट करें। वार्षिक शुल्क २५) रुपए है।

बार-२ वार्षिक शुल्क भेजने की परेशानी से बचने का सरल उपाय, एक बार २५०) रुपए भेज कर सार्वदेशिक साप्ताहिक के आजीवन सदस्य बन सकते हैं।

—व्यवस्थापक सार्व० साप्ताहिक

दयानन्द स्तव

नमामि मूलशंकर दयाऽऽकर गुणाऽऽकरम्।
प्रभाऽऽकर सुधाऽऽकर समस्त लोक भास्करम् ॥१॥

स्व ज्ञान दीप्ति भास्वर गुण प्रभा विकस्वरम्।
स्व बोध रोचिषाऽऽवृत तपो विधूत कल्मषम् ॥२॥

महर्षि वृन्द वन्दित श्रुतेर्निनाद नन्दितम्।
अनाथ नाथमाश्रय सदा सदार्य सश्रयम् ॥३॥

भजे गुणैक मानिनं श्रुति प्रमेक ध्यायिनम्।
भवाऽब्धि दोष नाशिन सुबोध शान्ति दायिनम् ।४॥

तमोऽपह रजोऽपहम् प्रपञ्चमात्म दोष हम्।
तप प्रपूत मानसम् अनार्य वृन्द शासनम् ॥५॥

श्रये गुणोच्चयाऽऽश्रय मनोज्ञ भाव सश्रयम्।
भवाऽब्धि दु:ख वारकम् अशेष दोष हारकम् ॥६॥

श्रुति स्मृति प्रचारक सदाऽऽर्य वर्त्म धारकम्।
दरिद्र दीन तारक गुण प्रभा प्रसारकम् ॥७॥

त्वदङ्घ्रि पद्म सेवन समस्त शोक शोषणम्।
अशेष दोष दूषण सुबोध सिन्धु पोषणम् ॥८॥

गुणाऽऽश्रय प्रभाऽऽश्रय समस्त गौरवाऽऽश्रयम्।
परार्थ त्यक्त विग्रह त्विषा प्रदीप्त विग्रहम् ॥९॥

नमामि लोक लोचन स्फुरत्प्रभा प्ररोचनम्।
सुधी प्रवीर रञ्जक समस्त दोष भञ्जकम् ॥१०॥

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

श्री क्षेत्रपाल जी का साहसिक कार्य

दिनांक ९ फरवरी को एक प्राईवेट बस डी.ई.पी. ४५१८ जो विकासपुरी से लोधी कम्पलैक्स के लिए विभिन्न कार्यालयों के कर्मचारियों को ले जा रही थी ड्राईवर के सन्तुलन खो बैठने के कारण वजीर स्क्वायर चौक के समीप दुर्घटनाग्रस्त हो गई, बस नीचे खड्डे में उलट गई। जिसमें अनेक यात्री मौत से जूझ रहे थे। यात्रियों की चीख पुकार सुनकर साहसी युवक श्री क्षेत्रपाल जिस बस में आ रहे थे, उन्होंने उसे रुकवाकर तुरन्त स्वयं सर्वप्रथम जहाँ बस पड़ी थी वहाँ खाई में कूद पड़े और बस के शीशों को तोड़कर फंसे हुए यात्रियों को निकालना आरम्भ कर दिया, उन्हें देखकर कुछ अन्य व्यक्ति भी उनकी सहायता के लिए आये। यात्रियों को निकालने में श्री शर्माजी को काफी चोटें आईं। परन्तु उन्होंने अपना साहस नहीं छोड़ा और निरन्तर यात्रियों को निकालते रहे। कुछ समय पश्चात सभी यात्री निकाल लिये गये, इस बीच एक यात्री की मृत्यु भी हो गई और काफी व्यक्तियों को चोटें भी आयीं। यदि शर्माजी बचाव कार्य में नहीं जुटते तो न जाने कितने व्यक्ति और मौत के मुंह में चले जाते। श्री शर्मा जी ने ऐसा करके अदम्य साहस का परिचय दिया है। श्री शर्मा जी नई दिल्ली नगरपालिका के नवयुवक विद्यालय लक्ष्मीबाई नगर में कार्यरत हैं। नई दिल्ली नगरपालिका को ऐसे साहसी युवक को पुरस्कृत करना चाहिए श्री शर्मा जी आर्य विचार धारा में पले हैं। उसी का यह प्रतिफल है।



—संवाददाता

अमर रहे शिवरात्रि

उठो ! जगो ! हे आर्य सपूतो ! आया है नव उद्बोधन
आज दिशाओं से आता है नव जागृति का सम्बोधन ॥
किरणें आवृत्ति की लेकर के आया बोध दिवस मनभावन।
ज्योतिर्मान करे मन मानव, अमर रहे शिवरात्रि सुपावन ॥
बोध कराता कर्तव्यों का जड़ में जाग्रत करता बोध।
जड़ता जड़य तथा पाखण्डों का खण्डित करता, करे क्रोध ॥
प्राप्त किया था बोध इसी दिन, ऋषिवर दयानन्द स्वामी ने।
अन्तस्थल का तिमिर भगाया वेदों के उस अनुगामी ने ॥
दयानन्द के सैनिक हम हैं, कर आज हम पावन प्रण।
बोधरात्रि से उद्बोधित हो, ऋषि का हम भी करें अनुकरण ॥
वेद पढ़ें हम, तथा पढ़ाए वेद धरा के जन जन को।
आर्य बनें हम, तथा बनाएं आर्य धर्म के सब जन को ॥
जात पात के, छूत छात के, भावों का कर दें हम त्याग।
मिले सभी को न्याय सहित ही जितना जिसका हो समभाग ॥
वेद पथिक हो जन जन सारा, वेदों के अनुकूल चलें हम।
वेदों की महिमा के गरिमा, कर प्रतिष्ठित भू पर हम ॥
जन-जन में नवजीवन आए, तिमिर हटे अज्ञानों का।
ज्योतिर्मान जगत हो सारा, युग हो नवल विज्ञानों का ॥
कण्व सदृश ऋषियों का पावन, हमें विवेक पुंज प्राप्त हो।
सत्य धर्म की, मानवता की, आभा भू पर पुनः व्याप्त हो ॥
आओ ! वीर सपूतो ! आओ ! बोध दिवस पर लें संकल्प।
वेदामृत की धार धरा पर, बरसाएं हम यही विकल्प ॥

—राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना सुल्तानपुर (उ.प्र.)



आर्य वीर वीरांगनाए डेडियापाडा जिला भरुच गुजरात से चलते हुए दिल्ली पहुचे एव भारत के प्रधानमन्त्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिह् से दिनाक ३१-१-९० को आशीर्वाद लेते हुए के० मोहन (विश्व कीर्तिमान साईकल) के नेतृत्व मे ४ वर्षीया कु० योगिता आर्य

आर्य वीर रूस की यात्रा पर

(पृष्ठ १ का शेष)

कुमारी योगिता आर्य के मुख्य प्रशिक्षक के० मोहन २० घण्टो मे ३६० किलोमीटर साइकल स्कालैण्ड मे चलाकर चीन के वियान ए का रिकार्ड तोड़कर अपना नाम पहले ही गिनिज बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड मे लिखा चुके हैं, जिसके लिए भारत के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री श्री राजीव गाधी ने इन्हे ५००१) पाच हजार एक रुपये की राशि पुरस्कार में दी। एव प्रबन्धक कु० सरस्वती आर्या भारत की प्रथम आर्य महिला हैं जिन्होंने अखिल भारतीय साइकिल भ्रमण किया। इन्हे भी ५००१) से राजीव जी ने पुरस्कृत किया।

बातचीत के दौरान श्री के० मोहन ने बताया कि १६ फरवरी को सुबह तालकटोरा स्टेडियम (दिल्ली) से श्री आनन्दबोध सरस्वती ने इन्हे एव सहयोगी आर्य हितेश बी० पटेल (ब्लैक बैल्ट कराटे) आर्य जितेन्द्र आर० सुरती (ब्लैक बैल्ट कराटे) एव कु० सरस्वती आर्या को हरी झण्डी दिखाकर ४५ दिन यू० एस० एस० आर० (रूस) यात्रा हेतु आशीर्वाद प्रदान करेंगे इससे पहले ये वीर बालक एव आर्य कन्याएं श्री आनन्दबोध जी सरस्वती के विचारो से प्रभावित होकर ३० दिन उत्तर भारत मे आर्य धर्म का प्रचार करेंगे। मोहन जी ने बताया कि इस शान्ति दौड़ मे उन्हे श्री मनसुख भाई देव जी आर्य से दस हजार रुपए की राशि एव गुजरात प्रान्तीय सभा के प्रधान श्री मगलसेन चोपड़ (सूरत) के आदर्श विचारो एव श्री जगदीश आचार्य (जामनगर) वाले के मार्ग दर्शन से दौड पूरी हुई आर्य वीर दल डेडियापाड़ा जिला भरुच (गुजरात) आर्य राष्ट्र के निर्माण के लिये सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तथा गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मगलसेन चोपड़ा के नेतृत्व और आशीर्वाद से इस सकल्प की पूर्ति मे लगे हुए हैं। —सम्पादक

विशेष सूचना

सार्वदेशिक सभा की २५-२-९० की अन्तरंग बैठक स्थगित

माननीय महोदय

सादर नमस्ते !

आपकी सेवा मे निवेदन है कि अनेक सदस्यो के आग्रह पर सभा-प्रधान जी द्वारा आगामी २५-२-९० को होने वाली अन्तरंग सभा की बैठक स्थगित कर दी गई है। अत आप २५-२-९० की बैठक के लिए यहा आने का कष्ट न करें।

सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री



श्री० जीतपाल पहलवान सुपुत्र श्री रतन पहलवान निवासी (मौजपुर घोण्डा, राजकीय उच्चतर माध्यमिक बाल विद्यालय घोण्डा (दिल्ली-५३) कक्षा ९ ए का छात्र है। इनको आर्य वीर दल में श्री० सुरेन्द्रसिंह आर्य (व्यायाम शिक्षक) प्रशिक्षित कर रहे हैं। समस्त दिल्ली व उ० प्र० प्रांत में विद्यालय की ओर से दो वर्ष से लगातार अपने से १० कि० ग्रा० वजन ज्यादा अथवा ७० कि ग्रा वजन मे कुश्ती में सर्वप्रथम आ रहा है तथा राष्ट्रीय खेल मे बगलौर कुश्ती में द्वितीय स्थान ले चुका है।

महर्षि दयानन्द बाल मन्दिर केराकत जौनपुर का वार्षिकोत्सव एवं आर्य वीर दल केराकत जौनपुर का वीर पर्वोत्सव

दिनाक ३१ १ ९० दिन बुधवार को बसन्तोत्सव के शुभ अवसर पर नामक स्कूल केराकत जौनपुर के मैदान मे उक्त दोनो उत्सव समवेत रूप से आर्य समाज केराकत के सरक्षण मे बड़ धूमधाम से मनाया गया।

—कन्हैयालाल वर्मा

आचार्य सत्यप्रिय 'मुनि' का विश्वशांति ग्राम जागृति अभियान

दि० १, २, ३ तथा ४फरवरी को वैदिक आश्रम गिरवर की तिवारा में ४ दिन तक आचार्य सत्यप्रिय मुनि' की अध्यक्षता में विश्वशांति यज्ञ सम्पन्न हुआ जिसमें दिल्ली हरियाणा से सन्यासी वानप्रस्थ और प्रबुद्ध जन पधारे।

—शिवचरण आर्य

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वेदामृत

परिवार निर्भय हो

गृहा मा बिभीत मा वेपध्वम्
ऊर्जं बिभ्रत एमसि।
ऊर्जं बिभ्रद् वः सुमनाः सुमेधा
गृहानैमि मनसा मोदमानः॥
यजु० ३।४१॥

हिन्दी अर्थ—हे परिवार के लोगो ! तुम (किसी प्रकार के भय से) न भयभीत हो और न कांपो। शक्तिशाली तुम लोगों के सहायतार्थ हम आते है। मैं शक्तिशाली, प्रसन्नचित्त, बुद्धि-मान्, मन से आनन्दित होता हुआ तुम्हारे घर आता हूँ।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९० | दयानन्दाब्द १६५ | दूरभाष। ३२७४७७१ | वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे
वर्ष २६ अंक ८] | फाल्गुन शु० ८ सं० २०४६ ४ मार्च १९९०

देश के आंतरिक और बाहरी शत्रुओं से सचेत रहें

शिवरात्रि महापर्व पर ऋषि बोधोत्सव कार्यक्रम सम्पन्न

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का आर्य जनता को आह्वान

नई दिल्ली २३ फरवरी।

दिल्ली आर्य केन्द्रीय सभा द्वारा आयोजित ऋषिबोध समारोह शिवरात्रि महापर्व पर फिरोज शाह कोटला, मैदान में प्रतिवर्ष की भांति बोध पर्व का आयोजन किया गया।

प्रातःकाल विशेष यज्ञ के साथ कार्य प्रारम्भ हुआ। ध्वजारोहण के पश्चात् बच्चों की क्रीड़ा प्रतियोगिता में भिन्न खेलों का आयोजन तथा आर्य कुमारों द्वारा भाषण प्रतियोगिता में बच्चो को पारि-तोषिक वितरण किया गया।

मध्याह्नोत्तर में ऋषिबोध पर्व के कार्य संचालन हेतु पं० शिव कुमार जी शास्त्री ने डा० धर्मपाल की अध्यक्षता में विशेष अधि-वेशन प्रारम्भ हुआ।

प्रमुख वक्ताओं के द्वारा आर्य जनों को सम्बोधन!

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने राष्ट्र को आन्तरिक व बाह्य शत्रुओं से सावधान रहने की आवश्यकता पर बल दिया और राष्ट्र की सांस्कृतिक सामाजिक एव राजनैतिक धरोहर को सुरक्षित रखने वाले आर्य समाज को आगाह किया कि कठिन परिस्थितियों में जागरूक रहने की नितान्त आवश्यकता है।

इसी उद्घोषणा में प० सच्चिदानन्द शास्त्री मन्त्री सभा ने राष्ट्र को विवेकपूर्ण बोध का नारा देते हुए कहा—कि जिन परिस्थितियों में ऋषि ने राष्ट्र को बचाने का सकल्प लेकर विष-पान किया था। आज देश उसी दिशा में जा रहा है। स्वामी जी ने ब्राह्म व क्षात्र शक्ति को चेतना दी थी और राष्ट्र के घातक तत्त्वों से सावधान किया था। शास्त्री जी ने कहा—आज नाग यज्ञ करके तक्षक को मारने की जरूरत है जो तक्षक आज राजनीति की कुर्सी से चिपकर बैठे हैं यदि राजनीतिक उन्हें शरण देकर रक्षा कर रहे हैं तो उन्हें भी इन्द्राय स्वाहा कहकर मारना होगा। आज देश खतरे में है।

श्री वेदप्रताप वैदिक ने मुख्य वक्ता के रूप में आर्यों से आग्रह किया कि पश्चिम योरोप एशिया एवं सारी दुनिया के देशों के सामने जो समस्यायें हैं उनका एक मात्र हल ऋषि दयानन्द की विचारधारा से ही हो सकता है।

श्री क्षितीश वेदालंकार ने ऋषि दयानन्द की राजनैतिक संस्कृतिक सामाजिक धरोहर को सुरक्षित रखने वाले आर्यसमाज को आगाह किया कि आज की कठिन परिस्थितियों में जागरूक रहने की आवश्यकता है।

प्रमुख वक्ता—आर्य नेता श्री पं० रामचन्द्रराव वन्देमातरम् ने अपने वक्तव्य में कहा कि जहां स्वामी दयानन्द वीरता की आत्मो-त्सर्गभावना से ओत-प्रोत थे वहां वे एक सर्व श्रेष्ठ साधू और द्रष्टा भी थे।

द्रष्टा थे इसीलिये हजारों साल बाद पुनः वेदों का सही भाष्य करने में सफल रहे। एक सफल द्रष्टा के नाते व स्वदेश के अधः पतन के कारणों को जानकर उनके निवारणार्थ आर्यों को उपाय सुझाये। आर्यों के इतिहास का सच्चाचित्रलिखकर वर्णाश्रम धर्म को पुनर्जीवित करने के सफल प्रयत्न भी किये।

देश को गुलामी में जकड़ा देखकर पहले से ही स्वतन्त्रा संग्राम को सफल बनाने में सक्रिय रहे।

स्वामी जी एक क्रान्तिकारी व राजनीतिज्ञ थे। आय समाजी भी उसी रास्ते पर चले। देश को आजाद कराने में उनका सक्रिय भाग था।

सत्यार्थप्रकाश का छठा समुल्लास जो राजनीति पर लिखा है वह इस बात को स्पष्ट करता है कि देश को आजाद कराने में स्वामी जी का पूर्ण सहयोग था।

शुद्धि परम धर्म है

यदि महर्षि दयानन्द के आदेशानुसार विधर्मियों को आर्य धर्म की दीक्षा न दी गई तो देश टूट जायेगा

२५ फरवरी (झज्जर) रोहतक। गुरुकुल झज्जर का हीरक जयन्ती समारोह बड़ी धूम-धाम से आयोजित किया गया। इस समारोह में देश के कोने-कोने से आर्य जनों, विद्वानों तथा संन्यासियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के साथ पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव भी इस उत्सव में पधारे। वहां पहुचने पर उनका जोरदार स्वागत किया गया। (शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

सभी शंकराचार्य रामजन्म भूमि विषय पर एकमत

अयोध्या में राम जन्मभूमि स्थान पर मन्दिर निर्माण में सभी कृत संकल्प हैं

नई दिल्ली, २३ फरवरी। वीर अर्जुन के प्रमुख श्री अनिल नरेन्द्र से वार्ता करते हुए पुरी के शंकराचार्य श्री स्वामी निरंजन देव तीर्थ ने भी गर्म तवे पर रोटी सेकने वालो को धिक्कारा।

उन्होंने कहा कि "ये मजनू दूध पीने वाले हैं खून देने वाले नहीं" विश्व हिन्दू परिषद के बारे मे इस तरह का विचार करते हुए पुरी के शंकराचार्य स्वामी निरंजन देव तीर्थ ने कहा है कि श्री राम जन्मभूमि विवाद के पीछे वोट और वोट की गन्दी राजनीति काम कर रही है।

वीरअर्जुन के सम्पादकश्री अनिल नरेन्द्र से बातचीत करतेहुए शंकराचार्य ने कहा हम लोग अयोध्या में श्री रामजन्म भूमि स्थान पर मन्दिर बनाने को कृत संकल्प है। लेकिन इस विवाद को लेकर विश्व हिन्दू परिषद की नीती संदिग्ध तथा भ्रामक हैं। उन्होने कहा कि सभी शंकराचार्य इस मामले में एक मत हैं कि परिषद को धर्म के नाम पर पाखण्ड, ढोंग तथा भ्रमात्मक खेल खेलने का कोई अधिकार नहीं है।

तथाकथित शिलान्यास मे पहली ईंट हरिजन के द्वारा रखे जाने की प्रक्रिया के बाबत शंकराचार्य ने कहा कि परिषद वालो को अपने मन्दिर में हरिजन पुजारी रखना चाहिए, उसी के हाथ से प्रसाद ग्रहण करें तथा उसी के पैरो का अंगूठा धोकर पीयें तब मैं उन्हें सच्चा हरिजन भक्त मानू गा लेकिन धर्म की आड मे जनता को बरगलाना बन्द कर दें।

विश्व हिन्दू परिषद द्वारा अयोध्या में किये गये शिलान्यास की समस्त प्रक्रिया को शास्त्र विरुद्ध मानते हुए शंकराचार्य ने कहा परिषद वाले धर्म का लबादा ओढकर राजनीति गतिविधियो में संलग्न है जिससे भारत का समस्त हिन्दू समुदाय आशंकित तथा भयग्रस्त हो गया है। परिषद के तमाम कार्यक्रमो पर गहरी आपत्ति जाहिर करते हुए उन्होने कहा पहले भूमि पूजन होता है, उसके बाद भूमि पर कब्जा प्राप्त होते ही शिलान्यास के निर्माण आरम्भ होना चाहिए लेकिन परिषद वालो ने बगैर समस्त भूमि पर कब्जा प्राप्त किये ही मन्दिर के लिए चन्दा उगाहना शुरू कर दिया जो संदेहास्पद है तथा शिलान्यास करके निर्माण कार्य बन्द कर देना तो अत्यन्त ही अनैतिक काम है। मात्र शिलान्यास कार्यक्रम पर ही (परिषद के अनुसार) एक करोड २६ लाख रुपये खर्च करना भी फिजूल खर्ची व धन का अपव्यय है। परिषद के क्रियाकलापो पर तीव्र कटाक्ष करते हुए शंकराचार्य ने कहा कि इन तथाकथित हिन्दुओ के ठेकेदारो ने धर्म का सत्यानाश कर डाला।

उन्होने परिषद के शहीदाना मजाक की खिल्ली उडाते हुए कहा कि आज से ४२ वर्ष पूर्व वैरागी साधुओ ने अयोध्या में मूर्ति स्थापित की तथा तब से श्री रामजन्म भूमि स्थान पर अखण्ड कीर्तन चालू है। अतः इस मामले मे सबसे अधिक बलिदान साधुओ का है।

श्री रामजन्म भूमि स्थान पर असली अधिकार साधु महात्मा तथा वैष्णव धर्माचार्यों का है। परिषद वाले तो अपने स्वार्थ के लिये धर्म का दुरुपयोग कर रहे हैं जो कि अक्षम्य अपराध है।

शंकराचार्य ने कहा कि परिषद वालो ने सर्वाधिक धर्म विरुद्ध कार्य किया है। ये लोग भाजपा को वोट दिलाने के लिये यह सब नाटक कर रहे है। इन्हे मन्दिर बनाने मे कोई दिलचस्पी नही है। उन्होने कहा कि चार माह के बाद भी ये मन्दिर नही बनायेगे। देश के साधु समाज का इनके प्रति मोह भंग हो चुका है लेकिन देश के कुछ अखबार वालो की कृपा से ये कायर पर हिन्दुओ के तथाकथित ठेकेदार होने का खोखला दावा करने से अभी भी बाज नही आ रहे हैं। उन्होने कहा कि देश का समस्त धर्मसमुदाय अब इनके खिलाफ खडा हो गया है।

उन्होने कहा कि प्रधानमन्त्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने अपनी मुस्लिम परस्त नीतियो के चलते अपनी कब्र खोद ली है और यदि उन्होने मन्दिर निर्माण मे बाधा डाली तो देश का हिन्दू मतदाता उन्हे कतई नहीं बख्शेगा।

यह पूछे जाने पर कि क्या आप मन्दिर निर्माण कार्य में अपनी तरफ से कोई पहल करगे ? जवाब मे उन्होने कहा राजस्थान के चुरू जिले में देश के सभी धर्माचार्यों का सम्मेलन ७ मार्च को बुलाने जा रहे हैं जिसमें भविष्य के कार्यक्रम की भूमिका तय होगी। स्वयं के विवादास्पद होने के बारे मे शंकराचार्य ने कहा मैं पहले ही कडवा सत्य बोल देता हूं इसलिये ढोंगियो पाखण्डियों की नजर में मैं विवादास्पद हू। उन्होंने कहा कि वे इसकी परवाह नहीं करते कि मेरे कुछ कहने से लोग नाराज हो जायेंगे। समाज के हित मे जो सही है उसे व्यक्त करना मेरा प्रथम नैतिक दायित्व है।

उन्होंने कहा कि कल जामा मस्जिद के शाही इमाम ने अपील की है कि जनता दल को वोट दें क्योंकि विश्वनाथ प्रताप सिंह ने अयोध्या मे श्रीराम मन्दिर निर्माण कार्य नहीं होने दिया। इमाम की इस अपील से देश के हिन्दुओ का भाजपा के प्रति जरूर मोह भंग होगा क्योंकि जिस तरह हिन्दूवाद की लहर पर सवार होकर भाजपाई संसद मे पहुंचे हैं उनकी उपेक्षा उनके लिये घातक सिद्ध हो सकती है। उन्होने कहा कि मुस्लिम परस्त नई सरकार का पिछलग्गू बन कर रहना भाजपा के लिये शर्म की बात है।

शुद्धि परम धर्म है

(पृष्ठ १ का शेष)

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा गुरुकुलो की स्थापना करके आर्य समाज के महात्माओ ने देश का बडा उपकार किया है। इन्हे जितना बढाया जाय, उससे बडा लाभ होगा। राष्ट्रीय चरित्र को ऊंचा उठाने में गुरुकुलो ने बडी भारी भूमिका निभाई है। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने शुद्धि को परम धर्म बताया था। जब देश को विधर्मियो और राष्ट्र विरोधी तत्वो से गम्भीर खतरा पैदा हो रहा है, उस महापुरुष की याद ताजा हो जाती है।

स्वामी जी ने गुरुकुल वासियो तथा प्रबन्धको को धन्यवाद देते हुए ब्रह्मचारियो को आशीर्वाद दिया।

लाक्षागृह का पुनरुद्धार

बरनावा २५ फरवरी। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी ने महानन्द संस्कृत महाविद्यालय के उत्सव पर यज्ञ का शुभारम्भ करते हुए कहा कि लाक्षागृह का पुनरुद्धार आवश्यक है। यही वह स्थल है जहा कौरवो ने पाडवो को जिन्दा जलाने की योजना बनाई थी। ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी ने उस पुरातन स्मृति चिह्न को दो नदियो के संगम पर इस भव्य पहाडी पर जीवित करने का जो प्रयास किया है, वह प्रशंसनीय है। लाक्षागृह की इस तीर्थ स्थली पर ब्र० कृष्णदत्त जी ने गुरुकुल की स्थापना तथा सुन्दर यज्ञशालाओ का निर्माण करके इसके ऐतिहासिक महत्त्व पर चार चांद लगा दिए हैं।

प्रातः आचार्य धर्मेन्द्र जी शास्त्री के पौरोहित्य में स्वामी जी महाराज ५ बडी-बडी यज्ञशालाओ मे यज्ञ प्रारम्भ कराया। क्षेत्र की जनता भारी संख्या मे इस अवसर पर उपस्थित थी। सभा के वरिष्ठ उपप्रधान माननीय प० वन्देमातरम् जी भी लाक्षागृह गए और वहा उनका शानदार स्वागत किया गया था।

वोटों की राजनीति घातक

बरनावा से स्वामी जी तथा प० वन्देमातरम जी सीधे सभा कार्यालय आए और दोपहर को पुन स्वामी जी बालदिवाकर जी हंस को साथ लेकर तिगाव (बल्लभगढ़) गए। दयानन्द विद्यामन्दिर के उत्सव पर स्वामी जी ने जनसमूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि देशवासियो को वोटों की राजनीति से ऊपर उठकर महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तो व मान्यताओ के अनुसार आचरण करना चाहिए।

ज्ञातव्य हो कि प० देवीराम व अन्य अधिकारियो ने एक धर्मस्थली को दयानन्द विद्या मन्दिर का रूप दिया है। —सच्चिदानन्द शास्त्री

बनवासी आर्य महासम्मेलन १७-१८ मार्च

सलखिया, रायगढ़ में हजारों परिवारों का पुनरागमन

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता में भव्य आयोजन

शुद्धि आन्दोलन का शंखनाद

दिल्ली २२ फरवरी।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्कल के प्रधान स्वामी धर्मानन्द जी तथा आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश विदर्भ के प्रधान श्री रमेशचन्द्र श्रीवास्तव के संयुक्त वक्तव्य मे घोषणा की गई है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन मे आगामी १७-१८ मार्च १९९० को सलखिया रायगढ के विशाल मैदान मे हजारो विधर्मी बनवासियो का शुद्धि सस्कार एव बनवासी आर्य महासम्मेलन का भव्य आयोजन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे किया जा रहा है।

इस अवसर पर पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी महाराज स्वामी ओमानन्द जी, महात्मा प्रेम प्रकाश जी, श्री प० पृथ्वीराज शास्त्री आदि आर्यसमाज के मूर्धन्य नेता तथा सन्यासी पधार रहे है।

वक्तव्य मे बताया गया है कि गत नवम्बर १९८८ में सीतापुर मे ६००० ईसाईयो का तथा नवम्बर १९८९ मे बेलखण्ड जिला अकोला मे १६०० स्त्री पुरुषो का पुर्नमिलन शुद्धि सस्कार स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ था।

१७-१८ मार्च को सलखिया रायगढ मे होने वाले बनवासी आर्य महा सम्मेलन मे योगदान देने के लिए स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने देश की जागरूक जनता से अपील की है कि राष्ट्र को तोड़ने वाली साजिशो का सामना करने के लिये सार्वदेशिक सभा द्वारा सचालित धर्म रक्षा महाभियान शुद्धि आन्दोलन की सफलता के लिये दिल खोलकर दान राशि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली-२ के पते पर भेजे।

> सार्वदेशिक सभा ने पूर्ण सहायता देने की घोषणा की है, अत आर्य जन धन तथा वस्त्रो की सहायता भेजकर अनुगृहीत करें।
>
> **राष्ट्र को बचाना है तो-धर्म रक्षा महाभियान की सफलता के लिए दिल खोलकर**
>
> **सहायता करो।**

निवेदक .

पं० वन्देमातरम रामचन्द्रराव	ओमप्रकाश गोयल	सच्चिदानन्द शास्त्री
वरिष्ठ उप प्रधान सभा	कोषाध्यक्ष सभा	मन्त्री सभा

'भूमिका-भास्कर' में महर्षि दयानन्द के सिद्धांतों का विरोध

महर्षि दयानन्द ने चारो वेदो का भाष्य प्रारम्भ करने से पूर्व अपनी वेदार्थ सत्य सिद्धान्तो की भूमिका रूप मे "ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका" को बनाया था। महर्षि की इस अमर कृति पर श्री स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती (दिल्ली) ने व्याख्या के नाम पर "भूमिभास्कर" नामक पुस्तक लिखी है। जिसमे अनेक विषयो पर विभिन्न विद्वानो के स्वतन्त्र विचारो का सग्रह किया गया है, जिनके द्वारा महर्षि के सत्य सिद्धान्तो के मण्डल के साथ साथ स्पष्ट विरोध भी किया गया है। सृष्टि सम्वत् शरीर मे जीवात्मा का स्थान, ब्राह्मण ग्रन्थ तथा अन्य वेद के व्याख्या ग्रन्थो को भी वेद मानने की वकालत, सस्कारो की स्थिति आत्मा मे मानना, वेद को सर्वज्ञानमय ज्ञान के स्रोत न मानना, मगलाचरण के प्रयोजन मे भ्रान्ति, वेदो की वर्णमाला को क्लिष्ट बताना, वैदिक शब्दो के विषय मे भ्रम, मानव की आयु तथा भोग को पूर्वजन्म के कर्मों से ही निश्चित मानकर वेद-मन्त्रो की महर्षि कृत व्याख्या तथा आर्ष-ग्रन्थो का प्रत्याख्यान कर देना, इत्यादि के विषय मे हम पूर्व लेखो मे लिख चुके हैं। क्योकि अब उनकी महर्षि के दूसरे ग्रन्थो की व्याख्या लिखने तथा तदर्थ धन सग्रह की योजना चल रही है, अत हम आर्य जनता को सावधान करना चाहते हैं कि कहीं व्याख्या के नाम पर महर्षि की मान्यताओ को ही धूल मे न मिला दिया जाये। अथवा ये ग्रन्थ विरोधियो के साथ शास्त्रार्थ के समय गले मे अटकी हड्डी के रूप मे न बन जाये, इसलिये सोच-समझकर ऐसे कार्य करने चाहियें।

१—आयु तथा भोग को पूर्व जन्म-कृत कर्मो का ही फल मानते हुए आप लिखते हैं—जाति आयु तथा भोग इस जन्म के फलरूप नही है, उनका कारण प्राग्भवीय अदृष्टजन्मवेदनीय कर्म होगा।

समीक्षा—व्याख्याकार की यह मान्यता महर्षि दयानन्द तथा आर्ष ग्रन्थो के विरुद्ध होने से मान्य नही हो सकती है। क्योकि महर्षि दयानन्द ने ब्रह्मचर्य पालन आदि से ४०० वर्ष तक आयु वर्धन की बात लिखी है। ब्रह्मचर्य का पालन इस दृष्ट जन्म मे करे और आयु का निर्धारण पूर्व जन्मकृत कर्मों से हो जाये यह एक बहुत ही अयुक्ति बात होगी महर्षि ने इसी ग्रन्थ के "वेदसज्ञा विचार" प्रकरण मे 'त्र्यायुष जमदग्ने' मन्त्र की व्याख्या करते हुए लिखा है—'मनुष्य ब्रह्मचर्यादि उत्तम नियमो में त्रिगुण, चतुंगुण आयु कर सकता है अर्थात् ४०० वर्ष तक भी सुखपूर्वक जी सकता है।"

क्या यह आयु लाभ इस जन्म के कर्मों का फल नही है। इसी प्रकार यजुर्वेद के ४०वे अध्याय के तृतीय मन्त्र की व्याख्या मे महर्षि ने इस जन्म के कार्यो का फल इस जन्म मे भी स्वीकार किया है। और योगदर्शनकार तथा उसके भाष्यकार व्यास मुनि ने तो बहुत स्पष्ट करके लिखा है कि इस जन्म के कर्मों का फल आयु व भोग रूप मे इस जन्म मे भी मिलता है। पुनरापि व्याख्याकार ने अपनी भ्रात मान्यता के आधार पर ऋषि-मुनियो के लेख की उपेक्षा की है।

२—और व्याख्याकार ने जहा भी हृदय शब्द देखा,वही मस्तिष्क

(शेष पृष्ठ ४ पर)

साम्प्रदायिक और अलगाववाद असली अपराधी कौन ?

पिछले कई वर्षों से प्रायः समूचे देश मे जो साम्प्रदायिक दंगे हो रहे हैं, और अलगाववाद पनप रहा है, उसके लिए शासक दल के प्रमुख नेता प्रायः हिन्दू समुदाय के भारतीय जनता पार्टी, विश्वहिन्दू परिषद्, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ तथा शिव सेना को दोषी मानकर प्रतिदिन उनको ही भर्त्सना करते रहते हैं, परन्तु साम्प्रदायवाद और अलगाववाद का आरम्भ कब और कैसे तथा किसके द्वारा हुआ, इस पर कभी विचार नहीं किया गया और न उन तत्वों का नाम लिया है, जिन्होंने यहां सम्प्रदायवाद का विष वमन किया और अलगाववाद की आग में देशवासियों को झोंका।

यह एक ऐतिहासिक तथ्य हैं कि जिस समय अखिल भारतीय राष्ट्रीय महासभा कांग्रेस ने विदेशी शासन से देशको मुक्त कराने के लिए यहां राष्ट्रीय एकता का नारा बुलन्द किया था, तब धर्म और सम्प्रदाय के नाम पर दो राजनीतिक दल उभर कर आते थे। उनमे से एक थी हिन्दू महासभा जिसके तत्कालीन मुख्य नेता थे वीरविनायक दामोदर सावरकर और दूसरे थे भाई परमानन्द तथा दूसरा दल था मुस्लिम लीग, जिसके नेता थे, मिस्टर मोहम्मद अली जिन्ना।

इनमे से जहां तक हिन्दू महासभा के नेताओं का सम्बन्ध हैं, वे तो उतने ही उत्कट देशभक्त थे, जितने धर्म परायण। क्या कोई वीर सावरकर की देश के लिए की गई कुर्बानी और अनेक वर्षों तक रही काले पानी की यातनाओं को भूल सकता है, जितना तप; त्याग और कष्ट सहन करने का उदाहरण उन्होंने उपस्थित किया था, अन्य बहुत कम लोगो ने किया हैं। इसी प्रकार भाई परमानन्द जिन्होंने कई वर्षों तक निरन्तर काले पानी की जेल का दण्ड भोगा था, उसकी भी तुलना बहुत थोडे लोगो से ही की जा सकती है। इसके अतिरिक्त उन्होंने और उनके अन्य अनुयायियों ने कभी देश के विभाजन अथवा दो राष्ट्रो के सिद्धान्त की कल्पना भी नहीं की थी। वे आजीवन भारत माता के अनन्य उपासक रहकर सदैव उसी की सेवा करते रहे।

इसके विपरीत श्री जिन्ना साहब ने कट्टर मुसलमानों की संस्था मुस्लिम लीग को पनपाकर उसे इतना विराट और विशाल बनाया कि वह भारत को अपना देश न मानकर साम्प्रदायिक आधार पर पृथक पाकिस्तान राष्ट्र की मांग कर बैठी। इसके लिए उन्होंने सन ४५-४६ मे ऐसा जेहाद छेड़ा कि डायरेक्ट ऐक्शन (सीधी कार्यवाही) का नारा देकर मुस्लिम बहुल प्रदेशों मे नृशंस नरसंहार आरम्भ कर दिया। अन्त मे उनकी उस साम्प्रदायवादी और अलगाववादी नीति के आधार पर अंग्रेजो ने उनको पाकिस्तान के पृथक स्वतन्त्र राज्य की मान्यता दे दी और विवश होकर खान अब्दुल गफ्फार खां और महात्मा गांधी के अतिरिक्त परिस्थिति से बाध्य होकर अन्य कांग्रेसी नेताओं ने भी उसको इस आशा से स्वीकार कर लिया कि मुस्लिम समुदाय का अलग राष्ट्र बन जाने से अब इस देश मे सम्प्रदायवाद और अलगाववाद का अन्त हो जायेगा।

देश के विभाजन के फलस्वरूप दोनो ओर जैसी नृशंस हत्याओं, लूटपाट अपहरण और बलात्कार की घटनाएं घटित हुई थी उनका स्मरण करके अब भी रोमांच हो जाता है, परन्तु फिर भी भारतवासियों ने इस विश्वास पर सन्तोष की सांस ली थी कि अब भविष्य मे उन हृदय द्रावक घटनाओं की कभी पुनरावृत्ति न होगी और कम से कम मुस्लिम लीग जैसी कट्टर साम्प्रदायकवादी पार्टी को यहां अपना अस्तित्व बनाये रखने का अवसर नहीं मिलेगा।

परन्तु देश के दुर्भाग्य से ऐसा हुआ नहीं, भारत के स्वतन्त्र होने और यहां जनतन्त्र कायम हो जाने पर जो चुनावों का सिलसिला आरम्भ हुआ तो हमारे सत्ता लोलुप शासक दल ने चुनाव जीतकर अपना बहुमत बनाये रखने के लिए उसी मृत प्राय मुस्लिम लीगको पुन जीवित करके उसे अपना अभिन्न सहयोगी बना लिया। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण इस बातसे मिलता है कि जब उक्त शासक दलके नेता सम्प्रदायवाद और अलगावबादको बढ़ावा देनेके लिए हिंदुओं के पूर्वोक्त संगठनों भाजपा, रा० स्व० स स, शिव सेना और विश्वहिन्दू परिषद के नामो को तो उल्लेख करते हैं, परन्तु उन्होंने मुस्लिम लीगका नाम आजतक कभी एकबार भी नहीं लिया। इतना ही नही, जब जब-जब और जहां-जहां साम्प्रदायिक दंगे होते हैं, तो उनके लिए भी केवल हिन्दुओंकी संस्थाओं को ही दोषी ठहराया जाता उन्हीं के धार्मिक उत्सवो पर पाबन्दी लगाने की बात कही जाती हैं, तथा उन्ही के नेताओं को दण्ड देने की धमकी दी जाती है, जबकि दिल्ली की जामा मस्जिद के इमाम तथा अन्य मुस्लिम नेताओं द्वारा चाहे जितने भड़काने वाले भाषण दिए जाए पर उनके लिए उफ भी नहीं निकाला जाता, बल्कि उनको अल्पसंख्यक कहकर उनके सारे अपराध माफ कर दिए जाते हैं। सरकार की इस नीति का मुख्य कारण हिन्दू समाज का ऐसा कमजोर होना ही माना जाता है कि जिसको आसानी से दबाया जा सकता हैं। किसी कवि ने कहा भी है :—

नहीं कहें श्रुति-स्मृति नहीं सयाने लोग।
तीन दवावत निर्बल हो, पातक राज रोग॥

यदि शासक लोगो को इस देश के सभी नागरिकों के प्रति निष्पक्ष न्याय करना है तो ईमानदारी से यह निर्णय करना होगा कि सम्प्रदायवाद और अलगाववाद का असली अपराधी कौन हैं और उचित दण्ड उसी को देना होगा।

—युगल किशोर चतुर्वेदी
प्रियंवदा सदन, अशोक मार्ग, जयपुर

भूमिका-भास्कर

(पृष्ठ ३ का शेष)

अर्थ कर दिया और इसी आधार पर जीवात्मा के निवास स्थान रूप हृदय की व्याख्या तो स्पष्ट रूप से महर्षि के लेख से सर्वथा प्रतिकूल ही की है। और अपनी मान्यता की पुष्टि मे अमरकोष जैसे अनार्ष ग्रन्थो को भी प्रामाणिक माना गया है किन्तु एक स्थान पर तो स्वय ही लिखते हैं—

उसी प्रकार शरीर मे भी तीन हृदय हैं—वक्ष. स्थस्त रक्त क्षेपक पिण्ड, नाभि तथा मस्तिष्क।"

परन्तु पूरी व्याख्या मे नाभि हृदय की कोई व्याख्या नही कर सके। इसका कारण स्पष्ट है कि इसकी व्याख्या से महर्षि के लेख की पुष्टि हो जाती और अपनी मानवीय मान्यता धूल मे मिल जाती। और हृदये चित्त संवित्, सूत्रो की भी गलत व्याख्या की है। बाह्य नेत्रादि गोलको को ही इन्द्रिय मानकर सूक्ष्म शरीर के घटक नेत्रादि की सर्वथा उपेक्षा की गई है। परन्तु व्याख्याकार को यह ज्ञान होना परमावश्यक है कि ये बाह्य गोलक तो बल्ब के समान अन्त इन्द्रियो के सम्पर्क होने पर ही प्रकाशक होते हैं और शरीर के साथ ही नष्ट हो जाते हैं और सूक्ष्म शरीर के घटक नेत्रादि तो जन्म जन्मान्तरो मे जीवात्मा के साथ जाते हैं। क्या कभी इस रहस्य पर भी विचार किया है।

१—भू० भा० के ५९० पृष्ठ पर व्याख्याकार लिखते हैं—"जीव अल्पज्ञ हैं, त्रिकालदर्शी नही। परिमित सामर्थ्य वाला होने से उसके आत्मा मे अनेक जन्मों के सभी संस्कार नहीं रह सकते।"

समीक्षा—यह हम पहले भी लिख चुके हैं कि संस्कार चित्त के आश्रय से रहते हैं आत्मा मे नहीं। और चित्त में अनेक जन्मो के संस्कार भी रहते हैं, इस विषय में महर्षि व्यास योगभाष्य मे लिखते हैं—"अनादिकाल-प्रचितस्यासंख्येयस्यावशिष्टस्य कर्मण."(यो० भा० २।१३) अर्थात् चित्त मे अनादि काल से अर्थात् सृष्टि के प्रारम्भ से जितने भी जन्म हुए हैं, उनके असंख्य शेष कर्म चित्त मे रहते हैं। अतः व्याख्याकार का मत चिन्त्य है।

—राजवीर शास्त्री

दयानन्द सेवाश्रम संघ दिल्ली द्वारा स्थापित मध्यप्रदेश की बालवाड़ियों का धर्म शिक्षा शिविर का आयोजन

सेवाश्रम थांदला में २१-१२-८९ से ३०-१२-८९ तक, वेद प्रचार कार्यक्रम के प्रसार के लिए बालवाड़ियों के शिक्षकों का प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में ग्रामीण अंचल की समस्त बालवाड़ियों की सूची तथा अन्य कुछ नवयुवक तथा आश्रम से सम्बन्धित अधिकारी वर्ग तथा सदस्यों ने भाग लिया।

इस शिविर का इस क्षेत्र में सभी पर बड़ा प्रभाव रहा हम लोगों ने अनुभव किया कि श्रीमती प्रेमलता शास्त्री जिस धार्मिक भावना और मधुर वाणी से नव युवको में धर्म के प्रति लगाव और जाति के प्रति आचरण की भावना अपनी वाणी के माध्यम से प्रतिष्ठित करती हैं यदि ऐसी ही कुछ अन्य देवियां अथवा पुरुष प्रचार की यही परम्परा चालू कर दें तो निश्चय है कि इस प्रान्त के पिछड़े वर्ग में ईसाईयों को घुसने का साहस कभी न रहे। इससे जाति में नई चेतना आ जावे। माननीया माताजी ने शिविर की समाप्ति पर शिक्षकों को प्रशस्त-पत्र एवं वस्त्र उपहार तथा कुछ पुस्तकें भेंट स्वरूप दीं। इस अवसर पर सरकारी प्रौढ़ शिक्षा योजना के अधिकारी श्री दुबे माताजी के कार्यक्रम से अत्यन्त प्रभावित हुए और उन्हीं द्वारा पुस्तकों एवं उपहारों का वितरण कराया गया।

दिल्ली से श्रीमती शास्त्री जी के साथ अमर कालोनी लाजपत-नगर के कार्यकर्ता श्री वेदरत्न जी आर्य तथा आदर्श नगर के श्री तेजभानु जी बत्रा ने भी इस अवसर पर यज्ञोपवीत, संध्या, हवन तथा वैदिक भावनाओं को स्वीकार करने उसके प्रसार करने की प्रेरणा सबको दी।

इतना ही नहीं लगभग ५-६ और युवक भी माता जी के स्नेहाशीषों से और पवित्र विचारों से इतने प्रभावित हुए कि उन लोगों ने आदरणीया माता जी के वहां रहने तक उनके साथ रहने का सौभाग्य प्राप्त किया। हम लोगों ने आश्रम से सम्बन्धित होकर आर्यसमाज के प्रचार के लिए संकल्प भी किया।

वनवासियों के दूर-दूर ग्रामों में बालवाड़ियों को देखने व प्रचार करने के लिए मेघनगर के उद्योगपति श्री राठौर जी के सहयोग से माताजी को यात्रा के लिए जीप की सहायता प्राप्त हुई। जीप की सहायता प्राप्त होने के कारण से बालवाड़ियों के निरीक्षण में बड़ी सुविधा रही। जहां जहां भी माताजी जाती ग्रामवासी एकत्रित होकर उनका सम्मान करते और माताजी उन लोगो को धार्मिक कथायें और संस्मरण, भजन कीर्तन आदि के माध्यम से शिक्षा देती। उन लोगों को प्रेरणा देती थी कि वे आगे के भविष्य को जाने और कहती कि राम की परम्परा से हम सब जुड़े हुए हैं, इसलिए सचेत होकर आर्य बनो और अपनी मूल संस्कृति को पहचानो। धर्मान्तरण करने वाले आपके जीवन का विनाश चाहते इसके लिए यदि आप अपने को समझोगे तो कोई भी आपको बहका न सकेगा।

बालवाड़ियों में कई शिक्षकों द्वारा सन्तोष जनक कार्य देखकर माता जी ने १०) मासिक उनका वेतन बढ़ाने का वचन दिया और साथ ही जो लोग बालवाड़ी के लिये झोंपड़े की सहायता चाहते थे उनको १००) रुपये का सहयोग दिया। हम सबकी आंखें गीली हो गईं जब माता जी के द्वारा एक धर्म शिक्षक को पुरस्कार रूप में अपना अटैची उपहार में दिया गया। श्री राठौर जी का जीप ड्राईवर श्री दीपककुमार चौहान श्रीमती शास्त्री जी के स्नेहपूर्ण व्यवहार से इतना प्रभावित हुआ कि माता जी के आदेश पर जीवन पर्यन्त सिगरेट पीने के त्याग का संकल्प लिया। और माता जी ने कहा कि आज से तुम्हारा नाम 'दीपक आर्य' रहेगा : सभी प्रसन्न हुए।

यात्रा में श्री बजाज जी द्वारा संलग्न फोटोग्राफर ने भी त्याग भावना और तपस्या से आकृष्ट होकर माताजी से अपना पारिश्रमिक लेने से इन्कार कर दिया और ३ दिन तक लगातार वह भी भ्रमण में उनके साथ रहा। इस प्रचार कार्य में श्री यशवन्त जी जो एक बैंक एकाउन्टेन्ट थे और श्री दिनेश एक शिक्षक थे अचानक माताजी से मिले और उनके कार्यों में सहयोग के लिए आकर्षित हो गये। माता जी की प्रेरणा पर बालवाड़ी ग्रामों में ग्रामवासियों ने १ रु० मासिक एकत्रित कर आर्यसमाज चलाने का निश्चय किया।

आश्रम थांदला के श्री रामकृष्ण बजाज और परमानन्द जी का प्रेरणापूर्ण सहयोग रहा। इस शिविर से वे सभी प्रभावित थे और उन्होंने घोषित किया कि यदि माता जी कम से कम वर्ष में दो बार ऐसे शिविर यहां लगायें तो निश्चय ही इस क्षेत्र में हिन्दुत्व और आर्यत्व की भावना जाग उठेगी। हमारा क्षेत्र ईसाईयों के चंगुल से अवश्य बचेगा।

श्री बजाज जी ने अपने चि० पुत्र ओमप्रकाश के नवीन गृह का प्रवेश आयोजन भी वैदिक परम्परा के अनुसार आदरणीया शास्त्री जी के हाथों कराया। जब यज्ञ की दक्षिणा का प्रश्न सामने आया तो माता जी ने कहा कि मुझे धन नहीं अपितु श्री बजाज जी के बचे हुए प्रेरणापूर्ण जीवन का वानप्रस्थी के रूप में दान चाहिए। जिससे संघ द्वारा चलाई गई इन बालवाड़ियों का और आश्रमों का श्रम सार्थक हो जाये।

धर्म शिक्षा शिविर एवं बालवाड़ियों के प्रचार कार्य करते हुए आदरणीया माता जी कुशलगढ़ और बांसवाड़ा आश्रम भी गई वहां पर श्री स्वामी जी तथा श्री एम०एम० सिंह वकील द्वारा उनका अभिनन्दन हुआ सबने विश्वास दिलाया कि उनकी प्रेरणा से वेद धर्म का प्रचार प्रसार इस क्षेत्र में और भी बढ़ेगा और हम अपने क्षेत्र से प्रतिवर्ष आस्तिक भावना से पूर्ण योग्य युवकों को आपके पास दिल्ली भेजा करेंगे जिससे वे प्रेरणा पूर्वक शिक्षा प्रचार का कार्य कर सकें।

हम सब युवक बड़ा आश्चर्य अनुभव करते थे कि श्री शास्त्री जी को अपने घर को छोड़कर लगभग एक मास होने वाला है माताजी प्रचार कार्य के लिए रात-दिन संलग्न हैं।

दिनांक २४-८-९० को यहां रतलाम क्षेत्र के कुण्डा गांव में बासवाड़ा रोड पर ग्राम खवासा के श्री विज्या जी खराड़ी भूमि का दान दिया था और कहा कि ऐसा आश्रम माताजी तैयार करा दें जहां बच्चों को चरित्र और धर्म की शिक्षा मिल सके। संघ की ओर से कुण्डा ग्राम में स्वर्गीय महात्मा दयानन्द जी की पुण्य स्मृति में उनके लड़कों तथा भक्तों के सहयोग से एक आश्रम का निर्माण कराया है। जिस पर लगभग ८०-९० हजार रुपये की लागत आई है।

आदरणीया माताजी इस आश्रम में पहुंची और आश्रम के अपूर्ण पड़े कार्य को जो कि श्री जगमोहन जी गुप्ता करा गये थे, उन्होंने उसे पूर्ण कराया। इस आश्रम का उद्घाटन भी श्री बजाज जी एवं जावरा (रतलाम) के डाक्टर कपूर जी के सहयोग से माता जी ने किया। इस अवसर पर यज्ञ के बाद ऋषि लंगर का भी आयोजन हुआ जो उन ग्रामवासियों के लिए विशेष आकर्षण था।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

मत्यर्पणम्

श्री धर्मवीर शास्त्री

व्यचिन्ति तेनायमसौ शिवः किम्

टङ्कारा नामके ग्रामे मौरवी राज्यवर्तिनि ।
शङ्करो मूलपूर्वोऽयमपूर्वो जनिमाप्तवान् ॥

मौरवी राज्यान्तर्गत टंकारा नामक ग्राम में एक विलक्षण बालक ने जन्म लिया जिसका तात्कालिक नाम मूलशंकर था ।

एकाशीत्या युताष्टादशशततमसंवत्सरे विक्रमीये
कृष्णे पक्षे दशम्यामजनि मुनिवरः फाल्गुने पुण्यमासे ।
माताऽस्यासीद् यशोदा व्रतनियमरुचिः कर्षणाख्यः पिता च
राज्याल्लब्धाधिकारोऽधिपतिरपि बृहद्भूमिभागस्य योऽभूत् ॥

विक्रमाब्द १८८१ के फाल्गुन मास की कृष्णपक्षीय दशमी को मुनिवर दयानन्द (पूर्वनाम मूलशंकर) का जन्म हुआ । इनकी माता का नाम यशोदा था एवं व्रतादि में विशेष आस्था रखने वाले कर्षन जी नाम के सज्जन इनके पिता थे जिनको राज्य की ओर से भूमि तथा विशेष अधिकार प्राप्त थे ।

औदीच्यो ब्राह्मणः श्रील. शिवमूर्तेरुपासकः ।
सर्वसम्मानितो यश्च तिवारीत्युपनामकः ॥

श्री कर्षन जी जिनका तिवारी उपाह्व था, औदीच्य ब्राह्मण थे एवं शिव के भक्त थे । इन्हें धन सम्पत्ति एवं सम्मानादि सब कुछ लौकिक ऐश्वर्य प्राप्त था ।

तमात्मसूनुं शिशुमेव सोयमशिक्षयत् स्तोत्रचयं यथेष्टम् ।
अकारयत्तेन यजुश्च कण्ठे भूत्वापि विप्रः खलु सामवेदी ॥

इन्होंने अपने सुपुत्र मूलशंकर को शैशव में ही अनेक स्तोत्र स्मरण करवा दिए थे । यद्यपि वे सामवेदी ब्राह्मण थे, तो भी इन्होंने अपने पुत्र मूलशंकर को यजुर्वेद कण्ठस्थ करा दिया था ।

वर्षेऽष्टमे तस्य पिता तदीयं यज्ञोपवीतं समपीपदद् वै ।
व्रतोपवासार्चनपूजनादेरबूबुधत्तत्त्वममुं च सम्यक् ॥

बालक मूलशंकर ने जब आठवें वर्ष में प्रवेश किया तो इनके पिता ने इनका उपनयन संस्कार सम्पन्न करा दिया तथा व्रत, उपवास एवं पूजन-अर्चन आदि धार्मिक जीवन के अंगो के तत्त्व भी हृदयगम करा दिये ।

रीतिं कुलस्यानुसरन्नमुष्य पितामुमैच्छद् गिरिशे दृढास्थम् ।
शिवक्षपापर्वणि सोमवासं समादिशज्जागरणाय तं सः ॥

कुल परम्परा के अनुसार बालक मूलशंकर को उसके पिता शिव के प्रति आस्थावान् बनाना चाहते थे । तदनुसार उन्होंने बालक मूल को महाशिवरात्रि के अवसर पर उपवासपूर्वक रात्रि-जागरण का आदेश दिया ।

चतुर्दशाब्दीयकिशोरकः क्व क्व चाक्षुनं नैशविनिद्रता च ।
तथापि पित्रा सममेव मूलः समव्रतः शार्वनिकेतमाप्त् ॥

कहां तो चौदह वर्ष का किशोर मूलशंकर और कहां उपवास एवं रात्रि-जागरण ! तो भी वह अपने पिता के साथ बराबर व्रत-धारण के संकल्प से शिवालय में पहुंचा ।

प्रढायुषो ये व्रतिनो निशीथे निद्रावशा तेऽतितरां प्रमाताः ।
अजागरीत् किन्तु शिवैकदृष्टिरेकोऽस्मदीयः शिशुशङ्करोऽसौ ॥

प्रौढ आयु वाले जागरणव्रती अर्धरात्रि आने पर निद्रा के वशीभूत हो गये, किन्तु हमारा चरितनायक शिशु शंकर (मूलशंकर) उस महान् शंकर (शिव) पर दृष्टि गड़ाये जागता रहा ।

जाता तदैका घटनातितुच्छा सिद्धा परं क्रान्ति-विधायिनी या ।
प्रभोरचेतव्य विधिवं वेत्तो भवेन् महत्त्वं स तृणं क्व कस्मै ॥

तब ही एक नगण्य-सी घटना जो आगे चलकर महती क्रान्ति की विधायिका प्रमाणित हुई, घटित हो गई । उस अज्ञेय परमात्मा की कार्यविधि को कौन जान सकता है कि वह कहां किसके लिए तिनके को भी महत्त्व प्रदान करदे ।

तथा हि लिङ्गं खलकोऽधिरुह्य चखाद खाद्यं विहरन् यथेच्छम् ।
चकुस्ततोऽन्ये खलकास्तथैव परं न लिङ्गं किमपि व्यचेतीत् ॥

हुआ यह कि एक चूहा शिव लिंग पर चढ़कर यथेच्छ विहार करता हुआ नैवेद्य खाने लगा । दूसरे चूहे भी उसी प्रकार स्वेच्छया फिरने खाने लगे किन्तु चूहों के इस व्यवहार की शिवलिंग पर कोई प्रतिक्रिया नही हुई ।

विलोक्य साश्चर्यमिदं स्वचित्ते चकार कैशोरवयाः किमेषः ।
स एव शास्त्रोक्तशिवो न कश्चिच्छौर्येतिशेते खलु यं त्रिलोक्याम् ॥

अवस्था से किशोर उस मूलशंकर ने इस घटना को आश्चर्य के साथ देखा और मन में सोचा कि क्या यह वह ही शिव है जिसके समान शौर्य सम्पन्न त्रिभुवन में कोई भी नहीं है ।

व्यचिन्ति तेनायमसौ शिवः किं यो राक्षसान् पाशुपतेन हन्ति ।
यः सर्वदृग् विश्वमखण्डमीष्टे न वार्यतेऽनेन तु मूषकोऽपि ॥

उसने सोचा कि क्या यह वह ही शिव है जो पाशुपतास्त्र से दैत्यों का हनन करता है तथा अपनी सर्वव्यापकता से सम्पूर्ण विश्व का शासन करता है । अरे ! यह तो एक मूषक का भी प्रतिकार नहीं कर पा रहा है ।

निशाम्य प्रश्नं विहितं सुतेन पिता सुतायातितरां चुकोप ।
शशाक पौराणिकपक्षसत्त्वाच्छेत्तुं न शंका स शिशोरपीमाम् ॥

मूलशंकर ने पिता से जब इस विषय में प्रश्न किया तो पिता पुत्र पर बहुत कुपित हुए । अतर्कसंगत पौराणिक धारणाओं से ग्रस्त होने के कारण वह शिशु की भी इस शंका का निराकरण न कर सके ।

कैलाशाद्रौ वसति गिरिशस्तस्य मूर्तिं विधाय ।
पूजां कुर्मः खलु कलियुगे तत्कृपामाप्तुकामाः ।
विश्वस्यासौ पतिरनुपमः शङ्करे शङ्कयालम् ।
मूर्त्ते मूर्त्तावनुभवतु तं नेतरो मुक्तिमार्गः ॥

उन्होंने पुत्र को समझाने का प्रयास किया कि वास्तविक शिव कैलाश पर निवास करता है । कलियुग में उसकी मूर्ति बनाकर उसकी कृपा-प्राप्ति के लिए हम पूजा करते हैं । वह विश्व का अनुपम रक्षक है । ऐसे शंकर के प्रति तुम शंकालु मत बनो ।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनके समकालीन साहित्यकारों पर आर्यसमाज का प्रभाव (२)

—डा० सत्यव्रत शर्मा 'अजेय' उपाचार्य—गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर

"गुरुकुल शिक्षा के क्षेत्र में उनका महान योगदान है······· वे हिन्दी माध्यम से पढ़ाते थे।·········इस विषय में मुझे जो पत्र भेजा था, वह हिन्दी में था।·········१९१३ में हम दोनों उनके प्रिय गुरुकुल में मिले······ प्राचीन भारतीय संस्कृति और हिन्दी के प्रति उनका प्रेम असीम था।"

इसी प्रकार राजर्षि टण्डन भी स्वामी जी के हिन्दी प्रेम के प्रशंसक थे। उनके हिन्दी प्रेम का मूल्यांकन टण्डन जी ने इस प्रकार किया है।

"प्रातःस्मरणीय स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान को अनेक वर्ष हो गये। गुरुकुल की स्थापना कर और उसमें हिन्दी को मुख्य स्थान देकर उन्होंने शिक्षा सम्बन्धी दूरदर्शिता और सच्ची राष्ट्रीयता का रास्ता तथा प्राणिमात्र के लिये सच्चा प्रेम दिखाया था।

स्वामी जी की हिन्दी-सेवाओं को देखते हुये ही हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने उन्हें ६ दिसम्बर सन् १९१३ को भागलपुर में आयोजित हिन्दी साहित्य-सम्मेलन के चौथे अधिवेशन का सभापति बनाकर अपनी कृतज्ञता प्रकट की। इस तथ्य को राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद ने इस प्रकार स्वीकार किया है।

"स्वामी श्रद्धानन्द जी से प्रथम परिचय का सौभाग्य मुझे भागलपुर में हिन्दी साहित्य-सम्मेलन के समय प्राप्त हुआ। उस समय तक स्वामी जी ने सन्यास नहीं लिया था और महात्मा मुन्शीराम जी के नाम से ही प्रसिद्ध थे। गुरुकुल की स्थापना करके राष्ट्रीय पद्धति से शिक्षा देना उन्होंने पहले ही आरम्भ कर दिया था और गुरुकुल का काम भी शान से चल रहा था। आपके हिन्दी प्रेम और हिन्दी सेवा को देखकर ही सम्मेलन ने सभापति के पद पर आपका निर्वाचन किया था। सम्मेलन को जिस उत्तमता के साथ आपने निभाया, वह आज भी अच्छी तरह याद है।"

१ मार्च १९०७ में स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल कांगड़ी से 'सद्धर्मप्रचारक' हिन्दी में निकालना आरम्भ किया। उस समय उर्दू के स्थान पर हिन्दी को प्रतिष्ठित करना बहुत दुरुह था।

"वे ही थे जिन्होंने अपने उर्दू पत्र 'सद्धर्मप्रचारक' को हिन्दी में किया।

हिन्दी साहित्य में तुलनात्मक समीक्षा पद्धति के जनक आचार्य प० पद्मसिंह शर्मा, आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के बहुत निकट थे। इन्होंने १९२८ में अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन मुजफ्फरपुर (बिहार) का सभापतित्व किया। वे प्रथम गुरुकुल कांगड़ी और पश्चात् गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में प्राध्यापक रहे। सन् १९१३ 'बिहारी भाष्य' पर इन्हें मंगलाप्रसाद पारितोषिक मिला। 'पद्म पराग' और 'प्रबन्ध मञ्जरी' इनके प्रमुख ग्रन्थ हैं। इनके सम्पादन में ज्येष्ठ शुक्ल सम्वत् १९६६ वि० को 'भारतोदय' का प्रथम अंक प्रकाशित हुआ।

महाविद्यालय ज्वालापुर के कुलपति आचार्य नरदेव शास्त्री ने भी हिन्दी की सेवा की और आत्मकथा लेखनशैली को एकमया मोड़ दिया। ये देहरादून में हुए हिन्दी साहित्य सम्मेलन के समारोह के स्वागताध्यक्ष थे। ये सम्वत् १९९३ में जयपुर में 'दर्शन-परिषद्' के सभापति भी रहे। इन्होंने अपने लेखन-विषयों के सम्बन्ध में स्वयं लिखा है।

" ·····हमारे लेख प्रायः सभी विषय में रहे, विवादात्मक, संवादात्मक, अनुशीलनात्मक, सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक; वैदिक, धार्मिक, राजनीतिक, यात्रा सम्बन्धी, देश-भ्रमण; विशिष्ट महोत्सव विवरण और वीर चरित्र इत्यादि विषय में रहे।"

प० पद्मसिंह की प्रेरणा से आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी गुरुकुल महाविद्यालय में दो मास तक रहे, पर वे स्वास्थ्यलाभ हेतु यहां आकर ठहरे थे। उन्होंने इस समय यहीं से 'सरस्वती' का सम्पादन कार्य भी सम्पन्न किया था। इसकी सूचना नरदेव शास्त्री ने आत्मकथा के पृष्ठ २८३ पर, 'समय-समय पर महाविद्यालय में जो प्रमुख लेखक या विद्वान आये उनकी नामावली' के अन्तर्गत अंकित की है।

आचार्य महावीरप्रसाद के मन में उक्त सज्जनों के सम्पर्क में आने से आर्य समाज के प्रति उदात्त भाव थे। वे भारत को स्वामी दयानन्द के सपनों का भारत बनाना चाहते हैं। इसी लिए उसे अपने पूर्व स्वरूप का बोध कराते हुये वे कहते हैं—

"जो थे प्रथम्य गुण पहले कीर्तिमान।
विज्ञान और बलि-विक्रम के निधान॥
खोया सभी कुछ न हाय तुम्हें हुआ है।
हे देश! शेष तुममें रह क्या गया है?"

आचार्य द्विवेदी हिन्दी में ही नहीं संस्कृत में भी काव्य-रचना करते थे। गुरुकुल महाविद्यालय की प्रशंसा में उन्होंने पांच पद्य लिखे थे। उदाहरणार्थ एक पद्य प्रस्तुत है।

"छात्रालयो वा पठनालयो वा शिक्षाप्रकारार्थमतप्रचारः।
अदृष्टपूर्वञ्च विलक्षणञ्च, विद्यालयेऽस्मिन् खलु सर्वमेव॥

गुरुकुल महाविद्यालय के संस्थापक स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती की हिन्दी सेवाएं भी अविस्मरणीय हैं। ३० जून सन् १८८९ ई० में इन्होंने काशी जी से 'तिमिर नाशक' पत्र हिन्दी में निकाला। उसका आदर्श वाक्य था।

"स्वारथ भारत में बसो, जीवन भयो अकाज।
खोयो कुमति विलास में, धर्म, जीव भी लाज।"

उन्होंने २५० ट्रैक्ट लिखे जिनका प्रकाशन 'दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रह' शीर्षक से हो चुका है।

द्विवेदी युग के कवि और उन पर आर्य समाज का प्रभाव

द्विवेदी जी के समकालीन कवियों में कुछ का समावेश तो उनके मण्डल के अन्तर्गत है, और कुछ मण्डल से अलग रहकर बृजभाषा तथा खड़ी बोली में पुराने और नये ढंग की रचना करते रहे।

द्विवेदी मण्डल के कवियों में श्रीधर पाठक, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', मैथिलीशरण गुप्त, रामचरित उपाध्याय, प० गिरिधर शर्मा और लोचनप्रसाद पाण्डेय आदि हैं।

द्विवेदी-मण्डल से बाहर के कवियों में राय देवीप्रसाद 'पूर्ण', नाथूराम शर्मा 'शंकर', गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही', स्वामी नारायणानन्द सरस्वती, सत्यनारायण कविरत्न, लाला भगवानदीन, रामनरेश त्रिपाठी, रूपनारायण पाण्डेय, जगदम्बाप्रसाद 'हितैषी' और अनूप शर्मा आदि प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं।

उक्त दोनों ही प्रकार के कवियों पर आर्य समाज का गहरा प्रभाव पड़ा, इनमें से कुछ तो पौराणिक धर्म को छोड़कर आर्य समाजी ही बन गये थे। कुछ प्रमुख कवियों की कविताएं यहां प्रस्तुत हैं, जिन पर आर्य समाज और उसके निर्माताओं का प्रभाव स्पष्ट रूप से प्रतिबिम्बित हुआ है।

श्रीधर पाठक—(१८५९-१९२८ ई०)

हिन्दी काव्य में ये स्वच्छन्दतावाद के प्रवर्तक हैं। इन्होंने लावनी की लय पर गोल्डस्मिथ के 'हरमिट' के आधार पर 'एकान्तवासी योगी' की रचना की।

"स्वर्गीय वीणा" में उन्होंने उस परोक्ष दिव्य संगीत की ओर रहस्यपूर्ण संकेत किया जिसके तालसुर पर यह सारा विश्व नाच रहा है।

लावनी की बहर 'शिकस्ता' में लिखी गई इस स्वर्गीय वीणा की एक

नाव सुविए जो ब्रह्म की माया के दर्शन करा रही है।

'भरे गगन मे है जितने तारे, हुये हैं बदमस्त सब पै सारे।
समस्त ब्रह्माण्ड भर को मानो दो अंगुलियों पर नचा रही है॥"

प० नाथूराम शर्मा 'शंकर'—

इनका जन्म १८५९ ई० मे हुआ। ये पक्के आर्य समाजी थे। इनकी कृतियो मे 'अनुराग रत्न', 'शंकर सरोज' और 'गर्भरण्डा-रहस्य' आदि प्रमुख हैं।

"आर्यसमाज की ओर आकर्षित होने पर इन्होंने वैदिकधर्म के प्रचारार्थ अनेक भावनियां लिखी हैं, यथा आर्यसमाज का अभ्युदय; आर्यसमाज के दस नियम, धर्मवीरो की कर्मवीरता, मायात्मक भावनी: दयानन्द, भावनी: जय दयानन्द, भावनी सामाजिक सुधार आदि।" आर्यसमाज की महत्ता पर शंकर जी की कुछ पंक्तियां द्रष्टव्य हैं—

"निर्दोष धर्म वेदो के भाव, बतावें।
मन्तव्य महापुरुषो के मान, मनावे॥
खोले गुरुकुल, कालेज, अनेक बनावे।
कुलहीन दीन अवनित अनाथ अपनावे॥
प्रतिनिधि-मण्डल का नाम सभी को भाया।
समझो समाज ने क्या-क्या कर दिखलाया॥

हिन्दी-जगत् में शंकर जी के सम्बन्ध में यही प्रबल धारणा है कि:

"...... आप आर्यसमाजी थे, इस कारण आपके काव्य में उपदेशात्मकता की छाप अधिक आ गई।"

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'—

इनका जन्म सन १८६५ ई० में तथा परलोकवास १९४१ ई० में हुआ। 'प्रियप्रवास' इनकी प्रसिद्ध; प्रौढ़, प्रबन्ध रचना है, इनमें राधा की उक्तियों में राष्ट्र-हित सन्निहित है, यथा—

'प्यारे जीवें जगहित करें, गेह चाहे न आवें।'

इनकी दो पंक्तियां देखिए—

"ए भारत का मुख उज्ज्वल करने वालो।
सोचो समझो अपना घर देखो-भालो॥

स्वामी नारायणानन्द सरस्वती—(सन १८८३-१९५४ ई०)

'आनन्द लहरी' इनकी प्रसिद्ध काव्यकृति है।

"वे सदैव स्वर्णिम उषाकाल के उदय के प्रति आशान्वित रहे और उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से पराधीनता के पाश मे जकड़े पड़े भारतीय जन-मानस में नव-जागरण, नवोन्मेष, नवोत्साह एवं नवीन नैतिक, राजनीतिक तथा आध्यात्मिक भावोर्मियो का सुखद संचार किया।"

स्वामी जी की रचनाओ के विषय मे सनेही जी का मत है—

'... आपने अपनी प्रतिभा का सदुपयोग करके ऐसे ग्रन्थों की रचना की जो नीति, धर्म और ज्ञान, वैराग्य, भक्ति सम्बन्धी विविध विषयो से पूर्ण है।"

वेदो की महिमा पर आपने लिखा—

'जो आज भारत निवासियो में,
यथार्थ वेदो का ज्ञान होता।
तो अपने गौरव का ध्यान होता,
तो सर्व देशो मे मान होता॥"

गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही'—

इनका जन्म सन १८८३ मे हुआ। इनकी प्रसिद्ध रचनाओ में—कृषक-क्रन्दन, प्रेम-पचीसी, कुसुमांजलि, त्रिशूल-तरंग आदि प्रमुख हैं। ये 'त्रिशूल' उपनाम से राष्ट्रीय रचना लिखते थे। इनका आग्रह वस्तुपक्ष पर अधिक था। 'सुकवि' मासिक पत्र से इन्होंने सैकड़ो कवियो को पथ दिखलाया। 'स्वदेश' पत्र का आदर्श वाक्य ही लिखा था—

"जो भरा नहीं है भावो से, जिसमें बहती रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं है, पत्थर है, जिसको 'स्वदेश' से प्यार नहीं॥"

ज्ञान और विचार कैसा होना चाहिए, इस सम्बन्ध में आपका कथन है—

जिसा सके जो न सुपित हमको,
वो ज्ञान हम ले के क्या करेंगे।
दिखाये जो आत्मा को ऐना,
विचार हम ले के क्या करेंगे॥"

मैथिलीशरण गुप्त—(सन १८८६ १९६४ ई०)

इन्होंने मानवता के प्रति अपना आग्रह काव्य मे व्यक्त किया है। ये प्राचीनता और नवीनता के बीच की कड़ी हैं। इनकी रचनाओं में 'भारत-भारती' 'साकेत' और 'गुरुकुल' आदि मुख्य हैं। 'साकेत' के अष्टम सर्ग में अस्पृश्यता-निवारण और साम्य की स्थापना के भावों से अन्वित सीता जी की उक्ति देखिए—

"ओ भीली कोल किरात भिल्ल बालाओ।
मैं आप तुम्हारे यहां आ गई आओ॥
मुझको कुछ करने योग्य काम बतलाओ।
दो अहो! नव्यता और भव्यता पाओ।"

प० रामनरेश त्रिपाठी—

इनका जन्म सन १८८९ में हुआ। स्वप्न, पथिक और कविता-कौमुदी आपके प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं। कविता-कौमुदी पर शंकरजी ने यह सम्मति दी थी:

'पण्डित रामनरेश त्रिपाठी।
सुद्दर्शकौमुदम्बु भारि कृति-बाठी॥"

गोरक्षा पर इनकी भावनी का अंश देखिए—

"हे हे हिन्दू, हे आर्य, जैन, सिक्ख।
सुन लो गोमाता की पुकार हे भाई॥
गोमाता का हो गया निरादर जब से।
भारत की काया हुई निकम्मी तब से॥
बल, वीर्य, ज्ञान, गुण उठ गये हैं सबसे।
घट गई आयु, सुख मिले कहो किस ढबसे॥
दारुण दुकाल पड़ने की बारी आई।
सुनलो गोमाता की पुकार हे भाई॥"

रामचरित उपाध्याय ने रामकृष्ण को अवतार न मानकर श्रेष्ठ मानव के रूपमें ही उन्हें स्वीकार किया है। इनकी प्रसिद्ध रचना 'रामचरित चिन्तामणि' है, इसमें आपने सम्पूर्ण कथानक को राजनीतिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है।

गिरिधर शर्मा ने ऋतुवर्णन और प्रभातवर्णन कुछ नये ढंग से किया है। इन्होंने कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ टैगोर के गीतों के अनुवाद में गीतर पाठक के 'शान्त-पटक' में प्रयुक्त अभिनव छन्द के समान एक नवीन छन्द की भी परिकल्पना की थी।

लोचनप्रसाद पाण्डेय ने भारतके देवीरूप पर अनेक सुन्दर रचनाएं लिखीं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज के माध्यम से धर्म और अध्यात्म के क्षेत्र में जो भारतवर्ष की उच्चता प्रतिपादित की, आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी और उनके समकालीन साहित्यकारों, कवियों और लेखको पर उसका विशेषरूप से प्रभाव पड़ा।

धर्म शिक्षा शिविर

(पृष्ठ ५ का शेष)

इस अवसर पर बांसवाड़ा का पकज परिवार जो आर्य समाज की भावनाओ से ओत प्रोत है तथा बांसवाड़ा के स्वामी जी भी उप-स्थित हुए सबने हार्दिक सहयोग दिया और इस कार्य की सराहना की। उन सबका कहना था ऐसे शिविर प्रतिवर्ष अवश्य लगने चाहिए।

एक सज्जन जो सैलाना से पधारे उद्योगपति श्री पूरानन्द जी थे उन्होंने माताजी को ५००) की राशि नकद दी और प्रतिज्ञा की कि माता जी प्रतिवर्ष ऐसा कार्य करती रहें। २५१) रुपये प्रतिवर्ष वह देते रहेंगे और अन्य सहायता भी करेंगे। इस प्रकार इस कार्य क्रम का अन्तिम समारोह कुण्डा आश्रम पर हुआ वहां एकत्रित सभी ग्रामीण बन्धुओ ने संघ की सेवा को सहर्ष स्वीकार किया। फिर माता जी ने वचन दिया कि इस आश्रम में तथा अमरा (रतलाम) के आश्रम में शिक्षको को विशेष सहायता करेंगे, जिससे प्रचार कार्य सार्थक हो। मेरी परमात्मा से प्रार्थना है कि ऐसी देवियां राष्ट्र में यदि धर्म प्रचार के लिए जीवन समर्पित हों तो हमारे राष्ट्र में सदा शिक्षा और धर्म का प्रचार होगा। हमारे राष्ट्र का पिछड़ा वर्ग भी धर्मान्तरण के जाल में न फंसेगा।

सेवक पूर्व सैनिक
—मनमोहन सिंह राठौर

विघटनकारी तत्वों को सख्ती से कुचलने की केन्द्र सरकार से मांग : डा० धर्मपाल

वैदिक संस्कारों व स्वस्थ साहित्य की ओर भावी पीढ़ी को आकृष्ट करना आवश्यक : सूर्यदेव

नई दिल्ली। आर्य समाज लाजपत नगर के ३५ वें वार्षिकोत्सव पर आयोजित राष्ट्र रक्षा सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली प्रदेश के प्रधान डा० धर्मपाल ने पंजाब व जम्मू-कश्मीर में विघटन तत्वों की बढ़ती गतिविधियों पर गहरी चिन्ता व्यक्त करते हुए केन्द्र सरकार को इसे सख्ती से कुचलने की मांग की। आपने राष्ट्रवादी संगठनों को एक ध्वज तले एकत्र होने का आह्वान किया। आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव ने बढ़ते पश्चिमीकरण व अंग्रेजी सभ्यता के खिलाफ मोर्चा लेने के लिए आर्यसमाज को सक्षम होकर वैदिक संस्कारों व प्रेरणादायक स्वस्थ साहित्य के प्रचार के लिए आह्वान किया। आपने अल्पसंख्यकों के तुष्टीकरण की कथित धर्म निरपेक्ष नीति का राजनीतिक दलों को बढ़ावा देने की कड़ी भर्त्सना की।

पूज्यपाद स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती ने अपने अध्यक्षीय भाषण में मानव जीवन में गति-मति-स्थिति कृति की प्रतीकात्मता समझाते हुए उसे राष्ट्र पर उतारने का उल्लेख करते हुए आर्य समाज को राष्ट्र के सजग प्रहरी की भूमिका का सामाजिक दायित्व के प्रति गतिशील रहने का आह्वान किया।

राष्ट्ररक्षा सम्मेलन को सर्वश्री डा० शिवकुमार शास्त्री; वेद प्रकाश श्रोत्रिय, यशपाल सुधांशु, डा० महेश विद्यालंकार, पं० कृष्णकान्त, नरेन्द्र अवस्थी पत्रकार, पुरुषोत्तम लाल शास्त्री, पं० मेघश्याम वेदालंकार आदि ने भी सम्बोधित किया।

९ फरवरी को विशाल शोभा यात्रा निकाली गई जिसमें कई स्थानीय विद्यालयों के छात्र छात्राओं, गुरुकुल के ब्रह्मचारियों; नई व दक्षिण दिल्ली के आर्य समाजों व हजारों नर-नारियों ने भाग लिया। शोभा यात्रा का मार्ग संचालन सर्वश्री डा० धर्मपाल, सूर्यदेव, कृष्णलाल सूरी, पुरुषोत्तम लाल शास्त्री, श्रीमती शकुन्तला आर्या, रामनाथ सहगल, मेघश्याम वेदालंकार, नरेन्द्र अवस्थी आदि कर रहे थे। शोभायात्रा का कई स्थानों पर जलपान आदि से स्वागत किया। 'वैदिक धर्म की जय' 'महर्षि दयानन्द की जय' वेद की ज्योति जलती रहे के गगन भेदी नारों के अतिरिक्त आर्य युवक संगठन "एक धक्का और दो, पाकिस्तान तोड़ दो' का पुरजोश नारा लगा रहे थे।

—मन्त्री आर्यसमाज, लाजपतनगर

'भारतोदय' का हिन्दी संस्करण प्रकाशित

—गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर

मान्यवर,

सादर सप्रेम नमस्ते !

आपको यह सूचना देते हुए हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि आठ दशक पूर्व हिन्दी साहित्य में तुलनात्मक आलोचना पद्धति के जन्मदाता आचार्य पं० पद्मसिंह शर्मा के सम्पादन में गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) से प्रकाशित सचित्र मासिक पत्र "भारतोदय" हिन्दी और संस्कृत की समन्वित धाराओं से सहृदयों के हृदयों को निरन्तर सिक्त करता आ रहा है।

विगत कुछ अवधि से इसका प्रकाशन केवल संस्कृत भाषा में ही हो रहा है। संस्कृत भाषा देववाणी है जो कि विद्वज्जनों के द्वारा ही बोधगम्य है। अतः बहुत से सुधी पाठकों के अनुरोध पर १ फरवरी १९९० से सभा द्वारा इसका हिन्दी संस्करण स्वतन्त्र रूप से प्रकाशित किया जा रहा है। इसके मूल में डा० गौरीशंकर आचार्य, प्रधान सभा एवं डा० प्यारेलाल, मन्त्री सभा, गुरुकुल महाविद्यालय की सत्प्रेरणा निहित है। महाकवि पं० नाथूराम शर्मा शंकर' के शब्दों में यह कहना भी युक्तियुक्त ही होगा कि—

"देख लो लोगो दुबारा भारतोदय हो गया"

आप हिन्दी जगत के जाने माने कवि, लेखक, समीक्षक, एवं पत्रकार हैं और गुरुकुल से किसी न किसी रूप में सदैव सम्बद्ध रहे हैं। अतः आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि इस पत्र की प्राप्ति के १५ दिन के अन्तर्गत आप अपनी शुभकामना कोई नवीन साहित्यिक, सामाजिक, राजनीतिक अथवा धार्मिक रचना (लेख या कविता आदि) सम्पादक भारतोदय गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के पास भेजने की कृपा करें। हम आपके आभारी होंगे।

पुस्तक समीक्षा

भक्तिकुसुमाञ्जलिः

लेखक—डा० कपिल देव द्विवेदी

पृष्ठ संख्या—२२८, मूल्य—५०) रु०

प्रकाशक—विश्वभारती अनुसंधान परिषद

ज्ञानपुर (वाराणसी) २२१३०४

यह ग्रन्थ ईश्वर भक्ति विषयक संस्कृत गीति काव्य है। इसमें १०० भक्ति गीत दिए गए हैं। इन गीतों का आधार वेद, उपनिषद् और गीता आदि सुभाषित हैं। इनको आधार मानकर ईश्वर भक्ति के बारे में लेखक ने अपना चिन्तन और अनुभव दिया है। इसमें ईश्वर को एक परम ब्रह्म माना गया है। उसी की विभूति के रूप में नाना देवी और देवता हैं। ये सभी उसी परम सत्ता को द्योतित करते हैं।

इसमें भक्ति के विविध स्वरूपों का प्रतिपादन किया गया है। अतएव ज्ञान योग, कर्मयोग, ध्यान योग, भक्तियोग आदि से सम्बद्ध गीत दिए गए हैं। इसमें संस्कृत में प्रचलित गेय छन्दों के साथ ही हिन्दी में प्रचलित कुछ छन्दों को अपनाया गया है। अतः यह गीतिकाव्य प्राचीन और नवीन गेय छन्दों का समन्वय है। ये भक्तिगीत स्वान्तः सुखाय लिखे गये हैं। अतः इनमें किसी बाह्य विषय का उल्लेख नहीं है। उद्बोधन के रूप में ईश्वर प्राप्ति के श्रद्धा, भक्ति, चारित्रिक एवं नैतिक गुण कर्मठता, उदात्तभावना, पवित्र मन, शुभ संकल्प और समर्पण आदि गुणों को उपादेय बताया गया है।

इस पुस्तक में संस्कृत गीत के पश्चात लेखक ने सभी गीतों का हिन्दी अनुवाद देकर सुन्दर कार्य किया है। यह पुस्तक सराहनीय है। लेखक ने अत्यन्त श्रम से यह ग्रन्थ लिखा है। छपाई व कागज उत्तम हैं। यह पुस्तक संग्रह योग्य है।

—सच्चिदानन्द शास्त्री

साध्वी जीवन छोड़कर घर बसाने वाली इन्दु प्रभा मां बनी

इंदौर, १९ जनवरी। जैन साध्वी कांड की बहुचर्चित इन्दु प्रभा ने ९ दिसम्बर, ८९ को यहां एक कन्या को जन्म दिया। उसने १९८७ में साध्वी जीवन त्याग कर राधेश्याम पाटीदार के साथ रहना शुरू कर दिया था।

यह संवाददाता जब इन्दु प्रभा से मिलने श्री पाटीदार के मकान पर पहुंचा तो उसने उन दोनों को बहुत प्रसन्नचित पाया। कल बच्ची का नामकरण संस्कार था। नाम रखा गया है रिचा। इन्दु प्रभा व राधे श्याम मेहमानों का स्वागत करने में व्यस्त थे।

राधे श्याम पाटीदार दूधिया गांव का पुश्तैनी मकान छोड़कर यहां किराये के एक मकान मे रहता है। कल रात के नामकरण संस्कार में कुछ चुने हुए लोग ही आमन्त्रित थे। उनमे जैन समाज के कुछ लोग भी थे।

इन्दु प्रभा का, जो जैन साध्वी जीवन छोडने का मन बना चुकी थी, चार जनवरी, १९८७ के दिन सिमरोल घाटे से जब जैन साध्वियां विहार कर रही थी दूधिया गांव के राधेश्याम पाटीदार तथा उसके साथियो द्वारा मोटर साइकिल से कथित अपहरण किया गया था।

१९८७ की इस घटना ने समूचे जैन समाज को उद्वेलित कर दिया था। उसने कथित अपहरण की भर्त्सना की थी तथा ५ जनवरी, ८७ को इन्दौर मे तथा मध्य प्रदेश के कई अन्य नगरो मे बन्द करवाया था।

बाद में इन्दु प्रभा पुलिस संरक्षण मे यहां लाई गई थी जहां उसने स्वीकार किया था कि वह स्वेच्छा से गई है तथा राधेश्याम पाटीदार के संरक्षण में ही रहना चाहती है।

जैन समाज ने यह कहते हुए कि इन्दु प्रभा दबाव में है, सारे मामले की जांच की मांग की। इस पर मध्यप्रदेश सरकार ने एक सदस्यीय जांच आयोग गठित किया जो अभी भी अपना कार्य पूर्ण नहीं कर पाया है।

इन्दु प्रभा ने बताया कि राधेश्याम की पहली पत्नी दूधियां गांव मे ही रहती है। उससे मेरा अच्छा तालमेल है तथा कभी कोई खटपट या तनाव नहीं हुआ। उसने कहा साध्वी जीवन त्यागने के बाद उसने अपने माता-पिता को पत्र लिखा था जिसके उत्तर मे उन्होने मुझे व पाटीदार के परिवार को राजस्थान बुलाया था। मगर हम वहां नही गये। इसके बाद उधर से कोई पत्र नही आया। इन्दु प्रभा ने कहा कि वह साध्वी जीवन छोडने के बाद खुश है पूर्व जीवन से मोह एकदम छूट गया है। जब मैं सिमरोल घाटे से मोटर साइकिल पर बैठी थी तब जरूर घबराई थी। मगर जब पुलिस मुझे इधर-उधर तलाश रही थी मैं नगर के व्यस्ततम राजबाडा चौक पर खरीददारी कर रही थी।

इन्दु प्रभा साध्वी जीवन काल के केश लोचन के कारण घुटे हुए सिर पर विग पहनती है तथा मांग मे सिन्दूर भरती है। साध्वी जीवन मे उसे लट्ठे के सफेद वस्त्र पहनने होते थे और नगे पैर घूमना होता था मगर अब इन्दु प्रभा रंगीन छापे वाली साडी और पैरो मे स्लीपर पहनती है। उसने कहा कि राधेश्याम जल्दी ही बच्ची को लेकर दूधिया गांव जायेंगे तथा अपने बुजुर्गों से आशीर्वाद लेंगे।

राधेश्याम ने, जो पूर्ववत अपनी दूध की दुकान का धंधा करता है बताया कि हमे किसी प्रकार का भय नही है। साध्वी जीवन त्यागने के बाद से इन्दु प्रभा ने संस्कृत मे साहित्य रत्न कर लिया है। वैसे अभी उसका कोई कार्य करने का इरादा नही है।

आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक साप्ताहिक के पाठको से निवेदन है कि जिन सदस्यो ने वार्षिक शुल्क अभी तक कार्यालय मे नहीं भिजवाया है, वह कृपया शीघ्र वार्षिक शुल्क भेजकर सहयोग प्रदान करें। मनिआर्डर भेजते समय अपना पूरा पता व ग्राहक संख्या लिखने का कष्ट करें। वार्षिक शुल्क २५) रुपए है।

बार-२ वार्षिक शुल्क भेजने की परेशानी से बचने का सरल उपाय, एक बार २५०) रुपए भेज कर सार्वदेशिक साप्ताहिक के आजीवन सदस्य बन सकते हैं।

—व्यवस्थापक सार्व० साप्ताहिक

आर्य वन में योग शिविर

आर्य वन विकास फार्म में २२ से ३१ मार्च १९९० तक १० दिवसीय योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया है। शिविर मे क्रियात्मक योग प्रशिक्षण के साथ योग, सांख्य तथा न्याय दर्शन के चुने हुए सूत्रो का अध्यापन भी किया जाएगा। शिविर शुल्क २००) रुपए रखा गया है। जो आर्थिक दृष्टि से असमर्थ होंगे उनको योग्य जानकर शुल्क में छूट दी जा सकेगी। शिविरार्थी १५ मार्च से पूर्व ही अपनी योग्यता, व्यवसाय, आयु सहित आवेदन पत्र निम्न पते पर लिखकर स्वीकृति ले लेवें तथा मन्त्री, आर्य वन के पास शुल्क जमा करवा देवें

—दर्शन योग विद्यालय, आर्य वन विकास--रोजड,
पो० सागपुर, जिला साबरकांठा, गुजरात-३८३३०७

धन जी भाई जी पटेल (प्रधान, आर्यवन)
स्वामी सत्यपति (शिविराध्यक्ष)

गुरुकुल आश्रम आमसेना का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

गुरुकुल का २२ वां वार्षिक महोत्सव पू० स्वामी सत्यप्रकाश जी की अध्यक्षता मे ९ से ११ फरवरी ९० को अत्यन्त समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर राष्ट्र रक्षा गुरुकुल सम्मेलन अत्यन्त सफल रहे, इसकी अध्यक्षता श्री मित्रसेन आर्य रोहतक ने की।

११ फरवरी को खरियार रोड मे नवनिर्मित आर्य समाज मन्दिर का उद्घाटन श्री रमेशचन्द्र श्रीवास्तव प्रधान मध्य प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता मे श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी ने किया। इस अवसर पर नगर के अनेक गणमान्य व्यक्ति एवं आर्य विद्वान उपस्थित थे। स्वामी धर्मानन्द जी के प्रयास से अल्प समय मे ही गुरुकुल ने जो चतुर्दिग उन्नति की है इससे सभी अत्यन्त प्रभावित थे।

भूल सुधार

२८ जनवरी १९९० के सार्वदेशिक साप्ताहिक मे "स्वतन्त्रता प्राप्ति में आर्य समाज का योगदान" लेख प्रकाशित हुआ है उसमे लिखा है कि कांग्रेस की स्थापना से पूर्व ही ऋषि ने अपनी अमर रचना सत्यार्थप्रकाश के छठे समुल्लास में लिखा है। पाठक अब छठे समुल्लास के स्थान पर आठवां समुल्लास पढ़ें।

—सम्पादक

अमर शहीद आचार्य शुकराज का बलिदान समारोह

नेपाल आर्य समाज के तत्वावधान में गत २६ जनवरी ९० को काठमाण्डो मे नेपाल आर्य समाज के अमर शहीद आचार्य शुकराज जी शास्त्री का बलिदान दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर नेपाल के भूमि सुधार तथा व्यवस्था राज्यमन्त्री प्रमुख अतिथि के रूप मे सम्मिलित हुए। समारोह की अध्यक्षता नेपाल आर्य समाज के अध्यक्ष श्री टेक बहादुर रायमांझी ने की।

—मन्त्री, आर्यसमाज नेपाल

आर्य समाज मन्दिर शकरपुर का १६वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मन्दिर डी-११० दयानन्द ब्लाक शकरपुर का १६ वां वार्षिकोत्सव दिनांक २, ३, एवं ४ मार्च को समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। जिसमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री डा० धर्मपाल आर्य तथा मन्त्री श्री सूर्यदेव जी के अतिरिक्त श्री स्वामी स्वरूपानन्द जी, तथा आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान एवं भजनोपदेशक पधार रहे हैं। आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि इस धार्मिक समारोह में परिवार तथा इष्ट मित्रो सहित पधार कर धर्म लाभ उठायें। मुख्य कार्यक्रम ४ मार्च को होगा।

ऋषिलंगर ४ मार्च रविवार को दोपहर १.३० बजे।

—पतराम त्यागी
मन्त्री, आर्य समाज शकरपुर

चुनाव

आर्य समाज धौरी को सुचारु रूप से संचालित करने के लिए वर्ष १९८९ से १९९० के लिए नीचे लिखित पदाधिकारियों का चुनाव सर्वसम्मति से किया गया।

१ प्रधान—श्री सूर्यदेव मिश्र, २ मन्त्री—श्री दयानन्द शर्मा ३. कोषाध्यक्ष—श्री नवल किशोर शर्मा, ४ पुरोहित—श्री प० शालीग्राम शर्मा चुने गये।

—दयानन्द शर्मा, मन्त्री
आर्य समाज, धौरी पत्रा० रामपुर (भागलपुर)



आर्य वीर दल के बढ़ते कदम

वेद प्रचार मण्डल दिल्ली देहात

वेद प्रचार मण्डल दिल्ली देहात की ओर से दिनांक ३१-१-९० को आर्य समाज राज नगर पालम कालोनी में वसन्तोत्सव एवं हकीकतराय बलिदान दिवस स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता में समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर डा० धर्मपाल आर्य, डा० सुरेन्द्र प्रकाश, डा० शिवकुमार शास्त्री; आचार्य सुनीति आर्य आदि विद्वानो ने जनता का मार्ग दर्शन किया। मण्डल की ओर से वृद्ध भजनोपदेशक पं० हरीशचन्द्र आर्य को सम्मानित किया गया। मण्डल के युवा अध्यक्ष प० उदय श्रेष्ठ ने अन्त मे सभी का धन्यवाद करते हुए सभी आर्यों से एक जुट होकर समर्पण भाव से कार्य करने की अपील की।

—क्षेत्रपाल आर्य, (प्रचार सचिव)

दक्षिण भारत में आर्य वीर दल

कर्नाटक प्रान्त मे आर्य वीर दल के कार्य को गति देने के लिये प्रान्त के सक्रिय कार्यकर्ताओ का शिविर १ से ५ जनवरी तक डा० देवव्रत आचार्य उप-प्रधान सञ्चालक की अध्यक्षता में आर्य समाज गुलबर्गा एवं आर्य वीर दल द्वारा लगाया गया। प्रान्त में दल के कार्य को सञ्चालन करने के लिये निम्न अधिकारी नियुक्त किये गये।

प्रान्तीय सञ्चालक

श्री राममोहन आर्य इन्जीनियर बैंगलूर, श्री गोविन्दराव आर्य मण्डलपति श्री हीरालाल आर्य मन्त्री, श्री चन्द्रकान्त आर्य व्यायाम शिक्षक दल के कार्यकर्ताओं ने आगामी दीपावली अवकाश मे विशाल शिविर लगाने का निश्चय किया। नगर की दोनो आर्य समाजो ने शिविर व्यवस्था का भार अपने ऊपर लेने का आश्वासन दिया है।

डा० देवव्रत आचार्य उपप्रधान सञ्चालक द्वारा प्रचार अभियान

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के उपप्रधान सञ्चालक डा० देवव्रत आचार्य गत अक्टूबर से मध्य प्रदेश महाराष्ट्र, कर्नाटक और गुजरात में आर्य वीर दल के अनेक शिविरो का आयोजन करके लौटे हैं। आपने २० अक्टूबर से ५ नवम्बर तक खण्डवा(मध्यप्रदेश) १२ २० नवम्बर गुरुकुल येडशी (महाराष्ट्र), १-१० दिसम्बर आर्य समाज परली बैजनाथ, ११-३१ दिसम्बर आर्य समाज लातूर १-५ जनवरी गुलबर्गा (कर्नाटक), २२-३१ जनवरी सूरत, गुरुकुल सूपा (गुजरात), मे शिविरो का आयोजन एवं शाखाओ की स्थापना की है। इन सभी शिविरो मे स्थानीय आर्य समाजो का पर्याप्त सहयोग रहा।

आगामी ग्रीष्मावकाश में आर्य समाज पिंपरी (पूना) द्वारा १-१३ मई तक आर्य वीर दल शिविर लगाने की घोषणा की है। इसी भांति आर्य वीर दल मध्यप्रदेश के अधिष्ठाता श्री लक्ष्मीनारायण आर्य ने गुरुकुल होशंगाबाद में शिविर आयोजन का निश्चय किया है। श्री माधवी बाई प्रधान गुरुकुल होशंगाबाद ने भी पूरा सहयोग करने का आश्वासन दिया है। दीपावली के अवकाश मे गुरुकुल येडशी, आर्यसमाज परली एवं कर्नाटक में शिविर लगाने का निश्चय किया गया है। गुरुकुल सूपा (गुजरात) मे आर्य वीर दल की शाखा स्थापित करके उसे नियमित चलाने का आश्वासन श्री सुरेश रत्नाणी उपव्यायाम शिक्षक ने दिया है।

आर्य वीर दल ऋषि का स्वप्न पूरा करेगा

आर्य वीर दल प० उ० प्र० जिला मु० नगर में आर्य वीर दल के शाखा, शिविरो की धूम मची। गत दिनो आर्य समाज नई मन्डी मु० नगर, आर्य समाज गांधी कालोनी मीरापुर, कन्हेड़ा, सभी मे २०० आर्य वीरों को प्रशिक्षण दिया गया श्री धर्मवीर आर्य व्यायाम शिक्षक (जनपद) ने कड़कती सर्दी में भी बच्चों के अन्दर ईश भक्ति राष्ट्र भक्ति की भावना भर के आर्य समाजो मे एक गति सी दे दी।

...दल

आर्य समाज कन्हेड़ा में ७ १-- ...र्य वीर दल का शिविर जिला सभा मु० नगर की ओर से लगाया ... जिसमें कन्हेड़ा, सुजलपुर, गांवल के ५७ आर्य वीरो ने व्यायाम प्रशिक्षण, बौद्धिक प्रशिक्षण प्राप्त किया। दिनांक २७ को एक शोभा यात्रा का आयोजन किया गया।

व्यायाम प्रदर्शन—२८ ता० को प्रातः यज्ञ, यज्ञोपवीत संस्कार के पश्चात पी० टी० मार्चिग, डबल लेजियम दण्डबैठक लाठी आदि का प्रदर्शन हुआ। जिला सभा में नियुक्त श्री धर्मवीर आर्य व्यायाम शिक्षक ने कड़कती, धुन्ध, कोहरे में भी बच्चो में वैदिक संस्कृति देशभक्ति की भावना भरकर आर्य वीरो को आर्य समाज का सच्चा सैनिक बताया। वैदिक नारो से आर्य वीरों ने इसको स्वीकार किया।

—धर्मवीर आर्य व्यायाम शिक्षक
आर्य वीर दल जनपद

राजकीय उ०मा० विद्यालय घोण्डा में आर्य वीरों का प्रदर्शन

१—विद्यालय के अन्दर २६ जनवरी का कार्यक्रम २५ दिसम्बर को मनाया गया। ध्वज फहराने के बाद आर्य वीरों ने जो N C C. में भी हैं, गार्ड आफ ओनर परेड करते हुए प्रधानाचार्य जी को दिया।

२—आर्य वीरों ने स्फूर्ति दायक व्यायाम (पी टी) के दस अभ्यास क्रम पर व्यवस्थित व मनमोहक ढंग से किए। दण्ड, बैठक एवं आसन का प्रदर्शन भी सराहनीय रहा। अन्त में भाला का प्रदर्शन व छुरी का प्रदर्शन देखकर तो प्रधानाचार्य महोदय व उपप्रधानाचार्य महोदय, शास्त्री जी एवं चौधरी साहब तथा समस्त अध्यापक वर्ग ने झूमते हुए आर्य वीरों की प्रशंसा की और कहा कि हमने आजतक किसी भी विद्यालयमें ऐसा प्रदर्शन नहीं देखा।

३—यहां के विद्यार्थियो मे से धरमवीर शर्मा (तृतीय) शिवराम यादव (चतुर्थ) १००० मी० की दौड़ में दिल्ली के समस्त विद्यालयो के बीच में भाग लेकर कीर्तिमान स्थापित किया।

इस कार्यक्रम को सार्वदेशिक के शिक्षक डा० सुरेन्द्रसिंह "आजाद" चला रहे हैं। और इसका श्रेय प्रधानाचार्य महोदय के साथ २ रमेशचन्द्र जी पी० टी० आई, चौधरी साहब व योग प्रशिक्षक महोदय को जाता है।

—सुरेन्द्रसिंह आर्य, व्यायाम शिक्षक
सा० आ० वी० दल

प्रभाकर आर्यसमाज (हालैंड) के नये अधिकारी

१ अक्तूबर १९८९ को प्रभाकर आर्य समाज रोटर डेम हालैंड के स्थापना दिवस महोत्सव के पश्चात श्री मथराप्रसाद जी कल्लू, श्री राजगोपाला-चार्य जी सुकून एवं श्री ज्ञानस्वरूप जी सुकून की देखरेख में समाज के नए अधिकारियों का निर्वाचन सर्वसम्मति से किया गया। इसके अनुसार—
पण्डित जीवन गणेश—सभापति, पण्डित रामदेव रामअवतार—उपसभापति पण्डित हरिकिशोर—मन्त्री श्री रामसिंगारन—उपमन्त्री, श्री बहादुर जी-कोषाध्यक्ष, श्री रामलाल जी--कोषाध्यक्ष, श्री दयानन्द गणेश--व्यवस्थापक।

प्रभाकर आर्य समाज रोटरडेम के सभापतित्व श्री जीवन गणेश की अध्यक्षता में आर्य वीर दल रोटरडेम के अधिकारियों का चयन किया गया। इसके अनुसार निम्न अधिकारी चुने गये हैं—

श्री राजगोपालाचार्य सुकून—मण्डलाध्यक्ष, श्री राधेलाल जी—शाखा-नायक, श्री विजयगणेश—उपशाखानायक, श्री ज्ञानस्वरूप सुकून—दलपति, श्री द्रोणाचार्य गणेश—मन्त्री।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९० वर्ष २९ अंक ६] | दयानन्दाब्द १६५ | दूरभाष । ३२७४७७१ | वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे
फाल्गुन शु० १५ सं० २०४६ ११ मार्च १९९०

वेदामृत

परिवार स्वावलम्बी हो

स्वतवांश्च प्रघासी च, सान्तपनश्च गृहमेधी च ।
क्रीडी च शाकी चोज्जेषी ॥

यजु० १७-८५ ॥

हिन्दी अर्थ– (हे गृहस्थ, तुम) स्वावलम्बी, सुन्दर भोजन करने वाले, तपस्वी जीवन व्यतीत करने [वाले, गृहस्थ धर्म के पालक, क्रीडाशील, शक्तिशाली और सदा विजयी हो ।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

पंजाब के हालात निरन्तर बिगड़ रहे हैं

नई सरकार की कमजोर नीतियों के कारण फिरोजपुर से पलायन ने जोर पकड़ा : अनेक दुकानें बन्द

फिरोजपुर ४ मार्च ।

जिला फिरोजपुर के ग्रामीण क्षेत्रों का दौरा करने से यह कटु सच उभर कर सामने आया है कि इन गांवों में आतंकवादियों का साया बड़ी तेजी से फैल रहा है । पंजाब के राज्यपाल और पंजाब पुलिस के उच्च अधिकारी भले ही स्थिति में सुधार के दावे करके कबूतर की तरह आंखें मूंद ले परन्तु वास्तविकता यह है कि कोई पंजाबी अधिकारी न तो गांवों का दौरा कर सकता है और न ही वह डरे और सहमे हुए ग्रामीणों के साथ रातें बसर करने का साहस करता है ।

मक्खू, मल्लांवाला, महालम तथा जीरा क्षेत्रों के गांवों में आतंकवादियों के डर से सैकड़ों हिन्दू परिवार पलायन कर चुके हैं ।

दर्जनों कत्ल हो चुके हैं और एक करोड़ रुपये से ज्यादा की रकम फिरौती के रूप में आतंकवादी प्राप्त कर चुके हैं । उनका ताजा शिकार धर्मकोट क्षेत्र है । क्षेत्र के गांव लारा वाले मे आतंकवादियों और पुलिस के मध्य सख्त मुकाबला हुआ जिसमें पुलिस का एक ट्रक नम्बर १००५ जला दिया गया ।

कुछ सप्ताह पहले धर्मकोट क्षेत्र के शैलर मालिक श्री जीवन कुमार का अपहरण कर लिया गया था । लोगों का कहना है कि १० लाख रुपये प्राप्त करके आतंकवादियों ने उसे रिहा किया । धर्मकोट क्षेत्र में आतंक की लहर दौड़ गई है ।

धर्मकोट के बाजार ५-६ बजे पूर्ण बन्द हो जाते हैं और हर तरफ सन्नाटा छा जाता है । धर्मकोट और कोटाई साखा और कोट ईसाखां से १५ परिवार पलायन कर चुके हैं । मक्खू से प्रतिदिन एक दो ट्रक आतंकित परिवारो का सामान ले जा रहे हैं ।

इस क्षेत्र के एक दर्जन राईस शैलर और ३२ ईंटों के भट्टे बन्द पड़े हैं । आतंकवादी इन गांवों के बाजारों में शस्त्रों से लैस होकर बड़े आराम से घूमते हैं ।

गांवों में आतंकवादियों द्वारा पोस्टर लगाये जाते हैं । जिसमें कोई न कोई आदेश होता है जैसे घर के दरवाजे खुले रखो, कुत्तों को मार दो शराब न पियो, पुलिस और पटवारियों का बहिष्कार करो, गांवों के झगड़े खालसा पंचायतों के सामने रखो । गांवों में बनी चौकियों पर तैनात होमगार्ड तथा एस०पी०ओ० जवानों को चेतावनी दी जाती है जिससे डर कर वे अपनी नौकरियां भी छोड़ कर जा रहे हैं ।

द्वितीय वनवासी आर्य सम्मेलन की जोरदार तैयारियां

धर्मरक्षा महाभियान की क्रान्तिकारी लहर

शुद्धि आन्दोलन का सुदर्शन चक्र नए कीर्तिमान की ओर

सभा के शुद्धि कार्यक्रम के लिए दिलखोलकर दान दें

दिल्ली ५ मार्च । सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने देश भर की आर्य समाजों तथा राष्ट्रवादी हिन्दू जनता से अपील की है कि भारत की एकता, अखण्डता और सुरक्षा के लिए शुद्धि आंदोलन में सभा की सहायता करें ।

स्वामी जी ने बताया कि आगामी १७ १८ मार्च को रायगढ़ के सलखिया ग्राम मे द्वितीय वनवासी आर्य सम्मेलन का आयोजन समारोह पूर्वक हो रहा है इसमें कम से कम पाच हजार भूले भटके विधर्मी बन्धु स्वेच्छा से वैदिक धर्म मे प्रविष्ट होंगे । गत वर्ष सीतापुर के वनवासी आर्य सम्मेलन में लगभग ६ हजार लोगों ने वैदिक धर्म स्वीकार किया था ।

स्वामी जी ने बताया कि इस कार्यक्रम पर कई लाख रुपए का व्यय होगा । शुद्धि आन्दोलन के कार्यक्रम को तेजी से आगे बढ़ाने के लिए उन्होंने देश की धार्मिक तथा राष्ट्रवादी जनता से अधिक से अधिक सहयोग देने की अपील की है ।

सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

काश्मीर में सरकार युद्धस्तर पर कारवाई करें

धारा ३७० अस्थायी व्यवस्था, उसे रद्द किया जाय

सार्वसमाज की भारत सरकार से जोरदार मांग

दिल्ली ५ मार्च। काश्मीर की वर्तमान स्थिति पर सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में विभिन्न सूत्रों से जो जानकारियां प्राप्त हुई हैं, उनसे पता चलता है कि काश्मीर में इस समय आतंकवादियों की सहायता से पाकिस्तान ने अघोषित युद्ध छेड़ रखा है। वहां इस्लामी राज्य की स्थापना के प्रयत्न हो रहे हैं। लूटपाट, आगजनी, बलात्कार आदि अनेक प्रकार के अत्याचारों से काश्मीर के अल्पसंख्यक हिन्दू-सिख जान बचाकर अपने घर-बार छोड़कर पलायन कर रहे हैं। उन्हें बिस्तर भी नहीं ले जाने दिया जा रहा है। रूबिया अपहरण और ५ आतंकवादियों को रिहा कर देने से अलगाववादियों के हौंसले बढ़ गए हैं और पूरी घाटी में पाकिस्तानी झण्डे फहराये जा रहे हैं। मार्च के अन्तिम सप्ताह तक हिन्दू सिखों को घाटी छोड़ देने की धमकियां दी गई हैं। उन्हें सम्पत्ति छोड़ने पर अनेक प्रकार से विवश किया जा रहा है। अत्याचारों की लोमहर्षक स्थिति को सुनकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने भारत सरकार से जोरदार मांग करते हुए कहा कि वह तुष्टीकरण की नीति का परित्याग करके काश्मीर में युद्धस्तर की कार्रवाई करे और देश को बचाने के लिए यह आवश्यक हो गया है काश्मीर को सेना के हवाले कर दिया जावे।

स्वामी जी ने धारा ३७० के विषय में स्पष्ट करते हुए कहा कि यह अस्थायी व्यवस्था थी। पं० जवाहरलाल नेहरू ने भी इसे अस्थायी बताते हुए कहा था कि धीरे-धीरे घिसते-घिसते घिस जायेगी। भारतीय जनता पार्टी ने धारा ३७० के विषय में जो नीति अपनाई है, उसी कारण भाजपा को जनता से व्यापक समर्थन मिला है।

स्वामी जी ने यह भी स्पष्ट किया कि पूर्व प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी को उन्होंने पंजाब और काश्मीर के विषय में अनेक सुझाव दिए थे किन्तु अल्पसंख्यकों की तुष्टीकरण के कारण उन्होंने उस पर आचरण नहीं किया जिस कारण उनकी पार्टी को भारी पराजय का सामना करना पड़ा है। स्वामी जी ने वर्तमान केन्द्र सरकार से अनुरोध किया कि वह भी अल्पसंख्यकों की बैसाखी पर चलने का प्रयत्न न करे, नहीं तो देश की जागरूक जनता इसे किसी भी अवस्था में बर्दाश्त नहीं करेगी। स्वामी जी ने इस विषय में प्रधानमन्त्री श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह को भी विशेष पत्र लिखा है।

सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

कश्मीरी सिक्खों पर आफत

खालिस्तान के मतवाले सिक्खों की यह विशेषता है कि इन्हें इस बात की रत्ती भर परवाह नहीं कि पंजाब के बाहर के सिक्खों पर इनकी कार्यवाही का क्या असर होता है इन्हें इस बात की भी परवाह नहीं है कि इनके एक-एक अमल से पंजाब से बाहर रहने वाले हजारों सिक्खों के लिए मुश्किल पैदा हो जाती है।

जरनैल सिंह भिण्डर वाले से प्रश्न किया गया था कि आप सिक्ख पन्थ के लिए तड़प रहे हैं लेकिन आपकी हरकतों का पंजाब से बाहर के सिक्खों को जो खामियाजा भुगतना पड़ता है इसको भी आपने कभी सोचा है। तो उसने उत्तर दिया कि वह सिक्ख पंजाब चले आये और अगर यही आते तो वह जाने और उनका काम।

जरनैल सिंह के कहने पर कई सिक्ख पंजाब में आकर आबाद हो गये, लेकिन अभी इनकी थकान भी दूर नहीं हुई थी कि इन्होंने फिर से बोरा विस्तार गोल किया और वापिस अपने आबाई घरों को जाने के लिए तैयार हो गये इन्हें दो दिन में ही पता चल गया कि इन खालिस्तानियों के दिलों में आम सिक्खों के लिए कितनी हमदर्दी है।

अब पाकिस्तान नवाज कश्मीरियों को उनसे जो सहानुभूति है इसका नमूना भी सामने आ रहा है। एक अन्दाजे के मुताबिक दो हजार सिक्ख खानदान इस वक्त जम्मू के शरणार्थी कैम्पों में पड़े हुए हैं। यह सब वह हैं जो अपनी जान बचाकर काश्मीर से निकल रहे हैं। पाकिस्तान समर्थकों ने इन्हें साफ अलफाज में कह दिया कि वह उनकी नजरों मे सन्देहप्रद हैं और अगर अपनी जिन्दगी चाहते हो तो काश्मीर से चले जायें। इस तरह इन सिक्खों को आज से ४२ वर्ष पहले के हालात से गुजरना पड़ रहा है।

वहा के मुसलमानो से हिन्दुस्तान मे उधम मचाने के लिए योजनायें बना रहे हैं। साफ है कि सिक्ख नेता इन मुसलमानों के कदमो पर गिर रह हैं। वास्तविकता तो यह है कि हर पाकिस्तानी मुसलमान अपने दिल मे सिक्खो को अपना दुश्मन मानकर और वह सदियो के इतिहास को भूलने को तैयार नहीं है।

(प्रताप ४-३-९० के सौजन्य से)

सार्वदेशिक पत्र के स्वामित्व आदि सम्बन्धी विवरण

फार्म ४—नियम ८
(प्रेस एण्ड रजिस्ट्रेशन आफ बुक ऐक्ट)

प्रकाशन का स्थान—	महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२
प्रकाशन का समय—	प्रति बृहस्पतिवार और शुक्रवार
मुद्रक का नाम—	सच्चिदानन्द शास्त्री
राष्ट्रीयता—	भारतीय
पता—	सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ३/५ आसफअली रोड, महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२
सम्पादक—	सभा मन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री
राष्ट्रीयता—	भारतीय
पता—	पूर्ववत
जो व्यक्ति पत्र के स्वामी हैं; साझीदार या हिस्सेदार हैं सम्पूर्ण पूंजी के १ प्रतिशत से अधिक हिस्सेदार हैं उनके नाम व पते	सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा पत्र की स्वामिनी है।

मैं सच्चिदानन्द शास्त्री इस लेख पत्र के द्वारा घोषणा करता हूं कि उपर्युक्त विवरण जहां तक मेरा ज्ञान एव विश्वास है सही है।

सच्चिदानन्द शास्त्री
प्रकाशक व मुद्रक

समाचार

बसन्त पर्व एव वीर हकीकत राय बलिदान दिवस महर्षि दयानन्द प्रवास कुटी सागर पर हर्ष और उल्लास के वातावरण में आर्य समाज बदायूं द्वारा सम्पन्न हुआ। आर्य समाज बदायूं के अतिरिक्त अनेक सामाजिक संगठनों ने भी भाग लिया।

—महेन्द्र कुमार

सम्पादकीय—

लहराती है खेती दयानन्द की

बाढ़ टूटी नहीं है ? नई पीढ़ी की ?

आर्यों में विशेष—!

पिछले अंक में लिखा पढ़ा था कि अनुभव के ५ दिन उसमें गुरुकुल कांगड़ी और गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर की संक्षिप्त चर्चा की गई थी। वास्तविकता यह है कि—

पुरातन को संजोकर पुराने विद्वानों की धरोहर को आज के लोगो की मानसिकता को मैं क्या कहूँ ! जी चाहता है कि इनका कुछ इतिहास लिखूं। जिन्होंने पुरानी पीढ़ी की अमर गाथाओं तथा उनकी वाली को आज भी ज्यों की त्यों सुरक्षित रखकर भावी पीढ़ी का नव निर्माण कर रहे हैं। फिर हम कैसे कहते है कि नई पीढ़ी न ही आ रही है। उन्हे ही देखने के लिये यह लेखमाला चलाई जा रही है।

आर्य समाज के क्षेत्र में इन दो गुरुकुलों गुरुकुल कांगड़ी और महाविद्यालय ज्वालापुर का महत्वपूर्ण स्थान है। इन्होंने देश-जाति धर्म तथा शिक्षा जगत को अनेकों प्रकार के विद्वान् पैदा करके दिये जिससे इन संस्थाओं का यश अक्षुण्ण तथा गौरवमय है। विगत इतिहास को आप यत्र-तत्र पढ़ते ही होंगे।

परन्तु वर्तमान क्या है—

मैं उनसे कहना चाहता हूँ कि जब आप कहते हो कि आर्य समाज में नयी पीढ़ी नहीं आ रही है तो कभी सोचा कि अपने-अपने बच्चों को कभी आर्यसमाज मन्दिरों में या उन गुरु के कुलों में जहां वे भट्टी से तपाकर कुन्दन बना खरे स्वर्णमय जीवन के व्यक्ति तैयार किये जाते हैं।

वे माता-पिता धन्य हैं जिन्होंने अपनी सन्तानों को अपनी माया ममता से दूर कर ऋषि के मिशन का राही बनाने का संकल्प लिया है। वही छात्र जैसे भी है वे उसी दशा में अपना भविष्य बनाने में तल्लीन हैं।

वे आचार्य भी धन्य है ?

नई पीढ़ी पर

सम्पादक की लेखनी से आगामी अंकों में भी पढ़कर अनुशीलन करें।

—सम्पादक

जो आज की विकट परिस्थितियों में गुरुकुल की चार दीवारी में उन बालकों को बाहर के बिगड़े वातावरण आते हैं आप सोचिये कि उनके जीवन को नया मोड़ देने में क्या-क्या कठिनाइयां आती हैं। इन राहों पर चलते-चलते थोड़े ही व्यक्ति मंजिल तक पहुंच पाते हैं।

कुछ शुरु में कुछ मध्य में आकर विचलित होकर वापस अपने-अपने घरों की ओर हो जाते हैं।

फिर भी वह छात्र जितने समय पर भी इस वातावरण का सान्निध्य पा लेता है उस पर ऋषि दयानन्द की छाप ऐसी पड़ती है वह मिटाये नहीं मिटती है।

इस शृंखला में—

१—गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी का और २—गुरुकुल ज्वालापुर महाविद्यालय स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज का इन महापुरुषों का चरित्र चित्रण कहां तक करे आर्य जगत् भली भांति परिचित है।

स्वामी श्रद्धानन्द का गुरुकुल कुरुक्षेत्र इन्द्रप्रस्थ आदि कुलों को जन्म दिया वही पर स्वामी दर्शनानन्द जी ने सिकन्दराबाद वहीं वृन्दावन सूर्यकुण्ड बदायूं जो अभी तक अपनी स्थिति बनाकर जीवित है विरालसी कालिज बन गया, पोठोहार पाकिस्तान में चला गया।

गुरुकुल कांगड़ी के साथ कन्या गुरुकुल देहरादून भी अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। भावी पीढ़ी में बालकों के साथ बालिकाओं का स्थान भी महत्वपूर्ण है। कन्याओं में ऋषि का ऋण ही काम कर रहा है आने वाले समय में इन दोनों गुरुकुलों का भूतकाल से भी अधिक भविष्य की निधि निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेंगे।

और उन लोगो के मुंह बन्द करके कि नई पीढ़ी नही आ रही है।

फिर सोचेंगे यह तो कुछ कर रहेंगे पर तुम क्या कर रहे हो।

पंजाब के आतंकवाद की छाया में हिन्दू कैसे जी रहे हैं?

तलवण्डी भाई (फिरोजपुर) के हिन्दुओं को आतंकवादियों द्वारा भेजे गए गुरुमुखी पत्र का हिन्दी रूपान्तर

यह धमकी तलवन्डी भाई के लगभग ४० हिन्दू परिवारों को पंजाबी मे लिखा हुआ पत्र प्राप्त हुआ—इस धमकी पत्र को पढ़ने से कौन व्यक्ति होगा जिसमें भय और दहशत पैदा न हो—यही सब हो रहा है पजाब में।

अब आपकी बारी है। बस थोड़ी सी तकलीफ देनी है। सिर्फ पांच लाख रुपए की। एक लड़का आपका ले ही जाना है। चाहे आप कितनी ही क्यों न बचत कर लें। पर हम नही छोड़ेंगे, यह हमारा निशाना है। वैसे हमारा लक्ष्य तो बहुत बड़ा है। पर धीरे-धीरे पूरा करेंगे। मर्जी से जाना नही, सिर्फ एक करोड़ रुपए इकट्ठे करने हैं। जिसमें आपका नाम भी है जो कि हमें अभी बताया गया है। अब हमारी पार्टी काफी मजबूत हो चुकी है। यह सब आप लोगों की ही मेहरबानी है। बस अब आपकी बारी है। आपका कोई लड़का हमारे हाथ लग गया, हम नही छोड़ेंगे। ले ही जायेंगे। चाहें आपके घर से क्यों न लेकर जाना पड़े। बाकी कौन सा असला आपके पास है, वह भी हमें चाहिए। यह सारी बात आपको पहले ही बता दी है। ताकि आप पैसों का प्रबन्ध कर सकें, क्योंकि एक दम इकट्ठे करने मुश्किल हो जाते हैं। एक बात और बता दें किसी बिचौले को बीच में न डालना क्योंकि बात हमारी और आपकी है आपने ही इसे हल करना है। पुलिस को बताने की जरूरत नहीं है। इससे नुकसान ज्यादा हो सकता है। हमें तो पैसे कही और जगह से भी मिले या नही, आपका लड़का वापस नही आएगा। अगर कोई चालाकी की तो आपके घर आकर आगे आप खुद ही समझदार हैं कि क्या कुछ हो सकता है ? सो पैसों का प्रबन्ध कर लें, पूरे पांच लाख लेने है, क्योंकि आपका कारोबार काफी बड़ा है।

यह न समझें कि यह पत्र बोगस है, किसी पार्टी के पैड पर नही लिखा हुआ है। यह बात हम बना नही सकते, क्योंकि हमारी पार्टी वह पार्टी नही है, हम कोई राजनीतिक लोग नहीं हैं, बस पैसा ही हमारा सब कुछ है। अगर हम दो चार मर भी गए तो, हमें कोई फर्क नही पड़ता। हम १२ आदमी हैं, बाकी मिलने पर।

याद आता है ढाका—अब क्या होगा ?

पंजाब और जम्मू-कश्मीर में आतंकवादियों और अलगाववादियों के माध्यम से हिंसा, हत्याओं, लूटमार और तोड़ फोड़ की आग को हवा देने वाले पाकिस्तान को आज स्वयं जिन भयावह समस्याओं का सामना है और जिस तरह से कहीं सिन्ध पाकिस्तान से अलग होने के लिए पर तोल रहा है, कहीं सूबा सरहद और बिलोचिस्तान में बेचैनी जोर पकड़ रही है, कहीं नशीली दवाओं के तस्कर सरकार के लिए चुनौती बन गए हैं, कहीं रह-रह कर शिया सुन्नियों और महाजरों तथा पंजाबी मुसलमानों के बीच दंगे हो रहे हैं, कहीं कराची बेरूत और उत्तरी आयरलैंड का रूप धारण करता जा रहा है कहीं मियां नवाज शरीफ और बेगम बेनजीर भुट्टो के बीच लट्ठमलट्ठा हो रही है और कहीं २० मार्च को पाकिस्तान में प्रधानमन्त्री बदलने की तैयारियां हो रही हैं—उसके बारे में जो कुछ पाकिस्तान के प्रमुख उर्दू अखबार नवाए वक्त' और जंग' तथा अंग्रेजी 'दैनिक मुस्लिम' में लिखा है उसकी विस्तार से चर्चा हमने अपने १७ फरवरी के लेख दूसरे के घर को आग लगाने वालो अपने घर की आग तो बुझा लो' तथा २४ और २५ फरवरी के लेख 'दूसरों के घर आग लगा कर आपके घर की आग कैसे बुझेगी ?' में की थी।

इस बीच १७ फरवरी को पाकिस्तान के प्रमुख उर्दू दैनिक नवाए वक्त में 'कौमी उफक' के नाम से प्रकाशित होने वाले स्तम्भ के अन्तर्गत 'अन्देशे' सब हैडिंग के साथ एक नज्म अब क्या होगा ?" के शीर्षक से छपी है, जिसमें पाकिस्तान के प्रमुख शायर मोहम्मद अफजल जफर ने पाकिस्तान की आन्तरिक समस्याओं का बड़ा ही मार्मिक चित्र प्रस्तुत किया है और उनके प्रति पाकिस्तान की उदासीनता पर चिन्ता व्यक्त करते हुए लिखा है कि यदि परिस्थितियां इसी प्रकार बिगड़ती रहीं और पाकिस्तान शासक इसी तरह वास्तविकताओं को झुठलाते रहे तो पाकिस्तान का भविष्य क्या होगा ?

मोहम्मद अफजल जफर की यह नज्म हम ज्यों की त्यों पाठकों की दिलचस्पी के लिए यहां प्रस्तुत कर रहे हैं। वह लिखते हैं —

किश्ती टूटी किस्मत फूटी !
लगती है अब हर लीडर की—
हर इक बात सरासर झूठी—अब क्या होगा ?
गहरे होते जाते हैं हर लम्हा
ये गम्भीर अन्धेरे—दिल में मेरे
हाकिम वक्त पे होती है
फूलों की बारिश शाम सवेरे—अब क्या होगा ?
आने वाले सुबह अफजल
शायद नूर की किरण लाए—हमें हंसाए !
आज की तारीख में तो हर जानिब
है यह मातम—अब क्या होगा ?

उपरोक्त नज्म की गहराई तक यदि जाया जाए तो यह बात पूरी तरह स्पष्ट हो जाती है कि आज पाकिस्तान में विशेष कर वही परिस्थितियां उत्पन्न हो गई हैं जो उस समय हो गई थीं जब पूर्वी पाकिस्तान उससे टूटा था—ढाका उसके हाथ से निकला था।

ढाका की बात जब स्वयं पाकिस्तान के शायर मोहम्मद अफजल जफर ने छेड़ दी है तो यह लिखना कदाचित अनुचित नहीं होगा कि पाकिस्तान के शासक उस काश्मीर को तो पाकिस्तान में मिलाने के लिए बेचैन हैं जो न कभी उसका था और न कभी उसका हो सकता है मगर उस ढाका अर्थात् पूर्वी पाकिस्तान को कभी उन्होंने अपने साथ मिलाने की कभी नहीं सोची जो १९७१ तक उनका अपना ही एक हिस्सा था।

जरूरत तो ईमानदारी से इस बात की है कि पाकिस्तानी के शासक यह सोचें कि क्या उनकी उन गलतियों और ज्यादतियों का प्रायश्चित किसी तरह से हो सकता है जिनकी वजह से ढाका उनके हाथों से निकला और क्या कोई तरीका ऐसा हो सकता है कि इस्लामाबाद और ढाका फिर से एक हो सकें—इस तरफ की ओर तो किसी पाकिस्तानी शासक का ध्यान है नहीं पंजाब और जम्मू-कश्मीर में हिंसा, हत्याओं और विघटन की आग को हवा देने में सब लगे हुए हैं—हालांकि पाकिस्तान के अखबार, सेनाध्यक्ष जनरल असलम बेग और तहरीके इस्तकलाल के नेता और भूतपूर्व वायु सेनाध्यक्ष असगर खां जैसे लोग रह-रहकर यह चेतावनी पाकिस्तानी शासकों को दे रहे हैं कि जिस रास्ते पर वे चल रहे हैं और जिस तरह कश्मीरी मुसलमानों के गम में रात दिन जमीन और आसमान एक कर रहे हैं उससे न तो कश्मीरियों का कोई भला होने वाला है और न ही ऐसा करना उनके अपने हित में है। अब बिल्कुल यही बात मोहम्मद अफजल ने भी कह दी है।

एक पुरानी कहावत है कि जब भी जागे तभी सवेरा अर्थात् गलती का जब भी निराकरण कर लो तभी ठीक—अत पाकिस्तान के शासक यदि भारत के लिए परेशानियां खड़ा करने और उसके चमन में आग फेंकने की बजाय अब भी दीवार पर लिखे को पढ़ सकें और पाकिस्तानी अखबारों, जनरल असलम बेग एयर मार्शल असगर खां और मोहम्मद अफजल जफर जैसे लोगों की आवाज को सुनकर अपने देश में नित्य प्रति गहरे होते जा रहे अन्धेरों को ही दूर करने पर अपना ध्यान केन्द्रित कर सकें तो शायद ढाका के इतिहास को कराची में दोहराए जाने से भी वे रोक सकें और अन्यान्य समस्याओं पर काबू पाकर अपने देश के भविष्य को भी संवार सकें।

जहां तक भारत का सम्बन्ध है उससे तो सदा पाकिस्तान का भला ही चाहा है और आज भी वह उसका भला ही चाहता है—उसे अगर कभी पाकिस्तान के विरुद्ध कोई कारवाई करनी भी पड़ी है तो विवशतावश ही करनी पड़ी है। अब भी पाकिस्तानी सेनाध्यक्ष ने यही कहा है कि पाकिस्तानियों को नियन्त्रण रेखा का उल्लंघन करके कश्मीर में घुसने का यत्न नहीं करना चाहिए क्योंकि ऐसा करने पर तो भारत को गोली चलानी ही पड़ेगी। तात्पर्य भारत की तरफ से लड़ाई की पहल न कभी हुई है, न कभी होगी। अत अब भी समय है कि पाकिस्तान में भारत के विरुद्ध जंगी माहौल बनाने की बजाय पाकिस्तानी शासक अपने घर की लगी को ही बुझाएं। कहीं ऐसा न हो कि उनकी गलत नीतियां देश के अन्धेरों को और भी गहरा कर दें और पाकिस्तान की जनता ही नहीं स्वयं पाकिस्तान के शासक भी यह सोचने पर विवश हो जाएं कि अब क्या होगा ?

—विजय

(२८ २ ९० पंजाब केसरी से साभार)

आज आवश्यकता है आर्यसमाज को आचारसंहिता पालन की

—डा० महेश विद्यालंकार

वैदिक चिन्तन संसार में प्राचीनतम एवं श्रेष्ठतम है। सृष्टि के आरम्भ में प्राणीमात्र के कल्याण और मानवोत्थान के लिए ईश्वर ने वेद ज्ञान दिया। इसीलिए वेद सर्वमान्य एवं सर्वहितकारी हैं। वेद ही मानव की मूल आचार संहिता है। आर्य समाज वैदिक चिन्तन का पुरोधा है। इसलिए उसने घोषणा करके कहा "वेद सब सत्यविद्याओं की पुस्तक है" ऋषि दयानन्द की अपार कृपा व तप त्याग तपस्या से हमें पुनः वेदों का यथार्थ स्वरूप, महत्ता उपयोगिता तथा व्यावहारिकता का बोध हुआ। ऐसी दैवीय स्वर्णिम और सारभूत सम्पदा का धनी आर्यसमाज अपनी आन्तरिक पीड़ा से क्षुब्ध, अशांत सीमित एवं संघर्षरत हो रहा है। इसके मूल मे भूल हो रही है उसी का परिणाम सामने है। निम्न बातों की प्रासंगिकता उपादेयता एवं व्यवहारिकता विचारणीय तथा चिन्तनीय है।

धार्मिकता और नैतिकता का अभाव—

आर्य समाज का अतीत व धार्मिकता और नैतिकता का अपूर्व धनी रहा है। इसके समाज मन्दिरों, संगठनों, सभाओं, संस्थाओं और लोगों में धार्मिक नैतिक, तथा जीवन मूल्यों की प्रधानता होती थी। विचार व चरित्र आदर्श मूलक रहा। उसी के फलस्वरूप लोग आर्य समाज से प्रभावित तथा आकर्षित हुए। आज वे जीवन मूल्य आदर्श तथा नैतिक भावना धीरे-धीरे क्षीण हो रही है। हमारे मे धार्मिकता घट रही है। आडम्बर, प्रदर्शन व बहुरंगिता बढ़ रही है। जीवन और व्यवहार का बाह्य रूप कुछ और है, आन्तरिक यथार्थ रूप कुछ और है। कथनी कुछ, करनी कुछ है। इसी कारण स्थायी प्रभाव नहीं पड़ रहा है। लोग वेदकथाएं, उपदेश, भाषण और बड़े-बड़े सम्मेलन सुनते हैं। थोड़ी देर मे बराबर कर देते है. क्योंकि सुनने वाला और सुनाने वाला दोनों ही मूल से हटे व कटे हुए हैं।

जहां धार्मिकता, नैतिकता, निष्ठा और आस्था होगी वहां व्यर्थ के झगड़े, संघर्ष तथा पदलिप्सा नहीं आयेगी। पूर्व नेता, विद्वान, उपदेशक, पुरोहित सभी धार्मिक भावना से आबद्ध होते थे। सेवा और त्याग भावना से कार्य करते थे। ऐसे आदर्श विचारों का अभाव होने लगा है। आज हमारे समाज मन्दिरों, संस्थाओं और संगठनों मे धार्मिकता, पवित्रता सात्विकता तथा नैतिकता की न्यूनता होती जा रही है। जो स्थान धर्म के केन्द्र थे। वे व्यवसाय के केन्द्र बनने लगे हैं। जहां व्यवसाय की भावना आती है। वहां निर्माण और प्रचार पीछे छूट जाता है। यह व्यावसायिक प्रवृत्ति हमारे संगठनों और संस्थाओं को धीरे-धीरे घुन की तरह खोखला बना रही है। सब जगह पैसे को पूजा महत्त्व दिया जा रहा है। परिणाम सामने है धन तो आ गया। धर्म छूट गया। भवन तो बन गए। बैठने वाले छूट गए। भवन पक्के हैं बैठने वाले कच्चे हैं। ऊपर का सामान बन रहा है। मानव नहीं बन पा रहा है। यही आज की भयंकर समस्या है? यही सबसे बड़ी समाज के सामने चुनौती है। यही ज्वलन्त प्रश्न है। इसका समाधान, निराकरण व उपाय कहीं है तो वह वैदिक चिन्तन के पास है। आर्य समाज की विचारधारा व मन्तव्यों चिन्तन में है। आर्य समाज के मन्दिर के पास है। काश! हम अपने स्वरूप को, अपनी पहचान को, अपने दायित्व को अपनी धरोहर को समझ लेते? अपने क्षुद्र स्वार्थों से, अपने अहं के विस्तार से, अपनी पदलिप्सा की भूख से ऊपर उठ जाते? तो निश्चय ही संसार को मनुर्भव का अमर सन्देश दे सकते हैं।

आज संसार बड़ी तेजी से विनाश की ओर बढ़ रहा है। भौतिकता और विज्ञान के चमत्कारों ने मनुष्य की बुद्धि को इतना आन्दोलित, उद्विग्न, अशान्त और बेचैन किया हुआ है कि मानव का हृदय एक बड़ी तेजी से पीछे छूटता जा रहा है। उसमें पशुता, हिंसा क्रूरता, युद्ध, कठोरता अधिकार-लिप्सा, अहं और लोभ की भावना अधमता बढ़ रही है। ऐसे में सभी पथ सम्प्रदाय, मजहब और सुधारक संगठन मानव को समझाने और सही दिशा देने में असफल हो रहे हैं कोई भी अशान्त मन को सच्चे अर्थों मे शान्त करने का मार्ग नहीं बताया रहा है। किसी की इतनी गहरी पकड़ नहीं है कि वह बता सके कि काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष बढ़े हुए विकारों को कैसे शमन किया जाय? उन्हें शान्त करने का क्या उपाय है। इनसे कैसे मुक्त हुआ जा सकता है। संसार में कैसे जीना है। संसार के बन्धनों से कैसे ऊपर उठना है। हम दुनियां में क्यों पैदा हुए हैं? आदि अनेक प्रश्न है? जिनका आर्य विचारधारा के पास बड़ा ही तर्कसंगत, वैज्ञानिक, व्यावहारिक और जीवनोपयोगी उत्तर है।

आज आर्य समाज संसार को जो महत्त्वपूर्ण अमूल्य करुणा मैत्री शांति और जीवनोपयोगी सन्देश दे सकता है तो वह है आध्यात्मिकता का।

यदि भौतिकता के साथ आध्यात्मिकता का समन्वय, हो जाय। तो संसार शांति की ओर बढ़ सकता है। लोगों का चिन्तन बदलने की शक्ति आध्यात्मिकता मे है। यह धरोहर वैदिक चिन्तन को वरदान के रूप में मिली है। हम इस वरदान को बाहर की चकाचौंध में क्षणिक सुख भोगों मे भूल रहे हैं। यही विडम्बना है। यदि हम इसका प्रयोग जीवन परिवार समाज व राष्ट्र में करके देखें। तो नक्शा ही बदला नजर आएगा। मानव स्वतः ही दुर्गुणों, दुर्व्यसनों और दुःखों से छूटने लगेगा। अतः आवश्यकता है जीवन और व्यवहार में धार्मिकता और नैतिक मूल्यों के धारण करने की।

आचार संहिता का अभाव

आज हमारे समाज मन्दिरों, संगठनों, सभाओं और संस्थाओं मे आचार संहिता की एक रूपता का अभाव हो रहा है। कर्मकाण्ड, धार्मिक अनुष्ठान, यज्ञ पद्धति सिद्धान्त व्यवहार आदि मे असमानता और मतभेद हैं। जो शास्त्र सम्मत, ऋषि अनुमोदित, नियम, व्यवस्था, पद्धति है, उसमे दृढ़ता; आस्था और श्रद्धा की न्यूनता हो रही है। हर कोई अपना महत्त्व पद नाम सम्मान आदि पाने और प्रदर्शित करने के लिए नए नए नियम पद्धति, कायदे बनाकर अलग खड़ा हो रहा है। किसी ने संस्थान, किसी ने परिषद, किसी ने प्रकाशन, किसी ने स्कूल, किसी ने औषधालय, किसी ने कुछ तो किसी ने कुछ खोलकर अपनी महत्वाकांक्षा, पदलिप्सा, नाम, स्वार्थ आदि के लिए भाग दौड़ रहा है। दयानन्द और आर्य समाज के लिए काम करने वालों की गिनती घट रही है। एक झण्डे के नीचे कोई काम करने को राजी नहीं है। सभी तो सब अपना-अपना, अलग-अलग काफिला बना रहे हैं। कहीं, किसी पर कोई अनुशासन नहीं है। जो मन मे आया, जैसी सुविधा देखी वैसा कर लिया। कोई मन्दिरों मे दुकान खुलवा रहा है, तो कोई इंगलिश मीडियम स्कूल। कहीं समाज मन्दिरों की दुकानों पर अण्डे बिक रहे हैं तो कहीं नाच; गानों, की रिहर्सल हो रही है। कहीं मन्दिरों मे रविवार को टी०वी० देखी जा रही है, तो कहीं मनचले वासना में जलते लड़के लड़कियों की शादियां हो रही हैं। कहीं मांसाहारी, शराबी लोगों, अपचों और अधार्मिक व्यक्तियों का अभिनन्दन और जय-जयगान हो रहा है। यह सब हमारी विचारधारा के लिए अत्यन्त चिन्तनीय और विचारणीय है। हम किधर जा रहे हैं? उद्देश्य क्या था? ये विकृतियां हमारे चिन्तन के लिए घातक बनेंगी। जब तक दृढ़ता संकल्प और निष्ठा से अपनी निर्धारित आचार संहिता का पालन नहीं करेंगे। तब तक हमारा दूसरों पर आदर्शमूलक प्रभाव नहीं पड़ेगा। जहां पर नियम व्यवस्था व अनुशासन का पालन होता है वहीं निर्माण होता है। पूर्व सन्तों, महापुरुषों, सुधारकों; संस्था के संचालकों आदि सभी मे अपने आदर्श नैतिक, सुधारक नियमों के पालन के प्रति अटूट श्रद्धा विश्वास रहा है। तभी वे महान बन सके।

आज वक्त की पुकार है हम ऋषि के अनुयायी वैदिक धर्म में आस्था रखने वाले, आर्य समाजी कहलाने वाले, अपनी आदर्श आचार संहिता का जीवन और व्यवहार मे पालन करें। तभी हम दूसरों को अपनी ओर प्रेरित व आकर्षित कर सकेंगे।

त्याग और सेवा का अभाव—

वही संस्था, मिशन, संगठन, जीवित रहता है जिसको लोग खाद बनाकर हरा भरा करते हैं। त्याग और सेवा मे अद्भुत शक्ति, क्षमता और

(शेष पृष्ठ ६ पर)

हमें जनसम्पर्क बढ़ाना है

लेखक : रणवीर भाटिया, सभा-महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर

मैंने अपने पूर्व के लेख में लिखा था कि महर्षि देव दयानन्द भी कुम्भ के मेलों पर गए थे। परन्तु वहां पर उनके जाने का मन्तव्य किसी प्रकार के महात्म्य परम्परा को पूर्ण करना या सम्मान देना नहीं होता था। बल्कि वह अपने ध्येय की पूर्ति के लिए जो उन्होंने वैदिक धर्म के प्रचार एवं प्रसार के लिए उद्देश्य बना रखा था, उसे पूर्ण करने के लिए गए थे। मैंने यह भी लिखा था कि आर्य जगत की शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को ऐसे अवसरों पर बड़ी विशाल योजना से वहां जाकर वेद प्रचार के कार्यक्रम रखने चाहिए। स्वामी दयानन्द ने तो कुम्भ के मेले पर अपने कुछ साथियों को लेकर वहां पर पाखण्ड खण्डिनी पताका लहरा दी थी। आज हमारे पास अनेकों विद्वान हैं। सार्वदेशिक सभा की आज्ञा से हमारे कार्यकर्त्ता वहां पहुँच सकते हैं। मैंने यह सब कुछ इसलिए लिखा था कि जन सम्पर्क बढ़ाने के लिए यह माध्यम एक अच्छा मार्ग हो सकता है। १४-१५ अक्तूबर को मैं दिल्ली में था। सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग व साधारण सभाओं की बैठकें थी। मुझे वहां पर सार्वदेशिक सभा के बड़े-बड़े नेताओं से मिलने व उनके विचार जानने का अवसर भी मिला। उनमें श्रद्धेय स्वामी आनन्दबोध जी सर्वश्री वन्देमातरम जी प्रो० शेरसिंह आदि मुख्य रूप से थे और भी कई नेताओं एवं विद्वानों से बातचीत हुई, सभी महानुभाव इस बात में सहमत थे कि वेद प्रचार के लिए सभी प्रादेशिक सभाओं के अधिकारियों का आपसी तालमेल होना चाहिए। तभी आर्य-समाज का वास्तविक उद्देश्य पूर्ण हो सकेगा।

कई प्रकार की कठिनाईयों तथा आपसी मतभेदों की भी चर्चा हुई। वह कभी पृथक विषय से लिखूं गा। आज तो मुझे केवल जनसम्पर्क के विषय में ही पाठकों को बतलाना है। जिसकी इससे पूर्व १५ कड़ियां आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मुख्य पत्र 'आर्य मर्यादा' में प्रकाशित हो चुकी हैं। स्वामी आनन्दबोध जी ने मुझे सार्वदेशिक पत्रिका में प्रकाशित हेतु भेजने के लिए कहा था उनकी आज्ञा का पालन करते हुए प्रथम बार अपना यह लेख 'सार्वदेशिक' के लिए भी भेज रहा हूँ। मैं यहां पर यह स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि यह मेरे निजी विचार हैं, जो मैं सुधार व आपसी सम्पर्क बढ़ाने के उद्देश्य से लिखता हूँ। मैं इसमें कई बातों में गलत भी हो सकता हूं। परन्तु यह सब कुछ किसी का दिल दुखाने या किसी की त्रुटियों को उछालने के लिए कदापि नहीं लिखता तथा न ही ऐसा समझा जाए। इसका तात्पर्य यह भी नहीं कि मैं यह अपनी प्रतिक्रिया किसी भय के कारण व्यक्त कर रहा हूं। परन्तु मैं इस निर्भीकता का भी कोई लाभ नहीं समझता जो किसी की पगड़ी उछालने के लिए ही कलम को कष्ट दिया जाए। लेखक को सर्वदा उद्देश्यपूर्ण आदर्शवादिता तथा सुधार की दृष्टि से ही लिखना चाहिए। मेरा प्रयास भी यही रहता है कि मैं इन सीमाओं के अन्दर ही रहकर अपने विचार प्रकट करूं तथा करता भी हूँ। ऐसा करने पर भी यदि किसी को कष्ट अथवा आपत्ति हो तो मैं ध्यान नहीं देता।

१५ अक्तूबर रविवार को सार्वदेशिक सभा की साधारण सभा की बैठक दीवान हाल में हुई। देश के कोने कोने से आर्य बन्धु इसमें भाग लेने के लिए पधारे हुए थे। कई प्रान्तों के उच्च अधिकारी भी उसमें थे। कई विषयों पर इस बैठक में चर्चा हुई। अधिकतर लोगों ने विषयों को सुलझाने की अपेक्षा भाषण देने की रुचि को अपनाया जैसा कि साधारण बैठकों में प्रायः देखा जाता है। ऐसा भी नहीं कि विषयों की गरिमा अनुरूप उद्देश्यपूर्ण सुझाव न आए हों। मैंने ऐसे भी महानुभावों को मीटिंग में सुना जो अपने विचार बड़े प्रभावशाली ढंग से समय को नियन्त्रण में रखते हुए संक्षेप में प्रकट करते थे। ऐसे महानुभावों में महाराष्ट्र के कैप्टन देवरत्न, मध्यप्रदेश के श्रद्धेय राज गुरु जी (हालांकि कईबार सीमा तोड़ देते थे) पंजाब के श्री सत्यानन्द जी मुंजाल आदि आदि विशेष कर से उल्लेखनीय हैं।

आपसी मतभेदों के झगड़े, सम्पत्ति विवाद, पदों की खींचातानी आदि विषयों को लेकर प्रतिनिधियों ने अपने आपको दूध को धोया तथा दूसरों पर आरोप स्थापित करने के परिश्रम में काफी समय नष्ट किया। मुख्य रूप से कुछ बैठक में दो ही ऐसे विषय थे जो मैं समझता हूँ कि वर्तमान परिस्थितियों में इन पर गम्भीरता से विचार होना चाहिए। यह दोनों विषय जन सम्पर्क बढ़ाने में सुलभ व सक्षम मार्ग प्रस्तुत कर सकते हैं। तथा इनके माध्यम से हमारा यह जनसम्पर्क का उद्देश्य काफी सीमातक पूर्ण हो सकता है। हम अपनी आर्य समाजों को लोकप्रिय बना सकते हैं। आर्य समाजों में जो शिथिलता आई हुई है उसे समाप्तकर सकते हैं। यह विषय थे उपनियम ४ की उपधारा (क) बाद में संशोधन तथा सार्वदेशिक सभा द्वारा चलाए जा रहे त्रिसूत्रीय कार्यक्रम गोहत्या बन्दी, शराब बन्दी तथा अंग्रेजी हटाओ विषयों पर भारत भर में आन्दोलन आरम्भ करने पर विचार। मैं समझता हूँ कि इन आन्दोलनों के माध्यम से हम जनसम्पर्क तो बढ़ा ही सकेंगे तथा साथ में आर्य समाज का शिथिलपन भी दूर कर सकेंगे।

आर्य पुरुष जब कुछ करने की ठान ठान लेते हैं।
नदियां तो नदियां पर्वतों को भी बांध लेते हैं॥

जहां तक उपनियम ४ की उपधारा (क) का सम्बन्ध है। इस विषय

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आज आवश्यकता है

(पृष्ठ ५ का शेष)

आकर्षण है। जहां पर इन दोनों का संयोग हो जाता है वहां कायाकल्प होने लगता है। आर्य समाज का अतीत इन दोनों भावों से ओत प्रोत रहा है। इन्हीं त्याग और सेवा के बल पर आर्य समाज बहुत आगे बढ़ा। वर्तमान में इस संगठन में इन दोनों भावों की कमी होती जा रही है। इसी कारण सर्वत्र राग द्वेष, घृणा, संघर्ष तथा उखाड़पछाड़ पछाड़पछाड़ बढ़ रहा है। व्यर्थ के झगड़े बढ़ रहे हैं। जिनके मूल में मात्र पदलिप्सा, धन लाभ तथा प्रदर्शन है। त्याग और सेवा भावना के आते ही सब व्यर्थ के झगड़े स्वतः ही शांत हो जायेंगे। सेवा के लिए संघर्ष की जरूरत नहीं, त्याग के लिए लड़ाई नहीं लड़नी पड़ती। लड़ाई तो अधिकार के लिए होती है। जब कभी संस्था, संगठन और मन्दिरों के चुनाव होते हैं तब वहां ऐसा विषाक्त घृणा द्वेष तथा क्रोधपूर्ण वातावरण होता कि मन दुःखी होकर सोचने लगता है कि शायद इन नामधारी आर्यों ने अपने गुरु को पहचाना ही नहीं। जिसने जीवन भर कोई लाभ लिया ही नहीं। कोई अपने पीछे मजहब, पंथ नहीं छोड़ा। जीवन भर धन, यश, चरित्र पद की दुर्बलता नहीं आने दी। उसी के अनुयायी हम पदों के लिए निकृष्ट स्तर पर लड़ते झगड़ते हैं ? यह हमारे लिए शोचनीय व निन्दनीय है। सत्य तो यह है कि ये समाज मन्दिर सभाएं संगठन, सभी निर्माण व सेवाभाव के लिए बने हैं। कुछ काल की सेवा के बाद स्वतः दूसरे सेवाभावी उत्तराधिकारी को सौंप देना ही स्वस्थ परम्परा कहलाती है। इससे खींचतान, ईर्ष्या, द्वेष व संघर्ष नहीं होगा। जो झगड़े हो रहे हैं वे तो सेवा के नाम पर मेवा खाने के लिए हैं। चाहे वह सेवा नाम यश, पद प्रशंसा या स्वार्थ ही हो, चाहे बढ़िया सुख, सुविधा, आराम और खान पान की हो।

आज हम सबको आत्मचिन्तन और आत्मशुद्धि की आवश्यकता है। हम अपने को टटोलें, अपने अन्दर झांक कर देखें, अपनी मिथ्या अहम्मन्यता पर अंकुश लगाएं। अपनी धड़कनों से पूछें कि हम सच्चे अर्थों में कितने आर्य बन सके हैं ? कहीं हम अपने को धोखा तो नहीं दे रहे हैं ? त्याग और सेवा के नाम पर कहीं स्वार्थी तो नहीं हो रहे हैं ? ऋषि के कार्य को कहीं आगे बढ़ाया या दिखावे, प्रदर्शन, आडम्बर को ही महत्वपूर्ण कार्य मानते रहे हैं। विचार बदलो, चिन्तन की दिशा मोड़ो, आचार विचार, धर्म कर्म और जीवन मूल्यों को पकड़ो। वैदिक आचार संहिता को व्यावहारिक जीवन में उतारो, चरित्र और नैतिक मूल्य को महत्व दो, तभी कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का नारा सही अर्थ में सफल होगा।

आर्य स्वाधीनता सेनानियों द्वारा दिशा देने की आवश्यकता

प्रकाश कुमार विद्यालंकार

आर्य समाज प्रथमतः एक धार्मिक संस्था है, परन्तु वह देश में और देश के बाहर होने वाले गतिविधियों से अपने को अवगत रखते आ रहे हैं, तथापि आर्य समाज का विगत इतिहास बहुत ही गौरवपूर्ण रहा है, समानान्तर शिक्षा प्रणाली का विकास व्यक्तिगत चरित्र की उन्नति, समाज में भारतीय संस्कारों की पुनः स्थापना राष्ट्र की स्वतन्त्रता में योगदान मानव मात्र के कल्याण की योजना आदि अनेक ऐसे महत्वपूर्ण बिन्दू हैं जिन पर आर्यसमाज गर्व कर सकता है। आर्यसमाज सदा से क्रियाशील बुद्धिजीवियो का संगठन रहा है। गुरुदत्त विद्यार्थी स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज, लाला लाजपतराय, पं० लेखराम इत्यादि ने केवल चोटी के विद्वान् थे वरन् समाज व राष्ट्र की उन्नति में भी इनका बहुत बड़ा योगदान रहा है। अतएव देश को अराजक स्थिति से बचाने के लिए आर्य समाज-के कार्यकर्ताओं को इस कार्य में और गती लाने की जरूरत है।

आर्यसमाज एक क्रान्तिकारी सामाजिक संस्था है जिसका इतिहास गौरवपूर्ण रहा है, देश भर में विप्लवात्मक एवं सामाजिक सुधार सम्बन्धी कार्यक्रमों को संचालित करने वाली एक मात्र संगठन का दूसरा नाम आर्यसमाज है। स्वतन्त्रता संग्राम में आर्य समाज ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, वह आज भी चिर स्मरणीय है। उदाहरणार्थ निजाम राज्य में नागरिकों के अधिकारों की रक्षा हेतु सर्व प्रथम आर्य समाज ने सत्याग्रह का शंखनाद किया था। निजाम सरकार की तानाशाही हुकूमत के विरुद्ध सन् १८९२ में हैदराबाद में आर्यसमाज की स्थापना हुई। तदुपरान्त सन् १९१२ में आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना हुई। स्व० केशवराव कोरटकर आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रथम अध्यक्ष चुने गये। निजाम सरकार की बरबर हुकूमत में सन् १९२२ में वेदप्रकाश और धर्मप्रकाश नामक दो नवयुवकों की दारूण हत्या कर दी गई। नागरिक अधिकारों की रक्षा सम्बन्धी समस्या के समाधान हेतु आर्यसमाज ने पहले तो निजाम सरकार से वार्तालाप का मार्ग अपनाया परन्तु वार्तालाप जब विफल हो गया तो सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को विवश होकर सत्याग्रह का आह्वान करना पड़ा। फलतः अक्तूबर १९३८ से सत्याग्रह आरम्भ हुआ। इस ऐतिहासिक सत्याग्रह आन्दोलन में देशभर से १८,००० आर्य बन्धुओं ने भाग लिया यह सत्याग्रह निरंतर दस मास तक निजाम राज्य में चला। यह एक प्रकार का धर्मयुद्ध था जिसने निजाम शासन की मजबूत जड़ो को पूरी तरह से हिला दिया था।

निजाम राज्य में स्व० पं० नरेन्द्रजी स्व० विनायक राव विद्यालंकार, सबश्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव, देवीलाल मुन्नुलाल मिश्र आदि ने इस धर्मयुद्ध का नेतृत्व किया। जेलों में इन सेनानियों पर तरह-तरह में दारुण हिंसात्मक अत्याचार किये गये किन्तु अन्त में सत्याग्रहियों के अतीत-उत्साह और उनके मनोबल के सम्मुख निरंकुश निजाम को अपने घुटने टेकने पड़े और आर्यसमाज की मांगों को उसे स्वीकार कर लेना पड़ा। इस प्रकार आर्यसमाज को विजय श्री प्राप्त हुई। सन् १९३८-३९ के धर्मयुद्ध के अतिरिक्त स्वतन्त्रता के बाद भारत संघ में निजाम राज्य के विलीनीकरण सम्बन्धी जो प्रश्न उठ खड़ा था, उस समय भी आर्य समाज ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी, जो हैदराबाद मुक्ति संग्राम के नाम से प्रसिद्ध है।

" वास्तव में आर्यसमाज का समस्त इतिहास-जीवन संघर्षमय रहा है। बलिदान त्याग और राष्ट्रसेवा उसका ध्येय है। इसीलिये आजादी के बाद आर्यसमाज ने सत्ता से अपने को बिल्कुल दूर रखा है। स्वतन्त्रता के चालीस वर्ष बाद आर्यसमाज ने सत्ता से अपने को बिल्कुल दूर रखा है। स्वतन्त्रता के चालीस वर्ष बाद आज भी अनेक प्रश्न सर्पराज की तरह अपने सहस्र फन फाड़े डसने के लिए आर्यसमाज के सम्मुख चुनौतियों के रूप में खड़े है। आर्यसमाज को जिन आन्दोलनों को अपने हाथ में लेना है, उनमें गोवध निषेध, नशाबन्दी तथा अंग्रेजी हटाओ, आन्दोलन प्रमुख है। देश धर्म, भाषा की एकता एवं अखण्डता का प्रश्न आज स्वतन्त्रता सेनानियों के सम्मुख विद्यमान है। ऐसे विकट समय में देशभर के असख्य आर्य मित्रों और स्वतन्त्रता सेनानियों को कमर कसकर आगे आने का समय आ चुका है।

भारतवर्ष में प्रजातन्त्र है सरकार अपनी है,पर उससे भी अधिक देश अपना है। सरकार की मर्यादा है, वह सड़कें बिछा सकती है, सीमेंन्ट के कारखाने खुला सकती है, इस्पात के कारखाने खोल सकती है, वह विज्ञान और तकनीक को बढ़ावा दे सकती है लेकिन वह ऐसा कारखाना नहीं खोल सकती जिसमें आदमी का सच्चे भारतीय का निर्माण हो। यही कारण है कि देश में विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में आश्चर्य जनक उन्नति होने पर भी चरित्र की दृष्टि से देश भारत का दिवाला निकल गया है। क्या हम सभी लोग इस स्थिति को लाचार होकर देखते रहेंगे। यह ठीक है कि हमारा मार्ग-दर्शन करने वाला आज कोई भी बापू महर्षि, सन्त व नेता हमारा मार्ग दर्शन करने वाला आज कोई विशेष व्यक्तित्व दिखाई जान पड़ रहा है, तब सबको संगठित होकर सामूहिक नेतृत्व द्वारा भारत वर्ष की रक्षा के दायित्व का निर्वाह करना ही चाहिये और अनिवार्य रूप से करना ही पड़ेगा। व्यक्ति की परीक्षा संकट के समय होती है। समाज और राष्ट्र की कसौटी भी आड़े समय में होती है। इस समय देश भारी संकट की घड़ी से गुजर रहा है। आन्तरिक स्थिति भयावह है। उससे भी अधिक भयावह बाह्य स्थिति है। ऐसी अवस्था में सारे देश को जागना चाहिये महर्षि दयानन्द के वीर सैनिक एवं विशेषकर देश-प्रान्तों में बसने वाले स्वाधीनता सेनानी अपनी शक्ति से सेवा रूपी कमान सम्भालने की आवश्यकता है। समय की आवाज है। देश को पुनः खण्ड-खण्ड करने की आवाज सुनाई पड़ रही है। समय रहते इसका विरोध होना चाहिये। समय रहते रोग की दवा देने की जरूरत है। देश में अपार शक्ति है, जो या तो सुप्त पड़ी है या उचित मार्ग दर्शन के अभाव में दिग्भ्रमित हो रही है तथापि देश प्रेम देश भक्ति का भाव भी अब कुछ धीरे-धीरे कम होता जा रहा है इसे दिशा देने की आवश्यकता है, यह महत्वपूर्ण कार्य एवं स्वाधीनता के बाद अब भारत के निर्माण में देश में भावात्मक एकता स्थापित करने व भारत को अखण्ड बनाए रखने हेतु आर्य बन्धु व स्वाधीनता सेनानी ही भारत के लोगों को वास्तविक दिशा दे सकते है, क्योंकि भारत देश को आजाद कराने में इनका खून लगा हुआ है, सभी का बना हुआ तिरंगा लाल किले पर निर्भयता से लहरा रहा है।

हमें जनसम्पर्क बढ़ाना है

(पृष्ठ ६ का शेष)

पर बड़े जोश पूर्ण वातावरण के साथ विस्तार से चर्चा हुई। इससे पूर्व भी इस उपनियम में संशोधन करके बतांश के स्थान पर कम से कम पांच रुपए तथा इसी उपनियम में अ किंत २५०) रुपए के स्थान पर एक हजार रुपया कर दिया गया था। परन्तु लोगों की प्रार्थना पर इस उपनियम पर फिर से विचार करने के लिए १५-१०-८९ की साधारण सभा में इसे रखा गया। चाहिए तो यह थाकि उन लोगो की भावनाओं, कठिनाईयों तथा परिस्थितियो पर पूर्ण गम्भीरता से विचार किया जाता। परन्तु वहां पर एक पक्ष ऐसा था जो इस विषय को अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न बना कर बात कर रहा था। कईयो ने तो यहां तक भी कहा कि स्वामी दयानन्द जी द्वारा बनाए उपनियमो मे परिवर्तन हो ही नहीं सकता। उन लोगो को शायद नियम अथवा उपनियम में अन्तर भी पता न हो। आर्य समाज के नियम आर्य समाज के उद्देश्य हैं। इसमे परिवतन संशोधन करने का अधिकार किसी को भी नहीं है। उपनियम जो आर्य समाज की स्थापना से लगभग दस वर्ष बाद आर्य-समाज के कार्य वहन के लिए सार्वदेशिक सभा के अनुसार १८८५ मे बनाए गए थे। इन उपनयमाको सख्या उस समय २८ थी परन्तु स्वामी दयानन्दजी के पत्र जो उन्होने गोहत्या बन्द के विषय मे ८ अप्रैल सन १८८२ को बम्बई से मान्यवर श्रीमान चन्दकिशोरसिंहजी मे लिखा था में उपनियमो का उल्लेख किया है। स्वामी जी के इस पत्र को मैं अपने इस पत्र को मैं अपने इस लेख में स्थान देना चाहता हु ताकि उपनियमो की चर्चा जो मैं कर रहा हूं उस विषय में आपको पता लग सके कि यह सब १८८२ मे विद्यमान थे। दूसरे गोवध बन्दी जिसकी चर्चा मैंने आगे जाकर करनी है उस विषय मे भी स्वामी जी के विचार आपको बता सकू।

"आपका पत्र तिथि ४ का मिला आनन्द हुआ। मुझे प्रसन्नता है कि पण्डित कालूराम वहां सफल हुए। मुझे यह भी सुन कर आनन्द हुआ है कि जयपुर में गोवध बन्द कराने के लिए कार्यवाई हो रही है। मैं यह चाहता हूं कि यह काम किसी महाराणा द्वारा सफलता को प्राप्त हो। आपने वास्तव मे यह बहुत उत्तम प्रबन्ध किया है कि कोई गाय, बैल या भैंस आपके राज से बाहिर न बेची जाए इससे अतिरिक्त जो उपाय सबसे उत्तम है, मैं सुझाना चाहता हूं वह यह है कि गायो की गणना की जाए। जिसमें राज्य की समस्त गाय, बैल, भैंस आदि की सख्या लिखी जाए और उस कार्यालय में जो इससे सम्बन्ध हो, प्रत्येक पशु का जन्म और मृत्यु लिखी जाए यह गायोंकी गणना प्रत्येक छह महीनो पश्चात होनी चाहिए। कारण यह है कि इससे रात्रि मे पशुओं का चुराया जाना बन्द हो सके। आपने एक आर्य धर्म सभा स्थापित की है। वास्तव मे अत्यन्त प्रशसा के योग्य काम किया है। मैं आशा करता हु कि इसका उद्देश्य आर्यों का उपकार और ईश्वरोक्त सत्य वैदिक धर्म की उन्नति करना होगा। आपकी इस सभा से देश को बड़ा लाभ पहुंचने की आशा है।

गोरक्षा को कार्यवाई बड़ी उन्नति कर रही है और बहुत सफल हो रही है। बम्बई मे हमने दो हजार हस्ताक्षर गोरक्षा के लिए करा लिए है। हम गोवध केवल रजवाड़ो से ही बन्द नहीं करवाना चाहते प्रत्युत हम पार्लियामेंट की सेवा मे प्रार्थना भेजेंगे। इस अभिप्राय से हमें दो करोड़ हस्ताक्षरो की आवश्यकता है। हम आशा करते हैं कि राजे महाराजे परस्पर एक दूसरे को इसकी प्रेरणा करेंगे। इस पत्र के अतिरिक्त हमने आपको पांच छपे हुए पत्र गोरक्षा सम्बन्धी भेजे हैं जो आपको शीघ्र पहुंच जायेंगे।

आर्य समाज के नियम उपनियम उस समाज में जो आपने सफलता से स्थापित की है, रख छोड़ने चाहिए। अन्त मे हम सब आपको आशीर्वाद देते हैं यथावत् पत्र व्यवहार करते रहना जो पांच पत्र हमने आपको भेजे हैं। उससे आप हमारे अभिप्रायको भली भांति समझ सके। कृपा करके अपने राज्य मे जितने मनुष्यो के हस्ताक्षर इकट्ठाकर सकें कीजिए और उन हस्ताक्षरो का अपने पास रखिये। हमको उनकी शीघ्र आवश्यकता पड़ेगी।

हस्ताक्षर (दयानन्द सरस्वती)

इस पत्र से यह बात पूर्णत सिद्ध हो जाती है कि स्वामी जी के हृदय में गौओं के प्रति कितना प्रेम था। दूसरा उपनियम १८८२ में जो थे। उनमें एक यह भी नियम था, बड़े के पीछे विज्ञापन देकर उन्हें संशोधन किया जा सकता है। उपनियमों में तीसरा नियम इस प्रकार था। इस समाज में प्रति देश के मध्य एक प्रधान समाज होगा और अन्य समाज शाखा होंगे। इस आधार पर ३१ अगस्त १९०९ को सार्वदेशिक सभा की स्थापना की गई। उसने अपने ग्यारहवें उद्देश्य में यह लिखा आर्य समाज के उपनियमों में आवश्यकतानुसार संशोधन परिवर्तन तथा परिवर्द्धन करना। इसी आधार पर सार्वदेशिक सभा ने २६-१-१९१५ में इन उपनियमो में परिवर्तन किया। इसके पश्चात् सार्वदेशिक सभा ने १८-७ १९७१ को जोकि १-११-१९७१ को लागू हुए परिवर्तन किया।

उन लोगों को यह भी ज्ञान नहीं कि आज की बैठक में नियमो पर नहीं बल्कि उपनियमो पर चर्चा हो रही है। या यह भी हो सकता है कि वह यह समझते हो कि उपनियमों मे परिवर्तन या संशोधन हो ही नहीं सकता। आरम्भ में उपनियम २८ थे फिर ४८ बने, वर्तमान में ४४ है। मेरा यह सब कुछ लिखने का अभिप्राय केवल इतना ही है कि उपनियम आर्य समाज के कार्य वहन प्रबन्ध से सम्बन्ध रखते हैं। परिस्थितियो के अनुसार उसमे संशोधन परिवर्तन करना पड़ता है तथा होना भी चाहिए। किन्तु यह अधिकार केवल सार्वदेशिक सभा को ही है। परन्तु न जाने कुछ आर्य भाई इसको अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न बना कर इसकी वास्तविकता से क्यों दूर दूर हो रहे थे। उनकी सबसे बड़ी आपत्ति यह थी कि यदि मासिक चन्दा दो रुपये कम से कम कर दिया गया तो कोई भी राजनीतिक पार्टी २४ रुपये प्रति सदस्य के हिसाब से चन्दा जमा करा कर आर्य समाज को अपने कब्जे में कर लेगी। यहां पर यह भी प्रश्न अनुचित नहीं क्या वर्तमान आर्य समाजो के अधिकारी यह सब कुछ नही कराते। मीटिंग में उत्तर प्रदेश सभा के प्रधान ने स्पष्ट शब्दो में यह कहा था कि उनके प्रान्त में आर्यसमाजें ऐसी है कि जिनके सदस्य इस योग्य ही नही कि वह आर्य समाज का चन्दा दे सकें।

हमे ही उनका चन्दा भरना पड़ता है। मध्यप्रदेश के एक सज्जन ने कहा कि जो लोग सरकारी नौकरी पर है उनकी आय तो किसी प्रकार से अनदेखी नही की जा सकती। वह सभी आर्य समाज छोड़ जायेंगे। मैं जिस विषय की ओर आपका ध्यान दिलाना चाहता हूं, वह इस नियम की उपधारा (ख) है जो इस प्रकार है। "उपधारा (क) मे प्रयुक्त सदाचार की परिभाषा इस प्रकार है। सन्ध्या आदि नित्य कर्म युक्त कृति वैदिक संस्कार पत्नी व्रत व पतिव्रत आदि आदि सदाचार हैं। व्यभिचार मद्यादि मादक द्रव्यो और मांसादि अभक्ष्य पदार्थों का सेवन जुआ चोरी छल कपट, रिश्वत आदि दुराचार है। क्या हम इस ओर कभी ध्यान देते है ? इस प्रकार बतांश के विषय में भी हम आंख मूंद लेते हैं। फिर भी हम इस धारा को क्यो रखना चाहते हैं। जनसम्पर्क बढ़ाने में इस धारा का क्या प्रभाव है। हमको बतांश का उपनियम पारित तो कर लिया है पर उसे कैसे लागू किया जाए।'

करनी कथनी एक नहीं करते हैं सिद्धान्त की बातें।
उनसे तो वही अच्छे जो करते हैं साफ साफ बातें॥

एक दक्षिण भारतीय मुस्लिम भाई का संस्कृत प्रेम

प्रसन्नता की बात है कि उर्दू भाषी होते हुए भी दक्षिण भारतीय मुस्लिम परिवार के श्री प० गुलाम दस्तगीर अब्बास अली बिराजदार महोदय ने अपनी पौत्री के विवाह संस्कार का निमन्त्रण पत्र श्री स्वामी जी की सेवा में संस्कृत भाषा में भेजकर संस्कृत के प्रति अपनी निष्ठा प्रकट की है, जो प्रशंसनीय है। हमें इस प्रकार के कार्यक्रमों पर सदा हिन्दी यदि सम्भव हो। तो संस्कृत भाषा में निमन्त्रण पत्र आदि छपवाकर संस्कृत के प्रति अपना आदर एवं स्नेह व्यक्त करना चाहिए पत्रोत्तर भी श्री स्वामी जी ने संस्कृत भाषा में भेजकर नव दम्पति के भावी गृहस्थ जीवन की सद्गृहस्थ एवं श्रीवृद्धि की कामना की है। पत्र का अविकल प्रतिलिपि आपके समक्ष प्रस्तुत है। पत्र—

पत्र—

॥ अध्यक्तमेक मोहम्मद प्रेषित

नमो नमः —

मम तृतीय पुत्रस्य चि० प० गुलामदस्तगीरस्य कनिष्ठा कन्या सौ का ग्यासुन्निसा इत्यस्या शुभविवाह बाबूमिया (शहाबाद, जि गुलबर्गा) इत्यस्य कनिष्ठ सुपुत्र श्री मोहम्मद इस्माईल इत्यनेन सह सुनिश्चित।

कृपया सकुटुम्बै तत्रभवद्भि मित्रपरिवारेण सह अवश्य समुपस्थाय शुभाशीर्वचनं अनुग्रहमाज कर्तव्या बिराजदारकुटुम्बीया, इति सादर प्रार्थये।

भवदीया विनीता,

मासूमबी अब्बासअली बिराजदार

विवाहसमय —रविवासर दि ११ फरवरी १९९०, प्रात १० ३०

विवाहस्थलम् — नगरपरिषद मंगलकार्यालय, अक्कलकोट

जिल्हा—सोलापूर, पिन-४१३ २१६ (महाराष्ट्र)

पूज्यमातु प्रार्थनानुसारम् अवश्य समुपस्थातव्यम इति साग्रहा विनम्रा च विज्ञापना।

प० गुलामदस्तगीर अ बिराजदार सौ वहिदा गुलामदस्तगीर बिराजदार

अन्त मुझे पूर्ण विश्वास है कि यदि देश का प्रत्येक नागरिक सम्मान और यश का जीवन जीना चाहता है तो उसे अपने विचारों को प्रकट करने के लिए अपने बच्चों में संस्कृत के प्रति प्रेम जागृत करना होगा। इससे हमारा गौरव और सम्मान बढ़ेगा हमारे पूर्वजों ने जिस सभ्यता और संस्कृत भाषा के प्रति हमारे क्रिया कलाप ही हम रो आस्था और प्रेम के प्रतीक होंगे तभी हम कह सकेंगे कि—

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्व स्व चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥

सही अर्थों में सावधान है।

सम्पूर्ण वेद भाष्य १० खण्ड ९ जिल्द मे मूल्य ५५०) रुपए

ऋग्वेद भाग १ से ५ तक (महर्षि दयानन्द)	२९०)
यजुर्वेद भाग-६	७०)
सामवेद भाग ७	५०)
अथर्ववेद भाग-८	५०)
अथर्ववेद भाग ९+१०	९०)
वेदों का भाष्य का नेट मूल्य—	४५०) रु० है।

एक साथ लेने पर १५ प्रतिशत कमीशन दिया जायेगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नई दिल्ली-२

आर्य लेखक कोश के लिए आर्य जगत से अपील

आर्य जगत को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्यसमाज के विख्यात शोध विद्वान डा० भवानीलाल भारतीय आर्य समाज के लगभग १००० लेखकों साहित्यकारों, कवियों और विद्वानों का जीवन परिचय तथा उनकी साहित्य साधना का एक विशाल परिचयात्मक ग्रन्थ आर्य लेखक कोश के नाम से तैयार कर रहे हैं। इस महत्त्वपूर्ण सन्दर्भ ग्रन्थ को शीघ्र ही मुद्रण के लिये प्रेस में दिया जा रहा है। इसमें पर्याप्त धन व्यय होगा और यह महत् साहित्यिक अनुष्ठान आर्यजनों के सहयोग एवं सहायता से ही पूरा होगा। देश के प्रत्येक आर्य एवं आर्य समाज से मेरी अपील है कि वह भारतीय जी को इस उत्तम कार्य में पूर्ण आर्थिक सहयोग दें। इस ग्रन्थ का अग्रिम मूल्य १०० रु० अविलम्ब भारतीय जी को भेज दें ताकि वर्षान्त तक ग्रन्थ छपते ही यह उनकी सेवा में भेजा जा सके। आर्य समाज अधिक सहायता न्यूनाति न्यून १०००) रु० भेजें ताकि ५० हजार बजट का यह ग्रन्थ शीघ्र पाठकों को प्राप्त हो सके।

—स्वामी सर्वानन्द सरस्वती
प्रधान वैदिक यति मण्डल
दयानन्द मठ दीनानगर (पंजाब)

आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक साप्ताहिक के पाठकों से निवेदन है कि जिन सदस्यों ने वार्षिक शुल्क अभी तक कार्यालय में नहीं भिजवाया है, वह कृपया शीघ्र वार्षिक शुल्क भेजकर सहयोग प्रदान करें। मनिआर्डर भेजते समय अपना पूरा पता व ग्राहक संख्या लिखने का कष्ट करें। वार्षिक शुल्क २५) रुपए है।

बार-२ वार्षिक शुल्क भेजने की परेशानी से बचने का सरल उपाय एक बार २५० रुपए भेज कर सार्वदेशिक साप्ताहिक के आजीवन सदस्य बन सकते हैं।

—व्यवस्थापक सार्व० साप्ताहिक

हिन्दू सनातन धर्म सभा की ओर से [illegible]

रसायनी के साथ रामभक्तों का

दिल्ली में विरोध प्रदर्शन

नई दिल्ली। हिन्दू सनातन धर्म सभा की ओर भारतीय जनता पार्टी के मुख्यालय के समक्ष धरना दिया गया। नारे बाजी के साथ ज्ञापन भी दिया गया। ध्वजाध्वज हाथो मे लिए रामभक्तो ने—रामभक्तों के खिलाफ जो नारे लगाये वह भी भयकर थे—

१—रामभक्तो का चोर है, बी०जे०पी० चोर है।

२—बी०जे०पी० ने क्या किया, हिन्दुओ को गुमराह किया।

३—जब सौगन्ध राम की खाई है, तो कहा तक इसे निभाई है।

४—राममन्दिर को बनने से रोका है, बी०जे०पी० धोखा है।

ज्ञापन मे बी०जे०पी० के नेताओ द्वारा किये गये निर्णय से करोड़ो हिन्दुओ रामभक्तो के दिलो को भारी आघात पहुँचाया है। और इससे समस्त हिन्दू आर्य जगत को अपमानित होना पड़ा है।

माग पत्र मे यह भी कहा है कि सार्वजनिक रूप से यह बताना चाहिए। कि जनता द्वारा दिये चन्दे मे करोड़ो रुपया का हिसाब कहा है। रामशिलाओ का अयोध्या मे दुर्दशा क्यो हो रही है। जमा धन का आडिट क्यो नही कराया जा रहा। साथ ही चन्दे का राजनीतिक (भा ज पा) वाले उपयोग कर रहे हैं। जिसके लिये रामभक्त कभी भी क्षमा नही करेंगे।

—पी० ब० २१

राजीव गांधी ने कश्मीर की स्थिति पर चिन्ता प्रकट की

राजीव गांधी राष्ट्रपति से मिले

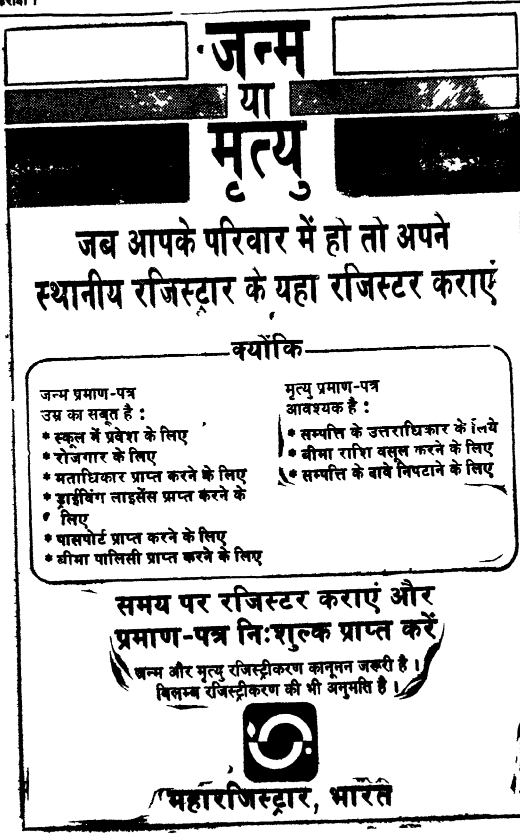
नई दिल्ली ४ मार्च।

कांग्रेस (इ) ने कश्मीर घाटी में बदतर होती जा रही स्थिति पर गंभीर चिन्ता व्यक्त की है और कहा कि सीमावर्ती जम्मू कश्मीर राज्य में जो कुछ हो रहा है उससे पूरे देश को कष्ट पहुंच रहा है पार्टी ने कहा है कि ऐसी स्थिति में तुरन्त व्यापक कार्रवाई की जानी चाहिए। श्री राजीव गांधी के नेतृत्व में आज रात यहां राष्ट्रपति भवन मे कांग्रेस (इ) पार्टी के उच्चस्तरीय प्रतिनिधि मण्डल ने भेंट की तथा उन्हें पार्टी की चिन्ता से अवगत कराया।

कांग्रेस (इ) सूत्रों ने बताया कि राष्ट्रपति से मुलाकात के दौरान श्री गांधी ने कहा कि कश्मीर जैसे संवेदनशील राज्य की घटनाओं से सारा देश प्रभावित है और वहां स्थिति से निपटने के लिए तुरन्त व्यापक कदम उठाये जाने चाहिये।

समझा जाता है कि श्री गांधी ने राष्ट्रपति से कहा कि कांग्रेस (इ) की राय में राज्य का मौजूदा प्रशासन वहां की स्थिति से निपटने में असफल साबित हो रहा है।

सूत्रों के अनुसार कांग्रेस (इ) प्रतिनिधि मण्डल ने राष्ट्रपति श्री वेंकटरामन का ध्यान राज्य के नागरिकों में बढ़ती असुरक्षा की भावना की ओर आकृष्ट किया और उन्हें बताया कि आतंकवादियों के डर से पिछले कुछ सप्ताहों में बहुत से लोग वहां से पलायन कर गये हैं।



आर्यसमाज राजपुरा (पटियाला) द्वारा ५०० धोतियों एवं अन्य वस्त्रों का सहयोग

पंजाब मे जिला पटियाला के राजपुरा आर्य समाज मे गत १४ फरवरी से २३ फरवरी ९० तक प्रसिद्ध वैदिक विद्वान और सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री प० पृथ्वीराज शास्त्री के ब्रह्मत्व मे यजुर्वेद पारायण यज्ञ का सुन्दर कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस यज्ञ में बड़ी संख्या मे पौराणिको ने भी भाग लिया। श्री शास्त्री जी के वेदो मे गहन अध्ययन और सुन्दर ढंग से वेद कथा के प्रवचन से जनता को बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने कहा कि वेदो मे क्या क्या विषय हैं इसका पता उन्हे आज तक नही था, शास्त्री जी के प्रवचन से हमे बहुत कुछ पता चला है। इस प्रकार का वेद यज्ञ उन्हे पहली बार देखने और सुनने को मिला है।

यज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर सार्वदेशिक सभा की ओर से रायगढ़ मे आगामी १७ और १८ मार्च ९० को होने वाले द्वितीय वनवासी आर्य सम्मेलन मे विशाल शुद्धि समारोह के लिए आर्य समाज राजपुरा की ओर से श्री शास्त्री जी को ५०० नई धोतियां और अन्य वस्त्रो का सहयोग दिया गया है। सार्वदेशिक सभा आर्य समाज के समस्त पदाधिकारियो और सदस्यो के सहयोग के लिए आभारी हैं। इस कार्यक्रम में अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के कोषाध्यक्ष श्री वेदव्रत महता सपत्नीक तथा श्रीमती प्रेमलता खन्ना भी सम्मिलित थी।

ग्राम सलखिया (जिला-रायगढ़) मध्यप्रदेश में

वनवासी आर्य महासम्मेलन का भव्य आयोजन

यह सर्वविदित है कि विदेशी शक्तियां पेट्रोडालर के बल पर हमारे वनवासी एवं हरिजन बन्धुओं को अपने मूल धर्म की धारा से काटकर धर्मान्तरित कर रही हैं जिससे भविष्य में देश की एकता एवं अखण्डता के लिए भयंकर संकट उत्पन्न हो सकता है इससे सभी देश भक्त चिन्तित हैं अतः राष्ट्र की अखण्डता आदि ज्वलंत समस्याओं को सामने रखकर आर्य समाज के शिरोमणि संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं वैदिक यति मंडल की प्रेरणा पर आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश एवं विदर्भ तथा उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त तत्वावधान में विगत तीन वर्षों से धर्मरक्षा महाभियान के अन्तर्गत वनवासी क्षेत्रों में पुर्नमिलन आन्दोलन चलाया जा रहा है।

गत नवम्बर १९८८ में सीतापुर जिला सरगुजा में प्रथम वनवासी आर्य सम्मेलन सम्पन्न हुआ था जिसमें लगभग ६००० आदिवासी भाई बहिनों ने यज्ञवेदी पर उपस्थित होकर वैदिक मन्त्रोच्चारण के साथ पुर्नमिलन का अद्भुत दृश्य उपस्थित किया था। इसी प्रकार विदर्भक्षेत्र में नवम्बर १९८९ में बेलखण्ड (जिला अकोला) में लगभग १५०० भील वनवासी बन्धु जो ईसाई एवं मुसलिम धर्म में धर्मान्तरित हो चुके थे, स्वेच्छापूर्वक स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता में वैदिक धर्म की दीक्षा ली।

इसी शृंखला में आगामी फाल्गुन कृष्ण षष्ठी, सप्तमी १७, १८, मार्च १९९० तदनुसार शनि, रविवार ग्राम सलखिया जिला रायगढ़ में वनवासी आर्य महा सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है जिसमें रायगढ़ एवं सरगुजा अंचल के वनवासी हजारों की संख्या में सम्मिलित होंगे। इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया जायेगा, जिसमें वनवासी बन्धुओं को यज्ञवेदी पर यजमान पद पर प्रतिष्ठित कर यज्ञोपवीत देकर सम्मानित किया जायेगा और उन्हें राष्ट्र धर्म की मुख्यधारा से जोड़ा जायेगा। महासम्मेलन की अध्यक्षता करने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी, पूज्य स्वामी ओमानन्द जी, महात्मा प्रेम प्रकाश जी श्री पृथ्वीराज जी शास्त्री, श्री ओमप्रकाश वर्मा आदि वैदिक यति मण्डल के अनेक साधु सन्यासी पधार रहे हैं।

इस अवसर पर आर्य वीर दल शिविर, राष्ट्ररक्षा एवं एकता सम्मेलन, वैदिक सांस्कृतिक प्रदर्शनी, धनुर्विद्या प्रदर्शन, योगासन, व्यायाम, प्राणायाम आदि भव्य एवं आकर्षक कार्यक्रम होंगे।

धर्म प्रेमी सज्जनों ! इस पवित्र आयोजन में आप सादर आमन्त्रित हैं अधिक से अधिक संख्या में पधार कर धर्म लाभ उठावें। धर्म रक्षा अभियान का यह पवित्र कार्य सभी राष्ट्रभक्त श्रद्धालु महानुभावों के उदार सहयोग से चल रहा है जिसके लिये हम सभी सहयोगियों एवं [illegible] आभारी हैं इस महायज्ञ एवं महासम्मेलन की सफलता तथा वनवासी आर्य बन्धुओं के स्वागत हेतु आर्थिक सहयोग की अत्यन्त आवश्यकता है। अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि सदैव की भांति इस सम्मेलन को भी अपना सात्विक सहयोग तथा दान की राशि प्रदान कर इस पुनीत राष्ट्रीय कार्य में सहयोगी बनें। सहयोग (ड्राफ्ट स्टेट बैंक या सेन्ट्रल बैंक खरियार रोड के नाम से होना चाहिए।

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा, उपकार्यालय-गुरुकुलाश्रम आमसेना ७६६ १०६
खरियार रोड; कालाहांडी (उड़ीसा)

विनीत—

धर्मानन्द सरस्वती, प्रधान	रमेशचन्द्र, प्रधान
विशिकेशन शास्त्री, मन्त्री	सत्यवीर शास्त्री, मन्त्री
उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा	आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ

दिल्ली ५ मार्च। प० वेद [illegible] कि वेदोद्धारिणी प्रतिष्ठान के तत्वावधान में दिल्ली के रामलीला [illegible] में वेद महोत्सव के उपलक्ष में चतुर्वेद महायज्ञ आज प्रातः प्रारम्भ हो गया है इसकी मुख्य विशेषता यह है कि इसमें २७ब्राह्मणों के आधार पर २७ छोटे एक बड़ा यज्ञ कुण्ड बनाए गये हैं। इस वेद महोत्सव कार्यक्रम में देश भर के विद्वान बड़ी संख्या में भाग ले रहे हैं। यज्ञ का प्रारम्भ प्रातः ८ से ९-३० बजे तक तथा सायंकाल ४ से ६ बजे तक प्रतिदिन होगा। रात्रि ८ से ९ बजे तक प्रसिद्ध मौलिक विद्वान स० कृष्णदत्त का प्रवचन होगा। इस महोत्सव की पूर्णाहुति १० मार्च को होगी और १२ बजे दोपहर प्रीतिभोज का आयोजन होगा।

संकटपूर्ण स्थिति में २५ हजार हिन्दू कश्मीरियों का पलायन

श्री वेदपाल शास्त्री का दुःखद बयान

जम्मू। श्रीनगर से पधारे प० वेदपाल शास्त्री ने बताया कि कश्मीर में हिन्दुओं की दशा शोचनीय है अब तक २५ हजार से ऊपर हिन्दू कश्मीर से भागकर अन्य राज्यों में जा चुके हैं। उन्होंने कहा कि कश्मीर में व्याप्त हिंसा के कारण हिन्दू परिवार जम्मू दिल्ली पंजाब आदि शहरों में केवल शरणार्थी बनकर पड़े हैं। आश्चर्य यह है कि अभी तक उनकी सहायता कहीं से नहीं की जा रही है।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा इन परिवारों से सम्पर्क कर उनकी सहायता करने की आर्य समाजों से अपील की है।

श्री वेदपाल शास्त्री जी ने बताया कि जो परिवार वहां से भाग कर बाहर आ रहे हैं उन्हें अपना सामान भी वहीं से लाने दे रहे हैं और जो सामान ले आते हैं उनसे मार्ग में यह छीन लिया जाता है कि यह सामान और सम्पत्ति सब हमारी है ?

श्री शास्त्री जी स्वयं वहां श्रीनगर से भागकर खाली हाथ दिल्ली संकट की घड़ी में पहुंचे हैं।

राजनीतिक दल अल्पसंख्यक समुदायों की चापलूसी करके वोटों की राजनीति खेलकर विधान सभाओं में जीतकर जाना चाहते हैं। इसलिए उनका विरोध न कर हिन्दू पीड़ितों को कोई सहायता भी खुलकर नहीं [illegible] जा रही है।

आर्यसमाज मन्दिर पर बम

श्री वेदपाल जी शास्त्री के समक्ष दो बार मन्दिर पर बम फेंके गये वह व उनका परिवार किसी न किसी तरह बच गये। अभी हाल में पुनः मन्दिर पर बम फेंककर मन्दिर को क्षति पहुंचाई है।

महान योगदान

प्रथम महोत्सव १९९०, ५ से १० मार्च तक रामलीला मैदान दिल्ली में होने वाले २७ कुण्डीय चतुर्वेद द्वादश दैवतेष्टि महायज्ञ में आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री महाशय धर्मपाल एम.डी एच. ने ५ बोरी सामग्री, १ कनस्तर देसी घी एवं महाशियन (भण्डारा) के लिए सभी अपेक्षित मसालों का योगदान देकर वेदोद्धारिणी प्रतिष्ठान को अनुगृहीत किया है तथा आर्य समाज दिल्ली की ओर से भी दो कनस्तर देसी घी का महान योगदान प्राप्त हुआ है।

—मन्त्री, (वेदोद्धारिणी प्रतिष्ठान दिल्ली)

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वेदामृत

परिवार में सभी नीरोगी हों

वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान्,

स्वावेशो अनमीवो भवा नः ।

यत् त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व

शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥

ऋग्० ७-५४-१, तैत्ति० सं० ३-४-१०-१ ॥

अर्थ—हे गृहपति वास्तोष्पते अग्नि ! हमें जानिए । हमारे लिए सरलता से प्रवेश के योग्य और नीरोगता देने वाले होओ। हम जिस इच्छा से तुम्हारे पास आते हैं वह हमें दीजिए । हमारे मनुष्यों (परिवार के सदस्यों) और पशुओं के लिए कल्याणकारी होओ । —डा० कपिलदेव द्विवेदी

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९० दयानन्दाब्द १६२ दूरभाष । ३२०४७७१ वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे
वर्ष २९ अंक १०] चैत्र कृ० ७ सं० २०४६ १८ मार्च १९९०

काश्मीर में हस्तक्षेप के खिलाफ पाकिस्तान को कड़ी चेतावनी

संसद के संयुक्त अधिवेशन में राष्ट्रपति का अभिभाषण

दिल्ली १२ मार्च । राष्ट्रपति महामहिम रामास्वामी वेंकटरामन ने आज संसद के दोनों सदनों के संयुक्त अधिवेशन में जम्मू-काश्मीर की बिगड़ी हालत का जिक्र करते हुए कहा कि पाकिस्तान से हमारे रिश्ते में तनाव आ गया है, क्योंकि वह जम्मू-कश्मीर तथा पंजाब में आतंकवादियों को बढ़ावा दे रहा है। उन्होंने चेतावनी दी कि हम अपने आंतरिक मामलों में इस तरह के हस्तक्षेप को सहन नहीं करेंगे ।

उन्होंने कहा भारत सरकार ने पाकिस्तान पर जोर डाला है कि वह शिमला समझौते का पालन करे। उससे शांति कायम हो सकेगी । महामहिम राष्ट्रपति ने यह भी स्पष्ट कहा कि बाहरी ताकतों ने आतंकवाद को प्रोत्साहन देने, इस मसले को अन्तर्राष्ट्रीय समस्या बनाने और सीमा पर सुनियोजित ढंग से घुसपैठ कराने का प्रयास किया है, भारत सरकार ने इन ताकतों के खिलाफ मजबूती से काम लिया है। उन्होंने आशा प्रकट की कि पाकिस्तानमें ऐसी समझदारी जगेगी जिससे शान्ति बनी रहेगी और भारत के साथ उसके मधुर सम्बन्ध बनाने में सहायता मिलेगी ।

भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद की महर्षि दयानन्द के प्रति प्रगाढ़ आस्था

हम सब महर्षि दयानन्द के ऋणी हैं । उनकी दूरदर्शिता देखकर आश्चर्य होता है कि विदेशी शासन के विरोध मे सक्रिय संघर्ष के समय जिन बातों पर महात्मा गांधी ने अधिक बल दिया और उन्हे रचनात्मक कार्य की संज्ञा दी प्राय वे सभी स्वामी दयानन्द के कार्यक्रम मे ५० वर्ष पूर्व शामिल थे ।

देशभर के लिए एक सामान्य भाषा की आवश्यकता स्वामी दयानन्द ने महसूस की और हिन्दी को ही राष्ट्रभाषा अथवा आर्य भाषा होने के योग्य माना । इसके अतिरिक्त अछूतोद्धार, स्त्री शिक्षा हाथ के बने कपड़े, अथवा स्वदेशी प्रयोग इत्यादि बातो पर भी उन्होंने काफी बल दिया और वे स्वय भी जीवन भर इन बातो पर पूरा अमल करते रहे ।

उनकी कृतियो और उपदेशो से यह बात भी स्पष्ट हो जाती है कि वे विचारो से राष्ट्रवादी थे और विदेशी शासन के स्थान पर स्वराज्य अथवा भारतीयो के ही राज्य का स्वप्न देखते थे ।

समाज सेवा के क्षेत्र मे स्वामी दयानन्द और आर्य समाज ने जो कार्य किया उसके महत्व से इन्कार नहीं किया जा सकता । इस कार्य के लिए और देश को जो उससे लाभ पहुंचा उसके लिए हम सब दयानन्द के ऋणी हैं ।

—भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद

वनवासी आर्य सम्मेलन की जोरदार तैयारियां

आर्य समाज के नेताओं का प्रस्थान

१७-१८ मार्च को रायगढ़ जिला के सलकिया क्षेत्र में सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में वनवासी आर्य सम्मेलन की जोरदार तैयारियां लगभग पूर्ण हो चुकी हैं । सम्मेलन में भाग लेने के लिए सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, प्रसिद्ध वैदिक विद्वान पं० पृथ्वीराज शास्त्री और सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक श्री बालदिवाकर हंस १५मार्च को सलकिया के लिए रवाना हो रहे हैं। उनके साथ अन्य अनेक आर्य भाई बहिन भी जा रहे हैं ।

मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के ईसाई बहुल वनवासी क्षेत्रों में सार्वदेशिक सभा की ओर से यह दूसरा वनवासी आर्य सम्मेलन है। उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी धर्मानन्द सरस्वती और मध्य प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रमेशचन्द्र श्रीवास्तव तथा इनकी सभाओ के सहयोग से यह ऐतिहासिक सम्मेलन धर्मरक्षा महाभियान की महान् उपलब्धि सिद्ध होगी । अनुमानतः कम से कम ५ हजार ईसाई इस समय वैदिक धर्म में प्रविष्ट होंगे ।

जम्मू काश्मीर के राज्यपाल जगमोहन की हत्या की साजिश

आतंकवादियों ने जम्मू एवं काश्मीर के राज्यपाल श्री जगमोहन की हत्या की साजिश की थी, लेकिन सुरक्षा बलों ने घाटी से कुछ आतंकवादियों को गिरफ्तार करके इस साजिश को विफल कर दिया । पता चला है कि पाक अधिकृत कश्मीर मे कुछ उग्रवादी संगठनों ने जगमोहन की हत्या की योजना बनाई थी । कुछ

(शेष पृष्ठ ११पर)

सम्पादक—डा० [illegible]

सम्पादकीय—

देश के लिए नासूर बन रहा है विद्रोही तत्व !

देश कहां जा रहा है नेता को इसकी चिन्ता नहीं ! उसे सम्पूर्णता बुखारी की जय बोलकर सत्ता की कुर्सी चाहिए। देश चाहे जाए जहन्नुम में।

शरीर में एक घाव हो तो उसका इलाज हो। पर जब सारे शरीर में ही नासूर बन गया हो तो नस्तर कहां लगाया जाय।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद से देश में विघटनकारी तत्वों का प्रादुर्भाव कैसे-२ हुआ। इसका यदि लेखा जोखा किया जाए तो पता चलेगा कि मकान में चोरों ने सेंध कहां २ लगाई है। पहरेदार आंख बन्द कर रामनाम की माला जप रहे हैं—

पिछले दिनों अखबारों में पढ़ा था कि पाकिस्तान में ६०० से पाक० उ० प्र० में आए। पर अब उनका पता नहीं कि वह कहां चले गए। सरकार परेशान है। ऐसे सारा देश चोरों से भरा है।

बंगला देश से लाखों आसाम बंगाल में आ गया। इस पर आन्दोलन चल रहे हैं निकालने का बना। पर टांय-२ फिस।

इन घुसपैठियों द्वारा देश में तोड़ फोड़ या विद्रोह की जो आग लगाई है वह अब दावानल बन चुकी है।

रुबिया काण्ड से पांच विद्रोहियों को कैसे छुड़वाया गया सारा देश ही दांव पर लगा दिया है।

अभी आज ८ मार्च ९० के समाचार में एक अद्भुत समाचार छपा है पढ़कर आश्चर्य हुआ। अन्धा पीसे कुत्ता खाये ?

घटना है उत्तर प्रदेश के एक मन्त्री की जो निम्न है। इसे पढ़कर आप अन्दाजा लगायें कि सत्ता तक में विद्रोह की आग लगाने बैठे हैं विद्रोही।

इस घटना से देश विदेश के विभिन्न अधिकारी प्रदेश के एक मन्त्री की गैर सरकारी यात्रा से रहस्यमय ढंग से सशंकित हो उठे हैं। परन्तु मन्त्री को बेनकाब करने की आफत कौन मोल लें। इसके लिये कोई भी अधिकारी दण्डित होने को तैयार नहीं ?

यदि इस समाचार की रहस्यमय यात्रा की उच्चस्तरीय जांच की जाय। तो पता चलेगा कि प्रदेश के मन्त्रि की गतिविधियां प्रदेश के लिए ही नहीं देश के लिए मुसीबत बन सकती है।

भारत माता को 'डायन' कहने के आरोपों से आरोपित उ० प्र० के श्रम मन्त्री मुहम्मद आजम अपनी स्टाफ कार से गैर सरकारी यात्रा के तहत लखनऊ से कानपुर आकर एक बजे रात को डीलक्स ट्रेन से पटना जाते हैं। और पटना में केवल चार घंटे तीस मिनट ठहरने के बाद तिनसुकिया से लौटकर कानपुर से लखनऊ आ जाते हैं। यह संदिग्ध यात्रा १९ फर० का प्रारम्भ २० को वापसी होती है। मन्त्री जी की यात्रा से कुछ ऐसे तथ्य मिले हैं जो मन्त्री जी की यात्रा के रहस्य को देने में पर्याप्त है।

मन्त्री जी की यात्रा में उनके साथ चार दाढ़ी वाले कठमुल्ले मौलवी थे पर अगले दिन रात को कानपुर आये तो ही मुल्ला वापस आये थे दोनों के दाढ़ा था। वहां मन्त्री जी को चार कठमुल्ले और मिले। वह वार्ता करके कहां गये यह रहस्य ही बन गया। क्योंकि मन्त्री जी के खिलाफ कौन बोले।

रहस्य यह है कि ९ हीं दिनों इन्टर नेशनल इस्लामिक कार्यवाहक एशिया महाद्वीप के अध्यक्ष श्री अफजल अहमद ने भी इस्लामाबाद से आकर बाबरी मस्जिद ऐक्शन कमेटी के प्रमुख नेताओं से लखनऊ फैजाबाद, दिल्ली बिहार जाकर बातें की थीं। इसके बाद ही अफजल अहमद "बाबरे हिन्द" नामक संस्था के संयोजक बनाये गये। जिसका मूल उद्देश्य भारत और अफगानिस्तान के जिन भू भागों पर बाबर ने अपनी विजय पताका फहराई। उन सम्पूर्ण क्षेत्रों को इस्लामिक राष्ट्र में परिवर्तित करके मुस्लिम कानून के तहत सचालित करना है।

विशेष समाचारों के अनुसार—

इस बैठक में इस्लाम के दुश्मनों को जो बाबरी मस्जिद विरोधी ताकतों की वकत करने के निर्णय भी लिये गये। साथ ही बिहार दिल्ली में यह भी निश्चय हुआ कि—

बाबरी मस्जिद की सुरक्षा के लिए गठित बाहिनी वाले के सदस्य 'बाबरे हिन्द' संगठन के सक्रिय सदस्य होंगे। जिनका मूल काम संगठन मजबूत करेगा। संगठन को मजबूत बनाने हेतु प्रत्येक मुसलमान को ? रुपया आर्थिक का सहयोग करना होगा।

जो मसौदा बिहार में बैठकर बनाया गया वह खालिस्तानी संविधान से कम खतरनाक नहीं है।

इन बैठकों में कश्मीर दिल्ली, अलीगढ़, कानपुर, फैजाबाद के भी कट्टरपन्थी शामिल हुए थे।

यह है इरादे देश की सम्पदा को विनाश की ओर ले जाने वाले सपने जो साकार होने जा रहे हैं।

यदि सरकार राम भरोसे न रहकर बुखारी सईद जैसों के सहारे रहेगी तो विनाश कल न होकर आज ही अवश्यम्भावी है।

अतः नासूर बनने से पूर्व ही आपरेशन जरूरी है ? तभी मरीज बच सकेगा।

होली पर रंग अपने-अपने ?

मैं गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में पढ़ता था—गुरुकुल से ४ ५ मील हटकर एक ग्राम है कटारपुर। वहां किसी समय जो कभी पर दंगा हुआ था ऐतिहासिक गांव है। आजादी के बाद आर्य समाज का उत्सव भी होली के समय ही था। महाविद्यालय से सैकड़ों छात्र आचार्य नरदेव शास्त्री के साथ उत्सव में वहां गये। शोभायात्रा निकले तो रंग खेलते हुए—

इसी समय मुसलमानों ने कभी समझौते में निश्चय हुआ होगा कि होली रंग से न खेलकर कीचड़ से खेली जायगी। इस पर विवाद बढ़ा तो जिलाधीश व पुलिस आ गई कागज देखे गये तो निश्चयानुसार कीचड़ ही चले। तभी श्री आचार्य प० नरदेव शास्त्री ने जिलाधीश से बात की। और कहा यह बताओ कि हम पहले मूर्ख थे और आगे इसमें सुधार नहीं होगा। पहले पूर्वज कीचड़ से खेले होंगे। अब हम समझदार हैं रंग से खेलेंगे। आगे सुधार होगा, चन्दन लगाकर मेल मिलाप करेंगे। जिलाधीश समझावें और कीचड़ के बजाय रंग से होली खेलकर जलूस आर्य समाज का निकाला गया।

समय २ पर होली पर्व नाना रूपों के अनेक वर्षों में चला है। होली का समय है। आबाल वृद्ध वनिता साथ होकर प्रहलाद का बहाना लेकर नर नारी तैयार हैं।

नन्दगांव बरसाने की होली

आर्य समाज के प्रसिद्ध समाजसेवी श्री कु० जोरावरसिंह जी का पत्र मिला मैंने बरसाने की होली देखने की इच्छा प्रकट की। कुंवर साहब ने प्रसन्नता से उत्तर दिया। और मैं बरसाने पहुंच गया होली तो बाद में देखी परन्तु,

श्री जोरावरसिंह जी व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती प्रभावती जी के निराले ठाठ देखें। विशाल सम्पत्ति बड़ा मैदान अतिथियों के निवास की पृथक व्यवस्था देखकर मन प्रसन्न हो गया। मुझे तो अपने साथ ही ठहराया।

मैंने पूछा भाई साहब आप भाग्यशाली हैं ? आपने कन्हैया का अवतार ले लिया। अब यहीं से होली शुरू ? कहने लगे कैसे !

मैं कहा—कृष्ण जी ने बलिष्ठ राज्य से चलकर नन्द के घर वास किया और बरसाने की राधा को लूट लिया। आप भी कमाल के कुंवर कन्हैया निकले। आपने बरसाने से चलकर बलिष्ठ से राधा को लूट लाये। अवसर ले लिया। बड़ी हंसी हुई और कुंवर साहब अपनी विजय पर प्रफुल्लित हुए। और—

आज दिन बरसाने की होली, देखने में लगा। गली-गली में शोर था—राधा रानी की जय ?

(शेष पृष्ठ १९ पर)

हम और हमारी वेश-भूषा

—श्री वंशीधर आर्य, जयनगर (बिहार)

ईश्वर ने जो प्राकृतिक देश आर्यावर्त (भारत माता) को प्रदान किया, ऐसा रूप (भूमि) शायद ही किसी देश का है। इसके उत्तर मे हिमालय पहाड़ (नियन्त्रक राज्य) मुकुट बना है। दक्षिण मे भारत महासागर चरणो को धो रहा है। पूर्व में प्रशान्त महासागर मे फैले छोटे बड़े द्वीपो का समूह साथ है, तो पश्चिम में अफ्रीका (काला देश) लाल सागर है। यही है मेरा विशाल देश। इसी देश मे संसार के सारे अलभ्य वस्तुओ का भण्डार। जिसे अनादि काल से जाना जाता है। भारत माता का मस्तक नियन्त्रक दायाँ पैर मलेशिया, इन्डोनेशिया सिंगापुर आदि। बाया पैर आज का दक्षिण भारत, श्रीलंका समेत। दाया हाथ में स्वर्ण कलश जिससे झरते स्वर्ण कण (द्वीपो का समूह) कलश स्थान कम्बोडिया, वियतनाम आदि। बाया हाथ सीधे मे उठा हुआ ईरान से अरब जगत तक। माता का पृष्ठ भाग हमारे सामने मे। आप किसी भी भाषा के जानकार हो, परन्तु मानचित्र मे सभी मे ऊपर की ओर उत्तर होता है। अत आप मानचित्र देख और अनुभव करें कि ऐसा देश और कौन है जो इसके तुलना मे आवे।

१. झण्डा —

अनादि काल से मेरा झण्डा गेरुवा रंग का दो भागो मे विभक्त था। कारण यह है कि यह पुराना भारत का मानचित्र है। मध्य का खाली स्थान बंगाल की खाड़ी है। परन्तु धीरे धीरे हमारी कमजोरी से राज्य कटते और बंटते गये। अब जो हमारे भाग बचे हैं, वह माथा विहिन, दोनो हाथ नदारत, एक दाया पैर गायब। अत अब उस झण्डे को सिर्फ त्रिभुजाकार ही रखा गया और रंग लाल। गेरुवा था त्याग (दान) पुन भोग का रंग और अब लाल है क्रांति का प्रतीक। यह देश (भारत माता) पुकार कर कहता है कि ऐ चिर निद्रा मे सोने वाले अब भी जागो और मेरे अंगो को कटते हुए देखो तथा क्रान्ति मे कूद जाओ। मरो और मारो। यह अपमान दिन प्रति दिन बढ़ता जा रहा है। कभी पाकिस्तान के रूप मे कभी अयोध्या के रूप मे।

२. चोटी—

यह आर्यों का पहचान है। भारत मा की चोटी (हिमालय की चोटी) हमारी चोटी हुई। संसार मे हिमालय सभी चोटियो मे बड़ा है। उसी प्रकार सारे शरीर में मस्तक श्रेष्ठ (बड़ा) है। हिमालय से सिन्धु गंगा, ब्रह्मपुत्र इरावती साल्वीन मीकांग आदि अनेको नदियां निकली है जैसे जैसे माथे की चोटी मे अनेको बाल (केश) हैं, उनो के सदृश्य। चोटी बांधने का मतलब हुआ कि चोटी के साथ नदियो को बांधो। नदियो को बांध कर पनचक्की विद्युत, पटावन आदि कामो मे लाओ। माथा के चोटा (बाल) और नदी का जल बहक न जाय, इस लिए दोनो को बांधकर सम्भाल कर रखें। एक को न बांधें तो मुख मण्डल खराब, दूसरे को न बांध तो राष्ट्र (जीवन और धन) खराब। अत यही सब बातो को सोचकर हमारे पूर्वजो ने चोटी रखकर समाज मे शिक्षा दे रहे थे कि चोटी रखो यही समाज और देश का जीवन (सुख की खान) है।

मगर आज के नवयुवक पश्चिमी सभ्यता के रंग में रंग कर गुलामी का दामन थामकर, ऋषि मुनियो की बातो की अवहेलना करके चोटी कटवा रहे और कहते हैं कि चोटी से क्या फायदा है।

३. यज्ञोपवीत—

यज्ञ के लिए ही यह उपवीत है। यज्ञ अर्थात हवन+माता पिता गुरु जनो की सेवा सत्कार+गौसेवा वृक्षादि लगाना आदि। हवन द्वारा हवा को सुगन्धि (समाज को स्वच्छ वायु प्रदान करना) आदि अनेक कारण हैं। माता-पिता गुरुजनो की सेवा जीवितो को भोजन वस्त्र देना है न कि मरे हुए को पिण्ड दान देकर उपोरशंख बनाना। गौसेवा, बलवीर्य (स्वास्थ्य) के लिए, खाद के लिए, बैल के लिए। खेत के लिये दवा के लिए, मृत्योपरान्त चमड़ और हड्डी के लिए, वे चमड़े से जूता और चप्पल के लिए। वृक्ष (पेड़ पौधा) फल के लिए फूल के लिए, रस के लिए, दूध के लिए, गृह निर्माण के लिए जलावन के लिए तथा जीवन के अनेक आवश्यकताओ के लिए। परन्तु आज हम लोग इसे यादगारी सूत्र न मानकर चाबी (ताली) रखने का सूत्र अथवा मलमूत्र की आवश्यकता का सूत्र बना डाले हैं। किसी प्रकार के छूत पर जैसे भूल से मलमूत्र करते हुए कान पर नहीं चढ़ा सके तो यज्ञोपवीत बदलना जरूरी समझा जाता है। परन्तु बदलिए जरूर बदलिए मगर कान पर चढ़ाना और न चढ़ाना कोई आवश्यक कार्य नही है। आप जो चाहे करें मगर पवित्रता रखना जरूरी है। इसके लिए मलमूत्र त्याग करते समय जनेऊ को कान पर चढ़ाए कंध पर रख हाथ मे उठा लें अथवा जनेऊ ही छोटा रखें, पड़ा। और उपरोक्त वर्णित हवन यज्ञ, गौ, अतिथि गुरुजन आदि सेवा करते जायें यही है यज्ञोपवीत रखने का मूल उद्देश्य।

पश्चिमी सभ्यता का रंगा हुआ युवक 'जनेऊ तोड़ो और दिल जोड़ो' का नारा देता है, जो एकदम गलत है क्योकि जनेऊ रखकर ही दिल जोड़ सकते हैं, अन्यथा नही। हमारे पूर्वज ऋषिमुनि इसी दिल को जोड़ने के लिए बताये थे यज्ञोपवित्र धारण करने का नियम। कहां तक कहा जाय कुछ समाजविरोधी उपोरशंखो का कहना है कि स्त्रियो, हरिजनो को जनेऊ नहीं पहनना चाहिए, वे जनेऊ के अधिकारी नहीं है। तो फिर कौन है वे अधिकारी, जिन्हे जनेऊ दिया जाय। आइए और विचार कीजिए। क्या ब्राह्मण का पुत्र जो छह कर्मो मे सिर्फ एक कर्म दान लेना अपने हुआ है, क्या क्षत्रिय जो क्षात्र धर्म से विमुख है नहीं, बिल्कुल नहीं। मैं इसे नहीं मानता। वर्ण व्यवस्था बाद मे बना। कर्म से वर्ण। हम कर्म करते हुए ब्राह्मण हूँ, कर्म से क्षत्रिय हूँ या वैश्य हूँ। तो एक कर्म के अनुसार जिसका मैं वर्णन करता हूं।

अब थोड़ा अतीत मे जाय और सोचें। विश्वामित्र महाराज गाधी के पुत्र क्षत्रिय परन्तु ब्राह्मण बने। राक्षस राज रावण ब्राह्मण परन्तु शूद्र (राक्षस) कहलाया। विदुर दासी पुत्र होकर ब्राह्मण। धीवर (मल्लाह) कन्या से उत्पन्न वेद व्यास ब्राह्मण हुए।

हम आर्य हैं। इसी में से जो नीच कर्म के करम हारे हुए जैसे चोर, जार (पर स्त्री पुरुष गामी) द्युत शराबी, कबाबी (मांस, मछली, अण्डा) मादक द्रव्यो का सेवन करनहारा अनार्य (दस्यु शूद्र) हुआ। आर्यों को कर्मानुसार तीन भाग मे विभक्त कर। (क) शिक्षा विभाग मे वह शिक्षक अथवा लेखक, प्रकाशक आदि जो राष्ट्र कल्याणकारी शिक्षा दें। पत्रकारिता जगत मे जो सत्य को प्रकाश करके अंधकार को हटावे न्याय विभाग (वकील समेत) जो अन्यायो को दण्ड देते हुए न्याय करे अथवा सत्य धर्म का प्रचार प्रसार करे समयोपयोगी पुस्तको से या लेखो द्वारा ज्ञान फैला दें अथवा नई नई चीजों का आविष्कार हो वही ब्राह्मण है। (ख) भारतीय सीमा पर जाकर जिसने मरने और मारने का बीड़ा उठाया हो, देश के लिए काम करता हो या मारा गया हो। फिर रक्षा विभाग (पुलिस) भी क्षत्रिय है। (ग) गो सेवा (पालन), कृषि कार्य, नौकरी चाकरी, मजदूरी काश्तकारी, चर्मोद्योग धुलाई, बुनाई व्यापार जिस भी प्रकार का उदरपूर्ति का कर्म है ये सभी लोग वैश्य है।

हमारे समाज मे हरिजन कोई भी नहीं। हरिजन कांग्रेस की दिमागी उपज है और सत्ता की कुर्सी पर जमे रहने और हरिजन का हौवा बनाकर आरक्षण देकर गरीब को गरीब बनाने का एक मात्र अवैध तरीका है। उस गरीब वर्ग को, किसी को हरिजन, किसी को गिरिजन बनाता है और वोट प्राप्त करके दिन दुना रात चौगुना मालामाल हो रहा है। इन्ही गिरिजनो हरिजनो को जनेऊ लेने से रोका जाता है चाहे वह अपने शुद्ध 'चाल चलन' से ही क्यो न हो।

(क्रमश)

पद्मश्री डा० श्यामसिंह शशि सम्मानित

प्रख्यात कवि, साहित्यकार तथा अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त नृ-विज्ञानी डा० श्यामसिंह शशी को हिन्दी तथा अंग्रेजी साहित्य में उल्लेखनीय योगदान के लिए इस वर्ष के गणतन्त्र दिवस के अवसर पर "पद्मश्री" से विभूषित किया गया।

नई दिल्ली के तालकटोरा गार्डन आडीटोरियम में आर्य युवा महा सम्मेलन का एक भव्य समारोह हुआ जिसमें लगभग छह हजार शिक्षाविद्, विद्वान, छात्र-छात्रायें उपस्थित थे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष स्वामी आनन्दबोध ने डा० शशि को स्मृति चिन्ह भेंट किया तथा प्रो० शेरसिंह, श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम डा०धर्मपाल, श्री मूलचन्द गुप्त, श्री रामनाथ सहगल, श्री जगतराम द्विवेदी आदि ने उनकी बहुमुखी प्रतिभा के सम्बन्ध में अपने उद्गार प्रकट किए।

डा० शशि बचपन से आर्य समाज से जुड़ रहे हैं। बचपन में आर्य कुमार सभा के सदस्य रहे तथा पच्चीस वर्ष पूर्व आर्य समाज किदवई नगर नई दिल्ली के मन्त्री पद पर समाज सेवा की। आर्य विद्यापीठ के परीक्षा-मन्त्री रहे तथा आर्य समाज; विवेक विहार, दिल्ली के उपाध्यक्ष रहे। उनके कार्यकाल में आर्य समाज किदवाई नगर तथा विवेक विहार के समाज-मन्दिरों का निर्माण हुआ। आनन्दस्वामी जी की प्रेरणा से विदेशी आर्य पाठकों के लिए 'आर्य'' मासिक पत्रिका का सम्पादन किया। विश्व के रोमा समाज में भी "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का संदेश लेकर योरोप व अमरीका गए। आदिवासी समाजों तथा विदेश-प्रवास में उनका आहार-व्यवहार प्रभावित नहीं हुआ। एक शुद्ध शाकाहारी तथा सात्विक वृत्ति लिए डा० शशि ने अनेक यात्राएं की। हाँ, उच्च पदों के दायित्व के कारण आर्यसमाज की गतिविधियों में भाग लेना कम हो गया किन्तु मन से सदैव आर्य जगत के साथ रहे।

डा० शशि ने कुल मिलाकर १०० से अधिक पुस्तकें लिखी हैं जिनमें से ४० पुस्तकें अंग्रेजी में हैं। उनकी पुस्तकों में १४ कविता संग्रह, एक महाकाव्य 'अग्निसागर'', यात्रावृतांत, आदिवासी जीवन पर दो दर्जन पुस्तकें बालसाहित्य, शब्दकोश तथा विश्वकोश सम्मिलित हैं। हिमालय के यायावरों तथा योरोप और अमरीका के रोमाजिप्सी समाज विषयों पर पी एच डी तथा डी. लिट् की उपाधियां पाने वाले आप प्रथम यायावर नृ विज्ञानी हैं जिन्होंने देश-विदेश में व्यापक भ्रमण किया है। उनकी कई पुस्तकें भारत तथा राज्य सरकारों द्वारा पुरस्कृत हैं।

उल्लेखनीय है कि हिन्दी के आप पहले लेखक हैं जिन्हें हिन्दी के साथ साथ अंग्रेजी साहित्य में भी यह सम्मान प्राप्त हुआ है। इसी प्रकार आप पहले नृ वैज्ञानिक कवि हैं जिन्हें हिन्दी-अंग्रेजी में एक-साथ इस प्रकार का सम्मान मिला है। डा० शशि कई क्षेत्रों में प्रथम रहे हैं तथा उन्होंने अपनी अलग पहचान बनाई है। वे भारत सरकार के प्रकाशन विभाग के पहले निदेशक तथा केन्द्रीय सूचना सेवा के पहले वरिष्ठ अधिकारी हैं। जिन्होंने निजी तौर पर साहित्य में उच्च राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त किया है।

सूचना और प्रसारण मन्त्रालय द्वारा आयोजित एक अन्य अभिनन्दन समारोह में सूचना और प्रसारण मन्त्री, श्री पी० उपेन्द्र ने कहा कि डा० शशि की उपलब्धि अन्य कर्मचारियों के लिए अनुकरणीय है। सचिव, श्री सुरेश माथुर ने कहा कि डा० शशि की उपलब्धि सरकारी कार्य में लगे अन्य लोगों के लिए एक चुनौती भी है। एक सन्देश में उपराष्ट्रपति डा० शंकर दयाल शर्मा ने डा० शशि की उपलब्धियों पर हर्ष प्रकट किया। एक अन्य समारोह में आथर्स गिल्ड आफ इंडिया के महासचिव तथा "कादम्बिनी" के सम्पादक श्री राजेन्द्र अवस्थी ने कहा कि डा० शशि ने जो साहित्य दिया है वह लीक से अलग हटकर है। डा० नगेन्द्र ने कहा कि डा० शशि की विषय-शीलता ने कृतित्व को बल प्रदान किया है और वे नृतत्वशास्त्रीय रचनाओं से भी हिन्दी को समृद्ध करते रहे हैं। डा० गयाप्रसाद विमल, श्री जगदीश चतु-



'पद्मश्री' से अलंकृत डा० श्यामसिंह शशि को स्मृति-चिह्न देते हुए पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती।
बाएं से दाएं—डा० धर्मपाल, डा० श्यामसिंह शशि, प्रो० शेरसिंह, श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम् स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

र्वेदी तथा डा० सुरजभान सिंह ने शशि-साहित्य के विभिन्न पक्षों पर टिप्पणियां करते हुए कहा कि शशि साहित्य के विभिन्न पक्षों पर टिप्पणियां करते हुए कहा कि शशि की रचना धर्मिता अपने पथ पर अनवरत बढ़ रही है।

सुप्रसिद्ध गीतकार श्री मधुर शास्त्री ने डा० शशि को मूलतः कवि बताते हुए कहा कि उनमें गीतकार की आत्मा है। प्रो० हीरेमठ ने बताया कि हरिद्वार के निकट कृषक परिवार में जन्मे डा० शशि कक्षा ८ से लेकर एम ए तक अपनी कक्षाओं में प्रथम स्थान पर रहे तथा विश्व के "हूज-हू आफ द इंटेलेक्चुअल्स" एवं देश-विदेश के अनेक संदर्भ-ग्रन्थों में उनका उल्लेख है। डा० तरंग द्वारा सम्पादित विशाल ग्रन्थ 'श्याम सिंह शशि का सृजन मूल्यांकन'' तथा "सलेक्शन फ्राम शशि" (अंग्रेजी पुस्तक) में शशि साहित्य पर सुमित्रानन्दन पन्त से लेकर मुल्कराज आनन्द तक के वक्तव्य संकलित हैं।

—धर्मेन्द्र त्यागी, पत्रकार

महर्षि के बलिदान सम्बन्धी कुछ तथ्य

प्राध्यापक राजेन्द्र जिज्ञासु, वेद सदन, अबोहर

आर्यसमाज का यह दुर्भाग्य है कि हमारे व्यक्ति अपने पूर्वजों की कीर्ति स्वाध्याय नहीं करते। जिस विषय का ज्ञान नहीं, उस विषय में झट से दो चार बातें घड़ सुनकर पत्रों में लेख दे देते हैं। ऐसे लेखों का विधर्मी, विरोधी व समाज में घुसे हुए छद्मवेषी भी दुरुपयोग करते हैं। कई बार विद्वान, सज्जन व पूज्य पुरुष भी ऐसी चूक कर जाते हैं। २१ नवम्बर के आर्य मर्यादा में मेरे माननीय श्री आचार्य सत्यदेव जी विद्यालंकार ने भी महर्षि के विषदाता के नाम को लेकर 'एक ऐतिहासिक भूल' शीर्षक से एक लेख दे दिया है। हमारे विरोधी आचार्य जी की शुद्ध भावना को नहीं समझेंगे, वे तो इस लेख की आड़ में अपनी उलट-पुलट बात ही कहेंगे। अच्छा होता यदि आचार्य जी मुझे या श्री डा० भवानीलाल जी भारतीय को अपनी शंकायें भेज देते तो हम इस पर सप्रमाण प्रकाश डाल देते।

महर्षि के विष-पान पर मैंने एक पुस्तिका भी लिखी थी। उसमे इन सब बातों का सप्रमाण उत्तर है तथापि उस पुस्तिका के छपने के पश्चात् मुझे इस विषय मे और भी ठोस प्रमाण मिले हैं। मैं इस विषय पर फिर एक बड़ी पुस्तक लिखूंगा। आर्य बन्धु मेरी नई पुस्तक की कुछ प्रतीक्षा करें। थोड़ा समय मुझे चाहिए।

इस विषय में रुचि रखने वाले व इस विषय पर लिखने वालों से मैं सबसे पहले यह विनती करूंगा कि वे मथुरा जन्म शताब्दी पर गये राजा श्री नाहर सिंह के इस कथन को कतई कोई महत्त्व न दें कि ऋषि का रसोइया तो मेरा जिया हुआ नौकर था। वह निर्दोष है, वह अब भी मेरे पास है आदि आदि। राजा नाहरसिंह जी के सामने मुख्य बात यह थी कि मेरे राज्य को इस पाप कर्म का भागी न माना जावे। राज्य को कलंक से बचाने के लिए उन्होंने अपने रसोइए की वकालत की। राव राजा तेजसिंह ने जोधपुर के राज परिवार को इस षड्यन्त्र में निर्दोष बताया। यह दोनों ने नहीं कहा कि ऋषि को विष नहीं दिया गया। एक का कथन था मेरे रसोइए ने नहीं दिया। दूसरा यह कहता था कि जोधपुर के राज परिवार का इसमें कोई दोष नहीं।

डी०ए०वी० कालेज कमेटी वालों ने भी अंग्रेजी मे एक पुस्तक छपवाकर राजा नाहरसिंह के उपरोक्त वक्तव्य को उसमें दिया है। मेरा निवेदन है कि इस वक्तव्य को उद्धृत करते रहना कोई सूझ-बूझ की बात नहीं। इसका उद्धरण देने वाले यह भूल जाते हैं कि महर्षि दयानन्द ने शाहपुराधीश को एक पत्र में लिखा है कि तुम्हारे जैसे सब सेवक निकम्मे व कामचोर हैं। राजाओं के सामने तो नौकर भीगी बिल्ली बन जाते हैं। चाटुकारिता करते हैं परन्तु राजाओं का विश्वास-पात्र बनकर प्रजा का खून पीते हैं। जिस पत्र का मैंने यह उल्लेख किया है, वह ऋषि के पत्र व्यवहार में छपा है। पं० भगवद्दत्त जी के ग्रन्थ के द्वितीय संस्करण के पृष्ठ ४२२-२३ पर पाठक इसे देखें। ऋषि के इस पत्र के होते हुए शाहपुरा के नौकरों को निर्दोष बताना कहां की बुद्धिमत्ता है। पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय के 'जीवन चक्र' में राजाओं के नौकरों की वास्तविकता पढ़िए फिर पता लगेगा कि यह लोग कितने छलिए व धूर्त होते हैं।

यह प्रश्न बार-बार उठाना कि ऋषि के विष दाता का नाम क्या था, यह भी कुछ महत्त्व नहीं रखता। इतने बड़े महापुरुष के मारने का षड्यन्त्र हो सब ओर विरोधी हों तो किस किसका भिन्नता होगा, यह प्रश्न व्यर्थ है। मुख्य प्रश्न तो यह है कि ऋषि को विष देकर मारा गया। किसने मारा, यह प्रश्न गौण है और अब अनावश्यक है। भारत की प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी जिसकी गोली से मरी चतुर वकील तो इसमें भी नये नये नुक्ते निकाल दें। मैं आपके सामने हूं। कालान्तर से अनेक तथ्य भूल जाते हैं मुझे गुरुद्वारा सिग्रेट केस में जिन थानेदारों ने अमानुषिक यातनाएं दीं, मैं भुक्त भोगी उनमें से आज केवल एक का नाम जानता हूं दो का स्मरण नहीं है।

विषदाता का नाम क्या था ? यह प्रश्न क्यों बार-बार उठाया जाता है ? ऋषि जीवन में आता है कि उन्हें कई बार विष दिया गया। कई बार प्राण लेने के लिए घातक वार किए गये। प्रत्येक बार के विषदाता का नाम कोई बता सकता है ? क्या प्रत्येक बार के घातक आक्रमण करने वाले का नाम कहीं आता है ? लीजिए अमृतसर मे, कानपुर मे, काशी में, मथुरा मे व अन्य अनेक नगरों में महर्षि पर प्राण घातक वार किये गये। प० मोती लाल नेहरू सरीखे राजनेता व भारतेन्दु हरिश्चन्द्र सरीखे साहित्यकार व कई विदेशी इन आक्रमणों के प्रत्यक्ष दर्शी रहे हैं। किसी आक्रमक का नाम बताइए ?

कुछ एक का कहना है कि ऋषि को अन्तिम समय के विषदाता का नाम बताना चाहिए था। क्यों न बताया ? एक 'घोर बुद्धिमान' के ऐसा प्रश्न करने पर मैंने अमरस्वामी जी व प० ओमप्रकाश वर्मा जी के सामने पूछा, इससे पहले विष देने वालों की महर्षि ने 'एफ० आई० आर०' किस कोतवाली मे दर्ज करवाई ? मेरा यह उत्तर सुनकर अमर स्वामी गद्-गद् हो गये और वे 'घोर बुद्धिमान' भी चुप हो गये। महर्षि ने स्वयं कहा है कि मुझे कई बार विष दिया गया। अन्त समय भी कहा कि मुझे यह क्या औषधि दी जा रही है।

ऐसे घोर बुद्धिमानों' का एक और प्रश्न है। हमारे पूज्य आचार्य सत्यदेव जी ने भी उनका यह प्रश्न दोहरा दिया है कि ऋषि का उपचार क्या विष का किया गया ? प० लेखराम जी ने स्पष्ट लिखा है कि अजमेर के पीर जी से औषधि ली गई वह संखिया की ही थी। पीर जी ने कहा था कि यहीं अजमेर ले आओ ठीक कर दूंगा। डाक्टरों ने क्या दिया व क्या किया इसी का तो रोना है। मैंने भारत सरकार के अनुदान से प्रकाशित (मेडीकल साइन्स) की एक पुस्तक का प्रमाण दिया है कि इस ग्रन्थ में संखिया के जितने भी लक्षण हैं, वे सब ऋषि के शरीर मे थे। उक्त पुस्तक को सामने रख लीजिए और प० लेखराम जी लिखित जीवन चरित्र से मिलान कर लीजिए। यह पुस्तक अंग्रेजी चिकित्सा पद्धति का एक प्रामाणिक ग्रन्थ है।

एक और तथ्य जीवनी लेखकों की दृष्टि से ओझल रहा है। धर्मवीर लेखराम ने व सब जीवन लेखकों ने लिखा है कि महर्षि के रुग्ण होने का समाचार छुपा कर रखा गया। आर्यों को सूचना तक न दी गई। छलिया महाराजा प्रतापसिंह तो जुआ खेलने पूना चला गया। आर्यों मे जिस व्यक्ति को सर्वप्रथम ऋषि को इस अवस्था का पता चला वह था अजमेर का आर्य पुरुष जेठमल सोढा यह पण्डित जी ने लिखा है। उसने अजमेर समाज को बताया कि श्री मुराद अली के राजपुताना गजट मे यह समाचार छपा है। उसे जोधपुर भेजा गया। बाहर से ऋषि का पता करने गया वह प्रथम आर्य पुरुष था। इस विषय उसी का साक्षी हमारे लिए सर्वाधिक है। जान जोखिम मे डालकर सत्य की पताका थामने वाले उन आर्य पुरुषों की साक्षी मे तनिक भी सन्देह नहीं किया जा सकता। इस जेठमल जी सोढा ने ऋषि जीवन पर एक लम्बा काव्य लिखा था। इसमे लिखा है कि महर्षि के रोम-रोम मे विष

प्रविष्ट हो चुका था। यह महत्वपूर्ण काव्य मेरे पुस्तकालय में है। कभी पत्रो मे छपा था।

'घोष समझदार' एक और बात भी कहते हैं कि तत्कालीन पत्रो मे छपा होना चाहिए था कि ऋषि को विष दिया गया। हमारा उत्तर यह है कि आज भी देश में आतंकवाद के भय से हत्यारे को हत्यारा कहने का साहस कितने करते हैं। नामी व्यक्ति मारे जा रहे हैं। कोई न्यायाधीश हत्यारों को दण्ड देता है ? साक्षी लाइए। वह युग कैसा था तनिक कल्पना तो करें। प्राणो के निर्मोही नरवर लेखराम की ही हिम्मत थी कि उसने सत्य की खोज करते हुए मृत्यु की चिन्ता न की। यद्यपि तब प० लेखराम जैसे निर्भीक पत्रकार न थे फिर भी अजमेर के आर्यों ने निभय होकर पत्रो को जो सारा वृत्तान्त भेजा था उसमे एक से अधिक बार लिखा था कि विष दिया गया है। सब पत्रों ने यदि ऐसा नही छापा तो क्या किया जावे। डर डर कर ट्रिब्यून जैसे पत्र ने भी दे दिया था कि कहा जाता है कि महर्षि को विष दिया गया है। मैक्समूलर तक ने ऐसा ही लिखा है। आर्य समाचार' ने तो लिखा ही था कि विष दिया गया।

प० लेखराम जी ने 'आर्य समाचार' का भी प्रमाण दिया है। मैंने 'आर्य समाचार का वह अंक खोज लिया है। ऋषि की अन्तिम बेला पर लिखा गया यह लेख कई दृष्टियो से महत्वपूर्ण है। इसका भी अनुवाद करके कभी छपवाऊ गा।

सत्य को दबाने के लिए और महर्षि के बलिदान की महिमा को घटाने के लिए कुछ लोग अपनी कानूनी योग्यता व उपाधियो की धौस जमा कर नित्य नया झूठ गढ़ने मे लगे हुए हैं। यदि बाल की खाल ही उखाडनी है तो महात्मा गाधी का हत्यारा नाथूराम गोडसे नही था। उसे फासी देना अवैध था। कैसे ? महात्मा गाधी को गोली लगी थी क्या ? इसका प्रमाण ?

क्या महात्मा जी का पोस्ट मार्टम किया गया ? उत्तर है कि नही। फिर बिना पोस्टमार्टम किए कैसे माना जावे कि उन्हे गोली लगी। कानून की दृष्टि मे गाधी जी का पोस्ट मार्टम करना आवश्यक था तब गोडसे को फासी दी जाती। गोडसे यदि यह स्वीकार न करता कि गोली मैंने मारी है तो फिर क्या होता ? गोडसे गोली मारकर वही खडा रहा। बहुत बाद मे लोगो ने उसे पकडा तब सब यही कहते थे कि मैंने ऐसे पकडा, मैंने वैसे पकडा। सबके वक्तव्य एक दूसरे की काट करने वाले थे। इसलिए आवश्यक नहीं कि जो कानून कहे सो ही सत्य है। व्यर्थ की शकाओ से सत्य का हनन होता है। सत्य की प्रवृत्ति से सत्य की खोजा की जानी चाहिए।

सार्वदेशिक साप्ताहिक के आजीवन सदस्यों की सूची १-१२-८९ से ३०-१-९० तक

१५७२३ श्री जवाहरलाल वर्मा ५/१२३ जती कटरा आगरा (उ०प्र०)
१५६७६ ,, डी० आर० अरुवा, केशोरानी भवन, आगरा रोड, घाटकोपर बम्बई
११९४८ ,, व्रतप्रिय आर्य, A 5 II फ्लोर १० बम्बई
१४९४१ ,, राजेन्द्रलाल शर्मा, पो० सेवा तह० सदर मण्डी (हि०प्र)
१५२१० ,, शिवनारायण किशनलाल बस स्टैन्ड गरोठ मन्दसौर
६६३९ ,, म० पुष्पेन्द्र शर्मा, S/o डा० ओमप्रकाश शर्मा, नानोता सहारनपुर
१५२१७ , ब्रजेशकुमार जी मन्त्री, आर्यसमाज रामगढ़वा पूर्वी चम्पारण (बिहार)
१५२१९ ,, रघुनाथसिंह शास्त्री मन्त्री आर्यसमाज श्रीमानगर गुरुदासपुर (पंजाब)
६१०१ , भीमसेन जी वेदालकार, भीमसेन कालोनी बल्लभगढ़ (हरियाणा)
१२४४५ सुशीला जी भाटिया, ८१ महेशनगर, अम्बाला छावनी
१२३०९ ,, मन्त्री जी, आर्यसमाज भागलपुर (बिहार)
१५२२६ , प्रकाशचन्द्र आनन्द, रेलवे रोड फरीदाबाद
१५२३० ,, गोपालसरन बापू नगर उत्तरी मदिरी पटना (बिहार)
१५३०६ , प० बटेश्वर दयाल दीक्षित पो० लुधियानी मु० भेरपुरा इटावा
११३४३ , मन्त्री जी आर्यसमाज अल्मोडा (उ०प्र०)
१३३०८ ,, डा० हरिदेव नारायण ग्राम सुर्तीपार बलिया (उ०प्र०)
१५२५८ ,, आचार्य डा०दिनेशकुमार शर्मा, सेवाश्रम धनोली आगरा
१५३३९ ,, महेन्द्रप्रकाश पोद्दार मो०ठेर सम्भल, मुरादाबाद (उ०प्र०
१५२६२ ,, नागूलप्पकर पो० नागाराम परकल वारगल (आ० प्र०)
१५२६३ ,, पिन्टी नरसिम्हा रेड्डी पद्दी पल्वीविली, नागाराम परकल वारगल (आ० प्र०)

क्रमश

६५ वर्ष की आयु पर शतायु की कामना कर्तव्यनिष्ठ दृढ़वती श्री रामनाथ सहगल



जिला सरगोधा के राझिया वाला ग्राम (अब पाकिस्तान) मे मार्च १९२१ को जन्मे श्री रामनाथ सहगल के पिता ग्राम की कृषि छोड़कर भेरा मे आकर व्यवसाय करने लगे थे। ५ वर्ष की आयु में श्री सहगल कृपाराम ऐंग्लो संस्कृत हाई स्कूल भेरा मे प्रविष्ट हुए और दसवी कक्षा उत्तीर्ण करने तक वही पढ़ते रहे। कालान्तर मे उन्हे पजाब नेशनल बैंक रावलपिन्डी मे नौकरी मिल गई तो वे वहा आकर रहने लगे। रावलपिन्डी में श्री सहगल किसी प्रकार श्री पिशोरीलाल प्रेम, जो भारत विभाजन के उपरान्त ददाहू (रेणुका) सिरमौर मे स्थापित हो गये के सम्पर्क मे आए। वे उन्हे रावलपिन्डी आर्य समाज मे ले गये। श्री प्रेम की सरलता, सच्चरित्रता, सत्यवादिता, स्वाध्याय शीलता एव निष्ठा से श्री सहगल बहुत प्रभावित हुए। श्री प्रेम की प्रेरणा से श्री सहगल आर्य वीर दल में जाने लगे और कुछ दिनों बाद ही उन्हे "नगर नायक' और समय समय पर गुरुकुल रावलपिन्डी मे लगने वाले आर्य वीर दल शिविरो का सयोजक बना दिया गया। रावल पिन्डी आर्यसमाज मे स्वामी आत्मानन्द जी महाराज के उपदेशो का उन पर बडा प्रभाव पड़ा। कालान्तर मे वे आर्यसमाज रावलपिन्डी के मन्त्री बना दिये गये।

भारत विभाजन के अवसर पर पजाब मे हुए साम्प्रदायिक दगो के समय रावलपिंडी में हिन्दुओं की सहायतार्थ जो शिविर स्थापित किया गया था श्री सहगल उसके सयोजक बनाये गये। जब तक वे रावलपिण्डी मे रहे शिविर का सुचारू रूप से सचालन करते रहे। इसके लिये तत्कालीन पजाब नेशनल बैंक के निर्देशक श्री केशवचन्द्र ने उनको सम्मानित किया था। विभाजनोपरान्त श्री सहगल का परिवार दिल्ली आ गया और तब से वे दिल्लीमे समाज सेवारत हैं।

श्री रामनाथ सहगल आर्यसमाज क्षेत्र के कुशल, साहसी तथा समर्पित जीवन वाले उत्तम कार्यकर्ता हैं। आर्य समाज का काय उनकी रग रग में समाया हुआ है। आर्यसमाज के सब क्षेत्रो मे उनकी नीव तथा विकास है। बड़े से बड महासम्मेलनो से लेकर छोटे सामाजिक काय मे भी उनकी कार्यकुशलता व कमठता के दर्शन होते हैं। ऐसे निष्काम कार्यकर्ता आर्य समाज के क्षेत्र में बहुत कम मिलेंगे जो प्रत्येक समय सामाजिक कल्याण की भावना से ही कार्य करते हो। वे आर्य समाज की सेवा से शारीरिक, मानसिक व आत्मिक रूप से जुड़े हुए हैं। आर्य समाज का कोई प्रशिक्षण शिविर हो, योग शिविर हो या फिर सेवा केन्द्र हो, सभी स्थानो पर उनका मार्गदर्शन प्राप्त होता है। अपने इन विशिष्ट गुणो के कारण ही वे आर्यसमाज व डी०ए०वी० शैक्षणिक जगत की अनेक सस्थाओ के आधार स्तम्भ हैं।

कौन सा ऐसा सामाजिक काय है जिसमे उनका प्रतिबिम्ब न उभरता हो। अपनी इस सूझ बूझ, अनुभव कायकुशलता तथा श्रद्धापूर्वक काम करने की नीति के द्वारा ही वे बड़े से बड़े सम्मेलनो को भी बड़ी सरलता से उनकी सफलता तक पहुचा देते हैं अपने मिलनसार व्यक्तित्व, व्यवहार कुशलता, वाकपटुता, सरल हृदयता हसमुख स्वभाव व मिलनसारता के द्वारा वे और भी अधिक सुचारु रूप से सम्पूर्ण सामाजिक क्षेत्र को गति व सामर्थ्य प्रदान करते रहते हैं।

आर्यसमाज मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली तथा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मन्त्री एव डी०ए०वी० कालेज प्रबन्धकत्री समिति द्वारा सचालित अनेक विद्यालयो के अवैतनिक प्रबन्ध के रूप मे वे कई वर्षों से कार्यरत हैं। बैंक की सेवा से मार्च १९८१ मे कार्य मुक्त होने के उपरान्त वे सम्प्रति विभिन्न सस्थाओं को अवैतनिक रूप से अपनी सेवायें प्रदान कर रहे हैं।

उनका अपना व्यक्तिक जीवन बडा सादा और सरल है। प्रात काल ब्रह्ममूहर्त मे निद्रा त्यागने से लेकर रात्रि मे निद्रा की गोद में जाने तक उनका प्रत्येक क्षण समयबद्ध कार्यक्रम मे सुचालित रहता है उनकी जीवन सगनी श्रीमती कमलेश सहगल, सुपुत्र श्री अजय सहगल तथा पुत्रवधू श्रीमती रीटा आदि उनके कार्य में सदा सहायक रहते हैं। जिन-जिन सस्थाओं से वे सम्बद्ध हैं उनके कार्यकर्ताओ से भी स्नेह पूर्वक कार्य लेने की कला उन्हे आती है।

उनके पैंसठवे जन्म दिवस पर प्रभु से उनके सुदीर्घ एव स्वस्थ जीवन की कामना है।

—सम्पादक

आर्य समाजों के निर्वाचन

आर्य समाज आर्य युवक कोटद्वार श्री विनय कुमार मिनोचा प्रधान श्री अनिल कुमार बत्रा मन्त्री श्री सुरेश कुमार गुप्ता कोषाध्यक्ष चुने गये।

वैदिक साहित्य प्रचार केन्द्र नजीबाबाद श्री आसाराम जी प्रधान, श्री डा० विष्णुमित्र जी मन्त्री श्रीमती आसारानी जी कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुये।

चांदपुर बिजनौर श्री महीपालसिंह जी प्रधान, श्री सत्यप्रकाश जी मन्त्री, श्री ओमप्रकाश आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

कायमगंज फर्रुखाबाद श्री आलोक कुमार जी प्रधान, श्री केशवचन्द्र जी मन्त्री, श्री सुभाषचन्द्र जी कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए।

बीसलपुर पीलीभीत श्री भीमसेन आर्य प्रधान, श्री डा० सत्येन्द्र कुमारजी मन्त्री, श्री चन्द्रपाल जी कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुये।

रेलवे कालोनी रतलाम श्री सत्यदेव पाण्डे प्रधान श्री रामकुमार यादव मन्त्री, श्री शिवजी त्रिपाठी कोषाध्यक्ष चुने गये।

ग्राम नगर श्री छगनलाल महता प्रधान श्री निर्मललाल प्रेम मन्त्री विनोद भाई प्रेम कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुये।

कुमानपुरा कोटा श्री कालका प्रसाद अग्रवाल प्रधान श्री मथुरालाल तापड़िया मन्त्री श्री रामेश्वर प्रसाद विजय कोषाध्यक्ष चुने गये।

गुरुकुल कृष्णपुर श्री महेशचन्द्र आर्य प्रधान श्री कृष्णकुमार आर्य मन्त्री रामवीर आर्य कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुये।

सन्डीला हरदोई श्री चन्द्रनाथ पाण्डिया प्रधान श्री सत्यप्रकाशजी मन्त्री श्री विशुनदयाल जी कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य उपप्रतिनिधि सभा कानपुर श्री सन्तराम एडवोकेट प्रधान श्री श्यामप्रकाश शास्त्री मन्त्री श्री ओम्प्रकाश आहूजा कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुये।

तकवाडा (मराठा) श्री गोविन्दराव पाटिल प्रधान श्री गुलाबराव मन्त्री श्री शामराव जी कोषाध्यक्ष चुने गये।

बारा कोटा श्री भगवती प्रसाद भार्गव प्रधान श्री अमृतलाल शर्मा मन्त्री श्री बद्रीलाल गुप्त कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए।

देवबन्द सहारनपुर श्री विश्वनाथ जी प्रधान श्री युगलकिशोरजी मन्त्री श्री बलराम जी कोषाध्यक्ष चुने गये।

मोदी नगर मेरठ श्री डा० जयवीरसिंह जी आयुर्वेदालंकार प्रधान श्री महेशचन्द्र आर्य मन्त्री श्री रामनिवास जी कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुये।

भरथना इटावा श्री प्रभुदयाल साहू प्रधान श्री वीरेन्द्र नारायण गुप्त मन्त्री श्री मोतीलाल जी कोषाध्यक्ष चुने गये।

मसुरन गोरखपुर श्री त्रियुगी नारायण पाठक प्रधान श्री बाबूलाल शर्मा मन्त्री श्री वेदप्रकाश जी कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुये।

रेलवे हरथला कालोनी केन्द्रीय सभा श्री चमनलाल जी प्रधान मनोहर लाल बाधवा मन्त्री श्री वीरेन्द्र कुमार राजपूत कोषाध्यक्ष चुने गये।

गाजियाबाद श्री हुकुमचन्द्र सराई प्रधान श्री डा० वीरपाल विद्यालंकार मन्त्री श्री शान्तिस्वरूप जी कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुये।

सत्यवती नगर दिल्ली श्री चौ० जयसिंह जी प्रधान श्री डा० धर्मवीर भारतीय मन्त्री श्रीमती सावित्री गुप्ता कोषाध्यक्ष चुने गये।

बीनावी अलवर श्री ममलसिंह आर्य प्रधान श्री प्रभुदयाल आर्य मन्त्री श्री प० मोतीराम आर्य कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुये।

हावड़ा कलकत्ता श्री केशवदेव विद्यालंकार प्रधान श्री पुरुषोत्तम सर्राफ मन्त्री श्री जगदीश नारायण आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

बर्रा कानपुर श्री डा० बी० पी० सिंह प्रधान अरुणकुमार मन्त्री श्री कृष्णकान्त आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

बार श्री सत्यव्रत मिलन पाराशर प्रधान श्री बालकृष्ण चतुर्वेदी मन्त्री श्री गजानन्द जी शर्मा कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुये।

आर्य समाज शिवाजी नगर गुड़गांव श्री महाशय चन्द्रसिंह प्रधान प० विद्याभूषण शास्त्री मन्त्री सुभाषचन्द्र आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

वेद प्रचार मण्डल उत्तरी पश्चिमी दिल्ली के पदाधिकारियों का चुनाव सर्वसम्मति से निम्न प्रकार हुआ। प्रधान श्री विद्याप्रकाश वर्मा (पुष्पांजलि) उपप्रधान श्री ठा० भारतभूषण जी स्वतन्त्रता सेनानी (शकूरबस्ती) तथा प्रभुदयाल जी भाटिया (राणा बाग) श्री हरिदत्त जी (विशाखा एन्क्लेव उत्तरी) मन्त्री निर्वाचित हुये।

—हरिदत्त, मन्त्री

आर्य समाज जयपुर (मंडीलाल) का वार्षिक चुनाव दिनांक ४-२-९० दिन रविवार को सम्पन्न हुआ। जिसमें सर्वसम्मति से निम्न पदाधिकारी चुने गये। श्री राजकुमार जी आर्य प्रधान श्री सतीशकुमार जी आर्य मन्त्री श्री महावीर प्रसाद जी कोषाध्यक्ष चुने गये।

नगर आर्य समाज स्टाफगंज लखनऊ में ११-२-९० को हुए वार्षिक अधिवेशन में निम्नलिखित पदाधिकारी निर्विरोध निर्वाचित किये गये।

कुंवर शान्ति प्रकाश एडवोकेट प्रधान आर्य कुमार रस्तोगी उपप्रधान अशोककुमार मिश्र एडवोकेट महामन्त्री रेवतीरमण रस्तोगी एडवोकेट मन्त्री किशोरीलाल सभासद ब० म० पा० उपमन्त्री जगतनारायण जी सक्सेना कोषाध्यक्ष विमल किशोर रस्तोगी उपकोषाध्यक्ष सुरेन्द्र कुमार खन्ना आय व्यय निरीक्षक पदाधिकारी निर्विरोध चुने गये हैं।

—यज्ञदत्त शास्त्री पुरोहित

फर्रुखाबाद जिला सभा का वार्षिक निर्वाचन १८-२-९० को निम्न रूप से सम्पन्न हो गया है। श्री आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री प्रधान श्री विद्यासागर आर्य मन्त्री श्री रवीन्द्र कुमार आर्य कोषाध्यक्ष श्री धर्मवीर आर्य निरीक्षक श्री मनुदेव आर्य अधिष्ठाता आर्य वीर दल चुने गये।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के लिए प्रतिनिधि सर्वश्री शान्तिस्वरूप आर्य विद्यासागर आर्य स्वा० आत्मानन्द सरस्वती सूरज प्रसाद वानप्रस्थ चुने गये।

—विद्यासागर आर्य, मन्त्री

आबू पर्वत पर आर्य गुरुकुल महाविद्यालय

सभी धर्म प्रेमी आर्य बन्धुओं को यह जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि कर संसार का कल्याण करने हेतु राजस्थान एवं गुजरात प्रान्त का एक मात्र पर्वतीय स्थल ऋषि मुनियों की तपोभूमि आबूपर्वत पर परमपिता परमात्मा की असीम कृपा से एकान्त, शान्त व शुद्ध वन में गुरुकुल का निर्माण हुआ है। जिसका उद्घाटन (शुभारम्भ) समारोह २६ से २८ मई १९९० ई० को किया गया है।

इस शुभ अवसर पर आर्य जगत के अनेक तपोनिष्ठ वीतराग साधु सन्यासी, धुरन्धर विद्वान प्रान्तीय उच्चकोटि के आर्य भजनोपदेशक पधार रहे हैं। अतः आप सपरिवार व सभी इष्टमित्रों सहित भारी संख्या में पधार कर धर्म लाभ उठावें।

इस गुरुकुल में महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित आर्य पाठविधि से वेद-वेदांग उपांगों का पठन पाठन होगा। गुरुकुल आबूपर्वत में पांच कक्षा पढ़े लगभग ११ वर्ष की आयु के बच्चों को प्रवेश दिया जावेगा। शास्त्री व आचार्य पर्यन्त शिक्षा दी जावेगी। गुरुकुल आबूपर्वत गुरुकुल झज्जर से सम्बन्धित है और गुरुकुल झज्जर को सरकार से मान्यता प्राप्त है।

यहां पर शिक्षा एवं आवास निःशुल्क होगा तथा सभी ब्रह्मचारियों के भोजन रहन-सहन में समता होगी।

इस अवसर पर सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया है जो २६ मई से प्रारम्भ होगा व २८ मई को पूर्णाहुति होगी।

—स्वामी धर्मानन्द

अम्बाला कैंट में बोध पर्व (शिवरात्रि)

वैदिक प्रचार मण्डल के अन्तर्गत मण्डल को प्राप्त आय वाले प्लाट पर ऋषिबोध पर्व बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर श्री जगत प्रिय वेदालंकार, (भू. पू. आचार्य टंकारा) तथा श्री देवव्रत जी (गुरुकुल कुरुक्षेत्र) ने ऋषि की घटनाओं पर प्रकाश डाला। समारोह की अध्यक्षता श्री सतीश मित्तल (भू.पू.—प्रधान नगरपालिका) ने की उन्होंने आर्यों को सम्बोधन करते हुए इस पर्व पर संगठित होकर वैदिक विचार धारा का प्रचार प्रसार करने का आह्वान किया। उन्होंने मण्डल के प्लाट के साथ वाली सड़क को शीघ्र बनवाने का आश्वासन दिया।

—वेद मित्र, हाउस नं०, मन्त्री

आर्यसमाज को गतिविधियां

वीर हकीकत राय बलिदान दिवस

दिनांक ३१ जनवरी, १९९० को बसन्त पंचमी वाले दिन आर्य समाज कठूआ में वीर हकीकत राय बलिदान दिवस मनाया गया। वीर बालक की याद में प्रातः ७ बजे एक प्रभातफेरी निकाली गई जिसमें रामायण प्रचार समिति रामबाग, महाशय कोबनाद सुधार सभा, महावीर ड्रामाटिक क्लब एवं शहर के अन्य धार्मिक गणमान्य नागरिकों व आर्य समाज के सभी सभासदों ने भाग लिया। प्रातःकाल को ब्रह्मवेला में नगर की सुनसान गलियां वीर हकीकत अमर रहे जैसे नारों से चहक उठीं। सभी ओर ओ३म ही ओ३म की धुन सुनाई देती थी।

प्रभातफेरी के पश्चात वीर हकीकत बलिदान दिवस समारोह किया गया। समारोह की अध्यक्षता कठुआ के धार्मिक नेता व प्रसिद्ध चिकित्सक डा० दुष्यन्त उप्पल जी ने की। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता कठुआ के गणमान्य नेता श्री कर्मचन्द जी ने वीर हकीकत राय के बलिदानी जीवन पर प्रकाश डाला।

भजन सम्राट श्री कालीदास जी ने ईश्वर महिमा का भजन और श्री कृपलाल बजाज जी ने कविता कही। कठुआ के प्रसिद्ध पत्रकार श्री भगतराम महाजन जी ने निम्नलिखित कविता कहकर कार्यक्रम को आकर्षक बनाने में योगदान दिया।

वह कौम मिट सकती नहीं जिसमें हकीकत वीर हो।
कोई बतादे विश्व में ऐसा अगर कोई वीर हो॥

अन्त में शांतिपाठ से पहले संरक्षक आर्य समाज कठुआ डा० कुलदीप जी ने उपस्थित सभी बन्धुओं का हार्दिक धन्यवाद किया।

—सुरेन्द्र, मन्त्री आर्य समाज कठुआ

स्वा. सत्यप्रकाश जी का उड़ीसा में ४० दिवसीय कार्यक्रम

भुवनेश्वर। पूज्य स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती भुवनेश्वर आर्य समाज मन्दिर में जनवरी ७ तारीख से फरवरी १५ तारीख तक रहे। इन दिनों में वे आर्य समाज (भुवनेश्वर), आमसेना गुरुकुल (कालाहांडी), थियोसोफिकल सोसायटी (कटक), उत्कल विश्वविद्यालय, केन्द्रापाड़ा कालेज, केन्द्रीय विद्यालय तथा रचना गोष्ठी में प्रवचन हुए। यहां वे अथर्ववेद का अंग्रेजी भाष्य प्रारम्भ किया तथा दैनिक वेदकथा को सम्बोधित किया। वे उड़ीसा के नवनियुक्त राज्यपाल श्री यज्ञदत्त शर्मा के साथ भी साक्षात किया। ये सारे कार्यक्रम के संयोजक आर्य समाज के विद्वान श्री प्रियव्रतदास स्वामी जी के साथ रहे। स्वामी जी यहां से प्रयोग प्रस्थान किये।

—शान्तोदेवी आर्य समाज, भुवनेश्वर

श्रद्धांजलि समारोह

एक सौ सात वर्षीय प्रिंसिपल श्री रामदास जी भूतपूर्व एम. पी. का दिनांक ६-२-९० को देहांत हो गया है। आप १९१७ से १९४१ तक डी. ए. वी. हाई स्कूल और कालेज के आचार्य रहे। सन १९३६ से १९८८ तक अखिल भारतीय दयानन्द साल्वेशन मिशन के उप-प्रधान और प्रधान रहे। हरिजन सेवक संघ और दलित उद्धार मंडल के माध्यम से भी आपने जनता की सेवा की। इसके अतिरिक्त सन १९५२ में प्रथम लोकसभा के सदस्य भी चुने गए। उनका श्रद्धांजलि समारोह १६-२-९० (शुक्रवार) दोपहर १२ बजे अखिल भारतीय दयानन्द साल्वेशन मिशन, ऊना रोड, होशियारपुर में हुआ।

—हरदयाल सिंह

समाज की बेहतरी के लिए कुप्रथा को मिटाना होगा

बदायूं १३ फरवरी। आर्य समाज के तत्वावधान में स्थानीय दयानन्द सेवा आश्रम में महर्षि दयानन्द के १६६ वें जन्मोत्सव पर आयोजित समारोह में वक्ताओं ने कहा कि महर्षि दयानन्द के जीवन का उद्देश्य ही सम्पूर्ण मानव जाति को अज्ञानता से ज्ञान की ओर ले जाना था।

वक्ताओं ने अलग-अलग विचार व्यक्त करते हुए कहा कि अशिक्षा, पाखण्ड और कुरीतियों को दूर करने के लिए भारतीय संस्कृति के उन्नायक महर्षि दयानन्द ने अपना सारा जीवन समाज सेवा में बिता दिया। उन्होंने कहा कि भ्रम पाखण्ड, कुरीतियों कर्मकाण्ड, अंधविश्वास तथा कुप्रथाओं को समाज से निकाल फेंकना होगा तभी समाज की प्रगति हो सकती है।

आर्य समाज को मानने वाले वक्ताओं का कहना है कि हिन्दू समाज को ज्ञान (प्रकाश) की दिशा देने वाले वैदिक धर्म प्रकाश के सहारे चलकर मानवीयता के द्योतक महर्षि दयानन्द सरस्वती समस्त मानव जाति के लिए प्रेरणा स्रोत रहे हैं।

राम कृष्ण की श्रेणी के ही युग पुरुष हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में बल प्रदान करने वाले महर्षि दयानन्द स्वतन्त्रता संग्राम में भी आगे रहे थे।

महर्षि के जन्म दिवस पर उनकी महिमा के सन्दर्भ में आर्य विद्यामंदिर के छात्र छात्राओं कु० ममता, गरिमा, सीमा, शीला गौरव, दिलीप, अर्चना, सुरभि तथा उदय प्रकाश ने भी अपने विचार प्रकट किये।

इसके अतिरिक्त इस मौके पर अशोक रस्तोगी, इन्दिरा, शची आर्य, प० रामचन्द्र आर्य, महेन्द्र कुमार एडवोकेट ने महर्षि के रोचक, ज्ञान वर्धक तथा प्रेरक प्रसंगों के बीच जानकारी दी कि इस जिले की भूमि पर तीन बार महर्षि दयानन्द ने वैदिक ज्योति जलाये रखने की प्रेरणा दी थी। अध्यक्षता डा० भगवनसरन ने की।

सुलतानपुर में सामवेद पारायण महायज्ञ

श्री देवीचन्द किसनचन्द अग्रवाल ने अपने नव गृहप्रवेश के उपलक्ष्य में दि० ५ से १२ जनवरी १९९० तक इस महायज्ञ का आयोजन किया था जिसके ब्रह्मा पू० आर्यमुनि जी वानप्रस्थी रहे। इस महायज्ञ का संयोजन पू० आचार्य सुभाषचन्द्र प्रधानाचार्य गुरुकुल येवली व उनके ब्रह्मचारियों ने किया था, आचार्य बीच-बीच में वेदमन्त्रों की सुन्दर व्याख्या करते रहे। इसमें पू०सत्यमुनि जी वानप्रस्थी श्री दिनकर राव देशपांडे, पूज्या माता सरलादेवी भी पधारे हुए थे। इस कार्यक्रम में ही पूज्य उत्तममुनि जी का अग्रवाल जी ने पूज्य आर्य मुनि जी के हस्ते शाल व श्रीफल देकर किया। एक दिन जिला आहिर पू० बाबा साहेब पुरन्दरे भी आ गए थे। उनका भी सम्मान किया। इस कार्यक्रम से बहुत लोग प्रभावित हुए।

—देवीचन्द अग्रवाल

अमेरिका से राम जन्म भूमि के लिए धन आने का खण्डन

नई दिल्ली, २५ फरवरी (वार्ता)। विश्व हिन्दू परिषद में कार्यकारी अध्यक्ष विष्णुहरि डालमिया ने इस आरोप का खण्डन किया है कि अयोध्या में श्री राम जन्म भूमि मन्दिर बनाने के लिए अमेरिका से दो सौ करोड़ रुपए आए। यह आरोप इका के महामन्त्री के० एन० सिंह ने लगाया था। इस आरोप के लिए श्री डालमिया ने श्री सिंह के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करने की बात भी कही है।

श्री डालमिया ने यह भी स्पष्ट किया कि पिछली कांग्रेस सरकार एवं वर्तमान सरकार के द्वारा विदेशों से भेजे गए धन को स्वीकार की अनुमति न देने के कारण विदेशों से एक पैसा श्रीराम मन्दिर निर्माण के लिए नहीं मिल सका है।

भूतपूर्व विधायिका श्रीमती कलारानी मिश्रा दिवगत

हरदोई। प्रसिद्ध समाजसेवी शिक्षा शास्त्री उत्तर प्रदेश विधान सभा की पूर्व विधायिका श्रीमती कलारानी मिश्रा का ११ फरवरी की रात्रि मे लखनऊ मैडिकल कालिज हास्पिटल मे अल्प समय की बीमारी के पश्चात् निधन हो गया। उनके पार्थिव शरीर को लखनऊ से हरदोई महेश गली में उनके मकान पर लाया गया। जहा नगर के अनेको सम्भ्रान्त नागरिको ने उन्हे श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

श्रीमती कलारानी स्व० प० भगवानदीन मिश्र के पौत्र प० योगेन्द्रनाथ मिश्र की धर्मपत्नी थी। प० भगवानदीन मिश्र आर्य समाज के उत्तर प्रदेश तथा सार्वदेशिक सभा दिल्ली में प्रमुख नेताओ में अग्रणीय नेता थे।

आपका भरा पूरा परिवार जिले में महत्वपूर्ण स्थान रखता था। उनके अभाव से नगर मे रिक्त स्थान की पूर्ति होना असम्भव है। उनके आकस्मिक निधन से समस्त आर्य जगत् आपके वियुक्त होने पर दुःख मे सहभागी है।

उनके पति प० योगेन्द्रनाथ जी मिश्रा को उनके वियोग होने पर जो कष्ट हुआ है, उन्हे प्रभु सहन करने की शक्ति प्रदान करे और दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने उनके असामयिक निधन पर भाव भीनी श्रद्धाजलि देकर स्व० प० भगवान दीन जी के द्वारा आर्यसमाज के लिए की गई सेवाओ की चर्चा करते हुए कहा कि श्री पण्डित जी का परिवार उनके पद चिह्नों पर चलकर उनके नाम व यश पर चलकर उनके नाम व यश को चिरस्थायी बनाये।

स्वामी जी ने दिवगत आत्मा के लिए सद्गति की कामना प्रकट करते हुए शोक सतप्त परिवार के प्रति हार्दिक सवेदना प्रकट की।

प० जगत कुमार शास्त्री अब नहीं रहे

आर्य जगत् के मूर्धन्य वैदिक विद्वान तथा समाज सुधारक प० जगत कुमार शास्त्री का लम्बी बीमारी के पश्चात् दिनाक २ मार्च को निधन हो गया है। श्री शास्त्री की शिक्षा लाहौर मे हुई थी वह दयानन्द ब्रह्म महा विद्यालय के स्नातक थे। काशी विश्व विद्यालय से उन्होने शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण की थी। सस्कृत हिन्दी, उर्दू और फारसी पर उनका असाधारण अधिकार था।

उनके निधन पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने शोक सभा मे श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा कि श्री शास्त्री ने छुआछूत के विरुद्ध सदैव सघर्ष किया था। आर्यसमाज के कई आन्दोलनो मे उन्होने सक्रिय होकर भाग लिया था। लगभग ५० से अधिक सारगर्भित व मौलिक ग्रन्थ विभिन्न विषयो पर लिखे थे। आर्य समाज के अनेक पत्र-पत्रिकाओ के भी वह सम्पादक रहे थे। श्री शास्त्री विनम्र निराभिमानी राष्ट्र-भक्त गम्भीर विचारक और कमठ समाज सुधारक थे। आर्यसमाज की उन्होने जीवन पर्यन्त जो सेवा की थी उनके निधन से समूचे आर्य जगत् की अपूर्णीय क्षति हुई है।

सार्वदेशिक सभा दिवगत आत्मा की सद्गति की कामना करते हुए उनके शोक सन्तप्त परिवार के प्रति हार्दिक सवेदना प्रकट करती है।

—सच्चिदानन्द शास्त्री सभा-मन्त्री

प्रेम-प्रसार का पर्व—होलिकोत्सव

—प्रतापसिंह शास्त्री पत्रकार, हिसार—

संस्कृत में अग्नि में भुने हुए अर्द्ध-पक्व अन्न को "होलक" कहते हैं, हिन्दी का प्रचलित "होला" शब्द इसी का अपभ्रंश है। आषाढ़ी नवान्नेष्टि में नवागत अन्न के यवों के होम के कारण उसको "होलिकोत्सव" कहते थे।

एक समय राजा पृथ्वीराज चौहान ने अपने दरबार के राजकवि चन्द से पूछा कि हम लोगों में जो होली के त्योहार का प्रचार है, वह क्या है? हम सभ्य आर्य लोगों में ऐसे अनार्य महोत्सव का प्रचार क्योंकर हुआ कि आबाल-वृद्ध सभी उस दिन पागल से होकर बीभत्स रूप धारण करते तथा अनर्गल और कुत्सित वचनों को निर्लज्जतापूर्वक उच्चारण करते हैं। यह सुनकर कवि बोला—"राजन! इस महोत्सव की उत्पत्ति का विधान होली की पूजा विधि में पाया जाता है। फाल्गुन मास की पूर्णिमा में (होलिकोत्सव) होली का पूजन कहा गया है। उसमें लकड़ी और घास-फूस का बड़ा भारी ढेर लगाकर वेदमन्त्रों से विस्तार के साथ होलिका-दहन किया जाता है। इसी दिन हर महीने की पूर्णिमा के हिसाब से इष्टि 'छोटा सा यज्ञ" भी होता है। इस कारण भद्रा रहित समय में होलिका-दहन होकर इष्टि यज्ञ भी हो जाता है। पूजन के बाद होली की भस्म शरीर पर लगाई जाती है।

होली के लिए प्रदोष अर्थात् सायंकाल व्यापिनी पूर्णिमा लेनी चाहिए और उसी रात्रि में भद्रारहित समय में होली प्रज्वलित करनी चाहिए। चन्द कवि आगे कहने लगे—फाल्गुन की पूर्णिमा के दिन जो मनुष्य चित्त को एकाग्र करके हिंडोले में झूलते हुए श्री गोविन्दपुरुषोत्तम का दर्शन करता है वह निश्चय ही बैकुण्ठ में जाता है। यह उत्सव होली होने के दूसरे दिन होता है। यदि पूर्णिमा की पिछली रात्रि में होली जलाई जाए तो यह उत्सव प्रतिपदा को होता है और इसी दिन अबीर गुलाल की फाग होती है। उपर्युक्त कारणों के अतिरिक्त इस फाल्गुणी पूर्णिमा के दिन चतुर्दश मनुष्यों में से एक मनु का भी जन्म है। इस कारण यह मन्वादि तिथि भी है। अतः उसके उपलक्ष्य में भी उत्सव मनाया जाता है। कितने ही शास्त्रकारों ने तो सम्वत् के आरम्भ एवं बसन्तागमन के निमित्त जो यज्ञ किया जाता है और जिसके द्वारा अग्नि के अधिदेव स्वरूप का पूजन होता है, वही पूजन इस होलिका का माना है। इस कारण कोई-कोई होलिका दहन को सम्वत् के आरम्भ में अग्निस्वरूप परमात्मा का पूजन मानते हैं।

वैदिक धर्मावलम्बियों में प्राचीन काल से यह प्रथा चली आती है कि नवीन वस्तुओं को देवों को समर्पण किए बिना अपने उपयोग में नहीं लाया जाता है। जिस प्रकार मानव देवों में ब्राह्मण वर्ण सर्वश्रेष्ठ है उसी प्रकार भौतिक देवों में अग्नि सर्वप्रधान है। वह विद्युत रूप से ब्रह्माण्ड में व्यापक है। देवयज्ञ का प्रधान साधन भौतिक अग्नि ही है। क्योंकि वह सब देवों का दूत है। वेद में उसको अनेक बार 'देवदूत' कहा गया है। वही सब देवों को होमे हुए द्रव्य पहुंचाता है। इसलिए यज्ञ के माध्यम से होलिकोत्सव पर नवागत अन्न सर्वप्रथम अग्नि के ही अर्पण किए जाते हैं और तदन्तर मानवदेव ब्राह्मण वर्ण के विद्वद जनों को भेंट करके अपने उपयोग में लाए जाते हैं। इसलिए अब तक भी जन साधारण को यह प्रथा प्रचलित है कि जब तक नवीन अन्नों को व फलों को पूजा के प्रयोग में न लाया जाए, तब तक उनको लोकभाषा में 'अछूते व छूते' कहते हैं। तदनुसार ही आषाढ़ी की नवीन फसल आने पर नए यवों (अन्नों) को होमेने के लिए इस अवसर पर प्राचीन काल में नवसस्येष्टि होलिकेष्टि वा होलिकोत्सव होता था।

वर्तमान समय में लकड़ी और उपलों के ढेरों के रूप में होली जलाने की प्रथा प्राचीन सामूहिक नवसस्येष्टियों का विकृत रूप है। आर्यसमाजके दृष्टिकोण से होलिकोत्सव इस आषाढ़ी नवान्नेष्टि का उपर्युक्त देवयज्ञ द्वारा देवपूजन, विद्वत्समादर वायु-संशोधन, गृह परिमार्जन तथा नवीन वस्त्र परिवर्तन धार्मिक और वैज्ञानिक स्वरूप है।

वस्तुतः होली प्रेम प्रसार का पर्व है। इस पर्व पर सब लोग ऊंच-नीच, छुटाई-बड़ाई का विचार छोड़कर भारत के सभी प्रांतों में हिन्दू-सिक्ख, ईसाई, मुसलमान आदि सभी नागरिक स्वच्छ हृदय से आपस में मिलते हैं। यदि किसी कारणवश वर्ष में वैर-विरोध ने मनो को अपना आवास बना लिया है तो उनको अग्निदेव की साक्षी में भस्मसात कर लिया जाता है। यह होली दो फटे हृदयों को मिलाती है एकता का पाठ पढ़ाती है। होली का पवित्र पर्व आनन्द और उल्लास का महोत्सव था किन्तु काल की कराल गति से आजकल उसमें भी कदाचार और अभद्र दृश्य प्रवेश पा गए हैं। आजकल भाभियों से होली खेलने के रसिया शराब के नशे धुत्त होकर शिक्षित, अर्ध-शिक्षित, अनपढ़ सभी तरह के लोग राजसीय लीलाएं करते हुए त्यौहारों की रक्षा की दुहाई देते हुए इस होलोकोत्सव (फाग) पर जो हुल्लड़ मचाते हैं उन्हें देखकर लज्जा को भी लज्जा आती है। फाग के बहाने अपने इष्ट-मित्रों साथी संगियों के श्रेष्ठ वस्त्रों को लाल, पीले, हरे रंग से लतपत करके उनके मुंह पर गुलाल लपेट कर तथा आंखों में अबीर झोंक कर उनकी वह दुर्गत बनाते कि उनको देखकर दया आती है।

इस आधुनिक रंग बखेरने और गुलाल उड़ाने की कुप्रथा का मूल प्राचीनकाल में यह प्रतीत होता है कि पुराने भारतवासी इस पवित्र पर्व पर जब कि बसन्त यौवन पर होता है पीताम्बर धारण करते थे गुलाब जल का छिड़काव भी शायद होता हो, इस अवसर पर शिक्षाप्रद नाटकों (अभिनयों) के खेलने की रीति प्रचलित थी। महाभारत काल के बाद इस पर्व पर कुछ वाममार्गी प्रथाएं प्रचलित गई जो अशोभनीय हैं।

भविष्य पुराण के अनुसार नारदजी ने राजा युधिष्ठिर से होली के सम्बन्ध में कहा था—फाल्गुण की पूर्णिमा को सब मनुष्यों के लिए अभय दान देना चाहिये। पौराणिक इस पर्व से दैत्यराज हिरण्यकशिपु की भगिनी और प्रह्लाद की बुआ, जो प्रह्लाद को लेकर अग्नि में बैठी थी, जिसका नाम होलिका था वह जल गई और भक्त प्रह्लाद बच गया था, प्रतिवष होलिका नाम से होली जलाने का सम्बन्ध मानते हैं। तथ्य चाहे कुछ भी हों हवन, यज्ञ को तो इस अवसर पर सभी धर्म व सम्प्रदाय मतमतान्तर वाले स्वीकार करते हैं। होली एक यज्ञ का विकृत रूप है जो हमें यज्ञीय (यज्ञ रूप) जीवन की प्रेरणा देता है।

जगमोहन की हत्या की साजिश

(पृष्ठ १ का शेष)

आतंकवादियों की गिरफ्तारी के बाद उनसे बरामद पत्रों से इसका पर्दाफाश हुआ है। आतंकवादी संगठनों का मानना है कि आजाद काश्मीर का लक्ष्य प्राप्त करने में जगमोहन बहुत बड़े रोड़े हैं।

काश्मीर घाटी के विभिन्न स्थानों से सुरक्षा बलों ने पिछले एक सप्ताह में करीब १२० आतंकवादियों को गिरफ्तार किया है, जिसमें सात कट्टर अलगाववादी हैं। बरामद पत्रों को जमात-ए-इस्लामी और जम्मू एवं कश्मीर लिबरेशन फ्रण्ट के कुछ भूमिगत नेताओं ने लिखा था। उनमें स्पष्ट निर्देश दिया गया था कि जगमोहन की हत्या कर दी जाए।

रजि० न० डी० (डी०) १०७ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१८-३-१९९०) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U ९१
R.N. 686/57 Licensed to post without prepay ment licence No.U 93 Post in D.P.S.O.on 16-3-1990

आर्य जगत् के समाचार

आर्य समाज कलकत्ता का वार्षिकोत्सव

कलकत्ता, १ जनवरी। आर्य समाज के १०४ वें वार्षिकोत्सव के समापन समारोह पर प्रातः ६ बजे नव दिवसीय अथर्ववेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति हुई जिसमें हजारों नर-नारियों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। ९ दिन में अग्नि लिए हुए लगभग ४५ यजमान एवं यजमान पत्नियों ने पूर्णाहुति में भाग लिया। इस अवसर पर देश-विदेश में ख्याति प्राप्त ब्रह्मचारी विश्वपाल जयन्त गुरुकुल कण्वाश्रम जिन्हें आधुनिक भीम के नाम से जाना जाता है उनका योग का अद्भुत प्रदर्शन जिसमें चन्द्रहास एवं श्वास लगाकर सरिया मोड़ना, जंजीर तोड़ना इत्यादि प्राणायाम के प्रदर्शन शामिल थे जिसे मुहम्मद अली पार्क में उपस्थित हजारों लोगों ने देखा। अपराह्न ३ से ५ बजे राष्ट्रीय एकता सम्मेलन मनाया गया जिसका संयोजन श्रीराम आर्य ने किया तथा अध्यक्षता श्री प्रो० उमाकांत उपाध्याय ने की। इस अवसर पर प० ब० विश्वहिन्दू परिषद के सेक्रेटरी प्रो० चित्तसेन मजुमदार, भारतीय जनता पार्टी की महिला शाखा की प्रदेश अध्यक्षा श्रीमती शांति राय एवं भारत सेवाश्रम संघ के स्वामी शान्तानन्द महाराज प्रभृति ने राष्ट्रीय एकता के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि बिना सांस्कृतिक एकता के राष्ट्रीय एकता सम्भव नहीं है। इस नव दिवसीय विशाल सम्मेलन में २१ दिसम्बर को विशाल शोभायात्रा तथा प्रतिदिन ७ से ९ बजे तक अथर्व वेद पारायण बृहद् यज्ञ अपराह्न विविध सम्मेलन तथा सायं ६ से १० तक बाहर से पधारे विद्वानों के प्रवचन एवं उपदेश हुए। स्वामी विद्यानन्द सरस्वती प्रो० उत्तमचन्द शरर, प्रो० अनूपसिंह, श्रीमती राजबालादेवी, डा० सोमदत्त शर्मा के व्याख्यान प्रभृति विद्वान वैदिक विचारधारा की जयकार में कलकत्ता के वातावरण को भरपूर किए रहे। इस अवसर पर श्रद्धानन्द बलिदान दिवस का संयोजन श्री नन्दलाल रोहन, संस्कृति सम्मेलन का संयोजन श्री भगीराम शर्मा, महिला सम्मेलन का संयोजन श्रीमती सुषमा शर्मा एवं वेद सम्मेलन का संयोजन श्री यशपाल आर्य ने किया। यह जानकारी आर्य समाज कलकत्ता में मन्त्री श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल ने एक प्रेस विज्ञप्ति में दी।

बरसाने की होली

(पृष्ठ ३ का शेष)

लाल-लाल घर-बारी में पधार चुका था, रंग-गुलाल से वातावरण रंगीन था। कुंवर साहब मुझे साथ लेकर घूमने चले—मैं रंग में रंग गया। मन भी रंगा और कपड़े भी रंगे गये।

शाम को बरसाने की नारियों ने नन्दगांव से आये रंगीलों की लाठियों से स्वागत किया।

हर व्यक्ति रंगा हुआ था जिसके मन में जो आया वहीं ऊटपटांग बक रहा था—कुछ भी बोलो सब छूट थी। ऐसी लट्ठ मार होली कभी कहीं देखी नहीं थी।

ऐसे ही अगले दिन नन्दगांव में मनाई जाती है।

पर कुंवर साहब के ठाठ निराले हैं बरसाने में आप अपनी राधा के साथ शोभायमान हैं।

शास्त्र चर्चा राधा की क्या है इतिहास चर्चा क्या है पर व्यवहार में राधा-कृष्ण की प्रेमभक्त को यही आभास मिलता है।

कुंवर के स्थान को देखकर सदा बहार रसिया बनने की लालसा रहेगी। जो उनके घर द्वार पर पहुंच जायगा।

आर्य समाज के अवनि के आगमन पर कुंवर कन्हैया फूले नहीं समाते हैं मैं दो दिन रहा सारी दुनियां भूलकर राधा रानी का ही दिल दिमाग बना रहा।

आर्य समाज के प्रवर्तक ने भी शायद इस होली का कभी देखकर आनन्द लिया हो। पर उन्होंने जो दिव्य छटा पर्वों त्योहारों को दी है—उस पर राष्ट्र को ध्यान देना चाहिये।

यही कृष्ण का महत्व है?

गुरुकुल प्रभात आश्रम में वेद संगोष्ठी एवं वार्षिकोत्सव सम्पन्न

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी मकर और संक्रांति पर्व एवं पूज्य स्वामी समर्पणानन्द जी के २२ वें आराधना दिवस माघ कृष्ण द्वितीया एवं तृतीया को वेद शोध संगोष्ठी एवं उत्सव बड़े ही उल्लास पूर्ण वातावरण में गुरुकुल भूमि में मनाया गया। इस वर्ष १२वीं वेद शोध संगोष्ठी का विषय वर्तमान समय की सर्वाधिक ज्वलन्त समस्या पर्यावरण को ध्यान में रखकर किया गया था और उसका विषय था 'आधुनिक पर्यावरण प्रदूषण समस्या का वैदिक समाधान''।

विषय व्यापक एवं सामयिक होने कारण अत्यधिक लोकप्रिय हुआ। गोष्ठी में मेरठ, दिल्ली, जयपुर, रुहेल खण्ड, रोहतक, अल्मोड़ा, विक्रम, कांगड़ी गुरुकुल आदि अनेक विश्वविद्यालयों से अपने विषय के लब्ध प्रतिष्ठ ३० विद्वानों ने भाग लिया। गोष्ठी के अध्यक्ष डा० धर्मपाल जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली थे तथा मुख्य अतिथि थे डा० विद्यालंकार "रोहतक विश्वविद्यालय"। ११-३० बजे ब्रह्मचारियों द्वारा सरस्वती वन्दना के पश्चात् सभी समागत विद्वानों का आश्रम की परम्परा के अनुसार प्राचीन भारतीय पद्धति से चन्दन, माल्यार्पण से अर्चन, पुष्प श्री फल, धौतवस्त्र तथा द्रव्य [illegible] विद्वानों का स्वागत किया गया। इसके पश्चात् प्रारम्भ हुआ शोध [illegible] का [illegible] जो सायं ६ बजे तक चलता रहा। गोष्ठी का समापन [illegible] के आचार्य प० पू० स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी महाराज के [illegible] गोष्ठी के संयोजक डा० विजयपाल विद्यालंकार के धन्यवाद के [illegible] शान्ति पाठ पूर्वक सम्पन्न हुआ।

अगले दिन १४ जनवरी को विशाल क्रीड़ा क्षेत्र में उत्सव प्रारम्भ हुआ। १४ दिन से चले आ रहे गायत्री महायज्ञ की पूर्णाहुति एवं ब्रह्मचारियों के उपनयन संस्कार होने पर यज्ञ की महत्ता के विषय में अनेक आधुनिक वैज्ञानिकों द्वारा परीक्षित विवरणों को प्रस्तुत करते हुए पू० स्वामी जी महाराज का प्रवचन हुआ। उसके पश्चात् स्वा० ज्ञानबोध जी सरस्वती, प्रो० शेरसिंह, श्रीमती प्रभात शोभा तथा अनेक सुप्रसिद्ध भजनोपदेशकों के भजन तथा ब्रह्मचारियों द्वारा अनेक शारीरिक बल प्रदर्शन के साथ अन्य कार्यों का प्रदर्शन तथा सायं प० पू० स्वामी जी महाराज के आशीर्वचन एवं मन्त्री जी के धन्यवाद के साथ कार्य सम्पन्न हुआ। सर्दी तीव्र होने पर भी श्रद्धालुओं का उल्लास उनकी आश्रम के प्रति श्रद्धातिरेकता का परिचायक था। पर्यावरण प्रदूषण समस्या का समाधान के विषय में पढ़े गये निबन्धों का सस्थान से प्रकाशित होने वाली "प्राचभारती" त्रैमासिक शोध पत्रिका में पाठकों को पढ़ने को मिल सकेंगे।

वार्षिक उत्सव

आर्य समाज बाजार सीताराम दिल्ली का ७० वाँ वार्षिकोत्सव सोमवार २ अप्रैल से रविवार ८ अप्रैल १९९० तक आर्य समाज मन्दिर में समारोह पूर्वक मनाया जायेगा।

सोमवार २ अप्रैल से शुक्रवार ६ अप्रैल १९९० तक रात्रि ८-३० बजे तक आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् डा० महेश जी विद्यालंकार (प्रो० के एम. रोहतक विश्वविद्यालय) मनोहर वेद कथा करेंगे।

कथा से पूर्व सायं ७-४५ से ८-३० बजे तक श्री कुमारसिंह जी राजन द्वारा मधुर भजन होंगे।

रामकिशन अग्रवाल, प्रधान बाबूराम आर्य, मन्त्री

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१ दयानन्दाब्द १६६
वर्ष २६ अंक १२]
दूरभाष । ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे
चैत्र शु० ६ सं० २०४७ १ अप्रैल १९९०

माता-पिता दानी मधुरभाषी हों

प्र सुष्टुती नमसा वर्तयध्यै
द्यावा वाजाय पृथिवी अमृध्रे ।
... मधुवचाः सुहस्ता
भरेभरे नो यशसावविष्टाम् ।।
ऋग्० १-४१ २ ।।

हिन्दी अर्थ—मैं सुन्दर स्तुति से और नमस्कार से अजेय द्युलोक और पृथिवी को अपनी शक्ति की वृद्धि के लिए अपनी ओर लाना चाहता हूँ। यशस्वी द्यावा-पृथिवी पिता और माता के तुल्य हैं। ये दोनो मधुरभाषी और सुन्दर दानी हैं। ये प्रत्येक सकट मे हमारी रक्षा करे। —डा० कपिलदेव द्विवेदी

सलकिया वनवासी आर्य महासम्मेलन में ७ हजार ईसाई हिन्दू धर्म में लौटे

दिल्ली २२ मार्च सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से जारी एक प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया कि गत १७ १८ मार्च १९९० को रायगढ़ के सलकिया क्षेत्र मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे वनवासी आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया था। लगातार दो दिन तक वहा यजुर्वेद पारायण यज्ञ हुआ। इस अवसर पर लगभग ७ हजार ईसाई स्वेच्छा से वैदिक धर्म मे लौटे। वनवासी लोगो ने कहा कि उनके पूर्वज कभी, बेकारी और सकट के समय प्रलोभन से ईसाई बन गए थे।

इस पुनर्मिलन समारोह के समक्ष स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने पुनन्तु मामदेव जनः पुनन्तु मन्सा धिया के जयघोष के साथ यज्ञ-स्थली का जल छिड़क कर उन्हे यज्ञोपवीत देकर वैदिक धर्म मे दीक्षित किया।

इससे पूर्व एक विशाल शोभा यात्रा भी निकाली गई। शोभा यात्रा के समापन समारोह मे आर्यसमाज ने मध्य प्रदेश सरकार से माग की कि जिन ६ पादरियो का कार्यकाल समाप्त हो चुका है, उन्हे तुरन्त भारत से निकाला जावे। जनता की माग पर आर्य समाज के तीन सूत्रीय कार्यक्रम मे जिनमे गौहत्याबन्दी, शराब के ठेको को हटाना अग्रेजी को हटाकर भारतीय भाषाओ को लाना था, चौथा सूत्र विदेशी पादरियो को भारत से निकालने को जोड़ा गया। सरगुजा क्षेत्र के सासद कुमार दलीप सिंह जूदेव भी दोनो दिन कार्यक्रम मे उपस्थित रहे। उन्होने आर्य समाज के धार्मिक जागरण के इस महान् कार्य मे पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। इस सम्मेलन से क्षेत्र के प्राचीन जगलो तथा पहाड़ो के वनवासी लोगो में आत्म विश्वास और भारत के गौरव की पुनीत भावना का सचार हुआ। इस शुद्धि महायज्ञ की सफलता से स्वामी धर्मानन्द जी का स्वप्न साकार हुआ।



शुद्धि समारोह में स्वामी जी के साथ आर्य शिष्टमण्डल मे श्रीमती ईश्वररानी, श्री देवव्रत महता, श्री डी० सी० पसरा, श्री बालदिवाकर हस, स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, श्रीमती प्रेमलता खन्ना श्री पृथ्वीराज शास्त्री दिखाई दे रहे हैं।

सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

सम्पादक—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

मूढा गांव में जागरूक युवकों का आर्यसमाज

स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती का भव्य स्वागत

सिलकिया की यज्ञस्थली से १८ मार्च साय ७ बजे स्वामी धर्मानन्द जी के साथ सभा प्रधान २६ किलोमीटर की दूरी पर मूढा गाव मे पधारे।

स्वामी जी के आगमन पर गाव के हजारो युवक और आबाल वृद्धो ने भारी सख्या मे सडक के दोनो किनारो के साथ वैदिक धर्म महर्षि दयानन्द सरस्वती के जय-जयकार के साथ स्वागत किया। यह ग्राम अत्यन्त उन्नत तथा साफ सुथरा तथा चौडी सडक पक्के घर, आदि चारों ओर से सजाया गया था।

एक सुन्दर पण्डाल मे युवको युवतियो ने दीप जलाकर सभा प्रधान जी का बडा ही शानदार स्वागत किया।

स्वामी धर्मानन्द जी का बडा ही स्फूर्तिप्रद भाषण हुआ।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को काव्यमय मान पत्र आर्य कुमार सभा की ओर से दिया गया। स्वामी जी ने लगभग ४५ मिनट तक नवयुवको तथा ग्रामवासियो को वैदिक धर्म के पथिक सिद्धान्तो पर चलने की प्रेरणा दी।

पंजाब व काशमीर की स्थिति पर चिन्ता व्यक्त

राष्ट्रीय एकता व अखण्डता बनाये रखने का आह्वान

नई दिल्ली, २४ मार्च। आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य के तत्वावधान मे दिल्ली की समस्त आर्य समाजो, शिक्षण सस्थाओ की ओर से आर्यसमाज का ११५ वां स्थापना दिवस आज सप्रू हाऊस, नई दिल्ली मे समारोह सम्पन्न हुआ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आर्य समाज द्वारा गत ११५ वर्षों मे स्वतन्त्रता प्राप्ति, समाज सुधार, शिक्षा आदि विभिन्न क्षेत्रो मे समाज व राष्ट्र के प्रति की गई आर्य समाज की श्रेष्ठ उपलब्धियो का विवरण देते हुए पजाब व कश्मीर की बद से बदतर होती हुई स्थिति पर गहरी चिन्ता व्यक्त की। स्वामी जी ने सभी आर्यजनो को इस सकट की घडी मे राष्ट्रीय एकता व अखण्डता को बनाये रखने के लिए हर प्रकार का बलिदान देने के लिए तैयार रहने आह्वान किया।

गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति व पूर्व केन्द्रीय मन्त्री प्रो० शेरसिंह ने शराब, मादक द्रव्यो आदि विश्वव्यापी बुराईयो के प्रति आर्य समाज द्वारा सघर्ष को तेज करने का आह्वान किया। उन्होने कहा कि हमे स्वय आर्य बनकर व बुराईयो को त्यागकर एक आदर्श उपस्थित करना चाहिए।

सासद डा० रामसिंह ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती स्वतन्त्रता के सर्वप्रथम उद्घोषक थे और उन्होने आर्य समाज की स्थापना करके एक मानव धर्म क्रान्ति की स्थापना की। इस अवसर पर डा० सच्चिदानन्द शास्त्री, श्री रामनाथ सहगल, श्रीमती शकुन्तला आर्या, डा० शिवकुमार शास्त्री आदि आर्य नेताओ ने कृण्वन्तो विश्वमार्यम्—ससार को आर्य बनाओ के महर्षि दयानन्द के लक्ष्य को पूरा करने के लिए हर त्याग व बलिदान करने का आह्वान किया।

इस अवसर पर सभा द्वारा प्रकाशित एक भव्य स्मारिका का डा० स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती ने विमोचन किया और आर्य जाति के मूर्धन्य पत्रकार प० क्षितीश वेदालकार को श्री लालमन आर्य ने वैदिक विद्वान पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

—विमल कान्त शर्मा, प्रचार मन्त्री

धर्मरक्षा महाभियान का हृदय स्पर्शी दृश्य

सलकिया १८ मार्च।

धर्मरक्षा महाभियान की बेजोड़ उपलब्धि का हृदय स्पर्शी दृश्य उस समय उपस्थित हुआ जब यज्ञ वेदी पर शुद्धि करण के अभिलाषी ईसाई स्त्री पुरुष भारी सख्या में आगे झुक हो गये और एक के पश्चात् दूसरा ग्राम यज्ञोपवीत लेकर गायत्री मन्त्र का उच्चारण करके स्नान जली करता था तो तीसरे ग्राम के भाई बहिन आगे बढ़कर शुद्धिकरण की महान पवित्र का स्थान ग्रहण कर लेते थे।

प० शिशि कृष्ण शास्त्री भाव विभोर होकर गायत्री पाठ मन्त्रोच्चारण यज्ञोपवीत धारण कराने की प्रक्रिया करते थकते नहीं थे।

जयपुर के महाराज कुमार जूदेव ने जब कलश उठाया और स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आम्र पत्रो से 'पुनन्तु माम देवजना, पुनन्तु मनसा धिया.' के सामूहिक उच्चारण के साथ यज्ञस्थली के जल को छिड़क कर हजारो वनवासी बन्धुओ को वैदिक धर्म की दीक्षा दी।

जनता दल के मुसलमान खफा

इमाम बुखारी के इशारे पर टिकट दिया गया

राज्य सभा टिकटो को लेकर उत्तर प्रदेश जनता दल में असन्तोष है। अटकोके दावे की अनदेखी भी की जाये तो सारी सूची में न तो कोई पिछड़ी जाति का उम्मीदवार है (एक यादव को छोड) न ही कोई अनुसूचित जाति का। पार्टी के अलग-अलग गुटो ने इन जातियो की उपेक्षा और ऊपर से थोपी नीतियो पर चिन्ता जताई है।

ऊपर से थोपी गई इन नीतियों की मुसलमानो के नाम पर ऐसे दो उम्मीदवारो को नामजद किया गया है जिनके नाम पर खुद पार्टी के मुसलमान नेताओ को एतराज है। अन्सारी मुसलमान तो बुरी तरह खफा हैं। राज्य मे कुल मुसलमान आबादी का साठ फीसदी अन्सारी हैं इन्हें मन्त्रिमण्डल मे तो अगूठा दिखाया ही गया है राज्य सभा उम्मीदवारो के चयन में भी छाट दिया गया है। इन्हे इस बात का सदमा है कि साफ सुथरी सरकार का दावा करने वालो ने मुसलमानो के नाम पर उन्हें टिकट दिया है जिनके कट्टर और फसादी भाषणो की खातिर उन्हें अपने जिले आजमगढ मे घुसने पर पाबन्दी है। ओबेदुल्ला आजमी ऐसे ही नेता हैं जिनके भडकाने वाले कैसेटो पर पूर्वी उत्तर प्रदेश मे पाबन्दी है।

जानकारो का कहना है कि अबदुल्ला आजमी और जमीम अफसल दोनो का ही जनता दल से कोई नाता नहीं था। मौलाना बुखारी ने इन्हें टिकट दिलवाया। बाबरी प्रकरण पर उत्तेजना फैलाने वाले भाषणो की खातिर ही इनके आजमगढ मे घुसने पर रोक है। रोक अब भी जारी है। पार्टी के मुसलमान नेताओ को इस बात पर भी एतराज है कि पार्टी के पास धर्मनिरपेक्ष छवि के तमाम मुस्लिम उम्मीदवार मौजूद थे पर उनकी उपेक्षा कर शाही इमाम के कहने से इन्हे पार्टी का उम्मीदवार नामित कर दिया गया है। अगर इन्हे उम्मीदवार बनाना ही था तो पहले पाबन्दी हटाते फिर राजनीति में नैतिकता की बात करने वालो को यह बताना चाहिए था कि वे प्रतिबन्ध गलत थे। (जनसत्ता २१ मार्च १९९०)

सलकिया में नये गुरुकुल का शिलान्यास

१८ मार्च साय ६ बजे।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने सलकिया से ९ किलोमीटर की दूरी पर निरञ्जन वनस्थली मे स्वामी धर्मानन्द जी के सानिध्य में नये आर्ष गुरुकुल का शिलान्यास किया। इस अवसर पर जशपुर के महाराज कुमार श्री जूदेव ने १००१ रु० (एक हजार एक) रु० दान दिया। सार्वदेशिक सभा की ओर से स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने ५००० रु० (पाच हजार रु०) देने की घोषणा की। यहा बडा भूखण्ड स्वामी धर्मानन्द जी को एक दानी ने गुरुकुल की स्थापना के लिए दान दिया था।

वैदिक धर्म के जयघोष से वातावरण पवित्र हो गया।

वनवासी आर्य महासम्मेलन में क्या देखा

सलखिया १७-१८ मार्च।

मध्यप्रदेश के रायगढ़ जिले के आदिवासी क्षेत्र सलकिया में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता में ऐतिहासिक वनवासी आर्य सम्मेलन सम्पन्न हुआ। अनुमानतः ७ हजार वनवासी ईसाइयों ने उत्साह-पूर्वक वैदिक धर्म के जय जयकार के साथ यज्ञोपवीत ग्रहण करते हुए वैदिक धर्म में प्रवेश किया। इसी तरह आज से एक वर्ष पूर्व सीतापुर में प्रथम वनवासी आर्य सम्मेलन भी सम्पन्न हुआ था, जिसमें लगभग ६ हजार ईसाई शुद्ध हुए थे।

सम्मेलन में भाग लेने के लिए श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती के नेतृत्व में सार्वदेशिक सभा से विशिष्ट विद्वानों व कार्यकर्त्ताओं का दल ज्यों ही १६मार्च को रायगढ़ स्टेशन पर पहुंचा आचार्य ब्रह्मचारी वामदेव के नेतृत्व में आर्य नर-नारियों और वनवासियों ने स्वामी जी तथा दल के सदस्यों का जोरदार स्वागत किया। रायगढ़ से सलकिया जाते हुए घरघोड़ा, धंमपुर, कुवारा, लैलूंगा, खम्मार में स्थान-स्थान पर तोरणद्वारों द्वारा स्वामी जी व उनके दल के महानुभावों की स्वागत की जोरदार व्यवस्था की गई थी। महिलाओं ने तिलक लगाकर आरती उतारकर स्वामी जी महाराज का हृदयस्पर्शी स्वागत किया। लैलूंगा पर गायत्री परिवार के धर्माध्यक्ष ने भव्यस्वागत के साथ-साथ अल्पाहार का भी सुप्रबन्ध किया था। सलकिया पहुंचते-पहुंचते रात्रि के ९ बज चुके थे। वनवासी नर-नारियों के झुण्ड के झुण्ड अपने नेताओं की प्रतिक्षा अपने द्वार सजाकर अपने मंगल कलश पर पंचमुखी ज्योतियां जलाकर प्रतिक्षा कर रहेथे। प्रत्येक द्वार पर दीपों के थाल सजाकर स्वामीजी तथा अतिथियों की आरती उतारी गई। पंक्तिबद्ध होकर सन्नारियां लम्बी पंक्ति में गन्तव्यस्थल की ओर अतिथियों की ओर मुह किए चल रही थी। उनके स्वागत के इस अनुपम दृश्य को देखकर अपनी प्राचीन स्वागत परम्परा का स्मरण आना सुखद आश्चर्य था।

पुर्नमिलन समारोह स्थल सलकिया से कुछ दूर जगल में था, जहां आचार्य विशिकेशन के आचार्यत्व में यजुर्वेद पारायण यज्ञ पिछले कुछ दिनों से बराबर चल रहा था।

पुर्नमिलन समारोह के लिए अपूर्व उत्साह

आर्य शिरोमणि स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी महाराज के आगमन का समाचार पूरे क्षेत्र में इस तरह फैल गया कि १७ मार्च की प्रातः वनवासी नर-नारियों के झुण्ड के झुण्ड यज्ञ स्थल की ओर आने लगे। प्रातः से सायकाल लगातार हजारो वनवासी आचमन करके यज्ञोपवीत धारण कर स्वामी जी महाराज का आशीर्वाद प्राप्त करके वैदिक धर्म में प्रविष्ट होते रहे। मध्याह्नोत्तर २ बजे लैलूंगा में शोभा यात्रा निकाली गई। अपने-अपने घरों से आये वनवासियों की टोलियां ढोल, मजीरे और कठपुतलियों को नचा-नचाकर शोभा यात्रा को चार चांद लगा रहे थे। स्वामी जी महाराज खुली जीप में सवार थे स्थान-स्थान पर अपनी परम्परा के अनुसार यह टोलियां स्वामी जी तथा उनके सहचालकों का खीलें बरसाकर भव्य स्वागत कर रहे थे और विदेशी पादरियों भारत छोड़ो का भव्य नाद गुंजित कर विदेशी पादरियों के षड्यन्त्र के प्रति वनवासियों को सावधान कर रहे थे।

१८ मार्च को प्रातः ७-३० बजे से यज्ञ पुनः प्रारम्भ हुआ। ट्रक के ट्रक यज्ञ स्थल की ओर दौड़ने लगे थे और देखते ही देखते जंगल में मंगल का दृश्य दिखाई देने लगा। यह ऐसा लग रहा था जैसे महाकुम्भ का तीर्थ स्थल वहां बन गया हो। अनुमानतः दोनों दिन लगभग ७ हजार वनवासी आर्य नर-नारियों ने ईसाइयत के जाल को तोड़कर पवित्र वैदिक धर्म ग्रहण किया। इस अवसर पर क्षेत्र के संसद सदस्य श्री जूदेव भी पधारे। अपने राज्य निष्ठा के प्रतिनिधि के रूप में वनवासियों ने उनका भी भव्य स्वागत किया। श्री जू देव जी ने आर्यसमाज के इस कार्यक्रम की मुक्तकण्ठ से सराहना की।

सलखिया से २६ किलो मीटर दूर मुड़ा गांव जि० रायगढ़ में आर्य कुमार सभा तथा आर्यसमाज के तत्वावधान में १८ मार्च सायं ८ बजे भारी जन समूह ने स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तथा स्वामी धर्मानन्द का स्वागत किया हजारों नवयुवकों तथा देवियों ने वैदिक धर्म और महर्षि दयानन्द के गगन भेदी जयकारों से वातावरण गुंजायमान हो गया।

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी धर्मानन्दजी सरस्वती के अथक प्रयत्न व प्रयासों से यह सम्मेलन सब प्रकार से सफल रहा है। उनके गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा सम्मेलन की सफलता के लिए जो कष्ट उठाए गए हैं, वह धन्यवाद के विशेष पात्र हैं। आचार्य वामदेव तथा मध्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रमेशचन्द्र श्री वास्तव का भी पूरा सहयोग रहा। दिल्ली से सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् प० पृथ्वीराज जी शास्त्री, आर्य वीर दल के प्रधान सचालक श्री पं०बालदिवाकर हंस श्रीमती ईश्वर देवी श्रीमती प्रेमलता खन्ना, श्री डी० पलटा एव वेदव्रत महत्ता आदि लोग स्वामी जी के साथ ही सलकिया पहुंचे और सबने इस सम्मेलन की सफलता के लिए जोरदार रूप से काम किया।

आर्य समाज के प्रतिनिधियों को भी एकता परिषद में शामिल करने की मांग

भारतीय जनता पार्टी के कुछ सांसदों ने प्रधानमन्त्री विश्वनाथप्रतापसिंह को एक पत्र लिखकर मांग की है कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, आर्य समाज और विश्व हिन्दू परिषद् जैसी राष्ट्रवादी संस्थाओं के प्रतिनिधियों और जगद्गुरु शंकराचार्य जैसे धार्मिक नेताओं को भी राष्ट्रीय एकता परिषद् में शामिल किया जाए।

भाजपा सांसद प्यारेलाल खण्डेलवाल डा. लक्ष्मीनारायण पांडेय, राजनाथ भाई, सुमित्रा महाजन, गिरधारीलाल भार्गव और राजवीरसिंह ने एक संयुक्त पत्र में राष्ट्रीय एकता परिषद के गठन का स्वागत करते हुए कहा है कि राष्ट्रीय एकता परिषद में जिन व्यक्तियों को रखा गया है उसके बारे में तो कुछ कहने की जरूरत ही नहीं है। लेकिन परिषद का उद्देश्य इससे पूरा नहीं होगा।

(जन सत्ता १४-३-९०)

रूबिया को छुड़ाने के लिए पाक मदद ली गई

नई दिल्ली, २१ मार्च। केन्द्रीय गृहमन्त्री मुफ्ती मोहम्मद सईद की पुत्री डा० रूबिया सईद को अपहरणकर्ताओं से छुड़वाने के लिए पाकिस्तान सरकार और कुछ पाकिस्तानी राजनेताओं से सहायता प्राप्त की गई थी। केन्द्रीय गृहमन्त्री ने राज्यसभा में बताया भारत ने ऐसा अनौपचारिक रूप से किया था। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान सरकार ने एक सरकारी विज्ञप्ति जारी की थी। इसमें अपहरणकर्ताओं से अनुरोध किया गया था कि डा० रूबिया के विरुद्ध धमकियां अमल में नहीं लाएं। वैसा करना इस्लाम के विरुद्ध होगा। सईद ने राज्य सभा को बताया कि इसी तरह की अपीलें कुछ पाकिस्तानी राजनैतिक नेताओं ने भी जारी की थी।

(नवभारत २२ मार्च)

अवैद्यनाथ ने कश्मीर घाटी सेना के हवाले करने को कहा

नई दिल्ली, १९ मार्च। हिन्दू महासभा के सांसद और राम जन्मभूमि मुक्ति समिति के अध्यक्ष महंत अवैद्यनाथ ने कश्मीर समस्या से निपटने के लिए सुझाव दिया है कि जम्मू को अलग राज्य और लद्दाख को केन्द्र शासित प्रदेश बनाकर काश्मीर घाटी को सेना के सुपुर्द कर दिया जाए।

आर्य समाज करोलबाग में महात्मा वेदभिक्षु जयन्ती के उपलक्ष्य में दयानन्द संस्थान की ओर से आयोजित समारोह में बोलते हुए महन्त जी ने कहा कि कश्मीर से हिन्दुओं का पलायन रोकना व धारा तीन सौ सत्तर समाप्त करना भी जरूरी है। उन्होंने कहा कि स्व० महात्मा वेदभिक्षु जी ने हिन्दू संगठन, एकता व जागरण का जो महान कार्य शुरू किया था उसे आगे बढ़ाकर ही हम देश को मजबूत बना सकते हैं।

इस अवसर पर बोलते हुए भाजपा सांसद विजय कुमार मल्होत्रा ने कहा कि हिन्दू समाज निर्णायक क्षणों में चूक जाता है। हमारे बड़े-बड़े आंदोलन समितियों के हवाले करके ठण्डे कर दिये जाते हैं। उन्होंने कहा कि महात्मा वेदभिक्षु ने हिन्दू समाज की इसी कमी को दूर करने के लिए अपनी वाणी और लेखनी से जीवन भर अभियान चलाया। इस साहस और निर्भीकता के लिए हिन्दू समाज उनका हमेशा ऋणी रहेगा।

अखिल भारत हिन्दू महासभा के अध्यक्ष आचार्य बालाराव सावरकर ने देश को सैनिक दृष्टि से और सशक्त बनाने का आह्वान किया और कहा कि भारत-विरोधी शक्तियों के नापाक इरादों को धूल में मिलाने का यही एकमात्र मार्ग है।

गंगेश्वर धाम के स्वामी सर्वज्ञ मुनि ने कहा कि वेद को जन-जन तक पहुंचाने और धर्म के वास्तविक मर्म से जनसाधारण को अवगत कराने में महात्मा वेदभिक्षु ने अहम्‌ भूमिका निभाई थी।

(हिन्दुस्तान २० मार्च)

शुद्धि महायज्ञ में बाहर से पधारने वाले महानुभाव

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान श्री पृथ्वीराज शास्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश विदर्भ के प्रधान—श्री रमेशचन्द्र श्रीवास्तव, माता कौशल्या देवी, श्री प० बाल दिवाकर हंस, माता प्रेमलता शम्मा, माता ईश्वर देवी जी, श्री दीवानचन्द्र पलटा, श्री देवव्रत मेहता जयपुर के महाराज कुमार रणजीतसिंह पूर्व संसद सदस्य।

नूतन वर्षाभिनन्दन

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से होता वर्षारम्भ,
पुराने शिकवे भूलकर करो स्नेह सरम्भ।
करो स्नेह सरम्भ सभी को मित्र बनाना है,
दयानन्द का सन्देश जगभर में फैलाना है ॥१॥
बुरी बात दुखदायी है, तो उसे भूल जाओ,
दूर का भी यदि साथी है उसे शीघ्र अपनाओ।
मीठी बातें याद करो पर कड़वी बिसर जाओ,
अपमान किसी ने किया हो, उसे निगल जाओ ॥२॥
पुराना गुस्सा थूक दो नया प्रेम सरसाओ,
प्रेम प्रीति को याद रखो चूक भूल तुम जाओ ॥
सब में होती हैं कमियां, सबके हैं दोष निराले,
अन्य के दोष बड़े ही दिखते, अपने हैं छिप जाते ॥३॥
जो है दोष तुम्हारे कहता वही मित्र है सच्चा,
झूठी प्रशंसा करे जो कोई वह देता है गच्चा।
पुराने किस्से बन्द करो अब नया व्यवहार चलाओ,
क्रोध द्वेष को दूर हटाकर प्रेम प्रीति अपनाओ ॥४॥
वेद धर्म है यदि हम सबका तो फर्क नहीं है कुछ भी,
दयानन्द यदि गुरु हम सबका तो आपस में गुरुभाई
परमपिता के पुत्र हैं हम सब आपस में भाई-भाई,
राग-द्वेष से टूट पड़ी है, भूले हैं प्रेम मिताई ॥५॥
ऋषि दयानन्द की कृपा से, जीवन हुआ कृतार्थ,
असत पथ को त्यागा, जाना सच्चाई का मर्म।
बनो नहीं कृतघ्न, दयानन्द का उपकार न भूलो,
ऋषि ऋण उतारना है, आर्यसमाज न छोड़ो ॥६॥
अपने को आर्य बनाकर मत तुम चुप हो जाओ,
बहुत अभी हैं भटके उनको भी राह दिखाओ।
आर्यो आर्यसमाज को कभी न छोड़ो,
चन्दा और उपस्थिति से न कभी मुख मोड़ो ॥७॥
क्या पड़ता है फर्क मन्त्री तुम हो या अन्य,
आर्य समाज का काम बस कभी न होवे बन्द।
हिल मिलकर सब काम करो, या खूब मचाओ द्वन्द्व,
पर मन में ही रूठकर घर में रहो न बन्द ॥८॥
आर्यों यह संकल्प तुम्हें लेना ही होगा,
प्रति दिन आर्य समाज का समय देना ही होगा।
तुम हो सच्चे आर्य तुम्हारा शुभ अभिनन्दन,
सक्रिय रहो सदा तुम्हारी रात दिन वन्दन ॥९॥

—प० गंगाप्रसाद विद्यार्थी एम०ए०

हिमाचल सरकार का सारा काम अब हिन्दी में होगा

शिमला, २१ मार्च। हिमाचल में दस वर्षों बाद फिर हिन्दी का दौर आया है। प्रदेश सरकार ने विधान सभा में घोषणा की है कि सरकार का सभी कार्य अब हिन्दी में होगा।

(हिन्दुस्तान २२ मार्च)

दूर दर्शन का हिन्दी के साथ भेद-भाव क्यों ?

आचार्य रामकिशोर शर्मा, खुर्जा बुलन्दशहर

वर्तमान काल में दूर दर्शन का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक हो गया है। हम घर में बैठकर न केवल अपने ही देश की अपितु विश्वभर की घटनाओं का अवलोकन कर सकते हैं। इस विज्ञान के युग में सम्पूर्ण विश्व को इस सुविधा से सम्पन्न कर दिया है। इससे विश्व के देशों में निकटता का वातावरण पैदा हुआ है। एक दूसरे को समझने में सुविधा हुई है। अपने देश में ही करोड़ों ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्हे अपने ही प्रदेश के मुख्य-मुख्य स्थल देखने का समय नही मिल पाता जो अन्य देश एवं अपने ही देश के अन्य प्रदेशों को देखने की कल्पना नही कर पाते किन्तु आज दूर दर्शन को उनके घर में ही अथवा घर के पास में ही उन्हें सब कुछ दिखा देने का श्रेय प्राप्त है। सामान्य व्यक्ति भी इसके माध्यम से अन्य देशों की वस्तु स्थिति तथा अपनी प्राचीन परम्पराओं से परिचित होते जा रहे हैं। परस्पर में आत्मीयता का भाव बढ़ रहा है जो हमारे देश की एकता और अखण्डता के लिये आवश्यक है। कोई कितना भी व्यस्त रहने वाला क्यों न हो दूर दर्शन अपने आकर्षक कार्यक्रमो के द्वारा उसे भी कुछ देर के लिये अपनी ओर आकृष्ट कर ही लेता है। भिन्न-भिन्न रूचि के मनुष्यों के लिये तदनुकूल कार्यक्रम प्रस्तुत करना दूर दर्शन की अपनी विशेषता है।

व्यस्तता के कारण रामायण महाभारत देखने के अतिरिक्त मात्र समाचार सुनने तक ही मेरा दूरदर्शन से सम्पर्क रहा है। इसी लिये उसकी कार्य पद्धति से पूरी तरह परिचित नही हो पाया था। अब की बार लोकसभा निर्वाचन की गतिविधियों तथा परिणाम जानने की उत्सुकता के कारण अधिक सम्पर्क में रहना पड़ा। चुनाव परिणाम बताने तथा उसकी समीक्षा हेतु नियुक्ति दूर दर्शन के अधिकारियों के दर्शन का अवसर मिला। इन अधिकारियों ने विभिन्न राजनैतिक दलों के शीर्षस्थनेताओं को भी आमन्त्रित किया था। उनकी मनः स्थिति से जनता को अवगत कराने हेतु यह ठीक ही था, किन्तु यह सब कार्य जनता की भाषा में न होकर अंग्रेजी में हो रहा था। दो प्रमुख अधिकारी जो प्रश्न कर रहे थे उनमें से एक के श्री मुख से तो एक भी शब्द राष्ट्रभाषा हिन्दी का सुनने को नही मिला किन्तु दूसरे सज्जन अंग्रेजी के प्रश्नोत्तर का सार हिन्दी में बतलाते थे। ऐ ऐसा प्रतीत हो रहा था कि दूर-दर्शन की दृष्टि में नेताओं को अंग्रेजी जानना अनिवार्य है। प्रदेशों के प्रमुख नेताओं से दूर दर्शन के तत् प्रान्तीय अधिकारियो द्वारा प्रायः अंग्रेजी में ही प्रश्न किये गये। उनका सारांश दिल्ली से हिन्दी में बताया जा रहा था भाषा विज्ञान बुरा नही, किन्तु विदेशी भाषा को इतना महत्व किसी भी देश में नही दिया जाता।

लोक सभा का चुनाव सम्पूर्ण देश मे हो रहा था। पिछली सरकार की अंग्रेजी परस्तनीति के कारण कई प्रदेशों में अंग्रेजी का महत्व बढ़ गया है। उनके सन्तोषार्थ ही यह व्यवस्था की गई होगी यह कुछ का विचार रहा। किन्तु अब तो वह सरकार भी नहीं रही और विधान सभा चुनाव भी हिन्दी जानने वाले प्रान्तों में हुये। फिर भी दूरदर्शन ने लोकसभा वाली ही प्रणाली को पकड़े रखा। हिन्दी भाषी नेताओं से भी अंग्रेजी में ही प्रश्न किये गये और उत्तर की भी अंग्रेजी में ही अपेक्षा की गई। समीक्षा में भी अंग्रेजी का ही अधिक प्रयोग दिया गया। कुछ नेताओ ने अंग्रेजी में उत्तर दिये उनका हिन्दी में और कुछ न हिन्दी में उत्तर दिया उनका अंग्रेजी में अनुवाद किया गया। यही स्थिति प्रदेशों के नेताओं की भी रही। मध्यप्रदेश में हिन्दी में प्रश्न कीजिये इस जनता की मांग की उपेक्षा करके दूर दर्शन अधिकारी अंग्रेजी में ही प्रश्न करते रहे। इससे यह ज्ञात हो रहा था कि सभी प्रदेशों में दूर दर्शन में कार्य करने वालों को इस प्रकार के विशेष निर्देश दिये गये हों और दूर दर्शन अंग्रेजी का प्रचार तन्त्र है इसके कार्यक्रमों का आनन्द लेने के लिये सबको अंग्रेजी पढ़नी चाहिये, यही इसका उद्देश्य है।

सभी दलों के जिन-जिन वरिष्ठ नेताओं को दूर दर्शन के अधिकारियों ने आमन्त्रित किया था। प्रायः वे सभी अंग्रेजी से अधिक अपनी प्रान्तीय भाषा तथा हिन्दी के विद्वान थे। अपने प्रवास काल में जनता को हिन्दी में ही सम्बोधित करते रहे हैं। दक्षिण भारत के कुछ नेता तो हिन्दी भाषियों से भी अच्छी हिन्दी बोलते हैं फिर सभी नेताओं से अंग्रेजी में प्रश्न करना उचित नहीं था। अपनी भाषा के समान किसी भी विदेशी भाषा में भावाभिव्यक्ति कथमपि सम्भव भी नही है। इसीलिये सभी देशों के वरिष्ठ नेता न केवल अपने देश में अपितु विदेशों में भी वहां के सर्वोच्च अधिकारियों के साथ अपने देश की भाषा में ही अपनी बात करते हैं। अपने देश में प्रतिवर्ष अनेक देशों के शासक आते रहते हैं वे सभी अपनी ही भाषा का प्रयोग करते हैं. यह हम सभी देखते और सुनते हैं। रूस, चीन, जापान, जर्मन आदि सभी देशों ने अपने देश की भाषा द्वारा ही आशातीत सफलता प्राप्त की है, यह भी किसी से छिपा नही है, फिर भी हमारे देश का विकास अंग्रेजी के बिना रूक जायेगा बिना अंग्रेजी पढ़े व्यक्ति का भविष्य अन्धकारमय हो जायेगा। इसलिये अंग्रेजी पढ़नी चाहिये कुछ व्यक्तियों की यह धारणा दुर्भाग्य पूर्ण नही तो और क्या है ?

अपने देश मे भी स्वतन्त्र होते ही तुर्की इजायल आदि देशों की भांति सभी काय हिन्दी भाषा में करने का नियम बन जाना चाहिये था क्योंकि उस समय कही भी हिन्दी का विरोध नही था गुजरात, बंगाल तथा दक्षिण भारत के प्रायः सभी नेताओं ने स्वतन्त्रता के पूर्व ही हिन्दी को राष्ट्रभाषा होने की अधिकारणी मान लिया था। हिन्दी को संविधान में उक्त गौरव दिलाने का श्रेय भी सभी को समान है। किन्तु कुछ अंग्रेजी परस्त नेताओं ने कुछ समय के लिये अंग्रेजी को सहयोगिनी भाषा स्वीकार कर हिन्दी के मार्ग में बाधायें खड़ी कर दी। धीरे-धीरे इन्ही सबकी दुरभिसन्धि से दक्षिण भारत मे हिन्दी का विरोध होने लगा। इसी को माध्यम बनाकर जब तक सब प्रदेश सहमत नही होंगे तब तक हिन्दी पूर्ण रूप से राष्ट्रभाषा नही बन सकेगी। यह निर्णय कर लिया गया। श्री नेहरू, इन्दिरा और राजीव के प्रधान मन्त्रित्व काल मे अंग्रेजी का वर्चस्व बना ही रहा। श्री राजीव ने २६-१०-८८ को मद्रास मे कहा था कि डी० एम०के० के लोग हिन्दी के उन्मादियों से हाथ मिला रहे हैं। राष्ट्रभाषा के समर्थकों को उन्मादी कहना उनके अंग्रेजी उन्माद का ही तो परिणाम था। अन्यथा किसी भी देश का प्रधान मन्त्री अपनी राष्ट्रभाषा के समर्थन को उन्माद कैसे कह सकता है।

उक्त नेताओं ने अंग्रेजी को रानी और हिन्दी को उसकी चेरी बना दिया, सभी देशों के शासक सर्वदा अपनी ही भाषा में अपने भाव व्यक्त करते हैं यह प्रत्यक्ष अनुभव होने पर भी इन्होंने अपनी भाषा की उपेक्षा की है। चीन की यात्रा में चीन के प्रधानमन्त्री चीनी में और श्री राजीव जी अंग्रेजी में बोल रहे थे। एक दूसरे की भाषा न समझने के कारण बीच में अनुवाद की व्यवस्था थी। जब अनुवाद होना ही था तब इन्हें भी अपने देश की भाषा में बोलना चाहिये था। ४२ वर्ष बाद भी लोक सेवा संघ की परीक्षाओं का माध्यम अंग्रेजी बनी हुई है। भारतीय भाषायें माध्यम बने एतदर्थ आन्दोलन करना पड़ रहा है। दूर दर्शन भी इसके ही प्रभाव क्षेत्र में रहा है ? अतः इनकी इच्छानुसार ही यहां अंग्रेजी का वर्चस्व

(शेष पृष्ठ ६ पर)

हम और हमारी वेश-भूषा (३)

—श्री वंशीधर आर्य, जयनगर (बिहार)

८ भाषा—आज हमारी सरकार त्रिभाषा फार्मूला अपना रही है। इसमे अंग्रेजी हिन्दी और प्रान्तीय भाषाओ एक खासकर दक्षिणी भाषाओं को ही अधिक महत्व दिया है। परन्तु संस्कृत जो सारी भाषाओ की जननी है, जिसमे बंगला तमिल, तेलगु मलयालम, कन्नड गुजराती, गुरमुखी डोगरी, आसमी हिन्दी, उड़िया और न जाने प्रत्येक प्रान्तो में कितने बोल हैं सभी की आदि भाषा है। वह उपेक्षित हो रही है। वह अरबी, फारसी के जैसा विदेशी सदृश्य ऐच्छिक भाषा बना दिया गया है, जो कितने लज्जा की बात है, और अंग्रेजी विदेशी भाषा है, सर आखो पर बैठाया गया है।

होना तो यह चाहिए कि संस्कृत जन्य हिन्दी राष्ट्र भाषा होती और सहायक में प्रादेशिक भाषाए तथा अंग्रेजी को अल्पकाल मे हटाने का प्रबन्ध। ऐच्छिक विषय मे अरबी, फारसी अंग्रेजी आदि। परन्तु ये मेकाले (अंग्रेजी) के मानस पुत्रो (कांग्रेसियों) ने जो काम चालीस वर्षों में कर दिया वह काम सारे अंग्रेजो ने मिलकर सैकडो वर्षों में न कर पाये।

९—भोजन—सात्विक (निरामीस, फलादि) को छोड कर तामसी (मांस, मदिरा अण्डादि) की ओर प्रवृत होकर दिन दूना रात चौगुना भोगों का उन्मुख होना। यह सिद्ध करता है कि हम आर्य नही अनार्य हो रहे हैं। पश्चिम तामस प्रवृति को छोड़ कर सात्विक को अपना रहा है। इसका नकल हम आर्य नही कर रहे हैं। जो भारी भूल।

१०—विवाह—हमारे धर्म ग्रन्थो मे विवाह आठ प्रकार का है और हम उन्ही के मतानुकूल चलते भी हैं। परन्तु पश्चिम में विवाह और विच्छेद (तलाक) फिर विवाह (चाहे नर हो या नारी) और फिर विच्छेद। यह फिर फिर का मामला चलता रहता है। यहां तक कि विवाह से पहले ही कम उम्र के बच्चों को यौन सम्बन्धी शिक्षा दिया जाता है? इसका प्रभाव यह होता है कि कुमारी कन्याओ के भी बच्चे पैदा हो जाते हैं। जिसका प्रतिशत किसी देश में ३० से ४० तक हो जाता है। उसके बाद भी विवाह करते है और फिर तलाक लेते हैं। इस प्रकार प्रत्येक पुरुष या नारी इच्छित व्यक्तियो से सम्पर्क करते हैं। इसका शुरूआत ईसा के माता मरियम से मानते हैं। और हम हैं कि एक पतिव्रता। लाचारी मे पुर्नविवाह या नियोग का सहारा लेते थे। परन्तु आज का भारतीय पश्चिम का नकल करते हुए भारत मे भी यौन शिक्षा की मांग करते हैं, जो नितात गलत धारणा है।

११—कला—कला में संगीत, नृत्य, दास्तकारी चित्रादि है। हमारे यहा संगीत के द्वारा प्रबल वेगवान वायु को शीतल मन्द सुगन्धयुक्त किया जाता था। सन्ध्या बेला मे दीपक प्रज्वलित करना मृगाओ को मधुर राग से बुलाकर वशीभूत करना फिर राग समाप्त होने पर वापस जाना आदि था। परन्तु आज पश्चिमी सभ्यता अर्द्ध नग्नता का प्रदर्शन और अश्लील शब्दो के नाच के सिवाय कुछ होता ही नही।

१२—व्यायाम (खेल-कूद)—आज का खेल, खेल क्या है पदकों का बाजार है। फलाना ने फलां पदक प्राप्त किया। अमुक खेल मे अमुक देश ने इतना पदक जीता। बस सिर्फ पदक और कुछ नही।

परन्तु हमारे पूर्वजो का ढंग अलग था। राम द्वारा अनुपमेय अश्व द्वारा मत्स्य भेद, हरिश्चन्द्र द्वारा राज्य त्याग, दधिचि द्वारा अस्थिपंजर दान, दालीप और शीबा द्वारा अपने शरीर का मांस दान चन्द्रगुप्त द्वारा सेल्युकस और विक्रमादित्य द्वारा हूणो का भारतीय करण करना आदि। मध्य युग मे बुद्धि करण के लोप से हमारा देश रसातल मे चला गया।

१—उपसंहार—हमारी संस्कृति चाहे चोटी जनेऊ का हो चाहे भोजन व्यवहार का हो, भाषा वस्त्र का हो एक एक कर सभी समाप्त हो रहे हैं। इसके अनेको कारण हैं। जैसे (क) आर्यों का आलस्य और दब्बूपन, (ख) मुस्लिम आक्रमण द्वारा तोड़फोड़ और धर्मग्रन्थो को जलाना, (ग) पश्चिमी सभ्यता का कुप्रचार और रंग मे रंगना, (घ) कांग्रेस द्वारा वोट लोलुपता आदि।

पश्चिम की सभी चीजें गलत नही हैं। फिर भी हमारी चीजें (सभ्यता) उससे कहीं श्रेष्ठ हैं। अत अन्धी दौड़ को छोड़ कर अपने बल पर अपनी वेशभूषा पर चलकर ही अपनी संस्कृति के सजग प्रहरी हो सकते हैं। जो नितान्त जरूरी हैं। कुल का राष्ट्र इजराइल जो क्षेत्र में छोटानागपुर के लगभग है अपनी राष्ट्र भाषा 'हिब्रू' मे कार्य करता है। और चारों ओर की मुस्लिम आबादी जो मान्यता न दे रहे थे, उनके छुड़ाया और अपनी धाक बिठाया। लाचार होकर (हारकर अपनी जमीन को खोकर) इजराइल को राष्ट्र की मान्यता दिया। द्वितीय विश्व युद्ध में जिस प्रकार जापान टूट गया था कि उसे उठने मे सैकड़ो नहीं सहस्त्रो वर्ष लगता। जिस तेजी से जापान उठा और बढ़ा। क्या वह पश्चिम की नकल कर रहा है। अत, हे आर्य! तुम आर्य (श्रेष्ठ) हो! अपने गौरव को जानो और पैचो! ●

दूरदर्शन और हिन्दी

(पृष्ठ ५ का शेष)

रहा है। अपने देश के प्रमुख स्थल दिखाते समय प्राय अंग्रेजी में ही उनका परिचय दिया जाता है। अन्य भी विशिष्ट घटनाओ मे भी अंग्रेजी का ही प्रयोग किया जाता है। क्या ये सब कार्यक्रम मात्र अंग्रेजी जानने वालो के लिये ही प्रदर्शित किये जाते हैं। अन्य भाषा जानने वालो से इनसे कोई सम्बन्ध नहीं है? यदि है तो उनकी उपेक्षा क्यो? इसीलिये तो भूतपूर्व राष्ट्रपति महामहिम श्री ज्ञानी जैलसिंह ने क्षुब्ध होकर दूर दर्शन की अंग्रेजी परस्ती की कड़ी भर्त्सना की थी।

अब अंग्रेजी परस्त शासक दल को तो जनता ने समुचित शिक्षा दे दी है। सौभाग्य से केन्द्र मे हिन्दी समर्थक नेताओ की सख्या अच्छी हो गई है। उन्होने तथा प्रदेशो के मुख्य नेताओ ने अंग्रेजी का वर्चस्वशीघ्र समाप्त करने की भावना व्यक्त की है। हिन्दी समृद्ध भाषा है। उसकी देवनागरी लिपि जैसी लिपि विश्व की किसी भी भाषा के पास नही है। इसके सिर पर देवभाषा संस्कृत का वरद-हस्त है। इसी लिये पूर्ववर्ती अनेक नेताओ ने सभी भाषायें देवनागरी लिपि मे लिखी जायें यह कहा था, यदि ऐसा हो गया होता तो भाषायी विवाद का जन्म ही नही होता। ४२ वर्ष पूर्व स्वतन्त्र हो जाने पर भी विदेशी भाषा का अवलम्बन सचमुच लज्जा जनक है। अब यह स्थिति समाप्त होनी ही है। रूसी, चीनी, जापानी आदि विदेशी भाषाओ की भाति ही अंग्रेजी के अध्ययन की भी व्यवस्था रहे, अपने देश की शिक्षा का माध्यम अपनी ही भाषा मे हो किसी भी परीक्षा की माध्यम अंग्रेजी न हो नए शासन मे यह व्यवस्था होगी, यह आशा है। दूर दर्शन को भी लगभग ४ प्रतिशत अंग्रेजी वालो का नही शेष सबका ध्यान रखना चाहिये। जैसे हिन्दी की फिल्मे सर्वत्र उत्साह से देखी जाती है, वैसे ही कार्यक्रम देखे जायेगे। दूर दर्शन के अधिकारी जनभावना का आदर करते हुए अवश्य व्यवस्थित हो जायेंगे यह विश्वास है। ●

धूम्रपान पर सख्त पाबन्दी

पंजाब सरकार ने अपने दफ्तरो मे धूम्रपान पर निषेध को सख्ती से लागू करने का निश्चय किया है।

उल्लेखनीय है कि सातवें दशक में ज्ञैलसिंह मन्त्रिमण्डल ने पहली बार सरकारी कार्यालयों में सिगरेट पीने पर पाबन्दी लगाई थी और बाद में बनी सरकारें भी इस पर अमल करतीरहीं। किन्तु उक्त आदेश के विपरीत अनेक अधिकारी और अधीनस्थ कर्मचारी दफ्तरो में सिगरेट पीते रहे हैं।

(हिन्दुस्तान १९-३-९०)

स्वामी दयानन्द विश्व मानव के समर्थक थे

वेदों की ओर लौट चलो : वेद शाश्वत हैं

ज्ञान पर सबका जन्मसिद्ध अधिकार है किसी को इससे वंचित नहीं किया जा सकता

उपराष्ट्रपति डा० शंकरदयाल शर्मा

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित इस आर्य युवा महासम्मेलन मे आकर मुझे खुशी हो रही है। इसी खुशी के दो मुख्य कारण हैं। एक यह इस संस्था के साथ स्वामी दयानन्द सरस्वती का नाम जुड़ा हुआ है। दूसरा यह है कि इस सम्मेलन के साथ युवा शब्द जुड़ा हुआ है। आज का युवा ही आने वाले कल का भारत है। इसलिए बहुत जरूरी है कि हम अपने युवको को महापुरुषो के मूल विचारो से अवगत कराए। मुझे आप लोगो ने इसका अवसर दिया, इस हेतु मैं आयोजको को धन्यवाद देता हू।

उन्नीसवी सदी के मध्य भारत का इतिहास अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस समय हमारे समाज ने एक नई करवट ली, और अनेक समाज सुधार आन्दोलनो की शुरुआत हुई। १८७५ मे जब स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की विधिवत स्थापना की थी उससे पूर्व ब्रह्म समाज तथा प्रार्थना समाज की स्थापना हो चुकी थी। यद्यपि इसका भी उद्देश्य सामाजिक कुरीतियो को दूर करना था लेकिन इनका दृष्टिकोण मूल रूप से पश्चिमी दर्शन पर आधारित था। स्वामी दयानन्द सरस्वती शुद्ध भारतीय दृष्टिकोण से समाज की कुरीतियो को दूर करना चाहते थे और उन्होने दासता मे बंधे भारत के लोगो मे आत्मसम्मान और आत्मविश्वास पैदा किया। उनका उद्देश्य किसी नये धर्म की स्थापना करना नहीं था बल्कि वैदिक धर्म की पुर्नस्थापना करना और हिन्दू समाज की बुराईयो को दूर करना था। स्वामी जी ने नारा दिया था— वेदो की ओर लौट चलो।' वेद शब्द को लेकर कुछ लोगो के मन मे भ्रम हो सकता है और कुछ लोगो को इसमें सम्प्रदायवाद की गन्ध आ सकती है। लेकिन ऐसा सोचना गलत है। मैंने पहले भी कहा है, और उसे यहा फिर से दुहराना चाहूगा कि मैं वेदो को किसी वर्ग, जाति या क्षेत्र का ग्रन्थ नहीं मानता बल्कि मैं इसे मानव जाति के पूर्वजो का ग्रन्थ मानता हूँ। विश्व मानव के पूर्वजो ने आज से हजारो साल पहले जो कुछ सोचा था, उसी का संग्रह वेदो मे है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने इसीलिए वेदो को शाश्वत माना। उनका कहना था कि साधारण जनो द्वारा रचे गये ग्रन्थ भ्रम फैलाने वाले तथा ऋषि मुनियो को बदनाम करने वाले हैं। जब कि वेद शाश्वत है। इसमे कोई दो मत नही कि वैदिक ऋषियो का दृष्टिकोण अत्यन्त प्रगतिशील और समाज सम्मत था। किन्तु बाद मे कुछ वर्गों द्वारा अपने स्वार्थ के लिए समाज मे अपने ऐकाधिकार के लिए वेदो की व्याख्याएँ की गई और इस तरह वेदो को प्रतिक्रियावादी स्वरूप समाज के सामने रखे जाने लगे। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपनी तीक्ष्ण आलोचना और तर्क शक्ति द्वारा इन प्रतिक्रियावादी व्याख्याओं की व्याख्या करके धर्म के सच्चे स्वरूप को प्रतिष्ठित किया।

मैं यहा युवको के सामने वेदो के सिर्फ तीन शब्द वाले उस वाक्य को रखना चाहूगा जिसमें मुझे वेदो का सार दिखाई देता है। वह वाक्य है—'एकैव मानुषि जाति।' अर्थात् केवल एक ही जाति है और वह है—मनुष्य जाति। देखने में यह वाक्य बहुत छोटा लगता है, और सुनाने में सरल भी मालूम पड़ता है लेकिन समझने की दृष्टि से यह बहुत बड़ी और गूढ़ बात है। यदि पूरे विश्व की एक ही जाति तो फिर जाति और धर्म के नाम पर टकराव की स्थिति ही कहा रह जाती है। हमारा चिन्तन हमारी धारणा हमारा विश्वास और हमारी संस्कृति वसुधैव कुटुम्बकम की रही है। हमने सारे संसार को परिवार माना है। परिवार में छोटी-मोटी टकरारें होती रहती हैं। समय-समय पर मतभेद पैदा होते रहते हैं इसके बावजूद उनको उसी तरह अलग नहीं किया जा सकता। जिस तरह कि बरतन में रखे हुए पानी को चाकू से काट कर अलग नही किया जा सकता मैं इसे ही वेदों की ओर लौट चलो की मूल अवधारणा मानता हू। और आज इस बात को समझने की बहुत जरूरत है। मेरी दृढ मान्यता है कि सच्चा धर्म प्रेमी कभी मानव विरोधी नही हो सकता। धर्म का सम्बन्ध कभी भी संकीर्णता से नहीं हो सकता। धर्म का सम्बन्ध उदारता से होता है, व्यापकता से होता है। एक ऐसी व्यापकता मे होता है जिसमें सम्पूर्ण विश्व समा जाता है। इसलिए कहा गया है 'उदार चरितानाम तु वसुधैव कुटुम्बकम्।'

ऋग्वेद में कहा है एकम सद विप्रा बहुधा वदन्ति। अर्थात् सत्य एक है लोग अलग-अलग तर्कों से रास्तो से उस तक पहुँचते हैं। मैं इसे सर्व धर्म भाव के रूप मे मानता हूँ। इसी प्रकार ऋग्वेद का वाक्य है—आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वत। अर्थात् अच्छे विचार सब तरह से आने दो। इसलिए ऋग्वेद ने आधुनिक विज्ञान और टक्नालाजी से नई बात सीखने की छूट दी है। परन्तु हमे अपने मूल मे जो शाश्वत वैदिक चिन्तन है उससे नहीं हटना' है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती विश्व मानव के समर्थक थे। इसलिए उन्होंने जाति प्रथा और छूआछूत जैसी सामाजिक बुराईयो का जमकर विरोध किया। वे वर्ण को एक राजनीति और सामाजिक व्यवस्था मानते थे जो समाज के कल्याण के लिए बनाई गई थी। यह भेद किसी धर्म या प्रकृति के द्वारा नहीं किया गया है। उनका मत था कि शूद्र परिवार मे पैदा होने वाला कोई व्यक्ति अपने गुण कर्म और स्वभाव से ब्राह्मण, क्षत्रीय या वैश्य हो सकता है। उन्होने इस बात का जमकर और कड़े शब्दो मे विरोध किया कि शूद्रो को वेद सुनाने और पढने का अधिकार नहीं है। उनका कहना था कि ज्ञान पर सबका जन्मसिद्ध अधिकार है और किसी को भी इससे वंचित नहीं किया जा सकता। स्वामी जी साफ देख रहे थे कि समाज की यह जाति व्यवस्था हमारी दासता और सामाजिक जड़ता का मुख्य कारण है उन्होने इस जड़ता पर तेज आघात किया। और इसका परिणाम यह हुआ कि समाज की बिखरी हुई शक्तियां राष्ट्रीय उद्देश्यो से सम्मोहित होकर एक दूसरे से जुड़ती चली गई जिसने आगे चलकर राष्ट्रीय आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई वस्तुत स्वामी दयानन्द सरस्वती की एक बड़ी देन यह भी रही है कि उन्होने युवको के मन में राष्ट्रीय गौरव का भाव भरा स्वदेश की चेतना जाग्रत की जिससे देश की आजादी जैसा महान कोई सम्पन्न हुआ बापू, तिलक, लाला लाजपतराय आदि नेताओ ने स्वामी दयानन्द सरस्वती के इस योगदान को स्वीकार किया है।

—प्रसाद के फूल से साभार

क्रान्तिकारी दयानन्द

सिंहासन हिल उठे, मठाधीशों ने भृकुटी तानी थी।
अतीत भारत में भी आई फिर से नई जवानी थी॥
मिटी हुई मर्यादा की, कीमत सबने पहिचानी थी।
दूर विधर्मी को करने की, उसने मन में ठानी थी॥
चमक उठा फिर सूर्य वेद का,वह सभ्यता पुरानी थी।
विद्या का था सूर्य सुधासम दयानन्द की वाणी थी॥१॥

टकारा गुजरात प्रान्त, मोरवी राज्य शुभ भूमि थी।
श्रीकृष्ण था नाम पिता का वह सन्तान अकेली थी॥
मातृ पिता से पढ़ते थे वह मेधा शक्ति अनोखी थी।
वेद शास्त्र उपनिषद् व्याकरण,उसकी यही कटारी थी॥
वेद-शास्त्रों की गाथायें उसको याद जबानी थी।
सज्जन वृन्दों के मुख से यह हमने सुनी कहानी थी॥
विद्या का था सूर्य सुधासम, दयानन्द की वाणी थी॥२॥

सरस्वती, मनु व्यास कणादिक,शंकर का था वह अवतार।
देख विधर्मी पुलकित होते, उसकी तर्क तीर के वार॥
तर्क-शास्त्र अरु वेद व्यूह की व्याख्या करना धर्म प्रचार।
रूढिवाद के दुर्ग तोडना वह थे उसके प्रिय खिलवाड॥
एकेश्वर वादी विचार में उसको पूर्ण आस्था थी।
सज्जन वृन्दों के मुख से यह हमने सुनी कहानी थी॥
विद्या का था सूर्य सुधासम, दयानन्द की वाणी थी॥३॥

आते ही यश कीर्ति छा गई, दयानन्द की दुनिया में।
ईसाई बने थे जो हिन्दू,फिर आर्य बने वे क्षिणभर में॥
ईसाई भी जान गये कोई तत्व नहीं है बाइबिल में।
शास्त्रार्थ में हार गये, थे जो फस गये कुरानों में॥
वेद धर्म ही सत्य सनातन सब की यही कहानी थी।
सज्जन वृन्दों के मुख से यह हमने सुनी कहानी थी।
विद्या का था सूर्य सुधासम दयानन्द की वाणी थी॥४॥

मथुरा जाकर विद्या पाई, विरजानन्द गुरु पाया।
होकर के विद्वान पूर्ण फिर दयानन्द काशी आया॥
वैदिक धर्म पुजारी को फिर रूढिवाद कैसे भाये।
वेदों का डंका बजा बजा,सब पन्थों के पथ नष्ट किये॥
पण्डों की मण्डली नाम सुन थर थर उससे कांपती थी।
सज्जन वृन्दों के मुख से यह हमने सुनी कहानी थी॥
विद्या का था सूर्य सुधासम, दयानन्द की वाणी थी॥५॥

काशी के विद्वान् धुरन्धर दयानन्द से परास्त हुये।
वेद पताका फहराते स्वामी जी हरिद्वार आये॥
कुछ दिवस वहीं पर रुक करके वेदों का प्रचार किया।
फिर ब्रटिश राज्य के आगे आ,गोवध बन्दी प्रस्ताव॥
व्याकुल हो देखा स्वामी ने, भारत माँ हुई बिरानी थी।
सज्जन लोगो के मुख से यह, हमने सुनी कहानी थी॥
विद्या के थे सूर्य सुधासम, दयानन्द की वाणी थी॥६॥

अनुनय विनय नहीं सुनता है, विकट शासकों की माया।
दयानन्द ने स्वतन्त्रता, पाने को शुभ संकल्प किया॥
आर्य जाति है श्रेष्ठ विश्व में ऐसा शुभ सन्देश दिया।
फिर चक्रवर्ति साम्राज्य बनाने,का सुन्दर आदेश किया॥
उस सन्यासी की यह इच्छा, भव रोग दूर करने की थी।
सज्जन लोगो के मुख से यह, हमने सुनी कहानी थी।
विद्या का था सूर्य सुधासम दयानन्द की वाणी थी॥७॥

हा उस महा जगत उपकारी को, था क्या स्वागत में आया।
मिला हला-हल का प्याला था, स्वामी जी ने पाया॥
ओ३म् नाम उच्चारण कर, झट पहुंची ईश्वर को माला।
बड़े प्रेम अरु हर्ष सहित, पी गये जहर का प्याला॥ओ३म्॥

महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचार

१. मनुष्यत्व

मनुष्य को सबसे यथायोग्य स्वात्मवत् सुख, दुःख हानि, लाभ में वर्त्तना श्रेष्ठ, अन्यथा वर्तना बुरा समझता हूँ।(मन्तव्य संख्या २१)

मनुष्य उसी को कहना कि—

(क) मननशील होकर

(ख) स्वात्मवत् अन्यों के सुख दुःख और हानि-लाभ को समझे।

(ग) अन्यायकारी बलवान् से भी न डरे। और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओं चाहे वे महानाथ, निर्बल और गुण रहित क्यों न हों की रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण सदा किया करे।

और

अधर्मी चाहे चक्रवर्ती, सनाथ, महाबलवान और गुणवान् भी हो, तथापि उसका नाश अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करे, अर्थात् जहाँ तक हो सके वहाँ तक अन्यायकारियों के बल की हानि

और

न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वदा किया करे।

इस काम में उसको चाहे कितना ही दारुण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही जावें परन्तु इस मनुष्यत्व धर्म से पृथक् कभी न होवे। इसमें श्रीमान् महाराज भर्तृहरि जी आदि ने श्लोक कहे हैं, उनका लिखना उपयुक्त समझकर लिखता हूँ—

> निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु
> लक्ष्मी समाविशतु यदि वा यथेष्टम्।
> अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा,
> न्याय्यात्पथ प्रविचलन्ति पदं न धीरा॥ भर्तृहरि०॥

(स्वमन्तव्यामन्तव्य से)

२. गोरक्षा

गोकृष्यादि रक्षिणी सभा के मिश्रित नियम

१६—सब सज्जनों को उचित है कि इस गोरक्षक धन आदि समुदाय पर स्वार्थ दृष्टि से हानि करना कभी मन से भी न विचारें। किन्तु यथाशक्ति इस व्यवहार की उन्नति में तन, मन धन से सदा परम प्रयत्न किया ही करें।

४०—इस सभा के सभासदों को यह बात अवश्य जाननी चाहिए कि जब गोआदि पशु रक्षित होके बढ़ेंगे, तब कृषि आदि कर्म और दुग्ध घृत आदि की वृद्धि होकर सब मनुष्यादि को विविध सुखलाभ अवश्य होगा। इसके बिना सबका हित सिद्ध होना सम्भव नहीं।

४१—एक गौ की रक्षा से लाखों मनुष्य आदि को लाभ पहुंचाना, और जिसके मारने से उतने ही की हानि होती है, ऐसे निकृष्ट कर्म के करने का आप्त विद्वान् कभी अच्छा नहीं समझेगा।

४२—इस सभा के जो-जो पशु प्रसूत होंगे उन उनका दूध एक मास तब उनके बछड़े को पिलाना और अधिक उसी पशु को अन्न के साथ खिला देना चाहिए। दूसरे मास में तीन स्तनों का दूध बछड़े को देना और एक भाग लेना चाहिए। तीसरे मास के आरम्भ से आधा दूह लेना और आधा बछड़े को तब तक दिया करे कि जब तक गौ देवें। (महर्षि दयानन्द)

नोट—बछड़े को इतना दूध देने से बछड़े बलवान् बैल या सांड होते हैं। बछड़िया को इतना दूध पिलाने से वह मां से अधिक दूध देने वाली गाय होती है।

—धर्मवीर विद्यालंकार
(धर्म विज्ञान मुक्ति)

आर्य जगत् के समाचार

आर्य गुरुकुल महाविद्यालय आबूपर्वत का उद्घाटन महोत्सव

सभी धर्म प्रेमी आर्य बन्धुओ को यह जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि कर ससार का कल्याण करने हेतु राजस्थान एव गुजरात प्रान्त का एक मात्र पर्वतीय स्थल ऋषि-मुनियो की तपो भूमि आबूपर्वत पर परमपिता परमात्मा की असीम कृपा से एकान्त, शान्त व शुद्ध वन मे गुरुकुल का निर्माण हुआ है। जिसके उद्घाटन (शुभारम्भ) समारोह का २६ से २८ मई १९९० ई० आयोजन किया गया है।

इस गुरुकुल में महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित आर्ष पाठविधि से वेद-वेदाग उपागो का पठन-पाठन होगा। गुरुकुल आबू पर्वत मे पांच कक्षा पढे लगभग ११ वर्ष की आयु के बच्चो को प्रवेश दिया जायेगा। शास्त्री व आचार्य पर्यन्त शिक्षा दी जावेगी गुरुकुल आबू पर्वत गुरुकुल झज्जर से सम्बन्धित है और गुरुकुल झज्जर को सरकार से मान्यता प्राप्त है।

यहा पर शिक्षा एव आवास नि शुल्क होगा तथा सभी ब्रह्मचारियो के भोजन व रहन-सहन मे समता होगी।

इस अवसर पर सामवेद पारायणा यज्ञ का आयोजन किया गया है। जो २१ मई से प्रारम्भ होगा व २८ मई पूर्णाहुति होगी।

गुरुकुल महा विद्यालय का वार्षिकोत्सव

ज्वालापुर (हरिद्वार) ३ मार्च। उत्तर भारत की प्रसिद्ध शिक्षण सस्था गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) का वार्षिक महोत्सव प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष ११ से १३ अप्रैल १९९० तक कुलभूमि मे धूमधाम से मनाने का निश्चय किया गया है। इस अवसर पर वेद आयुर्वेद, शिक्षा, आर्य आदि सम्मेलनो के साथ-साथ गुरुकुलीय ब्रह्मचारियो का आकर्षक व्यायाम प्रदर्शन तथा भव्य कविसम्मेलन भी आयोजित किया गया। महोत्सव का विशेष आकर्षण "दीक्षान्त समारोह" होगा। इस अवसर पर नव स्नातकों को उपाधियों से विभूषित किया जाएगा।

—डा० हरिगोपाल शास्त्री

वार्षिकोत्सव

—आर्यसमाज पालमगांव नई दिल्ली-११००४५ का १७वां वार्षिकोत्सव रविवार, १८ मार्च १९९० प्रात ८ बजे से दोपहर १ बजे तक मनाया गया।

हरस्वरूप आर्य, प्रधान		रतन श्रेष्ठ, मन्त्री

—आर्यसमाज असुरन रेलवे कालोनी वेद मन्दिर गोरखपुर का ४७ वां वार्षिकोत्सव २३-२-९० से २६-२-९० तक बड़े ही धूम-धाम से मनायागया। जिसमें आर्यजगत के सुप्रसिद्ध विद्वान श्री उत्तमचन्द जी शरर, श्री सत्यप्रिया शास्त्री, श्री इन्द्रदेवसिंह श्री ज्ञानप्रकाश शर्मा एव श्री सर्वेश्वर जी महाराज का राष्ट्र एकता पर ओजस्वी व्याख्यान हुआ जिसका जनता पर बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ा।

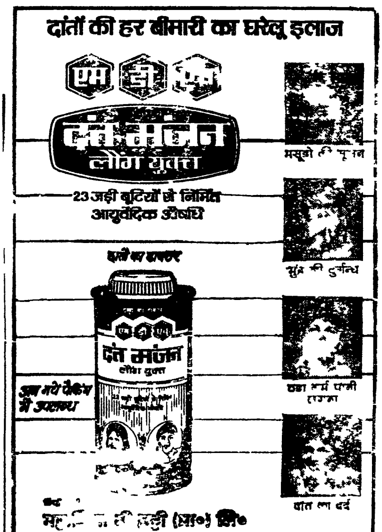
—बाबूलाल शर्मा, मन्त्री

—आर्यसमाज चौक, प्रयागका ११४वां वार्षिकोत्सव दिनांक ८ फरवरी से ११ फरवरी तक स्वरूपरानी पार्क, जीरो रोड में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। ८ फरवरीको अपराह्न ३ बजे एक विशाल शोभायात्रा निकाली गई। नित्य प्रातः ८ बजे से वैदिक यज्ञ सम्पन्न हुआ, अपराह्न २ बजे से सम्मेलन आयोजित किया गया। सायकाल ७ बजे खुला अधिवेशन हुआ, जिसमे मुनीश्वरानन्द जी महाराज जी, सन्यास आश्रम गाजियाबाद, श्री प्रशस्य मित्र शास्त्री एम० ए०, पी० एच० डी० रायबरेली, श्री डा० महिपालसिंह भजनोपदेशक बलिया, श्री पुन्नूलाल जी भजनोपदेशक प्रयाग के विद्वतापूर्ण, प्रवचन, भाषण और उपदेश हुए। सहस्रो की सख्या मे जनता ने उपदेशों से लाभान्वित होकर भूरि-भूरि प्रशसा की।

—पन्नालाल गुप्ता, मन्त्री

—आर्यसमाज राजामण्डी, आगरा ४१ वां वार्षिकोत्सव स्थान आर्यसमाज मन्दिर, राजामण्डी, आगरा सोमवार, मगलवार, दिनांक २६, २७ २८ फरवरी १९९० को समारोह पूर्वक मनाया गया।

—रमेशचन्द्र गुप्ता, मन्त्री



ऋषिबोधोत्सव

ज्ञानपुर (वाराणसी) विश्व भारती अनुसन्धान परिषद्, ज्ञानपुर में ऋषिबोधोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर प्रसिद्ध वैदिक विद्वान तथा गुरुकुल महाविद्यालय, हरिद्वार के कुलपति डा० कपिलदेव द्विवेदी ने कहा कि आज आवश्यकता इस बात की है कि लोगों को महर्षि दयानन्द के कर्मठ जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए तथा उनके आदर्शों का अनुसरण करना चाहिए। ऋषि दयानन्द ने जन जन में वेदों का सन्देश दिया तथा अन्ध-विश्वास पाखण्ड दूर करके ज्ञान के वास्तविक मार्ग को बतलाया। आज भौतिकता के इस युग में व्यक्ति शान्ति की खोज में भटक रहा है। डा० द्विवेदी ने कहा कि वैदिक धर्म द्वारा ही व्यक्ति को शान्ति प्राप्त हो सकती है।

—धर्मेन्दु द्विवेदी, मन्त्री

—आर्य समाज बुढलाडा की ओर से डी० ए० वी० मण्डल स्कूल में 'ऋषिबोधोत्सव' अति धूमधाम तथा जोश खरोश से मनाया गया। इस अवसर पर भारी संख्या में नागरिक नर नारी उत्सव समारोह में सम्मिलित हुए। श्री ओमप्रकाश जी आर्य वानप्रस्थी अधिष्ठाता आर्य वानप्रस्थ आश्रम, गुरुकुल तपोभूमि, बठिंडा जो जिला आर्य सभा बठिंडा के मन्त्री भी हैं, के ब्रह्मत्व में हवन यज्ञ से कार्यक्रम आरम्भ हुआ। हवन यज्ञ के पश्चात स्कूलों के विद्यार्थियों के बीच भाषण प्रतियोगिता हुई।

—आर्यसमाज आमगांव में ऋषिबोधोत्सव पर्व बड़े धूम धाम से मनाया गया। बृहद्यज्ञ के पश्चात श्रीमती शालीनी देवी वानप्रस्थी ने वेदपाठ किया। श्री यशपाल जी जयशाली प्रधान ने ऋषि जीवनी पर प्रकाश डाला श्री नारायणलाल आर्य एवं कामिनी देवी वानप्रस्थी के प्रवचन हुये श्री चि० डा० सुखवली (आर्य) गुरुजी ने अपने प्रवचन में मानव जीवन का लक्ष्य एवं आर्य समाज के प्रति अपने कर्तव्य पर प्रकाश डालकर स्वरचित ऋषि जीवनी मराठी भाषा में बताई सुनकर श्रोतागण बड़े प्रसन्न हुये।

—चि० डा० सुखवली आर्य गुरुजी, मन्त्री

—टंकारा। २४-२-९० महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा के तत्वा-वधान में ऋषि बोधोत्सव व ट्रस्ट का ३२ वां वार्षिकोत्सव २२ से २४ फरवरी तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। उत्सव में देश-विदेश से ५००० से भी अधिक लोगों की उपस्थिति आर्य जनता की श्रद्धा की साक्षी है। उत्सव में उपस्थित विद्वानों में गुरुकुल कांगड़ी के उपकुलपति आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार, महात्मा आर्य भिक्षु, मन्त्री श्री रामनाथ सहगल, श्री ओंकार नाथ आर्य, भजनोपदेशक श्री विजय आनन्द प्रि० आर्य वीर चड्ढा, प्रि० जीवन चड्ढा, श्रीमती स्नेहलता हांडा, श्रीमती शिवराजवती, श्रीमती ललिता देवी आचार्य ओमप्रकाश शास्त्री, पं० देवव्रत शास्त्री श्रीमती कमलेश सहगल व टंकारा उपदेशक विद्यालय के अनेकों स्नातक देश के दूर दूर के क्षेत्रों से अपने परमगुरु दयानन्द को श्रद्धांजलि देने पहुंचे। पूरी व्यवस्था प्रबन्ध डा० मुन्शी व उनके साथियों ने की।

इस वर्ष भी सूरत के उद्योगपति महर्षि भक्त श्री जयदेव भाई आर्य ने सब के भोजन की व्यवस्था अपनी ओर से ही की। वे सूरत से ही अपने परिवार के साथ टंकारा आ जाते हैं और उत्सव में पधारे लोगों को पंजाबी गुजराती, बंगाली मराठी भोजनों का आस्वाद कराके सब वर्गों पधारे हुए ऋषि भक्तों को आनन्दित कर रहे थे। प्रातः काल दूध, चाय, काफी और नाश्ता के अतिरिक्त दोनों समय भोजन की सुचारु व्यवस्था उनका लक्ष्य था।

—रामनाथ सहगल मन्त्री

—आर्य समाज शिक्षा सभा अजमेर द्वारा संचालित डी ए वी कालेज, डी ए वी सी० स० मा० विद्यालय विरजानन्द सी० उ० मा० विद्यालय, आर्य कन्या मा० विद्यालय, सूर्यदेव शर्मा उ० मा० विद्यालय, सुभानमरा आर्य कन्या विद्यालय, डी ए वी प्राथमिक विद्यालय, विरजानन्द प्राथ० विद्यालय आदि अनेक शिक्षण संस्थाओं में आचार्य गोविन्दसिंह जी की अध्यक्षता में ऋषिबोध दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया।

—इन्द्रसिंह चौहान, कार्यालय प्रभारी



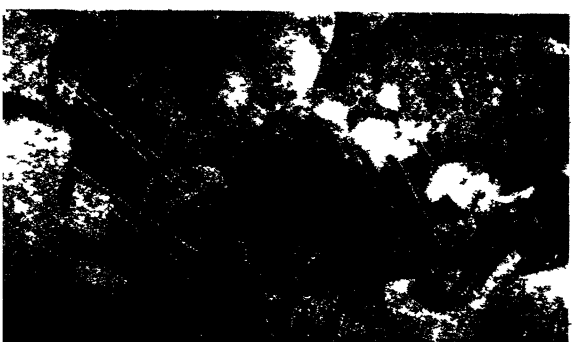
वनवासी आर्य महासम्मेलन सलकिया मे शुद्धि समारोह के दृश्य

●

नीचे बैठे श्रीमती ईश्वररानी महता श्रीमती प्रमलता खन्ना। श्री वेदव्रत महता, श्री पृथ्वीराज शास्त्री श्री बालदिवाकर हंस, स्वामी आनन्द बोध सरस्वती श्री दीवानचन्द पलता खड़े हैं।



शोभा यात्रा में जीप पर स्वामी आनन्दबोध सरस्वती एवं अन्य आर्य जन।



सलकिया क्षेत्र की शुद्धि मे यज्ञोपवीत धारण करते हुए वनवासी बन्धु।



शुद्धि के उपरान्त वनवासी बन्धुओं के साथ स्वामी आनन्दबोध सरस्वती।



लैलूंगा गांव में शोभा यात्रा का दृश्य।



मुड़ा गांव के युवक आर्य नेताओं की प्रतिक्षा करते हुए।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वेदामृत

पुत्रादि को यथायोग्य धन बांटें

प्रजाभ्य पुष्टि विभजन्त आसते, रयिमिव पृष्ठ प्रभवन्तमायते ।
असिन्वन् दंष्ट्रै पितुरत्ति भोजन, यस्ताकृणो प्रथम सास्युक्थ्य ।।
ऋग्० २-१३-४ ।।

हिन्दी अर्थ—हे परमात्मन् ! अपनी सन्तानो को यथायोग्य धन का विभाजन करने वाले गृहस्थ (सुखपूर्वक अपने घरो मे) रहते हैं, जैसे अतिथि को पोषक और धारक धन (देकर प्रसन्न रहते हैं)। अपने आपको पारिवारिक सम्पत्ति में बद्ध न रखने वाला व्यक्ति पितृरूप द्यु लोक से प्राप्त भोजन को दातो से खाता है। जिसने सर्वप्रथम ये नियम बनाए हैं, वह इन्द्र स्तुत्य है। —डा० कपिलदेव द्विवेदी

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१ दयानन्दाब्द १६६ दूरभाष । ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे
वर्ष २६ अंक ११] चैत्र शु० १४ स० २०४७ ८ अप्रैल १९९०

राष्ट्र विरोधी ताकतों के साथ सख्त कार्रवाई की मांग

रूसी विद्वान् पियोतर वारान्निकोव का स्वागत

आर्यसमाज दीवानहाल का १०५वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

१ अप्रैल १९९० को आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली के १०५वे वार्षिकोत्सव के समापन समारोह पर लालकिला मैदान मे सायकाल श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे राष्ट्ररक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया। स्वामी जी ने पजाब तथा कश्मीर की विषम परिस्थितियो पर गहरा क्षोभ प्रकट करते हुए सरकार से अपनी ढुलमुल नीति का त्याग करके तुरन्त कडी कारवाई करने की माग की। उन्होने कहा कश्मीर से हिन्दू और सिक्ख भाग रहे हैं, उनकी सम्पत्तिया जब्त हो रही हैं। देश द्रोही उग्रवादियो के सामने सरकारी तन्त्र निर्बल लगने लगा है। पाकिस्तान भारत पर अघोषित युद्ध कर चुका है। अतः केन्द्र सरकार को अपनी नरम नीति को त्यागकर कडी कारवाई करनी चाहिए। स्वामी जी ने गृहमन्त्री मुफ्ती मोहम्मद सईद के इस वक्तव्य की भी कडी आलोचना की जिसमे उन्होने कहा था कि कश्मीर की समस्या साम्प्रदायिक नही है। यदि ऐसा है तो वहा से केवल हिन्दू और सिखो का ही पलायन क्यो हो रहा है ?

इस अवसर पर दैनिक हिन्दुस्तान के समाचार सम्पादक श्री विश्वमित्र उपाध्याय प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव और सासद कपिलदेव शास्त्री ने भी राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के प्रति खतरे को देखते हुए देशवासियो से एकजुट होकर राष्ट्र रक्षा के लिए तैयार रहने की अपील की।

रूसी विद्वान का सम्मान

सम्मेलन मे भारतीय सभ्यता व हिन्दी प्रमी सोवियत विद्वान पियोतर वारान्निकोव का आर्य समाज की ओर से स्वागत किया गया। स्वामी आनन्दबोध जी ने श्री वारान्निकोव को चारो वेदो का हिन्दी भाष्य तथा आर्य समाज का साहित्य भेट किया। उन्होने श्री पियोतर की भारतीय संस्कृति व दर्शन के प्रति असाधारण रुचि तथा हिन्दी भाषा के गूढ ज्ञान की काफी प्रशसा की। प० वन्दे मातरम् जी ने अतिथि को स्पाट लाइट आन ट्रूथ ग्रन्थ भेंट किया।



आर्यसमाज दीवानहाल के १०५ वें उत्सव पर स्वामी आनन्दबोध सरस्वती रूसी विद्वान श्री पियोतर वारान्निकोव का स्वागत तथा वैदिक साहित्य भेंट करते हुए।

पियोतर वारान्निकोव ने अपने विचार धारा प्रवाह हिन्दी भाषणमे आर्यसमाज तथा भारत की आजादी के इतिहास का

(शेष पृष्ठ १२ पर)

सम्पादक—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

हैदराबाद के लौहपुरुष युवक हृदय सम्राट पं नरेन्द्र

लक्ष्मण आर्य, 'मन्त्री', 'विद्यावाचस्पति' प्रधान, आर्य समाज, वरंगल, (आन्ध्रप्रदेश)

हैदराबाद आर्य जगत के एक वरिष्ट आर्य नेता एवं हैदराबाद के लौह पुरुष, युवक हृदय सम्राट पंडित नरेन्द्र जी (स्वामी सोमानन्द सरस्वती) निष्कलंक देशभक्त, स्वातन्त्र्य सेनानी, त्यागमूर्ति, धर्म तथा राजनीतिक के धुरी थे। आप उच्चकोटी के सरल, सुबोध आकर्षक एवं तर्क युक्त शैली के लोकप्रिय निडर तथा स्पष्ट वक्ता थे। निजाम के काल मे आप इत्तहादुल मुसलमिन के नेता नवाब बहादूरयारजंग के जवाब थे। आपके भाषणो मे जादू का प्रभाव था। आप मुर्दों मे जान फूकते थे। युवको मे स्वाभिमान एवं देशभक्ति जगाते थे। आपके भाषण युवको मे उत्साह भरते थे और अत्याचारो से पीडत युवक जीने मरने को तय्यार हो जाते थे। आपके भाषणो से प्रभावित होकर पं० जवाहरलाल नेहरू जी ने स्वयं कहा था—'जनता पर कन्ट्रोल करने मे छोटासा यह व्यक्तित्व बड़ाही प्रभावशाली है।'

पण्डित नरेन्द्र जी ने अपने साथियो सहित बहादुरयारजंग द्वारा चलाये जा रहे तबलीक कार्यों को रोक दिया और शुद्धि का कार्य प्रारम्भ कर दिया। एक ओर बहादुरयारजंग घूम घाम कर भाषणो और अन्य प्रलोभनो द्वारा मुसलमानो को भड़काते और हिन्दुओ को आतंकित कराते थे तो दूसरी ओर पण्डित जी उन्ही स्थानों पर जाकर उनके द्वारा बनाये गये वातावरण को समाप्त करते थे। आपके इन कार्यों को देखकर निजाम की हुकूमत परेशान हो गयी थी और धर्मान्ध मुसलमान घबरा गये थे। पण्डित जी के भाषणो पर प्रतिबन्ध लगाये गये। इतना ही नहीं उन्हें कई बार जेल भेजा गया और जेल मे अमानुषिक अत्याचार किये गये। यहां तक कि एक बार पण्डित जी हैदराबाद राज्य के अन्तर्गत 'महबूबनगर' 'मन्ननूर' (कालापानी जेल) भी भेज दिया गया। वहां आप एक वर्ष पांच महीने, सात दिन नजर बन्द रहकर भी अपने पत्रो द्वारा देश के नाम सन्देश देने का प्रयास करते रहे। हर्ष की बात है कि इसके पुनीत स्मारक मे 'मन्नूर' के निकट आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश द्वारा एक भव्य भवन का निर्माण किया गया और उसका उद्‌घाटन १३, १४ तथा १५ अप्रैल ९० मे होने की सम्भावना है। इस स्मारक भवन आदिवासियो के लिये विद्यालय, चिकित्सालय की व्यवस्था की जाने की भी योजना है। १९४५ मे गुलबर्गा आर्य सम्मेलन के अवसर पर अत्याचारी पुलिस अधिकारियो द्वारा पण्डितजी तथा दक्षिण केसरी विनायकराव जी विद्यालंकार आदि को पुलिस स्टेशन बुलाकर उनकी मार-पीट की गयी, जिससे पण्डित जी मूर्छित हो गये और पांव की हड्डी टूट गई।

आर्य समाज के गौरवमय इतिहास मे हैदराबाद राज्य का आर्य सत्याग्रह संग्राम १९३८-३९ अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है। इस संग्राम मे आर्य समाज की विजय हुई है। इस घटना चक्र की सफलता का श्रेय महर्षि दयानन्द मानस-पुत्र पण्डित नरेन्द्र जी को ही था। क्योंकि इस सत्याग्रह मे आपने अद्‌भुत कार्य कुशलता से आन्दोलन का संचालन किया था। हैदराबाद राज्य मे आर्य समाजो की स्थापना से लेकर आर्यजनो को जागृत करना, धर्म के लिये बलिदान होने की प्रेरणा तथा सत्याग्रह आंदोलन की भूमिका तय्यार करना एक विलक्षण प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्ति से ही सम्भव था।

पण्डित जी सदा हमारे इतने निकट रहे कि आपकी खूबियां हम परख ही नहीं सकते। आपकी परख तो दूर रहने वाले अच्छी तरह कर सकते हैं। मुझे तो केवल पण्डित जी के व्यक्तित्व को देख कर यजुर्वेद का मन्त्र स्मरण हो आता है।

> ओं प्रेता जयता नर इन्द्रो व: शर्म यच्छतु।
>
> उग्रा व: सन्तु बाहवो अनाधृष्या यथासथ॥

हे वीर नेता पुरुषो आगे बढ़ो, विजय प्राप्त करो। ईश्वर का आशीर्वाद तुम्हारे साथ है। तुम्हारी भुजायें शक्तिशाली हों, जिससे तुम लोग शत्रु से कभी परास्त न हो सको।

(पं० नरेन्द्र जी का जन्म १५ अप्रैल १९०७ की रामनवमी के पुनीत पर्व के दिन हुआ था तथा निधन २४ सितम्बर १९७६ को हुआ था। इस वर्ष ३-४-९० मंगलवार की रामनवमी के पुनीत पर्व के दिन उनका पुनीत जन्म दिन को दृष्टि मे रखकर उनकी पावन स्मृति में यह लेख लिखा गया है।)

—सम्पादक

सचमुच आपके जीवन-क्रम को देखते हुए कहा जा सकता है कि आपके साथ यह मन्त्र सार्थक होता है। आपकी राणा प्रताप की सी देश भक्ति, वीर शिवाजी की सी निर्भीकता पंजाब केसरी की सी वक्तृत्व शक्ति बन्दा बैरागी सी कष्ट सहिष्णुता देश की उन्नति पथ पर आरूढ़ कराने में और भी अधिक सहायक सिद्ध हुई। जीवन एक पर्वतारोहण है। कठिन से कठिन शृंखलायें बाधक रूप मे सामने आती है, पर यथार्थ आनन्द प्राप्त करता है। एक अंग्रेजी कवि ने कहा भी है:—

> "Life is an uphill Journey.
>
> And at the top lies glory"

परन्तु ऐसे दुर्गम मार्गों मे अधिकतर यात्री हार मान कर बैठ जाते हैं और जो हिम्मत करता है बाजी मार ले जाता है।

पण्डित जी हमारे दिलो पर अनेक यादगार छाप गये हैं जो कभी मिट नही सकेंगी। इन शब्दों के साथ उनकी पावन स्मृति मे सजल नयनो से श्रद्धा सुमन समर्पित करता हूं।

विशेष सूचना

श्री नेत्रपाल शास्त्री पुरोहित आर्यसमाज/हब्बा कदल श्रीनगर कश्मीर मे परिवार सहित कश्मीर छोड़ चुके हैं और इस समय शरणार्थी कैम्प में रह रहे हैं। अब उनके साथ पत्र-व्यवहार करने का पता है नेत्रपाल शास्त्री द्वारा श्री देवेन्द्र कुमार शास्त्री आर्यसमाज मन्दिर, रमेशनगर नई देहली-१५

—सच्चिदानन्द शास्त्री

धर्म धुन के हिमालय परमहंस स्वामी दर्शनानन्दजी महाराज

—प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु' वेद सदन, अबोहर

वीतराग परमहंस स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उनके चरित्र व सफलताओं का ठीक-ठीक मूल्यांकन करने की आवश्यकता है। महर्षि दयानन्द जी के पश्चात आर्य समाज की प्रथम पीढ़ी के विद्वानो मे स्वामी जी की गणना की जाती है। ऋषि के पश्चात जिस वैदिक विद्वान के लिखा ज्ञान की देश विदेश में विशेष धूम मची, वे थे श्री प० गुरुदत्त जी विद्यार्थी परन्तु वे तो बहुत छोटी आयु में ही चल बसे। वे चाहते थे कि शीघ्र से शीघ्र और अधिक से अधिक वैदिक धर्म की सेवा करू। इस धुन मे इतना कार्य किया कि उनका गठीला गात घिस गया। वे राज रोग क्षय रोग के शिकार हो गये।

प० गुरुदत्त जी के पश्चात उसी काल में जिन विद्वानो की देश भर मे सर्वाधिक धूम मची थे दो 'राम' थे। वे दो 'राम' कौन थे? एक तो थे रक्तसाक्षी धर्मवीर लेखराम और दूसरे थे धर्म धुन के हिमालय प० कृपाराम जी जो बाद में स्वामी दर्शनानन्द के नाम से विख्यात हुए। इन दोनो ने वैदिक धर्म की कैसी धूम मचाई इसको वही व्यक्ति ठीक-ठीक जान सकता है जिसने उस युग की पत्र-पत्रिकाओ का ध्यान पूर्वक पारायण किया है। इन पंक्तियो का लेखक उन भाग्य शाली लोगो मे से एक है जिसने उस युग की पत्रिकाओ का इस दृष्टि से सूक्ष्म व व्यापक अध्ययन किया है। प० लेखराम जी की चर्चा को यही विराम देते हुए हम प० कृपाराम जी की सेवाओ की ही अब चर्चा करेंगे।

उस काल के पत्रो में यह छपता ही रहता था कि प० कृपाराम जी जहां भी हो, हमारे उत्सव की तिथियां नोट कर लें और अवश्य पधारें या कोई आर्य समाजी भाई हमे पण्डित जी का पता दें कि वे कहां हैं। उनके प्रति इतनी श्रद्धा का कारण उनकी योग्यता तथा तप त्याग व धर्मानुराग था।

देसी राज्यो में आर्य समाज का कड़ा विरोध होता था परन्तु प० कृपाराम के धर्मभाव का यह चमत्कार देखिए कि भरतपुर राज्य की सारी (राज्य परिषद) के सब सदस्य उनके व्याख्यान सुनने के लिए आए।

बाल्यकाल से ही दान व परोपकार की प्रवृत्ति थी। अफगानिस्तान के लोग ऊंटो पर बादाम आदि बेचने आया करते थे। कृपाराम की नगरी मे भी एक बार अफगान बादाम बेचने आ गए। सम्पन्न परिवार मे जन्मे इस लड़के ने बादामो का एक ऊंट ही खरीद लिया। वे लोग भी चकित कि यह कैसा सेठ मिला कि एक ऊंट खरीद रहा है। घर के आंगन मे बादाम गिराने के लिए कहा। उन्होने बादाम उनके घर मे गिरा दिए। वे पैसे लेकर चले गए।

प० राम प्रताप जी घर आए तो आंगन मे ढेरो क्विंटल बादाम देखकर आश्चर्य से अपनी पत्नी से पूछा, "ये बादाम कहां से आ गये?"

उन्होने कहा, 'कृपाराम ने लिए हैं।"

पण्डित रामप्रताप जी ने पूछा, 'इतने बादाम क्या करने हैं?" उनकी श्रीमती ने कहा, "यह तो पुत्र से पूछिए।"

थोडी देर के पश्चात कृपाराम घर में आए तो पिता जी ने पूछा, "बेटे इतने बादाम क्या करने हैं?"

कृपाराम बोले, "खाएंगे"।

पिताजी ने कहा, 'इतने बादाम हम खा सकेंगे क्या?"

कृपाराम सहज स्वभाव से बोले, "तो मुहल्ले मे बांट देंगे।" और सचमुच बादाम बांटे गए। ऐसा था उदार हृदय प० कृपाराम जी की पूज्या माता जी के सुपुत्र का।

आर्य समाज के इतिहास में जितनी पत्र पत्रिकाएं प० कृपाराम ने निकालीं, इतनी और किसी भी व्यक्ति ने नहीं निकालीं। प० कृपाराम जी जहां कहीं भी आसन जमा देते वहीं से पत्रिका निकाल देते, वहीं मुद्रणालय स्थापित कर देते और वहीं से ट्रैक्टो का प्रकाशन होने लगता।

एक ही समय में एक से अधिक पत्रिकाएं चलाते रहे। वैदिक धर्म साप्ताहिक के साथ आर्य सिद्धान्त मासिक भी चलता रहा। वैदिक फिलासफी के साथ, महाविद्यालय समाचार व आर्य सिद्धांत मासिक निकलता था। कार्य करने की इतनी क्षमता और सेवा के लिए इतना अदम्य उत्साह।

उनका साहित्य सृजन की यह लग्न कि प्रत्येक विषय पर ट्रैक्ट लिख दिया। आचार्य श्री राम जी ने ७३ ट्रैक्टो की सूची दी है। आचार्य जगदीश जी ने लिखा है कि २५० ट्रैक्ट छापे। मैंने अपने नूतन ग्रन्थ (प्रेस में है) में दिया है कि ३०० ट्रैक्ट लिखे। लगभग दो सौ की तो मैंने सूची भी दे दी है। स्वामी दर्शनानन्द जी ने प० नृसिंह जी शर्मा के अनुसार पांच हजार पृष्ठ का साहित्य दिया है। मेरा मत है कि छः हजार से भी ऊपर पृष्ठ उनके साहित्य के बनते हैं। उनके सम्पादकीय लेख भी तो गिनती में आने चाहिए। उनका विषय कहानी उपन्यास तो था नहीं। दर्शन विषय पर लिखना कोई बच्चो का खेल तो है नहीं।

चार उपन्यास भी स्वामी जी ने लिखे। इनका विषय भी दर्शन ही तो है। उनके साहित्य सृजन का सक्रिय काल २५ वर्ष से कम बनता है। इतने स्वल्प काल घूमते फिरते, शास्त्रार्थ करते, संस्थाएं चलाते और परोपकार के अनेक कार्य करते हुए श्री महाराज ने इतना कुछ लिख दिया। कितना तप है।

पिता का धन लुटाया, माता का धन भी फूंक दिया और दादा की सम्पदा भी परोपकार वेद प्रचार मे लगा दी। कैसा घर फूंक तमाशा है। सन्यासी बन गए फिर भी जगरावां से कुल के लोग उदारता पूर्वक उनके सब कार्यों मे निरन्तर धन भेजते रहे। उस युग मे पांच रुपये का दान भी बहुत बड़ा था और प० कर्त्ताराम रईस जगरांवा कभी-कभी प्रतिमास भी २५) रु० (पचास रु०) महाविद्यालय भेजते रहे। यही प० कर्त्ताराम (प० कृपाराम जी के भाई) आगे चलकर स्वामी ब्रह्मानन्द बन गए। कमाल तो यह है कि कुल के लोगो को भी उनके घर फूंक तमाशे पर कोई रोष नहीं था। उलटे वे सहयोगी बने।

प० लेखराम जी के सगे चाचा प० गण्डाराम जी भी श्री महाराज के सहयोगी थे। वे गुरुकुल चोहा भक्तां के मन्त्री भी रहे। आपने लिखा है कि स्वामी जी से पूछा गया कि आप जहां जाते हैं गुरुकुल खोल देते हैं, गुरुकुल चलेगा कैसे? स्वामी जी ने दृढ़ता पूर्वक कहा, "ईश्वर चलायगा"। इतना ईश्वर विश्वासी साधु! गुरुकुल का भण्डार खाली है और यह कहा जा रहा है कि भोजन की घण्टी समय पर बजा दो। घण्टी बजी और पका-पकाया माल आ गया। यह है योग। योग तो मिलेगा ही।

गुरुकुल मे लकड़ी नहीं। चूल्हा कैसे तपायें? कि महाराज को सामने एक बहुत बड़ा मेज दिखाई दिया बोले, यह लकड़ी ही तो है। तोड़ो और जला दो। चेतन के लिए चिन्ता करो। जड़ का चेतन के सामने क्या महत्व? ब्रह्मचारियो का जीवन अधिक मूल्यवान है।

ऋषि के पश्चात काशी मे सबसे प्रथम शास्त्रार्थ करने वाला आर्य विद्वान प० कृपाराम ही तो था। मैंने तत्कालीन पत्रो से उस शास्त्रार्थ का कुछ विवरण खोज निकाला है। यह विवरण हमारे ग्रन्थ मे पाठक पढ़ेंगे। पेशावर से लेकर हैदराबाद दक्षिण तक वैदिक धर्म का डंका बजाने वाले इस पूज्य विप्र का, इस सन्यासी का सारा जीवन बड़ा विचित्र है।

चारपाई पर पड़े पड़े शास्त्रार्थ करने वाले इस साधु को हमारा शत शत प्रणाम! देह त्याग से छः घण्टे पूर्व भी शास्त्रार्थ का बिगुल बजाने वाले विप्र मुनि का वन्द अभिनन्दन। दर्जनों मौलवियो, पण्डितो व नास्तिकों से अकेले ही टक्कर लेने वाले इसी गुणी ज्ञानी को हम भावभरित हृदय से श्रद्धांजलि भेंट करते हैं।

जिसको अपने अपमान का तनिक भी ध्यान न था परन्तु किसी भी विद्वान का अपमान जिसके लिए असह्य था। भारत के दरिद्र बच्चों को चरित्रवान, गुणवान व विद्वान बनाने के लिए जो तड़प हृदय रखता था।

जातिवाद, प्रान्तवाद आदि की कड़ियो को एकदम तोड़ देने वाले सच्चे ऋषि भक्त का व्यक्तित्व कैसा महान था। पंजाब में जन्मा यह गुरु पुरुष उत्तर प्रदेश के लिए समर्पित हो गया। जहां गया, वहीं पूजा गया।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

अन्तर्वेदना

काशी है ऋषि जन्म भूमि निर्वाण भूमि से वह आवाज,
आती है टंकारा और अजमेर नगर से यह आवाज।
ऋषि के स्वप्न हुए नहिं पूरे उन्हें पूर्ण कर आर्य समाज।।

भवनों का निर्माण हो रहा मानव का न हुआ निर्माण,
शरीर तो कितना सुन्दर है किन्तु नहीं है उसमें प्राण।
हमें कहां जाना था और अब कहां जा रहे हैं हम आज।।

प्रचार के इस युग में ठण्डा पड़ा एक दम वेद प्रचार।
विरोधियों के सम्मुख हमने डाल दिये अपने हथियार।
कभी टूट पड़ते थे हम इन विरोधियों पर बन कर बाज।।

चपरासी से कम वेतन पाता उपदेशक विद्वान,
उपदेशक बनना न चाहती है उपदेशक की सन्तान।
छोड़ गये मैदान गुरु ही कौन सवारे बिगड़े काम।।

खुली बहुती शिक्षा संस्थायें हैं अधिकांश किन्तु बेकार,
बनते कहां किसी बालक के वहां आर्य आचार विचार।
पब्लिक स्कूलो मे आया फिर से अंग्रेजी का राज।।

चार दशक से अधिक हुए स्वाधीन नहीं हिन्दी अपनाई,
शासन मे घर मे दैनिक व्यवहारो मे अंग्रेजी छाई।
हिन्दी अब तक भी न राष्ट्रभाषा के पद पर हो सकी विराज।।

चले गये अंग्रेज यहां से किन्तु न अंग्रेजियत गई,
अंग्रेजी के प्रवाह मे बह गई देश की प्रथा नई।
रंग ढंग अंग्रेजी सारे अंग्रेजी बन गये मिजाज।।

रीत रिवाज भाषा व भेष सब अंग्रेजी करके अपने,
रूप रंग से भारतीय दिल दिमाग से अंग्रेज बने।
मैकाले के मानस पुत्र कहाने में है इनको नाज।।

माता पिता और चाचा चाची कहना भी हम भूल गये,
मम्मी पप्पा अंकल आन्टी सम्बोधन आ गये नये।
सारे रिश्तो में भी हिन्दी है अंग्रेजी की मोहताज।।

हुआ आसुरी और तामसी भोजन अण्डे मांस शराब,
रही न सात्विक बुद्धि हो गई भ्रष्ट राक्षसी और खराब।
भौतिक विचार धारा से मिल पैदा हुई कोढ़ मे खाज।।

वीडियो ब्लैक व व्हाइट ह्यूमर का बढ़ रहा प्रचार,
युवक युवतियों के जिससे सब बिगड़ गये आचार विचार।
देश धर्म का और बड़ो का करता कोई नहीं लिहाज।।

बुद्धि भ्रमित हो गई इस कदर रहा न जड़ चेतन का ज्ञान,
पर्वत नदी पेड़ पशु पक्षी मूर्ख पूज रहा इन्सान।
कृष्णचन्द्र के बजाय ब्रज में पूजा जाता है गिरिराज।।

विवाह का वह पवित्र बन्धन आज हो गया है व्यापार,
दहेज की ज्वाला मे जलती करें नारियां हाहाकार।
घुन की तरह खा रहे हमको ये सामाजिक रीति रिवाज।।

मिट न सका अब तलक देश से सती प्रथा का भी अभिशाप,
है कानून न बन्द हो चुका कब का यह सामाजिक पाप।
रूढ़ि उपासक फिर भी अपनी हरकत से आते नहीं बाज।।

जात पांत के गढ़ के ऊपर हुई न अब तक गोलाबारी,
और नष्ट हो सकी न अब तक छुआछात की भी बीमारी।
शासन बदल गया भारत का लेकिन बदला नहीं समाज।।

हैं सीमा को पार कर गये काला बाजार रिश्वत खोरी,
हैं दिन न दिन बढ़ रहे बढ़ते बलात्कार और सीनाजोरी।
राम तो आ गया देश में लेकिन आया नहीं सुराज।।

पाखण्डो का जोर बढ़ रहा रहे घूम कितने भगवान,
सज्जन सन्त मौन हैं मने होकर नाच रहे शैतान।
इन धूर्तों का सिवा तुम्हारे और करेगा कौन इलाज।।

कुरीतियां रूढ़ियां अन्ध विश्वास रहे हमको ललकार,
अपनी सारी शक्ति लगा कर इनके ऊपर करो प्रहार।
टूट पड़ो इन पर तुम ऐसे ज्यो चिड़ियो के ऊपर बाज।।

आर्य नारियो की लज्जा गौरव गरिमा आदर्श विचार,
[illegible] यही हमारी कन्यायें [illegible]।
बनी सिनेमा और तमाशा जो नारी थी घर की लाज।।

टीवी और सिनेमा करते अश्लीलता का खुला प्रचार,
धर्म निरपेक्ष बना कर दिया जिसने बढ़ा खुला व्यभिचार।
युवक बनें किस तरह सबसी सच्चरित्र धार्मिक जवान।।

ऋषि ने गोकरुणानिधि लिखकर गौवध बन्दी आन्दोलन,
कहा देश यह नहीं बचेगा नष्ट हो गया जो गौधन।
दूध मिलेगा नहीं बैल बिन पैदा होगा नहीं अनाज।।

दयानन्द गान्धी व विनोबा के हम भूल गये उपदेश,
गौहत्या नहीं बन्द कर सका आज तलक यह भारत देश।
नहीं विदेशी नहीं विधर्मी है भारत मे अपना स्वराज।।

कर्तव्यो को भूले नेता याद रहे उनको अधिकार,
पुत्रेष्णा वित्तेष्णा लोकेष्णा के वे हो गये शिकार।
बात सत्य है इकदम चाहे कोई खुश हो या नाराज।।

जगह जगह चिपके बैठे हैं कुर्सी से मन्त्री व प्रधान,
बन्द एक दम कर रक्खा है नये सदस्यो का अभियान।
प्रजातन्त्र की बातें करते अधिनायक वादी अन्दाज।।

धर्म वीर शास्त्रार्थ महारथी वे वेदो के विद्वान,
आचरण और आचरण में डूब गई उनकी सन्तान।
त्याग तपस्या छोड़ सब रहे विलासिता के जो सब साज।।

जीवन में उतरे नहीं जब तक क्या कर सकते हैं व्याख्यान,
धर्म करोगे नहीं अगर तो क्या कर सकता कोरा ज्ञान।
सदाचार के बिना व्यर्थ है सन्ध्या पूजा और नमाज।।

आर्य जाति के वीर सपूतो जो तुम जाग सके नहीं आज,
आपस के झगड़े और विच्छिन्नता को अगर सके नहीं त्याग।
बीच धार मे डूब जायगा तो यह आर्य समाज का जहाज।।

तुम्हें शपथ है दयानन्द की लेकर वेद पढ़ो आगे,
अगर बनाओगे तो विश्वम सोचन आर्य जगत सागे।
रक्खो याद बनाना है भारत तुमको जग का सरताज।।

ऋषि ने जिस उद्देश के लिये आहुति दी निज जीवन की,
तुम भी उस आदर्श को लिये आहुति दो तन मन धन की।
नेता और आदर्श हमारे हैं ऋषि दयानन्द महाराज।।

लेखक—ओंकारसिंह आर्य, बरसाना मथुरा

अनेक खूंखार आतंकवादी नकली जमानती आदेशों के जरिये फरार

अमृतसर, २० मार्च। अन्तर्राष्ट्रीय यूथ फोरम फैडरेशन के सदस्य भूपिन्दरसिंह (कनाडा निवासी) और भिंडरावाला टाइगर फोर्स खालिस्तान के प्रमुख गुरबचनसिंह मनोचहल के सहायक सहित अनेक कुख्यात आतंकवादियों द्वारा जमानत पर रिहाई के नकली दस्तावेजो के जरिये अमृतसर केन्द्रीय जेल से निकल भागने की घटना से अमृतसर का जिला प्रशासन चिन्तित और हतप्रभ है। इस अनोखे और दिलचस्प कांड की जांच तुरन्त आरम्भ हो गई है और इस प्रकरण मे कुछ न्यायिक अधिकारियो के विरुद्ध शिकंजा कसे जाने की सम्भावना है।

जिलाधीश सर्वजीतसिंह ने यहां एक भेंट में बताया कि अभी तक उन्हें केवल भूपिन्दरसिंह से सम्बन्धित प्राथमिक रिपोर्ट मिली है जिसके अनुसार इस कार्य के लिए तैनात न्यायाधीश टी.एन गुप्ता ने बाबा के अधिकारियों; यहां से भूपिन्दरसिंह की जमानत पर रिहाई के आदेश जारी किये गये हैं को पत्र भेज कर उनसे इसकी पुष्टि करने को कहा गया है। जिलाधीश ने बताया कि बाबा से रिपोर्ट मिलने के बाद ही जांच आगे बढ़ सकेगी।

पता चला है कि एक दर्जन के लगभग खूंखार किस्म के आतंकवादी अमृतसर केन्द्रीय जेल से फरार होने पर प्रशासनिक अधिकारी हतप्रभ रह गये हैं।

(पंजाब केसरी २१ मार्च १९९०)

देश एक बार फिर खतरे के कगार पर

—आर्यो जागो—

श्री चमन लाल आर्य

भारतवर्ष को स्वतन्त्र हुए ४२ वर्ष हो चुके हैं। स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए कई लाख नौजवानों ने अपनी उभरती हुई जवानियों की आहुति दे दी, लाखों माताओं की गोद खाली हो गई, बहिनों के सुहाग लुट गए, बच्चे अनाथ हो गए और हमारे मार्ग-दर्शकों को फांसी के फंदों पर चढ़ा दिया गया। तब हम उस अन्यायी, क्रूर और अत्याचारी शासक अंग्रेज को, जिसके राज्य में कहते थे, कभी सूर्य नहीं छिपता था, भारतवर्ष से खदेड़ने में सफल हो सके। यद्यपि हिन्दु तथा मुसलमानों ने मिलकर स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए संघर्ष किया, परन्तु अंग्रेज जाते-जाते आपस में फूट के बीज डाल गए और भारतवर्ष के दो टुकड़े करा ही दिए। जनसंख्या के आधार पर मुसलमानों को पाकिस्तान तथा हिन्दुओं को हिन्दुस्तान देना घोषित कर दिया। उस समय भारत सरकार द्वारा एक गलती हुई और उन्होंने लगभग १ करोड़ मुसलमानों को यहां रोक लिया और कई लाख ईसाई अंग्रेजी तथा पादरियों को भी इंगलैंड नहीं जाने दिया। वही गलती आज एक मामूली फोड़े से नासूर बन गई है। और आज फिर हिन्दुस्तान की एकता तथा अखण्डता को खतरा बन गया है। ईसाई व इस्लाम सामूहिक धर्म परिवर्तन करके अपनी जनसंख्या बढ़ाने में लगे हुए हैं।

ईसाई षड़यन्त्र

विदेशी ईसाई मिशनरियों द्वारा भारत के पर्वतीय क्षेत्रों में धन, कपड़े तथा दवाईयों का लालच देकर लोगों को धड़ाधड़ ईसाई बनाया जा रहा है। इस राजनैतिक षड़यन्त्र के आविष्कारक श्री विलियम फ्रैंक ने सन् १९५१ ई० में अमेरिका के ब्रोडकास्टिंग स्टेशन से कार्यक्रम पर बोलते हुए कहा था कि भारत में पादरियों की एक सेना भेजनी चाहिए कि भारत में बूढ़ा हिन्दू धर्म समाप्त हो जाए और उसकी लाश पर ईसाई धर्म का झण्डा लहराये, ताकि चर्चों के द्वारा अमेरिका भारत के राजनैतिक ढांचे पर अपना नियंत्रण कर सके और इसी योजना के अन्तर्गत भारत में विदेशी ईसाई मिशनरी और अपार धन राशि भारत में आई और देखते ही देखते भारत के समस्त पर्वतीय क्षेत्रो में ईसाई फैल गए। नागालैण्ड, मेघालय, छोटा नागपुर, मिजोरम तथा केरल आदि क्षेत्रों में ईसाई धर्म काफी फैल चुका है और उन्होंने पब्लिक स्कूलों तथा चर्चों के माध्यम से असंख्य लोगों को ईसाई बनाया है।

इस्लामी षड़यन्त्र

अरब देशों ने षड़यन्त्र की रचना १९७३ में यान इस्लामिक लीग के रूप में की, जिसका लक्ष्य मोराको से इण्डोनेशिया तक के समस्त देशों को इस्लाम धर्म के झण्डे के नीचे लाना है। इस योजनानुसार इस्लामिक कलचरल सैन्टर लन्दन ने अपने डायरेक्टर श्री बदवई को भारत में गुप्त रूप से भेजा। उसकी रिपोर्ट कुवैत में प्रकाशित हुई जिसके अनुसार भारत के हरिजनों को मुसलमान बनाना था। मीनाक्षीपुरम् की घटना इसका ही परिणाम है।

संयुक्त राष्ट्र संघ के एक जनगणना विशेषज्ञ की रिपोर्ट के अनुसार २००० ई० में सम्भवतः भारत की कुल जनसंख्या ९० करोड़ के लगभग हो जायेगी, जिसमें हिन्दू ४० करोड़, मुसलमान ३५ करोड़ तथा ईसाई १५ करोड़ होंगे, जिससे हिन्दू अल्पसंख्या में आ जायेंगे। भारत में हिन्दू जाति के अल्पसंख्यक बनने ही यहां जनतन्त्र तथा धर्म निरपेक्षता सम्भवत: सदैव के लिए कूंच कर जायेंगे और यहां का शासन ईरान, पाकिस्तान बंगलादेश, मलेशिया आदि मुस्लिम देशों की भांति होगा। यहां साम्प्रदायिक तनाव उत्पन्न होंगे, साम्प्रदायिक दंगों को प्रोत्साहन मिलेगा और परिणाम यह होगा कि देश की एकता, सुरक्षा और प्रगति तुरन्त खतरे में पड़ने की आशंका हो जायेगी।

विदेशी षड़यन्त्र

इसके इलावा विदेशी शक्तियां हम सब भारतियों में फूट डाल रही हैं और हम भाषा के नाम पर क्षेत्र के नाम पर धर्म के नाम पर, आपस में व्यर्थ लड़ रहे हैं। पंजाब की समस्या इसी बात का तो परिणाम है। नाखून-मांस का रिश्ता रखने वाले हिन्दू तथा सिख भाई एक दूसरे के जान के दुश्मन बन गए हैं। कुछ सिख भाईयों को गुमराह किया जा रहा है। उग्रवाद तथा आतंकवाद का बोलबाला है। प्रतिदिन निहत्थे लोगों को कत्ल किया जा रहा है। और विदेशी ताकतें हमें कठपुतली की भांति नाच नचवा रही है।

उनकी कोशिश है कि हिन्दू-सिख के नाम पर लोकल-रिफ्यूजी के सवाल पर, जाट, गैर-जाट के सवाल पर, पिछड़ी जाति तथा गैर-पिछड़ी जाति के सवाल पर भारतवर्ष में दंगे करवाए जाएं, ताकि भारतवर्ष में असुरक्षा की भावना पैदा हो तथा इसकी अखण्डता खतरे में पड़ जाए। और वे इस षड़यन्त्र में काफी सफलता भी प्राप्त कर चुके हैं। इसलिए हम सब भारतीयों का कर्त्तव्य है कि हम इन विदेशी ताकतों से सतर्क रहें। सामूहिक धर्म परिवर्तन को रोकें, साम्प्रदायिक दंगे फैलाने वालों पर कड़ी नजर रखें ताकि हर कीमत पर देश की एकता एवम् अखण्डता को कायम रखा जा सके, चाहे इसके लिए हमें कितनी भी कुर्बानियां क्यों ना देनी पड़े।

पूर्वजों का स्मरण

हम मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम, योगीराज श्री कृष्णचन्द्र, शिवाजी, महाराणा प्रताप तथा महर्षि स्वामी दयानन्द की सन्तान हैं तथा उनके पदचिह्नों पर चलकर उनके अधूरे कार्यों को पूरा करना है। हमें सरदार भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, 'बिस्मिल', वीर सावरकर, अशफाक उल्ला खां, स्वामी श्रद्धानन्द, लेखराम, गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज, लाला लाजपतराय, नेता जी सुभाषचन्द्र बोस, महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री तथा इन्दिरा गांधी जी की कुर्बानियों को सदा याद रखना है तथा देश के लिए सदा प्राण न्योछावर करने के लिए तैयार रहना है। हमें यह भी याद रखना है कि इस युग के महान् प्रवर्त्तक स्वामी दयानन्द जी ने १८७५ में सत्यार्थप्रकाश में लिखा था "कि स्वदेशी राज्य अत्युत्तम होता है और विदेशी राज्य चाहें कितना भी अच्छा क्यों ना हो, स्वदेशी राज्य का विकल्प नही हो सकता। दुश्मन की हरनापाक योजना को धाराशायी करना है।

हमारी पुरानी पीढ़ी के लोग एक के बाद एक जा रहे हैं और उनका स्थान लेने के लिए नई पीढ़ी के लोग आर्यसमाज में नही आ रहे। यदि यह ही दशा चलती रही, तो कौन बैठेगा आपके इन विशाल तथा सुन्दर भवनों में? कौन करेगा आर्यसमाज का नेतृत्व? हमें इस प्रश्न को गम्भीरता से सोचना है मनन करना है तथा समस्या का सुन्दर हल निकालना है। यह समय की पुकार है कि हम उन नौजवानों को जो पाश्चात्य साम्राज्य वासी सभ्यता में

(शेष पृष्ठ ६ पर)

महत्वपूर्ण ऐतिहासिक जानकारियां

१—जलियां वाला बाग हत्याकाण्ड के समय भारत का वायसराय लार्ड चेम्सफोर्ड था, हत्याकाण्ड जनरल डायर ने करवाया था।

२—कलिंग युद्ध के नरसंहार से दुःखी होकर सम्राट अशोक ने फिर कभी युद्ध न करने का निश्चय किया था।

३—तराइन का प्रथम युद्ध ११९१ ई० में मुहम्मद गोरी तथा पृथ्वीराज चौहान के बीच हुआ, जिसमें पृथ्वीराज चौहान की जीत हुई, दूसरे ही वर्ष उसी स्थान पर गोरी के साथ युद्ध में पृथ्वीराज की हार हुई।

४—पानीपत के प्रथम युद्ध (१५२६) ई० में बाबर ने इब्राहीम लोदी को हराकर भारत में मुगल साम्राज्य की नींव डाली।

५—हल्दीघाटी के युद्ध (१५७६ ई०) में अकबर ने महाराणा प्रताप को पराजित किया जिससे उन्हे अरावली की पहाड़ियों में शरण लेनी पड़ी।

६—प्लासी के युद्ध (१७५७ ई०) में क्लाइव के नेतृत्व में अंग्रेजों ने सिराजुद्दौला को हराया इससे भारत में अंग्रेजी राज्य की नींव पड़ी।

७—बक्सर के युद्ध (१७६४ ई०)में हेक्टर मुनरो के नेतृत्व मे अंग्रेजों ने मीरकासिम शुजाउद्दौला तथा शाह आलम द्वितीय की संगठित सेना को हराया इस विजय ने अंग्रेजो को भारत में सर्वोच्च शक्ति बना दिया।

८—भारत पाक युद्ध (१९७१ ई०) भारत और मुक्तिवाहिनी संयुक्त सेनाओ ने पाकिस्तानी सेना को आत्म समर्पण के लिए विवश किया, युद्ध विराम के पश्चात् स्वतन्त्र बांगलादेश का अभ्युदय हुआ।

९—बाबर की मृत्यु आगरा में हुई थी। पहले उसे आगरा के आराम बाग में दफनाया गया था। बाद में उसके शव को काबुल ले जाया गया, बाबर का मकबरा अब काबुल में है।

१०—ब्रिटिश भारत के अन्तिम वायसराय लार्ड माउंटबेटन तथा स्वतन्त्र भारत के अन्तिम गवर्नर जनरल चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य थे।

११—गुरु अर्जुनदेव अकबर के समकालीन थे, जहांगीर ने उनकी हत्या कराई थी।

१२—बादशाह मुहम्मद बिन तुगलक ने अपनी राजधानी दिल्ली से हटाकर देवगिरि बनाई थी।

१३—मुगल सम्राट अकबर ने अपनी राजधानी फतेहपुर सीकरी से हटाकर आगरा बनाई थी।

१४—भारत पर हूणों का पहला आक्रमण गुप्त शासन काल में हुआ था। सम्राट हर्षवर्धन की राजधानी थानेश्वर थी; उनके शासनकाल में नालन्दा विश्व विद्यालय संसार में प्रसिद्ध हुआ। उन्ही के शासनकाल में चीनीयात्री ह्वेनसांग ने भारत आकर यहां पांच वर्ष बिताए थे।

१५—महाकवि कालीदास सम्राट चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासन काल मे थे।

१६—महाकवि तुलसीदास ने अकबर एवं जहांगीर का शासनकाल देखा था।

१७—भारत पर आक्रमण करने वाला पहला मुस्लिम आक्रमणकारी मुहम्मद बिन कासिम था।

१८—चन्द्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में यूनान का यात्री मेगस्थनीज सेलुकस का दूत बनकर आया था।

१९—अंग्रेजों ने राजा राममोहनराय को भारत का आधुनिक मसीहा कहा था।

वेद और दयानन्द

—पं० गंगाप्रसाद विद्यार्थी, जबलपुर-२

वेदो को शुद्ध भाव सुनाया दयानन्द ने।
वेदो का सुखधाम दिखाया दयानन्द ने।।
वेद ही हैं ईश्वर की वाणी, सब सुखदायक जन कल्याणी।
वेद को पढ़ते पंडित ज्ञानी, क्षत्रिय वीर वैश्य जो दानी।।
पढ़ें शूद्र सभी सुख जानी, स्त्री पुत्र बनें सब ज्ञानी।
सर्व समभाव ही बताया दयानन्द ने, वेदामृत प्याली पिलाई दयानन्द ने।
वेद मे मर्म है धर्म का, वेद मे ज्ञान है कर्म का।
वेद की बातें अर्थ भरी, वेद की बातें मोक्ष करी।।
वेद से भावना है शुद्ध होती, वेद से कामना है पूर्ण होती।
वेदो का मार्ग बताया दयानन्द ने, वेदो के लाभ समझाए दयानन्द ने।।
वेद से यज्ञ हैं पूर्ण होते, वेद से दान हैं शुद्ध होते।
वेद धन है ब्रह्मचारियो का वेद कर्म है गृहस्थियो का।।
वेद तप है तपस्वियो का, वेद ज्ञान है सन्यासियों का।
वेदोपदेश है सिखाया दयानन्द ने, वेदो की रक्षा बताई दयानन्द ने।।
वेद नहीं केवल आर्यों के, वेद नहीं केवल हिन्दू के।
हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई, सभी वेद पढ पावें भाई।।
ज्ञान बढ़े अज्ञान नसावे, पाप घटें अरु पुण्य बढ़ावे।
वेद सब से धनी बनाया दयानन्द ने, वेद विश्वभर मे फैलाया दयानन्द ने।
वेद तो हैं ईश्वर की थाती, जिनमे ये दुनिया सारी समाती।
जग की बातें हैं आती जाती, वेद बात स्थिर रह जाती।।
वेद की बात सभी को भाती, वेद ज्ञान के सभी सघाती।
वेदसे काम बनाया बताया दयानन्द ने, वेदमे सबका सांझा बताया द० ने।

वेद में क्या है

किसी ने कहा वेद केवल यज्ञो के, किसी ने कहा वेद केवल ब्राह्मणो के।
वेद ने स्वयं कहा हम हैं ब्राह्मण, क्षत्रिय शूद्र वैश्य और जन जन के।। १
वेद मे वह ज्ञान जिसे जान चुका विश्व,
वेद मे वह भी ज्ञान नहीं जानता जिसे विश्व।
समस्त ज्ञान किन्तु है बीज रूप,
उसे रोपो सींचो बढ़ाओ तब पाओ तुम फल फूल।।

संस्कृत भाषा

हे विश्व मानवो तुम सब कुछ पढ़ो, पर संस्कृत को अवश्य पढ़ो।
कुछ भी करो या न करो पर इसे पढ़ने मे गफलत मत करो।।
संस्कृत है अति अद्भुत भाषा, सर्वोपरि है जिसकी आभा।
इसमे उत्तम ज्ञान प्रकाश, वेदो की भी इसमें है भाषा।।

देश खतरे के कगार पर

(पृष्ठ ५ का शेष)

रंगे जा चुके हैं और जिनका ध्येय केवल खाना-पीना और मौज उड़ाना है—आर्यसमाज की ओर मोड़ें और उनमें देश-भक्ति की भावना तथा वैदिक संस्कृति के अटूट श्रद्धा तथा विश्वास पैदा करें, ताकि उनके जोश और ताकत का सही इस्तेमाल हो सके। हमारे बुजुर्गों का कर्त्तव्य है कि वे नौजवानों को आर्यसमाज में आने की प्रेरणा करें और उन्हें काम करने का सुअवसर दें। यदि बड़े-बूढ़ों बूढ़ों का आशीर्वाद तथा नौजवानों का जोश आपस में मिल जाए, तो इस देश और समाज का कायाकल्प हो सकता है। किसी कवि ने ठीक कहा है—

पथ स्वयं अपना बनाओ।
कस कमर बढ़ते ही जाओ।।
चल पड़े यदि राह में, मंजिल तुम्हें मिलकर रहेगी।
हो भले देर, हर मुश्किल, मगर टल कर रहेगी।।
प्रेरणा लेता जमाना उस बहादुर वीर नर से।
जान को रखकर हथेली पर निकल पड़ता जो घर से।।

क्या हो गया है हमारी शिक्षा व्यवस्था को

—जितेन्द्र लाल दास

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद से ही शिक्षा में आमूल चूल परिवर्तन लाने के प्रयत्न किये जाते रहे हैं जिससे शिक्षा को भारतीय आवश्यकताओं के अनुरूप बनाया जा सके और इससे देश का हर नागरिक लाभान्वित हो सके। लेकिन इन प्रयत्नों के बावजूद शिक्षा के क्षेत्र में कोई खास सुधार नहीं हुआ। सच तो यह है कि हम जैसे-जैसे आगे बढ़ते जा रहे हैं शिक्षा की स्थिति बद से बदतर होती जा रही है।

आज हमारे देश की शिक्षा संस्थाओं में क्या होता है? परीक्षाओं में नकल, प्रश्न-पत्र आउट कर सफलता (?) की चेष्टा, भाई-भतीजावाद के कारण अंक पत्रों में हेरा-फेरी, प्रवेश में धांधली, गलत अंक देकर अनुचित रूप से उत्तीर्ण करने की चेष्टा, छात्रों को अपना माध्यम बनाकर शिक्षकों की दूषित राजनीति, आलसर नेतानुमा छात्रों का आपसी टकराव, बार-बार कुलपतियों का घेराव, यहां तक कि हत्याएं भी। ऐसी घटनाएं देखने सुनने को अक्सर मिलती ही रहती हैं। आखिर क्या हो गया है हमारी शिक्षा व्यवस्था को? क्यों विद्यालय में अध्ययन-अध्यापन का वातावरण अब नहीं रहा?।

हमारे देश की शिक्षा संस्थाओं के सांचों में ढलकर तैयार होने वाले अप-टू-डेट स्टुडेन्ट के बारे में जनसाधारण क्या सोचते हैं, क्या छवि है एक स्टूडेन्ट की हमारे जनसाधारण में। अधिकांश लोगों की शिकायत यह रहती है कि इस शिक्षा की क्या अहमियत है, जो लूटपाट, आगजनी, दंगे फसाद चोरी-डकैती, उपद्रवी, नशेड़ी, जुआरी संस्कारों से लिपटी हुई छात्र शक्ति दे रही है। जिस देश के बहुसंख्यक छात्रों का झुकाव हिंसा की तरफ हो, उसका भविष्य क्या होगा।

कुछ वर्षों पहले तक यह हालत सिर्फ महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों तक ही दिखाई देती थी परन्तु अब यह विद्यालयों में भी दिखायी देने लगी है। यथार्थ यह है कि आज हमारी शिक्षण संस्थाओं में शिक्षा के लायक माहौल ही नहीं रहा और छात्र एवं अध्यापक के बीच की दूरी बढ़ती होती चली गयी। उनके बीच गुरु-शिष्य जैसा कोई सम्बन्ध ही नहीं रह गया, जबकि शिक्षा के स्वस्थ आदान प्रदान के लिए दोनों के बीच मधुर और नजदीकी सम्बन्ध आवश्यक है। छात्र और अध्यापक के बीच का सम्बन्ध जितना ही घनिष्ठ होगा शिक्षा का स्तर उतना ही ऊंचा होगा। लेकिन आज छात्र और अध्यापक के बीच कोई तारतम्य ही नहीं है और उनके बीच की दूरी बढ़ती जा रही है। इसी के साथ ही शिक्षा का स्तर भी गिरता जा रहा है।

छात्र और शिक्षक के बीच क्यों है इतनी दूरी? क्यों नहीं रहा छात्रों में शिक्षकों के प्रति और शिक्षकों में छात्रों के प्रति अब पहले जैसा लगाव। आज विद्यालयों में न तो शिक्षक ठीक से पढ़ाते हैं और न ही सभी छात्रों का उद्देश्य पढ़ना होता है। शिक्षकों के लिए पढ़ाना और छात्रों के लिए पढ़ने का नाटक करना उनकी मजबूरी है। जिसे वे एक बोझ स्वरूप ढोये जा रहे हैं और समय काट रहे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में ऐसी परिस्थिति को उत्पन्न करने वाले इस ढंग वाली शिक्षा व्यवस्था के पनपने का जिम्मेदार कौन है? छात्र, शिक्षक या हमारी शिक्षा व्यवस्था? मेरी नजर में आज शिक्षा के क्षेत्र में जो अवनति आयी है और चारों तरफ अराजकता का बोलबाला है इसके लिए कोई एक तत्व अकेला जिम्मेदार नहीं है। इसकी सामूहिक जिम्मेदारी छात्र, शिक्षक, शिक्षानीति के निर्माताओं एवं उसे कार्यान्वित करने वाले अफसर लोगों पर थोपी जा सकती है। शिक्षा व्यवस्था की इस दुर्गति का जिम्मेदार छात्र और अध्यापक ज्यादा नहीं है। इसका कारण शिक्षा-पद्धति की कमजोरी भी उतनी नहीं है, जितना कि शिक्षा व्यवस्था के हर क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार।

ऐसी स्थिति में अगर शिक्षा की पवित्र गंगोत्री को पवित्र रखना है और उसकी गरिमा बनाये रखनी है तो शिक्षा के क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार को खत्म करना ही होगा और पठन-पाठन का स्वच्छ वातावरण बनाना होगा। ऐसा तभी होगा जब हम शिक्षा क्षेत्र की शुद्धता के लिए एक मुहिम की शुरूआत करें। जब तक हम शिक्षा संस्थाओं में पढ़ाई-लिखाई का वातावरण बहाल कर छात्र और शिक्षक के बीच की दूरी को समाप्त नहीं कर लेते हमारी शैक्षिक संस्थाओं की हालत नहीं सुधर सकती।

आज की इस लचर शिक्षा व्यवस्था के निर्माण एवं उसके विकास में शिक्षकों का योगदान भी कम नहीं है। जरा उस शिक्षक पद पर और फरमायें, जो छात्र की नींव रखता है और उसका निर्माण करता है। शिक्षक नाम का यह प्राणी नौकरी न पाने के कारण या अपनी मजबूरी के कारण हाईस्कूल अन्तर स्नातक या स्नातक होकर टीचर्स ट्रेनिंग बी. एड. इत्यादि कर लेता है और फिर रोजाना विद्यालय चल देता है। थोड़ी देर विद्यालय में चहलकदमी करने के उपरान्त वापस होकर लौट आता है।

जाहिर है जैसी नींव होगी; इमारत उसी अनुरूप होगी। प्राइमरी स्कूलों की हालत किसी से छिपी नहीं है। सरकार ने इन विद्यालयों की हालत सुधारने के लिए कितनी ही योजनाओं पर हजारों लाखों रुपए बहा दिए। लेकिन स्थिति में कोई खास सुधार नहीं हुआ। शिक्षा और शिक्षकों के प्रति सरकार उदासीन ही बनी रही और शिक्षकों की दशा पर कोई ध्यान नहीं दिया।

यह कैसी विडम्बना है जहां एक ओर शिक्षा अभियान के मद में अफसर लाखों नित्य यात्रा भत्तें, कागज, पोस्टरों, गाड़ी, पेट्रोल आदि पर बेहिसाब खर्च करती है वहीं दूसरी ओर महीनों से वेतन की आशा में टूटी-फूटी छतों, खण्डहर हो चुकी दीवारों के बीच मुश्किल से बोल सकने वाला सर्वहारा शिक्षक है, जिससे सरकार पढ़ाने की उम्मीद भले ही नहीं रखती हो, मगर चुनावों में पोलिंग बूथों की व्यवस्था, जनगणना, परिवार नियोजन कार्यक्रमों आदि से जुड़ी कुशल व्यवस्था की उम्मीद जरूर करती है।

शिक्षा क्षेत्र मे व्याप्त अराजकता की बात करना आज हर व्यक्ति अपना अधिकार समझता है। कुछ अध्यापकों और कुछ नेताओं को, जो अपनी दलीय राजनीति विश्वविद्यालयों में फैलाते जा रहे हैं। लेकिन यहां सवाल उठता है कि जो पीढ़ी जिसे होश संभालने के साथ ही अराजकता देखने को मिली हो, वह शिक्षा जैसे भारी भरकम शब्द का अर्थ ही कैसे समझ सकती है, अध्यापक उसके सामने किसी आदर्श के रूप में नहीं आता। जाहिर है बच्चे के कोमल जिज्ञासु मन में उन अध्यापकों की जगह प्रेरक बनते हैं वे अफसर और प्रभावशाली नेतानुमा लोग जो शिक्षकों की अवहेलना, आलोचना एवं तिरस्कार करते हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में आयी इस गिरावट से सरकार भी अनभिज्ञ नहीं। यह दूसरी बात है कि शिक्षा में लगी बीमारी को दूर करने के लिए वह एक-एक अंग का इलाज करती है या ऊपर से अनुदाननुमा कुछ पौष्टिक तत्व दे देती है, जिससे लड़खड़ाती शिक्षा खड़ी हो जाती है पर उसका सम्पूर्ण रोग निदान नहीं हो पाता।

आज आवश्यकता है शिक्षा में आमूल-चूल परिवर्तन की, शिक्षकों के उचित सम्मान की। शिक्षा में बदलाव लाने के काम को हल्का नहीं समझना चाहिए। यह काम काफी कठिन, श्रमसाध्य, कष्ट साध्य और व्यय साध्य है, इससे भी बढ़कर यह कि यह चुनौती है।

आर्य जगत् के समाचार

प्रान्तीय आर्य महिला सभा दिल्ली के तत्वावधान में नाहरी ग्राम में कुरीति निवारण सम्मेलन सम्पन्न

दिनांक ३-३-९० को नाहरी ग्राम में दिल्ली से ९ बसें बहिनों की गई। सबसे प्रथम भव्य शोभा यात्रा ग्राम के प्रमुख क्षेत्रों में निकाली गई। सबसे आगे सभा की अधिकारी बहिनें तथा नाहरी ग्राम समाज के अधिकारी तथा वरिष्ठ आर्य जन। आर्य कन्या गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियां ड्रम बैंडियम बजाती नारे लगाती हुई उनके साथ नाहरी ग्राम की पाठशाला की छात्राएं ऋषि गीत गाती हुई चल रही थी उनका नेतृत्व कन्या गुरुकुल की अध्यापिकाएं कर रही थीं। उनके पीछे दिल्ली के आर्य समाज की बहिनें महर्षि दयानन्द की जय-२ करती चल रही थी। शोभा यात्रा के पश्चात ग्रामीण बहिनों को यज्ञ मे बड़ी श्रद्धा निष्ठा से बिठाकर आहुतियां दिलवाई।

दिल्ली प्रान्तीय आर्य महिला सभा के तत्वावधान मे नाहरी ग्राम (जिला सोनीपत) मे कुरीति निवारण सम्मेलन बड़ी धूम धाम से श्रीमती सुशीला जी आनन्द की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। सभा का संयोजन श्रीमती शकुन्तला दीक्षित ने किया। श्रीमती शकुन्तला आर्या ने ग्राम में वृक्षारोपण किया। श्रीमती प्रेमशील, सुशीला आनन्द, सरला महता, प्रकाश आर्या आदि विदुषी वक्ताओं ने आजकल चल रहे अन्धविश्वास, पाखण्ड, नुक्तम, दहेज तथा स्त्रियों के शोषण के विरुद्ध आवाज उठाई। दहेज न लाने के कारण जो वधुएं जीवित जलाई जाती हैं, यह चिन्ता का विषय है। ऐसे लोगों को सम्मान की दृष्टि से न देखकर, उनका सामाजिक बहिष्कार किया जाए। प्रत्येक ग्राम में या पांच-२ ग्रामों को मिलाकर एक समिति बनाई जाए, जो इसकी जांच पड़ताल करके आवश्यक कार्यवाही करने व करवाने मे सहायक हो। इस महिला सम्मेलन का ग्राम मे अच्छा प्रभाव हुआ। आस पास के ग्रामों से भी ग्रामीण महिलाएं बड़ी संख्या में भाग लेने के लिए आईं।

आर्य समाज नाहरी ग्राम के अधिकारियों ने हमें पूर्ण सहयोग दिया। नाहरी स्कूल के बच्चों ने गीत, कविता तथा 'जिन्दगी का दहेज' नामक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। गुरुकुल की श्रद्धा ब्रह्मचारिणि ने फैली हुई कुरीतियों पर भाषण दिया। दिल्ली की बहुत सी बहिनों तथा नाहरी ग्राम की बहिनों ने श्रद्धा तथा नाहरी स्कूल की बच्चियों को उत्साह हेतु धन राशि दी।

प्रभात आश्रम का ब्रह्मचारी विजयी

१७ फरवरी कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र मे अखिल भारतीय भाषण प्रतियोगिता तथा अखिल भारतीय श्लोकोच्चारण प्रतियोगिता मे गुरुकुल प्रभात आश्रम के स्नातक श्री जयेन्द्र कुमार शास्त्री के गु० कां० वि० वि० हरिद्वार का प्रतियोगिताओं मे प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा सर्वश्रेष्ठ वक्ता का पदक प्राप्त कर गुरुकुल प्रभात आश्रम का गौरव बढ़ाया।

गुरुकुल प्रभात आश्रम का स्नातक मण्डल अपने स्नातक बन्धु का हार्दिक अभिनन्दन करता है।

शोक समाचार

आर्य समाज सरावगा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री सूरजनारायण ईनाणी की भुआ एवं कडेल निवासी श्री लालचन्द जी जाजोदिया की धर्मपत्नी श्रीमती सरस्वती देवी के आकस्मिक निधन पर आर्य समाज सरावगा के सभी सभासद एवं पदाधिकारी शोकाकुल हैं।

स्वर्गीय सेठ साहब श्री रामविलास जी ईनाणी की सुपुत्री एवं स्वर्गीय सेठ साहब श्री शंकरलाल जी जाजोदिया (कडेल निवासी) एवं वर्तमान आर्य समाज के कर्मठ सहयोगी श्री जयकिशन जी ईनाणी की बहिन श्रीमती सरस्वती बाई एक धर्म परायण मिलनसार एवं हंसमुख स्वभाव की गृहिणी थी जिनका जीवन सदा ही प्रेरणा देता रहेगा।

इस शोक के अवसर पर आर्य समाज सरावगा गहरी संवेदना प्रकट करता है एवं परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि शोक संतप्त परिवार को धैर्य एवं दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें।

अन्धविश्वास को छोड़कर वैदिक धर्म में प्रवेश

आर्य गुरुकुल कृष्णपुर के वार्षिकोत्सव पर युवक का स्वागत

श्री रामदेव नैष्ठिक ब्रह्मचारी ने पौराणिक विचार धारा से प्रभावित पिछले पन्द्रह सालों से सर पर भारी जटाजूट रखे हुए थे और अन्धविश्वास के शिकार थे।

श्री आनन्द देव वानप्रस्थ नवाई मऊ और आर्य समाज कन्नौज, प० सतीशदेव आचार्य (मनिकपुर), हुकमसिंह आर्य, सोबाराम आर्य, सुखपाल आर्य जयनारायण सिंह आर्य (फर्रुखाबाद) आदि महानुभावों ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यानुसार श्री रामदेव नैष्ठिक को समझाया कि अन्धविश्वास मे फंसकर क्यों जीवन नष्ट कर रहे हो आओ वैदिक धर्म की शरण मे आओ आपका कल्याण हो जायेगा।

सार्वदेशिक आर्य वीरदल के प्रधान संचालक श्री प० बालदिवाकर हंस के सामने ही श्री नैष्ठिक जी का मुण्डन संस्कार कराकर उनका उद्धार किया। तत्पश्चात गुरुकुल कृष्णपुर (फर्रुखाबाद) के उत्सव पर पुष्पहार पहिनाकर नैष्ठिक जी का स्वागत हुआ।

मदुरै क्षेत्र में ईसाई परिवारों की शुद्धियां

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मदुरै क्षेत्र के कार्यकर्ता श्री एम० नारायण स्वामी के पुरुषार्थ से फरवरी मास में अनेक ईसाई परिवारों की शुद्धियां की गई। १७ फरवरी को एक ईसाई परिवार के ७ सदस्यों को शुद्ध कर वैदिक धर्म में दीक्षित किया गया। २१ फरवरी का एक ईसाई युवती की शुद्धि की गई। इसी क्षेत्र में २४ फरवरी को ऋषि बोधोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया और इस अवसर पर दो ईसाई परिवारों के ६ सदस्यों की शुद्धि की गई। दिनांक २६ फरवरी टूटी कोरिन मे श्री कन्नन जी की सहायता से ३ ईसाई परिवारों के १० सदस्यों को शुद्ध करके वैदिक धर्म में दीक्षित किया गया। इसके बाद ईसाइयत का खण्डन एवं वैदिक धर्म की महानता पर श्री श्री एम० नारायण स्वामी और श्री रामचन्द्रन जी के भाषण हुए। जिसका उपस्थित सज्जनों पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

तरुवं ग्राम, तिरुनेलवेली, सुरानाम ग्राम मे २५ ईसाई परिवारों की शुद्धि किए जाने की व्यवस्था हो चुकी थी किन्तु वहां के एक प्रमुख सज्जन के देहान्त के कारण यह कार्यक्रम कुछ समय के लिए स्थगित हो गया।

आर्य समाज की गतिविधियां

आर्य वीर दल के अधिकारियों के लिये आवश्यक निर्देश

सभी प्रान्तों के सञ्चालक एवं अन्य अधिकारियों को यह निर्देश दिया जाता है कि आगामी ग्रीष्मावकाश में आपके यहां लगाये जाने वाले शिविर १५ जून से पहले समाप्त हो जाने चाहिए। उनमें प्रशिक्षित आर्य वीरों को १०-२४ जून तक लगने वाले व्यायाम शिक्षक शिविर में अवश्य प्रशिक्षण लेने के लिये भिजवाने की व्यवस्था करें।

आप अपने यहां लगने वाले शिविरों की सूचना प्रधान सञ्चालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल को भिजवाएं जिससे व्यायाम शिक्षकों की सुव्यवस्था हो सके।

इस वर्ष व्यायाम शिक्षक से आगे आचार्य श्रेणी भी प्रारम्भ की जा रही है।

—डा० देवव्रत आचार्य
उपप्रधान संचालक

भूल सुधार

१८-३-९० के सार्वदेशिक 'साप्ताहिक' में पृष्ठ ६ पर कैसेटों के बारे में छपे विज्ञापन में दो जगह २२ कैसेट के स्थान पर भूल से २१ कैसेट छप गया है अतः छपे २१ के स्थान पर दोनों जगह २२ कैसेट पढ़ा जाये।

—सम्पादक

उत्सव

मद्रास आर्य समाज का वार्षिकोत्सव १६ फरवरी से २५ फरवरी तक अत्यन्त उत्साहपूर्वक मनाया गया। गत कई वर्षों बाद १० दिन के इस वार्षिक समारोह में स्थानीय जनता ने बहुत ही श्रद्धापूर्वक भाग लिया।

इस सारे यज्ञ का सञ्चालन डा० वाचस्पति जी उपाध्याय ने किया, प्रातः यज्ञ के पश्चात् जीवन की गरिमा को निखारने के लिए वहां भक्ति-धारा की १० दिन तक कथा होती रही। वहां अशेष उपाध्याय जी ने सायंकालीन सभा में जीवन की गरिमा की स्थिरता के लिए कर्म की प्रधानता एवं ज्ञान तत्व की विशद् व्याख्या की।

इस ज्ञानवर्धक प्रवचन से पूर्व श्री वेदव्यास, बंगलौर से पधारे श्रीमती स्नेहलता, श्रीमती सुषमा आहूजा, श्री रवीन्द्र दुबे श्री नारायण सावजानी ने अपने भक्तिमय संगीत से जनता का मन जीत लिया।

इस विशाल यज्ञ की पूर्णाहुति २५ फरवरी को प्रातः सम्पन्न हुई। स्थानीय सुप्रसिद्ध डी० ए० वी० स्कूल के छात्र-छात्राओं ने अपने भावपूर्ण भजनों तथा गानों से जनता को मन्त्रमुग्ध कर दिया। श्री वाचस्पति जी उपाध्याय का अत्यधिक सारगर्भित आशीर्वचन भाषण हुआ। श्री सुरेन्द्र कुमार जी की कविता बहुत ही आकर्षक रही।

यज्ञ की समाप्ति पर सामूहिक प्रीतिभोज की व्यवस्था की। इस सारे समारोह के श्री जयदेव आयोजक थे। उनकी सहायता के लिए आचार्य श्रीराम कालिया आचार्य श्री सुरेन्द्र कुमार डी० ए० वी० स्कूल की धर्म-शिक्षा की अध्यापिकाओं, श्री भूपेन्द्र कुमार दम्पति, मन्त्री श्री कृष्णन की सेवा में सदा उपलब्ध रही।

सामूहिक प्रीतिभोज की व्यवस्था श्री सत्यदेव नागिया तथा श्री आनन्द जी ने की।　—कृष्णन मन्त्री आर्य समाज मद्रास

आर्थिक सहायता की अपील

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्य समाज मन्दिर शकरपुर दिल्ली में एक यज्ञशाला का निर्माण कार्य चल रहा है। धनाभाव के कारण इस पुण्य कार्य में अवरोध पैदा हो गया है। आर्य समाज शकरपुर अत्यन्त निर्धन समाज है, अतः सभी धर्म प्रेमी सज्जनों, दानी महानुभावों, विशेषकर आर्य सामाजिक संस्थाओं तथा ट्रस्टों से प्रार्थना है कि इस पुण्य कार्य में अपना सहयोग प्रदान करने की कृपा करें। आपके द्वारा दी गई अल्प राशि भी हमारा सम्बल होगी।

धनराशि नकद, धनादेश, चैक एवं ड्राफ्ट द्वारा आर्य समाज मन्दिर डी-११० दयानन्द ब्लाक शकरपुर के पते से भेजें। चैक तथा 'बैंक ड्राफ्ट' में अंकित करके आर्य समाज मन्दिर शकरपुर के नाम भेजें।

मन्त्री आर्य समाज मन्दिर शकरपुर

उत्सव

आर्य समाज अम्बहटा सहारनपुर का वार्षिकोत्सव निम्न तिथियों में मनाया जा रहा है। १०, ११ व १२ अप्रैल १९९० को गुरुकुल कुरुक्षेत्र के आचार्य देवव्रत जी, प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री ज्योतिस्वरूप जी एवं श्री सत्यपाल जी मधुर भाग लेंगे।　—सुरेश आर्य, मन्त्री

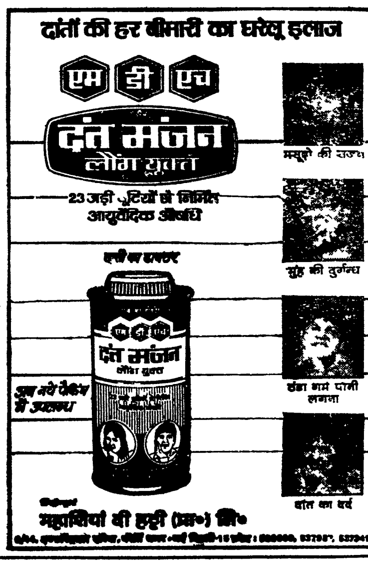
—आर्यसमाज पुसाढ़ी, नालन्दा (बिहार) का ३१ वां वार्षिकोत्सव दिनांक ९, १० एवं ११ फरवरी, को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर क्रांति-कारी वैदिक प्रवक्ता स्वामी ओमानन्द सरस्वती, मथुरा के पौरोहित्य में तीनों दिन हवन-यज्ञ हुआ। इस हवन-यज्ञ में कई बच्चे-बच्चियों का मुण्डन एवं नामकरण संस्कार कराया गया। कई लड़कों ने यज्ञोपवीत लिए। रात्रि कालीन सत्र में तीनों दिन स्वामी जी के क्रान्तिकारी उपदेश हुए।

—शिव बालकसिंह आर्य, मन्त्री

११ वां अथर्ववेद महापारायण यज्ञ
यज्ञ समिति सोनीपत द्वारा २६-२-९० से ४-३-९०

सोनीपत में आयोजित महापारायण यज्ञ पूर्णाहुति और भण्डारे के साथ सम्पन्न हुआ। यज्ञ में श्री सत्यानन्द जी वेदवागीश ब्रह्मचर्य ने ब्रह्मापद को सुशोभित किया। श्री सत्यपाल पथिक जी भजनों द्वारा जनता को लाभान्वित किया। आप ११ वर्ष से इस कार्य में भाग ले रहे हैं। यज्ञ समिति द्वारा आपको सम्मानित किया गया। गुरुकुल कालवा जि० जीन्द के स्नातक आचार्य अखिलेश्वर जी सञ्चालक वैदिक वानप्रस्थाश्रम ऊधमपुर (जम्मू काश्मीर) ने प्रातः को कृतार्थ किया। इस अवसर पर आप द्वारा प्रकाशित पुस्तक "व्रत विचार गीता बोध" का विमोचन किया गया। सैंकड़ों प्रतियां जिज्ञासुओं ने क्रय की।

मिलने का पता— गुरुकुल कालवा
मूल्य—सात रुपये मात्र



पण्डित जगत कुमार शास्त्री का पुण्यस्मरण

डा० भवानीलाल भारतीय

आर्य जगत में यह समाचार शोक के साथ सुना जायगा कि आर्यसमाज के विख्यात लेखक पत्रकार तथा प्रचारक पण्डित जगतकुमार शास्त्री का गत २ मार्च को निधन हो गया। शास्त्री जी आर्य समाज के उन मौन और साधनाशील सेवकों मे थे जो मरने के पश्चात् Unwept तथा Unsung ही रह जाते हैं। जिनको न तो कोई लम्बी चौड़ी श्रद्धांजलियां दी जाती हैं और न जिनके निधन पर लम्बे चौड़े शोक प्रस्ताव ही पारित किये जाते हैं। मेरा शास्त्री जी से बहुत पुराना परिचय था हमने आर्य समाज के अनेक उत्सवों मे साथ साथ उपदेश और प्रवचन किये थे। मैं उनके साहित्य का नियमित पाठक रहा। जब मैं आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मन्त्री था, तब शास्त्री जी हमारी सभा मे अवैतनिक प्रचारक थे। वे यदाकदा सभा द्वारा किये जाने वाले कार्यक्रमो मे आते थे। सभा का एक केन्द्र दक्षिण राजस्थान के बांसवाड़ा जिले मे स्थित है जहां स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी जैसे त्यागी, तपस्वी सन्त वर्षों से आदिवासी क्षेत्रो मे धर्म तथा शिक्षा का प्रचार करते हुए ईसाई प्रचारको से टक्कर ले रहे थे। मैं और शास्त्रीजी कुशलगढ़ तथा बांसवाड़ा में कुछ दिन साथ रहे। तब उन्हें निकट से देखने का अवसर मिला था।

शास्त्री जी का जन्म ११ नवम्बर १९१२ को कुरुक्षेत्र के निकटवर्ती थानेसर कस्बे मे प० श्रीराम के यहां हुआ। पिता की मृत्यु हो जाने पर उनकी माता ने बालक का पालन पोषण किया। हाई स्कूल तक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् लाहौर के दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय में प्रविष्ट हुए। यहां के आचार्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी उनके गुरु तथा मार्गदर्शक बने। उन्होने अपने उपदेशक जीवन का प्रारम्भ हैदराबाद राज्य की प्रतिनिधि सभा से किया। १९३४ मे वे दिल्ली आये और अखिल भारतीय श्रद्धानन्द ट्रस्ट के उपदेशक बन कर बिहार गये। वहां रांची, पलामू सिंहभूमि, डाल्टनगंज मानभूम, हजारीबाग जैसे पिछड़े क्षेत्रो में रहकर अछूतोद्धार संगठन तथा शुद्धि का काम किया। कुछ काल तक वे आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान पंजाब हरयाणा में भी रहे। उनके द्वारा लिखित तथा सम्पादित ग्रन्थो की संख्या १६० के लगभग है। प्रारम्भ में उन्होंने साहित्य मण्डल नामक प्रकाशन आरम्भ किया। तत्पश्चात् गोविन्दराम हासानन्द द्वारा प्रकाशित वेदप्रकाश मासिक के सम्पादक बने और वेदप्रकाश माला का सम्पादन किया वेद मन्त्रों की सुबोध व्याख्या करना उनका प्रियव्यसन था। वैदिक भक्तिवाद पर उन्होने पर्याप्त साहित्य लिखा है। कालान्तर में मधुर प्रकाशन दिल्ली ने उनके ग्रन्थो को प्रकाशित किया। मैं उन्हें अपना वरिष्ठ मित्र तथा अग्रज मानता हूं। विगत कई वर्षों से वे अस्वस्थ रहे। परमात्मा उन्हें शान्ति प्रदान करे। मेरी प्रार्थना है कि आर्य समाज का कोई लेखक unwept और unsung न रहे।

फन टाइम जैसे कार्यक्रम बन्द किये जायें

दूरदर्शन फन टाइम जैसे पश्चिमी संस्कृति से परिपूर्ण कार्यक्रम अपने राष्ट्रीय प्रसारण में दिखाकर किस मानसिकता का प्रतिनिधित्व कर रहा है। आज देखें तो भारत का अधिकांश नौजवान भारतीय संस्कृति से कट रहा है विदेशी संस्कृति की ओर आकर्षित होने लगा है। अपने को आधुनिक घोषित करने वाला यह नौजवान भारतीय कम यूरोप के लोगों में रचा हुआ कोई मानव अधिक लगता है। इस तरह के फैशन उच्च वर्ग तक ही सीमित नहीं हैं बल्कि मध्यम व निम्न वर्ग भी इससे अछूता नहीं है जिसे नये फैशन का प्रचलन देश की प्रगति का द्योतक समझा जा रहा है, कुछ समय पहले तक भारतीय समाज में उत्पन्न कुरीतियों का दोष सिनेमा पर थोप दिया जाता था, लेकिन आज घर घर मे घुसपैठ रखने वाला दूरदर्शन भी इस दोष की जिम्मेदारी से मुक्त नहीं हो सकता है। फन टाइम जैसे कार्यक्रम इसका उदाहरण है। इसलिए बेहतर होगा कि दूरदर्शन फन टाइम जैसे विदेशी संस्कृति पर आधारित कार्यक्रम को तुरन्त बन्द कर दें।

(हिन्दुस्तान २ मार्च)　　—राकेश

१ सीमेंट रोड, डी बी एम कालेज चौक, देहरादून-२४८००१

वनवासी आर्य महासम्मेलन सलकिया में शुद्धि समारोह के दृश्य



शुद्धि यज्ञ में सम्मलित होने के लिए आते हुए आदिवासी बन्धु।



सलकिया क्षेत्र में शोभा यात्रा के उपरान्त जन सभा का दृश्य।

स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज

(पृष्ठ ६ का शेष)

एक भ्रम का निवारण आवश्यक है। स्वामी जी ने बसन्त के दिन संन्यास नहीं लिया था। स्वामी जी ने तो अक्तूबर के प्रथम में सन्यास लिया। ऐसा तत्कालीन पत्रों से स्पष्ट संकेत मिलता है।

गुरुकुल में पांच ब्रह्मचारी हैं। नींव पक्की होनी ही चाहिए। गड्ढों से गुरुकुल चलता है। ऐसा श्री महाराज का कहना था। ईंट चाहिए। भवन तो बन ही जायगा। काशी बोरियां कोई दे गया है पत्र कोई धार्मिक पुरुष इनके लिए धन भी ले आयेंगे। ऐसी विचित्र बातें करने वाला अटल ईश्वर विश्वासी परमहंस दर्शनानन्द ऋषि की शिष्य परम्परा मे एक निराला साधु था। शुद्धि मे वह आगे, शास्त्रार्थ मे वह आगे, प्रचार मे आगे, विचार मे आगे, साहित्यकारो मे बेजोड़, पत्रकारो मे बेजोड़, विद्वानो मे शिरोमणि। उसके हृदय मे एक धधकती ज्वाला थी। त्याग की आग की लपटो ने जिसे लपेटा था। उस सच्चे विरक्त परमहंस को जिज्ञासु का बारम्बार प्रणाम।

पाठक जब उनके प्रेरणाप्रद जीवन चरित्र की कथा घर-घर मे रखें जीवन मे एक उल्लास पैदा होगा। नई चेतना का संचार होगा। वेद व ईश्वर पर श्रद्धा और बढ़ेगी।

रजि० न० डी० (सी०) १०८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (८-४-१९९०) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U ९३
R N 626/57 Licensed to post without prepay ment Licence No U 93 Post in D P.S.O.on 6 4-1990

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृतिभवन न्यास जोधपुर मे दि०२४ १२ ८९ रविवार को जोधपुर की समस्त आर्य समाजो की ओर से स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया । यज्ञ का आयोजन श्री मुकन्दास जी वानप्रस्थी एव श्री परसराम जी पुरोहित ने किया । जोधपुर के प्रसिद्ध आर्य विद्वान श्री कॅमेन्द्र जी स्नातक ने स्वामी जी के जीवन पर विस्तार से प्रकाश डाला । न्यास के कार्यकर्ता प्रधान श्री रतनलाल जी द्विवेदी एडवोकेट व मन्त्री ने भी स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डाला । उपस्थित आर्यजनो ने स्वामी जी द्वारा बताये गये राहो पर चलने का सकल्प लिया ।

—मन्त्री

दयानन्द श्मशान घाट, निजामुद्दीन दिल्ली पर चार दीवारी बनाने पर झगड़ा

१७ मार्च को लोदी रोड श्मशान घाट पर जो काण्ड हुआ जो हिन्दू मुस्लिम दगा नहीं था बल्कि वास्तविकता में कुछ असामाजिक तत्वो द्वारा घाट की भूमि को हथियाने की सोची समझी चाल थी । सदन में और उसके बाहर भ्रामक प्रचार किया जा रहा है । तथ्यों तथा सबूतों के आधार पर यह घाट लगभग ४० वर्ष से नई दिल्ली तथा दक्षिण दिल्ली की एक लाख से अधिक बड़ी बड़ी कालोनियो के हिन्दुओ सिक्खों द्वारा मृत शरीरों के अन्तिम सस्कार के लिए प्रयोग की जाती रही है । वक्फ बोर्ड का इस भूमि से कोई सरोकार नही है, क्योंकि २१ बीघे के लगभग यह भूमि सरकार की नजूल (मलकियत) है, जिसका प्रमाण लोधी रोड आर्य समाज के पास है क्योंकि यह समाज इस घाट का प्रबन्ध पिछले ४० वर्षों से कर रहा है । भारत पाकिस्तान विभाजन से पहले भी इस भूमि का प्रयोग हिन्दुओ के बच्चो के मृत शरीरो के लिए किया जाता रहा है ।

इसके बावजूद भी इस दगे से आर्य समाज का कोई सरोकार नहीं है ।

१७ मार्च को दयानन्द श्मशान घाट मे प्रस्तावित सत्सग पर कुछ बदमाश मुसलमानो ने सामूहिक हमला किया और पुलिस से उनकी मुठभेड होने से यह हादसा हुआ ।

हकीकतराय बलिदान-समारोह का १५ दिवसीय कार्यक्रम

देहरादून, इस जनपद में बसन्तोत्सव तथा धर्मवीर हकीकतराय बलिदान-समारोह का आयोजन आर्य उप प्रतिनिधि सभा, देहरादून के तत्वावधान में नगर के विभिन्न मोहल्लो तथा निकटवर्ती ग्रामो में आर्य समाज देहरादून के सहयोग से किया गया जो दो सप्ताह तक चला । इस आयोजन के सयोजक जिला उपसभा के उपप्रधान एव स्वतन्त्रता सेनानी मास्टर दलीप सिंह रहे । पुरुषोत्तमदास टण्डन मार्ग आर्य समाज मन्दिर (धामावाला), दीप लोक, जी एम रोड, ग्राम नालापानी, ग्राम जाखपुर तथा महेन्द्र विहार, धुस्सुवाला मोहल्ला ग्राम जोगामड आदि मे सभाएं आयोजित की गई ।

—देवदत्त आर्य ओंकार, प्रधान
आर्य उप प्रतिनिधि सभा, जिला देहरादून
सदस्य सूचना एव जन-सम्पर्क विभाग
आर्य प्रतिनिधि सभा (उ प्र)

भाषण-प्रतियोगिता

आर्य समाज अल्मोड़ा द्वारा ऋषिबोधदिवस (शिवरात्रि) के अवसर पर एक भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसका विषय था—'भारत की एकता और दृढ़ता प्राचीन श्रेष्ठ वैदिक सस्कृति के आधार पर ही सम्भव है ।' स्थानीय विद्यालयो के विद्यार्थियो ने इसमें भाग लिया । कु० सोनी बिष्ट कक्षा ११ एडम्स बालिका इण्टर कालेज ने ज्येष्ठ वर्ग में तथा श्री ललित मोहन बहुगुणा, कक्षा ७, विवेकानन्द विद्या मन्दिर ने कनिष्ठ वर्ग मे प्रथम स्थान प्राप्त किया । प्रतियोगियो को उत्तम साहित्य तथा प्रमाण पत्र प्रदान कर पुरस्कृत किया गया ।

—जयदत्त शास्त्री मन्त्री
आर्य समाज, अल्मोड़ा (उ० प्र०)



चित्र मे गुजरात विधान सभा के सदस्य भववन्त कापड़िया, हेमन्तभाई चपटवाला, डा० कनुभाई मावाणी, सांसद श्री काशीराम भाई राणा, हिन्दु मिलन मन्दिर के स्वामी श्री अमृतानन्द जी आर्य समाज के प्रधान श्री देव चोपड़ा कोषाध्यक्ष श्री सुभाष भाई वोरा प्रचारमन्त्री लक्ष्मण सिंह राजपुत और अशोक भाई चोपड़ा उपस्थित हैं ।

आर्य समाज द्वारा लोकप्रतिनिधियों का सम्मान

सूरत मे सम्पन्न वतमान चुनावो में निर्वाचित सांसद श्री काशीराम राणा तथा विधान सभा के सदस्य डा० कनुभाई मावाणी श्री भववन्त कापड़िया और श्री हेमन्त भाई चपटवाला का आर्य समाज मन्दिर सूरत में ११ मार्च रविवार को प्रात कालीन साप्ताहिक सत्सग के पश्चात आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री यशदेव चोपड़ा ने अभिनन्दन किया । उल्लेखनीय है कि चारो प्रतिनिधि यज्ञ में यजमान एव ... आहुतियां दिए । तदुपरान्त सभा में आर्य समाज के ... यशदेव चोपड़ा ने प्रतिनिधियों को निवेदन किया कि वे पजाब कश्मीर तथा आसाम की समस्याओं को सक्रिय रूप से समाधान करने के लिए अपना कदम बढ़ावें । एव इस बात पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द की जन्मभूमि टकारा को राष्ट्रीय स्मारक का गौरव दिलाने का पूर्ण प्रयास करें ।

वार्षिक उत्सव

आर्य समाज जातूर का ९८ वां वार्षिक उत्सव दिनांक १३, १४ व १५ मार्च ९० को उत्साह के साथ सपन्न हुआ इस अवसर पर डा० शिवकुमार शास्त्री सुरेन्द्रपाल जी आर्य भजनोपदेशक म नपुर धर्मदेव जी तथा प्रेमचन्द जी प्रेम' भजनोपदेशक इत्यादि नामवर वक्ताओं के उपदेश हुए, इस अवसर पर वर्ग व धर्मरक्षा विद्यार्थी वक्तृत्व स्पर्धा व महिला सम्मेलन का भी आयोजन किया गया ।

—मन्त्री आर्य समाज, जातूर

रूसी विद्वान् का सम्मान

(पृष्ठ १ का शेष)

स्मरण कराते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती को भारत की स्वतन्त्रता का मुख्य उद्घोषक बताया ।

इस अवसर पर आर्य विद्वान महात्मा आर्य भिक्षु, प० क्षितीश वेदालकार, प० सच्चिदानन्द शास्त्री, महाशय धर्मपाल, डा० धर्मपाल श्री सूर्यदेव और श्री मूलचन्द गुप्त ने भी अपने अपने विचार प्रकट किए ।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन,नई दिल्ली-२ से प्रकाशित ।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म् सार्वदेशिक साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वेदामृत

माता पुत्र को श्रेष्ठ भाग दे

नाभीकासि दुर्यो विश्वमायु व तिष्ठते प्रभवः शोको अग्नेः।
ज्येष्ठं माता सूनव भागमाधाद् अन्वस्य केतमिषितं सविता॥
ऋग्० २-३८-५॥

हिन्दी अर्थ—गार्हपत्य अग्नि से उत्पन्न होने वाला तेज घर का रक्षक है। वह सभी घरों का और सम्पूर्ण आयु का अधिष्ठाता है। (बालक के) पिता द्वारा संग्रह किए गए और पैतृक धन के सूचक श्रेष्ठ भाग को माता अपने पुत्र को देती है।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१ वर्ष २९ अंक १४] | दयानन्दाब्द १६६ | दूरभाष : ३२७४७७१ | वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे | वैशाख कृ० ५ सं० २०४७ १५ अप्रैल १९९०

सूर्यनगरी जोधपुर में ऋषि मेले का आयोजन

दिनांक २७, २८, २९ सितम्बर १९९० को

महर्षि दयानन्द स्मृति न्यास की ओर से ऐतिहासिक नगरी जोधपुर में दिनांक २७, २८, २९ सितम्बर ९० को स्मृति न्यास की पुण्यस्थली पर ऋषि मेले का आयोजन किया गया है।

ऐतिहासिक सूर्यनगरी जोधपुर महर्षि दयानन्द के जीवन की अन्तिम कार्य स्थली रही है। तत्कालीन जोधपुर नरेश महाराजा जसवन्तसिंह जी द्वितीय के निमन्त्रण पर स्वामी दयानन्द जोधपुर पधारे और राज्य के दीवान फैजुल्लाह खां की कोठी में राजकीय अतिथि के रूप में ठहराये गये। ३१ मई १८८३ ई० को महर्षि ने जोधपुर नगर में प्रवेश किया और १६ अक्तूबर १८८३ को यहां से आबू पर्वत के लिए प्रस्थान कर दिया।

सर प्रतापसिंह जी और रावराजा तेजसिंह जी स्वामी जी के अनन्य भक्त और आज्ञाकारी थे। इनके प्रयास से जोधपुर में आर्य समाज की स्थापना की। सर प्रतापसिंह जी आर्यसमाज के प्रधान बने। मारवाड़ की इस रियासत में आर्यसमाज को सरकारी तौर पर मान्यता प्राप्त की।

मानव जाति का दुर्भाग्य था कि इस महान नगरी में ही दिनांक २१ सितम्बर ८३ को महर्षि दयानन्द को विष दिया गया जो उनकी समाप्ति का कारण बनी।

बाऊलाल सोनी	रत्नलाल द्विवेदी	जगदीश आर्य
संयोजक	कार्यकर्ता प्रधान	मन्त्री

न्यूयार्क में वेद सम्मेलन

श्री धर्मजित जिज्ञासु ने सूचित किया है कि आगामी दिनांक २९, ३० सितम्बर १९९० को न्यूयार्क में वेद सम्मेलन का आयोजन किया गया है सम्मेलन में भाग लेने हेतु भारत से सुप्रसिद्ध विद्वान् आचार्य कपिलदेव द्विवेदी कुलपति गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर जा रहे हैं। श्री द्विवेदी वेद प्रचार हेतु कनाडा, सुरिनाम, यू०एस०ए० भी जायेंगे।

कश्मीर समस्या को गैर साम्प्रदायिक कहकर देश को गुमराह किया जा रहा है : स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

नई दिल्ली ३ अप्रैल।

गृहमन्त्री मुफ्ती मोहम्मद सईद ने लोक सभा में घोषणा की है कि कश्मीर की समस्या साम्प्रदायिक नही है। गृहमन्त्री की इस घोषणा पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने इसे एक दम असत्य और जनता को गुमराह करने वाला वक्तव्य बताया है। गृहमन्त्री से उनका प्रश्न है कि "अयोध्या में राम जन्मभूमि मन्दिर के खुलने के समय कश्मीर में मुस्लिम कट्टरपन्थियों द्वारा हिन्दू मन्दिरों के तोड़े जाने और उन्हें अपवित्र किए जाने को क्या कहेंगे ? मन्दिर को नष्ट किए जाने के अतिरिक्त वहां बड़े पैमाने पर हिन्दुओं की सम्पत्ति को लूटा और जलाया गया। यह दूसरी बात है कि केन्द्र में तत्कालीन राजीव गांधी की सरकार ने स्वामी जी के आग्रह पर हिन्दुओं की सुरक्षा और मन्दिरो का पुनर्निर्माण कराया। स्वामी जी का श्री मुफ्ती से दूसरा प्रश्न है कि कश्मीर घाटी से हिन्दुओ और सिखो को निकल कर जम्मू तथा अन्य जगहो पर शरण लेने का क्या कारण है ? क्या राज्य के मुस्लिम कट्टरपन्थियों द्वारा फैलाए गए आतंकवाद की इसमें कोई भूमिका नही है ?

लोकसभा में श्री मुफ्ती का यह वक्तव्य उनकी अपनी औंर साम्प्रदायिक मनोवृति पर लगाया हुआ धर्म निरपेक्षता का एक मुखौटामात्र ही है। श्रीमुफ्ती ने अपने बयानमें पाकिस्तान की प्रधान-मन्त्री श्रीमती बेनजीर भुट्टो के उस कथन की भी चर्चा की है जिसमें उन्होंने कश्मीर विद्रोहियों को दस करोड़ रुपया देने की बात

(शेष पृष्ठ १२ पर)

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम

हिन्दू जाति के दो महान राष्ट्र नायक भगवान राम और भगवान श्रीकृष्ण हैं। दोनों अपने समय के बहुत बड़े राजनीतिज्ञ भी थे।

वायु पुराण ७०/४८ के अनुसार भगवान राम का जन्म चौबीसवें त्रेता युग में हुआ था जिसके अनुसार भगवान राम को हुए एक करोड़ इक्यासी लाख उन्चास हजार बयासी वर्ष हो चुके हैं। रावण के समय में तीन दांत और चार दांत वाले हाथी वाल्मीकि रामायण के अनुसार होते थे जो आज से पचास लाख वर्ष पहले मिलते थे। इसके पश्चात् उनका लोप हो गया। रामचन्द्र जी का सत्य इतिहास वाल्मीकि रामायण में है। यह रामायण प्राचीन आर्य हिन्दू सभ्यता और संस्कृति का दर्पण है और इसके अनुसार श्रीराम एक आदर्श पुत्र, आदर्श भाई आदर्श पति, आदर्श मित्र और आदर्श सम्राट थे। लक्ष्मण एक ऐसे भाई थे जो अपने ज्येष्ठ भ्राता के दुःख और सुख में, हानि और लाभ में सदा उनके साथ रहे तो भरत ऐसे कि जिन्होंने चक्रवर्ती साम्राज्य को ठोकर मार दी।

सीता एक ऐसी नारी थी जो मन, वचन, कर्म से अपने पति में अनुरक्त थी युवकों और युवतियों के चरित्र निर्माण के लिए और कोई शिक्षापूर्ण एवं नैतिक आदर्शों से युक्त ग्रन्थ रामायण के अतिरिक्त नहीं हो सकता। वाल्मीकि रामायण के प्रारम्भ में भगवान श्रीराम के जिन गुणों का देवर्षि नारद ने बखान किया है वह प्रत्येक हिन्दू के लिए मार्गदर्शक होने चाहिए। जो इस प्रकार है—

इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न राम मन को वश में रखने वाले, अति बलवान, तेजस्वी, धैर्यवान और जितेन्द्रिय हैं। वह बुद्धिमान, नीतिज्ञ, मधुरभाषी, श्रीमान शत्रुनाशक, विशाल कन्धों वाले, गोल तथा मोटी भुजाओं वाले, शंख के समान गर्दन वाले, बड़ी ठोड़ी वाले और बड़े भारी धनुष धारण करने वाले हैं। उनकी गर्दन की हड्डियां मांससे छिपी हुई हैं। उनकी भुजाएं घुटनों तक लटकती हैं। उनका सिर सुन्दर एवं सुडौल है, माथा चौड़ा है। वह अति बलवान और विक्रमशाली हैं। उनके अंगों का विन्यास सम है। वह न तो बहुत छोटे हैं और न बहुत बड़े। उनके शरीर का रंग चिकना एवं सुन्दर है। वह बड़े प्रतापी हैं। उनकी छाती उभरी हुई है और नेत्र विशाल हैं और वे सब शुभ लक्षणों से सम्पन्न हैं। वह धर्मज्ञ, सत्यप्रतिज्ञ, कीर्तियुक्त, ज्ञाननिष्ठ, पवित्र, जितेन्द्रिय और समाधि लगाने वाले हैं। वह प्रजापति ब्रह्मा के समान प्रजा के रक्षक हैं, अति शोभायमान और सब के पोषक हैं, और वह शत्रुओं का नाश करने वाले हैं वह प्राणी मात्र के रक्षक और धर्म के प्रवर्तक हैं, वह अपने प्रजापालन रूप धर्म के रक्षक, स्वजनों के पालक, वेद और वेदांगों के मर्मज्ञ तथा धनुर्वेद में विख्यात हैं। वह सब शास्त्रों के तत्वों को भली-भांति जानने वाले, उत्तम स्मरण शक्ति से युक्त, सूझबूझ वाले सर्वप्रिय, सज्जन कभी दीनता को न दिखाने वाले और लौकिक तथा अलौकिक क्रियाओं में कुशल हैं। जिस प्रकार नदियां समुद्र में पहुंचती हैं उसी प्रकार उनके पास सदा सज्जनों का समूह रहता है। वह आर्य हैं, वह समदृष्टि हैं और सदा प्रियदर्शी हैं।

राम के समय से पूर्व राक्षसों के आक्रमण अयोध्या तक होने लगे थे। जब राम दण्डकारण्य में अपने वनवास का बहुत अधिक समय व्यतीत कर चुके तो ब्राह्मणों का एक शिष्टमंडल राम से मिला और उन्हें बताया कि किस प्रकार राक्षस उन पर अत्याचार कर रहे हैं। ब्राह्मणों ने श्रीराम से कहा कि हे महारथी राम ! जैसे देवताओं के राजा 'इन्द्र हैं उसी प्रकार आप इक्ष्वाकु वंश के प्रधान और पृथ्वी के स्वामी हैं। आप जैसे महात्मा, धर्मज्ञ एवं धर्म वत्सल राजा के होते हुए भी यह वानप्रस्थियों का दल राक्षसों के द्वारा अनाथों की भांति मारा जा रहा है। हे राम ! आप इधर आइये और इन तपस्वियों के मृत शरीरों को देखिये जिनको राक्षसों ने मार डाला है। तभी भगवान श्रीराम ने शपथ ली कि मैं इस पृथ्वी को राक्षसों से रहित कर दूंगा और उन्होंने यह कर दिखाया। इसके पश्चात श्री राम दक्षिण में महर्षि अगस्त्य के आश्रम में पहुंचे। महर्षि अगस्त्य ने उनका बड़ा सम्मान किया और उन्हें एक दिव्य तथा विशाल वैष्णव नामक धनुष, अमोघ तरकस और स्वर्ण से विभूषित खड्ग समर्पित की और कहा हे सम्माननीय राम ! इस धनुष, तरकस बाण खड्ग को संग्राम में अपनी विजय के लिये ऐसे धारण करो जैसे इन्द्र ने वज्र को धारण किया था।

क्या हिन्दू इस तथ्य को समझेंगे और समाज के भविष्य को सुरक्षित करेंगे ?

—पं० इन्द्रसेन शर्मा

श्री सच्चिदानन्द शास्त्री पी. एच. डी. उपाधि से सम्मानित

लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा अपनी २२-३-९० की मीटिंग में २७ शोध छात्रों को पी०एच०डी० उपाधि देना स्वीकार किया है। जिसकी सूचना दैनिक जागरण लखनऊ ने ४-४-९० के अंक में प्रकाशित हुई है।



श्री सच्चिदानन्द शास्त्री ने अपने शोध कार्य हिन्दी भाषा में "देव की भाषा का अध्ययन" दीर्घकालोपरान्त कार्य को पूर्ण किया।

जिसकी प्रक्रिया पूर्ण होने के पश्चात् लखनऊ विश्वविद्यालय ने आपको पी०एच०डी० उपाधि देना स्वीकार किया है।

श्री शास्त्री जी को अपने स्वाध्यायशील जीवन में यह कार्य पूर्ण किया है। और यह योग्य उपाधि प्राप्त की है समस्त आर्य जगत की ओर से उन्हें शुभ कामनायें बधाई प्राप्त हों।

—रामचन्द्रराव वन्देमातरम्
उपप्रधान सभा

दिनांक १८,१९,२० मई को राजापार्क जयपुर में आयोजित

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का

शताब्दी समारोह

जयपुर ७ अप्रैल।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी की अध्यक्षता में १८, १९, २० मई को जयपुर में राष्ट्रीय स्तर पर राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा का शताब्दी समारोह आयोजित किया गया है।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के अध्यक्ष श्री छोटूसिंह एडवोकेट की अध्यक्षता में सम्पन्न बैठक में सर्व सम्मति से प्रो० नेतिराम शर्मा को समारोह का स्वागताध्यक्ष एवं सत्यव्रत सामवेदी को संयोजक बनाया गया है। इस सम्मेलन में भारत के उपराष्ट्रपति श्री शंकरदयाल शर्मा प्रधानमन्त्री श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह कैबिनेट मन्त्री श्री अजीतसिंह श्रम एवं कल्याणमन्त्री श्री रामविलास पासवान एवं भारतीय जनता पार्टी के नेता श्री अटल बिहारी वाजपेयी आदि नेताओं को सम्मेलन में निमन्त्रित किया गया है।

सभी हिन्दी प्रदेश अंग्रेजी हटाने का फैसला करें

लक्ष्मीकान्त शर्मा

उत्तर प्रदेश के मुख्य मन्त्री ने एक बार फिर बड़ी दृढ़ता के साथ प्रदेश के सार्वजनिक कामों में अंग्रेजी के प्रयोग का विरोध किया है। शिक्षा के माध्यमों के विषय में भी अंग्रेजी के प्रयोग को समाप्त करने और अंग्रेजी माध्यम के पब्लिक स्कूलों की निन्दा की है। इससे अंग्रेजी समर्थकों और अंग्रेजों से जुड़े निहित स्वार्थ वालों में एक प्रकार की बौखलाहट आ गई है। कई अंग्रेजी अखबारों में खबरें ऐसी छपी हैं जैसे मुलायमसिंह ने अंग्रेजी प्रेमियों के खिलाफ कोई जंग छेड़ दी है। जहां अंग्रेजी अखबारों की यह शरारत जारी है वहीं पब्लिक स्कूलों के ईसाई समर्थकों ने भी खतरे की घण्टी बजा दी है।

भाषा के इस अहम सवाल पर जब भी कुछ करने की कोशिश की गई है तब अंग्रेजी प्रेमी और ईसाई धर्म के नाम पर देश में गुलाम मानसिकता को निरन्तर जीवित रखने वाले लोग सामने आ जाते हैं। संविधान के मौलिक अधिकारों से लेकर धर्मनिरपेक्षता, अल्पसंख्यकों के अधिकारों की दुहाई दी जाने लगती है। ईसाई मिशनरी स्कूलों के पादरी भी एकजुट हो जाते हैं और उनकी हां में हां मिलाने वाले ये अंग्रेजी के प्रेमी भी उनके साथ हो लेते हैं।

ईसाई संस्थाएं अंग्रेजी साम्राज्यवाद की घोषणा

भारतीय संस्कृति की पहचान भारतीय भाषाओं में है क्योंकि मनुष्य अपनी मातृभाषाओं से ही संस्कारित होता है। विदेशी भाषा के माध्यम से वह अपनी पहचान कभी भी स्थापित नहीं कर पाएगा क्योंकि जहां मातृभाषा के साथ मिट्टी, जातीय स्मृति, क्षेत्र, कुल की परम्परा का गहरा सम्बन्ध होता है वहीं इस समस्त तत्त्वों के अभाव में विदेशी भाषा देसी मानस से जुड़ने में असमर्थ होती है। इस दृष्टि से चाहे ईसाई धर्म हो या साम्यवाद हो इस देश में कभी पनप नहीं सकते जब तक कि इस देश की मातृ-भाषा और देश की मिट्टी से जुड़ कर पुनः संस्कारित न हो। ऐसा नहीं है कि यह बात ईसाई धर्म के प्रचारक पादरी लोग जानते न हों। सम्पूर्ण स्थिति का व्यंग्य यह है कि भारत में ईसाई धर्म साम्राज्यवाद के धर्म के रूप में स्थापित हुआ था। ब्रिटिश साम्राज्य समाप्त होने के बाद भी ईसाई संस्थाओं में वह साम्राज्यवादी तत्त्व गया नहीं और आज भी ये संस्थाएं ब्रिटिश साम्राज्यवाद के हितों के संवर्धन में लगी हुई हैं। दुर्भाग्य की बात यह है कि हमारे देश के प्रशासक मन्त्र धर्मनिरपेक्षता के नाम पर इनके कार्य कलापों में हस्तक्षेप करने का साहस नहीं करते।

अंग्रेजी माध्यम के पब्लिक स्कूल एवं फोर्ट विलियम कालेज में स्थापित परम्पराओं का निर्वाह करते हैं। इन स्कूलों का सम्बन्ध न तो ईसाई धर्म से है और न ईसाई संस्कृति से। ये केवल अंग्रेजी और अंग्रेजों के हितों की रक्षा करते हैं। इन स्कूलों के संचालक भारतीय पादरी आज भी यह समझते हैं कि यह देश कभी न कभी फिर से अंग्रेजों की छत्रछाया आएगा और यह तभी सम्भव होगा जब पूरा देश धीरे-धीरे करके संस्कार हीन होकर ईसाई धर्म और ईसाई धर्म के प्रस्ताव में आएगा। आज उन्होंने अपनी ऐसी स्थिति बना ली है कि देश के प्रशासन तक को यह साहस ही नहीं होता कि वे इन संस्थाओं को छू सकता। जब कभी किसी ने भी साहस किया धर्म निरपेक्षता और अल्पसंख्यकों के हितों के नाम पर ऐसा आंदोलन खड़ा कर दिया कि कोई भी कार्रवाई इन संस्थाओं के विरुद्ध संभव नहीं हो पाई। आज यदि मुलायमसिंह यादव उत्तर प्रदेश में हिन्दी लाना चाहते हैं तो इन पब्लिक स्कूलों के विरुद्ध सख्त कदम उठाने पड़ेंगे। बिना ऐसा किए हिन्दी को प्रतिष्ठित कर पाना असम्भव होगा।

लादी गयी भाषा

पूरे देश में अंग्रेजी जानने वालों की संख्या मुश्किल से एक प्रतिशत है। उस एक प्रतिशत में से मुश्किल से दस-पांच व्यक्ति ऐसे होंगे जिनको अंग्रेजी की भाषा प्रकृति का ज्ञान होगा। इसे जानने वालों में से कुछ ऐसे होंगे जिनको अंग्रेजी प्रेमी कहा जा सकता है। लेकिन हमारे देश के अंग्रेजी अखबार जब कभी भी भारतीय भाषाओं को प्रतिष्ठित करने का प्रश्न उठा है, अंग्रेजी प्रेमियों की दुहाई देने लगते हैं और हमारी सरकारें अभी तक इन दुहाई देने वालों के षडयन्त्रों के कारण भारतीय भाषाओं को उचित स्थान नहीं दे पातीं। अंग्रेजी भाषा के समर्थकों में एक बहुत बड़ा वर्ग उन नौकरशाहों का है जिनकी रोजी-रोटी अंग्रेजी से जुड़ी हुई है। यही कारण है जब कभी भी भारतीय भाषाओं को उनका उचित स्थान दिलाने का आंदोलन होता है तो ये तथाकथित अंग्रेजी प्रेमी और नौकरशाह एकजुट होकर तरह-तरह की बाधाएं उपस्थित करते हैं। यदि ईसाई पादरी अल्पसंख्यक होने की दुहाई देते हैं तो अंग्रेजी प्रेमी विश्व मानवता की बात करने लगते हैं और नौकरशाह राष्ट्रीय एकता की दुहाई देने लगते हैं। आज आजादी के चालीस वर्ष बाद भी यह हालत चल रही है।

आज आवश्यकता है कि सख्ती के साथ हिन्दी के कार्यक्रम को कार्यान्वित किया जाए, डा० लोहिया का कहना था कि यदि सरकार चाहे तो अंग्रेजी भाषा एक दिन में समूचे भारतवर्ष से निष्कासित की जा सकती है। उनके इस तर्क के पीछे केवल एक ही अवधारणा थी कि सरकार की ओर से भाषा सम्बन्धी आदेश हो उनका सख्ती के साथ कार्यान्वयन कराया जाय। जब कभी भी किसी कार्यक्रम को नहीं करना होता है तो उस पर केवल बहस की जाती है और बहस का इतना लम्बा सिलसिला बढ़ाया जाता है कि इसमें कर्म पीछे पड़ जाता है और गलत प्रकार के सैद्धांतिक विकार सामने आ जाते हैं। यही स्थिति जवाहरलाल नेहरू ने संविधान बनाते समय पैदा की थी और १९६६ में संसद में जब अंग्रेजी को हटा कर हिन्दी को, राष्ट्रीय भाषाओं को प्रतिष्ठित करने की बात होनी थी तो निहित स्वार्थ वालों ने विवाद को आगे कर दिया था और कर्म को पीछे धकेल दिया था।

नतीजा यह हुआ कि १९६७ में सिद्धांतों की बखिया उधेड़ते-उधेड़ते भारतीय भाषाओं की श्रेणी में अंग्रेजी मान ली गई। इसलिए अब जब कभी भी कोई अंग्रेजी हटाने की बात पर बहस शुरू करता है तो मेरे जैसा आदमी भयभीत हो जाता है क्योंकि यह अब सिद्धांत बन गया है कि जिस काम को न करना हो उस पर बहस कीजिए, नहीं तो न कीजिए। मुलायमसिंह यादव को चाहिए कि अंग्रेजी हटाने की बात पर बहस बन्द करें और हिन्दी को प्रतिष्ठित करने के कार्य में ठोस कदम उठाएं और उसकी अवहेलना करने वालों को दण्डित करें।

हिन्दी का दुर्भाग्य यह है कि जितनी भी हिन्दी की स्वयंसेवी संस्थाएं हैं उनमें से अधिकांश सरकारी अनुदान पर जीवित हैं। उनका कोई भी सम्बन्ध सार्वजनिक स्तर पर बोली जाने वाली हिन्दी भाषा से नहीं है। वे सरकारी अनुदान लेती हैं। हिन्दी के नाम पर पाखण्ड रूप में अंग्रेजी का विरोध करती हैं पर कर्म के स्तर पर किसी भी प्रकार गतिशील नहीं हो पाती हैं। क्योंकि विवशता के साथ उनका निहित स्वार्थ बना रहता है इसलिए उस पर किसी प्रकार की आंच आने नहीं देतीं। ये संस्थाएं केवल हिन्दी के समर्थन में लच्छेदार भाषण देती हैं और अंग्रेजी का विरोध भी करती हैं तो केवल उसी सीमा तक जहां सरकार का विरोध न हो।

राष्ट्र भाषा परिषद्, राष्ट्र भाषा प्रचार सभा, नागरी प्रचारिणी सभा आदि ऐसी संस्थाएं हैं जो हिंदी के नाम पर रोजी-रोटी कमाती हैं पर हिन्दी के प्रसार और विकास के लिए अंग्रेजी को अपना शत्रु नहीं मानतीं। इसलिए जब कभी भी सरकार को जरूरत होती है तो वह इन संस्थाओं का इस्तेमाल कर लेती है। इसलिये मुलायम सिंह जैसे मुख्यमन्त्री यदि ईमानदारी से अंग्रेजी को हटाना चाहते हैं तो उन्हें इन संस्थाओं से भी सावधान रहना होगा क्योंकि नैतिकता के छद्म में ये कब क्या कदम उठाएंगी-कहना मुश्किल है।

(शेष पृष्ठ ९ पर)

मुख्यमन्त्रियों द्वारा अंग्रेजी का बहिष्कार

श्री जगन्नाथ, रोहित कुञ्ज दिल्ली

गत २५ मार्च के सार्वदेशिक में उ०प्र० सरकार के मुख्यमन्त्री श्री मुलायमसिंह यादव द्वारा अंग्रेजीके बहिष्कार की विस्तृत सूचना छाप चुके हैं। जिसके अनुसार अंग्रेजी में मिली सभी चिट्ठियां और प्रार्थना पत्र उनके सचिवालय से हिन्दी में भिजवाने के लिए लौटा दिए जाते हैं। उन्होंने यह कठोर आदेश भी दिए हैं कि सभी सरकारी काम-काज हिन्दी में ही किया जावे और अंग्रेजी का प्रयोग कदापि न हो। अब हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल श्री बी० रचैया की विधान सभा में अपने अभिभाषण में की गई घोषणा का समाचार भी प्रकाशित किया गया है जिसके अनुसार राज्य का समस्त कार्य हिन्दी में ही होगा। वे श्री यादव और डा० प्रशान्त कुमार इसके लिए बधाई के पात्र हैं। संविधान द्वारा अपेक्षित और सरकारी आदेशों द्वारा वांछित तथा जनता द्वारा अभिप्राजित हिन्दी का प्रयोग यदि आज तक चलता रहा है तो केवल इसी कारण से कि कुछ थोड़े से अंग्रेजी भक्त अधिकारी हिन्दी के प्रयोग सम्बन्धी आदेशों का उल्लंघन करने में ही गौरव समझते रहे हैं और लोकतन्त्र का उपहास करते रहे हैं। अब दोनों मुख्य मन्त्री यथा शीघ्र प्रशासन को औपचारिक आदेश देकर और उनमें यह व्यवस्था करके कि हिन्दी में काम करने के आदेशों का उल्लंघन प्रशासनिक अनुशासन हीनता माना जायेगा, अपने प्रति जनता के विश्वास को सार्थक ही करेंगे। वास्तव में अभी तक अंग्रेजी का प्रयोग जारी रहना हिन्दी भाषी राज्यों में तो विशेष रूप से मानसिक दासता से पीड़ित अफसरों की जनता के प्रति गद्दारी ही मानी जायेगी।

गणतन्त्र में अधिकारियों द्वारा जन भाषा की उपेक्षा एक जघन्य अपराध है। जिसके लिए अथर्ववेद में निर्देश है कि जो मेरे अन्न, पानी और श्रेष्ठ वाणी को मिटाने पर तुला हो, उसे हे इन्द्र, हे अग्नि, हुंकार अथवा अस्त्र से मार भगाओ। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हिन्दी को आर्य भाषा अर्थात् श्रेष्ठ भाषा कहा है। अत. महर्षि के अनुसार हिन्दी की व्यवहार में विधिवत स्थापना अब होनी ही चाहिए। केवल घोषणा मात्र से काम नहीं चलेगा किन्तु अब तो मुख्य मन्त्रियों को कठोर होना ही पड़ेगा, क्योंकि यह संविधान के प्रति आस्था का प्रश्न है, स्वतन्त्र राष्ट्र की अस्मिता का प्रश्न है, और सबसे अधिक, जनतन्त्र के प्रति निष्ठा का तथा जनादेश के प्रति ईमानदारी का प्रश्न है।

प्राप्त सूचना के अनुसार श्री यादव ने यह भी आदेश दिए हैं कि केन्द्र से जो भी पत्र व्यवहार किया जावे वह भी मूल रूप में हिन्दी में हो। किन्तु, यदि बहुत जरूरी हो, तो हिन्दी के पत्रों के साथ उनका अंग्रेजी रूपान्तर भी भेजा जावे। इस सम्बन्ध में हमारा निवेदन है कि केन्द्रीय सरकार के ही आदेशों के अनुसार हिन्दी भाषी राज्यो से आये अंग्रेजी पत्रों के उत्तर भी केन्द्रीय सरकार के कार्यालयो द्वारा हिन्दी में दिए जा सकते हैं। इसलिए राज्य सरकारों द्वारा हिन्दी पत्रों के साथ अंग्रेजी रूपान्तर भेजने की आवश्यकता नहीं है। आदेशों में इसकी समुचित व्यवस्था होनी चाहिए।

मध्य प्रदेश क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा प्रदेश है राष्ट्र का हृदय प्रान्त भी यही है। यहां के मुख्यमन्त्री श्री सुन्दरलाल पटवा भी पीछे नहीं रहे और हिन्दी के प्रयोग सम्बन्धी इसी प्रकार के आदेश दिए हैं। बिहार और राजस्थान के मुख्यमन्त्री भी उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश तथा हिमाचल प्रदेश के दिखाये हुए मार्ग का अनुसरण करें तो भारत के इतिहास की एक युगान्तर कारी घटना ही होगी। फिर अन्य राज्यों की सरकारें भी जब अपनी-अपनी जन भाषाओं को इसी प्रकार का स्थान देंगी तभी राष्ट्र की पूर्ण स्वतन्त्रता का स्वपन साकार होगा।

इसी सन्दर्भ में राष्ट्र के उद्योगपतियों, व्यावसायियों, व्यापारियों चिकित्सकों, और इन्जीनियरों आदि का भी यह कर्तव्य हो जाता है कि वे सब अपने-अपने काम काज में अंग्रेजी के बजाय हिन्दी का प्रयोग करके राष्ट्र निर्माण के इस महायज्ञ में अपना योगदान करें। आर्य जनता का और आर्य संस्थाओं का तो यह विशेष कर्तव्य है कि इस पुनीत कार्य में सहयोग दें और इसके अनुकूल विशेष प्रचार अभियान द्वारा अनुकूल वातावरण बनायें।

केन्द्रीय कानूनी समिति के बढ़ते कदम

आर्यसमाज का दूसरा निःशुल्क कानूनी सहायता केन्द्र

२५ मार्च १९९०। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की कानूनी समिति के तत्वावधान में आज दूसरे निःशुल्क कानूनी सहायता केन्द्र का उद्घाटन आर्यसमाज बिरला लाईन्स, कमला नगर, दिल्ली की व्यवस्था के अन्तर्गत सम्पन्न हुआ। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल जी की अध्यक्षता में आयोजित इस समारोह में श्री रामफल बंसल एडवोकेट को मुख्य अतिथि के रूप में आमन्त्रित किया गया था।

डा० धर्मपाल ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कानूनी समिति के सदस्यों का धन्यवाद किया तथा श्री बन्सल को इस प्रकार के कार्यक्रमों को मार्गदर्शन देने का आग्रह किया। कानूनी समिति के संयोजक श्री विमलवधावन एडवोकेट ने कहा कि इस दूसरे निःशुल्क कानूनी सहायता केन्द्र के खुलने से आर्यसमाज के जन सम्पर्क को और बल मिलेगा। उन्होंने कहा कि जब तक दिल्ली में इसी प्रकार के और केन्द्र नहीं खुलते तब तक सभी आर्य समाजें आवश्यकता पड़ने पर इसी केन्द्र से सम्पर्क करें। जहां समिति के सदस्य प्रत्येक शनिवार सायं ५ से ७ बजे तक आर्यसमाज मन्दिर बिरला लाईन्स कमलानगर दिल्ली में कानूनी सहायता के लिए उपलब्ध रहेंगे।

श्री वधावन ने अपनी मनोकामना को दोहराते हुए कहा कि यदि देश की सभी राज्य तथा जिला स्तर की प्रतिनिधि सभाएं इस प्रकार के केन्द्र खुलवाने के प्रयत्न करें तो आर्य समाज को एक नई शक्ति मिल सकती है और ऐसे केन्द्रों के माध्यम से युवा वर्ग तथा अन्य समाज सेवकों को आर्य दर्शन का मौका मिलेगा।

श्री विमल वधावन के अतिरिक्त इस समारोह में श्री वेदप्रकाश गोयल तथा श्री प्रदीपकुमार अरोड़ा एडवोकेट भी उपस्थित थे।

अन्त में श्री जयप्रकाश आर्य प्रधान आर्यसमाज ने भी कानूनी समिति के सदस्यों तथा अतिथियों का धन्यवाद किया।

सम्पादक के नाम पत्र

मैं सार्वदेशिक पत्र का नियमित रूप से पाठक हो गया हूँ क्योंकि मुझे स्वामी दयानन्द सरस्वती के विचार और वेद से बहुत प्यार था और यह पत्र स्वामी दयानन्द सरस्वती के विचारो का और वेद विद्या का पूरा पूरा प्रचार करके जनताकी सेवाकर रहा है और मैं भविष्य के लिये आशा करता हूँ इसके और ज्यादा लोग इच्छुक होगे और आर्य समाज की उन्नति का रास्ता खोलेगा और जनता को समय समय पर आर्य समाज की नीति और भावी कार्यक्रमो की सूचना देता रहेगा इस पत्र के लिये सभा के प्रधान व सभी सार्वदेशिक सभाके अधिकारी इसके प्रकाशन के लिये सम्मानके पात्रहैं।

—विष्णुकुमार आर्य प्रबन्धक

पो० म्यालड़का, त० नोहर, जि० श्रीगंगानगर (राजस्थान)

मुनिवर पं० गुरुदत्त विद्यार्थी

कविरत्न जगदीश प्रसाद एरन

फूल तो दो दिन ही खिलकर, बहारे जाफ़ना दिखला गये।
हसरत तो उन गुन्चों से है जो बिन खिले मुरझा गये॥

पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी पाश्चात्य की चकाचौंध से प्रबल नास्तिक बन चुके थे। महर्षि दयानन्द का ही दिव्य बलिदान ऐसा था उन्हें यह आस्तिक तथा वैदिक, धर्मानुयायी बना दिया।

आपका जन्म १६ अप्रैल सन् १८६४ को हुआ था। बचपन से ही आप सुसंगठित एवं विलक्षण बुद्धि के थे। छोटी आयु में ही आपका विचार भक्ति भावना से प्रेरित हो गया। स्वाध्यायी तो थे ही कहीं से महर्षि दयानन्द कृत ईश्वर भक्ति का अनुपम ग्रन्थ ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका आपके हाथ लग गया। बस फिर क्या आपको संस्कृत पढ़ने का शौक लग गया तथा स्वयंमेव परिश्रम से महर्षि कृत ग्रन्थों का स्वाध्याय कर डाला।

सन् १८८० में आपने आर्यसमाज में प्रवेश किया। सन् १८८३ में एम०ए० करते ही आपको पाश्चात्य विद्वानों के दर्शन पढ़ने का शौक लगा। सन् १८८४ से ही आपने वैदिक सिद्धान्तों की सिद्धी की पुष्टि प्रारम्भ कर दी तथा विज्ञान के बल पर ईश्वर के आस्तित्व को समझने लगे। आपने इसी वर्ष "द रीजन आफ आर्यावर्त्त" नामक एक समाचार पत्र भी प्रकाशित कराया।

महर्षि दयानन्द के भयकर रुग्णावस्था में होने पर १९ वर्ष की अवस्था में ही आपको व लाला जीवनदास जी को लाहौर आर्य समाज की ओर से महर्षि की सेवा में भेजा गया। आप महर्षि के जीवन के अन्तिम दृश्य को देखकर चकित रह गये। उनके ब्रह्मचर्य व योग बल तथा ईश्वर विश्वास के गौरव को देखकर आपने नवीन जीवन धारण किया तथा आप महर्षि के अनन्य भक्त बन गये। यह समय था जब घोर नास्तिक गुरुदत्त कट्टर आस्तिक बन गये। उन्होंने ऋषि के जीवन में मृत्यु की अनुपम छवि देखी। आप उसी समय से ऋषि के जीवन को अपने जीवन में डालने का प्रयत्न करने लगे।

आप डी०ए०वी० कालेज के कर्णधारों में से एक थे। कालेज के लिए धन एकत्रित करने व वार्षिकोत्सव पर अपील करने का कार्य आपके ही सुपुर्द था। सन् १८८६ में सर्वाधिक अंकों से आपने एम०ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा गवर्नमेन्ट कालेज में प्रोफेसर बना दिये गये। सिद्धान्तों के पालन में आप कट्टर थे। शास्त्रार्थ मे आप भीष्म कहलाते थे।

आपने कुछ उपनिषदों का अनुवाद भी किया तथा वेद के शब्द कोष के नाम से एक पुस्तिका प्रकाशित करवाई जो आक्सफोर्ड में पाठ्य पुस्तक बन गई। आपने उपनिषद् अनुवाद का अंग्रेजी संस्करण भी प्रकाशित करवाया था। अष्टाध्यायी द्वारा संस्कृत पढ़ाने हेतु विद्यालय खोला जिसमें बड़ी आयु वाले जिज्ञासु भी शिक्षा प्राप्त करते थे। अद्वैतवादी स्वामी अच्युतानन्द जी आपके ही प्रभाव से द्वैतवादी बने तथा आर्य जगत के महान् संन्यासी हुए इसी प्रकार उस युग के महान् दार्शनिक स्वामी महानन्द पर आर्य समाज की छाप बिठाने का श्रेय आपको ही है। आपने १८ बार सम्पूर्ण सत्यार्थप्रकाश का पाठ किया तथा हर बार किसी न किसी नई बात का ज्ञान प्राप्त किया।

सन् १८८९ में पण्डित जी ने वैदिक मेगजीन नामक मासिक पत्र निकालना प्रारम्भ किया। इसके लेख अंग्रेजी के विद्वानों को बहुत पसन्द आते थे। योरोप में संस्कृतज्ञ वैदिक साहित्य के विषय में जो असंबद्ध व अप्रमाणिक लेख लिखते थे उनकी समालोचना पण्डित जी ही किया करते थे।

महर्षि के दिव्य बलिदान की आप पर ऐसी छाप पड़ी थी कि उसी समय से दिन-रात आर्यसमाज के काम में संलग्न रहने लगे। अधिक परिश्रम के कारण आपको क्षय रोग ने आ दबाया तथा अनेक उपचार करने पर भी १९ मार्च सन् १८८९ को प्रातः ७ बजे महर्षि का यह अनन्य भक्त केवल २६ वर्ष की अल्पायु में सदा-सदा के लिए सो गया। नश्वर शरीर पंच तत्वों में विलीन हो गया। जगद् गुरु स्वामी शंकराचार्य जी की भांति आपने भी इस छोटी सी आयु में अनेक जन्मों का कार्य पूर्ण कर लिया।

वैदिक गगन का यह नक्षत्र आज भी हमारे लिए भावी पीढ़ी के लिए व पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित नवयुवकों के लिए प्रेरणा स्रोत है।

सम्पूर्ण वेद भाष्य १० खण्ड ९ जिल्द में मूल्य ५५०) रुपए

ऋग्वेद भाग १ से ५ तक (महर्षि दयानन्द)	२१०)
यजुर्वेद भाग-६	७०)
सामवेद भाग-७	५०)
अथर्ववेद भाग-८	५०)
अथर्ववेद भाग ९+१०	९०)
वेदों का भाष्य का कुल मूल्य—	४५०) रु० है।

अलग-अलग लेने पर १५ प्रतिशत कमीशन दिया जावेगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नई दिल्ली-२

पाकिस्तान के नाम

जिस मां से जीवन को पाया, उसको आंख दिखाते हो।
जब से न्यारे हुए स्वयं ही, दुश्मन उसे बताते हो॥
पूरा देश तुम्हारा था, तुम टुकड़ों में सुख पाते हो।
छीना झपटी को ही क्यों अपना अधिकार बताते हो॥
त्याग और बलिदान भूलकर क्यों यह खून बहाते हो?
लूट. अपहरण और प्रपंच, मजहब क्या इसे बताते हो?
बंगला देश बना कैसे, क्यों सत्य वही बिसराते हो।
हाथ पैर फैलाने का, तुम भारी मूल्य चुकाते हो॥
सर्पों के विस्तारवाद को, क्यों अविवेक पढ़ाते हो?
गरुड़ों से लोहा लेने, दुस्साहस कर क्यों आते हो?
जो न तुम्हारे हो पायेंगे, उनका दंभ दिखाते हो?
किन्तु स्वयं कितने पानी में, क्यों यह वृथा छिपाते हो?
ललचाते काश्मीर देखकर, अपना काल बुलाते हो।
नहीं स्वप्न में भी पाओगे, निज को वृथा भ्रमाते हो।
अंगारों को धधकाने का दुष्परिणाम भुलाते हो॥
जल जायेगा किला कागजी दुर्लभ समय गवाते हो।
महिषासुर बन आज खड़े हो काली स्वयं बुलाते हो॥
रणचण्डी की प्यास बुझाने, निज को ग्रास बनाते हो।
पाकिस्तान! पाक भावों से क्यों न स्वयं भरजाते हो?
मा फीका पकवान संजोये।
ऊंचे नाम रखाते हो॥

—डा० महाश्वेता चतुर्वेदी, बरेली

शास्त्रार्थ महारथी श्री पण्डित रामचन्द्र देहलवी

आर्य समाज के महान तार्किक शास्त्रार्थ महारथी पण्डित रामचन्द्र देहलवी प्राय: देहलवी जी के नाम से सम्बोधित किये जाते थे। आप भारत में ही क्या सारे भारत मे आपकी विद्वता, तार्किक शैली, ओरी जुबानी, अथक परिश्रमी व धुन के धनी होने के कारण प्रसिद्धी थी। आप हिन्दी, अ ग्रे जी, संस्कृत, अरबी तथा फारसी के पूर्ण विद्वान थे। आपने वैदिक साहित्य के साथ-साथ हिन्दू व जैन, सनातनी मुसलिम व ईसाई धर्म का भी पूर्ण अध्ययन किया था।

इस महान विभूति का जन्म सन १८८१ में रामनवमी के पवित्र दिन नीमच कैन्ट (म प्र) मे हुआ था। आपके पूज्य पिताजी श्री मुन्शी छोटेलाल जी धार्मिक प्रवृत्ति के थे। आपकी माता श्रीमती रामबेई दिल्ली की रहने वाली थी। पण्डित रामचन्द्र जी को आर्य समाजी बनाने का श्रेय इन्हीं को है। आपने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा नीमच मे ही की तथा बाद में उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु इन्दौर चले गये।

१८ वर्ष की अल्पायु में ही आपका विवाह दिल्ली निवासी श्रीमती कमला देवी नामक विदुषी कन्या से हुआ। जीविकोपार्जन के लिए आपने नीमच में ही एक प्रायमरी स्कूल में अध्यापन कार्य आरम्भ किया, किन्तु परमात्मा को जिस विभूति से महान कार्य करवाने हो वह भला एक जगह कैसे ठहर सकती है। गृह कलह के कारण कुछ दिन बाद अपनी ससुराल देहली आ गये।

आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी न थी, फिर भी धर्म प्रचार के लिए जहां कहीं भी जाते तांगा खर्च अपनी जेब से दे देते थे। धर्म प्रचार की ऐसी लगन थी कि लगातार १५ वर्ष (सन १९१० से १९२५) तक दिल्ली के फव्वारे तथा गांधी ग्राउन्ड पर आप वैदिकधर्म के सत्य स्वरूपको बतलाते रहे। प्रतिदिन हजारो की सख्या में उपस्थिति रहती। धुन के इतने पक्के थे कि पुत्र तथा पत्नि के देहवसान के दिन भी आपने कथा बन्द न रखी। इस काल में पण्डित जी की तार्किक शैली, तुरन्त बुद्धि व कार्य प्रणाली का बोल बाला सारे भारत मे हो गया।

नीमच मे आपने व आपके परम मित्र सेठ श्री रामविलास एम. (लेखक के पिता) जिन्हे लोग बाद मे मौलवी साहब ही कहने लगे थे। जुम्मा मसजिद के एक सूले मौलवी से बड़ी कठिनाई से उर्दू व कुरान पढ़ी। उस समय कुछ लोग अन्य मत वालो से कुरान पढने देने के हक मे नही थे। इस मौलवी को ये दोनो क्रम क्रम से रात होते कन्धो पर बिठाकर घर लाते तथा प्रात. काल की नमाज होने के पहले वापस मसजिद में छोड़ आते। रात भर उस मौलवी की सेवा करते तथा उर्दू व कुरान पढते। इसी प्रकार बड़ी कठिनाई से आपने बाइबिल का अध्ययन किया। आप जब सस्वर आयत पढते थे तो अच्छे अच्छे मौलवी भी दांतो तले उगली दबा लेते थे। फिरोजपुर के वार्षिकोत्सव पर तो इसलिए एक पठान लड़की ने आपके स्वर पर लट्टू होकर १००) भेंट किये।

आपका पहला शास्त्रार्थ बाड़ा हिन्दू राव में मुसलमानो से हुआ, जिसके निर्णायक न्यायाधीश रवरेण्ड मिस्टर जुडास महोदय थे। विजय का सेहरा आपके मस्तक पर बधा। आप वैदिक शास्त्रार्थ समर में "भीम" नाम से विख्यात हुए। इसके बाद आपने जीवन भर भारत के प्रत्येक शहर में घूम घूमकर विभिन्न मतावलम्बियों से शास्त्रार्थ किए। आपकी इस असाधारण सफलता के मुख्य तीन कारण थे—(१) आपको सभी सिद्धान्तों का सही व गम्भीर अध्ययन था। (२) आप विपक्ष के महापुरुषों का धार्मिक पुस्तकों का नाम बड़े सम्मान सूचक शब्दो से लेते थे—(३) आप अपने व्यवहारिक जीवन में वैदिक सिद्धान्तों के अनुकूल आचरण करते थे।

आपका व्यक्तित्व बड़ा आकर्षक था। गौर वर्ण ऊंचे कद के, सर पर साफा, घुटनो तक की अचकन, चूड़ीदार पायजामा, जरीदार जूतियां आखों पर सुनहरी फ्रेम का चश्मा हाथ में घड़ी व हाथ में मूठदार छड़ी रखते थे। आपके चेहरे पर रौब व रौनक तथा मुख पर मुस्कराहट सदा खेलती रहती थी। खड़े होते थे तो हजारो मे एक नजर आते थे वाणी मे मिठास तथा ओजस्विता व हृदय मे विशालता ईश्वरीय देन थी।

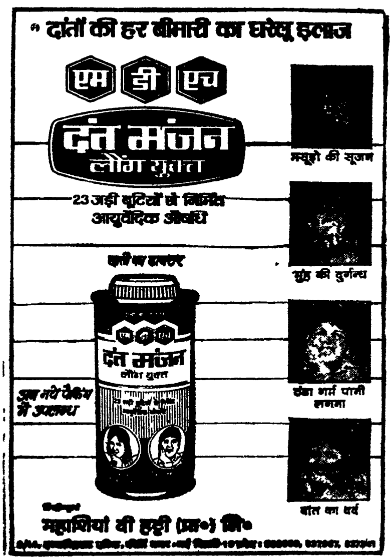
लगभग ८० वर्ष की आयु तक घूम घूमकर सारे भारत मे धर्म ध्वजा लहराते रहे। हैदराबाद सिन्ध का राष्ट्रीय सत्याग्रह आन्दोलन आपकी ही देन था। इसके बाद एक रिक्शा दुर्घटना के कारण आपके हाथ में कम्पन हो गया था, तभी से पण्डित जी लगातार कमजोर होते चले गये।

सन १९६७ मे आपको सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वर्तमान प्रधान श्री आनन्दबोध जी महाराज ने देहली अस्पताल में आपको भर्ती कराया। लगातार ३ माह तक मृत्यु से संघर्ष करते रहने के बाद ३ फरवरी को यह ज्योतिर्मय दीप बुझ गया। सारे संसार को आकाश वाणी द्वारा यह दुखद सूचना मिल गई।

वैदिक धर्म का प्रबल प्रहरी, शास्त्रार्थ केसरी महर्षि के अनन्य भक्त; ओ३म् का जाप करता हुआ ओ३म् मे विलीन हो गया।

निगम बोध पर पूर्ण वैदिक पद्धति से आपका अन्तिम संस्कार किया गया।

—जगदीश प्रसाद [illegible]



भारते मातु भारती

विश्वेश्वरनाथ त्रिपाठी

संस्कृति एवं सभ्यता का निर्माण जाति की त्याग, तपस्या एवं आत्म बलिदान की अभूतपूर्व घटना है। सृष्टि के प्रारम्भ से ही मानव ने अपनी जीवन शैली के लिए आधारभूत मन्तव्यों, आदर्शों एवं मानदण्डों को स्वीकार किया, उसमें ईश्वरीय वाणी, वेद वेदांग, उपनिषद, दर्शन, व्याकरण, स्मृतिग्रन्थ, रामायण, महाभारत, गीता आदि ग्रन्थों का महत्वपूर्ण योगदान है। हम दृढ़ता से कह सकते हैं कि आज जिसे हम जीवन पद्धति स्वीकार रहे हैं, उसमें जो भी आदर्श प्रतिबिम्बित हो रहा है वह उन्हीं ऋषि प्रणीत ग्रन्थों की अमर रचनाओं का ही प्रारम्भसे लेकर आज के वैज्ञानिक युग तक के मानव ने स्वीकार किया है कि विचारों को मूर्तरूप प्रदान करने में भाषा का गौरवपूर्ण स्थान होता है, दूसरे शब्दो में भाषा विचारों की वाहिनी होती है, सौम्यता एवं स्थायी धरातल देती है, संस्कारपूत करती है, जिससे संस्कृतियों का निर्माण स्थायित्व प्राप्त करता है।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि जिस संस्कृति एवं सभ्यता के प्रभावपूर्ण आदर्श के आलोक में हम गर्व का अनुभव करते हैं, उसकी जननी देवभाषा संस्कृत है, जो संस्कार एवं विचारपूत है, परिमार्जित एवं सारगर्भित होने के साथ साथ प्राञ्जल एवं परिष्कृत भी है। यही कारण है कि जब पाश्चात्य विद्वान लैटिन एवं ग्रीक की बात कहते हैं तो उन्हें देवभाषा संस्कृत के आस्तित्व को 'विश्व भाषाओं' की जननी के रूप में अंगीकार करना पड़ता है। व्याकरण सम्मत अर्थ के अनुसार संस्कृत में वह शक्ति विद्यमान है कि संसार में बोली जाने वाली प्रत्येक भाषा के शब्द की व्याख्या सुगमता के साथ व्यक्त कर अन्तर्निहित अर्थ को स्पष्ट अर्थ प्रदान कर देती है। भाषा का यह महानतम गुण ही संस्कृत की महत्ता को सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर आज पर्यन्त प्रवाहमान किये हुए है। जिसका जीता जागता प्रमाण है विश्व के १०० (एक सौ) से अधिक विश्व विद्यालयो में संस्कृत शिक्षा की उच्चतम शिक्षण व्यवस्था। रही बात भारत की आप देखेंगे कि भारतीय जन मानस ने अपनी इस संस्कृत भाषा की पूंजी को जीवन की प्रत्येक धारा में जोड़ रक्खा है। गर्भाधान संस्कार से लेकर अन्त्येष्टि पर्यन्त सोलह संस्कारों में इसका अनन्यतम प्रयोग, जिसके बिना कोई भी धार्मिक क्रिया सम्पन्न ही नहीं होती। सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का उद्घाटन एवं समापन भी इसी भाषा के मन्त्रोच्चारणों के साथ प्रारम्भ एवं समाप्त होते हैं। क्या ग्राम, क्या शहर सभी जगह संस्कृत विद्यालय, विश्वविद्यालय एवं गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति इसी भाषा से प्राणमयी रही हैं। इतना ही नहीं आज का वैज्ञानिक भी इसी के ग्रन्थों मे से अपने मार्गदर्शन के रूप में विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों एवं विद्याओं तथा कम्प्यूटर शिक्षा का मार्ग खोजकर इस भाषा के ग्रन्थ महत्ता को स्वीकार कर रहा है।

दुर्भाग्य की बात है कि महाभारत के पश्चात् समय की परिवर्तनशीलता के साथ-साथ इसमें भी परिवर्तनों की धारा दिखाई देने लगी। फिर भी भरतमुनि, भास, भामह, भट्टि, दण्डी, कालिदास, भारवि, वामन, धनञ्जय, भवभूति, हर्ष, भोजराज, मम्मट, पण्डितराज, जगन्नाथ, महर्षि दयानन्द आदि विद्वानों ने जिस संस्कृत साहित्य का प्रणयन किया, वह विश्व के समस्त विश्वविद्यालयों में सम्मान के साथ समायोजित है। इस गौरव के पृष्ठभूमि में महानतम योगदान है देव भाषा संस्कृत का। देव भाषा का प्रयोग हम इसलिए करते हैं कि इसमें अभिव्यक्ति की जो गरिमा विद्यमान है कि वह संसार की किसी भी भाषा में उपलब्ध नहीं। इस भाषा का विशेष गुण है कि सूत्र के रूप में अधिक से अधिक भावनाओं का समायोजन जिसमें शब्द और अर्थ गाम्भीर्य दोनों परिप्लुत होते हैं। विदेशी शासकों ने भी इस भाषा के गौरव को दृष्टिगत रखते हुए इसके साथ असहमति व्यक्त करने में हिचकिचाहट दिखलाई है। भले ही उन्होंने इसके ग्रन्थों, पुस्तकालयों को नष्ट करने के अनेकों प्रयत्न किए फिर भी (झञ्झावातो) के दौर से निकल कर हम जिस स्वर्णिम विहान का दर्शन का दर्शन करने के लिए उत्सुक थे उसकी प्रभापूर्ण प्रकाश मिलना तो दूर रहा तिमिरातिरोहित होने के आसार हमारी इस जगत् जननी देवभाषा के समक्ष उपस्थित होते जा रहे हैं। जिससे शंका पैदा होने लगती है कि क्या हम अपने अस्मिता की रक्षा कर सकेंगे। ऐसी परिस्थितियों को देखकर ही संस्कृत की एक पंक्ति स्मरण हो रही है कि—'

> उत्पत्स्यते च मम कोऽपि समानधर्मा:।
> कालो-हि-अयं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी:॥

इस किरण वाक् को अंगीकार करते हुए जब कतिपय संस्कृत विहीन लोगों ने इस भाषा की उपेक्षा करते हुए इसे शिक्षा जगत से दूर करने की व्यूह रचना की तो आर्य समाज की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक सभा के प्रधान माननीय स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने इसकी रक्षा के लिए अनेकों ठोस उपाय समय-समय पर प्रस्तुत किए यहा तक कि न्यायालयो एवं उच्च-न्यायालयो में भी इस अन्याय के विरुद्ध याचिकाएं दायर कीं। परिणाम स्वरूप उच्चतम न्यायालयके मान्य न्यायाधीश श्रीई.एस.वेंकट रमैया महोदय ने अपने ऐतिहासिक निर्णयात्मक निर्देश में सरकारको आदेश दिया कि यदि संसार के १०० विश्वविद्यालयों में इसके सांगोपांग शिक्षा की व्यवस्था हो सकती है तो कोई कारण नहीं कि जिस देश का समग्र गौरवपूर्ण इतिहास इस भाषा का ऋणी है उसे पढ़ाने से रोका जाए। यह निर्णय तब तक कार्यान्वित माना जाय जब तक कि इस सम्बन्ध में कोई पूर्ण निर्णय हो जाता है। यह निर्णय जहां मनीषी न्यायमूर्ति के सांस्कृतिक प्रेम को दर्शाता है, वहीं औचित्य की भी रक्षा कर हमें गर्व के साथ जीने का मार्ग-दर्शन करा रहा है। इस प्रकार संस्कृत भाषा पर आया हुआ संकट टल तो गया फिर भी इसके पीछे रची जाने वाली दुरभि सन्धि से हमें सावधान रहना है। हर्ष की बात है कि आर्य समाज के सात्विक चिन्तक इसकी महत्ता को समझते हुए उसको मन्त्रों, उत्सवों, पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से जनमत को जागृत करने में प्रयास रत हैं। इस प्रकार की विचारभूमि को धरातल देना भारतीय संस्कृति एवं वर्तमान समय के मार्गदर्शन को भी प्रशस्त करना है। इस सन्दर्भ में मैं एक बात प्रसन्नता से कहता हूं कि आदरणीय स्वामी आनन्दबोध-जी सरस्वती जो आर्य समाज की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक सभा के प्रधान हैं अपने विचारो को पुष्ट कर देते हुए स्वर्गीया श्रीमती इन्दिरा गांधी तक के अंग्रेजी में छपे निमन्त्रण पत्र को अस्वीकार कर अपनी असहमति प्रकट की है और आज भी इस प्रकार के अस्वीकार कर अपनी असहमति प्रकट की है और आज भी इस प्रकार के प्राप्त निमन्त्रण पत्रो का स्वामी जी की दृष्टि में कोई भी स्थान नहीं जो अंग्रेजी में छपे हों। ●

कशमीर से पलायन करने वालों की सहायता करें

दुर्भाग्य से काश्मीर मे पाकिस्तान के घुसपैठियो, उनके द्वारा प्रशिक्षित आतंकवादियो तथा साम्प्रदायिक तत्वों ने ऐसी हालत पैदा कर दी है कि वहां पर हिन्दुओं का एक सम्मानित नागरिक के नाते ठहरना कठिन होता जा रहा है। आतंक और दुर्व्यवहार के कारण सैकड़ों ही नहीं हजारों परिवार अपने घर छोड़कर देश के दूसरे भागों में आ रहे हैं। हो सकता है कुछ परिवार हरयाणा के नगरो में भी आयें। यदि ऐसे विस्थापित परिवार यहां आयें तो उनके निवास भोजन आदि का प्रबन्ध आर्य समाजों को दूसरी संस्थाओं का सहयोग लेकर करना चाहिये।

मेरा सभी आर्य समाजों से यह निवेदन है कि वे अपने अपने नगर मे दूसरी समाज उद्देश्य वाली संस्थाओं से मिलकर समिति का गठन करें और विस्थापितों के लिये सब प्रकार का प्रबन्ध करें। दयानन्द मठ रोहतक मे दस परिवारों में अस्थाई आवास का प्रबन्ध कर दिया गया है। आप आर्य-समाजें अथवा आदि संस्थाएं भी प्रबन्ध करके सभा को सूचित करें।

—प्रो०.शेरसिंह

आर्य समाज की गतिविधियां

आर्य वीर दल हरयाणा की बैठक

प्रांतीय संचालक श्री उमेदसिंह शर्मा के निर्देश पर आर्य वीर दल की प्रांतीय बैठक रविवार दोपहर १२ बजे दिनांक ८-४-९० को आर्य समाज माडल टाउन, पानीपत मे हुई। ग्रीष्म अवकाश २५ मई से आरम्भ हो रहा है अत: इस बैठक मे शिविरो को अन्तिम रूप दिया गया। अपनी अपनी योजना बना कर लावें। बैठक मे निम्नलिखित विचारणीय विषय रहे—

१—प्रत्येक मण्डल की प्रगति (उपसंचालक द्वारा)।

२—नये शिक्षको की भर्ती।

३—आर्य वीर विजय 'पत्रिका' की प्रगति।

४—आगामी प्रान्तीय सम्मेलन।

५—ग्रीष्म अवकाश शिविर।

शेष संचालक जी की आज्ञा से।

नोट :—भोजन की व्यवस्था बैठक से पूर्व हुई।

—वेदप्रकाश आर्य, प्रान्तीय मन्त्री

समाचार

आर्य नेता श्री सत्यपाल आर्य का हृदय गति रुक जाने से देहावसान हो गया। वे ६८ वर्ष के थे। आर्य समाज ज्वालापुर के विभिन्न पदों पर रहते हुए उन्होंने वैदिक धर्म का प्रचार किया। वे महर्षि दयानन्द के सच्चे अनुयायी थे। अनेक सामाजिक संगठनो से उनका गहरा सम्बन्ध था। आर्य समाज ज्वालापुर तथा अन्य संस्थाओं ने शोक प्रस्ताव पारित कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की हैं। वे अपने पीछे पत्नी २ पुत्र तथा ३ पुत्रियां छोड़ गये हैं।

—देवराज, मन्त्री

आर्य समाज ज्वालापुर (हरिद्वार)

आर्य समाज स्थापना दिवस

आर्य समाज नीमच द्वारा आर्य समाज का ११६ वां आर्य समाज स्थापना दिवस बड़ी धूम धाम से मनाया गया। इसके अन्तर्गत प्रभात फेरी निकाली गई। यज्ञ हुआ तथा अनेक वक्ताओं ने महर्षि दयानन्द के जीवन व आर्य समाज के राष्ट्रीय समाज सुधारक व धार्मिक कार्यों पर प्रकाश डाला। श्री प्रेम सुख जी वर्मा ने आर्य समाज को एक प्रकाश स्तम्भ की संज्ञा दी जो समय समय पर मानव मात्र को सही दिशा बताता है।

अन्त में सस्था प्रधान डा. मोतनदास रामचाणी व मन्त्री श्री भगवती प्रसाद जी कानाधी ने सबका आभार प्रदर्शित करते हुए आर्य समाज के लोकोपकारी कार्यों को अधिक प्रगति देने की अपील की।

—जगदीश प्रसाद आर्य, उपमन्त्री

नेत्र चिकित्सा शिविर

सण्डीला हरदोई दिनांक १४-२-९० से २२-२-९० तक प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र सण्डीला मे आर्यसमाज सण्डीला द्वारा नि:शुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन श्री विमल कुमार एडवोकेट आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के सयोजकत्व में सम्पन्न हुआ। जिसमें ३४३ नेत्र रोगियों को परीक्षित किया गया तथा ६३ रोगियो को भर्ती करके आप्रेशन किया गया। सभी को औषधियां एव चश्मे नि.शुल्क प्रदान किए गये इस कार्य मे शल्य चिकित्सक डा० बी० के० श्रीवास्तव एव डा० गौतम चिकित्सा निदेशालय लखनऊ मण्डल तथा डा० वीरेन्द्र कुमार मिश्र नेत्र सर्जन बलरामपुर चिकित्सालय का विशेष योगदान रहा आर्यसमाज सण्डीला सभी सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त करता है।

—सत्य प्रकाश, मन्त्री

आर्य समाज सण्डीला

शुभ विवाह

गत वर्ष १९९० रविवार का नजीपधार आर्य समाज के प्रधान श्री दिल्लीराम कार्की जी के सुपुत्र श्री नारायण जी कार्की का शुभ विवाह वैदिक रीत्यानुसार पं० गंगाराम कश्यप जी द्वारा सुसम्पन्न हुआ। इस विवाह माध्यम से इस अन्चल के जन साधारण के बीच आर्य समाज एवं एवं वैदिक विचार का व्यापक प्रचार हुआ।

वैदिक विवाह सम्पन्न

—तपीप्रसाद हाई स्कूल श्री डोभा (सिवान) के प्रांगण में आचार्य श्री दिनेशचन्द्रसिंह कामरेड (मार्क्सवादी) की सुपुत्री का विवाह ४ फरवरी की रात्रि मे नालन्दा के वैदिक विद्वान डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ वामपन्थी लोगो के बीच में वैदिक विवाह की व्याख्या बड़ी ही प्रभाव शाली रही। लोगो ने अपने सन्तान का विवाह इसी पद्धति से कराने की इच्छा प्रकट की।

—आर्य समाज मुसाढ़ी का ३३ वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न नालन्दा जिले के अन्तर्गत मुसाढ़ी आर्य समाज का ३३ वां वार्षिकोत्सव सानन्द सफल हुआ इस अवसर पर श्री आशाराम जी हरियाणा स्वामी मोक्षानन्द जी मथुरा श्री महावीरसिंह पटना के पुरोधा होते। यह उत्सव ९, १०, ११ फरवरी को आयोजित हुआ।

—पटना-जिला डा० चकबिहारी ग्राम में आर्य समाज का पांचवां वार्षिकोत्सव बड़े धूम धाम से मनाया गया इसमें स्वामी मोक्षानन्द सरस्वती मथुरा डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी नालन्दा, बहन मनोरमा शर्मा अलीगढ़ एवं श्री महावीरसिंह पटना के पुरोगम हुए।

—आयुष्मती कुमारी निर्मलेश एम०ए० (हिन्दी, समाज शास्त्र) सुपुत्री श्री रूपलाल शाक्य प्रवक्ता नि० बड़पुर मानपुरहरी जनपद मैनपुरी का वैदिक विवाह सस्कार चि. सुरेशचन्द्र शाक्य एडवोकेट सुपुत्र श्री ग्यासीराम शाक्य ग्राम अछनेरा, आगरा के साथ दिनांक १९-२-९० को उनके आवासित नगर मेवर मे प० श्री बालकराम आर्य पथिक एवं पं० श्री वृजमानुदेव आर्य के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ।

—बहादुरसिंह सभाप्रधान

आर्य समाज निम्नुघढ़, फर्रुखाबाद (उ० प्र०)

शुद्धि समाचार

दिनांक ५-२-९० प्रात: शुद्धि सभा के प्रधान मन्त्री श्री नामचन्द रिवारिया के नेतृत्व में शुद्धि सभा के उपप्रधान डा० सुखदयाल भूटानी एवं आर्य समाज बाजार सीताराम के भूतपूर्व प्रधान श्री दीनानाथ पल्टा के साथ जिला अलीगढ़ में स्थित हसायन में शुद्धि हुए ९५ हरिजन परिवारों में कपड़े, स्वेटर, पैन, फुटे एवं कापियों का वितरण करने के लिये गये। वहां पर हवन यज्ञ के पश्चात श्री दीनानाथ पल्टा जी ने कहा कि हमें पुन: अपने बिछुड़े हुये हिन्दू भाईयों को गले लगाना चाहिये।

डा० सुखदयाल भूटानी ने कहा कि इन लोगो से हमारा खून का रिश्ता है। शरीर से नाखून कभी अलग नही किया जा सकता। आपके कष्ट हमारे कष्ट हैं। हम आश्वासन देते हैं कि हम कठिन से कठिन कार्य में हमको सहयोग देते रहेंगे।

इस अवसर पर श्री गोपी बाल्मिकी जो कि लगभग ७० वर्ष के थे, ने कहा कि यह अवसर हमारे लिये खुशीका दिन है जबकि हमारे बड़े भाईयों ने हमारा स्वागत किया और हमे अपनाया। इसी प्रकार रामलाल जोबो ने कहा कि मैं प्रयत्न करूंगा कि मेरे पुन: शुद्ध हुये भाईयो में राम और श्रीकृष्ण के प्रति पुन: आदर प्रकट करना।

अन्त में शुद्धि सभा के प्रधानमन्त्री श्री नामचन्द रिवारिया ने कहा कि जब भी आप पर कोई विपत्ति आयेगी तो शुद्धि सभा के अधिकारी उसमें पूरा पूरा सहयोग देंगे। मैं यह विश्वास दिलाता हूं।

वार्षिक चुनाव

आर्य समाज लातूर की सर्वसाधारण सभा में आगामी वर्ष के लिए निम्न पदाधिकारी सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए प्रधान श्री हरिश्चन्द्र जी पाटिल, मन्त्री श्री ओमप्रकाश पाराकर, कोषाध्यक्ष श्री धर्मवीर पारडेकर, पुस्तकाध्यक्ष श्री रघुनाथराव जी वेदपाठक व्यायाम अध्यक्ष स्वामी स्वात्मानन्द जी, उपप्रधान श्री निरखीचन्द जी कचेरीया व श्री व्यंकटराववी माखनकर उपमन्त्री श्री चन्द्रभानु जी पारंडेकर व श्री नन्दकिशोर धर्माधिकारी चुने गये।

मन्त्री आर्य समाज, लातूर

अंग्रेजी हटाने का फैसला करें

(पृष्ठ ३ का शेष)

चालीस बरस में भारत सरकार ने सरकारी नौकरियों की रेस के लिए अंग्रेजी को अनिवार्य बनाकर उसका दबदबा बढ़ाया है। सारे देश में सेवा आयोग में आज भी अंग्रेजी बनी हुई है। परीक्षार्थी के मन में हमेशा यह डर बना रहता है कि यदि उसे अंग्रेजी नहीं आएगी तो वह आगे प्रगति नहीं कर पाएगा। इसलिये परीक्षार्थी के मन से यह डर निकालने के लिये आवश्यक है कि सेवा आयोगों से पूर्णतया अंग्रेजी को निष्कासित कर दिया जाए। यदि मुलायमसिंह यादव वास्तव में उत्तरप्रदेश में हिन्दी लागू करना चाहते हैं तो उनका दूसरा ठोस कदम यह होना चाहिए कि वे प्रदेश के आयोगों से अंग्रेजी को पूर्णतया निष्कासित करें।

कमलापति त्रिपाठी ने हिन्दी में काम करने के लिये न जाने कितने आदेश जारी किये थे। हजारों की संख्या में हिन्दी की टंकण मशीनें खरीद कर कार्यालयों में भेजी गई थीं। पर ये सारी फाइलों में लिखत-पढ़त तक सीमित थी। शायद ही किसी मन्त्री ने किसी भी सरकारी फाईल पर अंग्रेजी के नोटिंग-ड्राफ्टिंग पर आपत्ति की हो। नतीजा यह था कि सरकारी आदेश इन कार्यालयों में कूड़ेदान में फेंक दिये गये थे और सारे अधिकारी अंग्रेजी में काम करते रहे और यदि मुलायम सिंह यादव केवल आदेश देकर सन्तुष्ट हो जायेंगे तो उनके आदेशों की भी वही दुर्दशा होगी जो पिछले मुख्यमन्त्रियों के आदेशों की हुई होगी।

वास्तविकता यह है कि उत्तर प्रदेश का जो भी मुख्यमन्त्री होता है वह पद भार ग्रहण करने के साथ ही बहुत सारी घोषणाएं कर देता है। पर कालांतर में अंग्रेजी के समर्थकों का ऐसा कुचक्र चलता है कि उसके सामने मुख्यमन्त्रियों की चल नहीं पाती और हर मुख्यमन्त्री इन षडयन्त्रकारियों के सामने आत्म-समर्पण कर देता है। क्योंकि वे ऐसी समस्याएं उभार देते हैं कि भाषाओं की समस्या गौण लगने लगती है।

अंग्रेजी हटाने के पूर्व अंग्रेजी के समर्थकों को पहचानना जरूरी है जिसमें बहुत सी विदेशी संस्थाएं छिपे रूप से काम करती हैं। ब्रिटेन की भाषा सम्बन्धी कई ऐसी संस्थाएं हैं जो अनेक रूपों में अंग्रेजी की वरीयता को स्थापित करने में लगी हुई हैं। बड़े-२ शहरों में इनकी शाखाएं हैं। इनके पुस्तकालय हैं और अंग्रेजी में शिक्षा देने की सुविधाएं हैं। बहुत सी अमेरिकी संस्थाएं हैं जो अनेक रूपों में अंग्रेजी भाषा के संरक्षण में लगी हुई हैं। १९६६-६७ में भाषा आन्दोलन पर जितनी भी हिंसात्मक कारंवाइयां हुई थी इन्हीं की वजह से हुई थीं। इसलिए उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री को चाहिए कि इन समस्याओं से निपटने की कुशल रणनीति बना लें। वैसे अकेले मुलायमसिंह यादव इस काम को करने में तब तक सफल नहीं होंगे जब तक पूरे हिन्दी भाषी राज्यों के मुख्यमन्त्री एक साथ मिलकर अपने प्रदेशों में हिन्दी लागू करने का निर्णय नहीं लेते।

१९७७ में अपनी कमजोरियों के कारण जनता पार्टी इस कार्यक्रम को करने में असमर्थ रही। सौभाग्यवश १९९० में पुनः ऐसी स्थिति आई है कि जब हिन्दी प्रदेशों के मुख्यमन्त्री संयुक्त रूप से इस दिशा में संगठित और निर्णायक कदम उठा सकें। यह तभी हो सकता है जब व्यक्तिगत संकीर्णताओं से ऊपर उठकर प्रशासनिक स्तर पर दंड विधान नहीं बनेगा और न्यायिक स्तर पर इन समस्याओं का निराकरण नहीं होगा। नीतियां अयनीत लोगों द्वारा नहीं निर्धारित की जा सकती और जहां तक भाषाओं का सवाल है अंग्रेजी इस देश में डंडे के बल पर लागू की गई थी इसलिए इसे देश से समाप्त करने के लिए भी डंडे का प्रयोग करना होगा।

(दैनिक जनसत्ता २-४-९० के अंक से साभार)

श्री वेदप्रकाश आर्यन का अवकाश प्राप्ति पर भव्य स्वागत !

बाऊलाल हायर सैकेण्डरी विद्यालय में उन्हें भावभीनी विदाई दी गई !

नया बांस ६ अप्रैल।

बाऊलाल हायर सैकेण्डरी विद्यालय के प्रबन्धकों, अध्यापकों छात्रों एवं उनके अभिभावकों ने ४५ वर्षों से लगातार अध्यापन के कार्य में संलग्न श्री पं० वेद प्रकाश आर्यन को फूलहारों और गुलदस्तों से लाद दिया; जब उन्हें विद्यालय की सेवाओं से अवकाश ग्रहण करने के कारण विदाई दी जा रही थी।

सम्मान करने वालों के गले रुंधे हुए थे। कई बार वक्ताओं कवियों और श्रोताओं की आंखें छलछला आईं। सभी स्वागत कर्ताओं ने श्री वेदप्रकाश आर्यन की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की और उन्हें उदारमना सेवाभावी शिक्षक और राष्ट्रीय क्रान्ति का सजग प्रहरी कहा तथा बताया कि विद्यालय का कोई शिक्षक, सेवक अथवा एक विद्यार्थी ऐसा नहीं जिसका कभी श्रीआर्यन से मतभेद हुआ हो। वे अपने कार्यकाल में सर्वप्रिय प्रधानाध्यापक रहे।

श्री वेदप्रकाश जी को कई मूल्यवान उपहार प्रबन्धकों, अध्यापकों तथा विद्यार्थियों ने सादर भेंट किए। श्री वेद प्रकाश आर्यन की धर्मपत्नी का भी फूलमाला पहिनाकर स्वागत किया गया।

स्वागत समारोह के उपरान्त विद्यालय समिति ने अल्पाहार का आयोजन किया था। महर्षि दयानन्द की स्मृति और आर्य समाज द्वारा संस्थापित विद्यासमिति की ओर से कई पाठशालाओं का संचालन किया जा रहा है जहां वैदिक धर्म की शिक्षाओं से विद्यार्थियों को अनुप्राणित किया जाता है। समारोह में सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक श्री पं० बालदिवाकर जी हंस ने भी भाग लिया।

—सम्पादक

वार्षिक उत्सव

—आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना के ६४वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में आठ दिवसीय कार्यक्रम श्री रणवीर जी भाटिया प्रधान आर्य-समाज की अध्यक्षता में १८ फरवरी रविवार को प्रारम्भ हुआ। प्रतिदिन आर्य समाज से प्रात ६ बजे प्रभात फेरी आरम्भ होकर गली-गली एव नगर कीर्तन करती हुई लुधियाना के विभिन्न क्षेत्रो मे पारिवारिक सत्संग के रूप में सम्पन्न हुई।

इस अवसर पर वेद मनीषी श्री हरबन्सलाल जी मेहता को लखनऊ से वेद कथा के लिए विशेष रूप से आमन्त्रित किया था उन्होने पारिवारिक सत्सगो मे वेद की वाणी को बहुत ही रोचक व सरल ढग से जनता तक पहुँचाया। जनता पर उनके प्रवचनो का विशेष प्रभाव पड़ा और जनता के विशेष आग्रह पर एक दिन मे तीन तीन बैठको को आयोजित किया गया।

—जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा गोरखपुर के तत्वावधान में नगर आर्य-समाज साहबगज, आय समाज बक्शीपुर, आय समाज रेलवे कालोनी वेद मन्दिर आदि ने सामूहिक रूप मे एक शोभायात्रा 'ऋषि बोधोत्सव' के उपलक्ष मे निकाली जो नगरके प्रमुख मार्गों से होता हुआ विस्मिल यज्ञशाला लालडिग्गी पर समाप्त हुई इसमे भारी सख्या मे महिलाए पुरुष विद्यालय के बच्चे अपने बैण्ड धुन के साथ भाग लिए।

शोभायात्रा मे नागरिको को सम्बोधित करते हुए जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष प० हिमराज शर्मा ने स्वामी दयानन्द के गुणो की चर्चा करते हुए सच्चे शिव की पूजा, छूआछूत उन्मूलन, नारी सम्मान, देश की अखण्डता के लिए स्वामी जी के अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश नामक पुस्तक पढ़ने की अपील जोरदार शब्दो मे की।

—रमेश प्रसाद गुप्त, महामन्त्री

शुद्धि समाचार

आर्य समाज कासगज के सद्प्रयासो से एक मुस्लिम महिला 'सायरा' ने ता० २ २ ९० को आय समाज मन्दिर नदरई गेट, कासगज में वैदिक धर्म ग्रहण किया। शुद्धि का कार्य जिला के सभा प्रधान श्री महिपालसिंह शास्त्री ने किया तथा इसका नया नाम श्रीदेवी रखा गया। समाज के प्रधान श्री विरजानन्द श्री कार्यकर्ता श्री मुन्नालाल श्री उपस्थित थे।

ता० ११ २-९० दिन रविवार को सायकाल श्रीदेवी का विवाह एक आर्य युवक श्री मटरूमल से सानन्द सम्पन्न हुआ। विवाह सस्कार श्री महीपालसिंह शास्त्री, प्रधान जिला सभा तथा अनेक आर्य जन और महिलाए उपस्थित थे।

—दिनेशचन्द्र बिडला, मन्त्री

रजत जयन्ती सम्पन्न

आर्य समाज ओबरा सोनभद्र (उत्तर प्रदेश) की राजत जयन्ती २३-२४ २५ एव २६ फरवरी ९० को बड़े ही धूमधाम से मनायी गयी इस शुभ अवसर पर वैदिक प्रवक्ता स्वामी मोक्षानन्द सरस्वती मथुरा, इतिहास विशेषज्ञ डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी नालन्दा, बिहार तथा वैदिक गीतो के सुमधुर गायक प्रहलिक्ष वैदिक धर्म प्रचारक श्री वीरेन्द्र जी आर्य, गाजीपुर के शिक्षाप्रद प्रवचन व्याख्यान एव भजनोपदेश होते रहे।

मन्त्री आर्य समाज, ओबरा

शोक समाचार

बड़े दुःख के साथ मे सूचित किया जाता है कि आर्य समाज फोर्ट की व्यायाम शाला के स्व० रामचन्द्र नाथ शिन्दे जी का स्वर्गवास दि० ७ २ ९० को प्रात काल हुआ। हम सभी लोग आर्य समाज फोर्ट बम्बई की तरफ से उस दिवगत आत्मा की शांति के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं तथा उनके परिवार को उस दिवगत आत्मा के वियोग में जो दुःख हुआ है उसको सहन करने की शक्ति तथा सामर्थ दें।

—मन्त्री

ओ३म् सार्वदेशिक साप्ताहिक

कर गोदाम बना लिये। वे लोग श्मशान भूमि के अन्दर काम करने वाले कर्मचारियों को धमकियाँ देते हैं कि यदि उन्होंने कोई कार्यवाही की तो गम्भीर नतीजे भुगतने पड़ेंगे। श्मशान भूमि के अन्दर कार पार्किंग बनाने के लिये रोड़ी व अन्य सामान मंगवाया गया लेकिन निजामुद्दीन बस्ती से कुछ मुसलमान आए और कार पार्किंग बनाने से रोक दिया।

श्री आर्य ने बताया कि दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के प्रधान और महामन्त्री आर्यसमाज लोदी रोड के अधिकारियों के साथ थाना प्रभारी निजामुद्दीन व जंगपुरा क्षेत्र के निगम पार्षद को कई बार मिले और हालात से अवगत कराया लेकिन उन कबाड़ियों के विरुद्ध पुलिस ने कोई कार्यवाही नहीं की जिसका नतीजा यह हुआ कि जहाँ मृत बच्चों को दफनाया जाता था उस हिस्से पर भी कबाड़ियों ने अवैध कब्जा कर लिया और कबाड़ के गोदाम बना दिये।

१७-३-९० को प्रातः ८ बजे हिन्दुओं ने श्मशान भूमि पर दीवार बनाने के लिये श्रमदान शुरू किया तो नाले के दूसरी ओर निजामुद्दीन बस्ती से मुसलमानों ने पथराव शुरू कर दिया पुलिस पर पथराव किया गया और बम फेंके जिससे कबाड़ में आग लग गई। फिर निजामुद्दीन बस्ती के कुछ शरारती लोगों ने फ्लाई ओवर के पास सड़क पर बसों को रोकना शुरू कर दिया श्मशान घाट के अन्दर पथराव से कुछ लोग घायल हो गए जिससे वहाँ तनाव फैल गया। बस्ती के साथ सनातन धर्म मन्दिर और पुलिस पर भी पथराव हुआ इससे कुछ पुलिसकर्मी घायल हुए तब पुलिस को जवाबी कार्यवाही करने पर मजबूर होना पड़ा। इसके पश्चात पुलिस ने दीवार के निर्माण कार्य को जबरदस्ती रुकवा दिया।

मुसलमानों ने गंदा नाला के साथ एक गुम्बद को मस्जिद का रूप दे दिया और एक इमारत बना दी है और इसमें कुछ दुकानें बनवाने की तैयारी है। पुलिस ने अबतक इस अवैध निर्माण को नहीं रोका। मुसलमान तो कब्रिस्तान में इमारतें बनवा सकते हैं लेकिन हिन्दू सिख अपने श्मशान घाट की चार दीवारी नहीं बनवा सकते, यह कहाँ का न्याय है। अपने देश में हिन्दुओं सिखों के साथ ऐसा गलत व्यवहार क्यों हो रहा है। क्या दिल्ली प्रशासन इस ओर ध्यान देगी।

आर्य समाज लोदी रोड के अधिकारियों ने भूमि सम्बन्धी सारे सबूत दिल्ली विकास प्राधिकरण और थाना प्रभारी निजामुद्दीन को दिखा दिए थे फिर भी यह निर्माण कार्य रुकवा दिया गया। इससे हजारों रुपये की हानि हुई है और हिन्दुओं व सिखों की भावनाओं को बड़ी ठेस पहुँची है। इसका जिम्मेदार कौन होगा। —सत्यपाल सैनी, प्रेस सचिव

संस्कृत भाषण प्रतियोगिता में कु० वन्दना प्रथम

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के द्वारा फरवरी के प्रथम सप्ताह में आयोजित युवक महोत्सव के अवसर पर अन्तः कालेज संस्कृत भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

इसमें एक दर्जन से अधिक कालेजों की टीमों ने भाग लिया। प्रतियोगिता का स्तर उत्तम रहा।

आर्यसमाज की प्रसिद्ध महिला शिक्षा संस्था कन्या गुरुकुल, खानपुर(हरियाणा)की टीम ने चल-वैजयन्ती शील्डजीती तथा उसकी बी०ए० (अन्तिम वर्ष) की छात्रा कु० वन्दना सर्वश्रेष्ठ वक्ता रहीं। उक्त छात्रा आर्यसमाज, सरस्वती विहार, दिल्ली के एक कर्मठ सदस्य श्री श्यामलाल की सुपुत्री है।

धर्मपाल जी विद्यालंकार सम्मानित

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ की एक प्रान्तीय सभा की विशेष बैठक में पूज्य पण्डित जी का उनके जीवन के ९९ वर्ष पूर्ण होने पर अभिनन्दन किया गया।

सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री पं० सच्चिदानन्द शास्त्री ने उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि आपने छात्र जीवन गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में पूर्ण कर स्नातक १९२६ में हुए और स्वामी श्रद्धानन्द की शहीदी घटना के समय आप वहीं विद्यमान थे। गोली लगने के बाद आपने अब्दुल रशीद हत्यारे को पकड़ लिया।

सामाजिक क्षेत्र में कार्य करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री पद पर कार्य किया। उसके बाद पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति की प्रार्थना पर आप गुरुकुल ... अनेक वर्षों तक करते रहे।

स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण बदायूं निवास पर आकर रहने लगे।

आपके सुयोग्य पुत्र श्री महेन्द्रकुमार एडवोकेट अपने सुयोग्य आज्ञाकारी पुत्र है और यह भी पूज्यपिता की सुयोग्य आज्ञाकारी सन्तान है और यह भी पूज्यपिता जी की भांति समाज सेवा में हर समय लगे रहते हैं।

प्रान्त से आये प्रतिनिधियों ने माल्यार्पण से स्वागत किया और पं० इन्द्रराज जी ने शतायु होने की कामना करते हुए सभी की ओर से २००१)दो हजार एक रुपये की तुच्छ राशिभी भेंट की और अन्त में मन्त्री श्री मनमोहन जी तिवारी ने पं० जी को शाल भेंट किया।

इच्छा थी कि पण्डित जी का लघु अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट कर जीवन पर चर्चा करके जनताको उनके व्यक्तित्व से परिचित कराया जाय। समय आने पर लघु ग्रन्थ प्रकाशित कर अभिनन्दन किया जायेगा। शतायु की कामना के साथ शान्तिपाठ कर सभा विर्जित हुई।

महत्वपूर्ण प्रस्ताव

आर्य समाज रेलवे रोड गाजियाबाद का यह विशेष अधिवेशन वहाँ उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमन्त्री श्री मुलायम सिंह यादव का हिन्दी के प्रतिपादन के आदेश का हार्दिक स्वागत करता है वहाँ भारत वर्ष की सभी आर्य समाजों, सभाओं एवं हिन्दी प्रेमी आर्य सज्जनों से अनुरोध करता है कि वह अपनी-अपनी समाजों एवं सभाओं की ओर से मुख्यमन्त्री महोदय को धन्यवाद के पत्र शीघ्र लिखें और साथ ही यह अनुरोध करें कि सभी वाहनों के नम्बर पट्ट तथा व्यवसायिक प्रतिष्ठानों के नाम पट्ट हिन्दी में कराने का आदेश दें जिससे कि हिन्दी भाषी प्रान्त अपने मौलिक अधिकार को प्राप्त कर सके और राष्ट्र भाषा को उचित स्थान एवं सम्मान मिल सके।

पण्डित रुद्रदत्त शर्मा का देहावसान

पंजाब के सुप्रसिद्ध आर्य समाजी नेता आर्य समाज लक्ष्मणसर अमृतसर के भूतपूर्व प्रधान श्री पण्डित रुद्रदत्त शर्मा का देहावसान हो गया।

पण्डित जी स्वर्गीय लाला पिण्डीदास जी के समकालीन आर्य समाज के कार्यकर्ता थे। वे उच्चकोटि के स्वाध्यायशील आर्य समाजी थे। पण्डित जी इन दिनों पानीपत में अपने पुत्र के साथ रहते थे। उन्हें दिल का दौरा पड़ा। उन्हें 'फरीदाबाद के र्वशिष होम मे भर्ती कराया गया वहीं उनका निधन हो गया फरीदाबाद में ही अन्तिम संस्कार किया गया।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने उनके निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए कहा कि पण्डित जी पुरानी पीढ़ी के आर्य-समाजी थे वे महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों पर चलने वाले पथिक थे। परमात्मा से दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना की।

रजि० न० डी० (डी०) १०८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१५-४-१९९०) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U 61
R. N. 686/57 Licensed to post without prepay ment licence No. U 91 Post in D.P.S.O. on 12.4.1990

एक लाख से भी अधिक हिन्दू कश्मीर छोड़ चुके

जम्मू, २५ मार्च। कश्मीर घाटी के अल्पसंख्यक समुदाय के एक लाख से अधिक व्यक्ति जम्मू अथवा उससे भी अधिक दूर पलायन कर गये हैं। कुछ लोग तो मद्रास जैसे सुदूर स्थान पर चले गये हैं। उन्हें यह भी पता नहीं कि वे कब अपने घरों को वापस लौट सकेंगे।

सरकारी सूत्रों के अनुसार १६,००० से अधिक परिवार घाटी छोड़कर चले गए हैं और जो लोग अभी घाटी में रह रहे हैं, उन्हें हर समय उग्रवादियों की हिंसात्मक कार्रवाईयों का डर बना रहता है।

अल्पसंख्यक सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों मे कार्यरत व्यक्ति या डाक्टर, वकील, इन्जीनियर और अध्यापक वर्ग भी अपनी जान बचाने के लिये घाटी छोड़कर चले गये हैं।

अधिसंख्य प्रवासी जम्मू में रहना अधिक पसन्द कर रहे हैं, क्योंकि उन्हें दिल्ली, बम्बई जैसे बड़े शहरों के बारे में कुछ भी पता नहीं है। राज्य सरकार ने शहर में १२ से अधिक शरणार्थी शिविर लगाये हैं। हालांकि ये शिविर बहुत छोटे हैं।

जम्मू में इतने लोगों के आ जाने के कारण मकानों के किराये बहुत अधिक हो गये हैं। जो लोग कश्मीर घाटी से यहां जनवरी में आ गये थे, उन्हें अब के मुकाबले कहीं अच्छी सुख सुविधाओं वाली जगह मिल गई है।

सभी प्रमुख संवाद समितियों और समाचार पत्रों के प्रतिनिधि भी घाटी छोड़कर चले गये हैं। सरकारी अधिकारियों को भी दूरदर्शन निदेशक लासा कौल और सूचना विभाग के सहायक निदेशक पी०एन० भट्ट की उग्रवादियों द्वारा हत्या के बाद सतर्क कर दिया गया था।

अखिल भारतीय कश्मीरी पण्डित सम्मेलन के अध्यक्ष एच एन जत्तू ने हिन्दू और सिख प्रवासियों को राज्य प्रशासन द्वारा सुविधाएं नहीं देने के विरोध मे जम्मू में एक संयुक्त कार्रवाई योजना की घोषणा की है।

श्री जत्तू ने बताया कि उग्रवादियों के डर से भयभीत ६५,००० से अधिक कश्मीरी हिन्दू और सैंकड़ों सिख परिवार कश्मीर घाटी छोड़कर आ गये हैं। नवम्बर से अब तक अल्पसंख्यक समुदाय के ३२ व्यक्तियों की उग्रवादियों ने हत्या कर दी है।

अखिल भारतीय सिख छात्र संघ ने उग्रवादियों से सिखों के प्रति अपनी नीति को स्पष्ट करने और घाटी मे सिखों को उनकी सुरक्षा का आश्वासन देने के लिये कहा है।

छात्र संघ के वरिष्ठ नेता भिण्डर सिंह ने एक वक्तव्य मे कहा कि घाटी में सिखों को परेशान किये जाने के सम्बन्ध में उनकी संस्था को भी काफी शिकायतें मिली हैं।

म० हंसराज दिवस पर प्रधानमन्त्री मुख्य अतिथि होंगे

डी०ए०वी० प्रबन्धकर्त्री समिति एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष प्रो० वेदव्यास जी के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मण्डल ने २८-३-९० को प्रधानमन्त्री श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह से भेंटकर उन्हें १५-४ ९० को तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम नई दिल्ली में मनाये जाने वाले महात्मा हंसराज दिवस समारोह में मुख्य अतिथि के पद को सुशोभित करने की प्रार्थना की। प्रधानमन्त्री ने इस निमन्त्रण को सहर्ष स्वीकार कर लिया है।

प्रतिनिधि मण्डल ने जम्मू कश्मीर की वर्तमान दु.खद एवं भयावह स्थिति पर भी विचार विमर्श किया और उन्हें सूचित किया कि प्रबन्धकर्त्री समिति तथा प्रादेशिक सभा ने भी कश्मीरियों की सहायतार्थ अनेक पग उठाये हैं और दिल्ली के विभिन्न आर्य समाजों में उनके भोजन, वस्त्र तथा निवास की व्यवस्था की है।

प्रधानमन्त्री महोदय के सुझाव पर समिति तथा सभा ने जम्मू में एक सहायता शिविर स्थापित करने का भी निश्चय किया है।

रामनाथ सहगल
मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

विशेष सूचना

सार्वदेशिक-साप्ताहिक के पाठकों को सूचित किया जाता है कि कागज के मूल्य और डाक दरों में काफी वृद्धि हो जाने के कारण अप्रैल १९९० से सार्वदेशिक साप्ताहिक का वार्षिक शुल्क ३०) रुपये और आजीवन सदस्यता शुल्क ३००) रुपये कर दिया गया है। निवेदन है कि भविष्य में उपर्युक्त शुल्क ही भेजें। आशा है हमेशा की तरह आपका सहयोग मिलता रहेगा।

—सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री

भिंडरावाला राक्षस का अवतार था

—खुशवन्तसिंह

नई दिल्ली ८ अप्रैल। जरनैलसिंह भिंडरावाला राक्षस का अवतार था। उसके असभ्य भाषण और गुण्डागर्दी को सिख किसानों के एक वर्ग का समर्थन मिला जिसकी वजह से उसका राजनीतिक प्रभाव बढ़ गया था। प्रमुख लेखक एवं पत्रकार खुशवन्तसिंह ने यह मत व्यक्त किया है।

दिल्ली की एक महिला पत्रकार सुश्री हरमिन्दर कौर की अमृतसर मे ब्लूस्टार कार्रवाई शीर्षक पुस्तक की भूमिका में उन्होंने कहा है कि ज्यादातर अकाली नेता भिंडरावाले से खौफ खाते थे। इसके अलावा गुरचरण सिंह तोहड़ा जैसे लोगो ने पार्टी में अपने विरोधियों के खिलाफ शतरंज के मोहरे के रूप उन्हें इस्तेमाल किया।

खुशवन्तसिंह कहते हैं कि भिंडरावाले स्वर्ण मन्दिर का गलत इस्तेमाल करते रहे और अकाली दल ने इस पर ऊंगली तक नहीं उठाई। नतीजा यह हुआ कि यह पवित्र स्थान डकैतों का आश्रय-स्थल बन गया और इसका एक हिस्सा किले के रूप में भी इस्तेमाल होने लगा।

खुशवन्त के मतानुसार भिंडरावाले को बड़ा करने के लिये इन्दिरा गांधी, ज्ञानी जैलसिंह और कांग्रेस (इ) ही जिम्मेदार नहीं। भिंडरावाले जैसी आसुरी शक्तियों का उदय क्यों और कैसे हुआ, यह समझने के लिये समस्या की तह में जाना होगा।

ब्लूस्टार कार्रवाई और उसके बाद के घटनाक्रम की पुस्तक में सविस्तार व्याख्या की गई है।

कश्मीर समस्या

(पृष्ठ एक का शेष)

नहीं थी। परोक्ष रूप से इस पैसे का उपयोग भारत के विरुद्ध तोड़ फोड़ की कार्रवाई मे ही किया जाएगा।

स्वामी जी का प्रश्न है कि पाकिस्तानी प्रधानमन्त्री द्वारा आतंकवादियों को दी जाने वाली यह आर्थिक सहायता क्या भारत के विरुद्ध अघोषित युद्ध का प्रस्ताव नहीं है?

स्वामी जी के अनुसार कश्मीर समस्या को एक साम्प्रदायिक समस्या मान कर ही उसका हल निकाला जा सकता है। सम्पूर्ण जम्मू कश्मीर राज्य को उस समय तक सेना के अधिकार में दे दिया जाए तब तक कि वहां पूर्ण शान्ति स्थापित न हो जाए। आज देश की भी यही मांग है।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्

सार्वदेशिक साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१ | दयानन्दाब्द १६६ | दूरभाष : ३२७४७७१ | वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे

वर्ष २६ अंक १५] | वैशाख कृ० १२ सं० २०४७ २२ अप्रैल १९९०

वेदामृत

भाई-बहिनों में प्रेम-भाव हो

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्-मा स्वसारमुत स्वसा ।
सम्यंचः सव्रता भूत्वा, वाचं वदत भद्रया ॥
अथर्व० ३-३०-३ ॥

हिन्दी अर्थ—भाई-भाई से द्वेष न करे और बहिन-बहिन से द्वेष न करे। एक विचार वाले और एक प्रकार से काम करने वाले होकर शिष्टतापूर्वक वार्तालाप करो।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

गुरुकुल कांगड़ी और महाविद्यालय ज्वालापुर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

उत्तर-प्रदेश के राज्यपाल श्री सत्यनारायणरेड्डी को मान-पत्र

ज्वालापुर महाविद्यालय के ५० नव स्नातकों को प्रमाण-पत्र

हरिद्वार (उ० प्र०) १२, १३, १४ अप्रैल को महाविद्यालय गुरुकुल ज्वालापुर तथा गुरुकुल विश्व विद्यालय कांगड़ी में उत्सव समारोह पूर्वक सम्पन्न हुए। महाविद्यालय ज्वालापुर के दीक्षान्त समारोह में उत्तरप्रदेश के राज्यपाल महामहिम श्री सत्यनारायण रेड्डी ने ५० नव स्नातकों को दीक्षान्त समारोह के अवसर पर प्रमाण पत्र दिये।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, डा. रामकरण जी, डा. कपिलदेव द्विवेदी, सोमनाथ मरवाह एडवोकेट, डा. गौरीशंकर जी, पं. सच्चिदानन्द शास्त्री, डा. धर्मपाल जी, श्री सूर्यदेव जी, महाविद्यालय के आचार्य डा. हरिगोपाल शास्त्री तथा अनेक गण्य मान्य विद्वान तथा उत्तर प्रदेश के प्रमुख आर्य नेता उपस्थित थे। राज्यपाल महोदय को काव्यमयी संस्कृत भाषा में श्री हरिगोपाल शास्त्री ने मान पत्र भेंट किया।

गुरुकुल कांगड़ी के उत्सव पर भी राज्यपाल महोदय पधारे। डा. रामप्रकाश वेदालंकार ने हिन्दी में मान पत्र भेंट किए। राज्यपाल महोदय ने स्वामी श्रद्धानन्द तथा स्वामी दर्शनानन्द द्वारा की गई अमूल्य सेवाओं की सराहना करते हुए आर्यसमाज के प्रगतिशील कार्यक्रम की चर्चा की।

सार्वदेशिक सभा कार्यालय में श्री विश्वमित्र उपाध्याय का स्वागत

नई दिल्ली १५ अप्रैल।

आज प्रातः १०-३० बजे हिन्दुस्तान दैनिक के समाचार सम्पादक श्री विश्वमित्र उपाध्याय का सार्वदेशिक सभा के मुख्य कार्यालय में भाव-भीना स्वागत किया गया, इस अवसर पर स्वामी आनन्दबोध सरस्वती पं० वन्देमातरम रामचन्द्रराव, माता सरला मेहता, माता प्रकाश आर्या तथा केन्द्रीय आर्य महिला सभा की देवियां उपस्थित थी। आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान डा० धर्मपाल, मन्त्री श्री सूर्यदेव जी विधि विशेषज्ञ श्री विमल वधावन एडवोकेट तथा हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह सेनानी उपस्थित थे, श्री उपाध्याय को पं. रामचन्द्रराव वन्देमातरम् तथा माता सरला मेहता ने पुष्प माला पहनाई, स्वामी आनन्दबोध जी ने वेदों की चार प्रतियां भेंट की।

श्री उपाध्याय जी ने आर्य समाज द्वारा की जा रही धार्मिक तथा राजनैतिक सेवाओं की सराहना करते हुए स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को विदेशों में भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन और हिन्दी साहित्य की अपनी तीन कृतियां भेंट कीं।

महात्मा हंसराज जन्मदिवस पर प्रधानमंत्री श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह का भाषण

नई दिल्ली १५ अप्रैल।

प्रधानमन्त्री श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह ने कहा है कि देश में सभी के लिए समान शिक्षा प्रणाली लागू करने के पहले सामाजिक ढांचे में परिवर्तन की आवश्यकता है।

श्री सिंह आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित महात्मा हंसराज दिवस के अवसर पर बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था भारी तादाद में डिग्री और डिप्लोमा धारकों को ही पैदा कर रही है।

प्रधानमन्त्री ने कहा कि केवल डिप्लोमा या डिग्री लेने से यह जरूरी नहीं हो जाता कि उसके पास ज्ञान भी हो।

प्रधानमन्त्री ने कहा कि सत्ता में बैठे लोगों की जिम्मेदारी है कि वह नई पीढ़ी की उचित शिक्षा दीक्षा सुनिश्चित करे।

श्री सिंह ने कहा कि नई पीढ़ी की दिन प्रतिदिन गतिविधियों के बारे में सवाल उठाने की क्षमता विकसित करनी चाहिए। उन्होंने

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

अमीरुल्लाह रिहा : कश्मीरी पण्डितों को घाटी छोड़ने की अन्तिम चेतावनी

जम्मू १४ अप्रैल। कश्मीर विघटनकारियों ने पूर्व विधायक एवं कांग्रेस नेता अमीरुल्लाह खान और दो अन्य अपहृतों को आज रिहा कर दिया तथा कुपवाड़ा और बांदीपुर कस्बों में कल रात तीन व्यक्तियों की हत्या की।

जम्मू क्षेत्र के भद्रवाह कस्बे में संघर्ष में कल जो तीन व्यक्ति घायल हो गए थे, आज उन्होंने दम तोड़ दिया। कुपवाड़ा और बांदीपुर में की गई हत्याओं की जिम्मेदारी अल हमजा नामक उग्रवादी संगठन ने ली है। उसने कहा कि तीनों व्यक्ति संगठन के कुछ सदस्यों की गिरफ्तारी के लिए जिम्मेदार थे।

अमीरुल्लाह खान को किन परिस्थितियों में मुक्त किया गया, यह अभी तक ज्ञात नहीं हो सका। श्री अमीरुल्लाह खान कल अपने पैतृक कस्बे शोपियां से अपहृत बताए गए थे। लेकिन वह आज बिना पूर्व घोषणा के अपने रिश्तेदारों के पास लौट आए।

राज्य प्रशासन ने आज पांच पुलिस अधिकारियों को बर्खास्त कर दिया। पिछले दो महीनों में बर्खास्त किए गए अधिकारियों की कुल संख्या ४२ हो गई है।

राज्य प्रशासन ने दबाव डालकर एक अन्य नेता गुलाम हैदर खान को रिहा करवा लिया। श्री खान को कल अपहृत किया गया था। जम्मू व कश्मीर जमायते इस्लामी के उग्रवादी संगठन हिजबुल मुजाहिदीन ने आज कश्मीरी पण्डितों को आखिरी चेतावनी दी कि वे जल्दी से जल्दी कश्मीर घाटी छोड़ कर चले जाएं। नगर के उर्दू दैनिकों में आज प्रकाशित एक बयान में हिजबुल मुजाहिदीन ने यह चेतावनी दी।

ज्ञातव्य है कि इसी संगठन ने निर्दलीय विधायक मीर मुस्तफा और कई अन्य लोगों की हत्या की जिम्मेदारी अपने ऊपर ली थी। इसके अलावा यह संगठन कश्मीर के पाकिस्तान के साथ जुड़ने का समर्थन करता है।

अखबारों में छपे इस बयान में कहा गया है कि घाटी में भारत के लिए जासूसी करने वाले कश्मीरी पण्डितों को यह अन्तिम चेतावनी दी जाती है कि वे कश्मीर घाटी से बाहर चले जाएं अन्यथा इसके परिणाम भुगतने के लिए तैयार रहें।

३ घायलों ने दम तोड़ा : किश्तवाड़ में भी कर्फ्यू

जम्मू क्षेत्र के भदरवाह कस्बे में दो गुटों के बीच कल भड़की हिंसा में घायल ६ व्यक्तियों में से ३ ने आज दम तोड़ दिया। इस वारदात के बाद कस्बे में लागू अनिश्चितकालीन कर्फ्यू दूसरे दिन भी बिना किसी ढील के जारी है। प्रशासन ने दोनों गुटों के बीच तनाव की स्थिति को देखते हुए डोडा जिला के किश्तवाड़ में भी कर्फ्यू लगा दिया है।

श्रीनगर की १३ बस्तियों में आज सुबह दो घण्टे के लिए कर्फ्यू में ढील दी गई जब कि शहर के शेष भाग और घाटी के अन्य कस्बों में तलाशी लेने का काम जारी है।

सरकारी बस बम से उड़ा दी

शहर के तुलमुल्ला इलाके में कल रात एक खाली सरकारी बस को बम से उड़ा दिया गया। एक अन्य घटना में कुछ उग्रवादियों ने मसाबल वोट क्लब के भवन में आग लगा दी और सभी नावें फूंक डाली।

हथगोला फेंकने से जवान घायल

इसी बीच घाटी के अन्य कस्बों में आज कर्फ्यू में ढील दी गई। श्रीनगर के आतंकवादियों ने एक वाहन पर हथगोला फेंका जिससे केन्द्रीय रिजर्व पुलिस का जवान दर्शनसिंह घायल हो गया। बिजबेहरा में एक ट्रक को आग लगा दी गई। उग्रवादियों ने मनसाबल वोट क्लब को आग लगा दी।

सम्पर्क भाषा का संस्कृति से जुड़ाव जरूरी
—शर्मा

नई दिल्ली २० मार्च। उपराष्ट्रपति डा० शंकर दयाल शर्मा ने आज कहा कि हिन्दी को सम्पर्क भाषा का स्थान दिलाने में गैर हिन्दी भाषा के लोगों का विशेष योगदान रहा है।

उपराष्ट्रपति आज यहां गैर हिन्दी भाषी हिन्दी लेखकों को पुरस्कार दे रहे थे तथा केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के नये आठ प्रकाशनों का लोकार्पण कर रहे थे। उन्होंने कहा कि अंग्रेजी, हमारी सम्पर्क भाषा नहीं बन सकती है क्योंकि भाषा केवल विचारों की ही अभिव्यक्ति का मामला नहीं बल्कि यह लोगों की ही अभिव्यक्ति का मामला नहीं बल्कि यह लोगों की संस्कृति, सोच को भी प्रभावित करती हैं। सम्पर्क भाषा वही हो सकती है जो हमारी संस्कृति से जुड़ी हो।

उन्होंने कहा कि हमारी सभी भाषाओं का स्वरूप एक ही चिंतन पर आधारित है अतः किसी भारतीय भाषा को ही सम्पर्क भाषा का दर्जा देना होगा। हिन्दी सम्पर्क भाषा बनने के बाद केवल हिन्दी बोलने वालों की ही नहीं सभी भारतीय भाषाओं की सम्पर्क भाषा हो जायेगी और सभी भाषाओं के मेल-जोल और आदान-प्रदान के फलस्वरूप ही समृद्ध होगी।

उपराष्ट्रपति ने कहा कि हिन्दी में विभिन्न भाषाओं के शब्दों का समावेश किया जाना चाहिए ताकि हिन्दी भाषा भारत की संस्कृति के सभी पक्षों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके। उन्होंने सुझाव दिया कि भारतीय वांगमय के इतिहास का संकलन किया जाना चाहिए जिससे सभी लोग भारतीय संस्कृति और चिन्तन की समानता से परिचित हो सकें।

उन्होंने कहा कि भाषा जोड़ने का काम करती है तोड़ने का नहीं। (वीर अर्जुन २१-३-६०)

सन्त प्रभुदत्त ब्रह्मचारी शान्तियज्ञ

आर्य समाज मन्दिर पिथौरागढ़ में सन्त प्रभुदत्त ब्रह्मचारी की दिवंगत आत्मा हेतु १२ मार्च १६६० को शान्तियज्ञ सम्पन्न किया गया। उक्त अवसर पर स्वामी गुरुकुलानन्द कन्दाहारी ने सन्त प्रभुदत्त ब्रह्मचारी के एक सौ वर्ष से अधिक जीवन रहस्य, समाज-कल्याण, स्वतन्त्रता-संग्राम तथा आध्यात्मिक जीवन पर प्रकाश डालते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की।

—(राकेश कुमार पुनेठा) मन्त्री

प्रधानमन्त्री का भाषण

(शेष पृष्ठ २५ पर)

न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण की खोज का जिक्र करते हुए कहा कि लोग हजारों साल से सेब का गिरना देख रहे थे, लेकिन न्यूटन ने ही सेब के गिरने की प्रक्रिया के आधार पर गुरुत्वाकर्षण के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।

प्रधानमन्त्री ने कहा कि देश के लोग तीन प्रकार की शिक्षा हासिल कर रहे है। पहले तो वे है जो गांवों में पेड़ों के नीचे बैठकर शिक्षा हासिल करते हैं, दूसरे जो छोटे कस्बों में कम सुविधा के तहत और तीसरे वे हैं जो शहरों में विशेष स्कूल में शिक्षा हासिल करते हैं।

श्री सिंह ने शिक्षाविद और दयानन्द एंग्लो वैदिक आंदोलन के संस्थापक महात्मा हंसराज जी को श्रद्धांजलि अर्पित की। इस आन्दोलन के तहत सैकड़ों डी.ए.वी. कालेजों की स्थापना की गई। प्रधानमन्त्री ने कहा कि लोग जीवन भर ज्ञान अर्जित करते हैं।

उन्होंने कहा कि शिक्षा व्यवस्था में अध्यापकों का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। छात्र अपनी पुस्तकों की अपेक्षा अपने अध्यापकों से अधिक शिक्षा प्राप्त करते हैं।

इस अवसर पर श्री लक्ष्मीमलसिंघवी ने प्रधानमन्त्री को अंग्रेजी में वेद भाष्य भेंट किया।

मांसाहार से संक्रामक रोग

डाक्टरों की राय

पिछले दिनों अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में आयोजित एक गोष्ठी में स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने कहा कि मांसाहारी और शाकाहारी आहार को लेकर लोगों में वाद-विवाद होता रहा है। प्राय: दोनों पक्ष अपनी-अपनी धार्मिक और नैतिक मान्यताओं के कारण बने होते हैं तथा इस विषय पर निष्पक्ष विचार व्यक्त नहीं कर पाते। डाक्टरों ने इस सम्बन्ध में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाना जरूरी बताया।

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के मानव पोषण विभाग के प्रोफेसर डा० महेश चन्द्र गुप्ता ने शाकाहारी आहार को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से मांसाहारी आहार की तुलना में श्रेष्ठ बताते हुए कहा कि शाकाहारी भोजनों में अनेक ऐसे पदार्थ पाए जाते हैं, जो कैंसर जैसी घातक बीमारियों से भी बचाव कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि यद्यपि प्रोटीन की मात्रा दोनों प्रकार के भोजनों में पर्याप्त होती है। पर विटामिन सी और ए मुख्यत: शाकाहारी भोजन में ही पर्याप्त होता है।

डाक्टरों ने चेतावनी दी कि सामिष भोजनों से अनेक संक्रामक रोग हो सकते हैं। उदाहरण के लिए फीताकृमी, लीवर सम्बन्धी रोग आदि। विशेषज्ञों के अनुसार शायद ही कोई ऐसा लाभ है जो सामिष खाद्य से प्राप्त होता है। उल्टे सामिष भोजन निरामिष भोजन की तुलना में अधिक महंगे भी होते हैं।

स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार भोजन का मनुष्य के मनोविज्ञान पर भी प्रभाव पड़ता है। इस बात के प्रमाण पाए गए कि निरामिष भोजन करने वाले व्यक्ति अपेक्षाकृत शांत, सरल और मधुर स्वभाव के होते हैं। जबकि सामिष भोजन करने वाले व्यक्तियों में हिंसा और क्रूरता की प्रवृत्ति अधिक पाई जाती है। हाल ही में ग्वालियर जेल में किए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार जब कैदियों को सामिष भोजन के स्थान पर निरामिष भोजन प्रदान किया गया; तो उनके व्यवहार में इस प्रकार का स्पष्ट परिवर्तन पाया गया।

अमेरिका और इंगलैंड की सरकारों द्वारा इस समय जनता को औपचारिक रूप से यह हिदायत दी जा रही है कि वे भोजन में मांस की खपत को कम करें, ताकि उनका स्वास्थ्य अच्छा रहे। डा० गुप्ता ने कहा कि मैं पूरे वैज्ञानिक इत्मिनान के साथ कह सकता हूं कि इस समय संसार में व्याप्त भुखमरी का एक प्रमुख कारण योजनाबद्ध मांसाहार है। इसके तर्क में उन्होंने कहा कि योजनाबद्ध मांसाहार का तात्पर्य एक ऐसी कृषि खाद्य प्रणाली से है, जिसमें खेतों में कुछ अनाजों का उत्पादन सिर्फ इसलिए किया जाता है कि वह अनाज जानवरों को खिलाया जाए, ताकि उनका मांसाधिक कोमल और स्वादिष्ट हो।

गोष्ठी में इस सम्बन्ध में आश्चर्यजनक आंकड़े भी प्रस्तुत किए गए आंकड़ों के अनुसार अमेरिका और कनाडा में उत्पन्न होने वाले गेहूं का केवल ३०वां भाग ही मनुष्य के आहार के लिए प्रयुक्त होता है। इन देशों में हर वर्ष प्रति व्यक्ति एक हजार किलोग्राम गेहूं की खपत है, जिसमें से मनुष्य केवल ३०-४० किलोग्राम खाते हैं और ९६०-७० किलोग्राम गायों, सूअरों आदि को खिलाया जाता है, ताकि उनसे अधिक और अच्छा मांस मिल सके। यह एक तथ्य है कि संसार की विशाल जनसंख्या के बावजूद विश्व में इतना अनाज पैदा होता है कि हर मनुष्य का पेट भर सके।

विशेषज्ञों ने लोगों से आहार में सामिष पदार्थों को घटाने एवं हरी पत्तियों वाली सब्जियों का अधिकाधिक प्रयोग करने का आग्रह किया।

डाक्टरों ने लोगों से यह भी आग्रह किया कि वे जीने के लिए खाएं न कि खाने के लिये जियें।

जापान में आर्यसमाज की स्थापना

टोक्यो से प्राप्त सूचना के अनुसार जापान में महर्षि दयानन्द तथा आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचारार्थ आर्य प्रतिनिधि सभा टोक्यो की स्थापना हो गयी है। यह कार्य एक जापानी ऋषिभक्त श्री अकीहिको निशि के सद् प्रयासों से सम्भव हुआ है। जिन्होंने अपने १२ मार्च १९९० के पत्र द्वारा अपनी सभा को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बद्ध करने के लिए प्रार्थना की है।

उक्त सभा ने सर्व प्रथम महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र जापानी भाषा में प्रकाशित करने का संकल्प लिया है। इस पर कार्य आरम्भ हो चुका है। तदन्तर ऋग्वेद का जापानी भाषा में अनुवाद किया जायेगा जिससे जापानी जनता वैदिक धर्म एवं महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों और विचारों से परिचित हो सके। सार्वदेशिक सभा ने श्री अकीहिको निशि को उनके इस महान् कार्य में सब प्रकार का सहयोग देने का आश्वासन दिया है।

प्यार के बदले दर्द मिला

श्री वी० पी० सिंह प्रधानमन्त्री बनने के तीन दिन बाद ७ दिसम्बर १९८९ को अमृतसर आए और उन्होंने स्वर्ण मन्दिर में पंजाब के अन्दर शान्ति की बहाली की अरदास की। सत्ता संभालने के बाद पंजाब में यह उनका पहला चक्कर था।

पंजाब में उनका दूसरा चक्कर ११ जनवरी को लुधियाना में आयोजित सर्वदलीय रैली के समय लगा।

परन्तु उनकी पहली और दूसरी यात्रा के दौरान पंजाब में खून का दरिया फूट पड़ा और अब जब १३ अप्रैल को चार महीने के शासनकाल में वह तीसरी बार पंजाब की यात्रा पर अमृतसर आए तो खून का यह दरिया प्रदेश में बह रहा है। अपनी पहली यात्रा के दौरान जब कि वह बगैर सुरक्षा के खुली जीप में घूमे थे, इस बार उनकी सुरक्षा के कड़े प्रबन्ध किए गए थे और एक अनुमान के अनुसार उन पर १ करोड़ रुपया खर्च हुआ। इतना ही नहीं प्रधानमन्त्री के अनुसार उनसे यह भी कहा गया कि इस यात्रा के दौरान उन पर वार भी हो सकता है।

प्रधानमन्त्री के सुरक्षा प्रबन्ध इतने कड़े थे, इसका अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि जिन लोगों के पास थे, वे भी और राजनीतिक दलों के बहुत से नेता और कार्यकर्त्ता भी जलियांवाला बाग में नहीं जा सके, तीन दिन अघोषित कर्फ्यू का वातावरण रहा और उपस्थिति भी आतंक के वातावरण के कारण काफी कम थी। दूर-दूर तक सुरक्षा कर्मियों की कतारें लगी हुई थीं, मकानों की छतों पर दिल्ली से आए ब्लैक कैट कमांडो अत्यन्त आधुनिक हथियारों से लैस हुए बैठे थे और जिस बुलेट प्रूफ कार में प्रधानमन्त्री आए, उसके दोनों तरफ दो-दो ब्लैक कैट कमांडो लटक रहे थे।

इन चार महीनों के दौरान केन्द्र सरकार ने पंजाब की स्थिति को सामान्य बनाने के लिए कई पग उठाए और कई पहलें की हैं परन्तु पंजाब में शांति के स्थान पर अशान्ति को ही बढ़ावा मिला है।—

मर्ज बढ़ता ही गया ज्यों-ज्यों दवा की

इन चार महीनों के दौरान केन्द्रीय सरकार ने सर्वश्री सिमरनजीतसिंह मान, प्रकाशसिंह बादल, गुरचरणसिंह टोहरा व अन्य अकाली नेताओं से अलग-अलग और इकट्ठे होकर पंजाब में किसी भी तरह से शान्ति स्थापना के लिए जो प्रयत्न किए हैं वे सिरे नहीं

(शेष पृष्ठ १० पर)

वैदिक आख्यानों की प्रकृति तथा वास्तविकता पर आयोजित विद्वत गोष्ठी

पंजाब विश्वविद्यालय के दयानन्द शोध पीठ के द्वारा आयोजित वैदिक आख्यान विषयक विद्वानो की दो दिवसीय गोष्ठी दिनांक ३-४ मार्च को विश्वविद्यालय के भव्य गांधी भवन मे सम्पन्न हुई। वैदिक मंगलाचरण के पश्चात् शोध सहायिका डा० वसुन्धरा रिहानी ने आगत अतिथि विद्वानो का स्वागत करते हुए आशा प्रकट की कि यह विद्वत् समुदाय वेद वर्णित विभिन्न आख्यानो की वास्तविकता का पता लगा पायेगा। अपने प्रास्ताविक भाषण में शोध पीठ के निवर्तमान अध्यक्ष तथा वर्तमान प्रोफेसर डा० भवानीलाल भारतीय ने अपने प्रास्ताविक भाषण मे वेदाध्ययन मे उपस्थित होने वाली समस्याओ का विस्तार से वर्णन किया तथा निरुक्त; ब्राह्मण, मीमांसा आदि के शास्त्रीय प्रमाणो से सिद्ध किया कि वेदो मे आपातत: प्रतीत होने वाले आख्यान वास्तविक न होकर प्राकृतिक तथ्यो, घटनाओ तथा अन्य शाश्वत सत्यो का आलंकारिक वर्णन ही करते हैं। व्याख्याकार ऋषियो ने परोक्षता और अपने कथ्य को सुगम बनाने के लिये ही इन आख्यानो का सहारा लिया है। मनु ने स्पष्ट घोषित किया है कि—

सर्वेषां तु नामानि कर्माणि च पृथक् पृथक्।
वेद शब्देभ्य: एवादौ पृथक् संस्थाश्च निर्ममे॥

अर्थात् लोगो मे व्यक्तियो, पदार्थों, स्थानो आदि को जो नाम दिये गये वे वेदो मे वर्णित पदो को लेकर ही दिये गये हैं। अत: वेद में उल्लिखित राम, सीता, अयोध्या, दशरथ आदि नामो तथा तत्सम्बद्ध कथाओ की वास्तविकता को समझने की आवश्यकता है। वे कालान्तर कालीन व्यक्तियो या स्थानो के नाम नही हैं। गोष्ठी का उद्घाटन डी.ए.वी. कालेज चण्डीगढ़ के प्राचार्य श्री कृष्णसिंह आर्य ने किया। त्रिसत्रीय इस गोष्ठी का अध्यक्षता सर्वश्री डा० सुधीरकुमार गुप्त, डा. फतहसिंह तथा डा. कृष्णलाल (अध्यक्ष; संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय) ने की।

निम्न विद्वानो ने अपने शोध पत्र पढ़े—

प्रो० कृष्णलाल (दिल्ली) शुन:शेप आख्यान की समीक्षा।
डा० सुरेन्द्र कुमार (झज्जर) विष्णु का विक्रमण और वामन की कथा।
डा० विक्रम कुमार (चण्डीगढ़) वैदिक आख्यान : एक समीक्षा।
डा० नवविहारी चौबे (होशियारपुर) माइथोलोजी और आख्यान।
डा० धर्मानन्द (होशियारपुर) वेदो मे आख्यानो की स्थिति
डा० माधसिंह (शिमला) यास्कीय निरुक्त और वैदिक आख्यान।
डा० श्रद्धा चौहान (जोधपुर) सोमभूत सामग्री।
डा० भारतभूषण (कांगड़ी) वैदिक आख्यानो का स्वरूप।
डा० सुरेन्द्रमोहन मिश्र (कुरुक्षेत्र) ऋग्वेद वर्णित भृगु उपाख्यान।
डा० वसुन्धरा रिहानी (चण्डीगढ़) इन्द्र दध्यङ् आख्यान की समीक्षा।
डा० फतहसिंह (दिल्ली) उर्वशी पुरुरवा कथा की वास्तविकता।
डा० वैथिली प्रसाद भारद्वाज (चण्डीगढ़) ऋग्वेद के आख्यानो का तुलनात्मक अध्ययन।
डा० जयदत्त उप्रेती (अल्मोड़ा) वैदिक आख्यानो की वास्तविकता।
डा० नरसिंह पण्डा (चण्डीगढ़) वैदिक आख्यान : एक समीक्षा।
डा० सुधीर कुमार गुप्त (जयपुर) वैदिक आख्यान और वास्तविकता।

अपने समापन भाषण मे डा. भवानीलाल भारतीय ने विवेचनीय विषय का समाहार करते हुए स्पष्ट किया कि महर्षि दयानन्दने मन्त्र संहिताओ और ब्राह्मण ग्रन्थो की पृथकता स्पष्ट कर दी है। ब्राह्मण ग्रन्थो में जो उपाख्यान पाये हैं वे भी मन्त्र गत तथ्यो का ऋषियो के द्वारा किया गया विस्तार या उपबृंहण ही है। वस्तुत: इन तथाकथित आख्यानो की ऐतिहासिकता किसी भी प्रकार सिद्ध नही होती और नित्य घटनाओ और प्राकृतिक तथ्यो को ही इन्द्रवृत्र जैसे उपाख्यानो मे दिखाया गया है। गोष्ठी को सफल बनाने मे विभाग के कर्मिष्ठ-सर्वश्री नरेन्द्रसिंह, फौजासिंह तथा होशियारसिंह का प्रशंसनीय सहयोग रहा। इस सारस्वत सत्र को सुचारु रूप से सम्पन्न करने के लिये पंजाब विश्वविद्यालय ने हजार रुपयों का अनुदान दिया।

कम्प्यूटर पर संस्कृत शिक्षा अगले वर्ष से

नई दिल्ली २६ मार्च। विज्ञान तथा टक्नालोजी राज्यमन्त्री प्रो० एम०जी०के० मेनन ने आज लोकसभा को बताया कि कम्प्यूटर की सहायता से संस्कृत की शिक्षा की आवश्यक सामग्री अगले वर्ष तक तैयार हो जायेगी।

उन्होंने बताया कि लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ में १९८६ में इस परियोजना पर काम शुरू किया है। जवाहर लाल नेहरू विश्व विद्यालय में जून १९४८ से इस परियोजना पर काम पर चल रहा है। इस पर १० लाख ८० हजार रुपये खर्च होने का अनुमान है।

श्री मेनन ने श्री लालकृष्ण आडवाणी को बताया कि सभी भारतीय भाषाओ मे कम्प्यूटर के माध्यम से शिक्षा देने तथा इन भाषाओ में कम्प्यूटर की मदद से परस्पर अनुवाद की एक व्यापक परियोजना अगली पचवर्षीय योजना में शुरू की जायेगी। इस बारे में अब तक बहुत सफल प्रयोग किये जा चुके हैं।

प्रो० विजयकुमार मल्होत्रा को उन्होंने बताया कि ये कार्यक्रम इलेक्ट्रानिक विभाग के तत्वावधान में चल रहे हैं।

श्री मेनन ने बताया कि इलेक्ट्रानिकी विभाग द्वारा भारतीय भाषाओ के लिए प्रौद्योगिकी कार्यक्रम के प्रथम पांच वर्षों के लिए कुल १७ करोड़ रुपये का व्यय होने का अनुमान है।

संस्कृत की शिक्षा के बारे में श्री मेनन ने बताया कि साफ्ट वेयर की केन्द्रीयकृत प्रणाली का डिजाइन तैयार कर लिया गया है। जिसका प्रयोग शिक्षण शिक्षार्जन से सम्बन्धित पाठों तथा अभ्यासों को तैयार करने के लिए किया जायेगा। इसके अतिरिक्त दो पाठों के डिजायन और तैयार किये गये हैं जिनमें से एक वर्णमाला सिखाने के तथा उनकी विशेषताओं के सम्बन्ध में है और दूसरे का सम्बन्ध सन्धियों से है।

उन्होंने बताया कि ये प्रस्तावित साफ्टवेयर पैकेज वाक्यों पाठ्य सामग्री की संरचना शब्दावली, विषय बोध सृजन मूल्यांकन से सम्बन्धित प्रयास और अभ्यास तथा भूल सुधार विषयम अभ्यासों को सुविधाजनक बनाने के उद्देश्य से अनुपूरक अनेकात्मक सहायक उपकरणों के रूप में उपलब्ध हों। (वीर अर्जुन २७ मार्च १९९०)

वर्तमान परिस्थितियां और हमारा दायित्व

लेखक : विश्वनाथ पाण्डेय

[लेखक के विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं]

विगत दिनों श्रीराम जन्मभूमि के पुनरुद्धार के प्रसंग पर देश के विभिन्न भागों में होनेवाले साम्प्रदायिक दंगो ने यह भलीभांति सिद्ध कर दिया है कि जब १९४७ में हमने शांति के हित में राष्ट्र का जो विभाजन स्वीकार किया था, वह केवल एक मृगमरीचिका ही थी। धार्मिक आधार पर राष्ट्र के विभाजन की मांग करने वाले तत्वों को विभाजन के पश्चात् भी लोकमत के विरुद्ध यहां बनाये रखने का जो दुराग्रह तत्कालीन नेताओं ने किया था, उसके दुष्परिणाम अब सम्पूर्ण राष्ट्र को भुगतने पड़ रहे हैं।

जिसके पवित्र नाम ने समस्त भारतवासियों को एकता के सूत्र में बांध रखा है, उन्हीं राष्ट्रपुरुष मर्यादापुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के मन्दिर निर्माण हेतु ले जाई जा रही शिलाओं की रथयात्रा उनके ही देश में निर्विघ्न संपन्न न हो सकी। इस हिन्दू राष्ट्र के लिये इससे अधिक लज्जा की बात और क्या हो सकती है? तथाकथित धर्मनिरपेक्ष सरकार की पुलिस और प्रशासन ने अपनी अक्षमता को छिपाते हुए इस धार्मिक यात्रा के नगरों में प्रवेश पर प्रतिबन्ध लगाकर न केवल बहुसंख्यक हिन्दू समाज की भावनाओं को आहत किया बल्कि प्रजातन्त्र और धर्मनिरपेक्षता के सिद्धान्तों को भी कलंकित कर दिया।

वस्तुतः उपरोक्त सिद्धान्त हमारे देश में केवल प्रवंचना मात्र बनकर रह गये हैं। क्योंकि यदि प्रजातन्त्र का अर्थ बहुमत का आदर करना तथा धर्मनिरपेक्षता का अर्थ सर्वधर्म समभाव होता, तो कश्मीर में हजरत मोहम्मद के खोये हुए बाल का पता लगाने में आकाश पाताल एक कर देने वाली हमारी सरकार करोड़ों हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं का आदर करते हुए गोहत्या के जघन्य अपराध पर कभी से कानूनी प्रतिबन्ध लगा चुकी होती।

धर्म को राजनीति से पृथक रखने की दूसरों को शिक्षा देने वाले हमारे इन सत्ताधीशों ने अपने धार्मिक पक्षपात के द्वारा राष्ट्रघाती नीतियों को पराकाष्ठा तक पहुँचा दिया है। यह जानते हुए भी कि कृत्रिम उपायों के द्वारा सन्तति निरोध करना हिन्दू धर्मशास्त्रों के सर्वथा विपरीत है, परिवार नियोजन कार्यक्रम हिन्दुओं के लिये अनिवार्य कर दिया। जबकि मुसलमानों को अनेक पत्नियां रखने एवं जनसंख्या में दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि करने की छूट देकर धार्मिक स्वतन्त्रता के अधिकार के दुरुपयोग पर कानूनी मुहर लगा दी। इस पक्षपातपूर्ण नीति के कारण जहां हमारी विकास योजनाएं असफल हुईं वहीं राष्ट्रीय प्रगति भी अवरुद्ध हुई। क्या देश के विकास और प्रगति का ठेका केवल हिन्दुओं का है? इस देश में रहने वाले मुसलमानों का कोई दायित्व नहीं? देश के स्वरूप को बदलने वाली इस राष्ट्रघाती नीति के अवश्यम्भावी परिणामस्वरूप बहुसंख्यक हिन्दू समाज जब अल्पसंख्यक हो जायगा, तब प्रजातन्त्र, धर्मनिरपेक्षता तथा समाजवाद के सिद्धान्तों का क्या होगा? स्वप्नलोक में विचरण करने वाले देश के राजनीतिज्ञ इन सिद्धान्तों को कैसे सुरक्षित रख सकेंगे? क्या संसार में आज तक एक भी ऐसा मुस्लिम बहुसंख्यक राष्ट्र हुआ है, जिसने धर्मनिरपेक्षता का पालन किया हो? वास्तव में ये तीनों सिद्धान्त इस देश में केवल तभी तक सुरक्षित हैं, जब तक हिन्दू यहां बहुमत में हैं। अतः राष्ट्र के वर्तमान स्वरूप को बनाये रखने के लिये देश के प्रत्येक नागरिक के लिये, चाहे वह किसी भी धर्म को मानता हो, समान कानून होना नितान्त आवश्यक है। किन्तु इस वास्तविकता की उपेक्षा करते हुए देश के राजनेता विगत ४२ वर्षों से अपने राजनैतिक स्वार्थों की पूर्ति में लिप्त हैं। उन्हें न सिद्धान्तों की चिन्ता है और न देश के भविष्य की। उनकी दशा उस व्यक्तिके समान हो गई है, जो उसी डाल को काट रहा है, जिस पर वह बैठा है।

अपने क्षणभंगुर जीवन को सुख सुविधामय बनाने के लिये राजनीति को माध्यम बनाने वाले हजारों लोग हैं, किन्तु पूर्वजों की कीर्ति को उज्ज्वल करने तथा देश, धर्म और संस्कृति पर अपना सब कुछ अर्पण कर देने वाले वीर राणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी तथा गुरु गोविन्दसिंह जैसे नरश्रेष्ठ विरले ही होते हैं। स्वतन्त्रता के पश्चात् देश का नेतृत्व जिन हाथों में रहा, दुर्भाग्यवश वे लोग तन से भारतीय किन्तु मन, वाणी और कर्म से अंग्रेज ही निकले। अंग्रेजों के इन मानस पुत्रों ने अपनी दूषित नीतियों द्वारा देश की एकता और अखण्डता को जो आघात इन ४२ वर्षों में पहुँचाया उतना आघात अंग्रेज भी अपने सम्पूर्ण शासनकाल में न पहुँचा सके।

हमारे प्राचीन मनीषियों ने जिस सुसंगठित सामाजिक व्यवस्था की स्थापना इस देश मे की थी, वह समाज के सावयव सिद्धान्त पर आधारित थी। जिस प्रकार मानव शरीर में मस्तक, भुजाओं, उदर तथा पैर आदि अंगों का महत्व है तथा वे एक दूसरे के पूरक हैं, ठीक उसी प्रकार समाज के चारों वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र भी एक दूसरे के पूरक तथा परस्पर अन्योन्याश्रित हैं। गुण, कर्म तथा स्वभाव पर आश्रित यह व्यवस्था हमारी आर्थिक प्रणाली तथा राष्ट्रीय एकता का मुख्य आधार थी। कालान्तर में यह व्यवस्था जन्म पर आश्रित होकर जाति प्रथा में परिणत हो गई। किन्तु फिर भी हमारी एकता अक्षुण्ण बनी रही। इतना ही नहीं बल्कि इससे सम्पूर्ण राष्ट्र की व्यावसायिक दक्षता में भी अभिवृद्धि हुई। इस व्यवस्था के अन्तर्गत व्यक्ति को व्यावसायिक सुरक्षा प्राप्त थी। आज की भांति तत्कालीन युवक को नौकरी की तलाश में सरकारी दफ्तरों के चक्कर लगाने की आवश्यकता न थी। अपना व्यवसाय उसे पारिवारिक उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त हो जाता था। कहने की आवश्यकता नहीं कि अनन्तकाल से चली आ रही यही प्राचीन व्यवस्था आज भी हमारी सामाजिक एवं आर्थिक प्रणाली का मुख्य आधार बनी हुई है।

इतनी सुव्यवस्थित एवं उपयोगी प्रणाली के विरुद्ध असन्तोष भड़काने की अपेक्षा यदि हमारे कर्णधार श्रम को प्रतिष्ठा के अवमूल्यन से उत्पन्न आर्थिक विषमता तथा अन्य विसंगतियों को दूर करने का प्रयत्न करते तो राष्ट्र का वास्तविक हित हुआ होता। किन्तु इसके विपरीत इन महानुभावों ने हिन्दू समाज के एक बहुत बड़े भाग को अनुसूचित जाति, जनजाति तथा पिछड़ी जाति कहकर तथा आरक्षण का लालच दिखाकर जहां अपने लिये 'वोट बैंक' की स्थापना कर ली, वहीं हिन्दू समाज एवं राष्ट्र की भावात्मक एकता को समाप्त कर देश में वर्ग संघर्ष का मार्ग प्रशस्त किया।

भारतवर्ष एक धर्म-प्राण देश है। हमारी सभ्यता, संस्कृति एवं समग्र जीवन पद्धति हमारे धर्म से अनुप्राणित है। यदि धर्मनिरपेक्षता की अनुचित व्याख्या की आड़ में हमारा शासक वर्ग धर्म के शाश्वत सिद्धान्तों के विपरीत आचरण करता रहा तो इसके परिणाम देश के लिये अत्यन्त घातक सिद्ध होंगे। इतिहास साक्षी है कि अपने धार्मिक प्रचार के लिये हिन्दू जाति ने हिंसा का आश्रय लेकर कभी भी किसी देश पर आक्रमण नहीं किया। इसके विपरीत अनेक धर्मान्ध आक्रमणकारियों ने कई बार इस देश पर आक्रमण किये, हमारी संपत्ति को लूटा तथा हमारे धर्मस्थलों का विध्वंस कर उन्हें अपवित्र किया। अन्याय, अत्याचार तथा बलात् धर्मान्तरण के दमनचक्र को शताब्दियों तक सहन करके भी धार्मिक सहिष्णुता की पर्याय हिन्दू जाति ने आक्रान्ताओ के साथ भी सौहार्द्र तथा सामंजस्य बनाये रखा। इतना ही नहीं बल्कि अपनी मातृभूमि का विभाजन भी इस आशा में स्वीकार कर लिया कि उसके बाद सारा झगड़ा समाप्त हो जायगा और हम अपने देश में सुख शांति से रह सकेंगे। किन्तु खेद है कि इतना मूल्य चुकाने के बाद भी हमें विभाजन पूर्व की परिस्थितियों का सामना पुनः करना पड़ रहा है। और हमारी सरकार हमें ही धार्मिक सद्भाव बनाये रखने का उपदेश दे रही है।

सच तो यह है कि धार्मिक आधार पर राष्ट्र के विभाजन के साथ ही इस देश के मुसलमान अपने समस्त अधिकार खो चुके हैं। उन्हें अपनी हठवादिता को त्यागकर इतिहास की गलतियों को सुधारने में हमारी सहायता करनी चाहिये। किन्तु ऐसा न करके वे हमारे धर्मस्थलों के

(शेष पृष्ठ ७ पर)

वेद विज्ञान और आर्यसमाज

श्रीकृष्ण दास शाह रिटायर्ड जज, ग्वालियर

साधारण तथा विभिन्न धर्मों की धर्म पुस्तकों में या तो अध्यात्म अर्थात् ईश्वर व जीवों के सम्बन्ध या नैतिकता या फिर सृष्टि उत्पत्ति सम्बन्धी बातें ही होती हैं। किन्तु इन धर्म ग्रन्थों में मनुष्यों को संसार के विभिन्न पदार्थों के अधिक से अधिक गुणों का अनु-संधान भी करना चाहिये व विज्ञान की विभिन्न विद्याओं की उन्नति करना भी उनका एक आवश्यक कर्तव्य है ऐसा उपदेश किसी भी धर्म ग्रन्थ में नही मिलता। वेदों की ही यह विशेषता है कि उसमें अध्यात्म, नैतिकता व सृष्टि की उत्पत्ति आदि के वर्णन तो आये ही हैं किन्तु इन सबके अतिरिक्त जो वेदों में विशेषता है वह यह कि प्राय: चारों वेदों में ही अन्य बातों के अतिरिक्त सैकड़ो मन्त्रों में परमेश्वर द्वारा रचित पानी, वायु,अग्नि, सूर्य, पृथ्वी आदि विभिन्न पदार्थों के अधिक से अधिक गुणों व उपयोगों को निरन्तर अनुसंधान करके उनसे अधिक से अधिक उपकार व लाभ लेते रहने के आदेश व उपदेश भी हैं।

विभिन्न वेदों में किस प्रकार विभिन्न प्राकृतिक पदार्थों के सम्बन्ध में निरन्तर अनुसंधान करते रहने व उन्हें मनुष्यो के लिये अधिक से अधिक उपयोगी बनाने के आदेश व उपदेश हैं इनके कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं:—

ऋग्वेद मण्डल। सूत्र। मन्त्र दो के अनुसार विद्वानों व विद्या-र्थियों आदि सबके लिये परमेश्वर नित्य स्तुति योग्य व भौतिक अग्नि नित्य खोजने योग्य है। अर्थात् सबको भौतिक अग्नि के नित्य नये नये गुणों की खोज व अनुसंधान करते रहना चाहिये। ऋग्वेद १-६-९ के अनुसार मनुष्यों को वायु के उत्तम गुणों के ज्ञान आदि के लिये प्रयत्न सदा करना चाहिये जिससे सब व्यवहार सिद्ध हों। ऋग्वेद १-७-१ में ईश्वर उपदेश करता है कि वेद मन्त्रों के विचार से परमेश्वर, सूर्य, वायु, आदि के गुणों को अच्छी प्रकार जानकर मनुष्यों को प्रयत्न से उनसे उपकार लेना चाहिये।

ऋग्वेद १-१२-१ में ईश्वर की आज्ञा है कि सबको अग्नि के गुणों की खोज करनी चाहिये। ऋग्वेद १-१४-८ के अनुसार मनुष्यों को इस जगत में सब संयुक्त पदार्थों के एक तो गुणों को जानना चाहिये दूसरे उनसे कार्य की सिद्धी करनी चाहिये।

यजुर्वेद में भी अनेक मन्त्रों में ऐसे ही उपदेश हैं। उदाहरण के लिये यजुर्वेद के अध्याय २ के मन्त्र ३ के अनुसार ईश्वर ने जो सूर्य विद्युत व प्रत्यक्ष रूप से तीन प्रकार का अग्नि रचा है वह विद्वानों द्वारा यन्त्रों में प्रयुक्त हुआ अनेक कार्यों को सिद्ध करने वाला होता है। मनुष्यों को उनके गुणों को यथावत् जानकर उपयोग करना चाहिए। यजुर्वेद २।४ के अनुसार संसार में जितने क्रियाओं से सिद्ध होने वाले पदार्थ हैं उनको परमेश्वर ही ने रचा है। मनुष्यों को उचित है कि उनके गुणों का ज्ञान करके उत्तम-उत्तम क्रियाओं की अनुकूलता से उनसे अनेक उपकार लें। यजुर्वेद २/१५ में ईश्वर उपदेश करता है कि सब मनुष्यों को विद्या व युक्तियों से अग्नि व जल के मेल से तथा वायु विद्युत अपनी की विद्या से दरिद्रता का नाश करना चाहिए, यजुर्वेद ३।११ के अनुसार जो मनुष्य ईश्वर की सृष्टि में अग्नि और वायु के गुणों को जानकर कार्यों में संयुक्त करता है वह राज्य व धन प्राप्त करता है। अन्य नहीं। यजुर्वेद ३।१४ के अनुसार मनुष्यों को वायु के निमित्त से उत्पन्न अग्नि को यथावत् जानकर उसके उपयोग से सब कार्य सिद्ध करना चाहिए। यजुर्वेद ३।४० के अनुसार मनुष्यों को परमेश्वर की कृपा व अपने पुरुषार्थ से अग्नि विद्या का सम्पादन करके अनेक प्रकार के धन और बलों का विस्तार करना चाहिये। यजुर्वेद १० २० के अनुसार मनुष्यों को जगत के पदार्थों के गुणों का ज्ञान प्राप्त करके उपयुक्त क्रियाओं से उनसे उपकार ग्रहण करके सुख प्राप्त करना चाहिये।

यजुर्वेद १३।४४ में ईश्वर ने उपदेश दिया है कि सब मनुष्यों को चाहिये कि जो यह पृथ्वी, सूर्य, मेघ आदि असंख्य सुख देने वाले पदार्थ ईश्वर ने रचे हैं, उनको गुण, कर्म, स्वभाव से जानकर सुख के लिये प्रयुक्त करे। यजुर्वेद २९।१४ के अनुसार मनुष्य को ईश्वर की सृष्टि में परमात्मा की रचनाओं की विशेषताओं को जानकर शिल्प विद्या में प्रयोग करना चाहिये।

इसी प्रकार अथर्ववेद में भी अनेक मन्त्रों में मनुष्यों को प्रकृति के विभिन्न पदार्थों के गुण, कर्म, स्वभाव आदि का अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करके इनसे उपकार लेने का उपदेश दिया गया है। उदाहरणार्थ अथर्ववेद कांड चार २५ व २६ में मनुष्यों को उपदेश दिया गया है कि वे पुरुषार्थ से सूर्य, वायु, जल, व पृथ्वी के अधिक से अधिक गुणों को जानकर उनके विज्ञान से उपकार लेकर ऋद्धि; सिद्धि, बल, स्वास्थ्य, बुद्धि, प्रताप व धनों को बढ़ाकर आनन्द प्राप्त करें। अथर्ववेद कांड ४ सूक्त ११ के मन्त्र ६ व ७ में मनुष्यों को उपदेश दिया गया है कि वे सूर्य, सूर्य व पृथ्वी के सम्बन्ध व चन्द्रमा के पुष्टिकारक गुणों को जानकर उनसे आदि पदार्थों को पुष्ट करें। अथर्ववेद कांड ६ सूत्र ७६ के अनुसार मनुष्यों को अग्नि, सूर्य व बिजली आदि के गुणों को जानकर उन्हें शिल्प कला व यन्त्रों मे प्रयुक्त कर दरिद्रता को दूर करना चाहिये। अथर्ववेद १००-३-१२ के अनुसार मनुष्यों को सूर्य, अंतरिक्ष, पृथ्वी के दिव्य गुणों को जानकर उनसे धन धान्य प्राप्त करना चाहिये। अथर्ववेद १२-३-४१ के अनुसार मनुष्यों को बड़े प्रयत्न से विज्ञान व सृष्टि के तत्वों की खोज करना चाहिए।

इसी प्रकार सामवेद के मन्त्र ६६ के अनुसार मनुष्यों को योग्य है कि वे अग्नि के सम्बन्ध में अपने ज्ञान को व इसके गुणों को अपनी बुद्धि से बढ़ावें। सामवेद मन्त्र ६८ के अनुसार जिस प्रकार मेघस्थ जल अपने में से विचि प्रकार चमकने वाली बिजलियों की उत्पन्न करती हैं उसी प्रकार विद्वान लोग भी वेदवाक्यों आदि से अग्नि के गुणों को जानकर तदनुसार अग्नि से अनेक अस्त्रों को उत्पन्न करें। सामवेद मन्त्र १५२७ में उपदेश है कि मनुष्यों को चाहिए कि वह अपनी बुद्धियों द्वारा अग्नि को प्रेरित करें, जिससे हम धन ही धन कमा सकें।

वेदों के उपरोक्त उदाहरणों से यह स्पष्ट है कि वेदों के अनुसार सृष्टि के विभिन्न पदार्थों के नए-नए गुण, प्रभाव व स्वभावों की व अनुसंधान निरन्तर करते रहना भी मनुष्यों के लिये उतना ही आवश्यक है, जितनी परमेश्वर की भक्ति व उसकी स्तुति, प्रार्थना व उपासना। वास्तव में परमेश्वर द्वारा रचे विभिन्न पदार्थों के नए-नए गुणों आदि का ज्ञान प्राप्त करके उनसे अधिक से अधिक उपकार लेना भी उसकी कृतज्ञता प्रकट करने व उसकी स्तुति व उपासना का एक साधन है, व यह भी सब मनुष्यों का एक आव-श्यक कर्तव्य हैं।

वेदों में सृष्टि के पदार्थों के नए नए गुणों का अनुसंधान व आविष्कार पर बल दिये जाने को देखते हुए आशा तो यह थी कि हर आर्यसमाज में सृष्टि के विभिन्न पदार्थों के नए नए गुणों आदि के अनुसंधान के लिए एक वैज्ञानिक रसायन व अनुसंधान

(शेष पृष्ठ ८ पर)

बचो ! बचो ! इस्लाम के इन ठेकेदारों से

धर्मनिरपेक्षता क्या है ? इसकी आज तक व्याख्या नहीं हुई लेकिन धर्मनिरपेक्षता के ठेकेदार प्रायः यह समझते हैं कि जो हिन्दुओं को गालियां दे वही धर्मनिरपेक्ष है। ऐसे लोगों को हर तरह से प्रोत्साहित किया जाता है। और उन्हें वहां पहुंचाया जाता है जहां उनके लिए कोई जगह नहीं होती।

जनता दल एक नई पार्टी बनी है उसकी यह कोशिश रहती है कि अपने साथ अधिक से अधिक उन लोगों को लेकर चलें जो अपने आपको धर्मनिरपेक्ष कहते हों, चाहे वह चोर डाकू ही क्यों न हों लेकिन वह धर्मनिरपेक्ष अवश्य होने चाहिए अर्थात् जो हिन्दुओं को और हिन्दूधर्म को खूब गालियां देते हों।

एक नया उदाहरण मेरे इस विचार की पुष्टि करता है। आजकल राज्यसभा के लिए नए सदस्यों का चुनाव हो रहा है। विभिन्न राजनीतिक पार्टियों ने राज्यसभा के लिए अपने उम्मीदवार मनोनीत किए हैं। जनता दल ने उत्तर प्रदेश का एक मौलवी इसके लिए मनोनीत किया है। उसका नाम है मौलाना अब्दुल्ला खान आजमी। उसकी सिफारिश सम्भवतः दिल्ली के शाही इमाम ने की है और जनता दल के प्रधान श्री विश्वनाथप्रतापसिंह शाही इमाम के बहुत श्रद्धालु हैं। इसलिए मौलाना बुखारी की सिफारिश को वह रद्द नहीं कर सके। और अब्दुल्ला खान आजमी को जनता दल की ओर से राज्यसभा के लिए मनोनीत कर दिया गया है।

लेकिन यह अब्दुल्ला खान है कौन ? कहते हैं कि यह बरेली के उन मौलवियों में से है जो जगह जगह घूमकर इस्लाम का प्रचार करते हैं। उनमें से कुछ उच्चकोटि के वक्ता हैं। जब भाषण देते हैं तो लोगों पर जादू करते हैं और जहां तक इस व्यक्ति अर्थात् अब्दुल्ला खान आजमी का सम्बन्ध है उसके भाषणों के कैसेट भी बने हुए हैं। जो बिकते भी हैं और इस्लाम के प्रचार के लिए मुफ्त भी बांटे जाते हैं।

यह मौलवी साहब जिन्हें जनता दल ने राज्य सभा के लिए मनोनीत किया है किस तरह के भाषण देता है नीचे प्रस्तुत कर रहा हूं। यह सब दिल्ली के प्रसिद्ध अंग्रेजी दैनिक "टाईम्स आफ इण्डिया" ने प्रकाशित किए हैं और उसने यह प्रश्न भी किया है कि ऐसे व्यक्ति को जनता दल की ओर से राज्यसभा का उम्मीदवार क्यों मनोनीत किया गया है।

मौलाना अब्दुल्ला खान आजमी ने अपने एक भाषण में कहा है—

न घबराओ मुसलमानो खुदा की शान—बाकी है

अभी इस्लाम जिन्दा है अभी कुरान—बाकी है

यह काफिर क्या समझते हैं जो अपने—दिल में हंसते हैं

अभी तो करबला का आखिरी मैदान—बाकी है

और फिर यही मौलाना कहते हैं कि

"राजनीति का इस्तेमाल हम धर्म के लिए करेंगे। राजनीति का इस्तेमाल हम कौम के लिए करेंगे।"

देश के सबसे बड़े न्यायालय सुप्रीमकोर्ट के बारे मे यह साहब कहते हैं।

"हम किसी अदालत के आदेश के पाबन्द नहीं हैं। हाईकोर्ट तो क्या यदि सुप्रीमकोर्ट भी इस्लामी कानून के खिलाफ कुछ कहेगा तो हम उसे भी जूती की नोक पर रख देंगे।"

इस्लाम और हिन्दू धर्म इन दोनों में तुलना करते हुए मौलवी खान कहता है।

"यह इस्लाम था जिसने हिन्दू लड़कियों को जीवित दबा देने का रिवाज खत्म किया था। और यह इस्लाम था जिसने सतीप्रथा खत्म की थी। हिन्दू अपनी विधवाओं को पुनर्विवाह की अनुमति नहीं देते और यदि सुबह किसी विधवा की शक्ल देख लें तो उसे अपशकुन समझते हैं। लेकिन इस्लाम ने उन्हें सम्मान दिया।"

जिन दिनों इन्दिरा गांधी जीवित थी यह मौलवी कहा करता था कि "एक विधवा दिल्ली में भी रहती है। कई लोग सुबह इसके दर्शन के लिए जाते हैं। जब एक विधवा लोगों में परमिट और लाईसेंस बांटती है तो उसके दर्शन करना बुरा नहीं समझा जाता। लेकिन एक कुमारी लड़की के दर्शन करना ठीक नहीं समझा जाता। इस्लाम इस तरह की दोगली नीति की अनुमति नहीं देता।"

महिलाओं के लिए समान अधिकारों की मांग करने वालों की आलोचना करते हुए मौलाना अब्दुल्ला ने कहा।

"जो लोग औरतों के लिए ये अधिकार मांगते हैं वह न केवल यह चाहते हैं कि वह आई०ए०एस० में भर्ती हो जाएं बल्कि वह यह भी चाहते हैं कि वह विमान चालक भी बनें। वह इन्हें बाल कटी कबूतरी बनाना चाहते हैं "कि वह भी चाहते हैं "कि यह औरतें टेढ़ी पैंट पहने।"

और फिर इस मौलवी ने यह भी कहा कि—

"यदि ये लोग चाहते हैं कि स्त्रियों और पुरुषों के बराबर के अधिकार हों तो फिर पुरुषों को भी हर रोज एकबार खाना पकाना चाहिए और एक बार औरत को पकाना चाहिए। यदि औरत एक बच्चा पैदा करती है तो उसके पति को भी उसी तरह एक बच्चा पैदा करना चाहिए। ऐसी स्थिति दोनों के बराबर के अधिकार होंगे।"

हिन्दुओं और मुसलमानों में जो अन्तर है उसका उल्लेख करते हुए मौलाना कहता है—

"आप लोगों ने महात्मा गांधी को मारा। आपने इन्दिरा गांधी को मारा। जब कोई हिन्दू मर जाता है उसकी लाश गंगा में फेंक दी जाती है। वह बहती हुई पाकिस्तान चली जाती है। लेकिन जब एक मुसलमान मरता है तो उसे इसी देश की मिट्टी में दफना दिया जाता है। फिर कहा जाता है कि मुसलमान इस देश के वफादार नहीं हैं।

और फिर वह कहता है "भारत माता के असली सपूत तो मुसलमान हैं बाकी सब कपूत हैं। जो लोग मुसलमानों के विरुद्ध यह प्रचार करते हैं कि वह इस देश के वफादार नहीं हैं उनमें से कई गरीब लड़कियों की गरीबी का अनुचित लाभ उठाते हैं। इन लड़कियों को दिन में अपनी प्राईवेट सैक्रेटरी बनाते हैं और रात को इन सीताओं की इज्जत लूटते हैं।"

यह हैं वह मौलाना अब्दुल्ला खान आजमी जिसे जनता दल ने अपनी ओर से राज्यसभा के लिए मनोनीत किया है। जो लोग अपने आपको धर्मनिरपेक्ष कहते हैं वह प्रायः आंख के अन्धे और कान के बहरे होते हैं। उन्हें जो भी कमियां नजर आती हैं केवल हिन्दुओं में नजर आती है। किसी दूसरे में नहीं। जो व्यक्ति यह कहता है कि अभी तो करबला का आखरी मैदान बाकी है वह तो राष्ट्रवादी है और यदि कोई हिन्दू रामभूमि की बात करे तो वह साम्प्रदायिक है। कईबार यह प्रश्न भी किया जाता है कि हिन्दुओं में हिन्दुत्व की भावना नए सिरे से फिर क्यों तेज हो रही है। इसका उत्तर बहुत आसान है। इसके लिए या तो मौलवी अब्दुल्ला खान जैसे लोग जिम्मेदार हैं या जनता दल जैसे पार्टियां जो अब्दुल्ला और शाही इमाम जैसे लोगों को संरक्षण देती हैं।

—वीरेन्द्र

वर्तमान परिस्थितियां

(पृष्ठ ५ का शेष)

पुनरुद्धार के पुनीत कार्य में व्यवधान उत्पन्न कर रहे हैं। साथ ही हमारी सरकार भी अन्याय को अन्याय न कहकर अन्याय का समर्थन कर रही है।

उपरोक्त परिस्थितियों में देश, धर्म तथा संस्कृति की रक्षा का दायित्व सम्पूर्ण हिन्दू समाज पर आ जाता है। देश के विभिन्न भागों में निवास करने वाले हम लोग चाहे किसी भी जाति के हों; चाहे कोई भी भाषा बोलते हों अथवा किसी भी उपासना पद्धति को मानते हों; हिन्दू ही हैं। हमारी संस्कृति एक है। हमारे पूर्वज एक हैं। हम एक सुसंगठित राष्ट्र हैं। और राष्ट्र के प्रति पूर्ण निष्ठा ही हमारे हिन्दुत्व की पहिचान है। एकता की इस भावना को जन-जन में जागृत करना तथा राष्ट्रवादी विचारों को देश के कोने-कोने में पहुंचाना आज प्रत्येक हिन्दू का परम कर्तव्य है। हमारे अनेक भाई-बहन कुटिल राजनीतिज्ञों द्वारा फैलाई गई भ्रांतियों के कारण राष्ट्रघाती नीतियों को पहचानने में असमर्थ हैं, उन्हें भी हमें वास्तविकता से अवगत कराना है।

चूंकि देश के भविष्य, धर्म तथा संस्कृति की रक्षा का राजनीति से बिल्कुल सीधा सम्बन्ध है, अतः देश की राजनीति को अपने अनुकूल बनाने के लिए प्रत्येक हिन्दू को कृतसंकल्प होना होगा। हमें प्रतिज्ञा करनी होगी कि देश में होने वाले प्रत्येक स्तर के चुनावों में हम सदैव देश, धर्म और संस्कृति को हानि पहुंचाने वाले तत्वों को अपने मताधिकार से वंचित रख कर राष्ट्रवादी शक्तियों को विजयी बनाएं।

अमर शहीद सरदार भगतसिंह

लेखक : कवि रत्न जगदीश प्रसाद एरन, नीमच

शहीद राष्ट्र के आधार होते हैं। उन्हीं के बल पर राष्ट्र उठता और बढ़ता है। जो जाति अथवा राष्ट्र अपने शहीदों का सम्मान करते हैं वे अजेय होते हैं और शहीदों को भुला देने वालों को धरती भी भुला देती है।

"जननि जनें तो भक्त जन के दाता के शूर।"

राष्ट्र को स्वतन्त्र कराने में जिन शहीदों ने सर पर कफन बांधे उनमें सरदार भगतसिंह का नाम अग्रणी है। आपका जन्म सन् १९०७ में लायलपुर के एक देशभक्त परिवार में हुआ था। आपके पिताजी का नाम सरदार किशनसिंह जी था। जिस दिन आपका जन्म हुआ उसी दिन आपके चाचा श्री स्वर्णसिंह व श्री अजीतसिंह देश भक्ति के आरोप में जेल से छूट कर आये थे इसीलिए आपका नाम भगता अर्थात भाग्यशाली रखा गया।

आपकी शिक्षा लाहौर में हुई। पूरा परिवार कट्टर आर्य समाजी होने से क्रान्तिकारी विचार धारा का था। कालेज में ही आपका परिचय सुखदेव भगवती चरण व यशपाल से हुआ। उस समय इस कालेज के अध्यापक लाला लाजपतराय व भाई परमानन्द जैसे महान राष्ट्र भक्त थे। फिर भला कौन स्वाभिमानी नवयुवक क्रान्ति की दीक्षा लेने से बच सकता है। मेट्रिक की परीक्षा पास करके आपने पढ़ाई छोड़ दी तथा लाला लाजपतराय के नेशनल कालेज में भर्ती हो गये। यहां उन्होंने श्री जयचन्द विद्यालंकार की सरक्षता में एक क्रान्तिकारी संगठन बनाया किन्तु विद्यालंकार जी के खुलकर सामने न आने के कारण सरदार जी उनसे अलग हो गये। सन् १९२३ में माता पिता ने आपका विवाह करना चाहा किन्तु जिस वीर को भारत माता के बन्धन पाशों व करुण क्रन्दन का स्वर सुनाई दे रहा हो वह रंग रेलियों व शहनाइयों से कब रीझने वाला था? आप घर से भाग खड़े हुए।

यहां से चलकर आप दिल्ली पहुंचे तथा 'अर्जुन' के पत्रकार के रूप में कार्य करने लगे व कुछ दिन बाद आप कानपुर चले गये। वहां आप गणेश शंकर विद्यार्थी के प्रताप पत्र में गुप्त नाम बलवन्त के नाम से कार्य करते रहे उन दिनों उत्तर प्रदेश में हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन नाम का एक संगठन सक्रिय था। सन् १९२४ में वे विद्यार्थी जी ने आपको संगठन के संस्थापक श्री योगेश चटर्जी से मिला दिया। इस संस्था में आप क्रान्तिकारी परचे बांटने के अतिरिक्त कुछ न कर सके।

पिताजी की भीषण अस्वस्थता का तार पाकर आप लाहौर चले गये तथा बाद में आपने उपनाम बलवन्तसिंह के नाम से कीर्ति नामक पत्र का सम्पादन किया। आपने एक नौजवान भारत नामक सभा भी बनाई। इसके बाद आप पुन. लाहौर चले गये तथा सुखदेव से मिलकर क्रान्तिकारी संगठन में शामिल हो गये। काकोरी काण्ड के पश्चात् १९२५ में श्री चन्द्रशेखर आजाद भी इनसे आ मिले। यहां से आपके क्रान्तिकारी कार्य पूरी शक्ति से प्रारम्भ हुए।

अक्टूबर १९२६ में ही दशहरा मैदान में लोगों के बीच एक बम फटा जिसमें नव जवान भारत सभा के कई सदस्य बन्दी बनाये गये। निर्दोष सिद्ध होने पर सरदार भगतसिंह छूट गये।

९ सितं सन् १९२८ को दिल्ली में संगठन की कार्य कारिणी समिति की गुप्त बैठक हुई। इसमें इस संगठन का नया नाम हिन्दुस्तान रिपब्लिकन आर्मी रखा गया बंगाल से बम बनाने वाले कुछ उत्साही नवयुवकों को लाकर कलकत्ता आगरा सहारनपुर व लाहौर में बम बनाने के कारखाने स्थापित किये गये।

जनरल सान्डर्स ने जब लाला लाजपतराय पर निर्मम लाठी प्रहार किया तो आपने उसे मौत के घाट उतारने का प्रण किया किन्तु जय गोपाल की गलत शिनाख्त के कारण मि० स्काट तथा हेड कान्सटेबल चानन सिंह उनके शिकार बने। पुलिस के तगड़े पहरे में से आप मूंछ दाढ़ी कटवा कर यूरोपियन साहब के रूप में राजगुरु उनके अर्दली के रूप में व आजाद तीर्थ यात्रा में पण्डे के वेश में लाहौर से बाहर निकल गये। अंग्रेज सरकार हाथ मलती रह गई।

सरदार भगतसिंह का कथन था कि अंग्रेज सरकार के बहरे कान खोलने के लिए धमाके की आवश्यकता है तथा इसके लिए कुर्बानी देनी होगी। आपने एक योजना बनाई। ८ अप्रेल सन् १९२८ को जब असेम्बली सभा हो रही थी आपने व बटुकेश्वर दत्त ने वहां बम फेंक कर 'इन्कलाब जिन्दाबाद' व साम्राज्यवाद का नाश हो के नारे लगाये। आप चाहते तो भगदड़ में वहां से भाग जाते किन्तु आपने क्रान्ति की मशाल प्रज्वलित करने हेतु अपने आपको पुलिस के सुपुर्द कर दिया इन्हीं दिनों लाहौर बम काण्ड के अन्य सदस्य भी गिरफ्तार कर लिए गये। आप पर पहले असेम्बली बम काण्ड का मुकदमा चला तथा बाद में लाहौर बम काण्ड व हत्या काण्ड के मुकदमे चले। उनके बाद ये क्रमश मियांवाली व लाहौर जेल में ले जाये गये।

अन्त में ७ अक्तूबर १९३० को फैसला सुनाया गया तथा सरदार भगतसिंह, राजगुरु व सुखदेव को फांसी व अन्य देश भक्तों को ५ साल से लेकर आजन्म कारावास तक की सजा दी गई। जनता ने प्रबल विरोध करने पर भी २२ मार्च १९३१ को आपको व आपके साथियों को सेन्ट्रल जेल लाहौर में फांसी दे दी गई। व लाशों को गुप्त रूप से अधजली कर फिरोजपुर के निकट रावी नदी में बहा दिया गया।

फिरंगी सरकार ने इस महान शहीद के अन्तिम चिन्ह मिटाने की लाख कोशिश की किन्तु हमारे दिलो दिमाग में शहीदे आजम भगतसिंह आज भी जिन्दा है। ऐसे वीर पुत्र को जन्म देने वाली माता को पंजाब सरकार ने "पंजाब माता" की पदवी से विभूषित किया।

वेद विज्ञान और आर्यसमाज

(पृष्ठ ६ का शेष)

शाला होती जहां वेदों का उपरोक्त आज्ञाओ के पालन करने का प्रयत्न किया जाता। किन्तु वास्तविकता यह है कि सृष्टि के पदार्थों के नए नए गुणो को जानने व इनके सम्बन्ध में वैज्ञानिक अनुसधान करने का शायद ही किसी आर्यसमाज या आर्यसमाजी द्वारा कोई प्रयत्न किया जा रहा है। हम तो अधिक से अधिक किसी वैज्ञानिक सिद्धांत को किसी वेद मन्त्र द्वारा प्रतिपादित बताकर ही अपने को कृतकृत्य समझ लेते हैं व इतने से ही अपने कर्तव्य की इति श्रीमान् लेते हैं। सारे विश्व में जो वैज्ञानिक अनुसधान हो रहे हैं उनमे आर्य समाज का कोई भाग नही है। अत यदि उपरोक्त ज्ञान व उपरोक्त उद्बोधनो के होते हुए भी आर्यसमाज व आर्यसमाजियों की वैसी भौतिक उन्नति नही हुई जैसी कि होनी चाहिए थी तो इसका एक बड़ा कारण सम्भवतया हमारी वेदो की निरन्तर वैज्ञानिक अनुसधान करते रहने की आज्ञाओ के प्रति उदासीनता ही हो सकती है। वेदो मे सब सत्य विद्यायें बीज रूपमे तो विद्यमान हैं किन्तु उसका विस्तार व विवरण व व्यवहारिक रूप निरन्तर खोज व अनुसधान से ही सम्भव है, हम केवल वेदो अर्थात् हमारे पूर्वजो की सचित पू जी पर ही आश्रित रहकर ही उन्नति नही कर सकते। इसके लिये निरन्तर खोज, आविष्कार व अनुसधान की आवश्यकता हैं।

अत आर्यसमाज के मूर्धन्य नेताओ व प्रबुद्ध विद्वानो से प्रार्थना है कि आर्यसमाज के कार्य कलापो में ,उपरोक्त कमिया किस प्रकार दूर हो सकती है व आयसमाजी लोग वेदो की उपरोक्त निरन्तर वैज्ञानिक अनुसधान करने सम्बन्धी आज्ञाओं का किस प्रकार पालन करें इस सम्बन्ध मे गम्भीर चिन्तन करके समाज का मार्ग दर्शन करे। ×

विशेष सूचना

सार्वदेशिक-साप्ताहिक के पाठकों को सूचित किया जाता है कि कागज के मूल्य और डाक दरों में काफी वृद्धि हो जाने के कारण अप्रैल १९९० से सार्वदेशिक साप्ताहिक का वार्षिक शुल्क ३०) रुपये और आजीवन सदस्यता शुल्क ३००) रुपये कर दिया गया है। निवेदन है कि भविष्य में उपरियुक्त शुल्क ही भेजें। आशा है हमेशा की तरह आपका सहयोग मिलता रहेगा।

आर्य जगत् के समाचार

आर्य वीर दल आर्यनगढ़ द्वारा जिलाधीश को ज्ञापन

कश्मीर की समस्या इस कदर जटिल हो गयी है कि वहां हिन्दुओं का रहना मुश्किल हो गया है। आये दिन पाकिस्तान की शह पर घुसपैठिये एवं आतंकवादी भीषण स्तर पर हत्या कर रहे हैं हिन्दू घर द्वार छोड़कर दिल्ली की गलियों में राजनेताओं के दरवाजे पर सिर पीट रहे हैं फिर भी इस सरकार के कान पर जू तक नहीं रेंग रही है। एक रुबिया के बदले ५ आतंकवादी रिहा कर दिये गये अब ये आतंकवादी न जाने कितने रुबियाओं की हत्या करते फिरेंगे। हम सरकार से यह मांग करते हैं कि वह शीघ्राति-शीघ्र कश्मीर के हिन्दुओं की रक्षा हेतु ठोस कदम उठाये और भारत के अभिन्न अंग कश्मीर को हिन्दुस्तान से अलग होने से बचाये।

वैदिक विवाह सम्पन्न

आर्यसमाज मन्दिर खामगाव मे दि० १५-३-१९९० को श्री दयारामजी माली (शिक्षक) खामगाव निवासी की सुपुत्री डा० छाया माली एवं हनुमन्त राव सरोदे रौंदला जिला अकोला के सुपुत्र डा० संजय कुमार सरोदे का विवाह वैदिक विधि से आर्य समाज खामगांव के मन्त्री श्री मि० वा० सूर्यवंशी आर्य (गुरुजी) के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ। इस विवाह मे आर्य समाज खामगांव को २५१) रुपये दान दिये।

आर्यसमाज स्थापना दिवस

आज दिनांक २७ मार्च १९९८ को आर्यसमाज मन्दिर कठूआ में 'आर्यसमाज स्थापना दिवस' बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस समारोह की अध्यक्षता कठूआ जिला के पुलिस अधीक्षक श्री प्रेम गुप्ता जी ने की जिनकी गिनती यहां के ईमानदार पुलिस अधिकारियों में होती है।

श्री गायत्री जी व श्री मदनलाल रैणा जी ने मनमोहक भजन कहे। श्री बिशनदास जी ने आजकल के हालात पर निम्नलिखित डोगरी गीत कहकर आज के कार्यक्रम को और भी आकर्षक व दिलचस्प बना दिया।

११५वे आर्यसमाज स्थापना दिवस पर दयानन्द बाल मन्दिर अमरोहा की ओर से भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका विषय था। 'राष्ट्र निर्माण मे आर्यसमाज का योगदान इस विषय पर अपने विचार प्रगट करने हेतु दो वर्ग थे।

शोक समाचार

लाडनू। आर्यसमाज लाडनू के मन्त्री श्री गणपतराय आर्य की माता जी श्रीमती धन्नीदेवी का देहावसान यहां ११ मार्च को हुआ। उनका अन्तिम सस्कार १४ मार्च को पूर्ण वैदिक पद्धति से विधिपूर्वक किया गया।

स्व० श्रीमती धन्नीदेवी ८६ वर्ष की थी। वे स्पष्टवादी और साहसी महिला थी। लाडनू नगर के आर्य सज्जनों और अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने उन निधन पर सम्वेदना व्यक्त की।

—आर्यसमाज लक्ष्मी नगर के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान श्री प० पुरुषोत्तमदत्त के आकस्मिक निधन पर आर्यसमाज लक्ष्मीनगर के समस्त पदाधिकारी एवम् सदस्यों द्वारा हार्दिक शोक संवेदना व्यक्त की।

—ग्वालियर २१ मार्च। आर्यसमाज चित्रगुप्तगंज, लश्कर की कर्मठ, लगनशील व सक्रिय सदस्य ७० वर्षीय श्रीमती पुष्पावती आर्या के दिनांक २०-३-९० को हुए, देहावसान पर आर्यसमाज चित्रगुप्तगंज लश्कर के सभी पदाधिकारियों, सदस्यों एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में श्रीमती पुष्पवती आर्या को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए, परमपिता परमात्मा से दिवगंत आत्मा को शान्ति व सद्गति प्रदान करने की प्रार्थना की गई।

उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज मुसाढी (नालन्दा) का ३३वां वार्षिकोत्सव दिनांक ९,१०,११ फरवरी १९९० को सम्पन्न हुआ। उक्त अवसर पर विभिन्न सम्मेलनों के अतिरिक्त "नालन्दा जिला आर्यकर्त्ता सम्मेलन" भी आयोजित किया गया, जिसमें प्रमुख रूप से अन्तर्राष्ट्रीय तीर्थ स्थली राजगृह मे गुरुकुल खोलने का निर्णय सर्वसम्मति से लिया गया। उक्त सम्मेलन का विहार राज्य के प्रख्यात् आर्य नेता श्री बनारसीसिंह विजयी ने किया।

बसन्त मेला सम्पन्न

दक्षिण दिल्ली आर्य महिला मण्डल के तत्वावधान में बसन्त मेला एवं हकीकतराय स्मृति दिवस आर्य समाज ग्रेटर कैलाश मे श्रीमती वेद दत्ता की अध्यक्षता मे बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया। जिसमे सत्यवती मूक स्कूल निजामुद्दीन एव आर्य शिशुशाला ग्रेटर कैलाश के बच्चो और महिलाओं के खेल हुए। श्री आनन्द स्वामी जी की सुपुत्री श्रीमती सावित्री कपूर ने विजयी प्रतियोगियो को पुरस्कार वितरित किया।

दोपहर बाद श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। सभा मे पारित एक प्रस्ताव द्वारा काश्मीर में विघटन कारियो की आतंक पूर्ण कारवाईयो एव धमकियो द्वारा हिन्दुओ के उत्पीडन पर खेद प्रकट किया गया। सभा मे पारित एक प्रस्ताव द्वारा मांग की गई कि जम्मू काश्मीर को तुरन्त सेना हवाले किया जाए पलायन करके रहे हिन्दुओ का पुनर्वास किया जाए, देशद्रोही विघटनकारी शक्तियो को सख्ती से कुचला जाए तथा धारा ३७० को तुरन्त निरस्त किया जाए।

वीर हकीकतराय की स्मृति में आयोजित सभा मे श्रीमती शकुन्तला आर्या ने यह प्रस्ताव रखा और श्रीमती कृष्णा ठुकराल ने इसका समर्थन किया।

—कृष्णा ठुकराल मन्त्रिणी मण्डल

मांग तो की होती

संसदीय राजभाषा समिति ने अपने तीसरे प्रतिवेदन में जो कि उसने सरकार को दिया है और दिसम्बर, १९८९ में संसद में प्रस्तुत किया जा चुका है, कहा है कि उसने केन्द्रीय सरकार के उन कार्यालयों से, जिन्होंने भर्ती परीक्षाओं में हिन्दी के विकल्प की सुविधा नहीं दी है, पूछा था कि उन्होंने अपनी परीक्षाओं में हिन्दी के विकल्प की सुविधा क्यों नहीं दी जैसा कि १९६८ में राजपत्रित संसदीय संकल्प के अनुसार आवश्यक था। उन्होंने उत्तर दिया कि इसकी मांग ही नहीं की गई थी। अत: आपके सम्मानित पत्र के माध्यम से हमारा केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों के सभी (जिनमें केन्द्रीय सरकार के निगमों, बैंकों, कारखानों, आदि के संघ भी सम्मिलित हैं) अनुरोध है कि वे अपने-अपने अधिकारियों अथवा सम्बन्धित मन्त्रालय के मन्त्रियों को पूर्ण तथ्यों सहित ज्ञापन भिजवाएं कि परीक्षाओं में हिन्दी का विकल्प दिया जाए जैसा कि संसदीय संकल्प १९६८ के अनुसार और संसदीय राजभाषा समिति की सिफारिशों के अनुसार आवश्यक भी है। जो ज्ञापन अथवा पत्र भिजवाए जाएं उनकी प्रतियां केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली-२३ को भी भिजवाई जाएं। यह भी जरूरी है कि इस मांग को हिन्दी सलाहकार समितियों, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों और राजभाषा कार्यान्वयन समितियों आदि के माध्यम से भी उठाया जाए।

—जगन्नाथ, संयोजक राजभाषा कार्य
केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्
एस. वाई.-६८, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली-२

प्यार के बदले दर्द मिला

(पृष्ठ ३ का शेष)

चढ़े—श्री सिमरनजीतसिंह मान संसद में तलवार लेकर जाने और तब सदस्यता की शपथ ग्रहण करने की जिद्द पर अड़े रहे तो सर्वश्री बादल और टोहरा आनन्दपुर प्रस्ताव का राग अलापते रहे और पाकिस्तान की शह पर कार्यरत आतंकवादी अलग-अलग और सामूहिक रूप से खालिस्तान की रट लगाते रहे।

सर्वश्री राम जेठमलानी जार्ज फर्नांडीस, मुफ्ती मुहम्मद सईद, कुलदीप नैयर, इन्द्रकुमार गुजराल और पंजाब ग्रुप के अन्य नेता भी इन लोगों से मिलते रहे, इन्हें समझाते रहे और इकट्ठा करने का यत्न करते रहे मगर नतीजा—

वही ढाक के तीन पात

वैसे अकालियों ने पंजाब और पंजाबियों को विगत ८-१० वर्षों में जितना हताश और निराश किया है वह सर्वविदित है—किसी बात पर वे टिकते नहीं और एक के बाद एक नई मांग वे हमेशा खड़ी करते रहते हैं।

नई सरकार का ख्याल था कि पंजाब में जो भी कुछ हो रहा है उसकी सारी जिम्मेदारी कांग्रेस पर ही है और वही इन नेताओं से ढंग से बात करने में नाकाम रही है मगर इन चार महीनों में नई सरकार द्वारा पूरा जोर लगाकर देख लिए जाने के बाद जो कुछ अनायास केन्द्रीय नेताओं प्रधानमन्त्री श्री वी पी सिंह, उप-प्रधानमन्त्री श्री देवीलाल और गृहमन्त्री मुफ्ती मोहम्मद सईद के मुंह से निकला है उससे केन्द्र की निराशा साफ जाहिर हो जाती है।

—विजय



आर्य समाज की गतिविधियां

पर्यावरण शुद्धि हेतु यज्ञ

अजमेर में संस्थान द्वारा ५ से ९ मई ९० तक वैदिक रीति से वर्षा यज्ञ का आयोजन कराया जा रहा है। यह यज्ञ डा० पं० हरिप्रसाद शर्मा, पूर्व आचार्य संस्कृत कालेज, अलीगढ़ द्वारा सम्पन्न होगा। —मन्त्री

आर्य युवा महासम्मेलन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा छठा आर्य युवा महासम्मेलन, तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम में उत्साह पूर्वक भव्यता से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर दिल्ली के स्कूलों, आर्य वीरों व गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा दिखाए गए शानदार प्रदर्शनों की सभी ने भूरि-भूरि प्रशंसा की व करतल ध्वनि द्वारा उनका उत्साहवर्धन किया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि आज सीमाओं पर हमारी स्वतन्त्रता व अखण्डता को चुनौती दी जा रही है। आर्य वीरों व स्कूल के बच्चों ने शानदार व भव्य प्रदर्शन कर एक आदर्श प्रस्तुत किया है। स्वामी जी ने आगे कहा कि आज समय की मांग को देखते हुए स्कूल व कालेजों में छात्रों को विशेष ट्रेनिंग व हथियार चलाने का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिये। ताकि जरूरत पड़ने पर वे देश रक्षा में सहयोग दे सकें। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान संचालक श्री बालदिवाकर जी हंस, डा० महेश उपाध्याय केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल, श्री रामनाथ सहगल, महामन्त्री प्रादेशिक सभा, आदि अनेक गणमान्य आर्य महानुभाव भी उपस्थित थे।

सभा महामन्त्री श्री सूर्यदेव जी ने कुशलता से मंच संचालन करते हुए प्रेरक उद्बोधन द्वारा बच्चों का मार्ग प्रशस्त किया।

उल्लेखनीय है कि इस समारोह में भारत सरकार के प्रकाशन विभाग के निदेशक पद्मश्री डा० श्यामसिंह शशी को भी स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया गया। विद्वान लेखक कवि व मूर्धन्य साहित्यकार डा० शशि ने अपने अभिनन्दन के प्रति भावविभोर होकर कहा कि मैं आर्य समाज में ही पला हूँ, बड़ा हुआ हूँ, जिया हूँ, और वास्तव में पदमश्री का प्रदान किया गया सम्मान, यह आर्य समाज का ही सम्मान है। डा० शशि ने चरित्र निर्माण के लिए बच्चों को अच्छी अच्छी पुस्तकें पढ़ने के लिए, एवं परिश्रम के द्वारा अपना लक्ष्य निर्धारित कर कार्य करते रहने का आवाहन किया।

शोक समाचार

—दिनांक ३-४-९० को आर्य समाज कन्नौसी की एक साधारण सभा में आर्य समाज के भूतपूर्व प्रधान एवं कर्मठ कार्य कर्ता श्री शान्तिस्वरूप जी अग्रवाल के निधन पर गहरा शोक प्रकट किया गया तथा दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना की गई। —मन्त्री

आर्य समाज कृष्णपोल बाजार जयपुर द्वारा दो अभिनव कार्यक्रम
भारत विख्यात वैदिक विद्वान का अभिनन्दन व एक हजार रुपए भेंट

दिनांक २३-२-१९९० को ऋषि बोध दिवस के अवसर पर आर्य समाज कृष्णपोल बाजार, जयपुर के प्रांगण में वैदिक विद्वान डा० सुधीर गुप्त को अप्रतिम साहित्य एवं समाज सेवा के उपलक्ष में उन्हें एक हजार रुपये की राशि अभिनन्दन पत्र एवं शाल भेंट किया गया। डा० साहब का परिचय देते हुए आर्य समाज के प्रधान डा० ओमशरण "विजय" ने डा० गुप्त की साहित्यिक सेवाओं पर विस्तार से प्रकाश डाला एवं अभिनन्दन पत्र का वाचन किया।

इस अवसर पर आर्य समाज कृष्णपोल बाजार के प्रधान डा० ओमशरण "विजय" द्वारा लिखित आर्य समाज का इतिहास आर्य समाज सेवी एवं आर्य परिवार विवरणिका तथा ग्रन्थावली का राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधिपति माननीय श्री दिनकर लाल मेहता द्वारा विमोचन किया गया। उक्त अवसर पर श्री मेहता ने डा० ओमशरण 'विजय' के लिखित ग्रन्थों की अत्याधिक सराहना करते हुए इसे अभूतपूर्व परिश्रम की संज्ञा दी। सभी आर्य समाजों के अधिकारियों ने डा० विजय के कृतित्व की सराहना करते हुए कामना की कि भविष्य में वे और भी सुन्दर ग्रन्थों का प्रणयन करेंगे। अन्त में उपस्थित आगन्तुको का आभार प्रकट करते हुए समाज के मन्त्री श्री शिवकुमार कुमों ने सभा के कार्यक्रम को समाप्ति करने की घोषणा की।

आर्य महासम्मेलन सम्मेलन

फरीदाबाद-बल्लभगढ़ की २०-२२ आर्य समाजों और इन से सम्बद्ध संस्थाओं द्वारा गठित आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद के तत्वावधान में वैसाखी के पावन पर्व एवं जलियां वाला बाग के अमर शहीदों की स्मृति स्वरूप एक विशाल आर्य महा सम्मेलन नवनिर्मित दयानन्द महिला महा विद्यालय में १३, १४ तथा १५ अप्रैल १९९० को सम्पन्न हुआ।

ज्ञानदर्पण

श्री निवास आर्य (आर्य पुस्तक भण्डार, अरवाली इलाहाबाद)

● बड़ो का सम्मान कर, अपने को बड़ा बनायें। एक दिन तुम भी बड़े होगे, और वही सम्मान पाओगे, जो अपने बड़ो को दोगे।

● शव यात्रा में चलते समय लोकरीति के अनुसार लोग कहते रहते हैं "रामनाम (ओ३म् नाम) सत्य है! सत्य बोलो, मुक्ति है!"

सत्य की ओर बढ़ने हेतु, झूठ बोलने की आदत छोड़नी चाहिये। सत्य अन्तरात्मा की आवाज है। सत्य अपनाने से मनुष्य दुःख से मुक्त रहता है।

● ईश्वर द्वारा दिया गया, हमारा शरीर कैसा है? जितना काम करते उतना ही मजबूत शरीर। एक सेठ उत्तम भोजन करता है, परन्तु शरीर कमजोर! मजदूर निम्न कोटि का भोजन करता है, परन्तु शरीर मजबूत! हर आश्रम में शरीर और श्रम का अपना स्थान है।

● मन्दिर मे पुजारी मिष्टान्न प्रसाद बांटते हैं। खुले मैदान में ब्राह्म-मुहूर्त में परमात्मा प्राणदायिनी वायु का प्रसाद बांटते हैं। ब्राह्ममुहूर्त सूर्योदय से चार घड़ी पहले प्रारम्भ होता है तथा उषाकाल (सूर्योदय से पूर्व आकाश की लाली) तक रहता है। एक घड़ी चौबीस मिनट की होती है।

हर रात के पिछले पहर में, इक दौलत लुटती रहती है।
जो जागते हैं, वे पाते हैं, जो सोते हैं, वे खोते हैं॥

व्यायाम शिक्षक शिविर

सार्वदेशिक आर्य वीर दल का उपव्यायाम शिक्षक शिविर स्थान गुरुकुल झज्जर रोहतक (हरियाणा) में दिनांक १० से २४ जून तक डा० देवव्रत आचार्य की अध्यक्षता में लगाया जा रहा है। जिसमे आर्य वीर प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण का ही प्रवेश होगा। प्रवेश शुल्क ५० रुपए परीक्षा व परिचय पत्र शुल्क ५) रुपए होगा। आर्यवीर अपना पास पोर्ट साईज फोटो साथ अवश्य लाएं।

नोट—(१) आवश्यक सामान वर्दी, लाठी, भोजन के पात्र नोट बुक आदि। (२) मार्ग दिल्ली से झज्जर की बस पकड़कर झज्जर से रिवाड़ी रोड गुरुकुल मार्ग पर उतरें। (३) रिवाड़ी की ओर से आने वाले गुरुकुल मार्ग पर उतरे।

आर्यवीर दल के शिविरों का कार्यक्रम

१—३ से ११ मई १९९० तक—आर्य समाज पिंपरी पूना (महाराष्ट्र)

२—११ से २० मई १९९०—आर्यवीर दल दिल्ली स्थान-नजफगढ़ (पुलिस थाने के सामने) अग्रवाल धर्मशाला नई दिल्ली-४३

३—२० से ३० मई १९९०—गुरुकुल होशंगाबाद (म० प्र०)

४—२८ मई से ३ जून १९९०—इन्टर मीडिएट कालिज दुजाना (गाजियाबाद)

५—१ से १० जून १९९०—इन्टरमीडियट कालिज सबगा (मेरठ)

शुद्धि समाचार

२-४-९०, सोमवार को सुश्री शबनम बानू पुत्री श्री सैयद इरशाद अली मुहल्ला मियां बाजार (मिर्जापुर) ने स्वेच्छा से वैदिक हिन्दू धर्म स्वीकार किया। शुद्धि संस्कार के पश्चात सुश्री शबनम बानू का नाम मुनमुन दत्त रखा गया और श्री सुभाषचन्द्र दत्त के साथ उसका पाणिग्रहण संस्कार सम्पन्न वैदिक रीति से कराया गया। —मन्त्री, आर्यसमाज जहूरपुर

शुद्धि तथा विवाह संस्कार

आर्य समाज मन्दिर अल्मोड़ा में शनिवार दिनांक ७-४-९० ई० को श्री राजानन्द पुत्र स्व. जे० डब्ल्यू० व, अध्यापक, प्लेन्स स्कूल, पिलखोली (रानी-खेत) जनपद अल्मोड़ा ने स्वेच्छा से ईसाई मत त्यागकर वैदिक धर्म स्वीकार किया। शुद्धि-संस्कार के पश्चात श्री राजानन्द का नाम सुशील कुमार रखा गया और तदनन्तर उनका विवाह कु० सरोज शर्मा, पुत्री श्री शिवकुमार शर्मा, ग्रा० महल, हसनपुर जनपद मुरादाबाद के साथ, पारस्परिक सहमति से आचार्य जयदत्त शास्त्री के पौरोहित्य में वैदिक विधि से सम्पन्न हुआ।

स्कूलों में वैदिक गणित पढ़ाने की संभावनाओं पर विचार

नई दिल्ली, ९ अप्रैल राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद स्कूलो में वैदिक गणित की शिक्षा शुरू करने की व्यावहारिकता की जांच कर रही है। शिक्षा राज्यमन्त्री एम०जी०के० मेनन ने लोकसभा में एक लिखित उत्तर में बताया कि स्कूल प्रणाली में अध्ययन के लिये एक समृद्ध सामग्री के रूप वैदिक गणित प्रारम्भ करने के औचित्य के बारे मे राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान ने राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान तथा प्रशिक्षण परिषद के साथ बातचीत की है। परिषद् इस पर कार्य कर रही है।

आर्य समाज बढ़ता रहेगा

आर्य समाज मन्दिर गांधी कालोनी में २७ मार्च को आर्य समाज स्थापना दिवस बड़े धूमधाम से मनाया गया प्रातः ७-१५ बजे से यज्ञ प्रारम्भ किया। जिसके ब्रह्मा श्री धर्मेन्दु जी शास्त्री थे। यज्ञ की पूर्ण व्यवस्था श्री ब्रह्मा जी ओर से की गई। यज्ञ के पश्चात प्रवचन, भजन आदि का कार्यक्रम हुआ।

वेद कथा

वेद कथा एवम् पारायण यज्ञ का समायोजन, यज्ञशाला के पुनः भव्य निर्माण हेतु उद्घाटन, आर्य समाज पूसा मण्डी, पहाड़ गंज, नई दिल्ली-५५ मे दिनांक ९ से १५ अप्रैल ९० तक बड़े उत्साह से मनाया गया।

उत्सव

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून का ४१ वां वार्षिक महोत्सव बुधवार दिनांक २५ अप्रैल से आरम्भ होकर रविवार दिनांक २९ अप्रैल तक चलेगा।

—आर्य समाज नकाशिया के तत्वावधान में ११ से १७-४-९० तक सम्पन्न हुआ।

—महिला आर्य समाज छपरा का सम्मिलित वार्षिकोत्सव दिनांक २२ से २५ मार्च १९९० तक हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। एक विशाल शोभा-यात्रा नगर के प्रमुख मार्गों से गुजरती हुई समाप्त हुई।

—आर्य समाज गोलमुरी टाटानगर एवं डी. ए. वी. विद्यालय गोलमुरी टाटानगर का वार्षिकोत्सव बड़े ही धूम धाम से २१ व २४ मार्च को मनाया गया। इस अवसर पर वैदिक प्रवक्ता स्वामी सत्यानन्द जी महाराज क्रान्तिकारी ऐतिहासिक प्रवक्ता डा० देवेन्द्र कुमार जी सत्यार्थी तथा मधुर मधुर गीतों के गायक श्री जयवीर जी आर्य मथुरा के पुरोग्राम होते रहे।

—आर्य समाज पंखा रोड, 'सी' ब्लाक जनकपुरी, नई दिल्ली के १०वें वार्षिकोत्सव का संक्षिप्त कार्यक्रम (रविवार १५ से २२ अप्रैल, १९९०) स्थान—आर्य समाज मन्दिर सी-३ ब्लाक जनकपुरी, नई दिल्ली-५८ में आयोजित होगा। —मन्त्री

शोक समाचार

बड़े शोक के साथ यह सन्देश भेजना पड़ रहा है कि आर्य समाज मऊ नाथ भंजन के मन्त्री श्री द्विजेन्द्र राय के पिता श्री भुवनाथ राय जी का स्वर्गवास ९ ४ ९० को रात्रि में हो गया। उनकी आत्मा की शान्ति के लिए आर्यवीर दल की शाखा मऊनाथभंजन में एक शोक सभा की गयी।

—मन्त्री, ओंकारनाथ सिंह

—मेरे पूज्य ज्येष्ठ भ्राता श्री देवदत्त भारती शास्त्री जी का स्वर्गवास गत १ अप्रैल ९० रविवार को प्रातः ४-३० पर हो गया है।

—रामदयालु शास्त्री, बार-जेड ७०/डी, गली-नं० ६ तुगलका बाद विस्तार नई दिल्ली

—आर्य समाज विश्वकर्मा बस्ती मोदीनगर के कर्मठ सदस्य श्री नाथूराम आर्य ६० वर्ष की आयु में दिनांक ५-१२-८९ को निधन हो गया है। हमारी आर्य समाज को इनके निधन से बड़ी भारी क्षति हुई है। समय-२ पर सभी समाजों को सहयोग करते थे। —मन्त्री

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वेदामृत

भ्रातृ-भाव से समृद्धि

अ ज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते, सं भ्रातरो वावृधुः सौभगाय।
युवा पिता स्वपा रुद्र एषां सुदुघा पृश्निः सुदिना मरुद्भ्यः॥
ऋग्० ५।६०।५॥

हिन्दी अर्थ—ज्येष्ठ और कनिष्ठ (ऊंच-नीच, बड़ा-छोटा) के भाव से रहित, ये मरुत् (प्राणवायु) भाई के तुल्य रहते हुए सौभाग्य के लिए बढ़े हैं। सदा युवा और सुन्दर कर्म करने वाला रुद्र (जीवात्मा) इनका पिता है और सुन्दर अन्नादि-समृद्धि देने वाली पृथिवी मरुतों के लिए शुभ दिन करें।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१ | दयानन्दाब्द १६६ | दूरभाष। ३२७४७७१ | वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष २९ अंक ११] | वैशाख शु० ५ सं० २०४७ २९ अप्रैल १९९०

देश को भावी खतरों से बचाने के लिए पूर्वाग्रहों को छोड़कर भारतीय जनता पार्टी और कांग्रेस आई० आपस में मिल जायें

दिल्ली २२ अप्रैल। आर्य समाज पंखा रोड, दिल्ली के उत्सव पर आर्य महासम्मेलन का उद्घाटन करते हुए स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि १७ जुलाई १९८६ को आर्य समाज का एक शिष्टमण्डल प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी से मिला था और उन्हें पंजाब व काश्मीर के मामले पर एक ज्ञापन दिया था। पुनः २ सितम्बर १९८६ को वह प्रधान मन्त्री से मिले थे और आर्यसमाज की ओर से मांग की गई थी कि—

१—संविधान में संशोधन करके गुजरात, राजस्थान, पंजाब व जम्मू काश्मीर के पूरे सीमाक्षेत्र में सुरक्षा पट्टी बनाई जावे।

२—भू०पू० सैनिक जो लगभग ४१ लाख हैं, उनको इस सुरक्षा पट्टी में बसाया जावे ताकि राष्ट्रद्रोही तत्व सीमा पार करके भारत में न घुस पावें।

३—धारा ३७० को जो अस्थायी है, तुरन्त समाप्त किया जावे।

४—पंजाब व काश्मीर में ५ साल तक चुनाव न कराये जायें।

श्री राजीव गांधी ने चर्चा के दौरान इन प्रस्तावों पर सहमति प्रकट की थी और अपने २६ सितम्बर १९८६ के पत्र द्वारा हमें सूचना दी थी कि "सीमावर्ती क्षेत्रों में सुरक्षा पट्टी का विषय विचाराधीन है। इस मामले में सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुये अन्तिम निर्णय लिया जायेगा।"

स्वामी जी ने कहा विरोधी दलों के दबाव के कारण बाद में उन्होंने इन राष्ट्रीय महत्व के प्रस्तावों को छोड़ दिया। यदि राजीव गांधी ने उस समय अपने दल के प्रबल बहुमत से संविधान में संशोधन करके सुरक्षा पट्टी का निर्माण कर लिया होता तो आज पंजाब व कश्मीर में खतरों का जो अखाड़ा बन गया है, वह न बनता।

उन्होंने कहा विश्वनाथ प्रतापसिंह के सहयोगी पार्टियों में कुछ पूर्वाग्रह हैं और वर्तमान प्रधानमन्त्री केवल कुर्सी के लिए बड़ी से बड़ी भूल कर सकते हैं। वह अब्दुल्ला बुखारी जैसे साम्प्रदायिक तथा सिमरनजीतसिंह मान तथा कुछ अन्य नेताओं के दबाव में फंसकर राष्ट्रहित के मुद्दे पर दृढ़ता से निर्णय लेने में असमर्थ हो गए हैं।

स्वामी जी ने देश को भावी खतरों से बचाने के लिए भारतीय जनता पार्टी और कांग्रेस आई० से पूर्वाग्रह छोड़कर आपस में मिलकर देश की बागडोर सम्भालने की अपील की और विश्वास प्रकट किया कि यह दोनों ही पार्टियां देश को बचाने में सक्षम हैं।

भारत सरकार और जनमानस नए खतरे से सावधान

खालिस्तान के लिए लड़ रहे सिखों के नाम अब "इस्लामिकस्तान बनाने का नारा"

आर्य समाज के मंच से समय-समय पर उत्पन्न नये खतरों से जनता को सावधान किया जाता रहा है जब भारत को खण्डित करने के नये मन्सूबे पैदा किये गये। स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त एक नया प्रस्ताव मुसलमानों की ओर से आया था कि उत्तर प्रदेश के पांच जिलों को मिलाकर एक मिनी पाकिस्तान बनाया जाय। ठीक इसी प्रकार हैदराबाद (आन्ध्र) में एक पोस्टर छापकर सरकार से हैदराबाद में मिनी पाकिस्तान बनाने की योजना बनी। वह पोस्टर पकड़ा गया और छापने वाले पर मुकदमा भी चला। उसे पागल करार देकर छोड़ा गया था।

आज एक नयी समस्या ने जनता का ध्यान नये खतरे से सावधान किया है। जब भारत से सिक्खों का जत्था पाकिस्तान तीर्थ यात्रा पर गया तब वहां एक पोस्टर छापकर बांटा गया। जो भारत में प्राप्त किया गया।

उस पत्र की सूचना को हिन्दुस्तान हिन्दी तथा जनसत्ता ने प्रकाशित किया है ध्यान देने लायक है?

अमृतसर २१ अप्रैल। भारत में साम्प्रदायिक तनाव पैदा करने के लिए पाकिस्तान ने नई नीति 'खालिस्तान से इस्लामिकस्तान' की अपनाई है। वहां की एजेंसियां आतंकवाद को समर्थन और उग्रवादी आंदोलन को धन देकर भी हिन्दुओं व सिखों के बीच फूट नहीं डाल सकीं। अब उन्होंने नया शब्द 'इस्लामिकस्तान' गढ़ा है। उन्होंने वायदा किया है कि भारतीय क्षेत्र से भूमि लेकर बनाए

(शेष पृष्ठ १२ पर)

सम्पादक—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सम्पादकीय—

धधकते कशमीर का स्वरुप क्या था ?

कश्मीर का इतिहास लाखो वर्ष पुराना है। कारण इसका नामकरण ही कश्यप ऋषि से सम्बन्धित है और कश्यप ऋषि का समय कितना पुरातन है यह इतिहास के गर्भ में छिपा है। इसकी गणना करना कठिन है।

संस्कृत साहित्य मे कवि-कल्हण ने अपनी रचित "राजतरंगिणी" में कश्मीर की भूमि को 'रत्नगर्भा' लिखा है और कश्मीर तीनों लोकों में अप्रतिम अद्वितीय माना है।

इतिहास साक्षी है कि कश्मीर के इतिहास से जो अनेक व्यक्तियों और स्थानों के नाम जुड़े हैं उनमें 'नाग' शब्द है यह नाग शब्द यहां सांप का पर्याय नही, वरन् देव-दानव, दैत्य, राक्षस, पिशाच, गन्धर्व की भांति ये नाग भी पूर्वजी कश्यप ऋषि के पारिवारिक जन थे।

कश्मीर के प्राचीन स्थल नीलनाग, अनन्त नाग, वसन्त नाग, महापद्मनाग, शंखपालनाग प्रसिद्ध हैं।

जब कश्यप ऋषि ने कश्मीर को बसाया तो हिन्दू के अतिरिक्त यहां और कौन हो सकता था भले ही तब हिन्दू नाम प्रचलित न होकर आर्य या देव वाचक शब्द हो। फिर भी अति प्राचीन हिन्दुकुश पर्वत लिखा मिलता है।

मुस्लिम लेखको ने "हिन्दू कोह" लिखा है। कोह पहाड़ को कहा जाता है जैन ग्रन्थो मे आदि नाथ की जीवन कथा हजरत आदम के समान ही है। और आदिनाथ हजरत आदम से पहले हुए हैं।

इसी प्रकार इस्लामी ग्रन्थों मे 'नबी' नाम चला। ये आदि और नाभि इस्लाम में 'आदम और नबी" मान लिए गये तो आश्चर्य नहीं क्योंकि इस्लाम मत तो बहुत बाद मे आया है।

इस कश्मीर को बहिश्त की संज्ञा दी है। इसे स्वर्ग तुल्य माना है इस कारण दुनियां इस स्थान को अतिप्रिय मानती रही है।

श्रीधर पाठक ने अपनी कविता में लिखा है—

कि कश्मीर को ही अपने काव्य में।'स्वर्ग, सुरलोक; अमरन को ओक, (देवो का घर) सुरकानन और पुरन्दर इन्द्र का वास स्थल बताया है।

यही स्वर्ग सुरलोक यही सुरकानन सुन्दर।
यही अमरन को ओक यहीं कहुं बसत पुरन्दर॥

१८१७ मे अंग्रेज कवि टामस मूर कश्मीर आया तो उसने भी कश्मीर की सुषमा में कविता की।

जहांपनाह अकबर के बेटे जहांगीर ने खुदा से स्वर्ग नहीं मांगा और कश्मीर का वास मांगा। कश्मीर में आबाद होना।

जहांगीर के शब्दो मे—

आदम साहब को पहले बहिश्त (स्वर्ग) में थे एक दिन गेहूं खा लिया इस कारण आदम को स्वर्ग से निकाल जमीन पर भेज दिया।

लेकिन ए खुदा! मैं तो जौ का पानी ही पीता हूं अतः मुझे तू सिर्फ कश्मीर भेज दे मैं वही रहूंगा। यह अभिलाषा जहांगीर ने क्यों की स्वर्ग के बजाय कश्मीर मे वास अच्छा क्यों माना।

शायर उरफी का भी कहना है :

'अगर फिर दौस पर रुए जमीं अस्त'
हमी अस्त, हमीं अस्त, हमीं अस्त॥

कवि उरफी का दावा है कि विश्व मे यदि कहीं स्वर्ग है तो यही स्वर्ग कश्मीर है। यही है यही है—

जहांगीर से मरते समय पूछा गया कि आपकी अन्तिम इच्छा क्या है तो उसे अन्त में कश्मीर में ही रहने की इच्छा प्रकट की। अकबर का दरबारी कवि फैजी ने भी कश्मीर पर लिखा है कि—

कश्मीर की धूल नेत्रों को दवा की भांति है और घास-पत्ते है यह आत्मा के लिए शक्तिदायी संजीवनी है।

पं० बृजनारायण चकबस्त ने कश्मीर के प्रति जो भावना की वह कहते हैं कि—

जर्रा-जर्रा है मेरे कश्मीर का मेहमां नवाज
राह में पत्थर के टुकड़ों ने दिया पानी मुझे

मेरी जन्मभूमि कश्मीर आतिथ्य के लिए इतना आगे है कि लोगों की बात क्या; राह में पड़े पत्थरो तक ने मेरी प्यास बुझाई। यह महिमा कश्मीर की ऐतिहासिक सम्पूर्ण है जिसके लिए इसका विश्व में महत्व पूर्ण स्थान है।

राष्ट्रीय एकता का प्रहरी—

स्वतन्त्रता के लिए, भारतीय वीरों ने नाना बलिदान किये आज यह कश्मीर कहां है। जहां कालिदास, भीमक भट्ट, सातवीं सदी, रत्नाकर क्षेमेन्द्र ११ वीं सदी, भर्तृमेठ नवीं सदी, मंखक ६ वीं कल्हण ११ वीं।

भामह-वामन, रुद्रट उदभट, मम्मट ११ वीं सदी में संस्कृत साहित्य की झनकार भी आज संस्कृत की कौन कहे हिन्दी भी नहीं पास फटक सकती।

युग बदलते गये, जो कश्मीर कभी शारदा तीर्थ के नाते अपनी पवित्रता के लिए प्रसिद्ध था उस भूमी को कैसे स्वच्छन्दता और आजादी के लिए बहुत सच गया।

शक्ति का प्रथमपीठ कश्मीर संस्कृत भाषा और हिन्दू संस्कृति का महान केन्द्र था। समय बदला—

बदलते युग में—

एक समय था जब भारतीय संस्कृति पर हुए प्रहार की रक्षा हेतु कश्मीरी पण्डित कश्मीर से चलकर गुरु तेगबहादुर से यह प्रार्थना करने आए कि मुस्लिम शासक हमारी विरासत हिन्दू संस्कृति को मिटाकर बलात मुस्लिम संस्कृति मे बदलकर हमें मिटा रहे हैं। आप हमारी रक्षा करें।

इतिहास साक्षी है महान गुरु का महान बलिदान कश्मीरी संस्कृति आदि धर्म को बचाने के लिए ही हुआ था।

आज फिर वही हिन्दू अनाथ बनकर प्राण-पाने की प्रार्थना कर रहा है कोई गुरु दृष्टि गोचर नही हो रहा है कोई रक्षक नहीं है कश्मीर आज पुनः आर्तनाद कर रहा है।—बचाओ···

वैदिक यति मण्डल की बैठक

वैदिक यति मण्डल के सभी माननीय यतियों की सेवामें निवेदन किया जाता है कि यति मण्डल की बैठक दिनांक २६-२७-२८ मई को आर्य समाज मन्दिर, आबू पर्वत, जिला सिरोही (राजस्थान) में सम्पन्न होगी। इस अवसर पर वहां आर्यसमाज का उत्सव एवं श्री स्वामी धर्मानन्दजी सरस्वती के संरक्षण में आर्य गुरुकुल का शुभारम्भ भी होगा।

दिल्ली से अहमदाबाद जाने वाली रेल से आबू रोड स्टेशन पर उतर कर बस से आबू पर्वत पहुंचा जा सकता है। श्री स्वामी धर्मानन्द जी ने प्रस्ताव किया है कि जो यति मार्ग व्यय वहन न कर सकें, उन्हें मार्ग व्यय भी दिया जाएगा। कृपया अवश्य पहुंचे।

—स्वामी सुमेधानन्द, मन्त्री
वैदिक यति मण्डल दयानन्द मठ चम्बा

सम्पादक के नाम पत्र

सार्वदेशिक साप्ताहिक के १८ मार्च १९९० के अंक में आपने प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु का लेख, 'महर्षि के बलिदान सम्बन्धी कुछ तथ्य' प्रकाशित करके आर्य जनता और विशेषकर लेखकों का मार्गदर्शन करने का स्तुत्य प्रयास किया है। मुझे विश्वास है कि आर्य जन भविष्य में कोई वक्तव्य देने अथवा लिखाने से पूर्व तत्कालीन लोगों के वक्तव्यों में निहित गूढ़ार्थ को समझने में भूल नहीं करेंगे। वास्तव में महाराणा सज्जनसिंह के वक्तव्य को भी वैज्ञानिक अनुसंधान की दृष्टि से ही देखना चाहिए। सत्य की प्रवृत्ति से ही सत्य की खोज की जानी चाहिए। इस खोजपूर्ण लेख के लिए जिज्ञासुजी को बधाई।

—डा० धर्मपाल, प्रधान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

वे रात को पीटते हैं हिन्दुओं के दरवाजे

कश्मीरी हिन्दुओं की व्यथा-कथा

लखनऊ, ९ अप्रैल। वे आधी रात को आते हैं, हिन्दू परिवारों के दरवाजे पीटते हैं। बोलते हैं—पंडिताइयनों को हमारे हवाले कर खुद हिन्दुस्तान भाग जाओ। बच्चों की चिन्ता न करो हम उनका खतना कर अपने में मिला लेंगे। तुम अपने सारे पैसे 'जम्मू और कश्मीर बैंक' में जमा कर रफू हो जाओ। कर्फ्यू है फिर भी वे अपना काम सरेआम करते हैं। हर हिन्दू परिवार का हर सदस्य अपने ही आजाद देश के घर में हर पल, हर क्षण इस आशंका में जीता है कि कब किधर से बम आए और शोलों में सब कुछ धधक कर राख हो जाए।

यह हाल है कश्मीर घाटी का। वहां अब भारत सरकार का नहीं सिर्फ आतंकवादियों का हुक्म चलता है। हुक्म अदूली की सजा है मौत, सिर्फ मौत। गांवों-शहरों में फरमान है कि कोई भी लेन-देन, कोई कारोबार भारतीय रुपए में न हो।

रेडियो-टेलीविजन ने काम करना बन्द कर दिया है। बैंक बन्द हैं। एच०एम०टी० कारखाने में डर के मारे तालाबन्दी घोषित कर दी गई है। हिन्दू दुकानदारों की दुकानें फूंक दी गई हैं। युवकों को निर्देश है कि वे जम्मू कश्मीर लिबरेशन फ्रन्ट के झंडे तले आ जाएं। युवती सड़क पर निकले तो कहा जाता है किसी गुलाम कादिर की किसी मो० रसूल की हो जाओ। बच्चों का आलम यह है कि वे घर की कोठरी में ताला डालकर ठूंस दिए जाते हैं। मां-बाप को डर रहता है कि कहीं गलती से भी उनका लाडला बाहर गली में न चला जाए। यदि गया तो फिर वापस नहीं आना है। वापस आएगी तो उस मासूम की टुकड़े-टुकड़े लाश।

कश्मीरी पंडिताइयनों का सुहाग चिह्न है,'डेजूर'। यह सोने का आभूषण दोनों कानों में पहना जाता है और कन्धे तक लटकता है। अब उन्हें अपना सुहाग चिह्न पहनने की मनाही है। यदि कोई युवती पहने तो उसका सिर कलम करने वाले आतंकवादी को २५ हजार रुपया पुरस्कार देने की घोषणा जे०के०एल०एफ० ने की है।

यह दास्तान कश्मीर से लखनऊ भागकर सवा दो सौ लोगों के प्रतिनिधियों ने सुनाई। आज एक बस और आई है। इसमें ७० लोग हैं। तीन साल के बच्चे से लेकर ७५ वर्ष के बूढ़े तक। कश्मीर से हजारों कि०मी० दूर होने के बाद भी वे अपना नाम बताने से साफ मना करते हैं। हर एक के चेहरे पर मौत की दहशत है। कहते हैं—अखबार में नाम छपा तो वहां कश्मीर में बचे हमारे नाते-रिश्तेदारों को उड़ा दिया जाएगा। दहशत इतनी है कि बार-बार औरतें मिन्नत कर रही थीं कि हमारे पास पुलिस लगवा दीजिए। वे हमें यहां भी उड़ा देंगे।

इस सम्वाददाता ने कहा—यहां चिन्ता न करें। ऐसा कुछ नहीं होगा। तो मि० दर बोले आपको क्या पता हमारी मजबूरी का। वहां (कश्मीर में) हालत यह है कि हमारे सगे-सम्बन्धियों को मार डालते हैं। हम लाश फूंकने जाते हैं तो चिता पर कम चारों ओर नजर ज्यादा होती है कि कहीं जे०के०एल०एफ० वाले न आ जाएं।

मि० बी० लाल शराब के थोक व्यापारी थे। चार दिन पहले इनकी दुकान बम से उड़ा दी गई। बोले—हम सिर्फ महीना भर इन्तजार करेंगे। भारत सरकार ने न बसाया,मदद न की तो वापस कश्मीर जाकर जे०के०एल०एफ०के सामने आत्मसमर्पण कर देंगे। वे जैसा कहेंगे—हम करेंगे।

मि० दर बोले—हम हिन्दुस्तानी हैं, यही हमारा सबसे बड़ा दोष है। बेनजीर कश्मीर तोड़ने के लिए १० करोड़ रुपया खुले आम दे रही है और हमारी सरकार कश्मीर से भागकर आए सवा लाख हिन्दुओं पर एक करोड़ रुपया भी खर्च करना नहीं चाहती। हम भिखमंगे नहीं हैं। १४-१५ लाख की हमारी कोठियां कश्मीर में खड़ी हैं। उन पर ताला बन्द कर चले आए हैं। वहां हाल यह है कि कब फाके की नौबत आ जाए कहा नहीं जा सकता।

यह पूछने पर कि क्या दिल्ली में सरकार आपकी मदद नहीं कर रही है? सारे बिगड़ पड़े। बोले—मदद यही की कि परसों जुलूस पर लाठीचार्ज कर कई महिलाओं तक के सिर फोड़ दिए गए। वह भी प्रधानमन्त्री निवास के सामने।

वे बताते हैं कि २६ जनवरी ९० को कश्मीर को आजाद करा वहां पाकिस्तान का झंडा फहराने की आतंकवादियों की योजना थी। इसीलिए २०, २१ और २२ जनवरी की रात बारह बजे एका-एक सारे धर्मस्थलों के लाउडस्पीकर चहक उठे। उनसे आह्वान किया गया कि सारे कश्मीरी मुसलमान घर छोड़ सड़कों पर आ जाएं और कश्मीर को आजाद करा लें। बस देखते ही देखते घाटी में रात में ही दिन का नजारा हो गया। हिन्दू घरों के सामने नारे लगाए गए—'भारतीय कुत्तों वापस जाओ। हम आजादी चाहते हैं। खून का बदला खून से लेंगे। छीन के लेंगे आजादी।' हम पाकिस्तान बनायेंगे। पंडिताइयों को हमें सौंपो। हम उन्हें पाक कर देंगे।' आदि।

कोई भी गैर कश्मीरी घाटी में प्रवेश नहीं कर सकता। वरना तो मारा जायेगा। हर कश्मीरी को हिदायत है किसी गैर कश्मीरी को घर में न रखे। घाटी के सारे पोस्टर पाकिस्तान के झण्डे के रंग में रंग दिए गए हैं। कोई हिन्दू कार्यालय जाए तो उसकी सीट पर सहयोगी शिवसेना का पोस्टर चिपका देते हैं। बाद में सी० आई०डी० का मुखबिर कह मारते हैं।

कश्मीरी मामलों के प्रभारी जार्ज फर्नाडीज कश्मीर गए थे। आतंकवादियों ने फरमान जारी किया कि कोई उनसे न मिले। श्री फर्नाडीज सारा दिन बैठे रहे। कोई मिलने नहीं गया। वह स्वयं घर से बाहर नहीं निकल सके। प्रशासन में पाकिस्तान समर्थकों का जमावड़ा है।

यहां आई उषा दर, रानी टिक्कू, लक्ष्मी श्री कौल, कीर्ति रैना आदि का कहना है कि अब वहां घाटी में सिर्फ दस हजार के आस-पास हिन्दू परिवार शेष बचे हैं। ये वे परिवार हैं जो गांवों में हैं। इन परिवारों को आतंकवादियों ने अपने कब्जे में कर रखा है। उन्हें आशंका है कि हिन्दुस्तान सरकार कभी भी सख्ती कर सकती है। यदि ऐसा हो तो इन परिवारों में शरण ली जाए ताकि सरकार बम आदि न बरसा सके।

अब घाटी में पाकिस्तान समर्थक जो जुलूस निकालते हैं उनमें सबसे आगे कश्मीरी पण्डितों को कर दिया जाता है। इन्हें हिदायत होती है कि पाक समर्थक नारे लगाए। ये न लगाएं तो पीछे से आतंकवादी गोली मारते हैं। नारे लगाएं तो सामने से भारत की पुलिस लाठी बरसाती है।

इन लोगों का आरोप है कि गृहमन्त्री मुफ्ती मोहम्मद सईद आतंकवादियों से मिले हैं। रुबिया का अपहरण मात्र नाटक था। उनके रहते समस्या शान्त नहीं होगी। सिर्फ जगमोहन सही काम कर रहे हैं पर जार्ज फर्नांडीज ने जाकर उनके भी हाथ बांध दिए हैं। जार्ज के जाने के पहले जगमोहन ने सकीना नामक एक महिला

(शेष पृष्ठ ४ पर)

उग्रवादियों के वकील रामजेठ मलानी का पत्र मान के नाम

श्री राम जेठमलानी जो भारत के प्रसिद्ध वकील तथा राजनैतिक महत्व के व्यक्ति हैं जिन्होंने उस समय जब सिखों की वकालत पर इतना जोर दिया जिनका इन्दिरा काण्ड की साजिश में हाथ होने का सन्देह था उनमें सिमरनजीत सिंह मान भी एक था जिसके लिए श्री जेठ मलानी जी ने काफी संघर्ष किया जेल से छूटने के उपरान्त मान की गतिविधियों से तंग आकर श्री मलानी जी ने दुःखी हृदय से जो पत्र मान को लिखा उसका एक-एक शब्द पढ़ने योग्य है जिसे नीचे दिया जा रहा है—

मेरे प्यारे सिमरन, मैं यह पत्र इतने दुःख और क्लेश के साथ लिख रहा हूं जिसकी गहराई में तुम नहीं जा सकते तुमने मेरे सीने में खंजर घोंपने में कुछ कम नहीं किया। जो जख्म तुमने दिया है वह कभी भर न सकेंगे। मैंने जब देश के राष्ट्रपति को १९८९ से एक साल पहले का लिखा हुआ पत्र पढ़ा था तो मुझे तुम्हारी दिमागी तवाजन का अन्दाजा हो गया था परन्तु मैंने अपने विचार को यह कहकर दबा अन्दाज कर दिया कि आप्रेशन ब्लू स्टार के बाद तुम्हारे जिस ढंग का यह व्यवहार है बाद में जब एक के बाद एक दूसरा पंजाब का लीडर बेमाने और बेकारा होता गया और तुम जेल की चार दीवारी में सुरक्षित बैठे थे तो मैंने तुम्हें पंजाब का भावी—कहकर तुम पर अपनी आशाएं लगाईं। चार साल तक मैं तुम्हारी सफाई पेश करता रहा हूं और तुम्हें ऊपर लाता रहा हूं और सरकार से कहता रहा हूं कि तुम ही पंजाब की आखिरी उम्मीद हो और कुछ नहीं तो इस ऐहसास को ध्यान में रखते हुए अपने पर अधिक संयम रखना था, जेल से रिहा होने के तत्काल बाद मैंने तुम में गैर मकबूलियत के आसार देखने शुरू किए तुम्हारे चरित्र की दो कमजोरी सामने आ गयी, तुम दिल्ली और पंजाब में वह सिमरन जीत न थे मैंने अपने सन्देह अपने नजदीकी दोस्तों को बताए इनमें से कुछ तुम्हारे मित्र भी हैं। मुझे इस बात का विश्वास दिलाया गया कि तुम पर निगरानी रखी जायगी और तुम्हें भटकने नहीं दिया जायगा परन्तु तुमने इन सबको मात कर दिया है मेरा विचार नहीं कि तुम यह समझ रहे हो कि तुम जो पागलों की बातें कर रहे हो इसके परिणाम क्या हो सकते हैं तुमने सारी सिख कौम को मजाक का मजमून बना कर रख दिया है। इतने बड़े सिख नीडर को उत्तम सिद्धान्तों के लिए लड़ना चाहिए बजाए किरपान की लम्बाई के। लोकसभा के सदस्य चुने जाने के बाद शपथ न लेकर और कार्यवाही में भाग न लेकर तुमने अपने वोटरों से धोखा किया है, तुम्हारे वोटर पंजाब में शान्ति के इच्छुक हैं और उन्हें इस बेहूदा बहस में कोई दिलचस्पी नहीं जो तुमने छेड़ रखी है तुमने सारे सिख संघों की आत्म हत्या की ओर धकेल दिया है और हजारों नौजवानों को खून और मौत की तरफ। आज देश को कोई इनसे भी खतरा है, आज कोई गैर मुखरत वफादारी से कम कोई बात स्वीकार नहीं कर सकता तुमने अपने आप को लोगों की हंसी का मौजू बना दिया है तुम्हें इत्तहादी सभा के सिद्धान्तों और तरीकाकार का रत्तिभर भी ज्ञान नहीं तुम्हें वहां एक-एक व्यक्ति पागल कहकर ठुकरा देगा अगर तुम न्यूयार्क पहुंच भी जाओ तो एक आवारा भगोड़े की तरह सड़कें नापते रहोगे सबसे ज्यादा मुझे शिकायत यह है कि तुमने मुझसे दगा किया है जिसका मैं मुस्तहिक नहीं था।

मैंने जिस लक्ष्य को अपनाया है वह तो मुझे प्यारा रहेगा। परन्तु तुमने अपने अमल से मेरे लिए और कोई रास्ता नहीं छोड़ा सिवाए इसके कि मैं तुम्हारी मुखम्मत करूं तुम्हारे दिमाग में अपनी इज्जत का कुछ भी जज्बा हो मेरी मुखमत तुम्हें तबाह करके रख देगी अगर तुमने स्वयं ही अभी तक अपने आप को तबाह नहीं किया मेरी शक्ति को कम मत समझो। यहां और बाहर तुम्हारा एक-एक मित्र तुमसे मुंह मोड़ लेगा—मुझे इस बात का भी विश्वास नहीं कि तुम्हारे बीवी बच्चे भी ऐसा न करेंगे। तुम्हारे घर वालों ने राजीव गांधी से तुम्हारी रिहाई के लिये क्या-क्या किया वह सब को पता है वह सौदा जिसके चुनाव से पूर्व हुआ था अब हर कोई शक कर रहा है कि तुम चालाकी से इसी का खेल खेल रहे हो। जो मैं यह नहीं मानता कि तुम इतनी होशियारी से ऐसा कर सकोगे परन्तु अनकरीब यह शक विश्वास का रूप धारण कर लेगा भारत के इतिहास में राजीव गांधी के सायदान के एक चालाक हत्यारे के रूप में पेश किए जाओगे। मुझे बताया गया है कि तुम प्राय: चीनी राईफल ए-के ४७ के भय से बोलते हो परन्तु मैं हर एक को इसका स्पष्टीकरण नहीं कर सकता। तुम्हारे विचारों की (संशोधन) तरदीद करते हुए सरकार ने जून, जुलाई में चुनाव कराने का निर्णय कर लिया था अब तुमने इसे स्थगित कराने का अतिउत्तम बहाना पेश कर दिया है मैं जानता हूं कि तुमने अपना मार्ग निश्चित कर लिया है। यह दुर्भाग्य पूर्ण फैसला है परन्तु अन्त में हममें से हर कोई अपनी किस्मत में लिखे के अनुसार अमल करता है तुम्हारी किस्मत में क्या लिखा है इसकी भविष्यवाणी मैं नहीं कर सकता। 'तुम्हारा मित्र राम जेठमलानी'

नरेन्द्र जी द्वारा जब मैं यह पत्र पढ़ रहा था तो मुझे श्री जेठमलानी की अवस्था पर रहम आ रहा था और साथ में इनसे सहानुभूति भी कर रहा था। रहम इसलिए कि इनसे मान ने धोखा किया और हमदर्दी इसलिये कि इनसे जो धोखा हुआ इसके लिए जिम्मेदार यह खुद है और कोई नहीं—

रात को पीटते हैं हिन्दुओं के दरवाजे

(पृष्ठ ३ का शेष)

आतंकवादी को बन्दी बनाया था। सकीना ने बी०एस०एफ० के एक कमांडर को गोली मारी थी। जवान पहुंचे तो सबसे पहले सकीना को छुड़वा दिया। सकीना लड़कियों के आतंकवादी संगठन दुख्तर मिल्लत की सदस्या थी। इस्के मुजाहिदीन और स्टूडेंट लिबरेशन फ्रन्ट वालों के कैम्प आजाद कश्मीर (पाक अधिकृत) में खुलेआम चल रहे हैं। वहां से असलहों से लैस आतंकवादी आते हैं और सबको भून वापस लौट जाते हैं।

इन लोगों का कहना है कि कश्मीर समस्या का एकमात्र हल है कि कश्मीर सेना के हवाले हो और भारत, पाक पर आक्रमण कर उसे नेस्तनाबूद कर दे।

समस्या का सबसे दु:खद पहलू भी इन शरणार्थियों ने बताया। बोले-शरणार्थी आने के बाद जम्मू में मकानों के किराए तीन गुना हो गए हैं। हिन्दू परिवार ही हिन्दू शरणार्थियों से एक-एक कोठरी के पांच-पांच सौ रुपए मांग रहे हैं। अब टैक्सी वाले कश्मीर से जम्मू का किराया ढाई-तीन हजार रुपया मांगने लगे हैं। पहले यह किराया सात सौ रुपए के आस-पास था।

श्री बी०एन० सरसा, श्री एम०एल० रैना और श्रीमती प्रिया रैना लखनऊ वासी कश्मीरी हैं। ये लोग कल इन शरणार्थियों के साथ मुख्यमन्त्री मुलायमसिंह यादव से मिलेंगे। इनको उ०प्र० सरकार पर बहुत भरोसा है। कहते हैं लोनी गाजियाबाद के कश्मीरियों को आबंटित भूखण्डों पर यदि इन्हें बसा दिया जाए तो उ०प्र० सरकार का उपकार मानेंगे। अब लखनऊ में या उ०प्र० में और कहीं बसना चाहते हैं।

(नवभारत टाइम्स लखनऊ १० अप्रैल ९०)

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है

—सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

वेद विषयक आर्य समाज के तीसरे नियम को समझने का हमें यत्न करना है। आर्य समाज का तीसरा नियम है कि "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।" इस नियम को समझने के लिए 'ऋग्वेद का 'अदिति'—शब्द बहुत सहायक सिद्ध हो सकता है। यह एक अद्भुत शब्द है। 'अदिति" के लिए ऋग्वेद (१-८९ १०) में निम्न मन्त्र है।

अदिति द्यौ: अदिति अन्तरिक्ष अदिति. माता स: पिता स. पुत्र:।
विश्वेदेवा: अदिति पंचजना. अदिति जात अदिति जनित्वम्॥

इस मन्त्र का अर्थ यह है कि ससार मे जो कुछ है, वह 'अदिति' है। 'अदिति' शब्द 'दिति' से बना है। जो दिति न हो वह अदिति होगा। 'दिति' शब्द 'दो अवखण्डने' धातु से बना है। दिति का अर्थ है—खण्डित। अदिति का अर्थ हुआ—अखण्डित। खण्डित का अर्थ है—एक से दो, दो से तीन, तीन से चार—इस प्रकार बटते जाना। अखण्डित का अर्थ है—सदा सर्वदा एक बने रहना, टुकडो में न बटना। जितना भौतिक ज्ञान है, जिसे हम 'विज्ञान कहते है वह सब दिति के भीतर समा जाता है क्योंकि वह कभी 'सत्य' माना जाता है, कभी गवेषणा करते-करते 'असत्य' हो जाता है और छोड़ दिया जाता है। अगर सब-कुछ 'अदिति' है, जो जात या जनित्व है, वह सब 'अदिति' है, तो वेद भी अदिति है, सत्य भी अदिति है, वेद ज्ञान भी 'अदिति' है। वेद ज्ञान को अदिति कहने का अर्थ हुआ 'अखण्डित'-ज्ञान, ऐसा ज्ञान जो सदा-सर्वदा एक बना रहता है, कभी बदलता नहीं—सदा सत्य सनातन। इसी 'अदिति—शब्द के लिए ऋग्वेद (८-१८-६) मे दो अन्य शब्दो का प्रयोग हुआ है जिससे हमारा विषय अधिक स्पष्ट हो जाता है। वह मन्त्र है—

अदितिर्नो दिवा पशु अदितिर्नक्त अद्वया।
अदिति: पात्वंहस: सदावृधा॥

इस मन्त्र में 'अदिति' के लिये 'अद्वय' तथा 'सदावृध' शब्दो का प्रयोग हुआ है। 'अद्वय' का अर्थ है—जो दो न हो, 'सदावृध' का पदच्छेद कर के इसके दो अर्थ हो जाते हैं—सदावृध'—अर्थात—जो सदा बढता रहे, एक से दो, दो से तीन, तीन से चार होता रहे, बटता रहे, इसका दूसरा अर्थ है—सदा+अवृध जो सदा एक रहे, एक से दो, दो से तीन न हो, नित्य-सनातन, एक रूप मे बना रहे। इस प्रकार वेद ने ज्ञान को तीन भागो में विभक्त किया है—'अदिति', 'सदावृध, तथा सदा अवृध। 'अदिति' वह ज्ञान है जो सदा बढता रहता है, बदलता रहता है, आज यह और कल वह, बढेगा तो बदल कर ही बढ़ेगा—यह वह ज्ञान है जिसे हम आज की भाषा मे 'विज्ञान' कहते हैं, 'सदा+अवृध' वह ज्ञान है जिसे हम पहले 'अदिति' कह आए हैं—सत्य ज्ञान, अखण्डित-ज्ञान, एक ज्ञान, न बदलने वाला ज्ञान या जिसे हम ईश्वरीय-ज्ञान कह सकते हैं। भौतिक-ज्ञान सदा बढ़ता रहता है, सदावृध' रहता है, बदलता रहता है, यह 'भौतिक-विज्ञान' है, इसका गुरु शिष्य परम्परा द्वारा आदान-प्रदान हो सकता है या मनुष्य द्वारा आविष्कार हो सकता है, आध्यात्मिक-ज्ञान सदा एक रहता है, 'अदिति' या 'अद्वय है, वो यही 'एक' है, सदा सनातन है, इसका आविष्कार नहीं हो सकता, यह सदा दिया जाता है। ससार मे सदा एक रहने वाली अगर कोई वस्तु है तो वह 'सत्य' है, 'सत्य-ज्ञान' है। 'सत्य सदा एक रहता है, अखण्डित रहता है, वेद के शब्दों में कहें तो सत्य सदा 'अद्वय' है, 'अदिति' है। यह नहीं हो सकता कि किसी बात के लिए हम कहें कि यह भी ठीक है और उसका विरोधी बात भी ठीक है। सत्य सदा 'अद्वय' होता है। उदाहरणार्थ, हिन्दू हो, ईसाई हो, मुसलमान हो, यहूदी हो, पारसी हो—सभी कहेंगे कि सत्य बोलना चाहिये, कोई नहीं कहेगा कि सच भी बोल सकते हैं और झूठ भी बोल सकते हैं, सब कहेंगे कि प्रेम करना चाहिए, कोई नहीं कहेगा कि प्रेम भी करो, और द्वेष भी करो। सब कहेंगे परोपकार करना उचित है, कोई नहीं कहेगा कि परोपकार भी करो, पर अपकार भी करो। कई ऐसे आधारभूत तत्व हैं जिन्हें 'अद्वय'—अर्थात उनमें दो पक्ष हो नहीं सकते। ऐसा सब कोई कहते हैं अगर अदिति का अभिप्राय 'अद्वय' है, तो वेद ने इसी को उक्त मन्त्र में 'सदावृध' या सदा बढ़ने वाला 'वर्धमान' क्यो कहा? वर्धमान तो वह तत्व है जो सदा बढ़ता रहता है। छोटे से बड़ा और बड़े से बहुत बड़ा हो जाता या हो सकता है। आज जैसा है, कल वैसा नहीं है, अर्थात पहले जैसा नहीं है। वेद के साथ 'अद्वय' तथा 'वर्धमान' को जोड़ देने के रहस्य पर हम कुछ पहले और कुछ अब प्रकाश डालने का प्रयत्न करेंगे।

यजुर्वेद के ४० वें अध्याय में 'विद्या' तथा 'अविद्या' का वर्णन आता है। वहां कहा गया है.

अन्यदाहु: विद्यया अन्यदाहु: अविद्यया।
इति शुश्रुम धीराणां येनस्तद् व्याचचक्षिरे।
विद्यां च अविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह।
अविद्यया मृत्यु तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते॥

इन मन्त्रो का अभिप्राय यह है कि 'अविद्या' से मृत्यु को तर जाते हैं, और 'विद्या' से अमृत की प्राप्ति होती है। कितनी बेतुकी बात लगती है यह यदि अविद्या से मृत्यु को तर जाते हैं तब तो सबका लक्ष्य अविद्या होना चाहिये। परन्तु नहीं, वेद मे तथा उपनिषदो मे विद्या तथा अविद्या का अर्थ क्रमश. अज्ञान तथा प्रमाद अज्ञान नहीं है। वैदिक टर्मिनोलोजी तथा लौकिक टर्मिनोलोजी मे जमीन-आसमान का भेद है। वेदो तथा उपनिषदो मे भौतिकवाद को 'अविद्या' कहा गया है। अध्यात्मवाद को विद्या कहा गया है। वेदो तथा उपनिषदो की शब्दावली तथा हमारी दिन रात की शब्दावली में महान भेद है। यह स्पष्ट है कि भौतिक औषधियो के सेवन से रोग से मुक्ति होती है। दीर्घ जीवन हो सकता है, मृत्यु से लड़ा जा सकता है। इसी कारण तो कहा—'अविद्यया मृत्यु तीर्त्वा'—अविद्या से, भौतिकता से, मृत्यु को तो तरा जा सकता है, परन्तु—'विद्ययामृतमश्नुते) अमृत की, प्राप्ति विद्या से होती है—यहां 'विद्या' का अर्थ पढ़ने-पढाने की विद्या से नहीं, आत्म-ज्ञान की विद्या, अध्यात्मवाद की विद्या से है। वेदो की शब्दावली मे भौतिकवाद 'अविद्या' है, अध्यात्मवाद विद्या है।

यह ठीक है कि हमारा ज्ञान, ज्ञान तभी कहला सकता है जब वह वर्धमान हो, आगे-आगे बढे, उन्नति करे। आज का वैज्ञानिक जगत इसलिए श्रेयस्कर माना जाता है क्योंकि आज जो बात ठीक मानी जाती है, कल रिसर्च या परीक्षण या खोज करते-करते गलत मालूम पड़ने पर छोड दी जाती है। अगर विज्ञान किसी जगह आकर खडा हो जाए, रुक जाए तो वह फेंक देने लायक होगा। परन्तु यह बात भौतिक-विज्ञान पर ही लागू होती है, आध्यात्मिक विज्ञान पर नहीं। अध्यात्म 'अद्वय' तथा वर्धमान होता हुआ भी 'अवर्धमान' (सदा+अवृध) होता है। हिंसा से शुरू कर मनुष्य 'अहिंसा' पर जाकर रुकता है, असत्य से शुरू कर सत्य की खोज मे भटकता है, चोरी डाके-स्तेय से चलता-चलता 'अस्तेय' को लक्ष्य बनाता है, अब्रह्मचर्यता पर द्वारा गमन करता-करता 'सदाचार' ब्रह्मचर्य को ही जीवन का लक्ष्य बनाता है, छीना-झपटी से जीवन शुरू कर 'अपरिग्रह' को ही सामाजिक जीवन का लक्ष्य बनाता है। भौतिक तत्व जब तक 'वर्धमान' तक सीमित रहते हैं, तब तक जीवन अपने लक्ष्य को नहीं पकड़ता जब जीवन मे 'वर्धमान' तत्व 'अवर्धमान' हो जाते हैं, वे अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, तक पहुंच जाते हैं, तब मनुष्य 'अद्वय', 'अदिति' अवर्धमान' को जीवन के सनातन सत्य को पा लेता है। उसी अद्वय, अदिति, अखण्डित सत्य का वर्णन वेद मे किया गया है। हमारे कथन का सार यह है कि वेदो मे मुख्य तौर पर वर्धमान तत्वो का, भौतिकवाद का वर्णन नहीं है, क्योंकि ये तत्व भौतिकवाद का अग होने के कारण परिवर्तनशील हैं, वेदो में 'अवर्धमान' तत्वो का आध्यात्मिक तथ्यो का वर्णन है, क्योंकि वे नित्य है, अपरिवर्तनशील हैं। ज्ञान जब बढ़ेगा, तो बढ़ते-बढते उसकी भी सीमा कभी न कभी आयेगी। वृक्ष ऊंचा जाता है, परन्तु कहीं तो रुक जाता है। 'वर्धमान' हो जाता है, तब वहीं 'अद्वय' हो जाता है, अदिति हो जाता है। भौतिकवाद जहां रुक जाता है वहां अध्यात्मवाद शुरू हो जाता है। इसी को ऋग्वेद मे 'अद्वय' वर्धमान

से अपरिवर्तनशील (सदा×अवृध) या 'अदिति' कहा है।

जैसा हम पहले लिख आये हैं, 'ज्ञान' या तो 'वर्धमान' होगा या 'अवर्धमान' होगा। 'वर्धमान' ज्ञान भौतिक है, समय-समय पर मनुष्य की खोज के आधार पर बदलता रहता है। इसलिये बढ़ता भी रहता है, 'अवर्धमान' ज्ञान आध्यात्मिक है, नित्य है, सनातन, एक है, अद्वय है, अदिति है, बदलता नहीं है। क्योंकि वेद का ज्ञान मनुष्य की खोज नहीं है, ईश्वरीय देन है इसलिए उसे वेद ने 'अद्वय' तथा 'अदिति' कहा है। परन्तु ज्ञान का स्रोत मनुष्य तथा ईश्वरीय दोनों है—इसलिए ज्ञान को वेद ने 'सदावृध' भी कहा है। सदावृध के हमने दो अर्थ किए हैं। जब मनुष्य द्वारा खोज किए ज्ञान के लिये इस शब्द का प्रयोग होता है तब इसका अर्थ सदा सर्वदा उत्तरोत्तर बढ़ने वाला, बदलने वाला अर्थ होता है जब इस शब्द का प्रयोग ईश्वरीय ज्ञान के लिए होता है तब इसका अर्थ 'सदा-अवृधः-सदा एक रहने वाला, कभी न बदलने वाला, अद्वय, या अदिति अर्थ होता है। सदावृध संस्कृत भाषा का विलक्षण शब्द है जिसमें ज्ञान के मानुषीय तथा ईश्वरीय दोनों पक्ष आ जाते हैं। 'सदा+वृधः मानुषीय ज्ञान है, 'सदा+अवृधः ईश्वरीय या वेद-ज्ञान है।

जब हम कहते हैं कि वेद सब सत्य विद्याओं के पुस्तक हैं, तब हमारा अभिप्राय क्या होगा? इससे क्या हमारा अभिप्राय होता है कि वेद में फिजिक्स, केमेस्ट्री आदि सब-कुछ है, क्या रेल, हवाई जहाज तार, टेलीफोन आदि बनाना सब सत्यविद्यायें वेद में हैं। इस प्रश्न पर विचार करते हुए हमें दो-तीन बातों पर विचार करना होगा। हमें इस बात का उत्तर देना होगा कि अगर वेद में फिजिक्स, केमेस्ट्री, रेल, तार, हवाई जहाज आदि सब कुछ है, तो भगवान ने मनुष्य को अपने मस्तिष्क से सोचने समझने, खोजने के लिए क्या कुछ भी नहीं छोड़ा, हमें इस बात का भी उत्तर देना होगा कि सब भौतिक आविष्कार उन लोगों ने कैसे किये जो वेद का एक अक्षर भी नहीं जानते थे। इन सब आपत्तियों का हमारे पास क्या उत्तर है? वास्तविक स्थिति यह है कि वेदों में भौतिक विद्याओं का बीज तो है परन्तु उसे पुष्पित तथा फलित या क्रियात्मक रूप देने के लिये उपवेदों की रचना की गई। उपवेदों का निर्माण इसलिये हुआ ताकि वेदों में जिन भौतिक-विद्याओं का बीज था, परन्तु उसकी प्रधानता न थी, उपवेदों द्वारा उनका विशदीकरण किया जाये।

हमारा कथन यह नहीं है कि वेद में वैज्ञानिक बातें नहीं हैं। हमारा कथन सिर्फ इतना है कि वेद में जो भी तकनिक बात कही गई है वह उदाहरण या उपमा के रूप में कही गई है। मुख्य रूप में नहीं कही गई है। उदाहरण या उपमा के रूप में कही गई है। मुख्य रूप में कही गई है। उदाहरणार्थ, यजुर्वेद के २३ में अध्याय में यज्ञ का वर्णन करते हुए कहा है—'पृच्छामि त्वा परमन्तः पृथिव्याः—मैं पूछता हूँ पृथ्वी का परम छोर क्या है? इसका उत्तर देते हुए कहा गया है—'इयं वेदिः परो अन्तः पृथिव्याः—यह वेदि जहां हम यज्ञ कर रहे हैं पृथ्वी का परला सिरा है। इसका अर्थ हुआ कि पृथ्वी गोल है जिसे सिद्ध करने के लिए गैलिलियों को जेल जाना पड़ा था। प्रत्येक गोलवस्तु का आदि तथा अन्त एक ही स्थल होता है, परन्तु यह कथन जियोलोजी के रूप में नहीं कहा गया यज्ञ के विषय में उदाहरण के रूप में नहीं कहा गया यज्ञ के विषयमें उदाहरण के रूप में कहा गया है। हमारा कथन है कि वैज्ञानिक या भौतिक तथ्यों को परमात्मा की तरफ से बतलाने की जरूरत नहीं उनका आविष्कार करने के लिए भगवान ने मनुष्य को बुद्धि दी है। ईश्वरीय ज्ञान आध्यात्मिक तथ्यों को वेद द्वारा दिया गया है। अध्यात्म-विद्या ही सत्य विद्या है, वही अद्वय है। वही अदिति है, वही अवर्धमान है, वही विद्या है, भौतिक विद्या को वेद ने 'सदावृध' सदा बढ़ने वाली विद्या कहते हुए भी अविद्या कहा है। यद्यपि भौतिक विद्या को अविद्या कहते हुए भी जीवन के लिए उपयोगी होने के कारण उसे भी वेद ने सम्मान का स्थान देते हुए कहा है—'अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा—अविद्या से मृत्यु को तो तरा ही जा सकता है, परन्तु अमरत्व तो अध्यात्म से ही प्राप्त होता है।

हमने इस लेख माला में कई बातों को जगह जगह दोहराया है। इसे दोहराने का कारण विषय को अधिकाधिक स्पष्ट करना है। इस लेख माला से किसी को भ्रांति न हो इसलिए इस लेखमाला के मुख्य-मुद्दों को लिखकर मैं इसे समाप्त कर रहा हूं।

(क) इस लेख माला में जो लिखा हमने बतलाई है उससे स्पष्ट है कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।

(ख) इस लेख-माला से स्पष्ट है कि वेद ने ज्ञान के दो भेद किए हैं—'विद्या' तथा 'अविद्या'।

(ग) इस लेखमाला से स्पष्ट है कि वेद ज्ञान को अद्वय (नित्य सनातन) तथा वर्धमान (अनित्य परिवर्तन शील) इन दो भागों में भी बांटा है। वर्धमान की परिणति अवर्धमान में होती है। जब वर्धमान अवर्धमान हो जाता है तब भौतिक अभौतिक या अध्यात्म में प्रविष्ट हो जाता है।

(घ) इस लेखमाला में हमने भौतिक-विज्ञान को मानुषीय एवं वर्धमान माना है जो परिवर्तित होता रहता है और अनित्य कहा जा सकता है, वैदीक ज्ञान को 'ईश्वर प्रदत्त' एवं 'अद्वयं' माना है जो सदा एक है, नित्य है, सनातन है, जिसमें परिवर्तन न होता है, न हो सकता है। वेद के सब सत्य विद्याओं की पुस्तक होने के लिए हमने वेद की इसी स्थिति को माना है और इसलिए इन लेखों को स्पष्ट किया है।

(ङ) वेद का कहना है कि यद्यपि 'विद्या' तथा 'अविद्या' दोनों जीवन के लिए उपयोगी है तो भी 'अविद्या' से सिर्फ मृत्यु को तरा जा सकता है, विद्या से अमरत्व की प्राप्ति होती है। 'विद्यांचाविद्यां च यस्तद् वेद उभयं' विद्या तथा अविद्या दोनों का ज्ञान होना चाहिए।

(च) अविद्या से मृत्यु को तरा जा सकता है—इसका अभिप्राय हमने यह लिखा है कि भौतिक-विज्ञान या भौतिकवाद से मनुष्य को भौतिक लाभ तो हो सकता है; आध्यात्मिक लाभ नहीं। मानवीय-ज्ञान को वेद ने अविद्या का नाम दिया है। वेद की अपनी टर्मिनोलोजी है।

(छ) 'विद्या' से अमरत्व प्राप्त होता है—इसका अर्थ हमने आध्यात्मिक ज्ञान अर्थात अध्यात्मवाद से अमरत्व प्राप्त होता है।

(ज) वेदों में फिजिक्स, केमेस्ट्री, जियोलोजी आदि निकालने के कई विद्वानों ने यत्न किया है निकाले भी हैं, मैं उनकी सराहना करता हूं। परन्तु उपनिषद में लिखा है कि नारद मुनि ऋषि सनत्कुमार के पास गये और विषादमय स्वर में बोले कि मैंने संसार की सब विद्याओं का अध्ययन किया परन्तु आत्म विद्या नहीं सीखी इसलिये (सोऽहं भगवो शोचामि)—मैं खिन्न रहता हूं, उदास रहता हूँ। मैं मन्त्रविद हो गया हूं, आत्मविद नहीं हुआ। इस स्थल से स्पष्ट है कि नारद वेद की 'विद्यां च अविद्यां च'—इस मन्त्र की भाषा में बोल रहा है। इसलिये मैं कहता हूँ कि वेद मुख्य रूप में आध्यात्मिक ग्रन्थ हैं, भौतिक बातों का जहां जहां वर्णन उनमें जरूर पाया जाता है, परन्तु वह कभी-कभी आध्यात्मिक को समझने समझाने के लिए या उदाहरण अथवा रूपक के लिए किया गया है। इसलिए ऋषि दयानन्द ने वेदमन्त्रों की मुख्य रूप में आत्मा-परमात्मा परक व्याख्या की है। अध्यात्म-ज्ञान ही नित्य है, सनातन है, भौतिक-विज्ञान खोजने की वस्तु है, यह मनुष्य स्वयं खोज सकता है, आध्यात्मिक ज्ञान देने तथा पाने की वस्तु है, यह भगवान मानव को देता है, इसीलिए कहा गया है कि वेद सब सत्य-विद्याओं की पुस्तक है।

(झ) तो क्या वेद में विज्ञान नहीं है? हमारा उत्तर है—वेद में विज्ञान है, और अवश्य है, परन्तु ऐसा विज्ञान जो नित्य है, अखण्ड है, अद्वय है, जो सदा अवृध है, जो नित नित बदलता नहीं है। जो विज्ञान बदलता रहता है, वह वेद की परिभाषा में 'अविद्या' है, 'सदावृध'—'सदा-वर्धमान' है। 'सदावृध' सदा वर्धमान-ज्ञान मनुष्य के हाथ में है, 'सदा-अवृध' सदा एक रहने वाला ज्ञान—भगवान 'वेद' के द्वारा मानव को देता है।'

विशेष सूचना

सार्वदेशिक-साप्ताहिक के पाठकों को सूचित किया जाता है कि कागज के मूल्य और डाक दरों में काफी वृद्धि हो जाने के कारण अप्रैल १९९० से सार्वदेशिक साप्ताहिक का वार्षिक शुल्क १०) रुपये और आजीवन सदस्यता शुल्क १००) रुपये कर दिया गया है। निवेदन है कि भविष्य में उपरियुक्त राशि ही भेजें।

आर्य समाजें इस सारस्वत यज्ञ में सहयोग करें

भवानीलाल भारतीय

पं० लेखराम ने अपनी मृत्यु शैया से आर्य जाति को जो अपना अन्तिम सन्देश दिया था वह इस प्रकार था—आर्यसमाज में तकदीर और तहरीर का काम कभी बन्द नही होना चाहिए। तकदीर का अर्थ है व्याख्यान और तहरीर का अर्थ लेखन कार्य से लिया जाता है। यह कौन नहीं जानता कि आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द स्वयं एक लेखक तथा सफल साहित्यकार थे। उन्होंने अपने स्वल्प जीवनकाल में छोटे और बड़े ३२ ग्रन्थ लिखे तथा पाण्डुलिपियो का एक बड़ा भण्डार अप्रकाशित ही छोड़ गये। ऋषि दयानन्द के इस लेखन कार्य का अनुकरण उनके परवर्ती आर्य विद्वानों और लेखकों ने भी किया। आर्यसमाज के ११५ वर्ष के जीवनकाल में हजारों लेखकों ने अपनी अनुपम विद्वत्तापूर्ण कृतियों के द्वारा साहित्य की अभिवृद्धि की है। आर्यसमाज का यह साहित्य शास्त्रीय भी है और लौकिक भी है। उसमें उपदेशात्मकता भी है और पाठक का रस-बोध कराने की शक्ति भी है।

ऋषि दयानन्द के परवर्ती जिन लेखको ने आर्य साहित्य की अभिवृद्धि में अपना योगदान किया है उनमें सर्वश्री प० भीमसेन शर्मा, पं० तुलसीराम स्वामी, स्वामी दर्शनानन्द, प० लेखराम। प० गुरुदत्त, स्वामी श्रद्धानन्द, प० राजाराम, पं० आर्यमुनि, महात्मा नारायण स्वामी, पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय आदि ऐसे अनेक नाम लिए जा सकते हैं। वर्तमान काल के जीवित आर्य लेखकों की संख्या भी बहुत बड़ी है। सबके नामों को गिनाना भी सम्भव नही है।

आर्य लेखक कोश की योजना

कई वर्ष पूर्व मेरे मन में आर्यसमाज से जुड़े लेखकों, साहित्यकारों, पत्रकारों तथा शोधकर्मियों का जीवनवृत तथा कार्यवृत्त एकत्र करने का विचार आया। मैंने आर्यसमाज के साहित्य का अध्ययन तो विगत आधी शती के दीर्घकाल में इतने मनोयोगपूर्वक किया है कि अत्यन्त विनम्रता के साथ मैं यह कहने का साहस कर सकता हूँ कि आर्य लेखको, उनके जीवनवृत्त तथा उनकी कृतियों की जितनी जानकारी मुझे है, उतनी शायद ही किसी को हो। गत २० वर्षों से तो मैं निरन्तर आर्यसमाजी लेखकों का परिचय तथा उनके ग्रन्थों का विवरण एकत्र करता रहा और उसे व्यवस्थित करता रहा। अन्ततः मैंने इन सारे लेखको के इतिवृत्त को जब अकारादि क्रम से व्यवस्थित किया तो यह लेखक सूची लगभग १५०० तक पहुंच गई। पहले तो मेरे मन में विचार आया कि आज आर्यसमाज में अध्ययन और स्वाध्याय की प्रवृत्ति समाप्तप्रायः है। आज के आर्यसमाजी पं० लेखराम, प० गुरुदत्त, प० तुलसीराम स्वामी, स्वामी दर्शनानन्द आदि साहित्यकारों के नाम तक से अपरिचित हैं, उनके साहित्य से परिचित होना तो सर्वथा अकल्पनीय ही है। अतः इस स्थिति में मेरे द्वारा तैयार किये गये इस आर्य लेखक कोश का क्या महत्त्व है और इसे छपाने में भी किसी की रुचि होगी। प्रायः भवभूति के शब्दो में यही सोचकर मन को सन्तोष देता था कि—

उत्पत्स्यते मम कोऽपि समानधर्मा।
कालोह्ययम् निरवधि विपुला च पृथ्वी ॥

मेरे जीवनकाल मे न सही बाद में तो मेरा कोई समानधर्मा आर्यसमाज के साहित्यिक इतिहास में रुचि लेने वाला उत्पन्न होगा ही, क्योकि काल अनन्त है और माता धरित्री भी पर्याप्त विस्तृत है। मेरे द्वारा संचित दुर्लभ पुस्तकों की भांति लेखक कोश की मेरी यह पाण्डुलिपि भी पड़ी रहेगी और यदि कभी किसी ने उसकी उपयोगिता को समझा, तो वह उसे प्रकाशित भी करायेगा।

मैं पुनः प्रकृत विषय पर आता हूँ। ६० वर्ष की आयु पूरी होने पर मैंने उक्त पद से विधिवत् अवकाश तो ले लिया किन्तु मुझे पुनः स्वल्प वेतन पर ३ वर्ष के लिये प्रोफेसर पद पर नियुक्त कर लिया गया। यह अवधि भी अगले वर्ष ३० अप्रैल को समाप्त हो जायेगी। अब मुझे विश्वविद्यालय ने निवास की सुविधा भी नही दी है। अस्तु। गत वर्ष मेरे मन मे विचार आया कि यदि परमात्मा ने कुछ जीवन और दिया है तो क्यो नही आर्य लेखक कोश को छपाने का उद्योग किया जाय। जब वैदिक यन्त्रालय के प्रबन्धक से इस ग्रन्थ की छपाई पर आने वाली लागत पूछी तो पता चला कि ७०० पृष्ठों का यह ग्रन्थ पचास हजार मे छप सकता है। मेरे जैसे मसिजीवि के लिये इतनी बड़ी राशि उपलब्ध करना भी एक समस्या थी।

प्रकाशन समस्या का समाधान कैसे हो?

अन्ततः मैंने निश्चय किया कि क्यो न इस ग्रन्थ के अग्रिम ग्राहक बनाये जायें और प्रत्येक व्यक्ति से १०० रुपये अग्रिम मूल्य के रूप में लिये जाये। यदि ५०० व्यक्ति भी १०० रुपये की राशि दे दें तो ग्रन्थ का छपना शक्य हो जायेगा। ईश्वर की कृपा से आय समाज में मेरा परिचय का दायरा भी बहुत विस्तृत है। जम्मू से लेकर मद्रास और पोरबन्दर से लेकर कलकत्ता तक के आर्य बन्धु मेरे प्रति सम्मान भाव रखते हैं। फिर एक बात यह भी ध्यान मे आई कि मेरे इस ग्रन्थ में दिवंगत लेखकों के साथ-साथ जीवित, समकालीन लेखको का भी विवरण दिया गया है। अतः ऐसा हर लेखक तो इस ग्रन्थ को लेना पसन्द करेगा ही। इस विचार से मैंने अपने साथी लेखकों को एक मुद्रित विज्ञप्ति भेजी और उनसे अनुरोध किया कि वे १०० रुपये अग्रिम भेजकर इस कार्य में मेरा सहयोग करें। ग्रन्थ छपते ही मात्र १०० रुपये में ही यह उन्हें भेज दिया जायेगा। यदि आज के पुस्तक प्रकाशन की स्थिति को ध्यान

में रखा जाय तो इस ग्रन्थ का ५०० रुपया मूल्य भी रखा जा सकता है। किन्तु यह तो एसा प्रकाशन ही कर सकता है जो स्वयं अपनी पूंजी इसमें लगाये और ४००-५०० प्रतियां ही बेच कर लाखों के वारे-न्यारे कर ले। इस ग्रन्थ से धनोपार्जन मेरा लक्ष्य नहीं है, मेरी इच्छा तो ग्रन्थ को प्रकाशित करने की ही है।

मेरी आर्थिक सहयोग के लिए अपील और उसकी प्रतिक्रिया

मैने ग्रन्थ हेतु अग्रिम राशि भेजने के लिए व्यक्तियों की ही भांति संस्थाओं से भी आग्रह किया। मेरा विचार था कि यदि देश की लगभग ५ हजार आर्य समाजों में से पचास आर्य समाजें भी मुझे १००० रुपया दे दें तो इस प्रकार ५० हजार की राशि सहजतया एकत्र हो जायेगी और व्यक्तियों से मात्र १००-१०० रुपये लेने की अधिक आवश्यकता नहीं पड़ेगी। यह लिखते हुए खेद होता है कि अनेक आर्य समाजों को पृथकशः लिखने पर भी मुझे कोई आशाजनक सहयोग नहीं मिला। इसके विपरीत दयानन्दमठ दीनानगर के अध्यक्ष, यतिमण्डल के प्रधान वीतराग स्वामी सर्वानन्द जी ने इस पुण्य कार्य में २ हजार की राशि भेंट की। मैंने प० युधिष्ठिर जी मीमांसक से तो मात्र १०० रुपये भेजने के लिए ही निवेदन किया था, किन्तु एक लेखक की पीड़ा को लेखक ही समझता है। उन्होंने तत्काल एक हजार रुपये भेज दिये। दिल्ली प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के वेदप्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द जी से मैंने १०० मांगे तो उन्होंने २१० रुपये भेजे।

मेरा निवेदन

१—देश की यदि ५० आर्य समाजें भी प्रत्येक १००० रुपये भेज दें तो मेरा कार्य अत्यन्त सहज हो जायेगा। यह राशि दान रूप में न होकर अग्रिम मूल्य के रूप में ही है। क्योंकि ग्रन्थ छपने पर इतने ही मूल्य की प्रतियां मैं उन समाजों को भेज दूंगा।

२—मैंने जिन-जिन आर्य लेखकों तथा स्वपरिचित आर्य बन्धुओं को १०० रुपये भेजने के लिये लिखा है, वे बिना विलम्ब किये यह राशि भेज दें। बूंद-बूंद एकत्र करने से समुद्र भरता है। इसी न्याय से पर्याप्त लोगों की राशियां आई हैं और आ रही हैं। आर्य लेखकों से विशेष निवेदन है, क्योंकि छपने पर सम्भवतः ग्रन्थ का मूल्य बढ़ सकता है।

३—मैंने स्वयं निश्चय किया है कि कुल लागत मूल्य में जितनी राशि कम पड़ेगी उसे मैं स्वयं येन केन प्रकारेण पूरा करूंगा, क्योंकि जब ग्रन्थ छापने का निश्चय कर ही लिया तो उसे पूरा होना ही है। मेरा यह संकल्प है कि आगे मुझे आर्य समाजों के उत्सवों में जो भेंट, दक्षिणा मिलेगी, वह भी इसी कार्य में लगाऊंगा।

अतः निवेदन है कि आर्यसमाज की सभा संस्थायें इस पवित्र सारस्वत यज्ञ में अपनी आहुति प्रदान करें। पुस्तक का केवल १००० का ही संस्करण छपेगा। जो पहले अग्रिम मूल्य दे देंगे उन्हें तो अवश्य ही मिल जायेगा। इसके द्वितीय संस्करण छपने की तो कोई आशा ही नहीं है। सहायता राशि इस पते पर भेजें—

डा० भवानीलाल भारतीय
कोठी नं० ४१ सेक्टर १५ ए०
चन्डीगढ़-१६००१५

विदेशियों की हिन्दी को देन

—विदेशी व्यापारियों का भारत में वाणिज्य-व्यवसाय के निमित्त आगमन सत्रहवीं शताब्दी से ही प्रारम्भ हो गया था। पुर्तगाल एवं डच व्यापारी अंग्रेजों से पहले ही आ गये थे अतः इन देशों के व्यापारियों को अपने व्यापार एवं वाणिज्य के निमित्त हिन्दी को सीखना पड़ा था।

—जो मुट्ठी भर लोग हिन्दी का विरोध करते हैं, वे नौकरियों और अधिकारों को अपने हाथ में रखने के स्वार्थवश ऐसा करते हैं।

—माधव श्री हरि अणे

भारत को भव्य बनाओ

जब अपना सर्वस्व लूट गया, तब प्रयास का फल क्या होगा ?
अपने ही प्रमाद के कारण, पहिले हुआ न दुःख निवारण।
और सबे दुःख जन्म से रहे, फिर कैसे होगा निस्तारण।
आज उपाय नहीं कर पाए तो फिर सोचो कल क्या होगा ? जब०
वैदेशिक मत यहां पल रहे, पूर्ण शक्ति से फल-फूल रहे।
अपने बन्धु धर्म छोड़कर, हन्त उन्हीं के संग मिल रहे।
यही समस्या बनी रही तो फिर भविष्य में हल क्या होगा ? जब०
अपनी संस्कृति मिटती जाती, सुखद सभ्यता पिटती जाती।
वैदेशिक अन्धानुकरण से, स्वीय सम्पदा लुटती जाती।
अपना कुछ भी बचा न पाये, तो यहां अपना बल क्या होगा ? जब०
शिखासूत्र क्या धार रही अब, पाप पन्थसे प्यार नहीं अब ?
ज्ञान त्याग तप की बाधायें, समझ रहे विस्तार नहीं अब ?
ऐसे युवक सबल नहीं पाए तो न देश निर्बल क्या होगा ? जब०
राम कृष्ण का पथ अपनाओ, सबको उनका चरित सुनाओ।
उनकी ही विधि से भारत में, अपने पावन पर्व मनाओ।
यह सब बिना किये प्रिय भारत सुखी सशक्त विमल क्या होगा ? जब०

—आचार्य रामकिशोर शर्मा

सीमा रही पुकार

सीमा रही पुकार देश की, वीरो कदम बढ़ा दो।
शत्रु झांके बार-बार, तुम उसको सबक सिखा दो॥
अगर नहीं तुम चेते अब भी, हाथ मसल रह जाओगे।
काश्मीर पंजाब अपने में, तुम विदेशी कहलाओगे॥
आतंकवाद का खेल खत्म हो, तुम ऐसे दाव चला दो।
शत्रु झांके बार-बार, तुम उसको सबक सिखा दो॥
शेरो तुम हुंकार मार कर, अपना जौहर दिखला दो।
कोमल, कला, घोरा बादल सी, पर्वंता पुनः सुना दो॥
गुरु पुत्रों सी भर किलकारी, दुश्मन को फिर दहला दो।
सीमा रही पुकार देश की वीरो कदम बढ़ा दो॥
शिवा मचाए अपनी भवानी, प्रताप वार दे भाले पर।
रक्षा खातिर आज वतन की, बन्दा टूटे फिर दुश्मन पर।
आज दे जिसके शत्रु कांपे, नलवा सी खड्ग चला दो।
शत्रु.........
सुलग रही चिंगारी दिल मे, गद्दारों की करतूतों से।
प्यारा भारत मिटने को है, तुष्टीकरण की नीति से॥
आंख खोल दुश्मन को जाने, शासन को आज बतला दो।
सीमा रही पुकार देश की वीरो कदम बढ़ा दो॥

—पूर्ण प्रकाश मित्तल, बिजनौर

आर्य जगत् के समाचार

वेद-संगोष्ठी

वेद संस्थान, राजौरी गार्डन, दिल्ली में वैदिक वाङ्मय में 'विश्वेदेवा:' विषय पर ७ और ८ अप्रैल १९९० को द्विदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। वेद संस्थान में प्रतिवर्ष किसी वैदिक विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया जाता है। इस प्रकार की यह पांचवीं संगोष्ठी थी। संगोष्ठी में 'विश्वेदेवा:' के विभिन्न पक्षों को लेकर दिल्ली और बाहर के विद्वानों ने कुल सोलह शोध-निबन्ध प्रस्तुत किये और उन पर उपस्थित विद्वान श्रोताओं द्वारा विचार-विमर्श भी किया गया। निबन्ध प्रस्तुत करने वाले विद्वानों में डा० फतेहसिंह, श्री मनोहरलाल विद्यालंकार, डा० धर्मदेव शर्मा, डा० कृष्णलाल, डा० श्रीमती उर्मिला रुस्तगी और डा० श्रीमती शशि तिवारी प्रमुख हैं।

संगोष्ठी का उद्घाटन प्रमुख संस्कृत विद्वान डा० रामकरण शर्मा ने किया। प्रमुख अतिथि के रूप में विश्वेश्वरानन्द विश्वबन्धु प्राच्य विद्या संस्थान, होशियारपुर के निदेशक आचार्य ब्रज बिहारी चौबे उपस्थित थे। संगोष्ठी के आरम्भ में सभी विद्वानों को प० युधिष्ठिर मीमांसक का आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

—डा० कृष्णलाल, संयोजक

राम नवमी

आर्य समाज नीमच की ओर से दिनांक ३-४-९० को राम नवमी पर्व मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम व शास्त्रार्थ महारथी श्री प० रामचन्द्र देहलवी के जन्म दिवस के रूप में धूमधाम से मनाया गया।

इसके अन्तर्गत प्रभात फेरी निकाली गई, यज्ञ हुआ तथा देहलवी जी व मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के आदर्श जीवन पर प्रकाश डाला गया।

—जगदीश प्रसाद गुप्त

उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज जौनपुर के ९० वें वार्षिकोत्सव दि० ५ से ८ अप्रैल तक मनाया गया इस अवसर पर उ० प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प० इन्द्रराज जी का टाउन हाल के मैदान में भव्य स्वागत किया गया।

स्थापना दिवस

आर्य समाज बरबीघा द्वारा आर्य समाज स्थापना दिवस चैत्र शु० १ वि० २०४७ को बड़े ही धूमधाम से मनाया गया।

—शिवनन्दन आर्य मन्त्री
आर्य समाज बरबीघा, मुंगेर

भव्य शोभा यात्रा

आर्य समाज देवबन्द की ओर से नवसम्वत्सर एवं आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में नगर में भव्य शोभा यात्रा निकाली गई। क्षेत्रीय आर्य संगठन का पूर्ण सहयोग मिला। क्षेत्रीय आर्य समाजें अपने अपने नाम पट्ट एवं टोलियां लेकर दयानन्द बाल मन्दिर एवं शिशु मन्दिर के बालक-बालिकायें प्रदर्शन एवं बिगुल बजाते हुये आर्य वीर दल के वीरों ने अपना लाठी आदि के प्रदर्शन से नागरिकों का आकर्षित किया।

—विश्वम्भरदेव शास्त्री, संयोजक
आर्य समाज देवबन्द

संस्कृत शिक्षक सम्मेलन

२५-३-९० अपराह्न हिन्दी भवन लखनऊ सभागार में गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या के कुलपति श्री वसुमित्र शास्त्री की अध्यक्षता में सफल संस्कृत शिक्षक सम्मेलन आयोजित हुआ। श्री जितेन्द्र अग्निहोत्री ने आगामी नव गणना में मातृ भाषा संस्कृत लिखाने को कहा। केरल से पधारे श्री चन्द्रशेखर पांडे ने अपने धारा प्रवाह संस्कृत भाषण से सब को आश्चर्य चकित कर दिया। सर्वश्री उपेन्द्र नारायण मिश्र एवं पंकज द्विवेदी ने प्रगतिशील काव्यपाठ किया। श्रीमती अनिता ने राष्ट्र भक्ति की कविता प्रस्तुत की।

—ज्ञानकृष्ण

वेद प्रचार आयोजन

दिनांक २९ मार्च से वेद कथा १ अप्रैल ९० तक आर्य समाज रजौली द्वारा वेद प्रचार काफी धूमधाम से मनाया गया। जिसके अन्तर्गत प्रत्येक दिन प्रात हवन यज्ञ के पश्चात वेदोपदेश होता रहा। साथ ही प्रत्येक दिन रात्रि में भारतवर्ष के प्रकाण्ड विद्वान श्री प० प्रज्ञामित्र जी शास्त्री रायबरेली, श्री नवलकिशोरजी शास्त्री समस्तीपुर (बिहार) ने विचार रखे।

—रामेश्वर प्रसाद, स० सचिव

राम नवमी पर्व

लुधियाना, ३ अप्रैल।

आज यहां आर्य समाज, महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) ने राम नवमी के पर्व पर एक समारोह का आयोजन किया। इस अवसर पर यज्ञ किया गया जो कि प० सुन्दरलाल शास्त्री ने सम्पन्न कराया। इस यज्ञ में जनता ने श्रद्धापूर्वक भाग लिया।

—राजेलाल महामन्त्री

महान साहित्यकार वैद्य गुरुदत्त को भावभीनी श्रद्धांजलि

नई दिल्ली। भारतीय लेखक मंच के तत्वावधान में हिन्दी के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार, साहित्य शिरोमणि वैद्य गुरुदत्त की प्रथम पुण्य तिथि पर 'वैद्य गुरु दत्त व्यक्तित्व और कृतित्व' विषय पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। आर्य समाज के सुविख्यात सन्यासी व विशिष्ट शिक्षाविद स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती ने वैद्य गुरुदत्त को वेद विज्ञान का आधुनिक मन्त्रद्रष्टा बताते हुए उन्हें मानवता व धर्म का प्रतीक व उनका जीवन ऋषि तुल्य बताया। श्री अशोक कौशिक पत्रकार जो वैद्य जी के ४२ वर्ष निकटवर्ती सहयोगी रहे अनेक प्रेरक व रोचक संस्मरणों द्वारा उनके व्यक्तित्व को बहुआयामी बताया।

आर्य समाज स्थापना दिवस

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा सर्व प्रथम स्थापित आर्य समाज बम्बई (काकड़वाडी का ११६ वां स्थापना दिवस एवं वार्षिकोत्सव का कार्यक्रम पूरी गरिमा एवं सफलता के साथ दि० २४ मार्च से २७ मार्च ९० को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, प्रो० उत्तम चन्द जी शरर, डा० वागीश जी शर्मा के प्रभावपूर्ण व्याख्यानों तथा स्वामी ईशानन्द जी सरस्वती एवं प० रामस्वरूप जी आर्य के मनोहर भजनों से जनता लाभान्वित हुई।

साहित्य समालोचना

पं० बाबूराम आर्यकृत चतुर्वेद संहिताओं का उर्दू अनुवाद

वेद परमात्मा का दिव्य ज्ञान है जो मनुष्य मात्र के हित के लिये सृष्टि-कर्ता की ओर से ऋषियों के द्वारा हमें प्राप्त हुआ। विगत हजारों वर्षों में वेदों पर अनेक भाष्य, टीकायें व्याख्यायें आदि लिखी गई तथा उनका संसार की विभिन्न भाषाओं में अनुवाद भी हुआ। परमात्मा की दिव्यवाणी का संसार की समस्त भाषाओं में अनुवाद हो यह स्वाभाविक भी है और उचित भी। हमें यह जान कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि आर्य समाज के वरिष्ठ विद्वान पं० बाबूराम आर्य ने विगत अनेक वर्षों से वेदों का उर्दू भाषा में अनुवाद करने का प्रशंसनीय प्रयत्न किया है। वेदों का उर्दू में तर्जुमा करने का यह प्रयास सर्वथा उचित तथा सामयिक है। उर्दू का पठन पाठन भारत के अनेक प्रान्तों में है और पड़ोसी देश पाकिस्तान ने तो इसे अपनी राजभाषा ही बना दिया है। इसलिये वेदों के इन उर्दू अनुवादों की ओर पाठकों की अभिरुचि जागृत होनी आवश्यक है।

१९८४ में पं० बाबूराम जी द्वारा अनूदित यजुर्वेद का चतुर्थ अध्याय पर्यन्त प्रथम उर्दू भाषी पाठकों तक पहुँचा। महर्षि दयानन्द के यजु भाष्य को आधार मान कर अनुवादक ने प्रत्येक मन्त्र का विस्तृत अर्थ किया है। इस प्रकार मन्त्र में निहित अभिप्राय को स्पष्ट करने में बड़ी सफलता मिली है। इधर तो यजुर्वेद का यह अनुवाद छपा, उधर पं० बाबूराम जी ने ऋग्वेद के उर्दू भाष्य का भी प्रकाशन कर दिया। अब उन्होंने अपने इस कार्य को अधिक व्यापक और उपयोगी बनाने के लिये प्रत्येक मन्त्र का उर्दू भावार्थ देने के साथ साथ हिन्दी तथा अंग्रेजी में संक्षिप्त अभिप्राय देने का भी विचार किया है। इस प्रकार आगे प्रकाशित होने वाले वेद के भाष्य त्रिभाषी अनुवाद के रूप में पाठकों को लाभान्वित करेंगे। आशा है की अधिकाधिक पाठक पं० बाबूराम जी के इस प्रयास का लाभ लेंगे तथा इन ग्रन्थों का विस्तृत प्रचार होगा। संसार में परमात्मा की यह कल्याणी वाणी दिग्दिगन्त तक प्रसरित हो, यह हम सब की कामना है। अतः वेदों के उर्दू अनुवादक पं० बाबूराम आर्य भी हम सबके साधुवाद के पात्र हैं।

—भवानीलाल भारतीय

मुफ्ती के आतंकवादियों के साथ सम्बन्ध

फारूख़ के आरोप पर इंका ने स्पष्टीकरण मांगा

नई दिल्ली। १९ अप्रैल लोकसभा में आज कांग्रेस [इ] सदस्यों ने कश्मीर मामलों के मन्त्री जार्ज फर्नांडीस के कथित वक्तव्य पर सरकार से स्थिति स्पष्ट करने की मांग की जिसमें उन्होंने गृहमन्त्री पर उग्रवादियों से सम्बन्ध होने का आरोप लगाया है।

कांग्रेस [इ] के० ई० चार्ल्स और पी० आर० कुमार मंगलम ने शून्यकाल में यह मामला उठाते हुए कहा कि श्री फर्नांडीस और गृहमन्त्री मुफ्ती मोहम्मद सईद दोनों सदन में मौजूद हैं। उन्हें स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए।

कांग्रेस [इ] के ही चमनलाल ने अकाली दल [मान] के अध्यक्ष सिमरनजीतसिंह मान के कथित वक्तव्य की ओर सदन का ध्यान आकृष्ट किया जिसमें उन्होंने कहा कि वह देश का संविधान नहीं मानते हैं तथा खालिस्तान बन कर रहेगा।

श्री चमनलाल के अनुसार श्री मान ने यह भी कहा है कि यदि पाकिस्तान हमला करता है तो भारत का साथ नहीं देंगे। उन्होंने जानना चाहा कि सरकार इस मामले में क्या कार्रवाई कर रही है।

कांग्रेस [इ] के एम० जे० अकबर ने कहा कि यूनाइटेड लिबरेशन फ्रन्ट असम [उल्फा] की गतिविधियों के कारण पूरे असम में आतंक है। उन्होंने भी जानना चाहा कि "उल्फा" के विरुद्ध कोई कार्रवाई क्यों नहीं की जा रही है।

आर्य समाज की गतिविधियां

ऋषिबोध पर्व

आर्य समाज कोंडी कला द्वारा ऋषिबोध पर्व समारोह पूर्वक मनाया गया। प्रातः ६ बजे प्रभात फेरी शहर के मुख्य मार्गों से होती हुई निकली इसमें आर्य शिक्षण संस्थाओं एवं आर्य समाज के सदस्यों ने भारी संख्या में भाग लिया। तत्पश्चात प्रातः ८ बजे से आर्य समाज मन्दिर में हवन (यज्ञ) एवं भजनादि के कार्यक्रम हुए।

आर्य समाज तेलिनीपाड़ा का द्वितीय वार्षिकोत्सव सम्पन्न

पश्चिमी बंगाल के २४ परगना जिलान्तर्गत तेलिनीपाड़ा नगर में स्थानीय आर्य समाज का द्वितीय वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ। यह समारोह ३, ४ एवं ५ अप्रैल ९० को मनाया गया। इस शुभ अवसर पर आर्यसमाज के क्रान्तिकारी व्याख्याता डा० देवेन्द्र कुमार जी सत्यार्थी नालन्दा (बिहार) श्री आचार्य चन्द्रदेव जी शास्त्री फर्रुखाबाद (उत्तर प्रदेश) एवं श्री मधुसूदन सिद्धान्त विशारद (कांगड़ा) के कार्यक्रम होते रहे इस वार्षिकोत्सव का वी०डी०ओ० फिल्म भी बनाया गया। हजारों नागरिकों ने उपस्थित होकर इससे लाभ उठाया।

—पन्नालाल गुप्ता, मन्त्री

नव सम्वत मनाया गया

दिनांक ४-३-९० (रविवार) को आर्य समाज अणु विहार वरोरा द्वारा निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया।

दिनांक २७-३-९० (मंगलवार) को नव सम्वत् वर्ष के उपलक्ष में विशाल यज्ञ समारोह सम्पन्न हुआ तथा यज्ञ के उपरान्त; मुख्य अतिथि श्री रामचन्द्र आर्य जी द्वारा निबन्ध प्रतियोगिता विजेताओं को पुरस्कार (वैदिक साहित्य) वितरित किया गया।

—हुकमसिंह, मन्त्री

स्वतन्त्रता सेनानी बहन लक्ष्मीदेवी आर्या का निधन

स्वतन्त्रता सेनानी एवं आर्य महिला समाज सेविका बहन 'लक्ष्मीदेवी आर्या का ग्राम रोहणा जिला रोहतक का लम्बी बीमारी के बाद ३ फरवरी की रात्रि को १९९० को निधन हो गया। उनकी आयु ८० वर्ष से अधिक थी। उनका जन्म ग्राम रोहणा के एक आर्य परिवार में हुआ था। उनका विवाह रोहतक में हुआ था, परन्तु वे थोड़े दिनों के बाद विधवा हो गईं। इसके बाद उन्होंने अपना सारा जीवन समाज सेवा में लगा दिया।'

—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री

संस्कृत और दर्शन का अध्यापन

वैदिक साधनाश्रम, नालापानी (देहरादून) में श्री स्वामी सत्यपति जी के निर्देशन में १९ मई १९९० से एक वर्ष के लिये संस्कृत भाषा तथा वैदिक दर्शनों के अध्यापन का कार्यक्रम निश्चित किया गया है। यह कार्य ब्र० श्री आनन्द प्रकाश जी ब्रह्मचारी (स्नातक, दर्शन-योग-विद्यालय, आर्य वन विकास क्षेत्र रोजड़, पत्रा० सागपुर, जिला साबरकांठा-गुजरात) सम्पन्न करेंगे।

इसके साथ ही १९ मई से एक मास के लिये श्री स्वामी सत्यपति जी महाराज तपोवन आश्रम में ही क्रियात्मक योग प्रशिक्षण भी करेंगे। इच्छुक धार्मिक महानुभाव जो यम-नियम का पालन करने वाले हों, अनुशासन में रहने वाले तथा दर्शन पढ़ने की योग्यता रखने वाले हों, वे स्त्री पुरुष अपने आने की सूचना तपोवन आश्रम में भेज देवें।

—आचार्य

दर्शन-योग-विद्यालय, आर्य वन विकास क्षेत्र

रोजड़, पत्रा० सागपुर, जिला साबर कांठा

गुजरात-३८३३०७

वैदिक साहित्य प्रदर्शनी

युधिष्ठिर पं० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शती १९-३-१९९० को वैदिक प्रचार केन्द्र सेक्टर-३ में विशाल वैदिक साहित्य प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इसमें अनेक बुद्धिजीवियों ने भाग लिया।

—आनन्द

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

—आर्य समाज रूपापुर [पटना] का वार्षिकोत्सव ३ से ६ फरवरी ९० तक धूमधाम से मनाया गया। इस शुभ अवसर पर आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान श्री प० सत्यव्रत वानप्रस्थी [समस्तीपुर] श्री पं० गदाधर शास्त्री; श्री पं० सर्वेन्द्र शास्त्री [पटना] श्री प० नवलकिशोर शास्त्री समस्तीपुर आदि के विद्वान पधारे।

रामानुग्रहसिंह, प्रधान

—आर्य समाज फतुहा [पटना] का हीरक जयन्ती समारोह दिनांक १० से १२ अप्रैल, १९९० को बड़े ही समारोह पूर्वक मनाया गया।

उक्त अवसर पर विशाल शोभा यात्रा के अतिरिक्त विभिन्न सम्मेलनों का भी आयोजन किया गया।

—जयदेव आर्य, मन्त्री

आर्य समाज फतुहा (पटना)

राजस्थानी कसाई बनजारों से २०० गऊएं छुड़ाई

मोहना (पानीपत) ९ अप्रैल १९९० को राजस्थानी कसाई बनजारों से गांव वालों के सहयोग से २०० छोटी बड़ी गऊएं छुड़ाई गईं। इन्हीं बनजारों से पहले भी हजारों गऊएं छुड़ाई गई हैं। ये बनजारे मुझे देखते ही भागने लगते हैं। और गऊओं को छोड़ जाते हैं। सभी गऊएं अच्छी हालत में परन्तु बिना दूध की थी। इसकी सूचना जिला प्रशासन को तुरन्त दे दी गई। ज्ञात हो इन्हीं बनजारों ने हम सात आठ गोरक्षकों पर राजस्थान में एक झूठा कत्ल का केस डाल रखा है। भागे हुए बनजारों की तलाश हो रही है। मिलते ही उन्हें पुलिस के हवाले कर दिया जायेगा।

—ब्र० ओम स्वरूप, अध्यक्ष गोवंश रक्षा समिति हरियाणा

श्री हुकुमचन्द जी यादव का सम्मान

खण्डवा आर्य समाज के प्रधान मान श्री भाई भानुशाली मन्त्री लक्ष्मीनारायण भार्गव ने जानकारी दी कि दिनांक १ अप्रैल ९० को आर्य समाज मन्दिर खण्डवा में खण्डवा क्षेत्र के भाजपा विधायक श्री हुकुमचन्द जी यादव पहलवान का स्वागत किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री पुरणमल जी शर्मा ने की समाज के सभी पदाधिकारियों ने माल्यार्पण स्वागत कर एक ज्ञापन उनके माध्यम से मध्य प्रदेश शासन को प्रेषित किया। श्री यादव जी ने ज्ञापन को सुना तथा आश्वासन दिया कि इसके ऊपर त्वरित कार्यवाही होगी। उन्होंने कहा कि मैं पूरी ईमानदारी से समाज की सेवा करूंगा। युवा पीढ़ी को प्रोत्साहित करने पर जोर दिया कार्यक्रम का संचालन लक्ष्मीनारायण भार्गव मन्त्री आर्य समाज ने किया। आभार अध्यक्ष श्री मान श्री भाई भानुशाली ने माना।

—लक्ष्मीनारायण भार्गव, मन्त्री,

कश्मीर में धारा ३७० समाप्त करके सुरक्षा पट्टी बनाई जाए

आर्य उप प्रतिनिधि सभा, कानपुर महानगर के तत्वावधान में 'आर्य समाज स्थापना दिवस" पर आर्य समाज लाजपत नगर में आयोजित एक विशाल जन सभा में स्वामी दीक्षानन्द जी समर्पण शोध संस्थान साहिबाबाद ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के माध्यम से चरित्र निर्माण का कार्य प्रारम्भ किया था। परन्तु आज देश में चरित्र नाम की कोई चीज दिखाई नहीं दे रही है आर्य समाज को राष्ट्र की एकता व अखण्डता में जुट जाना चाहिए। राष्ट्र को टुकड़ों में बांटने का प्रयास चल रहा है। मुसलमानों को भारत विरोधी बनाया जा रहा है। भारत एक अन्तर्राष्ट्रीय धर्मशाला बन गया है। आज काश्मीर, पंजाब हिंसा की आग में जल रहा है हिन्दू अपना घर छोड़कर भाग रहे हैं। महर्षि दयानन्द ने सम्पूर्ण मानव जाति की रक्षा के लिये, सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिये राष्ट्र रक्षा के लिये आर्य समाज की स्थापना की थी। आज आवश्यकता है कि आर्य समाज राष्ट्र रक्षा हेतु गोरक्षा, मद्यनिषेध, अंग्रेजी हटाओ के लिये संघर्षशील बने। सीमा सुरक्षा-पट्टी बनायी जाय; काश्मीर में धारा ३७० समाप्त किया जाय।

—प्यारेलाल आर्य (मन्त्री)

उत्सव

आर्य समाज गाजीपुर रामपुर का ५१ वां वार्षिक उत्सव २७, २८ व २९ अप्रैल १९९० को श्री धर्मपाल जी महाशय प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य की अध्यक्षता में मनाया जा रहा है। पूर्णाहुति के उपरान्त आर्य सम्मेलन २९ अप्रैल ९० को प्रातः १०-३० बजे प्रारम्भ होगा। जिसमें स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती मुख्य अतिथि होंगे। सभी सादर आमन्त्रित हैं।

—हेमचन्द्र चौहान, प्रधान

नए खतरे से सावधान

(पृष्ठ १ का शेष)

जाने वाले 'इस्लामिकस्तान' में भारत के मुसलमानों को बसाया जायेगा।'

यह बात उस दस्तावेज में लिखी है जो हाल में ११ हजार सिख तीर्थ यात्रियों को बांटा गया। यह लोग 'बैसाखी' (खालसा पंथ के स्थापना दिवस) के मौके पर ननकाना साहिब, पंजा साहिब और डेरा साहिब की यात्रा के लिए पाकिस्तान गए थे। उर्दू और अंग्रेजी में लिखे इस दस्तावेज को कुछ तीर्थयात्री यहां लाए। इससे पता चलता है कि पाकिस्तान में भारत-विरोधी भावनाएं किस तरह भड़काई जा रही हैं।

दस्तावेज में लिखा है, 'हम भारत में सभी गैर-हिन्दू राष्ट्रीयताओं को हिन्दू साम्राज्यवाद के जुल्म से मुक्त कराने का संकल्प करते हैं प्रचार का मकसद इस विचार को फैलाना है कि भारत में मुसलमानों का जो दमन हो रहा है उससे निपटने का एकमात्र तरीका यही है कि भारतीय संघ से जमीन लेकर स्वतन्त्र राज्य 'इस्लामिकस्तान बनाया जाये।

इस 'बगावती' दस्तावेज का शीर्षक 'आजादी या मौत' है। इसे पाकिस्तान कौमी लीग के सदर सैयद अशरफ बुखारी ने बंटवाया है। यह 'खुद्दाम-ए-कश्मीर' भारतीय मुसलमानों और 'खालिस्तान' के लिए लड़ रहे सिखों के नाम है।

यह तीर्थ यात्री पिछले शुक्रवार को भारत लौटे। उनके मुताबिक पाकिस्तान के शहरों की सड़कें व गलियां भारत-विरोधी नारों से अटी पड़ी हैं। लाहौर की सड़कों पर लगे कुछ खम्भों पर लिखा था 'कश्मीर की आजादी तक और हिन्दुस्तान की बरबादी तक लड़ेंगे।' पाकिस्तान के नागरिक मानने लगे हैं कि युद्ध होने वाला है जिसमें भारत को उन जुल्मों की सजा दी जायेगी जो वह कश्मीर में उनके भाइयों पर कर रहा है।

दस्तावेज मे आगे लिखा है...हम घोषणा करते हैं, (ए) भारत मे रह रहे करोड़ो मुसलमानो के लिए अलग राज्य ..इस्लामिकस्तान की स्थापना के लिए लड़ेंगे। (बी) सिखो को हिंदू साम्राज्यवाद के पंजो से बचाने और खालिस्तान की स्थापना के लिए जारी उनके संघर्ष मे शामिल होंगे। हम इस बात की प्रशंसा करते है कि सिखो को भी ईश्वर की एकता मे विश्वास है। ·· हम कश्मीरी मुसलमानो व महिलाओ के गौरव व सम्मान की रक्षा का संकल्प करते हैं जो अपना खून बहाकर भी उत्पीड़न व दमन का मुकाबला कर रहे हैं'।

दस्तावेज मे भारतीय सेना के अधिकारी ब्रिगेडियर जसबीरसिंह को इस बात के लिये धन्यवाद दिया गया कि उन्होने भारतीय सेना को कश्मीरी मुसलमानो पर गोली न चलाने का आदेश दिया। ऐसा करके उन्होने मानव अधिकारो की पवित्रता को कायम रखा और मुसलमानो के साथ सिखों की मित्रता को साबित किया। ऐसा लगता है कि जसबीरसिंह काल्पनिक नाम है उसका उल्लेख करने का मकसद भारत के खिलाफ मुसलमानो व सिखों के बीच तालमेल बैठाना है ताकि वे मिलकर अपने 'दुश्मन' से लड़ सकें।

मुफ्ती पर आतंकवादियों से संबंध रखने का आरोप

नई दिल्ली, १८ अप्रैल। पंजाब प्रदेश युवक कांग्रेस (इ) ने आज गृहमन्त्री मुफ्ती मोहम्मद सईद पर पंजाब तथा जम्मू कश्मीर के आतंकवादियों के साथ सम्बन्ध रखने का आरोप लगाते हुए उनके इस्तीफे की मांग की।

पार्टी अध्यक्ष मनिन्दर जीतसिंह बिट्टा ने राष्ट्रपति रामास्वामी वेंकटरामन को दिये एक ज्ञापन में आरोप लगाया है कि श्री सईद आतंकवादियों के साथ अपने गुप्त सम्बन्धों को मजबूत बनाकर पंजाब और कश्मीर मामले में प्रधानमन्त्री के प्रयासो को कमजोर कर रहे हैं।

ज्ञापन मे कहा गया है कि गृहमन्त्री ने अपनी पुत्री रुबिया सईद की आतंकवादियो के कब्जे से रिहाई के बदले पांच खूंखार आतंकवादियों की रिहाई के आदेश तो दे दिये परन्तु उन्होंने हिन्दुस्तान मशीन टूल्स के महाप्रबन्धक एच.एल. खेरा और कश्मीर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० मुशीर उलहक आतंकवादियो से छुड़ाने के लिये उसी नीति का पालन नहीं किया।

श्री बिट्टा ने कहा कि जब तक गृहमन्त्री के पद पर श्री सईद बने रहेंगे तब तक पंजाब समस्या का समाधान नहीं हो सकता।

नाहरी गांव में आर्य महिला सभा दिल्ली की ओर से प्रचार कार्य

दिनांक १-१-९० को दिल्ली से ६ बसों में आर्य महिला सभा की बहिनें नाहरी गांव जिला सोनीपत की प्रचार यात्रा पर गयी। इन बहिनों व माताओं के पहुंचते ही गांव वासियों ने इनका स्वागत किया। और भव्य शोभा यात्रा निकाली गई। इस शोभा-यात्रा में १४० ब्रह्मचारिणी थी। नाहरी गांव की महिलाओं ने भी भारी संख्या में इनका स्वागत किया और शोभा यात्रा में सम्मिलित हुई शोभा यात्रा के उपरान्त एक बहुत बड़ा यज्ञ हुआ जिसमें ग्रामीण महिलाओं ने भारी संख्या में भाग लिया।

दिल्ली महिला सभा की प्रधाना श्रीमती सुशीला आनन्द की अध्यक्षता में कुरीति निवारण सम्मेलन हुआ जिसमें नाहरी गांव के स्कूल के बच्चों ने भी भाग लिया। श्रीमती सरला मेहता, श्रीमती प्रकाश आर्य, श्रीमती शकुन्तला दीक्षित आदि माताओं ने इस सम्मेलन में भाग लिया।

—कृष्णा चड्ढा मन्त्राणी
आर्य महिला सभा

प्रवेश सूचना

महर्षि दयानन्द निर्दिष्ट पाठविधि पर आधारित एकमात्र विशाल संस्था आर्य गुरुकुल ऐरवा कटरा (इटावा) मे १ जून ९० से नवीन ब्रह्मचारियों का प्रवेश प्रारम्भ हो रहा है।

प्रवेशार्थी छात्र का पञ्चम कक्षा उत्तीर्ण होना परमावश्यक है। परीक्षाएं महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के आधार पर प्रथमा आचार्य पर्यन्त दिलाई जाती है।

इच्छुक सम्पर्क शीघ्रता करें। विशेष जानकारी के लिए निम्न पते से पत्र व्यवहार करें।

—आचार्य रामदेव शर्मा, मुख्याधिष्ठाता,
आर्य गुरुकुल ऐरवा कटरा (इटावा)

प्रधानाध्यापक की आवश्यकता

आर्य समाज शिक्षा सभा, अजमेर द्वारा संचालित विरजानन्द सीनियर उच्च माध्यमिक विद्यालय के लिए एक प्रधानाध्यापक योग्यता एम० ए० बी० एड० एवं पांच वर्ष तक सेकेण्ड्री स्कूल के प्रधानाध्यापक का अनुभव अथवा पांच वर्ष तक हायर सैकेण्ड्री कक्षाओं को पढ़ाने का अनुभव आवश्यक वेतन श्रृंखला-२२००से ४००० में प्रारम्भिक वेतन रु० २९४०/-१ आर्यसमाज से सम्बन्धित प्रार्थी को प्राथमिकता आवेदन मन्त्री के नाम १०/- के निर्धारित प्रपत्र पर शीघ्र प्रस्तुत करें।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म् सार्वदेशिक साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१ | दयानन्दाब्द १६६ | दूरभाष : ३२७४७७१ | वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे

वर्ष २६ अंक १७] वैशाख शु० १२ सं० २०४७ ६ मई १९९०

वेदामृत

पुत्र कर्मठ और कृतज्ञ हों

ते सूनवः स्वपसः सुदंससो,
मही जज्ञुर्मातरा पूर्वचित्तये ।
स्थातुश्च सत्यं जगतश्च धर्मणि,
पुत्रस्य पाथः पदमद्वयाविनः ॥
ऋग् १-१५९-३ ॥

हिन्दी अर्थ—वे सुन्दर कर्म करने वाले, आश्चर्यजनक शक्ति-सम्पन्न पुत्र प्रातिभज्ञान (ईश्वरीय ज्ञान) के लिए मातृ-तुल्य महान् द्युलोक और पृथिवी को जानते हैं। चर और अचर जगत् के निश्छल पुत्र के मार्ग की धार्मिक कार्यों मे (वे दोनों) अवश्य रक्षा करते हैं।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

आर्य प्रतिनिधि सभा आंध्रप्रदेश की सार्वदेशिक सभा के खिलाफ याचिका रद्द

श्री रामचन्द्रराव कल्याणी ने आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश के प्रधान की हैसियत से दिनांक २१-८-८७ को सिविल कोर्ट हैदराबाद में यह अस्थाई स्थगन आदेश प्राप्त किया था कि उनकी सभा को भंग करके तदर्थ समिति बनाने से सार्वदेशिक सभा को रोका जाए । उन्होंने सार्वदेशिक सभा और सभा-प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को प्रतिवादी बनाया ।

इस केस में माननीय न्यायाधीश श्री विनोदकुमार देश पाण्डेय ने दोनों पक्षों द्वारा प्रस्तुत तथ्यों को गंभीरता पूर्वक सुनने के बाद सत्यासत्य की घोषणा करते हुए ३० मार्च १९९० के अपने आदेश में इस स्थगन आदेश को रद्द करते हुए तथा याचिका को खारिज करते हुए कुछ मुख्य टिप्पणियां इस प्रकार कीं।

१—दोनों पक्षों के तथ्यों से ऐसा लगता है कि वादी आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्रप्रदेश के प्रधान तथा प्रतिवादी नं० २ "स्वामी आनन्दबोध सरस्वती" के बीच मुकाबले की भावना हैं। जब कि ऐसा कोई भी तथ्य सामने नहीं आया जिससे यह साबित होता हो कि प्रतिवादी नं० २ "स्वामी आनन्दबोध सरस्वती" सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद के लिए योग्य नहीं हैं। (शेष पृष्ठ १२ पर)

शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द जी गिरफ्तार

दिल्ली, १ मई। अखिल भारतीय सनातन धर्म सभा के तत्वावधान में अहिंसा भवन, दिल्ली में राष्ट्रवादी नेताओ की एक आवश्यक बैठक आज स्वामी आनन्द बोध सरस्वती की अध्यक्षता मे हुई। इस बैठक मे महामण्डलेश्वर स्वामी गणेशानन्द, वीर अर्जुन के सम्पादक अनिल नरेन्द्र, श्री रमाकान्त गोस्वामी, प्रसिद्ध सनातनी नेता श्री प्रेमचन्द गुप्ता, बालकृष्ण धर्माधिकार आदि अनेक महानुभाव उपस्थित थे। बैठक मे जगद्गुरु शंकराचार्य की गिरफ्तारी पर तीव्र विरोध प्रकट करते हुए कहा गया कि यह पहला अवसर है जब सरकार ने बहुमत की भावनाओ का अनादर करते हुए शंकराचार्य को गिरफ्तार किया है। सरकार ने उनकी गिरफ्तारी करके जन-भावनाओ के साथ खिलवाड़ की है।

बैठक मे एक प्रस्ताव के द्वारा सरकार से माग की गई कि—श्री शंकराचार्य जी को तुरन्त रिहा किया जावे और रामजन्म भूमि पर मन्दिर निर्माण के कार्य को न रोका जावे।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आर्य समाज की ओर से उक्त बैठक मे राष्ट्रवादी जनता को पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।

पद्मभूषण डा० दुःखनराम अब नहीं रहे



दिल्ली १० अप्रैल। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व प्रधान और भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद के नेत्र चिकित्सक डा० दुःखनराम जी का लम्बी बीमारी के पश्चात् ९१ वर्ष की आयु में हृदयगति रुक जाने से २६ अप्रैल को पटना में देहान्त हो गया है।

उनके निधन पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने गहरा दुःख प्रकट करते हुए कहा कि डा० दुःखनराम जी आर्य समाज के वरिष्ठ और अनुभवी नेता थे। वह लगभग ४ साल तक सार्वदेशिक सभा के प्रधान रहे और बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा के दो वर्षों तक प्रधान रहे थे। वह नेत्र चिकित्सक ही नहीं अपितु प्रबल समाज सुधारक भी थे। उनके प्रति पूरे बिहार में बड़ी श्रद्धा व आदर लोगों में था। वह अनेक संस्थाओं से सम्बद्ध थे। आप पटना विश्व विद्यालय के उपकुलपति रहे। उनके निधन से आर्य समाज की ही नही अपितु राष्ट्र की अपूर्णीय क्षति हुई है।

शोक प्रस्ताव के साथ ही सार्वदेशिक सभा का कार्यालय दिवंगत के सम्मान में बन्द कर दिया गया।

सम्पादक—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

विमल खालसा ने शपथ ली

मान निराशा के गर्त में : खुदा खैर करे !

बरजिन्दरसिंह सम्पादक "दैनिक अजीत"

विमल खालसा ने अन्ततः लोकसभा सदस्य के रूपमें शपथ ग्रहण कर ही ली। मगर हमारी समझ से यह बात अभी भी बाहर है कि अगर उन्होंने अन्त में यही कुछ करना था तो फिर इतने माह की प्रतीक्षा क्यों की गई ?

हमारी सूचना के अनुसार गत वर्ष २१ दिसम्बर को विमल खालसा अपने पार्टी सदस्यों राजदेवसिंह, बीबी राजिन्द्र कौर बुलारा, बाबा सुच्चासिंह मलोआ तथा स्व० जत्थेदार जगदेवसिंह खुड़ियां के साथ संसद भवन में शपथ ग्रहण करने के लिये गई थीं मगर ध्यानसिंह मंड के साथ भवन के बाहर लम्बी किरपान को अन्दर ले जाने के मामले पर बहस तथा विवाद के कारण ही विमल खालसा भी बिना शपथ ग्रहण किये ही बाहर आ गई थी। उस समय तो उन्होंने अत्यन्त जोश के साथ यह बयान दिया था कि वह भी उस समय तक सांसद के रूप में शपथ नहीं लेगी, जब तक उनके दल के अन्य सदस्यो को बड़ी किरपान के साथ अन्दर जाने की आज्ञा नही दे दी जाती। इसलिए क्योंकि यह उनका संवैधानिक अधिकार है तथा संविधान की धारा २५ के अन्तर्गत संसद में किरपान सहित आ सकते हैं। मगर संविधान की इस धारा में किरपान की लम्बाई से सम्बन्धित कुछ भी स्पष्ट नहीं है।

पार्टी के अध्यक्ष श्री सिमरनजीतसिंह मान ने भी पहले यही रवैया अपनाया हुआ था मगर उसी दिन अन्य सदस्यों ने तो सांसद रूप में शपथ ग्रहण कर ली थी। इन सदस्यों के नाम ऊपर बताए जा चुके हैं। पार्टी के कुछ सदस्यों द्वारा शपथ ग्रहण कर लिये जाने तथा पार्टी अध्यक्ष सहित कुछ अन्य सदस्यों द्वारा शपथ ग्रहण न किये जाने के कदमने पार्टी की स्थिति बहुत अजीब सी बना दी थी।

उल्लेखनीय है कि ध्यान सिंह मंड फिरोजपुर चुनाव क्षेत्र से लोकसभा के लिये निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में चुनाव जीत गये थे तथा अपनी विजय के पश्चात् ही उन्होंने अकाली दल मान में शामिल होने की घोषणा कर दी थी। बाद में जत्थेदार खुड़ियां रहस्यपूर्ण परिस्थितियों में मारे गये। राजदेव सिंह ने मान तथा उनके साथियों के विरुद्ध इस मामले पर अलग स्टैंड लिया था तथा इससे सम्बन्धित बयान भी दिये थे।

अकाली दल मान की सहायता से ही एक नजरबन्द के रूप में विजयी अतिन्दर पालसिंह ने भी सांसद के रूप में शपथ ग्रहण कर ली है. चाहे अभी तक भी वह नजरबन्द ही है। समाचार पत्रों में अपने एक साक्षात्कार में उन्होंने कहा था एक बात तो हमें समझ लेनी चाहिये कि 'किरपान' तथा 'श्री साहिब' में बुनियादी तथा सैद्धान्तिक अन्तर है तथा इनकी व्याख्या सिख रहत मर्यादा में की गई है। जहां तक मुझे मालूम है जिन सदस्यों ने शपथ ग्रहण की है, उन्होने किरपान के साथ ही शपथ ग्रहण की है। अगर उन्हें किरपान पहन कर शपथ ग्रहण नहीं करने दी गई होती तो फिर यह स्टैंड लेना उचित है, क्योंकि किरपान धारण करना सिखों का धार्मिक, जन्मसिद्ध तथा संवैधानिक अधिकार है तथा मैं यह कभी भी सहन नही कर सकता हूँ कि मुझे अथवा किसी भी सिख को उसके अंग किरपान से वंचित कर दिया जाये। मगर इसके साथ ही मैं यह भी स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि गुमराह करने वाली बातों द्वारा भ्रामक विवाद उत्पन्न करने से हमें संकोच करना चाहिये क्योंकि अगर कोई बात स्पष्ट है तो वह गुरु हुक्म है तथा उस बारे में कोई भी भ्रम उत्पन्न नहीं किया जाना चाहिये। गुरु हुक्म पर बहस, विचार अथवा भ्रम की स्थिति उत्पन्न करने के लिये सिखों में कोई भी स्थान नहीं है। यहां प्रत्येक बात पूर्णतः स्पष्ट है।"

चाहे विमल खालसा ने शपथ ग्रहण करते समय यह कहा है कि पार्टी प्रधान सिमरनजीत सिंह मान को भी सदन में शपथ ग्रहण करने की आज्ञा दी जाये, साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि संविधान में प्रत्येक सिख को किरपान रखने का अधिकार दिया गया है। श्री मान ने भी इस सम्बन्ध में स्पीकर को दो बार लिखा है। विमल खालसा ने आशा प्रकट की है कि श्री मान को इस सम्बन्ध में आज्ञा प्रदान कर दी जायेगी। विमल खालसा अब चाहे कोई भी बयान दे, उन्हें पंजाब की जनता को यह स्पष्टीकरण अवश्य ही देना होगा कि अब वह किरपान के मसले पर अपने पहले स्टैंड से पीछे क्यों हट गई हैं ? क्या सदन में बड़ी किरपान ले जाने का मसला हल हो गया है अथवा शपथ ग्रहण का आदेश उनकी पार्टी द्वारा ही उन्हें दिया गया है ? यह उन्हें भी पता है तथा जनता को भी यह जानकारी है कि न तो किरपान का मामला ही हल हुआ है तथा न ही उन्हें ऐसा करने का कोई निर्देश भी दिया गया है। अगर ऐसा हुआ भी होता तो श्री मान उनसे इतने नाराज नजर आते ?

श्री मान वास्तव ही में विमल खालसा से नाराज हैं। उन्होंने कहा है कि विमल खालसा ने उनके आदेशों का उल्लंघन किया तथा पार्टी का अनुशासन भंग कर दिया। उन्होंने यह भी कहा कि विमल खालसा ने पहले शपथ ग्रहण न करने के सम्बन्ध में कहा था कि श्री साहिब (किरपान) तथा पन्थ सीटों से अधिक प्यारे हैं। मगर उन्होंने अब खामोशी से जो शपथ ग्रहण कर ली है, उसकी प्रतिक्रिया भी बहुत बड़ी होगी। श्री मान ने यह कहा है कि विमल खालसा ने दिल्ली जाने से पूर्व पार्टी अध्यक्ष के साथ बात-चीत नहीं की।

श्री मान अत्यन्त नाराज तथा निराश नजर आ रहे हैं। समाचार-पत्र की एक रिपोर्ट के अनुसार उन्होंने भावुक होते हुये कहा; "पन्थ अब मुझे आदेश दें कि मैं कौन-सा रास्ता अपनाऊं। कुर्सियों के लालची अब मुझे छोड़ कर भाग गये हैं। मैं हार चुका हूँ भगवान के वास्ते पंथ मुझे बताये कि मैं कौन-से कुयें में जाऊं।"

श्री मान ने अपनी पार्टी तथा इसके समर्थन से विजयी सांसदों की चण्डीगढ़ में गत दिनों एक बैठक बुलाई थी मगर ध्यान सिंह मंड को छोड़ वहां कोई भी नहीं पहुंचा। इस सारी स्थिति को देखते हुये हम श्री मान के साथ सहानुभूति प्रकट कर सकते हैं।

हम यह अत्यन्त खेद सहित लिख रहे हैं कि आज यह बात समूची अकाली राजनीति की त्रासदी बनी दिखाई दे रही है कि असंख्य मामलों के प्रति असंख्य अकाली नेताओं की पहुंच भावुकता के स्तर तक ही सीमित रहती है। वह किसी भी मामले पर अपनी पार्टी के बहुत से कार्यकर्ताओं को विश्वास में लेकर तथा बहुत सोच-विचार के पश्चात् कोई दूरदर्शितापूर्ण स्टैंड नहीं लेते। जो भी दुखांत घटित हुआ है तथा हो रहा है, अकालियों ने उसके बराबर का कद तो क्या अपनाना है, बल्कि वह उसके मुकाबले बहुत ही बौने नजर आते हैं। शायद इनके बराबर हो सकना इनके बस की बात नहीं है।

सम्पादकीय—

सरकार और समस्याएं

बहुमत हिन्दू समाज का जिसके बलबूते पर सरकार बनती है वही जनता आज सुरक्षा की मांग करे तो रक्षा के अभाव में मौत के मुंह में समा रही है।

आजादी के बाद इस देश की जनता को विश्वास था कि अब कानून से और बहुमत के बल से शासन प्रजातन्त्र के नाम पर हिन्दू का होगा, अल्पसंख्यक को संरक्षण मिलेगा।

भारतीय हिन्दू जन मानस के साथ विश्वासघात किया पं० नेहरू ने किया, श्रीमती इन्दिरा गांधी और श्री मुरार जी भाई ने किया। राजीव गांधी ने किया और अब वर्तमान सरकार भी कर रही है।

पहले वोट देना फिर विश्वासघात भोगना। सम्भवत यही भारतीय जनता की नियति बन चुकी है।

भारत का इतिहास साक्षी है कि इतनी दुर्बल सरकार कभी नहीं बनी। इस सरकार ने देश की स्थिति बद से बदतर कर दी। वी० पी० सरकार ने सत्ता सम्भालते ही कश्मीर समस्या खड़ी कर दी। उग्रवादियों के सामने घुटने टेकें। रुबिया कांड को लेकर पांच खूंखार आतंकवादियों को मुक्त करा दिया। फिर मीर मुस्तफा की हत्या और उसके बाद कश्मीर विश्व विद्यालय के कुलपति तथा एच०एम०टी० के महाप्रबन्धक की हत्या। आज कश्मीर मे लाखो हिन्दू अपने सामान को छोड़कर सपरिवार दर दर की ठोकरें खाता फिर रहा है। लाखों व बंगलादेशी मुसलमानो को पाला जा रहा है पर इस बेचारे पंजाबी व कश्मीरी ? हिन्दू सिख भी को कोई पूछ नहीं।

महम काण्ड मे निर्दोष व्यक्तियो को मौत की गोद सुला दिया गया औरतो की मांग का सिन्दूर पोंछा गया, बेगुनाहो के खून से होली खेली गई। प्रजातन्त्र को कुचलकर रख दिया। इसी सरकार ने रामजन्मभूमि का विवाद खड़ा कर दिया। बजट जो पास किया उसमें हर चीज महंगी हो गई।

रामनवमी के जलूस पर बटाला मे बम फेंककर बेकसूर हिन्दुओ को मौत के मुंह मे डाल दिया।

देशद्रोही आतंकवादियों को कुचलने के स्थान पर बोफोर्स, पनडुब्बी हवाई जहाज आदि मुद्दो को उठाकर जनता के जानमाल के साथ खिलवाड़ कर रही है।

वर्तमान सरकार पिछली सरकार को दोषी ठहरा रही है और अपने को निर्दोष साबित कर बचने की कोशिश कर रही है। लेकिन सच्चाई जो है वह जनता की नजरो से छिपी नहीं है। प्रतिदिन हत्याएं, फिरौती, अपहरण सीमा उल्लंघन प्रतिदिन की आम बात हो गई है। बाहरी ताकत ने अपनी पैंठ इतनी सुदृढ़ कर ली है जब तक सैनिक कार्यवाही नहीं की जाती, इस संकट काल से छुटकारा पाना एक टेढ़ी खीर है।

सरकार भी एक रटारटाया बयान जारी देती है कि मुंह तोड़ जवाब दिया जायगा, बस !

कोई समय था जब अकाली नेता यह कहा करते थे कि पंजाब मे शान्ति का एक ही रास्ता है कि वहां दरबारा सिंह की सरकार को हटाकर अकाली सरकार कायम की जाय। जब दरबारा सिंह हटा दिए गए फिर अकाली सरकार ने भी पैर मार कर देख लिये। परन्तु पंजाब मे आतंकवाद दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही गया लोक सभा चुनाव से पूर्व यह कहा जाता था कि राजीव गांधी जानबूझकर पंजाब समस्या सुलझाना नही चाहते तथा इसे लटकाए रखना चाहते हैं।

नेशनल फ्रन्ट के नेता खुले आम कहते थे कि जब राजीव गांधी सत्ता से हट जायेंगे, तो पंजाब समस्या स्वत हल हो जाएगी।

वोट बटोरने की राजनीति मे जनता दल के नेता तो यहां तक कहा करते थे। कि उनकी सरकार बनने पर वे पंजाब समस्या को प्राथमिकता देंगे तथा इसे शीघ्र ही निपटा देंगे।

राजीव गांधी व उनकी पार्टी अब सरकार मे नहीं है फिर पंजाब मे तथा कश्मीर और भारत के विभिन्न भागो में ट्रेन-बस अड्डो में बमों के हमलो की पिछले तीन मासो मे वृद्धि क्यो हुई ?

अब जनता दल और बी० जे० पी० के नेताओ ने भाषण देना प्रारम्भ कर दिया। कि इन्दिरा के शासन मे उलझी समस्या दो दिन के शासन में नहीं सुलझ सकती है। सत्ता से बाहर बैठा व्यक्ति उठे हर समस्या का समाधान आसान लगता है पर असफलता पाने पर असमर्थता छिपाने के लिए वे बहाने बाजी प्रारम्भ कर देते हैं।

देश में शासको को चाहिए कि स्वेच्छा से त्याग-पत्र दे तथा कायरता वाली नीति को छोड़कर दृढ़ता पूर्वक देशद्रोही आतंकवादियो को सख्ती से कुचल दें।

स्वतन्त्रता के बाद की गलत नीतियो का ही दुष्परिणाम है आज लोगों को अपने घरों को छोड़कर दूसरे स्थानो पर जाने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है।

प्यारा भारत आज आग की लपटो में झुलस रहा है, वोटो की स्वार्थ-परक राजनीति को न त्यागा गया तो देश अन्धकार में से कोई बचा नहीं सकता।

समय को पहचान कर समय पर जो कार्य किया जाय। यही बुद्धिमानी है तोप पनडुब्बी एयरबस के दस्तावेज कहीं भागे नहीं जा रहे हैं परन्तु आतंकवादी गतिविधियो का शिकार हुआ। कि वह कायरता पूर्ण पृथकतावादी नीति को छोड़कर देशद्रोही शक्तियो को सख्ती से कुचल दे। साथ ही देश की कानून व्यवस्था को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान करें।

काश ! सरकार ने दृढ़ता का परिचय न देकर यदि ओछी साम्प्रदायिक शक्तियो के सामने घुटने टेक नीति का सहारा लिया और असमय मे मौत के मुंह मे समाये निरीह प्राणियो की तड़पती आत्मायें तथा भारत की विवेकशील जनता यदि पीछे सरकारी तन्त्र को उखाड़ फेंकने में समर्थ रही तो वर्तमान जनता दल सरकार को भी क्षमा नहीं करेगी।

अत जनता से विश्वासघात असह्य होगा।

पंजाब की भयानक स्थिति

अब ब्याह शादी भी आतंकवाद की छाया में

खबर मिली है कि पंजाब में आतंकवादी अब उन सिख परिवारो को भी धमकियां देने लगे हैं जो ब्याह शादी के अवसर पर हिन्दू परिवारों को आमन्त्रित करते हैं। प्रकाशित एक खबर मे अमृतसर की २-३ ऐसी घटनाओ का विवरण भी दिया है जहा सशस्त्र आतंकवादियो ने शादी वाले घरो मे घुस कर मेजबान को अपने हिन्दू मेहमानो को बाहर निकालने पर मजबूर किया। एक घटना में तो लड़की के मां बाप को बिना शादी की रस्मे पूरी किए ही उसे वर के साथ भेजने पर मजबूर किया गया।

(दैनिक वीर प्रताप १८ फरवरी १९९०)

२—दूसरी खबर के अनुसार जालन्धर शहर के प्रतिष्ठित डाक्टरो को भी आतंकवादियो की धमकियां मिलने लगी हैं। उन्हें धमकी भरे पत्र भेजकर बहुत बड़ी बड़ी रकमे फिरौती के रूप में मांगी गई हैं। कुछ ने तो यह रकमें आतंकवादियो को दे दी हैं और कुछ शहर छोड़कर दूसरी जगहो पर बसने के लिए चले गए हैं। बाकी लोग भी दूसरी जगह जाने पर विचार कर रहे हैं। एक हिन्दू डाक्टर को चेतावनी दी गई है कि वह किसी भी बीमार हिन्दू का इलाज न करें। यदि वह ऐसा न करेगा तो उसे गम्भीर परिणाम भुगतने पड़ेंगे। (वीर प्रताप १६ फरवरी १९९०)

३—पता चला है कि पंजाब पुलिस के क्षेत्रीय अधिकारी गवर्नर द्वारा अपनायी गयी नई नीति के कारण बहुत हतोत्साह हैं। मुख्यत उनके इस बयान से कि वे पंजाब में पुलिस राज को समाप्त करने के लिए आए हैं।

(इंडियन एक्सप्रेस १५ फरवरी १९९०)।

अनुच्छेद ३७० को समाप्त करना जरूरी

संविधान निर्माता डा० अम्बेदकर और उनके साथी इस अनुच्छेद के विरुद्ध थे

जिन देश भक्तों, क्रान्तिकारियों और स्वतन्त्रता सेनानियों ने भारत की स्वतन्त्रता के लिए अपना सर्वस्व बलिदान किया, उनकी कल्पना के अखण्ड भारत का जम्मू कश्मीर एक अविभाज्य अंग था। देश के विभाजन के बाद पाकिस्तान बना तो वहां की सरकार की प्रेरणा से कबाइली लोगों ने कुछ सप्ताह बाद कश्मीर पर आक्रमण कर दिया, क्योंकि इस राज्य में मुसलमानों की बहुसंख्या थी अतः उसकी इसमें विशेष रुचि थी इधर कश्मीर के नेता शेख अब्दुल्ला भी यह चाहते थे कि यहां के हिन्दू राजा को हटाकर उसे मुस्लिम राज्य बना दिया जाये। इसी उद्देश्य के लिए उन्होंने १९३१ में मुस्लिम कान्फ्रेंस की स्थापना की थी और वह महाराजा हरिसिंह के विरुद्ध अपना आंदोलन चला रहे थे। इस धारणा में कोई तथ्य नहीं, जम्मू-कश्मीर के भारत के साथ विलय में शेख अब्दुल्ला का हाथ था। वह तो आखरी समय तक जिन्ना के साथ सौदेबाजी करते रहे। अक्तूबर १९४७ में उन्होंने जी गुलाम सादिक के नेतृत्व में एक शिष्टमण्डल श्री जिन्ना के पास लाहौर भेजा और उनसे कहा कि उनकी मुस्लिम कान्फ्रेंस पाकिस्तान में विलय के पक्ष में है। परन्तु वे चाहते हैं कि श्री जिन्ना उन्हें यह आश्वासन दें कि विलय के बाद जम्मू-कश्मीर का शासन शेख अब्दुल्ला और उनके साथियों को सौंप दिया जाएगा। किन्तु श्री जिन्ना ने इस तरह का आश्वासन देने से साफ इंकार कर दिया।

इसके बाद भी शेख अब्दुल्ला कश्मीर के भारत में विलय के लिए तैयार नहीं थे। वे कश्मीर को स्वतन्त्र रखना चाहते थे। किन्तु २१ अक्तूबर को पाकिस्तान के हमले ने उनके सपने को मिट्टी में मिला दिया। वह अपने परिवार सहित भागकर अपने साले के पास इन्दौर चले गए और बाद में दिल्ली आए। पाकिस्तानी हमलावरों से कश्मीर को बचाने में शेख का कोई योगदान नहीं था। जिस क्षेत्र में पाक हमलावर आते रहे शेख के साथी पाकिस्तान जिन्दाबाद का नारा लगाकर उनके साथ मिलते रहे।

विलय पत्र पर हस्ताक्षर होने के बाद जब भारत की सेनाएं श्रीनगर पहुंच गईं तब शेख वहां के प्रशासक बनकर आ गये। यह पं० नेहरू की मित्रता का उन्हें बहुत बड़ा उपहार था। उस समय कोई शर्त नहीं लगाई गई थी। बाद में जब पं० नेहरू कश्मीर के मामले को संयुक्त राष्ट्र संघ में ले गए और जनमत कराने का वायदा कर दिया तब शेख अब्दुल्ला फिर उभरने लगे। उन्होंने जनमत संग्रह की स्थिति में कश्मीरी मुसलमानों का समर्थन दिलाने के लिए कीमत मांगनी आरम्भ कर दी। भारत के संविधान में अनुच्छेद ३७० जोड़ना उसी का परिणाम है।

डा० अम्बेदकर द्वारा विरोध

जम्मू कश्मीर को विशेष दर्जा देने वाले अनुच्छेद को तैयार किया गया और स्वयं उसे लेकर शेख अब्दुल्ला पं० नेहरू के पास गए। उन्हें श्री नेहरू ने विधि मन्त्री और प्रारूप समिति के अध्यक्ष डा० अम्बेदकर के पास जाने को कहा। श्री अम्बेदकर ने शेख को कहा—'आप चाहते हैं कि भारत कश्मीर की रक्षा करे; सड़कें बनाए, लोगों को भोजन दे, परन्तु कश्मीर पर उसका अन्य कोई अधिकार न हो। यह बात मैं कदापि नहीं मान सकता। यह उत्तर लेकर शेख फिर नेहरू के पास गए। अन्त में श्री नेहरू ने शेख अब्दुल्ला और उनके मुस्लिम साथियों की साम्प्रदायिक भावना को तुष्ट करने के लिए धारा ३७० को संविधान सभा में अस्थायी और भविष्य में बदले जाने वाले अनुच्छेद के शीर्षक के अन्तर्गत रखा। इसके सन्दर्भ में नेहरू ने यह स्पष्ट कहा था कि चिन्ता की कोई बात नहीं यह अनुच्छेद घिसते-घिसते घिस जाएगा। इस अनुच्छेद से जम्मू कश्मीर राज्य भारत से जुड़ा भी रहता है और बहुत हद तक अलग भी रहता है।

भारतीय नेताओं की ओर से यह बात स्पष्ट कर दी गई थी कि जहां तक राज्य के भारतीय संघ में शामिल होने का सम्बन्ध है, वह अन्य राज्यों की तरह बिना शर्त और पूर्ण था। संविधान के इस अनुच्छेद ३७० की जो व्याख्या की गई है, उसमें यही कहा गया कि समय आने पर इसे समाप्त कर दिया जाएगा। श्री नेहरू ने तो यहां तक कहा था कि कोई चिन्ता की बात नहीं यह अनुच्छेद घिसते घिसते घिस जाएगा। मगर तथ्य यह है कि ४१ वर्ष व्यतीत हो जाने के बावजूद भी आज वह उसी तरह कायम है। आज जब भी कोई अवसर आता है तो घोषणा हो जाती है कि इसे हाथ नहीं लगाया।"\

संविधान सभा

कुछ लोग कहते हैं कि अनुच्छेद ३७० जम्मू कश्मीर की विधान सभा ने स्वीकृत किया था वही इसे हटा सकती है, किन्तु वह संविधान सभा १९५६ में समाप्त हो चुकी है। इस कारण इसे बदला नहीं जा सकता। किन्तु दूसरी धारणा यह है कि इसे भारत की संविधान सभा ने स्वीकार किया था तब शर्त यह थी कि इसे बदला जा सकता है।

अनुच्छेद ३७० कोई मूल अधिकार नहीं

जम्मू काश्मीर पर लागू होने वाला अस्थायी अनुच्छेद ३७० कोई मूल अधिकार नहीं है। अतः उसे समाप्त करने में संसद पूर्ण रूप से सक्षम है। इस अनुच्छेद के समाप्त होते ही उन लोगों की जबान बन्द होगी, जो आज यह प्रचार कर रहे हैं कि जम्मू काश्मीर भारत का अभिन्न अंग नहीं है। ऐसा कहते हुए वे भारत के विरुद्ध घृणा व अलगाववाद की भावना को फैला रहे हैं।

बहे पिघल कर पीर

ऐसा तीर लगा जालिम का गया कलेजा चीर।
पल पल इन पगले नयनों से बहे पिघल कर पीर॥
उजड़ा नूर सफर साथ में लुट सुहाग सिंगार।
उजड़ गई जीवन की जोती उजड़ गया संसार॥
जैसे नदी बिना पानी के जैसे जल बिन मीन।
जैसे पंछी बिना पंख के नारी पुरुष विहीन॥
विरह वेदना दुनियां के दुःख विधवा की तकदीर—पल पल।
उजड़े माँ की कोख रात दिन छिने बहन से भाई।
बच्चे रोज अनाथ हो रहे जो कुछ है दुःखदायी॥
युवा पुत्र की चिता फूंकते प्रतिदिन बूढ़े बाप।
हे भगवान उजागर हो गये कौन जन्म के पाप॥
पड़ा न्याय के मुंह पर ताला पैरों में जंजीर—पल पल।
मेरे मीत कायदा जोली जोली है कानून।
रोज नालियों में बहता है इंसानों का खून॥
राम कसम अब आम हो गये जीवन भर संहार।
ऊंचे ही हो रहे निरन्तर लाशों के अम्बार॥
सच तो यह है आज धर्म की बिगड़ रही तस्वीर—पल पल।
जो समर्थ हैं आगे आएं इनको गले लगाएं।
इन आंखों के आंसू पोछें इनका दर्द बटाएं॥
जागो महीधारी जागो काटो कष्ट कलेश।
बचा सको तो इसे बचा लो टूट रहा है देश॥
कर लो कोई यत्न समय से कर लो कुछ तदबीर।
पल पल इन पगले नयनों से बहे पिघल कर पीर॥

—विनय विनोद

हिन्दी के विकास में मुसलमानों का योगदान

प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य, अध्यक्ष स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग दयालसिंह कालेज, करनाल (हरियाणा)

हिन्दी भारत की सांस्कृतिक एकता की कड़ी है। यह भारत की पुरातन संस्कृति की वाहिका है। इसके विकास में विभिन्न धर्मों, जातियों एवं सम्प्रदायों ने योगदान दिया है। एक ओर सिद्धों, नाथों और जैनों ने इसे अपनाया तो दूसरी ओर शैव, शाक्त, वैष्णव मतावलम्बी भी इसी के द्वारा अपना प्रचार करते थे। हिन्दू सम्प्रदायों के साथ साथ मुसलमानों ने भी इसे अपनाया। हिन्दी साहित्य के प्रारम्भिक युग में अमीर खुसरो जैसे मुस्लिम कवि इसके उदाहरण हैं जिनकी रचनायें खड़ी बोली हिन्दी का प्रारम्भिक नमूना मानी जाती है। हिन्दुओं के साथ मुसलमानों ने भी इसके विकास में बराबर सहयोग दिया है।

हिन्दी का सम्बन्ध केवल हिन्दुओं से जोड़ना ठीक नहीं। इतिहासकारों के अनुसार हिन्दी साहित्य का बृहद इतिहास' भाग दो सम्वत् २०२२ विक्रमी नागरी प्रचारिणी सभा, काशी पृष्ठ १८-२२ के अनुसार हिन्दू हिन्दी तथा हिन्द शब्द सिंधु, सिंधी तथा सिंध के फारसी रूप हैं। ईरान तथा फारस के निवासी मुसलमान सिंधु नदी के तट प्रदेश को हिन्द तथा वहां के निवासियों को हिन्दू कहते थे तथा उनकी भाषा हिन्दी कहलाई। भाषा के अर्थ में हिन्दी शब्द मुसलमानों की देन है। अतः हिन्दी को केवल हिन्दुओं तक सीमित करना उचित नहीं।

भारत में मुस्लिम साम्राज्य की स्थापना के बाद मुस्लिम शासकों को जनता से सम्पर्क करने के लिए एक ऐसी भाषा की आवश्यकता थी जो सर्व-साधारण में समझी जा सके। इसके लिए उन्होंने दिल्ली के आस पास की खड़ी बोली को अपनाया। मुस्लिम सन्तों और फकीरों ने भी धर्म प्रचार के लिए इसे अपनाया। मुस्लिम संस्कृति और राज्य विस्तार के साथ खड़ी बोली भी देश के विभिन्न भागों में फैलती चली गई।

खड़ी बोली के राष्ट्रव्यापी प्रचार एवं प्रसार में दिल्ली के मुस्लिम साम्राज्य की भूमिका महत्वपूर्ण है। खिलजी वंश के शासनकाल में उत्तर-भारत में बंगाल तक का क्षेत्र इस साम्राज्य के अधीन था और उत्तर भारत के नगरों और कस्बों में, सैनिक छावनियों और छोटे-बड़े प्रशासन केन्द्रों की सम्पर्क भाषा खड़ी बोली सीखने वाले हिन्दू और मुस्लिम कर्मचारी, सैनिक तथा व्यापारी बन गए। उनका आवागमन कई शताब्दियों तक चलता रहा। इससे हिन्दी उत्तर भारत के नगरों और कस्बों की सम्पर्क भाषा बन गई। देखे विश्व हिन्दी' प्रकाशक तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन, नई दिल्ली अक्तूबर १९८३ पृ० १२-२१।

जब मुस्लिम साम्राज्य का विस्तार दक्षिण भारत में हुआ तब उसके साथ हिन्दी का प्रसार भी आन्ध्र, कर्नाटक आदि में हुआ। अलाउद्दीन खिलजी ने २९५ ई० में दक्षिण भारत के देवगिरी पर आक्रमण किया। बाद के आक्रमणों द्वारा उसके शासनकाल में विन्ध्याचल से लेकर दक्षिण समुद्र तट तक का प्रदेश दिल्ली के अधीन हो गया। बाद में १८२७ई० में मुहम्मद तुगलक ने अपनी राजधानी दिल्लीसे देवगिरी को बनाया। इस कारण बहुत सारे हिन्दी भाषी लोग दक्षिण में जा पहुंचे। और वे वहीं रहने लगे। इससे भी पूर्व अलाउद्दीन के शासनकाल में ही खड़ी बोली बोलने वाले हिन्दू और मुस्लिम कर्मचारी, सैनिक तथा व्यापारी दक्षिण भारत में फैल चुके थे। बाद में अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुंडा और बीदर में निजामशाही, आदिल-शाही, कुतुबशाही आदि स्वतन्त्र राज्यों की स्थापना हुई। उन्होंने न केवल इसे साहित्य की भाषा बनाया अपितु इसे राजकाज में भी स्थान दिया। वहाँ दक्खिनी हिन्दी में विपुल साहित्य लिखा गया। इसके अधिकांश लेखक मुसलमान थे। आज से ७०० वर्ष पूर्व दक्षिण में हिन्दी को राजभाषा का गौरव प्राप्त हो चुका था। इसका सम्पूर्ण श्रेय मुसलमान शासकों को जाता है।

नई खोजों के अनुसार उत्तर भारत में भी मुसलमानों के राजकाज में हिन्दी का प्रयोग होता रहा है। मोहम्मद गोरी ने अपने शासनकाल में जन-सम्पर्क के लिए हिन्दी तथा देवनागरी का प्रयोग किया। खिलजी वंश के शासन काल में अलाउद्दीन खिलजी ने राजकाज में हिन्दी तथा जनता में हिन्दी को अपनाया। तुगलक वंश में मोहम्मद तुगलक ने इस दिल्ली की भाषा को दक्षिण तक पहुंचा दिया जब वे अपनी राजधानी दिल्ली से देव-गिरी ले गए। लोदीवंश के शासकों ने भी भाषा सम्बन्धी नीति को अपने पूर्ववर्ती सम्राटों की तरह जारी रखा। शेरशाह सूरी ने १५ वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हिन्दी को अपने शासन में उचित स्थान दिया। अकबर के बाद जहांगीर, शाहजहां तथा औरंगजेब आदि ने हिन्दी के प्रति इतनी उदारता तो नहीं बरती किन्तु प्रशासन में हिन्दी का प्रयोग बराबर जारी रहा। प्रायः सभी मुगल सम्राटों के देशी रजवाड़ों के साथ सभी पत्राचार हिन्दी में पाए जाते हैं। फारसी केवल इन मुगल सम्राटों के परिवार उच्चाधिकारियों एवं मुसलमान प्रशासकों के साथ सम्पर्क मात्र की भाषा थी। देखे —१२ वीं सदी से राजकाज में हिन्दी, प्रकाशक—केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, सन् १९८० पृ० ३९-४१, ४३-४४ तथा ७५।

यह तो रही राजकाज, शासन तथा जन सम्पर्क की बात। शुद्ध साहि-त्यिक दृष्टि से भी देखें तो प्रत्येक काल में मुस्लिम कवियों और लेखकों का हिन्दी के प्रति योगदान रहा है। आदिकाल में खुसरो का नाम उल्लेखनीय है। अमीर खुसरो की हिन्दी को देखकर कोई यह नहीं कह सकता कि यह उस जमाने की खड़ी बोली हो सकती है—

(क) पान सड़ा क्यों ? घोड़ा अड़ा क्यों ?

(ख) गोरी सोवे सेज पर मुख पर डारे केश।
चल खुसरो घर आपने रैन भई चहुं देश॥

इसी काल में अब्दुर्रहमान ने 'सदेशरासक' लिखा यह उस युग की मुक्तकारी परम्परा में लिखा गया प्रतिनिधि विरह काव्य है। भक्ति काल हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग है। कबीर, सूर, तुलसी, मीरा आदि इसी युग की देन है। यह श्रेष्ठ भक्ति साहित्य मुस्लिम शासनकाल में लिखा गया। भक्ति के उद्गम और विकास के बारे में विद्वानों में मतभेद हो सकता है परन्तु उस युग के बारे में नहीं। जायसी ने फकीर होते हुए भी हिन्दी में अपनी रचनाएं लिखी। जायसी का 'पदमावत' हिन्दी का श्रेष्ठ प्रबन्ध काव्य माना जाता है। भक्तिकाल में जायसी ही पहले हिन्दी मुस्लिम कवि और महाकाव्यकार हैं। कालक्रमानुसार वे सूर और तुलसी से पहले आते हैं' जायसी की सूफी काव्यपरम्परा में मुल्ला दाऊद, शेख कुतुबन, मंझन, उस्मान, जलालुद्दीन, शेख नबी, कवि अहमद आदि आते हैं। इसी काल में कबीर, सन्तदादू जैसे सन्त तथा रहीम, रसखान जैसे भक्त कवियों का नाम उल्लेखनीय है। और रहीम तो अकबर दरबार के हिन्दी कवियों में सर्वश्रेष्ठ माने जाते हैं। रीतिकाल का सारा साहित्य दरबारी साहित्य है वह मुस्लिम दरबारों में लिखा गया। इस काल के मुस्लिम हिन्दी कवियों में आलम, शेख रंगरेजिन, ताज, रसलीन तथा सूफी कवियों में कासिम शाह, नूर मुहम्मद शेख निसार आदि के नाम उल्लेखनीय है सन्त कवियों में यारी साहिब, दरिया साहिब आदि के नाम आते हैं।

आधुनिक काल में दक्खिनी के ख्वाजा अहमद, शेख रहीम, कवि नसीर के अतिरिक्त इन्शा अल्ला खां, मुन्शी अजमेरी, नूरी बहर आदि के नाम आते हैं। जैसे दक्षिण भारत में मुसलमानों द्वारा फारसी लिपि में लिखित हिन्दी का प्रचुर साहित्य मिला है उसी प्रकार आधुनिक काल में उर्दू। फारसी लिपि में हिन्दी का विपुल साहित्य मिलता है। इस सन्दर्भ में नागरी प्रचारिणी सभा काशी द्वारा प्रकाशित 'हिन्दी साहित्य का बृहद् साहित्य' भाग १४, (सं० २०२७ विक्रमी) पृ० ९५१ ९३७ पर १९६१ तक के उर्दू लिपि में लिखित हिन्दी साहित्य का विस्तृत विवरण दिया गया है। इसमें मुस्लिम लेखकों के साथ हिन्दू लेखकों के नाम भी हैं। वैसे भी पिछले ६० ७० वर्षों में प्रायः सभी महत्वपूर्ण उर्दू कवि और पत्रकारों की रचनाएं देवनागरी में उपलब्ध हैं। इनमें कुछ साहित्य अकादमी ने प्रकाशित की है तो अन्य नेशनल बुक ट्रस्ट ने प्रकाशित की हैं। निजी प्रकाशकों ने भी कुछ

बलात्कार से बिलखती मानवी संस्कृति

—संयोगानन्द, दयानन्द मठ दीनानगर (पंजाब)

परमपिता परमात्मा की इस सृष्टि में सृष्टि के आदिकाल से लेकर आज तक नाना प्रकार की संस्कृतियों का प्रादुर्भाव हुआ। कालखण्ड के अनुसार उनका आविर्भाव और तिरोभाव होता रहा है, या और यावच्चन्द्र दिवाकरौ होता रहेगा। जब से मानवता ने अपनी आंखें खोली, कानों से सुनना प्रारम्भ किया तब से ही देवासुर संग्राम की बात यह देखती और सुनती चली आ रही है। उत्थान एवं पतन की ऊंचाईयों एवं गहराईयों से यह लम्बे दिनों से बेबस और बेचैन है। इसकी बेचैनी को देख आज कोई भी मानवी मस्तिष्क यह सोचने के लिए बाध्य दिखाई पड़ रहा है कि आखिर मानवता के इस महा विनाश का कारण क्या है और इसका समुचित निराकरण क्या हो सकता है। कौन सी ऐसी खामियां हैं जिसके कारण हम मात्र आकृति से मानव हैं पर हमारी सारी आन्तरिक एवं बाह्य वृत्तियां पिशाचों की हो गयी हैं। जिस स्थिति विशेष को देख सुनकर इस आधुनिक युग का प्रत्येक मानवी मस्तिष्क त्रस्त और भयभीत है जब हम अपनी संस्कृति एवं सभ्यता की दुहाई आये प्रत्येक दिन दिया करते तथा अपनी प्रार्थना सभाओं में 'सर्वभूतानि मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे' आदि कितनी ही ऊंची और सार्वभौमिक बातें न जाने कितने दिनों से दुहराते आ रहे हैं। सृष्टि एवं विनाश के सार्वभौमिक नियम से अनुबन्धित मानवीय मस्तिष्क यह मानने के लिए क्रमशः तैयार हो रही है कि मानवीय संस्कृति एवं सभ्यता की जो ये अमरलता है। मानवी काया जिस लता से सदैव 'असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्मामृतं गमय' जैसी उदात्त विचार धारायें प्रस्फुटित होती रही हैं शायद ये बातें अनहोनी और गलत हैं। विपरीत परिस्थितियों की आकुलता हमें यह सोचने को बाध्य कर रही है कि मानवी मस्तिष्क का ही विकसित एवं विशेष रूप देवत्व की प्राप्ति करा देती है ये बातें गलत और निराधार है। आज के १०० में से ९९ प्रतिशत लोग यह कहने के लिए बिल्कुल तैयार बैठे हैं कि धर्म ईश्वर की बातें सचमुच हमें कोई स्वस्थ एवं प्रशस्त मार्ग दर्शन नहीं दे सकता चाहे वह रामायण का विभीषण ही या महाभारत का या उसका। वेद, उपनिषद, गीता, रामायण, कुरान, बाईबिल एवं पुराणों के माध्यम से हम सचमुच कोई मुक्ता प्राप्त नहीं कर सकते शायद इस मत से उपरोक्त सारी धार्मिक परम्परायें हमें दिग्भ्रमित कर रही हैं कि तुम्हारी ही अन्तर चेतना में एक अत्यन्त ही निर्मल धवल और उज्ज्वल प्रकाश है जिस प्रकाश को अगर तुम समझ लो तो अपने साथ-साथ सम्पूर्ण मानव समाज के लिए तुम प्रकाश स्तम्भ बन सकते हो और किसी भारतीय महामनस्वी की ये पंक्तियां सदा के लिए सार्थक हो उठें कि—

> यह नीड़ मनोहर कृत्यों का,
>
> यह विश्व कर्म रंगस्थल है।
>
> है परम्परा लग रही यहां
>
> ठहरा जिसमें जितना बल है॥

परन्तु हम आज की मानवीय व्यवस्था में अपने आप को बिल्कुल ही निर्बल और निरुपाय पा रहे हैं भाषावाद, प्रान्तवाद, जातिवाद की भीषण ज्वाला से मानवता विदग्ध हो चित्कार कर रही है। धर्म, राजनीति, शिक्षा चिकित्सा एवं न्यायादि की सारी व्यवस्थायें अस्वस्थ मानवता के साथ एक महाभौतिक अस्वस्थ एवं अमानवीय समझौता सा हो गया है। जिस समझौते के चलते ही आज हमारी सारी मानवीय व्यवस्था चरमरा उठी है। हत्या, लूट, बलात्कार और मानवी की भीषण पैशाचिकता से हम घिरते चले जा रहे हैं और इन सारी स्थितियों को देख हमारी अन्तरात्मा मानों यह पुकार पुकार कर कह रही है कि यह धरती अभी मनुष्यों के लिये नहीं मात्र पिशाचों के लिये है। दैवी प्रखरता एवं उज्ज्वलता की बात अब स्वप्न और आकाश कुसुम की बातें मानी जाने लगी हैं। निराशा का घना अन्धकार सम्पूर्ण विश्व में छाया हुआ है सभी एक दूसरे की ओर व्यथित नेत्रों से देख रहे हैं कि क्या सचमुच मानवता विश्व से विदा होकर रहेगी? असुरों का अम्बार क्या सचमुच मानवता का विनाश करके ही दम लेगा? उपरोक्त गम्भीर समस्या का हल आज कोई नहीं दे सकता सम्पूर्ण विश्व नेतृत्व विहीन हो गया है। आखिर इसका नेतृत्व कौन करेगा। क्या सचमुच राम, कृष्ण शंकर एवं दयानन्द की पृष्ठभूमि बेकार हो जायगी। आज की इस गम्भीर स्थिति में हम तथा कथित आर्य बन्धुओं को ही सोचना होगा क्योंकि हम बड़े ही नाजे के साथ इस देश का नाम आर्यावर्त रखे हुए हैं और वैसे आज हैं आर्य सभ्यता की दुहाई भी।

यह बिल्कुल ही सत्य और सर्वमान्य है महाभारत काल से ही अवनति की ओर बढ़ती जा रही मानवता को पतन की गहरी खाई में गिरने से बचाने के लिए ही उन्नीसवीं सदी के महामानव महर्षि दयानन्द ने मानव समाज की कराहती आत्मा को उद्बोधित एवं अनुप्राणित करते हुए कथनी और करनी में सामञ्जस्य लाने की बात कही थी। राम, कृष्ण, ईसा बुद्ध और महमूद के अनुयायियों से प्रार्थना भरे शब्दों में उस महा मानव ने उद्बोधित करते हुए अपने सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से कहा था कि भाई मैं जो कुछ भी तुम्हें कह रहा हूं वह कोई मेरी बातें नहीं वरन ये सारी बातें तुम्हारी हैं जो समयानुसार तुम्हें तुम्हारे महापुरुषों ने दी हैं। परन्तु हम इतने नादान और नाकाबिल निकले कि उस सत्यवक्ता, मानवता के अनन्य उपासक, मातृभूमि के सच्चे सेवक की बातें हमने अनसुनी तो कर ही दी साथ ही अपनी मूर्खता और पैशाचिकता से अनुप्राणित और अभिप्रेरित हो धरती के उस पुण्य पुञ्ज की हत्या भी कर डाली जब कि हमें उनकी अत्यन्त आवश्यकता थी।

अस्तु: जो बीत गई सो बात गई। अब भी अगर बिलखती और सिसकती संस्कृति की अश्रुधारा को कोई रोक सकता है तो उसी महामनस्वी के द्वारा स्थापित आर्य समाज है। अनैतिकता एवं अमानुषिकता की भीषण अग्नि में जलती संस्कृति और सभ्यता बड़ी ही कातर दृष्टि से हम तथा कथित नवीन एवं प्राचीन आर्य सैनिकों की ओर देख रही है।

है कोई धरती का पुण्य पुञ्ज जो इसकी अश्रुधारा को पोंछने के लिये आगे आये और हम साधारण जन उनके सहयोग के लिये तत्पर हो जावें।

काश! अगर सचमुच कोई ऐसा आर्य या अनार्य वीर ही होता तो यह अवश्य ही निहाल हो जाती। कि बहुना। इत्यलमिति विस्तरेण तव विद्वद्वरचरितेषु।

हिन्दी के विकास में योगदान

चन्द्र, फिक तौसवीं, कन्हैयालाल कपूर, राजेन्द्रसिंह बेदी आदि की पुस्तकें प्रकाशित की हैं। भारतीय ज्ञानपीठ ने भी कुछ रचनाओं का रूपान्तर छापा है। उर्दू शेरों शायरी की संभवतः कोई ऐसी पुस्तक नहीं है जो हिन्दी में न उपलब्ध हो। यहां तक कि पाकिस्तान की शायरी, पाकेट बुक मिल जाती है।

जहां तक हिन्दी उर्दू संघर्ष का सम्बन्ध है, वह अंग्रेज कूटनीति की देन है। अंग्रेजों ने इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस संघर्ष की आधार शिला कलकत्ता के फोर्ट विलियम कालेज में गिलक्राइस्ट के नेतृत्व में रखी गई यद्यपि गिलक्राइस्ट और फोर्ट विलियम कालेज का हिन्दी के उत्थान में योगदान भी रहा है। हिन्दी-उर्दू का गहरा सम्बन्ध है। इसकी उत्पत्ति खड़ी बोली से हुई। भाषा विज्ञानियों के अनुसार उर्दू हिन्दी की ही एक शैली है। दक्खिनी हिन्दी से इसका जन्म हुआ। इसका जन्म स्थान भारत में हुआ है। इसके अधिकांश प्रयोग हिन्दी के समान हैं। इसका वाक्य विन्यास और व्याकरण हिन्दी जैसा है। 'एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका' खंड (१२ (१९६८) पृ० १०४ तथा १९६ में इसकी गणना आधुनिक भारतीय भाषाओं के अन्तर्गत की गई है।

लिपि भले ही दोनों की भिन्न हिन्दी के विकास में मुसलमानों का योगदान निश्चय ही महत्वपूर्ण रहा है। राष्ट्र को उनके ऊपर गर्व है।

एक असाधारण व्यक्तित्व-स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती

—पं० विद्यासागर शर्मा—

लगभग पांच दशक पूर्व उरई (उ० प्र०) के बीच शहर में स्थित एक विशाल तालाब के किनारे आर्य समाज मन्दिर के प्रांगण में अपार जन-समूह एकत्रित था। पता चला कि यहां हैदराबाद-सत्याग्रह से लौटे हुए आर्यसमाज के वीर सेनानियों के सम्मानार्थ सभा-का आयोजन है। उत्सुकता बढ़ी और मैं मंच के समीप ही श्रोताओं के समूह में समा गया।

प्रमुख सेनानियों में मैंने एक दिव्य प्रतिभा का प्रथम दर्शन किया। गेरुवा वस्त्र धारण किए हुए सिर के बाल तथा दाढ़ी-मूंछ घुटाये हुए, चौड़ा दैदीप्यमान ललाट, भव्य आभा मय मुख मुद्रा उपस्थित जन-साधारण को आकर्षित कर रही थी। नगर के सम्भ्रान्त व्यक्ति उस विभूति के गले मे माल्यार्पण करते हुए उसका अभिनन्दन कर रहे थे। थोड़ी ही देर मे मैंने उस महापुरुष का राष्ट्र-भक्ति से ओत-प्रोत ओजस्वी भाषण सुना और उसी प्रथम साक्षात्कार ने मेरे बाल हृदय को सदा के लिए अपना भक्त बना लिया।

फिर कुछ दिनों पश्चात ही सुना कि उन्हें असहयोग आंदोलन के अपराध में झांसी के निकट ही कहीं गिरफ्तार कर लिया गया हैं। यह महान सन्यासी कोई और नहीं, तत्कालीन बुन्देलखण्ड आर्यसमाज के विराट स्तम्भ पूज्य स्वामी दिव्यानन्द जी "सरस्वती" थे। जो उन दिनों स्वतन्त्रता-संग्राम के वीर सेनानी के रूप में भूमिगत,स्थिति में थे। वे कभी-कभी महीनों जंगलों में रहकर कन्द-मूल-फल और पत्तियां खाकर ही निर्वाह किया करते। नमक तो उन्होंने प्रारम्भ से ही जीवन भर के लिए त्याग रखा था। बुन्देलखण्ड क्षेत्र में आर्य समाज की आज जो छवि उभर कर आई है, वह परम पूज्य स्वामी जी की महत साधना का ही परिणाम है। असहयोग आन्दोलन में स्वामी जी ने गांव-गांव घूमकर राष्ट्रीयता की अलख जगाई और हजारों लोगों को देश-सेवा के लिए प्रेरित किया। यों तो सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के अन्तरंग सदस्य होने के नाते सारा भारत वर्ष ही उनका कार्य क्षेत्र रहा है। देश के कोने-कोने में गुरुवर का अपूर्व सम्मान था। हम बुन्देलखण्ड वासी समझते थे कि हम लोगों से अधिक उनके भक्त और कोई नहीं हो सकते। परन्तु उस समय हमारा गर्व चूर-चूर हो गया जब कि एक बार सन १९६९ में रायपुर, भिलाई नगर और रायपुर में माह चार दिन के लिए मुझे उनके साथ रहने का सुअवसर प्राप्त हुआ था और ज्ञात हुआ कि स्वामी जी के प्रति श्रद्धा-भक्ति में वहां के जन-समुदाय की अपेक्षा में हम तो नगण्य ही है।

ऐसे तपोमूत महर्षि का प्रादुर्भाव ग्राम-आटा, जिला जालौन (उ०प्र०) के साधारण कायस्थ-परिवार में आज से लगभग पचासी वर्ष पूर्व हुआ था। और बुन्देली माटी इस महान विभूति को पाकर धन्य हो गई। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा उरई में हुई थी और इनके सम्बन्ध में भी यह उक्ति चरितार्थ हुई !"अल्प काल विद्या सब, आई" स्वामी जी ने मात्र डिग्रियां प्राप्त करना अपना लक्ष्य कभी नहीं बनाया। परन्तु उनका अध्ययन इतना गहन था कि जिसकी थाह पाना नितान्त असम्भव था। सामाजिक ज्ञान हो या भौगोलिक अथवा ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, आध्यात्मिक ? कोई भी विषय हो, स्वामी जी ऐसी-ऐसी सूक्ष्मतम और सारगर्भित विवेचनाएं विलक्षण तर्कों से प्रमाणित करते कि बड़े-२ विद्वान उनके सम्मुख नतमस्तक हो जाया करते।

रामायण, महाभारत, गीता, पुराण और उपनिषदों के प्रकाण्ड पण्डित तो वे थे ही, उच्च कोटि के वेद-व्याख्याता भी थे। मेरा तो विश्वास है कि ऐसी विलक्षण बहुमुखी प्रतिभा उन्हें पूर्व जन्मों से ही प्राप्त थी। अन्यथा स्वामी जी बाल्य काल से ही घर परिवार त्याग कर योगी के रूप में अवतरित नहीं हो पाते। जहां तक मैं समझता हूं, प्रत्येक प्राणी अपनी चित्त-वृत्तियों के आधार पर ही सत्संग के प्रभाव मे आता है और स्वामी जी मैं वे शुभ जन्म जात रहे।

निश्चित ही यह विश्वास मेरे जैसे अनभिज्ञ व्यक्ति के लिए बहुत ही कठिन प्रतीत होता है कि इतना अथाह ज्ञान और प्रगाढ़ विवेक शक्ति अर्जित करने के लिए उन्हें कहां-कहां नहीं भटकना पड़ा होगा ? किन-किन महर्षियों के सानिध्य में रहे होंगे। कोई लेखा-जोखा नहीं। जब कभी प्रसंग वश हम लोगों ने उनसे यह सब जानने का प्रयास किया भी तो मुस्कराते हुए सहज उस विषय को टाल दिया करते थे। यद्यपि यदा-कदा चर्चाओं के प्रवाह में हम इतना ही जान सके कि पूज्य स्वामी ध्रुवानन्द जी 'सरस्वती' दिल्ली और श्रीनारायण स्वामी नैनीताल के वे अनन्य भक्त थे। वैसे तो परम पूज्य स्वामी दयानन्द जी 'सरस्वती' को वे अपना आराध्य देव मानते थे। जिनके महान आदर्शों को उन्होंने अपने जीवन मे उतारा और आजीवन आर्यसमाज के उत्कृष्ट सिद्धांतों को जन-कल्याण की भावना से राष्ट्र के कोने-कोने तक प्रसारित किया।

पूज्य स्वामी जी प्रारम्भ से ही जब कभी भिरगांव पधारे तो वे सदैव ही आदरणीय श्री कालका प्रसाद जी बख्शी के यहां ही ठहरा करते थे। यद्यपि उनके प्रिय शिष्यों में भाई श्री रामेश्वर प्रसाद जी गुप्त, प० व्रज-किशोर जी मिश्रा तथा वैद्य श्री मुन्नूलाल जी तिवारी जैसे कई प्रतिष्ठित और धन-सम्पन्न व्यक्ति भी प्रमुख रहे। परन्तु वे यहां कहीं भी यहां नहीं रुके। अभी दिनांक १जनवरी को जब स्वामी जी यहां पधारे तो उन्हें हृदय की कुछ शिकायत थी और रक्तचाप से भी परेशान थे। इससे कमजोरी का बढ़ना स्वाभाविक बात थी और हम सभी की इच्छा हुई कि स्वामी जी अभी यहीं रहें। ताकि चिकित्सा व्यवस्था ढंग की हो जावे। एक दिन मैंने विनय भी की कि—"गुरुदेव, अब आप कहीं भी न जावें, यहीं विश्राम करें। कुछ दिन हम लोगों को भी सेवा करने का अवसर मिल जायेगा।" तो हंसकर सहज ही टाल दिया और कहा "विश्राम तो मैं भी करना चाहता हूं लेकिन जो कार्यक्रम निर्धारित कर लिये गये हैं, उन्हें तो पूरा करना ही है। यह देखो, करोरा (रायपुर) का आमन्त्रण है, वहां भी यज्ञ कराने जाना है।" और दिनांक १७ जनवरी को रायपुर के लिए चल दिये।

आज सोचता हूं कि वह कैसा नया आमन्त्रण था ? और कैसा निर्धारित कार्यक्रम ? ज्ञात जाता है वह क्षण, जबकि यहां से विदा होते वक्त कदाचित् पूज्यवर को महाप्रयाण का पूर्व आभास हो चुका हो। एक विचित्र गम्भीर भाव मुद्रा और जाने का हठ, हम सभी को उदासीन बना रहा था। स्वामी जी ने आशीर्वाद देते हुए सभी को आश्वस्त किया और कहा कि—"संध्या-पूजा का नियमित ध्यान रखना।" और अपने स्वास्थ्य की किंचित चिन्ता किये बिना रायपुर पहुंच ही गये। रायपुर से सुदूर अंचल के जंगल में कहीं उनकी तपोभूमि थी और प्रत्येक मकर संक्रान्ति के पावन पर्व पर वे वहां अवश्य ही पहुंचा करते थे।

अबकी बार भाई मस्तूराम जी साहू भी मोटर साईकिल लेकर रायपुर से उनके साथ हो गये थे। तपोभूमि से फिर रायपुर लौटे और वहां से १० कि. मी. करोरा का दुर्गम मार्ग भी मोटरसाइकिल से, पीछे की सीट पर बैठकर पूरा किया। करोरा मे यजुर्वेद, पारायण यज्ञ का सात दिनों का भव्य आयोजन था। शारीरिक शिथिलता में ही वहां के समस्त कार्यक्रम स्वामी जी ने सुचारु रूप से सम्पन्न कराये। दिनांक ५ फरवरी के समापन समारोह में अपार जन-समूह स्वामी जी के मधुर प्रवचनो से आनन्द विभोर हुआ। किसी को क्या पता था कि गुरुदेव का यह अन्तिम सन्देश है। रात्रि के लगभग ११ बजे स्वामी जी के हृदय में पीड़ा हुई तुरन्त ही डा० श्री देवसिंह जी वर्मा ने जांच करते हुए अपना उपचार प्रारम्भ करना चाहाकिन्तु स्वामी जी ने कहा—'अब कोई लाभ नहीं। आप नहीं मानते हो, तब ठीक है, जो करना हो करो; परन्तु मुझे अपना काम करने दो।' डा० वर्मा अपने ढंग से उपचार में लग गये और स्वामी जी बड़े जोरो से 'ओ३म्' शब्द का उच्चारण किया फिर ध्यान मग्न हो गये। इसके बाद लोगो ने अनुभव किया कि अब काफी आराम है आघात टल गया और स्वामी जी शायद निद्रा निमग्न हैं।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

विद्यार्थी जीवन कैसे उत्तम बने

न हि ज्ञानेन सदृशम् पवित्र हि विद्यते
तत् स्वयम् योग सम सिद्धा कालेन आत्मनि विन्दति

संसार मे ज्ञान सर्वोत्तम है, संसार जो माया के अन्धकार से ढका हुआ है बिना ज्ञान के संसार मे मनुष्य का जीवन ऐसे व्यर्थ हैं जैसे चक्षु के बिना मनुष्य का शरीर।

पुस्तको को बार बार पढ़ने से, मनन करने से ज्ञान प्राप्त होता है संसार की सब विद्यायें (अविद्यायें हैं) जो संसार में मायावाद को सिखाती है जिससे मनुष्य धीरे धीरे नीचे गिर जाता है।

विद्या क्या है—जो मायावी संसार के प्रलोभनो से हटाकर आत्मा, परमात्मा, प्रकृति का ज्ञान कराती है जो आत्मा का आनन्द है।

संसार के ऐश्वर्य सुख देने वाले हैं—आनन्द नहीं दे सकते। आनन्द—तप, त्याग शुभ ऊंचे विचारों, सेवा भलाई, मृदुवाणी मे रहता है।

जैसे पहले मनुष्य अत्यन्त परिश्रम, कष्ट सहकर अत्यन्त थक जाता है रात्रि मे गहरी नींद सोता है तो सुबह उठ कर कहता है बड़ा आनन्द आया शरीर मे शक्ति, बल उत्साह, उल्लास, स्फूर्ति, कर्म करने की शक्ति आती है जिसको वह बतला नहीं सकता वही सच्चा आनन्द है। सांसारिक वस्तुएं सुख लेशमात्र हैं।

एक मनुष्य गुलाब के फूल के पास जाकर सूंघने लगा बड़ा प्रसन्न हुआ मगर उसके अन्दर जो मक्खी बैठी थी नाक मे काट लिया। नाक में अत्यन्त दर्द हुआ ऐसे ही सांसारिक भोग अच्छे प्रतीत होते हैं। मगर भोगने के बाद, दुःख रोग, बुढ़ापे में बदल कर दुःख के कारण बन जाते हैं।

इसलिए महान पुरुष कहते हैं—

पहले आंखे रूपी ज्ञान को प्राप्त करो तब संसार की यात्रा मे सफल हो सकते हो वरना संसार में करोड़ो प्राणी इस संसार रूपी समुद्र में डूबकर करोड़ो पशु योनियो मे जा रहे हैं।

नदी का पानी तेजी से बह रहा है बिना तैरने के समुद्र मे गिरकर समुद्र रूपी मृत्यु के मुंह मे जा रहा है। मगर जब गुरु उसको ज्ञान रूपी शिक्षा से उत्तम तैराक बना देता है जो इस नदी मे गिरते ही बहाव की तरफ न जाकर जिस संसार रूपी नदी मे काम, क्रोध लोभ, मोह, छल, कपट ईर्ष्या द्वेष के भवकर जीव रहते हैं। उल्टा होकर चलना आरम्भ करता है जहां से नदी का उद्गम स्थान है आखिर पहाड़ की चोटी पर पहुंच जाता है और बच जाता है यह ज्ञान है स्वामी वृजानन्द ने स्वामी दयानन्द को ब्रह्मचर्य का वेद के ज्ञान का उत्तम उपदेश देकर एक महान पुरुष बनाया सूर्य के समान तेजवान(ब्रह्मचर्य, योग से)चन्द्रमा के समान शीतल सुखसमृद्धि, संसार के सब प्राणियो के लिए।

संसार मे अज्ञान फैला है (मायावाद) जिससे लगातार संसार विनाश की ओर जा रहा है।

मनुष्य योनि सबसे उत्तम है जिसमे ज्ञान (अध्यात्म वाद) मायावाद दोनो का ज्ञान प्राप्त करना अत्यन्त आवश्यक है मायावाद शरीर है ज्ञान चक्षु हैं बगैर चक्षु के जीवन व्यर्थ है।

इसलिए विद्यार्थी जीवन मे ब्रह्मचर्य तप, त्याग चाहिए स्वाध्याय सत्संग, भजन चाहिए उससे उत्तम ज्ञान प्राप्त करके जो चक्षु हैं संसार की यात्रा में सफल होगा।

यस्य बुद्धि नास्ति तस्य शास्त्रम् किं करोति।
लोचनाभ्याम् हीनस्य दर्पणं किम् करिष्यति॥

इस लिए तीव्र बुद्धि बनाने के लिए गुरु के उपदेश से ब्रह्मचर्य वेदो के ज्ञान को प्राप्त करें तभी वास्तव में जीवन सार्थक होगा।

शरीर प्रकृति है, आत्मा का नाश कभी नहीं होता, कर्म, उपासना सेवा से मृत्यु के बाद उत्तम योनि को प्राप्त होता है। शरीर मायावाद से जुड़ा है मायावाद से शरीर की रक्षा करता है।

शरीर और आत्मा दोनो से मिलकर यह पुरुष बना है इस कारण अध्यात्मवाद और मायावाद दोनों का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है।

महात्मा बुद्ध ने मायावाद का केवल उपदेश किया शंकराचार्य ने अध्यात्मवाद का, मगर स्वामी दयानन्द ने मायावाद, अध्यात्मवाद दोनो को ही अत्यन्त आवश्यक है एक को धारण करके कभी संसार की यात्रा में नहीं चल सकता है। इसलिए हे विद्यार्थियो इसको मनन करो, ध्यान करो और उस पर चलो।

—प्रसन्न कुमार (Rtd) इन्जीनियर

स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती

(पृष्ठ ७ का शेष)

दिनांक ६ फरवरी १९८९ प्रातः लगभग ४ बजे स्वामी जी उठे और एक शिष्य को तुरन्त ही वहीं भूमि पर गाय के गोबर से लीपकर कम्बल बिछाने का आदेश दिया। आज्ञा का पालन हुआ और पूज्य स्वामी जी ने पद्मासन लगाकर आचमन किया और सबको चार पुत्र बोध से 'ओ३म्' शब्द की मधुर ध्वनि गूंजी तथा महर्षि ने प्राणायाम के माध्यम से प्राण-वायु को ऊपर के लोकों में चढ़ाकर सहस्रदल कमल तक पहुंचाया और भौतिक शरीर को त्याग दिया। इस प्रकार एक दिव्य प्रकाश पुञ्ज ब्रह्मलीन हो गया। उपस्थित सैंकड़ो नर-नारियों में करुण-क्रन्दन मच गया। ऐसा प्रतीत हुआ, मानो कोई दूर प्रवासी जा रहा हो।

'ऐसी करनी कर चलो, कि हम हंसे जग रोये।'

अन्त में एक ही आकांक्षा है कि यदि हम सभी श्रद्धालु जन पूज्य स्वामी दिव्यानन्द जी 'सरस्वती' के आदेशानुसार नियमित सन्ध्या-पूजा का ध्यान रखें, तो गुरुवर के प्रति यह सच्ची श्रद्धांजलि हो।

आर्य जगत् के समाचार

पंजाब में शान्ति हेतु यज्ञ

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना द्वारा छुआछूत के कट्टर विरोधी भारतीय संविधान के निर्माता डा. बाबा भीमराव जी अम्बेदकर जयन्ती के उपलक्ष में १४ अप्रैल १९९० को पंजाब में शान्ति एवं राष्ट्र की एकता और अखण्डता के लिए तथा सुख समृद्धि के लिए पवित्र वेद-मन्त्रो द्वारा यज्ञ किया गया। इस यज्ञ की अग्नि श्री रोशनलाल शर्मा प्रधान आर्य युवक सभा पंजाब एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती वीना शर्मा ने प्रज्वलित की।

—रामेश्वर शास्त्री
कार्यालय सचिव

जिला आर्य परिषद मोरीशस में बहुकुण्डीय यज्ञ सम्पन्न

दिनांक ११-११-८९ को आर्य सभा के कई विद्वानो के कर कमलो द्वारा यज्ञ प्रारम्भ हुआ। यज्ञ के पश्चात सगति का कार्यक्रम भी हुआ। दूसरे दिन सुबह यज्ञ सत्संग, भोजन महिला समाज सम्मेलन जिसमें आर्य सभा के प्रधान श्री मोहनलाल मोहित जी का भाषण हुआ। इस यज्ञ मे भारत से भी चार वैदिक धर्म प्रचारक उपस्थित थे। इनके अतिरिक्त मोरीशस के शिक्षा मन्त्री भी उपस्थित थे। नर-नारियो से पण्डाल सभाभवन भरा था।

४ मार्च सन १९९० को शिक्षा दिवस मनाया गया जिसमें अनेक विद्वानो के भाषण हुए। इसके पश्चात आर्य समाज स्थापना दिवस पर भी यज्ञ और विद्वानों के प्रवचन आदि कार्यक्रम किये गये।

सूचना

आर्य समाजो के अधिकारियो से निवेदन है कि वैदिक धर्म प्रचार तथा आर्य समाजो के उत्सवो पर प्रचार के लिए श्री स्वामी कर्त्तव्यानन्द जी से सम्पर्क करें।

स्वामी जी का पता:—आर्य भानु आश्रम
मु० पोन्दी, तह० सम्बल, जिला जालना [महा०]

आर्य समाजों के चुनाव

—आर्य समाज नागपुर सिटी राजस्थान श्री रामजीलाल महरवाल प्रधान श्री नन्दकिशोर सोनी मन्त्री श्री कान्हियालाल कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज चन्दौसी का चुनाव ४ मार्च १९९० को हुआ जिसमे निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुए। श्री राजाराम आर्य (संरक्षक), श्री ओमप्रकाश आर्य प्रधान श्री हरिओम आर्य मन्त्री चुने गये।

—आर्य समाज मदुई श्री आर० एन० रामलिंगम अध्यक्ष श्री पी० यू० एकाम्बरम उपाध्यक्ष श्री वी० आर० गोपालराव एम० ए० बी० टी० मन्त्री श्री आर० आर० षण्मुगम उपमन्त्री श्री के० टी० कृष्णन कोषाध्यक्ष श्री राजकुमार एम० एस० सी० एम० फिल पुस्तका पाल चुने गये।

—आर्य समाज आदर्श नगर राजापार्क जयपुर का चुनाव निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ। श्री ज्ञानेन्द्र आर्य प्रधान डा० सुभाष वेदालंकार मन्त्री श्री बलदेवराज आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्यसमाज कठुआ का वार्षिक चुनाव निम्न प्रकार हुआ। श्री डा० सुभाष जी उप्पल प्रधान श्री सुरेन्द्र गुप्ता मन्त्री श्री किशोरीलाल महाजन कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज रांची-४ का वार्षिक चुनाव निम्न प्रकार हुआ। श्री वीरेन्द्रकुमार शर्मा प्रधान श्री आदित्य नारायण मन्त्री श्री रामविलास प्रसाद कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज मोहता नगर इन्दौर का चुनाव निम्न प्रकार हुआ। श्री टिकिनामल जी आहुजा अध्यक्ष श्री देवप्रकाश जी शर्मा महामन्त्री श्रीमती मीरादेवी आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज बरनाला का चुनाव निम्न प्रकार हुआ। श्री वीरेन्द्र कुमार जी प्रधान, नवीन आर्य मन्त्री, रमेशकुमार कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज फिरोजाबाद का वार्षिक चुनाव निम्न प्रकार हुआ। श्री लाला बसन्तराम जी प्रधान श्री रवीन्द्रसिंह मन्त्री श्री राजेन्द्रकुमार जी कोषाध्यक्ष चुने गये।

लुधियाना में वैशाखी पर्व पर बृहद्यज्ञ

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना में वैशाख पर्व पर बृहद्यज्ञ किया गया जिसमें श्री रमण कुमार आर्य, श्री विश्वजीत आर्य सपरिवार एवं बहन सरिता जी यजमान बने। यह यज्ञ प० सुन्दरलाल शास्त्री ने सम्पन्न कराया।

इस अवसर पर बहन चन्द्रकान्ता मन्त्राणी स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना, श्री देवराज आर्य यज्ञ-अध्यक्ष ने प्रभु-भक्ति के सुन्दर भजन रखें। प० रामेश्वर शास्त्री ने अपने विचार रखे।

अम्बाला छावनी में शिलान्यास समारोह

वैदिक प्रचार मण्डल, अम्बाला छावनी के तत्वावधान में शिलान्यास समारोह दिनांक ६-५-१९९० को बड़े उत्साह के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर प्रो० उत्तमचन्द 'शरर' ब्रह्मचारी रामप्रकाश जी तथा दाऊदयाल शर्मा भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

शोक समाचार

आर्य जगत को यह सूचना देते हुए बहुत दु:ख हो रहा है कि अमृतसर के वयोवृद्ध आर्य नेता स्व० श्री प० रुद्रदत्त जी १-४-९० को देहली में स्वर्ग सिधार गए हैं। आर्य समाज को इनके जाने से जो क्षति हुई। उसका पूर्ण होना असम्भव है। विशेषकर अमृतसर को ऐसा नेता मिलना असंभव है।

—मनोहरलाल शास्त्री
पुरोहित आर्य समाज माडल टाउन
अमृतसर [पंजाब]

भगवानदेव चैतन्य का संक्षिप्त जीवन परिचय

जन्म : १५ जुलाई, १९४८ को पण्डित रामशरण शर्मा जी के यहां गांव, रिवालसर जिला मण्डी हिमाचल प्रदेश में। माता जी का नाम श्रीमती भगवन्ती देवी।

शिक्षा : बी ए आनर्स, एम ए

लेखन : बचपन से ही लेखन में रुचि। पहली रचना चौथी कक्षा में लिखी तथा छपी। उसके बाद कहानी, कविता, निबन्ध, उपन्यास आदि सभी विधाओं में सृजन। हिन्दी के अतिरिक्त हिमाचली भाषा में भी रचनाओं का लेखन। विशेष वेद मन्त्रों का पद्यानुवाद भी। देश की अनेक पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं में निरन्तर रचनाओं का प्रकाशन। बहुत-सी रचनाएं पुरस्कृत भी।

पुस्तकें : १ सुबह की तलाश में २ बन्दा बैरागी ३ घोड़ा का खूनी इतिहास ४ हादसों का शहर।

अन्य : पन्द्रह वर्षों से निरन्तर आकाशवाणी से रचनाओं का प्रसारण। फिर छाया तले उपन्यास पर साहित्यालंकार की उपाधि से सम्मानित। बीस वर्षों से विभिन्न संस्थाओं व प्रकाशनों से जुड़े रहकर हिन्दी और साहित्य की सेवा। 'रूठे मीत' फिल्म के गीतकार।

विशेष : महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की विचारधारा से प्रेरित एक कर्मठ एवं समर्पित समाज-सेवी। आर्य समाज सुन्दर नगर कालोनी के मन्त्री पद से सामाजिक कार्यों का शुभारम्भ। इस आर्य समाज के लगभग सात वर्ष तक मन्त्री रहे। यज्ञशाला सहित महत्त्वपूर्ण भवन का निर्माण इन्हीं के कार्यकाल में हुआ। इनकी कर्मठता के आधार पर इन्हें सभा का उपमन्त्री चुना गया जिस पद पर ये पांच वर्ष तक रहे। लगभग इतने ही वर्ष से आर्य वीर दल के प्रान्तीय संचालक भी रहे। इस दौरान इन्होंने सफल शिविरों का आयोजन किया। अब लगभग छः-सात वर्षों से आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के महामन्त्री पद को सुशोभित कर रहे हैं तथा वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार करने में संलग्न हैं। गत ग्यारह वर्षों से 'आर्य वन्दना' पत्रिका के सम्पादक से भी जुड़े हुए हैं। इनकी सेवाओं को ध्यान में रखते हुए हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा ने हाल ही में आपने १९-११-८९ को सम्पन्न हुए वार्षिक अधिवेशन में इन्हें सम्मानित भी किया है। जहां ये हिन्दी साहित्य को समृद्ध कर रहे हैं वहीं दूसरी ओर वैदिक साहित्य में भी सम्वर्धन कर रहे हैं। हिन्दी साहित्य सदन के आठ वर्ष तक महामन्त्री रहे केन्द्रीय हिन्दी परिषद के भी ये प्रधान व उपप्रधान रहे हैं। उल्लेखनीय है कि इनकी पत्नी श्रीमती कमला सत्यप्रिया विशेष रूप से इनका सहयोग करती हैं तथा स्वयं भी समाज सेविका और नगर पालिका सदस्या हैं। इनके पुत्र अभिलेश, अनुराग व अनुभाव भी इनके सहयोग में लगे रहते हैं।

—श्री कृष्णचन्द्र आर्य, उपप्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर में प्रवेश आरम्भ
कोई मासिक शुल्क नहीं

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर जिला जालन्धर (गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से स्थाई मान्यता प्राप्त) में नये छात्रों का प्रवेश १ जून ९० से आरम्भ हो रहा है। सरकारी स्कूलों में पढ़ाये जाने वाले हिन्दी, गणित, अंग्रेजी, विज्ञान, समाज शास्त्र, आदि सभी विषयों के साथ संस्कृत तथा धर्म शिक्षा भी अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाती है।

निःशुल्क शिक्षा, हिन्दी, माध्यम, योग्य परिश्रमी अध्यापक, स्वच्छ वातावरण, सात्त्विक भोजन, दूध या आवास की बिना किसी मासिक शुल्क के समुचित व्यवस्था, शुद्ध दूध की उपलब्धि के लिए गुरुकुल की अपनी गऊशाला इस गुरुकुल की अपनी विशेषताएं हैं।

—सुखदेवराज शास्त्री आचार्य
श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल, करतारपुर
जिला जालन्धर (पंजाब)



हिन्द समाचार पत्र समूह जालन्धर की ओर से शहीद परिवारो को दी जाने वाले सहायता राशि का २४वा समारोह। इस अवसर पर हिमाचल प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री शान्ताकुमार जी विधवाओ को सहायता रूप मे यूनिट ट्रस्ट आफ इण्डिया के बाण्ड देते हुए।



हिन्द समाचार पत्र समूह, जालन्धर द्वारा २२ अप्रैल ९० को जालन्धर में उग्रवादियों एव आतकवादियो द्वारा शहीद किये गए लोगो की विधवाओं एव आश्रितो मे लगभग पौने छ लाख रुपये यूनिट ट्रस्ट आफ इण्डिया के बाण्ड के रूप मे वितरित किये गये। चित्र मे विधवाए सहायता राशि प्राप्त कर रही हैं।

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज हरजेन्द्रनगर कानपुर ७ का २१वा वार्षिकोत्सव दिनाक ११-१२ व १३ मई ९० दिन शुक्रवार शनिवार व रविवार को आर्य समाज के प्रांगण में बड़े ही धूमधाम से मनाने का निश्चय किया गया है।

—रामजी आर्य मन्त्री

—काशी आर्य समाज के प्रधान एव सासद श्री कैलाशनाथ सिह की अध्यक्षता मे गत रविवार को बैठक हुई जिसमे आर्य समाज बुलानाला का ११वा वार्षिकोत्सव २६ अप्रैल से २९ अप्रैल ९० तक मनाया गया है। जिसमे आर्य जगतके प्रख्यात् विद्वान् भजनोपदेशक उपदेशक एव राजनेता पधारे।

आर्य जगत् के विद्वान प० महेन्द्रपाल शास्त्री कलकत्ता श्री महिपाल सिह बलिया श्री सत्यप्रकाश आर्य पटना, प० सत्यदेव शास्त्री, डा० पुष्पावती आचार्य प० चन्द्रपाल शास्त्री श्री रामप्रसाद पाण्डेय आदि वाराणसीके प्रवचन हुए। —रामदेव शास्त्री

—आर्यसमाज तिलक नगर नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव ८ अप्रैल १९९० से १५ अप्रैल तक बहुत ही उत्साह पूर्वक मनाया गया, जिसमें परमपूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, आदरणीय मदनलाल खुराना (सासद) एव डा० धर्मपाल महाशय, श्री धर्मपाल जी, सूर्यदेव जी, श्री शिवकुमार जी शास्त्री ने हमारा मार्गदर्शन कराया।

जगदीश नागपाल
मन्त्री

पशुबलि एक धार्मिक कुप्रथा

धार्मिक अन्धविश्वासो की अति यदि देखी जाती है तो वह धर्म के नाम पर देवी, देवताओ के सामने होने वाली पशुबलि और नर बलि प्रथा है। समाचार-पत्रो में पढने को मिलता है कि कलकत्ता में काली के मन्दिर में पशुबलि चरमसीमा पर है। गुवाहाटी (असम) मे कामाख्या देवी के मन्दिर पर लहू के प्यासे पुजारी मासूम पशुओ को जिस निर्ममता से मौत के घाट उतार रहे हैं देखकर कोई भी मनुष्य करुणा से ओतप्रोत हुए बिना नही रह सकता। अजमेर में चण्डी के मन्दिर पर जयपुर मे आमेर पर भैंरो की बलि अब भी चढ़ाई जाती है। इसी प्रकार बुलन्दशहर में बरवलि मेरठ जिले मे मुर्ग बलि की घटनाए समाचार पत्रो मे पढ़ने को मिलती हैं। गढ़वाल, पिथौरागढ़ चमोली और अन्य अनेक ऐसे स्थान हैं जहाँ पशुबलि प्रथा अपनी चरमसीमा पर है। मनुष्यों के द्वारा की जानेवाली इन हत्याओं की धार्मिकता अन्धविश्वास ही कही जा सकती है।

महात्मा गांधी के जीवन में एक बार ऐसा समय आया था जिसमें बहुत से लोग एक बकरे को सजा कर देवी के यहाँ ले जा रहे थे। गांधी जी ने लोगो से पूछा कि इस बकरे को कहाँ ले जा रहे हैं। तब लोगो ने बताया कि चेचक की बीमारी से छुटकारा पाने के लिये वे देवी को इस बकरे की भेंट चढाने ले जा रहे है। गांधी जी ने कहा कि अपनी बीमारियो से छुटकारा पाने के लिये वे लोग अपने स्वय के बच्चो की और स्वय की बलि क्यो नहीं देते? इस पर सब लोग चुप हो गये। तब गांधी जी ने अपने आपको देवी को अर्पित करने के लिये कहा। तब लोगो को अपनी गलती का एहसास हुआ और उन्होने भविष्य मे बलि न चढ़ाने का प्रण किया।

हमें यदि एक पिन भी चुभ जाये तो जान निकल सी जाती है। सोचिये उस निर्दोष मुर्गी या बकरी को कितनी पीडा होगी जिसकी गरदन पर छुरी चलती हो।

बलि प्रथा एक कुप्रथा है। बलि चढाने से देवी देवता प्रसन्न नहीं होते। जब देवी देवता तो सारे ससार के सभी प्राणियो का भला चाहते हैं वे क्यो किसी प्राणी के खून के प्यासे होंगे।

आइये हम सब निश्चय करें कि इस धार्मिक कुप्रथा को बन्द करने में सहयोग करेंगे। न हम स्वय बलि चढ़ायेंगे और न ही किसी को प्रेरित करेंगे। जहाँ जहाँ पशुबलि हो रही हो उसको बन्द कराने में सहयोग करेंगे।

—केदारनाथ जैन

हिन्दी को केन्द्र में भी उचित स्थान मिले : आर्य समाज

बुलन्दशहर, २४ अप्रैल। आर्य समाज के सैंकड़ों कार्यकर्ताओं ने राष्ट्रपति के नाम ४ सूत्री मांगो के सम्बन्ध में एक ज्ञापन जिला मजिस्ट्रेट को प्रेषित कर केन्द्र में भी हिन्दी को प्रमुख स्थान देने की मांग की है।

उक्त कार्यकर्ता नगर के मुख्य-मुख्य मार्गो से होते हुए जिला मजिस्ट्रेट आवास पर पहुँचे और उन्हें ज्ञापन भेंट किया।

ज्ञापन में कहा गया है कि भारतीय संविधान के अन्तर्गत देश में हिन्दी को राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा स्वीकृत किया गया है फिर भी कुछ लोगो की निहित स्वार्थ एवं मानसिक दासता के कारण हिन्दी की निरन्तर उपेक्षा होती रही है। हिन्दी देश की ८० प्रतिशत जनता की भाषा है। इतना ही नहीं स्वतन्त्रता संग्राम की आत्मा एवं राष्ट्रीय एकता की प्रेरक रही है। भाषा कोरा शब्द समूह नहीं होती, जिसे देश की संस्कृति, अभिव्यक्ति होती है। हिन्दी तथा देश की अन्य भाषाओं का उद्गम देव भाषा संस्कृत रही है इसलिए समूचे देश मे हिन्दी सरलता से बोली एवं सुगमता पूर्वक समझी जाती है। ज्ञापन में प्रदेश के मुख्यमन्त्री मुलायम सिंह द्वारा स्वतन्त्रता के ४३ वर्ष बाद उ० प्र० शासन ने पहली बार हिन्दी को राजभाषा के रूप मे प्रयोग करने का निर्णय लेकर साहसिक पग उठाया है जिसके लिए वे बधाई के पात्र हैं।

ज्ञापन मे मांग की गई है कि केन्द्र में भी हिन्दी को उसका वह महिमा मण्डित स्थान मिलना चाहिये, राजभाषा संशोधन विधेयक की आड़ में हिन्दी की उपेक्षा और अंग्रेजी का आधिपत्य देश के लिए घातक होगा। प्रदेश के सभी कार्यालयों में हिन्दी के प्रयोग का सरकारी निर्णय का कड़ाई से पालन करने, अंग्रेजी पब्लिक स्कूलो की बाढ़ को अविलम्ब रोकने, न्यायपालिका, व्यवस्थापिका एवं लोकसेवा आयोग में हिन्दी को उचित स्थान दिया जाए तथा समस्त कार्य प्रणाली व परीक्षाएं हिन्दी में ही सम्पन्न कराई जाए।

याचिका रद्द

(पृष्ठ १ का शेष)

२—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा सभी राज्य स्तरी प्रतिनिधि सस्थाओ की नियन्त्रक सस्था है, जिसमें निःसन्देह भागी अर्थात् आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्रप्रदेश भी शामिल है।

३—आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्रप्रदेश को भंग करके तदर्थ समिति बनाने सम्बन्धी स्वामी जी के अनुमानित दौरे कर जिक्र करते हुए माननीय न्यायाधीश ने कहा कि रिकार्ड में कोई भी ऐसा तथ्य यह साबित नही करता कि प्रतिवादी सार्वदेशिक सभा वादी के विरुद्ध कोई कार्यवाही करने वाली है। भविष्यत खतरो के केवल अनुमान के आधार पर किसी प्रकार का स्थगन आदेश किसी व्यक्ति को नहीं मिलना चाहिए।

४—विशेष रूप से जहा सस्था के हितो की बात आती है माननीय न्यायाधीश ने टिप्पणी करते हुए कहा कि सस्था के हितों को प्राथमिकता देनी चाहिए अपने निजी हितो को नही।

सार्वदेशिक सभा की केन्द्रीय कानूनी समिति श्री नन्दकिशोर सिंह एडवोकेट आन्ध्रप्रदेश का हार्दिक धन्यवाद करती है जिन्होंने अदालत मे मुकदमें की पैरवी की।

डा० सत्यकेतु स्मृति पुरस्कार

१६ मार्च १९९० को डा० सत्यकेतु विद्यालंकार की प्रथम पुण्य तिथि के अवसर पर विवेक प्रकाशन की ओर से १०००) रु० 'डा० सत्यकेतु स्मृति पुरस्कार' की घोषणा की गई।

अपने श्वसुर की स्मृति में इस पुरस्कार की घोषणा करते हुए विवेक प्रकाशन की संचालिका श्रीमती आशा रानी ने कहा कि यह पुरस्कार प्रति वर्ष १६ मार्च को दिल्ली के स्कूलों में समाज शास्त्र के सर्वश्रेष्ठ अध्यापक को दिया जायेगा।

आर्य कन्या की आवश्यकता

मेरा पुत्र जो भारतीय वायु सेना में अधिकारी (फ्लाइट लफ्टेनेन्ट) २६॥ वर्ष की आयु है। एक सुसंस्कारी एवं अच्छे शिक्षित आर्य परिवार की कन्या की आवश्यकता है। यदि किसी भी रक्षा विभाग में अधिकारी एवं शुद्ध शाकाहारी की कन्या हो तो भी पत्र-व्यवहार करें। लड़के के माता पिता मौलिक रूप से हरियाणा राज्य के हैं परन्तु अब स्थाई रूप से बड़ौदा (गुजरात) में बस गये हैं। जो जन्म जातपात एवं दहेज जैसी घोषतम कुरीतियों में विश्वास करते हो वे इस विषय में कृपा पत्र-व्यवहार नहीं करें।

पत्र व्यवहार का पता :—

एम० आर० शर्मा (आर्य)
"वेद ज्योति"
११ आनन्द सोसायटी
हरणी रोड
बड़ौदा (गुजरात) ३९०००६

भजनोपदेशक की आवश्यकता

दयानन्द मठ चम्बा (हि० प्र०) के लिए एक उत्साही, सुयोग्य एवं युवा भजनोपदेशक की तुरन्त आवश्यकता है। वैदिक संस्कार कराने एव उपदेश करने की अच्छी योग्यता हो। शैक्षणिक योग्यता, अनुभव एवं स्वीकार्य वेतन के सम्बन्ध में आचार्य महावीरसिंह एम० ए० प्रबन्धक दयानन्द मठ, चम्बा-१७६३१० (हि० प्र०) से तुरन्त पत्र व्यवहार करें।

नियुक्ति प्रथम जून से होनी है। एक मास के प्रचार कार्य को देखकर दीर्घ काल तक के लिए नियुक्ति कर दी जायगी।

—स्वामी सुमेधानन्द।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन,नई दिल्ली-१ से प्रकाशित।

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र

वेदामृत
पुत्र वीर कर्मठ सुयोग्य हो

तन्नस्तुरीपमध पोषयित्नु देव त्वष्टर्वि रराणः स्यस्व ।
यतो वीरः कर्मण्यः सुदक्षो युक्तग्रावा जायते देवकामः ॥
ऋग्० ३-४-९,७-२-९, तैत्ति० सं० ३-१-११ १ ॥

हिन्दी अर्थ—हे सृष्टि कर्त्ता देव ! तुम दाता हो। तुम शीघ्र प्रभावकारी और पोषक वीर्य हमें दो, जिससे वीर, कर्मठ प्रतिनिपुण, सोमरस निकालने वाला और आस्तिक पुत्र पैदा हो।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१ दयानन्दाब्द १६६ दूरभाष । ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष २९ अंक १८] ज्येष्ठ कृ० १ सं० २०४७ ११ मई १९९०

इतिहासवेत्ता डा० एन. आर. बराड पांडे द्वारा महर्षि दयानन्द की मान्यताओं का समर्थन
भारत में आर्य बाहर से नहीं आए

भारत में आर्य बाहर से आए और उन्होंने यहां आक्रमण कर अपना साम्राज्य कायम किया। यह धारणा कोरी कल्पना के सिवा कुछ नहीं है। इस धारणा के न तो पुष्ट ऐतिहासिक प्रमाण मिलते हैं, न ही भाषा शास्त्रीय आधार पर यह अब तक सिद्ध हुई है और प्राचीन साहित्य के आधार पर तो यह क्षण भर भी नहीं टिकी रहती है। इतिहासवेत्ता डा० एन. आर. बराड पांडे ने यह बात एक सभा में कही।

भारतीय इतिहास संकलन योजना समिति द्वारा आयोजित इतिहास दिवस पर हुई इस सभा में श्री पांडे ने कहा कि भारत में आर्यों के बाहर से आने की बात पर इतिहासकारों में अभी भी विकट मतभेद हैं। इस विषय में मैक्समूलर तक ने कोई निश्चित मत व्यक्त नहीं किया। ओरिजन आफ एरियन रेस में वे अन्त में लिखते हैं कि अगर मुझे पूछा जाय कि आर्य कहां से आए तो मैं कहूंगा कि मध्य एशिया में कहीं से वे निकले पर कहां से निकले यह कह पाना कठिन है।

श्री पाण्डे ने कहा कि आर्य किसी नस्ल या जाति का नाम नहीं है। प्राचीन भारतीय साहित्य में इस शब्द का उपयोग विशेषण के रूप में किया है जिसका अर्थ है कुलीन और सभ्य। यह शब्द जाति वाचक संज्ञा के तौर पर कहीं भी प्रयुक्त नहीं होता। उन्होंने कहा कि असुर और राक्षस नाम इस विशेषण के विलोम अर्थों में प्रयुक्त होते हैं। लेकिन असुर और राक्षस कोई नस्ल नहीं है। आर्यों को एक नस्ल मानने वाले लोग भी असुर और राक्षसों की कोई जाति नहीं मानते।

उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक आधार पर भी आर्य कोई जाति सिद्ध नहीं होती। आनुवंशिक विज्ञान के अनुसार संसार भर में करीब दो सौ तरह के लोग हैं। इसका अर्थ है कि कम से कम इतनी ही जातियां हैं। शरीर की आकृति और रंग रूप के आधार पर विश्लेषण करें तो यह संख्या और भी ज्यादा हो जाती है। वैज्ञानिक आधार पर तो रंग रूप और बनावट आदि की दृष्टि से हजारों सिद्ध होती हैं। इसलिए आनुवंशिक विज्ञान की दृष्टि में जातियों और नस्लों का कोई महत्व नहीं है।

सभा की अध्यक्षता भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के अवकाश प्राप्त उप महानिदेशक यज्ञदत्त शर्मा ने की।

(जनसत्ता ५ मई)

राम मन्दिर शिलान्यास नहीं होने देंगे
—मुख्यमन्त्री मुलायमसिंह यादव

उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री मुलायमसिंह यादव ने स्पष्ट किया है कि भारत सरकार अयोध्या में रामजन्म भूमि पर प्रस्तावित राम मन्दिर शिलान्यास नहीं होने देगी। उन्होंने कहा कि यदि किसी ने भी रामजन्मभूमि पर शिलान्यास करने की कोशिश की तो उसे गिरफ्तार कर लिया जायेगा भले ही उसमें भारतीय जनता पार्टी सहित किसी भी राजनैतिक दल के लोग शामिल हों।

श्री यादव ने यह बात फतेहपुर में एक भेंट में कही। उन्होंने कहा कि द्वारिकापीठ के शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती ने राम मन्दिर शिलान्यास के सन्दर्भ में अपनी नीयत नहीं बदली तो उनकी नजरबन्दी बढ़ा दी जाएगी। उन्होने कहा कानून एवं व्यवस्था भंग होने की आशंका में द्वारका पीठ के जगत्गुरु शंकराचार्य स्वरूपानन्द सरस्वती की गिरफ्तारी करने के अतिरिक्त सरकार के सामने कोई दूसरा रास्ता नहीं था।

काश्मीर की स्थिति पर एक विशेष गोष्ठी

दिल्ली ६ मई। आर्य समाज पंजाबी बाग एक्स्टैन्शन नई दिल्ली के उत्सव पर कश्मीर पर एक विशेष गोष्ठी का आयोजन हुआ। जिसमें स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के अतिरिक्त भारतीय जनता पार्टी के सांसद श्री मदनलाल खुराना, कांग्रेस आई के सांसद श्री एच०के०एल० भगत और जनता दल के सांसद चौधरी तारीफसिंह ने भाग लिया। स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि उन्होंने पूर्व प्रधानमन्त्री श्री राजीवगांधी को कई बार कहा था कि पाकिस्तान के समूचे सीमा क्षेत्र में सुरक्षा पट्टी का निर्माण करके उसमें

(शेष पृष्ठ १२ पर)

सम्पादक—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

माननीय श्री प्रधानमन्त्री तथा मुख्यमन्त्री (उत्तर प्रदेश) को श्री रेवती रमन एडवोकेट मन्त्री नगर आर्यसमाज लखनऊ का नगर की

प्रबुद्ध जनता की तरफ से ज्ञापन

कश्मीर में हमारे संविधान के मूलाधार "धर्म निरपेक्षता" के सिद्धांत को गम्भीर चुनौती दी जा रही है और ऐसा प्रतीत हो रहा है कि सरकार इस चुनौती का मुकाबला करने में समुचित दृढ़ता नहीं दिखा पा रही है। अपने ही देश में अब्दुल्ला-बुखारी जैसे लोग शासन को इस्लामी साम्प्रदायिक उन्माद के सम्मुख झुका देना चाहते हैं तथा मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्रों में इस्लामी शासन चलाने की छूट चाहते हैं।

शासन ऐसी दशा में अपनी नीति स्पष्ट करे

अब्दुल्ला बुखारी ने और उन जैसे फिरकापरस्त लोगों ने सिन्ध आंदोलन के लिए भारत को दोषी ठहराने का दुस्साहस किया है।

देश का शासन, प्रदेश की हुकूमत इन घोर साम्प्रदायिक जिहाद समर्थकों को बरदाश्त न करे, और इन्हें मुख्य मूल राष्ट्रीय विचार धारा के साथ चलने को विवश करे, यह आज इस प्रदेश की शान्त किन्तु विचारशील जनता की मांग है।

प्रदेश की प्रबुद्ध जनता चाहती है कि—

१—कि हमारे देश के एक बड़े भू-भाग (पाक अधिकृत कश्मीर) को अविलम्ब मुक्त कराकर समूचे कश्मीर को विधि अनुसार भारत का अंग बनाकर उसे इस्लामी दासत्व से छुड़ाने की युद्धस्तरीय कोशिश कीजिए।

२—कश्मीर व पंजाब के लिए मजबूत सलाहकार समितियां, प्रधानमन्त्री, मुख्यमन्त्री, तथा वहां के राज्यपालों एवं अवकाश प्राप्त सेनाधिकारियों को शामिल करके बनाई जावे।

३—निष्ठावान जन नेताओं, विद्वानों तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के सर्वोच्च नेताओं से उच्चस्तरीय परामर्श नियमित रूप से लिया जाय।

४—सम्पूर्ण कश्मीर पर सैनिक विजय प्राप्त करके राजनैतिक प्रक्रिया व सामाजिक आन्दोलन चलाये जाएं।

५—कश्मीर में केवल भारत सरकार द्वारा संविधान के अनुरूप अल्पमत द्वारा संचालित वे विद्यालय ही चलने दिए जाएं जहां राष्ट्रीय एकता का पाठ तथा संविधान के प्रति निष्ठा का संकल्प नियमित रूप से किया जाय।

६—पाकिस्तान में अल्पमत के लोगों की संख्या में कमी क्यों और कैसे आई इसकी जांच कराई जाए।

७—पाकिस्तान में अल्पमत के पूजा स्थलों का सर्वेक्षण कराया जाए और जिन मन्दिरों को नष्ट किया गया है उनकी पुर्नस्थापना की जोरदार मांग की जाय।

८—भारत, उसके संविधान व ध्वज की निन्दा तथा अपमान करना कठोर रूप से दण्डनीय अपराध करार दिया जाय तथा अकेले पुलिस अधिकारी की साक्ष्य को पर्याप्त मानते हुए समरी ट्रायल की व्यवस्था की जाय।

भारत की अखण्डता और राष्ट्रीय सांस्कृतिक धरोहर व इतिहास की रक्षा करना आपकी जिम्मेदारी व दायित्व है हमारी आशायें अपेक्षायें आप पर विश्वास करती हैं आप निर्णायक कदम दृढ़ संकल्प के साथ उठाइए, पूरा देश आपका साथ देगा।

गोवंश की निकासी पर रोक के लिए उड़न दस्ते

विदिशा २ मई। मध्य प्रदेश के मुख्यमन्त्री सुन्दर लाल पटवा ने कहा है कि उनकी सरकार प्रदेश में गौ हत्या बन्द करवाने के लिए प्रतिबद्ध है। राज्य से गोवंश की चोरी छिपे निकासी को रोकने के लिए शीघ्र ही उड़न दस्ते बनाये जायेंगे।

श्री पटवा ने सोमवार को यहां से लगभग तीस किलोमीटर दूर ग्राम पीपल खेड़ा में आयोजित किसान सम्मेलन तथा हाई स्कूल भवन के लोकार्पण समारोह में दावा किया कि उनकी सरकार जन अपेक्षाओं की पूर्ति की दिशा में धीरे-धीरे किन्तु मजबूती से कदम बढ़ा रही है।

स्वामी अग्निवेश ने जगतगुरु शंकराचार्य की गिरफ्तारी को उचित बतलाया और समर्थन किया

८ मई। स्वामी अग्निवेश ने शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द की गिरफ्तारी को राष्ट्रहित में उचित कदम बताया है। इसके लिए उन्होंने उत्तर प्रदेश सरकार का समर्थन किया। उन्होंने कहा कि शिलान्यास की अनुमति देने से उत्तर प्रदेश में ही नहीं बल्कि समूचे देश में हिंसा और साम्प्रदायिक वैमनस्य का वातावरण उत्पन्न हो सकता था।

(हिन्दुस्तान ८-५-९० से)

धधकता कश्मीर समस्यायें और समाधान

आज दिनांक २९-४-९० को आर्य समाज, स्टेशन रोड (गंज) मुरादाबाद में साप्ताहिक सत्संग में धधकता हुआ कश्मीर पर विशेष सभा आयोजित की गई। जिसमें अनेक विद्वानों ने भाग लिया और कश्मीर समस्याओं पर अपने-अपने विचार प्रकट किये। नगर के विख्यात श्री डा० हंसराज चोपड़ा, श्री जगन्नाथ सिंघल, श्री यशपाल आर्य बन्धु, श्री जगदीश आर्य और अन्य वक्ताओं ने अपने-अपने विचार व्यक्त किये। और सर्वसम्मति से निम्न प्रस्ताव पास किये। आज की यह सभा भारत सरकार से मांग करती है—

१—सीमा पट्टी को दस वर्ष के लिये सेना को सौंप दिया जाये।

२—अवकाश प्राप्त सैनिक परिवारों को सीमा के पास बसाया जाये और उन्हें मताधिकार दिया जाये।

३—धारा ३७० को तुरन्त समाप्त कर कश्मीर का विशेष स्थान समाप्त किया जाये।

४—राष्ट्रद्रोही तत्वों को समाप्त करने हेतु सशक्त प्रभावी प्रक्रिया अमल में लाई जाये।

—मन्त्री आर्यसमाज स्टेशन रोड, मुरादाबाद

सूचना

आर्य समाज बुद्धिजीवी सम्मेलन के संयोजक डा० प्रशान्त वेदालंकार ने आज यहां बताया कि उनके पास सैकड़ों पत्र आये हैं जिनमें ३० सितम्बर, १-२ अक्तूबर ८९ को दिल्ली में हुए सम्मेलन में हुए सम्मेलन में व्यक्त विचारों को क्रियान्वित करने की प्रगति पर प्रश्न किये गए हैं।

डा० प्रशान्त वेदालंकार ने बताया कि अभी उक्त सम्मेलन में व्यक्त विचारों को एकत्रित व सम्पादित करने का कार्य चल रहा है। ये विचार शीघ्र ही प्रकाशित होंगे। इनके प्रकाशित होने पर इन्हें क्रियान्वित करने पर शीघ्र ही योजना बनायेंगे।

डा० प्रशान्त वेदालंकार ने यह भी बताया कि जयपुर में १८ से २० मई १९९० को आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान शताब्दी समापन समारोह में भी बुद्धिजीवी सम्मेलन के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए इसके संयोजक श्री सत्यव्रत सामवेदी ने कुछ विचार सम्मेलन रखे हैं।

—डा० प्रशान्त वेदालंकार ७/२, रूपनगर, दिल्ली

आर्य कन्या की आवश्यकता

गुरुकुल स्नातक, श्रेष्ठ ब्रह्मचारी, योग में संलग्न, सुन्दर, लगभग २८ वर्षीय आर्य वीर के लिए एक सुसंस्कारी आर्य परिवार की कन्या की आवश्यकता है। गुरुकुल की स्नातिका को वरीयता दी जायगी। लड़के के माता पिता मूलरूप से मारवाड़ (राजस्थान) के निवासी हैं। परन्तु देहली में ही व्यवसाय एवं निवास है।

पत्र व्यवहार का पता—

(१) सोमेश्वर देवार्य
डी०८/१२९, यमुना विहार
दिल्ली-११००५३

(२) भवर देवार्य
आर्य समाज नाडोलवर
जि० पाली [राज०]

सम्पादकीय—

प्रेरणा के स्रोत पद्मभूषण स्व० डा० दुःखनराम जी

आज डा० दुःखनराम जी हमारे सभी के लिए बीते युग के इतिहास के पन्ने हो गए। डा० साहब के जीवन की उपलब्धियां श्रम, लगन और निष्ठा की परिकल्पना रही।

श्रद्धेय डाक्टर साहब की प्रतिभा और इनके जैसे सपूत के पांव पालने में ही दिखाई देने लगे थे। बाल्यावस्था से लेकर जीवन के अन्तिम क्षण तक शिथिलता और असावधानता कभी देखने को नहीं मिली।

जो चमक अपर प्राइमरी पाठशाला में रही वही प्रतिभा विश्वविद्यालय के कुलपति तक में विद्यमान रही थी।

प्राइमरी पाठशाला से विकास का प्रथम सोपान आरम्भ तथा गुरुओं की दृष्टि में आना। प्रभावोत्पादक शैली, सुन्दर, सुडौल लेखन की कला यह तत्व थे दृष्टि के चढ़ने के।

दो वर्ष की आयु में डा० जाकर हुसैन को देखकर डाक्टर बनने की इच्छा जागी। डा० राम के तीन सम्बल थे—

(१) गुरु यदुनाथ पाण्डेय का आशीर्वाद तथा

(२) डा० जाकर हुसैन का उदाहरण और अपना उच्चादर्श।

पिताजी के अभाव में इनका पालन पोषण चाचा श्री रामगुलाम राम ने किया। और पिता का अभाव कभी खलने नहीं दिया।

शिक्षा काल अर्थाभाव के कारण डा० राम के जीवन में दो संकल्प थे सदा दर्जा क्लास में प्रथम आना तथा और छात्रवृत्ति पाना। इन दोनों संकल्पों को लेकर ही सदा आगे बढ़ते रहे।

संस्कृत से प्रेम—

श्री बोखबोले साहब से प्रेरणा प्राप्त कर संस्कृत विद्यालय के प० बलदेव शर्मा से मिले और निश्चय हुआ कि वह उन्हें संस्कृत पढ़ायेंगे और वह उन्हें अंग्रेजी पढ़ायेंगे। पंडित जी को यह बात पसन्द आ गई। १९१५ में पढ़ना शुरू किया तो १९१७ में बिहारोत्कल व्याकरण प्रथमा परीक्षा में उड़ीसा के छात्रों में सर्वप्रथम आये। पंडित जी के सान्निध्य में डा० साहब का संस्कृत के प्रति अनुराग बढ़ा।

स्कूल से आने के बाद घर पर बच्चों को पढ़ाते। इससे लालटेन का तेल मिलता था अध्यापन व्यस्तता रात में २ घण्टे सोते थे।

१९१५ में १६ वर्ष की आयु में विवाह हो गया था तब घर की आर्थिक दशा अच्छी नहीं थी। इनके दादा पैदल काम की तलाश में कलकत्ता गये थे। छोटे काम से बड़ी दूकान लगाई और आमदनी में वृद्धि की।

शरीर से दुर्बल सहसाराम की गोशाला के पास पंजाबी साधु रहते थे उनकी प्रेरणा से व्यायाम करने लगे। जिससे शरीर सुदृढ़ होने लगा। पटना विश्वविद्यालय से मैट्रिक पास कर विज्ञान की पढ़ाई की इच्छा जगी। पर घर वाले व्यवसाय में लगाना चाहते थे या ओवरसियर बनें। पर उनके मन में डाक्टर बनने की प्रबल इच्छा थी।

संकल्पों की पूर्ति में संघर्ष—

पटना में पढ़ने के लिये धन चाहिए था। आपने कुली गिरी से लेकर जूतों की सफाई तक का काम किया। एक जलपान गृह में एक सज्जन ने इन्हें समझा कि यह जूता साफ करने वाला मैट्रिकुलेट तथा संस्कृतज्ञ भी है।

उन्होंने डा० साहब को समझाया और भर पेट भोजन कराया।

युग के पक्के तथा स्वाभिमान के धनी प० दुर्गाप्रसाद दुबे से भेंट हुई। इन्होंने अपने बालक को पढ़ाने हेतु डा० साहब को नियुक्त किया। छः मास में उस बच्चे में अद्भुत परिवर्तन ला दिया। इससे डाक्टर जी में अध्यापक बनने में विशेषता प्रकट होती है।

आई एस-सी परीक्षा पास कर इनके चाचा ने अनेक विरोधों के होते हुए आगे पढ़ने की अनुमति दे दी और आगे का मार्ग प्रशस्त हो गया।

पटना से कलकत्ता—

अध्यवसायी-स्वावलम्बन के धनी दुःखनराम ने वहां भी ट्यूशन शुरू की कभी कभी जीवन संघर्ष में आने वाली छोटी घटना का भी विराट परिणाम सुखद होता है। १९२३ में मेडिकल कालिज के तृतीय वर्ष में डाक्टर साहब के साथ भी ऐसी घटना घटी।

डा० अजित कुमार गुहा ने बी०एस०सी० पास कर मेडीकल में भर्ती हुए तो उन्होंने कहा तुम केवल एम० बी० कहे जाओगे और मेरे नाम के साथ बी० एस० सी०-एम० बी० दोनों उपाधियां होंगी। डा० साहब को यह बात लग गई और चुपचाप धुन के धनी मेडिकल की पढ़ाई के साथ आपने बी० एस० सी० में भी प्रवेश ले लिया, अध्ययन चलता रहा। अध्ययन के साथ-साथ प्रैक्टिस भी शुरू कर दी। एम० बी० करने के बाद प्रैक्टिस से धन कमाया तो पहली बार पैण्ट (सूट) सिलवाया। पूरे विद्यार्थी जीवन में आपने धोती कुर्ते से निर्वाह किया। १९२५ में एम० बी० परीक्षा तथा बी० एस० सी० की उपाधि एक साथ देखकर आश्चर्य हुआ।

आर्य समाज में प्रवेश

जीवन की यह विशेषता थी कि वे मित्रों के प्रति विश्वस्त, सहृदय तथा एक निष्ठ रहे। कलकत्ता प्रवास में घनिष्ट मित्र बन श्री मुन्शीलाल जी, जो पक्के आर्य समाजी थे डाक्टर साहब परिवार से सनातन धर्मी थे।

मुन्शीलाल जी के विचारों का प्रभाव आप पर पड़ा और आप उनके साथ जाना, सत्संग तथा साहित्य को पढ़ना। यह क्रम २० से २४ ई० तक चलता रहा।

आपने प० अयोध्याप्रसाद के वेद मन्त्रों की सरल सुबोध व्याख्या से इतने प्रभावित हुए कि आप हर रविवार को सत्संग में जाना, ध्यानपूर्वक सभी कार्यों को समझकर करना आपका मन प्रभावित हुआ। आर्य समाज के समाज सुधार सम्बन्धी कार्यक्रमों ने तथा अन्धविश्वास, पाखण्ड और विवेकहीन पुरानी परम्परा की विरोध भावना ने दुःखनराम को आर्यसमाज का अनुयायी बना दिया।

समाज सेवा की लगन

आर्य हिन्दू संस्कृति के प्रति मन में श्रद्धा जो थी वह हिन्दू एकता का समर्थक आर्य समाज को पाया। हिन्दू महिलाओं पर अत्याचार, हिन्दू मुस्लिम दंगों, डाक्टर जी ने अपनी सूझबूझ व सेवा से अनेक खतरे मोल लेकर समाज व नारी जाति का उद्धार किया।

छात्रावास से चिकित्सक—

विदेश यात्रा का विशेष अध्ययन से विभागीय योग्यता प्राप्त कर लौटे तब पटना वि० वि० में डाक्टर पद पर नियुक्ति हुई। डाक्टरी पेशे में अधिक से अधिक छात्रों, समाज सेवियों जन प्रतिनिधियों, सामाजिक व्यक्तियों से मिलकर काम करने की उनकी प्रवृत्ति थी।

डा० राम कहा करते थे कि हमें ज्ञान की खोज में सतत—

प्रयत्नशील रहना चाहिए। किसी भी आविष्कार या सूझ को अन्तिम मानकर रुकना नहीं चाहिए। आपकी यह धारणा रही कि विज्ञान स्थिर बल्कि गतिशील है सदा प्रेरणा देने में छात्रों को परिश्रम मनोयोग, एवं अनुसन्धान के बल पर मनुष्य विज्ञान को आगे बढ़ा सकता है।

इसी अध्यवसाय से—

डा० राम पटना मेडिकल कालिज में प्राचार्य डीन, प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष भी रहे। तथा छात्र-छात्रों के लिए विशेष सुविधायें भी दिलायी।

कुलपति के रूप में—

बिहार वि० वि० के कुलपति पद हेतु आपकी प्रतिभा को देखरख डा० राजेन्द्र बाबू ने इनको पहचाना और पदमभूषण की राष्ट्रीय उपाधि से भूषित कर गौरवान्वित किया तभी आपको बिहार वि० विद्यालय के कुलपति पद पर बैठाया। आपने नारी शिक्षा की आवश्यकता को अति महत्व दिया और कन्या महाविद्यालयों की स्थापना पर जोर दिया। कुलपति पद पर रहते हुए आपकी उपलब्धियां इतनी रहीं जो सभी को प्रभावित कर सकीं।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

सभी हिन्दी प्रदेश अंग्रेजी हटाने का फैसला करें

उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री ने एक बार फिर बड़ी दृढ़ता के साथ प्रदेश के सार्वजनिक कामों में अंग्रेजी के प्रयोग का विरोध किया है। शिक्षा के माध्यमों के विषय में भी अंग्रेजी के प्रयोग को समाप्त करने और अंग्रेजी माध्यम के पब्लिक स्कूलों की निन्दा की है। इससे अंग्रेजी समर्थकों और अंग्रेजी से जुड़े निहित स्वार्थ वालों में एक प्रकार की बौखलाहट आ गई है। कई अंग्रेजी अखबारों में खबरें ऐसी छपी हैं जैसे मुलायमसिंह ने अंग्रेजी प्रेमियों के खिलाफ कोई जंग छेड़ दी है। जहां अंग्रेजी अखबारों की यह शरारत जारी है वहीं पब्लिक स्कूलों के ईसाई समर्थकों ने भी खतरे की घंटी बजा दी है।

भाषा के इस अहम सवाल पर जब भी कुछ करने की कोशिश की गई है तब अंग्रेजी प्रेमी और ईसाई धर्म के नाम पर देश में गुलाम मानसिकता को निरन्तर जीवित रखने वाले लोग सामने आ जाते हैं। संविधान के मौलिक अधिकारों से लेकर धर्म निरपेक्षता, अल्पसंख्यकों के अधिकार की दुहाई दी जाने लगती है। ईसाई मिशनरी स्कूलों के पादरी भी एकजुट हो जाते हैं और उनकी हां में हां मिलाने वाले ये अंग्रेजी के प्रेमी भी उनके साथ हो लेते हैं।

इन स्कूलों के संचालक भारतीय पादरी आज भी यह समझते हैं कि यह देश कभी न कभी फिर से अंग्रेजी की छत्रछाया में आएगा और यह तभी सम्भव होगा जब पूरा देश धीरे-धीरे करके संस्कार हीन होकर ईसाई धर्म और ईसाई धर्म के प्रभाव में आएगा। आज उन्होंने अपनी ऐसी स्थिति बना ली है कि देश के प्रशासन तक को यह साहस ही नहीं होता कि वे इन संस्थाओं को छू सकेंगे। जब कभी किसी ने भी साहस किया धर्म निरपेक्षता और अल्पसंख्यकों के हितों के नाम पर ऐसा आन्दोलन खड़ा कर दिया कि कोई भी कार्यवाही इन संस्थाओं के विरुद्ध सम्भव नहीं हो पाई। आज यदि मुलायम सिंह यादव उत्तर प्रदेश में हिन्दी लाना चाहते हैं तो इन पब्लिक स्कूलों के विरुद्ध सख्त कदम उठाने पड़ेंगे। बिना ऐसा किये हिन्दी को प्रतिष्ठित कर पाना असम्भव होगा।

खालिस्तान व कश्मीरी अलगाववादी संयुक्त मोर्चा बनाएंगे

वाशिंगटन १० अप्रैल। निर्वासित खालिस्तानी तथा पृथकतावादी कश्मीरी नेताओं की गत सप्ताह यहां हुई बैठक में भारत सरकार के खिलाफ एक मोर्चा बनाने पर बातचीत हुई। बैठक अमरीका में मुख्य सिख वादी गुट के नेता एवं खालिस्तान परिषद के अध्यक्ष डा० गुरमीतसिंह औलख जम्मू कश्मीर मुक्ति लीग के उपाध्यक्ष जाहीद अहमद राठौर व आजाद जम्मू कश्मीर परिषद के सदस्य के मध्य हुई।

बैठक के बाद एक संयुक्त बयान में डा० औलख और राठौर ने कहा कि भारत के कब्जे से अपने-अपने देश को आजाद कराने के उद्देश्य से चेरे गए संघर्ष को समर्थन देने की बात पर सहमति हुई है। राठौर ने घोषणा की है कि खालिस्तान के सिख और कश्मीर के मुसलमान भारत सरकार के दुश्मन हैं। उन्होंने कहा कि यह सरकार के दमनकारी शासन की देन है कि सिख और कश्मीरियों में एकता हुई है। उन्होंने कहा कि खालिस्तान और कश्मीर के लोग संगठित हैं और दोनों की आजादी प्राप्त करने की एक जैसी इच्छा है। [दैनिक पंजाब केसरी]

श्री रवीन्द्र कुमार गोयल द्वारा ५०००) की स्थिर निधि



श्री गोयलजी ने सार्वदेशिक सभा में आदिवासी पर्वतीय क्षेत्र के गरीब व पिछड़े हुए भाईयों के कल्याण हेतु सर्वेरक्षा महाभियान के अन्तर्गत पांच हजार रुपए की एक स्थिर निधि अपने नाम से स्थापित की है। आपकी माता जी ने भी सभा में अपने नाम से एक निधि स्थापित की हुई है।

श्री गोयल जी आर्य समाजी परिवार के धार्मिक मनोवृत्ति के सरल स्वभाव व्यक्ति हैं और इस समय भारतीय स्टेट बैंक में अधिकारी हैं।

पुस्तक समीक्षा

ऋग्वेद सुभाषितावली

लेखक—डा० कपिलदेव द्विवेदी, कुलपति
गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर (हरिद्वार)
पृष्ठ संख्या—५१२ मूल्य—१०) रु०
प्रकाशक—विश्व भारतीय अनुसंधान परिषद्
ज्ञानपुर (वाराणसी) २२१३०४

वेद ज्ञान के स्रोत तथा प्रकाशस्तम्भ हैं।

वेदों में अनन्त ज्ञान भरा हुआ है। ऋग्वेद ज्ञान का विश्वकोष है। इसमें ज्ञान, विज्ञान, अध्यात्म, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, ज्योतिष आयुर्वेद, मनोविज्ञान आदि से सम्बन्ध महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। ऋग्वेद में १०५५२ मन्त्र हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में डा० द्विवेदी ने ५८७८ सुभाषित दिए गए हैं। प्रत्येक सुभाषित के पश्चात् उसका हिन्दी अर्थ दिया गया है। समस्त सुभाषितों को विषय दृष्टि के अनुसार २८ भागों में बांटा गया है। सुविधा के लिए इनके भी उपविभाग किए गए हैं। सुभाषित ग्रन्थ के प्राण या सार होते हैं। सुभाषित को धार्मिक यज्ञादि, देवता, आचार व नीति शिक्षा, राज, राजधर्म, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्रीय, राष्ट्रीय विश्वकल्याण, आयुर्वेद, ईश्वर, ब्रह्म, शिक्षाशास्त्र, विज्ञान, कृषि, मनोविज्ञान, ज्योतिष, शिल्प, अधिकारकर्म, ललित कलाएं आदि भागों में विभक्त करके सुभाषित दिए गए हैं। पांच हजार आठ सौ अठहत्तर सुभाषित देकर डा० द्विवेदी ने महत्वपूर्ण कार्य किया है। मैं उन्हें उनके इस कार्य के लिए धन्यवाद देता हूं। इस पुस्तक की कागज, छपाई उत्तम तथा मूल्य उचित है। प्रस्तुत पुस्तक प्रत्येक आर्य परिवारों तथा पुस्तकालय में संग्रह योग्य है।

(२)

चतुर्वेद गंगा लहरी

ले०—श्री प० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

चारों वेदों के सूक्तों तथा अध्यायों का अपूर्व संकलन है। भारतीय संस्कृति के किसी भी स्वाध्यायशील व्यक्ति के लिए उपयोगी पुस्तक है मन्त्रों का विनियोग हिन्दी अंग्रेजी में पारस्परिक सम्बन्ध का विशेष ध्यान रखा है। सूक्तों, अध्यायों का संग्रह पाश्चात्य विद्वानों की विकासवादी विचारधारा के लिए एक चुनौती है साथ-२ वेदों के नये-नये कार्य से भी दिये हैं जो स्मरणीय है। मन्त्रों का चयन यज्ञों में भी किया जा सके ऐसा विनियोग भी किया गया है। उक्त आदर्शों से युक्त इस ग्रन्थ की रचना रची है इसी स्थल पर प्रश्नों के उत्तर भी बन पड़े हैं। हिन्दी के साथ अंग्रेजी में भी विवेचन है जिससे घर व बाहर भी इस गंगा की लहरों से विचारों का प्रवाह किया जा सके।

विद्वान लेखक गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक वैदिक विद्वान हैं। चिन्तन-मनन भी अपना विशेष स्थान रखता है। आर्य जगत में आपकी लेखनी अपना विशेष महत्व रखती है। इस पर आपके अनेक ग्रन्थ पठनीय हैं, चतुर्वेद गंगालहरी उसी सोपान का एक सीढ़ी का डंडा है। पाठक पुनः पढ़ें। यही पुस्तक की समीक्षा है। —सच्चिदानन्द शास्त्री

ईश्वर सिद्धि

शास्त्रार्थ महारथी पंडित रामचन्द्र देहलवी

ओ३म । सपर्य्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरꣳशुद्धमपा पविद्धम् । कविर्मनीषी परिभू स्वय भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्य समाभ्य ।। (यजु० ४० । ८ ।।

ओ३म । यऽआत्मदा बलदा यस्य विश्वऽउपासते प्रशिष यस्य देवा । यस्यच्छाया5मृत यस्य मृत्यु कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।
यजु० २५ । १ ।।

हम जो कुछ भी कार्य करते हैं वह परमात्मा के कार्यों की नकल है। अपने कार्यों से ही हम उसे पहचान सकते हैं। कई सज्जन शका करते हैं कि भगवान हमारी शकाओ का समाधान क्यो नही करता ? किन्तु उन्हे समझना चाहिये कि भगवान के कार्यों पर शका समाधान हमारे अपने ही कार्यों से होता है। आप जगत का कोई भी पदार्थ लीजिये उनका बनाने वाला कोई अवश्य है, मकान कपडा पुस्तक आदि सब किसी न किसी ने बनाये हैं।

रूमाल को ही देखिए—इसको सीने वाला और इसको बनाने वाला कोई अवश्य है। यह बात विचारणीय है कि क्या जड पदार्थ स्वय क्रिया कर सकता है ? यह देखिये यह पुस्तक दाय हाथ में रखी हैं। यह स्वय बाय हाथ में नही आ सकती। आपकी पुस्तक यदि एक स्थान से उठाकर दूसरे स्थान पर कोई रख दे तो आप पूछगे कि मेरी पुस्तक यहा किसने रखी हैं ? इन बातो से सिद्ध होता है कि जड पदार्थ परतन्त्र हैं—दूसरे के तन्त्र अर्थात् प्रबन्ध के अधीन है वे स्वतन्त्र नही। रेलवे स्टेशन पर यदि एक बच्चा अपने पिता से बिछुड जाता है तो पिता के पुकारने पर वह बोल उठता है किन्तु यदि किसी का ट्रक रेलगाडी से छूट गया हो तो 'उस ट्रक को कोई भी पुरुष आवाज देकर नही पुकारेगा कि हे ट्रक ! तू कहा है ? अपने दनिक व्यवहारो से हम भगवान को पहचानते हैं। एक बार मे रात्रि के समय आयसमाज की अन्तरग सभा के अधिवेशन मे गया। जाते समय अपनी छडी मुझ नही मिली। मैं बिना छडी के ही चला गया।

अन्तरग सभा की बठक से वापस आया तो सब बच्चे सो गये थे। प्रात काल होने पर मैंने अपने दौहित्र स पूछा कि मेरी छडी तुमने कही रक्खी है क्या ? वह बोला नही उनकी छोटी बहिन से भी पूछा। उसने भी कहा कि मैंने भी नही उठाई। फिर इन दोनो बच्चो की माता से पूछा। वह बोली मुझ मालूम नही। अब चौथा मैं ही रह गया हूँ। मैं भी सत्य कहता हूँ कि मैंने भी उठाकर कही नही रखी है।

इसके पश्चात् मै बच्चो से बोला—मेरी छडी की आदत कुछ खराब हो गई है। वह बिना कहे ही कहा चली जाती है। यह सुनकर छोटी लडकी बोल उठी—नाना जी। ऐसा कभी नही हो सकता छडी अपने आप कही नही जा सकती भया ही छडी से बन्दरो को भगाया करते हैं उन्होने ही उठाई होगी । छडी अपने आप नही जा सकती। देखिये छोटा बच्चा भी जानता है कि जड पदार्थ स्वय कोई क्रिया नही कर सकता। वह परतन्त्र है। इसी प्रकार के अपने दनिक व्यवहार के कार्यों से हम परमात्मा के कार्यों को पहचानते हैं। ससार के जड पदार्थ स्वय नही बने किसी बनाने वाले ने ही बनाये है। जगत का रचयिता भगवान ही है।

सोते समय हम इतने बेसुध होते हैं कि चाहे कोई हमे जान से मार जाये या घर का सामान चुराकर ले जाये हमे कुछ मालूम नही होता। उस समय हम आनन्दस्वरूप परमात्मा के समीप पहुच जाते हैं। जागते हुए कई प्रकार की चिन्ताय हमे घर लेती हैं। हम श्वास लेते हैं, किन्तु वह भी स्वय नहीं लत इसमे भी किसी का इन्तजाम होता है। जिसने इस समस्त भवन का निर्माण किया है, उसी के इन्तजाम से यह सब कुछ हो रहा है।

कहते हैं कि प्रकृति सूय, चाँद समुद्र, नदी पवन वायु, अग्नि आदि को स्वय बना लेती हैं। यदि ऐसा है, तो वह जमीन बनाने के बाद क्यो रुक जाती है ? घडा तश्तरी आदि क्यो नहीं बना देती।

नही ज्ञानी परमात्मा यह सब बनाता है। जिस प्रकार स्कूल का मास्टर बच्चो को प्रारम्भ में एक लाइन लिखकर देता और फिर उसे देखकर बच्चा उसी प्रकार लिखता है इसी तरह मनुष्य की सामथ्य जहा तक नही पहुच सकती थी वहा तक उस ज्ञानी भगवान ने बनाया और उसके बाद मनुष्य बनाता है। परमात्मा अणु अणु मे व्याप्त है।

हर गुल में शजर मे, हर शै में हर बशर मे।
गर तू न देखे उसको तो है कसूर तेरा ।।

हम मनुष्यो के हो पक्षपाती हैं। एक चित्रकार मोर या कौवे का चित्र बनाता है, उसे देखकर हम उसकी प्रशसा करने लगते है कि कितना सुन्दर बनाया है मानो सचमुच का हो। दीवाली के अवसर पर मिटटी के खिलौने खरबूजे, केले, आदि बनाये जाते हैं, उन्हे देखकर हम बहुत प्रसन्न होते हैं और बनाने वाली की प्रशसा करते हैं। किन्तु यह नही सोचते कि बिना प्राण के उस कौवे और मोर मे कुछ नही और बिना मिठास और गूदे के उस केले और खरबूके मे भी कुछ नही होता। जिसने प्राणो वाले पक्षी बनाये और मधुर रस वाले फल बनाये उसके लिये हम एक शब्द भी नही कहते। (शेष पृष्ठ ६ पर)

ईश्वर सिद्धि

(पृष्ठ ५ का शेष)

परमात्मा के अस्तित्व के सम्बन्ध में भी कई लोग शंका करते हैं। परमात्मा दयालु और न्यायकारी है, वह सबकी प्रार्थना सुनता है। एक सज्जन ने शंका की कि एक कुतिया ने बच्चे उत्पन्न किये। उस के बाद कुतिया को किसी ने विष दे दिया और वह मर गई। परमात्मा ने बच्चों का ख्याल नहीं किया और उसकी प्रार्थना नहीं सुनी।

दूसरे सज्जन शंका करते हैं कि सब जीवात्मा परमात्मा के पुत्र हैं। उनकी इच्छाओं की पूर्ति करने में परमात्मा बुरी तरह फेल है, वह अपने काम में गाफिल है। इन शंकाओं का समाधान इस प्रकार हो सकता है—एक बच्चा, अपने पिता के साथ बाजार जा उसने रास्ते में कलमी बड़े देखे और पिता जी से बोला—पिता जी! मुझे एक पैसे के कलमी बड़े ले दीजिये।

पिता ने कहा—तुझे खांसी है ये तेरे खाने योग्य नहीं। थोड़ा दूर चलकर बालक ने फिर मांगे, पिता ने फिर मना कर दिया। तीसरी बार बालक ने फिर मांगे तो पिता ने धमकाया और कहा कि तू ना समझ है, यह तेरे खाने योग्य नहीं है। बालक निराश होकर चुप रह गया। घर वापस आकर उस बालक ने अपने जैसे कुछ बालक इकट्ठे किये और बोला कि मेरे पिता जी मेरे लिये सब कुछ करते हैं। किन्तु कलमी बड़े खिलाने में उन्होंने बड़ी कंजूसी दिखाई। दूसरे बालक ने कहा—हां मेरे पिता जी भी ऐसा ही करते हैं। तीसरे ने भी इसका समर्थन किया। इस प्रकार वहां सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव स्वीकृत हो गया कि हमारे पिताजी हमारी इच्छाओं की पूर्ति करने में बुरी तरह फेल है, वे अपने काम में गाफिल हैं। हमें बच्चों की तरह फैसला नहीं करना चाहिए। बड़ों की तरह सोचना चाहिये।

हमने परमात्मा और मनुष्य के काम के बीच में एक लाईन खींच दी हैं।

शंका करने वाले यह भी शंका करते हैं कि परमात्मा अपने कार्य में गाफिल है। वह चोर नहीं पकड़ सकता। जैसे लार्ड हार्डिंग पर गोली चलने की घटना के अवसर पर पुलिस ने गोली चलाने वाले को एक रात में ही गिरफ्तार कर लिया, किन्तु परमात्मा रात-रात में गिरफ्तार नहीं कर सकता। ऐसी बात नहीं है।

परमात्मा का काम जहां समाप्त होता है, वहां वह अपना काम राजा के सुपुर्द कर देता है। जिस कार्य को राजा नहीं कर सकता उसे परमात्मा स्वयं करता है और शेष राजा के द्वारा करवाता है। चोरों की गिरफ्तारी भी राजा के द्वारा परमात्मा ही करवाया करता है।

ईश्वर के सम्बन्ध में विश्वास का न होना तो क्या हमें अपने कार्यों पर भी विश्वास नहीं। अपने कार्यों से ही हम परमात्मा को पहचानते हैं। कई लोग शंका करते हैं कि परमात्मा पाप करते हुए मनुष्य को रोकता क्यों नहीं? जिस प्रकार एक मास्टर जो विद्यार्थी को बड़े प्रेम से पढ़ाता है कई बार उसे बताता है। उसके न पूछने पर भी उसे समझाता। वही मास्टर परीक्षा के समय विद्यार्थी के पास खड़ा हुआ देख रहा है कि यह प्रश्न का उत्तर अशुद्ध लिख रहा है, किन्तु वह उसे न तो बताता है न ही रोकता है। इसी प्रकार परमात्मा मनुष्यों की परीक्षा लेता है और पाप करते हुए उन्हें रोकता नहीं इसी प्रकार के हमारे काम परमात्मा के प्रति हमारी शंकाओं का निवारण करते हैं। अच्छा कार्य करने से हमें अच्छा फल मिलता है और पाप करने से हमें बुरा फल मिलता है। (क्रमशः)

सब वैदिक धर्मी बन जाओ

भ्रष्टाचारी, अत्याचारी गुण्डों से निजि देश बचाओ।
भारत के नेताओ, जागो, उठो, बढ़ो, कर्त्तव्य निभाओ।।
देवों की पावन धरती पर, असुरों ने डाला है डेरा।
मानवता के दुश्मन पापी, निशदिन लगा रहे हैं, फेरा।।
राम, कृष्ण का प्यारा भारत, रावण और कंस ने घेरा।
दया, धर्म का सूर्य अस्त हो गया, रहा बढ़ हाय अन्धेरा।।
वैदिक ज्योति जलाओ स्वामी, दयानन्द बन नाम कमाओ।
भारत के नेताओ जागो, उठो बढ़ो कर्त्तव्य निभाओ।।
काश्मीर, पंजाब रहे जल, दिल्ली में लग रही आग अब।
देशद्रोही निर्दोषों पर, नित्य-गोलियां रहे दाग अब।।
छोड़-छोड़ करके घर अपने, दीन-दुःखी जन रहे भाग अब।
भूखे फिरते हंस देखलो, मोती खाते नीच काग अब।।
काले नागों के फन कुचलो, अर्जुन, भीम, नकुल बन जाओ।
भारत के नेताओ जागो, उठो, बढ़ो, कर्त्तव्य निभाओ।।
सुनो तुम्हारी कमजोरी ने, ही दुष्टों को बढ़ा दिया है।
दुःख यही है हमको तुमने, नहीं देश का ध्यान किया है।।
देश, धर्म को भूल नेह, तुमने कुर्सी से लगा लिया है।
बड़े स्वार्थी हो दुखियों के फटे दिलों को नहीं सिया है।।
देशभक्त ईमानदार बन, कर जनता का कष्ट मिटाओ।
भारत के नेताओ जागो उठो बढ़ो कर्त्तव्य निभाओ।।
सुख चाहो तो सबसे पहले, 'सब वैदिक धर्मी बन जाओ।'
स्वामी श्रद्धानन्द बनो तुम, वीर भाजपत बन दिखलाओ।।
जाति-पाति के ऊंच-नीच के, सभी विषैले भेद मिटाओ।
एक समान नियम भारत में लागू जल्दी से करवाओ।।
आर्य राष्ट्र बनाओ अपना, भारत को जग में चमकाओ।
भारत के नेताओ जागो, उठो, बढ़ो कर्त्तव्य निभाओ।।

—पं० नन्दलाल निर्भय भजनोपदेशक

'कस्मै देवाय' पर एक विचार

डा० प्रशस्यमित्र शास्त्री

ऋग्वेद के दशम मण्डल का १२१ वां सूक्त 'हिरण्यगर्भ सूक्त' के नाम से विख्यात है। इसके द्रष्टा प्रजापति के पुत्र हिरण्यगर्भ ऋषि हैं तथा सूक्त का देवता प्रजापति है।

इस सूक्त में कुल दस मन्त्र हैं। केवल अन्तिम मन्त्र को छोड़कर शेष समस्त नौ मन्त्र का अन्तिम चरण है—'कस्मै देवाय हविषा विधेम।' इस लेख में इसी चतुर्थ चरण में विद्यमान 'कस्मै' शब्द पर कुछ विचार प्रस्तुत किया जा रहा है।

अनेक विद्वानों ने कस्मै' इस पद को 'किम्' इस सर्वनाम शब्द का चतुर्थ्यन्त रूप माना है। इस अवस्था में 'कस्मै देवाय' का अर्थ होगा 'किस देवता के लिए।' कुछ विद्वानों का यह भी विचार है कि इन नौ मन्त्रों का अन्तिम भाग प्रश्नरूप है तथा इसका उत्तर तत्तत् मन्त्र के शेष चरणों में है। अर्थात् किस देवता के लिए हम हवि प्रदान करें, इसका उत्तर है जो हिरण्यगर्भ रूप में सृष्टि के आरम्भ में विद्यमान था आदि।

एक दूसरे प्रकार की व्याख्या भी विद्वानों को मान्य है। इस दूसरे प्रकार की व्याख्या है—कस्मै देवाय' का अर्थ है 'काय देवाय' अर्थात् 'सुखस्वरूपाय देवाय' तात्पर्य यह है कि यहां यह 'कस्मै' शब्द प्रश्नवाचक सर्वनाम 'किम्' शब्द से न बनकर सुखवाचक 'क' शब्द से बना है।

किन्तु यहां ऐसा मानने पर एक और उलझन उपस्थित होती है। वह यह कि यदि क' शब्द सर्वनाम नहीं है तो इस क' शब्द का रूप 'कस्मै' कैसे बन गया। ब्राह्मण ग्रन्थों में जहां भी सुखवाचक 'क' शब्द चतुर्थ्यन्त रूप प्रयुक्त है वहां 'काय' यही रूप है कस्मै' नहीं। पाणिनि का सूत्र सर्वनाम्नः' स्मै है जो कि सर्वनामवाचक 'किम्' शब्द के बाद ही 'ङे' इस चतुर्थी विभक्ति के प्रत्यय को 'स्मै' आदेश प्राप्त कराता है। इस प्रकरण में कहीं भी 'बहुलं छन्दसि' का भी उल्लेख नहीं कि सर्वनाम के अतिरिक्त 'क' आदि सुखवाचक शब्दों के साथ भी 'स्मै' आदेश किया जा सके। अतः इस समस्या के समाधान के लिए हम यही कहने को बाध्य हैं कि सुखवाचक 'क' शब्द का 'कस्मै' यह प्रयोग छान्दस ही माना जाना चाहिए।

चतुर्वेद-भाष्यकार आचार्य सायण ने अपने ऋग्वेदभाष्य में इस सूक्त की व्याख्या करते हुए प्रथम मन्त्र में ही कस्मै' शब्द के चार अर्थों का निर्देश करते हुए लिखा है:—

कस्मै अत्र किं शब्दोऽनिर्ज्ञातस्वरूपत्वात् प्रजापतौ वर्तते।
यद्वा सृष्ट्यर्थं कामयते इति कः कमेर्ड. प्रत्यय.।
यद्वा कं सुखम् तद्रूपत्वात् क इत्युच्यते।
अथवा इन्द्रेण पृष्टः प्रजापतिर्मदीयं मह-त्वं तुभ्यं प्रदायाहं क. कीदृश: स्यामित्युक्तवान् स इन्द्रः।
प्रत्यूचे यदीदं ब्रवीष्यहं क. स्यामिति तदेव त्वं भवेति।

इस उद्धरण से स्पष्ट है कि आचार्य सायण ने अपने वेदभाष्य में 'कस्मै' शब्द के निम्न चार अर्थ माने हैं:—

(१) 'किम्' यह सर्वनाम शब्द प्रजापतिवाचक है। इस 'किम्' शब्द से कस्मै' रूप बनने में कोई कठिनाई नहीं है। क्योंकि 'सर्वनाम्नः स्मै' इस सूत्र से 'स्मै' आदेश विभक्ति को हो दिया जायगा। इसी कारण आचार्य सायण के अपने भाष्य में आगे लिखा भी है। यदा ऽसौ किं शब्दस्तदा सर्वनामत्वात् स्मै भावः सिद्धः। यदा तु यौगिकस्तदा व्यत्ययेनेति द्रष्टव्यम्।

किन्तु सर्वनाम "किम्" शब्द को प्रजापतिवाचक मानना सायणाचार्य की अपनी कल्पना है। यतो हि सर्वनाम 'किम्' शब्द प्रश्नवाचक है अतः अविज्ञात स्वरूप वाला प्रजापति जिज्ञासुओं के लिए सदा अनुसन्धेय ही रहता है, इसी सादृश्य के कारण ही सम्भवतः 'किम्' शब्द को प्रजापति के स्वरूप के प्रति उत्सुक जिज्ञासापूर्ण प्रश्नवाचक भाव के बोधक रूप में माना गया है।

ब्राह्मण ग्रन्थों में प्रजापति का वाचक सर्वनाम 'किम्' शब्द नहीं है प्रत्युत अकारान्त नपुंसकलिंग या पुंल्लिंग 'क' शब्द है। यथा

(क) को वै प्रजापति (माध्यन्दिन शतपथ ७।४।१।१९)

(ख) को नामासीति प्रजापतिर्वै को नाम। (काठक सकलन १३८।५)

(ग) को व प्रजापतिः (गोपथ ब्राह्मण २।६।३, शांखायन आरण्यक २।१, शतपथ ब्राह्मण ६।२।२।५)

(घ) प्रजापतिर्वै कः (तै. संहिता १।६।८।५, मैत्रायणी १।१०।१०, ऐतरेय २।३८, कौषीतकी ५।४, तैत्तिरीय २।२।५।५, शतपथ ६।७।३।४) आदि।

इन समस्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि प्रजापतिवाचक 'क' शब्द अकारान्त ही है; हलन्त सर्वनाम 'किम्' शब्द नहीं। केवल इसके चतुर्थ्यन्त रूप 'कस्मै' के निर्माण को लक्ष्य में रखकर ही आचार्य सायण इस सर्वनाम किम्' शब्द को प्रजापतिवाचक मान रहे हैं। यह उनकी विवशता ही है।

(२) आचार्य सायण के द्वितीय अर्थ के अनुसार 'कस्मै' शब्द का अर्थ है—कामना करने वाले के लिए। यहां यह शब्द कामनार्थक 'कम्' धातु से 'ड' प्रत्यय एवं टि का लोप होकर 'क' बनता है। अर्थ हुआ सृष्टि की उत्पत्ति की कामना करने वाले (प्रजापति) देवता के लिए। यहां 'क' शब्द का चतुर्थ्यन्त 'कस्मै' रूप व्यत्यय से ही 'ङे' विभक्ति को 'स्मै' आदेश होकर बना है जिसके लिए आचार्य सायण ने लिख भी दिया है कि—यदा तु यौगिकस्तदा व्यत्ययेनेति द्रष्टव्यम्।

(३) तीसरे अर्थ में यह शब्द सुखवाची 'क' शब्द से बना है। अतः "कस्मै" शब्द का अर्थ है सुखस्वरूप (प्रजापति) के लिए।

इस शब्द के सुखवाची होने का संकेत ब्राह्मण ग्रन्थों में भी पाया जाता है। यथा—

(क) अथो सुखस्य वा एतन्नामधेयं 'कम' इति।
(कौषीतकी ५।४ एवं गोपथ ब्राह्मण २।१।२२)

(ख) सुखं वै कम् (गोपथ ब्राह्मण २।६।२),

इस प्रकार 'कस्मै देवाय' का इस मन्त्र में अर्थ होगा कि सुखस्वरूप देवता ब्रह्म है या प्रजापति है यह सब भाष्यकार की अपनी ऊहा पर निर्भर करता है कि इसका अर्थ क्या करे।

(४) आचार्य सायण द्वारा प्रदत्त चौथे अर्थ में 'क' यह प्रजापति की एक विशिष्ट संज्ञा मानी गई है।

इस संज्ञा के बारे में आचार्य सायण ने ऐतरेय ब्राह्मण का एक रोचक कथानक के अनुसार एक बार इन्द्र ने प्रजापति के पास पहुँचकर उससे उसके महत्व की याचना की। इस पर प्रजापति ने कहा कि यदि मैं तुम्हें अपना महत्व दे दूंगा तो फिर मैं क्या (कौन?) रहूंगा। इस पर इन्द्र ने कहा कि जो तुम 'क्या रहूँगा' या 'कौन रहूँगा' (कः स्याम् ?) यह कह रहे तो तुम 'क्या' या कौन (क) ही रहो। इसी कारण तब से प्रजापति की संज्ञा 'क' यह पड़ गयी है। यथा—

स प्रजापतिरब्रवीदथ कोऽहम् इति यदेवैतदवोच इत्यब्रवीत्ततो वै को नाम प्रजापतिरभवत्को वै नाम प्रजापतिः। (ऐतरेय ब्राह्मण ३/२१) इस चतुर्थ अर्थ में भी 'क' यह प्रजापति की विशिष्ट संज्ञा है किन्तु इसकी सर्वनाम संज्ञा और चतुर्थ्यन्त कस्मै' प्रयोग के लिये हमें व्यत्यय के सिवाय अन्य कोई उपाय नहीं।

तात्पर्य यह है कि आचार्य सायण द्वारा प्रदत्त चार अर्थों में अन्तिम तीन अर्थ जिस 'क' शब्द के हैं उसका चतुर्थ्यन्त रूप 'कस्मै' बनाने के लिए हमें सर्वनाम संज्ञा करनी आवश्यक है अन्यथा 'क' शब्द का 'कस्मै' रूप न बनकर 'काय' यह रूप बनेगा।

किन्तु प्रथम अर्थ में आचार्य सायण ने किम्' शब्द से निरूपण किया है। उसकी सर्वनाम संज्ञा स्वतः सिद्ध है किन्तु उस अर्थ में 'किम्' शब्द का हमें कहीं प्रामाणिक प्रयोग नहीं मिलता है।

शाबर भाष्य और "कस्मै देवाय"

'कस्मै देवाय" का एक अद्भुत और सुन्दर अर्थ पूर्व मीमांसा के शाबर भाष्य में दृष्टिगोचर होता है जो कि मेरे विचार से समस्त भाष्यकारों के

(शेष पृष्ठ १० पर)

शुभ विचार धारा

डा० तिलक जी शर्मा (अमरीका)

१—अच्छी विचार धारा सफलता की पहली सीढ़ी है—अच्छा कर्म दूसरी सीढी है।

२—जहां ज्ञान की कमी है; वहां पर घटियापन व स्वार्थपन आ बैठता है।

३—यदि हम मन व अहंकार की बातो में फस जावेगे और अपनो से नाराज रहेंगे—तो हमारा मन अप्रसन्न रहेगा।

४—उत्साही बन कर सहायता दो और लो—फिर देखो चमत्कार।

५—यदि अपने शरीर को स्वस्थ नही रखेंगे, तो आपके पास यह शरीर रूपी घर रहने के लिए नही रहेगा।

६—वह परिवार सभ्य है, जहां पर नारी को देवी माना जाता है।

७—ज्ञान से एकता बढती है, और एकता से खुशहाली बढ़ती है।

८—दुःख का सामना साहस से करो।

९—बीमारी किसी को भी आ सकती है, परन्तु मन को बीमार मत होने दो।

१०—अहंकार व अन्धकार हमें ईर्षा व द्वेष की ओर ले जाता है—इसका इलाज तो सत्संग व ज्ञान ही है।

११—मन को प्रसन्न रखने के लिए—हमें अच्छे नियमो का पालन करना होगा।

१२—सुस्तीपन से कोई उन्नति नहीं होती।

१३—अच्छा व्यवहार गम्भीरता की निशानी है, और बुरा बर्ताव ओछेपन की निशानी है।

१४—सतर्कता से व बुद्धिमता से समस्याओं का हल करो।

१५—अहंकार से हम दुविधा मे पड़ जाते हैं।

१६—यदि आपको किसी की कमियां पसन्द नहीं, तब उनको अपने जीवन से भी त्याग दो।

१७—थोड़ा सा समय निकाल कर आत्म-ज्ञान व ध्यान व योग अभ्यास में हर रोज लगाओ। नही तो सारा जीवन व्यर्थ मे नष्ट हो जायेगा।

गर्मी के मौसम से बचने के उपाय

गर्म लू जान ले सकती है—विशेषतया वृद्ध अवस्था मे। गर्म हवा व मौसम आपके दिल पर बोझ विशेष कर डाल सकते हैं। हीट स्ट्रोक हो सकती है।

निम्न बातो पर विशेष ध्यान दे:—

१—जिसको दिल का दौरा आता हो—हाई बल्ड-परेशर हो। जिसका दिल कमजोर हो, डायबिटज अधिक मोटापा-पन व शराबी के लिए गर्म मौसम बहुत हानि-कारक है।

२—यदि आप हाई बल्ड-परेशर व कोई डाक्टर की दवा खाते हैं—तो गर्म लू घातक बन सकती है। उस दवाई के विशेष कर साईड ऐफेक्ट व परिणाम डाक्टर से पूछें।

३—यदि लू तग करे, तो उसी समय उससे बचो।

४—यदि आपमें कम शक्ति हो व भूख न लगे—लू के कारण। इसका मतलब है कि गर्मी से बचो।

५—डाक्टर को कब बुलाओ जब यह चिन्ह लगें:—

—सिर मे चक्कर।

—बहुत कमजोरी।

—चमड़ी पर पसीना न आये।

—तेज दिल की धड़कन।

—सांस लेने में दुविधा।

—उल्टी व दस्त आने लगे।

—जोर से सिर दर्द।

—छाती मे दर्द।

—पर मे दर्द व पेंठन।

ऊपरी बातो पर ध्यान रखो—विशेषतया वृद्धो व बच्चो को लू से बचाओ।

उपाय:—

—ठण्डे पानी से कई बार स्नान करो।

—ठण्डे कमरे मे बैठो।

—गर्मी से सिर व आंखो को धूप से बचाओ।

—खुले २ कपड़े पहनो।

—कम से कम ८ व १० गिलास पानी पीओ।

शान्तमय व बुद्धिमता से गर्म मौसम से बचो।

सारांश, यह कि प्रात: चाय व कौफी का उपयोग कम करो। फलो का रस व पानी का उपयोग करो। स्वस्थ रहो।

युवाओं में सामाजिक चेतना आवे!

—लक्ष्मीकान्त गुप्त

विज्ञान की प्रगति के साथ-साथ समय अत्यन्त तेजी से बदला। पश्चात्य सभ्यता से प्रभावित हमारी विचारधारा, क्रिया कलाप, शिक्षा व संस्कृति आदि में बदलाव आया। मानवीयता का पतन होने लगा एवं नैतिक विचारधारा भी मन्द पड़ गई। चारित्रिक गठन का मार्ग अवरुद्ध सा हो गया एवं व्यक्तित्व का विकास रूक गया।

धर्म के प्रति आस्था ही न रह गई एव आध्यात्मवाद के तार छिन्न-भिन्न हो गये। भौतिकवाद के भंवर में पड़े जन 'साये के आगे साड़ी के सौन्दर्य को भी भूल गये।

आज देश की. विशेषकर नवयुवकों की ऐसी ही स्थिति है। आज खान-पान में बदलाव आया है एवं युवा जन मांस मदिरा के सेवन से भी नहीं चूकते। स्वभावत: आचार-विचार में भी गिरावट आई एवं वैज्ञानिक प्रगति के साथ ही आध्यात्मिक अवनति हुई। कहा जाता है कि आज का युवा वर्ग अनुशासनहीन है परिवारों में मान मर्यादा समाप्त हो गई है पर भावात्मक एकता दीखती है तो दहेज एवं नारी उत्पीड़न जैसे कुत्सित विचारों को लेकर।

वैदिक सिद्धान्तों पर स्तम्भित आर्यसमाज ने मानव उत्थान हेतु सर्वतोन्मुखी चेतना को जगाया है। जड़ता एवं अन्ध-विश्वासों के भटकते मार्ग से निकाल कर विवेक का मार्ग दिखाया है एवं आस्थाओं की पुनंस्थापना में अपना भरपूर योगदान दिया है। मानव कल्याण हेतु समाज में व्याप्त कुरीतियों को ही नहीं देश में फैली अलगाववादी एवं विघटनकारी शक्तियों तथा अराष्ट्रीय तत्वों से निपटने में भी पीछे नही रहा। जुझारी गतियों में अनेक आन्दोलन खड़े किये। शिक्षा के क्षेत्र में अद्‌भुत कार्य क्षमता का परिचय दिया है। आर्यसमाल का छटवां नियम कहता है—"संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना, वस्तुत: यह तभी सम्भव है जब हमारे अन्दर के गुण पनपें। जन-जन में आध्यात्मिक एवं समाज के प्रति समर्पण की भावना जाग्रति हो।

आज आर्यसमाज को देश के अन्दर फैली हुई अनेक सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक चुनौतियों का सामना करना है। युवा वर्ग देश को रीढ़ के समान है अत. आवश्यक है कि आर्यसमाज अपनी शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से युवा वर्ग में आर्यत्व की भावनाओं का समावेश करावे। युवा पीढ़ी में समाज के आर्यों में निष्ठा बढ़े एवं उनमें मिशन के कार्यों को पूरा करने के संकल्प बने तो निश्चय ही समाज सुगठित होगा एव महर्षि दयानन्द सरस्वती का "कृण्वन्तो-विश्वमार्यम्" का दिया स्वप्न पूरा हो सकेगा।

आर्य समाज की गतिविधियां

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ
आंवला का चुनाव सम्पन्न

दिनांक १९-४-१९९० को संघ की आम बैठक हुई जिसमें निम्न प्रकार चुनाव सम्पन्न हुआ—

प्रधान—श्री हेमचन्द्र आर्य, सचिव—श्री जगमोहन राठौर, संगठन सचिव—श्री रामकृष्ण दयाल, कोषाध्यक्ष—श्री यशवन्त चौहान।

इसके अतिरिक्त उपप्रधान, उपसचिव, संगठन सचिव, कार्यालय मन्त्री व कार्यकारिणी के १८ सदस्य और चुने गए।

चुनाव समाचार

—आर्य समाज हींग की मण्डी आगरा किशनलाल गर्ग प्रधान पूर्णचन्द्र आर्य मन्त्री सतीशचन्द्र गुप्त कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज विजयगढ़ अलीगढ़ ला० मूलचन्द प्रधान ला० शिव नारायण मन्त्री नरेन्द्र कुमार कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज इटाड़ी मेरठ कन्हैयाप्रसाद केसरी प्रधान शिवमूर्ती आर्य मन्त्री सरयूप्रसाद कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज टाऊन अम्बाला बी० डी० सैंदा प्रधान एच० एम० सूद मन्त्री एम० एस० मेहता कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज सरदार पटेल मार्ग सहारनपुर पूर्णचन्द जी प्रधान देवेन्द्र कुमार मन्त्री केदारनाथ जी कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज फाजिल्का प्रधान सुभाषचन्द्र बजुजा एडवोकेट प्रधान मा० मूलचन्द वर्मा मन्त्री बनवारीलाल सूना कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज जिला सभा, अजमेर की त्रैवार्षिक अधिवेशन एवं निर्वाचन सम्पन्न.—

१—अध्यक्ष-न्यायमूर्ति श्री भगवती प्रसाद जी बेरी
२—वरिष्ठ उपप्रधान श्री दत्तात्रेय जी वाब्ले
३—उपप्रधान श्री डा० प्रेमसिंह जी
४—मन्त्री श्री कृष्णराव जी वाब्ले
५—संयुक्तमन्त्री श्री रासासिंह जी रावत (सांसद)
६—उपमन्त्री श्री ओ० पी० भार्गव एवं प्रो० बी० एल० जोशी

—१५-४-९८ को आर्य समाज दीना नगर का वार्षिक चुनाव हुआ। डा० हीरादास प्रधान रघुनाथसिंह मन्त्री सुधीरकुमार कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज कोतराही का वार्षिक निर्वाचन सम्पन्न हुआ। श्री जगन्नाथ आर्य प्रधान श्री डा० राजेश्वर जिज्ञासु मन्त्री अखिल कुमार कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्यसमाज नीमच का वर्ष १९९०-९१ का निर्वाचन सम्पन्न हुआ। श्री भगवती प्रसाद कालानी प्रधान जगदीशप्रसाद एरन मन्त्री हरिप्रसाद वर्मा कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज बैंकाक का चुनाव निम्न प्रकार हुआ। रामपलट पाण्डे प्रधान प्रसिद्ध नारायण तिवारी उपप्रधान लालबहादुरसिंह सचिव जगदम्बिका शाही उपसचिव वीर बहादुरचन्द पुस्तकाध्यक्ष नरसिंह शाही कोषाध्यक्ष दयानन्दसिंह निरीक्षक चुने गये।

—आर्य समाज मदुरै का चुनाव साधारण सभा दिनांक ११-३-९० को समाज मन्दिर में श्री आर० एन० राम सिंग मन्त्री की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई जिसमें निम्न आर्य समाज के अधिकारी निर्वाचित हुई। आर० एन० राम सिंग प्रधान बी०आर० गोपाल राव एम०ए०बी० टी० मन्त्री के० टी० कृष्णन कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज केराकत जौनपुर रमाशंकर प्रधान रमाशंकर आर्य मन्त्री शामनाथ कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज बालोतरा रामस्वरूप आर्य प्रधान ब्रजमोहन तिवारी मन्त्री जगनाथदास चौहान कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज विजय नगर आगरा इन्द्रमोहन मेहता प्रधान शान्ति प्रकाश मन्त्री देवराज महाजन कोषाध्यक्ष चुने गये।

—वेदप्रकाश मण्डल अम्बाला छावनी सोमदत्त शर्मा प्रधान वेदमित्र मन्त्री कृष्ण कुमार कोषाध्यक्ष चुने गये।

तिरुवल्ली-तमिलनाडु के आर्य दम्पति





राजा सीतारामन और श्रीमती कांतिमति अपने परिवार सहित आर्य-समाज के कार्यों में तल्लीन हैं। तिरुवल्ली में इन्होंने एक आर्यन-विद्या समिति का निर्माण किया है। जिसके अन्तर्गत वैदिक धर्म के प्रचार के लिए वैदिक विद्यालय की स्थापना की गयी है।

श्री राजा सीतारामन आर्यन विद्या समिति के प्रधान हैं। और श्रीमती कांतिमति इस कार्य में पूर्ण सहयोग कर रही हैं। उनके छोटे छोटे बच्चे आर्य वीर दल की शाखा में आते हैं।

आवश्यक सूचना

समस्त आर्य जगत को सूचित किया जाता है कि मैंने आर्य समाज स्थापना दिवस पर वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार प्रसार का निश्चय लिया है। इच्छुक महानुभाव निम्न पते पर सम्पर्क करें।

श्याममोहन आर्य एम० ए० एल० एल० बी०
पूर्व विद्यालय निरीक्षक आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०
आवास रोड भरथना (इटावा) उ० प्र०

वार्षिकोत्सव

—आर्यसमाज टेल्को, बिरसा नगर जमशेदपुर का वार्षिकोत्सव २७,२८ एवं २९ मार्च को सोल्लास सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर टेल्को दुर्गापूजा मैदान में बने सुन्दर पंडाल के अन्दर प्रात: हवन यज्ञ तत्पश्चात् धार्मिक गोष्ठी तथा सन्ध्या एवं रात्रि में विभिन्न सम्मेलन आयोजित किये गये।

—विजय कुमार, संयोजक
केन्द्रीय आर्य सभा टाटा नगर

—आर्य समाज रावत भाटा का पच्चीसवां वार्षिकोत्सव दिनांक २, ३ तथा ४ अप्रैल १९९० को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री श्याम सुन्दर स्नातक श्री वृजपाल वर्मा कर्मठ, श्री विजय बिहारीलाल माथुर एवम् श्री शिवानन्द मस्ताना के प्रवचन तथा भजनोपदेश हुए। दिनांक ३ ४ ९० को नवनिर्मित यज्ञशाला में प्रवेश किया गया।

—धर्मेन्द्रसिंह सोनी, मन्त्री
आर्य समाज, रावत भाटा
वाया कोटा (राजस्थान)

वेद प्रचार

३-४ अप्रैल रामनवमी के शुभ अवसर पर विन्ध्याचल मेले में जिलासभा की ओर से वैदिक धर्म प्रचार किया गया।

श्री देवनसिंह जी उपप्रधान जिला सभा मीरजापुर व अधिष्ठाता आर्य वीर दल उ० प्र० सभा को अभिनन्दन पत्र व शाल भेंट कर स्वागत किया गया।

—कपिलदेव, मन्त्री
जिला सभा मीरजापुर सोनभद्र

'कस्मै देवाय'

(पृष्ठ ७ का शेष)

अर्थों की अपेक्षा अधिक तर्कसंगत एवं ग्राह्य प्रतीत होता है। यह तो तथ्य है कि यदि 'क' शब्द का प्रजापति या सुखवाचक मानें, जैसा कि आचार्य सायण ने माना भी है, तो उसका सर्वनामत्व सिद्ध नहीं होता। ब्राह्मण ग्रन्थों में जहां कहीं भी यह अर्थ दिया है वहां इस शब्द के सर्वनाम सूचक रूप का कहीं भी संकेत नहीं है।

यदि हम इसे सर्वनाम सूचक 'किम्' शब्द का रूप मानें तभी 'कस्मै' प्रयोग सम्भव है। किन्तु इस अवस्था में प्रजापतिपरक अर्थ कठिन होगा। 'कस्मै' शब्द का प्रश्नवाचक अर्थ कठिन होगा। 'कस्मै' शब्द का प्रश्नवाचक अर्थ ही सरल एवं सहज है।

मीमांसा सूत्र के १० वें अध्याय के तीसरे पद के १५ वें सूत्र "उत्तरस्य वा मन्त्रार्थित्वात्" की व्याख्या में आचार्य शबरस्वामी लिखते हैं—

"कस्मै देवाय हविषा विधेम" इति। एकस्मै देवायेत्यर्थः। एकारलोपे-नैवच्छन्दसिविज्ञानादेतस्य प्रत्ययो भवति। एकस्मै देवाय हविर्दातव्यम् इति।

अर्थात् वस्तुतः यहां मन्त्र में "एकस्मै देवाय" है। इस प्रकार 'कस्मै देवाय' का अर्थ हुआ 'एकस्मै देवाय"। एकस्मै का एकारलोप छान्दस है। 'एक' शब्द की सर्वनाम संज्ञा स्वतः सिद्ध है।

"एकस्मै का एकारलोप कथमपि आश्चर्य जनक नहीं है। वेद में तो तीनों प्रकार के प्रयोग मिलते हैं। अर्थात पहले अक्षर का लोप जैसे—'उपरि' के स्थान पर "परि" का प्रयोग। मध्य अक्षर का लोप, जैसे—प्रेरणा के स्थान पर "प्रेणा" तथा अन्तिम अक्षर का लोप, जैसे—"आप्रात्" के स्थान पर "आप्रा"।

इस प्रकार यहां पर "एकस्मै" के आदि अक्षर एकार का छान्दस लोप अत्यन्त स्वाभाविक रूप में होकर "कस्मै" शब्द बना है। एकस्मै देवाय मानने पर समस्त गुत्थियां सुलझ जाती हैं तथा इस सूक्त का यह अर्थ हो जाता है कि हम केवल एक परमात्मा की उपासना करें जिसके गुणों का वर्णन सम्पूर्ण हिरण्यगर्भ सूक्त में विद्यमान है। इससे वेदों में एकेश्वरवाद का भी अच्छा संकेत माना जा सकता है। जिसके लिए वेद में कहा भी है—

एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति। (ऋग्वेद १/१६४/४६)

बाजना (मथुरा) से शराब ठेका हटाया गया

दिनांक २-४-९० को बाजना नगर निवासियों को ज्ञात हुआ कि मथुरा प्रशासन ने शराब ठेका खोलने का निर्णय ले चुका है तो नगर निवासियों ने संगठित होकर आन्दोलन, धरना, बाजार बन्दी हड़ताल प्रारम्भ कर दिया, दो बार शिष्ट मण्डल जिलाधीश एवं आबकारी उपायुक्त से मिलकर आक्रोश एवं आन्दोलन से ज्ञापन सहित अवगत कराया। अन्ततः क्षेत्रीय ११२ ग्राम की विशाल सभा बाजना बीज गोदाम प्रांगण में ठेका शराब के विरुद्ध हुई। दिनांक १७-४-९० को इस विशाल सभा आयोजन से प्रशासन भयभीत हो गया। कहीं भयावह टकराव, संघर्ष का सामना प्रशासन को न करना पड़े एवं रक्तपात की आशंका से प्रशासन को ठेका शराब हटाने को बाध्य होना पड़ा।

—रतनसिंह आर्य, ब्लाक प्रमुख
नौहझील मथुरा

ग्राम रोवड़ी में वैदिक धर्म प्रचार कार्यक्रम

खण्डवा आर्य समाज के प्रधान राव जी भाई भानुशाली एवं मन्त्री लक्ष्मीनारायण भार्गव ने जानकारी दी कि ग्राम रोवड़ी में चौसट बाबा के मेले में आर्य समाज खण्डवा की ओर से हवन सत्संग के बाद वैदिक साहित्य वितरण कर वैदिक धर्म का प्रचार किया। आर्यसमाज के प्रधान श्री बाबजी भाई भानुशाली एवं सभी कार्यकर्ता श्री पूनमचन्द आर्य, कन्हैयालाल जी खण्डेलवाल ने अपने व्याख्यानों में सामाजिक कुरीतियों को हटाने पर जोर दिया।

—लक्ष्मीनारायण भार्गव, मन्त्री
आर्य समाज, खण्डवा

आर्य जगत् के समाचार

संस्कृत भवनम्, पुस्तकालय एवं शोध संस्थान का शिलान्यास

श्रीमद्दयानन्द बाल सदन मोती नगर-लखनऊ में १० मई १९९० को प्रातः ८ बजे यज्ञ के पश्चात् "स्वामी सत्य प्रकाश वैदिक पुस्तकालय एवं शोध संस्थान" की आधार शिला रखी गई । इसके साथ ही संस्कृत के प्रचार-प्रसार के लिए "संस्कृत-भवन" की आधार शिला स्थापित की गई । इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आर्य नरेश डा० समर्थसिंह (अमेठी) हैं, जिनके कर कमलों से यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ । पूज्य स्वामी जी के साहित्य की प्रदर्शनी भी लगाई गई ।

"संस्कृत भवन" का शिलान्यास पूज्यपाद स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती जी द्वारा किया गया । इस अवसर पर संस्कृत प्रचार मे आजीवन समर्पित आन्ध्र प्रदेशवासी पूज्य आचार्य प० धर्मानन्द शास्त्री (गुरुजी) संस्थापक वि०स०स०प्र० समिति, उ०प्र०जी ने सम्बोधित किया । सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं आर्यनेता श्री सुशीलकुमार अग्रवाल (लखीमपुर) कार्यक्रम की अध्यक्षता की ।

लखनऊ के लिए गौरव की बात है कि बाल सदन अपने परिवार के अन्तर्गत १५०० वर्गमील भूमि मे यह संस्थान स्थापित किया है । इसके लिए कई लाख रुपये मूल्यका साहित्य भी प्राप्त हो चुका है । जिससे मेधावी विद्वान शोध कर सकें । संस्थान का नामकरण राष्ट्र भाषा हिन्दी के वैज्ञानिक साहित्य के जन्मदाता, चारो वेद के सर्वप्रथम अंग्रेजी अनुवादक, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के भू० पू० प्रोफेसर एवं रसायन विभागाध्यक्ष के नाम से अभिहित किया गया है ।

इस पुस्तकालय मे स्वामीजी का सम्पूर्ण साहित्य अविकल पाण्डुलिपियां, वेदो के अनुवाद की पाण्डुलिपियां एवं महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, तथा महात्मा हंसराज प्रभृत विद्वानो की हस्तलिपियां भी विशेष रूप से संग्रहीत की गई है । विभिन्न धर्मग्रन्थो पर शोधकर्ताओ, समाज के चिन्तको तथा छात्राओ आदि के लिए यह संस्थान अपना महत्वपूर्ण योग दान देगा । जिससे समाज का नैतिक तथा बौद्धिक विकास हो सके ।

शुद्धि समाचार

ग्राम नेतरा तह० बाली, जिला पाली (राज०) के एक ईसाई परिवार का प्रार्थना पत्र दिनांक १५-११-८९ को मन्त्री आर्य समाज शिवगंज (राज०) को प्राप्त हुआ, जिसमे निवेदन किया गया कि अंग्रेजो के जमाने मे मेरे पिता को पादरियो ने बहका कर ईसाई बनाया गया था सो आपसे निवेदन है कि हमारे परिवार को वैदिक धर्म मे दीक्षित कराने की कृपा करावें । उपरोक्त निवेदन को अनुपालन में वैदिक रीति के अनुसार शुद्धि-करण संस्कार किया गया, जिसमे परिवार के निम्न सदस्यो को पावन यज्ञ द्वारा वैदिक आर्य सिद्धान्तो की दीक्षा दी और उनके नाम रखे गये ।

पूर्व नाम	वर्तमान नाम	आयु	जाति
१—बरकतमेसी पुत्र कन्हैयालाल	दयाराम पुत्र कन्हैयालाल	७० वर्ष	हिन्दू (गुर्जर)
२—पत्नी सोबीदेवी दयाराम	हिन्दू नाम होने से नाम यथावत् रखा गया	६५ "	" "
३—मोतीलाल पुत्र दयाराम	" "	२६ "	" "
४—लाजवन्ती पत्नी मोतीलाल	" "	२२ "	" "
५—कमला पुत्री दयाराम (विवाहित)		३२ "	" "

पारिवारिक सत्संग

आर्यसमाज एवं स्त्री आर्यसमाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना की ओर से श्री चरनजीत जी पाहुजा के छोटे भाई श्री प्रदीप जी पाहुजा के विवाहोत्सव के उपलक्ष में उनके निवास स्थान-बी० ९।३६४, आचार मोहल्ला, गुरुनाम गली, लुधियाना मे पारिवारिक सत्संग का आयोजन किया गया । सत्संग का शुभारम्भ यज्ञ से हुआ, इस यज्ञ को प० रामेश्वर शास्त्री पुरोहित आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार ने सम्पन्न कराया ।

—रोशनलाल शर्मा, महामन्त्री
आर्य समाज दाल बाजार लुधियाना

पूर्वांचल आर्य वीर दल कार्यकर्ता विचारगोष्ठी

१४ १५ अप्रैल को आर्य समाज मन्दिर सुलतानपुर में पूर्वांचल आर्य वीर दल कार्यकर्ता विचार गोष्ठी श्री अवधबिहारी सन्धा संचालक की अध्यक्षता मे सकुशल सम्पन्न हुई । जिसमे पूर्वांचल के १६ जनपदो के १०० कार्यकर्ता आर्य समाज, जिला सभा व आर्य वीर दल के अधिकारी व प्रतिनिधियों ने भाग लिया ।

अक्टूबर तक १० हजार रुपये एकत्र करने का निर्णय लिया गया । गोष्ठी का संचालन देवव्रतसिंह अधिष्ठाता आर्य वीर दल उ० प्र० 'सभा' ने किया । जिसमे कई प्रमुख निर्णय लिये गये ।

—देवव्रतसिंह अधिष्ठाता
आर्य वीर दल उ० प्र० सभा

शोक समाचार

बरेली । आर्य समाज बरेली के आधार स्तम्भ वयोवृद्ध समाजसेवी सार्वभौम सभा प्रधान श्री इन्द्रराज द्वारा सम्मानित श्री श्यामसुन्दर आर्य के युवा पुत्र श्री प्रेमचन्द आर्य का ट्रेन दुर्घटना में १४-४-९० को निधन हो गया है । अन्त्येष्टि संस्कार वैदिक रीतियानुसार उपमन्त्री श्री वेदप्रकाश आर्य की उपस्थिति मे शोकाकुल वातावरण मे श्री बलदेवप्रसाद श्याममोहन आर्य एवं श्यामसुन्दर के निर्देशन में सम्पन्न हुई । परमपिता से शान्ति की कामना की गई ।

—श्याममोहन आर्य

—महाशय जगन्नाथ जी आर्य ग्राम शहबाजपुर जिला महेन्द्रगढ का ७० वर्ष की आयु मे पक्षाघात के कारण निधन हो गया । वे आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के सच्चे भक्त थे । और समाज के एक कर्मठ कार्यकर्ता थे, इनके निधन से आर्य समाज को क्षति हुई वह पूरी नहीं की जा सकती है । ईश्वर से प्रार्थना है कि वह उनकी आत्मा को सद्गति एवं परिवार जनो को इस वियोग को सहन करने की शक्ति प्रदान करे ।

—धर्मपालसिंह वेधडक

—अकबरपुर आर्यसमाज के एक विशेष कृपालु एवं सहयोगी स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी एक विशेष क्रान्तकारी का गोविन्ददेव जी भारतीय का निधन दिनांक १८ २ ९० को हृदय गति रुक जाने से हो गया ।

—बुलाकीराम अग्रवाल

आर्य जगत् के वयोवृद्ध संन्यासी स्वामी रामेश्वरानन्द का देहान्त

आर्य जगत् के महान् तपस्वी विद्वान् सन्यासी स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज का ८ मई १९९० को गुरुकुल घरौण्डा (करनाल) मे ९६ वर्ष की आयु में निधन हो गया है । वह विगत कुछ महीनों से अस्वस्थ थे ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने अपने शोक सन्देश में स्वामी जी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि स्वामी रामेश्वरानन्द आर्यसमाज के पुरानी पीढ़ी के महान् आत्माओ मे से थे । वह कई वर्षों तक संसद सदस्य भी रहे । गुरुकुल घरौण्डा के वह संस्थापक थे । उन्होंने हिन्दी आन्दोलन, गौरक्षा आदोलन, हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में भाग लिया था और कई बार उन्होंने आमरण अनशन भी किया था । भारत सरकार ने उन्हे गत वर्ष स्वतन्त्रता सेनानी मानकर सम्मान पेंशन भी देना शुरू कर दिया था ।

स्वामी जी महाराज के निधन से आर्य समाज तथा राष्ट्र की अपूर्णीय क्षति हुई है ।

सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

रजि० सं० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (११ ५-१९९०) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U 93
2 R 620/57 Licensed to post without prepayment licence No. U 93 Post in D.P.S.O. on 11 5 1990

कश्मीर की स्थिति

(पृष्ठ १ का शेष)

भूतपूर्व सनिकों को बसा दिया जावे। राजीव गांधी ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया था किन्तु बाद मे किसी दबाव के कारण उन्होंने यह काय नही किया। स्वामी जी ने कहा आज भी हमारी यही मांग है कि सुरक्षा पट्टी का निर्माण किया जाये और धारा ३७० को समाप्त किया जावे क्योंकि डा० अम्बेदकर ने भी इसका विरोध किया था। यह जवाहरलाल नेहरू की देन है, जिसके विषय में नेहरू ने कहा था कि यह अस्थायी व्यवस्था है, घिसते-घिसते घिस जायेगी। स्वामी जी ने यह भी स्पष्ट कहा कि पंजाब और जम्मू-काश्मीर में पांच साल तक के लिए चुनाव स्थगित किए जावें।

चौधरी तारीफसिंह का मत था कि पूर्व सरकार के कार्यकाल से पंजाब व काश्मीर समस्या जनता दल सरकार को विरासत में मिली थी किन्तु श्री एच०के०एल० भगत ने इसका खण्डन करते हुए कहा कि उस समय काश्मीर कोई समस्या नहीं थी, यह समस्या तो जनता दल की सरकार बनते ही खड़ी हुई और आज यह प्रदेश भारत से लगभग कट सा गया है। श्री मदनलाल खुराना ने कहा भारतीय जनता पार्टी धारा ३७० को समाप्त करने के लिए वचन बद्ध है। उन्होंने जम्मू काश्मीर के राज्यपाल श्री जगमोहन द्वारा राज्य में कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए किए जा रहे प्रयासों की प्रशंसा की।

डा० दुःखनराम जी

(पृष्ठ १ का शेष)

गुरुकुल की प्राचीन परम्परा के ज्ञाता होने के नाते आपने सदा यह माना कि कुलपति कुल का स्वामी नहीं, प्रत्युत पालक होता है आप विद्यार्थी वर्ग के लिए सदा पितृ तुल्य रहे।

राजनीति के द्वार पर—

कुलपति पद से १९६० से अवकाश ग्रहण करते ही जनता जनार्दन की सेवा का व्रत कार्य अपनाया। कांग्रेस की रीति-नीति मे आपकी रुचिकर थी आप विधान सभा के लिये चुने गये। इस राजनीति मे आने के पूर्व आपकी धार्मिक पृष्ठ भूमि है आपका शेष जीवन उन लोगों की सेवा में बीता जो राजनीति मे शोषण के शिकार थे—

समाज निर्माता—

सामाजिक व्यक्ति समाज निर्माता होता है वह युग के अनुसार समाज को ढलता है उसे इन तीन बातों की ओर ध्यान रखना होता है।

रचना—प्रयोजन और निराकरण।

रचना की दृष्टि से सूची काफी लम्बी है डा० राम इसलिए बड़े हैं उन्होंने काम और नाम की साधना सांसारिकता में काफी बड़ी की है। डाक्टर जी ने काम व धाम के प्रति अपने को लीन किया।

आर्यसमाज से सार्वदेशिक सभा तक—

प्रान्तीय सभा के अध्यक्ष से सार्वदेशिक सभा के प्रधान पद पर पहुंचना आपकी कार्यक्षेत्र व कर्म की विशेषता रही।

रचना प्रयोजन निराकरण की दृष्टि से डाक्टर साहब समाज के निर्माता थे। वह अपने धर्म सदाचार स पहले आत्मरक्षक, आत्मसंयम, आत्मनिर्भर हो। आपकी यह योग्यता क्षमता, प्रसन्नता उदारता और शिक्षावादी राष्ट्रीय देन शतायु होने तक सतत बनी रही।

डा० साहब की प्रेरणा आर्यो मे निरन्तर प्रेरणादायी बनी रहे आज वह हमारे मध्य नही है पर उनके प्रेरणास्रोत कार्य ही हमारे लिए जीवन-दायी बनें यही सच्ची श्रद्धांजलि है

पुस्तक समीक्षा

अनुपम भगवद् गीता

नामक पुस्तक—आचार्य चन्द्र भूषण जी की अनुपम खोज के आधार पर दक्षिण भारत से प्राप्त ७० श्लोकों में जो उनके द्वारा प्रकाशित की गई है। इस प्रकार से नानाविध विद्वानों ने भगवान कृष्ण के द्वारा युद्ध भूमि में जो उपदेश अर्जुन को दिया है उसका सप्रमाण उत्तर ७० श्लोकों के अन्तर्गत मिलता है।

डा० गद्गुरि गोपाल राव देसाई जब बाली द्वीप गए थे वहां ताड़ पत्र पर हुई से खुदोकर लिखी गीता मिली है वहां शीघ्र ब्राह्मणों द्वारा पढ़ाए उसमें ७० श्लोको गीता उपलब्ध है। श्लोकों की सन्धि सुन्दर ढंग से मिलती है। उसी को लिखकर भारतवर्ष लाए थे।

श्री चन्द्रभूषण जी ने वैसे पूरी गीता को छन्दोबद्ध भी किया है जो चौपाई से छन्दोबद्ध है। ईश्वर के सौ नामों की व्याख्या भी छन्दों में किया है।

ऐसी अनुपम खोज पूर्ण गीता तथा चौपाई में गेय रूप से सरल भाषा में अनुदित की है। पठनीय तथा कार्य सराहनीय है। विद्वानों द्वारा इसे पढ़कर विचार करना चाहिए। कि यह तथ्य क्या है।

पता—आचार्य चन्द्र भूषण शास्त्री मूल्य—४ रु० मात्र

आर्य समाज गणेशगंज लखनऊ (उ प्र) —सम्पादक

कारण सूक्ष्म स्थूल शरीर उपचार

समस्या—"मेरे बायें सीने में श्रम करने पर दर्द होता है। यह समस्या सितम्बर १९८९ से है। बायें पीठ तथा हाथ में भारीपन होने लगता है। मेरी अवस्था ५५ वर्ष है।"

बाबूनन्दन यादव, ग्राम डाकघर बोरडीह तिवारी जनपद (देवरिया)।

उपचार—प्रत्येक भोजन के बाद (दो बार) चार कम्पाउण्ड की दो गोलियां लेकर, अर्जुनारिष्ट दो ढक्कन समान जल में मिला कर पिया करें। घी में हींग का छोंक देना चाहिये। भोजन के साथ सलाद का सेवन किया करें। तले वाले पदार्थ से बचें। कम से कम दो मास तक उपचार जारी रखें।

—स्वामी मुक्तानन्द सरस्वती (फलाहारी)

आर्य समाज किशोरगढ़ (उत्तर प्रदेश)

उत्सव

आर्य समाज संकमपुर जैनी (गर्वा) जनपद बदायूं का वार्षिकोत्सव दिनांक ११, १२, १३ मई १९९० ई० दिन शुक्र, शनि, व रविवार को मनाया जा रहा है। इस शुभ अवसर पर आप सादर सपरिवार एवं इष्ट मित्रों सहित आमन्त्रित हैं।

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में प्रवेश प्रारम्भ

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी तपःपूत सन्यासी की कर्मस्थली, देशभक्त क्रांतिकारियों की आश्रय व निर्माण स्थली आपकी प्रिय शिक्षा संस्था गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ (फरीदाबाद) में १५ अप्रैल से १५ मई तक प्रवेश हो रहा है। जिसमें चौथी कक्षा से नौवीं कक्षा तक का ही प्रवेश किया जावेगा। यहां पर हरियाणा शिक्षा बोर्ड एवं गुरुकुल कांगड़ी वि० विद्यालय हरिद्वार के पाठ्यक्रम की मान्यता प्राप्त है। शिक्षा एवं छात्रावास की निःशुल्क व्यवस्था है, केवल मात्र विशुद्ध भोजन दुग्धादि का २००) रुपए प्रतिमास छात्रों से शुल्क लिया जाता है। सुयोग्य अध्यापकों के संरक्षण में बच्चों के पूर्ण शारीरिक एवं बौद्धिक विकास का अवसर प्रदान किया जाता है। —श्री महेन्द्र सिंह शास्त्री

प्रवेश सूचना

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी महाराज की जन्मभूमि एवं बोध स्थली में गत २५ वर्षों से महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय चल रहा है, जिसमें नए सत्र हेतु छात्रों का प्रवेश १ जुलाई से प्रारम्भ हो रहा है। छात्रों को बिना किसी भेदभाव के शिक्षा-निवास-वस्त्र-भोजन पाठ्य पुस्तकें व लेखन सामग्री आदि सभी सुविधाएं प्रदान की जाती हैं। आचार्य ओमप्रकाश शास्त्री एम ए.

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली २ से प्रकाशित।

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र

वेदामृत

पुत्र आज्ञाकारी एवं आस्तिक हो

पिशंगरूपः सुभरो वयोधाः
श्रुष्टी वीरो जायते देवकामः ।
प्रजां त्वष्टा वि ष्यतु नाभिमस्मे
अथा देवानामप्येतु पाथः ॥
ऋग्० २-३-९, तैत्ति० सं० ३-१-११-२ ॥

हिन्दी अर्थ—सुनहरे रंग वाला, हृष्ट-पुष्ट, दीर्घायु, आज्ञाकारी, वीर आस्तिक पुत्र उत्पन्न हो। सृष्टिकर्ता देव हमारे लिए कुल-वर्धक सन्तान दे और देवों का मार्ग हमें प्राप्त हो।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१ | दयानन्दाब्द १६६ | दूरभाष । ३२७४७७१ | वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष २९ अंक १९] | ज्येष्ठ कृ० १० सं० २०४७ २० मई १९९०

रामजन्मभूमि शिलान्यास अगले वर्ष जनवरी में

वाराणसी, १२ मई । द्वारकापीठ के शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती ने अयोध्या में शिलान्यास की अगली तिथि का सुझाव देते हुए कहा है कि शिलान्यास का नया मुहूर्त उत्तरायण में तब किसी समय निर्धारित किया जा सकता है जब कि सूर्य मध्य रेखा से उत्तर की ओर बढ़ता है । यह मुहूर्त आगामी जनवरी के दूसरे सप्ताह बाद शुरू हो सकेगा ।

शंकराचार्य ने यह बात कल रात सम्पन्न वैदिक शास्त्र तथा ज्योतिष के विद्वानों की एक सभा में कही । उन्होंने कहा कि शिलान्यास की नई तिथि तय करने के बारे में कोई जल्दबाजी नही है ।

उन्होंने कहा कि विद्वानों को चाहिए कि वे ज्योतिष की सटीक गणना करके शिलान्यास के अच्छे से अच्छे मुहूर्त का निर्धारण करे । लेकिन नई तिथि बहुत विलम्ब से नही होनी चाहिए ।

जगद्गुरु ने काशी के विद्वत परिषद् तथा ज्योतिषियों को शिलान्यास का नया मुहूर्त सुनिश्चित करने का काम सौंपा है ।

विद्वत वर्ग शंकराचार्य को नई तिथि का सुझाव देंगे और सर्वोच्च समिति शिलान्यास के लिए तिथि को अन्तिम रूप देगी ।

बम्बई रवाना

द्वारका पीठ के शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती आज शाम विमान द्वारा यहां से बम्बई रवाना हो गए । वहां से वह द्वारका प्रस्थान करेंगे। (हिन्दुस्तान १४-५-९० से साभार)

धर्म बदलने वाले हरिजनों को सुविधाएं देने पर विचार

पुणे १२ मई । श्रम तथा कल्याण मन्त्री रामविलास पासवान ने आज यहां संकेत दिया कि ईसाई धर्म ग्रहण करने वाले हरिजनों तथा आदिवासियों को कुछ विशेष सुविधाएं देने पर सरकार विचार कर रही है । ये सुविधाएं पिछड़ी जातियों को मिलने वाली सुविधाओं जैसी हो सकती है ।

आज यहां संवाददाता सम्मेलन में श्री पासवान ने कहा कि इस बारे में हमारा दृष्टिकोण नकारात्मक न होकर सकारात्मक है । हम उनकी मांगों पर सहानुभूतिपूर्वक विचार कर रहे हैं, मगर इसी के साथ उन्होने यह भी कहा कि सरकार इस बारे में सभी पार्टियों के बीच सहमति बनाने का प्रयास कर रही है ।

अल्पसंख्यक आयोग के बारे में श्री पासवान ने कहा कि राष्ट्रीय मोर्चे की सरकार उसे संवैधानिक दर्जा देने की कोशिश में लगी हुई है । पिछले सात वर्षों में आयोग की एक भी रिपोर्ट संसद में पेश नही की गई है ।

उन्होंने स्वीकार किया कि इस बारे में सभी पार्टियों के बीच अभी तक सहमति नहीं बन पाई है । संवैधानिक दर्जा देने के लिए यह जरूरी है कि सभी पार्टियों के बीच इसके बारे में सहमति हो ।

श्री पासवान ने कहा कि सरकार वर्तमान औद्योगिक सम्बन्ध कानून में संशोधन करना चाहती है । इसके लिए इंटक नेता जी०वी० रामकृष्ण की अध्यक्षता में एक समिति बनाई गई है जो जुलाई तक अपनी रिपोर्ट दे देगी ।

उन्होंने बताया कि कृषि मजदूरों के बारे में सरकार एक और विधेयक संसद के वर्षा कालीन सत्र में लाएगी । इस विधेयक में कृषि मजदूरों को न्यूनतम वेतन के अलावा सारे साल काम की

(शेष पृष्ठ ११ पर)

स्व० रामेश्वरानन्द गोरक्षा आन्दोलन के अजय सेनानी

नई दिल्ली, ११ मई । दिल्ली के समस्त आर्य समाजों की शिरोमणि आर्य प्रतिनिधि सभा और आर्य केन्द्रीय सभा की ओर से आज आर्य समाज दीवान हाल में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में स्वामी रामेश्वरानन्द को गोरक्षा आन्दोलन का "अजय सेनानी' बताया गया ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे हुई । स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती एक क्रान्तिकारी सन्यासी थे लोकसभा का सदस्य चुने जाने के बाद उन्होंने हिन्दी के यन्त्रों का प्रयोग करने की मांग की जो अंग्रेजी भाषा का अनुवाद हिन्दी भाषा में कर सकें । आपकी मांग स्वीकार की गई और संसद में वह यन्त्र स्थापित किया गया ।

गौ हत्या बन्दी आन्दोलन के सम्बन्ध में ७ नवम्बर १९६६ को दस लाख लोगों की रैली निकाली गयी उसमें स्वामी रामेश्वरानन्द जी ने कहा संसद भवन को घेर लो उनके इस भाषण को सुनकर साधु महात्माओं ने संसद भवन को घेर लिया और पुलिस को गोली चलानी पड़ी ।

वे आर्य सिद्धान्तों बड़े विद्वान थे एक बार आर्य समाज

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

कश्मीर

न पाकिस्तान घुस पैठ उन्माद घटता है ।
हमारा भारतीय मा का मुकुट कश्मीर कटता है ॥

बिछी बारूद घाटी में दहकते शिखर पर शोले,
अनेको देश के नेता नपुसक हैं निरे भोले ।
कुटिलता से भरी कितनी चलाई आ रही चालें,
स्वदेशी तन विदेशी मन पृथा जयचन्द की पालें ।

प्रशासन पगु सा बनकर पुराने राग रटता है ।
हमारा भारतीय मा का मुकुट कश्मीर कटता है ॥

पिलाया दूध सापो को वही फुकार भरते हैं,
अलग कश्मीर करने को अलग हुकार भरते हैं ।
गरल वह तीन सौ सत्तर लगी धारा उगलती है,
मिले अधिकारियो के सग विष कारा उगलती है ।

बड़े आतकवादी क्यो न जब उपहार बटता है ।
हमारा भारतीय मा का मुकुट कश्मीर कटता है ॥

निराश्रित हो रहे हिन्दू निरे सरदार है सग मे,
भगतसिह का अभी तक सोचता पजाब जिसढग मैं
धरा यह बहादुर वीर वर उश्फाक उल्ला की ।
वही पहिचान फिर होगी वतन पर आज मुल्ला की,

हकीकत साफ कह देगी कहा पर कौन कटता है ।
हमारा भारतीय मा का · · ·

हुआ क्या हाल भुट्टो का जमाना जानता अब तक,
कहा मानो बहन भुट्टो पिता से पूछलो तब तक ।
मिले हथियार भिक्षा के फिसल कर छूट जायेंगे,
गई यदि चेत, रण चण्डी किनारे टूट जायेंगे ।

बढे जब भारतीय सैनिक समर मे कौन डटता है ।
हमारा भारतीय मा का . . .

—सत्यव्रत सिह चौहान, सिद्धात शास्त्री
मन्त्री आर्यसमाज पुडरी मैनपुरी उ. प्र.

स्वामी रामेश्वरानन्द

(पृष्ठ १ का शेष)

सीताराम बाजार दिल्ली में उनका शास्त्रार्थ पण्डित रामचन्द्र देहलवी जी से हुआ ।

अमृतसर में मास्टर तारासिह ने पजाब सुबा बनवाने की मांग को लेकर अनशन आरम्भ किया उनके विरोध में स्वामी रामेश्वरानन्द जी ने दीवानहाल आर्यसमाज अनशन किया स्वामी जी ने अनशन तत्कालीन प्रधानमन्त्री प० जवाहर लाल नेहरू के लिखित आश्वासन पर छोडा पजाब सुबा नही बनेगा ।

स्वामी १९६२ में करनाल ससदीय क्षेत्र से कांग्रेस के प्रत्याशी श्री वीरेन्द्र जी को भारी मतों से हरा कर विजयी हुए । महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों के प्रचार-प्रसार हेतु उन्होंने गुरुकुल घरौंडा की स्थापना की ।

श्रद्धांजलि सभा में महाशय धर्मपाल, पं० क्षितीश वेदालंकार, डा० धर्मपाल, डा० शिवकुमार शास्त्री, प्रशान्तकुमार वेदालंकार, श्री सूर्यदेव, श्रीमती शकुन्तला आर्या आदि ने कहा कि इस निर्भीक संन्यासी ने पजाब के विभाजन का हमेशा विरोध किया अनशन पर बैठे थे । तब शरारती तत्वों ने बम का प्रहार किया था, सौभाग्य से स्वामी जी बाल-बाल बच गए थे ।

पंजाब के सीमावर्ती इलाके सेना के हवाले नहीं होंगे

गुजराल ने फिर भरोसा दिलाया

जालन्धर (यू०एन०आई०) विदेश मन्त्री श्री इन्द्रकुमार गुजराल ने जो जालन्धर से जनता दल के सांसद और पजाब से कैबीनिट सब कमेटी के सदस्य हैं—आज साफ तौर पर कहा है कि पंजाब के लोग सीमावर्ती सरहदे सेना के हवाले करने की कोई तजवीज नहीं है यह पूछे जाने पर कि क्या अमन व कानून की संगीन सूरते हाल के पेशनजर सीमावर्ती सरहदे सेना के हवाले किये जायेंगे उन्होंने सख्ती से कहा कि नही । उन्होने बरहाल कहा कि पंजाब में १० नवम्बर से पहले जब राष्ट्रपति राज्य में ६ माह की सातवी मियाद समाप्त होगी । विधान सभा का निर्वाचन कराया जाएगा उन्होंने कहा कि पाकिस्तान की तरफ से दहशत गरदों को दी जा रही सहायता हम सबके लिए फिक्र की बात हैं ।

अल्लाहो-अकबर के नारों में घिर गए फर्नांडिस

अनन्तनाग, १३, मई । जम्मू-कश्मीर मामलो के प्रभारी मन्त्री जार्ज फर्नांडिस को कल शाम श्रीनगर से ५० किलोमीटर दूर अनन्तनाग कस्बे मे पहुचते ही "अल्लाह हो अकबर" और हम क्या चाहते है ···"आजादी-आजादी" जैसे नारो का सामना करना पड़ा ।

श्री फर्नांडिस सार्वजनिक निर्माण विभाग के स्थानीय अतिथि गृह मे ठहरे हुए थे । मन्त्री के समक्ष विरोध प्रदर्शन करने के लिए वहा एक सौ से अधिक लोग एकत्रित हो गए जिसमे ज्यादातर बुर्काधारी महिलाए और बच्चे थे ।

प्रदर्शनकारियो का नेतृत्व युनाइटेड फ्रन्ट के पूर्व विधायक सईद शाह ने किया जो पीपुल्स पार्टी के नेता शाबिरशाह के भाई हैं । उन्होने श्री फर्नांडिस से कहा कि "क्या आप भारत सरकार के प्रतिनिधि के रूप में आए हैं और हमारे जले पर नमक छिडकना चाहते हैं, यदि ऐसा है तो हम आपसे बात नही करेंगे ।"

श्री फर्नांडिस ने कहा कि वह उनकी परेशानिया सुनने आए हैं । इस पर श्री शाह ने महिलाओ और बच्चोको अपनी-अपनी शिकायते दर्ज कराने के लिए बुलाया । उनमे से बहुतो ने अर्द्धसैनिक बलो द्वारा किए गए कथित 'अत्याचारो" की शिकायत की ।

चौंकिये नहीं ये हमारे सांसद हैं !

नई दिल्ली, १३ मई । हमारे जन प्रतिनिधि क्या परिवार नियोजन मे विश्वास करते हैं । लोकसभा सचिवालय के एक अध्ययन से बरबस यह सवाल पैदा हो जाता है ।

लोकसभा सचिवालय द्वारा तैयार किए गए अध्ययन (नौवी लोकसभा सदस्यो का सामाजिक, आर्थिक विश्लेषण) के अनुसार नौवीं लोकसभा के एक सदस्य ग्यारह बच्चो के बाप हैं और पाच सासदो के नौ-नौ बच्चे हैं जबकि आठवीं लोकसभा मे किसी भी सदस्य के दससे अधिक बच्चे नहीं थे ।

अध्ययन के अनुसार ग्यारह सासदो के आठ बच्चे हैं जबकि १९ सासदो के सात बच्चे हैं । २८ सासदो के छह-छह बच्चे, ५४ सासदो के पाच-पाच बच्चे और ८१ सांसदो के चार-चार बच्चे हैं । ९९ सासदो के तीन-तीन बच्चे हैं जबकि केवल ३९ सासदो के एक-एक बच्चा है ।

आठवी लोकसभा में १०६ सदस्यों के तीन-तीन बच्चे, १०१ सदस्यो के दो-दो और ५१ सदस्योके केवल एक-एक बच्चा है । अध्ययन के अनुसार पिछले सदन के २२८ सदस्यो के बच्चे चार से दस वर्ष की आयु के है ।

अध्ययन के अनुसार नौवी लोकसभा के अधिकांश सदस्य शादी शुदा हैं । अविवाहित सदस्यो की सख्या मात्र ३.७ प्रतिशत है । आठवीं लोकसभा में अविवाहित सदस्यो की सख्या ३.४ प्रतिशत थी । नौवीं लोकसभा के २० अविवाहित सदस्यो मे १८ पुरुष और दो महिलाएं है ।

स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती : एक परिचय

डा० शिवकुमार शास्त्री

श्री स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती का जन्म आज से लगभग सौ वर्ष पूर्व उत्तर प्रदेश के एक ग्रामीण परिवार में हुआ। शैशवावस्था में ही माता-पिता का साया सिर पर से उठ गया। दादी ने ही पालन-पोषण किया। १५ वर्ष की अवस्था में गृहत्याग कर आध्यात्मिकता की ओर प्रवृत्त हुए।

अनेक संस्कृत विद्यालयों में विद्वानों के श्रीचरणों में बैठकर विद्याभ्यास किया और वैदिक वाङ्मय के अधिकारी विद्वान् बने।

सन् १९२१ में घरौण्डा (करनाल) में गुरुकुल की स्थापना की और राष्ट्रीय चरित्र के उत्थान मे योगदान दिया।

१९३५ में महात्मा गांधी द्वारा सचालित आन्दोलन में और १९३९ के हैदराबाद सत्याग्रह के सक्रिय रूप से भाग लिया।

अंग्रेजी सरकार का विरोध करते हुए प० जवाहरलाल नेहरू के साथ देहरादून की जेल में अमानवीय यातनाओ को सहते हुए देश की स्वतन्त्रता के लिए अपनी उठती हुई जवानी को होम दिया।

सन् १९५७में पंजाब के तत्कालीन मुख्यमन्त्री सरदार प्रतापसिंह कैरो ने हिन्दी आन्दोलन को कुचलने के लिए दमनचक्र चलाया तो स्वामी जी महाराज ने जबरदस्त विरोध किया, परिणामस्वरूप कई मास तक नजरबन्दी की सजा भुगती।

सन १९६१ में जब अकाली नेता मास्टर तारासिंह ने पजाबी सूबा की माग को लेकर स्वर्ण मन्दिर अमृतसर में भूख हड़ताल शुरू की तो स्वामी जी महाराज ने देश की अखण्डता के लिए, पंजाबी सूबा के विरोध में १६ अगस्त १९६१ से आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य के निर्देशन में आर्यसमाज दीवानहाल में जवाबी अनशन किया, जिसे तत्कालीन प्रधानमन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरू के लिखित आश्वासन पर समाप्त किया।

सन् १९६२ में करनाल ससदीय क्षेत्र से लोकसभा के लिए भारी बहुत से निर्वाचित हुए। संसद में आकर स्वामी जी ने जो अभूतपूर्व कार्य किया, वह किसी से छिपा नही। हिन्दी की प्रतिष्ठा के लिए सदा सघर्ष करते रहे। सन् १९६३ में तत्कालीन गृहमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री द्वारा अंग्रेजी को अनिश्चित काल तक सखी भाषा के रूप में रहने के विधेयक की होली जलाकर राष्ट्रभक्तों के स्वाभिमान को झकझोर दिया।

सासद् रहते हुए गोवध के विरोध में लोकसभा के प्रांगण में १५ दिन का अनशन प्रारम्भ कर गोरक्षा आन्दोलन का सूत्रपात किया और अन्तिम क्षण तक दिल्ली के तिहाड़ कारागार मे रहकर संघर्ष करते रहे।

श्रद्धेय स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज ने आर्य जाति की रक्षा, स्वतन्त्रता एव अधिकारो के लिए जीवनभर सघर्ष किया। गुरुकुल प्रणाली को प्रचलित कर महर्षि दयानन्द एव प्राचीन शिक्षा पद्धति के प्रति अपनी आस्था प्रकट की। जीवनभर अज्ञान एवं अन्याय का विरोध करने के लिए लड़ते रहे। अपने शिष्यो को योग्यतम विद्वान बनाकर आर्य समाज की भरपूर सेवा की। 'भूयश्च शरदः शतात्।' वेद की इस सूक्ति को जीवन में चरितार्थ किया।

श्री स्वामी जी मंगलवार ८ मई १९९० को सायकाल ५-१५ पर इस नश्वर शरीर को छोड़कर हमे अपने दायित्वो का भान कराते हुए सदा-सदा के लिए हम से विदा हो गए।

उनके अन्तिम संस्कार के अवसर पर आर्य जगत् के प्रसिद्ध नेता स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, डा० सच्चिदानन्द शास्त्री, डा० धर्मपाल, डा० शिवकुमार शास्त्री, प्रो० वेदव्रत विद्यालंकार, आचार्य हरिदत्त शास्त्री, श्री सिंघल, डा० देवव्रत के अतिरिक्त हरियाणा विधानसभा के पूर्व उपाध्यक्ष चौधरी वेदपालसिंह एव घरौण्डा तथा निकटवर्ती नगरों-ग्रामों के गण्य-मान्य व्यक्ति सैकड़ों की सख्या में उपस्थित थे।

भारतीय ससद् में तथा सद: अनुवाद यन्त्र एव गुरुकुल घरौण्डा युग युगान्तरों तक उनकी स्मृति को अक्षुण्ण बनाए रखेगा।

स्वतन्त्रता सेनानी, हिन्दी-हिन्दुस्तान के प्रबल समर्थक, गोरक्षा आन्दोलन के सूत्रधार, भारतीय संस्कृति के अनन्य उपासक, वैदिक सिद्धान्तो के प्रति अटूट निष्ठा रखने वाले, पूर्व सासद्, भूयश्च शरद शतात् के नारे को जीवन में चरितार्थ करने वाले श्रद्धेय स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती के प्रति दिल्ली की समस्त आर्य समाजों की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हुआ परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि हमें इतनी योग्यता, क्षमता और शक्ति प्रदान करे जिससे हम श्रद्धेय स्वामी जी महाराज के बताए हुए श्रेष्ठ मार्ग का अनुसरण करते हुए उन्हें सच्ची श्रद्धाजलि अर्पित करने में समर्थ हो सके। ●

राम जन्म भूमि हिन्दुओं को दी जाय

मुस्लिम युवकों का आग्रह

नई दिल्ली, ९ मई। भारतीय मुस्लिम युवा सम्मेलन ने सरकार से अनुरोध किया कि श्रीराम जन्म भूमि, श्रीकृष्ण जन्मभूमि और विश्वनाथ मन्दिर हिन्दुओ को सौपने के लिए ससद मे विधेयक पेश करके कानून बनाए जाए।

युवा सम्मेलन के अध्यक्ष मुख्तार अब्बास नकवी ने यहा सवाददाताओ से बातचीत करते हुए कहा कि इस बार सरकार को हिन्दू धर्माचार्यों से आश्वासन लेना चाहिए कि वे फिर किसी अन्य धार्मिक स्थल के लिए आदोलन नही करेगे। इन मुद्दा पर सरकार को ईमानदारी से कार्य करना चाहिए।

उन्होने द्वारका पीठ से शकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती की गिरफ्तारी को सही बताया लेकिन यह भी कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार निष्पक्ष नही है। यदि सरकार राम जन्म भूमि बाबरी मस्जिद के मसले पर निष्पक्ष है तो उसे बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी के पदाधिकारी मोहम्मद आजम खा को तत्काल मन्त्रिपरिषद से अलग कर देना चाहिए।

श्री नकवी ने आरोप लगाया कि जामा मस्जिद के इमाम अब्दुल्ला बुखारी कश्मीरी उग्रवादियो का हौसला बढा रहे है। उन्होने दावा किया कि कश्मीरी उग्रवादियो ने देश के विभिन्न भागा में धार्मिक स्थलो मे पनाह ले रखी है और इन्ही स्थाना से वे विघटनकारी तथा साम्प्रदायिक कटुता फैलाने वाली गतिविधियों का सचालन कर रहे है। उन्हाने सरकार से अनुरोध किया कि ऐसे तत्वा से निपटने के लिए कठोर कदम उठाए जाए।

(नवभारत १०-५-९० से साभार)

पाक को कश्मीर नीति के नतीजे भुगतने पड़ेंगे

नई दिल्ली, ९ मई। पाकिस्तान द्वारा कश्मीर अलगाववाद को बढ़ावा देने से उसकी खुद की राजनीति पर प्रतिकूल असर पड़ेगा और सम्भव है कि यह पाकिस्तान के विघटन का कारण भी बने।

रक्षा विशेषज्ञ के. सुब्रह्मण्यम ने रक्षा सम्बन्धी विषयों की पत्रिका 'स्ट्रेटजिक एनलिसिस' के ताजा अंक में अपने एक लेख में यह विचार व्यक्त किया है।

उन्होने कहा कि दुनियां के नवोदित राष्ट्रों में पाकिस्तान सबसे कम उम्र का है। पाकिस्तान का सत्ताधारी तबका १९७१ की तरह फिर आग से खेल रहा है, लेकिन इस बार कहीं ज्यादा बड़े जोखिम के साथ।

लेख में कहा गया है कि पाकिस्तानी विशिष्ट वर्ग पूर्वी यूरोप की ताजा घटनाओं को नजरअन्दाज कर रहा है, जहां सैद्धांतिक कट्टरपंथी दलीय प्रणाली का स्थान बहुदलीय प्रणाली ले रही है।

लेख मे कहा गया कि भारत के लिए कश्मीर जहां एक आंतरिक समस्या है वहीं मुहाजिर और अन्य वर्गों के बीच तनाव पाकिस्तान का एक आंतरिक मसला है।

श्री सुब्रह्मण्यम ने कहा कि भारत द्वारा मुहाजिरों के मामले मे दिलचस्पी लेना कहीं ज्यादा न्याय संगत है, क्योंकि पाकिस्तान की अपेक्षा इस देश में लाखों परिवारों से उनका खून का रिश्ता है। दूसरी तरफ जाति, भाषा, संस्कृति और इतिहास के लिहाज से कश्मीरियों का पाकिस्तान की मुख्य आबादी से कोई खास सम्बन्ध नहीं हैं।

भारत जिस तरह तमिलनाडु, नागालैंड, मिजोरम और काफी पहले कश्मीर की समस्याओ से निबटा है, वैसे ही वह अभी भी कश्मीर समस्या से निबट सकता है।

उन्होने कहा कि बाहरी समर्थन प्राप्त आतकवादी मुहिम भारत की जड़ नही हिला सकती। विश्व में कहीं भी आतंकवादी मुहिम इस तरह सफल नही हुई हैं। पंजाब इसका एक उदाहरण है।

उन्होने कहा कि पाक सेना और पाक राजनीतिक नेतृत्व का एक हिस्सा अपनी अफगान नीति और कश्मीर नीति के चलते देश को खाई मे ढकेल रहा है। उनकी गलत नीतियो की वजह से मुहाजिरो, पठानों और सिंधियों के बीच तनाव पैदा हो गया है।

चीन और सोवियत संघ धार्मिक कारणो पर आधारित किसी भी अलगाववादी का समर्थन करने की स्थिति में नहीं है क्योंकि उनके देश मे खुद मुस्लिम अल्पसंख्यक क्षेत्र हैं। ज्यादातर इस्लामी देशों मे भी ऐसी स्थिति है। लेबनान में एक अलगाववादी गृह युद्ध चल है। ईराक में कुर्द समस्या और शिया सुन्नी मसला है, सऊदी अरब में एक तरफ बहावी शिया हैं तो दूसरी तरफ यमनी अल्पसंख्यक आबादी है। ईरान में अजेरी, ताजिक, बलूची, अरब और कुर्द अल्पसंख्यक हैं। अमीरात मे शिया सुन्नी समस्या है।

इस क्षेत्र मे श्रीलंका और बांग्लादेश में क्रमश: ईलम तथा चकमा समस्या है। नेपाल मे तराई आबादी अल्पसंख्यक हैं।

श्री सुब्रह्मण्यम ने कहा कि पाकिस्तानी सत्तारूढ़ कुलीन वर्ग आज भी आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था की सच्चाई नहीं समझता। मौजूदा अन्तरराष्ट्रीय व्यवस्था में आत्म निर्णय के अधिकार की प्रासंगिकता सिर्फ उपनिवेश और नामीबिया तथा पश्चिम सहारा की तरह जबरदस्ती अधिकृत क्षेत्रों में लागू हो सकती है।

आज स्थिति बिल्कुल बदल चुकी है और किसी भी महाशक्ति को कश्मीर मसले में दिलचस्पी नहीं।

मस्तिष्क कोशिका बनाने में सफलता

वाशिंगटन। अमेरिकी वैज्ञानिकों ने मानव मस्तिष्क कोशिकाएं प्रयोगशाला में विकसित करने में सफलता हासिल की है। इसकी सहायता से मिर्गी और नाड़ी रोगों का उपचार हो सकेगा।

अमेरिकी पत्रिका 'साइंस' के ताजा अंक में इस नए अनुसंधान के बारे मे प्रकाशित एक लेख में कहा गया है कि मस्तिष्क के अध्ययन में यह एक सफल कदम है तथा मानव नाड़ी तन्त्र का विज्ञान समझने में इससे बहुत मदद मिलेगी।

जॉन हापकिन्स स्कूल आफ मेडिसिन, बाल्टीमोर में न्यूरो साइंस विभाग के निदेशक डा० सोलोमन शनाइडर का कहना है कि आज तक कोई भी मस्तिष्क से न्यूरान (तंत्रिका) विकसित नहीं कर पाया है। मनुष्य तो दूर सम्भवत: किसी अन्य जीव के मामले में भी ऐसा नहीं किया जा सका है। इस सफलता से अनेक गम्भीर रोगों के बारे में हमारी जानकारी बढ़ाने में मदद मिलेगी।

अनुसन्धान कर्ता जानवरो पर किये जा रहे अध्ययनों में मस्तिष्क कोशिकाओं के प्रत्यारोपण की सम्भावनाओं का भी अध्ययन करने लगे हैं। इस तकनीक से किसी दिन पार्किन्सन जैसे गम्भीर रोग का इलाज हो सकेगा।

सम्पादक के नाम-पत्र

आदरणीय महोदय,

२९ अप्रैल १९९० के सार्वदेशिक अंक १६ में प्रकाशित "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है" लेख जिसके लेखक सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार है वे बधाई के पात्र हैं। यह लेख बहुत ही महत्वपूर्ण एवं गवेषणापूर्ण है। विशेषकर लेखक की विवेचना शैली सुबोध गम्य है। इस प्रकार के लेखों से ज्ञान का संवर्धन होता है। इस लेखमाला के अन्त में जो निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है, वह भी स्तुत्य है। इस प्रकार के खोजपूर्ण लेख सदा प्रकाशित किये जाने चाहिए।

—डा० सीलम वेंकटेश्वरराव
हैदराबाद

हिन्दू नहीं आर्य

—स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, अध्यक्ष-वैदिक संस्थान नजीबाबाद (उ० प्र०)

जिस प्रकार हमारे देश का नाम आर्यावर्त से भारतवर्ष तथा भारतवर्ष से हिन्दुस्तान और अन्त मे हिन्दुस्तान से इण्डिया तक पहुचा है, ठीक इसी प्रकार हमारा नाम भी आर्य से हिन्दू तथा हिन्दू से "काला आदमी" तक पहुचा है। यद्यपि हमे काले आदमी के नाम से पुकारने वाली रक्तवर्ण धारी जाति यहा से जा चुकी है और उसके जाने के पश्चात यह शब्द एक प्रकार से शब्द मात्र ही रह गया है। किन्तु इसी प्रकार बलात् हमारे ऊपर लादा जाने वाला हिन्दू शब्द अभी यहा उपस्थित है तथा हमे इस प्रकार से चिपट चुका है कि कालान्तर मे यदि इस शब्द के छूट जाने की कोई आशा हो भी तो भी हम स्वय इसे छाडने के लिए किसी प्रकार तैयार नही।

जब से महर्षि दयानन्द द्वारा प्रस्थापित आर्य समाज ने यह प्रचार किया कि हम लोग हिन्दू नही आर्य हैं। हम आर्यों की सन्तान है और हमारे देश का नाम आर्यावर्त है, तभी से आर्य समाज विरोधी विचार धाराओ को आन्दोलित करने के लिए सनातन धर्म सभाओ आदि की स्थापना करके "हम हिन्दू हैं" इत्यादि बातो की पुष्टि के लिए भाति-भाति के प्रयत्न किए जा रहे हैं, तथा यह युक्ति दी जाने लगी है कि हम इसलिए हिन्दू हैं क्योकि हिन्दुओ की सन्तान है अर्थात् हमारे पिता-पितामह भी हिन्दू थे। यह विचार कदापि नही किया जाता कि जब हमारे ऊपर यह शब्द लादा गया था, तब हमारे देश मे अविद्या का प्रकोप था। अत हम वास्तविकता को न खोज सके यदि किन्ही महानुभावो ने ऐसा प्रयत्न किया भी हो तो वह अपनी असमर्थता के कारण इस स्थापना का निवारण न कर सके। फलत हम इस विदेशी देन को आभूषण समझ कर धारण किये रहना पडा। परन्तु वर्तमान समय मे जबकि युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द तथा उनके द्वारा सस्थापित आर्य समाज ने इस रहस्य का उद्घाटन कर ही दिया तो हमारा यह कर्त्तव्य हो जाता है कि हम वास्तविकता की खोज करे और अपने स्वरूप को पहचानें।

जिस समय विदेशियो ने हिन्दू शब्द को हमारे ऊपर थोपा था, उस समय हममें न तो इतना साहस ही था और न योग्यता थी कि इस प्रस्थापना का विरोध करते, फलत इस विदेशी देन को हमने अपना सौभाग्य या दुर्भाग्य समझकर ग्रहण कर लिया तथा कुछ पीढियो के पश्चात् हम अपने सही नाम को भूल गए। परन्तु अब जबकि हम स्वतन्त्र है, हमारा देश स्वतन्त्र है और हमारी बुद्धिया स्वतन्त्र है तो हमे स्वतन्त्रता पूर्वक तथ्य की खोज करना तथा सत्य को मानना चाहिए। हमारी सम्मति में तो सत्य को ग्रहण करने और असत्य को त्यागने मे सर्वदा ही उद्यत रहना चाहिए।

हिन्दू शब्द के पक्षपातियो का कहना है कि हम लोगो को विदेशियो ने सिन्धु नदी के निकट रहने के कारण हिन्दू नाम से पुकारना प्रारम्भ कर दिया, क्योंकि उनकी भाषा मे "स" के स्थान पर 'ह' का प्रयोग होता था। हमारा कहना है कि यदि "स" को "ह" होकर कोई परिवर्तन होना था तो सिन्धु नदी को हिन्दू नदी होना चाहिये था और सिन्धु प्रात को हिन्दू प्रात होना चाहिये था। वह सब तो हुआ नही—हम हिन्दू हो गये, जबकि हमारे नाम आर्य में "स" है ही नहीं, जिसे उपर्युक्त सिद्धान्त के अनुसार "ह" का रूप हो जाना था। यह तो ठीक वही बात हुई कि "भूल" तो रहा आम का और लगने लगे बबूल" अर्थात सिन्धु नदी ही रही और सिन्धु प्रान्त सिन्धु प्रांत ही रहा। सिद्धान्तानुसार "स" का "ह" दोनो मे से किसी भी रूप मे नही हुआ अपितु आर्य का हिन्दू हो गया और इस युक्ति को जो बालू की दीवार है, लौह दुर्ग समझकर प्रस्तुत किया जाता है। पता नही भाषा शास्त्र के किस सूत्र के आधार पर यह भाषा विज्ञान का सिद्धान्त निश्चय किया गया है। ऐसी बातें वही व्यक्ति कर सकता है, जिसे बुद्धि तथा ज्ञान का अजीर्ण हो गया है।

यदि हम सिन्धु नदी के तट पर रहने से हिन्दू कहलाये तो उससे पहले क्या कहलाते थे ? यह एक ऐसा प्रश्न है, जिस पर विचार न करना सर्वथा मूर्खता होगी। यदि उससे पहले हम आर्य कहलाते थे तो भी हमें इस पराये लिबादे को उतार कर अपनी ही वस्तु को अपनाना शोभा देता है, क्योकि वह अपनी वस्तु इसकी तुलना मे अत्यन्त मूल्यवान है अत हिन्दू शब्द के पक्ष मे दी जाने वाली युक्ति सर्वथा निस्सार है।

दूसरी युक्ति जो हिन्दू शब्द के पक्ष मे दी जाती है, वह यह है कि हिं--हिंसा तथा दू--दूर अर्थात् जो हिंसा से दूर हो, वह हिन्दू। परन्तु यह शब्दार्थ भी मनगढन्त है, इसकी सत्यता के लिए कोई प्रमाण नही। इसका खण्डन भी इस प्रकार सहज ही में हो जाता है कि हिं-हिंसा तथा दू-दूसरो की अर्थात जो दूसरो की हिंसा करे, वह हिन्दू। अब बताइये कि यदि उपर्युक्त अर्थ ठीक है तो हमारा किया अर्थ ठीक क्यो नही ? यदि यह अशुद्ध है तो वह भी अशुद्ध। एतदर्थ यह युक्ति भी सार हीन है।

तीसरी युक्ति है कि हिमालय से इन्दु (कुमारी) अन्तरीक्ष तक जितना प्रदेश है उसके रहने वाले हिन्दू। हिमालय का "हि' तथा 'न्दु" लेकर हाथी का सिर और मनुष्य के शरीर द्वारा जिस प्रकार गणेश की उत्पत्ति बतलायी जाती है, ठीक उसी प्रकार यहा भी कलम चढाने का प्रयत्न किया गया है। भला कौन बुद्धिमान इन बातो को मानेगा ? यह तो वही बात हुई 'कहीं की ईट कही का रोडा भानुमति ने कुनबा जोडा।

एक चौथी युक्ति इसके पक्ष मे श्री प० दीनानाथ जी शास्त्री द्वारा वैदिक धर्म जोलाई १९५१ ई० के अक मे प्रस्तुत की गई थी और वह थी ऋग्वेद १।६४।२७ व अथर्व ९।१०।५ का मन्त्र जिसके दो भागो में से प्रत्येक का पहला शब्द लेकर हिन्दू शब्द बनता है अर्थात् प्रथम पाद का "हिं" तथा द्वितीय पाद का "दू । परन्तु कम से कम हमारी समझ मे यह नही आता कि शास्त्री जी के कथनानुसार यदि इस प्रकार हिन्दू शब्द बन जाता है तो मन्त्र के शेष भाग का क्या उपयोग रहा तथा इतनी बडी रचना क्यो रची गयी ? यदि उक्त मन्त्र से केवल हिन्दू शब्द की प्रस्थापना ही अभिप्रेत थी तो या तो दोनो पादो के प्रथम शब्दो "हि" तथा 'दू" पर ही बस कर देना था या फिर सम्पूर्ण मन्त्र का अर्थ हिन्दू शब्द का समर्थक और परिभाषा प्रस्तुत करने वाला होना चाहिए था। बात ऐसी है नही अपितु यह मन्त्र एक विशेष अर्थ रखता है, स्थानाभाव के कारण जिसे यहा नही दिया जा सकता अतएव यह बात भी स्पष्ट हो जाती है कि इस मन्त्र से हिन्दू शब्द की सिद्धि नही होती।

उपर्युक्त युक्तियो के खण्डन के पश्चात हमे आशा करनी चाहिए कि पाठक किसी भी प्रकार अपने को हिन्दू मानने को तैयार न होगे। अब यदि कुछ शेष रहता है तो वह यह कि हम जब इतने लम्बे समय से हिन्दू कहलाते आये है तो अब नाम परिवर्तन से क्या लाभ ? इसके लिए इतना ही उत्तर पर्याप्त है कि मार्ग भूला हुआ कोई व्यक्ति यदि ठीक मार्ग पर जाने के लिए कहे कि जब इतनी देर से इसी मार्ग पर आ रहा हू तो अब उस मार्ग पर जाने से क्या लाभ ? तो थोडी बुद्धि रखने वाला व्यक्ति भी ऐसे व्यक्ति को मूर्ख के अतिरिक्त और कुछ नही कहेगा, परिणामत "जहा नेत्र खुले वही दिन निकला" की लोकोक्ति के अनुसार ठीक मार्ग पर आ जाना ही श्रेयस्कर है।

इतने लेख के पश्चात् अब पाठको के विचारार्थ आर्य शब्द की पुष्टि में भी कुछ लिखना अनिवार्य हो जाता है। आर्य शब्द के अर्थ 'ऋगतौ" धातु से निष्पन्न होने के कारण गतिशील, प्रगतिशील, श्रेष्ठ, सज्जन, सदाचारी आदि होते है। वेद तथा वेदानुकूल साहित्य से हमें जो कुछ उपलब्ध हुआ है, उसमे से थोडा सा पाठको की जानकारी के लिए नीचे दिया जाता है।

यथा---विजानी ह्यार्यान्ये च दस्यव (ऋ० १।५१।८) तथा आर्यावृता विसृजन्तो अधिक्षमि (ऋ १०।६५।११) आदि वेद वाक्यो ने सत्य अहिंसा, पवित्रतादि उत्तम बातो का धारण करने वालो को आर्य कहा गया है तथा

(शेष पृष्ठ ७ पर)

ईश्वर सिद्धि (२)

शास्त्रार्थ महारथी पंडित रामचन्द्र देहलवी

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥

कई कहते हैं कि प्राय: देखा जाता है कि पापी मनुष्य सुखी रहते हैं और पुण्यात्मा दुःखी होते हैं। यदि ध्यान से देखा जाये तो बात ऐसी नहीं होती है। कर्म थोड़ी देर तक किया जाता है और उसका फल बहुत देर तक मिलता रहता है। हम भोजन थोड़ी देर तक करते हैं उससे हमारा पेट सारा दिन के लिये भर जाता है। यदि ऐसा न होता तो कर्म करने में किसी की रुचि ही नहीं होती। झूठ या सत्य में भी किसी की प्रवृति न होगी। यदि हम अच्छे कर्म करते हैं तो हमें फल बुरा मिलता है,ऐसा क्यों होताहै? विचार करके देखिये कर्म करते-करते यदि हमें कुछ बुरा फल मिला हो तो वह फल हमारे इन कर्मों का नहीं अपितु पिछले कर्मों का फल है। वर्तमान अच्छे कर्म कारण और वर्तमान बुरा फल उनका कार्य नहीं होता। मान लीजिये कि आपके घर कोई अतिथि आया, उसके आते ही आपको समाचार मिला कि आपकी स्त्री के पुत्र जन्म हुआ तब आप अतिथि महाशय से कहेंगे कि आपका आना कैसा अच्छा है कि आपके आते ही पुत्र की उत्पत्ति हो गई। क्या उन अतिथि महाशय के आने के कारण ही पुत्र का जन्म हुआ है? नहीं, वह नौ मास पूर्व किये हुए आपके कर्मों का फल है।

हमारी दृष्टि दुःख की ओर अधिक जाती है सुख को हम भूल जाते हैं। पिता जब तक जीवित रहता है, तब तक बालक ,सुख से रहते हैं। उन्हें किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता। उनकी सारी इच्छायें पूरी होती रहती हैं। किन्तु जब पिता की मृत्यु हो जाती हैं, तब बालक पिता के अभाव को अनुभव करता है, उसे बहुत कष्ट प्रतीत होता है। पहले दुःख की ओर उसकी दृष्टि बिल्कुल नहीं जाती थी, किन्तु अब वह पग-पग पर दुःख को अनुभव कर रहा है।

यदि ध्यान से देखे तो संसार में सुख अधिक है और दुःख कम। दुःख हमारे कर्मों का ही फल है। यदि कोई मनुष्य शुभ कर्म करता है और उस पर कोई विपति आ जाये तो वह उस पर परमात्मा की कृपा समझनी चाहिए। वह विपति उसके इन शुभ कर्मों से नहीं किन्तु पूर्व के अशुभ कर्मों के कारण आई है। उस धर्मात्मा के प्रति सबकी सहानुभूति हो जाती है कि देखो कैसा भला पुरुष है।

इस पर भी विपत्ति आ पड़ी। सब उससे समवेदना प्रकट करते हैं। सोने से कुन्दन बन जाता है। इन बातों पर हम ध्यान नहीं देते। यहा का तो वातावरण ही खराब हो गया है।

कहते हैं कि भारत "सेक्यूलर स्टेट" है। यहां धर्म के आधार पर किसी के साथ पक्षपात नहीं किया जाता।

जो पाप करेगा, चाहे कोई भी हो, उसे पाप का फल मिलेगा। किन्तु इस सेक्यूलर स्टेट की आड़ में तो यहां तक बीमारी फैल गई है। लोग कहते हैं कि स्कूलों में धर्म की शिक्षा ही नही देनी चाहिए। इस प्रकार की बात यदि रही तो यह स्वराज्य हानिकारक सिद्ध होगा। धर्म की शिक्षा तो देनी ही चाहिये।

१—सेक्यूलर धर्म के लक्षण:—

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौच मिन्द्रिय निग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम् ॥

[मनु० ॥

यहां शंका होती है कि भगवान जब शक्ल-सूरत वाला नहीं है, तब वह जगत को कसे बनाता है? मुरादाबाद में एक देवसमाजी महाशय व्याख्यान दे रहे थे। उन्होंने अपने सामने कुछ गीली मिट्टी रखली और बोले कि यदि परमात्मा में शक्ति है तो वह इस मिट्टी में से एक एक इञ्च की गोलियां बना दे। मैंने उनसे पूछा—महाशय आपके मुंह में खाने की शक्ति है? यदि है तो जो पदार्थ मैं बताऊं उसे खा ले। वह बोले—यदि वह पदार्थ न खाने योग्य हुआ तो? फिर मैं बोला—क्या आप अपनी बहिन से शादी कर सकते हैं? और फिर उससे सन्तान भी उत्पन्न कर सकते हैं? वह कहने लगा कि यह तो सभ्यता के विरुद्ध है। मैंने कहा—जिस प्रकार आप सब जगह किसी न किसी बात का "ब्रेक" लगा देते हैं कोई शर्त रख देते हैं, उसी प्रकार परमात्मा भी गोलियां यहां नहीं बनाता। उसमें गोलियां बनाने की शक्ति है और वह इतनी सुन्दर गोलियां बनाता है कि देखकर आप चकित हो जाते हैं ऊंट के पेट में देखिये परमात्मा कितनी सुन्दर गोलियां बनाया करता है। बकरी के पेट में कितनी सुन्दरता और चतुरता के साथ गोलियां बनाता है कि वे सब एक ही माप की और एक ही जैसी, एक के बाद एक करके सैकड़ों ही निकलती चली जाती है। इस प्रकार जगत की वस्तु देखकर ही हम परमात्मा की सिद्धी करते हैं।

कोई कहते हैं कि परमात्मा के कार्यों में क्रम नही होता, कोई वस्तु कहीं है और कोई कही। ऐसा कहने वालों का विचार ठीक नहीं। परमात्मा का क्रम तो बड़ा ही सुन्दर है। यदि वह एक भाग में पहाड़ ही पहाड़ बना दे, एक भाग में जंगल ही जंगल बना दे और एक भाग में नदियां ही नदियां बना दे तो काम कैसे चले? जिस प्रकार एक बाग में एक कतार सेवों की होती है। एक कतार नारंगियों की होती है और एक कतार अनार की होती है यह क्रम तो डिक्शनरी का क्रम है। उसमें पहले सब शब्द A से प्रारम्भ होते हैं फिर B से और फिर C से, इसी प्रकार उसका क्रम चलता है, लेकिन आप किसी बड़े से बड़े विद्वान की कोई पुस्तक देख लीजिये। उसमें अक्षरों के क्रम से कोई पृष्ठ या पंक्ति नही होतीं। यदि उसकी पुस्तक में एक पृष्ठ पर A ही A हो और दूसरे पर B ही B हो तो इससे क्या लाभ होगा और आप उनमें से क्या पढ़ सकेंगे? देखिये आपके कामों से ही परमात्मा पर की गई शंकाओं का निवारण होता है, मकान को ही लीजिए। क्या आप उसमें गुसलखाना ही गुसलखाना बनाते हैं, रसोईघर ही सब कमरों को बना लेते हैं? एक चींटी यदि आपके सिर के बालों में घुस जावे तो वह समझेगी कि मैं बड़े भारी जंगल में आ गई हूं। उसके बाद माथे पर आकर वह कहे कि अब तो एक सपाट मैदान आ गया है। फिर भौंहों में आकर वह कहने लगे कि अब फिर झाड़ियां आ गईं और फिर वह कहे कि अहो अब तो बड़ा भारी गड्ढा आ गया और फिर ऊंचा टीला आ गया।

यह देखकर वह कहने लगे कि यह तो किसी बेवकूफ ने बनाया है—क्या वह विचार ठीक होगा? इसी प्रकार भगवान ने इस जगत को उत्पन्न किया है और कहा है कि "विजानीहि, विजानीहि, विजानीहि" इस पर बार-बार विचार करो। इस पुस्तक को आप उठाये, किससे उठायेंगे? हाथ से। अब अपने हाथ को उठाइये किससे उठायेंगे दूसरे हाथ से? नहीं दूसरे हाथ से कभी नहीं। इस सबका उत्तर यही है कि भगवान अणु-अणु में विद्यमान है और वह अपनी शक्ति से इस ब्रह्माण्ड को रचता है।

एक शंका यह भी उठती है कि किसी वस्तु को बनाने वाला शरीरधारी ही होता है। फिर इस जगत को बनाने वाला परमात्मा

(शेष पृष्ठ ८ पर)

समाज एवं युवा शक्ति

—ब्र. राजेन्द्र कुमार आर्य यू. ए. ई. डरबन

समाज का तात्पर्य है समूह, अर्थात मानव समूह। मत्वा कर्माणि सीव्यतीति मानव इसका तात्पर्य है जो सोच विचार कर, सत्यासत्य का अनुसधान कर, सुखदायी सत्य मार्ग को अपनाए ऐसे मानवो का समूह समाज कहाता है। इसमे बालक, युवक तथा वृद्ध सभी आते हैं। जिस प्रकार रग बिरगे फूलो से सुन्दर पुष्प गुच्छा बनता है। उसी प्रकार समाज रूपी उद्यान का निर्माण बालक, युवक एव वृद्धो से निर्मित हो शोभायमान होता है।

मानव जीवन का प्रारम्भ बाल्यावस्था से होता है। इस अवस्था मे वह कुछ प्राप्त करता है। यह आगम काल है।

युवावस्था वह है जब मानव कुछ प्राप्त कर चुका होता है, एव उन्नति की ओर अग्रसर होते हुए, अन्यो को प्रगति मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हुए, उनकी सहायता करता है।

वृद्धावस्था में मानव के अग शिथिल पड जाते है। वह शारीरिक रूप से निर्बल हो जाता है। वह अपने जीवन की चरम सीमा पर पहुच चुका होता है। वह चाहते हुए भी, समाज को इतना कुछ नही दे पाता, जितना कि आवश्यक है।

जिस प्रकार मानव शरीर मे हृदय की प्रमुख्यता है उसी प्रकार समाज में युवक की। यदि क्षण भर के लिए हृदय गति अवरुद्ध हो जाय तो सम्पूर्ण शरीर निश्चेष्ट हो जाएगा। उसी प्रकार यदि समाज मे युवक शिथिल पड जाए तो सम्पूर्ण समाज भी शिथिल पड जाएगा। शिथिल ही नही अपितु अवनति के गर्त में गिर पडेगा।

जैसा कि कहा भी गया है—"धर्मार्थ काममोक्षाणाम् आरोग्य मूल-मुत्तमम्' अर्थात धर्म, अर्थ काम एव मोक्ष जो मानव जीवन के परम लक्ष्य हैं उन सबकी प्राप्ति के लिए स्वस्थ शरीर का होना आवश्यक है जो मानव को केवल युवावस्था मे ही प्राप्त होता है। जिससे वह अपने सामर्थ्य से न केवल युवावस्था मे ही स्वय का अपितु समस्त समाज का कल्याण कर सकता है।

यदि युवक चाहे तो समाज को उलट पुलट सकता है। वह उसे ससार के सर्वोच्च शिखर एवरेस्ट की चोटी पर भी पहुचा सकता है। [इतिहास इसका साक्षी है कि जब-जब इस ससार मे कोई क्रान्ति आई है तो उस क्रान्ति का आधार युवा शक्ति ही रहा जिसने अपने तन, मन, धन व सर्वस्व को समर्पित कर उस क्रान्ति की ज्वाला को प्रज्वलित रखा।

आप भारत की स्वतन्त्रता को ही लीजिए। यह स्वतन्त्रता केवल नारो से प्राप्त नही हुई अपितु इसके पीछे हमारे युवक क्रान्तिकारी—सरदार भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल व नेताजी सुभाष चन्द बोस जैसे अनेको युवको की बलिदानियां है जिसने आज भारत को एक स्वतन्त्र देश के रूप में अस्तित्व प्रदान किया है।

आज भारत ससार के उन्नतिशील देशो में अपना स्थान उन्नत कर सका है और हम गर्व के साथ कहते हैं—

"सारे जहा से अच्छा हिन्दोस्ता हमारा"

यह उन महान् युवा क्रान्तिकारियो की बलिदानियो का ही फल है।

भारत ही नहीं अपितु ससार मे जिस जिस देश ने उन्नति पाई है उसका मूलाधार युवाशक्ति ही रही। आप विश्व की उन्नति के इतिहास के पृष्ठो को पलटकर देखें तो यह ज्ञात होगा कि उस उन्नति के पीछे किन्ही युवको की महान शक्ति छिपी हुई है।

आज अमेरिका ससार के उच्चतम देशो मे से एक माना जाता है तो इसके कारण है—"अब्राहम लिकन" जैसे नवयुवक। अमेरिका ही नही अपितु जिस-जिस देश ने उन्नति पाई है उस उन्नति के आधार स्तम्भ युवक ही हैं।

जब भारत में नास्तिकता की जड विषसर्प की भाति फैलते हुए भारत की आत्मा आध्यात्मशक्ति को अपने विषैले फन से डसना चाहती थी उस समय स्वामी शकराचार्य जैसे नवयुवक ने अपनी कुशाग्र बुद्धि से नास्तिको को शास्त्रार्थ में पराजित कर भक्ति की परमपवित्र, अमृतमयी ज्ञान गगा को प्रवाहित किया।

जब भारत मे पराधीनता वश सर्वत्र अस्पृश्यता, जाति-पाति व भेद-भाव सती प्रथा जैसे भयानक रोग हमारे समाज को निर्जीव बनाने की चेष्टा कर रहे थे, उस समय आर्य समाज के प्रवर्तक व युगद्रष्टा देवदयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, राजाराममोहन राय जैसे युवा नेताओ ने स्त्री शिक्षा विधवा विवाह, अस्पृश्यता निवारण, सर्वमानव समभाव व एकेश्वरवाद जैसे उच्च विचारो का प्रचार कर हमारे भारतीय समाज को पुन स्वस्थ बनाया।

यदि आज विज्ञान ने इतनी उन्नति की है कि वह घण्टो का काम मिनटो में नही अपितु क्षणो में कर लेता है तो उन महान वैज्ञानिक आवि-ष्कारो के आविष्कर्ता कुछ वैज्ञानिक युवक ही हैं। जिन्होने अपने जीवन के अमूल्य समय को समर्पित कर विज्ञान को मानवमात्र के लिए उपादेय बनाया।

इतना ही नहीं हम यहा तक कह सकते है कि "युवक है तो समाज है" क्योकि जैसा कि कहा भी गया है— सघर्ष ही जीवन' उस सघर्ष को चलाने वाला समाज में जीवन लाने वाला कोई युवक ही हो सकता है न कि कोई वृद्ध। हमारे वृद्ध पूज्य है वे हमारा मार्गदर्शन मात्र कर सकते है।

युवक ही समाज की रीढ की हड्डी है। जिसके बिना समाज रूपी शरीर ढहकर नष्ट भ्रष्ट हो जाएगा।

अत आज हम युवको का कर्तव्य है कि हम अपने गौरवमय भारतीय इतिहास से शिक्षा ग्रहणकर उन महान क्रान्तिकारी नेताओ व महापुरुषो के जीवन मे प्रेरणा प्राप्त कर अपने देश की उन्नति हेतु अपने तन, मन, धन व सर्वस्व को समर्पित करने के लिए तत्पर हो तथा भारतीय गौरव की गरिमा का प्रकाश दिग् दिगन्तो में विकीर्ण करने का दृढसकल्प ग्रहण करे। यह हम युवा भाईयो का कर्तव्य है। जो सगठन व सहयोग से सिद्ध हो सकता है। अतएव हमे अपने समस्त भेद-भावो को मिटाकर एकता के सूत्र में बधना होगा और भारत की गौरवमयी गाथा को सर्वत्र प्रसारित करना होगा। यह आपका हमारा हम सबका कर्तव्य है।]

हिन्दू नहीं आर्य

(पृष्ठ ५ का शेष)

निरुक्त मे भी 'आर्य ईश्वर पुत्र' है आर्य ईश्वर पुत्र को कहते है, ऐसा पाया जाता है। गीता में—

कुतस्त्वा कश्मलमिद की विषमे समुपस्थितम्।
अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन ॥अ० २।२॥

इस श्लोक द्वारा युद्ध के समय कायरता को प्राप्त हुए अर्जुन की वृत्ति को अनार्यों की वृत्ति कहा है, इससे स्पष्ट सिद्ध है कि आर्य उत्तम वृत्ति वाले अर्थात श्रेष्ठ लोग कहलाते हैं। विदुर नीति के—

आर्य कर्माणि रज्यन्ते भूमि कर्माणि कुर्वते।
हित च नाम्हसूयन्ति पण्डिता भरतवर्षभ ॥१।३०॥

इस उद्धरण मे अत्यन्त धार्मिक मनुष्य को आर्य कहा गया है तथा चाणक्य नीति मे भी—

अभ्यासाद्धार्यते विद्या कुल शीलेन धार्यते ॥
गुणेन ज्ञायते त्वार्य कोपो नेत्रेण गम्यते ॥

अभ्यास से विद्या, सुशीलता से कुल, गुण से आर्य और नेत्र से क्रोध का ज्ञान होता है।

इसके अतिरिक्त महाभारत, कौटिल्य अर्थशास्त्र, अमर कोष तथा बौद्ध दर्शनो इत्यादि मे से अनेकानेक प्रमाण देकर आर्य शब्द की महानता सिद्ध की जा सकती है, किन्तु हिन्दू शब्द की महानता के लिए कोई भी प्रमाण उपलब्ध नही। भले ही पक्षपात से खींचतान कोई कितनी ही कर ले।

(क्रमश:)

सार्वदेशिक साप्ताहिक के आजीवन सदस्यों की सूची

दि० १-२-९० से ३०-४-९० तक

१९५९५ श्री बी. एन. गुप्ता, टी ई. आई., हाउस अहमदाबाद, गुज०
१५३४४ ,, सुधीर आहूजा कस्तूरी रधा सैकेन्ड स्ट्रीट मदुरै
१५३४५ ,, अमरनाथ जी मलहोत्रा, ६०४९।२ देवनगर करोल बाग, नई दिल्ली
१५३४६ ,, नवदीप यादव S/o श्री सोमदत्त वर्मा, २५ वैरागी कालोनी इन्दौर
८२३३ ,, मन्त्री जी आर्य समाज पुनसीका जि० रेवाड़ी
११०४६ ,, विश्वप्रकाश जी, भरसुवा डुडका उडीसा
१३५९५ ,, जगवीर आर्य, C/o वेदप्रकाश आर्य, सासण तनोहऊना
१०६९९ ,, कृष्ण कुमार साहनी ६७८ ऋषि नगर शकूरबस्ती दिल्ली
११०२१ ,, सुभाष चन्द्र अग्रवाल, म० न० ४७९१ दरियागज ,,
१५३७२ ,, बेलमा सायब्बा जी आर्य, हारकेश गली, निजामाबाद (आ.प्र.)
१५६ ,, मन्त्री, आर्य समाज चोपन जि०--सोनभद्र
१२८९७ ,, रतनलाल गुप्ता ८९।९ बलकेश्वर कालोनी आगरा (उ०प्र०)
१५३७५ श्रीमती मनोरमा देवी १०।६८ विरमानी एण्ड कम्पनी ज्वालापुर
१३३७३ श्री एस.के. गुप्ता, साउथईस्टर्न रोडवेज हरीपुर रोड कटक उडीसा
११६६६ ,, शिवजीभाई काजीभाई नारायण पो० वडाली सावरकण्ठा गुज.
१०३३१ ,, मन्त्री आर्यसमाज शहीद पुस्तकालय एव वाचनालय शाहजहापुर
१४५१६ ,, घोन्डी राव जाछव सरावती विकाराबाद रगारेड्डी (आ. प्र.)
५१४६ ,, कुलदीपचन्द ५४०१ प्रताप मार्केट सदर बाजार नई दिल्ली
१५३८३ ,, सुदर्शन जी शास्त्री, प्रिंसीपल महिला आयुर्वेदिक कालेज खानपुर कला रोहतक
१५३८४ ,, नातूभाई याहयाभाई पटेल २३ भाग्य लक्मी सोसायटी बल्लभ विद्यानगर खेडा (गुज०)
१२९१२ ,, रामेश्वर आर्य, आर. के. मुखर्जी रोड आलम बाजार कलकत्ता
१५३९७ ,, नत्थूलाल जी, २६३ इन्द्रानगर डा० अम्बेडकर चौक व्हीकल जबलपुर
११५५४ ,, विश्वनाथ जी, ५ रैकेट कोर्ट रोड सिविल लाइन दिल्ली
१५३९३ डा० शीलम वैंकटेश्वर राव ५-८-१०४ महेशनगर स्टेशन मार्ग हैदराबाद
१५२०९ श्री रामसिंह माटी, न्यू लाईट आर्ट वर्क्स म० गाधी हास्पीटल रोड, जोधपुर
१५४२८ ,, शैकापुर ऐश्वर्य जहीनाबाद जिला मेदक (आ० प्र०)
१५४२७ डा० शान्ति प्रकाश आर्य, समाज पथ तिलुआ नालन्दा बिहार
१००६० श्री हरिसिंह मन्त्री आर्यसमाज कन्या गुरुकुल पचगाव गोपी भिवानी
११९६ ,, छावडा घनश्याम जी, मन्त्री आर्य समाज ध्रागन्धा
१५४०६ ,, ठा, वासदेव, २०-३-३९१ पुराना कबूबर खाना हैदराबाद
१५४३४ ,, सी. नरसिम्मा १-११-११०/३ श्यामलाल बिल्डिंग बेगम पेठ हैदराबाद
१५४३६ ,, अ कम बुच्ची नरसैय्या १०-४-१३६ करीमाबाद वारगल (आ. प्र.)
१५४३७ ,, आडेपू कैलाश म. न. १०-३-६३ गिरिमा जी पेठ वारगल (आ. प्र.)
१५४३८ ,, आमच सत्तैया म.न. ११-९६४ नरेन्द्र नगर ,, ,,
१५४३९ ,, आकुल उदयचन्द जी, ८-९-६६ गिर्माजी पेठ ,,
१५४४० ,, ओडपेल्लि वेंकटराम नरसय्या १०-३-१३ गिर्माजी पेठ वारगल
१५४४१ ,, ओरु गट्टि सत्य नारायण गोविन्द नगर ,, ,, ,,
१५४४२ ,, ओरुगट्टि चक्रपाणि म. न. ११-९१२-१ नरेन्द्रनगर वारगल (आ. प्र.)
१५४४३ ,, कर्नेकट्टि राजेश्वर राव आर्य, गोविन्दराव पेठ मुलुगु वारगल
१५४४४ ,, कर्नेकट्टि नागभूषणम् C/o आर्यसमाज मन्दिर अग्मिकुण्टा करीम नगर
१५४४५ ,, कूचना अनसूया गिर्माजी पेठ बरगल (आ. प्र.)
१५४४६ ,, कुल्ला अन्नपूर्णा, ए-५९ आजम जाही मिल्स कालोनी वारगल
१५४४७ ,, कोडिमाल नरहरि १६-५-८५ रेलवेगेट आर्यवीर नगर ,,
१५४४८ श्री कोगा आज नेचुलु ११-२२-७३ नरेन्द्र नगर वरगल (आ. प्र.)
१५४४९ ,, कोट वैंकटय्या ११-२०-४१ ,, ,, ,,
१५४५० ,, कोर वोइना रामचन्द्रम १८-३९० करीमाबाद वारगल
१५४५१ ,, कोला राज शेखर १०-६-७७ गिर्माजी पेठ वर गल
१५४५२ ,, गजवेल्लि वेकटराम नरसय्या टेकुर्ति जम्मी कुण्टा करीमनगर
१५४५३ ,, गोर टला सामवय्या ११-२२-४३ नरेन्द्रनगर वारगल
१५४५४ ,, बुद्ध रामचन्द्रम पो. आर्य पेल्ली देसाई पेठ वर गल
१५४५५ ,, चिलवेरू नरसय्या ११-१५-४५ नरेन्द्र नगर ,,
१५४५६ ,, चिनवेरू शकरराव बी-१० बैंक कालोनी कृष्णापुरी वर गल
१५४५७ ,, चिन्तला वैंकटय्या १८-५-२८ करीमाबाद वार गल
१५४५८ ,, चिम्मनि नरहरि शास्त्री १७-७-१३ सुभाषनगर बार गल
१५४५९ ,, चु चु नरसय्या २०-३-५० किला वार गल (आ. प्र.)
१५४६० ,, दासुकुमार स्वामी सुभाष नगर उर्स वरंगल (आ. प्रा.)
१५४६१ ,, डा० वासी राजमल्लय्या १७-९-४६ सुभाषनगर उर्स वार गल
१५४६२ ,, डा० दासरी वैंकु टम १७-२-११६ करीमाबाद बार गल
१५४६३ ,, देवर कोडा रामलिंगम C/o आ. स. महर्षि दयानन्द मार्ग ,,
१५४६४ ,, नाल्लोजू मूमय्या ११ १६-२३ नरेन्द्रनगर वार गल (आ. प्र.)
१५४६५ ,, नालयोगुला मल्लैया १६-५-१२७ आर्यवीरनगर रेलवेगेट वार.
१५४६६ ,, परिमल्ल शशि रेखा १८-५-२६ करीमाबाद वारंगल आ. प्र.
१५४६७ ,, पिल्लिराम चन्द्रय्या बी-४६ नरसेम पेठ वारगल (आ. प्र.)
१५४६८ ,, पीडाल सूर्यनारायण आर्य, आर्य पेल्लि देसाई पेठ वा० आ.प्र.
१५४६९ श्री वन्दि नारायण २०-३-२९ गिरमा जी पेठ वार गल
१५४७० श्री मय्या एलय्य १८-५५ नरसमपेठ वार गल
१५४७१ ,, बाल वीर भद्र ११-२०-२७ नरेन्द्र नगर वार गल
१५४७२ ,, बुर्रा वरद राजलू म. न. ११-११-८ गिर्माजी पेठ वार गल
१५४७३ ,, मसुना उप्पलैया ११-१९-१८ नरेन्द्र नगर वार गल (आ. प्र.)
१५४७४ ,, मामुनूरि रामस्वामी आर्य, मेहवाडा ,, ,,
१५४७५ ,, के. कनकैय्या आर्य, निकट इस्लामिया कालेज म० गाधी मार्ग वार गल (आ. प्र.)
१५४८७ ,, मालन बाई दत्तात्रेय चव्हाण गु ओटी उमरगा, उस्मानाबाद (महा०)
१५४८८ ,, धनाभाई विट्ठलसिंह राजपूत गु जोरी उमरगा, उस्मानाबाद (महा०)
४१७० ,, मन्त्री जी आर्य समाज हापुड, गाजियाबाद
१२९९० ,, बलवीर सिंह जी ग्राम जवाहरा जिला रोहतक, हरियाणा
१५४८९ ,, बाबूराम रणादेवे बडवल राजूर लातूर (महा.)
१५४९१ ,, वेद कुमारी शर्मा, ग्राम पडाव नवावग ज गोण्डा (उ. प्र.)
११३८७ ,, श्यामलाल अभियान्त्रिकी महाविद्यालय उदगीर महा०
१५४८३ श्री मनोज कुमार विमलकुमार सोहनी एड. ३२ माली मौहल्ला खरगौन (म. प्र.)
५२११ श्री जगमल दास बेधडक विलारपुर तोताहटी कारोता महेन्द्रगढ़ (हरि०)
१६००२ पार्वती बाई निलंगार ग्राम खोदलूर आलन्द गुलबर्गा कर्नाटक
४१५७ श्री मन्त्री जी आर्यसमाज हींग की मण्डी आगरा (उ. प्र.)
९५३१ ,, करतारसिंह जी ३४८ गली-६ फूल बाग कालोनी सूरजकुण्ड मेरठ
२०११ ,, रामकुमार सिंह आर्य, शिवाला कुर्द भैंसा बिजनौर (उ.प्र.)
११२९१ ,, जसवन्त राज कन्हैयालाल सैनी कटरा बाजार कन्हैया मार्केट, जौधपुर
१६०१५ श्री विद्याभूषण प्रसाद ग्राम पो० देसरी वैशाली बिहार

आर्य समाज की गतिविधियां

आर्यसमाज "सी" ब्लाक, जनकपुरी, पंखा रोड, नई दिल्ली का दसवां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज "सी" ब्लाक, जनकपुरी, पंखा रोड का दसवां वार्षिकोत्सव १४ से २२ अप्रैल १९९० तक मनाया गया और सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस उत्सव के अन्तर्गत बच्चों की वाद-विवाद प्रतियोगिता, प्राइमरी से लेकर कालेज स्तर तक, अनेक बच्चों के खेल कूद, मन्त्र-कविता पाठ तथा भाषण प्रतियोगिताओं से लेकर अनेक सांस्कृतिक धार्मिक एवं राजनीतिक कार्यक्रम जुड़े हुए थे।

सबसे महत्वपूर्ण कार्यक्रम साम्प्रदायिकता विरोधी सम्मेलन था २०-४-९० को रात्रि में इस सम्मेलन के प्रमुख वक्ताओं में प्रो० कैलाशनाथसिंह, सांसद (वाराणसी), प्रो० रासासिंह, सासद (अजमेर) डा० सच्चिदानन्द शास्त्री, महामन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, प्रशान्त वेदालंकार दिल्ली थे।

कृतज्ञता और आभार प्रदर्शन

वैदिक यज्ञ समिति धमेई बदायूं उत्तरप्रदेश के यजुर्वेद पारायण महायज्ञ के लिए हमें श्री पं० राजेश्वर जी शास्त्री व्याकरणाचार्य के द्वारा, लुधियाना की सभी स्थानीय आर्य समाजों से तथा व्यक्तिगत रूप से आर्य युवक सभा पंजाब से तथा जिला आर्य सभा लुधियाना से विशेषकर श्री देवराज जी खुल्लर की ओर से ११५ पुस्तकें और आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ है। इसी प्रकार जालन्धर और दिल्ली से कुल मिलाकर ३१००-०० सौ रुपये की राशि प्राप्त हुई है। आपके पवित्र सहयोग से हमारा यह विशाल यज्ञ सम्पन्न हुआ है। हम आप सभी धनी दानी-मानी महानुभावों के कृतज्ञ और आभारी हैं। सधन्यवाद। —सत्यदेव आर्य

वार्षिक उत्सव

आर्य समाज हमीरपुर का वार्षिकोत्सव १३ अप्रैल से १५ अप्रैल १९९० तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। १३ अप्रैल को यज्ञ और ध्वजारोहण के साथ कार्यक्रम शुरू हुआ।

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के भजनोपदेशक श्री हरिश्चन्द्र जी ने अपने संगीतमय उपदेशों से ग्राम जनता को अत्याधिक प्रभावित किया उनकी प्रेरणा स्वरूप लोगों ने यज्ञोपवीत भी धारण किए। लोगो के अनुरोध पर एक दिन में उनके चार-चार कार्यक्रम रखने पड़े। फिरोजपुर के प्रसिद्ध गायक श्री विजय आनन्द जी जिन्हे पहली बार यहां पर आमन्त्रित किया गया था अपने भजनों से सबका मन मोह लिया।

ईश्वर सिद्धि

(पृष्ठ ६ का शेष)

शरीर धारी क्यों नही? सुनिये शरीरधारी मनुष्य जो कुछ जानता है वह अपने से बाहर बनाता है और परमात्मा अपने अन्दर ही सब कुछ बनाता है।

परमात्मा तो—

तदेजति तन्नैजति तद्दूरे तद्वन्तिके।
तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः॥

वह सब ब्रह्माण्ड के अन्दर भी है और इस सबके बाहर भी है। वह तो "अणोरणीयान् महतो महीयान्" सूक्ष्म से भी सूक्ष्म है और महान से भी महान् है। इसलिए उसे शरीर धारण करने की आवश्यकता ही नही। वह बिना शरीर के ही ब्रह्माण्ड का निर्माण करता है।

राष्ट्ररक्षा जागृति अभियान

तिजारा, गत: छः माह से आचार्य जी राष्ट्र रक्षा के लिए देश जागृति का अभियान लेकर घर-घर दर-दर ग्राम-ग्राम नगर-नगर घूम-घूम कर देश (कश्मीर पंजाब व आसाम) की स्थिति की अवगति दे देकर अपने राष्ट्र जागृति अभियान को सफल बनाने का कमर कसकर प्रयास कर रहे हैं।

समाज सेवी श्री गोवर्धनदास काठपालिया का कार दुर्घटना में निधन : श्रद्धांजलि सभा

आर्य जगत के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री गोवर्धनदास जी काठपालिया विभाजन से पूर्व आर्यसमाज अनारकली लाहौर में मन्त्रीपद के कार्यभार के साथ गुरुकुल कांगड़ी में कार्यालय अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। आपने बिलासपुर हिमाचल प्रदेश में आर्यसमाज के प्रचार कार्य को प्रगति दी। वर्तमान में आप वैदिक साधनाश्रम गाजियाबाद (उ०प्र०) में अवैतनिक अधिष्ठाता के पद पर निस्वार्थ भाव से सेवा कार्य कर रहे थे। गाजियाबाद की अनेक आर्य संस्थाओं मे आपका सक्रिय सहयोग रहा। ७८ वर्षीय श्री काठपालिया जी अपने पीछे पुत्र, पुत्रियों, पौत्र-पौत्रियो से भरा परिवार छोड़ गये हैं।

सवेदना तथा श्रद्धांजलि देने वालों में प्रमुख रूप से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव, वैदिक विद्वान् प्रो० रत्नसिंह, आयुक्त दिल्ली सभा अन्य सरकारी अधिकारियों के अतिरिक्त आचार्य नरेन्द्र, आचार्य ताना जी, गुरुदत्त जी वेदालंकार आदि अनेक लोगो ने अपनी ओर से तथा संस्थाओं की ओर से श्रद्धाजलि दी।

वार्षिकोत्सव

—आर्य समाज मलीगज वाराणसी का २५ वां वार्षिकोत्सव रजत जयन्ती महोत्सव के रूप मे मनाया गया, जिसकी अध्यक्षता प० तुलसीराम मिश्र ने की। शोभा यात्रा का संचालन श्री रामकुमार मौर्य द्वारा किया गया। —मन्त्री

—महर्षि दयानन्द साधु आश्रम अजीवा दरवाजा, भरतपुर (राजस्थान) का द्वितीय वार्षिकोत्सव १, २, ३ मई, १९९० तिथि वैशाख शुक्ला सप्तमी, अष्टमी, नौमी मंगलवार, बुधवार, गुरुवार को मनाया गया।

—स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

—प० बंगाल स्थित हावड़ा नगर मे स्थानीय आर्य समाज का ६८ वां वार्षिकोत्सव समारोह २७ मार्च से १ अप्रैल तक बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर श्री स्वामी रूपानन्द जी (बंगाल) डा० महावीर जी शास्त्री गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी हरिद्वार, डा० देवेन्द्र कुमार जी सत्यार्थी नालन्दा, श्री दिनेशदत्त आर्य भजनोपदेशक बिजनौर, प्रो० उमाकान्त उपाध्याय कलकत्ता। —पुरुषोत्तमलाल सर्राफ मन्त्री

—आर्य समाज देसराज कालोनी पानीपत का तृतीय वार्षिकोत्सव दिनांक ७ व ८ अप्रैल को कालोनी मे ही बड़ी धूमधाम के साथ मनाया गया। जिसमे आर्य महिला सम्मेलन, आर्य युवक सम्मेलन, वेद सम्मेलन तथा व्यायाम प्रदर्शन का विशेष रूप से आयोजन किया गया। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान सन्यासी एवं नेता व भजनोपदेशकों ने भाग लेकर जन समूहों को भिन्न २ सम्मेलनों मे अपने-अपने विचार प्रकट कर उनका मार्ग दर्शन किया।

पानीपत के उपायुक्त मान्य श्री विजय कुमार जी की ओर से मान्य श्री अमरनाथ जी एस०डी०, एम० पानीपत ने आर्य समाज देसराज कालोनी के भवन निर्माण हेतु भूमि देने की घोषणा की जिसका जन समूह ने करतल ध्वनि से घोषणा का स्वागत किया। —जगदीशचन्द्र बहल, मन्त्री

—आर्य समाज शाहजहांपुर (रजि०) का वार्षिकोत्सव दिनांक १, २ एवं ३ जून १९९० को आर्यसमाजके चौक में मनाया जायगा। जिसमें वक्ता श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी, श्री ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी, श्री उत्तमचन्द जी शरर एवं भजनोपदेशक श्री वेदपाल जी आर्य, श्री कृपालसिंह जी पधारेंगे।

—सुरेशचन्द्र मन्त्री

—गोड्डा जिला के महपा ग्राम में स्थानीय आर्य समाज का ७ वां वार्षिकोत्सव दिनांक १२, १३, १४ एवं १५ अप्रैल को धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर मे स्वामी आत्मानन्द सरस्वती मेरठ, प० व्यासानन्द शास्त्री पूर्णिया श्रीमती अर्चनाशीलादेवी मुजफ्फरपुर, कमलदेव जी आर्य, मथुरा के कार्यक्रम होते रहे। हजारो ग्रामीणो ने उपस्थित होकर लाभ उठाया। —वीर प्रकाश आर्य, संयोजक

—बिहार राज्य प० पटना जिले में आर्य समाज फतुहा का ७१ वां वार्षिकोत्सव तिथि १०, ११, १२ एवं १३ अप्रैल को बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर स्वामी मोक्षानन्द जी मथुरा, डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी नालन्दा, प० व्यासनन्दन शास्त्री पूर्णिया, श्रीमती मनोरमा देवी अलीगढ, ठाकुर महावीरसिंह पटना एवं कपिल कुमार शर्मा के कार्यक्रम हुए हजारो की संख्या में उपस्थित होकर लाभ उठाया।

—जयदेव कुमार आर्य, मन्त्री

शोक समाचार

—वयोवृद्ध आर्य समाजी, आर्य समाज के वरिष्ठ एवं कर्मठ कार्यकर्ता एवं भूतपूर्व प्रधान, आर्य समाज चन्दौसी के वरिष्ठ सदस्य श्री शान्ती स्वरूप जी अग्रवाल का निधन दिनांक १ अप्रैल १९९० को हो गया है। श्री शान्ती स्वरूप जी अग्रवाल नगर के प्रमुख उद्योगपति थे एवं किसी भी प्रकार की प्राकृतिक आपदा के समय आप किसी भी प्रकार की सहायता एवं दान के लिये तत्पर रहते थे आप रामप्यारी आर्य कन्या इन्टर कालेज के भी ट्रस्टी थे। —हरिओम आर्य मन्त्री

आर्य जगत् के समाचार

आचार्य श्री यशपाल वर्मा और श्री करुणाकर शर्मा सम्मानित

डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल ब्रिज विहार में स्वामी दयानन्द के स्वप्नो को साकार करने के प्रयास हेतु प्राचार्य श्री यशपाल वर्मा व आचार्य श्री करुणाकर शर्मा (सस्कृत अध्यापक) को आर्य केन्द्रीय सभा के मन्त्री डा० वीरपाल विद्यालकार ने एक विशेष समारोह में सम्मानित करते हुए एक-एक शील्ड प्रदान की।

अपने वक्तव्य में डा० वीरपाल विद्यालकार ने कहा 'दो वर्ष की अल्प अवधि में ही विद्यालय ने आर्य समाज के सिद्धातो एव मूल्यो को कार्य रूप देने में जो भूमिका निभाई है, वह अत्यन्त प्रशसनीय है।

प्राचार्य श्री वर्मा ने श्री विद्यालकार द्वारा दिए गये सम्मान के लिए उन्हे धन्यवाद देते हुए विश्वास दिलाया कि श्री करुणाकर शर्मा जैसे कर्मठ कार्यकर्ताओ एव विद्यालय को समर्पित अध्यापिकाओ के सहयोग से हम विद्यालय मे चरित्रवान, सुसस्कृत पीढी का निर्माण कर रहे है।

आर्य सम्मेलन सम्पन्न

सुल्तानपुर। हम सब पहले आर्य (श्रेष्ठ) है, राजनैतिक बाद म जैसा कि पूर्व समय मे विद्वान् वक्ता श्री प्रकाशवीर शास्त्री (सासद), राजर्षि रणजय सिंह थे, वे राजनीति में भी आर्य समाज के सिद्धातो को प्रस्थापित करने हेतु सदैव प्रयासरत रहे।' उपरोक्त विचार आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के प्रदेशीय अध्यक्ष एव मुख्य अतिथि श्री इन्द्रराज जी ने आर्यसमाज मन्दिर सुलतानपुर में आयोजित मण्डलीय आर्य सम्मेलन के प्रथम सत्र में व्यक्त किए।

श्री इन्द्रराज ने आगे कहा कि आज देश मे आर्य समाज के सिद्धान्तो की अब महती आवश्यकता है। उन्होने मुख्यमन्त्री उ०प्र० श्री मुलायम सिंह यादव के हिन्दी मे काम करने के साहसिक निर्णय की सराहना की और कहा कि पिछली सरकार के मुख्यमन्त्री श्री नारायणदत्त तिवारी ने हिन्दी दिवस पर उर्दू को द्वितीय राज्यभाषा के रूप मे प्रदेश मे लादने का प्रयास किया। इसी प्रकार पूर्व शिक्षामन्त्री श्री कैलाशनाथ सिंह यादव के आर्य समाजी होने के बावजूद भी इसके पूर्व उर्दू का प्रोत्साहन मिला था।

उन्होने कश्मीर से भागे विस्थापितो की दशा पर चिन्ता व्यक्त करते हुए उनकी हर प्रकार से सहायता करने की घोषणा की और धारा ३७० को समाप्त करने पर बल दिया और कहा कि भारत के किसी भी क्षेत्र के नागरिक को कश्मीर में रहने का अधिकार दिलाया जाय। उन्होने विदेशी पैसो पर गरीबो के धर्म परिवर्तन कर ईसाई बनाये जाने पर लोगो का ध्यान आकर्षित करते हुए, गरीबो, हरिजनो गिरिवासियो के बीच स्कूल, चिकित्सालय और अन्य सहयोगी कार्य खडा करने का भी आग्रह किया।

हरिजनों को सुविधाएं

(पृष्ठ १ का शेष)

गारंटी देने का प्रावधान भी किया जाएगा। मद्रास मे श्री पासवान ने प्रेस ट्रस्ट को बताया कि प्रबन्ध मे श्रमिको की भागीदारी का विधेयक २५ मई से पहले ससद मे पेश कर दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि निर्माण कार्यों में लगे श्रमिको से सम्बन्धित विधेयक भी मानसून सत्र में लाया जाएगा।

उन्होंने बताया कि महिलाओ तथा बच्चों के लिए एक राष्ट्रीय आयोग के गठन का विधेयक इसी महीने लाया जाएगा। विकलांगों के लिए सेवाओं की पहली तीन श्रेणी में चार प्रतिशत और चतुर्थ श्रेणी में चार प्रतिशत आरक्षण सम्बन्धी एक विधेयक का मसौदा तैयार कर लिया गया है। आरक्षण निजी क्षेत्र मे भी किया जाएगा तथा इसका पालन किए जाने पर दड देने की व्यवस्था भी इसमें शामिल होगी।

कोरबा में आर्य समाज महिला मंडल का गठन

दि० ३-४-९० को रामनवमी के पावन पर्व पर आर्य समाज मन्दिर कोरबा में श्री केवल कृष्ण वासन जी की अध्यक्षता मे क्षेत्र की प्रबुद्ध समाज सेवी महिलाओ की एक बैठक हुई। आर्य प्रतिनिधि सभा म० प्र० व विदर्भ के उपमन्त्री श्री श्रीपाल सिंह आर्य के मार्ग दर्शन मे सर्व सम्मति से 'आर्य समाज महिला मण्डल कोरवा' का गठन हुआ। चुनी हुई महिला पदाधिकारियो के की घोषणा इस समारोह के मुख्य अतिथि श्री पूरन सिंह श्रम-कल्याण अधिकारी द्वारा की गई।

अध्यक्ष—श्रीमती प्रमिला वासन (कोरवा) मन्त्री– श्रीमती सुमन क्षेत्रपाल (बालको नगर), कोषाध्यक्ष—श्रीमती स्मृति गुप्ता (कोरवा) चुने गये।

ग्रेट ब्रिटेन की यात्रा से श्री हंस और श्री छोटूसिंह लोटे

नई दिल्ली। गत १७ अप्रैल सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक श्री प० बालदिवाकर हस और श्री छोटूसिंह एडवोकेट प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान ग्रेट ब्रिटेन के दौरे पर पधारे थे आप लोगो का आर्यसमाज लन्दन में स्वागत और भाषण हुआ तत् पश्चात् अनेक भारतीय विद्वानो, नागरिको से विचार विमर्श हुआ।

आप लोग ७ मई को सयुक्त अरब अमीरात के वायुयान से सकुशल भारत लौट आये।

प्रशिक्षण शिविर

भुवनेश्वर मे १ से ३ अप्रैल तक का वैदिक धर्म प्रचारको के प्रशिक्षण शिक्षा शिविर, उत्कल मे यह एक प्रशमनीय नूतन वैदिक विचारधारा, इन्जिनीयर प्रियव्रत दास जी वेदा के वैज्ञानिक गवेषक, उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री के प्रेरणा से, वैदिक प्रचारको के लिए, वेदप्रचार प्रगति दिशा की तालिका इस वर्ष प्रारम्भ किया गया है। उक्त शिविर में—

सर्वश्री सुभाष चन्द शास्त्री-जिला बलागीर, रणजीत आर्य-जि० सम्बलपुर, नारायण आर्य-जि० फुलवानी, सुरेन्द्र विद्या वाचस्पति-जि० फुलबानी महेन्द्र विश्वाल जी-जि० पुरी, वेदव्रत जी शास्त्री जि० गन्जाम। वेद-प्रचारक इ० प्रियव्रत दास जी से तथा सहयोगी श्री व्रजबन्धु पण्डा, श्री वेदव्रत जी शास्त्री, वेदप्रभा पत्रिका के सम्पादक श्री वीरेन्द्र कर जी आदि।

अन्तर्जातीय विवाह

ग्राम एकडगा, पो० एकडडा, जिला पटना (बिहार) निवासी श्रीमान् रघुवश नारायणसिंह जी के सुपुत्र डा० नवीन कुमार सिंह (आयु २८ वर्ष) का शुभविवाह सस्कार, मो. अलकापुरी, पो० अनीसाबाद, जिला-पटना (बिहार) निवासी श्री सन्तोष कुमार चटर्जी की २६ वर्षीया सुपुत्री डा० तनीमा चटर्जी के साथ दिनाक ३० मार्च, १९९० (रात्रि ६ बजे से ८ बजे तक) को आचार्य प० सुप्रीति मित्र शास्त्री एव श्री भुवनारायण आर्य के सयुक्त पौरोहित्य मे आर्यसमाज मन्दिर, लहेरियासराय (दरभगा) के सभागार में पूर्णतया वैदिक विधि द्वारा सम्पन्न हुआ।

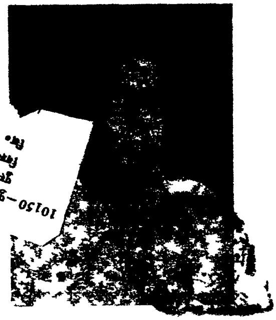
प्रधान, आर्यसमाज लहेरियासराय

गुरुकुल चित्तौड़गढ़ में प्रवेश प्रारम्भ

महर्षि दयानन्द मनोवांछित देश का सुप्रसिद्ध शिक्षणालय आपका चिर परिचित श्री आर्य गुरुकुल चित्तौडगढ शिक्षा यहा सर्वथा नि:शुल्क है। यहां लगभग सभी प्रान्तो के बालक बिना किसी भेदभाव के शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। वेद, वेदांग, सस्कृत साहित्य, व्याकरण, दर्शन, उपनिषद् आदि की पढ़ाई को प्रमुखता दी जाती है। पहली से आठवीं तक यहा सस्कृत विशेष के साथ अर्वाचीन सभी विषय-इगलिश, गणित, विज्ञान, भूगोल, सामाजिक-ज्ञान, हिन्दी, वाणिज्य आदि विषय पाठ्यक्रम मे समाहित हैं। आर्ष पाठविधि एवं व्यवहारविधि से मण्डित यह गुरुकुल-शिक्षा विभाग,से मान्यता प्राप्त है।

विवाह सम्पन्न

चौ० हरज्ञान सिंह सदस्य आर्य समाज महुआ खेड़ागज (नैनीताल) के सुपुत्र चि० देवराज सिंह का विवाह स्व० तेजपाल सिंह ग्राम सदरपुर (मुरादाबाद) की सुपुत्री सौ० विनीता के साथ श्री प्रवीण एव श्री सत्यपाल आर्य के पौरोहित्य में पूर्ण वैदिक रीति सम्पन्न हुआ।



शोक समाचार

—आज बहुत दु ख के साथ लिखना पड रह सिलीगुडी के भूतपूर्व मन्त्री तथा वरिष्ठ सदस्य श्री स... आकस्मिक निधन दिनाक १८ ४ ९० वार बुधवार रात्री १०-२० ... हृदयगति रुक जाने से हो गया। उनका अन्तिम सस्कार पूर्ण वैदिक रित्यानुसार पण्डित खगेन्द्रनाथ सिद्धान्त विशारद ने करवाया। आर्य समाज सिलीगुडी की यह एक अपूरणीय क्षति है।

—सुभाष आर्य मन्त्री

—आर्य समाज पानीपत तथा उसकी समस्त आर्य शिक्षण सस्थाओ का यह शोक सभा स्वर्गीय श्री जयभगवानदास जी के निधन पर बडे दु खी हृदय से उनके गणो तथा कार्यो को याद करते हुए उनकी सराहना करता है।

मास्टर जी जीवन भर आर्य समाज तथा आर्य शिक्षण सस्थाओ की उन्नति के लिए तन मन धनमे सहयोग देत रहे। आर्यसमाज तथा सस्थाओ मे प्रधान व प्रबन्धक के रूप मे बडी कुशलता से इन पदो को सुशोभित करते रहे है। जब भी कही सहायता की कोई बात आती तो बडे उदार चित्त से तुरन्त ही सहायता का निर्णय लेते। उनके निधन से आर्य समाज ... ऐसे व्यक्ति की सेवाओ से वचित हो गया है जिसकी कमी सदा अनभव होती रहेगी।

—सुभाषचन्द्र जैन प्राचार्य

—हम यह सूचित करते हार्दिक दु ख हो रहा है कि आर्य जगत के अद्वितीय दाशनिक विद्वान श्री प० ईश्वरचन्द जी दर्शनाचार्य का २१ ४ ९० को अकस्मात निधन हो गया है। माननीय पण्डित जी बचपन से ही महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त रहे। बारह वर्ष की आयु मे ही आपने सनातनधम के प्रकाड विद्वान माधवाचार्य क साथ शास्त्रार्थ करके उन्हे परास्त किया। पूज्य पण्डित जी का जीवन बडा सात्विक और समर्पित था। आप बहुत समय तक लाहौर उपदेशक विद्यालय गुरुदत्त भवन मे दर्शनशास्त्र पढाते रहे। यह महान विभूति भारतवष म दशना का अद्भुत प्रतिमा थी। पण्डित जी वैदिक वाड मय के बेजोड विद्वान थे। आप सस्कृत फारसी, अग्रजी पाली प्राकृतिक आदि अनेक भाषाओ के विद्वान थे। आप वैदिक साहित्य के अतिरिक्त बौद्धा जैनियो के ग्रन्थो के भी आचार्य रहे। जैन धर्मावलम्बियो ने पण्डित जी से लगभग तीस वर्षो तक जैन शास्त्रो का अध्ययन किया। ऐसे उद्भट्ट विद्वान के अकस्मात चलेजाने से दर्शनशास्त्रो का शिक्षक सरक्षक हम सबसे विदा हो गया।

—विमल स्वरूप सूद, महामन्त्री

—महान दु ख के साथ सूचित करना पड रहा है कि आर्यसमाज मरथना के कर्मठ सदस्य श्री श्याममुनि जी के सुपुत्र चि० प्रेमचन्द जी आर्य का आकस्मिक दु खद निधन दिनाक १३-४-९० को ट्रेन से टक्कर लगने से हो गया है वे स्वय भी आर्यसमाज के सदस्य थे।

—बड़े दु ख के साथ सूचित करना पड रहा है कि मेरे पिता श्री लक्ष्मी चन्द जी अग्रवाल का २१ ४ ९० वार शनिवार को हृदयगति रुक जाने से स्वर्गवास हो गया है, उनकी उम्र ८० साल की थी, वे निष्ठावान, आर्यसमाजी थे, उनकी आत्मा की शांति के लिये आर्य समाज, ... बस्ती, सिलीगुडी में एक शोक सभा की गई, एव दिवगत आत्मा की शांति के लिये प्रार्थना की गई।

—[illegible] अग्रवाल
[illegible] रोड पो० सिलीगुडी
जि० दार्जीलिंग (प० बगाल)

महाशय रघुवीर प्रसाद गुप्त का निधन

"आज रविवार दिनाक २९ अप्रैल १९९०को आर्यसमाज बडा बाजार के प्रागण मे आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल के तत्वावधान मे आयोजित इस श्रद्धाजलि सभा म उपस्थित आर्यजन तपोनिष्ठ समाजसेवी, आदर्श निष्ठावान निर्भीक वे कर्मठ कायकर्ता आय प्रतिनिधि सभा बगाल के भू० पू० प्रधान, विभिन्न आर्य सस्थाओ के अनुपम सहयोगी महर्षि मिशनके दीवाने श्री महाशय रघवीर प्रसाद गुप्त के गुणो का सहज स्मरण करते हुए परमपिता परमेश्वर से प्राथना करते हैं कि उनकी आत्मा को शान्ति एव सद्मति दे तथा सन्तप्त आयजनो को इस दारुण दु ख को धैर्य पूर्वक सहन करने की शक्ति प्रदान कर।

सभा की अध्यक्षता श्री गजानन्द आय ने की। सर्वश्री वटकृष्ण जी बर्मन प० उमाकान्त उपाध्याय रामनरेश शास्त्री सत्यनारायण शर्मा, दशरथप्रसाद शर्मा शिवनाथदास गुप्त राजेन्द्र जायसवाल, चन्द्रदेवसिंह, देवनारायण तिवारी लक्ष्मणसिंह प्रभृति लब्ध प्रतिष्ठ आर्यपुरुषो ने महाशय जी को अपनी भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की। सभा का सचालन कर रहे थे सयुक्त रूप से सभामन्त्री श्री जगदीश शुक्ल एव आर्य समाज बडे बाजार के प्रधान श्री चान्दरतन दम्माणी।

—वटकृष्ण बर्मन, सभाप्रधान

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित एवं [illegible] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन,नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र

वेदामृत

बालक का शरीर सुदृढ़ हो

एह्यश्मानमा तिष्ठ, अश्मा भवतु ते तनूः ।
कृण्वन्तु विश्वे देवा, आयुष्टे शरदः शतम् ॥
अथर्व २-१३-४॥

हिन्दी अर्थ—हे बालक ! तू आ और इस शिला पर पैर रख। तेरा शरीर पत्थर के तुल्य दृढ़ हो जाए। सारे देवता तेरी सौ वर्ष की आयु करें।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१ | दयानन्दाब्द १६६ | दूरभाष : ३२७४७७१ | वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष २९ अंक २०] | ज्येष्ठ शु० ३ सं० २०४७ २७ मई १९९०

कश्मीरी हिन्दू परिवार उपेक्षित

गृहमंत्री की बेटियों व दामाद का दिल्लीमें पुनर्वास

मुफ्ती मोहम्मद सईद की परिवार पोषणी नीति

हिन्दू दर-दर ठोकरे खा रहे हैं

नई दिल्ली। २१ मई जम्मू कश्मीर से केवल अपनी जान बचाकर खाली हाथ आए हजारों लोग जहां केन्द्र सरकार से अपने लिए दो वक्त की रोटी तथा रहने के लिए जगह की गुहार कर रहे हैं वहीं दूसरी ओर केन्द्र सरकार के एक वरिष्ठ मन्त्री द्वारा मौके का पूरा फायदा उठाकर अपने ही परिवार के लोगों का पुनर्वास कर लिया गया है।

केन्द्र सरकार के यह वरिष्ठ मन्त्री कश्मीर विस्थापितों की तो कोई मदद नहीं कर रहे हैं, लेकिन अपने ही परिवार के लोगों को उच्च पदों पर आसीन कराने में पूरी तरह से सफल रहे हैं। यह और बात है कि सफलता प्राप्त करने के लिए उन्होंने सारे नियमों को ताक पर क्यों न रख दिया हो।

क्या कश्मीर के आतंकवादियों से अपनी जान बचाकर अपने छोटे छोटे बच्चों के साथ दिल्ली आए इन विस्थापितों का कसूर है कि उन्होंने किसी मन्त्री के घर में जन्म नहीं लिया ? या उनका कसूर यह है कि वे जान बचाकर दिल्ली क्यों आए ? लेकिन सवाल यह है कि जब वर्ष १९७१ में पाकिस्तानी सेना के जुल्म से अपनी जान बचाकर भारत आए पूर्वी पाकिस्तान के लोगों को सरकार सहायता देकर पलकों पर बिठा सकती है तो क्या वह इन विस्थापितों को दो जून की रोटी तक उपलब्ध कराना अपना कर्त्तव्य नहीं मानती।

विश्वस्त सूत्रों के अनुसार केन्द्रीय गृहमन्त्री श्री मुफ्ती मोहम्मद सईद के बच्चों को सभी कायदे-कानून ताक पर रखकर दिल्ली में अच्छे-अच्छे पदों पर नौकरियां दे दी गई हैं। इनमें गृहमन्त्री की बहुचर्चित बेटी रुबिया सईद भी शामिल है। उन्हें जयप्रकाश नारायण अस्पताल के एक्स रे विभाग में नौकरी दी गई है।

इतना ही नहीं पूरे देश के युवक युवतियों को रुंधे गले से अपने जिगर का टुकड़ा बताने वाले गृहमन्त्री श्री सईद ने अपने दो अन्य लड़कियों को भी अपने राजनीतिक प्रभाव का इस्तेमाल करते हुए वहां उच्च पदों पर आसीन करा दिया है। इसी के अन्तर्गत उनकी दूसरी बेटी महबूबा को भी डा० रुबिया के साथ ही जयप्रकाश नारायण अस्पताल के एक्स रे विभाग में नियुक्त किया गया है।

इतना ही नहीं इनके दामाद श्री मंजूर को भी इसी अस्पताल में डायलेसिस विभाग में नौकरी दे दी गई है।

गृहमन्त्री के परिवार का "पुनर्वास" शायद यहीं समाप्त नहीं हो

(शेष पृष्ठ ९ पर)

राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा का शताब्दी स्थापना समारोह सम्पन्न

गुलाबी नगरी जयपुर में आर्य समाज के वरिष्ठ नेता संन्यासी और वैदिक विद्वानों का जमाव

जयपुर १९ मई। प्रातःकाल आर्यसमाज आदर्श नगर के विशाल प्राङ्गण में पं० राजगुरु शर्मा स्वामी दीक्षानन्द जी के ब्रह्मत्व में वेद पारायण महायज्ञ में राजस्थानी आर्य नर-नारियों ने श्रद्धापूर्वक भाग लिया।

विशाल शोभा यात्रा का संगठित आयोजन

दोपहर ३ बजे जयपुर नगर के प्रमुख बाजारों में शानदार शोभा-यात्रा में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री छोटूसिंह एडवोकेट, श्री नेतीराम जी शर्मा, श्री सत्यव्रत सामवेदी, पं० सच्चिदानन्द शास्त्री, श्री बालदिवाकर हंस, स्वामी ओमानन्द जी महाराज, पं० राजगुरु शर्मा तथा राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रमुख अधिकारीगण एवं प्रान्त के दूरस्थ स्थानों से आये हुए हजारों आर्य नर नारियों ने बड़े ही उत्साह पूर्वक भाग लिया।

जब शोभा यात्रा आर्य समाज मन्दिर कृष्ण पोल बाजार के सामने पहुंची तो आर्यसमाज के अधिकारी महर्षि दयानन्द और वैदिक धर्म के जय-जयकार से झूम उठे। आर्यसमाज कृष्ण पोल बाजार की ओर से शोभा यात्री नेताओं का भावभीना स्वागत किया गया। शोभा यात्रा से जयपुर का वातावरण वैदिक धर्म के जयकारों से गूंज उठा। चारों ओर ओमध्वज और केसरिया वस्त्रों में आर्य नर नारी उत्साह पूर्वक भाग ले रहे थे।

गुलबर्गा में विशाल कार्यकर्त्ता सम्मेलन

दक्षिण भारत में वैदिक धर्म प्रचार की महत्वपूर्ण योजना

गुलबर्गा कर्नाटक १३-१४ मई १९९० के स्थानीय कालेज के प्रागण में आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं का विराट आर्य सम्मेलन श्री हकीकतराय जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

हैदराबाद से सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम, श्री नरसिंहा रेड्डी तथा प० विनायकराव विद्यालंकार के सुपुत्र श्री कान्ति कुमार कोरटकर विशेष रूप से पधारे थे।

प० वन्देमातरम जी ने आर्य समाज के हजारो कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि देश की वर्तमान बिगड़ती हुई स्थिति में आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं को सगठित रूप से दक्षिण भारत में वैदिक धर्म के प्रचार

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

महर्षि दयानन्द का ऐतिहासिक काशी शास्त्रार्थ

डा० आनन्द प्रकाश, मन्त्री महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्मृति सभा

आर्य समाज के प्रवर्तक वेदोद्धारक, परमहंस महर्षि दयानन्द द्वारा आज से १२० वर्ष पूर्व काशी में किया गया इतिहास प्रसिद्ध शास्त्रार्थ, धार्मिक जगत् की एक अद्वितीय घटना थी। महर्षि के जीवन का यह सबसे बड़ा शास्त्रार्थ था। इसकी स्मृति से प्रेरणा ग्रहण करने की आवश्यकता है। हर्ष का विषय है कि काशी शास्त्रार्थ की स्मृति को चिरस्थायी रखने तथा उस स्थान को और दर्शनीय बनाने की दृष्टि से एक उच्च स्तरीय संस्था का गठन हो चुका है।

काशी नगरी में, दुर्गाकुण्ड के समीप स्थित आनन्दबाग वह ऐतिहासिक स्थान है, जहां पर आर्यसमाज के संस्थापक, वेदोद्धारक, युगवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने जीवन का सबसे बड़ा शास्त्रार्थ किया था। यह इतिहास प्रसिद्ध शास्त्रार्थ कार्तिक शुक्ला द्वादशी सम्वत् १९२९ विक्रमी बुद्धवार तदनुसार १६ नवम्बर सन् १८६९ ई० को तत्कालीन काशी नरेश श्रीमान महाराजा ईश्वरीप्रसाद नारायणसिंह की अध्यक्षता सम्पन्न हुआ था। तत्कालीन समाचार पत्रों में प्रकाशित विवरणों के अनुसार ५० हजार की संख्या में जन समूह उस शास्त्रार्थ को सुनने के लिये उपस्थित था। काशी के कलक्टर भी उस शास्त्रार्थ में उपस्थित रहना चाहते थे और इसीलिये उन्होंने इच्छा व्यक्त की थी कि यह आयोजन रविवार को, अवकाश वाले दिन न रखा जाये, परन्तु उनके इस सुझाव को स्वीकार नहीं किया गया। उपलब्ध चित्रों में काशी नरेश के बगल में कलक्टर के खाली आसन को देखकर यह स्पष्ट हो जाता है कि इस शास्त्रार्थ के प्रति उनका भी अनुमोदन था। अपना पक्ष प्रस्तुत करने के लिये महर्षि दयानन्द अकेले थे और प्रतिपक्ष की ओर से उस समय के सर्वाधिक ख्याति प्राप्त तथा अपने विषय के सर्वश्रेष्ठ विद्वान समझे जाने वाले स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती, दक्षिणात्य पं० बालशास्त्री, श्री माधवाचार्य, श्री वामनाचार्य, राजपुरोहित पं० ताराचरण तर्क रत्न प्रभृति ४० पंडितगण उपस्थित थे। महर्षि की सहायतार्थ पं० ज्योति स्वरूप जी तथा उनके कुछ शिष्य उनके समीप बैठना चाहते थे, परन्तु उन्हें दूर ही रखा गया।

काशी शास्त्रार्थ भारत के धर्म क्षेत्र में अद्भुत क्रान्ति उत्पन्न करने वाला महासमर था जिसमें अविचल ईश्वर विश्वासी दयानन्द एकमेव परमात्मा के विश्वास और अपने अद्वितीय ज्ञान-बल के सहारे ही विचार-संग्राम में उतरा था। उस समय तक आर्यसमाज की स्थापना नहीं हुई थी। आदित्य-ब्रह्मचारी, ज्ञान-सूर्य, परमहंस देव दयानन्द मात्र कोपीन धारण करते थे, संस्कृत में ही सम्भाषण करते थे और अवैदिक मत-सम्प्रदायों का खण्डन करते विचर रहे थे काशी नगरी सदा से संस्कृत शिक्षा और विद्या का केन्द्र समझी जाती है। महर्षि चाहते थे कि इस महान् नगरी के विद्वत् जन उनके द्वारा प्रतिपादित आध्यात्मिक क्रान्ति में सहयोगी बनें और पुनः विश्वभर में वैदिक धर्म की स्थापना में सहयोगी बनें। इसी पुनीत मानवमात्र की कल्याण-भावना और सत्यधर्म का निश्चय कराने के लिये उन्होंने शास्त्रार्थ का आह्वान किया था। स्वामी जी का पक्ष था कि पाषाण-मूर्ति पूजन वेद विरुद्ध है और काशीवासी पंडितों को वेद प्रमाण से उसका मंडन करना था। परन्तु पूर्व प्रतिज्ञा से हटकर पहले तो पण्डितगण मनुस्मृति आदि ग्रन्थ सम्मत हैं अथवा नहीं, इस प्रकरणान्तर विषय पर समय नष्ट करते रहे। फिर पुराण शब्द विशेषण है अथवा विशेषणवाची इस मुद्दे पर व्यर्थ की बहस करते रहे। स्वामी जी का पक्ष था कि पुराण शब्द विशेषणवाची है। उसके उपरान्त कुछ व्याकरण के जटिल प्रश्नों में महर्षि को उलझाने की चेष्टा की, परन्तु गुरुवर विरजानन्द का शिष्य, व्याकरण में भी अद्वितीय था। जब किसी प्रकार भी उस ज्ञान-सूर्य को धूल फेंककर निस्तेज नहीं किया जा सका, तो कोलाहल मचाकर शास्त्रार्थ को एकाएक समाप्त कर दिया गया।

महर्षि उस समय, पीठासीन अध्यक्ष और पण्डितों को हाथ पकड़कर बैठाते रहे कि यह आचरण उचित नहीं है, सत्यासत्य का निर्णय हो जाने तक बैठे रहो। परन्तु शोक है कि काशी के पण्डितों ने अपने पक्ष की सिद्धि में न तो वेद का कोई प्रमाण प्रस्तुत किया और न ही सम्वाद में डटे रहे। स्वामी जी ने तो शास्त्रार्थ के पूर्व की शर्तों में यह भी कहा था कि यह शास्त्रार्थ २०-२१ दिनों तक तथा सत्यासत्य का निर्णय होने तक चलता रहे और उसका पूर्ण विवरण लिखा जाये। परन्तु मात्र कुछ घण्टों के सम्वाद के लिये ही पण्डित गण उपस्थित हुये थे। इस शास्त्रार्थ की समाप्ति के उपरान्त उस समय के अनेक प्रमुख समाचार-पत्रों तथा अनेक संस्थाओं द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं में विशेष लेखों द्वारा यह स्वीकार किया कि इस शास्त्रार्थ में महर्षि दयानन्द की विजय हुई। इस शास्त्रार्थ के द्वारा महर्षि के मन्तव्यों की श्रेष्ठता और उनकी विद्वता की अपराजेयत्व सिद्ध हुई और उन्हें विश्व प्रसिद्धिता प्राप्त हुई। (क्रमशः)

कश्मीरी हिन्दू

(पृष्ठ १ का शेष)

जाता। क्योंकि अभी उनकी एक और बेटी बेरोजगार थी। उनके लिए नौकरी की तलाश शुरू हुई। इस बार दरियागंज स्थित बाम्बे मर्केनटाइल बैंक उन्हें भा गया। लिहाजा मन्त्री महोदय की तीसरी लाडली साहबजादी महबूबा को इस बैंक में जूनियर आफिसर के पद पर नियुक्त कर दिया गया। इसकी नियुक्ति मार्च के पहले सप्ताह में हुई। बताते हैं कि इन सबको ये नौकरियां हासिल करने के लिए प्रार्थना पत्र लिखित परीक्षा तथा इन्टरव्यू जैसे किसी चक्रव्यूह से नहीं गुजरना पड़ा। यह शायद इसलिए सम्भव हुआ कि इन सब औपचारिकताओं से परे उनके पास यह प्रमाण पत्र जो था कि ये इस देश के गृहमन्त्री की साहबजादियां जो हैं। चूंकि अब इन्हें नौकरियां मिल गई है और इनकी सुरक्षा की पूरी जिम्मेदारी केन्द्र सरकार पर है। इसलिए जयप्रकाश नारायण अस्पताल एवं बाम्बे मर्केनटाइल बैंक की सुरक्षा के कड़े बन्दोबस्त कर दिये गये हैं।

हैरानी की बात यह है कि जम्मू कश्मीर में सरकारी नौकरियों पर कार्यरत विस्थापित लोग जब सरकार से अपना तबादला आज दिल्ली कर देने की गुहार करते हैं तो सरकार द्वारा उन्हें नियम और कानून का "गीतोपदेश" दिया जाता है लेकिन दिल्ली प्रशासन के रोजगार कार्यालय के नियम व उपनियम आज कहां-कहां बलि चढ़ गए, जिन्हें सब कुछ जानते हुए भी नजरंदाज कर दिया गया।

(हिन्दुस्तान १२ मई ९० से साभार)

कार्यकर्त्ता सम्मेलन

(पृष्ठ १ का शेष)

प्रसार मे लग जाना चाहिए। प० जी ने बताया कि मीनाक्षी पुरम में सामूहिक धर्मपरिवर्तन की आंधी को जिस वीरता से आर्य समाज ने रोका था वह इतिहास की शानदार कड़ी बन चुकी है। उन्होंने कहा कि इस धर्मान्तरण के पश्चात आर्य समाज का कार्यक्षेत्र बढ़ता जा रहा है।

सार्वदेशिक सभा दक्षिण प्रचार पर हजारों रुपये मासिक खर्च कर रही है। ५० वर्ष बीत जाने के पश्चात सार्वदेशिक सभा के प्रयत्नों से हैदराबाद सत्याग्रह को मान्यता मिली है और हमारे स्वतन्त्रता सेनानियों को सम्मान पेन्शन मिल रही है। पं० जी ने आर्य समाज के संगठन को सुदृढ़ बनाने की प्रेरणा दी।

अध्यक्ष पद से श्री हकीकतराय जी तथा श्री प्रकाश विद्यालंकार ने भी प्रेरक भाषण दिए।

युग पुरुष वीर सावरकर

श्री तुलसीराम, प्रेमपुरा आगरा

'मेरी समझ मे समाज को यह समाज भूल जाता है, तो कोई आपत्ति नहीं, परन्तु उसे चाहिए कि मेरे सामाजिक विचारो को वह कभी विस्मृत न करे।

यह शब्द हैं स्वाधीनता संग्राम के अमर सेनानी क्रान्तिकारियो के मुकुट-मणि, हिन्दू राष्ट्रद्रष्टा, युगपुरुष वीर सावरकर के।

भारत ही नही, विश्व के इस अनूठे क्रान्तिकारी, जिसने अपने महान कार्य से स्वराज्य और स्वधर्म को सजीवता प्रदान की, भारत पुनर्जागरण मे ठोस चिन्तन प्रदान किया इस युग पुरुष को हर क्षेत्र मे हम अग्रणी ही पाते हैं।

मराठा साम्राज्य के प्रथम पेशवा बाला जी पेशवा, १८५७ के स्वतन्त्रता सेनानी नाना साहब प्रसिद्ध क्रान्तिकारी वासुदेव बलवन्त फडके, प्रख्यात चाफेकर बन्धु के ही चितपावन कुल मे वीर विनाय दामोदर सावरकर का जन्म २८ मई, १८८३ को सोमवार के दिन १० बजे नासिक जिले के भगूर ग्राम में हुआ था। वीर सावरकर के जन्म से कोई ७५ दिन पूर्व लन्दन में सर्वहारा वर्ग के कथित मसीहा कार्ल मार्क्स ने इस ससार से विदा ली थी।

वीर सावरकर की माता राधाबाई बडे धार्मिक विचारो की उज्जवल चरित्र व दयालु स्वभाव की महिला थी उनके पिता दामोदर पत एक अध्ययनशील, आत्म सम्मानी, अतीत गौरव के प्रति आस्थावान तथा कवि हृदय के व्यक्ति थे। उनके तीन पुत्र तथा एक कन्या थी। सबसे बडे पुत्र का नाम गणेश, उसके बाद विनायक, फिर कन्या मैना और सबसे छोटे नारायण थे।

कोई दस वर्ष की आयु थी जब विनायक दामोदर सावरकर ने चाफेकर बन्धुओ के बलिदान पर एक पोवाडा रचा, तब उनका एक लेख 'हिन्दुस्थान का गौरव' शीर्षक से 'नागरिक वैभव' पत्र मे प्रकाशित हुआ। उसे पढकर न केवल समान्य 'पाठकों न अपितु अनेक अध्यापको ने उनकी मुक्त कण्ठ से प्रशसा की और उनको एक विलक्षण प्रतिभा का बालक बताया। आगे चलकर उन्ही द्वारा लिखी गई पुस्तक '१८५७ का स्वतन्त्र समर' को तो प्रसिद्ध क्रान्तिकारी भगतसिंह व चन्द्रशेखर ने 'क्रान्तिकारियो की गीता' कहा और उसके कई सस्करण छपवाकर क्रान्तिकारियो मे वितरित किये। उन्हीं द्वारा लिखित प्रसिद्ध ग्रन्थ 'हिन्दुत्व' पहली बार बिना लेखक का नाम दिये छपा तो स्वामी श्रद्धानन्द ने कहा था कि य ग्रन्थ किसी वैदिक काल के ऋषि-मुनि द्वारा ही लिखा हुआ ग्रन्थ लगता है। इनके अतिरिक्त उनकी पुस्तक मेजिनी को असामान्य ख्याति प्राप्त हुई।

१९०५ मे वीर सावरकर बैरिस्ट्री की पढाई के लिये लन्दन गये और श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा द्वारा स्थापित इण्डिया हाउस में रहने लगे। इसी वर्ष उन्होने 'फ्री इण्डिया सोसायटी' नामक सस्था का गठन किया। यह सस्था पूना मे स्थापित अभीनव भारत मण्डल के अनुरूप ही थी। मुख्य उद्देश्य था, हिन्दुस्थान को अग्रेजो की गुलामी से मुक्ति दिलाना।

एक वर्ष के भीतर ही लन्दन मे फ्री इण्डिया सोसायटी की धूम मच गई और इसके साथ ही वीर सावरकर की भी ख्याति फैलने लगी। श्याम जी उनसे इतने प्रभावित हुए और १९०७ मे जब वे लन्दन छोडकर पेरिस जाने लगे तो उससे पूर्व इण्डिया हाउस का सारा कार्य उन्होने सावरकर जी को सौंप दिया। भाई परमानन्द, लाला हरदयाल, सेनापति बापट, मादाम कामा, मदनलाल ढींगरा आदि भी इस सोसाइटी के सदस्य बने और स्वतन्त्रता आन्दोलन में वीर जी के सहयोगी। गाधी जी भी उन दिनों लन्दन गये थे। गाधी ५ सप्ताह तक लन्दन के पचतारा सेसिल होटल मे रहे पर वह श्याम जी तथा सावरकर जी से मिलने आते रहते थे और वार्तालाप भी होता रहता था।

'युग पुरुष वीर सावरकर' नामक पुस्तक मे लेखक श्री अशोक कौशिक ने लिखा है कि लन्दन मे फ्री इण्डिया सोसायटी की साप्ताहिक बैठकें हुआ करती थीं। और अधिकाश भारतीय छात्र उसमें भाग लेते थे। साथ ही शिवाजी, गुरु गोविन्दसिंह, गुरु नानक, राणा प्रताप आदि को जयन्तियां मनाने के साथ-साथ भारतीय पर्व और त्यौहार तथा समारोहो का भी आयोजन किया जाता था, जिनमें ब्रिटेन के सभी कोनो से भारतीय विद्यार्थी आकर भाग लेते थे। किन्तु कुछ पण्डित जवाहरलाल नेहरू जैसे विद्यार्थी भी वहा थे जो उन समारोहो मे सम्मिलित नही होते थे। जवाहर लाल के पिता मोतीलाल नेहरू नही चाहते थे कि उनका लडला किसी सकट मे फसे। उन्होने अपन पुत्र को इसकी हिदायत दी थी।

श्री अशोक कौशिक आगे लिखते हैं कि जहा इण्डिया सोसाइटी के क्रांतिवीर लन्दन की सडको, रेला, कालेजा आदि में अग्रेज सेना, अग्रेज नागरिक और अग्रेज अध्यापको से सघर्ष कर रहे थे, वहा जवाहरलाल नेहरू जैसे दब्बू छात्र अपने-अपने कमरो मे दुबके हुए बैठे रहते थे।

ब्रिटिश समाचार जगत इन देश भक्तो की हलचलो से अछूता नही रहा। वहा के कुछ समाचार पत्रो के प्रतिनिधि सावरकर जी से मिले। दि टाइम्स के सम्वाददाता ने उनके विषय मे 'छरहरे शरीर म विद्युत की सी कौध वाला युवक' लिखा है तो जान बुल के सम्वाददाता ने वीर सावरकर के 'ललाट में विशिष्ट ओजस्विता की आभा देखी। मानचेस्टर गार्जियन ने उन्हे समर्पित व्यक्तित्व की सज्ञा दी जिसके समक्ष कोई भी शिथिल पड सकता है। (क्रमश)

राष्ट्रभाषा हिन्दी

आजादी म जो हो पाई आजाद नही,
　　हिन्दी हिन्दू की प्राण राष्ट्र की भाषा है।
निर्वासित सी जिसको न मिला आवास अभी,
　　मुद मगल की जो देन दक्ष आशा है॥
रचना जिसकी खुद हुई ऋचायें गा-गाकर,
　　प्राकृतिक सस्कृत भाषा की जो बेटी है॥
जिसके स्वर व्यजन व्याप्त सभी भाषाओ मे,
　　मानसिक दासता से लगती जो हेटी है।
कर शखनाद जन जागृति का जो हेतु बनी,
　　जिसने स्वदेश को स्वतन्त्रता मन्त्र दिया।
गाधी सुभाष की शान्ति क्राति का सेतु बनी,
　　जिसने भारत फिर अपना जनतन्त्र दिया।
ऋषि दयानन्द ने वेद भाष्य जिसमें खोला,
　　करने जग को जगमग सत्यार्थ प्रकाश दिया।
भर गए सूरसागर मे जिसको सूरदास,
　　तुलसी के स्वर मे अमित विकास किया।
जिसका रस पी रहीम रसखान विभोर हुए,
　　जिसमें कबीर के गूढ ज्ञान की गरिमा है।
आराधन जिसका किया राजर्षि टडन ने,
　　करती कवियो कलम रही परिकरिमा है।
जिसके महान व्याख्याता बने प्रकाशवीर,
　　गूजती रही जो ससद की दीवारो में।
जिसको लेकर के गये अटल जी राष्ट्रसंग,
　　हो रही उपेक्षा अब उसकी परिवारो में।
हिन्दी के माता-पिता शब्द हो रहे लुप्त,
　　अग्रेजी के मानस पुत्रो की लायक है।
पति-पत्नि भाई बहन शब्द हैं गायब से,
　　सिस्टर मिस्टर हसबैंड और अब वायफ है।
जो काम गुलामी कर न सकी इस भारत मे,
　　आजादी में वे मान बिन्दु सब नष्ट हुए।
भारत का उन्नत रहा चरित्र गुलामी मे,

—सत्यव्रत सिंह, चौहान सिद्धात शास्त्री
मन्त्री आर्य पुडरी मैनपुरी (उ. प्र.)

ईश्वरोपासना (मूर्तिपूजा)

शास्त्रार्थ महारथी पंडित रामचन्द्र देहलवी

ओ३म् भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरै रंगै स्तुष्टुवां सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥
यजु० २५।२१ ॥

स्तुति किसकी करनी चाहिए और क्यों करनी चाहिए, यह प्रश्न आज साधारण जनता के मस्तिष्क में उत्पन्न होता है। केवल इतना ही नहीं इसके साथ अन्य अनेक प्रश्न भी वे करते हैं। किन्तु प्राचीन काल के पुरुष यह शंका नहीं किया करते थे कि स्तुति, प्रार्थना और उपासना किसे कहते हैं और वह क्यों करनी चाहिए। उनका आचार ऊंचा था। आजकल के मनुष्यों में समझ कम और कुतर्क अधिक है, आचार नहीं है।

जो परमात्मा को नहीं मानते उनसे तो हमें कुछ भी नहीं कहना है, लेकिन मानने वाले भी कई बार कहते हैं कि जब परमात्मा हमें कर्मों का फल देगा, तो उसकी स्तुति आदि हम क्यों करें? उसकी स्तुति आदि करना उसकी खुशामद ही तो है। यह भी देखने में आता है कि उपासना करने वाले झूठे और बेईमान हैं तथा उपासना न करने वाले अकसर अच्छे होतेहैं फिर यह भी प्रश्न है कि भगवान ने नास्तिक क्यों उत्पन्न किये? इसका भी कारण है। परमात्मा ने इस संसार में जो कुछ किया है, ठीक ही किया है। भगवान को किसी काम से कोई हानि लाभ नहीं। वह पूर्ण है। उसमें किसी भी प्रकार का कोई जोड़ या बाकी नहीं। मनुष्यों को शिक्षा देने के लिए ही उसने यह सब इन्तजाम किया है।

नास्तिक लोगों को उत्पन्न का लाभ यह है कि जो मनुष्य अपने को ईश्वर भक्त कहते हैं, किन्तु इनके कर्म गिरे हुये हैं और नास्तिक का आचरण ऊंचा है, तो फिर ईश्वर को मानने से और स्तुति प्रार्थना और उपासना करने से क्या लाभ? भगवान के गुणों का कोई प्रदर्शन नहीं होता। जो नाम के उपासक हैं, वे अपने काम से भगवान को नहीं मानते हैं—लेकिन जो नाम के उपासक नहीं, वे काम से भगवान को मानते हैं। यह शंका करने वालों ने उन्हे पेश किया।

भगवान तो सदा भक्तों का साथी होता है। वह भक्त के वश में सदा से होता आया है। भगवान हमें कर्मों का फल देगा, उपासना का फल देगा। भगवान ने हमें बहुत सी चीजें दी हैं हमें उसको धन्यवाद देना चाहिए। शंका करने वाले कहते हैं कि यह बात तो है, लेकिन इतनी सन्ध्या करने की क्या आवश्यकता है? नहीं इसका भी फल है। क्या? मन की दो वृतियां होती हैं, अन्तर्मुख और बहिर्मुख। वृतियों का केन्द्र नाभि है। वृतियां जितनी भी दूर जाती हैं, उनको कौन रोकता है? नाभि जिस प्रकार कोई गधा या घोड़ा एक खूंटे में बंधी रस्सी से बन्धा हुआ है, वह गधा या घोड़ा उस रस्सी से बाहर नहीं जा सकता। जगत में जहां तक लाभ लेना चाहिए वहां तक हमारी प्रवृति जानी चाहिए, सीमा से बाहर नहीं। अति सब जगह बुरी होती है—"अति सर्वत्र वर्जयेत" जिस प्रकार आचार तो ठीक हैं यदि उसके साथ अति लगा दे तो अत्याचार हो जाता है। इसलिए जगत् में अति किसी काम में नहीं करनी चाहिए और मर्यादा में ही रहना चाहिए।

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत।
तेन त्यक्तेन भुंजीथाः मा गृधः कस्य स्विद्धनम् ॥
यजु० ४०।१॥

इस संसार में जो कुछ भी है उसमें परमात्मा बसा हुआ है। इसलिये इस जगत को त्याग-भाव से हो भोगना चाहिए इसमें फंसना नहीं चाहिये और लिप्त नहीं होना चाहिये संसार की ओर। खिचना नहीं चाहिए लेकिन इसका मुकाबला करना चाहिये।

लार्ड वेस्ले की माता अपने पुत्र से कहती है कि यदि तुम यह मालूम करना चाहो कि कौन-सा आनन्द ग्राह्य है और कौन-सा त्याज्य है, तो सदा इस नियम को याद रखो कि जो बात तुम्हारी विवेक शक्ति को निर्बल कर दे, तुम्हारी कोमलता को बिगाड़ दे ईश्वर सम्बन्धी विचारों को क्षीण कर दे, जो शरीर के प्रभाव और शक्ति को मन पर बढ़ा दे वह तुम्हारे लिये पाप हैं। सन्ध्या में भी यही बात है। परमात्मा का चिन्तन करते हुए हम संसार की मर्यादा से बाहर न हो जावें, यही फल सन्ध्या का है। यदि कहें कि तब तो हर समय ही सन्ध्या करते रहना चाहिये, नहीं ऐसा करने से तो अव्यवस्था हो जायेगी। निरन्तर किसी काम के करने में कोई आनन्द नहीं है।

यदि हम पेट-भर कर हलवा खा लें, उसके बाद फिर कोई कहे कि हलवा और खा लो तुम्हारी इच्छा हलवा खाने के लिये बिलकुल न होगी। एक विद्यार्थी परीक्षा में पास होने के लिए कितना परिश्रम करता है, लेकिन जब एक बार पास हो गया तो इस बात को सुनकर जो उसे आनन्द हुआ वह प्रतिक्षण घटता चला जाता है। इससे यह पता लगता है कि इष्ट पदार्थ की प्राप्ति में ही आनन्द की प्राप्ति में ही आनन्द है। एकाग्रता होने से आनन्द की प्राप्ति होती है। परमात्मा की लहर हममें दौड़ जाती है। परमात्मा आनन्दघन है उसकी शरणमें जाने से कोई भी दुःख शेष नहीं रहता। तो क्या बिना सन्ध्या किये परमात्मा हमारे दुःख दूर नहीं कर सकता? ऐसी बात नहीं है। मन में दुःख दूर करने की भावना तो रखनी ही पड़ेगी यदि आपके मन में न हो तो भला आप अपनी अपनी अंगुलियां को फैला कैसे सकते हैं? जब अंगुलियों को फैलाने की बात मन में होगी तभी अंगुलियां फैलेंगी। इसलिए यदि हम सदा परमात्मा का चिन्तन रखेंगे, तो मर्यादा से बाहर नहीं हो सकेंगे।

शंका करने वाले कहते हैं कि सन्ध्या एक समय ही पर्याप्त है फिर प्रातः और सायं दो बार सन्ध्या करना क्यों बताया? देखिये आप साफ कुर्ता पहनते हैं, आप यह नहीं चाहते कि वह मैला हो जाये, बहुत सावधानी आप रखते हैं कि आपका कुर्ता साफ ही रहे, किन्तु फिर भी वह मैला हो ही जाता है। इसी प्रकार आप एक बार सन्ध्या करके अपना मन पवित्र बनाते हैं तो फिर उसको पवित्र रखने का प्रयत्न करते रहने से भी उसमें अपवित्रता आ ही जाती है। जब हमारा स्वार्थ दूसरे के स्वार्थ से टकराता है, तब मन में मलिनता का आ जाना भी स्वाभाविक हो जाता है।

प्रातःकाल की सन्ध्या से रात के पाप नष्ट होते हैं और सायं काल की सन्ध्या से दिन में किये हुए पाप नष्ट हो जाते हैं। मुसलमानों ने भी पांच बार की नमाज को महत्व दिया है। उनका कुरान कहता है कि अपनी नमाजों की हिफाजत करो और बीच की नमाज की भी हिफाजत करो। बीच की नमाज को विशेष रूप से इसलिए कहा कि नमाज का समय दिन के तीसरे पहर ४ बजे का होता है, उस समय सब मनुष्य अपने काम धन्धे में जुटे रहते हैं। कुरान का अभिप्राय यह है कि जब तुम अपने सांसारिक कार्यों में उलझे हुए हो, उस समय भी परमात्मा का चिन्तन करते रहो। हम प्रातः सायं भगवान के गुणों से वंचित न हो जायें इसलिए दोनों समय सन्ध्या करना आवश्यक है।

भारत में संस्कृत शिक्षा का प्रश्न

लेखक : गंगाप्रसाद विद्यार्थी एम. ए. एम. फिल (संस्कृत)

पता —१७५ जयनगर, जबलपुर सिटी (म० प्र०) ४८२००२

भारत सरकार का यह कथन नितान्त दोषपूर्ण व भ्रामक है कि शिक्षा-संस्थाए किसी विशेष संस्कृति, धर्म या पूजा पद्धति की रक्षा का कार्य नही करती हैं। यदि विद्यालय हमे हमारी भाषा, साहित्य, संस्कृति मानव धर्म की शिक्षा नही देंगे तो फिर इन्हें कौन सिखाएगा ? और इनके बिना हमारी शिक्षा संस्थाओंको उपयोगिता क्या रह जायगी ? जिस तरह अंग्रेजी एक भाषा है उसी तरह और उससे भी हजार गुना अधिक गौरवमयी और उपयोगी संस्कृत भाषा है। जिस तरह अंग्रेजीको ईसाई धर्म या ईसाई पूजा पद्धति से जोडना गलत होगा उसी तरह संस्कृतको हिन्दू धर्म या पूजा पद्धति से जोडना नितान्त गलत है। संस्कृत अति प्राचीन और विश्व की सभी भाषाओ की जननी होने के साथ-साथ् सभी आधुनिक क्षमताओ से परिपूर्ण है। यही इसकी अद्भुत विलक्षणता है। इटली फ्रान्स और अमेरिका के कम्प्यूटर वैज्ञानिक तक उसे कम्प्यूटर विज्ञान के लिए विश्व की सर्वोत्तम भाषा मानते हैं।

२—भारतवर्ष की सभी प्रमुख भाषाओ व बोलियो से उसके अपने शब्दो के अतिरिक्त यदि किसी भी अन्य भाषा के अधिक शब्द है तो ये संस्कृत के ही हैं। बगला, गुजराती, हिन्दी, मराठी, तेलगू, कन्नड, मलयालय व पुरानी तमिल में ही ७०से ९० प्रतिशत तक संस्कृत के शब्द पाए जाते हैं। उन संस्कृत शब्दो से विभक्तिया उन उन भाषाओ की अपनी हैं इसलिए पहिचानने मे कठिनाई होती है, परन्तु अर्थ वही रहता है। अंग्रेजी तो इगलैण्ड, अमरीका, कनाडा व आस्ट्रेलिया इन चार देशो की भाषा है, भारत की नही। और वह विश्व के किसी भी अन्य बडे देश फ्रान्स, जर्मनी, इटली रूस, जापान इत्यादि की भी नहीं। उन देशो मे अंग्रेजी से काम नही चल सकता है। भारत मे तो तीन(३) प्रतिशत लोग भी अंग्रेजी नही जानते फिर उसे अनिवार्य भाषा क्यो बनाया जाता है ? और उसे 'दूरदर्शन' के श्रेष्ठ कार्यक्रमो व जन समस्याओ की भाषा क्यो बनाया जाता है ? क्या स्पष्ट उद्देश्य यह है कि अंग्रेजी पढे लिखे थोडे से लोग ही, उन बातो को जाने अधिकाश भारतीय न जाने। क्या इसी को प्रजातन्त्र कहते है ? वस्तुत. देश के लगभग एक प्रतिशत लोग ही अंग्रेजी मे दक्षता प्राप्त है। वे ही सदा सदा के लिए भारत पर शासन करना चाहते हैं। और ९९ प्रतिशत लोगों को शासन से दूर रखने का यह एक सरल उपाय है कि शासन मे अंग्रेजी को अनिवार्य बनाए रखा जाय।

३—अंग्रेजी सभ्यता और ईसाइयत के प्रचार मे भी अंग्रेजी भाषा सहायक है। और अंग्रेजी न जानने वालो को इसकी झलक तक नहीं होने पाती। साधारण जनता तो शासन के बडे लोगो की नकल भर करती है। भारतीयता की उन्नति के लिए अंग्रेजी की प्रभुता को समाप्त करना अनिवार्य है।

४— भारतवर्ष के सभी प्रान्तो मे मातृभाषा के बाद संस्कृत को दूसरी अनिवार्य भाषा बनाना अंग्रेजी को नही। तीसरी भाषा भी भारत की ही कोई भाषा होनी चाहिए जैसे मराठी गुजराती बंगला तामिल इत्यादि।

अंग्रेजी को तो चौथे दरजे पर अन्य विदेशी भाषाओ रूसी जर्मन, जापानी चीनी व अरबी फारसी के साथ रखना चाहिए। जो लोग अंग्रेजी को विश्वभाषा मानते हैं वे न तो विश्व को जानते हैं न विश्व की भाषाओ को उनके लिए इगलैण्ड, अमेरिका व कनाडा ही विश्व है वे यह नही जानते कि अन्य देशो में अंग्रेजी से बिल्कुल काम नही चलता, भारत जितना भी नही। विश्वभाषा तो संस्कृत है जिसके शब्द संसार सभी भाषाओ मे पाए जाते हैं कही शुद्ध रूप मे कही कुछ त्रुटित व अपभ्रंश रूप मे।

५—हमारे प्रधान मन्त्री जी दिन रात सांस्कृतिक विरासत (कल्चरल हेरीटेज) की बात करते रहते हैं। यह संस्कृति और उसकी विरासत क्या चीज ? केवल नाच व गाना बजाना ही किसी देश या प्रदेशकी संस्कृति नही होती। संस्कृति तो धर्म पर भी आधारित नही होती इसलिए हिन्दू संस्कृति या मुस्लिम संस्कृति भ्रमपूर्ण शब्द हैं। संस्कृति होती है किसी देश या प्रदेश की और उसके साहित्य व इतिहास से पूरी तरह जुडी होती है। साहित्य और इतिहास का आधार भाषा व बोली ही होती है। यदि भारतवर्ष के विद्यालयो से संस्कृत की शिक्षा हटादी जाएगी या उसे किसी विदेशी भाषा के समतुल्य कर दिया जाएगा तो भारत के भावी नागरिक अपने देश के साहित्य, इतिहास व संस्कृति का साक्षात् ज्ञान कैसे प्राप्त कर सकेगे ? उन्हे अनुवाद ग्रन्थो या सेकेण्ड हैण्ड नालेज पर निर्भर रहना पडेगा। जो अशुद्ध, भ्रम पूर्ण व गलत भी हो सकता है, जिसकी परख वे कभी भी न कर पाएगे।

६—संस्कृत ही वह भाषा है जिसके ज्ञान के द्वारा भारत विश्व का शिरमौर था और पुनः शिरमौर हो सकता है। यह गलत है कि शिल्प (इजिनीयरिंग) या औषध विज्ञान (मेडिसिन) की शिक्षा के लिए अंग्रेजी का ज्ञान आवश्यक है। शिक्षक लोगो ने अंग्रेजी माध्यम से ज्ञान प्राप्त किया है अतएव अपनी अनिवार्यता बनाए रखने के लिए वे अंग्रेजी को भी बनाए रखना चाहते है। अंग्रेजी से सहूलियत नही होती है उल्टे बाधा पडती है क्योकि एक तो उसमे वर्तनी (स्पेलिंग) व उच्चारण रटने पडते हैं और बडे से बडा विद्वान भी इन दोनो मे भूल करता है दूसरे अंग्रेजी की मूल धातुए लैटिन भाषा की है जो अप्रचलित होने से अर्थ समझने मे कठिनाई उत्पन्न होती है। संस्कृत मे कुल दो हजार धातुए और तीन सौ प्रत्यय तथा बाइस उपसर्ग हैं जो अब भी प्रचलित हैं (देशभाषाओ मे भी) जिनसे करोडो शब्द बनते है और अर्थ समझना अत्यन्त सरल हो जाता है।

वर्तमान समय मे ज्ञान विज्ञान और शिल्प मे जो विश्व के शिरमौर देश रूस, जापान, जर्मनी व फ्रान्स इत्यादि हैं वहा भी अंग्रेजी में बिल्कुल ही पढाई नही होती है। भारत मे जब रूस, जापान, चीन इत्यादि के राजनयिक आते हैं तो वे अपने ही देश की भाषा मे बाते करते है। दुभाषिया जब उनका अनुवाद करता है तभी भारतीय समझ पाते है। परन्तु भारतीय उनसे अपनी भाषा में बाते न करके अंग्रेजी बोलते है जिसे वे नही समझते तब दुभाषिया उनके लिए उनकी भाषा में अनुवाद करता है। क्या यह लज्जा जनक बात नही है क्या दुभाषिया हिन्दी या तमिल से सीधे उनकी भाषा मे अनुवाद नही कर सकता। वस्तुत हमारे इन राजनयिको को अपनी भाषा आती ही नही केवल अंग्रेजी आती है, उसका भी पल्ला छोड दे उनकी यह विशेषता भी समाप्त हो जाय जिसके बल पर वे निर्धन तथा अनपढ भारतीयो मे गौरवशाली होने का अनुभव करते हैं। देश की भाषा मे बाते करे तो उनकी बाते सर्वसाधारण की समझ मे भी आ जाय। हमारे देश के प्रधान मन्त्री जी और राष्ट्रपति जी को इस बात पर गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिए और कमसे कम विदेशी दूतावासो को निर्देशित करना चाहिए कि या तो वे अपना काम काज उस देश की भाषा मे करे जहा वे है या फिर इस देश की किसी भाषा हिन्दी, संस्कृत तमिल इत्यादि मे।

७—हमारे देश के सर्वोच्च अधिकारी जब सरल हिन्दी बोल व लिख नही सकते तब वे किस मुह से राष्ट्रभाषा की उन्नति का दम भरते है, 'खुदरा फजीहत दीगरा नसीहत।' संस्कृतभाषा के ज्ञानसे सभी देश भाषाओ मे शुद्धाशुद्ध का ज्ञान सरलता से हो जाता है, इसलिए सभी को संस्कृत पढना चाहिए चाहे उसकी मातृभाषा कुछ भी क्यो न हो। हमारे देश मे जो लोग विदेशी सभ्यता और अंग्रेजियत के मोह मे आकण्ठ डूबे हुए है, उन्हे पता ही नहीं कि भारतीय संस्कृति क्या है और यह किन रूपो मे अन्य संस्कृतियो व संस्कृताओ से श्रेष्ठ तथा उपयोगी है। उनमें से बहुत से लोग अंग्रेजियत के बहाने ईसाइयत के प्रचार और भारतीय संस्कृति को रसातल मे डुबोने मे प्रयत्नशील हैं और उनका सबसे बडा षडयन्त्र है कि पहिले स्कूलो व कालेजो से संस्कृत को हटना तो फिर उनका कार्य

अत्यन्त सरल हो जाएगा। शासन तन्त्र के ईसाई अधिकारी इस काम मे उनकी पूरी मदद कर रहे है।

८—संस्कृत के हट जाने से वेद स्वत हट जाएंगे फिर वैदिक संस्कृति व ज्ञान विज्ञान कहां रहेगा। वेद और शास्त्र न तो किसी विशेष धर्म के ग्रन्थ हैं न किसी पूजा पाठ या धार्मिक विधि विधान के ग्रन्थ हैं। वे तो गणित भौतिकी रसायन या वनस्पति विज्ञान की तरह नितान्त धर्म निरपेक्ष मानव मात्र के उपकार के लिए ज्ञान विज्ञान के ग्रन्थ है। संस्कृत शिक्षा को शिक्षा क्षेत्र से हटा देने से मानव मात्र का महान अहित हो जाएगा। और भारत की उन्नति का मार्ग कठिन हो जाएगा। जब विश्व के अन्य देश संस्कृत पढ़कर विद्वान व महान बनेंगे तब भारतीय भी उनके पीछे पीछे उनकी जूठन चाटने के लिए लालायित होंगे जैसे आज अंग्रेजी के लिए है। क्या भारतीय उच्छिष्ट भोजी ही बने रहेंगे और संस्कृत को सीधे न अपना कर विदेशों से आयातित होने पर ही अपनाएंगे। इस प्रकार प्रगति के मार्ग मे सदा ही पिछलग्गू बने रहेंगे और अपनी शीघ्र उन्नति मार्ग स्वयं ही अवरुद्ध करते रहेंगे।

९—हमारे देश का दुर्भाग्य है कि जो लोग आधुनिक टेकनालाजी व अनुसन्धान की नवीन व आधुनिक विधियां जानते है वे संस्कृत नहीं जानते कि संस्कृत के महासमुद्र वेदो से अनेकानेक मोती निकाल कर विश्व के सामने प्रस्तुत कर सकें। और जो लोग संस्कृत के विद्वान है वे आधुनिक टेकनालाजी व रिसर्च मेथडस मे शून्य है। एक के पास हाथ पैर है तो दीर्घ दृष्टि नहीं नहीं दूसरे के पास दीर्घ दृष्टि है तो हाथ पैर नहीं। अतएव हमारे उच्च वैज्ञानिकों व रिसर्च टेकनालाजिस्टस को भी संस्कृत व वेदों का उच्च ज्ञान प्राप्त करना चाहिए उसे पूजा पाठ या कूप मण्डूकता का क्षेत्र समझ कर छोड नहीं देना चाहिए इससे देश का भारी अहित होगा।

१०—अस्तु देश के सभी स्कूलो मे संस्कृत की अनिवार्य शिक्षा शीघ्रातिशीघ्र चालू करना चाहिए तभी वे लोग कालिजों मे भी संस्कृत पढ सकेंगे। १ देश का प्राचीन इतिहास ठीक ठीक जानने के लिए २ देश की संस्कृति का ठीक ज्ञान प्राप्त करने के लिए ३ अन्य भाषाओं को सरलता पूर्वक व सुगमता पूर्वक सीखने के लिए ४ देश मे ज्ञान विज्ञान की अभूतपूर्व उन्नति करने के लिए और इस प्रकार ५ भारत देश को विश्व मे पुन महान व शिरमौर बनाने के लिए संस्कृत का उच्च ज्ञान आवश्यक है और यह तभी होगा जब वह स्कूलों व कालेजों मे सभी स्तरों पर पढाई जाएगी।



जीता जागता आर्य समाज (भाग-१)

विमल वधावन एडवोकेट

दृश्य है चांदनी चौक, दिल्ली में एक शालों की दुकान का जो प्रातः १० बजे की खुली हुई थी परन्तु दुकान का मालिक दिन भर दुकान पर न बैठकर अपने सामाजिक कार्यों में व्यस्त थे। और दुकान का कारोबार उनका १६ वर्षीय पुत्र देख रहा था।

करीब तीन बजे दुकान के मालिक जिन्हे उनके घर के ही नहीं सभी जानकार और मित्र भी लाला जी के नाम से बुलाते थे दुकान पर प्रवेश करते हैं।

अभी मुश्किल से एक घण्टा ही व्यतीत हुआ होगा कि करीब चार बजे एक व्यक्ति घबराया हुआ दुकान प्रवेश करता है। आते ही उसने कहा कि लाला जी कहां हैं मुझे उनसे जरूरी काम है। लालाजी ने उसे अपने पास बुलाया और आने का कारण पूछा।

इस पर वह व्यक्ति बोला कि मैं सदर बाजार के काठ बाजार से आ रहा हूं। उल्लेखनीय है कि दिल्ली मे सदर क्षेत्र में स्थित यह कांठ बाजार उस समय वैश्यावृत्ति का बाजार था जहा सड़क के दोनों ओर से बने मकानों के बाहर लकड़ी के छोटे-छोटे चबूतरे बने हुए थे जहां पर खड़ी होकर वैश्याएं ग्राहकों को आकर्षित करती थीं और बाद में मकान के अन्दर ले जाती थी।

काठ बाजार का नाम सुनते ही लाला जी गुस्से में आ गये और आगन्तुक पर बरसते हुए बोले कि यदि तू काठ बाजार घूमने वाला व्यक्ति है तो यहा लाला जी को पूछता हुआ क्यों आया है। मुझसे तेरा व्यक्तिगत काम क्या हो सकता है। तो वह व्यक्ति बोला कि आप पहले मेरी पूरी बात सुन लें और अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए उसने कहा कि मैं बहुत शर्मिन्दा हूँ कि आज मैं इन्द्रियों के वश में आकर अपने मन पर नियन्त्रण खो बैठा और इस वेश्यावृत्ति के क्षेत्र में चला गया वहां कोठे पर मुझे एक कमरे में भेजा। गया। मेरे अन्दर पहुंचते ही कमरे में उपस्थित एक जवान लड़की फूट-फूट कर रो पड़ी और मुझसे बोली भैया मैं एक ब्राह्मण की कन्या हूँ और कुछ मुसलमान जिनमें बाहर से ग्राहकों को अन्दर भेजने वाली वे मोटी औरत भी शामिल है मुझे मेरे उत्तर प्रदेश के काठ गोदाम जिले के गाव से बहला-फुसला कर ले आये हैं। वह व्यक्ति आगे बोला कि सच कहता हूं लाला जी आप विश्वास करो या न करो उसकी यह बातें सुनकर मुझे उसमे अपनी मा या बहिन की प्रतिछाया दिखाई देने लगी तो मैंने उससे पूछा कि मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूँ। इस पर उसने मुझे बताया कि यह काम तुम्हारे अकेले के बस का नही है क्योंकि इन लोगों के गुट मे बहुत ही खतरनाक किस्म के लोग हैं जिनके पास हर तरह के हथियार भी हैं इसलिए मेरा विचार है कि तुम स्वय इनसे टक्कर मत लो क्योंकि इससे कोई लाभ नही होने वाला है यदि तुम कुछ मदद करना ही चाहते हो तो एक एहसान कर दो कि आस-पास के किसी प्रसिद्ध आर्य समाजी नेता को इस बात की खबर दे दो क्योंकि आर्य समाज के बनाये हुए व्यक्तित्व ही स्त्रियों के विरुद्ध किये जाने वाले इन अपराधों की खिलाफत कर सकते हैं।

उस व्यक्ति ने आगे कहा कि मैंने इस क्षेत्र के कई लोगों से पूछा कि इस क्षेत्र का प्रसिद्ध आर्य समाजी कौन है तो सभी ने मुझे आपका ही नाम बताया। अतः आप से प्रार्थना है कि आप उस कन्या की रक्षा करें और मुझे भी बताएं कि मैं आपकी मदद कैसे करूं।

लाला जी ने कहा कि ठीक है उसे तो हम बचा लायेंगे परन्तु तुम्हें एक बार फिर वहां जाना होगा इस पर वह व्यक्ति बोला कि मेरे पास खर्च करने के लिए २ रुपये नही है जो वहां कोठे पर देने पड़ेंगे लाला जी ने तुरन्त उसे २ रुपये दिए और कहा कि इस बार वहां जाकर उसी कन्या से मिलना और उससे यह पूछना कि वह कोई ऐसा समय बताये कि जब वह उस कोठे से बाहर निकलती हो। और किस स्थान पर जाती है और उससे कह देना कि उसे काले रंग की एक कार दिखाई देगी और उसके आस-पास एक मध्यम आयु का व्यक्ति काली टोपी पहनकर काले रंग की छतरी के साथ खड़ा होगा और उसका इशारा मिलते ही उस कार में बैठ जाये बाकी आगे की जिम्मेदारी सारी हमारी। इतना कहकर लालाजी ने उस व्यक्ति को वहां से जाने को कहा और यह निर्देश दिया कि बिना किसी विलम्ब के जल्दी से जल्दी वापिस आकर पूरी सूचना दे।

इस बीच लाला जी ने टेलीफोन किया। लाला नारायणदत्त ठेकेदार को और कहा कि ड्राइवर सहित अपनी काले रंग की कार भेज दो और दूसरी तरफ लाला जी ने नजदीक के अखाड़े से कुछ पहलवानों को भी बुलाया। और उन्हें निर्देश दिया गया कि सादगी के साथ योजना बद्ध तरीके से जिस स्थान पर कहा जाये मेरे आस-पास घेराव सा डाल ले और यह पता न लगे कि आप सब लोग इकट्ठे हो। उन्हें अपने साथ पांच-छः छुरिया भी ले जाने को कहा और जेबों में पत्थर भरकर ले जाने को कहा ताकि यदि जरूरत पड़े तो इस प्रकार की कार्यवाही भी करने से भी पीछे न हटें। लाला जी ने कहा कि यदि जरूरत पड़ी तो सबसे पहले मैं शुरूआत करूंगा। इस प्रकार तैयारी करने के बाद लालाजी दुकान पर ही उस अज्ञात व्यक्ति का इन्तजार कर रहे थे जो करीब दो घण्टे बाद आया और उसने कहा कि वह लड़की ठीक दो बजे दिन में अपने कोठे के सामने थोड़ी दूरी पर पान खाने के लिए आती है और उसने बताया कि आपके निर्देशानुसार सारी योजना मैं उसे बता आया हूँ।

इसी योजना के साथ अगले दिन दो बजे पूरी तैयारी करके लालाजी उस पान वाली दुकान पर पहुचे और साथ ही खड़ी कार के ड्राइवर को यह निर्देश दिया कि पिछला दरवाजा खुला रखे और कार को स्टार्ट रखे। दो बजे वह लड़की कोठे से नीचे उतरी और लाला जी टोपी और काले रंग की छतरी को देखकर पहचान गई और इशारा मिलते ही कार के पीछे वाली सीट पर बैठ गई और फुर्ती से दरवाजा बन्द कर दिया जिसे लेकर ड्राइवर कार को तेजी से भगा ले गया और किसी को कानो कान भी खबर नही हुई।

कार को लाला जी के निर्देशानुसार आर्यसमाज दीवानहाल ले जाया गया और पीछे-पीछे लाला जी भी पहुच गये लाला जी ने उससे उसके घर और गांव का पता पूछा तो वह बोली कि मैं एक ब्राह्मण परिवार की कन्या हूँ और मेरे पिता तथा सभी गाव वाले मुझे न तो अपनायेंगे और न गांव में घुसने देंगे न ही मेरी किसी सजात व्यक्ति से शादी होगी। इसलिए आप से निवेदन है कि आप मुझे यही आर्य समाज मन्दिर में ही पड़े रहने दें और यदि हो सके तो किसी गरीब से गरीब परन्तु हिन्दू व्यक्ति से ही मेरी शादी करवा दें। यह सब बातें सुनकर लाला जी का दिल दहल गया। इतने में आर्य युवक संघ के उपमन्त्री श्री राम सहाय शर्मा वहां आ गये। जिनका बायां हाथ कटा हुआ था लाला जी ने एक तरफ अलग ले जाकर श्री राम सहाय शर्मा को पूरा वृतांत सुनाया और पूछा ब्राह्मण कन्या से शादी करेंगे जिसे शर्मा जी ने सहर्ष स्वीकार किया और तुरन्त अगले ही दिन के लिए शादी की तैयारियां शुरू करदी गई। आर्य समाज मन्दिर में वैदिक रीति से दोनों का विवाह सम्पन्न हुआ। इस विवाह में लाला जी की पत्नी ने अपनी तरफ से उस लड़की के लिए दो तीन साड़ियां भेंट की और उसी रात नव

दम्पति को अन्य आर्य मित्रों सहित लाला जी के घर पर रात्रि भोज के लिए आमन्त्रित किया गया। और सबने इस बात के लिए लाला जी को बधाई दी कि उन्होंने हिन्दू कन्या की लाज ही नहीं बची बल्कि उन मुसलमान बदमाशों के मुंह पर भी करारा तमांचा मारा जो इस समाज में बुराईयों का जहर घोलते जा रहे हैं। उसके जवाब में लाला जी ने कहा कि यह सब तो केवल आर्य समाज द्वारा सिखाये गये वैदिक सिद्धान्तों का ही कार्यान्वियन था जिसमें लोक हित कार्य को सबसे बड़ा यह यज्ञ कहा गया है।

लाला जी के इस कार्य से कुछ विरोधी लोगों को असन्तोष हुआ। लालाजी की अनुपस्थिति में जब वह किसी आवश्यक कार्य से काश्मीर गये हुए थे, आर्य समाज दीवानहाल में अन्तरंग सभा की बैठक हुई। वहां विरोधियों ने लाला जी पर आरोप लगाया कि उन्होंने एक वैश्या की शादी करके आर्य समाज की वेदी को अपवित्र कर दिया है। अतः लालाजी को आर्य समाज की सदस्यता से बरखास्त किया जावे। इस कार्य के लिए एक ५ सदस्यी समिति का गठन किया गया जिसमें सर्वश्री लाला नारायणदत्त जी ठेकेदार, लाला बालमुकुन्द आहूजा, पं० इन्द्रविद्या वाचस्पति, लाला देशबन्धु जी तथा प्रो० सुधाकर सदस्य थे। कुछ दिनों बाद लालाजी के जम्मू काश्मीर से आने पर उन्हें नोटिस दिया गया कि शाम चार बजे समिति के समक्ष पेश होकर बयान दें। कुछ मित्रों ने लालाजी को सलाह दी कि इस समिति की परवाह न करें परन्तु लाला जी कहा कि मैंने सारा कार्य अपनी अन्तरात्मा के कहे अनुसार और निःस्वार्थ भाव से किया है इसलिए मैं सारी कहानी और कारण समिति को अवश्य बताऊंगा। यदि मुझे उन्होंने आर्य समाज की सदस्यता से हटा भी दिया तो भी मैं आर्य समाज के बाहर दरवाजे पर बैठकर वैदिक उपदेश सुनूंगा। क्योंकि समिति के सामने पेश न होना अनुशासन हीनता होगी जो मैं नहीं करना चाहता।

इस प्रकार लाला जी समिति के सदस्यों के सामने पेश हुए और सारा वृतान्त सुनाने के बाद कहा कि हिन्दू जाति के दिन प्रतिदिन टूटने का कारण यही है कि हम छोटी सी गलतियों पर अन्जान कन्याओं या पुरुषों को जाति से बाहर कर देते हैं और उन्हें मुसलमान या ईसाई बनने पर मजबूर करते हैं, लाला जी ने कहा' एक तरफ तो स्वामी दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द जैसे वीर पुरुषों ने समाज की कुरीतियों को उखाड़ फेंकने का आह्वान किया था किन्तु आज एक कन्या को मैंने मुसलमान होने से बचा लिया तो मुझे ही आर्य समाज से बाहर करने का प्रस्ताव स्वयं आर्य समाज की तरफ से ही किया गया है। यह कैसा संयोग है? उन्होंने अपने बयान में आगे कहा कि मुझे आर्य समाज से निकाले जाने का इतना भय नहीं है जितना इस बात का डर है कि भविष्य में न तो कोई युवक इस प्रकार किसी कन्या को वैश्याओं के चंगुल से बचाने की पहल करेगा और न ही श्री राम सहाय शर्मा जैसा कोई साहसी पुरुष ऐसी कन्याओं को अपनाने के लिए आगे आएगा।'

इस बयान को सुनकर समिति ने निर्णय दिया कि लाला जी को हटाने का प्रस्ताव पूर्णतया मूर्खता पूर्ण था जिसके लिए प्रस्ताव करने वालों को दण्ड दिया जाना चाहिए और लाला जी का सार्वजनिक सम्मान होना चाहिए। फलस्वरूप आर्य समाज दीवानहाल में लाला जी का सार्वजनिक सम्मान हुआ फूलमालाओं से और सम्मान जनक भाषणों से लाला जी को वीर पुरुष और आर्य समाज के गौरव जैसी उपाधि से अलंकृत किया गया।

ये लाला जी और कोई नहीं प्रसिद्ध आर्य समाजी नेता लाला रामगोपाल शालवाले थे जिन्हें १९७४ में आर्य समाज की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद पर प्रतिष्ठित किया गया और इस सत्य कहानी में किया गया सराहनीय कार्य भी लाला जी का पहला या अन्तिम कार्य नहीं था ऐसे सैकड़ों कार्य लाला जी ने किए जिससे हिन्दू समाज का ही नहीं सारे राष्ट्र का गौरव बढ़ा।

जब लाला जी संसद सदस्य थे तब तत्कालीन गृहमन्त्री बाबू जगजीवनराम ने एकबार लालाजी को सम्बोधित करते हुए कहा था कि लाला जी जीता जागता चलता फिरता आर्य समाज हैं १९८७ में तो लाला जी ने सब कुछ त्याग दिया और संन्यास आश्रम में प्रवेश किया जबसे लोग उन्हें स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के नाम से जानते हैं और जिस नजदीकी से मैंने उन्हें देखा और जाना है उसके आधार पर मेरा विश्वास है कि बेशक स्वामी जी की आयु ८८ वर्ष की हो चुकी है परन्तु चुस्ती अभी भी वही ३०-४० वर्ष के नौजवान जैसी ही है आज भी प्रातः ३ बजे से उनकी दिनचर्या प्रारम्भ होती है नित्यकर्मों और स्वाध्याय के साथ और समाप्त होती है सारा दिन समस्त विश्व की आर्य समाजों की गतिविधियों के नियन्त्रण के साथ। मैंने हमेशा उनके मुख पर तेज और चुस्ती का ही अनुभव किया है आज की अवस्था में भी मीलों-मील पदयात्रा करने की हिम्मत स्वामी जी में है। स्वामी जी की मनोकामना अभी भी है कि आज के सामाजिक और राजनैतिक वातावरण से समाज को जाग्रत करने के लिए एक बहुत लम्बी पदयात्रा करूं।

मार्च १९९० में ही स्वामी जी ने मध्य प्रदेश जाकर ७००० ईसाई बने आदिवासियों को वैदिक धर्म में पुनः प्रवेश कराया हम मनोकामना करते हैं कि परमात्मा स्वामी जी को दीर्घ आयु प्रदान करें जिससे आर्य समाज में और अधिक शक्ति का संचार उनके नेतृत्व से किया जा सके। हमारा विश्वास है कि यदि स्वामी जी जैसा व्यक्तित्व प्रति दस आर्य समाजों में एक व्यक्ति में भी विद्यमान हो तो आर्य समाज द्वारा प्रतिपादित वैदिक सिद्धान्तों की मान्यता सम्पूर्ण विश्व में हो सकती है।

इस लेख का अन्त मैं उस मन्त्र से करता हूँ जिसमें कहा गया है:—

लोक कृतः पोथकृतः यजामहे।
ये देवाना हुतभागा इहस्थ॥

अर्थात् जो लोक कल्याण का कार्य करते हैं जिससे समाज का पथ प्रदर्शन हो वे पूजनीय हैं और परमात्मा के हव्य अंश के अधिकारी हैं।

अपनी आज की अवस्था तक स्वामी जी ने सैकड़ों लोक कल्याण के कार्य किए हैं और वर्तमान में भी उसी उत्साह से मोर्चा सम्भाले हुए है। उनके जीवन को यदि आर्य जगत एक उदाहरण के रूप में समझे तो आने वाली पीढ़ियों का उचित मार्ग दर्शन स्वाभाविक है।

नागालैंड में कानून द्वारा पूर्ण नशा बन्दी लागू

—रूपनारायण महामन्त्री, भा० मा० नशाबन्दी परिषद—

भारत के उत्तर-पूर्व क्षेत्र के स्थित नागालैंड राज्य में कानून द्वारा पूर्ण नशाबन्दी लागू करने का निर्णय लिया गया है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए नागालैंड विधान सभा में आवश्यक बिल भी पारित हो चुका है। इस बिल को राष्ट्रपति जी की स्वीकृति मिलने के पश्चात कानूनी रूप दे दिया जायेगा। नागालैंड की सरकार अपने इस साहसी कार्य के लिए हमारे सम्मान की पात्र है। नागालैंड जिसकी सीमा ब्रह्म देश से मिलती है, उसकी जन-संख्या मात्र लगभग ९ लाख है। इस प्रदेश के अधिकतर निवासी ईसाई धर्मावलम्बी हैं। आजादी से पूर्व यह क्षेत्र अत्यन्त ही उपेक्षित रहा और इस प्रदेश के नागरिक विभिन्न जन-जातियों से सम्बन्धित हैं। ईसाई धर्म गुरुओं ने इस स्थान को अपना सेवा-क्षेत्र बनाया और उनके द्वारा स्कूलों और दवाखानों इत्यादि की स्थापना की गयी। इन ईसाई मिशनरियों ने जिनमें अधिकतर विदेशी थे, अपने संकीर्ण स्वार्थ की पूर्ति हेतु इस क्षेत्र के निवासियों को भारत के अन्य निवासियों से अलग रखने का प्रयास किया और इसमें उन्हें वांछित सफलता भी मिली थी।

नागालैंड को भारत से अलग रखने तथा उसे एक स्वतन्त्र राज्य घोषित करने के लिए सशस्त्र संघर्ष भी अनेक वर्षों तक चला किन्तु यह संघर्ष सफल नहीं हो पाया और अन्ततः यह प्रदेश भारत की मुख्य धारा से जुड़ा। इस क्षेत्र के व्यापक विकास के लिए भारत सरकार द्वारा अनेक योजनाएं चलायी गयीं जिनको पूरा करने के लिए करोड़ों-अरबों रुपया अब तक खर्च हो चुका है। शिक्षा का प्रसार हुआ है; अनेक महाविद्यालय इत्यादि स्थापित किये गये हैं, सड़कों इत्यादि का निर्माण हुआ है, छोटे बड़े अनेक उद्योग स्थापित किये गये हैं, शिक्षित युवकों को रोजगार के अनेक अवसर उपलब्ध कराये गये हैं और नागालैंड भी अन्य राज्यों की तरह ही समृद्धि के मार्ग पर तेजी से अग्रसर है।

उपरोक्त भौतिक उन्नति के साथ-साथ नागालैंड के निवासियो और विशेष रूप से युवा-वर्ग में शराब तथा अन्य मादक पदार्थों का सेवन भी तीव्र गति से बढ़ रहा है। सैकड़ों की संख्या में नागालैंड के नगरों और ग्रामों में अंग्रेजी तथा देसी शराब के ठेके खोले जा रहे हैं। जिन परिवारों में पहले घर में ही निर्मित पारस्परिक हल्के मादक पेय का सेवन होता था और जिसका कोई अतिरिक्त मूल्य भी नही होता था, उन परिवारों में अब सरकारी ठेकों से शराब खरीद कर व्यापक रूप से उपयोग में लाई जा रही है। शराब विक्रेता तो धनाढ्य हो रहेहैं किन्तु जनसमुदाय आर्थिक व सामाजिक रूप से रसातल की ओर अग्रसर हो रहा है। नागालैंड की महिलाओं को इस बिगड़ती हुई पारिवारिक स्थिति से चिन्तित होना आव यक है। इस लेख के लेखक को लगभग १५ वर्ष पहले मद्यनिषेध कार्यक्रम के सम्बन्ध में ही नागालैंड की यात्रा करने का अवसर मिला था तथा लेखक को सैकड़ों-हजारों की संख्या में महिलाओं से सम्पर्क करने का मौका भी मिला। श्रीमती रेनु शायजा नागालैंड की एक प्रतिष्ठित महिला हैं और जो सांसद भी रह चुकी हैं, वे इन महिलाओं का नेतृत्व कर रही थीं। इन महिलाओं ने बताया कि किस प्रकार शराब के इन ठेकों द्वारा उनके घर-परिवार उजड़ रहे हैं। पुरुष तथा युवा-वर्ग ठेके की शराब पीकर न केवल अपने स्वास्थ्य को बरबाद कर रहे हैं बल्कि अपने परिवारों की सुख-शान्ति को भी ध्वस्त कर रहे हैं। नागा-समाज में जहां पहले कभी शायद ही कोई जघन्य अपराध होता था वहां अब व्यापक अपराध वृत्ति तेजी से पनप रही है। इन महिलाओं की एक स्वर से यह मांग थी कि नागालैंड में पूर्ण मद्यनिषेध तुरन्त लागू कर उन्हें बरबाद होने से बचाया जाए। ईसाई धर्म-गुरुओं का भी मद्यनिषेध के लिए व्यापक समर्थन था। नागालैंड में ईसाई धर्म से सम्बन्धित विभिन्न पादरियों ने भी राज्य सरकार पर दबाव डाला कि सरकार नशाबन्दी तुरन्त लागू करे और इस क्षेत्र के युवकों को बरबाद होने से बचाये। मद्यनिषेध के लिए पिछले अनेक वर्षों से आन्दोलन निरन्तर चलता रहा और गत कुछ वर्षों में इस आन्दोलन ने व्यापक संघर्ष का रूप धारण कर लिया। इस संघर्ष में महिलाओं तथा ईसाई पादरियों की विशेष भूमिका थी।

वर्तमान नागालैंड विधान सभा के लिए दो वर्ष पूर्व जो चुनाव आयोजित किये गये थे उसमें लगभग सभी राजनैतिक पार्टियों ने मद्यनिषेध लागू करने के लिए अपनी प्रतिबद्धता जाहिर की थी जिसका परिणाम अब यह हुआ है कि नागालैंड की वर्तमान कांग्रेस (ई) सरकार ने अपनी प्रतिबद्धता का पालन करते हुए नागालैंड में पूर्ण नशाबन्दी लागू करने का निर्णय लेकर उसे कार्यान्वित करने की घोषणा की है। नागालैंड सरकार का यह कार्य हर प्रकार से प्रशंसनीय है और हम आशा करते हैं कि नागा-समाज में शराब पीने-पिलाने का प्रचलन जो तीव्रगति से बढ़ा है वह अब रुकेगा और नागा निवासी विशेष रूप से महिलाएं सुख-शान्ति का अनुभव करेंगी तथा समाज भौतिक प्रगति के साथ-साथ सामाजिक तथा आध्यात्मिक दृष्टि से भी प्रगति करेगा।

अन्य राज्यों की तुलना में यद्यपि नागालैंड एक छोटा प्रदेश है किन्तु यहां के नागरिक अपेक्षाकृत अधिक जागरूक हैं। यही कारण है कि उन्होंने मद्यपान के प्रचार व प्रसार से नागा-समाज में जो आर्थिक व सामाजिक विकृतियां उत्पन्न हो रही थी उनके प्रति अपनी उदासीनता त्याग कर पूर्ण मद्यनिषेध के लिए संघर्ष प्रारम्भ किया और जिसमें उन्हें अब सफलता भी मिली है। ईसाई पादरियों ने भी इस संघर्ष को अपना पूरा समर्थन देकर नागालैंड के निवासियों का मार्ग-दर्शन किया है। जब नागालैंड जैसे छोटे प्रदेश में कानून द्वारा नशाबन्दी लागू की जा सकती है तो फिर अन्य प्रदेशों में भी मद्यनिषेध के लिए संघर्ष प्रारम्भ करने की भूमिका बननी चाहिए। हिन्दू, मुस्लिम, जैन, सिख व बौद्ध इत्यादि धर्म-गुरुओं को भी इस संघर्ष के भी इस संघर्ष के लिए अपना-अपना योगदान प्रदान करना आवश्यक है। इन धर्म-गुरुओं को भी समाज के व्यापक कल्याण के लिए सक्रिय भूमिका निभानी होगी। शराब के बढ़ते हुए प्रकोप से भारतीय समाज जो जीर्ण-शीर्ण हो रहा है उसे अब तटस्थ रहकर केवल तमाशाई के रूप में देखने की वृत्ति को तुरन्त समाप्त करना होगा। अब समय आ गया है कि इन धर्म-गुरुओं को भारतीय समाज का जो उन पर ऋण है, उससे वे मुक्त हों और समाज को और अधिक ध्वस्त होने से बचाने के लिए पूरा प्रयास करें।

दाक्षिणात्य में हिन्दी का विरोध नहीं है

–दिनांक २७ अप्रैल को पं० वन्देमातरम् का भाषण–

'ऐसा कोई नेता जो हिन्दी को जनता पर थोपने की शिकायत करता है वह राष्ट्र प्रेमी नहीं, गद्दार है। हिन्दी को थोपने का प्रश्न ही नहीं उठता। राष्ट्र भाषा हिन्दी को सीखना हर नागरिक का परम कर्त्तव्य है। दाक्षिणात्य में हिन्दी का विरोध नहीं है, केवल राजनीतिक नेता विरोध करते हैं। हिन्दी मात्र एक भाषा नहीं, वह राष्ट्र की आत्मा एवं अस्मिता है। आर्यसमाज ने ही सर्वप्रथम हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित किया और उसका देशव्यापी प्रचार किया था। आज भी हिन्दी को देशव्यापी बनाने में आर्यसमाज आगे रहेगा।"

उपर्युक्त उद्गार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के वरिष्ठ उपाध्यक्ष पं० वन्देमातरम रामचन्द्रराव जी ने वरंगल में २९-४-१९९० को आयोजित हिन्दी टंकण विद्यालय के द्वितीय सत्र उद्घाटन के शुभ-अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में व्यक्त किये।

भाषाओं के सहारे जो विदेशीपन पनप रहा है, उसका विरोध करते हुए पं० वन्देमातरम् जी ने आगे कहा—"हम अंग्रेजी और उर्दू भाषाओं के विरोधी नहीं है, परन्तु इनमें जो विदेशीपन विद्यमान है, उसका विरोध करते हैं। उर्दू एक सशक्त भाषा है, परन्तु उसमें से अरबी और फारसी के शब्द और उसकी फारसी लिपि हट जानी चाहिए। अंग्रेजी भाषा देश की शासन की भाषा बनी रहे, इसका हम कड़ा विरोध करते हैं।"

राजभाषा आयोग के अध्यक्ष के नाते पं० वन्देमातरम जी ने भारतीय भाषाओं को एक जगह लाने और तेलुगू को प्रदेश के प्रशासन की भाषा बनाने की चर्चा करते हुए कहा—"भारतीय भाषाओं के समान शब्दों का एक शब्दकोष बनाने का प्रयास किया गया था और तेलुगू को पूरी तरह प्रशासन की भाषा बनाई गयी थी, परन्तु आज वे सारे प्रयत्न उलट दिये गए हैं। भूतपूर्व मुख्यमन्त्री एन०टी० रामाराव स्वयं भारतीय भाषाओं के समर्थक नहीं थे। उन्होंने जनता में अलगाववादी प्रवृत्ति के विष के बीज बोये थे।" उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि दक्षिण के विद्वान् तथा साहित्यकार उत्तर भारत में हिन्दी का नेतृत्व करेंगे। अपने भाषण के अन्त में पं० वन्देमातरम् जी ने आर्य समाजियों को चेतावनी देते हुए कहा कि आज देश पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं। इसलिए आर्य-समाजियों को अपनी सेना संगठित करके देश की रक्षा के लिए आगे आना चाहिए।

हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद ने भारत सरकार के आर्थिक सहयोग से वरंगल आर्य समाज मन्दिर मे सायं हिन्दी महाविद्यालय और हिन्दी टंकण विद्यालय की स्थापना की है, जिनमें नि.शुल्क शिक्षण की व्यवस्था है। सभा के प्रधान मन्त्री प्रो० राजकिशोर पाण्डेय ने कहा—"देश में सांस्कृतिक एवं धार्मिक जागरण के साथ राष्ट्रीय जागरण में आर्यसमाज की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का श्रेय आर्यसमाज ही को है।"

देश में अंग्रेजी भाषा के प्रति बढ़ते हुए मोह पर उन्होंने चिन्ता प्रकट की। डा० पाण्डेय जी ने इस वर्ष वरंगल में आशुलिपि प्रशिक्षण विद्यालय स्थापना की घोषणा की।

परीक्षामन्त्री एवं स्वतन्त्रता सेनानी श्री पोथ्वीराव जी जाधव ने अपने भाषण में दुःख प्रकट करते हुए कहा कि आजादी से पहले गांधी जी के नेतृत्व में जिन विदेशी वस्तुओं की होली जलाई जाती थी, आज हम उन्हीं वस्तुओं को अपने गले लगा रहे। देश से अंग्रेजित समाप्त होनी चाहिए, यह तभी सम्भव है, जब जनता राष्ट्रीयभावना से उत्प्रेरित होकर त्याग बलिदान की भावना को अपना कर हिन्दी की व्यापक सेवा करेगी।

इस अवसर पर वरंगल हिन्दी समिति के महामन्त्री श्री.जी० राजवीर आर्य ने अपने शिक्षण केन्द्र के चालीस वर्षों की हिन्दी सेवा के इतिहास पर प्रकाश डाला और बताया कि आज तक पचास हजार से भी अधिक लोगों को हिन्दी सिखाई गई है। जेल में कैदियों को हिन्दी सिखा कर अच्छे नागरिक बनाया गया है। आज वे हिन्दी अध्यापक के रूप में सरकारी विद्यालयों में सेवारत है।

इस अवसर पर सर्व श्री कान्तिकुमार जी और विवरण पत्रिका के प्र० सम्पादक डा० शीलम् वेंकटेश्वर राव ने भी सभा को सम्बोधित किया। वरंगल जिले के विभिन्न आर्य समाजों की ओर से आर्य नेता पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव जी को माल्यार्पण किया गया और गगनभेदी नारों से सारा वातावरण गूंज उठा।

समारोह की अध्यक्षता श्री काकोजी रामेश्वरराव ने की। अपने भाषण में उन्होंने जनता को अपने मन से हिन्दी और देश की सेवा करने की सलाह दी। महाविद्यालय के प्राचार्य श्री अंचूरि जगन्नाथम ने आभार प्रदर्शित किया। आर्य समाज मन्दिर का सभा कक्ष श्रोताओं से खचाखच भरा हुआ था। सोत्साह वातावरण में समारोह समाप्त हुआ।

इस समारोह में सात सदस्यों की एक हिन्दी समिति की घोषणा की गई :—

अध्यक्ष	: श्री रामेश्वर राव काकोजी
उपाध्यक्ष	: ,, के० राजशेखर
महामन्त्री	: ,, जी० राजवीर आर्य
उपमन्त्री	: ,, सी० लक्ष्मणदेव आर्य

सदस्यों में सर्वश्री अंचूरि जगन्नाथम, डा० संजीव तथा श्री टी० सुदर्शन। —प्रस्तुति : (डा० शीलम वेंकटेश्वर राव)

आर्य जगत् के समाचार

दयानन्द शोधपीठ पंजाब विश्वविद्यालय से वर्ष १९८९-९० में पी. एच. डी. प्राप्त शोध छात्र

१९८९-९० के शिक्षा वर्ष में डा० भवानीलाल भारतीय

भारतीय के निर्देशन में निम्न शोधार्थियो ने शोध उपाधि प्राप्त की।

डा० श्रीमती कमला—ऋग्वेद में नारी]

डा० सुरेन्द्र कुमार—वैदिक आख्यानो का विकास क्रम]

डा० सतीशचन्द्र शर्मा—मनुस्मृति और याज्ञवल्क्य स्मृतिका तुलनात्मक अध्ययन

डा० वेदपाल शास्त्री—स्वामी दयानन्द के साहित्य में राजनीति विचार

डा० देवेन्द्रनाथ शास्त्री—याजुष सूक्ति विमर्श:

डा० रामकृष्ण आर्य—स्वामी दयानन्द के ग्रन्थो में विवेचित आर्थिक विचार

डा० कर्मसिंह शास्त्री—स्वामी दयानन्द के ग्रन्थो में विवेचन षडदर्शनो केसदर्भ

इन शोधार्थियो की मौतिक परीक्षा क्रमश डा० वाचस्पति उपाध्याय, डा० सुधीर कुमार गुप्त डा० वीरेन्द्र कुमार वर्मा, डा० शिवसागर त्रिपाठी, डा० ब्रह्मानन्द शर्मा, तथा डा० रामप्रताप वेदालकार ने ली। विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि डा. देवेन्द्रनाथ शास्त्री-७५ वर्षीय वयोवृद्ध शोधार्थी हैं और डा. रामकृष्ण आर्य कोठा के एक खाद कारखाने मे श्रमिक है। सभी शोधार्थियो को हार्दिक बधाई।

राजेन्द्रसिंह, कार्यालय अधीक्षक
दयानन्द पीठ पजाब विश्वविद्यालय चन्डीगढ

राजधानी में हिन्दी भवन

भारत के सभी हिन्दी प्रेमी व्यक्तियो को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि नई दिल्ली के प्रमुख सस्था क्षेत्र राउज एवेन्यू मे हिन्दी भवन' के निर्माण का कार्य अब तेजी से चालू हो गया है। इस सम्बन्ध मे 'धर्मयुग' (२२-२८ अप्रैल, १९९० पृष्ठ १९) मे भी एक विस्तृत लेख प्रकाशित हुआ है। इस कार्य में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका सुप्रसिद्ध कवि एव साहित्यकार श्री गोपाल प्रसाद जी व्यास तथा सुप्रसिद्ध शासक एव भूतपूर्व राज्यपाल श्री धर्मवीर जी की रही है। 'हिन्दी भवन' का मुख्य लक्ष्य राष्ट्रीय एकता तथा भाषायी सौमनस्य स्थापित करना है और सभी भारतीय भाषाओ को हिन्दी के साथ जोडकर उन्हे उचित स्थान दिलाना है। यह हिन्दी भवन विश्व स्तर का ऐसा ऐतिहासिक भवन होगा जो राजधानी के ही नही अपितु भारत के समस्त हिन्दी प्रेमियों का अपना भवन होगा और जिस पर सभी हिन्दी प्रेमियो को गर्व होगा। इसके निर्माण मे लगभग डेढ वर्ष लगेंगे। इसके निर्माण तथा अन्य व्यवस्थाओ पर कुल मिलाकर प्रथम चरण में लगभग डेढ़ करोड रुपये खर्च होने का अनुमान है। अभी तक न्यास को लगभग ३० लाख रुपये प्राप्त हुए है। अर्थ सग्रह का कार्य तेजी से चल रहा है।

—रामनिवास लखोटिया
सयोजक अर्थ-सग्रह समिति
एव सदस्य न्यास परिवार, 'हिन्दी भवन'

आचार्य उदयवीर शास्त्री अस्वस्थ

गत दिनो अतिसार, ज्वर और शिर शूल की शिकायत पर आचार्य जी को अजमेर के नेहरू चिकित्सालय में प्रविष्ट कराया गया था। डा. सतीश अरोड़ा के परिश्रम एव योग्यता से उपद्रवाह तो शान्त हुये परन्तु परीक्षण करने पर पेट में बडी आतो में ट्यूमरका पता चला है। आचार्य जी की आयु और स्वास्थ्य को देखते हुये शल्य चिकित्सा सम्भव नही है अत: चिकित्सको ने विश्राम एव घर पर ही औषधि लेने के परामर्श के साथ चिकित्सालय से छुट्टी दे दी है। आचार्य जी की घर पर ही चिकित्सा चल रही है। आशा है ईश्वर की कृपा से आनेवाले दिनो में स्वास्थ्य मे अपेक्षित सुधार हो सकेगा।

—धर्मवीर

राष्ट्र रक्षा यज्ञ

नगर आर्य समाज गोरखपुर के तत्वावधान से 'राष्ट्र रक्षा यज्ञ' बन्धु सिंह पार्क हालसीगज पर जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष एव वयोवृद्ध पुरोहित प० द्विजराज शर्मा द्वारा सम्पन्न हुआ। यज्ञोपरान्त सभा की 'कार्यवाही काश्मीर बचाओ दिवस'के सम्बन्ध में हिन्दू महासभा के तपोनिष्ट नेता ब्रह्मचारी रामदास की अध्यक्षता मे प्रारम्भ की गई, सभा सचालन नगर आर्य समाज के मन्त्री रमेश प्रसाद गुप्त ने करते समय कहा कि भारतीय जनता इतिहास उठाकर देखे तो पता चलेगा कि आर्य समाज देश की सभी राजनैतिक सस्थाओका गुरू है जिसने खून और पसीना से सीचकर स्वतन्त्रता दिलाने का कार्य किया है।

—रमेश कुमार, मन्त्री

सम्पूर्ण यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

बिहार राज्य की प्रख्यात उद्योग नगरी गिरीडीह में स्वर्गीय आर्यसमाजी, नेता श्री रामस्वरूपजी आर्यके निवास स्थान पर दि० २५-४-९० से २८-४-९० तक सम्पूर्ण यजुर्वेद पारायण यज्ञ किया गया। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती वासन्ती देवी ने सारा प्रबन्ध अपने पति की स्मृति मे किया। इस अवसर पर प० सोम मित्र जी शास्त्री गया। श्री गोविन्द जी शास्त्री राची तथा डा० देवेन्द्र कुमार जी सत्यार्थी नालन्दा के आचार्यत्व मे यह महान कार्य सम्पन्न हुआ।

—चन्द्रशेखर आर्य, सयोजक

पं० गुरुदत्त जन्म दिवस सम्पन्न

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् प्रताप नगर के तत्वावधान मे ७३ अप्रैल को प्रात ७ बजे गोबिन्दराम गुरुकुल सीनियर सैकण्डरी स्कूल रामबाग रोड, बगीची पीरजी मे आर्य युवा नेता श्री राजसिंह आर्य की अध्यक्षता मे मनाया गया।

इस अवसर पर उन्होने युवको को उनके आर्य सस्कृति प्रेम देशभक्ति व नैतिक शिक्षा प्रेम की प्रेरणा दी।

—चन्द्रमोहन आर्य, प्रचारमन्त्री

आर्य जगत् का नक्षत्र अस्त हो गया

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली तथा बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, पटना के भू०पू० प्रधान, एशिया के विख्यात नेत्र चिकित्सक, अनेक शिक्षण सस्थाओ के स्तम्भ तथा अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्यनेता डा० दु खनराम (९२) का हृदयगति अवरूद्ध हो जाने से २६-४-९० को दिन मे १ बजे अपराहन मे देहावसान हो गया। उनका अन्त्येष्टि सस्कार २७-४-९० को पटना के बास घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से पण्डिता, आर्य समाजियो, चिकित्सको तथा प्रबुद्ध नागरिको की अपार भीड के समक्ष सम्पन्न हुआ। जिसमे सभा के अधिकाश पदाधिकारी, पण्डित तथा विख्यात चिकित्सक, शिक्षाशास्त्री तथा अनेक इष्ट मित्र दिनाक २९-४-९० के शान्ति यज्ञ के विशाल आयोजन के अवसर पर उपस्थित हुए।

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रागण मे सभा प्रधान की अध्यक्षता मे शोक सभा का आयोजन किया गया। जिसमे अनेक वक्ताओ ने डा० डी० राम की बहुमुखी प्रतिभा तथा आर्य समाज के प्रति उनकी निष्ठा तथा तत्परता की चर्चा की। दो मिनट का मौन व्रत के साथ खडे होकर परमेश्वर से प्रार्थना की गयी कि वह मृतात्मा को शाश्वत शान्ति तथा शोक सन्तप्त परिवार धैर्य धारण करने की शक्ति प्रदान करे।

सभा कार्यालय म निम्नलिखित आर्य समाजो मे शोक सवेदना प्राप्त हुई है—बाकीपुर, वरवीघा, पटना सिटी, गया, व्यापुर, मसौढी, देवघर, छपरा, गोपालगज, सीवान, मुगेर, पहलेजा, हिलसा।

योगेन्द्र नारायण, मन्त्री

पंजी० न० डी० (डी०) १०७   सार्वदेशिक साप्ताहिक   (२७-५-१९९०)   बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U ९१
R.N. 42415?   Licensed to post without prepay   ment licence No.U 91 Post in D.P.S.O.on   25-5-1990

सुभाष विद्यालंकार गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति

नई दिल्ली, २१ मई। श्री सुभाष विद्यालंकार को गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय का नया कुलपति नियुक्त किया गया है। उन्होने ५ मई को अपने पद का कार्यभार संभाल लिया। गुरुकुल कांगडी की स्थापना ९० वर्ष पूर्व स्वामी श्रद्धानन्द ने की थी। गुरुकुल की स्थापना का उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा पद्धति से युवको को शिक्षा देना और उनमे राष्ट्रीयता की भावना भर कर उनका चरित्र निर्माण करना था।

श्री सुभाष विद्यालकार गुरुकुल कांगडी के ही स्नातक है। वह १९४६ में स्नातक हुए थे। बाद में उन्होने दिल्ली विश्वविद्यालय तथा अन्य विद्यालयो से अपनी शिक्षा पूरी की। पिछले दस वर्ष से वह उच्चतम न्यायालय तथा दिल्ली उच्च न्यायालय मे वकालत कर रहे थे। वह १९७८-८० के काल में दिल्ली प्रशासन के जनसम्पर्क एव सूचना निदेशक रहे। वह केन्द्रीय सूचना सेवा के सदस्य के रूप मे आकाशवाणी मे भी रहे और कई सरकारी पत्रिकाओ का सम्पादन किया।

नई दिल्ली म उन्होने एक भेंट मे कहा कि गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय को उच्च शिक्षा के श्रेष्ठ केन्द्र के रूप मे पुर्नस्थापित करना उनका प्रथम ध्येय होगा। इसके लिए वह प्राध्यापक मण्डल के सदस्यो तथा कर्मचारियो का सहयोग लेंगे। विश्वविद्यालय में शैक्षणिक सुविधाए बढाने तथा शिक्षा का स्तर ऊचा उठाने मे पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया है। सुभाष जी ने कहा है कि "मैं सरकार में तथा उसके बाहर के उन सब लोगो की शुभकामनाए लेकर जा रहा हू, जो गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय को शाति निकेतन की भांति श्रेष्ठतम विश्वविद्यालय के रूप में देखना चाहते है।

गांधी युग के स्वतन्त्रता सेनानी का निधन

दानापुर। बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के सहमन्त्री श्री रामानन्द प्रसाद के पूज्य पिता एव कट्टर आर्य समाजी तथा वयोवृद्ध स्वतन्त्रता सेनानी ग्राम चान्दमारी निवासी डा० नन्द्र कुमारसिंह का निधन दिनाक ८-५-९० को ५ बजे हो गया है उनका दाह सस्कार दिनाक ९-५-९० को घाट पर वैदिक मन्त्रोचार से सम्पन्न हुआ। दाह सस्कार के समय बडी सख्या मे आर्य समाजी, राजनीतिक एव सामाजिक कार्यकर्ताओ ने अश्रुपूरित आखो से श्रद्धाजलि अर्पित की।

—सर्वेप्रसाद शास्त्री, सहमन्त्री सभा
बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा
नया टोला पटना-४

२१ वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज हरजेन्द्र नगर कानपुर का २१ वा वार्षिकोत्सव सफलता पूर्वक सम्पन्न हो गया। इस समारोह मे आए डा. ज्वलन्त कुमार शास्त्री ने बल देते हुए कहा कि राष्ट्र की समग्र उन्नति महर्षि दयानन्द के बताए मार्ग पर चलने से ही सभव है। जो लोग इस देश का अन्न खाए है, जल पीये है पले है और यहीं पर रह रहे हैं उनका कर्तव्य है कि वे राष्ट्र के विकास एव उन्नति मे अपने को समर्पित कर दे, राष्ट्र की अखण्डता मे अपने को आहूत कर दे। श्री सियाराम 'निर्भय' ने कहा कि हिन्दू समाज से, छूआछूत, जातिपाति, सतीप्रथा एव अन्य धार्मिक परम्पराओ को नही निकाला गया तो वह छिन्न भिन्न हो जाएगा और शकराचार्य जैसे धर्माचार्यों को हिरासत मे लेकर जेल मे बन्दकर दिए गए और हिन्दू समाज मूक दर्शन बनकर रह जाएगी।

शोक समाचार

आर्य समाज गगापुर सिटी के कर्मठ कार्यकर्ता एवम् स्वतन्त्रता सेनानी श्री बुद्धाराम जी स्वर्णकार का दिनाक ८ मई को स्वर्गवास हो गया था।

आज दिनाक १३ मई को आर्य समाज मन्दिर गगापुर सिटी ने दो मिनिट का मौन रख कर मृत आत्मा की शाति की प्रार्थना की गई तथा इस दु ख को सहन करने के लिये पारिवारिक सदस्यो को धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना की।

—प्रतीक सोनी, मन्त्री

शताब्दी समारोह

आर्यसमाज पहासू अपना स्थापना शताब्दी समारोह दिनाक ८, ९, १० जून १९९० में मना रही है। आर्य जगत के विद्वान उपदेशक पधार रहे हैं। विद्वानो के उपदेश सुनकर धर्मलाभ उठाये। —सन्तोष कुमार पहासू, मन्त्री

स्वामी आनन्द मुनि का देहान्त हो गया

लगभग ९ साल से आर्य समाज राजौरी, पुछ, नौशहरा, और लम्बेडी मे आर्य समाज व वैदिक धर्म का प्रचार करते रहे। विशेष कर वह आर्य-समाज राजौरी मे ही रहे। राजौरी समाज मे प्रति वर्ष वेद प्रचार सप्ताह उल्लास से मनाते रहे। दिनाक १० मई १९९० को प्रात ६ बजे इस दुनिया को छोड कर चले गये। उनके निधन से आर्य समाज लम्बेडी, राजौरी को जो क्षति हुई है उसे पूरा करना बहुत ही मुश्किल है।

प्रवेश सूचना

ब्रह्म कुटी वेद मन्दिर वेदोपदेशक विद्यालय ब्रजघाट में प्रवेश आरम्भ है। सौम्य शिष्ट, अनुशासन प्रिय, प्रतिभाशाली, तथा आजीवन वैदिकधर्म प्रचार के इच्छुक कम से कम ८वीं पास युवक और स्वाध्यायशील सदाचारी प्रचार करने मे रुची रखने वाले वानप्रस्थी प्रवेश के लिये आमन्त्रित हैं।

पत्र व्यवहार निम्न पते पर करे
कुलाधिपति
श्री प० ब्रह्म प्रकाश जी शास्त्री विद्यावाचस्पति
ब्रह्म कुटी वेदमन्दिर ब्रजघाट-२४५२०३
जि० गाजियाबाद (उ० प्र०)

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन,नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१ दयानन्दाब्द १६६ दूरभाष : ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष २९ अंक २१] ज्येष्ठ शु० ११ सं० २०४७ ३ जून १९९०

वेदामृत

वीर पुत्रों से युक्त हों

भूर्भुवः स्वः सुप्रजाः प्रजाभिः स्याम्
सुवीरो वीरैः सुपोषः पोषैः ।
नर्य प्रजां मे पाहि शꣳस्य पशून् मे
पाह्यथर्य पितुं मे पाहि ॥
यजु० ३ ३७ ॥

हिन्दी अर्थ—हे सच्चिदानन्द-स्वरूप परमात्मन् ! मैं सन्तानों से सु-संतान वाला, वीर-पुत्रों से वीर-पुत्र वाला और ऐश्वर्य से ऐश्वर्य-सम्पन्न होऊं । हे मानव के हितकारी ! तुम मेरी संतानों की रक्षा करो । हे प्रशंसनीय ! तुम मेरे पशुओं की रक्षा करो । हे सतत गतिशील ! तुम मेरे अन्नादि की रक्षा करो)

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

भाजपा को रामजन्म भूमि पर जनमत संग्रह मंजूर नहीं
—सिंघल

लखनऊ २७ मई । विश्व हिन्दू परिषद् के महासचिव अशोक सिंहल ने भारतीय जनता पार्टी के एक वरिष्ठ नेता द्वारा राम जन्मभूमि बाबरी मस्जिद प्रसंग पर "राष्ट्रीय स्तर पर जनमत संग्रह" कराए जाने जैसे विचार को अस्वीकार कर दिया है ।

वह भारतीय जनता पार्टी के महासचिव कृष्णलाल शर्मा के कल के इस आशय के वक्तव्य पर टिप्पणी कर रहे थे ।

श्री सिंघल ने कहा कि राम जन्म भूमि बाबरी मस्जिद प्रसंग पर सरकार आठ जून तक यदि समाधान खोजने में असफल रही तो विश्व हिन्दू परिषद अयोध्या में मन्दिर निर्माण के लिए अपनी योजना आरम्भ कर देगी । उन्होंने बताया कि निर्माण कार्य की निश्चित तिथि का निश्चय और उसकी घोषणा हरिद्वार में २३ और २४ जून को होने वाले "सन्त सम्मेलन" में की जायेगी ।

विश्व हिन्दू परिषद् के महासचिव ने कहा "यदि हमें जबर्दस्ती से अपना काम करने से रोका गया तो हम गिरफ्तारी देंगे और जेल जायेंगे ।" उन्होंने बताया कि कार सेवा में शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, माधवाचार्य वल्लभाचार्य तथा महामंडलेश्वर भाग लेंगे ।

श्री सिंहल ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री मुलायमसिंह यादव के हाल के इस बयान को बहुत दुर्भाग्यपूर्ण तथा अबुद्धिमत्तापूर्ण बताया कि उनकी सरकार किसी को भी राममन्दिर का निर्माण करने की अनुमति तब तक नहीं देगी जब तक यह मामला न्यायालय में विचाराधीन है ।

श्री सिंघल ने मुख्यमन्त्री को याद दिलाया कि जनभावनाओं को कुचल करके कोई भी लम्बे समय तक सत्ता में टिका नहीं रह सकता । उन्होंने सरकार से अपील की कि वह परिषद द्वारा निर्धारित समयावधि के भीतर ही इस समस्या का समाधान ढूंढे ।

श्री सिंघल ने सम्वाददाताओं से बातचीत के दौरान कहा कि सरकार को राम जन्म भूमि से सम्बन्धित विवाद को अदालत में लटकाकर और कानूनी प्रक्रिया को लम्बा खींचकर हिन्दुओं को धोखा देने की कोशिश नहीं करनी चाहिये ।

नेपाल हिन्दू राष्ट्र ही रहे
हिन्दू नेताओं का संयुक्त वक्तव्य

सर्वश्री शंकराचार्य स्वामी जयेन्द्र सरस्वती (काञ्ची कामकोटी पीठ) स्वामी आनन्दबोध सरस्वती (प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा), महन्त अवैद्यनाथ (संसद सदस्य, तथा प्रधान गोरख पीठ) श्री बी०एच० डालमिया (विश्व हिन्दू परिषद् के कार्यवाहक प्रधान), वेदान्त ज्ञान जगत (बोधगया) और महाबोध मन्दिर के जैन सन्त ने नेपाल के विषय में एक संयुक्त वक्तव्य जारी किया है—

"भारत के समस्त हिन्दू संगठन नेपाल से अनुरोध करते हैं कि वहां की इच्छाओं को ध्यान से रखते हुए उनका संविधान किसी भी प्रकार का क्यों न बनाया जाय, नेपाल को एक हिन्दू राष्ट्र ही बने रहना चाहिए । वहां धर्म परिवर्तन और गाय तथा गोवंश की हत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध हो ।"

जयपुर में अग्निवेश की प्रस्तावना पर डा० भवानीलाल भारतीय की जोरदार आपत्ति
आर्यसमाज के लिए विचारणीय विषय ?

गत दिनों जयपुर में आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का शताब्दी समापन समारोह सम्पन्न हुआ । इस अवसर पर पृथकशः आयोजित एक्प्रेस कान्फ्रेंस में स्वामी अग्निवेश ने कहा (दृष्टव्य राजस्थान पत्रिका २०-५-९०) कि शीघ्र ही भारतीय आर्यसमाज की स्थापना की जायेगी जिसमें हिन्दुओं के अतिरिक्त ईसाई मुसलमान सिख और बौद्ध आदि भी सम्मिलित हो सकेंगे । मेरा निवेदन है कि क्या स्वामी अग्निवेश की यह प्रस्तावित आर्यसमाज स्वामी दयानन्द द्वारा स्थापित आर्यसमाज से भिन्न होगी ? क्योंकि स्वामी दयानन्द के आर्यसमाज में पैगम्बरवाद के लिये कोई स्थान नहीं है जब कि ईसाई और मुसलमान मत का आधार ही पैगम्बरो की मान्यता तथा उन पर विश्वास लाना है । आर्यसमाज के लिये वेद का प्रामाण्य सर्वोपरि है जब कि बौद्धों ने वेदों को कभी प्रमाण नहीं माना अपितु वे जड़ बुद्धि वालों की आस्था का प्रतीक कहते हैं । सिख मत में भी वेदों के प्रामाण्य को अस्वीकार किया जाता है । अतः मैं आर्य जगत् को सावधान करना चाहता हूं कि आर्य समाज का स्वरूप, सिद्धान्त तथा उसकी मान्यतायें वही हैं और रहेंगी जो ऋषि दयानन्द द्वारा स्थापित हैं । इनसे भिन्न किसी चूं-चूं के मुरब्बे जैसे आर्यसमाज को कभी सहन नहीं किया जायेगा ।

भवानीलाल भारतीय
प्रोफेसर, पंजाब विश्वविद्यालय

सम्पादक—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

जीता जागता आर्य समाज भाग (२)

विमल वधावन एडवोकेट

इस लेख के पिछले भाग से यह स्पष्ट हो चुका था कि स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी ने अपने जीवन में इतने लोक-कल्याण के कार्य आर्यसमाज मंच से किए हैं कि स्वयं उनके अन्दर ही एक जीता जागता चलता फिरता आर्य समाज नजर आने लगा है।

आज स्वामी जी का व्यक्तित्व सामाजिक और राजनैतिक स्तर पर केवल व्यक्तिगत प्रभाव ही नही रखता बल्कि आर्य समाज के शीर्षस्थ नेता होने के नाते सम्पूर्ण आर्यसमाज संस्था के रूप में भी इतना प्रभावशाली हो चुका है कि क्या राजनैतिक नेता और क्या सरकारी अफसर आर्य समाज का नाम सुनते ही आर्य समाज के ज्ञापनों और प्रस्तावों पर उचित ध्यान लगाकर कार्यवाही करते हैं। स्वामी जी वर्तमान प्रधान पद से ही नहीं बल्कि एक साधारण कार्यकर्ता की हैसियत से भी हमेशा यही प्रयत्न किया कि महर्षि दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द के स्वप्न साकार तभी होंगे जब आर्यसमाज एक संगठनात्मक चुनौती के रूप में जाना जाए जिससे वदिक सिद्धान्तो का, जो मूल सत्य है, प्रचार और प्रसार सारे विश्व में हो सके।

आज स्वामी जी की ललकार आर्य समाज की ललकार बनकर गलियारों में गूंज मचाती है तो सोए हुए राजनैतिक नेताओं और सरकारी अफसरों को मजबूर होकर जागना पड़ता है। हाल में ही इसका उदाहरण जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी की गिरफ्तारी के समय सामने आया। शंकराचार्य की गिरफ्तारी का विरोध न केवल सनातनी संगठन बल्कि राजनैतिक स्तर से भी सारे भारत में किया जा रहा था। कुछ सामाजिक नेताओं की पहल पर ८ मई को दिल्ली के संविधान भवन में एक सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें स्वामी जी को भी आने की प्रार्थना की गई। न केवल प्रार्थना ही बल्कि वीर अर्जुन के मुख्य सम्पादक श्री अनिल नरेन्द्र और कई सनातनी नेता स्वयं स्वामी जी को लेने के लिए सार्वदेशिक सभा कार्यालय में आए। सनातन धर्म के साथ आर्यसमाज के मूर्तिपूजा के प्रश्न पर वैचारिक मतभेद होते हुए भी एक हिन्दू धर्माचार्य की गैर कानूनी गिरफ्तारी का विरोध करने के लिए स्वामी जी ने पूरे प्रभावशाली तरीके से अपने भाषण के माध्यम से सरकार को ललकारा और कहा कि शंकराचार्य की गिरफ्तारी के समय यह सरकार कहती है कि हमने राम जन्मभूमि के चारों ओर कांटेदार तार लगाकर पूरी सुरक्षा का इन्तजाम कर लिया था जिससे शिलान्यास न हो सका परन्तु यदि यही तारो का प्रयोग और यही इन्तजाम सरकार जम्मू काश्मीर और पंजाब की पाकिस्तानी सीमाओं पर करती तो दोनो राज्यों मे जो हजारो लाखो लोग मारे गए और बेघर हो गए हैं वे न होते और राम जन्म भूमि में आज केवल अपनी राजनैतिक सुरक्षा के कारण इतने सख्त कदम और हिन्दू धर्माचार्य की गैर कानूनी गिरफ्तारी स्वामी जी ने अपनी ललकार को जारी रखते हुए कहा कि आर्य समाज इस गिरफ्तारी को कभी भी बर्दाश्त नही करेगा और यदि आज ही शंकराचार्य को रिहा नही किया गया तो कल से आर्य समाज उसी तरह से आन्दोलन करेगा जैसे हैदराबाद मे निजाम के खिलाफ आर्य सत्याग्रह, दिल्ली में गोहत्या विरोधी आन्दोलन और हिन्दी आन्दोलन किए थे।

इस सम्मेलन के बाद सरकार के गुप्तचरो ने श्री अनिल नरेन्द्र से सम्पर्क करके आर्य समाज के रोष के बारे में पूछा और फिर दोपहर बाद सार्वदेशिक सभा के कार्यालय में स्वामी जी से भी सम्पर्क किया तो स्वामी जी ने उन्हें भी स्पष्ट कहा कि यदि आज शंकराचार्य की रिहाई नही होती तो कल से टेलीफोन और टेलीग्रामों के माध्यम से सारे देश की आर्य समाजों को आन्दोलन में भाग लेने के लिए कहा जायेगा। कुछ घण्टों में यह खबर जैसे ही केन्द्रीय सरकार और उत्तर प्रदेश की राज्य सरकार तक पहुंची कि कल से आन्दोलन में आर्य समाज भी शामिल होगा और स्थिति को सम्भालना अत्यन्त कठिन हो जाएगा। परिणामस्वरूप शाम को ही जगद्गुरु शंकराचार्य को बिना शर्त रिहा कर दिया गया।

ऐसा है आज आर्य समाज का प्रभाव सरकार चाहे किसी भी पार्टी की हो। आर्यसमाज का मंच और स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जैसा महर्षि दयानन्द का सच्चा अनुयायी तो उनकी ललकार से सरकार से कम्पन पैदा होना स्वाभाविक है।

मेरी समस्त आर्य जनता से अपील है कि स्वामी जी के नेतृत्व का लाभ अधिक से अधिक उठाकर आर्य समाज के प्रसार और वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार में पूरी लगन और निष्ठा के साथ इस राष्ट्रीय और मानवीय यज्ञ में आहुति दें। अपनी क्षेत्रीय समस्याओं से लेकर राष्ट्रीय समस्याओं तक सरकार के समक्ष बड़े प्रभावशाली ढंग से समाज का प्रतिनिधित्व करें। स्वामी जी के नेतृत्व में सार्वदेशिक सभा हर प्रकार की कानूनी और राजनैतिक सहायता प्रत्येक आर्य समाज को देने के लिए कृत संकल्प है।

भारत-पाक में संभावित परमाणु युद्ध पर

रूस-अमेरिका की खुफिया नजर

लन्दन २७ मई। कश्मीर को लेकर भारत और पाकिस्तान के बीच परमाणु युद्ध की सम्भावना से अमरीका और सोवियत संघ दोनों चिन्तित हैं और इस चिन्ता की वजह से वे एक दूसरे को खुफिया जानकारियां दे रहे हैं। यह खबर आज यहां के साप्ताहिक अखबार 'संडे टाइम्स' ने दी।

इस साप्ताहिक ने वाशिंगटन से मिली रपट में बेनाम रखे गये अमरीकी अधिकारियों के हवाले से बताया कि दोनों महाशक्तियों को यह खुफिया खबर मिली है कि भारत और पाकिस्तान अपने-अपने एटमी हथियारों के जखीरे तैयार कर रहे हैं। अमरीकी खुफिया उपग्रहों ने ऐसे फोटो खींचे हैं जिनमें हथियारों से पूरी तरह लैस पाक फौजो के काफिले इस्लामाबाद के निकट काहुटा स्थित परमाणु हथियारों के परिसर से सड़क मार्ग से सैनिक हवाई अड्डों की ओर बढ़ते दिखते हैं। इन खुफिया कृत्रिम उपग्रहों ने कुछ ऐसे भी फोटो भेजे हैं जिन्हें देखते हुए कुछ विशेषज्ञ खास तरह के उन रैंक्स की तस्वीर बना रहे हैं जो परमाणु बमों को पाकिस्तानी एफ १६ विमानों में फिट करने के लिए विमानों तक ले जाने के मकसद से तैयार किये गये है।

परमाणु अप्रसार विशेषज्ञ लेनोनार्ड स्पेक्टर के अनुसार अगर भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध होने का खतरा है तो पाकिस्तानी सेना जरूर यह कोशिश करेगी कि वे एटमी हथियार इस्तेमाल के लिए तैयार रहे। अखबार की रिपोर्ट में कहा गया कि पिछले एक हफ्ते से अमेरिकी रक्षा विभाग पटागन, सी आईए और डिफेंस इन्टेलीजेंस एजेन्सी में विशेष टास्क फोर्स गठित किये गये हैं, जो भारत-पाक युद्ध की सम्भावनाओं और इसके सम्भावित नतीजों का आकलन कर रहे हैं।

जगमोहन की वापसी

कश्मीर की घाटी से जगमोहन की वापसी एक ओर यदि अलगाववादियो को यह भयावह सन्देश दे सकती है कि भारत का मनोबल टूट चुका है और आजादी की मुहिम दुगने जोश से चलाने का वक्त अब आ गया है तो कश्मीर के आम आदमी को वह यह सन्देह भी दे सकती है कि भारत सरकार के पास एक अन्तरात्मा है, और मौलवी फारुक की शवयात्रा मे पचास लोगो की मौत से विचलित होकर उस राज्यपाल को भी वापिस बुला सकती है जिसने २६ जनवरी को कश्मीर की घाटी मे होने वाली स्वाधीनता की घोषणा को रोक दिया था, और भारी जोखिम और बदनामी मोल लेते हुए जिसने भारत की उपस्थिति को कश्मीर मे सभव बनाया था।

यदि नये राज्यपाल ने कश्मीर को भारत के हाथो से फिसल जाने दिया, तो जगमोहन की वापसी निश्चय ही हिमालय जैसी भूल साबित होगी। सभावना यह है कि उनके शपथ लेते ही घाटी मे उपद्रवो और बम विस्फोटो का एक नया दौर शुरू होगा और इसके लक्ष्य दो होगे। एक तो यह कि नये राज्यपाल के हौसले को परखा जाए और प्रतिद्वन्द्वी के नाते उनका कद मापा जाए। यदि वे जगमोहन की तुलना मे बौने साबित हुए, तो अलगाववादी फिर हावी होना शुरू कर देंगे। और दूसरा लक्ष्य यह होगा कि नये राज्यपाल आबादी के किसी भी वर्ग के साथ सवाद के रिश्ते कायम न कर सके, और हमदर्दी के तार न जोड सके। पजाब मे हम दर्जनो बार देख चुके है कि केन्द्र सरकार जब जब नरम होने की कोशिश करती है, तब तब उग्रवादी अपनी आच बढाकर उसे फिर सख्त होने पर मजबूर कर देते है। कश्मीर मे भी निश्चित ही ऐसा होगा। यह उम्मीद करना मूर्खता होगी कि गिरीश सक्सेना और जार्ज फर्नांडिस के सयुक्त सत्प्रयासो से कश्मीर की घाटी मे शीघ्र ही ऐसे राजनैतिक नेता उभर आएगे जिनसे भारत सरकार बातचीत कर सकेगी, और अलगावपरस्तो को वह इन लोगो की मददसे एक कोने मे बैठा सकेगी। होगा यह कि नये राज्यपालको भी कर्फ्यू लगाना पडेगा, महल्ला मे तलाशिया लेनी पडेगी, और आमना सामना होने पर उपद्रवियो पर गोलिया चलानी पडेंगी। तब सिद्ध यह होगा कि जगमोहन किसी व्यक्ति का नाम नही है, बल्कि एक नीति का नाम है जिसे घाटी की मौजूदा स्थितियो मे कोई केन्द्रीय सरकार त्याग नही सकती। नीति नही बदली हैं, यह विश्वास देश को दिलाने के लिए ही शायद प्रधानमन्त्री ने खुफिया एजेंसियो के अफसरको जम्मू कश्मीर का नया राज्यपाल बनाया है।

लेकिन नीति नही बदली है, तो फिर जगमोहन को क्या बदला गया? ऐसा प्रतीत होता है कि राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय जनमत को देखते हुए एक बलि की आवश्यकता थी, और वह जगमोहन को देनी पडी। ससद मे कांग्रेसी और कम्यूनिस्ट और चन्द्रशेखर जगमोहन की वापसी माग रहे थे। इस्लामी देशो मे मौलवी फारुख की मौत के बाद हुए गोलीबारी का घनघोर प्रचार हुआ, और हवा उल्टी बहने लगी। जिस अमेरिका ने जनमत सग्रह का विरोध करना शुरू कर दिया है, उसने भी कहा कि निहत्थे जुलूस वालो पर घातक हथियारो का प्रयोग खेदजनक है। इस सबके बावजूद हम अविचल रह सकते थे, जैसे तिएन आन मन चौक के बाद शुरू हुए व्यापक दमन की विश्वव्यापी निन्दा से चीन के कम्यूनिस्ट शासक अविचलित हैं। लेकिन इस तरह दुनिया के आंधी तूफानो की पर्वाह किए बगैर खडा रहना हमारे रक्त मे नही है। इसलिए जगमोहन को लौटा कर विश्वनाथ प्रतापसिंह ने शायद एक न्यूनतम कीमत विश्व जनमत को पुन जीतने के लिए चुकाई है।

लेकिन हमे यह याद रखना होगा कि भारत की एकता और अखण्डता अन्तरराष्ट्रीय लोकप्रियता की हवाओ के भरोसे कायम नहीं रह सकती। भारत का एक रहना क्या हमें तभी तक प्रिय होगा, जब तक कि वह सारी दुनिया को प्रिय है? क्या रूस लिथुआनिया को इसलिए छोड दे कि सारा विश्व उसके इस कर्म का अभिनन्दन करेगा? क्या तिब्बत मे चीन कभी विश्व जनमत की कद्र करके कोई समाधान मन्जूर करेगा? और राजीव गांधी की पार्टी ने जगमोहन की वापसी चाही जरूर है, लेकिन कश्मीर के बारे में आज उसके पास कौन सा वैकल्पिक समाधान है?

दरअसल यह असभव नही है कि मौलवी फारुक की हत्या करने वालो ने एक दीर्घसूत्री षड्यन्त्र सोच समझ कर रचा हो, और जगमोहन को वापिस बुलाकर हम उस षड्यन्त्र को अक्षत सफल ही कर रहे हो। यदि यह एक षड्यन्त्र था तो मौलवी फारुक की हत्या के दिन सुरक्षा बलो को गोलीबारी के लिए भडकाने का काम भी षड्यन्त्र के अग के रूप मे ही किया गया होगा। जगमोहन की गलती यह थी कि इस षड्यन्त्र को उन्होने भी अक्षत सफल हो जाने दिया। लेकिन यदि डोरिया इसी तरह लम्बी दूरियो से हिलती रही, तो कश्मीर मे सामान्य राजनीति की वापसी कैसे होगी? विधानसभा चुनाव कैसे होवे? पुल कैसे बनेगे? कुल मिलाकर मामला उतना ही विकट है, जितना कि वह जनवरी में था।

जगमोहन की वापसी का एक कारण राजनीति के अन्दरूनी समीकरण हैं। विश्वनाथ प्रतापसिंह इतने महत्वपूर्ण मामले पर अपने आपको एक ऐसी स्थिति मे फँसाना गवारा नही कर सकते, जिससे भारतीय जनता पार्टी के अलावा कोई अखिल भारतीय दल उनका समर्थन न कर रहा हो फिर चाहे भाजपा की बात सही ही क्यो न हो। यदि वे ऐसा करेंगे, तो वे समीकरण बनने शुरू हो जायेंगे जिनका साम्प्रदायिक विरोधी सम्मेलन के दौरान सकेत मिल चुका है।

नये राज्यपाल गिरीशचन्द्र सक्सेना का राजनीति से कोई सरोकार नहीं रहा। इसलिए यह नतीजा कैसे निकाला जाए कि कश्मीर मे एक नई राजनैतिक पहल का रास्ता केन्द्र सरकार खोज रही है, और प्रशासकीय कार्रवाई का रास्ता वह छोड रही है? इससे भी निष्कर्ष यह पुष्ट होता है कि न्यूनतम क्षति के साथ प्रधानमन्त्री पुरानी नीति को जारी रखना चाहते है क्योकि और किसी नीति की गुजाइश नही है।

(नव भारत टाइम्स २६ मई, १९९०)

न्यायालयों में अंग्रेजी समाप्त करने के लिए याचिका दायर

नई दिल्ली २१ मई। उच्चतम न्यायालय और दिल्ली उच्च न्यायालय मे अंग्रेजी भाषा में ही याचिकाए तथा दस्तावेज दायर करने की अनिवार्यता के खिलाफ दिल्ली उच्च न्यायालय में एक याचिका दायर की गई है।

इस याचिका पर कल सुनवाई होने की सम्भावना है। याचिका मे दिल्ली उच्च न्यायालय नियम दो, अध्याय एक तथा नियम एक, अध्याय दो डी और उच्चतम न्यायालय अधिनियम की धारा दो आदेश १० को चुनौती दी गई है। याचिका लायर्स फोरम फार सिविल लिबर्टीज ने दायर की है।

याचिका में कहा गया है कि उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालय के इन प्रावधानों को असवैधानिक करार दिया जाए तथा नियमो मे सशोधन करने का निर्देश दिया जाए। याचिका के अनुसार इससे हिन्दी भाषा में भी उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालय मे याचिकाए दायर की जा सकेगी तथा उन पर हिन्दी मे ही बहस हो सकेगी।

याचिका के अनुसार उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालय में सिर्फ अंग्रेजी में ही याचिका दायर करने के प्रावधान और अंग्रेजी को ही आधिकारिक भाषा मानने से राष्ट्रीय भाषा हिन्दी का अपमान होता है। याचिका में कहा गया है कि अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्तकी जानी चाहिए क्योकि यह किसी भी भारतीय की मातृभाषा नही है।

याचिका में कहा गया है कि अंग्रेजी की अनिवार्यता के प्रावधान से संविधान के अनुच्छेद १० (आई) एव (जी) तथा १२ का हनन होता है। याचिका के अनुसार उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालय में अंग्रेजी की अनिवार्यता से सविधान का उल्लघन होता है। (हिन्दुस्तान २४ मई १९९०)

फिजी में राबुका सरकार द्वारा भारतीय दूतावास बन्द करने का आदेश

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान द्वारा तीव्र भर्त्सना

दिल्ली २४ मई । सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने विदेशमन्त्री श्री इन्द्रकुमार गुजराल को २४ मई १९९० को लिखे एक पत्र में राबुका सरकार द्वारा फीजी में भारतीय दूतावास को २४ घण्टे के अन्दर बन्द करने तथा उसके कर्मचारियों को १४ दिन के अन्दर भारत से चले जाने के आदेश पर अपनी तीव्र प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा है कि भारत सरकार इस सम्बन्ध में कड़े कदम उठावे और फिजी में रहने वाले भारतीय मूल के निवासियों के सम्मान तथा जान-माल की रक्षा का प्रबन्ध करें। भारतीय दूतावास पर फिजी के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करने का जो आरोप लगाया गया है, वह एक दम बेबुनियाद है और वहां की सरकार द्वारा जातिवादी शासन स्थापित करने की दिशा में एक नया कदम है। स्वामी जी ने कहा फिजी के भारतीयों के उत्पीड़न का यह एक नितांत वैमनस्यपूर्ण तथा अमानवीय तरीका है जिससे उनकी आवाज को दबाया जा सके।

स्वामी जी ने श्री गुजराल से अनुरोध किया कि वे इस दिशा में तुरन्त प्रभावी कार्यवाही करे।

'फीजी की अवैध सरकार का भारत विरोध करता रहेगा'

नई दिल्ली, २४ मई। विदेशी मन्त्री इन्द्रकुमार गुजराल ने आज लोकसभा में एलान किया कि भारत, फीजी में लोकतान्त्रिक आन्दोलन को समर्थन देता रहेगा। साथ ही उन्होंने विश्व समुदाय से अपील की कि वह फीजी की अवैध सरकार के जातीय भेद-भाव के खिलाफ आवाज बुलन्द करें।

फीजी में भारतीय दूतावास को बन्द करने के मसले पर बोलते हुए विदेश मन्त्री ने कहा कि लोकतांत्रिक आंदोलन ने अवैध सरकार के होश ठिकाने लगा दिये हैं। 'और इस आन्दोलन के साथ हमारा पूरा समर्थन है।'

श्री गुजराल ने बताया कि भारत ने समान विचार -वाले कई देशों से सम्पर्क साधा है। उनके सामने फीजी में बहुसंख्यक भारतीय मूल के लोगों के हितों को नजर अन्दाज किए जाने का मामला उठाया है। विदेशमन्त्री ने इस मुद्दे पर अपने मित्र देशों के नाम नही बताए। उन्होंने कहा कि इस समय यह सही नहीं होगा।

उन्होंने इस आरोप को बिलकुल बकवास बताया कि भारतीय दूतावास फीजी की घरेलू राजनीति में दखल दे रहा था। उन्होंने बताया कि जब दिवगत डाक्टर बावद्रा की लोकतांत्रिक सरकार को सैनिक बगावत के जरिए पलट कर अवैध सरकार बनी तो भारत ने इसके खिलाफ अन्तर्राष्ट्रीय मुहिम छेड़ी और आर्थिक पाबन्दी लगा दी। श्री गुजराल ने जोर देकर कहा, 'जातीय भेद-भाव दक्षिण अफ्रीका तक में उतार पर है। फिर फीजी में इसे कतई बर्दाश्त नहीं किया जा सकता।' उन्होंने कहा कि अवैध सरकार को हटाने के लिए चल रहे लोकतान्त्रिक आन्दोलन को हमारा पूरा समर्थन है। क्योंकि यही हमारा मिशन भी है।

विदेश मन्त्री ने कहा कि फीजी सरकार को उम्मीद है कि वह 'फूट करो और राज करो' के सिद्धान्त के बूते राज्य कायम रख लेगी। लेकिन यह अब कतई मुमकिन नहीं है। उन्होंने कहा कि भारत फीजी के लोकतान्त्रिक आन्दोलन को अन्तरराष्ट्रीय समर्थन दिलाने के लिए अपनी कोशिश जारी रखेगा।

सिख स्टूडेंट्स फैडरेशन के दोनों गुटों में खूनी संघर्ष का खतरा

नई दिल्ली, १५ मई उग्रवादी संगठन सिख स्टूडेंट्स फैडरेशन के दोनों गुटों के बीच देश की राजधानी दिल्ली में अपना प्रभाव जमाने के प्रश्न पर खूनी संघर्ष का खतरा पैदा हो गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि मेहता और मनजीत गुट के संघर्ष का केन्द्र संसद भवन के समीप स्थित गुरुद्वारा रकाबगंज बनेगा।

दो महीने पूर्व पंजाब में मुंहकी खाने के बाद सिख स्टूडेंट्स फैडरेशन के मेहता-चावला गुट ने दिल्ली में अपना प्रभाव बढ़ाने का फैसला किया था। इस गुट के एक प्रमुख नेता अमरजीतसिंह चावला ने स्थानीय गुरुद्वारा रकाबगंज में एक गुप्त बैठक आयोजित की थी। इस बैठक में खालिस्तान की स्थापना के लिए सशस्त्र संघर्ष तेज करने और पंजाब से बाहर के बीस हजार सिख युवकों को आतंकवादी गतिविधियों के लिए भरती करने का फैसला किया था। इस गुट ने दिल्ली बम काण्ड के एक अभियुक्त सुखवीरसिंह खालसा के नेतृत्व में एक सात सदस्यीय समिति का भी गठन किया था। इस गुट ने गुरुद्वारा बंगला साहब में एक कमरे पर कब्जा करके उसमें अपना कार्यालय स्थापित कर दिया था।

दिल्ली के युवा वर्ग में कदम जमाने के लिए मनजीत गुट ने भी प्रयास शुरू कर दिए हैं। सिख स्टूडेंट्स फैडरेशन के इस गुट ने अपने एक वरिष्ठ नेता सुरजीत सिंह सन्धू को दिल्ली भेजा है। वह भी गुरुद्वारा रकाबगंज में ही डेरा डाले हुये है। पता चला है कि अपने प्रतिद्वन्दी गुट को नीचा दिखाने के उद्देश्य से मनजीत गुट २४ मई से गुरुद्वारा बंगला साहब में फैडरेशन की ओर से एक शिविर का आयोजन कर रहा है जिसमें तीन सौ युवकों के भाग लेने की आशा है। यह शिविर चार दिन तक चलेगा। यह भी पता चला है कि मनजीत गुट ने बम काण्ड के एक अन्य अभियुक्त 'बिट्टू' नामक उग्रवादी के सहयोग से राजधानी के सिख युवकों में कदम जमाने का फैसला किया है। यह गुट गुरुद्वारा बंगला साहब पर कब्जा करने की तैयारी में है। उल्लेखनीय है कि बंगला साहब में चढ़ावा से तीन करोड़ रुपये की आय होती है। सिख स्टूडेंट्स फैडरेशन का मनजीत गुट इस आमदनी का इस्तेमाल पंजाब से बाहर उग्रवादी गतिविधियों के प्रसार के लिए करना चाहता है। यह भी पता चला है कि मनजीत गुट अपने प्रतिद्वन्दी को दिल्ली से खदेड़ने की तैयारी में है। इस उद्देश्य से वह राजधानी में पंजाब से बाहुबलियों को दिल्ली ला रहा है।

ज्ञातव्य है कि इससे पूर्व भी सशस्त्र सिखों का एक गुट बीबी निरलेप कौर के नेतृत्व में दो बार दिल्ली के ऐतिहासिक गुरुद्वारा सीसगंज पर कब्जा कर चुका है। तब प्रशासन और पुलिस को इस गुरुद्वारा को मुक्त करवाने के लिए वहां सशस्त्र पुलिस को भेजना पड़ा था।

—: हिन्दू नहीं आर्य :—

स्वामी वेदमुनि परिव्राजक अध्यक्ष—वैदिक संस्थान, नजीबाबाद (उ० प्र०)

पाठक गण ! आर्य शब्द की महत्ता सिद्ध हो जाने के पश्चात् अब केवल आज इतना सिद्ध करना शेष रह जाता है कि हमारा पूर्व नाम आर्य है, सो उसके लिए देखिये।

आ समुद्रात्तु वै पूर्वादासमुद्रात्तु पश्चिमात्।
तयोरेवान्तरं गिर्योरार्य्यावर्तं विदुर्बुधा ॥१॥
सरस्वतिदृषद्वत्योर्देवनद्योर्यदन्तरम्।
तं देवनिर्मितं देशमार्यावर्तं प्रचक्षते ॥२॥

(मनु० २।२२।७)

अर्थात् उत्तर में हिमालय, दक्षिण मे विन्ध्याचल, पूर्व तथा पश्चिम मे समुद्र और पश्चिम में सरस्वती (अटक) नदी, पूर्व मे दृषद्वती जो नेपाल के पूर्व भाग पर्वत से निकल कर आसाम व बगाल के पूर्व और ब्रह्मा के पश्चिम होकर पूर्व के समुद्र (बगाल की खाडी) में मिली है, जिसे ब्रह्मपुत्र कहते है। हिमालय की मध्य रेखा से दक्षिण और पहाडो के भीतर तथा रामेश्वर पर्यन्त विन्ध्याचल के भीतर जितना देश है, उस सम्पूर्ण को आर्य्यावर्त इस लिये कहते है कि यह देव अर्थात् विद्वानो ने बसाया और आर्य जनो के निवास करने से आर्य्यावर्त कहलाया।

प्रिय पाठक वृन्द ! इन श्लोको में आर्य्यावर्त की जो सीमा वर्णन की गई है, उससे सिद्ध होता है कि यह हमारा देश आर्य्यावर्त है तथा आर्यों के रहने से इसका नाम आर्य्यावर्त हुआ अर्थात् हम इस देश मे निवास करने वाले लोग आर्य हैं। तब क्यो न हम अपने आपको आर्य कहे और क्यो विदेशियो की देन 'हिन्दु' शब्द को अपने ऊपर लादे रहे ? हमारा इतिहास इस बात का साक्षी है कि ब्रह्मा का पुत्र विराट, विराट का मनु, मनु के मरीच्यादि दश, इसके स्वायम्भवादि राजा और उनकी सन्तान इक्ष्वाकु आदि राजा हुए है। (सत्यार्थ प्र० समु० ८)

महाराजा रामचन्द्र इक्ष्वाकु वश मे हुए, जिनका प्रमाण हमारे लिए विशेष कर माननीय है। महाराजा राम आर्य थे अत उनकी सन्तान होने से हम भी आर्य हैं। इसमे प्रमाण —

सर्वदाभिगता सद्भि समुद्र इव सिन्धुभि।
आर्य सर्वसमश्चैव सर्व प्रिय दर्शन ॥

(वाल्मीकि रामा० १।१।१६)

श्री रामचन्द्र जी सदा सत्पुरुषो के सहयोग मे इस प्रकार वर्तमान रहते थे, जैसे समुद्र नदियो से मिला रहता है वह आर्य थे, समदृष्टि रखते थे तथा सबके प्रिय थे। कोई मति का हीन तथा बुद्धि का शत्रु ही होगा, जो इतने प्रमाणो के होते हुए भी यह कहे कि हम आर्य नही हिन्दु हैं।

सन् १८७५ ई० के जुलाई मास के प्रथम पक्ष में पूना नगर मे धर्माधर्म विषय पर भाषण करते हुए युग प्रवर्तक जगद्गुरु भगवान दयानन्द जब प्राण प्रतिष्ठा के मन्त्रो के सम्बन्ध मे अपने विचार व्यक्त कर रहे थे तो प्रसग वश भूल से उनके मुख से यह शब्द निकल गये कि 'इसका विचार हम हिन्दुओ को' तब उन्होने इस पर अत्यन्त पश्चाताप किया, क्योकि वह जानते थे कि हमारा नाम हिन्दु नही अपितु आर्य है। 'हिन्दु' यह शब्द तो हमारी भाषा का भी नहीं अपितु यावनी भाषा का है तथा हमारे ऊपर बलात् लादा गया है, एवं महर्षि दयानन्द ने पश्चाताप करते हुए कहा— 'नहीं नहीं मैं भूला हम आर्यो को ····।' आगे उन्होने वेदादि सद्ग्रन्थो के प्रमाण प्रस्तुत करके आर्य शब्द की पुष्टि की। उस समय आजकल की जैसी भी जागृति नही थी, जिसके कारण सभी वैदिक धर्मी अपने आपको हिन्दु शब्द से ही सम्बोधित होने देते थे, फलत स्वामी जी का भी वैसा ही अभ्यास बना हुआ था अत उनके मुख से हिन्दु शब्द ही निकला। वेदादि ग्रन्थो के अध्ययन उस अशुद्ध धारणा के अभ्यास को तोडने मे तथ्य हितैषी का कार्य किया और ऋषि ने अपनी भूलको स्वीकार करते हुए यह बतलाया कि हमारा नाम हिन्दु कदापि नहीं अपितु आर्य है।

स्वामी जी ने आगे कहा 'हिन्दु शब्द को उच्चारण मैंने भूल से किया, क्योकि हिन्दु यह नाम हमको मुसलमानो ने दिया है, जिसका अर्थ काला, काफिर, चोर इत्यादि है। तो मैंने मूर्खता से उस शब्द को स्वीकार किया था, हमारा असली नाम तो आर्य अर्थात् श्रेष्ठ है।'

(महर्षि दयानन्द के व्याख्यान धर्माधर्म विषय उपदेश मजरी)

स्वामी जी के भाषण से जो उपयुक्त उद्धरण हमने प्रस्तुत किया है, उससे स्पष्ट है कि स्वामी दयानन्द जैसा वेदज्ञ विद्वान् तथा योगी पुरुष जिसे भारतीय ही नही अपितु अनेक विदेशी निष्पक्ष विचारक भी आधुनिक काल की सर्वश्रेष्ठ विभूति तथा युग-निर्माता के नाम से पुकारते है, वह स्व तथा स्वजाति के प्रति हिन्दु नाम प्रयोग कर जाने मात्र से अपनी भूल को अपनी मूर्खता कह कर स्वीकार करता है, यद्यपि वह प्रयोग जान बूझ कर नही अपितु अभ्यास तथा वातावरण से गृहीत सस्कारो के कारण हुआ था। दूसरी ओर वे भोले बन्धु है, जो इस हिन्दु नाम की मैली तथा गन्दी चादर को—जिसे वह धारण किये हुये हैं—केवल इसलिये छोडने को तैयार नहीं कि दीर्घकाल से धारण किये रहने से अभ्यस्त हो गये हैं। साथ ही विशेषता यह है कि उसे मैली भी स्वीकार करने को तैयार नही अपितु उसे स्वच्छ तथा सुन्दर सिद्ध करने के लिए अनेक निरर्थक तथा काल्पनिक प्रमाण देने को उद्यत है। परन्तु ऋषि दयानन्द ऐसा न करके स्पष्ट कहते है 'हमारा असली नाम तो आर्य अर्थात् श्रेष्ठ है' साथ ही वेद का प्रमाण देते है।

विजानी ह्यार्यान्ये च दस्यवो बर्हिष्मते रन्धया शासदव्रतान् शाको भव यजमानस्य चोदिता विश्वेता ते सधमादेषु चाकन। (ऋ० १।३।८)

तथा आगे—

"आर्यो ब्राह्मण कुमारियो

(महर्षि दयानन्द के व्याख्यान धर्माधम वि० उप० मजरी)

स्वामी जी के एक और भाषण का उद्धरण हम यहा प्रस्तुत करते है, जो उन्होने इतिहास विषय पर बोलते हुये कहा था। अभी जिस पाणिनीय सूत्र को हम ऊपर दे चुके है, उसी को उपस्थित करके ऋषि ने कहा— ऐसी व्यवस्था होत हुए हमारे देश का नाम आर्य-स्थान अथवा आर्य-खण्ड होना चाहिए, तो उसे छोडकर न जाने हिन्दुस्तान यह नाम कहा से निकला ? भाई श्रोतागण ! हिन्दु शब्द का अर्थ तो काला, काफिर, चोर इत्यादि है, और हिन्दुस्तान कहने से काले, काफिर चोर लोगो की जगह अथवा देश ऐसा अर्थ होता है। भाई इस प्रकार का बुरा नाम क्यो ग्रहण करते हो ? और आर्य अर्थात् श्रेष्ठ अथवा अभिजात इत्यादि और आवर्त कहने से ऐसो का देश अर्थात् आर्यावर्त का अर्थ 'श्रेष्ठो का देश' ऐसा होता है। तो ऐसे श्रेष्ठ नाम को तुम क्यो नही स्वीकार करते, तथा तुम अपना मूल का नाम भी भूल गए ?' इतना भाषण करने के पश्चात् महर्षि ने शोकातुर होकर आगे कहना प्रारम्भ किया हा यह हम लोगा की स्थिति देखकर किसके हृदय को क्लेश न होगा ? सब ही को होगा। अस्तु सज्जन जन ! अब हिन्दु नाम का त्याग करो और आर्य, आर्यावर्त इन नामो का अभिमान धरो। गुण-भ्रष्ट तो हमें न होना चाहिए। ऐसी आप सभी से मेरी प्रार्थना है।'

स्वामीजी महाराज के भाषण के उपर्युक्त अशको पढकर तनिक निष्पक्ष बुद्धि से विचार कीजिये तथा फिर हृदय पर हाथ रख कर कह तो दीजिये कि सत्यता किधर है ? हा यदि आपने यही निश्चय किया हुआ है कि 'लाख नाकिस हो मगर घर ही का माल अच्छा है' तो दूसरी बात है। लपेटे रहिये इस हिन्दुत्व के दुशाले को, परन्तु यह ध्यान रहे कि माल घर का नही है, यह तो विदेशी कम्पनी का उत्पादन है, जिसके क्रय करने के कारण अपना द्रव्य तो लुटा ही—किन्तु अब भी यदि इसका प्रयोग न छोडा तो गौरवमय अतीत से जोडने वाली राष्ट्रीय भावना भी विलुप्त हो जायेगी और कुछ काल के पश्चात् हमारे ऊपर वही कहावत लागू होगी 'दोनो दीन से गये पाण्डे, हलुवा भये न माण्डे' अर्थात् कृत्रिमता तो एक दिन नष्ट होगी ही वास्तविकता से क्यो हाथ धोते हो ? चेतो तथा अपने नाम के

(शेष पृष्ठ १० पर)

महर्षि दयानन्द का ऐतिहासिक काशी शास्त्रार्थ (२)

डा० आनन्द प्रकाश, मन्त्री महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्मृति सभा

काशी शास्त्रार्थ स्थल, अपने वर्तमान रूप में; वाराणसी नगर महापालिका द्वारा निर्मित एक पार्क के रूप में विद्यमान है। इस पार्क का नामकरण, अमेठी के राजा साहब राजर्षि रणञ्जयसिंह के पिता राज्य भगवान बक्शसिंह के नाम पर हुआ। जिस समय यह शास्त्रार्थ हुआ था, यह स्थान अमेठी राज की सम्पत्ति था और राजा रणञ्जयसिंह के पितामह तथा राजनेता डा० संजयसिंह के प्रपितामह तथा राजा माधोसिंह उस समय अमेठी के राजा थे। इस राज परिवार की ऋषि दयानन्द के प्रति अनन्य भक्ति और समर्पण सर्वविदित है। इस प्रसिद्ध स्थल पर प्रतिवर्ष काशी स्मृति समारोह क्रम आज से २५ वर्ष पूर्व अर्थात् सन् १९६४-६५ में आरम्भ हुआ। प्रारम्भिक वर्षों में अनेक बार महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज इस कार्यक्रम में पधारे। इस स्मृति चिह्न के रूप में एक शिला लेख भी राजा साहब अमेठी ने उन्ही दिनों लगवाया आगे चलकर इस स्थल पर एक सुन्दर भव्य यज्ञशाला का निर्माण हुआ। एक वैदिक पुस्तकाल के निर्माण हेतु शिलान्यास भी, यज्ञशाला के समीप हो चुका है। इस स्थल के आर्यसमाज एवं स्त्री आर्य समाज भी पिछले १५-१६ वर्षों से स्थापित हैं, जिनके साप्ताहिक सत्संग प्रति शनिवार एवं रविवार को सायंकाल होते हैं। प्रातःकाल नित्य वेद पाठ एवं यज्ञ होता है।

इतनी प्रगति होते हुये भी, यह आवश्यक समझा गया कि इस स्थल के ऐतिहासिक महत्व एवं इस ऐतिहासिक घटना के गौरव के अनुरूप, उच्च स्तरीय कार्यक्रमों को सम्पन्न करने के लिये एक राष्ट्रीय स्तर की संस्था का गठन किया जाये। देश-विदेश से पधारने वाले ऋषि भक्त, जो इस शास्त्रार्थ के महत्व से और शास्त्रार्थ के उपरान्त महर्षि के ऊपर किये आक्रमण से अवगत हैं, जब इस स्थल पर आते हैं, तो भाव-विह्वल होकर अश्रुधारा बहाने लगते हैं। उनमें से अनेक यह सुझाव देते रहे कि काशी नगरी में, इस ऐतिहासिक शास्त्रार्थ की प्रेरणा को चिरस्थायी रखने की दिशा में कार्य होना चाहिये। हमने अनेक वर्षों तक विचार-विमर्श एवं व्यापक सम्पर्क करने के उपरान्त "महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्मृति सभा" की स्थापना जनवरी १९८७ में की और तीन वर्षों के अथक प्रयास से, कई बाधाओं को पार करने के उपरान्त, प्रभु कृपा से २१ मार्च ९० को उसका रजिस्ट्रेशन हो गया। इस संस्था के संस्थापक प्रधान "शास्त्रार्थ महारथी, अमर स्वामी जी महाराज थे" जिनकी स्मृति और प्रेरणा सदा इस कार्य से जुड़ी रहेगी।

आनन्दबाग के पृष्ठ भाग में पत्थरों से बनी बारादरी, जहां पर बैठकर महर्षि दयानन्द से शास्त्रार्थ किया गया था, का अधिग्रहण कर उस स्थल पर दयानन्द कीर्ति भवन एवं वेद मन्दिर का निर्माण कराना, इस संस्था के एक प्रमुख कार्य होगा। इस अतिरिक्त इस शास्त्रार्थ स्थल को और भी दर्शनीय बनाने तथा अतिथि-शाला, पुस्तकालय आदि के निर्माण का कार्य किया जायेगा। वैचारिक कार्यों को विशेष प्रमुखता दी जायेगी। उच्च स्तरीय विचार गोष्ठियों का आयोजन, प्रचारकों का प्रशिक्षण शास्त्रार्थ परम्परा को शक्ति प्रदान करने वाले साहित्य का प्रकाशन, महर्षि के मन्तव्यों का प्रचार और शोध का सम्पादन किया जायेगा। काशी विद्वानों की नगरी है, यहां पर आर्य समाज के सैद्धान्तिक प्रचार की महती आवश्यकता है। इस आवश्यकता की पूर्ति इस संस्था द्वारा की जावेगी। संस्था के पंजीकृत स्मृति पत्र में उद्देश्यों एवं कार्यक्रमों की स्पष्ट व्याख्या की गयी है।

सौभाग्य से, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री माननीय डा० सच्चिदानन्द शास्त्री काशी पधारे। उन्होंने काशी शास्त्रार्थ स्थल का अवलोकन करने के साथ ही इस संस्था का कार्य प्रगति की जानकारी भी प्राप्त की। संस्था की भावी कार्य योजना के लिये उन्होने अपने सुझाव भी दिये। हमारी ऋषि भक्तों से अपील है कि वे इस स्थल के कार्य के सम्बन्ध में अपने सुझाव एवं सहयोग देने की कृपा कर। पत्र-व्यवहार के लिये दो पते निम्न प्रकार हैं:—

१—श्री यज्ञदत्त गौतम, प्रधान
महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्मृति सभा,
रजिस्टर्ड कार्यालय—पी० १/२ लेन नं० ११
रवीन्द्रपुरी, वाराणसी २२१००१

२—डा० आनन्द प्रकाश, मन्त्री
महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्मृति सभा
एल/२१ हैदराबाद कालोनी,
काशी हिन्दू विश्व विद्यालय,
वाराणसी-२२१००५

आर्यसमाज का खण्डनात्मक साहित्य

लेखक : डा० भवानीलाल भारतीय

भारत के धार्मिक एव दार्शनिक चिन्तन की परम्परा में सैद्धान्तिक खण्डन, मण्डन आलोचना-प्रत्यालोचना एव उत्तर प्रत्युत्तर की शैली को सदा से ही प्रकाश मिलता रहा है। यद्यपि वैदिक साहित्य मे ज्ञान और कर्मको सदा से ही तुल्य महत्व मिला है, किन्तु कालान्तर मे जब कर्मकाण्ड का बाहुल्य हो गया और ज्ञान काण्ड की उपेक्षा होने लगी तो उपनिषद्कार ने यज्ञो पर आधारित क्रिया अनुष्ठानो को उस कमजोर नौका की सज्ञा प्रदान की जो मनुष्य को ससार रूपी दुस्तर सागर से पार कराने मे असमर्थ है प्लवा ह्येते अदृढा यज्ञरूपा आदि। कालान्तर में बौद्ध मतके रूप में जो महान् वैचारिक क्रान्ति हुई उसने तो वेद के प्रामाण्य, सृष्टि के कर्त्ता रूप मे स्वीकार किये गये ईश्वर, तीर्थों में स्नान करने से मुक्ति, जाति की श्रेष्ठता का आग्रह तथा देह पीडन से पापो के क्षय होने को जडता का चिन्ह ही बतलाया। इधर ब्राह्मण दार्शनिको ने भी बौद्ध, जैन आदि वैदिकेतर मतोकी आलोचना करने मे कोई कसर नहीं उठा रक्खी। 'देवानाप्रिय' जैसे सार्थक अभिधा वाले शब्द का मूर्ख के अर्थ मे प्रयोग, बौद्धो के प्रति ब्राह्मण विचारको की तिरस्कार पूर्ण भावना का ही द्योतक है।

यह बात नहीं कि खण्डन मण्डन और आलोचना प्रत्यालोचना की यह परम्परा वैदिक एव बौद्ध जैसे परस्पर विरोधी शिविरो मे बटे लोगो में ही प्रचलित रही। समान रूप से वेदो मे आस्था व्यक्त करने वाले साख्यादि वैदिक दर्शनो के परवर्ती भाष्यकारो, टीकाकारो तथा व्याख्याकारो ने भी एक दूसरे के सिद्धान्तो की आलोचना कही कही अत्यन्त मुखर शैली मे की है। यहा तक कि उनकी यह समीक्षा यत्रतत्र कटुता, विद्वेष तथा असहिष्णुता की सीमा तक पहुच गई है। शकराचार्य ने अपने ब्रह्मसूत्र भाष्य में कपिल प्रोक्त साख्य को श्रुतिविरुद्ध कहने मे कोई सकोच नही किया, जबकि साख्य ने वेद प्रामाण्य का कही भी तिरस्कार नही किया है। नव्य न्याय के अनुयायियो मे तो आपस की खींचतान यहा तक बढ गई कि पक्षधर मिश्र ने अपने ही शिष्य रघुनाथ शिरोमणि का उपहास करते हुए लिखा—

> वक्षोपजानकृत काण। सशये जाग्रति स्फुटे।
> सामान्य लक्षणा कस्मादकस्मादपलभ्यते॥

यह तो बात हुई दर्शन के क्षेत्र की। धार्मिक सम्प्रदायो मे पारस्परिक खण्डन मण्डन तो सीमातीत अवस्था तक पहुच चुका था। वैष्णवो के मान्य भागवत पुराण में शैव मत के अनुयायियो को स्पष्ट ही, 'पाषण्डी' सज्ञा से अभिहित किया गया है—

> भवव्रतधरा ये च ये च तान् समनुव्रता।
> पाषण्डिन्ते भवन्तु सच्छास्त्रपरिपन्थिन॥
> ४।२।२८

शैवो ने भी वैष्णवो को निन्दित बताने में कोई कसर बाकी नही रक्खी। चक्राकित वैष्णवो को निम्न श्लोक में श्मशान काष्ठ तुल्य विगर्हित कहा गया है—

> यथा श्मशान काष्ठ सर्वकर्मसुगर्हितम्।
> तथा चक्राकितो विप्र· सर्वकर्मसुगर्हित॥

धार्मिक खण्डन मण्डन के ये तौर तरीके शालीन अथवा अशालीन, भद्र अथवा अभद्र, मृदु अथवा कटु दोनो प्रकार की शैलियो में अबाध रूप में प्रचलित रहे।

यदि हम मध्यकालीन सन्तो के खण्डन मण्डन विषयक दृष्टिकोण पर विचार करें तो विदित होता है कि इस परम्परा मे एक ओर कबीर जैसे अलमस्त, फक्कड तथा हर दर्जे के स्पष्ट वक्ता लोग थे जिन्होने हिन्दू और मुसलमानो को समान रूप से उनकी साम्प्रदायिक सकीर्णताओ के लिये फटकारा तथा अपनी खण्डनात्मक उक्तियो को अत्यन्त कठोर भाषा मे व्यक्त किया, किन्तु दूसरी ओर नानक, दादू तथा रैदास आदि अन्य मार्ग के सन्त भी थे, जिनकी खण्डन शैली मे पर्याप्त कोमलता तथा मार्दव पाया जाता है। उन्नीसवीं शताब्दी के पुनर्जागरण आन्दोलनो के पुरस्कर्ताओ ने भी धार्मिक और दार्शनिक चर्चाओं में खण्डन मण्डन शैली का प्रचुर प्रयोग किया है। राम मोहनराय को एक मेवा द्वितीयम् ब्रह्म की सत्ता को सिद्ध करने के लिए बहुदेववादी पौराणिक हिन्दुओ से लोहा लेना पडा था। साथ ही वे ईसाईयत के उन प्रचारको से भी टक्कर ले रहे थे जो ईसाइयत के विश्वास लाने के लिये पिता, पुत्र और पवित्रात्मा के त्रैत में आस्था व्यक्त करना आवश्यक समझते थे तथा ईसामसीह द्वारा प्रदर्शित चमत्कारो और अलौकिक कृत्यो पर विश्वास करना भी जरूरी मानते थे। नवजागरण के पुरोधाओ द्वारा खण्डन मण्डन के मार्ग को अपनाना इसलिये भी आवश्यक हो गया था, क्योकि हिन्दू धर्म की आस्थाओ और मान्यताओ पर प्रहार करने वाले ईसाई और मुसलमान प्रचारक अत्यन्त तीखी एव विद्वेषपूर्ण भाषा का प्रयोग कर रहे थे। अत 'शठे प्रति शाठ्य, कुर्यात्' की नीति का प्रयोग कर उनके इन आक्रमणो का जवाब देना अपरिहार्य हो गया था।'

इसी सन्दर्भ में हमें दयानन्द सरस्वती की खण्डन की कार्यशैली की समीक्षा करनी चाहिए। स्वामी जी ने स्वलिखित सत्यार्थप्रकाश के उत्तरार्द्ध मे सम्मिलित खण्डन प्रधान चारो अध्यायोके प्रारम्भ मे दी गई अनुभूमिकाओ मे अपने एतद्विषयक दृष्टिकोण को अत्यन्त स्पष्टता पूर्वक प्रस्तुत किया है। मत मतान्तरो की समालोचना मे स्वामी दयानन्द पूर्वाग्रह मुक्त दृष्टिकोण को लेकर प्रवृत्त हुए थे। वे यह अनुभव करते थे कि वैदिक धर्म के दिव्य आलोक से जो मत और सम्प्रदाय जितने दूर चले गये है, मानव जाति को पथ-भ्रष्ट करने मे वे उतने ही अधिक सक्षम हुए है। इसी प्रकार ईसाइयत और इस्लाम जहा पैगम्बरवाद, स्वर्ग, नरक की मिथ्या कल्पनाओ तथा अनेक प्रकार के विद्या विरुद्ध, युक्ति तथा विज्ञान विरुद्ध मतवाद एव कर्मकाण्डके पुन्ज रह गये हैं, वहा भारत मे उत्पन्न बौद्ध एव जैन आदि लोकायत मत भी आस्तिक भावना शून्य, वेद विरोधी विचारो का प्रचार करने में कारण बने है। यहा यह स्पष्टकर देना भी आवश्यक है कि स्वामी दयानन्द ने एक ओर जैन, बौद्ध तथा चार्वाक आदि वैदिकेतर मतो तथा ईसाइयत एव इस्लाम जैसे सेमेटिक विश्वासा का खण्डन किया, तो साथ ही आर्यावर्त देशोत्पन्न शैव, शाक्त वैष्णव आदि उन पौराणिक मतो का खण्डन करने मे भी उन्हे सकोच नही हुआ जो येन केन प्रकारेण अपनी मान्यताओ को वेदो से जोडने के लिये प्रयत्नशील रहते थे। इस सम्बन्ध मे उन्होने अपनी धारणा को इस प्रकार प्रकट किया है—'यद्यपि मैं आर्य्यावर्त देश में उत्पन्न हुआ और बसता हू तथापि जैसे इस देश के मत मतान्तरो की झूठी बाता का पक्षपात न कर यथातथ्य प्रकाशित करता हू वैसे ही दूसरे देशस्थ वा मतवालो के साथ भी बर्तता हू। क्योकि मै भी जो किसी एक का पक्षपाती होता हू तो जैसे आजकल के स्वमत की स्तुति, मण्डन और प्रचार करते हैं, और दूसरे मत की निन्दा, हानि और बन्द करने मे तत्पर होते हैं, वैसे ही मैं भी होता, किन्तु ऐसी बातें मनुष्यपन के बाहर है।'

स्वामी दयानन्द ने जिन मत सम्प्रदायो के दोषपूर्ण सिद्धान्ता का खण्डन किया उन्हे वे अपनी अनुप्रास प्रियता के कारण पुरानी, जैनी, किरानी और कुरानी कहते है। 'पुरानी' से उनका अभिप्राय भारत देशोत्पन्न उन सभी मतो से है जो वैदिक धर्म के विकृत रूप मे महाभारत युद्ध के समाप्त होने के पश्चात् प्रचार प्राप्त करते रहे हैं। इनमे वाममार्ग, शाक्यमत, शैव मत, वैष्णवो के विविध सम्प्रदाय आदि सम्मिलित किये गये हैं। स्वामी जी ने 'जैनी' वर्ग के अन्तर्गत चार्वाक, बौद्ध तथा जैन मतो को परिगणित किया है जो वेद प्रामाण्य को स्पष्टतया अस्वीकार करते हैं तथा जिन्होने ब्राह्मण परम्पराओ का तिरस्कार कर श्रवण धर्मों का प्रदर्शन किया। इन सम्प्रदायो की न तो वैदिक दर्शन मे ही आस्था है और न ये यज्ञादि कर्मकाण्डो की उपयोगिता ही स्वीकार करते है। किरानी और कुरानी शब्द क्रमश ईसाइयत एव इस्लाम के द्योतक हैं। सत्यार्थप्रकाश में इन सभी मतो की तथ्यात्मक समीक्षा की गई है। आगे हम स्वामी दयानन्द के परवर्ती आर्य विद्वानो द्वारा रचित उस खण्डनात्मक साहित्य का सर्वेक्षण प्रस्तुत करेंगे जो मुख्यतः उपर्युक्त चारो वर्गों में समाहित होने वाले मतो को लक्ष्य कर लिखा गया है।

युग पुरुष वीर सावरकर (२)

श्री तुलसीराम, ग्रेजुएट आगरा

ब्रिटिश अधिकारियो को जब इन समारोहो का विवरण मिला और समाचार पत्रो की टिप्पणिया पढने को मिली तो वे चौकन्ने हो गये और पुलिस विभाग को निर्देश दिया गया कि सावरकर की गतिविधियों पर निगरानी रखी जाये।

१ जुलाई १९०९ को लन्दन के जहांगीर हाल मे कुछ अग्रेजो के चाटूकार भारतीयो ने एक मनोरंजन कार्यक्रम का आयोजन किया। उस आयोजन के मुख्य अतिथि थे कर्जन वायली, जो भारत मे एक उच्च पद पर आसीन रहते समय स्वतन्त्रता सेनानियो पर काफी जुल्म ढा चुके थे। उस समारोह मे वीर सावरकर के सहयोगी श्री मदनलाल ढींगरा ने कर्जन वायली की हत्या कर दी और अपने वक्तव्य मे कहा कि जो लोग हमारी पवित्र भूमि को अपवित्र कर रहे हैं, उनको मारना अपराध नही है। श्री मदनलाल ढीगरा के इस कृत की निन्दा करने के लिए अग्रेजो के कुछ चाटूकार भारतीया ने आगा खा की अध्यक्षता मे एक सभा की। भाषण समाप्त होने पर सभा के अध्यक्ष आगा खा ने उठकर कहा 'यह सभा सर्वसम्मति से मदनलाल की निन्दा करती है।' उस समय एक स्वर सुनाई दिया नहीं सर्वसम्मति से नही' यह स्वर था वीर सावरकर का। इसे पर सभा मे भगदड मच गई। एक अग्रेज सार्जेन्ट ने सावरकर को एक मुक्का मारा। इसके बदले वीर सावरकर के साथियो ने उस सार्जेन्ट की पिटाई कर दी।

१३ मार्च १९१० को वीर सावरकर को लन्दन मे बन्दी बनाया गया। जुलाई १, १९१० को लन्दन की गोरी सरकार के सिपाही वीर सावरकर को पकडकर मौरीया जहाज मे भारत ला रहे थे। जिससे उन पर ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध विद्रोह आदि के आरोप लगाकर उन्हे कडी सजा दिलायी जाये। तो रास्ते मे जुलाई ७, १९१० की रात्रि को वीर सावरकर ने फ्रास की बन्दरगाह के पास सागर मे छलाग लगा दी और कई मील तक तैरते हुए मारसेल्स की बन्दरगाह पहुच गये। जुलाई ८, १० को प्रात काल सावरकर जी के इस अदम्य साहस एव रोमाच की कहानी सभी समुद्रो को पार करके देश विदेश मे प्रसारित हो गई। इस प्रकार समस्त विश्व के समाचार पत्रो मे एक साथ भारत की स्वतन्त्रता का उल्लेख किया गया। जिन लोगो ने भारत को सपेरो और साधु सन्तो का देश कहा था आज उनके कान खडे हो गये आखें चौंधिया गई और समस्त विश्व इस 'हिन्दू युवक' वीरता का कृत्य देखकर स्तब्ध रह गया।

वीर सावरकर ने अपने आपको फ्रास सरकार के सिपाहियो के हवाले कर दिया। मामला हेग की अदालत मे पहुचा। अग्रेज सरकार ने वीर सावरकर को फ्रास की सरकार से लेकर उन पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया और ५० साल कैद की सजा दी और काले पानी। अण्डमान के सेलूलर जेल मे वीर सावरकर को भेज दिया। वीर सावरकर जी १४ वर्ष काले पानी मे रहे, फिर एक जाच आयोग की रिपोर्ट पर बहुत से बन्दियो को अण्डमान से भारत की जेलो मे भेज दिया। इनमें वीर सावरकर और उनके बडे भाई बाबा राव सावरकर भी थे। इस १४ साल के समय मे वहा रखे गये सैकडो बन्दियो पर अग्रेजी सरकार द्वारा किये गये अमानुसिक अत्याचारो की एक लम्बी कहानी है उन्हें वहा बैल की जगह तेल निकालने वाले कोल्हू मे जोता जाता, चलने मे थोडा धीमा होने पर पेटी अधिकारी का सोटा खाना पडता था। इस पर भी अगर बन्दी सचेत न हुआ तो कोल्हू के डन्डे से हाथ पैर बाध दिया जाता था और जोर से दौडने के लिये विवश किया जाता। कई बार आठ-आठ दिन की हथकडी की सजा दी जाती और साथ ही दीवार पर टाग देने के आदेश। वीर सावरकर ने वहा बन्दियो को सगठित किया और इन अत्याचारो के विरुद्ध सघर्ष किया। इसमे कुछ सफलता भी मिली। अब अत्याचार कुछ कम होने लगे। इसी दौरान वीर सावरकर ने वहा के बन्दियो को शिक्षित करने का प्रयत्न किया और पठान वार्डरों द्वारा हिन्दू बन्दियो को मुसलमान बनाने के प्रयत्नो का प्रतिकार भी किया। श्री पृथ्वीसिंह आजाद जो उन दिनो अण्डमान मे बन्दी थे कहते हैं कि आखिर के सालो में वहां राजनैतिक बन्दियो ने सैलूलर जेल को एक प्रकार का विश्व विद्यालय बना दिया था, जिसके कुलपति वीर सावरकर थे।

जिन बन्दियो को १९२४ में भारत की जेलों में स्थानान्तरित किया गया उनमें वीर सावरकर और उनके बडे भाई बाबा राव सावरकर को कुछ समय अलीपुर, रत्नागिरि व यरवदा की जेलो में रखा गया, इसके बाद उन्हे रत्नागिरि जिले में नजरबन्दी के आदेश दिये गये। शर्त यह थी कि वह रत्नागिरि के बाहर नही आयेंगे और राजनैतिक कार्यों मे भाग नही लेंगे।

रत्नागिरि की स्थानबद्धता के समय मे जो लोग उनसे मिलने आये उनमें सरदार भगतसिंह और गाधी जी भी थे। डा॰ हेडगेवार ने भी जो वीर सावरकर की पुस्तक 'हिन्दुत्व' से बहुत प्रभावित हुए थे। इसी हिन्दू की परिभाषा को आधार बना कर वीर सावरकर जी राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ की स्थापना की योजना पर विचार विमर्श करने आये थे। स्थापना के समय में वीर सावरकर जी द्वारा किया गया अछूतकार कार्य, सर्वजाति सहभोज हिन्दू समाज के उद्धार के कार्य करते हुए अनेक महारो को आगा खानी मुसलमान बनने से रोका। यहा उन्होंने एक सेठ की सहायता से पतित-पावन मन्दिर बनवाया, जिसका का पुजारी एक बाल्मीकी को बनाया गया। वीर सावरकर ने यहा शुद्धि का कार्य भी पुरे जोर शोर से किया जिसे कालान्तर मे रत्नागिरि मे कार्यरत अमेरिकन मिशन को अपना बोरिया बिस्तरा बाधकर जाना पडा इस क्षेत्र मे डा॰ अम्बेडकर जो कार्य कर रहे थे, वीर सावरकर न केवल उनकी प्रशसा करते थे अपितु उन्हे अथ। शक्ति सहयोग भी देते थे।

१९३७ में जमुनादास मेहता और धनजीशा कपूर को बम्बई प्रांत के मिले जुले मन्त्रिमण्डल में सम्मिलित होने का प्रस्ताव आया तो उन दोनो ने शर्त रखी कि अपने मन्त्रिमण्डल मे सम्मिलित होते ही वह प्रथम जो कार्य करेंगे वह होगा वीर सावरकर की ससम्मान और बिना शर्त स्थान बद्धता से मुक्ति। सरकार ने उनकी शर्त को स्वीकार किया और इस प्रकार १० मई १९३७ को वीर सावरकर जी को रत्नागिरि की स्थान बद्धता से मुक्ति हुई।

वीर सावरकर जी की मुक्ति पर करीब सभी हिन्दुत्ववादी भारत भक्तो को असीम प्रसन्नता हुई। भाई परमानन्द, डा॰ मून्जे यहा तक कि प॰ नेहरू और राजगोपालाचार्य ने प्रसन्नता प्रकट करते हुए उन्हे वीरता, देश भक्ति, साहस, धैर्य और शौर्य का प्रतीक बताया पर गाधी जी मौन रहे। वीर सावरकर का पूना, बम्बई आदि शहरो में बडा जोरदार स्वागत हुआ। और शोभा यात्राए निकाली गयीं। बाबा राव सावरकर व छोटे भाई डा॰ नारायण राव सावरकर भी अग्रेजो की जेलो से रिहा हो चुके थे। वीर सावरकर ने बम्बई मे अपना स्थायी निवास बनाया।

अपने राजनीतिक विचारो के सम्बन्ध में सावरकर जी कहा करते थे कि वह भारत में हिन्दू राज के पक्षपाती हैं। ऐसा हिन्दुओ का राज जो जागृत हो, निष्ठावान हो, और कार्यक्षम हों। वह येनकेन प्रकारेण स्वराज्य प्राप्ति के पक्षधर थे। उनका तीसरा उद्देश्य था हिन्दुओ का पुनर्जागरण। वीर सावरकर को १९३७ मे अहमदाबाद में सम्पन्न हिन्दू महासभा के अधिवेशन का अध्यक्ष चुना गया इसके बाद के ६ साल वह हिन्दू महासभा के अध्यक्ष चुने जाते रहे। निजाम हैदराबाद द्वारा हिन्दुओ पर ज्यादतिया हो रही थीं। वीर सावरकर के निर्देश पर हिन्दू महासभा और आर्य समाज ने सत्याग्रह किया जो, जो सफल रहा।

देश के विभाजन के वह सख्त विरोधी थे और इसके लिये उन्होने भरसक प्रयत्न किये पर अफसोस है कि अन्य हिन्दू सस्थाओ ने साथ नहीं दिया। 'राजनीति की हिन्दूकरण' 'हिन्दुओ का सैनिकरण' 'धर्म बदलने से 'राष्ट्रीयता बदलती है' उनके मुख्य सूत्र हैं। उनका उद्देश्य भारत को सर्वसम्पन्न, शक्तिशाली, समृद्ध, हिन्दुस्थान बनाना था।

उनके १०८ वे जन्म दिवस पर हम सब उनके अधूरे कार्यों को पूरा करने का सकल्प लें।

ईश्वरोपासना (मूर्तिपूजा) (२)

शास्त्रार्थ महारथी पंडित रामचन्द्र देहलवी

स्तुति का अर्थ प्रशंसा करना है। उस परमात्मा का परिचय प्राप्त करना स्तुति कहलाता है। जब परिचय हो गया तब उसके प्रति प्रेम भी उत्पन्न होगा। जब हमे यह मालूम होगा कि भगवान ने हमें कैसे अच्छे पदार्थ दिये हैं तभी उसके प्रति हमारा प्रेम उत्पन्न होगा। माता हमे अच्छे पदार्थ देती है। हमारे हित का काम करती हैं इसलिए हम उससे प्रेम करते हैं। इसी प्रकार भगवान का गुणानुवाद करके यदि हम उसका नाम लेंगे तभी तो हमे रस का स्वाद मिलेगा और परमात्मा के प्रति प्रेम उत्पन्न होता हैं। आज जनता सुरैया से परिचित है उसकी स्तुति करती है इसलिए उसके प्रति जनता का प्रेम है। उसके देखने के लिए अपार जन-समूह एकत्र हो जाता है। किन्तु उस भगवान की स्तुति आज जनता नही करती। उसकी प्रशंसा मे तो यदि घण्टा व्यतीत हो जाये, तब भी कम है। परमात्मा के पास वह कौन सी मशीन लगी है जिससे वह समुद्र के खारी जल को स्वच्छ और मधुर बना देता है फिर उसे किस सुन्दरता से बरसाता है ? उसे देखने मे भी कितना आनन्द आता है। आपके बढिया फव्वारे को देखकर भी वह आनन्द प्राप्त नही होता।

ईश्वर की स्तुति करते हुए हमें मन मे यह धारणा बनानी चाहिये कि मैं किस प्रकार उसके इन अमृत पुत्रो को आनन्द पहुचा सकता हूं ? हम परमात्मा के गुणो को अपने अन्दर धारण कर। परमात्मा के गुणो का चिन्तन करते हुए हमे परमात्मा की सोहबत मे बैठना चाहिए [शैतान की सोहबत में हम न रहे जो कि दुनिया को सन्मार्ग से भटकाने वाला है। पुलिस सुपरिटेण्डेण्ट सदा ही सोचता है कि मैं अपराधी को किस प्रकार जेल भेजू ? हमें भगवान की सोहबत मे रहकर भगवान के गुणो को धारण करना चाहिए। सन्ध्या करने से हम भगवान की सोहबत में बैठते हैं। देखिये जब कोई सन्ध्या करने बैठता है तब उसके आस-पास के सब मनुष्यो और बाल-बच्चो को भी चुप कर दिया जाता है कि देखो वे सन्ध्या कर रहे हैं ? वे भगवान की सोहबत मे बैठें हैं इस समय चुप रहो। ऐसा न हो कि तुम्हारे शोर मचाने से वे भगवान की सोहबत मे न रह सके।

सन्ध्या का तात्पर्य इसके सिवाय कुछ भी नही है कि आप परमात्मा जैसा अपने आपको बनाने का प्रयत्न करें। स्तुति से प्रेम उत्पन्न होने के बाद प्रार्थना की जाती है। उसका प्रकार यह है—

> तेजोऽसि तेजो मयि धेहि, वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि ।
> बलमसि बलं मयि धेहि, ओजोऽस्योजो मयि धेहि ।
> मन्युरसि मन्यु मयि धेहि, सहोऽसि सहो मयि धेहि।
> यजु० १९ । ९ ।।

हे भगवान ! आप तेजस्वी हैं, मुझे भी तेज प्रदान करो। आप उत्पादक शक्ति से युक्त हैं, मुझ भी उत्पादन शक्ति प्रदान करो। आप बलवान हैं मुझे भी बल प्रदान करो। आप दुष्टों के दण्ड देने वाले हैं। मुझे भी दुष्टो को दण्ड देने की सामर्थ्य प्रदान करो। आप सबसे बढ़कर सहनशील हैं, मुझे भी सहन शीलता प्रदान करो।

प्रार्थना के बाद उपासना करनी चाहिये। उपासना का अर्थ है—निकट बैठना। परमात्मा के गुणो को धारण करके उसके समीप बैठना ही उपासना कहलाता है। जो सच्चा उपासक है वह पहाड जैसा बड़े से बड़ा दुख आने पर भी नहीं घबरायेगा और बड़े से बड़े सुख में भी इतरायेगा नही।

स्तुति से प्रेम उत्पन्न होता है प्रार्थना से अभिमान का नाश होता है, उत्साह में वृद्धि होती है और सहायता मिलती हैं। उपासना करने वाले को कोई भी भय नही रहता।

लोग कहते हैं कि मूर्तिपूजा से क्या हानि है ? मैं पूछता हूं कि क्या मूर्ति कुछ अनुभव करती हैं ? मैं मूर्ति के विरुद्ध नही किन्तु आप तो उस मूर्ति के प्रति चेतनवान व्यवहार करते हैं। आपके पिता जी की मृत्यु हो गई और उनका शव वहा पर पड़ा है आप अपने मृत-पिता के मुख मे दवाई डालें तो क्या उससे उन्हे कुछ लाभ होता है, राम की मूर्ति आप रखे, फिर राम राम करते रहे, तो उससे क्या होगा ?

यदि राम की मूर्ति को देख देख कर उनके चरित्र को याद करें और तदनुकूल व्यवहार करें, तो कुछ लाभ हो भी सकता है। किसी के चरित्र से कोई लाभ नही। हम मूर्ति के सामने बैठ जाते हैं किन्तु अपने चरित्र को नही बनाते। गुजरे हुए महापुरुषो के चित्रो को हम उनके चरित्र के आधार पर ही बनाते हैं तो फिर उनके चित्र बनाने की आवश्यकता ही नही। जब कि चरित्रो के आधार पर ही हम उनके चित्र की भी कल्पना कर सकते हैं फिर चित्र बनाने की आवश्यकता ही क्या रही ? हमने एक पत्थर को खुद ही काट छाट कर रख दिया और उनका नाम भगवान रख लिया। यह बहुत उचित कैसे हो सकती है हमें करना तो कुछ और था और हम करने लगे कुछ और—

> बुतपरस्तो का है दस्तूर निराला देखो।
> खुद तराशा है मगर नाम खुदा रखा है ।।

हिन्दू नहीं आर्य

(पृष्ठ ५ का शेष)

आर्य होने का एक और प्रमाण लो। काशी मे विश्वनाथ मन्दिर के द्वारा पर ही एक शिला पर जो दीवार में लगी है यह वाक्य खुदा है—आर्येतरस्य प्रवेशो निषिद्ध 'अर्थात् आर्यों के अतिरिक्त अन्य लोगो का प्रवेश (भीतर मन्दिर में जाना) निसिद्ध (मना) है। अब आप स्वय निर्णय करले कि सत्यता क्या है ? और हमे किस पक्ष को अपनाना चाहिये ? साथ ही सकल्प मन्त्र को भी दृष्टिगत रखना होगा। प्रत्येक सस्कार में आपके घरो मे जिसको पण्डित जी आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते कह कर बोला करते है 'हिन्दुवर्तैकदेशान्तर्गते' नही।

हमने ऊपर जो भी उद्धरण प्रस्तुत किय हैं, वह सभी ऐसे हैं कि जिनमें आर्य समाजी तथा सनातनी सभी लोग आस्था रखते हैं। इनके अतिरिक्त भी जब तक भारत मे भारतीयो का राज्य रहा तब तक के समस्त ग्रन्थो से जो सस्कृत भाषा में है चाहे वह धर्म-विधान के ग्रन्थ हो या इतिहास के—यदि कही एतद्विषयक वर्णन पाया जाता है तो वहा हमारा नाम आर्य ही मिलता है। परतन्त्र भारत में लिख जाने वाले अब से कुछ शताब्दि पूर्व के ग्रन्थो तथा तुलसीकृत रामायण रामचरित मानस इत्यादि मे भी हमारा नाम आर्य का अपभ्रश आरज' ही मिलता है। पुराणो मे भी आर्य शब्द का वर्णन और विवेचन पाया जाता है, तब हम किस प्रकार से यह माने कि हमारा नाम हिन्दु है।

लगभग सात सौ वर्ष पुरानी राजतरगिणी नामक एक पुस्तक में—जो कल्हण नामक कश्मीरी ब्राह्मण ने लिखी थी—हिन्दु शब्द अवश्यमेव पाया जाता है जिससे स्पष्ट विदित होता है कि परतन्त्रता के पश्चात् ही यह शब्द हमारे ऊपर थोपा गया। विदेशियो के आक्रमण तो इससे भी शताब्दियो पूर्व हमारे ऊपर होने आरम्भ हो गये थे तथा इस पुस्तक के लेखन-काल मे तो हम सर्वथा परतन्त्र हो ही चुके थे। एक बात यह है कि हिन्दु शब्द हमारी भाषाका भी तो नही। बडी खोज करने के पश्चात् पता चला है कि यह फारसी भाषा का शब्द है तथा ग्यासुल्लुगात मे—जो फारसी भाषा का शब्दकोष है—इसके अर्थ काला, काफिर, चोर, बदमाश, बटमार, मस्सा तथा छछूंदर लिखे है। उर्दू की करीमुल्लुगात (शब्दकोष) में भी फारसी का शब्द बतलाकर इसके उपयुक्त अर्थ ही लिखे गये हैं। ऐसी दशा मे उत्तम (आर्य) नाम को छोडकर इस पतितावस्था के द्योतक हिन्दु नाम को नाम को धारण करना बुद्धिमानी की बात नही है।

यह है कि आदि सृष्टि से लेकर अब तक का हमारा इतिहास आर्य शब्द से सम्बन्धित है। यदि हम हिन्दु शब्द को चिपटे रहते हैं तो जिस उद्देश्य को सामने रखकर हमे इस नाम से पुकारा जाना प्रारम्भ किया, उसमे हमारे विरोधी विदेशियो को तो सफलता मिलती है और हमारे ऊपर यह कहावत चरितार्थ हो जाती है कि—

कौम की तारीख से, जो बे-खबर हो जायगा।
आदमीयत खो के, रफ्ता-रफ्ता खर हो जायगा॥

ऐसी अवस्था में न हमारे सामने कोई आदर्श होगा और न हमारी सन्ताने उत्थान का स्वप्न देख सकेगी। अत हमारा हित इसी मे है कि हम सावधान हो जाये, अतीत की ओर दृष्टिपात् करे, और उससे शिक्षा ग्रहण करे तथा प्रगति-पथ पर बढ चले।

आर्य समाज कौवाकोल, (नवादा) का ५४वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

बिहार राज्य के नवादा जिलेके कौवाकोल नामक पहाडी क्षेत्र के नामक मे स्थानीय आर्य समाज का ५४ वा वार्षिकोत्सव बडे धूमधाम से मनाया गया। २२ अप्रैल से २४ अप्रैल तक होने वाले महान समारोह को सफल बनाने हेतु निम्न विद्वानो का सहयोग मिला प. भटेश्वर शर्मा एम. ए. पुरोग्राम चलते रहे हजारो लोगो ने इस उत्सव में भाग लेकर लाभ उठाया।

—कालीचरण आर्य, मन्त्री

अमेरिका में विश्व हिन्दी सम्मेलन

आर्य समाज मिशीगन बाक्स न, २९६ अलमा मिशगन ४८८०९ (अमेरिका) द्वारा आगामी १२-१३ और १४ जुलाई १९९१ मे विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। इसके सयोजक श्री गिरीशचन्द खोसला है। यह सम्मेलन अमेरिका स्थित अनेक सामाजिक, सास्कृतिक सस्थाओ, विश्व विद्यालयो, हिन्दी व सस्कृत के अनेक प्राध्यापको, के द्वारा आयोजित किया जा रहा है जिसका उद्देश्य आगामी शताब्दी में हिन्दी के प्रचार और उसके प्रयोग को मजबूत करना है। इस सम्बन्ध मे विशेष जानकारी के लिये आर्य समाज मिशीगन पो० बा० न० २९६ अलमा मिशीगन-४८८०१ (अमेरिका) से सपर्क किया जा सकता है।

—गिरीशचन्द खोसला

पुस्तक समीक्षा

वृक्षों में जीव नहीं ?

मूल्य १५) रुपये

लेखक :

आचार्य विद्याभास्कर विश्वबन्धु शास्त्री एम०ए० व्याकरणाचाय

प्रकाशित

प्रचार सगठन केन्द्र, सिसौली मुजफ्फरनगर, (उ०प्र०)

पुस्तक—आर्य समाज के क्षेत्र मे यह विषय विवादास्पद रहा है। स्व० वीतराग स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती इस विषय के पक्षधर थे और मूर्धन्य विद्वान् स्व० प० गणपति शर्मा इस विषय के विपरीत थे।

दोनो विद्वानो का शास्त्रार्थ "वृक्षो में जीव है या नही" गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर की पावन भूमि पर हुआ था। दोनो विद्वानो के प्रश्न उत्तर अपना महत्त्व रखते थे।

दोनो विद्वानो ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के दृष्टि कोणो को समक्ष रखकर ही विषय का प्रतिपादन अपने अपने रूप मे किया है।

मान्य विद्वान् आचार्य विश्वबन्धु जी शास्त्री का पक्ष भी एकागी होकर विषय का प्रतिपादन विद्वत्ता पूर्ण ढग पर किया है।

जीव का स्वरूप, लक्षण, भोक्ता-भोग्य, जागृत-स्वप्न सुषुप्ति तथा अवस्थायें, ईश्वर जीव प्रकृति, तीनो अनादि।

ईश्वर निमित्त कारण, प्रकृति उपादान जीव कर्म फल भोक्ता आदि विषयों पर भी प्रकाश विद्वत्तापूर्ण किया है।

पुस्तक अपने महत्त्वपूर्ण है—विद्वानो के लिये पठनीय और विषय के मर्म तक पहुचने मे तक व युक्ति पर आश्रित है। मेरा विद्वज्जनों से अनुरोध है कि इसे पढे और पुरातन की शास्त्रार्थ परम्परा में जोडकर इस पुस्तक के महत्त्व पर दृष्टिपात करें।

(२)

मारीशस आर्य महिला मण्डल का संक्षिप्त इतिहास

लेखिका

लक्ष्मावती हरगोविन गोकारोड, वेलरोड मारीशस

प्रस्तुत पुस्तक मे—महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के सस्कारो से मारीशस की महिलाओ के किस प्रकार पश्चिम के कुप्रभाव से अपने को बचाया कैसे ? यह इतिहास की रोचक कहानी है।

लेखिका ने "आर्य समाज द्वारा नारी नव जागरण के आन्दोलन का सूत्रपात कैसे किया। जिससे इस देश के प्रवासी भारतीयो का भाग्योदय हुआ। इसमें १९१० से १९८५ तक के महिला मण्डल का क्रमिक वर्णन देकर एक बहुत बडी कमी की पूर्ति की है साथ ही समाज सेविकाओं की कर्मठता का भी परिचय मिलेगा। मैं मारीशस की कर्मठ महिला आर्य समाज के प्रति नतमस्तक हूं। इस इतिहास के अध्ययन में प्रेरणास्फूर्ति जागेगी।

—सम्पादक

पादरियों ने अमेरिकी सहायता राशि हड़पी

वाशिंगटन, २९ मई। अमेरिकी की एक लेखा परीक्षा फर्म ने ऐसे प्रमाण जुटाये हैं जिनसे प्रतीत होता है कि भारत के रोमन कैथोलिक चर्च के पादरियो और ननो ने उपमहाद्वीप को दी जा रही लाखो डालर की अमरीकी खाद्य सहायता का सम्भवत दुरुपयोग किया गया है।

आरोप है कि भारतीय कैथोलिक अधिकारियो ने गरीबो को दी जाने वाली खाद्य सामग्री चावलियो को छिपाने के लिये झूठे रिकार्ड तैयार किये।

वाशिंगटन पोस्ट समाचार पत्र ने अमरीका अधिकारियो के हवाले से इस आशय की जानकारिया देते हुए बताया कि अमेरिका भारतीय कथोलिक अधिकारियो को हर वष गरीबो को सहायता देने के उद्देश्य से ढाई करोड डालर की खाद्य सहायता मुफ्त प्रदान करता है।

समाचार पत्र ने अमेरिकी अधिकारियो के हवाले से कहा कि वे इस बात पर विचार कर रहे हैं कि राहत सगठनो को भारत मे अमरीकी खाद्य सहायता कार्यक्रम के अनुबन्धक के रूप मे कार्य करने की अनुमति दी जाए अथवा नही।

उधर कैथोलिक राहत सेवा सी०आर०एस० ने लेखा परीक्षा फर्म की रिपोट पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि उसके निष्कर्ष तथ्यो की गलतियो पर आधारित है।

भारत मे सी०आर०एस० कार्यक्रम के प्रमुख जेम्स डिहार्पोट ने कहा कि वह मानते हैं कि प्रबन्ध व्यवस्था ने खामियां है लेकिन इस कार्यक्रम मे भ्रष्टाचार व्याप्त बिल्कुल ही नही है।

शोक समाचार

—विश्वम्भर प्रसाद शर्मा का निधन १९ मई को भोपाल म अपने एक मात्र सुपुत्र डा० कान्तिकुमार शमा क निवास पर हो गया। आप कमठ आय समाज कायकर्ता एव सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के अन्तरग सदस्य थे। आप गत एक माह से बेहोशी की हालत म रुग्ण शैया पर थे। श्री शर्मा लब्ध प्रतिष्ठित विद्वान एव ख्याति प्राप्त लेखक थे। भारतीय सस्कृति म आपका अगाध निष्ठा थी। आप न केवल लेखक और पत्रकार थे बल्कि एक देशभक्त गोसेवक आय धम प्रचारक और समाज सुधारक थे। आपके निधन से जो क्षति हुई उसका पूरा होना असम्भव है।

फर्नांडीस ने जगमोहन से मतभेद की बात स्वीकार

भारतीय वायुसेना के विमान से २० मई (भाषा) केन्द्रीय रेल मन्त्री एवं कश्मीर मामलों के प्रभारी जार्ज फर्नांडीस ने यह स्वीकार किया कि कश्मीर घाटी से उग्रवादी और अलगाववादी समस्या को दूर करने के सवाल पर उनके और राज्यपाल जगमोहन के नजरिए में फर्क है।

श्री फर्नांडीस ने अखबारों में छपी इस खबर को पूरी तरह निराधार और मनघडन्त बताया कि प्रधानमन्त्री विश्वनाथसिंह कश्मीर मामलों के प्रभार से उन्हें मुक्त करने पर सहमत हो गये हैं।

श्री फर्नांडीस पटना की एक दिन की यात्रा के बाद कल राजधानी लौटते समय पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। उन्होंने कहा कि कश्मीर घाटी में राजनैतिक गतिविधियां शुरू होनी चाहिये और साथ ही साथ लोगों को अपनी रोजमर्रा की जिन्दगी शुरू करने की इजाजत मिलनी चाहिए। श्री फर्नांडीस ने बताया कि राज्यपाल का नजरिया इससे भिन्न है।

पहासू (सहारनपुर)

आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर दिनांक १ जून १९९० से १० जून १९९० तक युवा साथी जनता किसान विद्यालय पहासू (सहारनपुर) (निकट-कस्बेडा रामपुर मनिहारान) की राह से पहासू पहुंचे।

—जनेश्वर प्रसाद मन्त्री
आर्य वीर दल जिला सहारनपुर

वार्षिकोत्सव

—आर्यसमाज पिनवाडी सिविल लाइन बदायूं का वार्षिकोत्सव ८, ९ तथा १० जून को बड़े धूमधाम के साथ मनाया जा रहा है। जिसमें बड़े २ विद्वान, भजनोपदेशक आदि को निमन्त्रित किया गया है।

—आर्यसमाज पहासू बुलन्दशहर का शताब्दी समारोह ८, ९, १० जून को मनाया जा रहा है। जिसमें कई वैदिक विद्वान पधार रहे हैं। सभी आर्य जनों से निवेदन है कि भारी संख्या में उपस्थित होकर सहयोग देवें।

ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों को ग्रहण करने पर ही भारत सुदृढ़ हो सकेगा

अम्बाला कैंट। वैदिक प्रचार मण्डल ७२वीं गोविन्द नगर अम्बाला छावनी के तत्वावधान में वेद भवन का शिलान्यास हरियाणा सरकार के मुख्यमन्त्री माननीय बनारसीदास गुप्त द्वारा दिनांक ६-५-९० को सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुये श्री गुप्त ने आह्वान किया कि आर्यसमाज ने अनेक महत्वपूर्ण कार्य प्रत्येक क्षेत्र में किये हैं जिससे भारत में नयी चेतना का उदय हुआ, इसलिये यह आवश्यक है कि ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों को [illegible] में भी आर्य समाज का मुकाबला कोई नहीं कर सकता। ऋषि की भाषा गुजराती होते हुये भी समस्त ग्रन्थ हिन्दी भाषा में लिखे। इस अवसर पर उन्होंने डी. ए. वी. पब्लिक स्कूलों द्वारा अंग्रेजी अपनाने की दुर्भाग्यपूर्ण बताया क्योंकि इस संस्था के साथ ऋषि दयानन्द का नाम जुड़ा है। अन्त में उन्होंने आर्य जनता को बताया कि मैं आज इस पद पर भी हूं केवल आर्यसमाज के कारण हूं।

शोक समाचार

—आर्य समाज सुल्तान बाजार की यह सभा भूतपूर्व प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के श्री पदमभूषण डा० दुखनराम जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करती है तथा परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं दुःखी परिवारों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—उपमन्त्री

दिनांक ९- [illegible] सम्मति के
श्री अर्जुनदेव जी, श्री सत्यनारायण — [illegible] नाम की जय
की उपस्थिति में निम्नप्रकार सम्पन्न हुआ।

संरक्षक—१. श्री सत्यनारायण जी अग्रवाल २. श्री अर्जुनदेव जी
पदाधिकारी—प्रधान श्री भारतभूषण जी शास्त्री
२. उपप्रधान श्री नरेन्द्र जी गोयल
३. महामन्त्री श्री अशोक कुमार काम्बोज
४. प्रचार व एवं उपमन्त्री श्री कैलाश जी त्यागी
५. कोषाध्यक्ष श्री राजेन्द्रप्रसाद त्यागी
६. [illegible]
७ पुस्तकालय अध्यक्ष श्री प्रमोद कुमार अरोड़ा

ग्यारह सदस्यों की अन्तरंग सभा का चयन किया गया।

—आर्य समाज भोपा का वार्षिक चुनाव तिथि ३-५-९० श्री [illegible] प्राणनाथ जी की अध्यक्षता में हुआ। सर्वसम्मति से वैद्य तीर्थराज जी प्रधान श्री यशवन्तराय जी मन्त्री श्री कृष्ण दुबे जी कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज सागर के वार्षिक निर्वाचन में सर्वसम्मति से निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये।

श्री कृष्णदेव कोहली प्रधान, मुन्शी बद्रीप्रसाद मन्त्री
श्री बद्रीनारायण नेमा कोषाध्यक्ष

—दिनांक २२-४-९० रविवार के रोज आर्यसमाज मन्दिर बसवकल्याण में साप्ताहिक यज्ञ के पश्चात वार्षिक चुनाव हुआ जिसमें निम्न पदाधिकारी निर्वाचित किये गये।

श्री रामानन्द जी लाड प्रधान, श्री माणिकराव लाड मन्त्री, श्री दिलीप महेन्दुकर कोषाध्यक्ष।

सार्वदेशिक प्रेस पटौदी हाउस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र

वेदामृत

पुत्रजन्म से अनृणता

यदापिपेष मातरं पुत्रः प्रमुदितो धयन् ।
एतत् तदग्ने अनृणो भवामि, अहतौ पितरौ मया ।
सम्पृच स्थ सं मा भद्रेण पृङ्क्त,
विपृच स्थ वि मा पाप्मना पृङ्क्त ।।
यजु० १९ । ११ ।।

हिन्दी अर्थ—मेरा पुत्र प्रसन्न होकर मां का दूध पीता हुआ जो अपनी मां को प्रसन्न है, हे अग्नि ! इससे मैं (पितृ ऋण से) उऋण हो रहा हूँ। मैंने अपने माता पिता की वंश परम्परा को विच्छिन्न नहीं किया है। हे देवो ! तुम संयोजक हो, मुझे सद्गुणों से संयुक्त करो। तुम वियोजक हो, मुझे पापों सेपृथक् करो। —डा० कपिलदेव द्विवेदी

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१ दयानन्दाब्द १६६ दूरभाष : ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष २६ अंक २२] आषाढ़ कृ० २ सं० २०४७ १० जून १९९०

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का प्रैस वक्तव्य

चण्डीगढ़ ९ जून। आर्यसमाज के सर्वोच्च नेता तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने जम्मू-काश्मीर और पंजाब की विभिन्न परिस्थितियों पर एक पत्रकार सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए, आर्य समाज का दृष्टिकोण निम्न प्रकार प्रकट किया—

१—जहां तक पाकिस्तान से बात-चीत का सम्बन्ध है, सरकार को अमेरिका तथा सोवियत संघ की मध्यस्थता में यह वार्त्ता करनी चाहिए। परन्तु काश्मीर के विषयमें कोई समझौता इस देश की जनता स्वीकार नही करेगी। सरकार को पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर की वापिसी की मांग पाकिस्तान से करनी चाहिए।

२—पाकिस्तान से प्रशिक्षण प्राप्त आतंकवादियों को रोकने के लिए यह आवश्यक है कि कश्मीर से कच्छ तक की पूरी सीमा पर कम से कम ५ किलोमीटर चौडी एक सुरक्षा पट्टी बनायी जावे और इस पट्टी पर भू० पू० सैनिकों को उनके परिवारों सहित बसाया जाये तथा उन्हे मताधिकार और हथियार आदि रखने के लाइसैंस दिए जांय।

३—जनता का मनोबल बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय नेता तथा उच्च प्रशासनिक अधिकारी उग्रवाद से प्रभावित क्षेत्रों का समय-समय पर दौरा अवश्य करें। ईमानदार, राष्ट्रवादी, कार्यकुशल और कर्मठ अधिकारियों को इन क्षेत्रों में भेजकर वहां के निवासियों और उनके परिवारों की सुरक्षा का पूरा प्रबन्ध किया जाय। इससे प्रशासन और जनता के बीच की खाई कम होगी।

४—संविधान के अनुच्छेद ३७० को तुरन्त हटाया जाय।

५—देश और धर्म की रक्षा के लिए पाकिस्तान द्वारा पंजाब में चलाया जा रहा उग्रवाद समाप्त होना अनिवार्य है। हिन्दू और सिक्ख एक ही स्रोत की दो धारायें हैं। सिक्ख गुरुओं के बलिदान, मुस्लिम कट्टरतावादी मनोवृति के ही परिणाम हैं। इसलिए यदि पाकिस्तान हमारे देश में उग्रवाद को बढ़ावा देने की अपनी नीति मे सफल हो गया तो सिक्खों को भी गुरु तेगबहादुरजी की शहीदी से लेकर गुरु गोविन्दसिंह जी पर हुए घातक हमले जैसे सकटो का एक बार फिर सामना करना पड़ेगा। इस्लामी नीति में कोई परिवर्तन नहीं आया है। वह आज भी वही है जो अब से सैकड़ो साल पहले थी। अत: सिक्ख भाई पाकिस्तान द्वारा चलाए जा रहे षड्यन्त्र और उसकी भारत विरोधी कूटनीति के शिकार न हो! देश धर्म की रक्षा के लिए हिन्दू सिक्खों ने मिलकर अनेकों बलिदान दिए हैं। भविष्य में भी उनका यह बन्धुत्व बना रहना चाहिए।

६—बी० पी० सिंह की सरकार की हिन्दू विरोधी नीति का घोर विरोध करते हुए स्वामी जी ने कहा कि अल्पसंख्यको के हितो की रक्षा और धर्म निरपेक्षता की आड़ में सरकारी कार्यवाही

(शेष पृष्ठ २ पर)

काश्मीर के विस्थापित हिन्दुओं की सहायता करो

राष्ट्रवादी जनता एवं आर्य जनों से सभा प्रधान की अपील

काश्मीर से उजड़ कर हजारो भाई बहिने खाली हाथ दिल्ली की सड़को पर आ गये हैं।

सभा की ओर से उन हिन्दू परिवारो की यथोचित सहायता हो रही है पाकिस्तान समर्थक मुस्लिम काश्मीरियो ने उन्हे अपने साथ बिस्तर भी नही लाने दिया दो कपड़ो के साथ खाली हाथ हजारो परिवार भारत सरकार की घुटने टेक दब्बु नीति की मूक चर्चा करके असहाय अवस्था मे पडे हैं सार्वदेशिक सभा कार्यालय उनकी हर सम्भव सहायता कर रहा है।

मेरी हिन्दू जनता से दु:ख भरी अपील है कि मानवता की रक्षा के लिये दिल खोल कर सहायता करे। दान की राशि बैंक ड्राफ्ट चैक एव मनी आर्डर द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम से प्रेषित करे।

निवेदक :
आनन्दबोध सरस्वती
सभा प्रधान

सम्पादक—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

ईसाई और मुसलमानों को भी आरक्षण सुविधाएं देने का विरोध

दिल्ली ३० मई, १९९० ।

नव बौद्धो को अनुसूचित जातियो के समान आरक्षण तथा अन्य सुविधाये देने सम्बन्धी बिल पास होने के बाद केन्द्रीय श्रम मन्त्री श्री पासवान ने कहा कि यही सुविधायें हिन्दुओ से ईसाई और मुसलमान बने लोगो को भी देने के लिये सरकार विचार करेगी।

इस वक्तव्य पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा पूर्व सासद श्री आनन्दबोध सरस्वती ने कहा देश मे पहले ही साम्प्रदायिकता सीमायें पार कर चुकी है और इस वक्तव्य से श्री पासवान ने एक नई साम्प्रदायिकता को जन्म देने की कोशिश की है। वी० पी० सिंह सरकार का यह बड़ा भारी षडयन्त्र है जिससे बहुत जल्दी हिन्दू जाति इस देश मे अल्पसंख्यक बन जायगी। स्वामी जी ने खेद व्यक्त किया कि भारतीय जनता पार्टी भी गैर जिम्मेदार नेताओ द्वारा चलाई जाने वाली राष्ट्रीय मोर्चा सरकार से अपना समर्थन वापस क्यो नहीं लेती ?

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने अपने वक्तव्य मे कहा कि अनुसूचित जातियो को मिलने वाला आरक्षण केवल हिन्दू समाज की व्यवस्था का अंग है। इस्लाम और ईसाइयत मे जात-पात की सामाजिक व्यवस्था नही है। जब कोई व्यक्ति हिन्दू धर्म से इस्लाम या ईसाई धर्म में प्रवेश करता है तो वह अनुसूचित जाति का कैसे रह सकता है ?

स्वामी जी ने सुप्रीम कोर्ट के उन फैसलो का उल्लेख किया जिनमें यह कहा गया है कि धर्मान्तरण के बाद पुरानी जाति की सुविधाए नही मिल सकती।

सरकार को चेतावनी देते हुए स्वामी जी ने घोषणा की कि यदि इस तरह का कोई कदम उसने उठाया तो आर्य समाज राष्ट्रव्यापी और उग्र आन्दोलन करेगी।

—सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा मन्त्री
सार्वदेशिक सभा, नई दिल्ली

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में कुलपति डा० सुभाषचन्द्र विद्यालंकार के प्रति

श्रीमती सुशीला जी की शुभकामनाएं

आर्य जगत् के प्रसिद्ध इतिहासकार तथा वैदिक विद्वान स्वर्गीय प० सत्यकेतु जी विद्यालकार की धर्मपत्नी श्रीमती सुशीला जी ने गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के नये कुलपति डा० सुभाषचन्द्र विद्यालकार के प्रति अपनी शुभकामनाए निम्न प्रकार प्रकट की है—

श्री सुभाषचन्द्र विद्यालकार गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के सुयोग्य स्नातको में से है। वे आदर्शवादी व्यक्तित्व के धनी है। सासारिक उन्नति, धन और मान के लिये अपने आदर्शो और सकल्प का बलिदान उन्होने नही सीखा है। सरकार के उत्तरदायित्वपूर्ण पदो पर उन्होने कार्य किया है किन्तु आत्मा की पुकार के विरुद्ध उन्होने कभी समझौता नही किया। प्रसिद्ध विधिवेत्ता डा० लक्ष्मीमल सिंघवी से उन्होने कानून की प्रैक्टिकल ट्रेनिंग भी प्राप्त की है। सुभाष जी आर्य समाज के अनन्य सेवको मे से हैं उन्हें पद की कमी भी लालसा नही रही। उनकी आदतें बहुत सरल हैं, अपना काम स्वय करने मे विश्वास रखते है।

गुरुकुल ने अनेक सुयोग्य स्नातक उत्पन्न कर समाज और राष्ट्र की महती सेवा की है। आशा है सुभाष जी गुरुकुल में नया उत्साह और प्रेरणा का वातावरण उत्पन्न कर सकेंगे। आर्य नेताओ ने बडी आशा से इस सस्था को सुचारु रूप से चलाने का भार श्री सुभाष जी के कन्धो पर डाला है। मुझे पूर्ण आशा है वे अपनी कार्य कुशलता और योग्यता से गुरुकुल का विचलित गौरव पुन स्थापित करने मे समर्थ होंगे। हमारी शुभकामनाए उनके साथ हैं।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का प्रेस वक्तव्य

(पृष्ठ १ का शेष)

द्वारा हिन्दू जाति को कमजोर किया जा रहा है। उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि सरकार ने केवल अल्पसंख्यकों को सन्तुष्ट करने के लिए—

(अ) दिल्ली की जामा मस्जिद की मरम्मत के लिए ५० लाख रुपयो का सरकारी अनुदान दिया।

(ब) सैकड़ों पुरानी खण्डहर पड़ी मस्जिदों को जो पुरातत्व विभाग के नियन्त्रण में थी, वक्फ बोर्डों को दे दिया गया और वहां नमाज पढ़ने की इजाजत भी दे दी गई।

(स) जम्मू कश्मीर के राज्यपाल श्री जगमोहन को सरकार ने सम्प्रदाय विशेष के दबाव में आकर ही वहां से वापिस बुलाया।

(द) राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद विवाद को केवल मुस्लिम सम्प्रदाय की सन्तुष्टि के लिए आगे बढ़ाया गया है।

(य) जो हरिजन (हिन्दू) धर्म परिवर्तन करके ईसाई या मुसलमान बन गए हैं, उन्हे अनुसूचित जातियो को प्राप्त होने वाली सुविधाओ के अधिकार को बनाए रखने का आश्वासन देकर सरकार ने परोक्ष रूप से धर्मपरिवर्तन को बढ़ावा दिया तथा यही अधिकार अब नव बौद्धो को देकर उसने हिन्दू जाति के विघटन की प्रक्रिया और तेज कर दी है।

(र) मुफ्ती मुहम्मद सईद को गृहमन्त्री बनाना, उनकी पुत्री रुबिया की रिहाई के लिए पाच कट्टर मुस्लिम आतकवादियो को छोड़ देना, हिन्दुस्तान मशीन टूल कम्पनी के डायरेक्टर श्री खेड़ा को आतकवादियो के हमले से न बचाना यह सब मुस्लिम तुष्टीकरण की कार्यवाही नही तो और क्या है ?

(७) धर्म निरपेक्षता (सिक्युलरिज्म) शब्द पहले सविधान का अ ग नही था। यह सन् १९७६ में लगाई गई आपात स्थिति की उपज है और इसे तभी से सविधान मे जोड़ दिया गया है।

(८) सामरिक महत्व के लद्दाख क्षेत्र को केन्द्र शासित प्रदेश का दर्जा दिए जाने की माग का आर्य समाज पूरा समर्थन करता है।

(९) देश के सामाजिक, सास्कृतिक, धार्मिक और नैतिक मूल्यो की पुर्नस्थापना के लिए आर्य समाज निम्न पाच सूत्रीय कार्यक्रम पर विशेष रूप से अभियान चला रहा है—

(१) गोहत्या बन्दी कानून बनाना।
(२) अ ग्रे जी हटाओ आन्दोलन।
(३) शराब बन्दी
(४) भारत से विदेशी पादरियो का निष्कासन।
(५) अस्पृश्यता निवारण।

प्रवेश का स्वर्णिम अवसर

१ जुलाई से १५ अगस्त ९० तक

गुरुकुल में कक्षा ५ से प्रवेश होता है और सोलहवी कक्षा (प्रथमा से आचार्य) तक अध्ययन हेतु छात्रावास की समुचित व्यवस्था है।

वेद, दर्शन, व्याकरण, साहित्य, हिन्दी, अ ग्रे जी, गणित, विज्ञान, इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र आदि विषयो के साथ-साथ सगीतभाषण सैनिक नैतिक शिक्षा पी० टी० योगासन एव धनुर्विद्या आदि के प्रशिक्षण का विशेष प्रबन्ध है।

मेधावी छात्रो को छात्रवृत्ति दी जाती है। प्रवेश शुल्क ३५०/- भोजन शुल्क १२५/- प्रतिमाह देय होगा।

नोट—विशेष जानकारी के लिए नियमावली मगावें।

—डा० रामामिश्र शास्त्री, प्राचार्य

पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज बी-एन पूर्वी शालीमार बाग दिल्ली को एक पुरोहित की आवश्यकता है जो कर्मकाड एव सस्कारो में निपुण हो। शीघ्र स्वय आकर समाज मन्दिर मे प्रति शनिवार एव रविवार प्रातः ८ से १० बजे तक सम्पर्क करें।

दूरभाष—७१२४९१४, ७११२५६१, ७११२१४२ सेवा प्रतिदिन साय ७ बजे बाद उपलब्ध है। —देवराज कालरा (मन्त्री)

बेनजीर की मांग वी. पी. ने मानी

तरुण विजय

जब देश का प्रधान मन्त्री एक शत्रु देश के झूठे प्रचार के सामने झुक जाये, जब सार्वभौम संप्रभुता सम्पन्न देश में अधिकारियों की नियुक्ति का पैमाना विदेशी प्रशंसा या आलोचना बन जाये, जब हत्यारे उग्रवादियों से मोर्चा ले रहा एक राज्यपाल, उग्रवादियों से बातचीत का रास्ता साफ करने की वेदी पर जिबह कर दिया जाये, तो गद्दारों, हत्यारों और शत्रुओं के घर घी के चिराग जलेंगे ही। देशभक्तों के घर मातमी अन्धेरे में डूबेंगे। कश्मीर के साथ यही हुआ है।

अपनी ही सरकार ने यहां देशभक्ति को अपमानित प्रताड़ित लज्जित किया है। जब सरकार ही ऐसा करे तो जनता सिवाय भगवान से देश को बचाने की प्रार्थना के और क्या करे।

आइये प्रार्थना करें कि हे भगवान इस राष्ट्रीय मोर्चा सरकार के सेकुलर पाखण्डियों और स्वदेशी लहू की लाली लगाकर विदेश में अपना चेहरा संवारने को लालायित नेताओं को सद्बुद्धि दो। कश्मीर को बेरुत न बनने दो। कश्मीर में हिन्दुस्थानी प्रधान मन्त्री का केवल हिन्दुस्थानी हितों को ध्यान में रखकर दिया गया आदेश प्रभावी हो। वहां हिन्दुस्थान की शत्रु बेनजीर भुट्टो की इच्छा के अनुसार शुरू या रद्द न किया जाये।

ऐसा अचानक क्या घटा कि जगमोहन को वापस बुलाया गया।

अचानक कुछ नहीं घटा। मौलवी फारूख की शवयात्रा में शामिल उग्रवादियों की गोलीबारी का जब सुरक्षाबलों ने जबाब दिया तो मारे गए २७ लोग एक बहाना बन गये राज्यपाल को हटाने का। वरना जगमोहन की नियुक्ति के समय से ही उन्हें हटाने का एक सतत् अभियान तो जारी ही था।

२३ मई को मन्त्रिमण्डल की बैठक में जगमोहन को हटाने का मामला उठा। इस मुद्दे पर विश्वनाथ प्रतापसिंह का कड़ा विरोध भी हुआ। कश्मीर से सम्बन्धित एक वरिष्ठ मन्त्री ने कहा कि 'यह कदम देश को बहुत महंगा पड़ेगा। इससे देशभक्त अफसरों और आम हिन्दुस्तानी का मनोबल गिरेगा। जगमोहन के हटाने का मतलब होगा कि हमने बेनजीर के आरोपों को स्वीकार कर लिया है।

इस मन्त्री ने उच्च प्रशासनिक अफसरों के विरोध का भी जिक्र किया। लेकिन प्रधानमन्त्री पर अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति और खासकर मुस्लिम देशों के विरोध का इतना असर था कि उन्होंने एक न सुनी। निर्णय ले लिया गया।

इससे पूर्व दिन में जब लोकसभा में कश्मीर पर बहस हो रही थी, उसी समय सरकार की मंशा का संकेत मिल गया था। जब इस विषय पर बोलने का समय आवंटित किया गया तो भारतीय जनता पार्टी के नेता विजय कुमार मल्होत्रा यह देखकर अचम्भित रह गये कि जहां नेशनल कांग्रेस जैसी तीन सांसदों की पार्टी को ३० मिनट व कांग्रेस को भी इतना ही समय दिया गया, वहां भारतीय जनतापार्टी का कहा गया कि ५-१० मिनट में अपनी बात पूरी कर लें। क्षुब्ध भाजपा सदस्यों ने इस पर जोर विरोध प्रकट किया और कहा कि ८५ सांसदों वाली पार्टी को इतना कम समय देना सरकार की बदनीयती का प्रतीक है। विवश होकर लोकसभा अध्यक्ष को बहस आगे भी जारी रखने का निर्णय लेना पड़ा। बहस से पूर्व ही जब श्री मल्होत्रा ने गृहमन्त्री तथा कुछ अन्य वरिष्ठ मन्त्रियों से बहस में उठने वाले मुद्दों पर चर्चा की तो उन्हें आश्चर्य हुआ कि सरकार में से कोई भी अपने ही प्रतिनिधि राज्यपाल जगमोहन के समर्थन में कुछ भी कहने को तैयार नहीं है। इससे बेहूदा बात और क्या हो सकती थी कि जो हम मन्त्रियों ने कही कि 'आखिर जगमोहन के बचाव के लिये कहने को है ही क्या ?' इसीलिए सदन में चर्चा के दौरान यह विडम्बनापूर्ण स्थिति देखने को मिली कि जहां एक ओर भाजपा, जो सरकार में शामिल नहीं है, सरकार के ही प्रतिनिधि का जोरदार बचाव कर रही थी, वहीं सरकारी पक्ष के सांसद अपने विरोधी पक्ष के सुर में सुर मिलाकर जगमोहन को प्रताड़ित कर रहे थे। नेशनल कांफ्रेंस के संकुचित सोच तो यहां तक कहते सुने गये कि 'जिस दिन जगमोहन को हटाया जाएगा हम घी के चिराग जलायेंगे।'

जगमोहन को हटा दिया गया परन्तु इस बारे में विश्वनाथ प्रतापसिंह ने अपने बड़े समर्थक दल भाजपा के नेताओं से सलाह करना तक भी उचित नहीं समझा। इसके विपरीत शरारत यह की गई कि टाइम्स आफ इण्डिया में एक भ्रामक रपट छपवाकर कहा गया कि सरकार ने श्री लालकृष्ण आडवाणी और श्री अटलबिहारी वाजपेयी से इस बारे में सलाह की है और वे जगमोहन की वापसी पर इस शर्त पर सहमत हैं कि यह वापसी 'सम्मान-जनक' तरीके से हो।

ऐसी बातों से क्षुब्ध श्री लालकृष्ण आडवाणी ने कहा कि टाइम्स आफ इण्डिया में छपी यह रपट एकदम बेबुनियाद और झूठी है। हमसे प्रधान-मन्त्री ने कोई सलाह नहीं की। २५ मई को सुबह मैंने स्वयं प्रधानमन्त्री को फोन किया और जगमोहन को हटाने पर अपनी पार्टी का विरोध व्यक्त किया। प्रधानमन्त्री ने कुछ दबावों का जिक्र करते हुए यह समझाने का प्रयास किया कि किन वजहों से ऐसा निर्णय लेना जरूरी हो गया था। लेकिन मैं उनके स्पष्टीकरण से सन्तुष्ट नहीं हूं।

श्री आडवाणी ने 'पाञ्चजन्य' को बताया कि 'मुद्दा जगमोहन का नहीं है। राज्यपाल बनते हैं और हटाये जाते हैं लेकिन जब युद्ध जैसी स्थिति हो और सेनापति जान की बाजी लगाकर अपना कर्तव्य निबाह रहा हो, ऐसी हालत में शत्रु देश के दुष्प्रचार में आकर उसे वापस बुलाना देश के लिए घोर अहित में होता है। इस मौके पर जगमोहन को बुलाकर सरकार ने बेनजीर के प्रचार को ही सच्चा साबित करने की भयंकर भूल कर दी है जो अक्षम्य है।'

(पाञ्चजन्य ३-६-९० से साभार)

ये किस जेहाद की इबारत है

नई दिल्ली, २३ मई। राजधानी में आग उगलता हुआ एक परचा लोगों के हाथ में देखा जा रहा है। इस्लाम के बन्दों के नाम जारी इस परचे का हर शब्द अपने आप में ऐसा भड़कता हुआ शोला है, जो अपने आस-पास की हर चीज खाक कर देना चाहता है।

"मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना" और "हिन्दी है हम वतन है, हिन्दुस्तां हमारा" जैसे आदर्श वाक्यों को जीवन में उतारने का प्रयास करने वालों को भी इस "खतरनाक" परचे ने एक बारगी स्तब्ध कर दिया है। दिल्ली की जामा मस्जिद के नायब इमाम के नाम से छापे गए इस परचे में 'खुदा के बन्दों' से देश में हिंसा के जरिए खून की नदियां बहा देने की अपील की की गई है।

"इस्लाम का पैगाम—मुजाहिदों के नाम" शीर्षक से जारी इस परचे में मुस्लिम साम्प्रदायिकता को पुरजोर तरीके से उभारते हुए काफिरों को समूल नष्ट कर देने की अपील की गई है। नायब इमाम की ओर से छपे इस पत्र में पवित्र कुरान के सूरा २ की आयात १९१ का उद्धरण देते हुए कहा गया है कि "काफिर जहां कहीं मिलें, उनकी गर्दन उतार लो।" सूरा ८ की आयत ९ कहती है कि—उनसे तब तक जंग करो जब तक मूर्तिपूजा खत्म न हो जाए।

परचे में सरकार में शामिल कुछ मुसलमान नेताओं को काफिर घोषित करते हुए उन्हें इस्लाम का दुश्मन कहा गया है।

काफिरों के खिलाफ जेहाद छेड़ने को तैयार मुसलमानों से अपील की गई है कि वे इस 'धर्मयुद्ध' को जीतने के लिए 'इबारत मस आलेम' जमायत के सिपाही बनकर इस्लाम की शोहरत बढ़ाएं।

(वीर अर्जुन २४-५-९०)

गृहमन्त्री को हटाने की मांग

वी० पी० ने सईद पर भरोसा जताया

हस्ताक्षर अभियान नामन्जूर

विरोधी गुट के अप्रत्यक्ष हमले को पार्टी व सरकार विरोधी बताया

नई दिल्ली, २९ मई। प्रधानमन्त्री विश्वनाथ प्रतापसिंह ने आज रात गृहमन्त्री मुफ्ती मोहम्मद सईद पर पूरा विश्वास व्यक्त किया है। उन्होंने श्री मुफ्ती को हटाने के लिए चलाये गये हस्ताक्षर अभियान को जनता दल और सरकार की प्रतिष्ठा को नुकसान वाला करार दिया।

जनता दल के अन्दर प्रधानमन्त्री के विरोधियों ने अपने पहले निशाने के रूप मे गृहमन्त्री को अपना निशाना बनाकर उन्हे तुरन्त हटाने की माग की है।

इस सम्बन्ध में प्रधानमन्त्री को भेजे गए सयुक्त पत्र पर ५० जनता दल सासदो के हस्ताक्षर हैं। यह हस्ताक्षर अभियान जारी है सयुक्त पत्र पर हस्ताक्षर करने वालो में अधिकतर सासद उत्तर प्रदेश और बिहार से हैं। हस्ताक्षरकर्ताओ का दावा है कि सयुक्त पत्र पर दस्तखत करने वाले सासदो की सख्या ७० तक पहुच सकती है।

कश्मीर और पजाब मे हालात से निपटने मे मुफ्ती मोहम्मद सईद की कारगुजारी से जनता दल सासद कितने आन्दोलित और खिन्न हैं यह आज लोकसभा मे देखने को मिला जब सत्ता पक्ष के सदस्यो ने ही मुफ्ती पर प्रहार किए। मुफ्ती को प्रधानमन्त्री के विरोधियो ने शायद इसलिए पहले निशाने के रूप मे चुना है कि वह प्रधानमन्त्री के बहुत नजदीक हैं और अरुण नेहरू, आरिफ मोहम्मद और मुफ्ती सईद की तिकडी के महत्वपूर्ण सदस्य हैं। यह प्रहार मुफ्ती पर नही बल्कि अप्रत्यक्ष रूप से प्रधानमन्त्री पर है।

वी०पी० सिंह सरकार के समर्थक दलो मे भाजपा मुफ्ती के मामले मे तटस्थ है किन्तु मुफ्ती को जामा मस्जिद दिल्ली के शाही इमाम और मार्क्सी नेता हरकिशन सिंह सुरजीत का भरपूर समर्थन प्राप्त है।

प्रधानमन्त्री के विरोधी मानते हैं कि विभिन्न मोर्चों पर विफल रहने वाले मुफ्ती को गिराना सरल है। इसलिए सबसे पहला निशाना वह बनाए गए हैं। उनके बचाव पर आना भी वी०पी० सिंह के लिए कठिन होगा।

सयुक्त ज्ञापन मे मुफ्ती मोहम्मद सईद द्वारा कश्मीर की स्थिति से निपटने के तौर-तरीके की कडी आलोचना की गई है और प्रधानमन्त्री से कहा गया है कि पिछले छह महीने की घटनाओं से यह सकेत मिलता है कि गृहमन्त्री कश्मीर मसले के हल के मार्ग मे सबसे बडे बाधक हैं।

ज्ञापन में हस्ताक्षर करने वालों में सर्वश्री हरमोहन धवन हर्ष वर्धन राजमगल मिश्र, जी लाल सुमन जगदीश कुशवाहा कल्पनाथ सोनकर, जयप्रकाश बालेश्वर यादव कल्याणसिह कालवी, राम बहादुरसिंह, देवेन्द्र यादव और गुरदयालसिंह आदि शामिल हैं।

श्री धवन और अन्य सासदों ने कहा कि वे इस बात से चिंतित हैं कि सरकार की विश्वसनीयता पार्टी के बडे नेताओ के आपसी मन मुटाव के कारण तेजी से घट रही है।

(पजाब केसरी ३० मई, १९९०)

सच क्या है !

नई दिल्ली ३१ मई। राजनीतिक क्षेत्रों में आज सुबह से ही यह चर्चा जोरो से रही कि मुफ्ती मोहम्मद सईद ने केन्द्रीय गृहमन्त्री पद से इस्तीफा दे दिया है, जब कि प्रधानमन्त्री वी०पी० सिंह समर्थको ने इसे अफवाह मात्र बताया। अब राम ही जाने इन दोनो बातों में से सच क्या है।

राजनीतिक क्षेत्रो की चर्चाओ को आकाशवाणी से साय ६ बजे प्रसारित अग्रेजी समाचारो से भी बल मिला जिसमे विधिमन्त्री दिनेश गोस्वामी को गृहमन्त्री कहा गया। यह समाचार गलत था या नही कहा नही जा सकता परन्तु इस समाचार को रात ८.४० बजे दूरदर्शन ने अपने हिन्दी समाचारो मे दोहराया और उसने भी श्री गोस्वामी को केन्द्रीय गृहमन्त्री बताया। इस बात मे क्या सच्चाई है कि श्री सईद ने इस्तीफा दे दिया है या नहीं या उनकी जगह श्री गोस्वामी तैनात किए गए हैं। इस बात पर अभी तक सरकार की ओर से कुछ नही कहा गया।

(पजाब केसरी १-६-९०)

लोढ़ा व मोदी की गोवंश वध पर प्रतिबन्ध की मांग

नई दिल्ली २१ मई। सासद न्यायमूर्ति श्री गुमान मल लोढ़ा तथा भारत गोसेवक समाज के सभापति श्री लक्ष्मीनारायण मोदी ने गोवश वध पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाने की माग की है।

उन्होने आज यहा एक सवाददाता सम्मेलन मे इस बात पर चिन्ता व्यक्त की कि जहा १९३५ में सिर्फ २० प्रतिशत पशुओं का वध किया जाता था वर्ष १९८६ मे वध किए जाने वाले पशुओ की सख्या ४९.८ प्रतिशत हो गई।

उन्होने कहा कि मानव जनसख्या की तुलनामे पशुओं की सख्या तेजी से घट रही है। १९५१ में पशुओ की सख्या ४३ प्रतिशत थी परन्तु १९८२ मे घटकर २७.८ प्रतिशत रह गई।

उन्होने इस बात पर आश्चर्य व्यक्त किया कि यद्यपि राष्ट्रीय पशु नीति जैसी कोई चीज अस्तित्व मे नही है परन्तु केन्द्रीय चमडा अनुसधान सस्थान की रिपोर्ट (१९८७) ने सरकार से सिफारिश की है कि राष्ट्रीय पशु वध नीति तैयार की जाए।

उन्होने निरन्तर बिगडती हुई स्थिति को देखते हुए पशु वध को रोकने के लिए केन्द्रीय कानून बनाने की मांग की।

श्री लोढ़ा ने विश्वास व्यक्त किया गोवश वध पर पूर्ण प्रतिबन्ध के उनके ससदीय प्रस्ताव को सभी राजनीतिक दलो का समर्थन प्राप्त होगा।

भट्टराई का आश्वासन : धर्म के साथ छेड़छाड़ नहीं होगी

हिन्दू राजा, हिन्दू राष्ट्र, गोमाता की प्रतिष्ठा और धर्मान्तरण पर रोक जारी रहेगी

काठमाण्डू। नेपाल की नई सरकार के नये रुख से सशकित अनेक हिन्दू सगठनो के प्रतिनिधि प्रधानमन्त्री श्री कृष्णप्रसाद भट्टराई से मिले हैं। गत २३ मई को विश्व हिन्दू महासघ का एक प्रतिनिधिमण्डल श्री भट्टराई से मिला और उन्हें अपनी चिन्ता से अवगत कराया। जानकार सूत्रों के अनुसार श्री भट्टराई ने उन्हें आश्वासन दिया कि वह नेपाल मे चार धार्मिक स्तम्भो को नहीं छेडेंगे। वे चार स्तम्भ हैं—हिन्दू राजा, हिन्दू राष्ट्र, गौमाता और धर्मान्तरण पर रोक।

आर्य समाज के विलक्षण मिशनरी -

भू-मण्डल प्रचारक स्वर्गीय मेहता जैमिनि जी

—प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु' वेदसदन, अबोहर

यह १९४६ ई० की घटना है कि आर्यसमाज कालेज विभाग स्यालकोट के वार्षिकोत्सव पर मुझे प्रथम बार श्री जैमिनि जी का व्याख्यान सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैंने तब आर्यसमाज के कालेज पक्ष के सब विद्वानों व प्रमुख लोगों के नाम सुन रखे थे परन्तु मुझे इस उत्सव पर ही प्रथम बार पता चला कि आर्य समाज में कोई कालेज विभाग है। इस उत्सव पर श्री मेहता जी के व्याख्यानों का सब श्रोताओं पर गहरा प्रभाव पड़ा परन्तु मैं यह कह सकता हूं कि उनके ओजपूर्ण व्याख्यानो का सर्वाधिक प्रभाव मुझ पर ही पड़ा। वह प्रभाव इतना गहरा था कि मैने आर्यसमाज (बड़ा समाज) के पुस्तकालय से मेहता जी की कई पुस्तको व उनकी जीवनी को लेकर बड़े चाव से पढ़ा।

मेहता जी अपने व्याख्यानों में प्रमाण तो बहुत ही दिया करते थे, बीच बीच में विदेशो में अपने भ्रमण की भी कोई-कोई घटना सुनाया करते थे। कई भारतीयो को तो हीनता के भाव के कारण अपनी पश्चिमी की यात्रा का उल्लेख करने का चाव होता है। मेहता जी मे ऐसी प्रवृत्ति न थी। देश विदेश में उनकी प्रचार यात्रा की घटनाएं सुन सुनकर मेरे मन मे भी तभी यह विचार पैदा हुआ कि मैं भी इनकी तरह वकील बनूंगा। देश विदेश मे आर्य समाज का प्रचार करूंगा। १९४७ में पूज्य स्वामी वेदानन्द जी की स्वामी श्रद्धानन्द जी पर एक व्याख्यान सुना तो वकील बनने का विचार मेरे मन से निकल गया।

मेहता जी ने ८६ वर्ष की आयु पाई और अन्तिम समय तक वेद-प्रचार के पुनीत कार्य मे सलग्न रहे। वे एक अथक व्यक्ति थे। उन्होने लगभग ६७ वर्ष आर्य समाज की सेवा की। श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ने लिखा है कि विश्व में जहा-जहां भी कोई भारतीय था (भले ही एक ही व्यक्ति हो) यह विलक्षण मिशनरी बिना किसी सभा की सहायता के वहां वेद सन्देश सुनाने पहुंच गया। सम्भवत: एक बार महात्मा हसराज जी ने उनको विदेश में कुछ साहित्य भेजा था अन्यथा अपने ही बलबूते पर आप सब महाद्वीपो मे ऋषि सन्देश सुनाने का सुयश लूट सके। आर्य समाज मे वेद-प्रचार के लिए सर्वाधिक भ्रमण करने वाले मिशनरी आप ही थे। आर्य समाज के इतिहास लेखको ने उनके साथ न्याय नहीं किया। सम्भवत: इसका कारण इतिहास लेखको का अपना अज्ञान भी हो।

यहां यह भी उल्लेखनीय है कि मेहता जी मिशन स्कूल मुलतान में पढ़ते हुए ईसाई बनने ही वाले थे कि आपको अकस्मात् मुनिवर गुरुदत्त के दर्शन हो गये। यह १८८८ ई० की घटना है। मुलतान मे एक पौराणिक पण्डित से आर्यसमाज के तरुण तपस्वी मनीषी गुरुदत्त जी का शास्त्रार्थ सुनने के लिए भारी भीड़ को देखकर बालक जमनादास (तब आपका नाम जमनादास था) भी बाग में जाकर भीड़ मे घुस गया। शास्त्रार्थ तो कम सुन पाए परन्तु बाहर निकलते हुए भीड़ मे से लोगो को यह कहते सुना कि सनातनी पण्डित आर्य समाज के विद्वान का कोई उत्तर नहीं दे सका। मेहता जी ने तब प्रथम बार ही आर्यसमाज का नाम सुना। उधर एक और घटना घट गई। मुलतान के मिशन स्कूल मे मास्टर गणपत राय नाम के एक अध्यापक सच्चे आर्य थे परन्तु स्कूल मे अपने विचार प्रकट नहीं करते थे। आपने स्कूल के इस योग्यतम छात्र को घर बुलाकर आर्य समाज की कुछ चर्चा की। मेहता जी तो कुछ ही दिन में ईसाई बनने वाले थे। आपने झट से पूछा क्या आर्यसमाज ईसाइयत के सामने ठहर सकता है?

मास्टर जी ने श्रीमान हाकिमराय लिखित एक पुस्तक हाथ में थमा दी। इसे पढ़कर रात रात मे बालक जमनादास बदल गया। फिर मुनिवर दुर्गाप्रसाद की एक पुस्तक मास्टर जी ने दे दी। अब स्कूल के पादरी मुख्याध्यापक ने पूर्ववत् जमनादास को अपनी कोठी में बुलवाकर अब वार्तालाप किया तो इन्होंने ईसाई मत पर ऐसे ऐसे प्रश्न कर दिए कि वह सुनकर चौंक पड़ा और बोला, "तुम्हें किसी दयानन्दी ने बहकाया है।" अब ऋषि जीवन पढ़कर आप सदा-सदा के लिए वैदिक धर्म के दीवाने बन गए। लाहौर शिक्षा प्राप्ति के लिए आए तो पं० गुरुदत्त जी का पता लगाकर उन्हें पत्र लिखा। मृत्यु शैय्या पर पड़े पं० गुरुदत्त ने इन्हें तत्काल अपना सेवक भेजकर घर बुलवा लिया। पण्डित जी ने ला० जयचन्द्र जी को कहा कि इन्हें सन्ध्या सिखाने लगे। संस्कृत पढ़ाओ।

पं० लेखराम जी का सत्संग आपको प्राप्त रहा। पण्डित जी ने ऐसा रंग चढ़ाया कि आप सुधबुध बिसार कर वेद-प्रचार मे खो जाते थे। आपकी लग्न ऐसी थी कि एक बार आपको सीतापुर (पश्चिमी पंजाब) में प्रचारार्थ जाना था। जाने का कोई साधन न था। प्रसिद्ध विद्वान् प्रो० शरर जी की जन्म स्थली सीतापुर में १७-१८ मील पैदल चलकर पहुंच गए। ऐसे कर्मवीरो ने अवैदिक मत पंथो के दुर्ग ढाकर वेद-ज्योति जगाई।

आप अपने जीवन के प्रारम्भिक वर्षो मे अध्यापक बने। आपने बटाला, कादियां व जालधर जिला मे कई स्कूल स्थापित किए। आपकी योग्यता व त्याग की ऐसी धूम मच गई कि आप पंजाब के जाने माने शिक्षा शास्त्रियों मे गिने जाने लगे। स्वल्प काल तक अजमेर में भी प्रधान अध्यापक रहकर धूम मचा दी। फिर वकील बनकर लड़को को आर्य मन्दिर मे नि:शुल्क पढ़ाते। इस रात्रि कक्षा द्वारा बड़ा प्रचार किया। १९५५ में मैं नाभा गया। मेहता जी भी वहा पधारे हुए थे। समाज में प्रचार होता रहा। तब एक प्रतिष्ठित अभियन्ता ने मेहता जी को आमन्त्रित किया। हम भी साथ गये। उसने बड़ी सेवा की। वहा जाकर पता चला कि यह व्यक्ति मेहता जी के रात्रि स्कूल का छात्र रहा है। उच्च पद पर पहुंचने के लिए वह अपने को मेहता जी का व आर्यसमाज का ऋणी मानता था।

महता जी की स्मृति अद्भुत थी। विदेशी विश्वविद्यालयो मे उनके व्याख्यानो को सुनकर उनकी चमत्कारी स्मृति की सब विदेशी विद्वान् भूरि-भूरि प्रशसा करते हुए उनसे इसका कारण पूछा करते थे। वे अपनी दिनचर्या व खानपान ही इसका मुख्य कारण बताया करते थे। वे लाल मिर्च तो क्या काली मिर्च का भी सेवन न करते थे। चाय, बर्फ, सोडा, सिग्रेट का प्रश्न ही नही। एक बार रूग्ण होने पर उन्हें मास भक्षण के लिए डाक्टर ने कहा परन्तु आपने बड़ी दृढ़ता दिखाई। कई बार ज्वर मे ही व्याख्यान दिया। अमृतसर के आर्यसमाज लक्ष्मणसर मे भी एक बार मेरी उपस्थिति मे ज्वर ग्रसित होते हुए व्याख्यान दिया।

आपने जीवन में बीसियो आर्य समाज स्थापित किये। सहस्रो लेख लिखे। कई पत्रो के सम्पादक रहे। श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के विख्यात 'सद्धर्म प्रचारक' के भी कुछ समय तक सम्पादक रहे। वैदिक धर्म का गूढ़ ज्ञान प्राप्त करने के लिए सस्कृत का भी अध्ययन किया। राष्ट्रीय आन्दोलन मे भी बड़ा काम किया। कुछ समय गुरुकुल वृन्दावन की भी सेवा की। दो बार सत्यार्थ प्रकाश का फारसी में अनुवाद किया। बीसियों पुस्तके लिखी। कुछ अनुदित भी कीं। उनकी कई पुस्तकें दोबारा छपने योग्य हैं। आज एक भी बाजार में उपलब्ध नहीं।

उन्होने पत्रकार के रूप मे तो समाज की सेवा की ही, शास्त्रार्थ भी किए। वीर वर लेखराम के बलिदान पर आप कादियां से केवल १२ मील की दूरी पर बटाला में थे। आपने मिर्जाई मत के सस्थापक मिर्जा गुलाम अहमद की खूब पोल खोली। आपने तब वीर लेखराम की स्मृति मे स्थायी महत्व की आधा दर्जन के लगभग पुस्तिकाएं लिखी।

आप कवि भी थे परन्तु कविता मे कवियो को 'अतिशयोक्ति' से काम लेना पड़ता है अत: उन्होने कविता लिखना छोड़ दिया। उनकी एक कविता सम्भवत: हमारे पुस्तकालय में है। उनको पदो की कोई लालसा न थी। वे चाहते तो प्रान्तीय सभा व सार्वदेशिक के भी किसी पद को पा सकते थे। कई वर्ष तक पजाब प्रतिनिधि सभा के अन्तरग सदस्य रहे थे। भरी जवानी मे पदों का मोह तजकर केवल प्रचार में रम गए। आपने शुद्धि के लिए भी ऐतिहासिक कार्य किया। उनके दोनों बडे भाइयों ने भी समाज की बड़ी सेवा की। मेहता जी स्वनिर्मित जीवन के व्यक्ति थे।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली संचालन सम्बन्धी सुझाव

(लेखक : गंगाप्रसाद विद्यार्थी एम. ए., एम. फिल: (संस्कृत) जबलपुर-२

१ उद्देश्य—गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नही है। उनका उद्देश्य है ब्रह्मचारियो के व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास अर्थात् शारीरिक आत्मिक व मानसिक उन्नति करना। शारीरिक उन्नति के लिए सम्पूर्ण ब्रह्मचर्य, योगासन तथा अन्य व्यायाम, उत्तम भोजन जिसमें अन्न, शाक, फल, दूध, दही व घृत समुचित मात्रा मे हो। आत्मिक उन्नति के लिए धर्म व ईश्वर में दृढ़ श्रद्धा व विश्वास, सन्ध्या, हवन, भजन व ध्यान की उचित शिक्षा व अभ्यास। मानसिक उन्नति के लिए मातृभाषा, हिन्दी, संस्कृत, गणित, इतिहास, भूगोल, तर्कशास्त्र, मनोविज्ञान तथा आयुर्वेद में कायचिकित्सा केवल आहार व योगासनो द्वारा चिकित्सा प्राकृतिक चिकित्सा तथा होमियोपैथी चिकित्सा का सामान्य ज्ञान प्रत्येक छात्र व छात्रा को कराया जाय। इन सब के लिए भाषण, वादविवाद प्रतियोगिता व शास्त्रार्थ प्रत्येक विषय पर प्रति सप्ताह होने चाहिए जिसमे सभी विद्यार्थियो अध्यापको का भाग लेना अनिवार्य हो।

२ गुरुकुल की व्यवस्था—पर्याप्त धन, भूमि, शालाभवन, छात्रावास, भोजनालय व आचार्य निवास की समुचित व्यवस्था होने पर ही गुरुकुल खोले जाये। खेती, बागवानी व गोपालन मे प्रत्येक छात्र व अध्यापक सहयोग दे, जिससे शाक सब्जी, मौसमी फल (नीबू, केले, पपीते, मूली, गाजर, टमाटर इत्यादि) तथा दूध, दही व घृत वही उत्पन्न हो सके। कृषि द्वारा वर्ष भर के लिए अन्न भी उत्पन्न हो सके तो अति उत्तम हो, अन्यथा बैंको इत्यादि में जमा, अक्षय निधि से प्रतिमास इतना ब्याज अवश्य मिल जाय कि न केवल छात्रो बल्कि सभी गुरुकुलवासियो के महीने भर के भोजन की सम्पूर्ण व्यवस्था हो सके। कम से कम ६ महीनो के लिए भोजन सामग्री का भण्डारण हो सके। नित्य कुआ खोदो तब पानी पियो वाली व्यवस्था न रहे।

३ अध्यापक गण—यथासम्भव कुलपति, उपकुलपति व सभी अध्यापक सन्यासी या वानप्रस्थी हो वेतन भोगी गृहस्थी न हो। अन्य कर्मचारी वेतनभोगी हो सकते हैं। सभी अवैतनिक व्यक्तियो के उत्तम भोजन, वस्त्र, निवास आदि की व्यवस्था गुरुकुल की ओर से हो, उन्हे प्रसाधन, पुस्तको डाक व्यय आदि के लिए योग्यतानुसार मानदेय भी दिया जाय। इस प्रकार वित्त प्रधान व्यवस्था के स्थान पर सुविधा प्रधान व्यवस्था की जाय।

४ अर्थव्यवस्था—जनता से, ट्रस्टो से व पालको से अन्न, धन, वस्त्र इत्यादि का नियमित दान भी लिया जाय और प्रान्तीय व केन्द्रीय सरकारो के शिक्षा व समाज कल्याण विभागो से भी गुरुकुल संचालन व भवन निर्माण के लिए पर्याप्त सहायता ली जाय। अक्षय धन भी बढाया जाय जिससे ब्याज की प्राप्ति भी अधिक हो सके।

५ शिक्षा का स्वरूप—कला व व्यवसाय की शिक्षा प्रत्येक विद्यार्थी को दी जाय कि जिससे वह केवल उपदेशक, अध्यापक या लेखक ही न बने, वह मन चाहे अन्य व्यवसाय भी कर सके यथा वैद्यक, लकड़ी लोहे का काम, संगीत नृत्यशाला इत्यादि। शिक्षा इतनी उच्च स्तर की हो कि गुरुकुल का छात्र इन्जिनियरिंग व मेडिकल की प्रवेश परीक्षाओ मे सहज ही उत्तीर्ण हो सके और प्रान्तीय व भारतीय सरकारी सेनाओ मे चुना जा सके। वे किसी भी बात में हीन स्तर के न हो।

६ अनुशासन—किसी भी संस्था मे अनुशासन व्यवस्था का प्रश्न सर्वोपरि है। पहिले तो व्यक्ति येनकेन प्रकारेण प्रवेश प्राप्त करता है। फिर क्रमश संस्था को अपने अधिकार में लाना चाहता है और फिर अपने ही अधिकार मे बनाये रखना चाहता है। इसके लिए उचित अनुचित तरीके भी अपनाता है और अनुशासन भंग करता या करवाता है। इसलिए प्रत्येक गुरुकुल मे एक अनुशासन समिति हो जिसमे कुलपति, उपकुलपति, प्राचार्य, उपाचार्य के अतिरिक्त अध्यापको व छात्रो के भी प्रतिनिधि हो। तत्काल आवश्यकता के लिए कुलपति का निर्णय ही सर्वमान्य हो। यदि कुलपति को अनुशासन समिति का निर्णय मान्य न हो तो वह अपनी व्यवस्था तो देगा परन्तु पूरा मामला सार्वदेशिक सभा की शिक्षा समिति के निर्णय हेतु प्रस्तुत करेगा, जिसका निर्णय अनिवार्य रूप से सबको मानना होगा। प्रत्येक ५ वर्ष बाद कुलपति व उपकुलपति का चुनाव हो।

७ धार्मिक शिक्षा—धर्म व सदाचार की शिक्षा विद्यालय स्तर तक एक विषय के रूप मे अनिवार्य हो जिसमे प्रतिवर्ष परीक्षा हो और उत्तीर्ण होना अनिवार्य होवे। धर्मशिक्षा की उपाधि व पत्रोपाधि परीक्षाए भी प्रचलित की जाये।

८ उपाधियो व पत्रोपाधियो की मान्यता—प्रत्येक गुरुकुलकी उपाधियो व पत्रोपाधियो की मान्यता प्रान्तीय व अखिल भारतीय स्तर पर हो कि जिससे किसी अन्य विश्वविद्यालय की परीक्षा पास किए बिना ही गुरुकुल का स्नातक प्रशासनिक परीक्षाओ मे बैठ सके और सरकारी नौकरी पा सके, न केवल शिक्षा विभाग में बल्कि सभी विभागो में।

९ स्नातको का लेखा—प्रत्येक गुरुकुल मे उसके स्नातको तथा स्नातकोत्तरोकी पूरी जानकारी स्थायी तथा नवीन पता रखा जाय। उन्हे व्यवसाय प्राप्त करने मे यथा समान सहायता दी जाय। जब वे अच्छी आर्थिक या प्रभावशाली पद पर हो तब उनसे व उनके द्वारा गुरुकुलके लिए सभी प्रकार की सहायता प्राप्त की जाय। गुरुकुल की शिक्षा समिति मे भूतपूर्व स्नातको व स्नातकोत्तरो के दो दो प्रतिनिधि रखे जाय। विभिन्न विषयो पर उनका मत पत्र द्वारा प्राप्त किया जाय और चुनावो मे उनका मत 'डाक मत पत्र' द्वारा प्राप्त किया जाय।

१० गुरुकुल के ब्रह्मचारी का वर्चस्व—गुरुकुल मे पढे व्यक्ति का वर्चस्व केवल नैष्ठिक ब्रह्मचारी या सन्यासी बनने पर हो न हो, बल्कि प्रत्येक गुरुकुल का ब्रह्मचारी वह चाहे जिस स्तर पर व चाहे जिस क्षेत्र मे कार्य करे वर्चस्वी व तेजस्वी होवे। मानो गुरुकुल ने आई. एस. आई. के ठप्पे की तरह उनकी गुणवत्ता के मापदंड की अपनी मुहर लगा दी हो।

११ गुरुकुलो का केन्द्रीय संगठन—भारत के सभी आर्य गुरुकुलो का एक केन्द्रीय संगठन बनाया जाय जिसमें प्रत्येक गुरुकुल के अध्यापको के दो प्रतिनिधि हो। इस केन्द्रीय संगठन का एक अधिकारी कम से कम वर्ष में एक बार प्रत्येक गुरुकुल मे अवश्य जाय और वहा की व्यवस्था आदि का निरीक्षण करे। वह सुधार व उचित प्रबन्ध के लिए कुलपति या आचार्य को लिखित रूप मे सुझाव दे जिसकी एक प्रतिलिपि केन्द्रीय कार्यालय मे उस गुरुकुल की नत्थी (फाइल) में भी रखी जाय और सुधार की कार्यवाही पर लगातार दृष्टि रखी जाय। यह केन्द्रीय संगठन ही विभिन्न पाठ्यक्रमो व पुस्तको को भी तैयार करे और परीक्षाओं तथा प्रश्नपत्रो की भी व्यवस्था करे। डी. ए. वी. संगठन की तरह यदि गुरुकुलो का भी एक सुदृढ केन्द्रीय संगठन बन जाय तो फिर भारत के सभी प्रदेशो और विदेशो मे भी जहा भारतीय मूल के लोग निवास करते हैं। जैसे मारीशस, नेपाल ट्रिनीराड हालैण्ड आदि मे आर्य गुरुकुल खोले जाय।

१२ सार्वदेशिक सभा—जब तक आर्य गुरुकुलो की एक केन्द्रीय समिति न बन जाय तब तक सार्वदेशिक सभा एक गुरुकुलीय शिक्षा समिति बनाकर गुरुकुलो के संचालन प्रबन्ध व अनुशासन व्यवस्था का कार्य भार सम्भाले।

मिश्नरी पत्रकार स्व० विश्वम्भर प्रसाद शर्मा

—क्षेमचन्द्र सुमन, दिलशाद गार्डन, शाहदरा दिल्ली



वयोवृद्ध स्वाधीनता सेनानी तथा मिश्नरी पत्रकार पण्डित विश्वम्भरप्रसाद शर्मा के निधन से देश पुरानी पीढ़ी की एक तेजस्वी विभूति से वंचित हो गया। शर्मा जी ने अपना पूरा जीवन स्वाधीनता आन्दोलन समाज सुधार, हिन्दी पत्रकारिता की सेवा तथा गौरक्षा के पुनीत काय में लगाया था। वे आर्य समाज के अनन्य सेवक थे तथा वर्षों तक आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश और विदर्भ के अध्यक्ष रहे।

शर्मा जी तथा मेरी दोनो की जन्मभूमि एक ही क्षेत्र में थी। उनका जन्म ग्राम लुहारी (गढमुक्तेश्वर) में हुआ था जब कि मेरा बाबूगढ में। हम दोनो मेरठ जनपद मे जन्मे थे किन्तु दोनो का कार्यक्षेत्र उत्तर प्रदेश से दूर अन्य प्रान्तो मे ही रहा।

शर्मा जी से मेरा अत्यन्त निकट सम्पक था। मैं उन दिनो लाहौर के दैनिक मिलाप के माध्यम से पत्रकारिता के क्षेत्र मे सक्रिय था जब कि शर्माजी नागपुर मे दैनिक "नवभारत" मे थे। मैं लाहौर मे मिलाप" कार्यालय मे गिरफ्तार किया गया था जब कि शर्मा जी नवभारत" कार्यालय मे नागपुर मे गिरफ्तार किये गये थे। वे प्राय मजाक में कहा करते थे कि आप और हम दोनो को गिरफ्तार करने का साहस उत्तर प्रदेश सरकार को नही हुआ था। इसीलिये बाहर पकडे गये थे।

श्री विश्वम्भरप्रसाद शर्मा के नाम से मैं उन दिनो परिचित हुआ था जब मैं उत्तर भारत की सुप्रसिद्ध शिक्षा संस्था गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) में पढ़ता था। हमारे आचार्य श्री नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ के पास हिन्दी के जो अनेक पत्र आया करते थे उनमें श्री शर्मा जी द्वारा सम्पादित 'विकास' एक था।

विकास का प्रकाशन क्योंकि सहारनपुर से होता था इसलिए मेरी रुचि उसमें और भी अधिक हो गई थी। 'विकास" का प्रकाशन सन् १९१४ की जन्माष्टमी के पावन पर्व पर हुआ था और उसके प्रथम अक के "सम्पादकीय" में शर्मा जी ने उसके प्रकाशन के उद्देश्यो पर प्रकाश डालते हुए जो भाव व्यक्त किए थे वे मेरे बाल मानस को उद्बोधित करने में कितने सक्षम हुए उसका अनुमान पाठक इसी से लगा सकते हैं कि मैं 'विकास' की उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा किया करता था। विकास" के माध्यम से इस क्षेत्र की जहा अनेक कवि, पत्रकार और सुलेखक सुलभ हुए थे वहा उसने यहा के सामाजिक तथा राजनीतिक जागरण मे भी अभूतपूर्व योगदान दिया था।

"विकास' हमारे क्षेत्र का एक ऐसा साप्ताहिक पत्र था जिसमे भारत की तत्कालीन राजनीतिक तथा सामाजिक हलचलो पर प्रकाश डालने वाली प्रचुर सामग्री रहती थी। उसके प्रथम सम्पादकीय की ये पंक्तिया विकास सम्पादक" श्री शर्मा जी की कर्मठता तथा ध्येयनिष्ठा का ज्वलन्त साक्ष्य प्रस्तुत कर रही है —

हमारी नीति सदैव सत्य शिव, सुन्दरम्" रहेगी। हमारा विश्वास है कि खण्डनात्मक रूप की अपेक्षा मण्डनात्मक कार्यक्रम सदैव कल्याणकारी होता है। हम अपने सदुद्देश्यो के प्रचार एव प्रसार मे सदैव इसी दृष्टिकोण से काम लेगे। हमारे समक्ष राष्ट्रीयता का सदैव उच्च और पवित्र आदर्श रहेगा किन्तु अत्याचार को अत्याचार और अन्याय को अन्याय कहने मे हम कदापि पीछे नही रहेगे।'

अपने सम्पादकीय मे घोषित नीतियो की परिपालना के लिए शर्मा जी ने जो अथक सघर्ष किया उसकी कहानी बहुत लम्बी है। उन्होने अपने मार्ग मे आने वाली कठिनाइयो एव बाधाओ से वीरतापूर्वक जूझकर ही 'विकास' का प्रकाशन किया था। यदि ऐसा न होता तो वे विकास' के ध्येय को इन पंक्तियो मे कैसे घोषित करते —

'निज आत्म-बल का विश्व मे, जिसको सदा विश्वास है।
वह त्रिभ-बन्धन तोडकर, पाता अवश्य "विकास" है॥'

अपने प्रकाशन के थोडे ही दिनो मे 'विकास" ने न केवल हिन्दी प्रेमियो मे ही अपना प्रमुख स्थान बनाया प्रत्युत देश के अनेक मूर्धन्य नेताओ का आशीर्वाद भी उसे सुलभ हुआ। आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी ने अपने आशीर्वाद से 'विकास" के विस्तार और प्रचार की कामना इस प्रकार की थी —

"विकास' नाम्न पत्रस्य, विकास बुधकीर्तितम्।
विस्तारञ्च, प्रचारञ्च, तनोतु जगता पति॥

यह आचार्य द्विवेदी जी के आशीर्वाद का ही पुण्य प्रताप था कि अपने प्रकाशन के केवल दो मास उपरान्त ही उसने आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के निर्वाण की अर्ध शताब्दी के उपलक्ष्य मे अजमेर मे होने वाले उत्सव के अवसर पर १४ अक्तूबर को ११० पृष्ठ का एक विशेषाक 'आर्यसमाज अक" नाम से प्रकाशित किया। इस अक की विशेषता है कि आज भी वह अपनी उपादेय सामग्री के कारण आर्यसमाज की उपलब्धियो का एक सदर्भ ग्रन्थ बन गया है। इस विशेषाक की सफलता की कामना करते हुए राष्ट्रपिता महात्मा गाधी ४ सितम्बर १९३३ को पर्णकुटी पूना से लिखे अपने पत्र मे महर्षि दयानन्द की जो

श्रद्धांजलि अर्पित की थी वह उसकी उपादेयता को और भी बढ़ा देती है। उन्होंने लिखा था —

"महर्षि दयानन्द ने धर्म जागृति बढ़ाई। आर्य संस्कृति का, वेदाभ्यास का, संस्कृत भाषा का, हिन्दी का प्रेम बढ़ाया। अस्पृश्यता रूपी कलंक को धोने का प्रयत्न किया। ऐसे सब कार्यों के लिए महर्षि का स्मरण चिरस्थायी रहेगा, इसमें सन्देह नहीं है।"

"विकास" के सम्पादक के रूप में शर्मा जी ने न केवल आर्य समाज बल्कि समाज सेवा के विभिन्न क्षेत्रों में जो बढ़-चढ़कर भाग लिया उसका ज्वलन्त प्रमाण आगे आकर हमें उस समय मिला जब कि क्वेटा के भूकम्प के समय उनके सम्पादकीय से रुष्ट होकर सरकार ने "विकास" से एक हजार रुपये की जमानत मांगी। अपने इस सम्पादकीय में उन्होंने सरकार के अकर्मण्यता की खुलकर आलोचना की थी। परिणामस्वरूप यह जमानत न देकर उन्होंने "विकास" का प्रकाशन सर्वथा बन्द करके विश्वास नामक एक और साप्ताहिक का प्रकाशन "विकास लिमिटेड" नामक कम्पनी की ओर से प्रारम्भ कर दिया। इसका सम्पादन हिन्दी के अनन्य शैली-कार श्री कन्हैयालाल मिश्र "प्रभाकर" को सौंपा गया और शर्माजी इस कम्पनी के मैनेजिंग डायरेक्टर बने। प्रभाकर जी पहले से ही "विकास" के सम्पादन में उनको सहयोग दे रहे थे। यह सौभाग्य की बात है कि जिस 'विकास लिमिटेड' नामक संस्था का सूत्रपात श्री शर्मा जी ने किया था वह आज भी प्रभाकर जी के निरीक्षण में चल रही है और उसकी ओर से 'विकास' साप्ताहिक का प्रकाशन हो रहा है। आज भी 'विकास' पर संस्थापक सम्पादक के रूप में शर्मा जी का नाम मुद्रित होता है।

यह उत्तर भारत का दुर्भाग्य ही है कि ऐसे दृढ़प्रतिज्ञ और ध्येय-निष्ठ पत्रकार को यह क्षेत्र छोड़कर मध्य प्रदेश को अपनी कर्मभूमि बनाने को विवश होना पड़ा और वे सन् १९३८ में नागपुर चले गये। नागपुर जाकर उन्होंने 'आलोक' साप्ताहिक के माध्यम से वहां की जनता की जो सेवा की उसी का सुपरिणाम यह है कि वहां के सामाजिक जीवन में अपना उल्लेखनीय स्थान बना लिया था। 'विकास' के सम्पादन से पूर्व भी अखिल भारतीय आर्य कुमार परिषद के मुख पत्र "आर्य कुमार' और माहेश्वरी महासभा के पत्र 'माहेश्वरी' के सम्पादक के रूप में शर्माजी ने पत्रकारिता के क्षेत्र में जो स्थान बनाया था उसी का विकसित रूप 'विकास' साप्ताहिक था।

नागपुर के यशस्वी पत्रकार तथा समाज सेवी श्री रामगोपाल जी माहेश्वरी के "नवभारत' के शर्माजी वर्षों तक संयुक्त सम्पादक रहे। माहेश्वरी जी शर्मा जी को हमेशा अपना ज्येष्ठ भ्राता मानते रहे। वे खुलकर ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध लिखते तथा भाषण करते थे। परिणामतः मई १९४१ में उन्हें दैनिक नवभारत के नाग-पुर कार्यालय से गिरफ्तार किया गया।

शर्माजी की पत्नी शान्तिदेवी भी राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत विचारों की महिला थी। सन् १९३० में उन्होंने आगरा से सत्याग्रह कर गिरफ्तारी दी थी। उनके पुत्र कान्तिकुमार उस समय केवल ४ माह के थे जो साथ में जेल गये थे। शान्तिदेवी शर्मा लखनऊ में कमला नेहरू के साथ रही थी।

शर्मा जी पत्रकार के साथ-साथ एक यशस्वी लेखक भी थे। उन्होंने राष्ट्रमाता कस्तूरबा, लाला लाजपतराय, राष्ट्रनिर्माता जमनालाल बजाज, राष्ट्रनिर्माता सरदार पटेल, हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी, नारी जागरण, आर्यसमाज और राष्ट्रनिर्माण गौरक्षा का राष्ट्रीय प्रश्न, जैसी दर्जनों पुस्तकें भी लिखी थी। "गौधन" मासिक के अनेक विभूतियों की स्मृति में विशेषांक सम्पादित किये थे। वे एक सिद्धहस्त लेखक थे। शर्मा जी का पूरा जीवन देश तथा समाज की सेवा में बीता। वे अनेक वर्षों से भारत गौसेवक समाज के मासिक 'गौधन' का भी सम्पादन कर रहे थे।

उनके निधन से वास्तव में पुरानी पीढ़ी की एक और कड़ी टूट गई है। उनका अभाव कोई दूर नहीं कर सकता।

शराब

(श्री टी. आर. खन्ना बी. एस. ए.)

हालत हमारे देश की जिसने खराब की।
ऐसी शराब की है कि बस लाजवाब की।।
बहती थी खुशहाली और दूध की नहरें जहां कभी।
बहने लगी हैं अब वहां नदियां शराब की।।१।।

इन्सान को हैवान से बदतर शराब करती है।
न जीता है न मरता है जीवन अजाब करती है।।
जिसने भी मुंह लगाया है बरबाद हो गया वोह।
हां, यह पीने वालों की मिट्टी खराब करती है।।२।।

ये आग पानी "शराब" नाम भी बुरा।
पागल करे दिमाग को है नाम भी बुरा।।
इस नामुराद आग के पानी शराब का।
आगाज भी बुरा और इसका अन्जाम भी बुरा।।३।।

ये लाल परी किस लिए तुमको पसन्द है।
जो दूर रहे इससे वही अकलमन्द है।।
रहने दे बस बन्द मुंह इसका न खोलना।
तेरी तबाही है जो इस बोतल में बन्द है।।४।।

धर्मान्तरित आमन्त्रण

राष्ट्रीय कवि निर्भय हाथरसी

बहुत बुलन्द हौंसले हैं घर बाहर के हर दुश्मन के।
पता नहीं कितने कितने दिन बाकी हैं किस जीवन के ?
यत्र - तत्र - सर्वत्र उग्रवादी अंगड़ाई लेते हैं—
भारत माता सिसक सिसक कर कहती है घर-आंगन के।

हर कमरे में आग लगी है, कसकर कमर बुझा जाओ,
फिर से अपने शुद्ध-सनातन-आर्य धर्म को अपनाओ।
बिछुड़े हुए भाइयो ! अपने घर को वापिस आ जाओ॥

धर्म बदल कर भी तुम केवल "नौमुसलिम" कहलाते हो।
मुस्लिम होकर भी अपमानित मुस्लिम समझे जाते हो॥
हिन्दू भी तुम रहे नहीं और मुस्लिम भी तुम बने नहीं।
ना समझी से अपनी ना समझी को समझ न पाते हो॥

जिसने तुम्हें कुरान पढ़ाई, उसको वेद पढ़ा जाओ।
फिर से अपने शुद्ध सनातन आर्य धर्म को अपनाओ॥
बिछुड़े हुए भाइयो ! अपने घर को वापिस आ जाओ॥

●

औरों के बाप को कहा तक अपना बाप कहोगे तुम !
कब तक गंगा तज, गन्दे नालों में और बहोगे तुम ?
चाहे जितना भटको-भटको, फिर भी यह सच्चाई है—
चाहे जितना धर्म बदल लो फिर भी आर्य रहोगे तुम।

भारत विश्व गुरु है, सारे जग को पुन बता जाओ।
फिर से अपने शुद्ध-सनातन आर्य धर्म को अपनाओ।
बिछुड़े हुए भाइयों ! अपने घर को वापिस आ जाओ॥

●

हमने जिसको दूध पिलाया, उसने जहर पिलाया है।
जितना भी विश्वास जमाया, उतना धोखा खाया है॥
यदि संकेत समझ सकते हो तो, इतना ही काफी है।
असली मा को नकली बेटों ने खुलकर धमकाया है॥

संकट की बेला में घर की बिगड़ी बात बना जाओ।
फिर से अपने शुद्ध-सनातन आर्य धर्म को अपनाओ॥
बिछुड़े हुए भाइयो ! अपने घर को वापिस आ जाओ॥

श्रीमती लज्जावती भारद्वाज का निधन

स्त्री आर्य समाज गोविन्द गढ़ जालन्धर की संरक्षिका श्री प० किशनचन्द व स्व० प० मुरारीलाल जी की बहन, श्री हरबंसलाल जी शर्मा की बुआ बहन लज्जावती जी भारद्वाज का २०-४-९० को यू०के० में अपनी सुपुत्री व दामाद के पास निधन हो गया। बहन लज्जावती का जालन्धर की आर्य महिलाओ मे अपना विशेष स्थान था। आर्यसमाज गोविन्दगढ़ जालन्धर से उनका विशेष सम्बन्ध था। वह एक धार्मिक विचारो की महिला थी उनका जीवन बड़ा सादा व सात्विक था। वह बड़ी मिलनसार और सबका सम्मान करने वाली महिला थी। उनके सुझाव आर्य समाज के लिए बड़े उपयोगी सिद्ध होते थे। उन्होंने अपने भाई प० किशनचन्द जी आर्य और प० मुरारीलाल जी की भांति आजीवन आर्यसमाज की सेवा की। उनके चले जाने से स्त्री आर्य समाज गोविन्दगढ की जो क्षति हुई है उसकी पूर्ति होना असम्भव है।

परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह दिवंगतात्मा की सद्गति प्रदान करें और उनके परिवार को इस वियोग को सहन करने की शक्ति दे। इनका अन्तिम शोक दिवस आर्यसमाज गोविन्दगढ़ जालन्धर में १० मई १९९० को साय ४-३० से ६ बजे मनाया गया।

—सम्पादक

आन्ध्र के समुद्री तूफान पीड़ितों को आर्य स्वातन्त्र्य सेनानी संघ का दान



श्री राजवीरसिंह आर्य

इस बीच आन्ध्र प्रदेश मे भयकर तूफान के कारण जान माल का बहुत नुकसान हुआ।

लाखों लोग बेघर हो गये, लाखो एकड़ खेत बह गये। चार-पाच लाख पशु मर गये।

सन् १९७७ मे जो तूफान आया था उसके कारण दसहजार से अधिक जनता को अपने प्राणो से हाथ धोना पडा था। पशु और खेतोका नुकसान भी अधिक हुआ था।

इस बार तूफान का प्रकोप अत्यधिक था। पहले के तूफान की गति १०० कि०मी० प्रति घण्टा थी इस बार की गति २०० कि०मी० प्रति घण्टा रही।

राज्य सरकार के सावधानी के कारण बचाव कार्य पहले ही शुरू करने से लगभग पाच सौ लोगो को ही प्राण गवाना पडा।

पूर्व हैदराबाद राज्य आर्य स्वातन्त्र्य सेनानी संघ के अध्यक्ष श्री राजवीर आर्य ने दिनाक ११ मई ९० को वरगल जिलाधीश श्री कोदड रामरेड्डिको राज्य के मुख्यमन्त्री के समुद्री तूफान से पीड़ित जनता सहायता कोष मे दस हजार रुपये का चैक दिया।

साथ संघ के अन्य पदाधिकारी सर्वश्री शिरुमल वकट स्वामी कोडी कनकय्या आर्य और मेरुगु रामलिंगम् आदि थे।

तेलगाणा महाराष्ट्र और कर्नाटक मे स्थित संघ के सदस्य बचाव कार्य मे हाथ बटाने चल पड़े।



आन्ध्र के बाढ पीड़ितो को आर्य सेनानी संघ के अध्यक्ष श्री राजवीर आर्य अन्य अधिकारी (सर्वश्री शिरमल वेकट स्वामी के० कनकय्या आर्य रामलिंगम आदि वरगल जिलाधीश श्री कोदड रामरेड्डिका दस हजार का चैक देते हुए।

निर्वाचन

—आर्य समाज मन्दिर रावतभाटा का वार्षिक चुनाव (१९९०-९१) दिनाक २२-४-९० को प्रात ८-३० पर समाज भवन मे सम्पन्न हुआ। निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये।

श्री देवप्रसाद पाण्डेय प्रधान, श्री धनेन्द्रसिंह लोधी मन्त्री
श्री देवेन्द्र कुमार कोषाध्यक्ष।

—राची जिला आर्यसभा श्री बीरन्द्र कुमार शर्मा प्रधान श्री विश्वनाथ भगत मन्त्री भोलाराम सैनी कोषाध्यक्ष चुने गये।

उद्घाटन

श्री हरीबगस बसन्ती देवी लाहोटी चेरिटेबल ट्रस्ट' द्वारा होमियोपैथिक औषधालय का उद्घाटन, आर्य समाज के सर्वोच्च नेता, जीवनदानी, सन्यासी 'स्वामी आनन्द बोध सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के कर कमलो द्वारा होगा। सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक प० बालदिवाकर हस साथ होवे।

मुख्य अतिथि, सुप्रसिद्ध होमियोपैथ माननीय डा० बी. के. गुप्ता, प्रिसिपल, नेहरू होमियोपैथिक मेडिकल कालेज एण्ड हास्पीटल, नई दिल्ली होंगे।

होमियोपैथिक औषधालय के प्रभारी चिकित्सक डा० के जी. एस शर्मा बी. एस. सी., डी एच. एम. एस. होगे।

कार्यक्रम—रविवार १० जून, १९९० हवन-पूजन—प्रात. ९-३०। उद्घाटन—प्रातः १०-१५, स्थान—औषधालय भवन, गाधी चौक।

होमियोपैथिक चिकित्सा पद्धति पर सगोष्ठी।

प्रधानवक्ता—भारत के सुप्रसिद्ध होमियोचिकित्सक डा० बी. के. गुप्ता

स्थान—श्री गाधी बालिका विद्यालय गाधी चौक, सुजानगढ

समय—प्रातः १०-४५ से

सयोजक ब्रह्म प्रकाश लाहोटी

विनीत	निवेदक
ओम प्रकाश, राजकुमार, जय प्रकाश	रामेश्वर लाल, मदन लाल
दिलीप कुमार अनिल, राधा किसन	शिव भगवान, मुरलीधर लाहोटी
राकेश विकास, विवेक, सुमित लाहोटी	ट्रस्टीगण

आर्य वीरदल ब्रह्मचर्य व्यायाम प्रशिक्षण शिविर

आर्य वीर दल का शिविर २जून से १०जून तक राष्ट्रीय इन्टर कालेज शावण मे लगाया जा रहा है। जिसमे आर्य जगत के महान तपस्वी विद्वान ब्रह्मबल, छात्रबल, के प्रेरक डा० देवव्रत जी आचार्य, उपसचालक सा० आ० वीरदल, एव व्यायाम शिक्षको द्वारा बौद्धिक एव शारीरिक प्रशिक्षण दिया जायेगा।

धर्मवीरार्य, व्यायाम शिक्षक

आर्य वीर दल

३ से ३० जून तक आर्य समाज मऊ में आर्य वीरदल का प्रशिक्षण शिविर। १० से ११ जून को कोपाग ज(मेऊ)में आर्यवीर दल का सम्मेलन। १२ जून को बांकी बाजार मे आर्य वीर दल द्वारा जन-जागरण। २४ से ३० जून तक आर्य वीर दल का शिक्षक शिविर आर्य समाज आजमगढ़ द्वारा लगाया जा रहा है।

निर्वाचन

—जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा गोरखपुरकी साधारण सभा की बैठक अध्यक्ष प० शिवराज शर्मा की अध्यक्षता मे वार्षिक निर्वाचन हेतु आर्यसमाज असुरन वेद मन्दिर पर आयोजित हुई जिसमें निम्न पदो पर पदाधिकारी निर्वाचित हुए।

श्री प० शिवराज शर्मा पुरोहित अध्यक्ष, श्री रमेशप्रसाद गुप्ता महामन्त्री श्री जवाहरलाल शर्मा कोषाध्यक्ष।

—आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग बीकानेर श्री बहादुरमल जी प्रधान श्री उदयशंकर जी व्यास मन्त्री श्री सोहनलाल जी कोषाध्यक्ष चुने गये।

— आर्य समाज दयानन्द चौक गुलबर्गा कर्नाटक श्री के. करबसप्पा जी प्रधान श्री सुभाष मडको मन्त्री श्री नारायणराव कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज फैजाबाद श्रीमती दयावती प्रधान श्रीमती विजयलक्ष्मी मन्त्री श्रीमती कान्तिदेवी कोषाध्यक्ष चुने गये।

—गुरुकुल महाविद्यालय वैद्यनाथ धाम श्री राजेन्द कुमार पोद्दार प्रधान श्री गदाधर शास्त्री मन्त्री श्री विद्याभूषण प्रसाद कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज महर्षि दयानन्द नगर तलवन्डी कोटा श्री रामप्रसाद याज्ञिक प्रधान श्री हनुमान प्रसाद मन्त्री श्री भूलचन्द आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्यसमाज बदायू का चुनाव डा. नरेशचन्द आर्य प्रधान श्री रवीन्द्र कुमार मन्त्री श्री महेन्द्र कुमार उपमन्त्री श्री राजेश कुमार कोषाध्यक्ष श्री भानुप्रसादसिंह पुस्तकाध्यक्ष डा चैतन्य प्रकाश लेखानिरीक्षक चुने गये।

आर्य जगत् के समाचार

हरियाणा प्रान्त में आर्य वीर दल शिक्षण शिविर

(१) २१ से २७ मई, राजकीय उच्च विद्यालय नान्धा वाया बाढरा (भिवानी) शिक्षक-श्री रामफल एवं शेरसिंह आर्य।

(२) २५ मई से १ जून, आर्य मसंज स्कूल, भिवानी, शिक्षक-श्री हरिसिंह आर्य, प० रामरस आर्य।

(३) १ से ७ जून, आर्य नवज्योति विद्यालय कौल (कैथल), श्री हरिसिंह आर्य, श्री बृजमोहन आर्य।

(४) ४ से १० जून, आर्य समाज नारनौल, श्री कृष्णपाल आर्य, श्री हरिसिंह आर्य।

(५) १० जून से २५ जून, गुरुकुल झज्जर (रोहतक) शिक्षक-आचार्य डा० देवव्रत जी, सत्यवीर जी, कृष्णपाल जी, हरिसिंह जी (तथा अन्य) (सार्वदेशिक स्तर)

नोट—झज्जर शिविर मे केवल वही आर्यवीर भाग ले सकेंगे जिन्होने प्रथम वर्ष के शिविर का प्रशिक्षण लिया हो।

(प्रत्येक मण्डलपति अधिक से अधिक आर्यवीरो को इसमे भेजेगा।

वार्षिक उत्सव

"आर्य समाज, लहेरिया सराय का ६९वा वार्षिकोत्सव दिनाक १३ से १५-४-९० तक ससमारोह सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर शास्त्रार्थ महारथी आचार्य प० गगाधर शास्त्री, महोपदेशक, पटना। आचार्य प० सुकीर्तिमित्र शास्त्री, विद्यावारिधि, एम. ए (द्वय) दरभगा। आचार्य प० सदानन्द शास्त्री, मुख्याधिष्ठाता, गुरुकुल वैरगनिया, एव श्री शिवचन्द्र आर्य अपनी भजन मडली सहित पधारे थे। दो युवको का यज्ञोपवीत सस्कार हुआ। प्रचार का प्रभाव नगर-निवासियो पर अच्छा पडा।"

—भुवनारायण आर्य, मन्त्री (बिहार)

आवश्यक सूचना

आल इण्डिया दयानन्द साल्वेशन मिशन होशियारपुर स्कूलो तथा कालेज के विद्यार्थियो को छात्रवृत्तिया प्रदान करने के लिये दिनाक १५ जून १९९० तक प्रार्थना-पत्र आमन्त्रित करता है। यह प्रार्थना-पत्र अपनी सस्था के उच्च-अधिकारी से प्रमाणित करवा कर उपरिलिखित पते पर भेज दें।

—हरदयालसिह
प्रधान

बलिदान दिवस सम्पन्न

क्रान्तिवीर अमर शहीद श्री किसनराव टेके, माताश्री गोदावरी बाई, श्री विश्वनाथ राव तेली व मारुतिराव माठी इन आर्यवीरो का बलिदान दिवस दि० ४, ५, ६ मई १९९० को 'इट' (ता० भूम जि० धाराशिव) महाराष्ट्र मे बडे ही धूमधाम से मनाया गया। इसमें राष्ट्रमुक्ति नायक का सयोजन गुरुकुल रामलिग येडसी के प्रधानाचार्य—पू० आचार्य सुभाषचन्द्र जी बहुत ही कुशलता से किया था, उनके ओजस्वी प्रवचनो से तथा उनके ब्रह्मचारियो के वेदपाठ, गीत व भाषणो से जनता पर बहुत ही अच्छा प्रभाव पडा, जिसके फलस्वरूप कतिपय लोगो ने वैदिक पुस्तको का स्वाध्याय करने का, मासाहार व मद्यपान न करने का पवित्र सकल्प यज्ञवेदी पर किया और गुरुकुल येडशी को भी आर्थिक सहयोग देने का निश्चय किया।

दबाव डालने के लिये अमरीकी पादरियों और सेनेटरों का प्रतिनिधि मण्डल काठमाण्डू में

इन आश्वासनो के बावजूद नेपाल मे ईसाई और इस्लामी दबाव बढते जा रहे है। ईद मुबारक गणेशमानसिंह की धर्मनिरपेक्ष घोषणाए और ईसाइयो को न्याय' (इसका अर्थ एक ही है—हिन्दुओ को धर्मान्तरित करने की छूट) जैसी बाता के पीछे-पीछे अमरीका से एक बडा प्रतिनिधिमण्डल काठमाण्डू मे डेरा जमाए हुए है। प्रतिनिधिमण्डल मे अमरीकी चर्च सगठना मे वरिष्ठ पादरी तथा कुछ सेनेटर शामिल है। इनका उद्देश्य है धर्मान्तरण करने के आरोप मे बन्दी बनाये गये उन ईसाइयो को मुक्त करवाना, जिन्हे नेपाल के सर्वोच्च न्यायालयो मे प्रमाणो के आधार पर दोषी पाया था और सजा दी थी।

३ जून १९९० पाञ्चजन्य

शोक समाचार

आर्य समाज मेस्टन रोड, कानपुर के साप्ताहिक अधिवेशन मे श्री भगवानसिंह जी हजेले के असामयिक देहावसान पर शोक प्रकट किया गया तथा श्री हजेले जी के सम्बन्ध से डा० विजयपाल शास्त्री मन्त्री आर्य समाज ने शोक व्यक्त करते हुये कहा कि हम लोगो के मध्य से एक कर्मठ, समाजसेवी चला गया वे साप्ताहिक अधिवेशनो में प्राय आते रहे, अन्य कार्यक्रमो में सहयोग देते रहे।

—विजयपाल शास्त्री, मन्त्री

R N 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U 91 Post in D P S O on 76 19 0



शहीद परिवार फण्ड का २६वा वितरण समारोह २० मई १९९० को जालन्धर मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर ७,७०,०० रुपये की राशि ५६ आतकवादियो के शिकार परिवारों को सहायतार्थ वितरित की गयी। चित्र मे पजाब के राज्यपाल श्री निर्मल कुमार मुखर्जी इस अवसर पर प्रमुख अतिथि के एक विधवा को यूनिट ट्रस्ट आफ इण्डिया का प्रमाण-पत्र देते हुए दिखाई दे रहे हैं।



समारोह मे उपस्थित विधवाय

वेद प्रचार

महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचारा उद्देश्यो कायक्रमो तथा सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के त्रिसूत्रीय कायक्रम (मद्य निषेद गौहत्याबन्दी हिन्दी आन्दोलन) को ग्राम २ जन २ तक पहुचाने हेतु महात्मा विद्याभिक्षु वानप्रस्थ (विद्याराम आय) सिरसागज ने विश्वकल्याण परिषद की स्थापना गत अप्रैल सन् ९० मे की थी जिसको काय रूप मे परिणत के उद्देश्य से श्री प० मूलचन्द मिश्र रिटायर पोस्टर मास्टर मैनपुरी जिनका सारा जीवन आय समाज की सेवा मे रहा है की अध्यक्षता म एक जीप गाडी जिसको गेरुआ वस्त्रो से सजाकर जिनमे दोनो तरफ विश्वकल्यण का बैनर तथा ओ३म् का झण्डा लगा कर प्रचाराथ प० वेदपाल सगीताचाय प० प्रभु नसिह भजनो पदेशक स्व० प्रकाशानन्द गणशाचाय ऋषीकेश स्व० पूर्णानन्द जी आगरा कई वानप्रस्थी विनत १६ अप्र ल सन् ९० को सिरसागज (फिरोजाबाद) आय समाज के सदस्यगण गुरुकुल सिरसागज के छात्र दयादन्द बालमन्दिर का अध्यापिकाय नगर के प्रमुख गणमान्य महानुभावो के साथ नगर के समाज सेवी उद्योगपति डा० ओ मप्रकाश अग्रवाल ने फीता काट कर उद्घाटन किया।

सभा लोगो ने रथ के साथ झण्डागान फहरायेया २ प्यारा झण्डा ओ३म का नगर के बाहर रथ को प्रस्थान किया।

रथ सिरसागज से प्रस्थानकर नगर मे आय समाज मन्दिर सिकोहाबाद ने रोककर सभी रथ में बैठे हुये का माल्यापण तथा जलपान से भव्य स्वागत किया।

समीक्षा

श्री क्षितीश जी व०. राष्ट्रीय पत्रकारिता के पुरोधा

व्यक्तित्व एवं कृतित्व

मूल्य—१२५ रुपए

सम्पादक—श्री वीरेन्द्र कुमार आय नया युगपुरुष अजमेर-१

प्रस्तुत पुस्तक एक समालोचनात्मक अध्ययन हेतु महत्वपूर्ण है।

लेखक—यारो के यार, समीक्षक भी यारो का यार लेखो की गवेषणा पूण विचारो को पढ़ने के उपरान्त यारो के विचारो मे भी प्रेरणाप्रद परिवतन मिलेगा।

बहुमुखी-प्रतिभा के धनी शकल सूरत और बुद्धि मे आचाय की तुलना पर्याप्त होगी। राष्ट्रीय एव सामाजिक चेतना के प्रतीक व० क्षितीश जी अपने जीवन के ७४ वष (ज म दिवस) पर उनके व्यक्तित्व तथा कृतित्व का विश्लेषण इस पुस्तिका मे मिलगा।

दैनिक हिन्दुस्तान के सहसम्पादक के रूप मे साप्ताहिक सम्पादकीय अपने मे एक महत्वपूण स्थान रखता था। जिनका सग्रह पुस्तक रूप मे भी प्रकाशित किया है।

आप उच्चकोटि के निर्भीक सम्पादक के साथ स्पष्ट वक्ता भी है। स्वभाव स्नेहित है वैसे छोटे है ता नाम भी छोटेलाल था फिर क्षेत्रपाल के रूप में कुरुक्षत्र इन्द्रप्रस्थ से गुरुकुल कागडी के स्नातक हुए। तब क्षेत्र से क्षितीश वेदालकार के रूप में प्रकट हुए।

पवित्रता का मर्यादा से ओत प्रोत क्षितीश जी को सैकडो सैकडो ७४ वष वसन्त के अवसर पर शुभकामनाय दी गई हैं। इस अनुपम सग्रह को जो भी लेकर पढ गा वह निहाल हो जायेगा।

मै तो निहाल हो ही रहा हू क्योकि वह मेरे यार हैं—उनकी वैचारिक क्रान्तिमय इस पुस्तक को अपना उन्नति हेतु अवश्य हा पढ गा। वस्तुत वह पुरोधा है राष्ट्रीय पत्रकारिता के। मेरी भा इस पुस्तक के साथ शतायु होने की अतिशयकामना कि यह पुस्तक हजार हाथा मे जाय और जन कल्याण का माग प्रशस्त कर।

(२)

मानवता के नाम

ले०— प्रो० चन्द्रप्रकाश आय एम ए

अध्यक्ष स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग दयालसिंह कालिज करनाल

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक अच्छे विद्वान वक्ता विचारक हैं। आपके द्वारा लिखित मानवता क नाम पुस्तक एक सुवासित पुष्पो का गुलदस्ता है। जिसमे भिन्न विषया को एक स्थान पर सजोकर रखा है।

जिसमे व्यक्ति समाज एव राष्ट्र के साथ मानवता एव विश्वशान्ति इसके सन्देश वाहक बन है।

मानव मन आज जहा अपनी विषमताओ से क्षुब्ध है वहा मानव का आर्थिक विषमता भी असन्तोष का कारण बनी है।

साहित्य की सरचना से मानव के नैतिक उत्थान पतन का एव सास्कृतिक अभ्युदय उत्कष का लेखा जोखा लिया गया है इस प्रकार युग की अपेक्षा से साहित्य मनुष्य को मानसिक और शारीरिक दृष्टि से आर्थिक स्थिति को सवारने-सुधारने म भी युक्त हैं। भिन्न २ विषयो के साथ हिन्दी साहित्य की सरचना करके भा पुस्तक में नवीनता ला दी है।

अत विद्वान् प्रवक्ता लेखक का लेखनी व बुद्धि का तारतम्य एक साथ मिलता है।

पुस्तक उपयोगी बन पडी है विचारणीय व्यक्तियो का काम है कि विद्वान को प्रोत्साहन मिलें—हमारा वैभव बढ़े।

इस कामना के साथ— —सच्चिदानन्द शास्त्री मन्त्री

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित एवं सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्

सार्वदेशिक साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१ दयानन्दाब्द १६६ दूरभाष । ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष २९ अंक २१] आषाढ़ कृ० ९ सं० २०४७ १७ जून १९९०

वेदामृत

स्त्री से परिवार की समृद्धि

यन्त्री राड् यन्त्र्यसि यमनी ध्रुवासि धरित्री ।
इषे त्वोर्जे त्वा रय्यै त्वा पोषाय त्वा ॥

यजु० १४।२२॥

हिन्दी अर्थ—स्त्री परिवार का नियन्त्रण करने वाली, तेजस्विनी स्वयं नियन्त्रण मे रहने वाली और सबको नियम मे रखने वाली है। वह परिवार मे निश्चल भाव से रहने वाली और परिवार की धारक (पोषक) है। तुझे अन्न समृद्धि के लिए शक्ति के लिए, श्री-वृद्धि के लिए और घर की पुष्टि के लिए रखते हैं।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

बाबरी मस्जिद देश की प्रतिष्ठा पर धब्बा है

—सुन्दरलाल पटवा

इन्दौर, ११ जून मध्य प्रदेश के मुख्यमन्त्री सुन्दरलाल पटवा ने कहा है कि बाबरी मस्जिद देश की प्रतिष्ठा पर धब्बा है। यदि लोग इसे हटा कर अयोध्या में राम जन्म भूमि मन्दिर बनाना चाहते हैं, तो इसमें कुछ भी गलत नहीं है। श्री पटवा कल रात यहा हिन्दी दैनिक नई दुनिया की ४४वीं वर्षगांठ पर आयोजित समारोह मे बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि भारत के मुसलमानों को बाबर के प्रति निष्ठा नहीं रखनी चाहिए। वह अनेक हिन्दू मन्दिर नष्ट करने के लिए जिम्मेदार था। भारतीय संस्कृति के पाच हजार साल पुराने इतिहास का उल्लेख करते हुए मुख्यमन्त्री ने कहा कि देश के ज्यादातर मुसलमान मूलत हिन्दुस्तान के हैं। इसलिए भगवान राम को देश का पूर्वज मानने में कोई गलती नहीं है। उन्होंने कहा कि मुसलमान भी बाबर को अपना पूर्वज नही कह सकते है।

श्री पटवा ने यह टिप्पणी प्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री और समाज सेविका शबाना आजमी के भाषण के जवाब में की। इससे पहले शबाना आजमी ने कहा था कि देश मे कई मस्जिदें खराब हालत में हैं। लेकिन कुछ मुस्लिम कट्टरपन्थी केवल बाबरी मस्जिद पर जोर दे रहे हैं। इसी तरह कुछ हिन्दू भी अयोध्या मे मन्दिर बनाने के लिए शिलाए एकत्र कर रहे हैं, जब कि देश के सैकडो दूसरे मन्दिरो की चिन्ता किसी को नहीं है।

शबाना ने दोनों से इस तरह की गतिविधियो से दूर रहने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि पांच लाख गावों से पाच लाख शिलाए इकट्ठा करने की बजाय गांव की समस्याओ पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

श्री पटवा ने अपने भाषण मे कहा कि यदि पण्डित नेहरू, सरदार पटेल और डा० राजेन्द्रप्रसाद मुस्लिमों द्वारा नष्ट किए गए सोमनाथ मन्दिर को फिर से बनाने की मंजूरी दे सकते हैं, तो सैयद शहाबुद्दीन और सलाहुद्दीन ओवैसी को राम जन्म भूमि निर्माण का विरोध क्यों करना चाहिए। मध्यप्रदेश के राज्यपाल कुंवर महमूद अली का उदाहरण देते हुए उन्होने कहा कि भारत में अनेक मुसलमानों के पूर्वज हिन्दू हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हिन्दू और मुसलमान भाई-भाई हैं। झगड़ा मन्दिर या मस्जिद बनाने का नहीं है, बल्कि कुछ लोग अपने स्वार्थ के लिए इसे गलत ढंग से पेश कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि मन्दिर बनाने की कोशिश की जानी चाहिए। ताकि हमलावरो के हाथों खोई हुई देश की गरिमा वापस मिल सके। श्री पटवा ने कहा कि भारत में ऐसा कोई मुस्लिम नहीं है जो खुद को बाबर के परिवार का बताता हो।

सुजानगढ़ में लाहोटी परिवार द्वारा भव्य समारोह आयोजित

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा हरी बगस बसन्तो देवी लाहोटी होम्योपैथिक औषधालय का उद्घाटन

सुजानगढ १० जून।

लाहोटी परिवार की शुभस्य शीघ्रम के आधार पर अनेक प्रवृत्तिया सुजानगढ मे सदैव चलती ही रहती हैं। श्री रामेश्वर लाल मदनलाल, शिवभगवान मुरलीधर लाहोटी ट्रस्टियो ने पुरुषार्थ पुञ्ज स्वर्गीय सेठ श्री हरीबगस लाहोटी एव उनकी धर्म परायणा धर्मपत्नी स्व० बसन्ती देवी लाहोटी की स्मृति में होम्योपैथिक चेरेटेबल औषधालय सुजानगढ मे बनवाया और उसे भारत के सुप्रसिद्ध होम्योपैथिक डा० वी० के० गुप्त (दिल्ली) के परामर्श से औषधियो के साथ चिकित्सा सम्बन्धी आवश्यक कक्षो से सुसज्जित किया। दस जून को प्रात औषधालय भवन मे यज्ञानुष्ठान के पश्चात् श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने तुमुल जयघोषो के मध्य औषधालय का उद्घाटन किया।

तत्पश्चात् श्री गांधी बालिका विद्यालय गांधी चौक सुजानगढ में श्री ब्रह्मप्रकाश जी लाहोटी के सयोजकत्व मे होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति पर सगोष्ठी हुई। डा० वी० के० गुप्त ,का होम्योपैथिक चिकित्सा पर बडा ही सारगर्भित एव गवेषणापूर्ण भाषण हुआ। सभा भवन में पूर्ण शान्ति से दर्शको ने भाषण सुना और अनेक उपयोगी प्रश्न भी किए जिनका डा० गुप्ता ने समुचित उत्तर दिया। समारोह में श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती एव श्री बाल दिवाकर हंस प्रधान सचालक आर्य वीर दल ने भी प्रभावशाली विचार रखे और जन सामान्य को वेदधर्मानुयायी बनकर वेद पढ़ने की सलाह दी। साथ ही आप लोगो ने लाहोटी परिवार की शुभ प्रवृत्तियो में अपने धन का सदुपयोग करने पर उन्हे बधाई दी।

अन्त मे लाहोटी परिवार के सदस्यो ने आगत अतिथियो का पुष्पहारो से स्वागत करते हुए हार्दिक आभार प्रकट किया और साधुवाद कहा

सम्पादक—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सम्पादकीय—

कुएं में पड़ी भंग

भारत में एक साधारण पढ़ा लिखा सन्त पैदा हुआ जिसका नाम था कबीर ! सन्त ने दुनिया को उधर से इधर आते जाते जब देखा तो लिखा था कि—

कबिरा, माया, अटपटी सबके घट पड़ी।
एक दो होवें, समझावें, भाई कुए में भंग पड़ी।।

संसार बड़ा विचित्र है इसको समझाना भी अति कठिन है क्योंकि यह मानव माया के वशीभूत होकर सब कुछ भूल जाता है और फिर मनमाने काम करता है।

भारत एक आध्यात्मिक देश है और रहेगा भी। जितने देवी-देवता देवालय, तीर्थ स्थल और साधु सन्त इस देश में हैं उतने विश्व में कहीं भी नहीं हैं। इस समय पर जो जिस तेजी से इनकी संख्या में वृद्धि हो रही है उससे तो यही लगता है कि भारत का आध्यात्मिक होने का दावा अत्यन्त ही दमदार है। जिस भारत में विकास का नारा देकर. पं० जवाहरलाल समाजवादी ढंग से समाज की नई संरचना कर रहे थे। उसी सीमा और समय में एक नई देवी "सन्तोषी माँ" तथा एक नये सन्त पुरुष "सन्त साईं बाबा" का भी प्रादुर्भाव हुआ।

हवा से भभूत पैदा करके सन्त साईं बाबा से लेकर सिर पर पैर रखकर आशीर्वाद देने वाले "देवरहा बाबा" तक जितने प्रकार के चमत्कारी पुरुष प्रकट हुए और जिस बड़ी संख्या में छोटे-बड़े लोग उनके भक्त बने। इसे देखकर यह आशा जगती है कि आध्यात्मिकता का बोल बाला कबीर की माया को विच्छिन्न कर, हो रहा है।

जिस प्रकार सभी जगह भगवान का नाम लिया जा रहा है इस प्रकार से अब अनसुना कर सकना असम्भव है क्योंकि नाम लेने वाले लाउडस्पीकर लगाकर ऊंचे स्वर में चिल्लाकर बोल रहे हैं।

इसके साथ ही कबीर की भाषा में कहें तो भारत आज एक भौतिकवादी देश भी है। यहां व्यक्ति भगवान के आगे भी हाथ जोड़ता है तो किसी आशा और विश्वास के साथ ही। बीस आने पैसे चढ़ाता है तो यह मानकर कि सवा लाख की लाटरी दे देना प्रभु !

देवरहा बाबा की लात खाता है इसलिये, कि उसे विश्वास दिलाया गया है उसे नहीं, उसके विरोधियो को लगने वाली है। जितनी तेजी से भारत के शहरों और नगरों गांवों में इधर देवालयों की संख्या में वृद्धि हुई है इतनी ही संख्यामें मदमस्त मानव को और मस्त करने हेतु मदिरालयों की स्थापना की हुई है। यह विषय हैरानी का नहीं है क्योंकि जो लोग देवालयों के लिये सरकारी जमीन हड़प रहे हैं और मदिरालयों के लिये सरकारी ठेके दिला रहे हैं। उनका तो भगवान तक भोग विश्वासी है।

तो हमारे देश में आध्यात्मिकता के साथ-साथ भौतिकता भी खूब फल-फूल रही है। जिनके पास पहले साइकिल भी न थी उनके पास स्कूटर व कार हैं। गन्दी बस्तियों में नल भले ही न लगे हों। टी०वी० के एन्टीना जरूर लग चुके हैं।

महंगाई बढ़ रही है मगर दूकानों में ऐसी भीड़ है मानों वहां माल मुफ्त बट रहा है। नेहरू जी का समाजवादी तरीके का समाज लाइसेन्स, कोटा समाज बना और लाइसेन्स कोटा समाज लूट-खसोट समाज बना। लूट-खसोट की वृत्ति किस प्रकार हम लोगों में समा चुकी है, हमारे समाजवादी ढंग में समाज की दिन प्रतिदिन की बढ़ती सम्पन्नता के मूल में दरिद्रता का वीभत्स दर्शन निहित मिलता है। भुक्कड़पन दरिद्रता के मारे जाते रहे हैं।

प्रति व्यक्ति आयके हिसाब से सम्पन्नता में दूसरे नम्बर का देश अमेरिका के पास बहुत पीछे ठहरता है। विश्वका सम्पन्नता की दृष्टि से देशों की तुलना करने से एक अलग माप-दण्ड निकाला गया है। यदि अमेरिका की आय प्रति १००मानी जाय तब पश्चिम जर्मनी ८४ ठहरती है।

शायद अमेरिका को देखकर ही आध्यात्मिक भारत की भौतिक भूख-भोग से दुगनी तेज बढ़ गई है।

इस सप्ताह के पहले यह है कि आध्यात्मिक भारत के एक विश्वविद्यालय के दर्शन शास्त्र विभाग के वरिष्ठतम आध्यापक को जो विभाग के आध्यापक भी थे एक भयंकर शास्त्रार्थ छिड़ा हुआ था कि विश्वविद्यालय में आइन्दा से विभाग की अध्यक्षता का काम लोगों को बारी-बारी से दिया जाय। इस प्रकार जो भी अध्यक्ष बने, वह अपने कमरे पर अपना अधिकार जमाया। बीच-बचाव के लिये सभायें की गई उन पर एक पृथक् से ही शास्त्रार्थ छिड़ गया।

शास्त्रार्थ इस प्रकार है जिस देश में अमेरिकी कम्पनियों को शीतल पेय बनाने देना विदेशी संस्कृत के चंगुल में फंस जाने का प्रयास समझा जाता है उस देश में देशी कम्पनियों को अमेरिकी ढंग के शीतल पेय बनाने का हर प्रकार बढ़ावा दिया जाता है जिससे विश्व स्वास्थ्य संगठन कई वर्ष पहले स्वास्थ्य के लिये हानि-कारक घोषित कर चुका था। ११ अप्रेल १९८८ को और देशों की देखा देखी बी.वी.सी. ओयल भारत में भी चीजों के प्रयोग पर रोक घोषणा लगाने की कर दी गई। लेकिन इसके साथ ही शीतलपेय के निर्माताओं के अनुरोध पर दो वर्ष की छूट पर रोक लगा दी।

विक्रेताओं ने कहा कि अगर कम्पनियां माल वापस नहीं लेंगी तो हम इसी को बेचेंगे।

उपभोक्ता को कोई खतरा नही है—

तुरन्त कदम इसलिये नही उठाये कि हमें विश्वास था कि सरकार अपनी रोक पर भी रोक लगा देगी।

बताइये इससे भारत की महानता कैसे सिद्ध होगी।

आध्यात्मिक भारत में भोग-चौगुना बढ़ा और आध्यात्मिकता के नाम पर बढ़ा। भगवान के नाम पर भोग चढ़ाकर भूख चौगुनी कर ली।

सम्पन्नता में दूसरे नम्बर का देश कई भौतिकवादी देश हमसे बहुत आगे हैं।

आध्यात्मिक भारत के एक विश्वविद्यालय के दर्शन शास्त्र विभाग में भयंकर शास्त्रार्थ छिड़ा कि अध्यक्षता का काम बारी-बारी से दिया जाय। विश्वविद्यालय में निर्णय हुआ कि बारी आने पर कमरा उसे ही दिया जाय। दो गुट बने, कब्जा करने के लिये। बीच-बचाव के लिये विश्व विद्यालय ने जो सभायें बुलाई उसमें शीतल पेय में ऐसे तत्व भी दिखाये गये जिसे लेकर एक अलग शास्त्रार्थ छिड़ गया। पेय के साथ इस पर विवाद नहीं।

भौतिकता प्रधान देश आध्यात्मिकता से आगे धर्मतत्व से भोग-तत्व प्रधान है।

मानव-मानवता के नाम पर भौतिकता प्रधान बन रहा है भोग दुगना चौगुना हुआ चूंकि भूख चौगुनी हुई आध्यात्मिकता के नाम पर या भौतिकता के नाम पर—इसीलिये कबीर ने कहा—

माया सबके घट्ट पड़ी।

आर्य जनता सावधान

श्री जयप्रकाश आर्य के पुत्र के नाम से भारत की विभिन्न आर्यसमाजों को जयप्रकाश की बीमारी तथा हमला कर घायल होने के कारण सहायता हेतु परिपत्र भेजा गया है। यह परिपत्र सार्वदेशिक सभा को आर्य समाजों से प्राप्त हुई है।

समस्त जनता को सूचित किया जाता है कि जयप्रकाश आर्य बिल्कुल ठीक हैं उन पर कोई हमला नहीं हुआ और सार्वदेशिक सभा की ओर से ५०० रु० (पांच सौ रुपये) मासिक निरन्तर सहायतार्थ दिये जा रहे हैं और आर्य समाजों के कार्यक्रम भी कर रहे हैं। पिछले दिनों जयप्रकाश आर्य सभा कार्यालय पर और जयपुर सम्मेलन में भी पधारे थे। आर्य जनता भ्रमित न हो इसलिए यह विज्ञप्ति प्रकाशित की जा रही है।

—सु० सच्चिदानन्द शास्त्री सभा-मन्त्री

यह समय अन्तर्निरीक्षण का है दोष-दर्शन का नहीं

पद्मश्री श्री क्षेमचन्द्र सुमन दिलशाद गार्डन दिल्ली

गुरुकुल महा विद्यालय ज्वालापुर के सुयोग्य स्नातक, एव साहित्यकार पद्मश्री विद्यावाचस्पति श्री क्षेमचन्द्र सुमन के व्यक्तित्व एव कृतित्व से हिन्दी जगत में सभी भली-भाति परिचित हैं। आपके कृतित्व से जहा हिन्दी साहित्य परिपूर्ण हुआ उसमें काव्य निबन्ध समीक्षा इतिहास पत्रकारिता आदि अनेक विधाओ पर नाना साहित्य की रचनाकर हिन्दी भण्डार को समृद्ध किया है।

आजकल अस्वस्थ होते हुए भी दिवगत साहित्य सेवी सन्दर्भ ग्रन्थ का प्रणयन कर अभूतपूर्व अनुष्ठान किया है।

स्वामी दयानन्द से उपलब्ध सस्कार गुरुकुलीय जीवन से रचित व्यक्तित्व से आप स्वभाव से आर्यसमाज के विचारो से आप्लावित है। पर आर्यसमाज की कुहल राजनीति से आपको कोई रुचि नहीं है।

परन्तु विस्तर पर पडे २ आर्य समाज के पत्रो को पढते हुये आर्यसमाज के अस्तित्व और उसके द्वारा महत्वपूर्ण सम्पादित कार्यों मे आने वाली बाधाओ को पढ कर आप विचलित हो उठते हैं। इसी से लेखनी शान्त न रहकर मचल उठी और यह लेख उसी पीडा का परिणाम है।

आर्यजन एक आय के विचारो पर मनन करें।

—सम्पादक

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब श्री वीरेन्द्र जी द्वारा पजाब सभा के मुख पत्र साप्ताहिक 'आर्य मर्यादा' में प्रकाशित उनका 'सार्वदेशिक सभा की परीक्षा की घडी' शीर्षक जो लेख २४ सितम्बर १९८९ के अक मे प्रकाशित हुआ है, उसमे उन्होने सार्वदेशिक सभा के उन निर्णयो के प्रति अपनी असहमति प्रकट की है जो गोहत्याबन्दी, शराब बन्दी और अग्रेजी के स्थान पर हिन्दी को लाने के सम्बन्ध में किया था। अपने इसी लेख मे उन्होने यह भी सकेत किया है कि देश के सामने इन समस्याओ के अतिरिक्त बहुत से अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न हैं जिनकी ओर सार्वदेशिक सभा को ध्यान देना चाहिये। उनका यह विचार है कि सार्वदेशिक सभा निर्णय तो कर लेती है किन्तु उसका कार्यान्वयन समुचित रीति से नही हो पाता। उन्होने अपने उक्त लेख से यह पीडा भी व्यक्त की है कि हम हिन्दी को अग्रेजी के स्थान पर लागू करना चाहते हैं परन्तु आज आर्यसमाज के ही अपने सस्थाओ में अग्रेजी को अधिक महत्व दिया जारहा है। हमने छूत-छात समाप्त करने के लिए अपनी ओर से पूरा जोर लगा दिया था, परन्तु फिर भी आज हरिजन अपने को हिन्दू स्वीकार नही करते। जहा तक हमारी सरकार का सम्बन्ध है, वह आर्य समाज को महत्व नही देती।'

इस सम्बन्ध मे मेरा निवेदन है कि श्री वीरेन्द्र जी जरा ठण्डे दिल से सोचे और आर्यसमाज के अतीतकालीन इतिहास पर दृष्टि डाले तो उन्हे यह नि सकोच स्वीकार करना पडेगा कि आर्य समाज ने केवल अपने बूते पर राष्ट्रीय और सामाजिक समस्याओ के समाधान के लिये अनेक लोकोपकारी योजनाए बनाई और उनका क्रियान्वयन भी किया था। उसने कभी भी शासन की ओर नही देखा बल्कि उसकी आलोचना ही की। शासन की नीति तो तुष्टीकरण की ही होती है। आर्य समाज सदैव माग दर्शक रहा है किसी भी शासन का अनुचर नही। ऐसी स्थिति में वह सार्वदेशिक सभा के अधिकारियो से यह आशा कैसे करते हैं कि वे शासन के मुखापेक्षी हैं? उन्हें तो स्वत ही अपना मार्ग बनाना है। और मैं समझता हू कि इस दिशा मे सार्वदेशिक सभा का जब जब भी समय आया तब तब ही शासको और समाज दोनो को इस सम्बन्ध मे चेतावनी दी है।

बात यहा तक ही नहीं है। श्री वीरेन्द्र जी ने वर्ष २२ अक ४-५ और ६ के आर्यमर्यादा मे प्रकाशित अपने इस घर को आग लग गई घर के चिराग से शीर्षक लम्बे धारावाहिक लेख मे अपनी पीडी व्यक्त करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती से त्याग-पत्र देने की माग करते हुए यह विचार भी प्रकट किया कि हमारा वैदिक यती मण्डल सार्वदेशिक सभा के कार्यभार को क्यो नही सम्भाल लेता? उन्होने लिखा है 'उनकी स्थिति उस व्यक्ति की सी है जिसकी आखो के सामने उसका घर जल रहा हो और वह बैठा तमाशा देख रहा हो। और हमारे सन्यासी देख नही रहे हैं कि आर्य समाज की क्या स्थिति हो रही है? क्या इसमे उनका कोई कर्तव्य नहीं है? मैं जानता हू कि यती मण्डल के अध्यक्ष श्रद्धेय पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का अनुभव इस विषय मे बहुत कटु है, जब उनके अपने ही शिष्य ने उनके हाथ मे त्याग-पत्र देकर बाद मे उसकी अवहेलना कर दी तो अब सभवत स्वामी जी समझते हैं कि वह किसकी और से क्या कहे... । इसलिए मै वैदिक यती मण्डल के अध्यक्ष व दूसरे सन्यासी महात्माओ से नम्र निवेदन करना चाहता हू कि अभी भी समय है कि वह आर्य समाज को बचावें।'

मैं आर्यसमाज का एक अकिचन सा सेवक हू। मेरे जीवन का अधिकाश समय आर्यसमाज की गतिविधियों को जानने और समझने और उनसे प्रभावित होने में ही व्यतीत हुआ है। इतने पर भी मैं किसी सस्था का सक्रिय सदस्य नहीं हू। न मुझे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की राजनीति से कोई लेना देना है। मैं तो देश और समाज के हित मे आर्य समाज के अस्तित्व और उसके द्वारा समय समय पर चलाए जाने वाले आन्दोलनो को अत्यन्त अनिवार्य और आवश्यक मानता हू। मेरी यह भी मान्यता है कि आर्य समाज ही देश में ऐसी सस्था है जिसकी क्रान्तिकारी विचारधारा और उसके द्वारा प्रचारित विभिन्न कार्यकलापो के कारण ही अतीत काल म देश मे जागृति हुई और आज भी इसका सगठन देश की किसी भी सास्कृतिक सस्था के मुकाबले इक्कीस ही ठहरता है, उन्नीस नही। इतिहास इसका साक्षी है जब जब आर्य समाज के मच से देश की विभिन्न प्रवृत्तियो मे योग देने की पुकार हुई तब तब आर्य समाज पीछे नही रहा।

श्री वीरेन्द्र जी ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वर्तमान अध्यक्ष और उनके द्वारा किये जा रहे विभिन्न लोकोपकारी कार्यों मे क्या कमी अनुभव किया जिसके कारण उन्हे यह सब लिखने को विवश होना पडा। मैं आर्य समाज के विभिन्न वैचारिक आन्दोलन को दूर से बडी तटस्थ दृष्टि से देखता रहा हू और मैंने यह अनुभव किया है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने कभी भी समय कोई ऐसा कार्य नही किया जिस पर उगुली उठाई जा सके। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पिछले ३-४ वर्षो के विवरण मेरे इस कथन के ज्वलन्त साक्षी है। यदि वीरेन्द्र जी भी अपने धारावाहिक लेख को लिखने से पूर्व इन विवरणो का गम्भीरता से पारायण कर लेते तो उन्हे विदित हो जाता कि सार्वदेशिक सभा क्या कार्य कर रही है।

जहा तक सार्वदशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के त्याग पत्र का प्रश्न है उस सम्बन्ध म पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के आदेश पर उन्होने तत्काल त्याग पत्र दिया था। किन्तु इस त्याग पत्र के उपरान्त स्वामी सर्वानन्द जी ने अपने २३-३-८८ के पत्र मे स्वामी आनन्द बोध जी को यह आदेश दिया था कि आर्य समाज के हित का ध्यान रखते हुए आप अपना कार्य पूर्ववत करते रहे। स्वामीजी का उक्त पत्र सार्वदेशिक साप्तातिक मे प्रकाशित हुआ था, श्री वीरेन्द्र जी ने भी उसे अवश्य देखा होगा।

जहा तक सार्वदेशिक सभा के कार्यो का प्रश्न है, उनमे से कुछ का सक्षिप्त विवरण दे रहा हू इससे स्वामी आनन्दबोध सरस्वती और उनके सहयोगी सार्वदेशिक सभा के कार्यकर्ताओ को कर्मठता और कार्य कुशलता का सम्यक परिचय मिल सके—

(१) धर्मरक्षा महाभियान एक महान उपलब्धि है, आर्य समाज के इस

महाभियान ने देश मे नई विचारधारा को प्रोत्साहन दिया और अनेक मोलवी और पादरी वैदिक धर्म मे प्रविष्ट हुए।

(२) देश में इस्लामीकरण की लहर को रोकने के लिए मीनाक्षी पुरम का सम्मेलन दक्षिण भारत में आर्य समाज के मार्ग का मुख्य द्वार ही नही बना अपितु इस सम्मेलन ने पूरे भारत मे हरिजनो को अपने स्वाभिमान का अहसास कराया।

(३) देश में ईसाईकरण की लरह को रोकने के लिये आर्य समाज द्वारा आदिवासी क्षेत्रो मे बनवासी सम्मेलनों के जो लगातार आयोजन हो रहे हैं, वह सार्वदेशिक सभा और उसके प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के कार्यों को मुख्य देन है। इन सम्मेलनो द्वारा कई हजार ईसाई शुद्ध हुए हैं।

(४) कुछ वर्ष पूर्व पोपपाल की भारत यात्रा मे एक लाख हिन्दुओ को ईसाई बनाने की योजना को रोका ही नही अपितु स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कालाहाण्डी मे उसी दिन २५०० ईसाईयो को शुद्ध करके पोपपाल को उत्तर दे दिया।

(५) राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन के प्रस्ताव पर तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी ने राष्ट्रपति भवन में मस्जिद बनाने की अनुमति दे दी थी इसे भी आर्य नेता रामगोपाल शालवाले ने रुकवाया था।

(६) १९३८-३९ आर्य सत्याग्रह आन्दोलन को सरकार द्वारा स्वतन्त्रता आन्दोलन घोषित कराकर उसके सेनानियो को सम्मान पेंशन दिलाने का श्रेय स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तथा सार्वदेशिक सभा को ही है।

(७) मदुरई में दो लाख रुपये मे भूमि क्रय करके आर्यसमाज का प्रचार केन्द्र सार्वदेशिक सभा द्वारा स्थापित करना, कोई साधारण काम नहीं है।

(८) आसाम नागालैण्ड, राजस्थान और मध्यप्रदेश के आदिवासी क्षेत्रो मे दयानन्द सेवाश्रम सघ के माध्यम से सेवा सहायता कार्य हो रहे है।

(९) दिल्ली मे गोशाला की स्थापना करने के लिये कई एकड भूमि प्राप्त करना और उसके निर्माण की योजना का कार्यान्वयन बहुत बडा कार्य है।

(१०) वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार हेतु सार्वदेशिक सभा द्वारा नये नये साहित्य का प्रकाशन चारो वेदो की हजारो प्रतियो का वितरण।

(११) देश की अन्य सामाजिक सस्थाए विशेष की थैलियो तक सीमित हैं, किन्तु सार्वदेशिक सभा का सबल सगठन शताब्दी की ओर बढ रहा है।

(१२) देश विदेश मे पिछले कुछ वर्षों में अनेक आर्य महासम्मेलन सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान मे हुए। सार्वदेशिक सभा के प्रधान तथा उप प्रधान प० वन्देमातरम स्वय विश्वधर्म सम्मेलन मे भाग लेने जर्मनी गये थे।

(१३) अभी जगतगुरु शकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द जी को गिरफ्तार किया गया था, सार्वदेशिक सभा के प्रधान की चेतावनी के बाद सरकार ने उन्हे रिहा कर दिया।

इस प्रकार के कार्यों की तालिका लम्बी है। सार्वदेशिक सभा, स्वामी आनन्दबोध और सभा के अधिकारिया ने बहुत सारे लोकोपकारी कार्य किये है, जिन्हे भुलाया नही जा सकता है। आर्य समाज का कोई व्यक्ति यदि अवैदिक कार्य करता है अथवा किसी मजार पर चादर चढा सकता है तो आर्य समाज के प्रति उसकी सैद्धांतिक निष्ठा को एक पलडे पर कैसे तोला जा सकता है।

यह अत्यन्त हर्ष और सौभाग्य की बात है कि आज देश जिन परिस्थितियो से गुजर रहा है और चारो ओर अराजकता का भीषण नर ताडव हो रहा है, उनके प्रति भी सार्वदेशिक सभा के अधिकारी अत्यन्त जागरुकता से उसके समाधान के प्रति भी सतत् प्रयत्नशील हैं और समय समय पर शासन को भी सावधान करते रहते है।

मेरी सम्मति मे यह समय दोष दर्शन का नहीं, आत्म-निरीक्षण का है। जो अपील श्री वीरेन्द्र जी ने समस्त आर्य जगत से की है, यदि उसके प्रति वह स्वय भी आत्म निरीक्षण करे तो इसका उत्तर वह स्वय पा लेंगे। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब का त्रिशताब्दी उनकी प्रेरणा और उपस्थिति में हुआ किन्तु आज तक त्रिशताब्दी के आदेशो के अनुसार चल अचल सम्पत्तियों का बटवारा वह नही कर पाए और अब तो वह त्रिशताब्दी के आदेशों को भी भूल रहे है। उन्हें स्वय इसके आदेशो के अनुसार कार्यान्वयन की पहल करनी चाहिए, जहा कोई मतभेद हो, उन्हे बैठकर पारस्परिक विचार विनिमय के द्वारा दूर करने का प्रयास करना चाहिए।

जो अपेक्षा वह सार्वदेशिक सभा से करते हैं क्या वह आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के द्वारा उसका शुभारम्भ नही करा सकते ? सार्वदेशिक सभा ने अतीतकाल मे आर्य समाज के बहुत से आतरिक झगडो को सुलझाया था और जब जब भी आवश्यकता हुई देश के हित में वह कैसा भी आदोलन छेडने से पीछे नही रहे। यह सार्वदेशिक सभा के सतत प्रयास का ही फल है कि गुरुकुल कागडी जैसी राष्ट्रीय सस्था को अराजकवादी तत्वो से मुक्त कराया (जिसके लिए स्वामी आनन्दबोध ने आमरण अनशन भी किया था)। आज वह सस्था अपने पूर्व गौरव प्राप्ति के मार्ग पर अग्रसर है। इन सबके पीछे किसी एक व्यक्ति का नही अपितु समस्त आर्य जगत् की सद्भावनाए एव शुभकामनाए तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के विवेकी अधिकारियो का सतर्कतापूर्ण निर्देश ही महत्वपूर्ण रहा है।

मैं जानता हू कि श्री वीरेन्द्र जी के परिवार का आर्य समाज के प्रति अटूट प्रेम है दृढ आस्था है, और कदाचित् इसीलिए उन्होंने यह लेखमाला लिखी है। यह समय खण्डन का नहीं मण्डन का है दोष दर्शन का नहीं अपितु आत्म निरीक्षण का है। जबकि देश की सारी सस्थाए पारस्परिक मतभेदो के कारण विनाश के कगार पर खडी हैं, तब क्या कम आश्चर्य की बात नही है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा विभिन्न राजनैतिक, सास्कृतिक और सामाजिक समस्याओ के समाधान के लिए जन जागरण अभियान चलाने के साथ-साथ समय समय पर शासन से भी लोहा लेती रहती है।

मेरा बन्धुवर वीरेन्द्र जी से यह अनुरोध है कि जिस आर्य समाज और गुरुकुल के निर्माण तथा विस्तार मे उनके स्वनामधन्य पिता महाशय कृष्ण ने अतीत काल में अपना अमूल्य योगदान दिया था, उस गौरव की रक्षा के निमित्त वह आत्मनिरीक्षण करें और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की आलोचना करने की अपेक्षा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उस अतीतकालीन गौरव की पुर्नस्थापना करें जिसके लिए उनके पिता, सदा सर्वदा तैयार रहते थे।

शैतानी कलाम की भर्तसना नहीं थैचर सरकार का इरान को जवाब

लन्दन, ४ जून। बरतानवी प्रधानमन्त्री श्रीमती मारग्रेट थैचर ने ईरान के इशारे के उत्तर मे मजहब इस्लाम के प्रति आदर प्रगट किया है और कहा है कि बरतानिया ईरान के साथ सफारती सम्बन्ध का इच्छुक है याद रहे कि शुक्रवार को एक ईरानी अधिकारी ने कहा था कि तहरान सुलेमान रशीदी के खिलाफ मौत का फतवा वापिस ले सकता है बशरते कि बरतानिया रशीदी की बदनाम नावल की निन्दा करे और इस तरह दोनो देशो के सम्बन्ध खुशगवार हो सकते हैं। ताहम श्रीमती थैचर ने बी. बी. सी. के दूरदर्शन के नैट वर्क पर कहा कि बरतानिया रशीदी की नावल "शैतानी कलाम" की मुजहमत नही करेगा बल्कि इन्होंने मुसलमानो से माग की कि वह इस नावल पर अधिक जोर न दें" जिसे तोहीन ए इस्लाम का मरतक करार दिया गया है। ईरान ने वाजह किया है कि दोनो देशो के मध्य सफारती सम्बन्ध और लिबनान में कैद बरतानवी पर उलमाओ की रिहाई में सम्बन्धित नावल सबसे बडी रुकावट है—इन इन्टरव्यू मे श्रीमती थैचर ने कहा कि ईरानी अफसर की पेशकश एक खुशआमिद बात है—

इनसे प्रश्न किया गया कि क्या वह उन बन्धुओं की रिहाई के लिए ज्यादा पुर उम्मीद हो गयी है तो इन्होंने कहा कि मैं झूठी उम्मीद बांधनी पसन्द नही करती फिर भी एक उत्तम इशारा है हम जो कोई बात कायदा से कर सकते है वह यह है कि इस्लाम के लिए जबरदस्त इज्जत रखते हैं जितनी मुमकिन हो जाय-हम अपने देश मे तकरीर की आजादी को नही रोक सकते इसी तरह सम्बन्धित अधिकारी ने इस अखबारी समाचार की तकदीर की है कि ईरान ने रशीदी के विरुद्ध मौत का आदेश वापिस ले लिया है—श्री हुसैन मुसाविया ने कहा कि किसी सरकारी अफसर या इन को मजकोर फतवा को वापिस लेने का अधिकार नही।

(५-६-९० के प्रताप के सौजन्य से)

धर्म और अधर्म

आचार्य महाशय पण्डित रामचन्द्र देहलवी

धर्म

जिसका स्वरूप ईश्वर की आज्ञा का यथावत पालन और पक्षपात रहित न्याय सर्वहित करना है, जो कि प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सुपरीक्षित और वेदोक्त होने से सब मनुष्यों के लिए यह ही एक मानने योग्य है, उसको धर्म कहते हैं।

आइये, हम धर्म और अधर्म के स्वरूप पर विचार करें और सदैव धर्माचरण करने का निश्चय करें।

श्री स्वामी दयानन्द जी महाराज ने धर्म का लक्षण करते हुए सबसे पूर्व ईश्वर की आज्ञा का यथावत पालन करना आवश्यक समझा जिससे ईश्वर का मानना स्वतः सिद्ध है। उस ईश्वर को न मानने वाला इस लक्षण के अनुकूल धर्मात्मा नहीं समझा जा सकता।

बहुधा ऐसे मनुष्य दुनिया में मिलेंगे, जिनका ईश्वर में विश्वास नहीं परन्तु वे भी सृष्टि-नियमों को मानते और उन पर चलते हैं। ऐसे पुरुष पूर्ण धर्मात्मा नहीं कहे जा सकते, चूंकि उन्होने नियामक के आवश्यक अंग को नहीं माना जिसके बिना किसी भी नियम का निर्माण होना असम्भव है।

अनुमान-प्रमाण विशेषकर मनुष्य के लिए ही है जो कारण से कार्य और कार्य से कारण का अनुमान करके अपने कार्यों की सिद्धि करता है। प्रत्येक समय यह आवश्यक नहीं कि कार्य और कारण दोनों की प्रतीति एक ही साथ हो। यदि दुनियां में कहीं ऐसा नियम होता कि दोनों एक ही साथ होते तो अनुमान-प्रमाण की आवश्यकता ही न होती। जैसे बादलों को देखकर होने वाली वर्षा का और हुई वर्षा को देखकर उसके कारणरूप बादलों का अनुमान होता है, इसी प्रकार दुःख को देखकर पाप-कर्मों का और पाप-कर्मों को देखकर दुःखों का अनुमान होता है। यदि कोई दु:खों को देखकर पाप-कर्मों का अनुमान करें और सन्तान को देखकर माता-पिता का तो उसको पूर्ण ज्ञानी नहीं कह सकते। इसी प्रकार यदि कोई सृष्टि नियमों को देखकर और स्वीकार करके भी उनके नियामक को स्वीकार न करे, तो वह भी पूर्ण ज्ञानी न समझा जावेगा। और जो पूर्ण ज्ञानी ही नहीं, वह पूर्ण धर्मात्मा ही कैसे हो सकता है? चूंकि धर्मात्मा के लिए ज्ञानपूर्वक कर्मों ही की तो प्रधानता है।

यदि कोई यह शंका करे कि ईश्वर ने कानून तो बना दिया पर वह अब कुछ नहीं करता और न आगे करने की आवश्यकता है। प्रत्येक कार्य उस ही नियम के अनुसार होता चला आ रहा है। और आगे भी होता रहेगा तो क्या हानि? इसका उत्तर यह है कि कानून स्वयं कुछ नही कर सकता जब तक कि चेतनकर्ता उसको अमल में न लावे, जैसे कि (ताजीरात हिन्द) किसी अपराधी का कुछ नहीं कर सकती, जब तक पुलिस उसको पकड़ कर जज के सामने पेश न करे और जज उसको उसके अपराध के अनुसार दण्ड न दे दे। इसी प्रकार परमात्मा का कानून भी ईश्वर के स्वयं अमल में लाये बिना कुछ नही कर सकता।

जो ईश्वर को कानून का बनाने वाला तो मानते हैं लेकिन चलाने वाला नहीं मानते उनको यह विचारना चाहिए कि जिस बुद्धि के कानून का निर्माण किया है, वह ही बुद्धि उसको चला सकती है। प्रकृति जड़ होने से स्वयं न कोई कानून (नियम) बना सकती है और न किसी के बनाये नियम पर स्वयं स्वतन्त्रता से चल सकती है। जीवात्मा भी अल्पज्ञ होने से बिना ईश्वर से शरीर तथा ज्ञान प्राप्त किये न कोई नियम बना सकता है न चल तथा चला सकता है। जीवात्मा इस प्रकार की ईश्वरीय सहायता प्राप्त करके भी जो नियम बनाता या चलाता है उसको भी वह अन्य पुरुषों की सहायता से ही कार्यरूप में परिणत करता है। कई स्थानों पर स्वयं अल्पज्ञ और अल्पशक्ति होने के कारण अपनी इच्छा के विरुद्ध फल की प्राप्ति और असफलता का पात्र बनता है। जैसे आपने देखा होगा। कभी-कभी बिना किसी इच्छा के स्वयं ठोकर लग जाती तथा भोजन करते समय दांतों के तले जीभ आकर कष्ट देती है; जिससे कि यह सिद्ध है कि कभी-कभी जीवात्मा अपने शरीर पर भी पूर्ण अधिकार नहीं रख पाता। पर परमात्मा सर्वज्ञ और सर्व शक्तिमान होने कारण इकला ही सब नियमों बनाता और स्वयं उन्हें चलाता है यह हममें और परमात्मा में भेद है।

अब प्रश्न उठता है कि ईश्वर की आज्ञा कौन सी मानी जाय? मुसलमान भाई कहते हैं कि कुरान ईश्वर का हुक्म है। ईसाई बाइबिल को खुदा की पुस्तक बतलाते हैं, इस ही तरह अन्य मजहब भी। परन्तु इन सब की पुस्तकों में परस्पर भेद और विरोध होने के कारण सबको ईश्वर की आज्ञा नहीं कहा जा सकता। ईश्वरीय आज्ञा वह ही हो सकती है जो ईश्वर की भांति सार्वभौम हो, एक देशी न हो। अर्थात् सब मनुष्यों के लिए हितकर हो, किसी विशेष देश या जाति का पक्षपात न हो, तथा उसके दया, न्यायादि गुणों के विरुद्ध न हो, अर्थात् वेदानुकूल हो।

पक्षपात रहित न्याय

यह बहुत कम देखा जाता है कि मनुष्य न्याय करे और न पक्षपात रहित हो। मनुष्य अल्पज्ञ और अल्प शक्तिमान होने के कारण कई दोषों से युक्त होता है। धन का लालच, रिश्तेदारी, मित्रता, दूसरे का भय और मोह आदि उसको पूर्ण न्याय नही करने देते। ईश्वर इन त्रुटियों से रहित होने के कारण पक्षपात रहित न्याय करता है। अत: जो पुरुष ईश्वरीय गुणों के अनुकूल अपने गुण बनाकर संसार में कार्य करता और अपने जीवन को व्यतीत करता है वह एक समय पूर्वोक्त सम्पूर्ण दोषों से मुक्त होकर पक्षपात-रहित न्याय करने लग जाता है। पक्षपाती पुरुष अपना दायरा अत्यन्त संकुचित रखता है। वह केवल अपने में या जिसके साथ वह पक्षपात करता है, उस ही तक सीमित रहता है। परन्तु पक्षपात रहित कर्म करने वाला यजुर्वेद के—

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्नेवानुपश्यति।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न वि चिकित्सति॥

(यजु० ४० मन्त्र ६)

अनुसार अपने को सब प्राणियों में और सब प्राणियों को अपने में समझता है। एक देशी जीवात्मा के लिए यह असम्भव है कि वह ईश्वर की तरह सब वस्तुओं में व्याप्त हो जाय। उसके लिए एक यह ही प्रकार है कि वह अपने को "सर्वप्रिय" "सर्वहितकारी" बना सके, यह ही इसकी सर्वव्यापकता है।

जिस न्याय में किसी का अहित न हो, वह पक्षपात-रहित न्याय है। इसका दूसरा नाम सर्वहित है। ईश्वर इतना गम्भीर है कि दिन-रात सबका न्याय करता हुआ भी प्रत्येक जीव के हित को लक्ष्य में रख एक जीव को बुरे कर्मों को दूसरे पर प्रकट नहीं करता, चूंकि वह जानता है कि बुराई के छुड़ानेमें ऐसी बात साधक नही होती, अपितु बाधक होती है। जो जीव धर्म का आचरण करना चाहे, उसको "सर्व हितकारी" अवश्य होना चाहिए। प्रायः देखा

जाता है कि मनुष्य एक दूसरे की निन्दा करने के लिए घर-घर मारे-मारे फिरते हैं और उनको तब तक चैन नही पड़ता, जब तक दस-बीस स्थानों पर किसी की निन्दा न कर आवें। परन्तु वे यह नही विचारते कि ऐसा करने से किसी का भी कोई हित नही होता, बल्कि अपनी ही आदत खराब होती है, और परस्पर रागद्वेष की वृद्धि होकर वैमनस्य बढ़ता है।

स्वार्थी पुरुष भी पूर्ण न्याय या सर्वहित नही करता। वह अन्यों के लाभ की अपेक्षा स्वार्थ को अधिक मूल्यवान समझता है और दूसरे के बड़े-बड़े लाभ को अपने तुच्छ से तुच्छ लाभ पर कुर्बान कर देता है। बहुत से मतो के प्रवर्तकों ने अपने मान और प्रतिष्ठा के अपनी न्यूनताओं (कमजोरियों) को भी अपने अनुयायियों का एक धार्मिक नियम बना दिया और कौम की आगे होने वाली उन्नति में एक जबर्दस्त रोड़ा अटकाया, जिसके फलस्वरूप आज कुछ लोग "शारदा एक्ट" जैसे आवश्यक और अत्युपयोगी कानून को भी अपने मजहब के विरुद्ध मानकर उसका विरोध करते और कहते हैं हमारे पूर्वज इस प्रकार की कम उम्र वाली कन्याओं से शादी कर गये हैं, अतः यह कानून उनके विरुद्ध होगा, इसलिए हम नही मान सकते। इसके विरुद्ध ऋषि लोग ईश्वरभाव से प्रेरित हो तथा सर्वहित को लक्ष्य में रखकर जो कुछ कार्य कर गये, वह उन सम्पूर्ण दोषों से रहित था, जिनसे सामान्य पुरुष प्रायः शीघ्र मुक्त नही हो पाते।

प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सुपरीक्षित

प्रत्यक्षादि प्रमाण जो आगे आयेंगे, उनकी व्याख्या वहां की जावेगी। यहां केवल यह ध्यान रखना चाहिए कि किसी चीज के लिए परीक्षा द्वार बन्द नही। किसी भी कार्य को खूब सोच समझ और परीक्षा करके करना चाहिए। यदि हम उन परीक्षाओं में ठीक और यथार्थ उतरे, तो धर्म और यदि न उतरे तो उसे अधर्म (अकर्तव्य) समझना चाहिए। इसलिए की प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्म का स्वयं उत्तरदाता हो, स्वयं परीक्षा करके ही प्रत्येक कार्य को करने की आज्ञा दी गई है। चाहे रेलवे का प्रबन्ध इन्जीनियरिंग के अधीन रखा गया है और आदमी दिन रात लाइन और पुलों को देखभाल करते रहते हैं, पर फिर भी ड्राइवर को सर्च लाइट और अपनी आंखों से देखकर चलाने की आज्ञा दी जाती है ताकि उसका वैयक्तिक उत्तरदायित्व उसके कार्य के साथ रहे।

वेदोक्त

वेद जो कि "विद् सत्तायाम" विद् ज्ञाने, 'विद् विचारणे" तथा "विद्लृलाभे" इन धातुओं से सिद्ध होता है जिनका अर्थ हुआ कि जो सत्ता ज्ञान विचार और लाभ के सहित हो अर्थात् सर्वप्रथम वेद द्वारा हमें प्रत्येक वस्तु की सत्ता का उपदेश होता है, तत्पश्चात उन वस्तुओं तथा उनके गुण और व्यवहारादि का ज्ञान होता है। ज्ञान होने के अनन्तर ही हम उसके सूक्ष्म विषयों पर विचार करने में समर्थ हो पाते हैं, अन्त मे इसी क्रम से हमें उस ज्ञान और विचार के अनुरूप लाभ की प्राप्ति होती है। इस प्रकार उस वेद से उपदिष्ट कर्मों की जो कि मोटे शब्दो में ज्ञानानुकूल और विचार पूर्वक तो उन्हे धर्म कहा जाता है। इस ही लिए महात्मा मनु ने अपनी स्मृति के···वेदोऽखिलो धर्म मूलम्" तथा धर्म जिज्ञासमानानां परम श्रुति:" कहा अतएव प्रत्येक व्यक्ति को इस प्रकार के वेदोक्त कर्मों का करना ही अपना धर्म समझना और उसका अनुष्टान करना चाहिए।

अधर्म

जिसका स्वरूप ईश्वर की आज्ञा को छोड़कर और पक्षपात सहित अन्यायी होकर बिना परीक्षा करके अपना हित करना है जो अविद्या हठ, अभिमान, क्रूरतादि दोषो से युक्त होने के कारण वेद विद्या से विरुद्ध हैं, और सब मनुष्यों को छोड़ने के योग्य है। वह अधर्म कहाता है।

यद्यपि किसी विशेष व्याख्या की आवश्यकता नहीं; चूंकि धर्म समझ लेने के बाद सिर्फ इतना विशेष याद रखना चाहिए कि जो धर्म से विपरीत अर्थात् उल्टा हो उसे अधर्म कहते हैं। ऋषि दयानन्द ने मत-मतान्तरों को इसी कसौटी पर कस उन्हें मत-मतान्तर के नाम से निर्देश किया या मजहब बतलाया। चूंकि उन सम्पूर्ण मजहबों में जो कि अपने को धर्म के नाम से पुकारते थे, उपर्युक्त दोष थे, जैसे को ईश्वर कई सत्ता को ही न मानतेथे अर्थात् नास्तिक थे। जब वे ईश्वर ही को न मानते थे तो फिर ईश्वर की आज्ञा को ही कैसे मानते लिहाजा ऋषि ने उन्हें भी कहा कि तुम्हारा मत धर्म नहीं कहा जा सकता चूंकि वह धर्म के एक आवश्यक अंग से रहित है, अत. वह मजहब है। इस ही प्रकार जो लोग ईश्वर की सत्ता को मानते थे पर उसकी आज्ञाओं में पक्ष-पात मानकर किसी एक देश या जाति के लोगों से पक्षपात या प्रेम और दूसरों से नफरत प्रकट करते थे, या ईश्वर के नाम पर यज्ञों में अथवा देवी-देवताओं के समाने पशु हत्या आदि करके अपनी क्रूरता और मूर्ति पूजा आदि करके जड़ में चेतन को मानकर अपनी अविद्याप्रियता का परिचय देते थे, उन्हें तथा जिनके ग्रन्थों में निरी असम्भव और विश्वास न करने लायक बातें भरी पाईं, ऋषि ने कहा कि तुम्हारा मत भी सिर्फ मत यानी मजहब है। वह धर्म का स्थान नही ले सकता। इसीलिए वह सम्पूर्ण मनुष्य के लिए मान्य न होकर सिर्फ तुम लोगों ही की स्वार्थ पूर्ति के लिए हो सकता है। अतः प्रत्येक समझदार मनुष्य को इस प्रकार मजहबों या मत-मतान्तरों को दूर से ही प्रणाम करके छोड़ देना चाहिए जिससे कि उसका जीवन व्यर्थ बर्बाद न हो।

वैदिक-धर्म के प्रचार-कार्य को गति देने के लिए कुछ सुझाव

आर्य समाज के क्षेत्र मे यह निर्विवाद सत्य है कि वेद के सिद्धान्त ससार में सर्वोत्कृष्ट एव पूर्ण सत्य है। फिर भी आर्यसमाज की ओर से जो वैदिक धर्म का प्रचार किया जा रहा है, उसमे पिछले कुछ वर्षों से प्रचार के कार्य मे न्यूनता प्राय सभी लोग अनुभव करते हैं। जब मैं इसके कारणो पर विचार करता हू, तो मुझे मुख्य रूप से दो कारण समझ में आते हैं।

पहला--वैदिक साहित्य का स्वाध्याय कम करने के कारण आर्यों को 'वैदिक सिद्धान्तो का ठीक से ज्ञान न होना।' दूसरा--जिन्हे वैदिक सिद्धान्तो का ठीक से ज्ञान है, उनकी 'कथनी और करनी मे एकता कम होना।'

कारणो को ध्यान में रखते हुये आर्यों के व्यक्तित्व जीवन, सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन की उन्नतिके लिये तथा वैदिकधर्म के प्रचार को प्रभावशाली बनाने के लिये मैं यथामति कुछ सुझाव प्रस्तुत कर रहा हू। आशा है बुद्धिजीवी लोग इन सुझावो से लाभ उठायेगे।

(१) प्रत्येक आर्य यह नियम बनाये कि प्रतिदिन यज्ञ और सन्ध्या किये बिना प्रात साय भोजन नही करूगा। इसी नियम को अपनी सन्तानो पर भी लागू करे। प्रत्येक आर्य व्यवहार काल (= दैनिक जीवन) मे यथाशक्ति यम- नियमो का पालन करे और अपनी सन्तानो से भी कराय।

(२) प्रतिदिन रात्रि मे शयन से पूर्व परिवार के सभी सदस्य इकट्ठे होकर 'आत्म-निरीक्षण' करे अर्थात् अपनी-अपनी त्रुटियो को स्वय सुनाये। त्रुटियों का प्रायश्चित्त करे और 'अगले दिन वे त्रुटिया न हो' ऐसा सकल्प और पुरुषार्थ करें। इस कार्यक्रमका सचालन परिवारका मुख्य व्यक्ति करे।

(३) प्रतिदिन परिवार का प्रत्येक सदस्य कम से कम १५-२० मिनट वैदिक साहित्य या स्वाध्याय अवश्य करे। स्वाध्याय के लिये वेद, दर्शन, उपनिषद् और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के या अन्य ऋषियो के बनाये ग्रन्थ हो सकते है।

(४) प्रत्येक आर्य अपनी आय का कम से कम शतांश (= सौ मे से एक रुपया) वैदिक धर्म के प्रचार मे दान अवश्य दे। इससे अधिक भी दे, तो अच्छा है।

(५) प्रत्येक आर्य का खान-पान शुद्ध हो (= मास, मदिरा आदि रोगोत्पादक एव बुद्धिनाशक पदार्थों का सेवन न करे)।

(६) प्रत्येक वेद-प्रचारक, आर्य समाज के प्रधान, मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभाओ के प्रधान, मन्त्री और इसी प्रकार के अधिकारी लोग अपनी सन्तानो मे से कम से कम १ सन्तान को ऋषि निर्दिष्ट गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से वेद आदि शास्त्रो का विद्वान बनाये। (इससे गुरुकुलो की स्थिति में सुधार होगा, आर्य समाज को प्रचारक मिलेगे और वैदिक धर्म का सच्चा प्रचार होगा। अन्यथा वैदिक धर्म के ठोस प्रचार की आशा कम ही है। क्योकि आज पत्र-पत्रिकाओ में जो लेख छपते हैं, उनके बारे मे अधिकाश पाठको की मान्यता यह बन चुकी है कि जैसा लेख यह लेखक लिख रहा है, क्या ऐसा आचरण लेखक स्वय करता भी होगा!) अत 'कथनी-करनी मे एकता लाने की आवश्यकता है।

(७) आर्य समाज द्वारा सचालित सभी विद्यालयो मे सहशिक्षा समाप्त हो। इससे अनेक हानिया समाज को हुई है और हो रही है।

(८) प्रत्येक आर्य समाज में कम से कम एक विद्वान स्थाई रूप से रहे, जो वैदिक रीति से सस्कार कराये और प्रतिदिन आर्य समाज में सत्यार्थ-प्रकाश आदि ऋषिकृत ग्रन्थो का अध्यापन भी करे। आर्य समासद् इस कार्यक्रम से सैद्धान्तिक ज्ञान बढायें और यथाशक्ति आचरण भी करे।

(९) प्रत्येक प्रचारक की योग्यता का परीक्षण हो। अर्थात उसके पास आर्य समाज के किसी भी विद्यालय अथवा गुरुकुल का दिया हुआ कोई प्रमाण-पत्र हो, जिसमें उसकी योग्यता लिखी हो। उस प्रमाण-पत्र के आधार पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा अथवा सम्बन्धित प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाए उस प्रचारक को एक परिचय-पत्र जारी करके देवे, जिसे दिखाने पर किसी भी आर्यसमाज या आर्य सस्था मे उस प्रचारक के ठहरने, भोजन आदि की समुचित व्यवस्था हो सके। यह परिचय-पत्र दुर्घटना होने या मिथ्या आरोप लगा दिये जाने जैसे अनेक आपत्तिकालो मे भी लाभदायक होता है।

(१०) जो व्यक्ति ऐसा सकल्प ले कि—'मै आजीवन ब्रह्मचारी रहकर केवल वैदिक धर्म का ही प्रचार, अध्यापन, लेखन आदि कार्य करूगा, अन्य किसी सम्प्रदाय का कार्य नहीं करूगा।' उसके अध्ययन काल मे उसका भोजन, वस्त्र, पुस्तक आदि का समस्त व्यय आर्य प्रतिनिधि सभाओ की की ओर से दिया जाये। परन्तु यह तभी दिया जाये, जब उस ब्रह्मचारी का आचार्य उसकी परीक्षा करके उसकी योग्यता का प्रमाण-पत्र सम्बन्धित आर्य प्रतिनिधि सभा को भेजे।

(११) आर्य समाजो मे वार्षिकोत्सवो के अतिरिक्त वेद-कथा, दार्शनिक प्रवचन, वैदिक दर्शनो का अध्यापन और योग प्रशिक्षण शिविरो के आयोजन समय-समय पर किये जाये, जिससे सब प्रकार की उन्नति हो सके।

(१२) महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हठयोग का निषेध और पातञ्जल योग को स्वीकार किया है। अत आर्य समाजो में नेति, धौती' आदि हठयोग की क्रियाए छोडकर, पातञ्जल योग के अनुसार 'यम नियम आदि योग के अगो का ही प्रशिक्षण दिया जाये।

(१३) आकाशवाणी (= रेडियो) और दूरदर्शन (= टेलिविजन) पर आर्य समाज की ओर से वेद-प्रचार के कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाये।

(१४) जो प्रचारक कम से कम २५ वर्ष तक केवल वैदिक धर्म का प्रचार, अध्यापन, लेखक आदि कार्य करे और इसके अतिरिक्त कोई व्यवसाय न करे, उसे आर्य प्रतिनिधि सभाओ की ओर से मासिक पुरस्कार राशि (= पेशन) आजीवन मिलती रहे। यह व्यवस्था केवल उन्ही प्रचारको के लिये हो, जिन्हे अन्यत्र कही से भी कोई पेशन न मिलती हो। जो प्रचारक सरकारी विद्यालयो या महाविद्यालयो मे अध्यापन आदि कार्य भी करते रहे हो और उन्हे वहा से पेशन भी मिलती हो, तो उन्हे इस योजना सम्मिलित न किया जाये।

(१५) जो प्रचारक वृद्धावस्था के कारण प्रचार करने मे असमर्थ हो जाये, ऐसे वानप्रस्थी और सन्यासी प्रचारको के लिये 'वृद्धाश्रमो की व्यवस्था की जाये, जहा उनकी चिकित्सा और सेवा आदि की समुचित व्यवस्था हो तथा वे अपने जीवन का अन्तिम काल सुखपूर्वक व्यतीत कर सके। (इस सुविधा के अभाव मे वानप्रस्थी और सन्यासी प्रचारको को विवश होकर अपने पूर्व सम्बन्धियो (= पुत्र-पौत्रादि) की शरण लेनी पडती है, जिससे वैदिक आश्रम व्यवस्था भग होने से समाज पर बुरा प्रभाव पडता है।)

मैं नम्रतापूर्वक निवेदन करता हू कि धर्म का प्रचार, प्रचारको पर ही आधारित होता है। अत प्रचारको को यथोचित सुविधाए अवश्य ही देनी चाहिये, जिससे वे अधिक उत्साहित होकर अधिक प्रचार कर सके।

निवेदक—वैदिक धर्म का सेवक,
ब्र० विवेक भूषण दर्शनाचार्य दर्शन योग विद्यालय
आर्य वन विकास क्षेत्र रोजड साबर काठा

पुस्तक समीक्षा

(१)

विदेशों में भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन भाग १-२

मूल्य प्रत्येक भाग १००)

लेखक : डा० विश्वमित्र उपाध्याय
समाचार सम्पादक दैनिक हिन्दुस्तान

पुस्तक प्राप्ति स्थान—प्रगतिशील जनप्रकाशन
बी-५५ गुलमोहर पार्क, नई दिल्ली-११००४९

उक्त पुस्तक में लेखक ने भारत के क्रान्तिकारी आन्दोलन जो कि विदेशों में भारतीयों द्वारा चलाया जा रहा था उसका दिग्दर्शन कराया है।

भारतीय क्रान्तिकारियों ने ब्रिटेन फ्रांस, जर्मनी, रूस, अफगानिस्तान, तुर्की, कनाडा, अमरीका, जापान, सिंगापुर, बर्मा, थाईलैंड, इण्डोनेशिया आदि देशों में रहकर अपने क्रान्तिकारी संगठन बनाये, समाचार-पत्र और पुस्तकें प्रकाशित की और विदेशों में भारत की स्वतन्त्रता के लिए जोरदार प्रचार किये।

उन्होंने विदेशों के क्रान्तिकारियों तथा जनतांत्रिक व समाजवादी दलों से सम्पर्क कायम किये।

दो भागों में प्रकाशित इस पुस्तक में लेखक ने १९०५ से १९४७ तक विदेशों में हुए भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन और भारत में हुई क्रान्तिकारी कारंवाइयों से सम्बन्धों व प्रभावों का क्रमबद्ध तथ्य परक सारगर्भित एवं हृदयग्राही अध्ययन प्रस्तुत किया है। इस पुस्तक के लेखन के लिए लेखक ने अपनी विदेश यात्राओं के दौरान पुस्तकालयों में अध्ययन एवं अनुसन्धान के उपरान्त पुस्तक को बड़े परिश्रम के साथ लिखा, पुस्तक सभी देश प्रेमी नागरिकों को पढ़ने योग्य है।

(२)

स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

लेखक : प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

प्रकाशक :

मधुर प्रकाशन, आर्यसमाज मन्दिर बाजार सीताराम, दिल्ली-६
पृष्ठ संख्या २५९, सजिल्द मूल्य तीस रुपये

यह बताने की आवश्यकता नहीं कि आर्यसमाज के इतिहास में स्वामी दर्शनानन्द जी का स्थान कितना ऊंचा है। वे प्रखर शास्त्रार्थ महारथी, सिद्धहस्त लेखक, कवि, कथाकार, पत्रकार, दार्शनिक और शिक्षा शास्त्री थे। सुधारक, विचारक, वेदवेत्ता और वीतराग सन्यासी थे उनका जन्म एक सम्पन्न परिवार में हुआ, लेकिन वे सारे ठाठबाट को लात मारकर संन्यासी हो गये। उन्होंने विद्यार्थियों को निःशुल्क शिक्षा देने की व्यवस्था करने के लिए अनेक गुरुकुलों की स्थापना की। स्वामी जी के छोटे-मोटे जीवन चरित्र तो उपलब्ध है लेकिन सर्वांगपूर्ण जीवन चरित्र सुलभ न था।

प्रो० राजेन्द्र 'जिज्ञासु' ने प्रस्तुत पुस्तक लिखकर इस अभाव की पूर्ति की है। इसके लिए जिज्ञासु जी ने पुरानी पत्र-पत्रिकाओं और पुस्तकाओं रूपी सागर का मन्थन करके यह अमृत निकाला है। स्वामी जी के जीवन की घटनाओं के साथ ही समसामयिक घटनाओ का प्रांजल शैली में चित्रण किया गया है।

इस पुस्तक के प्रकाशन से आर्यसमाज के जीवनी साहित्य में उल्लेखनीय श्रीवृद्धि हुई है।

हमें आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि आर्य जनता इस पुस्तक से अपने पुस्तकालयों की शोभा बढ़ायेगी।

(३)

पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी

लेखक : प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

प्रकाशन :

मधुर प्रकाशन, आर्यसमाज मन्दिर, बाजार सीताराम, दिल्ली-६
पृष्ठ संख्या १६०, अजिल्द मूल्य १५ रुपये।

मुनिवर पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी की निर्वाण शताब्दी के अवसर पर प्रस्तुत पुस्तक प्रकाशित करके मधुर प्रकाशन ने उस महापुरुष को अपनी उपयुक्त श्रद्धांजलि अर्पित की है।

पुस्तक के लेखक प्रो० राजेन्द्र 'जिज्ञासु' अनुसन्धान की अपनी प्रवृत्ति के लिए विख्यात हैं। वे लेखन का कार्य साधना समझकर करते हैं।

अब तक पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी के लगभग आधा दर्जन जीवन चरित्र प्रकाशित हो चुके हैं। इनमें लाला लाजपतराय द्वारा लिखित जीवनी (उर्दू-अंग्रेजी) उल्लेखनीय है।

प्रस्तुत जीवनी साहित्यक शैली में लिखी गई है। भाषा में ओज है, प्रवाह है।

आशा है कि जनता इसे अपनाकर पं० गुरुदत्त के जीवन से प्रेरणा प्राप्त करेगी।

(४)

भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन और हिन्दी साहित्य

लेखक—डा० विश्व मित्र उपाध्याय
(समाचार सम्पादक दैनिक हिन्दुस्तान)

मूल्य—२५० रुपए मात्र

प्राप्ति स्थान—प्रगतिशील जन प्रकाशन बी-५५, गुलमोहर पार्क दिल्ली-४९

रांची विश्व विद्यालय ने विश्वमित्र उपाध्याय के इस शोध ग्रन्थ "भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन और हिन्दी साहित्य पर उन्हें पी. एच. डी. की उपाधि प्रदान की है। इस पुस्तक मे राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन के अभिन्न अंग तथा उसके पूरक के रूप में देश-विदेश मे हुए भारतीय क्रान्तिकारी की विकोसोन्मुख रणनीति और विचारधारा का तुलनात्मक अध्ययन किया है। इसमे क्रान्तिकारी साहित्य तथा क्रान्तिकारी पत्रकारिता की लगभग सौ वर्ष तक रही अविच्छिन्न धारा के अनुसधान व विवेचन पर विशेष ध्यान देकर अब तक की गई उपेक्षा की स्थिति को समाप्त करके क्रान्तिकारी साहित्य को प्रतिष्ठित किया गया है।

पुस्तक में साहित्यकारों की क्रान्तिकारी कृतियो तथा राष्ट्रीय संघर्ष पर पड़े इनके प्रभावो का समालोचनात्मक अध्ययन भी प्रस्तुत किया है। इस शोध पुस्तक मे अनेक ज्ञात-अज्ञात कृतियो मे अभिव्यक्त राष्ट्रप्रेम, संघर्ष, बलिदान तथा आर्थिक सामाजिक मुक्ति की भावनाओ की ओर भारतीय जनता का ध्यान दिलाया गया है। यह पुस्तक देशवासियो को शहीदो के सपनो को पूरा करने के लिए बलिदान करने की प्रेरणा देती है। यह पुस्तक सभी राष्ट्र प्रेमी नागरिको को पढने योग्य है। —सम्पादक

आर्य जगत् के समाचार

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ दिल्ली पर्वतीय आंचलों में अभूतपूर्व कार्य

मध्य प्रदेश के वनवासी आदिवासी जिलो में झाबुआ जिला प्रमुख है। जहां स्वतन्त्रता के ४२ वर्ष पश्चात भी अभी अशिक्षा अभाव तथा अन्याय व्याप्त है। इसके पडौस ने राजस्थान का बांसवाडा जिला तथा गुजरात का पचमहल जिले हैं। जिसकी स्थिति गुजरात का क्षेत्र छोडकर ऐसी है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व महामन्त्री स्व० ओमप्रकाश त्यागी ने पिछडे क्षेत्रो को स्वयं देखकर स्व० लालबहादुर शास्त्री की प्रेरणा से अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रमकी स्थापना की। उनके सुयोग्य उतराधिकारी के रूप मे श्री पृथ्वीराज शास्त्री ने भी स्वय अपनी पत्नी श्रीमती प्रेमलता शास्त्री के साथ पहाडी अचलो मे घूमकर निर्णय लिया, कि इस क्षेत्र की मूल समस्या अशिक्षा है। जिसके कारण अभाव तथा अन्याय का भूत इन पर सवार है।

उन्होने चार वर्षों से अशिक्षा के क्षेत्र मे ग्राम-ग्राम मे बालवाडिया खोलने की योजना बनाई। और दिल्ली तथा आस पास के धनी सज्जनो से सहायता लेकर झाबुआ जिला तथा रतलाम क्षेत्र मे बालवाडियो का जाल बिछा दिया है। उसके सहयोगीके रूप उनकी पत्नी श्रीमती प्रेमलता शास्त्री कन्धे से कन्धा मिला कर बालवाडियो के दान राशि गत चार वर्षोंसे करती आ रही है। इसके अतिरिक्त रानी बाग आर्य समाज स्त्री आर्य समाज सदस्य का सहयोग श्रीमती चाद रानी जी अरोडा प्रेस कालौनी दिल्ली का नकद राशि कपडे नये तथा पुराने बालवाडियो की पाठ्य सामिग्री आदि मे पूर्ण सहयोग मिला तथा मिल रहा है। म० प्र० में झाबुआ जिले मे १५ गावो में, रतलाम जिले के गावो मे तथा कुशलगढ जिला बांसवाड़ा (राजस्थान) मे चार बालवाड़िया स्थापित हो गई है। विद्वानो का कथन है कि बूद बूद से घडा भरता है। उसी को श्री पृथ्वीराज ने अथक परिश्रम सूझबूझ से दिल्ली तथा आसपास के दानी महानुभावो से १००) रुपये का प्रतिमाह सात्विक दान लेकर लेकर एक-एक गाव मे बालवाडिया स्थापित करके के श्रेष्ठतम कार्य किया है, और उनकी सहयोग मिलने पर इसकी सख्या १०० करने की कामना है। परमात्मा उनको तथा उनके सहयोगियो दीर्घायु व स्वास्थ प्रदान करे।

—रामकृष्ण बजाज, सचिव

वीर सावरकर को भावभीनी श्रद्धांजलि

नई दिल्ली। २८-५-९० लाजपतनगर मे वीर सावरकर समिति दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान मे हिन्दू हृदय सम्राट, क्रान्तिकारियो के मुकुट मणी, वीर सावरकर के १०७ वे जन्म दिवस पर प्रो० ए० के० मल्होत्रा की अध्यक्षता में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन हुआ प्रो० मल्होत्रा ने वीर सावरकर जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। प्रो० मल्होत्रा श्री रामतीर्थ भाटिया, श्री धारासिह चौहान ने वीर सावरकर के कृतित्व व व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए आज के युग में उनके चिन्तन की सार्थकता पर प्रकाश डाला राष्ट्रवादी कवि श्री बेढम ने वीर सावरकर के जीवन से सम्बन्धित कविता पाठ किया।

समिति के लाजपत नगर मण्डलाध्यक्ष श्री बेढम ने वीर सावरकर सम्बन्धित साहित्य का भी वितरण किया।

—राधेश्याम तिवारी

सूचनार्थ

अस्वस्थ होने के कारण मैं आगामी तीन मास तक किसी प्रकार की सामाजिक गतिविधियो में भाग नहीं ले सकू गा।

—विद्यानन्द सरस्वती, दिल्ली

मौलाना शेख अब्दुल रेहमान धर्मपाल बने संभाजी नगर (औरंगाबाद, महाराष्ट्र)

दिनाक २२ अप्रैल १९९० रविवार को दोपहर आर्य समाज मन्दिर सभाजी नगर मे नायगाव (सावजी) तहसील सभाजी नगर (औरनाबाद) के मस्जिद के पेश इमाम शेख अब्दुल रेहमान हाजी अब्दुल शेख के निवेदन पर शुद्धी सस्कार प० नरदेव जी स्नेही ने करवाया व श्री धर्मपाल आर्य नाम दिया गया। साथ में सपूर्ण परिवार का शुद्धी सस्कार करवाया गया। धर्मपत्नी हसिया बेगम का नाम सौ० हेमलता रखा गया व पुत्र का नाम निवेश कुमार व धर्मदेव रखा गया।

धर्मपाल ने इस अवसर पर अपने विचार रखते हुये कहा कि मैं फिर अपने पूर्वजो के धर्म मे लौटकर आया हू। जहां पर आदि किताब उतरी जिसे वेद का ज्ञान कहते हैं। यही पूर्ण किताब ससार मे आई है। कुरान का हजरत मुहम्मद कहता है कि मुहम्मद पर ईमानलाओ तो ही जन्नत मिलेगी, मोहम्मद पर ईमान लाने वाले सोचो मुहम्मद तो एक इन्सान है क्या मुहम्मद परमात्मा है। नही वो तो मुहम्मद है। क्यो न हम सीधा ही सपर्क करे। मुहम्मद कुरान मे कहता है कि यह कुरान से पहले जो किताब उतरी वही किताब जो है वही सही किताब जिसे हम वेद कहते हैं। ईश्वरी ज्ञान कहते है वही ज्ञान पूर्ण है जो प्रथम आया वह पूर्ण है इसीलिए मैं मोक्ष का अधिकारी बना हू फिर मैं लौटकर आया हू ऋषि दयानन्द की महति कृपा है।

—दयाराम राजाराम बसैये
आर्य समाज छडकी

आर्य समाज आबूरोड एवं विद्यालय प्रबन्ध समिति का निर्वाचन

आर्य समाज आबूरोड के आर्य समासदो एव सदस्यो का अधिवेशन दिनाक २९-४-१९९० को सम्पन्न हुआ जिसमे अनेक महत्वपूण निणय लिये गये।

इसके पश्चात श्री स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती प्रधान आर्य समाज आबूरोड एव प्रधान आर्य गुरुकुल महाविद्यालय ट्रस्ट आबूपर्वत निर्वाचन अधिकारी की अध्यक्षता एव देख रेख में आर्य समाज आबूरोड एव श्री वैदिक कन्या विद्यालय प्रबन्ध समिति आबूरोड का निर्वाचन निम्न प्रकार से सर्वसम्मति से निर्विरोध सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज आबूरोड की अन्तरग सभा का निर्वाचन —

प्रधान—श्री जेठमल आर्य सिद्धान्त शास्त्री
मन्त्री—नटवरलाल जी मित्तल
कोषाध्यक्ष—राधेश्याम जी जोशी चुने गये।

आर्य समाज ऋषिकेश का निर्वाचन

ता० २०-५-१९९० को ऋषिकेश आर्यसमाज का चुनाव सम्पन्न हुआ। सरक्षक श्री सत्यनारायण अग्रवाल श्री अर्जुनदेव जी

१. प्रधान श्री भरतभूषण जी बाली
२. उपप्रधान श्री नरेन्द्र जी गोयल
३. मन्त्री श्री अशोक कुमार कम्बोज
४ प्रचार मन्त्री श्री महीपाल जी त्यागी
५. कोषाध्यक्ष श्री राजेन्द्र प्रसाद त्यागी
६ आडीटर श्री रामलाल जी डम
७. पुस्तकाध्यक्ष श्री प्रमोद कुमार जी अरोडा

अन्य ११ अन्तरग सदस्य चुने गये। ये चुनाव सर्व सम्मति से हुआ।

८० परिवारों के ४०० से अधिक ईसाई वैदिक (हिन्दू) धर्म में दीक्षा

उड़ीसा का फुलबाणी जिला जंगल पर्वत बहुल होने से ईसाइयो का चारागाह बना हुआ है। गत कुछ समय से उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपना शुद्धि आन्दोलन वहा शुरू कर रखा है। इसमे उत्तरोत्तर निरन्तर सफलता मिलती आ रही है। गत १६, १७, १८ मई को ग्राम गम्का गाव एव पेनाबीडा मे पुर्नमिलन के दो आयोजन अत्यन्त सफल रहे। दोनो स्थाना पर अस्सी परिवारो के चार सौ से अधिक लोगो ने स्वेच्छा से वदिक धर्म मैं प्रवेश किया। आयोजन छोटा होने पर भी अपने आप मे अपूर्व श्रद्धाभक्ति से भरा था। जहा समाचार पहुचता लोग बाजे गाजे के साथ आते और दीक्षा लेकर अत्यन्त प्रसन्नता प्रकट करते। पाच वर्ष से लेकर अास्सी वर्ष के बुढे तक अपनी प्राचीन वेष भूषा धोती पहने हुए थे, गाव मैं आस पास के ग्राम वासियो ने दो किलो मीटर दूर से ही जो श्रद्धा पूर्ण स्वागत विद्वानो का किया, उससे सब भाव विभोर हो उठे। विदाई के समय भी हजारो लोगो ने नृत्य के साथ मे अश्रु पूर्ण नेत्रो से जो श्रद्धा प्रकट की वह कभी भुलाई नही जा सकती। पजाब से पधारे महात्मा प्रेमप्रकाश जी ने कहा मैंने जीवन मे इतना श्रद्धापूर्ण स्वागत कहीं नहीं देखा लोगो मे यज्ञ मैं बैठकर आहुति देने और यज्ञोपवीत लेने की होड़ लगी हुई थी। सस्कार एव कार्यक्रम का सचालन सभामन्त्री श्री प० विशिकेशन शास्त्री ने किया। इस आयोजन मे सभा प्रचारक श्री नारायण का पुरुषार्थ प्रशसनीय है। सारा कार्यक्रम सभा के प्रधान स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती की देख रेख एव प्रेरणा पर हुआ। इस कार्यक्रम की सफलता से हजारो लोग शुद्धि के लिये तैयार हो रहे हैं।

—विशिकेसन शास्त्री, मन्त्री
उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा

शोक समाचार

मरथना १ मई। शकर एग्लो वैदिक इन्टर कालेज मरथना मे कार्यरत अध्यापक श्री मोहनचन्द्र अग्रवाल के युवा पुत्र श्री मुन्ना का हृदय गति रुक जाने से निधन हो गया। मुन्ना होनहार एव स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण युवा था। उसका विवाह सस्कार ६-५-९० को होना था। अन्त्येष्टि सस्कार वैदिक रीत्यानुसार स्वामयोहन आर्य के पौरोहित्य ने शोकाकुल वातावरण मैं सम्पन्न कराया परमात्मा से परिवार जनो के धैर्य की प्रार्थना करते हुए मृतक की शान्ति कामना की।

—श्याममोहन आर्य

—आर्य समाज अम्बाह के कर्मठ कार्यकर्ता एव गायक, प्रचारक, हिन्दू रक्षा आन्दोलन में १९५७ के सत्याग्रही वयोवृद्ध बाबा श्री मक्खनसिंह आर्य का ८५ वर्ष की आयु मे उनके जन्म स्थान ग्राम माफक्ष व्यापुरा अम्बाह मे दिनाक १७-४-१९९० को देहावसन हो गया। उनका अन्तिम सस्कार वैदिकी रीति से आचार्य प्रेजपाल शास्त्री पुरोहित आर्य समाज अम्बाह ने कराया। आर्य समाज अम्बाह व आर्य समाज चतुर गढ़ी के सभी लोगो ने उनके निधन पर शोक व्यक्त किया। सेवाओ के लिये आर्य जगत उनका ऋणी है और रहेगा।

—प० आर्येन्द्र आर्य
सभा प्रचारक

—८ ५-१९९० को आर्य समाज के स्तम्भ करनाल के वरिष्ठ शिक्षा शास्त्री श्री मेलाराम वर्क' प्रिंसिपल का निधन ९३ वर्ष की आयु मे पचकूला में निधन हो गया है। प्रभु उनकी आत्मा को शान्ति देवे।

—ओम प्रकाश मधु'
वकील करनाल

वेष संन्यासियों द्वारा आयोजित सम्मेलन का जोधपुर की आर्य समाजों की ओर से विरोध

गत दिनो जयपुर मे आयोजित राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के शताब्दी सम्मेलन के अवसर पर स्वामी अग्निवेश ने एक प्रेस वक्तव्य मे भारतीय आर्य समाज की स्थापना की घोषणा की थी जिसमें हिन्दुओ के अतिरिक्त ईसाई, मुसलमान, सिख और बौद्ध आदि भी सम्मिलित हो सकेंगे। इस घोषणा के उपरान्त समस्त आर्य जगत मे इस वक्तव्य का जोरदार विरोध किया है। सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के पास इस सम्बन्ध में श्री डा० भवानीलाल भारतीय का पत्र आया था जो हमने दिनाक ३-६ ९० के सार्वदेशिक में प्रकाशित किया है। इस सन्दर्भ में श्री मुकन्ददास वानप्रस्थी उपप्रधान राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा ने जोधपुर में बैठक करके प्रस्ताव पास किया उसे हम अविकल रूप से प्रकाशित कर रहे हैं।

सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने इस सम्बन्ध मे स्वामी अग्निवेश से स्पष्टीकरण मागा है। —सम्पादक

आदरणीय प्रधान जी दि० ७-६-१९९०
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
नई दिल्ली-२

विषय वेष सन्यासियो द्वारा तथाकथित भारतीय आर्य समाज का सम्मेलन दिनाक १४-१५ जुलाई, १९९० के सन्दर्भ में जोधपुर की आर्य समाजो का विरोध।

मान्यवर,

सादर नमस्ते !

आज दिनाक ९ जून, १९९० को जोधपुर की समस्त आर्य समाजो के अधिकारियो व सभासदो की सयुक्त बैठक सरदारपुरा आर्य समाज, जोधपुर में सम्पन्न हुई। इससे पूर्व स्वामी अग्निवेश और इन्द्रवेश को राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा, जयपुर के शताब्दी समारोह में आमन्त्रित करने के विरोध मे दिनाक १५-५-९० को हुई थी जिसका विरोध और तार सारे आर्यजगत् को भी प्रेषित किये गये थे। यहा के आर्य जगत में बहुत रोष व्याप्त है, खेद इस बात का है कि उत्तर तक प्राप्त न हुआ। यहा की आर्य समाजें पुन माग करती हैं कि—

(१) राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा, जयपुर के शताब्दी समारोह मे स्वामी अग्निवेष व इन्द्रवेष को जिन अधिकारियो ने आमन्त्रित किया उसकी जाच कर दोषी व्यक्तियो को आर्य समाज से निष्कासित किया जाय।

(२) सार्वदेशिक एव प्रातीय आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत सचालित कोई भी आर्यसमाज अथवा सदस्य समथन करता है उसे दडित किया जाय और आर्य सगठन से निष्काषित किया जाय।

(३) दि १४-१५ जुलाई को जो तथाकथित भारतीय आर्य समाज का सम्मेलन हो रहा है इसमे सभी आर्य समाजो तथा उनक सदस्यो को उसमे भाग लेने क लिए प्रतिबन्धित किया जाय।

(४) सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा तथा आर्यजगत के सभी अखबारो व पत्रा मे इसका विरोध प्रकाशित कराया जाय।

ब्रजेश कुमार सिंह	मुकन्ददास वानप्रस्थी
मन्त्री आर्य उप प्रतिनिधि सभा	उप-प्रधान, राजस्थान आर्य
जोधपुर मडल, जोधपुर	प्रतिनिधि सभा

पत्र सकेत—(आर्य समाज, रातानाडा) जोधपुर-१

वेद सम्मेलन

दिनाक ३-६-९० को आर्यसमाज मन्दिर सैक्टर १६ चण्डीगढ मे मनाया गया। जिसकी अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने की।

इस सम्मेलन मे स्वामी वेदर्षि व्यासयोगी, डा० सच्चिदानन्द शास्त्री, डा० भवानीलाल भारतीय आदि विद्वान पधारे।

—प० आशुराम आर्य, मन्त्री



गुम—

श्री विजयकुमारजी आर्य अध्यापक दयानन्द बाल विद्या मन्दिर फेरुपुर (रामखेडा) एवम् वरिष्ठ उपमन्त्री, जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा हरिद्वार दिनाक ९-४ ९० को रात्री ९ बजे से आर्य समाज कनखल के वार्षिकोत्सव से अपहृत । लापता हैं। इस विषय में आर्य समाज फेरुपुर की अन्तरग ने चिन्ता व्यक्त की है। यदि उक्त पते के सज्जन कही मिलें अथवा उनके सम्बन्ध में कोई जानकारी मिले तो कृपया निम्न पते पर सूचना दे।

रामफूल सिंह आर्य मन्त्री
आर्य समाज फेरुपुर (रामखेडा)
पत्रा०—जमपुरा जनपद, हरिद्वार (उ०प्र०)

राष्ट्र की शक्ति बच्चों में निहित है

राष्ट्रीय चेतना के अग्रदूत महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती स्वतन्त्रता की लडाई की मूल आत्मा के प्रेरक थे। वे भारत की सस्कृति और चेतना के सजग प्रहरी थे। ये विचार स्वामीय दयानन्द बाल मन्दिर जूनियर हाई स्कूल अमरोहा के वार्षिक उत्सव पर मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुये श्री रामाश्रयराय जी, उप-शिक्षा निदेशक द्वादश मण्डल, मुरादाबाद ने प्रस्तुत किये। उन्होंने इसी सन्दर्भ में बोलते हुये आगे कहा कि किसी भी राष्ट्र की सच्ची और वास्तविक शक्ति वहा के बच्चों मे निहित होती है। यदि देश के भावी नागरिकों का सही निर्माण हम अपनी शिक्षा सस्थाओ के माध्यम से करें तो समूचा राष्ट्र नव चेतना की तेजस्विता से आलोकित होगा। दयानन्द बाल मन्दिरो की सराहना करते हुये आपने कहा कि चरित्र निर्माण एवं राष्ट्रीयता की जिस भावना का विकास होना चाहिये उस ओर यह शिक्षण सस्थायें उचित कार्य कर रही हैं।

दस दिवसीय वैदिक योग एवं पुरोहित प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न फर्रुखाबाद

पुरोहित समाज का प्राण होता है। हमारे परिवार, हमारे समाज और हमारे राष्ट्र का शिल्पकार हमारा पुरोहित वर्ग ही है। नए-नये पुरोहितों के निर्माण की और पुराने पुरोहितों को पौरोहित्य की नयी विधा मे निष्णात करने की आवश्यकता का अनुभव करते हुए आर्य उपप्रतिनिधि सभा फर्रुखाबाद ने एक सौ पुरोहितो को प्रशिक्षित करने के लिए श्रीमद्दयानन्द आर्य गुरुकुल कृष्णपुर भकना में १६ से २५ जून ९० तक एक दस दिवसीय शिविर का आयोजन किया है। प्रवेशार्थियों को पचीकरण शुल्क के रूप में ५) तथा [illegible] अधिक सहयोग करें। —मन्त्री जिला सभा, फर्रुखाबाद

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१ दयानन्दाब्द १६६ दूरभाष । ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष २९ अंक २४] आषाढ़ शु० २ वि० २०४७ २४ जून १९९०

वेदामृत

स्त्री परिवार की उन्नायक

मूर्धासि राड् ध्रुवासि धरुणा धर्त्र्यसि धरणी ।
आयुषे त्वा वर्चसे त्वा कृष्यै त्वा क्षेमाय त्वा ॥

यजु० १४-२१ ॥

हिन्दी अर्थ—हे स्त्री ! तू मूर्धन्य है, तू तेजस्विनी है, तू निश्चल रूप से रहने वाली है, तू परिवार की आधार-रूप है, तू परिवार को धारण करने वाली है, तू पृथ्वी के समान मर्यादा रूप है। तुझे दीर्घायु, तेजस्विता, कृषि-समृद्धि और परिवार के कल्याण के लिए परिवार में रखता हूँ।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

वैदिक धर्म का प्रशिक्षण शिविर आर्यसमाज रानीबाग में

४० वनवासी युवकों को एक मास का प्रशिक्षण

पं० पृथ्वीराज शास्त्री का योगदान

आर्यसमाज रानी बाग द्वारा विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी एक मास तक ४० आदिवासी नवयुवको का प्रशिक्षण शिविर प० पृथ्वीराज शास्त्री के नेतृत्व मे सम्पन्न हुआ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सचालित शिविर का समापन समारोह आर्यसमाज दीवान दिल्ली में पूर्ण हुआ। इन आदिवासी छात्रो को प्रशिक्षित करने का परिणाम हुआ कि उड़ीसा-मध्यप्रदेश आदि क्षेत्रो में ७ हजार ईसाई भाइयो को पुन- (हिन्दू) वैदिक धर्म में दीक्षित करने मे सहयोग मिला।

विद्यार्थियो को सन्ध्या हवन और आर्यसमाज क्या है तथा उसकी गतिविधियो के साथ उसका उद्देश्य क्या है इत्यादि बातो पर विशेष रूप से ध्यान देकर तयार कराया है।

प० पृथ्वीराज शास्त्री ने पृथक् पृथक् छात्रो से फुटकर मन्त्रो को पूछा। विद्यार्थियों की इस परीक्षा-सफलता पर आम जनता पूर्ण सन्तुष्ट हुई।

प० पृथ्वीराज शास्त्री की भूरि-भूरि प्रशसा की गई तथा पुष्प मालाओं से स्वागत भी किया गया। इस कार्य में शास्त्री जी की धर्मपत्नी श्रीमती प्रेमलता खन्ना तथा श्रीमती ईश्वररानी जी का विशेष योगदान प्राप्त था।

इस शिविर के आयोजक श्री पृथ्वीराज शास्त्री को आर्यसमाज रानीबाग के आर्य जनों का सदा-सदा ही पूर्ण सहयोग प्राप्त रहा है। एक मास तक चलने वाले शिविर में आवास भोजन का प्रबन्ध आर्यसमाज रानीबाग के द्वारा किया जाता है।

समस्त आर्यजन और प० पृथ्वीराज शास्त्री बधाई के पात्र हैं जिनके द्वारा प्रतिवर्ष इस शिविर का आयोजन किया जाता है।



[illegible] के स्वागत पर श्री क्षितीश वेदालंकार पं० पृथ्वीराज शास्त्री का स्वागत कर रहे हैं।

शिविर का समापन समारोह

आर्यसमाज दीवानहाल द्वारा इन ४० विद्यार्थियो का स्वागत किया गया और अन्त में भोजन भी कराया गया। उल्लेखनीय है कि इन चालीस आदिवासी युवको को आर्य समाज रानीबाग दिल्ली मे सन्ध्या हवन व आर्यसमाज के मूलभूत सिद्धान्तो के बारे में पूर्ण रूपेण प्रशिक्षण प० पृथ्वीराज शास्त्री ने दिया है।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

पंजाब के नवीन राज्यपाल

श्री वीरेन्द्र जी वर्मा

प्रसिद्ध समाज सेवी श्री वीरेन्द्र वर्मा पंजाब के राज्यपाल बनाये गये उत्तर प्रदेश की धार्मिक राजनैतिक गतिविधियो के केन्द्र श्री वीरेन्द्र वर्मा आतंकवाद की आग से झुलस रहे पंजाब के २४वें राज्यपाल नियुक्त किये गये हैं।

श्री वर्मा जी पंजाब के साथ साथ चण्डीगढ़ के प्रशासक भी होंगे। आपकी नियुक्ति से पंजाब के वर्तमान माहौल मे नये प्रयोग का दौर प्रारम्भ होगा।

राज्यपाल पद पर नियुक्त होने के बाद आपका प्रयास होगा कि पंजाब मे लोकतान्त्रिक प्रक्रिया बहाल हो जिससे वहा के लोगो का विश्वास प्राप्त कर शान्ति स्थापना मे अग्रसर हो।

१८ सितम्बर १९१६ ई० को शामली मुजफ्फर नगर मे जन्मे श्री वर्मा जी एक सम्पन्न कृषक परिवार तथा आर्यसमाजी परिवार से सम्बन्धित व्यक्ति है। १९५२ से १९८० तक उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य रहे तथा प्रदेश में गृहमन्त्री सहकारिता मन्त्री आदि महत्वपूर्ण पदों पर रहे। राज्यसभा में १९८४ में आये, इस वर्ष राज्यसभा में पुनः जनता दल से सदस्य बने हैं।

सम्पादक—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सरकार को भी कश्मीर मामलों की समझ नहीं

—तरुण विजय

'मैं कश्मीर सिर्फ इसलिए गया था क्योंकि वहा की हालत सुधारना मुझे एक राष्ट्रीय जिम्मेदारी महसूस हुई। यह देश का काम था। सुबह साढ़े पाच से लेकर आधी रात तक मैं काम करता था। गवर्नर के पद की कोई तनख्वाह नही लेता था। जो काम सौंपा गया—उसी में जुटा रहा। फिर यह भी परवाह नहीं कि मेरे बारे में कौन क्या कहता है। पर इतना करने पर क्या नतीजा निकला, आप देख ही रहे हैं।

ये शब्द हैं श्री जगमोहन के। कल तक कश्मीर के राज्यपाल थे। अब राज्य सभा के सदस्य हैं। ससद में उनसे बातचीत हुई। वही चिरपरिचित भगिमाए। बोलने का प जाबी लहजा। पर अब माथे पर चिन्ता की रेखाए झलकने लगी हैं। उम्र भी बढ़ी है, तनाव भी। बातचीत कुछ इस तरह चली।

—कश्मीर की असली समस्या आपने क्या समझी ?

भ्रष्टाचार और मजहबी कट्टरता। कश्मीर के जितने नेता आज कश्मीर पर झूठे आसू बहा रहे हैं, दुनिया भर के इ सानी हको की बातें कर रहे हैं, उन्होने ही कश्मीर के लिए दिया गया सारा पैसा हड़पा है। कश्मीर के नेताओ की सम्पत्ति के बारे में सरकार जाच कराये—सच्चाई सामने आ जायेगी। ये लोग भारत सरकार से पैसा लेकर भी भारत को गाली देते रहे, एहसानफरामोश हैं ये लोग। पैसा हमसे लेते रहे, साथ आतकवादियो का देते रहे।

दूसरी समस्या है—मजहबी कट्टरता की राजनीति। कश्मीर में चाहे शेख अब्दुल्ला रहे हो या फारूख या मौलवी फारूख—सबने मस्जिदो से ही अपनी राजनीति चलाई है। मस्जिद मे और राजनीतिक मच मे कोई फर्क नहीं रखा।

—कश्मीर में आपकी नीति क्या थी ?

मेरी नीति थी—आतकवादियो का सफाया और बाकी जनता को सरकार के इ साफ का मानवीय अहसास कराना। आतकवादी जब भागने लगे, लोगो को दीखने लगा कि अब सरकार काम करने लगी है, उनकी छोटी छोटी शिकायतो पर ध्यान दिया जाने लगा है—तो बात बनने लगी थी। मुझे यकीन है कि एक बार आतकवादियो से निबटकर अगर वहा ईमानदार और स्वस्थ सरकार चले तो जनता का झुकाव फिर हमसे हो जाएगा।

—आप पर जुल्म करने के आरोप-

दुर्भाग्य से हमारे देश मे किसी को धरातल की सच्चाई जानने मे इतनी रुचि नही होती, जितनी झूठी खबरे फैलाने और उन पर विश्वास करने मे। चाहे सरकार मे बैठे लोग हो या कश्मीर के बारे में बोलने, लिखने वाले लोग उन्हे कश्मीर की सच्चाई नहीं पता। वे नही जानते कि कश्मीर में हो क्या रहा है ? और वहा के सुरक्षा बल, प्रशासन किन हालात मे काम कर रहे हैं।

—आपका मतलब है सरकार को भी समझ नहीं ?

हा, वे लोग सुनी-सुनाई बातो पर ज्यादा यकीन करते हैं। सच पर यकीन नही करते। अब देखिए, सुरक्षा बल हजारो कार्रवाइया करते हैं। उनमे से एकाध में मौके पर तैनात सिपाही ड्यूटी अफसर से कोई गलत काम हो गया—उसके लिए गवर्नर को जिम्मेवार कैसे ठहराया जा सकता है ? आप जाच कराओ, देखो कि गलती कहा पर है लेकिन जिन चुनौतियो और एकदम आत कतापूर्ण वातावरण में सुरक्षा बलो को कर्तव्य निबाहना पड़ता है, क्या उसका भी किसी ने अहसास किया है ?

— आपका प्रयास मौलवी फारूख की भी रक्षा नही कर सका ?

हमने मौलवी फारूख को सुरक्षा देने की पेशकश की थी। उन्होने मना किया। उन्हें डर था कि इससे वह 'भारत के एजेन्ट' कहे जायेंगे। अब वह मौजूद नहीं हैं—इसलिए कुछ कहना नहीं चाहिए। लेकिन जो भाषा मौलवी फारूख बोले थे, क्या वह भारत के समर्थन में थी ?

—वहा भारत विरोध का मुख्य कारण क्या है ?

जैसा मैंने पहले कहा, कश्मीर में कोई भी सरकार रही—उसने वहा के लोगो को अपना ईमानदार, इ साफ पसन्द चेहरा नहीं दिखाया, फिर केन्द्र में जो भी सरकार रही, उसने वहा अलगाववादियो को सदा संरक्षण दिया, उनका तुष्टीकरण किया, उनको पाला-पोसा। ऐसी हालत में वहा देशभक्ति कैसे पनप सकती थी।

—आप पर मुसलमानों के खिलाफ अभियान चलाने का भी आरोप है?

बेबुनियाद है। मैं सिर्फ राष्ट्र विरोधियो के खिलाफ हू। मेरे ६० प्रतिशत सहायक मुसलमान ही थे। सबसे खास सहायको मे कुरेशी, हबीबुल्ला जैसे काबिल अफसर थे। मेरी विदाई के समय उनकी आंखो में आसू थे। मैं अगर मुस्लिम विरोधी नेता होता तो मुस्लिम अफसर मेरे निर्देशो का पालन क्यो करते ?

—जो १३७ अधिकारियो द्वारा शिकायत करने की खबर है ?

मैंने अखबारो में ही पढ़ी है। मेरे वक्त किसी ने ऐसा नहीं किया। मुझे वापस बुलाने से वहा आतकवादियो के हौसले बढ़ गए। उन्होंने दबाव डालकर ऐसा कुछ करवाया होगा। फिर सोचने की बात है कि इन अफसरों ने अपने देश की सरकार या किसी राष्ट्रीय फोरम को शिकायत नहीं भेजी उन्होंने भारत के खिलाफ विश्व मच का इस्तेमाल किया। क्या ऐसे अफसरो को आप देशभक्त कहेंगे ? अफसोस की बात है कि ऐसे अफसरों की शिकायतें स सद में कांग्रेस के सभासद पूरी पढ़कर सुनाते हैं और ससद खामोशी से सुनती है। लेकिन आतकवादियो के खिलाफ अपनी सफाई का खुलासा करने जब मैं बोलने लगा, तो मुझे बोलने नही दिया गया। क्या यह उनका (कांग्रेस का) इ साफ है ? यह तो देश का अपमान है।(पाञ्चजन्य १० जून)

नैपाल का हिन्दू स्वरूप आवश्यक

दिल्ली १६ जून।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने नेपाल में प्रजातन्त्र की स्थापना के निर्णय का स्वागत करते हुए नैपाल नरेश तथा प्रधानमन्त्री श्री भट्टाराम को विशेष पत्र लिखकर उनसे अनुरोध किया है कि प्रजातन्त्र की स्थापना के कारण नैपाल राष्ट्र के वर्तमान स्वरूप को किसी भी तरह बिगड़ने न दिया जाए।

स्वामी जी ने कहा कि भारतीय भूखण्ड मे भारत को छोड़कर सभी देश 'मत प्रधान' देश हैं। पाकिस्तान और बगला देश इस्लामी देश हैं ही। पश्चिमी एशियाई देशो में मतान्धता बढ़ती जा रही है। इस्लामिक ब्रदरहुड नाम से जो संस्था कार्यरत है, उसकी तमाम कोशिशें सारे विश्व को इस्लाम बनाने के पक्ष में हैं। यहा तक कि इण्डोनेशिया भी उसके चंगुल में आने से कब तक बचा रहेगा, कहा नही जा सकता।

स्वामी जी ने नैपाल नरेश और प्रधान मन्त्री का ध्यान भारत मे धर्म-निरपेक्षता तथा अल्पसख्यकों के प्रति तुष्टीकरण की नीति कितनी हानिकारक सिद्ध हुई है, उसकी ओर विशेष रूप से ध्यान आकृष्ट करते हुए अपील की है कि धर्म-निरपेक्षता तथा तुष्टीकरण की नीति के नाम पर नैपाल मे वर्तमान हिन्दू स्वरूप को किसी भी तरह बिगड़ने न दिया जावे।

स्वामी जी ने नैपाल आर्य समाज और नैपाल शिवसेना के प्रधानो को भी इस आशय के पत्र लिखे हैं।

—सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा मन्त्री

प्रवेश सूचना

श्री निःशुल्क गुरुकुल महाविद्यालय, अयोध्या में प्रथम जुलाई १९९० ई. से नवीन ब्रह्मचारियो का प्रवेश प्रारम्भ हो जायगा। आवेदन पत्र गुरुकुल कार्यालय से प्राप्त किये जा सकते हैं।

—प्रदीप आर्य
मुख्याधिष्ठाता श्री निःशुल्क गुरुकुल महाविद्यालय
अयोध्या फैजाबाद (उ० प्र०)

सम्पादकीय—

व्यक्ति की पहचान उसके कार्य पर निर्भर करती है

देश की बदलती परिस्थितियों में आज राष्ट्र खतरे के मुहाने पर खड़ा है। पश्चिमोत्तर सीमा पंजाब जल रहा था अब कश्मीर भी धधक उठा। पूर्व मे आसाम से जुड़ी सीमायें भी जल रही हैं। भारत की अन्दरूनी दशा भी अच्छी नहीं है। बड़े राष्ट्रो को छोड़ दें तो भारत के बचे छोटे-छोटे देश भी हमारे लिए सिर दर्द बने हुए हैं। लंका-पाकिस्तान और उससे लगा विरोधी तत्व अफगानिस्तान तथा अन्य मुस्लिम देश, उत्तर मे नेपाल जैसा देश ने भी विशाल भारत के लिए अच्छी खासी अड़चनें खड़ी कर दी हैं। हमारी सरकार अन्दरूनी मामलो में भी बिल्कुल फेल और बाहरी राजनीति मे भी असफल सिद्ध हुई है। सकट उत्पन्न स्थिति मे दृढ़ता काम देती है पर हमारी सरकार डावाडोल हो रही है किसी भी स्थान पर सुदृढ़ स्थिति नही है। पंजाब की आग-कश्मीर ने भी झेली, पंजाब तो काबू आया नहीं कश्मीर में आतकवाद ने अजीब दशा पैदा कर दी हैं। बड़े सोच समझकर श्री जगमोहन जी को भेजा गया था। वह वहां की हर परिस्थिति से परिचित थे। अत उन्होंने हर दुखती नस पर हाथ रखा। फोड़ा को आपरेशन की आवश्यकता थी। आपरेशन तो किया पर इतना जहरीला फोड़ा वह भी एक नहीं अनेक। तब आपरेशन कहां कहा किया जाता। मरीज का हाल बेहाल, मरीज तड़पा चिल्लाया, उसकी चिल्लाहट से सारी राजनीतिक पार्टियां मरीज के प्रति हमदर्दी दिखाकर डाक्टर के विपरीत आन्दोलन भड़कर आन्दोलन! परिणामत वही हुआ डा० जगमोहन को हटाया गया। वह भी धोखे से। खैर देखिए नया डाक्टर नियुक्त हुआ है अभी उसे मरीज के शरीर को देखना समझना पड़ेगा। मरीज की हालत लाजवाब है—मरीज के शरीर में इतना विष फैल चुका है नश्तर कहा लगाए। प्राणवान कश्मीर निष्प्राण हो चुका है। पड़ोसी ऐसा भोजन दे रहे हैं उससे शरीर (राष्ट्र) और जहरीला हो चुका है। डाक्टर नया भी क्या करेगा।

सरकार भी निकम्मी है वह डाक्टरो को बदलने मे ही परिस्थितियो पर काबू पाना समझती है।

राज्यपालों पर राज्यपाल

पंजाब और जम्मू कश्मीर के राज्यपालो की जो दुर्दशा विगत वर्षों में हुई है वह भी अपने मे महत्वपूर्ण स्थान रखती है। उससे यह समझ लेना चाहिए कि स्वाभिमानी व्यक्ति कोई भी पंजाब मे राज्यपाल के पद पर जाना नही चाहता है। पर वाह-री बेशर्म कुर्सी? तुझे छोड़ना भी कोई नहीं चाहता है। धकियाये जायेंगे, गरियाये जायेंगे, भगाये जायेंगे, फिर आ कुर्सी तेरा सहारा। वैसे तो मिलेगी नहीं? पर इस असमञ्जस में ही सही।

कश्मीर से जगमोहन को जाना पड़ा, इधर पंजाब में श्री निर्मलकुमार मुखर्जी को हटाया तो वे इस्तीफा देकर अलग हो गये। न जाने कितने सिंहो के नाम चलने को मिले—खूब नाम उछले। अन्त में एक सूरमा मिला। उसे मरीज को सुधारने को कहा उन्होंने रिक्त स्थान की पूर्ति कर नए को पदासीन करा दिया।

श्री वीरेन्द्र वर्मा जी के भी हाथ देखो?

अन्ततोगत्वा राजनीति के पुराने चतुर खिलाड़ी कांग्रेस के मजे हुए आज के समय जनता दल के वरिष्ठ नेता श्री वीरेन्द्र वर्मा को पंजाब मे राज्यपाल बनाने की घोषणा की गई और डाक्टर ने अपना हास्पिटल सम्भाल लिया। मर्ज और मरीज को देखने से पूर्व परवर दिगार प्रभु को याद किया। प्रभु इज्जत रखना। मैंने, अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादपि नियोजित" इस पद पर न चाहते हुए यह जबर्दस्ती नियोजित किया गया हू। मैंने भी राष्ट्रीय हित में महत्वपूर्ण जिम्मेदारी स्वीकार की है।

अब आगे-आगे देखिए होता है क्या?

श्री वीरेन्द्र वर्मा की पंजाब में राज्यपाल पद पर नियुक्ति की घोषणा के बाद और उनके पदासीन होने पर राष्ट्र ने कुछ सहारा लिया। शायद पुराना डाक्टर है मर्ज और मरीज पर काबू पा ले, श्री वर्मा जी पंजाब के साथ २ चण्डीगढ़ के भी प्रशासक होंगे आपकी नियुक्ति से पंजाब के वर्तमान परिपेक्ष्य में नये प्रयोग का दौर प्रारम्भ होगा। आशा तो कहीं-२ लगाई जाती है कि यह व्यक्ति पुराना खिलाड़ी है। प्रशासकीय अनुभव है ऐसा राजनीतिज्ञ ही सफल हो सकता है।

श्री वर्मा जी खबरदार—

'आप चौबीसवें डाक्टर हैं सभी डाक्टर असफल सिद्ध हुए हैं, आप सफल चिकित्सक और सफल आपरेशन के सिद्ध हस्त डाक्टर है पर ध्यान रहे यदि रोगी ने चिल्लाना शुरू किया, हाय मार दिया, तो जगमोहन जैसा ही हाल होगा और लोग कहेंगे कि लौट के बुद्धू घर को आये? खैर आप अनुभवी सफल सिद्ध हस्त डाक्टर हैं आपको सफलता मिले। मरीज प्राणवान हो और आपकी वाह-वाह हो।

आपने भी राज्यपाल पद पर आसीन होने के उपरान्त समस्त घायल पे चायल, दुखी-सुखी समाज को आश्वासन दिया है कि मैं पूर्ण निष्ठा के साथ प्रयास करूंगा कि पंजाब में जनतन्त्र मे जीवन आए और लोकतन्त्र बहाल हो।

आपने विश्वास पूर्वक कहा है कि प्रशासन मे कानून व्यवस्था मे स्थायित्व रखने में प्रशासन को चुस्त बनाने का कार्य सर्व प्रथम करेंगे।

सावधान!

वर्मा जी! दूसरे के प्रशासन से भी सावधान रहना है कही जगमोहन की तरह प्रशासन को चुस्त रखने के बाद जो हुआ उसका भी ध्यान रखना?

आज चापलूस दकियानूस, मक्खीचूसो का राज है कही बुखारी का बुखार चढ़ा और सन्निपात होने पर बड़बड़ाया तो सारा शासनतन्त्र बिखर जायगा फिर आप देखेंगे कि कहीं जगमोहन जैसी तत्परता होगी।

आप स्वभाव से क्या हैं यह मैं जानता हू वैसे ही जैसे ही जगमोहन का जानता हू कि वह स्वभाव से कसे हैं? पर उन्होने नब्ज पर हाथ नही रखा यदि बुखारी के बुखार मे नब्ज पकड़ी होती तो जगमोहन की जीवित हत्या न होती।

आप पुराने खिलाड़ी और कांग्रेस की सत्ता मे सन ५२ से ८० तक उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य रहे। साथ ही गृहमन्त्री कृषिमन्त्री, सहकारिता मन्त्री आदि महत्त्वपूर्ण पदो पर आसीन रहे।

श्री वर्मा जी सम्पन्न कृषक परिवार से तथा विख्यात आर्य समाजी घराने से सम्बन्धित व्यक्ति हैं।

१९८४ मे लोकदल से राज्यसभा मे आये इसी वर्ष पुन राज्यसभा मे सदस्य बने।

श्री वर्मा जी ने राजनीति के दाव-पेंच सीखने के साथ अखाड़े के दाव-पेंचो में भी रुचि रखते हैं।

भारतीय संस्कृति के सबल समर्थक श्री वीरेन्द्र जी वर्मा पश्चिमी उत्तर-प्रदेश के शामली के विख्यात किसान परिवार जो महर्षि दयानन्द सरस्वती के मिशन आर्य समाज की सेवाओं के लिये कई पीढियो से समर्पित रहा है और सम्बन्धित हैं।

आज देश कठिन दौर से गुजर रहा है ऐसे समय मे महर्षि दयानन्द का त्याग-बलिदान-न्याय प्रियता के सत्य के संरक्षण मे आप उस तपस्वी के राजनीति-परिदृष्टा को हर समय सामने रखेंगे।

साथ ही मानव जाति पर किये गये महर्षि के उपकारो को सदैव स्मरण रखोगे—तो कभी हार और मार दोनो मे विजेता रहोगे। आपने जिस जिम्मेदारी को अपने सबल कन्धो पर लिया है—उससे कभी भी आप भारतीय संस्कृति राष्ट्रीय एकता और अखण्डता से किसी प्रकारका समझौता नही करेंगे।　　(शेष पृष्ठ ९ पर)

जापान में आर्य समाज के बढ़ते चरण

कुछ मास पूर्व जापान की राजधानी टोक्यो में आर्य समाज की स्थापना का समाचार हम अपने पाठकों को पहले ही दे चुके हैं। वैदिक धर्म और आर्य समाज के प्रचार का काम आर्य प्रतिनिधि सभा टोक्यो के अध्यक्ष श्री अकीहिको निधि के निर्देशन में दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। उन्होंने "आर्यन हैराल्ड" नाम से अंग्रेजी तथा जापानी भाषा में एक द्विमासिक पत्रिका निकालनी आरम्भ कर दी है जिसके द्वारा वे महर्षि दयानन्द का सन्देश घर-घर तक पहुंचा रहे हैं। इस दिशा में उनके प्रयत्न सराहनीय हैं। विदेशी होते हुए भी वे एक सच्चे ऋषि भक्त तथा हृदय से आर्य हैं।

वैदिक धर्म प्रचार के इस अभियान में हम सब उनके साथ हैं।

सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

सरकार की नीयत ही हिन्दी के विकास में सबसे बड़ी बाधा है : ज्ञानी जैलसिंह

विश्वविद्यालय हिन्दी परिषद् के तत्वावधान में ९-६-९० दिल्ली विश्वविद्यालय के टैगोर हाल में एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसका विषय था विज्ञान व सामाजिक विज्ञान आदि विषयों में हिन्दी माध्यम एवं विश्वविद्यालय प्रशासन और हिन्दी"। संगोष्ठी का उद्घाटन भूतपूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने किया।

इस अवसर पर अपने उद्घाटन भाषण में ज्ञानी जैलसिंह ने कहा कि हिन्दी के विकास में सबसे बड़ी बाधा सरकार की नीयत खराब होना है। उन्होंने भारत के प्रधानमन्त्री की इस बात की आलोचना की कि वे विदेशी अतिथियों के सामने अंग्रेजी का प्रयोग करते हैं। इससे स्पष्ट है कि हिन्दी के लिये सरकार दोमुंही नीति पर चल रही है।

जन प्रतिनिधियों को आड़े हाथों लेते हुए ज्ञानी जी ने कहा कि चुनाव के समय नेता भारत की जनता से वोट लेने के लिये हिन्दी और भारतीय भाषाओं में भाषण करते हैं। लेकिन सत्ता में आते ही हिन्दी को भूलकर अंग्रेजी के जाल में फंस जाते हैं। यह देश के लिये चिन्ता की बात है।

उन्होंने इस बात पर दुःख प्रकट किया कि आजादी के ४१ साल बाद भी अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त नहीं की गई। शासन में अंग्रेजी का बोल बाला है। उच्च पदों पर परीक्षाओं में हिन्दी की उपेक्षा कर अंग्रेजी की अनिवार्यता संघ लोकसेवा आयोग में आज भी बरकरार है।

पूर्व राष्ट्रपति ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री मुलायमसिंह यादव की मुक्त कंठ से प्रशंसा की और कहा कि वे पहले ऐसे राजनीतिज्ञ हैं जिन्होंने राष्ट्रभाषा के उत्थान के लिए सख्त कदम उठा कर साहस का परिचय दिया है। ऐसा ही साहस प्रधानमन्त्री श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह भी दिखा दें तो यह इस सरकार की सबसे बड़ी उपलब्धि होगी। उन्होंने हिमाचल प्रदेश, मध्यप्रदेश, हरियाणा और बिहार के मुख्यमन्त्रियों द्वारा हिन्दी के लिये किये गये प्रयासों को सराहा और बधाई दी।

श्री जैलसिंह ने जनता को आह्वान किया कि वह अपने चुने हुए जन प्रतिनिधियों से जवाब मांगे कि वे अंग्रेजी को छोड़कर हिन्दी को आगे क्यों नहीं लाते और ९६ प्रतिशत भारतीय भाषियों को ४ प्रतिशत अंग्रेजीदां लोगों से कड़ा संघर्ष करना होगा तभी हिन्दी का प्रचार और प्रसार संभव होगा।

श्री वी० किशनलाल द्वारा कुप्रबन्ध तथा धन का दुर्विनियोग करने के कारण गुरुकुल घटकेश्वर (आ.प्र.) सरकार के हाथ में

ज्ञातव्य है कि गुरुकुल घटकेश्वर ट्रस्ट के दो ट्रस्टीयों द्वारा गत वर्ष मार्च में एक याचिका ट्रस्ट के प्रबन्धक ट्रस्टी श्री वी० किशनलाल द्वारा की गई धन सम्बन्धी अनियमितताओं के सिलसिले में, आयुक्त धर्मस्व निधि विभाग हैदराबाद को प्रस्तुत की गई थी। इस विषय में आयुक्त द्वारा एक जांच अधिकारी की २१ पृष्ठीय रिपोर्ट के आधार पर कुछ सुझाव मुख्य सचिव आन्ध्र प्रदेश सरकार को भेजे गए थे। जिनमें सरकार को यह सुझाव दिया गया था कि श्री वी० किशनलाल प्रबन्धक ट्रस्टी द्वारा गुरुकुल सम्बन्धित जमीन की बिक्री और प्राप्त धन निवेश के मामले तथा व्यक्तिगत परिसम्पत्तियों की विस्तृत जांच सी०बी०आई०/सी०आई०डी० द्वारा कराने के लिए भी विचार किया जाए तथा कानूनी विभाग से परामर्श करके श्री श्री वी० किशनलाल के विरुद्ध अपराधिक तथा सिविल मुकदमा दायर किया जाए। विश्वसनीय सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि आन्ध्र प्रदेश सरकार द्वारा जांच अधिकारी की विस्तृत रिपोर्ट के आधार पर आयुक्त के उपरोक्त सुझावों को स्वीकार करके जरूरी कार्यवाही के निर्देश सम्बन्धित विभाग को दे दिए गए हैं और गुरुकुल का दूसरा प्रबन्ध एक कार्यकारी को सौंप दिया गया है।

अब्दुल्ला बुखारी को गिरफ्तार करो

लखनऊ १४-६-९०। इण्डियन मुस्लिम यूथ कान्फ्रेंस के प्रधान महमूद अब्बास नकवी ने सरकार से मांग की है कि दिल्ली के जामामस्जिद के इमाम अब्दुल्ला बुखारी को कौम का दुश्मन और खिरकादाराना सरगर्मियों के लिए गिरफ्तार किया जाए। यहां अखबारी नुमायन्दों से बात-चीत करते हुए श्री नकवी ने इलजाम लगाया कि अब्दुल्ला बुखारी कश्मीर के उग्रवादियों को जामा मस्जिद में पनाह दे देते हैं और जामा मस्जिद से लाल किला तक की बन्द सुरंग की फिर से खुदाई करवाई जा रही है। (प्रताप १६-६-९० के सौजन्य से)

आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा श्री महात्मा आर्य भिक्षु जी उपप्रधान सार्वदेशिक सभा को सभा के धन संग्रहार्थ रसीद बुक सं० ८९०१ से ९००० तक की दी गई थी। जो उनके द्वारा कहीं खो गयी है। जिन किसी सज्जन महानुभाव को उक्त रसीद बुक मिले तो वह निम्न पते पर भिजवाने की कृपा करें।

साथ ही इस रसीद का कोई गलत उपयोग भी न कर सके। सूचनार्थ—

सच्चिदानन्द शास्त्री सभा-मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

ऐलपाइन का वैदिक यज्ञ

गत सप्ताह ऐलपाइन इन्टरनेशनल वीडियो डिविजन ने जयपुर में वैदिक यज्ञ (हवन) पर आधारित वीडियो कैसट जारी किया। जिसका विमोचन राज्यपाल डी०पी० चट्टोपाध्याय ने किया। कैसट में वेदमन्त्रों का पाठ और हवन के महत्व को दर्शाया गया है।

बनारस के कन्या गुरुकुल की आचार्या प्रज्ञादेवी ने इस कैसट का निर्माण प० शान्ति प्रकाश द्वारा किए गए शोध पर वेद प्रकाश कावड़ा एवं कुमार अनिल ने किया है। कार्यकारी निर्माता श्रीमती संगीता कालरा का है। समय १२० मिनट। मूल्य १५०) एक सौ पचास रुपया कैसट। मिलने का स्थान—४२१ बरकतनगर, जयपुर।

आर्यो सावधान

आर्यसमाज के इस्लामीकरण का दुष्प्रयत्न

—भवानी लाल भारतीय

हिन्दुओं की बेवकूफियो का भी कोई जवाब नहीं। तैंतीस करोड़ देवताओ को मानने वाले ये भले मानस पीरो, फकीरो के मजारो पर सिर झुकाने से बाज नही आते। बद्रीनाथ, केदारनाथ और राम, कृष्ण के भव्य मन्दिरो के होते हुए भी इन्हें बाले मियां के मजारो टूटी फूटी खानकाहो और दरगाहो पर सिर पटकने मे लज्जा महसूस नही होती। एकादशी और पूर्णिमा को व्रत उपवास रखते हुए भी ये लोग जुमेरात (बृहस्पतिवार) को कब्रों और मकबरो पर जाकर मनौतिया मनाने तथा बच्चो को वहा लोटवाने मे शर्म नही करते। बड़े बड़े साधु महात्माओ और सन्तो महन्तो के होते हुए भी मस्जिदो के मौलवियो और दुष्ट चरित्र फकीरो के पावो मे सिर रगड़े बिना इन्हें चैन नहीं मिलता। दिल्ली के अमृतसर तक के शेरशाह सूरी राजमार्ग पर कदम कदम पर पीरो के मजार रातो रात खड़े कर दिए गये। पुलो और नहरो जैसी संवेदनशील जगहो पर नौगजे पीरो (नौगज के आकार का काल्पनिक मुसलमानी पीर) के भव्य मजार बना दिए गये। रेलवे पटरी की सीमा के बहुत निकट, हिन्दुओ के खेतो मे झूठी कब्रें बना कर सार्वजनिक जमीन का अतिक्रमण किया जाता है परन्तु न तो सरकार के कानो मे जू रेंगती है और न जनता ही उसके विरोध मे आवाज उठाती है। हरयाणा और पजाब में मुसलमानो की जनसंख्या एक प्रतिशत भी नही है, तथापि पानीपत, अम्बाला, जालन्धर और अमृतसर मे मुसलमानी खानकाहो पर उर्स लगते हैं, कव्वालिया होती हैं और हिन्दू ही वहा कब्रो पर सिर रगड़ते नजर आते हैं। हिसार मे दिल्ली जाने वाली रेलवे लाइन के पास एक पागल सा फकीर बैठा रहता था। एक दिन वह असावधानी वश रेलवे से कट कर मर गया। मुसलमानो ने उसे पीर बना दिया और ठीक रेलवे फाटक के पास पीर साहब का शानदार मजार बन गया। बिजली और पानी के कनेक्शन लग गये। हर जुमेरात को पीर बाबा की कब्र पर लोग जमा होने लगे। शीरनी (प्रसाद) चढ़ाई जाने लगी और आश्चर्य करेंगे यह सब करने वाले पढ़े लिखे हिन्दू ही है क्योकि हिसार मे मुसलमान तो सौ पचास भी नही होंगे। इस दरगाह पर संतान चाहने वाली युवा हिन्दु स्त्रियो का जमघट हर गुरुवार की शाम को देखा जा सकता है। शायद हिन्दु स्त्रियो को संतान देने की सामर्थ्य उनके पतियो में उतनी नही है जितनी इन कब्रो में पड़े मुर्दा फकीरो में या उनके धूर्त मुजाविरो (पुजारी) मे।

अब मैं अपने मुख्य विषय पर आता हू। मुजफ्फरनगर के मेरे मित्र श्री आलोक शर्मा ने मेरे पास प्रस्तावित (विश्वमित्र संगठन' के विधान की एक रूपरेखा भेजी है। इस संगठन के संस्थापक या प्रस्तावक दिल्ली के कोई डा० जे. एल. आनन्द नामक व्यक्ति हैं जिनका पता है—३/१६८ दक्षिणपुरी विस्तार नई दिल्ली-६२।

दुनिया मे धूर्तों और मक्कारो की कोई कमी नही है। उन सबके साथ माथा खपाना सबके लिए सम्भव भी नही है किन्तु जहां आर्य समाज के गौरव और मर्यादा को आंच आती है, वहा चुप बैठना कम से कम मेरे लिए तो सम्भव नही होता। तो आइये, विश्वमित्र संगठन के नाम से स्थापित मक्कारी और आर्य समाज के इस्लामीकरण के इस धूर्ततापूर्ण प्रयास की कलई खोली जाए। इस संगठन के ५५ नियम इस पत्रक में छापे गए हैं और इस धार्मिक संगठन का धार्मिक ग्रन्थ संशोधित सत्यार्थप्रकाश' को स्वीकार किया गया है। पाठको को अधिक देर परेशानी मे न डालकर मैं स्पष्ट करना चाहता हू कि यह डा० जे. एल आनन्द एक ऐसे धार्मिक सम्प्रदाय की नींव डाल रहा है जिसका मान्य ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश और मान्य महापुरुष स्वामी दयानन्द होंगे किन्तु जिसमे प्रच्छन्न रूप से मुसलमानी आचार विचार, कर्मकाण्ड और इस्लामी मान्यताओ का प्रवेश कराया जाएगा। आप यह कह सकते हैं कि इस प्रकार के बचकानापन को हम क्यों गम्भीरता से लें और क्यों इसे महत्व दें।

किन्तु मुख्य सवाल यह है कि क्या महर्षि दयानन्द और उनके पवित्र ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के नाम का दुरुपयोग की इजाजत आप हर चार सौ बीस किस्म के आदमी को देने के लिए तैयार हैं? आज किसी सेमेटिक मजहब के मान्य पुरुष या धर्म ग्रन्थ को लेकर यदि इस प्रकार की अनर्गल बातें लिखी जाती तो देश में भूचाल सा आ जाता और ऐसे दुष्कृत्य करने वाले को लेने के देने पड़ जाते। क्या आर्यसमाजी इतने हीनवीर्य और क्लीव हो गए हैं कि वे अपने मान्य आचार्य के अपमान को सहन करने मे ही अपनी सहनशीलता दिखाते हैं।

अब आप डा० जे एल आनन्द निर्मित विश्वमित्र संगठन के इन नियमो का नमूना देखें कि किस प्रकार गुप्त रूप से इस्लामी मान्यताओ और आचारो को सत्यार्थ प्रकाश और ऋषि दयानन्द के नाम पर प्रचारित करने यह दुश्चेष्टा की गई है।

(१) मित्र संगठन के नियमो और मान्यताओ मे यह कहा गया है कि विज्ञान सम्मत संशोधित सत्यार्थ प्रकाश (?) इस संगठन का धार्मिक ग्रन्थ होगा। कोई इस व्यक्ति से पूछे कि सत्यार्थ प्रकाश को संशोधित करने तथा उसे मित्र संगठन का धर्म ग्रन्थ घोषित करने का अधिकार उसे किसने और कब दिया।

(२) जैसे मसजिदो में सवेरे की नमाज के लिए अजां दी जाती है उसी प्रकार नियम संख्या ४ में कहा गया है कि उपासना के लिए आवाज देकर सबको बुलाया जायेगा।

(३) उपासको को मसजिदो मे खड़े होने वाले मुसलमानो की ही भांति पंक्तिबद्ध खड़े होने के लिए कहा गया है।

(४) मसजिदो मे सवेरे मुंह अंधेरे अजा देकर बुलाने का विधान इस संगठन में भी स्वीकार किया गया है। पंजगाना नमाज (पांच बार की जाने वाली नमाज) की ही भांति इस मित्र संगठन मे भी उपासना के लिए पांच बार का नियम रखा है।

(५) नियम संख्या ७ मे कहा गया है कि उपासना के लिए कतारो मे खड़े होने के पहले लोग जल से आचमन करें। यह नमाज के पहले हाथ मुंह धोने (वजू) के तुल्य है।

(६) नियम संख्या ८ मे १० मिनट की नमाज की ही भांति उपासना के मन्त्रो को पढ़ने के लिए कहा गया है।

(७) नियम ९ मे उपासना के समय सिर पर पगड़ी साफा या टोपी पहनना नमाज पढ़ते समय मुसलमानो द्वारा सिर पर टोपी या रूमाल पहनने की भांति अनिवार्य रखा गया है।

(८) संख्या १० के नियम मे जुमे की नमाज की भांति विशेष उपासना सभा की बात लिखी गयी है।

(९) मुसलमानो के अनुकरण पर मूत्र त्याग के पश्चात उपस्थेन्द्रिय की शुद्धि का विधान संख्या ११ के नियम मे वर्णित है।

(१०) मित्र संगठन के उपासना स्थल को दरबार साहब तथा 'प्रभु द्वारा' का नाम दिया गया है और नियम १२वे में लिखा है कि वहा जाकर मनौतिया मानने या दुआ करने से अभीष्ट सिद्धि होगी। कोई व्यक्ति कुछ भी करे उससे हमारा कुछ भी लेना देना नही किन्तु इस व्यक्ति ने तो यहा संशोधित सत्यार्थ प्रकाश के आंशिक या अखण्ड पाठ का विधान किया है जो कुरान शरीफ की तलावत की ही नकल है।

(११) सभी धर्मों मे संगीत द्वारा भगवान् की स्तुति की जाती है। मात्र मसजिदो मे ही गायन का निषेध है। यही नियम डा० आनन्द ने यहा भी रखा है और संगीत का उपासना में निषेध किया है।

(१२) इस नए इस्लामी उपासना संगठन के अनुयायी अपने महापुरुषो की समाधियां बनायेंगे जैसे मुसलमान पीरो और फकीरो की कब्रें, मजार दरगाहे बनाई जाती हैं। (क्रमश)

योग साधना शिविर

महात्मा नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़ तल्ला (नैनीताल) में लगेगा

इस आश्रम की स्थापना म० नारायण स्वामी ने १९२० में की थी। यह स्थान हिमालय की पहाड़ियों के बीच में नदी के किनारे अति रमणीक स्थान में स्थित है। इस आश्रम की स्थापना का मुख्य उद्देश्य इस क्षेत्र की बुराईयों को दूर करना था। यहां सैलानी अपनी दूषित मनोवृति को लेकर आते थे तथा कन्याओं के व्यापार का केन्द्र था। म० नारायण स्वामी ने ग्राम-ग्राम में प्रचार करके इस दूषित मनोवृति को दूर किया।

पहाड़ी मार्ग नैनीताल से १५ मील, अलमोड़ा १८मील, रानीखेत १४ मील है।

म० नारायण स्वामी ने आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना की तथा ८ वर्ष मन्त्री पद पर रहे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की भी स्थापना की तथा के १४ वर्ष प्रधान तथा मन्त्री पद पर रहे। आपने प्रयास करके फर्रुखाबाद में गुरुकुल की स्थापना की जो बाद में गुरुकुल वृन्दावन महाविद्यालय के नाम से विख्यात हुआ—रामगढ़ में निवास के समय बहुत सी पुस्तकों को लिखा जिनमें कर्तव्य दर्पण आत्म दर्शन, विद्यार्थी जीवन रहस्य, ईश-केन, कठ, माण्डूक्य, तैत्तरीय उपनिषद मुख्य हैं।

मथुरा में दयानन्द जन्म शताब्दी १५ फरवरी से २१ फरवरी तक १९२५ में मनाई गई थी। उसका समस्त भार व श्रेय म० नारायण स्वामी को ही था। २ वर्ष पूर्व १९२३ में गुरुकुल वृन्दावन में शताब्दी कार्यालय खोला गया तब केवल ४ रु० दस आने की संस्था कर्जदार थी। शताब्दी का कार्य अत्यन्त सफलतापूर्व सम्पन्न हुआ।

हैदराबाद सत्याग्रह। निजाम में हिन्दुओं पर अत्याचार होते थे, आर्य समाजियों को तथा समस्त हिन्दुओं को स्थान-स्थान पर अपमानित होना पड़ता था जब सभी इस तरह हताश होगए तब यह भार म० नारायण स्वामी के ऊपर डाला गया। शोलापुर में मुख्य कार्यालय बनाकर म० नारायण स्वामी सर्व प्रथम हैदराबाद सत्याग्रह के मुख्य सेनापति बने तथा शोलापुर से हैदराबाद की तरफ प्रस्थान करके जेल यात्रा जाने से पहले २५००० वालन्टीयरों की नामावली शोलापुर कार्यालय में आ गई। प्रथम म० नारायण स्वामी, दूसरे कुंवरचन्द करण शारदा, तीसरे खुशहालचन्द्र (आनन्द स्वामी) चौथे राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री, पांचवे स्वामी स्वतन्त्रानन्द डिक्टेटर निश्चित हुए जेल जाने से पूर्व ११ हजार रु० स्टेट बैंक में सत्याग्रह के नाम से जमा करा दिये। इस प्रकार म० नारायण स्वामी ने हजारों सत्याग्रहियो के साथ जेल में महान कष्ट उठाये। साढ़े छः माह बाद स्वतन्त्र हुए। इनमें २६ सत्याग्रहियो का बलिदान हुआ। १९४४ में जब सिंध की मुस्लिम लीगी सरकार ने सत्यार्थ प्रकाश पर पाबन्दी लगाने की घोषणा की तब म० नारायण स्वामी सत्यार्थप्रकाश की पुस्तकें लेकर कराची पहुंचे मगर लीगी सरकार को गिरफ्तार करने की हिम्मत नहीं हुई। उस अवस्था मे म० नारायण स्वामी कितना मनोबल था उसका वर्णन कठिन है।

महात्मा नारायण स्वामी के १९४७ में स्वर्ग सिधारने के पश्चात् रामगढ़ आश्रम की शोचनीय अवस्था हो गई। वेद मित्र तितरी वालों के ४ कमरे नष्ट हो गए तमाम आश्रम जीर्ण अवस्था में है। भारत के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। इसके जीर्ण उद्धार में सहयोग दे। इस कार्य के लिए महात्मा नारायण स्वामी आश्रम जीर्णउद्धार कमेटी स्थापित करके महात्मा नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़ तल्ला में (बड़ौदा बैंक में) खाता खोल दिया है। वर्ष में तीन योग साधना शिविर का कार्यक्रम बनाया गया है। प्रथम मई में दूसरा १८ जून से २४ जून १९९० तक तीसरा सितम्बर में योग शिविर लगेगा।

शिविर में सम्मिलित होने वाले साधक पत्र द्वारा सूचना दे। निवास तथा भोजन की व्यवस्था है। यह स्थान दिल्ली हल्द्वानी बस से बरेली से हल्द्वानी तक बस से या ट्रेन से हल्द्वानी से रामगढ़ तल्ला को प्रातः ७ बजे १२ बजे तथा ३ बसें चलती हैं। जो आश्रम के निकट यात्रियों को उतारती हैं।

महात्मा नारायण स्वामी की स्थापित कुछ संस्थाओं का परिचय ऊपर दिया जा चुका है। कुछ इस प्रकार हैं। वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर हरिद्वार इनकी इस समय तीन शाखायें हैं। जिसमें ४०० के लगभग स्त्री पुरुष साधना कर रहे हैं। म० नारायण स्वामी इन्टर कालिज रामगढ़ तल्ला इसमे ६०० के लगभग बालक-बालिकाएं शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। आर्यसमाज रामगढ़ में विशाल भवन बना हुआ है। अरविन्द आश्रम तपोगिरी आर्यसमाज रामगढ़ के ऊपर पहाड़ी पर स्थापित है। आपका कर्तव्य है। रामगढ़ आश्रम को अधिक से अधिक सहायता करें।

स्वामी सोमानन्द
वेद प्रचारक मण्डल ६०/१३ रामजस रोड
करोल बाग नई दिल्ली-५

आर्यसमाज में जोधपुर लीला

मूल लेखक — आचार्य विश्वश्रवाः व्यास
प्रस्तुतकर्ता डा० रामप्रकाश आर्य, रिटायर्ड प्रोफेसर,

मैंने एक लेख 'वेद वाणी' के अक्टूबर १९८९ के अंक 'महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की मृत्यु की दुर्घटना का सूत्रपात और उसके बाद' शीर्षक से प्रकाशित करवाया था, जिसका उद्देश्य था यह सूचित करना कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना किन उद्देश्यो को लेकर की थी, स्वामी जी की मृत्यु के बाद वे सभी कार्य आर्य समाज द्वारा समाप्त कर दिये गये। उपर्युक्त लेख की समालोचना मे एक लेख श्री भवानीलाल भारतीय ने 'वेद वाणी' के दयानन्द विशेषांक, जनवरी १९९० मे 'महर्षि दयानन्द के निधन विषयक प्रचलित भ्रांतियां शीर्षक से लिखा। स्वामी जी को जिस महल में विष दिया गया था, कुछ समय के बाद वह आर्य समाज को सुपुर्द कर दिया गया—उसका उद्घाटन समारोह जोधपुर में हुआ। उस उत्सव के प्रधान शहर कोतवाल थे, जोधपुर विश्वविद्यालय के कुलपति जी वहां पधारे थे और उसमें भाषण देने के लिये विशेष अतिथि के रूप मे मुझे आमन्त्रित किया गया। उसमें प्रारम्भ मे जोधपुर के लोगो ने ही अपने विचार व्यक्त किये, सबका स्वर एक ही था, स्वामी जी इस महल में बीमार पड़े थे—किसी ने यह कहने का साहस नही किया कि उन्हे जहर दिया गया था। मेरा भाषण अन्तिम था और मैने भावावेश में कहा, 'सब लोग कह रहे हैं कि बीमार पड़े थे, बीमार पड़े थे, पर किसी ने यह नही बताया कि उन्हे क्या बीमारी थी।" यो योगीजन बीमार होते ही नही हैं। मैंने स्पष्ट रूप से कहा था कि वे बीमार नही पड़े थे उन्हें विष दिया गया था। मेरे बाद कुलपति महोदय ने इस तथ्य की पुष्टि की और कहा कि यह बात वास्तव मे सत्य है कि स्वामीजी को विष दिया गया था। इसी बात का समर्थन सभापति की पीठिका से कोतवाल महोदय ने किया।

२. श्री गहलोत जो जोधपुर निवासी तथा रिसर्च स्कालर थे, उन्होंने इस विषय मे गवेषणा करने के बाद लिखा कि महाराज के रोजनामचो का सूक्ष्म अध्ययन करने के बाद उन्हें स्वामी जी को विष दिये जाने की घटना का उल्लेख कहीं नही मिला। कोई भी शासक अपनी गलतियो का उल्लेख अपने रोजनामचो मे नही करता। इतनी बड़ी घटना को पूर्णत छिपा देना इस बात की ओर इंगित करता है कि विषदान की घटना मे उनका हाथ था।

३. एक बार आर्य समाज के वार्षिकोत्सव पर मुझे आर्य समाज जोधपुर मे प्रथम बार बुलाया गया, जनता को रोके रखने के लिये उन दिनो मेरा भाषण अन्त में करवाया जाता था। संयोगवश उसदिन दीपावली की सन्ध्या थी, जोधपुर की नगरी और विष दिये जाने की पूरी प्रक्रिया उस समय मेरे मस्तिष्क में घूम रही थी—भावुकतापूर्ण स्वरो में मैंने वहा उसकी सविस्तार चर्चा भी की। अगले दिन जोधपुर के कुछ सज्जन मेरे पास आये, उनमे एक का नाम च्यवन था। उन लोगो ने बताया कि जिन दिनो प० लेखराम जी 'महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित लिख रहे थे, तब जोधपुर नरेश ने विशेष राजकीय अतिथि के रूप मे जोधपुर बुलाया था और महती धनराशि भी भेंट की थी और कहा था कि वे किसी तरह से अपने जीवन चरित्र में जोधपुर के इस कलंक का उल्लेख न करें। यदि उन्हें सचमुच नन्हीजान वाली बात पर विश्वास नही था तो उन्हे इस घटना का उल्लेख ही नहीं करना चाहिये, किन्तु घटनाका उल्लेख करके उसे 'मिथ्या किम्वदन्ती' कहना उनकी बात को संदिग्ध बनाता है। जोधपुर के उन व्यक्तियो ने मुझे कुछ फोटो दिये जिनमें नन्ही जान वेश्या और जोधपुर नरेश के पारस्परिक कलुषित सम्बन्ध चित्रित थे, काफी समय तक वे चित्र मेरे पास रहे, किन्तु पाकिस्तान बन जाने के कारण अन्य सामान के साथ मेरी यह सामग्री भी लाहौर में ही छूट गई।

४. हमारे पुराने साथी स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती योगी ने बानप्रस्थ दयानन्द के सम्बन्ध में 'योगी का आत्म चरित्र' प्रकाशित किया, जिसमे स्वामी जी को परमयोगी सिद्ध किया गया। स्वामी जी ने हिमालय की कन्दराओ और बीहड़ वनों मे रहकर अनेक योगियों से योगभ्यास सीखा था और योगकी समस्त सिद्धियां प्राप्त की थीं। इसके विरोध मे भवानीलाल भारतीय ने लेख लिखे—स्वामी सच्चिदानन्द जी ने मुझे इसकी सूचना दी। मैंने अपने मित्र को पत्र लिखा कि भारतीय जी जोधपुर निवासी हैं, उनका ऐसा करना अस्वभाविक नही है, आप उनकी चिन्ता न करें। भवानीलाल भारतीय का योगदर्शन के विभूतिपाद पर विश्वास नहीं है। भारतीय जी ने स्वामी जी का जो जीवन चरित्र लिखा—उसका नामकरण किया 'नव जागरण का पुरोधा' (मैं इस नाम को अनुचित समझता हू—स्वामी जी साक्षात्कृतधर्मा ऋषि थे, परमयोगी थे, योग की सब विभूतियां उन्हे प्राप्त थी एक बार स्वामी जी ने कहा भी था कि मैं उन विभूतियो को दिखाना नही चाहता—क्योंकि तमाशा बन जायेगा और मूल काम रह जायेगा।

कहा जाता है पंडित जवाहरलाल नेहरू एक बार एकाकी किसी वन्य प्रदेश में गये, जहा उन्हे एक भिखारिन बुढ़िया मिली जो उनसे दो पैसे माग रही थी, पंडित जी ने जो कुछ उनके पास था, उससे भरपेट भोजन कराया और सौ दोसौ रुपये भी दिये। प्रधान मन्त्री के इस व्यवहार से बुढ़िया आश्चर्य मे पड़ गई और अतिशय प्रसन्न हुई—उसने उन्हे आशीर्वाद दिया 'बेटा तुम पटवारी बन जाओ।' निर्धन बुढ़िया के मस्तिष्क तबसे बड़ा ओहदा पटवारी का ही था। भारतीय जी दृष्टि मे ससार की सबसे बड़ी उपलब्धि संभवत पुरोधा होना ही है—वह तो एक सामान्य नेता का कार्य है। वे योगी के योगोत्व को समझते ही नही।

मैं भारतीय जी से पूछना चाहता हू कि वह कौन सा नव जागरण हैं जिसके पुरोधा स्वामी जी है। स्वामी जी की मृत्यु के बाद से आज तक मुसलमानो की सख्या मे वृद्धि हुई, ईसाई कई गुना बढ गये है, बौद्ध भी पहले की अपेक्षा कही अधिक हो गये हैं, मूर्तिपूजा ने विराट् रूप धारण कर लिया है, कई बार देश का विभाजन हुआ है, कश्मीर और पंजाब की समस्या ने विकराल रूप धारण किया है—ये कौनसा नव जागरण हुआ है जिसके पुरोधा स्वामी जी हैं। इस जागरण के पुरोधा महात्मा गांधी हो सकते है, व नेहरू हो सकते हैं—स्वामी जी नही।

सारे ससार के विश्वविद्यालयो में भाषा विज्ञान पढाया जा रहा है, उसकी मान्यताओ को स्वीकार करते हुए यह सिद्ध करना असंभव है कि वेद सृष्टि का आदि ग्रन्थ है। अस्थि विज्ञान की आस्थाओं मे तीन रहते हुए यह विश्वास कराना कठिन हैं कि समस्त जगत के मानव आर्यो की ही सन्तान हैं, काल मार्क्स के सिद्धान्तो के प्रचार के साथ ईश्वर, वेद ऋषि-मुनियो का अस्तित्व भी सन्देहास्पद हो गया है डार्विन के विकासवाद के रहते हुए यह नही कहा जा सकता कि मनुष्ययोनि कर्मफल अनुसार मिलती है। आर्य समाज की मान्यताओ के विपरीत उपर्युक्त सभी बातें, बढ़ती जा रही हैं, भूत प्रेम यत्र तत्र भयंकर रहे है, पोपो की लीला का क्षेत्र विशाल होता जा रहा है—इनमे से स्वामी जी किस विचार के पुरोधा हैं ?

उपर्युक्त सभी बातो के विरोध मे स्वामी जी ने आन्दोलन किया—इस सम्बद्ध में स्वामी जी का पत्र-व्यवहार और स्वीकार (वसीयतनामा) दृष्टव्य है। इन्होने अपने वसीयतनामे यह भी लिखा है कि सब भाषाये सीखकर उनकी बोली मे प्रचार करो। ये काम आर्य समाज मे आरम्भ से ही नही हुए। इस आर्य समाज को रोटी-कपड़ा बाटने, स्कूल खोलने, दवा बाटने वाला किसने बना दिया। क्या इन्हीं बातो ने स्वामी जी ने अपने माता-पिता को तड़फाया था, योगाभ्यास किया था और वे साक्षात्कृतधर्मा ऋषि बने थे ?

स्वामी जी यदि जीवित होते तो इस समय उनकी आयु १६६ वर्षकी

होती, मेरी आयु ८६ वर्ष की है, अत. मैं उनसे ८० वर्ष छोटा हू। स्वामी जी के समय के अनेक व्यक्तियो ने अनेक बातें मुझे सुनाई जो उनके जीवन चरित्रो में अंकित नहीं हैं। लगभग १२ व्यक्ति ऐसे हैं जो स्वामी जी के समय के थे और मेरे साथ उनका घनिष्ठ सम्बन्ध था। परोपकारिणी सभा के प्रधान शाहपुराधीश दीवान बहादुर उम्मेदसिंह और मन्त्री हरविलास शारदा परोपकारिणी सभा की हर मीटिंग से मुझे बुलाते थे और हर बार स्वामी जी की बातें सुनाते थे। लाला लाजपतराय, महात्मा हंसराज, रायबहादुर मूलराज (आर्य समाज के नियम-उपनियम, परोपकारिणी सभा के नियम गोकरुणानिधि में वर्णित नियम बनाने वाले) आर्यसमाज अनारकली के सदस्य मेरे सहयोगी रहे हैं। जिन अखिलानन्द और भीमसेन शर्मा को आर्य समाज से निकाला गया, वे भी मेरे साथ के थे और अक्सर बरेली मेरे पास आया करते। पण्डित भगवद्दत्त जी की माता जी स्वामी जी के समय की थी (जिन्होने स्वामी जी को अपने हाथ से भोजन बना कर खिलाया था), ने मेरे साथ मातृवत व्यवहार किया, वे स्वामीजी के सम्बन्ध मे बातें सुनाती थी।

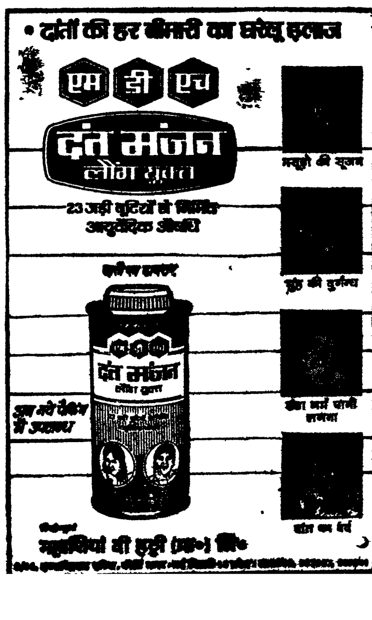
हमारे नगर मे हमारे मकान के पड़ोस मे प० देवदत्त द्विवेदी रहते थे (उनका परिवार अब भी यहा पर ही है) उन्होने सुनाया कि स्वामी जी बरेली मे आते थे और शास्त्रार्थ करते थे। यहा के सबसे बड़े विद्वान अंगद शास्त्री का शास्त्रार्थ स्वामी जी से टाउन हाल में हुआ; अंगद शास्त्री ५० प्रश्न लिखकर तो ले गये और स्वामीजी से कहा 'तुम्हारा पाला किसी और से पड़ा होगा, अंगद शास्त्री से नहीं। मैं ५० प्रश्न करता हू, तुम उनमें से किसी एक का भी जवाब नही दे सकते।' स्वामी जी ने कहा कि अपने पचासो प्रश्न एक बार सुना दो, मैं सब का जवाब एक साथ दे दूगा। अंगद शास्त्री ने ५० प्रश्न पढकर एक साथ सुना दिये। स्वामी जी ने हस कर पूछा कि ये प्रश्न तुम्हारे ही हैं या किसी और से लिखवाकर लाये हो। अंगद शास्त्री ने कहा कि सन्यासी होकर उपहास करते हो। मैं स्वय विद्वान हू और ये प्रश्न मेरे हैं। स्वामी जी ने कहा कि यदि तुम्हारे हैं तो कागज पर बिना देखे पचासो प्रश्न सुनाओ। अंगद शास्त्री अपने लिखे पचासो प्रश्न नही सुना सके। तब स्वामी जी ने कहा कि तुम कागज उठाओ, पहले मैं तुम्हारे पचासो प्रश्न बोलता हू, फिर उनके उत्तर दूगा। अंगद शास्त्री ने कागज अपने हाथ मे उठाया और स्वामी जी ने ५० प्रश्न बोलने शुरू किये—न क्रम बदला न भाषा बदली। अंगद शास्त्री ने कागज जमीन पर पटक दिया और लाखो की हाजिरी में स्वामी जी के चरण छुये। कहने लगे कि मैं तुम्हे मनुष्य समझ कर तुमसे शास्त्रार्थ करने आया था—तुम तो मनुष्य नही, किसी देवता के अवतार हो। ये योगाभ्यास की करामात है—योगी स्थिरचित्त होता है। भवानीलाल भारतीय को इन बातो मे विश्वास नही होगा क्योकि वे तो स्वामी जी को पुरोधा समझते हैं।

यह निर्विवाद सत्य है कि स्वामी जी को जहर दिया गया था, विवादास्पद यही हो सकता है कि विष कौनसा था तथा किसने दिया? अखिलानन्द जी स्वामी जी के समकालीन थे, उन्होने विषदान का उल्लेख अपने ग्रन्थ (दयानन्द दिग्विजय) में किया है। शाहपुराधीश नाहरसिंह अपना मान बचाने के लिये कुछ भी कह सकते हैं क्योकि विष देने वाला रसोइया इन्ही का भेजा हुआ था। जिस व्यक्ति ने जहर दिया, उसकी स्वामी जी से कोई व्यक्तिगत दुश्मनी नही थी, जिसने भिजवाया उसकी भी उनसे कोई शत्रुता नहीं थी। नन्हीजान या भगतन के प्रसग का भी उपसहार इस रूप मे नही हो सकता था। इस प्रसग से यदि जोधपुराधीश रुष्ट थे, तो वे उन्हे शीघ्र ही विदा कर सकते थे या अधिक से अधिक अपनी रियासत से बाहर निकलवा सकते थे। जोधपुराधीश पर हत्या कराने का जो प्रेशर पड़ा उसका उद्गम कुछ और ही था।

स्वामी जी के युग मे अंग्रेजो का राज्य घृणास्पद नही माना जाता था, लोग उसे आदर्श समझते थे तथा उसकी सराहना भी कर सकते थे। वाराणसी में जब जार्ज पचम का जलूस निकाला गया तो वहा के पंडितों ने उनके प्रति अपना भक्ति भावना प्रदर्शित करने के लिये उनके वाहन से बैलो का अलग कर स्वय कन्धा दिया था। कुछ मायनो में तत्कालीन लोगो की अंग्रेजी राज्य के प्रति धारणा गलत भी नहीं थी, क्योंकि उस राज्य में आज के समान न रिश्वतखोरी थी, न मिलावट, न भ्रष्टाचार, लोग वन मे भी सोना लेकर स्वच्छन्द घूम सकते थे। ऐसे समय मे स्वामी जी का यह कहना, 'कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है··· ··प्रजा पर माता पिता के समान कृपा न्याय और दया के साथ विदेशियो का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं।' सचमुच अपूर्व साहस का कार्य था। इस प्रकार की अभिव्यक्ति न केवल आदि उपदेशो मे ही विद्यमान थी अपितु उनके साहित्य मे अनेक बार देखी जा सकती है। यह असम्भव है कि इसकी सूचना कूटनीतिज्ञ अंग्रेजी साम्राज्य को न मिली हो। उनके सामने एक ओर स्वामी जी के ये क्रान्तदर्शी विचार थे और दूसरी ओर उनके शासन के अस्तित्व का प्रश्न था—उन्होने यही देखकर समझा कि अपना साम्राज्य बचाने के लिये स्वामी जी की इहलीला को समाप्त कर दिया जाये। इसके लिये उन्होंने देशी रियासतो को ही माध्यम बनाया। अंग्रेजों ने यह आदेश भारत मन्त्री, वायसराय अथवा रेजिडेण्ट किसी के भी माध्यम से दिया ही था यह उनका ही गोपनीय आदेश। आज भी सार्वदेशिक सभा अपना आदेश प्रान्तीय सभा को भेजती है, प्रान्तीय सभायें उसे स्थानीय समाजो को, किन्तु आदेश, वह सार्वदेशिक सभा का ही कहलाता है।

(५) उदयपुर मे सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी मनाई जाने वाली थी, उससे ६-७ वर्ष पूर्व मैं वहा के सभी आर्यजनो को बुलाकर मैंने कहा कि छः सात वर्ष शेष रह गये हैं, शताब्दी मनाने से पूर्व सत्यार्थ प्रकाश पर लिखे गये आलोचनात्मक ग्रन्थो का खण्डन करने के बाद समारोह मनाओ। उन लोगो ने कहा कि यह हमारी सामर्थ्य से बाहर है, यह कार्य सार्वदेशिक सभा के माध्यम से ही करवाया जाये। उस समय उन लोगो ने कई बातें बताई।

(६) अंग्रेजी राज्य के समय किसी की हिम्मत नही हो सकती थी कि वह अंग्रेजो पर आक्षेप करे और कहे कि विष देने में अंग्रेजो का हाथ था। स्वामी जी के सभी जीवन चरित अंग्रेजी राज्य में ही लिखे गये, अतः जानते हुए भी इस घटना के उल्लेख करने का साहस किसी में नही हुआ। (क्रमशः)



नागरिक और देहाती सांस्कृतिक क्षेत्र में युवकों की भूमिका

लेखक : डा० कृष्णलाल आचार्य प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

संस्कृति नाम है संस्कार का, परिष्कार का अथवा शुद्धि का। यह संस्कार विचारों और कार्यों का वह परिष्कार है जो मनुष्य को अन्य प्राणियो से अलग मननशील मानव बनाता है, उसे उनसे ऊपर—बहुत ऊपर उठा देता है। खाना-पीना, सोना, भय करना और मैथुन या नर-मादा सहयोग—यह सब तो पशुओं और मनुष्यो में एक समान हैं। परन्तु मनुष्यो मे एक विशेषता अधिक है जिससे वे पशुओ से अलग होते हैं—और वह है धर्म।

आहारनिद्राभयमैथुनानि समानमेतत् पशुभिर्नराणाम्।
धर्मो हि तेषामधिको विशेषो धर्मेण हीना पशुभि समाना ॥

यह धर्म ही संस्कार है। वही वह तत्त्व है जो मनुष्य को मनुष्य के रूप मे धारण करता है। यहा धर्म को अंग्रेजी के रिलीजन के पर्याय के रूप मे नहीं समझा जाना चाहिये। धर्म अधिक व्यापक है। रिलीजन अलग अलग हो सकते हैं, परन्तु धर्म एक है। अहिंसा, सत्य, क्रोध न करना, विद्या, क्षमा, त्याग समभाव, अपरिग्रह चोरी न करना, इन्द्रियो को वश में रखना आदि सर्वत्र सद्गुण ही माने जाते हैं। इनसे ही संस्कार होता है। जहा जितना अधिक इन गुणों की मान्यता हो तथा इन पर आचरण हो, वहा की संस्कृति उतनी ही उदात्त मानी जाती है। इसलिये वेद मे बहुत संक्षेप में मनुष्य को केवल मनुष्य बनने का आदेश दिया गया है—

मनुर्भव

परन्तु मनुष्य के लिये मनुष्य बनना ही सबसे कठिन है। उसका सारा जीवन मनुष्य बनने के प्रयत्न मे लग जाता है। फिर भी मनुष्य में विद्यमान पशु इतना प्रबल होता है कि बहुत प्रयत्न करने पर भी थोड़ी सी ढील होने पर वह प्रकट हुए बिना, उसे अभिभूत किये बिना नहीं रहता। जीवन में यही संघर्ष चलता रहता है। यह राम और रावण का संघर्ष है और यही कौरव-पाण्डवो का कुरुक्षेत्र का युद्ध है। इस युद्ध मे अनेक बार सत्य की या धर्म की विजय का निर्णय हुआ है। परन्तु फिर भी यह युद्ध व्यक्ति-व्यक्ति के तथा समाज के जीवन मे बार-बार होता रहता है। इस पर विजय पाकर ही मनुष्य संस्कृत होता है।

इस प्रकार मनुष्यमात्र की संस्कृति तो एक ही है, परन्तु स्थान-भेद और काल-भेद से मान्यतायें भिन्न हो जाती हैं। कहीं सब चिन्तायें छोड़कर खाना-पीना और प्रसन्न रहना ही अन्तिम लक्ष्य मान लिया जाता है, कहीं पर सब जनो के कल्याण और सुख-सुविधा के लिए कुछ सम्पन्न लोगों को बलपूर्वक लूट कर, मारकर क्रान्ति करना ही परम श्रेय समझा जाता है और कहीं त्याग और सत्य द्वारा अच्छी प्रवृत्तियो को जागृत करके हृदय-परिवर्तन करना ही सर्वोत्तम माना गया है। इसी प्रकार नागरिक और देहाती संस्कृतियों में भी सूक्ष्म भेद से अन्तर का विकास हो जाता है। वास्तविकता यह है कि गांवों और नगर की समस्याओं में, वातावरण में और रहन-सहन में अन्तर होता है। जहा महानगरों में व्यक्ति इतना व्यस्त तथा आत्म-केन्द्रित रहता है कि उसे पड़ोसी का नाम भी पता नहीं होता—उसके दुःख-सुख आदि का ज्ञान तो दूर की बात है, वहा गाव एक छोटी इकाई है और सबके पास मिलने बैठने का समय होता है, वे एक दूसरे के घनिष्ठ ही नहीं होते, अपितु बाहर से कौन किसके पास क्यों आया—इसका भी उन्हें पता रहता है—एक पारस्परिक भाई-चारा देखने को मिलता है।

आज संस्कृति के सम्बन्ध मे एक बहुत बड़ी भ्रान्ति देखने में आती है। आज संस्कृति का अर्थ केवल नाच, गाना, अभिनय लिया जाता है और उसमे भी बाजारू या हल्के यहा तक कि नग्न प्रदर्शन को भी सांस्कृतिक मान लिया जाता है। नृत्य, गीत आदि संस्कृति के अंग हो सकते हैं, किन्तु केवल तभी जब उनसे मानवीय भावनाओ का उदात्तीकरण हो—जब वे मनुष्य के विचारो में परिष्कार उत्पन्न करें, उसे गहराई से सोचने का, भौतिकता से ऊपर उठकर आत्म-चिन्तन का अवसर प्रदान करें। वस्तुतः यह भी केवल संस्कृति का बाह्य प्रदर्शन है, समग्र संस्कृति नहीं। समग्र संस्कृति हमारे आचार-व्यवहार और चिन्तन मे प्रकट होती है। उसे देखा जा सकता है हमारी बात-चीत मे, हमारी जीवनचर्या में।

इस अशुद्ध धारणा से हमारे युवक-युवतिया भी संस्कृति को केवल उस नाच-गाने तक सीमित समझते हैं। विदेशो मे कोई सांस्कृतिक शिष्टमण्डल भेजा जाता है तो इस प्रकार के कलाकारो की उसमें भरमार होती है। चिन्तक, विचारक, कवि, शिक्षाविद्, धार्मिक व्यक्ति, दार्शनिक बहुत कम होते हैं। जिस रूप को मान्यता दी जाती है, युवक उसी को ठीक समझने लगता है। उसे वास्तविक संस्कृति या आचरण का विवेक ही नही होता।

इसी लिये नगरो के तथा कथित सभ्य और उच्च समाज मे क्लब-जीवन मदिरापान, सिनेमाओ की बाते, अभिनेताओ और अभिनेत्रियो के व्यवहार, बात-चीत, वेषभूषा की नकल, बनावटीपन—इन सब को संस्कृति का अंग माना जाने लगा है। आप विवाहादि उत्सवो में चले जाइये, इस प्रकार के लोगो के घर पर आपको माता-पिता, पुत्र-पुत्री, भाई-बहिन, पड़ोसी, सम्बन्धी—सब साथ साथ ह्विस्की के पेग चढाते हैं और सिगरेट का धुआ उड़ाते दिख जायेंगे, पाश्चात्य संगीत पर या पाश्चात्य संगीत की धुन पर बने भारतीय गानो के रिकार्डों पर कूल्हे मटकाते मिल जायेंगे। यह है संस्कृति, आज का उच्चवर्गीय जीवन, उस वर्ग का जीवन जिसकी नकल मध्यम या निम्नवर्गीय समाज करता है। गीता मे भी कहा गया है—

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥

श्रेष्ठ व्यक्ति जो कुछ भी व्यवहार करता है, दूसरे व्यक्ति भी वही करते हैं। वह जिस बात को भी अपने आचरण से प्रमाणित कर देता है, अन्य लोग उसी का अनुसरण करते हैं।

परन्तु दूसरी ओर अपराध बढते जाते हैं। बहुत बार समाचार पत्रों में पढने मे आता है कि बैंक डकैती मे बड़े अफसरो के बेटो का हाथ था, बड़े नेताओ और अफसरो के कारण युवतियो को आत्महत्याय करनी पड़ती हैं क्योंकि वे उनकी पाशविकता का शिकार होती हैं। ये ही लोग कभी समूह मे बैठेंगे तो इधर-उधर सब की आलोचना करेंगे। सर्वत्र व्याप्त भ्रष्टाचार की हम सब आलोचना करते हैं। छोटे से छोटे कर्मचारी की और बड़े अफसर की तथा प्रत्येक सरकारी विभाग प्रत्येक कार्यालय, स्कूलो, कालेजो के प्रधानाचार्यों तथा अध्यापको की, औद्योगिक संस्थानो की हम आलोचना करते हैं। परन्तु क्या कभी हम अपने विषय मे सोचते हैं। आज हमारे युवको को यह सोचने की आवश्यकता है। और यदि वास्तव में हम एक उदात्त संस्कृति का उदाहरण प्रस्तुत करना चाहते है तो युवको को जहा वास्तविक दोष हैं, उनको ध्यान मे रखते हुए, उनकी आलोचना करते हुए भी केवल इतना करना है कि जिस जिस स्थान पर भी वे हो, वहा अपना, केवल अपना कार्य पूर्ण दक्षता और कर्तव्य भावना से करें। पुराने लोग जैसे हैं, उन्हें रहने दे, उनकी उपेक्षा न करें आलोचना भी न करें परन्तु प्रत्येक नवयुवक कर्तव्य-निर्वाह का एक संकल्प लेकर चले तो हम अपना सांस्कृतिक दृष्टिकोण सुधार सकते हैं। (क्रमश)

व्यक्ति की पहचान

(पृष्ठ ३ का शेष)

हमें पूर्ण विश्वास है कि आप चतुर खिलाड़ी की भांति पंजाब के हिंसायुक्त वातावरण को परिवर्तित कर स्नेह का सौहार्द का भाई-चारे का वातावरण बनाने मे सफल होंगे—

महर्षि के इस अमर वाक्य को कठिन समय में भी याद रखना।

निन्दन्तु नीति निपुणा यदि वा स्तुवन्तु
लक्ष्मी समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा
न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ॥

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश का निर्वाचन

दिनाक १३ ५ १९९० को आर्य समाज कुल्लू मे आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न हुआ। इसी अधिवेशन मे आगामी दो वर्षों के लिये सर्वसम्मति से ब्र० आर्यनरेश जी को प्रधान चुना गया। उन्ही को अन्य अधिकारियो तथा अन्तरग के सदस्य चुनने का अधिकार दिया गया। सभा के अधिकारियो तथा अन्तरग आदि का गठन इस प्रकार किया गया —

सरक्षक—श्री कृष्णलाल आर्य

प्रधान—ब्र० आर्यनरेश

कार्यकारी प्रधान—श्री रोशनलाल आर्य

—उपप्रधान श्री श्याम बिहारीलाल ग्रोवर, श्री कृष्णचन्द्र आर्य, श्रीमती चान्दरानी

महामन्त्री—श्री भगवानदेव चैतन्य

उपमन्त्री—श्री रामकृष्ण गौतम और श्री सुदर्शन कपूर

कोषाध्यक्ष—श्री अरुण कुमार

लेखा निरीक्षक—करतारनाथ गन्डोतरा

प्रान्तीय सचालक आर्य वीर दल—कृष्णचन्द्र आर्य

उपसचालक—श्री सचीन और श्री अखिलेश भारती

—भगवानदेव 'चैतन्य' महामन्त्री

चुनाव सम्पन्न

—वैदिक नैष्टिक मण्डल गुरुकुल आमसेना ब्र० कृष्णदेव नैष्टिक प्रधान ब्र० अविधन मन्त्री ब्र० मोहन कुमार कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज कठूआ डा० दुष्यन्त जी उप्पल प्रधान श्री सुरेन्द्र गुप्ता मन्त्री श्री किशोरीलाल जी महाजन कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज शान्ती नगर मेरठ श्री हरिश्चन्द्र जी प्रधान श्री हरवीर सिंह सुमन मन्त्री श्री ओकारसिंह आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज लहेरिया सराय (बिहार) डा० महावीर प्रसाद प्रधान श्री भुवनारायण आर्य मन्त्री श्री अशोक कुमार कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज धुलिया श्री रामकृष्ण जी डाळवानी प्रधान श्री सेवाराम आर्य मन्त्री श्री बाबरदास जी कोषाध्यक्ष चुने गये।

—श्री नि शुल्क गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या (फैजाबाद) श्री ज्ञानेन्द्र भटनागर कुलपति श्री रमेश चोपड़ा प्रधान श्री दुर्गाप्रसाद आर्य मन्त्री श्री प्रदीप आर्य मुख्याधिष्ठाता श्री रामजी शुक्ल कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली श्री सरदारीलाल प्रधान श्री त्रिलोकी नारायण मन्त्री श्री ओम्प्रकाश आहूजा कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज ककर खेड़ा मेरठ श्री टी० डी० सेठिया प्रधान श्री रामस्वरूप विमल मन्त्री श्री रामसरन कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज शक्ति नगर सोनभद्र श्री ओमप्रकाश सैनी प्रधान श्री अजय कुमार श्रीवास्तव मन्त्री श्री परमानन्द पटेल कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज दयानन्द मार्ग उदयपुर डा० ब्रजमोहन जावलिया प्रधान श्री हरिनारायण शर्मा मन्त्री श्री गिरधारीलाल आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज चित्रगुप्त गज लश्कर श्री मनीराम गुप्त प्रधान श्री प्रकाश चन्द्र अग्रवाल मन्त्री श्री मन्नलाल बोहरा कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज किशनपुरी उदयपुर (राज०) श्री सुरेशचन्द गुप्ता प्रधान श्री अशोक कुमार शर्मा मन्त्री श्री पन्नालाल अरोड़ा कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज साबुन बाजार लुधियाना डा० रामस्वरूप जी प्रधान श्री धर्मपाल भसीन मन्त्री श्री अमरनाथ शर्मा कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्यसमाज सैक्टर २३ न्यू टाऊन फरीदाबाद श्री कन्हैयालाल मेहता प्रधान श्री चूहरराम डाग मन्त्री श्री प्रमोद मल्ला कोषाध्यक्ष चुने गये।

—जिला सभा पटियाला डा० कुन्दनलाल प्रधान श्री अशोककुमार मन्त्री श्री गुलाबसिंह कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज नामनेर रामकृष्ण गोयल प्रधान भगवान प्रसाद मन्त्री सोहनसिंह कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य पुरुषों का दुखद वियोग

विगत पाच महीनो में आर्य समाज के कुछ श्रेष्ठ विद्वान इस लोक से प्रस्थान कर गये।

(१) १२ जनवरी १९९० को डी. ए. वी. कालेज कानपुर के भूतपूर्व हिन्दी प्रोफेसर तथा वैदिक विद्वान डा० मुन्शीराम शर्मा सोम का निधन हो गया। डा० सोम वेदो के मर्मज्ञ होने के साथ साथ प्रतिभा सम्पन्न कवि भी थे।

(२) २ मार्च को दिल्ली मे प० जगत कुमार शास्त्री का निधन हुआ। शास्त्री जी की कलम जीवन भर चलती रही। उन्होने लगभग १०० ग्रन्थ लिखे। वे सच्चे अर्थों में वैदिक मिशनरी थे जो कलम हाथ मे पकडे ही मानो परलोक सिधार गये। मानापमान की चिन्ता किये बिना धर्म प्रचार मे रात्रिदिवा लगे रहना शास्त्री जी की विशेषता थी।

(३) २१ अप्रैल को बम्बई मे दर्शनाचार्य प० ईश्वरचन्द्रजी का परलोक-वास हुआ। प० ईश्वरचन्द्र से आज की पीढी के आर्य समाजी परिचित भी नहीं हैं। वे गुरुकुल पोठोहार (रावलपिण्डी) मे दर्शन के अध्यापक रहे। दयानन्द उपदेशक विद्यालय लाहौर मे वे अध्यापन करते रहे। गुरुकुल कांगडी में भी उन्होंने पढ़ाया। देश के विभाजन के पश्चात् वे बम्बई रहने लगे। प० ईश्वरचन्द्र जीवन के अन्तिम क्षण पर्यन्त जीविका निर्वाह के लिये जैन मतावलम्बियो को धर्म शास्त्रो का ज्ञान दर्शन करा कर उन पर निर्भर रहे। इतने महान विद्वान की सेवाओ का हम लाभ न उठा सके।

१९६१ में मैंने नवम आर्य महासम्मेलन में उनके दर्शन दिल्ली में किये। मैं उनके नाम और काम से परिचित था, अन्त तक वे आर्य समाज से उपेक्षित रहे। उस बात को भी तीस वर्ष व्यतीत होने आये। दर्शनाचार्य जी के अनेक प्रौढ़ दार्शनिक लेख सरस्वती जैसी पत्रिका मे तब प्रकाशित होते थे जब वे लाहौर मे रहते थे।

आर्य समाज में विद्वानों का सम्मान करने की प्रवृत्ति तो है पर प० ईश्वरचन्द्र जी जैसे विद्वानसे दर्शनशास्त्रो पर टीकायें और भाष्य लिखवाते। अस्तु ! उनकी एक ही पुस्तक 'आर्य धर्म मीमांसा' प्रकाशित हो सकी है। वे जीवन पर्यन्त जैन साधु साध्वियो को संस्कृत और दर्शन पढ़ाते रहे। आर्य समाज उनका उपयोग कर सके। तो उनके अप्रकाशित ग्रन्थ यदि उपलब्ध हो तो प्रकाशित किये जाय।

(४) ८ मई को ९२ वर्ष की आयु पाकर करनाल मे आर्य शिक्षा शास्त्री प्रिंसिपल लेखाराम वर्क परलोकवासी हुए और उसी दिन आर्य समाज के लौह पुरुष स्वामी रामेश्वरानन्द जी ने भी मुक्ति लाभ किया। प्रिंसिपल वर्क ने उर्दू मे आर्य केसरी पत्र निकाला था तथा उर्दू मे प० लेखराम का जीवन चरित्र लिखा। स्वामी रामेश्वरानन्द जी की सेवाओ से तो हम सभी परिचित हैं। वे धर्म, समाज और देश के लिए समर्पित सन्यासी थे। पुरानी पीढ़ी के लोग धीरे धीरे जा रहे हैं। उनका स्थान लेनेवाले लोगो का अभाव तो नहीं है। पर उस स्थान की पूर्ति असम्भव है। दयानन्द की यह फुलवाडी सदा हरी भरी रहे हमारी तो यही कामना है।

----डा० भवानीलाल भारतीय

—आर्य समाज बिल्सुगढ़ (फर्रुखाबाद) के संरक्षक एव आर्य विचार-धाराओ के प्रबल निष्ठावान श्री राधेश्याम चौरसिया की वृद्धा माता पूज्या फूलमती देवी का लगभग १०० वर्ष की लम्बी आयु के पश्चात दि० ५-६-९० को अचानक हृदयगति रुक जाने से निधन हो गया।

—आर्य जगत के समर्पित, वैदिक प्रचारक एव आर्य समाज बिल्सुगढ़ (फर्रुखाबाद) के उपप्रधान श्री राधाराम जी ओझा की धर्मपत्नी पूज्या सुखदेवी का दिनांक १७-५-९० को श्वास रुग्णावस्था मे आकस्मिक निधन हो गया है वे ७५ वर्ष की थीं। एव आर्य विचारो के शुभ चिन्तक एव निष्ठावान प्रत्यासाणी श्री श्रीगोविन्द चतुर्वेदी निवासी बिल्सुगढ़ की धर्मपत्नी शान्तादेवी का दिनांक २४-५-९० को आकस्मिक निधन होगया। आर्यसमाज बिल्सुगढ़ दोनो दिवंगत आत्माओं के प्रति शोक श्रद्धाजलि समर्पित करते हुये गहरा दु:ख प्रकट करता है। दोनो परिवारी जनो को धैर्य धारण एव शान्ति प्रदान करने की ईश्वर से शाश्वत प्रार्थना करता है।

-- बालकराम आर्य पथिक
प्रधान आर्य समाज बिल्सुगढ़ फर्रुखाबाद

आबू पर्वत पर आर्य गुरुकुल महाविद्यालय की स्थापना

आबू पर्वत प्रात काल २७ मई को हजारो नर-नारी प्रसन्नता उत्सुकता एव आश्चर्य से एक ऐतिहासिक क्षण की प्रतिक्षा कर रहे थे। गत चार वर्षों से जिस भविष्य की योजना बन रही थी आज सब उसको वर्तमान में परवर्तित होते देख रहे हैं। उद्घाटन समारोह का प्रारम्भ गुरुकुल की नवनिर्मित यज्ञशाला मे वेदों के विद्वान स्वामी व्रतानन्द जी महाराज के सुयोग्य शिष्य प० भीमसेन जी वेदवागीश के ब्रह्मत्व मे सामवेद पारायण यज्ञ द्वारा प्रारम्भ हुआ। प्रात एव सायकाल वेदमन्त्रो के उदघोष और प्रवचनो से अरावली की पर्वत माला गुन्जायमान होती रही। उत्सव का कार्यक्रम दिनाक २६-२७ एव २८ मई को सम्पन्न हुआ। उत्सव का प्रारम्भ नक्की झील के सुरम्यतट पर स्थित आर्य समाज मन्दिर के प्रागण में हजारो आर्य नर-नारियो की उपस्थिति में स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने ध्वजारोहण से किया। समारोह प्रतिदिन स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, स्वामी ओमानन्द जी महाराज स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज के प्रवचन एव भजनोपदेश से आध्यात्मिक एव धार्मिक वातावरण मे सम्पन्न हुआ।

रोहतक में वेद शिक्षा शिविर का उद्घाटन

दयानन्द मठ रोहतक मे ३ जून को वेदशिक्षा शिविर का उद्घाटन आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने किया। यह शिविर १७ जून तक चला। इसमें आर्य जगत् के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डा० सुदर्शनदेव जी आचार्य ने कार्यकर्ताओ को चारो वेदो का संक्षिप्त परिचय, वेदमन्त्रो का शुद्ध उच्चारण, सन्ध्या, दैनिक यज्ञ आदि मन्त्रो की व्याख्या, वैदिक सिद्धान्तो पर शंका समाधान तथा वैदिक संस्कारो का शिक्षण दिया।

—वेदपाल शर्मा

आर्य युवक निर्माण शिविर

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, दिल्ली के तत्वावधान में आर्य युवक निर्माण शिविर एवम् योग साधना शिविर का उद्घाटन शनिवार ९ जून १९९०, साय ५ बजे शिविर समापन रविवार दिनाक १७ जून १९९० प्रात: १० से १ बजे तक स्थान गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) मे आयोजित किया गया।

—धर्मवीर व्यायामाचार्य
शिविर सचालक

सार्वदेशिक आर्य वीर दल शिक्षक प्रशिक्षण शिविर

गुरुकुल झज्जर का समापन समारोह

झज्जर। सार्वदेशिक आर्य वीर दल शिक्षक प्रशिक्षण शिविर गत् १० जून १९९० से पूज्यपाद स्वामी ओमानन्द सरस्वती के संरक्षण और श्री डा० देवव्रत जी व्यामाचार्य उपसचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल के नेतृत्व मे सफलतापूर्वक सचालित हो रहा है। इसमें भारत के कोने-कोने से २५० आर्य वीर शिक्षक बनने की आकाक्षा से श्रम-रत हैं।

इस शिविर मे दक्षिण भारत, महाराष्ट्र, बगलौर कर्नाटक आदि के आर्य वीर भी भाग ले रहे हैं।

आगामी २४-६-९० को शिविर के समापन समारोह मे स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक सभा और श्री बालदिवाकर हस प्रधान सचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल शिक्षार्थियो को सम्बोधित करगे। इस अवसर पर अनेकानेक अन्य विद्वान, सन्यासी और राजनेता भी पधारेंगे।

श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री को भ्रातृ शोक

दिनाक ६ जून को बुढपुर मेरठ में श्री प्रतापसिंह जी शास्त्री का निधन हो गया। आप श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री के बड़ भाई थे। आप आर्य-समाज का पजाब में कार्य करते रहे आप डी.ए.वी. इन्टर कालेज किशनपुर में सेवा करते रहे।

रजि० स० डी० (डी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२४-६-१९९०) बिना टिकट भेजने का लाइसेन्स न० U ३१
R N 626/57 Licensed to post without prepay and licence No. U 31 Post in D.P.S.O. on 22 6 1990



आर्य समाज दीवान हाल मे स्वामीजी ... का स्वागत श्री ... रहे हैं।

धर्म एक है अनेक नहीं

आर्य समाज बारा जिला कोटा के ५१ वें वार्षिक उत्सव पर दिनांक १७ मई को सायं आयोजित धर्म और राष्ट्र रक्षा सम्मेलन में ओजस्वी भाषण करते हुये वेद पुराण व बाइबिल के प्रकाण्ड विद्वान प० अग्निप्रकाश शास्त्रार्थ महारथी ने कहा कि धर्म एक है अनेक नहीं। एक धर्म वैदिक धर्म है शेष हिन्दू मुस्लिम ईसाई सिक्ख आदि सब मत मजहब और सम्प्रदाय है। अपने जीवन में किये सैकड़ो शास्त्रार्थों का बारा के मौलवी मौलाना जनाब हबीबुल्ला व अन्यो की उपस्थिति में अनेक अनुभव सुनाते हुये पडित जी ने कहा कि आर्य समाज ही राष्ट्र का ... रक्षक और सजग प्रहरी है। उसके मन मे मुसलमानों के प्रति ... भी पूर्वाग्रह नहीं है।

सम्मेलन में भजनोपदेशक अमरसिंह आर्य, ... शर्मा कर्मठ और स्वामी शिवानन्द मस्ताना ने राष्ट्र की वर्तमान दो बड़ी समस्याओं पंजाब और कश्मीर समस्या पर विचार कर उसे हल करने में आर्य समाजियों से आग्रह किया कि वे सत्य अर्थों में राष्ट्र के जनमत को जगायें। कोटा के मजदूर नेता और आर्य समाज के विद्वान कार्यकर्ता डा० रामकृष्ण आर्य ने सम्मेलन में उपयुक्त विषयक प्रस्ताव पढ़ते हुए कहा कि —

कोटा के पुलिस प्रशासन ने निष्पक्ष और तटस्थ भाव से विस्फोटक पदार्थों एवं हथियारों का जो घर घर जाकर तलाशी अभियान चलाया है वह कोटा के इतिहास में सबसे अच्छे काम की शुरूआत है।

वार्षिकोत्सव

बड़े हर्ष का विषय है कि आर्य वीर दल पिलखुवा का प्रथम वार्षिकोत्सव दिनांक ४ जून १९९० दिन सोमवार को होने जा रहा कार्यक्रम इस प्रकार है।

प्रात ६॥ से ९॥ तक यज्ञ व प्रवचन
अपराह्न २ से ३ तक जिला स्तर की आर्य वीर दल की बैठक
अपराह्न ४ से ६ तक शारीरिक प्रदर्शन
सायं ७। से १०॥ तक राष्ट्रीय एकता व अखण्डता सम्मेलन

आप से निवेदन है कि अपने इस एक दिवसीय कार्यक्रम में उपस्थित होकर कार्यक्रम को सफल बनाये तथा आर्य वीरों का मार्ग दर्शन करें।

—अनिलकुमार मन्त्री

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य का निर्वाचन

१ जुलाई ९० रविवार को सायंकाल ४ बजे आर्य समाज हनुमान रोड के सभागार में होगा। सम्बन्धित आर्य समाजों के प्रतिनिधि एवं सहयुक्त सदस्य यथासमय पधारने की कृपा करें।

—शिव कुमार शास्त्री महामन्त्री



माता प्रेमलता खन्ना का स्वागत श्रीमती सुरेन्द्रकुमार शास्त्री कर रही हैं।

समापन समारोह

(पृष्ठ १ का शेष)

आगन्तुक महानुभावों ने जो विचार दिये वह दिये हैं— सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में अनेक वर्षों से निरन्तर शुद्धि कार्यक्रम चल रहा है। आर्यसमाज के हृदय में जो दर्द है वह मेंट्रोनगर से हुए धर्म परिवर्तन पर चिन्ता ग्रस्त होकर दूरदराज आदि वाले क्षेत्रों में अपने भाइयो को गले लगाने का कार्य कर रहा है। आज ऐसे कार्य में आर्यसमाज के लोगों को तन-मन धन से सक्रिय होकर काम करना चाहिये।

आर्यसमाज एक मात्र ऐसी राष्ट्रीय संस्था है जो निःस्वार्थ भाव से देश की एकता अखण्डता को बनाये रखने के लिये धर्म परिवर्तन पर रोक लगाता है। आज आवश्यकता है बलात् धर्मपरिवर्तन को रोकने के लिये सरकार तत्काल कानून बनाये जिससे भावी खतरे से राष्ट्र को विघटन से बचाया जा सके।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र

वेदामृत

अतिथि-सत्कार अनिवार्य कर्म

[illegible] यश्च गृहाणामश्नाति, यः पूर्वोऽतिथेरश्नाति।
[illegible] एष संविदं च गृहाणामश्नाति, यः पूर्वोऽतिथेरश्नाति।
अथर्व० ९-६-३५,३६

हिन्दी अर्थ—(क) जो अतिथि से पहले भोजन करता है; वह अपने घर की कीर्ति और यश को खा जाता है, अर्थात् नष्ट कर देता है। (ख) जो अतिथि से पहले भोजन करता है, वह अपने परिवार की श्री और सम्पत्ति को खा जाता है, अर्थात् नष्ट कर देता है।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१ | दयानन्दाब्द १६६ | दूरभाष : ३२७०७७१ | वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष २५ अंक २५] | आषाढ़ सु० ९ सं० २०४७ १ जुलाई १९९०

नेपाल में इसाई लाबी अपने इसाई अपराधी धर्म प्रचारकों को मुक्त कराने में सफल

नेपाल। नेपाल के उच्चतम न्यायालय द्वारा अपराधी पाये जाने पर ईसाई धर्म प्रचारकों को जो जेलों में सजा भुगत रहे थे उन्हें मुक्त कराने में सफलता प्राप्त की।

इन ईसाई प्रचारकों के विरुद्ध धर्मान्तरण की प्रक्रिया में लिप्त रहने पर नेपाल के संविधान की प्रक्रिया के उल्लंघन करने के प्रमाण प्राप्त थे, जिनके आधार पर ही उन ईसाई-मिशनरियों को सजा सुनाई गई थी।

परन्तु ईसाई धर्म प्रचारकों को बचाने में ईसाई लाबी का अत्यन्त प्रभावपूर्ण दबाव पड़ा कि प्रधानमन्त्री श्री कृष्णप्रसाद भट्टराई ने महाराजा वीरेन्द्र से इन अपराधियों को क्षमादान देने हेतु आदेश पर हस्ताक्षर किये गये।

पिछले काफी समय से काठमाण्डू में उच्चस्तरीय ईसाई मिशन का प्रतिनिधि मण्डल नेपाल सरकार पर दबाव डाले हुए था। इस प्रतिनिधि मण्डल में ब्रिटेन कैनेडा तथा अन्य योरोपीय देशों के प्रतिनिधि क्रिश्चियन डेमोक्रेटिक पार्टियों का विचार और क्रिश्चियन सोसाइटी आफ इण्डिया नेशनल आर्गेनाइजेशन के अध्यक्ष श्री बीक पटनायक भी सम्मिलित थे।

इसके अतिरिक्त देशों के क्रिश्चियनस देशों की सस्थाओं द्वारा भी सरकार पर ईसाइयत के प्रचार-प्रसार हेतु छूट देने पर प्रभाव पूर्ण दबाव डाला जा रहा है।

नेपाल हिन्दू राष्ट्र होने के साथ सर्वधर्म समभाव का व्यवहार कर रहा है।

अन्तर्राष्ट्रीय ईसाई लाबी के बढ़ते प्रभाव के कारण नेपाल ही नहीं विश्व के हिन्दुओं में भी गहरी चिन्ता व्याप्त हो गई है।

आज अन्तर्राष्ट्रीय सस्थायें और योरोपीय देश अब खुलकर ईसाई लाबी का काम कर रहे हैं ये सस्थायें नेपाल के धार्मिक ढांचे के वित्तीय अनुदानों के सहारे टिकाना चाहती है।

स्वामी दयानन्द का पत्र

समय-समय पर आर्य समाजों तथा विद्वानों में वाद-विवाद चलता रहता है कि मन्त्र के पूर्व में ओ३म् का उच्चारण करें या नहीं। भारत में ही नहीं वह वाद-विवाद विदेशों तक में फैल चुका है। मॉरीशस में भी प्रश्न विवादास्पद रहा है।

परन्तु परोपकारिणी सभा अजमेर का मुख पत्र परोपकारी मास मई १९९० में महर्षि दयानन्द सरस्वती का एक उपदेश प्रकाशित हुआ है। उसकी अविकल कापी छाप रहा हूँ। विद्वजन विचार कर निर्णय लें।

—सम्पादक

परोपकारी वर्ष ३२, अंक: ९, वैशाख वि० सं० २०४७ मई १९९० ई०

परोपकारी

संख्या १

पण्डित [illegible] जी महाराज निवास स्थान रामगढ़, जिला सीकर, जयपुर को श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने निम्नलिखित उपदेश किया।

ओ३म्

उपदेश—

१—सब मन्त्रों के पूर्व ओ३म्कार का प्रयोग करना।

२—त्रि वर्ण का तत्सवितुः गायत्री मन्त्र, द्विजों की स्त्रियों को विश्वानिदेव, मन्त्र, शूद्र और उनकी स्त्रियों को विश्वानिदेव० मन्त्र और ईसाई मुसलमान आदि को भी (विश्वानि देव० मन्त्र, अन्त्यजादि को परमात्मानमिति मन्त्र)

३—नमस्ते शब्द सब आपस में बोले, छोटा प्रथम बोले, बड़ा पीछे बोले।

४—जो कोई ब्राह्मण हो, उसको संन्यास देकर नाम के आगे—अन्त में सरस्वती शब्द होना चाहिये। और क्षत्रिय वैश्य को आनन्द लक्षणा जैसे अच्युतानन्द और शूद्र को दास जैसे अच्युतदास [illegible] सर्वात्मान यन्तर्यामिनं कृपामृत सागर परमात्मानमहं शरणं प्रपद्ये।

५—अन्त्यज सब स्वजाति के उपदेशक और अध्यापक हों।

६—वर्ण व्यवस्था गुण कर्म से होनी चाहिये, धर्म व्यवहार में।

७—कोई पूछेगा कि कौन साधु हो, कहे कि (वेदानुयायी) तुम्हारा धर्म क्या पक्षपात रहित न्यायाचरण सत्य।

८—भगवावस्त्र सबको होना चाहिये।

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सर मुन्डाते ही ओले पड़े

श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह ने मुस्लिम नवाबों की बातों में आकर एक काबिल तजरबेकार और योग्य अफसर को श्रीनगर से बुला लिया आपका विचार था कि इस तरह के इशारे से पाकिस्तान के जर खरीद आतंकवादी अपनी रविश पर गौर करने को तैयार हो जायगे। परन्तु आप भूल गए कि लातों के भूत बातों से नही मानते आप के हर फेल का मतलब यह लोग गलत निकाल रहे हैं—आज से दो दिन पूर्व आर०पी०एफ० के ठिकानों पर राकेटों से जो हमले हुए हैं वह और कुछ बताएं या नहीं यह तो जरूर बताते है कि इन आतंकवादियों ने आपके जजबात की कदर की है न ही इन्हें आपके ख्यालात की परवाह है जो लोग श्री जगमोहन पर उंगलियां उठा रहे थे और यह ही रो रहे थे कि आप बड़ी सख्ती कर रहे हैं इनसे कोई पूछे कि अब इनका क्या कहना है? अगर श्री जगमोहन सख्ती कर रहे थे तो इन्हें समझाया जा सकता था कि वह सख्ती के साथ नर्मी भी बरतें परन्तु जिस तरीका पर श्री जगमोहन को बरतरफ किया गया वह यह ही साबित करता है कि हमारे हाकिम एक दम से अनाड़ी हैं जिन्हें इन्सानी फितरत का कुछ पता नहीं श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह और मुफ्ती साहब जितने इशारे आतंकवादियों को कर रहे हैं। इनमें से एक का भी वह रास्त मतलब नही ले रहे हैं वह यह समझ रहे हैं कि सरकार झुक सकती है झुकाने वाला चाहिए।

राकेटों के प्रयोग से अन्दाजा हो जाता है कि इन आतंकवादियों के इरादे क्या हैं—अब सरकार बताए कि इसने इनका मुकाबला कैसे करना है। सरकार की नरम नीति का असर इनको कोई है नही फिर यह है कि सरकार को यह भी समझना चाहिए कि इसकी तमाम कोशिशों के बावजूद आतंकवादियों को उत्तम हथियार मिल रहे हैं—जो राकेट चलाए गए हैं वह आध-पौन मील चौड़ी झील के पार से चलाये गये हैं पंजाब में राकेटों का प्रयोग हो रहा है वह कामयाब नहीं रहे लेकिन श्रीनगर का वाक्या यह जाहिर करता है कि यह अनुभवी लोग अमल कर रहे हैं। परन्तु अन्तिम समस्या वहीं की वहीं है—इन आतंकवादियों की जड़ को जब तक उखाड़ कर फेंका नहीं जाता तब तक कुछ न होगा—परन्तु सरकार की मुश्किल यह है कि ज्यूं ही इसने ऐसा किया कि एक एक देश पंजे गाड़ कर इसके पीछे पड़ जायेगा तब सब पर प्रगट हो जाएगा कि भारत की जिस विदेश नीति की सफलता पर इतना गौरव किया जा रहा है इसकी हकीकत क्या है। आगे पीछे तो हर कोई खड़ा होने को तैयार है देखने की बात यह है कि नाजुक समय पर कौन आपके साथ खड़ा होता है वह सही मानो में आपका दोस्त कहा जाएगा।

(प्रताप के सौजन्य से २२-६-९०)

स्वामी दयानन्द का पत्र

(पृष्ठ १ का शेष)

९—प्रायश्चित्त—जिस समय कोई मत मतान्तरस्थ पुरुष वेदमत ग्रहण करना चाहे तभी पवित्र हो गया परन्तु पुनः वेदमत छोड़ वेद विरुद्ध मत ग्रहण कभी न करें। उसके लिये यह प्रायश्चित्त है।

१०—सब लोग आचरण सत्यभाषणादि धर्मयुक्त ब्रह्मचारी रहें और विद्या की उन्नति करें।

मिति चैत्रबदि १४ गुरुवार सं० १९३६
(दयानन्द सरस्वती)

संस्कृत-अकादमी-उत्तर प्रदेश लखनऊ द्वारा वैदिक विद्वान डा० रामनाथ वेदालंकार सम्मानित

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के सुयोग्य स्नातक, तथा वेदों के मर्मज्ञ विद्वान डा० रामनाथ वेदालकार को उनके द्वारा संस्कृत के प्रचार-प्रसार एव विकास कार्य हेतु की गयी दीर्घकालीन विशिष्ट सेवा तथा वैदिक साहित्य के अनेक शोधपूर्ण ग्रन्थो के लिए उत्तर प्रदेश संस्कृत ग्रन्थ अकादमी द्वारा दिनाक ३१ मई, १९९० को लखनऊ मे एक भव्य समारोह मे पञ्चीस हजार रुपए के विशिष्ट पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

उत्तर प्रदेश के बरेली जनपद के फरीदपुर ग्राम में महाशय जी के नाम से विख्यात स्वतन्त्रता सेनानी लाला गोपालराम जी के यहा ७ जुलाई, १९१४ को जन्मे डा० वेदालकार का सम्पूर्ण जीवन गुरुकुल, आर्यसमाज तथा वेद सेवा के लिए समर्पित है। सन १९३६ मे वेदालकार उपाधि प्राप्त करने के बाद आपने जयपुर रियासत के अन्तर्गत ठिकाना खूड के ठिकानेदार तथा महाराजा जयपुर के ए. डी. सी. ठाकुर जयसिंह के अनुरोध पर खूड मे शिक्षा-प्रसार हेतु गुरुकुल की स्थापना की तथा कुछ समय तक उसका सचालन किया। सन् १९३८ से १९७६ तक आप गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में वेदानुसधानकर्ता, वेदोपाध्याय, संस्कृत विभाग के अध्यक्ष, कुलसचिव, वेद एव कला महाविद्यालय के अध्यक्ष, आचार्य एव उपकुलपति के पदो पर कार्यरत रहे। अगस्त, १९७६ मे आपको तीन वर्ष के लिए पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ में नवस्थापित महर्षि दयानन्द वैदिक अनुसधान पीठ के प्रथम प्रोफेसर एव अध्यक्ष के रूप में मनोनीत किया गया। वहां से सेवा-निवृत्त होने के बाद से आप निजी स्तर पर शोध एव लेखन मे व्यस्त हैं।

'अर्थ' एव 'यश' की लालसा से नही, वरन् "स्वान्तः सुखाय" तथा वेदो में निहित ज्ञान को वेद प्रेमियो तक पहुंचाने के उद्देश्य से साहित्य-सृजन में व्यस्त आचार्य वेदालकार को इस अनवरत वेद-सेवा के लिए इससे पूर्व बम्बई आर्यसमाज द्वारा इक्कीस हजार रुपये के पुरस्कार से तथा गुरुकुल विश्वविद्यालय द्वारा "विद्यामार्तण्ड" की मानद उपाधि से सम्मानित किया जा चुका है। आपकी "यज्ञमीमांसा" शीर्षक कृति वर्ष १९८१ में संस्कृत ग्रन्थ अकादमी उत्तर प्रदेश द्वारा पुरस्कृत हो चुकी है।

आतंकवादियों को शहीद कहना शहीदों का अपमान

चण्डीगढ़ २२ जून। पंजाब के राज्यपाल वीरेन्द्र वर्मा ने मारे जाने वाले आतंकवादियों को शहीद बताने की निन्दा की।

उन्होंने इसे महात्मा गांधी, भगतसिंह तथा सन्त हरचन्दसिंह लोंगोवाल जैसे का जिन्होंने राष्ट्र के लिए अपने जीवन का बलिदान किया अपमान बताया।

उन्होंने राजभवन में आयुक्तों उपायुक्तों पुलिस उपमहा निरीक्षकों तथा जिला पुलिस अधीक्षकों के सम्मेलन में कहा कि किसी की हत्या करने वाला हत्यारा ही कहा जाएगा। उन्होंने कहा कि ऐसे लोगों को समाज और राष्ट्र का शत्रु समझा जाना चाहिए।

उन्होंने कहा कि आतंकवादियों को शहीद बताना स्वयं पंजाब की उस जनता का अपमान है जो अपनी देश भक्ति और स्वतन्त्रता संग्राम में अपने योगदान के लिये जाने जाते हैं। राज्यपाल ने कहा कि राज्य को कानून व्यवस्था तथा भ्रष्टाचार के मामले में गम्भीर चुनौती का सामना करना पड़ रहा है अतः पुलिस अधिकारियों को चाहिए कि वह पैसा ऐंठने वाले विदेशियों को गिरफ्तार करें।

(दैनिक हिन्दुस्तान २१-६-९०)

सम्पादकीय—

तू आगे बढ़ के देख

आत्म-शक्ति और विश्वास एक ऐसी पौरुष है जिसके आगे बढ़ने की कोई सीमा नहीं ? मगर सावधान ! जरूरत से अधिक आत्म विश्वास भी आपको हानि पहुंचा सकता है।

आपके व्यक्तित्व में यदि आत्म विश्वास का सन्तुलन नहीं है तो आप हर पग पर दुःसाहस करने लगेंगे। तब आप अपने आपको हानि पहुंचा देंगे।

जैसा कि प्रसिद्ध मानस शास्त्री डा० एन. स्वेन ने कहा है कि 'आत्म विश्वास की कमी से जीवन की सार्थकता ही समाप्त हो जाती है। मगर इस शक्ति को आवश्यकता से अधिक भी बढ़ाना नहीं चाहिए।

डा० स्वेन ने आत्म विश्वास को आगे बढ़ाने के कुछ उपाय सुझाये हैं—

अपनी महत्वपूर्ण योग्यताओं को पहचानिये ?

दुर्बलतायें कहां और किसके पास नहीं होती हैं अपनी विशेषताओं को पहचानिए और उन्हें स्नेह से अपनाइये। जरूरत हो तो उन खूबियों को नोट कीजिये। यदि यह सूची लम्बी हो जाए, तो भी कोई बात नहीं। अपने आपको पहचानिये कि मैं एक अच्छा मित्र हूं, मैं ईमानदार हूं, मेहनती हूं, विश्वास करने योग्य हूं। बिना चिन्ता किये कि मेरी खूबी छोटी है या बड़ी, प्रत्येक विशेषता आपके व्यक्तित्व के निर्माण में महान योगदान दे सकती है।

अपने व्यक्तित्व को पहचानने के उपरान्त इनके उपयोग करने से मत चूकिये। फिर देखिये लोग आपकी दुर्बलताओं का ध्यान न करके विशेषताओं की ही चर्चा करेंगे। उन्हें सुनकर आप सदा विनम्र बने रहेंगे।

अपनी मंजिल का चुनाव करें ?

आगे बढ़ने के स्थान बहुत हैं पर उनका चयन सावधानी से करें। जिस भी मंजिल को चुनें, पूर्ण पुरुषार्थ के साथ उस तक पहुंचें अवश्य ! महत्वाकांक्षी होना बुरा नहीं पर सीमा रेखा के साथ। [तब आत्मविश्वास आपका बढ़ेगा। मंजिल न मिलने पर हीन भावना के शिकार भी हो सकते हैं।

ऊंचे सपने अच्छी बात है लेकिन क्षमता से हीन कोरी कल्पना में उड़ना बुरी बात होगी। ऊंचे पुलाव न पकाकर अपनी विवेक शक्ति का सहारा ले तो मानव चन्द्रमा पर भी जा सकता है।

अपनी योग्यता पारिवारिक पार्श्वभूमि, आर्थिक क्षमताओं को तौलते हुए सही मार्ग का अनुसरण करें। मार्ग प्रशस्त होगा, सफलता चरण चूमेगी और आत्मविश्वास में वृद्धि होगी।

असफलताओं से शिक्षा

महान व्यक्ति के व्यक्तित्व में सफलता के साथ असफलता के दर्शन भी होते हैं यही शिक्षा दर्शन है। असफलता का सामना करना है उसे हटाकर ही सफलता पानी है।

असफलताओं से सदा ही शिक्षा ग्रहण करें। असफलतायें ही शिक्षक बनकर ज्ञान का सम्वर्धन करती हैं। बशर्ते असफलताओं को गम्भीरता से लिया जाय। उनका विश्लेषण कर अपने को समझा जाए। अपनी असफलताओं पर आंखें बन्द न की जायें उन्हें अपने पर हावी न होने दें। किन्तु उन्हें विस्मृत भी न होने दें। सीखने का ही दूसरा नाम है आत्म विश्वास की कमाई।

सफल व्यक्तित्व की उपासना

एक बार आप अपने घर परिवार के परिजनों का सही चयन न कर सके हो परन्तु मित्रों का चयन करने में सावधानी ठीक बर्ते। जो जीवन में उन्नति के पथ पर अग्रसर होते रहे हों। दुर्बल स्वयं तो मरेगा ही, पर शक्ति वाले को भी निष्प्राण बना देगा। अतः सफल व्यक्तित्व ही पर-पुरुष में महानता के गुण भरता है। जो आप में आत्म विश्वास स्वयमेव बढ़ायेगा।

वे सोचते कैसे हैं, संकट काल में कैसे निर्णय लेते हैं। उठते बैठते कैसे हैं। उसी से सीखने के सही भाव पैदा होंगे। अन्धविश्वास करना भी बुरा है बुरी बातो को अन्तस मे मत आने दो, लेकिन अच्छाइयां जैसे भी मिलें उन्हें ग्रहण करें।

अपने कार्य पर गर्व ?

आप जो भी कार्य करें उसे गर्व और गौरव के साथ करें। सभी का अपना-अपना स्थान है। आत्म विश्वास की हीनता ही घरों में घुस गई। आत्म विश्वास ही पुनः जैसा काम करती है गृहणियों में नौकरो के समान काम करने के समान हीन भावना समा गई है। गृहणियों को सावधान किया जाय कि जितना काम नौकर करेंगे उससे कितना रुपया व्यय होगा और काम भी ठीक नहीं होगा। गृहिणी के द्वारा किया गया कार्य उनमें आत्म-विश्वास भी पैदा होगा।

प्रशंसा पाने के लिए

अपनी प्रशंसा किसे बुरी लगेगी, हर व्यक्ति अपनी प्रशंसा सुनना चाहता है। प्रशंसा को सुनकर व्यक्ति का आत्मविश्वास अनेक गुना बढ़ जाता है। काम करने वाले अच्छे व्यक्ति मिलेंगे, पर उनके कार्य की प्रशंसा न हो तो वक्र प्रवृत्ति के स्वभाव वाले हो जायेंगे। रहस्य केवल इतना है जो व्यक्ति दूसरे की प्रशंसा नहीं करता उसकी प्रशंसा दूसरे भी नहीं करते हैं। दूसरो की सच्ची प्रशंसा करने से न हिचकिए। झूठी प्रशंसा भी न करें। क्योंकि उसी का नाम चापलूसी है। प्रशंसा से जहां उसका आत्म विश्वास जागेगा वहीं पर आप में भी सही विश्वास की भावना पनपेगी। साथ ही दिनों दिन प्रशंसा के योग्य कार्य और करते चले जायेंगे।

सामान्य ज्ञान

किसी विशेष क्षेत्र का विशेष ज्ञान भी अपने को होना ही चाहिए। फिर जो आपके व्यवसाय के साथ सम्बन्धित हो यदि अन्य अनदल जानकारी कर ली जाय तो कोई हानि भी नहीं। गृह नक्षत्र व निहारिकाओं से लेकर समुद्र तल तक की जानकारी सामान्य रूप से हममें उपलब्ध हो सके तो इससे समाज के हर वर्ग में सफलता पूर्वक उठने-बैठने में गर्व व प्रसन्नता अनुभव करोगे।

आत्म विश्वास यदि आपका बढ़ा हुआ है तो अजनबियों में भी आप निश्चिन्त होकर मेल मिलाप पैदा कर लेंगे। बाजार में, यात्राओं में, सभा-समारोहों मे कहीं भी आप में अपना नैतिक साहस होना चाहिए। जिसमें पराया व्यक्तित्व अपने व्यक्तित्व में परिवर्तित कर मित्रता में बदल जाय। इससे भी अपने आत्म विश्वास की वृद्धि होती है। सामाजिक जीवन में वही व्यक्ति सफलता प्राप्त करते हैं जो मैत्री भाव बनाकर आगे बढ़ते हैं।

निराशावादियों से दूर

आत्म विश्वासी बनने के लिए आपको आशावादी बनना होगा। आशावादी बनने के लिए निराश व्यक्तियों से दूर रहना होगा। ऐसे व्यक्तियों का साथ आपके आत्म विश्वास के लिए जहर जैसा है। निराश व्यक्तियों से दूर रहने का मतलब यह नहीं कि आप उनसे डर रहे हैं। निराशा पूर्ण जीवन में अवसर आने पर उनसे भिड़ सकें। लेकिन याद रहे कि निराश व्यक्तियों के साथ भिड़ने के लिए व्यर्थ का समय भी आपके पास नहीं है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जब वेद प्रचार में उतरे तो आत्मविश्वास मे कमी थी जिधर जाते प्रचार का प्रभाव नहीं पड़ रहा था। हिमालय में आत्म चेतना को जगाने के लिए तीन वर्ष तक साधना की।

उसके बाद स्वामी जी आत्म विश्वास के साथ जिधर को चलें, वेदो का डंका बजता ही चला गया।

आज हम ऋषि-महर्षियो का नाम तो लेते हैं पर उन जैसी क्षमता व आत्म विश्वास नहीं है।

अपनी असफलताओं से भी कुछ सीखा नहीं। साथ ही अपनी महत्ताओ को जानकर भी उन्हें स्मरण भी नहीं किया। कोरे गीत गाने से भी क्या। यदि उन पर चलने का प्रयास नहीं किया।

मंजिल दूर नहीं है यदि मार्ग अवरुद्ध कण्टकाकीर्ण है तो समीप मंजिल भी अति दूर है।

समय के साथ समझकर चलना व्यक्तित्व के निखार के लिए परमावश्यक है और व्यक्तित्व के निखारने पर आत्मविश्वास अवश्य निखरता है।

तात्पर्य यह है कि आत्मविश्वासी बनने के लिए किसी विश्वविद्यालय से उपाधि प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं है। केवल आत्म विश्वास के साथ विचारपूर्वक आगे बढ़ने की जरूरत है।

आर्यो सावधान !

स्वामी अग्निवेश और आर्यसमाज

पं० फूलचन्द्र शर्मा 'निडर' भिवानी

दिनांक १ जून १९९० के सार्वदेशिक पत्र के मुख्य पृष्ठ पर स्वामी अग्निवेश के वक्तव्य पर जो उन्होंने जयपुर में एक प्रेस कांफ्रेंस में दिया है कि "शीघ्र ही एक 'भारतीय आर्यसमाज' की स्थापना की जायेगी, जिसमें हिन्दुओं के अतिरिक्त ईसाई मुसलमान सिख तथा बौद्ध आदि भी सम्मिलित हो सकेंगे।" स्वामी अग्निवेश के इस वक्तव्य पर डा० श्री भवानीलाल भारतीय ने जो आपत्ति की है उससे तो मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई है। परन्तु स्वामी अग्निवेश ने जयपुर में जो कुछ कहा है उसे पढ़कर मुझे बड़ा ही दुःख हुआ है।

स्वामी अग्निवेश संन्यास लेने के पूर्व चण्टाघर आर्यसमाज भिवानी में लगभग छः मास मेरे पास रहे। तब उनके कुछ आर्य समाजी विचार थे। मेरी उनकी परस्पर खूब बातें होतीं और तब हम दोनों मिलकर 'भिवानी' में प्रभात फेरी भी करते थे। परन्तु उनके रोहतक में संन्यास लेने पर ज्यों-ज्यों वे आगे बढ़ते गए उनके विचारों में अन्तर आता चला गया। अब वे और चाहे जो हो परन्तु आर्य समाज से कुछ नहीं होते हैं। जो आर्यसमाज उन्हें बुलाकर आर्यसमाज के मंच पर उनके भाषण करवाते हैं वे बड़ी भूल करते हैं आगे कोई आर्यसमाज उन्हें अपने उत्सवादि में बुलाने की भूल न करे। स्वामी अग्निवेश जी की इच्छा अब यह है कि वे भारत के ही नहीं अपितु सारी दुनिया के प्रमुख महापुरुषों में हों। उनकी यह इच्छा तो भगवान जाने वह पूरी करेगा या नहीं, पर वे जितने भी हाथ पांव मारते हैं वे होते हैं उनकी इसी इच्छा के लिए। स्वामी दयानन्द विवेकानन्द आदि जो महापुरुष हुए वे सब हिन्दुओं के महापुरुष कहलाए और भारत के महापुरुष कहलाए किन्तु स्वामी अग्निवेश चाहते हैं कि वे सारी दुनिया के और हिन्दू मुसलमान सिख तथा ईसाई आदि सबके महापुरुष कहलाएं। वे कभी हरिजनों को लेकर उन्हें नाथद्वारे के मन्दिर में घुसेड़ना चाहते हैं, कभी अयोध्या की राम जन्मभूमि के मन्दिर तथा मुसलमानों की मस्जिद की एक सम्मिलित दीवार होने के गीत गाते हैं, इत्यादि और अब जयपुर में उन्होंने यह कहकर कमाल ही कर दिया कि 'शीघ्र ही एक भारतीय आर्यसमाज की स्थापना की जाएगी जिसमें हिन्दुओं के अतिरिक्त, मुसलमान, ईसाई, सिख तथा बौद्धादि सभी सम्मिलित हो सकेंगे।"

मैं स्वामी जी के इस वक्तव्य पर उनसे कुछ प्रश्नों का उत्तर चाहता हूँ। जो इस प्रकार हैं—

१—क्या यह आर्यसमाज जिसके संस्थापक महर्षि दयानन्द हुए अभारतीय (विदेशी) आर्यसमाज है। आप जिस आर्यसमाज की स्थापना करेंगे वही भारतीय होगी?

२—यह जो महर्षि दयानन्द का आर्यसमाज है वह भी मुसलमान ईसाइयो आदि को शुद्ध करके तो उन्हें आर्यसमाज में सम्मिलित करता ही है और वे अपनी पूर्व की मान्यताओं को त्यागकर दयानन्द स्थापित आर्यसमाज की मान्यताओं को मानने लगते हैं। क्या आप जिस आर्यसमाज की स्थापना करना चाहते हैं उसमें मुसलमान, ईसाई आदि भी रहेंगे और आर्य भी बन जायेंगे? यदि आपका बनाया आर्यसमाज ऐसा होगा तो मैं आपसे जानना चाहूँगा कि (क) दयानन्द के आर्यसमाज का तीसरा नियम यह है कि "वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।" इसके स्थान पर आपके आर्यसमाज का क्या नियम होगा? मुसलमानो की मान्यतानुसार यह नियम कुरान का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना तथा ईसाइयों का 'बाईबिल का पढ़ना पढ़ाना'…होना चाहिये। दयानन्द के आर्यसमाज का सातवां नियम है कि सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए।' तो क्या आपके समाज का यह नियम होगा कि काफरों को मारो लूटो, उनके घरों में आग लगा दो आदि? स्वामी जी! आप महापुरुष तो इतने बड़े बनना चाहते हैं कि आप से पहले कोई इतना बड़ा सारी दुनिया में हुआ न हो परन्तु आप इतना भी नहीं जानते कि दो परस्पर विरोधी बातें दोनों ठीक कदापि नहीं हो सकती। (ख) आपके नए आर्य समाज की स्थापना के बारे में आगे कुछ ऐसी साधारण बातें पूछना चाहता हूँ जिनका आपसे कोई उत्तर न बन सकेगा।

(१—आपके समाज में जो मुसलमान आर्य बनेगा वह नमाज पढ़ेगा या संध्या करेगा या दोनों? २—चोटी रखेगा या नहीं? ३—मांस खाएगा या नहीं? ४—सगोत्र विवाह करेगा या नहीं? ५—यज्ञोपवीत रखेगा या नहीं! क्या है कोई आपके पास इन प्रश्नों का कोई उत्तर)।

महाराज! अब हमारी और आपकी इसी में भलाई है कि यदि आप आर्यसमाजी बनना चाहते हैं तो शुद्ध होकर ईमानदारी से पुनः आर्यसमाज में आ जाएं और किसी ढोंग तथा महापुरुष बनने की इच्छा को त्याग दें। अथवा सच्चिदानन्द और भीमसेन की भांति आप भी आर्यसमाज को कोसते रहें और महर्षि दयानन्दको गालियां देते रहें। तथा दूसरों की चमचा गिरी करते रहें। वरना आप जिस आर्यसमाज की स्थापना करने जा रहे हैं उसकी स्थापना तो क्या होगी पर आपको पागलखाने में भेजना होगा।

भूल सुधारो हे नेता जी

जगमोहन जी काश्मीर में, काम रहे थे कर सब ठीक।
देश द्रोही दुष्टो को वे नहीं बनाते थे नजदीक।
अबला, दीन, अनाथों के थे, सबल सहारे थे बलबीर।
कोई मानो या मत मानो, वे हैं देश भक्त, रणधीर॥

देश धर्म की सेवा का वे, रात-दिवस करते हैं काम।
ईश्वर विश्वासी पक्के हैं, उनको है आराम हराम॥
उनको दोष लगाने वाले, जन हैं महानीच मक्कार।
उन्हें आप नेता मत समझो रंगा सीयार है बेकार॥

काश्मीर की कठिन समस्या, है सुनलो सब धरके ध्यान।
इसका सुलझाना बच्चो का, खेल नहीं कोई आसान॥
जगमोहन, मोहन बन करके, कर देते दुष्टो का नाश।
भारत वासी सब नर, नारी, कर लेना मन मे विश्वास॥

काश्मीर से उन्हें हटाकर, की है एक भयंकर भूल।
विश्वनाथ प्रताप सिंह जी, समझे नहीं धर्म का मूल॥
मूढ़, स्वार्थी नेताओ की, बातो में आकर के आप।
देश धर्म को भूल गए हो, कर बैठे हो भारी पाप॥

सृष्टि करता की बुरी भावना, हे नेताजी दो तुम त्याग।
भारत का सम्मान बचाओ, धर्म निभाओ जाओ जाग॥
बन्दे मित्र छुपे दुश्मन हैं, आस्तीन के काले नाग।
अपनों से ना प्यार जिन्हें हैं, गैरों का गाते हैं राग॥

अगर सुबह का भूला मानव अपने घर सन्ध्या आ जाय।
समझदार माना जाता है भूला हुआ नहीं कहलाय॥
भूल सुधारो हे नेता जी आप हमारी मानो बात।
वापिस भेजो जग मोहन को, काश्मीर में रातों रात॥

दुश्मन खुश हैं सब भारत के, भारत वासी दुःखी अपार।
भारत की जनता की पीड़ा, हरो कीजिये पुनः विचार॥
विश्वनाथ है नाम आपका, हो तुम समझदार इन्सान।
कांग्रेस की नकल छोड़ दो, जागो-जागो वीर महान॥

—पं० नन्दलाल निर्भय सिद्धान्त शास्त्री
भजनोपदेशक, ग्राम पोस्ट बहीन जिला फरीदाबाद

आर्यो सावधान

आर्यसमाज के इस्लामीकरण का दुष्प्रयत्न (२)

—भवानी लाल भारतीय

(१३) नियम २५ में मुसलमानो की ही भांति प्रसाद रूप में मीठे चावल या घी के हलवे के वितरण की बात कही गयी है। वैसे ही जैसे अजमेर में ख्वाजा चिश्ती की दरगाह मे बड़े-बड़े देगो मे चावल पकाकर तबर्रुक (प्रसाद) बांटा जाता है।

(१४) सबसे बड़े आश्चर्य की बात तो यह है कि नियम संख्या ३३ में मांस भक्षण को उचित और बहु विवाह प्रथा को पुनर्जीवित करने की बात कही गई है। डा० आनन्द अपने अनुयायियो को मुसलमानों की ही भांति एक से अधिक बीवियां रखने का उपदेश देते हैं।

१५. जैसे इस्लाम के अनुयायी ईदुज्जुहा के दिन बकरों, मेंढों की बलि देते हैं उसी प्रकार नियम ३५ में दशहरे के बाद निरन्तर पांच दिन तक पशुओं की बलि देने का विधान इस मित्र संगठन में किया गया है। आश्चर्य यह है कि मुसलमानों ने तो एक दिन ही बलि के लिये नियत किया जब कि यह व्यक्ति पांच दिन तक मूक पशुओं का रक्त बहाना आवश्यक समझता है।

१६. जैसे मुसलमान लोग बकरे को मारते समय 'बिसमिल्लाहिर्रहमान' का पाठ करते हैं उसी प्रकार यह व्यक्ति भी नियम से. ३६ मे पवित्र वेद-मन्त्र पढ़ कर पशु को मारने का आदेश देता है। जैसे मुसलमानों के लिये 'हलाल' का मांस भक्ष्य और 'हराम' को अभक्ष्य माना गया है, उसी प्रकार डाक्टर आनन्द के मत मे वेदमन्त्र पढ़े बिना मारे गये पशु के मांस को अपवित्र अभक्ष्य तथा निषिद्ध कहा गया है।

१७. सिखों की भांति डा० आनन्द के इस प्रभु द्वारा के अनुयायी अपने नामों के साथ सिंह लगायेंगे। पता नही डा. आनन्द अभी तक जे.एल. आनन्द ही क्यों है वे जे. सिंह क्यों नहीं हुए।

महान आपत्तिजनक तथा धूर्त जिम्मेवाराना कथन

१८. इस विश्व मित्र संगठन का ३८वां नियम तो आर्य समाज के लिये एक खुली चुनौती है क्योंकि इसमे कहा गया है कि महाऋषि (लेखक का अज्ञान स्पष्ट है। महर्षि को महाऋषि लिखता है।) दयानन्द के जन्म तथा मृत्यु स्थलों को हम मान्यता देते हैं। यहां तक तो कोई खास बात नहीं। आगे यह धूर्त और छिपा हुआ मुसलमान (हमारे विचार से जे. एल. आनन्द नामधारी व्यक्ति कोई षड्यन्त्रकारी मुसलमान ही है।) कहता है कि स्वामी दयानन्द की समाधि पर सफेद, बिना सिले वस्त्र पहन कर या ओढ़ कर जाना चाहिये। इस मूर्ख को यह तो पता नहीं कि ऋषि दयानन्द की कहीं कोई समाधि है ही नहीं। किन्तु इस्लामी आधार को प्रविष्ट कराने के लिये वह अपने अनुयायियों को वैसा ही आदेश देता है जैसा मक्का में हज करने के लिये जाते समय मुसलमान लोग करते हैं। यह प्रसिद्ध बात है कि हाजी मुसलमान बिना सिले वस्त्र लपेट कर ही काबा का दर्शन करते हैं, वही पद्धति इस धूर्त ने स्वामीजी की समाधि के दर्शनो के लिये निर्धारित की है। जैसे हज का नियम है कि वह जीवन मे एक से तीन बार तक की जा सकती है, उसी प्रकार आर्य समाज का इस्लामी सस्करण प्रस्तुत करने वाला यह धूर्त भी स्वामीजी के जन्म तथा मरण स्थलों की एक से तीन तक यात्रा करने का आदेश देता है।

१९. संख्या ३९ के नियम में मुसलमानी रमजान के महीने के भांति डा० आनन्द भी एक मास को उपवास का मास निर्धारित करता है और पूरे महीने रोजे रखने का आदेश देता है। रोजे रखने और खोलने की सारी विधि इस्लामी विधि का ही अनुकरण है। रमजान की समाप्ति पर यह व्यक्ति भी ईद की भांति खुशी मनाने तथा निराकार परमात्मा की उपासना में सामूहिक रूप में वेद मन्त्र पढने के लिये कहता है क्योंकि डा० आनन्द को तो आर्य समाज का इस्लामी सस्करण तैयार करना है। जैसे रमजान का महीना इस्लाम में मान्य चान्द्र वर्ष के कारण बदलता रहता है उसी प्रकार इस मित्र संगठन में रोजे रखने का महीना एक वर्ष में जनवरी होगा तो अगले वर्ष में फरवरी रहेगा।

२०. सिखों की ही भांति डा० आनन्द के अनुयायी भी तलवार, कटार या खंजर को हमेशा साथ रखेंगे और आज कल के उग्रवादियों की भांति जब चाहे जिसे लोप देंगे (मार डालेंगे) क्योंकि उनकी दृष्टि में अपराधियों पर कटार या तलवार से प्रहार करना पुण्य या न्यायसंगत है। चाहे देश का कानून इसकी इजाजत उन्हें देता है या नहीं। (देखें नियम ४२)

२१. इस्लाम में खतने का रिवाज है डा० आनन्द के अनुयायी भी ऐसा संस्कार अपने बच्चों का करवायेंगे। और इस अवसर पर धूमधाम भी की जायेगी। खतना कराने का यदि प्रत्यक्ष उल्लेख डा० आनन्द करता तो उसकी पोल खुल जाती इसलिये उसने इसे कोई नाम नहीं दिया। इस्लाम में लड़कियों का खतना नहीं होगा किन्तु मित्र संगठन के लोग बालको और बालिकाओं दोनों का यह संस्कार करेंगे। (देखो नियम संख्या ४३)

२२. जैसे मुसलमानों में नमस्ते जनाजा (अन्त्येष्टिके समयकी नमाज) होती है वैसा ही विधान इस धूर्त ने नियम ४६ में रखा है तथा मृत्यु के आगे के १० दिनों तक सत्यार्थ प्रकाश का पाठ करने का नियम बनाया है। यह भी लिखा है कि शव को जमीन में दफन कर देना चाहिए।

२३. जैसे इस्लाम के अन्ध भक्त मजहब के नाम पर शहीद होने और खुदा की राह पर कुर्बान होने की अन्ध धारणा रखते हैं उसी प्रकार नियम ५३ में संघर्ष करने और शहादत के लिये तैयार रहने को परम कर्तव्य बताया गया है।

अब आर्य समाजी क्या करें ?

डा० जे. एल. आनन्द कुछ भी करें तो करें, हमें इससे कोई सरोकार नही, किन्तु वे वेदो, ऋषि दयानन्द तथा सत्यार्थप्रकाश के नाम का दुरुपयोग नही कर सकते। अत: इस लेख के द्वारा मैं देश के प्रत्येक आर्य समाज तथा आर्य समाजी से पुरजोर अपील करता हूं कि वह डा० आनन्द को पत्र लिख कर उससे पूछे कि (१) सत्यार्थ प्रकाश को सशोधित करने तथा विश्वमित्र संगठन का धर्मग्रन्थ बनाने का अधिकार उसे किसने दिया। वह संशोधित सत्यार्थ प्रकाश कौन सा है जो विश्वमित्र सगठन का मान्य ग्रन्थ है। (२) हम उस व्यक्ति से पूछे कि स्वामी दयानन्द की समाधि (यदि कोई है) पर बिना सिले वस्त्रों के यात्रा करने का अधिकार उसे कहां से मिला और (३) वह किस अधिकार से पशु को मारते समय वेद मन्त्रो का उच्चारण करने की बात करता है।

दिल्ली के आर्यों तथा आर्य समाजो का फर्ज है कि वे विश्वमित्र संगठन के ३/३६८ दक्षिणपुरी नई दिल्ली ११००६२ स्थित इस कार्यालय का पता लगायें कि आर्य समाज के पावन रूप को विकृत करने और उसे इस्लामी लिबास पहनाने वाला यह बदमाश कौन है और उसे समुचित दण्ड भी दिलवायें।

नागरिक और देहाती सांस्कृतिक क्षेत्र में युवकों की भूमिका

लेखक : डा० कृष्णलाल आचार्य प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

(गतांक से आगे)

उत्कृष्टतम रूप मे संस्कृति वह है जो बहुजन हिताय और बहुजन सुखाय हो। यह वह संस्कृति है जिससे अधिक से अधिक लोगों का कल्याण हो, अधिक से अधिक लोगों का सुख हो। भारतीय विचारधारा तो इससे भी आगे सबके ही सुख की कामना करती है। हमारा प्राचीन आदर्श 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः' है। संविधान और अन्य विधि-विधान राष्ट्र के अधिक से अधिक लोगो के कल्याण के लिए बनाये जाते हैं। परन्तु उनका अनुसरण न करने पर लक्ष्य की पूर्ति नहीं होती कर की चोरी, तस्करी, रिश्वत से काला पैसा बनता और बढ़ता है। हमारे युवक सोचें कि इस धन से अधिकांश सामाजिक बुराइयां उत्पन्न होती हैं। यह पैसा कहीं बैंक आदि में सुरक्षित नहीं रखा जा सकता क्योंकि उसका हिसाब देने से उस पैसे का स्वामी कानून में फंस सकता है, और न ही उस पैसे को प्राप्त करने में परिश्रम लगा है, अतः उसे खुला व्यय किया जाता है। उसी से विवाहों में, मकानों में, पार्टियों में अन्धाधुन्ध व्यय किया जाता है। उसी से दहेज अधिक दिया जाता है। उसी से बच्चों को विशेष विद्यालयों, पब्लिक स्कूलों या विशेष पाठ्यक्रमों में पढ़ाने के लिये प्रवेश-हेतु दान के नाम पर रुपया पानी के समान बहा दिया जाता है। दिल्ली विकास प्राधिकरण मे सहायक इंजीनियर एक मेरे परिचित ने अपने छोटे भाई को इंजीनियरिंग मे बंगलौर के एक कालेज में एक लाख रुपये का दान देकर प्रवेश दिला दिया। उच्चतर माध्यमिक/बारहवीं कक्षा की परीक्षा में उसके केवल साठ प्रतिशत अंक थे। इसके विपरीत जिनके इससे कहीं अंक थे वे इस प्रकार के धन के अभाव में अपनी इच्छा के पाठ्क्रम मे प्रवेश पाने से वंचित रह गये। क्या इस प्रकार समाज के अधिकतर लोगों का कल्याण हो सकता है। यही समस्या दहेज की है। इसका समाधान भी केवल हमारे युवकों के पास है। उन्हें दृढ़ संकल्प करना ही होगा इन बुराइयों से बचने के लिये।

आप अधिकतर युवकों से पूछिये वे इंजीनियर, डाक्टर अथवा और कुछ भी क्यों बनना चाहते है। आपको यह उत्तर कम ही मिलेगा कि हम देश और जनता की सेवा करना चाहते हैं और व्यवहार में तो सेवा-भावना से युक्त व्यक्ति और भी कम होंगे। वे भी विवश हो जाते हैं। सर्वत्र धन का ही बोलबाला है, उसी का सम्मान है। चरित्र को कोई नहीं देखता। इसलिये आज का युवक भी आंख बन्द कर उधर ही दौड़ता है, उस धन-प्राप्ति और ऐश्वर्य को ही अपने जीवन का अन्तिम लक्ष्य समझता है। ऐसा युवक अधिक मूल्य लेकर भी ईमानदारी से अपना कार्य तो भी कुछ सन्तोष होता है। परन्तु दुःख तो यह है कि मूल्य लेकर भी कार्य करना नहीं चाहते। डाक्टर जानबूझ कर ऐसी दवाई देता है जिससे रोगी का शीघ्र छुटकारा न हो। यह बात अनेक परिचित नवयुवक डाक्टरों ने व्यावसायिक रहस्य के रूप में स्वय बताई है। हमारे जो युवक डाक्टर हस्पतालों मे नौकरी करते हैं, वहा बहुधा वे गम्भीरता से रोगी का परीक्षण ही नहीं करते, गम्भीरता से दवाई नही देते। इन चिकित्सालयो में दवाई भी नकली और सस्ती खरीद कर अपनी जेब गरम की जाती है। रोगी का क्या होता है, उससे कोई प्रयोजन नहीं। क्या यही बहुजन सुखाय की भावना है। इसी कारण क्या सार्वजनिक संस्थान द्वारा ठेके पर बनवाये गये मकान गिरने या सड़क के पुल नही टूटने। भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद और रामप्रसाद बिस्मिल जैसे युवकों के बलिदानो से सींची गई त्यागमयी संस्कृति को आज युवक कहा ले जा रहे है।

२६ नवम्बर १९८४ के समाचार पत्र में समाचार प्रकाशित हुआ कि मुज्जफरपुर बिहार मे इंजीनियरिंग के छात्र ने नकल न करने देने पर एक प्राध्यापक को घायल कर दिया। गुरू के प्रति सम्मान का कितना सुन्दर उदाहरण है। जो युवक बिना परिश्रम के परीक्षा उत्तीर्ण करना चाहते हैं, वे इस प्रकार उच्च शिक्षा की उपाधि प्राप्त करके आगे क्या करेंगे—इसकी केवल कल्पना की जा सकती है। वास्तव मे निष्ठावान् छात्रों को ऐसी घटनाओं की निन्दा करनी चाहिए। ऐसे छात्रों का साथ देने का तो प्रश्न ही नहीं।

ऊपर उदात्त संस्कृति के प्रसंग में "बहुजनहिताय बहुजनसुखाय" के सिद्धांत का उल्लेख हुआ है। लोकतन्त्र का भी यही दृष्टिकोण है। इसी के आधार पर सर्व-सम-भाव का प्रतिपादन हुआ है। रंग-रूप-भाषा भिन्न होते हुए भी मानवमात्र के रूप में, या और आगे चलें तो प्राणिमात्र के रूप में सब समान हैं क्योंकि सबकी अन्तरात्मा एक समान है, एक है, सब उसी प्रकार सुख-दुःख का अनुभव करते हैं।

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानु पश्यति।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो नविजुगुप्सते॥

जो सब प्राणियों को आत्मा में या अपने आप मे और आत्मा या अपने आप को सब प्राणियों में अनुभव करता है, वह व्यक्ति किसी से घृणा नहीं करता। यह दृष्टि लोकतन्त्र में सबकी, विशेष रूप से युवकों की होनी चाहिए। यदि शिक्षा के द्वारा हम यह उदार स्थिति नहीं प्राप्त करते तो शिक्षा का उद्देश्य पूर्ण नहीं होता। यही वह संस्कार है जिसके द्वारा जाति और वर्ण के क्षुद्र बन्धनों से ऊपर उठकर एक मानव दूसरे मानव को मानव समझता है और समान व्यवहार करता है। सभी दिशाओं में रहने वाले मनुष्य उसके मित्र हो जाते हैं। तभी वह यह संकल्प कर सकता है—सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु सब दिशाएं मेरी मित्र हो जावें। इसी भावना के आधार पर वेद निर्देश देता है कि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य की सब ओर से रक्षा करे—पुमान् पुमांसं परिपातु विश्वतः।

संस्कृति अपने सर्वोत्तम रूप में जोड़ने का कार्य करती है, तोड़ने का नहीं। वसुधैव कुटुम्बकम् का आदर्श यही संस्कृति प्रस्तुत करती है। वह एक मनुष्य को दूसरे की कठिनाई समझने की, दूसरे के साथ सहानुभूति रखने की प्रेरणा देती है। यही एक मनुष्य को दूसरे से सभ्य व्यवहार, मधुर व्यवहार और उसके अधिकार की रक्षा सिखाती है। हमारे युवक यदि इस दिशा में सजग हों तो जिस देहाती संस्कृति के प्रभाव से बहुधा दिल्ली की बसों में यात्रियों को अपमानित होना पड़ता है, उससे बचा जा सकता है। यह बात नहीं है कि त्याग की प्रवृत्ति देहात में न हो। परन्तु देहात या ग्राम एक छोटी इकाई होने के कारण वह त्याग भी सीमित होता है। उसमें सर्वे भवन्तु सुखिनः सभी सुखी हों, की भावना का अभाव रहता है। ग्रामवासी केवल अपने परिवार या ग्राम के व्यक्ति के हित की बात सोचता है। दिल्ली परिवहन की एक खचाखच भरी हुई बस का उदाहरण लिया जा सकता है। दो-दो की सीट पर अपने गांव या परिवार के तीसरे व्यक्ति को बिठा लिया जाता है। यह प्रवृत्ति पढ़े लिखे नागरिकों में भी बढ़ती जा रही है। एक ओर तो आप सभी व्यक्तियों को इस प्रकार बिठा नहीं सकते, पर्याप्त संख्या मे लोग खड़े रह ही जाते हैं। जो तीन बैठते हैं वे भी सुविधा पूर्वक नहीं बैठ सकते और जो खड़े होते हैं उनकी कठिनाई की आप कल्पना कीजिए। उनके लिये सुख पूर्वक खड़े होना भी सम्भव नहीं होता क्योंकि तीन बैठने वालो के घुटने बाहर निकले होने के कारण उतरने वाले व्यक्ति को अवर्णनीय कठिनाई का सामना करना पड़ता है। दो की सीट में तीन के बैठने से कुछ इने गिने व्यक्तियो को आंशिक सुख मिल सकता है, परन्तु अधिकांश लोगो को कष्ट ही होता है।

एक समस्या और है। दिल्ली परिवहन निगम की बसो में कुछ सीटें महिलाओं के लिए सुरक्षित होती है, परन्तु उन पर पुरुष ढीठ बनकर बैठे रहते हैं। नागरिक पढ़ी लिखी महिला यदि हाथ में बच्चा लिये हुए हो भी इनका उनके लिये वह आरक्षित सीट छोड़ने का प्रश्न ही नही होता। अधिक से अधिक थोड़ा टेढ़ा हो जायेंगे जिससे तीन बैठ जावें। और तीन यात्रियों के बैठने की कठिनाई हम ऊपर देख ही चुके हैं। इतना ही नहीं, यदि उनसे वह आरक्षित सीट छोड़ने के लिये कहा जाये तो उनके दो उत्तर

(शेष पृष्ठ ११ पर)

आर्यसमाज में जोधपुर लीला (२)

मूल लेखक—आचार्य विश्वश्रवाः व्यास
प्रस्तुतकर्ता—डा० रामप्रकाश आर्य, रिटायर्ड प्रोफेसर,

(आ) उस समय वाराणसी को छोड़कर स्वामी जी ने राजपूताने को अपनी गतिविधियों का केन्द्र बनाया और वहां सूर्यवंशी तथा चन्द्रवंशी राजाओं को उद्बुद्ध करने का प्रयत्न किया। अंग्रेजी राज्य ने स्वामी जी को समाप्त करने का आदेश इन राजाओं को दिया। उन राजाओं के सामने दो ही विकल्प थे। स्वामी जी को समाप्त करना अथवा अंग्रेजों के समक्ष यह स्वीकार करना कि वे भी स्वामी जी से सहमत हैं। अपना अस्तित्व बचाने के लिये उन्हें पहला विकल्प ही शिरोधार्य करना पड़ा। स्वामी जी की मृत्यु स्वाभाविक न होकर राजनैतिक मृत्यु थी। बादमें भी मुजीबुर्रहमान चन्द्रगुप्त वेदालंकार, श्यामाप्रसाद मुकर्जी, इन्दिरा गांधी लाल बहादुर शास्त्री की मृत्यु भी राजनीतिक ही हुई।

(इ) यह कहना भी सत्य नहीं है कि विषदान कराने वाले राजाओं की तीन पीढ़ियों में किसी को कोढ़ नहीं हुआ। कोढ़ का प्रमाण वही व्यक्ति दे सकता है जिसने उनका सर्वांग निरीक्षण किया हो। उनमें से एक को स्वयं धोती पहनाते हुए इस रोग के निशान मैंने देखे हैं—यद्यपि अन्य जनों को यह जानना कठिन ही है।

(ई) महात्मा नारायण स्वामी ने बताया कि वे एक बार रुड़की के पुल पर सन्ध्या कर रहे थे, उनको उस समाधिस्थ स्थिति में देखकर एक व्यक्ति ने कहा कि उसने महर्षि दयानन्द सरस्वती को भी इसी पोज में देखा था—अधिक जानकारी लेने पर उसने बताया "मैं वही पापी हूँ जिसके माध्यम से स्वामी जी को विष दिया गया था"—उसका चेहरा एक ओर श्वेत वर्ण का तथा दूसरी ओर काला था। नारायण स्वामी जी की मृत्यु सन् १९४७ में हुई, तब तक किसी ने इस बात का खण्डन नहीं किया।

मेरा सम्बन्ध स्वामी जी के समकालीन १२ व्यक्तियों से रहा है। जब मैं जोधपुर जाता था, उस समय भवानीलाल भारतीय छोटे से लड़के थे और दरी पर बैठकर मेरे व्याख्यान सुनते थे। ये इतनी छोटी आयु के हैं कि उन्होंने स्वामी जी के समकालीन किसी व्यक्ति शकल भी नहीं देखी।

भवानीलाल जी का यह कहना कि भीमसेन शर्मा ने आर्यसमाज स्वयं छोड़ दिया—गलत है, उन्हें आर्यसमाज से निकाला गया था। उनका अपराध यह बताया गया था कि उन्होने एक स्थान पर 'पिष्ट पशुयाग' यज्ञ करवाया था (जिसमे आटे का पशु बनाकर उसकी आहुति यज्ञ में दी जाती है)। अखिलानन्द पर दोष यह मढ़ा गया कि जन्मना ब्राह्मणत्व को मानते थे। उन्हें भी आर्यसमाज से निष्कासित किया गया। दुःख तो यह है कि भगवद्दत्त जैसे रिसर्च स्कालर को भी डी०ए०वी० कालिज से निकाला गया और प्रचारित यह किया गया कि उन्होने त्याग-पत्र दे दिया है। सत्य तो यह है कि पं० भीमसेन शर्मा तथा अखिलानन्द के सामने तुलसीराम स्वामी की पंडिताई जमती नही थी, अतः उन्होने भी बाकी लोगों का साथ दिया। निर्दोष होते हुए भी केवल आर्यसमाज के हितार्थ दोनों पण्डितों (भीमसेन, अखिलानन्द) ने बिना शर्त क्षमायाचना की पर उन्हें क्षमा नहीं किया गया, अपितु उन्हें नीचा दिखाने के लिये यह भी व्यवस्था की गई कि कोई भी व्यक्ति उनसे यज्ञ न करवाये, उनका भाषण न करवाये और नगर तथा समाज में उन्हे स्थान न दिया जाये। उनका आचरण पवित्र था अपने घर के जेवर-कपड़े बेचकर भी आर्यसमाज की सेवा करनी चाही और अन्ततोगत्वा बच्चों को भूख से बचाने के लिये उन्हें सनातन धर्म की शरण लेनी पड़ी। सनातन धर्म द्वारा आयोजित सभाओं मे वे अवतारवाद तथा मूर्तिपूजा का समर्थन करते थे और अन्त में कहते थे "उन्होंने जो कुछ भी कहा है। वह वकील के रूप में कहा है "क्योंकि उन्हें दक्षिणा लेनी है। घर का पश्चाताप करते थे और मित्रों के सामने ऋषि का काफी समय तक गुणगान करते थे। वे मेरे पास भी आकर यही कहते थे कि मेरा मुंह गन्दा हो गया है ऋषि गुणगान से ही पवित्र होगा।

अखिलानन्द अपनी पुत्री का विवाह पौराणिक पण्डित से नहीं कराना चाहते थे, मन से दोनों लोग एक दिन के लिये भी सनातनी नहीं हुए. पर अपने ग्रन्थों में उन्होंने अपने पाण्डित्य का चमत्कार तो दिखा ही दिया। भीमसेन जी ने जो 'आर्यमत निराकरण प्रश्नावली प्रकाशित की, उसका उत्तर स्वामी तुलसीराम और स्वामी छुट्टनलाल नही दे सके। आज भी आर्यसमाज का कोई पण्डित उनका उत्तर नहीं दे पाया है, अपनी वे गलतियां आर्यसमाज के पण्डितों ने स्वीकार कर ली हैं।

(१) स्वामी जी ने यज्ञ में 'आटज्याहुति' तथा "आज्यभागाहुति" अर्थात् ओ३म् अग्नये स्वाहा, प्रजापतये स्वाहा, इन्द्राय स्वाहा' का क्रम दिया है; वह सभी गृह्यसूत्रों में दिये गये क्रम के विपरीत है। उपयुक्त दोनों नाम भी उल्टे दिये गये हैं। प० युधिष्ठिर मीमांसक ने भी इस गलती को स्वीकार किया है. उनके अनुसार 'संस्कारविधि में यह गलती हो गई है। 'संस्कार चन्द्रिका' में भी भीमसेन आगरा वाले ने क्रम ही ठीक माना है। पं० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार ने भी अपनी 'संस्कार चन्द्रिका' में इस विषय में अपनी सम्मति न देना ही श्रेयस्कर समझा है।

(२) 'प्रजापतये स्वाहा' यह आहुति सर्वत्र मौन होनी चाहिये। 'संस्कारविधि' में यह आहुति एक स्थान पर मौन है और दूसरे स्थान पर उच्चारण सहित। युधिष्ठिर मीमांसक ने इस भूल को भी स्वीकार कर लिया। ब्राह्मण ग्रन्थों में लिखा है—

"यत् यत् प्राजापत्यं कर्म तत् उपांशुर।"

(३) 'यदस्य कर्मणोत्यरीरिच" यह स्विष्टकृत आहुति अन्त में होनी चाहिये, पर इसे मध्य में रक्खा गया है। पण्डितों ने इसे भी मान लिया है और कुछ पद्धतियों में इसे अन्त में लिखा भी जाने लगा है। स्वामी जी के बाद इन प्रश्नों का जो उत्तर दे सकते थे, उन विद्वानो को स्वार्थवश आर्यसमाज ने बाहर निकाल दिया। अब भी श्री भारतीय जी इन प्रश्नों का उत्तर दे सकते हों तो दे।

उस समय के आर्यसमाज में अंग्रेजो के समर्थक लोग ही थे, जो प्रायः बाकर ही थे, उनकी नियुक्तिया अंग्रेजों की कृपा पर ही आश्रित थीं, अंग्रेजों के विरोध का कोई खतरा मोल लेना नहीं चाहते थे और उनके संकेतों पर ही काम करते थे। भीमसेन तथा अखिलानन्द जी पर फिर भी कुछ दोष कल्पित किये गये भाई परमानन्द जी को अनारकली आर्यसमाज से अकारण ही निकाला गया, उनका नाम नक रजिस्टर में रबड़ से मिटाया गया और मिथ्या घोषणा की गई कि इस नाम का कोई व्यक्ति कभी आर्य समाज का सदस्य नही था। स्वामीभक्त लाला लाजपतराय ने भी प्रतिज्ञा की थी कि वे जीते जी आर्यसमाज मन्दिर में नही जायगे। इस प्रतिज्ञा को उन्होने निभाया भी उनकी मृत्यु के बाद उनकी लाश ही आर्यसमाज मन्दिर और डी०ए०वी० स्कूलों में घुमाई जा सकी। ये सब आर्यसमाजियो द्वारा अंग्रेजों के इशारे पर ही किये जा सके।

(४) 'श्याम जी कृष्ण वर्मा को लन्दन से आने का वीजा नही

दिया गया। उन दिनों वीजा की प्रथा आधुनिक रूप मे भले ही न हो, पर एक देश से दूसरे देश में जाने की आज्ञा लेना तो सनातन प्रथा है। महाभारत के 'जरासंध पर्व में श्रीकृष्ण, अर्जुन और भीम मगध देश में छद्मवेष में गये हैं अद्वारेण रिपोर्गेहं द्वारेण सुहृदो गृहात् अद्वार या चोर मार्ग के लिये तो किसी आज्ञा की आवश्यकता ही नहीं है, किन्तु सामान्य मार्ग के लिये आज्ञा-पत्र (वह किसी रूप में में क्यों न हो) लेना ही पड़ता है। श्याम जी कृष्ण वर्मा को यह सुविधा प्रदान नहीं की गई।

(९) भारतीय जी ने लिखा है 'कोई महिला रटकर व्याख्यान देती है, तो इसमें अनुचित क्या है।' अनौचित्य भाषण रटने या व्याख्यान देने में नहीं है, पर स्वामी जी के सिद्धान्तानुसार पुरुषों की सभा में देने से है। स्त्री समाज में व्याख्यान दें कोई आपत्ति नहीं है, पर स्वामी जी पांच वर्ष के बालक और कन्या का भी स्त्री या पुरुष समाज में प्रवेश वर्जित मानते हैं। पहले आर्यसमाज के उत्सव के मंचों की शोभा 'संन्यासी' से होती थी और अब 'बहिन जी' से। यदि स्त्री प्रचार के इन कार्यों के लिये अकेली जायेगी तो लोग उसे बदनाम करेंगे और यदि पति को साथ लेकर जायेगी तो बच्चों का परिपालन कौन करेगा। स्वामी जी के सिद्धान्त को क्रियात्मक रूप से 'महेशयोगी' ने अपनाया है। उनके द्वारा कई कई सप्ताह तक किये गये नई दिल्ली के गोलफिलिक (महिला विभाग) में किसी भी आयु का कोई पुरुष नहीं जा सकता है (स्वयं वे भी नहीं) और पुरुष न्यू फ्रेंडस कालोनी पुरुष विभाग में कोई महिला भी नहीं। स्विटजरलैण्ड में नन्दकिशोर भट्ट नाम के उनके शिष्य ने किसी महिला से बात कर इस नियम का उल्लंघन किया। परिणामतः उसे उसी समय वहां से इण्डिया विदा कर दिया गया।

●नोट—अंग्रेजों ने तो स्वामी जी की मृत्यु के बाद सत्यार्थप्रकाश पर केश चलाया, आर्यसमाज की ओर से पैरवी करने वाले लाला लाजपतराय थे, जिन्होंने कहा 'विदेशी राज्य के सन्दर्भ को भारत में नहीं इंगलैंड में बैठकर पढ़ा जाना चाहिये, तब उसका अर्थ कुछ और होगा और उसके बाद ही पटियाला का था अभियोग वापस लिया जा सका।

वदन्ते के प्राज्ञा ऋषि विष प्रदाः सूदतनयः।
तथा चान्ये प्रोचुः ऋषि विष प्रदाः आंगल जनाः॥
नरेशं मन्यन्ते ऋषिविषप्रदं के चिद परे।
तथा वेश्यां नन्हीं ऋषिविषप्रदां प्राहुरितरे॥

कुछ विद्वान् कहते हैं कि ऋषि को विष देने वाला रसोइया था, कुछ का कहना है कि यह विष अंग्रेजों ने दिलवाया कुछ लोग मानते हैं कि ऋषि को विष दिलाने वाले जोधपुर नरेश थे और कुछ लोगों का कथन है कि यह कार्य नन्हीजान वेश्या द्वारा किया गया।

अली मर्दानो वा ऋषि सहजवैरीह यवन्तः।
समस्तैरेतैर्वा प्रभुशरणलीला मम ऋषेः॥
न चान्ताः पापानां अभवदधुना यावदपि ना।
हतं भाग्यं सर्वं सकलम उजानां विशि॥

अथवा विषदान का कार्य ऋषि के स्वाभाविक दुश्मन यवन डा० अलीमर्दान ने किया था इन सबने मिलकर मेरे ऋषि को प्रभु के समीप पहुंचाया। इसके बाद अब भी पापों का अन्त नहीं हुआ है (ऋषि की हत्या से) देश-विदेश के सभी मनुष्यों का भाग्य ही नष्ट हो गया है।

अहं त्वेतत् मन्ये हि विषप्रदैः मारित ऋषिः।
ऋषेरन्ते जातः तद नुग जनानां विकृतिभिः॥
विषं घातः करलो न हि कमपि मृत्युं जनयोति।
हतो यस्यादर्शः सः हत विजानान्ति सुधिमः॥

मेरी तो यह मान्यता है कि विष देने वालों ने ऋषि को नहीं मारा, ऋषि का अन्त उनके अनुयायियों द्वारा विपरीत कार्य करने से हुआ है। विष देने से किसी का काल नहीं आता, मृत्यु नहीं होती। जिसके आदर्श समाप्त हो जाते बुद्धिमान् लोग उसे ही मृत जानते हैं।

ऋषि ने आर्यसमाज की स्थापना निम्नलिखित पंचसूत्री कार्यक्रम के लिये की थी।

१—सूर्यवंशी तथा चन्द्रवंशी राजाओं का संगठन।

२—देश-देशान्तर में उनकी भाषा में ही वैदिक धर्म का प्रचार करना।

३—भाषा-विज्ञान, अस्थि विज्ञान, साम्यवाद, विकासवाद आदि वेद विरोधी, ऋषि विरोधी, ईश्वर विरोधी सभी मान्यताओं का समूलोच्छेद करना।

४—सभी वैदिक ग्रन्थों के टीकाकारों ने उल्टे अर्थ किये है, जिससे उन पर किसी का विश्वास नहीं रहा, उन ग्रन्थों की पुनः सही रूप से टीका करना।

५—देश में एक धर्म, एक भाषा तथा एक संस्कृति का निरूपण करना।

आर्यसमाज की स्थापना इन्हीं कार्यों के लिये स्वामी जी ने की थी। इसीलिये उन्होंने हिमालय की उपत्यकाओं और कन्दराओं में निवास किया था। इसी महत्व कार्य के लिए उन्होंने ब्रह्मानन्दपुरी तथा आनन्दगिरी आदि से योग की शिक्षा ली थी, इसीलिये अपने मां-बाप को उन्होंने तड़पाया था, किन्तु उनके अनुयायियों ने वस्त्र दान, अस्पताल तथा विद्यालय खोलना आदि कार्यों से इसे ईसाइयत के अनुकरण का श्रेय प्रदान किया और अन्य भी स्वामीजी के कार्यों का ध्यान करके ऋषि ऋण उतारने वाला कोई शेष नहीं रहा है।

धर्मान्तरण के बाद विशेषाधिकार असंवैधानिक है

आचार्य दत्तात्रेय आर्य

राज्य सभा मे नव बौद्धो को हरिजन अर्थात् अनुसूचित जाति को दिये गये विशेषाधिकार सम्बन्धी एक बिल पास किया गया है। अंग्रेजी पत्रो मे प्रकाशित राज्य सभा की कार्यवाही सम्बन्धी सामाचार में भी इस बात का उल्लेख है कि ईसाई और मुसलमानो को भी इसी प्रकार के विशेषाधिकार देने सम्बन्धी जो सशोधन पेश किया गया है, अधिकाश सदस्य उसके पक्ष मे थे, किन्तु इस आश्वासन के बाद कि स्वय सरकार ईसाई और मुसलमानो को भी नव बौद्धो के समान विशेष अधिकार दिये जाने के पक्ष मे शीघ्र कानून प्रस्तावित करेगी, यह सशोधन वापिस ले लिये गये।

जात पात का कलंक

ऐसा लगता है कि वर्तमान सरकार ने तथा राज्य सभा के सदस्यो ने इस प्रकार के प्रावधान के दूरगामी परिणामा पर विचार नहीं किया। यदि इस प्रकार का कोई कानून बनता है तो उसके कितने दूरगामी और हानि-कारक परिणाम होवे, यह हरिजनो को दिये गये वर्तमान विशेषाधिकारो के इतिहास से स्पष्ट होगा। अंग्रेजो ने न केवल हिन्दू मुसलमानो के मतभेदो का अपना शासन बनाये रखने के लिये सदैव उपयोग किया, अपितु उन्होने हरिजनो को भी हिन्दुओ से पृथक करने का प्रयत्न किया। जात पात और छूआछूत हिन्दू धर्म और समाज का एक ऐसा कलक है, जिसकी जितनी निन्दा की जाय कम है। इस कलक को दूर करने के लिये ऋषि दयानन्द जैसे धार्मिक और सामाजिक सुधारको के अतिरिक्त महात्मा गाधी जैसे राजनैतिक नेताओ ने अनेक प्रयत्न किये।

गांधी जी का अनशन

किन्तु हिन्दू समाज और स्वय तथाकथित अछूतो की अपनी जाति प्रथा के कारण इस कलक का निराकरण नही हो सका और इस निराशाजनक स्थिति के विरुद्ध डाक्टर अम्बेडकर जैसे स्वाभिमानी हरिजन नेताओ ने भी दलितो द्वारा हिन्दू धर्म त्यागने की घोषणा कर दी, जिसका लाभ उठाकर न केवल ईसाई और मुसलमान धर्म प्रचारको ने उन्हे अपना अपना धर्म स्वीकार करने का निमन्त्रण दिया—ब्रिटिश सरकार ने भी कम्यूनल अवार्ड की घोषणा कर उन्हे हिन्दुओ से पृथक विशेष राजनैतिक अधिकार दिये जाने की घोषणा कर दी, जिसके विरुद्ध महात्मा गाधी जैसे हरिजनो के समर्थको को आमरण अनशन करना पडा, और परिणामस्वरूप डा अम्बेडकर के साथ हुए समझौते के अनुसार दलितो को हिन्दू धर्म त्यागे बिना राजनीति तथा नौकरियो आदि मे सुरक्षित स्थान दिये गये।

विरोधी आन्दोलन

गत चालीस वर्षों में इन विशेषाधिकारो के व्यवहार मे क्या लाभ और हानिया सामने आयी है इनका कुछ आभास इन आरक्षणो क विरुद्ध हुये देशव्यापी आन्दोलनो से सर्वविदित है। और यदि ईसाई और मुसलमानो को इसी प्रकार विशेष अधिकार दिये गये तो उसके विरुद्ध और भी अधिक देशव्यापी आन्दोलन की सम्भावना है।

हरिजन छुआछूत की समस्या का कारगर और अन्तिम उपाय तो यही हो सकता है कि हिन्दू समाज मे कोई व्यक्ति अपनी जन्मजाति के कारण ऊच-नीच या छूत-अछूत न रहे, जैसा स्वामी दयानन्द चाहते थे, किन्तु सदियो से प्रचलित इस समस्या के इतनी आसानी से हल होने की सभावना नहीं है और अग्रेजी राज्य में तथा उसके बाद स्वाधीन भारत में जात-पात और छुआछूत का राजनैतिक लाभ इतना आकर्षित सिद्ध हो रहा है कि इस कलकको मिटाने के स्थान में उसे लाभप्रद और उपयोगी बनाकर चिरस्थायी करने का प्रयत्न किया जा रहा है, किन्तु यहा आरक्षण के गुण दोषो पर विवेचन करना अभिप्रेत नहीं है। प्रश्न केवल उस प्रस्तावित बिल की समीक्षा करने का है, जिसके द्वारा जो हिन्दू ईसाई और मुसलमान बने या बनाये गये उन्हे भी दलितो के समान विशेषाधिकार दिये जाने का सुझाव है।

छुआछूत ईसाई और मुस्लिम धर्म में नहीं

इस्लाम और ईसाई धर्म का कोई भी निष्ठावान अनुयायी यह नहीं कह सकता कि उनके धर्म मे जात-पात या छुआछूत के भेदभाव के लिये कोई स्थान है। इसलिये जो दलित या अछूत इन धर्मों मे सम्मिलित हुए हैं वह वहा जाते ही अछूत या दलित नहीं रहे।

डा० अम्बेडकर की मान्यता

डा० अम्बेडकर ने जब उनके धर्मान्तरण की बात कही तो उसका भी यही अर्थ था कि तभी तक वह अछूत या दलित हैं, जब तक वे हिन्दू हैं। दूसरा प्रश्न यह है कि स्वय डा० अम्बेडकर ने अपने तथा अपने दलित अनुयायियों के लिये ईसाई मिशनरियो और मुसलमान मौलवियो का निमन्त्रण स्वीकार कर उनमें से किसी एक धर्म को क्यो नहीं चुना ? इसका उत्तर स्वय अम्बेडकर ने यह कहकर दिया कि दलितो के कल्याण के लिये हिन्दू धर्म त्यागना आवश्यक होने पर भी वह भारतीय सस्कृति और राष्ट्रीयता का त्याग नहीं करना चाहते। बौद्ध यद्यपि सनातनीय पौराणिक धर्म के अग नही हैं, किन्तु वह सास्कृतिक और राष्ट्रीय दृष्टि से शुद्ध भारतीय हैं। इतना नही स्वय अनेक हिन्दू धर्माचार्य बुद्ध को अवतार मान कर हिन्दू धर्म की व्यापक परिभाषा मे उन्हें सम्मिलित करते हैं इस प्रकार स्पष्ट है कि स्वय डा० अम्बेडकर यह अनुभव करते थे कि दलितो का हिन्दुओ से पृथक होकर ईसाई या मुसलमान धर्म स्वीकार करना न स्वय दलितो के हित मे है और न ही देश के व्यापक हित मे। दुर्भाग्य से बौद्ध और यहा तक कि सिखो में भी उनकी धार्मिक मान्यताओ के विपरीत जात-पात छूआछूत विद्यमान है।

राजनैतिक-उद्देश्य

पजाब मे सिखो को सरदार पटेल ने केवल विशिष्ठ राजनैतिक कारणो से विशेष अधिकार देना स्वीकार किया था। यद्यपि उन्होने स्पष्ट किया था कि दलितो को दिये गये विशेष अधिकार तभी तक लागू रह सकते हैं जब तक वे हिन्दू बने हुये है। स्पष्ट है कि वर्तमान जनता दल की सरकार ने

(शेष पृष्ठ १० पर)

धर्मान्तरण के बाद विशेषाधिकार

(पृष्ठ ९ का शेष)

नव बौद्धो को भी केवल इसी प्रकार के राजनैतिक लाभ की आशा से यह अधिकार दिये हैं यह कहने की आवश्यकता नही किन्तु यदि ईसाई और मुसलमान होने पर भी इसी प्रकारके विशेषाधिकार उन्हे प्राप्त हो गो इससे हिन्दुओ की धार्मिक दृष्टि से ही नहीं अपितु देश की राष्ट्रीय दृष्टि से भी गम्भीर दुष्परिणाम होंगे यह स्पष्ट है।

विदेशी सहायता का दुरुपयोग

मुसलमानो और ईसाइयो द्वारा हिन्दुओ का धर्मान्तरण करने का प्रश्न केवल धार्मिक स्वतन्त्रता तक सीमित नही है, सर्वविदित है। मध्य पूर्व से पैट्रोडालर की विशाल राशि का उपयोग हमारे देश के गरीब और अशिक्षित लोगा को ही नही अन्य बेरोजगार और पिछड़े वर्ग के लोगो को भी प्रलोभित करते हैं। इस प्रकार का दुरूपयोग ईसाई मिशनरियो को विदेशो से प्राप्त अपार धन राशि का किया जाता रहा है।

धर्मान्तरण को प्रोत्साहन

एक ओर हमारी सरकार इस देश के आदिवासियो तथा अन्य आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से पिछड़े वर्गों के धर्म और सस्कृति के सरक्षण की बात करती है और सविधान में भी उन्हे इस प्रकार का आश्वासन दिया हुआ है तो दूसरी ओर धर्मान्तरण के बाद भी अनुसूचित जातियो को दिये गये विशेष सरक्षण देने का प्रस्ताव करके विदेशी मिशनरियो द्वारा उनका धर्मान्तरण किये जाने को प्रोत्साहन देती है। महात्मा गाधी जैसे सर्व धर्म सम्भाव के समर्थक ने भी ईसाई मिशनरियो द्वारा किये जाने वाले धर्मान्तरण का इसीलिये विरोध किया था। प्राचीन समय में मुसलमानो द्वारा जिस प्रकार तलवार के जोर से धर्मान्तरण किया जाता था उस प्रकार वर्तमान युग मे ईसाई प्रचारक अशिक्षित गरीब और भोले-भाले स्त्री-पुरुषो को लोभ लालच देकर उन्हे अपने धर्म से विमुख करते है।

धर्म के साथ राष्ट्रीयता का भी त्याग

धर्म निरपेक्षता की विकृत परिभाषा और व्यवहार के कारण यह बात कितनी भी अप्रिय मालूम हो, किन्तु इस कटु सत्य से इन्कार नहीं किया जा सकता कि हमारे देश मे धर्मान्तरण का अर्थ राष्ट्रान्तरण भी होता है और हुआ है। अन्यथा क्या कारण है कि जिनके पूर्वज हिन्दू थे, वह भी मुसलमान और ईसाई होते ही पृथक राज्य की माग करके देश की एकता और राष्ट्रीयता को चुनौती देते हैं। जैसा कि पाकिस्तान तथा अब भी कश्मीर, मिजोरम, नागालैण्ड आदि उदाहरणो से स्पष्ट है।

देशव्यापी आशंका

इसीलिए यह आशका स्पष्ट है कि यदि वर्तमान सरकार ईसाई और मुसलमान धर्म स्वीकार करने पर भी दलितो को वे ही अधिकार देने का प्रावधान करती है जो हिन्दू या बौद्ध धर्म के अनुयायी दलितो को दिया गया है तो उसका सर्वत्र और राष्ट्रव्यापी प्रबल विरोध होना स्वाभाविक है। भारतीय जनता पार्टी वर्तमान सरकार को दिये जान वाले अपने समर्थन को इस प्रकार के विधेयक का समर्थन करने की सीमा तक निभा सकेगी यह सम्भव प्रतीत नही होता है। ऐसा वह अपनी सारी घोषणाओ और मान्यताओ तथा सिद्धातो को तिलाञ्जलि देकर ही कर सकती है।

गोमांस की जगह बर्फी

न्यूयार्क, १९जून। गोमास खाने वालो को यहा पर एक उत्सव के मौके पर गाय के दूध की बर्फी भेंट की गई। बर्फी के साथ गोसरक्षण का एक सन्देश भी था। अन्तर्राष्ट्रीय गोसरक्षण परिषद् की सुश्री आवरीय डोब ने अपने फार्म मे हर गाय के लालन-पालन के लिये लोगो से सिर्फ एक डालर प्रतिदिन का चन्दा मागा। पिछले रविवार को आयोजित इस एक दिवसीय उत्सव में पाच लाख से अधिक लोगो ने हिस्सा लिया।

महर्षि दयानन्द स्मृति भवन न्यास की बैठक जोधपुर में सम्पन्न

जोधपुर १९ जून,

महर्षि दयानन्द स्मृति भवन न्यास की बैठक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं न्यास के अध्यक्ष श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती की अध्यक्षता मे महर्षि दयानन्द स्मृति भवन रातानाडा जोधपुर में सम्पन्न हुई (इस बैठक में श्री प० बाल दिवाकर हंस प्रधान सचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल, श्री रतनला एडवोकेट कार्यकर्ता प्रधान न्यास, श्री रमेशचन्द्र भाटिया एव आर्यसमाजो के अनेक प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

महर्षि दयानन्द स्मृति भवन न्यास के विकास और सुरक्षा आदि के सम्बन्ध में खुलकर चर्चा हुई। बाहर दीवारी को ऊँचा उठाने और अन्य विकास दायित्वो को सम्हालने हेतु एक उपसमिति का निर्माण कर दिया गया।

चौपासनी रोड पर सार्वदेशिक सभा की भूमि पर जो अस्थायी किरायेदारो से भूमि खाली कराकर उस भूमि मे महर्षि दयानन्द सरस्वती की स्मृति मे औषधालय और कन्या पाठशाला बनवाने हेतु उप समिति श्री रमेशचन्द्र भाटिया की अध्यक्षता मे बना दी गई। इस अचल सम्पत्ति के लिए श्री दाऊलाल सोनी को मुख्तयार आम बनाया गया जो सम्पत्ति के सम्बन्ध मे वैधानिक दृष्टि से साधिकार प्राप्त व्यक्तित्व होगे।

दिल्ली से जोधपुर मेल द्वारा जोधपुर पधारने पर स्टेशन पर स्वामी जी और श्री हंस जी का भव्य स्वागत किया गया वदिक धर्म की जय आदि नारो से स्टेशन का वातावरण निनादित हो उठा। और यात्री गणों ने आर्यसमाज की सगठन शक्ति की सराहना की और कहा महर्षि दयानन्द मानव मात्र के हित सरक्षक थे।

युवकों की भूमिका

(पृष्ठ ६ का शेष)

होते हैं। एक तो यह कि वे भी तो हमारी अर्थात् पुरुषो की सीट पर बैठती हैं और दूसरा यह कि आरक्षण केवल वहीं से होता है। जहा से बस चलती हो, आगे नही। ये दोनो ही उत्तर न तो बुद्धिसगत तर्क पर आधारित है और न ही व्यवस्था पर। हा, अपने गाव की महिलाओ पर इनमें से कोई भी तर्क लागू नही होता। यदि ड्राईवर या कडक्टर महोदय के गाव का कोई व्यक्ति दीख जाये तो उसके लिए स्टाप के बिना भी बस रुकेगी। अन्यथा स्टाप पर भी बस का रुकना ड्राइवर महोदय की कृपा पर निर्भर है। एक दिन मुझे भाग्य से एक अभीष्ट बस मिल गई आगे नम्बर चाक से अस्पष्ट लिखा हुआ था। स्टापो पर बस रोकने के लिये लोग हाथ का सकेत करते, परन्तु ड्राईवर साहब ने किसी स्टाप पर बस नही रोकी। मैंने कडक्टर से पूछ लिया कि वह किसी भी स्टाप पर बस क्यो नही रोक रहा। उसने उत्तर दिया कि स्टाप पर वे लोग वहा जाने वाले नही होगे जहा यह बस जा रही है। मैंने कहा—"पर ड्राईवर को यह कैसे पता चल सकता है क्योंकि किसी के माथे पर तो मन्तव्य लिखा नही। परन्तु कोई प्रभाव नही हुआ और बस उस गति से उसी प्रकार चलती रही। (क्रमश)

दयानन्द कालेज अजमेर में प्रवक्ता की आवश्यकता

हिन्दी प्रवक्ता वेतन रु० ३,०३६/-(महगाई सहित) श्रृ खला २२००—४००० यूजीसी निर्धारित योग्यता सहित कम से कम द्वितीय श्रेणी एम० ए० तथा पी. एच. डी.,–एम० फिल० को अग्रिमवेतन वृद्धि। १०) रुपये मे प्राप्त आवेदन १० दिन में मन्त्री, आर्य समाज शिक्षा सभा, अजमेर-३०५००१ को प्रेषित करें।

रजि० न० डी० (डी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१-७-१९९०) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U 14
R.N. 626/57 Licensed to post without prepay and licence No.U 13 Post in D.P.S.O.an 29 6 1990

१ जुलाई से १५ अगस्त ९० तक प्रवेश का स्वर्णिम अवसर

गुरुकुल मे कक्षा ५ से प्रवेश होता है और सोलहवी कक्षा (प्रथमा से आचार्य) तक अध्ययन हेतु छात्रावास की समुचित व्यवस्था है।

वेद, दर्शन, व्याकरण, साहित्य, हिन्दी, अ ग्रेजी गणित, विज्ञान इतिहास भूगोल, नागरिकशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्रादि विषयो के साथ साथ सगीत भाषण, सैनिक शिक्षा, नैतिक शिक्षा पी० टी० योगासन एव धनुर्विद्या आदि के प्रशिक्षण का विशेष प्रबन्ध हैं।

मेधावी छात्रो को छात्रवृत्ति दी जाती है। प्रवेश शुल्क ३५०) रु०, भोजन शुल्क १२५) प्रतिमाह।

नोट—विशेष जानकारी के लिए नियमावली मगावे।

—डा० रमामित्र शास्त्री
प्राचार्य, गुरुकुल वैदिक सस्कृत महाविद्यालय
सिराथू इलाहाबाद (उ० प्र०)

प्रवेश सूचना

गुरुकुल रामलिंग येडशी में प्रवेश आरम्भ। महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित आर्य प्रणाली के अनुसार चलने वाला व महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक (हरियाणा) से मान्यता प्राप्त यह गुरुकुल येडशी जिला धाराशिव (महाराष्ट्र) म अत्यन्त शुद्ध, सात्विक निसर्गरम्य पवित्र वातावरण मे वर्तमान हैं। वेद-दर्शन-उपनिषद् सस्कृत-साहित्य-व्याकरण के अतिरिक्त आधुनिक विषय गणित विज्ञान, इतिहास, भूगोल, अग्रेजी, सामाजिक ज्ञान, हिन्दी आदि विषय भी पढाये जाते हैं। यहा प्रथमा से शास्त्री तक पढाने का समुचित प्रबन्ध है। आचार्य से सम्पर्क करें। प्रवेश १५ जुलाई तक होगा। स्थान मर्यादित हैं।

आर्यमुनि जी वानप्रस्थी, अध्यक्ष—गुरुकुल रामलिंग, येडशी
प्रधानाचार्य, गुरुकुल रामलिंग, येडशी

प्रवेश सूचना

गुरुकुल महाविद्यालय रुद्रपुर में नवीन छात्रों का प्रवेश दिनाक २-७-९० मे आरम्भ हैं गुरुकुल में शिक्षा प्रथमा से लेकर आचार्य तक की व्यवस्था है। प्रवेश शुल्क ४००) रुपया भोजन शुल्क १००) प्रवेशार्थी सम्पर्क करे।

प्राचार्य
गुरुकुल महाविद्यालय रुद्रपुर तिलहर
शाहजहापुर (उ० प्र०)

सामवेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

बादी कुई ३ जून। आज आर्य समाज के प्रागण में गत ५ दिनो से चल रहे सामवेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति सम्पन्न हुई। इस यज्ञ के आचार्य सीतावाडी कोटा के श्री वेदप्रिय शास्त्री ने सामवेद का अन्य वेदो के साथ सम्बन्ध बताते हुए प्राणोपासना एव इन्द्र द्वारा सोमपान करने प्रभृति करते के वैदिक अलकारो तथा रूपको के वास्तविक रहस्य को बडे ही सरल और हृदयग्राही ढग से समझाया।

—लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी, मन्त्री
आर्य समाज बादीकुई (राज०)

ब्र० आर्य नरेश जी द्वारा प्रचार कार्य

राष्ट्र, सस्कृति व युवा शक्ति के उत्थान हेतु उदगीथ साधना स्थली योभवन सिरमौर (हि० प्र०) के सस्थापक तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के प्रधान ब्र० आर्य नरेश जी ने पचकुला कालका तथा चण्डीगढ आदि स्थानो में वैदिकधर्म का प्रचार करने के बाद हिमाचल प्रदेश के विभिन्न स्थानो मे अपने वेद प्रचार वाहन द्वारा सफलतम प्रचार किया। इनके तूफानी दौरे से सब जगह जागृति की एक लहर सी आ गई तथा इनके द्वारा वितरित पुस्तको से भी लोगो ने बहुत लाभ उठाया।

महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा
हिमाचल प्रदेश



७७ वर्षीय विद्वान प० देवेन्द्रनाथ शास्त्री (नरेला दिल्ली) ने डा० भवानी लाल भारतीय के कुशल निर्देशन मे वाजुष सूक्ति समीक्षा विषय पर सस्कृत भाषा में शोध प्रबन्ध लिखा। एतदर्थ उन्हे पजाब विश्वविद्यालय ने इस वर्ष डाक्टर आफ फिलासफी की उपाधि से सम्मानित किया।

कानपुर में तीन विधर्मी हिन्दू बने

कानपुर। आर्य समाज मन्दिर गोविन्द नगर में आर्य समाज व केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने दो मुस्लिम व एक ईसाई युवती को उनकी इच्छानुसार वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) की दीक्षा देकर हिन्दू धर्म को ग्रहण कराया।

श्री आर्य ने २४ वर्षीय एम.ए. तक शिक्षित ईसाई युवती कु० लविनोरीन सावल को शुद्ध होने के पश्चात उसका नाम छवि रखा गया तथा एक सिन्धी युवक अविनाश बालचन्दानी के साथ विवाह करा दिया।

इस प्रकार मुस्लिम युवती कु० अजन का नाम अनुराधा रखा गया एव राजकुमार नामक युवक से विवाह कराया गया।

तीसरी शुद्धि एक २३ वर्षीय मुस्लिम युवक कमर इकबाल की की गयी उसका नाम सागर प्रसाद रखा गया।

—कुम गोहरा आर्य, मन्त्री
आर्य समाज गोविन्द नगर कानपुर

छात्रवृत्तियां

(नव सत्र जुलाई १९९० से अप्रैल १९९१)

श्री बजीरचन्द धर्मार्थ ट्रस्ट की ओर से नये सत्र के लिए गुरुकुलो, स्कूलों, महाविद्यालयो, व्यवसायिक प्रशिक्षणालयो और अनुसन्धान सस्थानों के सुयोग्य और सुपात्र छात्र/छात्राओ और स्पर्धात्मक परीक्षाओ के परीक्षार्थियो और परीक्षार्थिनियो को छात्रवृत्तियां देने का कार्यक्रम शुरू हो गया है।

इन छात्रवृत्तियो से लाभ उठाने के इच्छुको को चाहिए कि ट्रस्ट द्वारा नियत आवेदन पत्र मगवा कर शीघ्र ही ट्रस्ट के आदरी सचिव के नाम पर निम्नलिखित पते पर भेजें।

गत सत्र इस कार्यक्रम पर रुपये २३,००१) व्यय किये गये हैं। इस सत्र के लिए यह राशि बढाकर रुपये ३०,०००) कर दी गई है।

—सत्यदेव आदरी सचिव
श्री बजीरचन्द धर्मार्थ ट्रस्ट सी-१२ अमर कालोनी
लाजपत नगर नई दिल्ली-११००२४

सार्वदेशिक प्रेस दरियागज नई दिल्ली में मुद्रित तथा रविप्रकाश सास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र

वेदामृत

अतिथि-सत्कार महान् व्रत है

एष वा अतिथिर्यत् श्रोत्रियः,
तस्मात् पूर्वो नाश्नीयात्, ॥
अशितावत्यतिथावश्नीयात्,
यज्ञस्य सात्मत्वाय यज्ञस्याविच्छेदाय, तद् व्रतम् ॥
अथर्व० ९-६-३७, ३८।

हिन्दी अर्थ—(क) वही वस्तुतः अतिथि है, जो वेदपाठी या वेदज्ञ है। उससे पहले भोजन न करे। (ख) अतिथि के भोजन कर लेने पर ही भोजन करे यज्ञ (अतिथियज्ञ) की परिपूर्णता और अखण्डता के लिए। यह व्रत (नियम) है, (सभी गृहस्थों को इसका पालन करना आवश्यक है)।—डा० कपिलदेव द्विवेदी

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१ | दयानन्दाब्द १६६ | दूरभाष : १२७४७७१ | वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष २९ अंक २६] आषाढ़ शु० १५ सं० २०४७ ८ जुलाई १९९०

महाभारत के पात्रों का अश्लील चित्रण

ऐलेन आरोन की लिखित पुस्तक "सम्राट" के प्रकाशन और बिक्री पर प्रतिबन्ध की मांग।

महर्षि वेदव्यास कृत महाभारत को भारतीय (हिन्दू) वाङ्मय का अनुपम महाकाव्य माना जाता है, जिसे ससार के अनेक देशों में प्रसिद्धि प्राप्त है। इसी महाभारत में योगीराज श्रीकृष्ण का जगत् प्रसिद्ध गीता का उपदेश भी है। जिसे ससार के सन्तों, महात्माओं और विचारकों ने मानव कल्याण का अद्वितीय ग्रन्थ माना है। हिन्दुओं के लिए रामायण और महाभारत समान रूप से पूज्य और पवित्र हैं। और इनकी गणना हिन्दुओं के धार्मिक ग्रन्थों मे की जाती है। बहुत दुःख की बात है कि ऐसे पवित्र और सर्वमान्य महाकाव्य के पात्रों को ऐलेन आरोन ने अपनी पुस्तक "सम्राट" में बहुत ही कामुक एवं हीन चरित्र व्यक्तियों के रूप में प्रस्तुत करने का दुष्प्रयत्न किया है। विशेषकर द्रौपदी के चरित्र को बहुत ही अश्लील रूप में चित्रित किया है। द्रौपदी का पांचों पाण्डव भाइयों के साथ विवाह की कथा नितान्त काल्पनिक और निराधार है। उसका विवाह ज्येष्ठ भ्राता होने के कारण केवल युधिष्ठिर के साथ ही हुआ था। अतः अन्य भाइयों के साथ उसके यौन सम्बन्धों का कोई प्रश्न ही नहीं था। लेकिन लेखिका ने उसी दन्त कथा को आधार मानकर अपनी हीन कल्पना की उड़ान से उन पर कीचड़ उछाली है। इस प्रकार का चरित्र हनन तो शायद सलमान रशदी ने अपनी पुस्तक "शैतान की कविता" में भी नही किया होगा जिसके लिए मुस्लिम कट्टरपन्थियों ने उसे मौत की सजा का फतवा दिया है।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने हिन्दुओं के आराध्य महापुरुषों के चरित्र हनन के इस प्रकार के प्रयासों की ओर ध्यान दिलाते हुए भारत के प्रधानमन्त्री तथा गृह-मन्त्री को पत्र लिखकर मांग की है कि इस पुस्तक के प्रकाशन और बिक्री पर तुरन्त प्रतिबन्ध लगाया जाय अन्यथा हिन्दू संगठनों को मिलकर इसके लिये आन्दोलन करने पर बाध्य होना पड़ेगा।

सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

अमरनाथ के चढ़ावे में मलिक परिवार के मुसलमान आज भी भागीदार

दिल्ली १ जुलाई १९९०।

आज दूरदर्शन पर काश्मीर के एक मलिक परिवार के मुस्लिम बन्धु ने बताया कि अमरनाथ की गुफा की जानकारी हमारे ही

(शेष पृष्ठ २ पर)

पंजाब सीमा पर कांटेदार तार लगाए जायेंगे

गुरदासपुर २९-६-९०। केन्द्रीय गृह उपराज्यमन्त्री श्री सुबोधकान्त सहाय ने कल गुरदासपुर और फिरोजपुर के सीमावर्ती इलाकों का दौरा करने के बाद बताया कि केन्द्रीय गृहमन्त्रालय ने २३६ किलो मीटर लम्बी सरहद पर ४० करोड रु० की लागत से कांटेदार तार लगाने की एक योजना की स्वीकृति दी है—पंजाब से लगने वा ी पाकिस्तानी सीमा के २० किलोमीटर के भाग में तार लगाने का कार्य पूरा हो चुका है—पूरी सीमा की लम्बाई ५४६ किलोमीटर है—सीमा के ३५ किलोमीटर भाग में लाईट लगाने की भी योजना है—यह निर्णय सीमा पार से घुसपैठ रोकने की गर्ज से किया गया है—श्री सहाय ने दावा किया कि इस प्रकार से तार लगाना बहुत ही सफल रहा है और जिस भी भाग में यह कार्य पूरा हो चुका है वहां पिछले दो वर्षों में घुसपैठ के वाकयात में नुमाया कमी हुई है—बी०एस०एफ० के एक स्थानीय अधिकारी ने बताया कि इससे सोने और नशीली वस्तुओं की तसकरी के रोकने मे भी मदद मिली है। श्री सहाय ने बताया कि पिछले दो वर्षों में सीमा पर २४६ सुरक्षा चौकियां स्थापित की गई। अब सीमा पर कुल ५१३ सुरक्षा चौकियां हैं।

पंजाब की सीमा पर सुरक्षापट्टी बनाने हेतु सभा-प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती काफी समय से सरकार से माग कर रहे थे सरकार कुछ दबाव के कारण ये सुरक्षा पट्टी बनाने को टाल रही थी अन्तत सरकार ने अब सुरक्षा के लिए काटेदार तार लगाकर एक उचित कदम उठाया है।

पंजाब में निर्वाचन

बी० जे० पी० सरकार का समर्थन नहीं करेगी

अमृतसर २९-६-९०। बी०जे०पी० के जनरल सैक्रेटरी श्री कृष्णलाल शर्मा ने आज कहा कि पजाब में ऐसम्बली चुनाव कराने के प्रश्न पर इनकी पार्टी नेशनल फ्रन्ट सरकार की हिमायत नही करेगी अखबार वालो से यहां बात चीत करते हुए श्री शर्मा ने कहा कि जब तक पंजाब में बन्दूकों के साए में वोट डालने का भय है वहां चुनाव नहीं कराने चाहिए। अलबत्ता इन्होने यह भी कहा कि इन्हे आशा नहीं है कि उनसे परामर्श किए बगैर वी०पी० सिंह सरकार इस बारे में कोई निर्णय करेगी। क्रियाशील प्रजातन्त्र की पुनः स्थापना के लिए अकाली दलों की मांगो के प्रति अपनी रद्दोबदल का इजहार करते हुए श्री शर्मा ने कहा कि सरकार पहले शिरोमणि कमेटी का चुनाव कराए जिससे सभी अकाली लीडरो की आंखे खुल जाएगी। 'वर्तमान स्थिति में स्वतन्त्ररूप से तथा न्यायिक चुनाव कराए जा सकते हैं या नही।

सम्पादक—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सम्पादकीय—

साम्प्रदायिक-समर्पण के भाव

आज के बदलते माहौल में साम्प्रदायिक समझौतो का प्रमाण समस्त धार्मिक समुदायों की आपसी समझदारी को समाप्त करने और समूचे देश को दंगो की आग में झोकने तक ही सीमित नही रह गया है।

साम्प्रदायिक समझौते कम से कम कश्मीर और पंजाब को भारत के भूतपूर्व प्रदेशो मे बदल सकते हैं। श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह कठोर निर्णय नही ले सकते।

इस विषय मे कुछ घटनाओ की ओर ध्यान रखना होगा। एक तो रुबिया काड जो मुफ्ती सईद के गृहमन्त्री बनने के तीसरे दिन ही हुआ और छ दिन कैसे खिचे, अलगाववादियो को पूरी घाटी में अलगाववादियो की आग लगाने में अवसर मिला। रुबिया काड के किसी भी पहलू को सार्वजनिक करने से इस सरकार ने स्पष्ट मना कर दिया।

इसी के साथ उन आतकवादियो को जिन्होने रुबिया को उठाया था राष्ट्र को ताक मे रखकर छोडा गया और फिर अलगाववाद को प्रश्रय देकर कश्मीर घाटी को आग मे झोक दिया।

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने मौलाना बुखारी के वार्तालाप की चर्चा भी जरूरी है। इमाम बुखारी ने विधान सभा के चुनाव में जनता दल के लिए अपील करते हुए कहा था मुझे उनसे बेपनाह मुहब्बत है सियासत के बाहर भी। खास बात यह नही। उनकी प्रेस कान्फ्रेंस उनके घर पर हुई उन्होने जनता दल के लिए अपील जारी की। बल्कि यह है प्रेस कान्फ्रेंस विश्वनाथ प्रतापसिंह के घर पर हुई। खास बात यह भी है कि जामामस्जिद के लिए सरकार ने पचास लाख रुपए भी दिए। बात यह भी है कि निजी सम्पत्ति पर सरकारी धन व्यय किया जा रहा है। गलतियो पर गलती, कि यह धन बिना स्वीकृति के उसकी घोषणा भी कर दी गई।

मौ० बुखारी ने कहा कि विश्वनाथ प्रताप सिंह से उनका लिखित वायदा किया गया है। सन्देह की स्थिति यह है कि उस पत्रक मे कहीं कश्मीर आदि के विषय में ढिलाई की अनौपचारिक शर्ते भी शामिल नहीं हो?

ठीक ऐसी गतिविधियो पर ही साम्प्रदायिक समझौते राष्ट्रद्रोह के नाम पर आ जाते हैं। इस पर रुबिया काड की चर्चा की जा चुकी है उस पर ठक्कर आयोग की रिपोर्ट को सार्वजनिक करने के विषय में मुफ्ती ने खुली सरकार की हिमायत की। फिर विधान सभा के चुनाव के पूर्व कश्मीरी अलगाववादियो को एक एक लाख आदमियो के जुलूस निकालने की अनौपचारिक अनुमति भी दे दी गई।

और अन्त में राष्ट्रीय मीडिया के सर्वसम्मत निर्णय के विरोध के अतिरिक्त उन्होने मौलाना आजमी को राज्य सभा मे सदस्य भी बना दिया।

कांग्रेस से बाहर आने के बाद उन्होने कभी भी आतकवादियो की निंदा नही की। यहा तक मारे गए मोगा के व्यक्तियों की सहानुभूति मे दो शब्द तक नही कहे।

गोविन्दराम की हत्या भी उसी समय लुधियाना में हुई उनके पुत्र की हत्या पहले ही हो चुकी थी।

साम्प्रदायिक समझौते और इस तरह आतकवाद तथा अलगाववाद को खुला अवसर देने का काम योजनाबद्ध तरीके से किया गया। श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह जी से आरिफ के सम्बन्धो से साम्प्रदायिक समझौता परस्ती को आसानी से समझा जा सकता है।

यहा पर विषय दो व्यक्ति विशेष का नहीं, बल्कि दो विचार पद्धतियो का भी है। श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह को खुला साम्प्रदायिक समझौते करने का खुला अवसर बिना विरोध के मिलता गया।

आरिफ की राजनीति पर आश्चर्य होता है पर—समझौता परस्त भारतीय जनता पार्टी भी न जाने कितने अवसरों पर कश्मीर जैसे मुद्दा पर मौन साधे देखे गये हैं। हमने पूछा कि विरोध क्यो नही करते, बोले जनता पार्टी में तो राजीव गाधी आ जायेंगे उन्हे हम नही आने देंगे। रुबिया काण्ड पर जब राजीव गाधी ने सरकारी समझौता परस्ती पर २॥ घण्टे तक अपने विचार लोक सभा मे रखें उस समय भा. ज. पा. के ८८ सदस्य देश भक्त जनता दल की ओर पक्ष में बोल रहे थे।

भा. ज. पा. ने भी मुस्लिम परस्ती पर वि. प्र. सिंह को साम्प्रदायिक के सामने समर्पण करने से रोक नही पाए। मालूम पड़ता था कि अकाली जनसघ की समझौता नीति को इतिहास को पुन. जीवित करने की आवृति है।

उपरोक्त चर्चा का तात्पर्य यह है कि वि. प्रतापसिंह से बहस इसलिए की जा रही है कि अब विषय साम्प्रदायिक समझौते का नहीं? बल्कि राष्ट्रीय भूगोल के परिवर्तित होने वाले खतरेके भयानक मोड पर आ गयाहै।

रामजन्म भूमि पर ९ नवेम्बर को शिलान्यास के अवसर पर बेनजीर तथा अन्य देशो की धमकियो पर भी मौन साधे रखा।

साम्प्रदायिक समझौतो का ही यह परिणाम है कि एक ओर मथुरा में भा. ज. पा के मंच पर चढने से ही इन्कार करते हैं दूसरी ओर बी.जे.पी से लोकसभा चुनाव मे समझौते का खुला प्रयास करते हैं १४ फरवरी को मन्दिर निर्माण को टालने के लिए भा.ज.पा. तैयार हो जाती है। स्पष्ट है कि भाजपा ने अपनी हिन्दू साम्प्रदायिकता की ठेकेदारी प्राप्त करने मे जनमोर्चे को मुस्लिम साम्प्रदायिकता का ठेकेदार बना दिया।

परिणामत दोनो ने निश्चय किया कि हम परस्पर में एक सीमा से आगे परेशान नही करेंगे। केवल तालमेल रखेंगे। यह भी प्रादेशिक स्तर पर। भा.जपा. इस उपकार के बदले जनता दल की मुस्लिम साम्प्रदायिकता मौन रहेगी।

नपे तुले चौकस भाजपा की रीति नीति ने जनतादल को मुस्लिम साम्प्रदायिकता का रणक्षेत्र बना दिया। भा ज पा को मुस्लिम वोट तो वैसे भी नहीं मिलते।

राष्ट्रीय स्तर पर एक प्रतिशत वोट का भी कई बार निर्णायक प्रभाव पडता है। फिर यहा तो १८ प्रतिशत वोट का प्रश्न है। नेता इसके लिए क्या-क्या पापड नही बेल सकेंगे।

केवल ईमानदारी की एक बाठ पंसारीपन से चुनावी राजनीति निभाने वाली है। ईमानदारी की छवि के ग्राहक ज्यादातर शहरी मध्यम वर्ग के है। लेकिन इनकी सख्या कम है और यह वर्ग विश्वसनीय भी नही है।

इस प्रकार हिन्दुओ मे वि० प्रतापसिंह जातिवाद के नाम पर और मुस्लिमो मे शुद्ध साम्प्रदायिकता के आधार पर अपना समीकरण बना रहे हैं।

इस प्रकार साम्प्रदायिकता का काला धब्बा नया नहीं है बल्कि राष्ट्रीयता का खतरा भी बना है।

बताइये साम्प्रदायिकता की आग कैसे-कैसे पनपा रहे हैं आज के नेता अपनी कुर्सी पाने हेतु और बचाने के लिए।

खतरनाक समर्पण?

अमरनाथ के चढ़ावे

(पृष्ठ १ का शेष)

बरकवाल पूर्वजों ने आज से २०० वर्ष पूर्व मार्तण्ड के पण्डितों को दी थी। उसी समय विचार-विमर्श के पश्चात् यह भी निश्चय हुआ था कि अमरनाथ के मन्दिर पर यात्रियों द्वारा चढ़ावे की जो भी धनराशि आयेगी उसमें से एक चौथाई राशि मलिक परिवार को दी जायेगी, आधी राशि वहा के पण्डे लेंगे और शेष एक चौथाई राशि साधु महात्माओ मे प्रतिवर्ष बाटी जायेगी।

उसी आधार पर उन्होंने बताया कि मलिक परिवार के पूर्वज बकरिया चराते हुए अमरनाथ की गुफा पर पहुंचे और उन्होंने ही सर्वप्रथम उस गुफा को देखा। हमारे पूर्वजो ने मार्तण्ड के ब्राह्मणों को बर्फ के शिवलिंग की जानकारी दी थी, इस पर ब्राह्मणों ने सारे देश में इसका प्रचार किया और हजारों श्रद्धालु हिन्दू व्यक्ति अमरनाथ की यात्रा पर आने लगे।

मलिक ने यह भी बताया कि उपरोक्त निश्चय के अनुसार आज तक अमरनाथ के चढ़ावे पर आये हुए धन का एक चौथाई भाग मुस्लिम परिवार को दिया जा रहा है।

आर्यसमाज सम्प्रदाय नहीं है

–प्रो० शेरसिंह, प्रधान-आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

"आर्य सभा" या "भारतीय आर्यसमाज" जैसे नये नये नामों से संगठन खड़ाकर आर्यसमाज के स्वरूप को बिगाड़ने का ही प्रयास है। ऐसे संगठनों से महर्षि के मन्तव्यों को मानने वाले किसी भी आर्यसमाज में नाता नहीं जोड़ना चाहिये और ऐसे प्रयासों की निन्दा करनी चाहिये।

आर्यसमाज के मन्तव्यों को पूरी तरह न समझने वाले अज्ञानी तथा अलग-अलग सम्प्रदायों को मानने वाले बहुत से लोग आर्यसमाज को भी एक सम्प्रदाय कह डालते हैं। दुःख की बात यह है कि कुछ आर्यसमाजी भाई भी जो किसी कारण आर्यसमाज के संगठन से कटे हुए हैं यह अपना वर्चस्व स्थापित नहीं कर पाये है, वे भी सीधे न कहकर घुमा फिराकर यह कहने से नहीं हिचकते कि विश्व के कई देशों में फैला हुआ हजारों शाखाओं वाला आर्यसमाज का संगठन साम्प्रदायिक हो गया है इसलिये सभी मतों के अनुयाईयों को मिलाकर एक नये भारतीय आर्यसमाज का गठन करना चाहिये।

इसलिये कई प्रकार के लोगों द्वारा आर्यसमाज के सम्बन्ध में जो भ्रम जान बूझकर या अनजाने फैलाया जा रहा है उसका प्रतिकार करना और वस्तुस्थिति सबके सामने रखना आवश्यक जान पड़ता है।

आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने "स्वमन्तव्यामन्तव्य-प्रकाश" स्पष्ट शब्दों में लिखा है :—मैं अपना मन्तव्य उसी को जानता हूं कि जो तीन काल में सबको एकसा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना व मतमतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है। किन्तु जो सत्य है उसको मानना मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझको अभीष्ठ है। यदि मैं पक्षपात करता तो आर्यावर्त में प्रचारित मतों में से किसी एक मत का आग्रही होता।"

सत्यार्थप्रकाश की भूमिका में महर्षि लिखते हैं :—

क्योंकि मैं भी जो किसी एक का पक्षपाती होता तो जैसे आजकल के स्वमत की स्तुति मण्डन और प्रचार करते और दूसरे मत की निन्दा, हानि और बन्ध करने में तत्पर होते हैं, वैसे भी होता। परन्तु ऐसी बातें मनुष्यपन से बाहर हैं। 'स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश" मे मनुष्य किसको कहते हैं यह स्पष्ट किया है।

"मनुष्य उसी को कहना कि मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख-दुख और हानि लाभ को समझे। ··जहां तक हो सके वहां तक अन्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करे। इस काम में चाहे उसकी कितना ही दारुण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही जावें परन्तु इस मनुष्यरूप धर्म से पृथक् कभी न होवे।"

महर्षि सारे जगत का पूर्ण हित चाहते थे, इसलिये उनकी यह हार्दिक तमन्ना थी कि विभिन्न मतों के विद्वान् 'पक्षपात छोड़ सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात जो जो बातें सबके अनुकूल सबमें सत्य है उनका ग्रहण और जो एक दूसरे के विरुद्ध बाते हैं, उनका त्यागकर परस्परप्रीति से वर्ते वर्तावें तो जगत का पूर्ण हित होवे।"

इस पृष्ठभूमि में आर्यसमाज की स्थापना स्वामी दयानन्द ने की थी। इसलिए यह सबको समझ लेना चाहिये कि यही कि आर्यसमाज कोई सम्प्रदाय नहीं है, बल्कि आर्यसमाज साम्प्रदायिकता और सम्प्रदायवाद का डटकर विरोधी है। आर्यसमाज जन्म के आधार पर जात-पांत ऊंच-नीच या मजहब आदि का भेदभाव नहीं मानता है। आर्यसमाज की मान्यता है कि जन्म से ही कोई न ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य, शुद्रादि होता है और न ही हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, यहूदी पारसी आदि। जन्म के आधार पर लोगों को वर्णों और सम्प्रदायों में बांटना मानव समाज का सबसे बड़ा अभिशाप है। मानव की अधिकतर समस्याओं का मूल जन्म के आधार पर लोगों को वर्णों और सम्प्रदायों में बांटता है। सब बच्चों को समुचित शिक्षा के द्वारा मानवसमाज के एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में विकसित होने का समान अवसर मिले।

आर्यसमाज का नियमः—

आर्यसमाज के दस नियम स्वामी दयानन्द ने सोच समझकर बनाये थे ताकि इन नियमों का पालन करने वाले आर्यसमाज के सदस्य अपनी सामाजिक जिम्मेदारी को समझकर ऐसा आचरण करें जिससे मानव समाज में वैमनस्य की जगह प्रेम, स्पर्धा की जगह सहयोग बढ़े और सबकी उन्नति में ही वे अपनी उन्नति देखें और समझें। जो इन नियमों को हृदयांगम करेगा वह साम्प्रदायिक तो हो ही नहीं सकता, वह-सम्प्रदायों के द्वारा मानवसमाज को बांटने का विरोध करेगा जो सर्वमान्य सिद्धान्त है उनके द्वारा सबको मिलाकर मानवसमाज का दुख दर्द समाप्त करने में लग जायेगा।

आर्यसमाज का सदस्य बनने के लिये किसी विशेष जाति या सम्प्रदाय में जन्म लेना आवश्यक नही हैं। सदस्यता के फार्म में इस प्रकार का कोई उल्लेख नहीं है। वह किसी भी तथाकथित जाति या सम्प्रदाय में जन्मा हो, बिना भेदभाव के आर्यसमाज का सदस्य बन सकता है, यदि वह नियमों का पालन करे। आर्यसमाज का द्वार सबके लिये खुला है। इसलिये आर्यसमाज ऐसा संगठन बनाने की बात करना जिसमें हिन्दू, मुसलमान, ईसाई आदि सम्प्रदायो के के लोग भर्ती हो सकें, व्यर्थ का शोभा है। आर्यसमाज राजनैतिक दल तो है नही कि इसमें सभी सम्प्रदायो के लोग साम्प्रदायिक भावनायें रखते हुए भी शामिल हो सकें और फिर अन्दर बैठकर अपने अपने सम्प्रदायों की लड़ाई लड़ते रहे। आर्यसमाज तो सार्वभौम संगठन है और सब प्रकार के भेदभाव भुलाकर मानव समाज की सेवा करने में विश्वास रखता है। यह सगठन किसी जाति विशेष, सम्प्रदाय विशेष या देश विशेष का नही हो सकता। सभी क्षेत्रों में काम करने के लिये उसकी शाखायें तो सब जगह खुलनी चाहिये परन्तु वह है विश्वकल्याण के लिए विश्वव्यापी संगठन। वह बना हुआ है काम रहा है। उसके काम में कमी हो सकती है, उसमें अधिक से अधिक कर्मठ लोग शामिल होकर काम करे और महर्षि के मन्तव्यों के अनुसार काम करें। आर्यसमाज की शिक्षा संस्थाए सम्प्रदायिकता से बहुत ऊपर रही हैं। कन्या गुरुकुल देहरादून से १० मुस्लिम कन्याएं स्नातिका बनकर निकली हैं दयानन्द कालेज जालन्धर में शिक्षा, प्राप्त करने वाले रहमत अली पाकिस्तान में छुआछूत के विरुद्ध आन्दोलन चला रहे हैं। लाहौर में १९८८ में उन्होंने मुझे बताया जब मैं उनके घर भोजन करने गया।

शुद्धि आन्दोलन का स्वरूपः—

प्रश्न उठता है कि शुद्धि आन्दोलन के रहते सम्पन्न परिवार में वैमनस्य कैसे उत्पन्न होगा। मानवसमाज का यह दुर्भाग्य है कि वह सम्प्रदायों और मतमतान्तरों में बंट गया है। हर सम्प्रदाय अपने आपको बढ़िया और दूसरों को घटिया बताता है परन्तु तथाकथित हिन्दू सम्प्रदाय ऐसा है कि उसके तथाकथित धर्माचार्य छुआछूत, ऊंच-नीच के भेदभाव को अपने धर्म या सम्प्रदाय का अंग

(शेष पृष्ठ ४ पर)

पाकिस्तान में भारतीय मुसलमानों की दुर्गति

भारतीय कश्मीर के मुसलमानो का कल्याण करने का दावा करने वाली पाकिस्तान सरकार मुसलमानो की कितनी बडी दुश्मन है यह मुहाजिर, बिहारी और सिन्धी समुदाय पर चलाए गए दमनचक्र से स्पष्ट है। इसके अलावा उन भारतीयो मुस्लिमो की व्यथा भी गौरतलब है जो अपने रिश्तेदारो से मिलने पाकिस्तान गए तो पाकिस्तान सरकार ने उन्हे हिन्दुस्तानी जासूस घोषित कर उन्हे सीखचो के भीतर खड़ा कर दिया। इस्लाम के भाई चारे के नाम पर उनको सुरक्षा मिलनी चाहिए थी या कि भारतीय होने का दण्ड ? इसका फैसला तो हिन्दुस्तान के उन कट्टरवादी मुस्लिम नेताओ को करना चाहिए जो पाकिस्तान की उन कारंवाई का अघ समर्थन करते हैं।

तीन अप्रैल १९९० की घटना है—लाहौर स्थित दिल्ली गेट क्षेत्र में एक बम बिस्फोट हुआ, जिसमें तीन लोग मारे गए। २५ लोग घायल भी हुए। पाकिस्तान की पुलिस असली अपराधियो को ढूढ नही सकी मगर इसका जिम्मेदार उन हिन्दुस्तानी मुसलमानो को ठहराया गया जो लाहौर मे अपने सगे सम्बन्धियो से मिलने के लिए आए थे। इन भारतीय मुसलमानो के पास पासपोर्ट और वीजा भी था। वे हिन्दुस्तानी यात्री हैं यह बात स्पष्ट थी। मगर पाकिस्तान की पुलिस ने उन पर ही अपना शिकजा कसा। जो हिन्दुस्तानी मुसलमान मिला, उसे घसीटते हुए पुलिस थाने ले गये। इनमे परदे वाली महिलाए भी थी और ७० साल के वृद्ध भी।

लाहौर पुलिस का कहना था कि लाहौर के जिस क्षेत्र मे भारतीय मुसलमान यात्री खरीददारी करने गए थे उसी क्षेत्र मे बम बिस्फोट होना उनके लिये आश्चर्य की बात है। अत लाहौर में रह रहे समस्त भारतीय यात्रियो की तलाशी एव जाच पडताल अनिवार्य थी। मुजफ्फर नगर, उत्तर प्रदेश से उन दिनो लाहौर, पाकिस्तान यात्रा पर गए असलम अली खा ने इस सवाददाता को बताया कि दो भाइयो मोहम्मद ताहिर और मोहम्मद असलम को लाहौर पुलिस मेरी आखो के सामने बाजार से गिरफ्तार करके घसीटते पुलिस चौकी ले गई। उन बेचारो का अपराध केवल इतना था कि उक्त बम विस्फोट के समय वे उस क्षेत्र मे कुछ खरीदारी कर रहे थे। अपने सगे सम्बन्धियो को हज यात्रा पर बिदा करने बम्बई आए हुए श्री असलम अली खा का कहना था कि लगभग १५०० भारतीय मुसलमान केवल लाहौर की जेल में बन्द हैं। लाहौर पुलिस आयुक्त ने इस प्रकार के आदेश जारी किये हैं कि जो भारतीय मुसलमान लाहौर मे कहीं भी पा जाए उसे तुरन्त गिरफ्तार कर तत्काल जेल मे बन्द कर दिया जाए।

बम-बिस्फोट की घटना पर पुलिस की कारंवाई से भारतीय मुसलमानो में भगदड मच गई और वे तुरन्त भारत लौटने के लिए लाहौर स्टेशन पर आ गये। पुलिस ने उन्हे वहा भी नही बख्शा और गिरफ्तार कर जेल मे बन्द कर दिया। साथ में गई भारतीय मुस्लिम महिलाओ ने पुलिस थाने के सामने धरना दे दिया और माग की कि उनके पुरुषो को तत्काल छोड दिया जाए। इस पर इस्लाम को रक्षक होने का दावा करने वाली पजाब पुलिस उन निहत्थी भारतीय महिलाओ पर लाठिया चलाई। उन्हें इस हद तक पीटा कि उनमे से कई महिलाए लहुलुहान हो गई। जब एक वृद्ध महिला ने कहा कि मैं इसकी शिकायत वरिष्ठ पुलिस अधिकारियो से करूगी तो एक पुलिस अधिकारी ने उसकी ओर सोडावाटर की बोतल फेंकी। महिला के सिर पर गहरी चोट आई। वह घटना स्थल पर ही बेहोश होकर गिर पडी। बाद में लाहौर के शिविल अस्पताल में उसे भर्ती कराया गया।

समझौता एक्सप्रेस जब अटारी स्टेशन पर पहुची तब लखनऊ के मोहल्ला रस्सी बटान के रहने वाले शब्बन मिया ने चिल्लाकर कहा मेरे दो लडके पाकिस्तान की जेल मे है। पुलिस उन्हे छोड़ने के लिये ५० हजार रुपये माग रही है। मुझ बदनसीब को क्या मालूम था कि मैं अपनी बेटी से मिलने लाहौर आ रहा हू मगर मेरे दो बेटो को पुलिस उठाकर ले जाएगी। ६० वर्षीय शब्बन रो-रोकर कह रहा था "वे जालिम मेरे दोनो लडको को मार डालेंगे।

असलम खान ने भीगी पलको से भर्राई आवाज मे कहा आप मुजफ्फर-नगर आए मैं आपको उन वकीलो से मिलाऊगा जिन्होने अपनी आखो से उन २५ हिन्दुस्तानी मुस्लिमो के हाथो मे हथकडिया देखी थी जो लाहौर रेलवे स्टेशन पर अपने रिश्तेदारो से मिलवाने के लिए लाए गए थे।

जिला बिजनौर के अफजलगढ कस्बे के रहने वाले अब्दुल रशीद भी लाहौर की इस घटना के साक्षी हैं। वे लाहौर के अनारकली बाजार मे ठहरे हुए थे। इनका कहना है कि दिल्ली गेट तक के सारे क्षेत्र में पुलिस ने घेरा डाल दिया था। कोई बचकर न जा सके इसकी पूरी व्यवस्था की जा रही थी। गरीब हिन्दुस्तानी महिलाओ को बेपरदा किया जा रहा था। बूढो की दाढी पकड कर घसीटा जा रहा था। बच्चे चिल्लाते थे तो पाकिस्तानी पुलिस उन्हे ठोकर मारती और कहती 'हिन्दुस्तानी पिल्लो चुप रहो वरना तुम्हारी खैर नही।'

—पाञ्चजन्य १ जुलाई से साभार

आर्यसमाज सम्प्रदाय नहीं है

(पृष्ठ ३ का शेष)

मानते हैं। वे अपने सम्प्रदाय के भी अधिकतर लोगो को अपवित्र मानते हैं और दूसरे सम्प्रदायो को लोगो को भी। यदि तिरस्कृत होने के कारण या भय अथवा प्रलोभन के कारण कुछ लोग हिन्दु सम्प्रदाय को छोड़कर दूसरे सम्प्रदाय में चले जाते हैं, तो वे उनको हमेशा के लिये अपवित्र मान लेते हैं और उसकी "शुद्धी" किसी हालत मे भी सभव नही। आर्यसमाज उस असत्य और पाखण्ड तथा सम्प्रदायो के लोगो को पवित्र, अपवित्र और "घटिया", बढ़िया और दूसरो के लिये घटिया हो जाना है या अपवित्र माना जाता है। अपवित्रता का दाग मिटाने के लिये "शुद्धी' शब्द का उपयोग किया गया है। तथाकथित छोटी जाति के लोग किसी भी सम्प्रदाय में जायें वह जाति उसका पीछा नही छोडती। तिरस्कृत होकर सम्मान की आशा मे दूसरे सम्प्रदाय में जाये और वहा भी चैन न मिले तो यदि फिर पुराने सम्प्रदाय और समाज में आना चाहे उसका रास्ता पाखण्डी धर्माचार्यों ने बन्द कर दिया था, वह तथाकथित "अपवित्र को पवित्र' बनाने का "शुद्धी" का रास्ता आर्यसमाज ने खोल दिया। आर्यसमाज एक सम्प्रदाय से दूसरे सम्प्रदाय में चले जाने का इसलिये स्वागत नही करना क्योंकि इससे साम्प्रदायिकता और साम्प्रदायिक वैमनस्य को बढावा मिलता है, जो आरम्भ में ही कहे गये महर्षि के मन्तव्यो के सर्वथा विरुद्ध है।

देश का एक और विभाजन न होने दिया जाए

विमल वधावन एडवोकेट, संयोजक केन्द्रीय कानूनी समिति सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली

२१ मई १९९० का दिन देश का ऐतिहासिक दिन माना जायेगा, क्योकि इस दिन भारतीय संसद के दोनो सदनों ने एक ऐसे संविधान को मजूरी दे दी, जिसके अनुसार नव बौद्धों को भी अनुसूचित जातियों को मिलने वाली आरक्षण तथा अन्य सुविधाएं दी जाएंगी। इस कानून का परिणाम यह होगा कि नव बौद्धो को अब हिन्दू लिखने के लिये बाध्य नहीं किया जा सकेगा। जैसे सिखो ने आज अपने आपको हिन्दू धर्म का अंग मानना बन्द कर दिया है ठीक उसी तरह बौद्ध समुदाय भी अब अपने आपको स्वतन्त्र धर्म के रूप में पेश करेगा। जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव शीघ्र ही १९९१ की जनगणना मे देखने को मिल जाएगा। हिन्दू जाति की संख्या में भारी कमी होने की सम्भावना से इन्कार नही किया जा सकता। देखना यह है कि १९८१ में ८५ प्रतिशत हिन्दू जाति १९९१ में कितनी रह जाती है।

केवल बौद्धों तक तो संख्या खेल से अधिक कोई खतरा नहीं है क्योंकि बौद्ध धर्म मे भी राष्ट्र को धर्म से ऊंचा बताया गया है जैसे हिन्दू धर्म में। परन्तु हाल ही में कुछ ईसाई तथा मुस्लिम संगठनों द्वारा भी इसी प्रकार की मांग देश के सामने रखी गई है और यही नहीं कुछ तथा कथित नेताओं ने जिनको आज सरकार में प्रतिष्ठित किया गया है, इस मांग का केवल समर्थन ही नहीं करना शुरू किया बल्कि पूरी ताकत के साथ इस पक्ष को सरकार के सामने रखने की कोशिश में लगे हैं। श्रम एवं कल्याण मन्त्री श्री रामविलास पासवान ने तो उसी दिन एक वक्तव्य मे कह भी दिया कि बौद्धो को यह सुविधाएं देने के बाद सरकार ईसाईयों और मुसलमानों के लिए भी ऐसे कानून के विषय में विचार करेगी।

सर्व विदित है कि ईसाई तथा मुस्लिम सगठनो को धर्म प्रचार तथा समाज सेवा के नाम पर बहुत बड़ी धनराशि विदेशो से प्राप्त होती रहती है। सरकार से कई बार राष्ट्रवादी नेताओ और सगठनो ने ऐसे धन पर नियन्त्रण की अपील भी की है। इस सहायता का यह परिणाम है कि धन, बल और छल द्वारा भारत में—धर्म परिवर्तन का दौर पूरे जोर पर है, नागालैण्ड, मिजोरम तथा मेघालय जैसे राज्यो का वर्तमान सामाजिक ढांचा इसी विदेशी सहायता का परिणाम है, जहां आज ईसाई बहुसख्यक है। उल्लेखनीय है कि भारत की कुल १ करोड़ ६० लाख के लगभग ईसाई जनसख्या में ७०-८० प्रतिशत के लगभग ईसाई हरिजनो या आदिवासियों मे से धर्मान्तरित किये गए लोग हैं। इस बात मे कोई सन्देह नही कि ईसाई तथा मुसलमान भारत में रहते हुए धर्म को राष्ट्र से ऊपर मानते हैं और आज भी इन लोगों की निष्ठा विदेशों में स्थापित अपने-अपने धार्मिक तथा राजनैतिक संगठनों मे है। भविष्य मे भी अपनी अपनी धर्म शक्ति के वशीभूत ईसाई तथा मुसलमान भारत में देशद्रोह कर सकते हैं इसलिए संख्या खेल के उद्देश्य से ये संगठन ऐसी मांगे सरकार के सामने रख रहे है।

आज अवस्था ये है कि यदि कोई हिन्दू हरिजन या मुस्लिम धर्म मे परिवर्तित होता है तो उसे मिलने वाला आरक्षण समाप्त हो जाता है क्योकि उस अवस्था में वह हरिजन नहीं रहता। ऐसा मुख्यत: निम्न कारणों से है :—

१—सविधान के निर्माताओं ने सोच समझकर एव पूर्ण विचार कर केवल हिन्दू समाज की कुछ अत्यन्त पिछड़ी जातियो की एक अनुसूची तैयार की जिसे अनुसूचित जाति का नाम दिया।

२—ईसाइयों और मुसलमानों में अस्पृश्यता या जात-पात नहीं है, अत: इन धर्मों में परिवर्तित होने के बाद कोई भी हरिजन या अनुसूचित जाति का नहीं रह सकता।

अत: ईसाई वा मुस्लिम धर्म में परिवर्तित हरिजनो को यह सुविधाएं देने से निम्नलिखित समीप तथा दूरगामी परिणाम होंगे।

(अ) हिन्दुओं में विशेषकर हरिजन जातियों में से ईसाई तथा मुस्लिम धर्म के धर्मान्तरण को बल मिलेगा। जिससे ईसाई तथा मुसलमान विशेषाधिकार वर्ग बन जायेगा और हिन्दू अल्प संख्यक तथा दूसरे वर्ग के नागरिक बन जायेंगे।

(ब) हरिजनो को मिलने वाले धन तथा सुविधाओं को ईसाई और मुसलमानों में बांटे जाने से हरिजन समाज को हानि होगी जो कि हरिजनों के प्रति अन्याय होगा। इस प्रकार आम हिन्दू जो त्याग और बलिदान अपने दलित हिन्दू समाज के लिए कर रहा है उसका लाभ अप्रत्यक्ष रूप से ईसाईयत और इस्लाम को बढ़ाने के लिए होगा।

(स) ईसाइयो और मुसलमानो के व्यक्तिगत कानून के कारण परिवार नियोजन और एक पत्नी प्रथा जैसे सामाजिक नियम कमजोर होंगे जिससे राष्ट्र का सामाजिक ढांचा पशु कृतियो पर आधारित हो जाएगा।

(द) ईसाई और मुस्लिम धर्मो का नियन्त्रण विदेशी शक्तियो के हाथ में होने से इन्हें मिलने वाली सुविधाओ और धन का दुरुपयोग राष्ट्र विरोधी गतिविधियों में होगा। जिससे एक नई साम्प्रादायिकता को जन्म मिलेगा।

अत: उपरोक्त तथ्यो तथा उनके विश्लेषण के आधार पर मेरी समस्त आर्य जनता से अपील है कि इस राष्ट्र विरोधी, हिन्दू विरोधी और परिणाम स्वरूप हरिजन उठती हुई लहर का हर तरह से कड़ा विरोध करें। मेरा यह प्रस्ताव है कि इस लहर का यदि आज पूरे बल से विरोध न किया गया तो वर्तमान अल्प सख्यक सरकार अपने राजनैतिक हितो को एक-एक दिन आगे बढ़ानेके लोभमे किसी भी समय कोईभी दुष्कर कार्यकर सकतीहै जिससे वापिस कदम उठाना असम्भव हो जाएगा और भविष्य में भी इतिहास के उन्हीं मुगल तथा अंग्रेज शासन के पृष्ठों को हमे फिर से झेलना पड़ेगा अत: मैं देश की समस्त आर्य जनता से अपील करता हूं कि इस विरोध के पहले चरण के रूप में अपने व्यक्तिगत स्तर से या आर्य समाज के नाम से समाचार पत्रो के सम्पादको तथा सरकार के प्रधानमन्त्री सचिवालय, नई दिल्ली को पत्रों द्वारा ऐसे वक्तव्यों को वापिस लेने का आग्रह करें जिससे सरकार यह समझ सके कि इस प्रकार के किसी भी कानून को देश की जनता बर्दाश्त नही करेंगी। यदि ऐसे कानून बनाने का दु:साहस किया गया तो देश व्यापी आन्दोलन होगा।

दूसरी तरफ में वर्तमान सरकार के सबसे मजबूत राष्ट्रवादी घटक भारतीय जनता पार्टी के नेताओ से भी अपील करता हूं कि वे भी आर्य समाज के इन विचारो से सरकार को अवगत कराएं तथा ऐसे देशद्रोही प्रयासों के खिलाफ आवाज उठाएं। यह कड़वा सत्य भारतीय जनता पार्टी के नेताओ को आज स्वीकार करना हो कि यदि इस प्रकार हिन्दू हितो का सर्वनाश जारी रहा तो हिन्दुओ के बल पर टिकी उनकी पार्टी का भी सर्वनाश असम्भव नही होगा।

नागरिक और देहाती सांस्कृतिक क्षेत्र में युवकों की भूमिका

लेखक : डा० कृष्णलाल आचार्य प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

(गतांक से आगे)

इसी प्रकार बस के अन्दर सिगरेट, बीड़ी का निषेध है और यह ठीक भी है क्योंकि उससे भीड़-भाड़ में घुटन उत्पन्न होती है। परन्तु कुछ लोग अधिकांश देहाती, धड़ल्ले से बीड़ी पर बीड़ी सुलगाते रहते हैं। उनको इस बात का तनिक भी ध्यान नहीं कि दूसरे यात्रियों को इससे क्या कठिनाई हो रही है। यदि उन्हें इस बात के लिये रोका जाये तो उत्तर यह होता है कि किसी के खाने-पीने को कैसे रोक सकते हैं। फिर तो सार्वजनिक स्थानों पर मदिरापान में भी आपत्ति नहीं होनी चाहिये। वास्तव में इन सब नियमों के पीछे भावना यह है कि कुछ लोगो के कारण अधिक लोगो को कष्ट न हो।

आपकी संस्कृति का अनुमान इस बात से लग जाता है कि आप दूसरे की भावना का कितना ध्यान रखते हैं। दूसरों के प्रति आपका व्यवहार कितना वाणी से मधुर शब्द बोलूं और दृष्टि तथा व्यवहार से भी मधुर रहूं।

वाचा वदामि मधुमद् भूयासं मधु सन्दृशा।

परन्तु दिल्ली परिवहन निगम की बसों में देहाती कंडक्टर और ड्राइवरों जिनमें प्रायः युवक ही होते हैं/ से क्या आशा की जा सकती है। अभी कुछ दिन पहले की बात है कि बस में कंडक्टर को पचास पैसे का सिक्का देकर मैंने तीस पैसे का टिकट मांगा। मेरे बीस पैसे उसके पास शेष रहे। वह औरो को टिकट देता रहा और मैं प्रतीक्षा में खड़ा रहा। इस बीच उसके द्वारा पैसे निकालतेदेते समय मेरी दृष्टि उसकी थैलीमें बीच पैसे के सिक्के पर पड़ गई। जब वह चार यात्रियों को टिकट दे चुका तो मैंने कहा—"आपके पास बीस पैसे का सिक्का है। आप मुझे क्यों नहीं देते।" तब उसने बीस पैसे का सिक्का निकाल कर दिया और कहा—"ले जा।" जैसे मुझ पर बहुत बड़ी कृपा कर रहा हो।

दूसरी और हमारी शिक्षा कुछ इस प्रकार की है कि हम उसके कारण सामान्य जन से कट जाते हैं। और उसमें बहुत बड़ा हाथ विदेशी भाषा का है। दुर्भाग्य की बात है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति से अब तक अंग्रेजी और अंग्रेजियत का एक झूठा अभिमान हमें मानसिक दासता में बांधता रहता है। अरस्तु और प्लेट क्या कहते हैं—यह तो हमारे युवक रट लेते हैं, परन्तु वेद-उपनिषद् और चाणक्य का ज्ञान उन्हें नहीं होता। जब कोई युवक पढ़कर बाबू बन कर गांव में आता है तो न तो वह अपनी बात परिवार वालों को समझा पाता है और न उनकी बात समझ पाता है।

परिणामतः खाई बनी रहती है। उसके अनुकरण पर गांव के लोग बिना समझे भी अंग्रेजी का नाम पट्ट बनवाते है, अंग्रेजी में निमन्त्रण छपवाते हैं, बच्चो के लिये अंग्रेजी स्कूल ढूंढते हैं चाहे बच्चा वहां ज्ञान न प्राप्त कर सके और कुछ अंग्रेजी के शब्दों को जानकर हिन्दी में घुमा कर बोलते हैं। वास्तव में जो आदर्श संस्कृति है।

सगच्छध्व सवध्वम्/एक साथ मिल कर चलें और एक साथ मिल कर बोले।

परन्तु इस स्थिति में क्या यह सम्भव है। दिल्ली विकास प्राधिकरण के बाबूओ को जैसे हिन्दी आती ही नहीं। हिन्दी-भाषी जनता के लिये बस्तियां बना कर उसमें सड़को बाजारों के नाम अधिकतर अंग्रेजी में लिखकर लगा देते है।

न्यायालय में वकील और न्यायाधीश न जाने अंग्रेजी में सही-गलत क्या बोलते रहते हैं उस बेचारे व्यक्ति को पता ही नहीं चलता जिसके लिये मुकद्दमा लड़ा जा रहा है। वह मूक दर्शक बन कर खड़ा रहता है। क्या वह न्याय है। क्या वह लोकतन्त्र है जिसमें लोकभाषा अथवा राष्ट्रभाषा का इस प्रकार तिरस्कार हो। इसके विरुद्ध हमारे युवकों को लामना होगा। अपनी भाषा के पढ़ सकने की और परीक्षा देने की अनुमति क्यों नहीं मिल सकती।

महात्मा गांधी और राजेन्द्र बाबू दोनों ही इसी कारण हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग पर बल देते थे। भाषा किसी भी राष्ट्र का प्राण होती है क्योंकि वह भावनाओं की वाहक होती है। जो देश अंग्रेजों के गुलाम नहीं रहे, उनमें से किसी देश में विदेशी भाषा का इस प्रकार चलन नहीं होता। युवकों का यह भी कर्तव्य है कि देहाती या कम पढ़े-लिखे लोगों को सही लोकतन्त्रीय। राजनीति की जानकारी दें जिससे मतदान के समय वे किसी के बहकावे में न आयें सामूहिक कसमों, शपथों पर न जाने और अपने विवेक में स्वतन्त्र मतदान करें।

देहातो, और बहुत स्थानों पर नगरों में भी आज तक बहुत से अन्ध विश्वास हमारे लोगो को घेरे हुये है। वे आज भी जादू-टोने के चक्कर में रहते हैं, समाधियों की पूजा करते है। महात्मा गांधी ने कहा था कि केवल एक ईश्वर का भय अन्य सभी भयो से मुक्त कर देता है। और वह ईश्वर सब मनुष्यों के हृदय में विद्यमान रहता है—

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।

जिस युवक ने विद्या ग्रहण की है वह इस सत्य को और अच्छी प्रकार समझ कर अपने बन्धुओं को समझा सकता है जिससे समय और धन या समाज का अपव्यय न हो। महापुरुषों, योगियों, सिद्धों, संन्यासियों की समाधियों पर माथा टेकने से अधिक आवश्यक उनके गुणों को धारण करना है। और यह ध्यान रखना चाहिये कि उन सबका परमेश्वरमें अटूट विश्वास था, उन्हें केवल उसका भय था और किसी का नहीं। वह भय मनुष्य को संस्कृति के उच्चतम शिखर पर पहुंचा देता है क्योंकि ईश्वर से भय करने वाला निर्भीक होकर अन्याय के विरुद्ध लड़ सकता है और स्वयं अनुचित कार्यों से बचता है। वह जानता है कि मैं कहीं भी अकेला नहीं हूं। जो दो व्यक्ति अकेले में बैठ कर कोई षड्यन्त्र बनाते हैं, सर्वव्यापी परमेश्वर तीसरा होकर वह सब जान लेता है—

द्वौसंनिषद्य यन्मन्त्रयेते राजा तद्वेद वरुणस्तृतीयः।

आज हमारे युवकों में इस प्रकार की उदात्त निर्भीकता अत्यन्त आवश्यक है।

दिल्ली के देहातो के आज के युग में भी हम स्त्रियों का मुख पूर्ण रूप से वस्त्र से लिपटा हुआ देखते हैं। मुझे आश्चर्य है कि इस प्रकार वे शुद्ध वायु कैसे ले पाती होंगी और ठीक से देखने में कैसे समर्थ होंगी। क्या इस सब का उनके स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव नहीं पड़ता होगा। सबसे बड़ी बात तो यह है कि स्त्रियों का इस प्रकार हम पुरुषो के प्रति अविश्वास का प्रतीक है। इस दिशा में भी हमारे युवक-युवतियों को प्रयास करना चाहिये जिससे यह लज्जाजनक स्थिति समाप्त हो।

युवक देश की रीढ़ है। यदि यह जागृत हो, उसमें आत्मविश्वास हो, निष्ठा हो और समतायुक्त कर्तव्य भावना हो तो वह संस्कृति का उच्चतम आदर्श प्रस्तुत कर सकता है। वह समाज को भी सुसंस्कृत बनाने में सहयोग कर सकता है। युवक छात्र के इस महान सामर्थ्य को ध्यान में रखकर ही वेद में कहा गया है कि कभी पूर्वज, विद्वान तथा विद्वानों के साथ अन्य छोटे कार्य करने वाले सभी लोग ब्रह्मचारी अर्थात् युवक छात्र का अनुसरण करते हैं—

ब्रह्मचारिणं पितरो देवजनाः पृथग्देवा अनुसंयन्ति सर्वे।

अन्त में संस्कृति के सूत्र के रूप में हम प्रार्थना करते हैं कि जिस प्रकार सूर्य और चन्द्रमा नियमित रूपसे प्रकाश, जीवन और शीतलता तथा आनन्द प्रदान करते हुए सबका कल्याण करते हैं, उसी प्रकार हम भी कल्याण के मार्ग पर चलते रहें—हमारी संगति दानी तथा त्यागी, अहिंसक और ज्ञानी व्यक्तियों से निरन्तर होती रहे—

स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।
पुनर्ददताघ्नता जानता संगमेमहि॥

क्या दाहसंस्कार से वृक्षों की बरबादी होती है

—आचार्य वेद भूषण

गत दिनों दैनिक 'नव भारत टाइम्स" दिल्ली में श्री मणीन्द्र कुमार का एक विचार सम्पादकीय पृष्ठ पर अन्तिम कालम में पढने को मिला। चिन्तन भी एक पथिक के समान है। यदि पथिक अपने ठीक मार्ग पर जा रहा है तो वह गन्तव्य पर पहुच जाता है और कहीं पर वह विपरीत दिशा में विपरीत मार्ग पर चला जाता है तो फिर भटक जाता है। श्री मणीन्द्र कुमार महोदय की स्थिति एक भटके चिन्तक की भांति ही है।

अपने विचारो में उन्होने वेद का सन्दर्भ भी उठाया है। वेद तो बहुत स्पष्ट रूप से दाह के पक्ष मे है। देखिए यजुर्वेद ४० वा अध्याय मन्त्र सख्या १५ "भस्मान्त शरीरम्' मृत देह को भस्म करना चाहिए। यजुर्वेद की यह स्पष्ट आज्ञा है।

आपने विनोबा जी का भी उद्धरण दिया है। आचार्य विनोबा जी एक सुलझे हुए विचारक थे। उनका यह मत ग्राह्य है कि पृथ्वी तत्व पृथ्वी मे, जल तत्व जल मे, वायु तत्व वायु मे, आकाश तत्व आकाश मे और अग्नि तत्व अग्नि में मिल जाना चाहिए। यदि विचारक महोदय विनोबा भावे के इन विचारो पर सूक्ष्मता से विचार करते तो चिन्तन मे यह भटकाव समाप्त हो जाता, क्योकि सिवाय दाह कर्म के प्रत्येक तत्व का स्व-स्व तत्वो मे विलीनीकरण सम्भव ही नही होता।

श्री मणीन्द्र कुमार महोदय को लकडी का अभाव खल रहा है। इस अभाव को दूर करने के लिए फर्नीचर और गृह निर्माण मे लकडी को रोककर अन्य धातुओ का प्रयोग किया जा सकता है। जिससे मानव समाज को किसी भी प्रकार की हानि नही होगी।

आप किसी के दाह-सस्कार में जायें या न जाये, इससे मृतक देह के भस्म होने पर रत्तीभर प्रभाव नहीं पडता किन्तु यदि मृतक शरीरो को गाडने की प्रक्रिया आरम्भ कर दी जाए तो प्रदूषण बहुत तेजी से फैलने लगेगा और आपकी व मनुष्य समाज की अपार क्षति होगी।

सडे हुए शरीर की खाद से वृक्ष वनस्पति व अन्न वैसे ही प्रदूषित हो जाते हैं जैसे कि गन्दा आहार करने से मानव देह विकृत हो जाता है। शरीर को सुगन्धित द्रव्यो के साथ यदि लकडियो की चिता अथवा विद्युत शवदाह गृहो में जला दिया जाए तो इसे बनी भस्म वृक्षो के लिए शुद्ध खाद का कार्य करती हैं क्योकि जली हुई लकडी की राख में वृक्ष का सूक्ष्म तत्व ही होता है। दाह सस्कार से उसके समस्त दोष नष्ट होकर वह वृक्षो के उत्पादन मे सर्वश्रेष्ठ खाद का काम करता है।

जिस शरीर को अग्नि में जलाकर सडने से बचा जा सकता है उसे भूमि में गाड कर सडाना कभी विवेक पूर्ण नही कहा जा सकता। इससे तो भयकर प्रदूषण फैल जाएगा क्योकि भूमि में गाडने से देह गलता व सडता है और नाना प्रकार की प्रदूषित गैसें उसमे से भूमि मे दरार डालकर बाहर निकलती रहती हैं क्योकि जब देह गाडी जाती है तब देह भूमि में अपने क्षेत्रफल के अनुपात से जितना स्थान घेरती है। जब वह सडगल दूषित मिट्टी मे बदल जाती है तब वह स्थान पोला हो जाता है और ऊपर की मिट्टी नीचे धसती है और सडी हुई गैसें सरलता से बाहर वातावरण में फैल जाती हैं। जैसे मानव देह को सुगन्धित पदार्थों के साथ जला देने से वातावरण प्रदूषित नही होता, वैसे ही सूखे वृक्ष के ककाल को अर्थात् लकडी को जलाने से लकडी का भी सस्कार साथ ही हो जाता है। क्योकि यदि लकडी को जलाया न जाये तो अन्तत वह लकडी भी सड गल के प्रदूषण को फैलाती है। यह वास्तव मे एक श्रेष्ठ वैज्ञानिक विधि है दाह सस्कार की, जिससे पर्यावरण और मनुष्य समाज प्रदूषण से बचा रह सकता है। सस्कार शब्द भी शुद्धि का ही द्योतक हैं। मृतक देह को गाडना अवैज्ञानिक प्रक्रिया हैं जिससे भूमि तत्व प्रदूषित होता है। हा, जहा तक नदियो में अस्थि और भस्म को बहाना है वह उचित नहीं हैं। भस्म से उत्तम खाद बन जाती हैं। अत इस भस्म को खेतों मे और वृक्षो की जड मे बिखेरना वृक्षो के अभाव को नष्ट करने मे भारी सहायक होगा।

अत मृत देह का दाह-सस्कार एक उन्नत वैज्ञानिक प्रक्रिया है लकडी के अभाव की पूर्ति विद्युत दाह-गृहो से की जानी चाहिए परन्तु उसमे भी दाह से पूर्व चिता पर अर्थात देह पर पर्याप्त मात्रा मे घृत मिश्रित सुगन्धित सामग्री शरीर विज्ञान आदि के मन्त्रा द्वारा अवश्य रख देनी चाहिए जिससे प्रदूषण नष्ट हो जाऐ।

जन्म भूमि श्रीराम की

लेखक : स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

सुविख्यात है पुरी अयोध्या जन्म भूमि श्रीराम की।
यहा पर कहा बाबरी मस्जिद आ टपकी इस्लाम की।।
छाया है आतक देश में सियार शेर सम गुर्राते हैं।
हो रहे अत्याचार प्रबल अति दीन दुखी जन चिल्लाते हैं।।
राष्ट्र शक्तियां सुस्त हो रही इस भारत सुखधाम की।
सुविख्यात है पुरी अयोध्या जन्म भूमि श्रीराम की ।।१।।
यह भारत सरकार राम मन्दिर पर रोक लगाती है।
राम कृष्ण के वशज होकर जरा शर्म नहीं आती है।।
राम मर्यादा पुरुषोत्तम बिन कीमत नही एक छदाम की।
सुविख्यात है पुरी अयोध्या जन्म भूमि श्रीराम की ।।२।।
उखाड फैंको हृदय भूमि से अहकार का खर पतवार।
स्नेह सूत्र मे बध जाओ लो सब विचार निज हृदय धार।।
राम नाम की ध्वनि गुजाओ देर नही कुम काम की।
सुविख्यात है पुरी अयोध्या जन्म भूमि श्रीराम की ।।३।।
यही समस्या बनी रही तो फिर भविष्य में हल क्या होगा।
यह तनके उजले मनके काले इनसे कार्य सफल क्या होगा।।
जब सूख गई सारी खेती फिर बरसात है कौन काम की।
सुविख्यात है पुरी अयोध्या जन्म भूमि श्रीराम की ।।४।।
सावधान राम भगतो सीधेपन काम नही चलता।
टेढी उंगली किये बिना हाडी से घी भी नहीं निकलता।।
बढे चलो निर्भय होकर क्या बाट तको परिणाम की।
सुविख्यात है पुरी अयोध्या जन्म भूमि श्रीराम की ।।५।।
हम आर्यवीर श्रीराम भक्त सतपथ पर कदम बढायेंगे।
पूरण हो सारी अभिलाषा अब मन्दिर शीघ्र बनायेंगे।।
कहें 'स्वरूपानन्द' तुम्हे सौगन्ध राम, घनश्याम की।
सुविख्यात है पुरी अयोध्या जन्म भूमि श्रीराम की ।।६।।
यहा पर कहा बाबरी मस्जिद आ टपकी इस्लाम की।

दुःखी हृदय की आवाज

आर्यसमाज के नाम पत्र

बहुत वर्षों पहिले मैंने आर्य समाजो के वार्षिकोत्सवों पर आना बन्द किया हुआ था किन्तु कुछ विद्वानो के कहने और अनेक आर्य समाजों के अधिकारियों व नेताओ के आग्रह पर पुनः आर्य समाजों के उत्सवों के कार्यक्रम स्वीकार करने प्रारम्भ कर दिये थे, परन्तु अब पुनः पूर्ववत् परिणाम पर ही पहुंचा हूँ कि उत्सवों पर जाना समय और सामर्थ्य का दुरुपयोग करना है। अपवादों की बात मैं नही कहता किन्तु सामान्यतया उत्सवों पर कार्यकर्तागण वक्ताओं के—चाहे दस हों या बारह—प्रत्येक बैठक में सभी के भाषण कराना चाहते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि वक्ता जो कहना चाहता है, वह नही कह पाता, केवल मंच पर उपस्थिति दिखा देता है।

न चाहते हुए भी अनेक स्थानों पर कार्यकर्ताओं को यह सुझाव भी दिया कि आपके पास दस या बारह वक्ता है तो कुछ को प्रातः कालीन सभा में बुलवाइये, कुछ को मध्याह्न की सभा में और कुछ को सांयकालीन सभा में समय दीजिये। परन्तु लगता ऐसा है कि जैसे कोई सनक सवार हो, बुलवायेंगे प्रत्येक वक्ता को प्रत्येक सभा में। पहले तो स्वयं ही अधिक वक्ता बुला लेते हैं फिर यदि कोई अनाहूत आ जाय तो उसे भी सम्मिलित कर लेते हैं।

आजकल यात्रा कितनी कठिन हो गयी है यह सभी जानते हैं। यात्रा की यातना भोग कर पहुंचो तो ठहरने की सुविधाजनक व्यवस्था नही। एक-एक कमरे मे अनेकानेक व्यक्ति ठहरे होते हैं परिणामस्वरूप न पढ़ने की सुविधा होती है और न लिखने की। सम्पूर्ण समय पड़े रहने तथा बक-झक करने और सुनने में समय विनष्ट हो जाता है और तत्पश्चात् सभा स्थल पर वही पन्द्रह-बीस या तीस मिनट। इसके अतिरिक्त एक त्रासदी यह भी है कि ऐसे वक्ता बुला लिये जाते हैं और प्रायः उन्हीं को प्रमुखता दी जाती है, जो सिद्धांत विरुद्ध अनर्गल प्रलाप करते रहते हैं। यदि उनके भाषण की अनर्गलताओं का निराकरण और प्रतिवाद करना चाहो तो कार्यकर्ता यह कहकर कि—'आर्यसमाज के विषय में जनता पर बुरा प्रभाव पड़ेगा" रोकते हैं। ऐसे कार्यकर्त्ताओं से कोई पूछे कि क्या इन सिद्धांत विरुद्ध अनर्गल भाषणों से आर्यसमाज का प्रचार होगा? यह तो श्रोताओ को आर्यसमाज के विषय में भ्रान्ति में डालने तथा श्रोताओं के सामने आर्यसमाज का भ्रान्तचित्र उपस्थित करने का घृणित और दुष्प्रयत्न है। ऐसे कार्यकर्त्ताओं को या तो यह समझा जाय कि वह वास्तव मे आर्य समाजी हैं ही नहीं अपितु आर्यसमाज में घुसकर आर्यसमाज की जड़े काट रहे हैं और या फिर इतने बुद्धिहीन हैं कि न तो आर्यसमाज को समझते हैं और न समझना ही चाहते हैं। किसी वक्ता का कभी कोई तर्क पसन्द आ गया या आर्यसमाज की कोई एक दो मान्यता पसन्द आ गयी होती हैं, बस इतने ही आर्यसमाजी हैं और अब आर्यसमाज के अधिकारी बने तो तीन दिन के लिये उत्सव के नाम पर लोकैषणापूर्ति और स्व मन मना लेने की प्रक्रिया पूर्ण कर लेते है।

मेरे द्वारा न तो आर्यसमाज के मंच से अनर्गल भाषणों को सहन किया जा सकता है और न मैं समय की विनष्टि को तैयार हूं। मैं आर्यसमाज का, आर्यसमाज के लिये हूं किन्तु आर्य समाजों के अधिकारियों से मेरा निवेदन है कि मुझे उत्सवो पर केवल वही समाजें बुलाय, जो एकान्त आवास और पूरा समय दे सके और भ्रान्त भाषण करने वालो की भ्रान्तिपूर्ण बातों का उत्तर देने दें, अन्यथा मुझे केवल वेदकथा के लिये ही बुलायें। अलमतिविस्तरेण।

वेदमुनि परिव्राजक
अध्यक्ष वैदिक संस्थान, नजीबाबाद

धर्म और अधर्म (२)

शास्त्रार्थ महारथी पण्डित रामचन्द्र देहलवी

धर्म जिसका स्वरूप ईश्वर की आज्ञा का यथावत् पालन और पक्षपात-रहित न्याय सर्वहित करना है, जो कि प्रत्यक्षादि प्रमाणो से सुपरीक्षित और वेदोक्त होने से सब मनुष्यो के लिए यही एक मानने योग्य है, उसको धर्म कहते हैं।

आइये, हम धर्म और अधर्म के स्वरूप पर विचार करें और सदैव धर्माचरण करने का निश्चय करें।

श्री स्वामी दयानन्द जी महाराज ने धर्म का लक्षण करते हुए सबसे पूर्व ईश्वर की आज्ञा का यथावत् पालन करना आवश्यक समझा, जिससे ईश्वर का मानना स्वत सिद्ध है। उस ईश्वर को न मानने वाला इस लक्षण के अनुकूल धर्मात्मा, नहीं समझा जा सकता।

बहुधा ऐसे मनुष्य दुनिया मे मिलेंगे, जिनका ईश्वर मे विश्वास नही, परन्तु वे भी सृष्टि नियमो को मानते हैं और उन पर चलते हैं। ऐसे पुरुष पूर्ण धर्मात्मा नही कहे जा सकते, चूं कि उन्होने नियामक के आवश्यक अग को नही माना जिसके बिना किसी भी नियम का निर्माण होना असम्भव है।

अनुमान-प्रमाण विशेषकर मनुष्य के लिए ही है, जो कारण से कार्य और कार्य से कारण का अनुमान करके अपने कार्यों की सिद्धि करता है। प्रत्येक समय यह आवश्यक नही कि कार्य और कारण दोनो की प्रतीति एक ही साथ हो। यदि दुनिया में कहीं ऐसा नियम होता कि दोनो एक ही साथ होते तो अनुमान प्रमाण की आवश्यकता ही न होती।

जैसे बादलों को देखकर होने वाली वर्षा का और हुई वर्षा को देखकर उसके कारण रूप बादलो का अनुमान होता है इसी प्रकार दु ख को देखकर पाप कर्मों का, और पापकर्मों को देखकर दु खो का अनुमान होता है। यदि कोई दु खो को देखकर पाप-कर्मों का अनुमान करे, या सन्तान को देखकर माता-पिता का तो उसको पूर्ण ज्ञानी नही कह सकते। इसी प्रकार यदि कोई सृष्टि नियमो को देखकर और स्वीकार करके भी उनके नियामक को स्वीकार न करे तो वह भी पूर्ण ज्ञानी न समझा जायेगा। और जो पूर्ण ज्ञानी ही नही, वह पूर्ण धर्मात्मा ही कैसे हो सकता है? चूं कि धर्मात्मा के लिए ज्ञानपूर्वक कर्मों की ही तो प्रधानता है।

यदि कोई यह शका करे कि ईश्वर ने कानून तो बना दिया, पर वह अब कुछ नहीं करता और न आगे करने की आवश्यकता है। प्रत्येक कार्य उस ही नियम के अनुसार होता चला आ रहा है। और आगे भी होता रहेगा, तो क्या हानि? इसका उत्तर यह है कि कानून स्वय कुछ नही कर सकता, जब तक कि चेतनकर्त्ता उसको अमल मे न लावे जैसे कि ताजीरात हिन्द किसी अपराधी का कुछ नही कर सकती जब तक कि पुलिस उसको पकड कर जज के सामने पेश न करे और जज उसको उसके अपराध के अनुसार दण्ड न दे दे इसी प्रकार परमात्मा का कानून भी ईश्वर के स्वय अमल में लाए बिना कुछ नही कर सकता।

जो ईश्वर को कानून का बनाने वाला तो मानता है लेकिन चलाने वाला नहीं मानते उनको यह विचारना चाहिए कि जिस बुद्धि ने कानून का निर्माण किया है, वह ही बुद्धि उसको चला सकती है। प्रकृति जड होने से स्वय न कोई कानून (नियम) बना सकती है और न किसी के बनाये नियम पर स्वय स्वतन्त्रता से चल सकती है। जीवात्मा भी अल्पज्ञ होने से बिना ईश्वर से शरीर तथा ज्ञान प्राप्त किए न कोई नियम बना सकता है। न चला सकता है। जीवात्मा इस प्रकार की ईश्वरीय सहायता प्राप्त करके भी जो नियम बनाता या चलाता है उसको भी वह अन्य पुरुषो की सहायता से ही कार्यरूप मे परिणत करता है। कई स्थानो पर स्वय अल्पज्ञ और अल्पशक्ति होने के कारण, अपनी इच्छा के विरुद्ध फल की प्राप्ति और असफलता का पात्र बनता है। जसे आपने देखा होगा—कभी कभी बिना किसी इच्छा के स्वय ठोकर लग जाती है तथा भोजन करते समय दांतों के तले जीभ कटकर कष्ट देती है। जिससे कि यह सिद्ध है कि कभी कभी जीवात्मा अपने शरीर पर भी पूर्ण अधिकार नही रख पाता। पर परमात्मा सर्वज्ञ और सर्व और शक्तिमान् होने के कारण इकला ही सब नियमो को बनाता और स्वय उन्हे चलाता है यह हममें और परमात्मा में भेद है।

अब प्रश्न उठता है कि ईश्वर की आज्ञा कौन सी मानी जाय? मुसलमान भाई कहते हैं कि कुरान ईश्वर का हुक्म है। ईसाई बाईबिल को खुदा की पुस्तक बतलाते हैं, इस ही तरह अन्य मजहब भी। परन्तु इन सबकी पुस्तको मे परस्पर भेद और विरोध होने के कारण सबको ईश्वर की आज्ञा नही कहा जा सकता।

ईश्वर आज्ञा वह ही हो सकती है जो ईश्वर की भांति सार्वभौम हो एक देशी न हो। अर्थात् सब मनुष्यों के लिए हितकर हो, किसी विशेष देश या जाति का पक्षपात न हो तथा उसके दया न्यायादि गुणो के विरुद्ध न हो अर्थात् वेदानुकूल हो।

आर्य जगत् के समाचार

आर्य वीरों ने धर्म की जय के नारों के साथ शराब की बोतलें तोड़ी

१ जून को नान्वा भिवानी के आर्यवीरो ने शराब की पेटिया डालने वालो को रोक लिया और पेटिया छीनकर बोतलें गाव के चौको में धर्म की जय के नारो के साथ फोड डाली। उसी रात पचायत हुई और शराब की बिक्री पर पाबन्दी लग गई।

इससे पूर्व यहा नान्वा मण्डल भिवानी हरियाणा मे आर्य समाज के प्रचार के लिए जुलाई ८९ से मई ९० तक ग्यारह कार्यक्रम सम्पन्न हुए। आर्य समाज के इस प्रचार कार्य मे क्षेत्र के अनेक अध्यापकों और धार्मिक जनो ने बडे त्याग और पुरुषार्थ से धर्म प्रचार के लिये अपना पूरा पूरा सहयोग दिया। उसी का प्रभाव था कि आर्य वीरो ने शराब बन्द करने के लिये यह कठोर कार्रवाई की।

शिविर सम्पन्न

दिनाक ३ से १०-६-९० तक एक कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर श्री अभेद-मुनि जी की शिक्षकत्व मे सम्पन्न हुआ। इसमे आठ जिलो मऊ, आजमगढ, बलिया देवरिया, वाराणसी, फैजाबाद, जौनपुर एव बस्ती से चौसठ युवको ने प्रशिक्षण प्राप्त किए। अन्तिम दिन १०-६-९० को समापन हुआ। प्रमाण पत्र एव पुरस्कार वितरण मऊ आर्य समाज के प्रधान श्री रामचन्द्र सिंह के कर कमलो से सम्पन्न हुआ।

दिनाक १०-६-९० को शाम को कोपागज (मऊ) मे एक विशाल भव्य शोभायात्रा निकाली गयी जिसमे प्रशिक्षण प्राप्त सभी आर्य वीरो ने पूरे गणवेश मे भाग लिया जिसकी महती प्रशसा की गयी। अगले दिन ११-६-९० को दिन भर का कार्यक्रम आर्य वीरो द्वारा आर्य समाज कोपागज मे प्रस्तुत किया गया। —शिवशकर आर्य (मऊ)

श्री नानकचन्द जी गुप्ता का कार दुर्घटना में देहावसान

अत्यन्त खेद के साथ सूचित करते हैं कि सुप्रसिद्ध आर्यसमाजी स्वतन्त्रता सेनानी हकीम नानकचन्द जी गुप्ता का ८८ वर्ष की आयु में कार दुर्घटना मे देहावसान हो गया। दिनाक २० जून ९० को आप नारायण स्वामी आश्रम रामगढ तल्ला को जा रहे थे आपके साथ आपके पुत्र डा० कुलभूषण गुप्ता व पौत्र दिवाकर का भी देहान्त हो गया। इस प्रकार कष्ट के उपरान्त दिनाक २६-६-९० को आपकी धर्मपत्नी चन्द्रकला का भी देहावसान हो गया। इस दुखद घटना पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने दुख प्रकट करते हुए कहा कि श्री नानक चन्द जी गुप्ता क्रान्तिकारी समाजी थे उन्होने स्वतन्त्रता से पूर्व सन १९४६ में आर्य समाज करौल बाग में बम्ब फटने से उनका हाथ उड गया था और स्वामी धर्मानन्द जी जख्मी हुए थे सभा प्रधान ने इस आर्य परिवार के निधन पर गहरा दुख प्रकट किया है। परम पिता परमात्मा से दिवगत आत्माओ के लिए शान्ति की कामना की—

ज्ञानमाला

—जले हुए अग को तुरन्त ठण्डे पानी मे डुबोये या भिगोते रहे। आग से शरीर की कोशिकायें अत्यधिक तप जाती हैं। इस ताप को पानी से कम किया जाता है। जले हुए भाग पर ग्रीस, तेल या मल्हम और चिकनाई न लगाये।" (वालन्टरी हेल्थ एसोसिएशन आफ इण्डिया)

—१७ अप्रैल १८५३ को प्रथम भारतीय रेल बम्बई और थाना के बीच चली।

—वर्ष का सबसे छोटा दिन २२ दिसम्बर को होता है।

—"अनुमति (मारने की सलाह) देने, मास के काटने, पशु आदि के मारने, उनको मारने के लिए लेने और बेचने, मास के पकाने, परसने और खाने वाले—आठ मनुष्य घातक हिंसक अर्थात् ये सब पापकारी हैं।" (गोकरुणानिधि)

—जब परिवार में किसी पुत्र का जन्म होता है, तो पहले मां ही सबसे ज्यादा खुश होती है! क्यो फर्क करते हैं—लडके-लडकियो में? दहेज जैसी ज्वलन्त समस्या का समाधान इन्हीं के हाथो में है।

—सुखानन्द सरस्वती, कन्याहारी

महाशय धर्मपाल आर्य गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के मानद निदेशक नियुक्त

नई दिल्ली, ३१ मई। आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के प्रधान एव एम. डी. एच. के स्वत्वाधिकारी श्री महाशय धर्मपाल को गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार का मानद निदेशक नियुक्त किया गया है। महाशय जी का इस व्यवसाय के सफल सचालन में एक लम्बा अनुभव है। विश्वास है कि उनके निर्देशन मे फार्मेसी उत्तरोत्तर उन्नति करेगी।

महाशय धर्मपाल ने २८ अप्रैल ९० को फार्मेसी का निरीक्षण करने के पश्चात् इसके निर्माण एव विक्रय विभाग के सुचारु सचालन के लिए कई महत्वपूर्ण सुझाव दिए। महाशय जी ने आधुनिक तकनीक के आधार पर फार्मेसी में निर्माण व विक्रय कार्यों के लिए दो विशेषज्ञो को काम सौंप दिया है। पुन २८ मई को फार्मेसी का महाशय जी ने निरीक्षण किया।

महाशय जी अपने व्यापार कार्य से समय निकाल कर इस सस्था की उन्नति के लिए जो सहयोग दे रहे हैं, वह अत्यन्त प्रशसनीय है। फार्मेसी से प्राप्त आय गुरुकुल शिक्षा पद्धति को प्रोत्साहन देने के लिए व्यय की जाती है तथा वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए इसका उपयोग किया जाता है।

—विमलकान्त शर्मा, प्रचार सचिव

उपराष्ट्रपति ने जीवात्मा पुस्तक का विमोचन किया

नई दिल्ली, १२ जून। उपराष्ट्रपति निवास पर आज उपराष्ट्रपति द्वारा एक परम्परा समारोह में आयुर्वेद शास्त्री वीरेन्द्रसिंह पमार द्वारा रचित जीवात्मा नामक पुस्तक का विमोचन किया गया। समारोह की अध्यक्षता इलाहाबाद विश्वविद्यालय में रसायन शास्त्र के पूर्व विभागाध्यक्ष जाने माने शिक्षाविद स्वामी डा० सत्यप्रकाश सरस्वती ने की। समारोह मे अन्य अनेक विद्वानो, लेखको शिक्षा शास्त्रियो एव सासदो ने भी भाग लिया।

जीवात्मा का विमोचन करते हुए उपराष्ट्रपति डा० शकरदयाल शर्मा ने जन समुदाय को सबोधित करते हुए कहा कि पुस्तक के लेखक वीरेन्द्रसिंह पमार ने एक ऐसा समाजोपयोगी कार्य किया है जो कि वेद वेदाग उपनिषद आयुर्वेद आदि वागमय के साथ-साथ आधुनिक विज्ञान, ज्ञान का समिश्रण कर व्यक्ति को स्वय अपने अन्दर विचरण करने की प्रेरणा प्रदान करता है। मै लेखक को हृदय से साधुवाद देता हू।

जीवात्मा पुस्तक क लेखक श्री वीरेन्द्रसिंह पमार ने उपराष्ट्रपति जी को पुस्तक के विमोचन के लिए आभार प्रकट करते हुए कहा कि जीवात्मा आदि काल मे चर्चित विषय रहा है। उन्होने कहा कि उपनिषद काल के पश्चात अध्यात्म विषय की चर्चा कम हो जाने से हृदय शब्द के दो अर्थ प्रारम्भ हुए। चेतना और ज्ञान केन्द्र मस्तिष्क के साथ-साथ रक्त प्रक्षेपक हृदय भी प्रचलित होने लगा, जबकि वैदिक वागमय में हृदय स्पष्टत चेतना केन्द्र मस्तिष्क का ही बोधक रहा है।

(२ वीर अर्जुन, १३ जून १९९०)

महात्मा रतनमुनि शान्तियज्ञ

पिथौरागढ। आर्य समाज मन्दिर में २१ जून को महात्मा रतनमुनि की दिवगत आत्मा हेतु शान्तियज्ञ सम्पन्न किया गया। उनका देहात १ जून-९० को अपने निवास स्थान (१३ जीबी, श्री विजयनगर, श्री गंगानगर) पर हो गया था। मुझसे १४ नवम्बर १९८७ को अपने निवास पर वानप्रस्थ-दीक्षा लेने के बाद दो बार कई सप्ताह तक 'गुरुकुल आश्रम ब्रह्मावर्त-बिठूर (कानपुर) मे रहे। वह अपने पीछे हरा-भरा परिवार छोड गए हैं। उनके जीवन से कई युवकों ने वैदिक धर्म पर चलने की प्रेरणा ली। परमात्मा, दिवगत आत्मा को शान्ति तथा परिजनो को धैर्य प्रदान करे।

सुखानन्द सरस्वती (कन्याहारी)

आर्य समाज की गतिविधियां

जो कुछ न कर सका वह राजनीतिज्ञ हो गया !

नई दिल्ली, २९ जून १९९० (वार्ता)। प्रधानमन्त्री विश्वनाथप्रतापसिंह का कहना है कि कोई व्यक्ति जब लगातार बेरोजगार रहता है वह पत्रकार बन जाता है और जब वहा भी असफल हो जाता है तो राजनीतिज्ञ बन जाता है। श्री सिंह आज यहां पाच प्रमुख पत्रकारो को पुरस्कार प्रदान के बाद बोल रहे थे। उन्होने कहा कि राजनीति मे न ही कोई न्यूनतम योग्यता होती है न ही कोई वरिष्ठता सूची है, न ही कोई पदोन्नति या अवकाश ग्रहण करने की कोई आयु सीमा है। श्री सिंह ने एक पुरस्कार विजेता स्टेटस मैन समुदाय के दसाराय की एक टिप्पणी पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए यह कहा। उन्होने कहा कि राजनीतिज्ञ पत्रकारो से मुक्त नहीं हैं और आधे से अधिक राजनीतिज्ञ पत्रकारो की मुट्ठी मे है।

वार्षिकोत्सव

--लुधियाना, २९ मई। गत दिवस आर्यसमाज, महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना का वार्षिक अधिवेशन हुआ जिसकी अध्यक्षता आर्यसमाज के प्रधान श्री रणवीर जी भाटिया ने की। वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए आर्य समाज के महामन्त्री श्री रोशनलाल शर्मा ने कहा कि आर्य-समाज ने देश की एकता और अखण्डताको कायम रखने के लिये, सामाजिक बुराइयो के विरुद्ध जनता को जाग्रत करने के लिए जन सम्पर्क अभियान के अन्तर्गत लुधियाना शहर में स्थान-स्थान पर जन सभाओ का आयोजन किया। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय पर्व तथा महापुरुषो के बलिदान दिवस श्रद्धापूर्वक मनाये गये।

आर्य समाज में जनता लिये निःशुल्क होम्योपैथिक हस्पताल के अति-रिक्त निर्धन परिवारो मे १४८४ किलोग्राम आटा, चावल, घी, रजाइया, कपड़े आदि तथा छात्रों के लिये पुस्तकें, शुल्क आदि का प्रबन्ध किया गया।

—आर्य समाज पनवाडी, बदायू (उत्तर प्रदेश) का वार्षिकोत्सव दिनाक ८-६-१९९० से १०-६-१९९० तक गांधी मैदान बदायू में बडी धूम-धाम से मनाया गया।

उत्सव की कार्यवाही देवयज्ञ (हवन) से प्रारम्भ की गई। यज्ञोपरान्त श्री नन्दलाल निर्भय के भजन व श्री आचार्य विश्वश्रवा व्यास, बरेली के प्रवचन हुये।

इस उत्सव में राष्ट्र रक्षा, गऊ रक्षा, स्त्री शिक्षा, पाखण्ड खण्डन, मद्य-निषेध तथा हिन्दू सम्मेलनो का आयोजन किया गया।

इस उत्सव मे श्री फूलचन्द आर्य, श्री रामचरण आर्य, श्री मोहब्बतराम आर्य पण्डित नन्दलाल निर्भय भजनोपदेशक ग्राम बहीन (फरीदाबाद) स्वामी विनोदानन्द (बिलौसी) स्वामी ज्ञानानन्द एटा तथा आचार्य विश्वश्रवा व्यास, बरेली के सारगर्भित भजन एवम् व्याख्यान हुए।

इस अवसर पर कई युवको ने मद्य, मास तथा धूम्रपान छोड़ने का व्रत लिया। इस उत्सव से आस पास के क्षेत्र मे आर्य समाज की लहर दौड़ गयी है।

—रामचन्द्र आर्य, पुरोहित
आर्य समाज पनवाडी, बदायू (उत्तर प्रदेश)

—कन्या गुरुकुल नरेला का ३६ वा वार्षिक उत्सव दि० ३०-६-९० एव १-७-९० दिन शनिवार, रविवार को उत्साहपूर्वक मनाया गया।

—वैद्य कर्मवीर आर्य, महामन्त्री

—दिनाक २ जून से ४ जून १९९० तदनुसार शनि, रवि एव सोमवार स्त्री आर्य समाज चोडचम्पा जिला गिरिडीह बिहार का १६ वा वार्षिकोत्सव बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर आर्य जगत के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री कुवर महिपालसिंह जी बलिया (उत्तर प्रदेश) एव श्री इन्द्रदेव वर्मा जी (राची) के भजनोपदेश एव उपदेश होते रहे।

—मदनलाल आर्य, मन्त्री
आर्य समाज चोडचम्पा

विदेशियों को हिन्दी की देन

दूरदर्शी अग्रेज शासको, कम्पनी के कर्मचारियो और मिशनरी पादरियो का यह अनुभव हुआ कि फारसी और सस्कृत द्वारा जन सम्पर्क सम्भव नहीं है तब उनका ध्यान हिन्दी की ओर गया।

देवनागरी अक्षरों से बढकर पूर्ण और उत्तम अक्षर दूसरे नहीं हैं।

—प्रो. मोनियर विलियम

श्रीराम फर्टिलाइजर्स के आर्य श्रमिक को पी. एच. डी. की उपाधि

कोटा, १० जून १९९०। श्रीराम फर्टिलाइजर्स एण्ड केमिकल्स, कोटा के केलसियम कारबाइड प्लान्ट मे कार्यरत श्रमिक (क्रेन आपरेटर) तथा महर्षि दयानन्द के अनुयायी और आर्य समाज के विद्वान कार्यकर्ता रामकृष्ण आर्य द्वारा डा० भवानीलाल भारतीय, दयानन्द शोध पीठ, पजाब विश्व विद्यालय चण्डीगढ के निर्देशन मे पी. एच. डी उपाधि के लिये लिखा गया "महर्षि दयानन्द के ग्रन्थो मे प्रतिपादित आर्थिक विचारधारा" (शीर्षक शोध प्रबन्ध पजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ द्वारा स्वीकार कर लिया गया है और उस पर पी. एच. डी. की उपाधि देने की घोषणा कर दी है।

महर्षि दयानन्द के धर्माचार्य और समाज सुधारक के रूप मे ही अधिक जाने जाते है पर वे एक महान अर्थशास्त्री भी थे। इसका परिज्ञान सामान्य रूप से आर्य समाजियो को भी पता नहीं है। यद्यपि आज भी आर्यसमाज मे विद्वानो की कमी नही है ऋषि के विचारो के अनेक पहलु पर शोध प्रबन्ध लिखे जा रहे हैं लिखे जा चुके हैं तथापि उनके आर्थिक विचारो के प्रति विद्वानो की उपेक्षा ही रही।

ऋषि दयानन्द सागोपाग दृष्टि से एक महान अर्थशास्त्री थे। इस विषय को डा. आर्य ने जिसके व्यवसाय की शोध से कोई सगति न होते हुए भी सिद्धकर दिया है। श्री राजेन्द्र कुमार आर्य सयोजक आर्य जन जागरण मच, कोटा ने विज्ञप्ति जारी करते हुए बताया कि इस विषय का यह पहला शोध प्रबन्ध है।

आर्य समाज मेरठ शहर के साप्ताहिक सत्संग दिनांक २७ मई १९९० में पारित प्रस्ताव

आर्य समाज मेरठ शहर के साप्ताहिक सत्सग में यह जान कर चिन्ता व्याप्त हुई कि ससद मे केन्द्रीय सरकार की ओर से एक बिल आ रहा है जिसके द्वारा वह हरिजन, पिछडी और अनुसूचित जाति के लोग मुसलमान या ईसाई बनने पर भी वे ही सुविधाए प्राप्त करते रहेंगे जो सुविधाए इन्हे सरकार की ओर से पूर्व मे प्राप्त है।

आर्य समाज पहले से ही धर्म परिवर्तन के मामले को बडी गम्भीरता से लेता है। यह एक बहुत बडा विदेशी षडयन्त्र है। विदेशी पेट्रो डालर के धन तथा चेरिटी में भेजे गये विदेशी धन के प्रभाव से भारतवर्ष मे विशाल पैमाने पर धर्म परिवर्तन का विदेशियो का षडयन्त्र है ताकि भारत आसानी से ईसाई या इसलाम जगत से जुड जाये। असम समस्या बोडो आन्दोलन, पजाब में उग्रवादी हिंसा तथा कश्मीर को भारत से पृथक करने का षडयन्त्र इसके जीते जागते प्रमाण हैं।

आर्य समाज सरकार को चेतावनी देता है कि यदि यह बिल पास हो गया तो विदेशी षडयन्त्र अपने आप ही सफल हो जायेगा और भारत की अस्मिता मिट जायेगी।

अतः आर्यसमाज भारत सरकार से अनुरोध करता है कि इस बिल को वापिस लिया जाये एव इसे ससद मे पेश न किया जाये। अन्यथा पछतावे के बिना कुछ न बनेगा और भारतीयता के मिटने मे कोई कोर कसर न रहेगी।

—इन्द्र राज, मन्त्री
आर्य समाज मेरठ शहर

रजि० न० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (८-७-१९९०) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U ९३
R N 626/57 Licensed to post without Prepayment License No. U 93 Post in D P S O on 6-7-1990



नेपाल में गुरुकुल विराटनगर के अध्यापक एवं छात्रगण के साथ कुछ अधिकारी

भारत में आज भी जातीय भेद-भाव का अभिशाप

आगरा में जाटवों और जाटों में दंगा : सामयिक समस्या पर आर्यसमाज में चिन्ता व्याप्त

आगरा। अधिकृत सूत्रो के अनुसार जातीय नफरत के अनुसार इस मास की २१ जून को निकटवर्ती पनवारी गाव से एक हरिजन लड़के की बारात की चढत को जाटों के मुहल्ले से न निकालने देने पर विवाद प्रारम्भ हुआ। जो बाद मे जाट और जाटवों के हिंसक संघर्ष में बदल गया।

आर्यसमाज अपने प्रारम्भिक काल से छुआछूत ऊंच-नीच के जातीय भेदभाव का सदा से ही विरोधी रहा है महर्षि दयानन्द ने इसे राष्ट्रीय स्तर की हानि माना है।

इतिहास इस अभिशाप से भरा पड़ा है और देश व समाज को इनसे जो खतरे उत्पन्न हुये हैं उनसे समय-समय पर राष्ट्रीय व धार्मिक नेताओ ने चेतावनी भी दी है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् हरिजन व अनुसूचित जाति के लोगो को प्रश्रय देकर प्रबुद्ध वर्ग की श्रेणी मे लाकर खड़ा किया है।

मानवता के नाम पर आज किसी को मानवीय अधिकारो से वंचित नही किया जा सकता है।

आगरा में हरिजनो की बारात जैसे साधारण से प्रश्न पर उपद्रव हो जाना इस बात का संकेत है कि हम एक बड़े सामाजिक संघर्ष की ओर बढ़ रहे हैं। वह समय गया जब डोली व पालकी पर बैठकर सवर्णों के सामने हरिजन नहीं जा सकता था।

गढ़वाल का डोला पालकी आन्दोलन जो आर्यसमाज द्वारा हरिजनो के उत्थान व उधार हेतु चलाया गया था और उन्हे उनके अधिकार दिलाये गये थे।

आज आगरा की घटना इतने व्यापक दंगे का रूप ले लेगी विश्वास नहीं होता है। सम्भवत इन दोनो के बीच विवाद पूर्ण राजनीति ने अवश्यमेव दबाव पाया होगा। जो जातियो के संघर्ष को अपना उपजीव्य बनाकर अपना सामाजिक आधार तैयार करना चाहती है। बड़ी बड़ी सामाजिक सुधारवादी संस्थाओ के प्रचार-प्रसार के बाद आज के इस असहिष्णु माहौल मे प्रशासन एक अच्छे निर्णायक का काम कर सकेगा।

प्रशासन के सूझ बूझ से विवाह तो करा दिया परन्तु कई लोगों की जान लेकर कुछ को घायल करके अभी खून की प्यास बुझी नही है। पूरा जिला आग की लपटो मे जल रहा है।

स्वाभाविक है कि चिरकाल से दबे और सताये वर्ग को जब प्रश्रय मिलेगा तब उसका स्वाभिमान जागेगा, यह अपरिहार्य भी है। व्यक्ति के साधन सम्पन्न होने पर समाज में प्रतिष्ठा के भाव भी उत्पन्न होते हैं और दूसरो की बराबरी करने की प्रवृत्ति भी पैदा होती है। उच्च वर्ग अपनी नकल और अपने को अपमानित अनुभव करता है। यही उसकी कमजोरी और दुराभिमान है।

प्राचीन इतिहास साक्षी है कि जातीय भेद भाव में राष्ट्र व धर्म का किस प्रकार पतन हुआ है। हम बड़े बने रहे सारा विश्व हमारा न रहा और हम अपनी खिचड़ी अलग से पकाते रहे। हम समाज से कट चुके हैं सवर्ण हैं कितने ?

हम अपने अहम् को लेकर अकड़ के साथ बैठ हैं बैठे रहो ? तुम्हे कोई पूछेगा नहीं। अनुदारता की तेज हवायें बह रही हैं और समाज का अंग हमसे कटने को तैयार है।

दाया हाथ बायें हाथ को काटने को तैयार है विश्व इतिहास भी यही बताता है।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र

[redacted]

वेदामृत

अतिथि-सत्कार का महत्त्व

इष्टं च वा एष पूर्तं च गृहाणामश्नाति,
यः पूर्वोऽतिथेरश्नाति ॥३१॥
ऊर्जां च वा एष स्फातिं च गृहाणामश्नाति,
यः पूर्वोऽतिथेरश्नाति ॥३३॥
अथर्व० ९-६-३१, ३३ ।

हिन्दी अर्थ—जो अतिथि से पहले खाना खा लेता है, वह अपने घर के इष्ट (यज्ञादि) और पूर्त (धर्मार्थ-कार्य) को खा जाता है। जो अतिथि से पहले खाना खा लेता है, वह अपने घर की शक्ति और समृद्धि को खा जाता है।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१ | दयानन्दाब्द १६६ | दूरभाष । ३२७४७७१ | वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष २९ अंक २७] | श्रावण कृ० ८ सं० २०४७ १५ जुलाई १९९०

आर्यसमाज के नाम पर तथाकथित किसी भी नए संगठन की स्थापना में आर्य जनता सहयोग न करे

दिसम्बर १९९० में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली में

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा का निर्णय

दिल्ली-८ जुलाई ९० को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती सभा-प्रधान की अध्यक्षता में आर्य समाज दीवानहाल में सम्पन्न हुई। इस बैठक में बंगाल, बिहार, आन्ध्रप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल, जम्मू काश्मीर, उड़ीसा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश आदि प्रान्तों के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

बैठक में देश की वर्तमान स्थिति तथा आर्य समाज के संगठनात्मक मामलों पर भी गम्भीरता से विचार हुआ। आर्यसमाज के संगठन को सुदृढ़ बनाने के लिए आगामी २३,२४, २५ और २६ दिसम्बर को अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली में करने का सर्वसम्मति से निर्णय हुआ।

आर्यसमाज से निष्कासित लोगों द्वारा संगठन के विघटन के प्रति की जा रही गतिविधियों पर भी सदन ने गम्भीरता से विचार किया सभा ने समस्त आर्य, आर्य समाजों व आर्य जनता के नाम सर्वसम्मति से जो प्रस्ताव पास किया है वह निम्न प्रकार है :—

प्रस्ताव

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा किसी भी व्यक्ति के द्वारा चाहे वह आर्य समाजी हो अथवा गैर आर्य समाजी, आर्य समाज के नाम पर किसी भी नए संगठन की स्थापना करने का विरोध करती है। इस सम्बन्ध में ऐसे लोगों द्वारा यह तर्क प्रस्तुत करना कि सार्वदेशिक सभा इस समय देश के समक्ष उपस्थित खतरों का सामना करने में निरन्तर असमर्थ रही है और इसके लिए एक नए संगठन की आवश्यकता है, एक दम निरर्थक और आधारहीन है। इस प्रकार प्रयास आर्य समाज को खण्डित करने की एक कुटिल चाल मात्र ही है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा सब आर्य समाजियों को चेतावनी देती है कि वे इस प्रकार की चालों से सावधान रहें और ऐसे किसी भी प्रयत्न को आरम्भ में ही कुचल दें।

सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों के अतिरिक्त बैठक में स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती, स्वामी सुमेधानन्द, पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव, महात्मा आर्य भिक्षु, प्रो० शेरसिंह, श्री ओमप्रकाश गोयल, महाशय धर्मपाल, आचार्य दत्तात्रेय आर्य, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति डा० सुभाष विद्यालंकार, श्री छोटूसिंह, पं० राजगुरु शर्मा, डा० हरिप्रकाश, प्रकाशवीर शास्त्री, डा० आनन्दप्रकाश, आदि के अतिरिक्त डा० योगेन्द्र कुमार शास्त्री, डा० धर्मपाल, विमल वधावन एडवोकेट, श्री बालदिवाकर हंस, श्री कृष्णलाल आर्य, श्री इन्द्रप्रकाश गांधी, श्री सूर्यदेव, श्री वटकृष्ण वर्म्मन, श्री अश्विनीकुमार एडवोकेट प्रो० योगेन्द्र नारायण, श्री भूपनारायण शास्त्री, डा महेश विद्यालंकार, श्री ऋषिपालसिंह एडवोकेट श्री मनमोहन तिवारी, श्री इन्द्रराज, श्रीमती सरला महेता, श्रीमती प्रकाश आर्या, पं. पृथ्वीराज शास्त्री, प. क्षितीश वेदालंकार श्री रामशरण दास आदि ने भाग लिया।

श्री कैलाशनाथसिंह संसद सदस्य का आर्यसमाज से निष्कासन जारी रहेगा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ८ जुलाई की अन्तरंग सभा में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री इन्द्रराज और मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने प्रो० कैलाशनाथसिंह संसद सदस्य द्वारा आर्य समाज के संगठन में की जा रही विघटनात्मक गतिविधियो और आर्य समाज की सम्पत्तियों के विषय में अनावश्यक हस्तक्षेप करने की कोशिशों का उल्लेख करते हुए कहा कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने उन्हें कई वर्ष पूर्व से आर्यसमाज से निष्कासित किया हुआ था, पुनः आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्यसमाज से उनके निष्कासन को जारी रखनेका निश्चय किया है। सार्वदेशिक सभा की अन्तरग ने सर्वसम्मति से आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के प्रस्ताव पर प्रो० कैलाशनाथसिंह के आर्यसमाज से पुनः निष्कासन की पुष्टि की।

सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

सम्पादक—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

कश्मीर समस्या

राधाकृष्ण भास्कर एडवोकेट

कश्मीर के आम हालात, केन्द्रीय सरकार की तरफ से फारूख अबदुल्ला के सामने नाक रगडने कांग्रेस और शाही इमाम का दबाव आर्थ फरनाडीज की हरकतें और फारूख को फिर सरकार सौंपने की बातो को देख कर ऐसा लगता है कि १९४७ और १९९० के कश्मीर और भारत में कोई अन्तर नही इन ४३ वर्षों की ठोकरे खाने के बाद भी हमने कुछ नहीं सीखा कश्मीर के मुसलमान तब और अब आजादी का नारा बुलन्द किये हुये हैं—शेख अबदुल्ला ने मुस्लिम कान्फ्रेंस के नाम से कश्मीर छोडो का आन्दोलन यह कह कर चलाया था कि महाराजा हिन्दू है और बाहर से आया है और शासन मुसलमानो के हाथ में होना चाहिए—आज भी आजादी के नारे लगाये जा रहे हैं—उस समय हिन्दू राजा के खिलाफ और आज भारत के खिलाफ उस वक्त लीडर शेख था और अब उनका लडका फारूख अबदुल्ला है जिसने शेख की गिरफ्तारी के बाद इत्तहादी सभा में आजाद कश्मीर की माग को लेकर पैंटीशन अपील दाखिल की थी—शेख अबदुल्ला को सब से अधिक हिमायत नेहरू से मिली जिन्होने यह शर्त लगा दी कि जब तक शेख को रिहा नहीं किया जाता और इसे हकूमत नहीं सौंपी जाती वह कश्मीर को भारत मे शामिल नही होने देंगे—कश्मीर के भारत मे शामिल होने के कागजात अगस्त १९४७ में तैयार और टाईप हो गये थे मगर हस्ताक्षर हुये २७ अक्तूबर १९४७ को जब महाराजा के हस्ताक्षर करते समय अगस्त काट कर अक्तूबर लिखा इसी दिन एक अलग कागज पर महाराज ने यह लिख कर दिया कि वह एक आपतकाल हकूमत बना रहा है और शेख अबदुल्ला को इसका प्रशासक नियुक्त करता है—आज भी नेहरू खानदान और कांग्रेस की सफो मे पले लोग फारूख अबदुल्ला को शासन सौपने की तैयारिया कर रहे हैं।

जगमोहन—फारूख और महाजन

फारूख ने यह शर्त लगाई थी कि जब तक जगमोहन को नही हटाया जाता वह केन्द्रीय सरकार की कोई सहायता नही कर सकता—उसके त्यागपत्र देने मे राजीव गांधी पूरा हाथ था शेख अबदुल्ला ने भी यह शर्त लगाई थी कि जब तक उसे शासन नही सौपा जाता वह कबाइली हमलावरो के विरुद्ध भारत की मदद नही कर सकता—फिर मेहरचन्द महाजन को लौटाया फिर महाराजा को कश्मीर से निकलवाया फिर भी भारत का न हो सका।

एक ही लीडर नेहरू ने कहा था कि कश्मीर मे सिर्फ एक लीडर है शेख अबदुल्ला वह देशभक्त है मेरे भरोसे का आदमी है और मैं इसकी राय पर भरोसा कर सकता हू इसे हकूमत सौपने से ही मसला कश्मीर हल हो सकता है आज भी सरकार यह प्रचार कर रही है कि फारूख अबदुल्ला ही कश्मीर का नेता है और शासन चल सकता है।

खुश रहो! नेहरू ने कई पत्रो में सरदार पटेल को लिखा कि यदि हमें राय शुमारी जीतनी है तो कश्मीर घाटी के मुसलमानो को प्रसन्न रखना होगा। महाराजा मूर्ख है इतनी बात भी नहीं समझता। कश्मीर की आर्थिक मदद करनी होगी। आज भी सरकार यह प्रचार कर रही है कि कश्मीर की हर क्षेत्र मे उन्नति आवश्यक है बेरोजगार लोगो को काम देना होगा फैक्टरिया लगानी होगी तभी दहशत गरदी खत्म हो सकती है। यह एक गलत प्रचार है। योजना कमीशन के आकडो के अनुसार कश्मीर भारत मे चौथे नम्बर पर है। पहले नम्बर पर पंजाब है। कश्मीर में एक आदमी की आमदनी १६३४) रु० प्रतिमास है। भारत के दूसरे इलाके बहुत निर्धन हैं लाखो हिन्दू नौजवान बेरोजगार है। भूखे हैं। वह सरकार के विरुद्ध अस्त्र शस्त्र क्यो नही उठाते। सेनापर हमले क्यो नही करते। सिर्फ गैर हिन्दू ही दैहशत गर्द और गरीबी का कोई सम्बन्ध नही है। १९४७ से लेकर हमने कश्मीर में खरबो रुपये खर्च किये है इस रकम से हम कोई स्विटसजरलैण्ड खरीद सकते हैं।

फौज की ज्यादतिया अब्दुल्ला का भारतीय सेना पर यह दोष लगाया था कि वह सीमा के पास रहने वाले बेगुनाह मुसलमानों को मारती है। नेहरू और जनरल थिमैया का झगडा ही यहा था। नेहरू का कहना था कि बेगुना और वफादार लोगो को देख कर गोली मारनी चाहिये। जनरल थिमैया का कहना था कि वफादारी और बेगुनाही किसी के माथे पर नही लिखी हुई। जो हमलावरो को अपने घरो में पना देगा या मदद करेगा फौज उसे मार देगी। थिमैया ने त्यागपत्र दे दिया जनरल क्रियापा के कहने पर इसने वापस ले लिया। आज भी कांग्रेस और इसके मुस्लिम समर्थक ससद मे शोर मचाते हैं और अपनी फौज पर दोष लगाते हैं कि अपने गुनाहो पर जुल्म हो रहा है। जब बच्चे औरते और जवान भारत की फौज पर हमले करते हैं तो इसकी कोई बात नही—भारत के जवानो को चुपचाप गोलिया खाकर मरना चाहिये। क्योकि यह गौतम गाधी का देश है शान्ति और अहिंसा का देश है।

हमला के प्रमाण प० नेहरू ने सरदार पटेल को अमरीका से कई पत्र लिखे कि हमारे पास कबाईलियो को भेजे और पाकिस्तान हमलो के सबूत भी जो हमने यू-एन-ओ मे पेश किये है मगर इंगलैंड और अमरीका पाकिस्तान का साथ दे रहा है हिन्दुओ पर अत्याचार कश्मीर घाटी में हिन्दुओ पर अत्याचार हुए मगर इसके बारे में कोई नहीं बोलता था प्रचार यही होता था कि हिन्दू राजा को निकालो। पिछले कई वर्षों मे राजीव और फारूख की देखभाल में हिन्दुओ पर अनेक हमले हुए। औरतो को अपमानित किया राम जन्मभूमि के द्वार खुलने पर कश्मीर मे ४४ हिन्दू मन्दिर तोड दिये गये और अब हिन्दुओ और सिखो से पूरी घाटी खाली करा दी गई है मगर कोई नही बोलता उल्टा प्रचार यह हो रहा है कि फौज बेगुनाह लोगो को मार रही है —

एक अन्तर १९४७ मे कुछ लोग थे जो अपनी आत्मा की आवाज को निडरता से कह सकते थे २७ जुलाई १९४९ को श्री शिब्बनलाल सकसेना (सदस्य काईन साज ऐसम्बली) ने सरदार पटेल को यह लिखा था कि आज तक भारत कश्मीर मे १०० करोड रुपये व्यय कर चुका है और फौज की खूबसूरत फूल कश्मीर पर बलिदान किये हैं। हम अपनी गलतिया दोहराते चले आ रहे हैं देश हमे कभी माफ नही करेगा, जम्म बन्दी के समझौते से मुझे बहुत दुःख पहुचा है। पूरे सोच विचार के बाद इस नतीजे पर पहुचा हू कि हमे समझौते की बात बन्द करके हमलावरो को अपनी धरती से मार कर बाहर भगाना होगा।

(प्रताप २४-६-९० के सौजन्य से)

सम्पादकीय—

दुर्बल नेतृत्व में बढ़ती साम्प्रदायिकता

साम्प्रदायिकता के आगे समर्पण के भाव वर्तमान सरकार ने पिछली कांग्रेस सरकार से भी अधिक खतरे की स्थिति पैदा की है। कांग्रेस ने भी मुस्लिम वोट बैंक को पकड़ने की गन्दी राजनीति की है। भारतीय राजनीति की इस मजबूरी का कांग्रेस ने भरपूर फायदा उठाया है लेकिन इसके साथ ही कांग्रेस ने अल्प संख्यक साम्प्रदायिकता को बहुसंख्यक साम्प्रदायिकता से सन्तुलित रखने सदा ही कोशिश की है।

यह बात उस समय और सही होती। जब साम्प्रदायिक शक्तियों की लड़ाई धर्मनिरपेक्ष शक्तियों से होती। लेकिन चुनावी राजनीति मे साम्प्रदायिकता के बिना काम चल ही नहीं सकता। जैसी दशा आज बन गई है। तो शायद एक साम्प्रदायिक शक्ति को प्रोत्साहन देना उचित यह होता कि सर्वधर्म समभाव की साम्प्रदायिकता एक दूसरे पर नियन्त्रण रख सकती।

इसी सर्वधर्म साम्प्रदायिकता के कारण से कांग्रेस ने यदि मिजोरम मे ईसाई कार्ड खेला। पंजाब मे पहले ज्ञानी जैलसिंह फिर बाद मे भिण्डरा वाले और अन्त मे पर्दे के पीछे जसबीरसिंह रोडेवाले और हरमिन्दरसिंह सिन्धू के द्वारा सिक्ख साम्प्रदायिकता को प्रोत्साहित किया। मुस्लिम महिला बिल लाकर तथा बिहार, उत्तर प्रदेश मे उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाकर, कुरान याचिका को तुरन्त रोककर मुस्लिम साम्प्रदायिकताको बढ़ावा दिया।

तो इसके साथ ही राम जन्मभूमि का ताला खोलकर वहां शिला न्यास करवा कर हिन्दू साम्प्रदायिकताको भी लगभग बराबरकी ही हिस्सा दिया।

यह स्पष्ट है कि कांग्रेस की साम्प्रदायिकता मे कम से कम सन्तुलन तो था। हमेशा छवि की राजनीति करने वाली सरकार ने ओबेदुल्ला आजमी को जितनी आसानी से राज्य सभा का सदस्य बनवा दिया। वैसा कांग्रेस में सम्भव नहीं था। कांग्रेस ने भी मौ० बुखारी को साधने की सर्वदा प्रयास किया है। और इस बार भी श्री भगतजी ने बात की थी।

मेरठ मे दंगे के पश्चात जामा मस्जिद बन्द करने की धमकी से कांग्रेस के हाथ पांव फूल गये थे। बुखारी से समझौता श्रीमती इन्दिरा गांधी ने भी किया था पर विश्वनाथ प्रताप की भांति समर्पण नहीं किया था।

आज उत्तर प्रदेश में बाबरी मस्जिद के नेता मोहम्मद आजम खां केबिनेट के मन्त्री बने हुये हैं। आजम खां ने कानपुर मे स्पष्ट कहा था 'जनता दल की सरकार बाबरी मस्जिद की सरकार है। कांग्रेस को भी इसमे छूट देनी पड़ती, तब वह कोई न कोई बहाना ढूंढकर राम जन्मभूमि के नेताओ को भी वैसी ही छूट अवश्य देत। यह भी सत्य है कि आजम खां के बराबर का साम्प्रदायिक नेता कांग्रेस मे भी पनपते रहे। जियाउर्रहमान अन्सारी थोड़ा खुले तरीके से और अहमद पटेल छिपकर राजनीति कांग्रेस में भी करते रहे हैं। लेकिन आजमी और आजम खां की शुद्ध साम्प्रदायिकता के राजनीति के सामने ये कांग्रेसी नेता भी धर्मनिरपेक्ष के अवतार दीखेंगे। शाहबानो के मामले में एक उदाहरण माना जाता है। कांग्रेस के खिलाफ।

मुस्लिम कट्टरपन से समझौता करके अतिरिक्त कांग्रेस के मन में आरिफ को लेकर अपराध बोध रहा है। कांग्रेस से इस्तीफा देने के बाद आरिफ को कई बार पार्टी मे आने का निमन्त्रण तो दिया। आरिफ ने कांग्रेस के मुस्लिम कट्टर पन्थियो पर काफी जोरदार हमले किये सच तो यह है कि त्याग पत्र देने के बाद कांग्रेस में जो स्थिति था वैसी आज जनता दल मे नहीं है। जिस कांग्रेस की साम्प्रदायिकता की वे खुलकर आलोचना करते थे आज जनता दल में उससे भी अधिक साम्प्रदायिक नेताओ की भरमार है। आरिफ उनके विपरीत आवाज तक नहीं उठा पा रहे। विश्वनाथ प्रताप तो मुस्लिम साम्प्रदायिकता के विरुद्ध सोचते तक से परहेज करते हैं। इस तुष्टीकरण की सोचने ने देश को टूटने के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है। इस बातों को सामने से समझना अत्यावश्यक है।

राजीव कार्येकर्ताओं के शिलान्यास के समय जमात-ए-इस्लामी के उत्तेजक बयानों पर चुप्पी लगाकर विश्वनाथ प्रताप ने स्पष्ट कर दिया था कि वे अल्पसंख्यक साम्प्रदायिकता को अलगाववाद आतंकवाद के रास्ते जाने से रोकेंगे नहीं, और यहां तक कि पाकिस्तानी बढ़ावे को भी अनदेखा कर देंगे। आज जनता दल के शासन काल में काश्मीर भारत से व्यावहारिक रूप से अलग हो चुका है। चुनाव से पूर्व ही पाकिस्तानी अखबारो ने जनता दल को विजयी बनाने की आवाजें देने की इच्छा प्रकट करनी शुरू कर दी थी पंजाब व काश्मीर में तब भी आतंकवाद का अच्छा प्रभाव था। साम्प्रदायिकता को बढ़ावा देकर अराजक तत्वो को पनपाया। सम्भवत अन्य कोई शासन पसन्द न करता।

कांग्रेस की राजनीति मे एक अन्तर है जिनको कश्मीरी आतंकवादियो और उनके पाकिस्तानी प्रेरको ने काफी पहले पहचान लिया था और वे इसके प्रयोग करने का मस्तिष्क बना चुके थे। यह केवल संयोग नहीं है कि दिल्ली मे बैठे विश्वनाथ प्रताप की सरकार बनते ही ठीक उसी सप्ताह रूबिया अपहरण के साथ कश्मीर घाटी मे आतंकवाद का महा विस्फोट हो गया।

वास्तविकता यह है—भू० पू० व वर्तमान के प्रधान मन्त्री मे देशभक्ति को कोई अन्तर नहीं है वस्तुत राजीव गांधी तो कायदे से हिन्दुस्तान को भी भली प्रकार नहीं जानते हैं।

प्रश्न देशभक्ति का नहीं किन्तु राजनीतिक सभी कार्यों स्वार्थो और कार्य प्रणाली का है। निजी तौर पर भारत से कहीं ज्यादा गहराई से लगाव अनुभव करने के लिये विश्वनाथ प्रतापसिंह राष्ट्रीय अखण्डता बनाये रखने में असमर्थ सिद्ध हुए है।

इस आशका के कुछ आधार देखे जा सकते है—

१—प्रथम कारण तो जनता दल की संरचना मे देखा जा सकता है। कांग्रेस का विकल्प बनने की कोशिश मे जनता दल कुल मिलाकर एक कमजोर-कृत्रिम और कांग्रेस की एक घटिया कार्बन कापी के किस्म का दल बन गया है। लेकिन एक स्वाभाविक होने के कारण कांग्रेस में एकता बनाये रखने का जैसा सफल संकल्प व जैसी सामर्थ्य थी जनता दल में वैसी कमी है।

संख्या के अनुपात से यह अति कमजोर पार्टी है और उसमें मि० सिंह अच्छी भूमिका नहीं निभा सकते। प्रदेशो में उनकी पकड़ को सबने देखा है लोक सभा में भी वे निजीतौर पर एक दर्शन सांसदो को भी अपना नहीं बना सके।

गुरुकुल झज्जर में आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

गुरुकुल झज्जर मे आयोजित आर्य वीर दल शिक्षक, प्रशिक्षण शिविर का समापन समारोह दिनांक २४ जून १९९० को स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर श्री बाल दिवाकर हंस प्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल भी उपस्थित थे।

स्वास्थ्य मन्त्री हरियाणा सरकार, श्री धर्मपाल शास्त्री पूठ (उ०प्र०) आदि अनेक नेताओ ने अपने विचार व्यक्त किये।

अपने अध्यक्षीय भाषण मे स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि कालेजो मे आंग्ल भाषा के प्रशिक्षण के कारण युवा शक्ति पथ भ्रष्ट हो रही है। इस विषम परिस्थिति मे हम आर्य वीर दल के माध्यम से युवा शक्ति को सन्मार्ग दिखा सकते हैं। मैं समझता हूँ कि श्री बाल दिवाकर जी हंस और ब्र० देवव्रत व्यायामाचार्य बहुत ही सुविधा से आर्य वीर दल संगठन को चला रहे हैं। सभा इस दिशा में अपनी भूमिका का ठीक से निर्वाह करेगी। आर्य वीर दल में यथेष्ठ वृद्धि कर केन्द्र और प्रान्तो मे शिक्षको की शीघ्र नियुक्ति की जानी चाहिए।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

राष्ट्रीय गान सिखाने के जुर्म में नौकरी से हाथ धोना पड़ा

खतौली, (मु० नगर) स्थानीय आम उल उलूम जू. हाई स्कूल के प्रबन्धको ने एक हिन्दू सहायक अध्यापक को केवल इसलिए इस्तीफा देने को मजबूर कर दिया क्योंकि उक्त अध्यापक बच्चो को राष्ट्रगान सिखाने की कोशिश कर रहा था।

उक्त अध्यापक प्रीतम सिंह ने सवाददाता को बताया कि मैंने १२-११-८९ से उक्त स्कूल मे सहायक अध्यापक का पद ग्रहण किया था जब मैंने स्कूल के बच्चो को राष्ट्रगान सिखाने की कोशिश की तो मुझे प्रधानाध्यापक ने धमकाते हुए कहा कि ये क्या सिखा रहे हो बच्चो को, इसे बन्द करो। स्कूल के प्रबन्धक ने भी इस पर आपत्ति प्रकट की।

मैं स्कूल के बच्चो को जिनमे हिन्दू मुस्लिम दोनो सम्मिलित है को बालचर की शिक्षा भी दे रहा था, पी० टी० कराते समय जब मैंने बच्चो को भारत माता की जय का नारा लगवाया तो प्रधानाध्यापक व प्रबन्धक ने उस पर भी मुझे बुरा भला कहा।

श्री सिंह ने बताया कि इस स्कूल में बच्चो से हाथ उठाकर कहलवाया जाता है कि हम सब मुसलमान हैं। हम भारतमाता को नहीं मानते। जो भारत माता को मानते हैं वे हिन्दू हैं, अल्लाह ताला उन्हे दोजख में भेजेंगे। खुदा एक है खुदा का कोई दूसरा नाम लेने वाले काफिर हैं हिन्दू हैं वे बख्शे नही जायेंगे।

ईश्वर के स्थान पर खुदा या अल्लाह (शिक्षण मे) न कहने, मेरे उपस्थिति होते हुए भी मेरी छुट्टी लिखने, मेरे विरोध करने पर रुष्ट होकर दुश्चरित्रता का आरोप लगाने की धमकी देकर मुझसे जबरन इस्तीफा लिखवा लिया गया है। (वीर अर्जुन ४-७-९० से साभार)

वेदों का सार जनता तक पहुंचाए

जयपुर १५ जून (कास)। भैरोंसिंह शेखावत ने कहा है कि वेदो को जनता और समाज के बीच पहुचाने के लिए उनके सार सरल भाषा मे प्रकाशित किए जाए। इस कार्य मे सहयोग करने में सरकार भी पीछे नहीं रहेगी। श्री शेखावत शुक्रवार को जयपुर के टूरिस्ट होटल में प० मधु सूदन ओझा वेद विज्ञान-सत्र के समापन समारोह मे अतिथि पद से बोल रहे थे। मुख्यमन्त्री ने बताया कि शिक्षा के जरिये किसी भी देश की मान्यता, परम्परा एव जीवन दर्शन को बदला जा सकता है।

भूल सुधार

२४ जून ९० के सार्वदेशिक साप्ताहिक पत्र मे पृष्ठ ६ पर "योग साधना शिविर, महात्मा नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़ तल्ला (नैनीताल) में लगेगा। प्रकाशित हुआ है। जिसमे पाचवें पैरे की १० वी लाइन में स्वामी स्वतन्त्रतानन्द के स्थान पर स्वामी अभेदानन्द पढ़ें। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज सत्याग्रह के सचालन मे ही भाग ले रहे थे।

सम्पादक सार्व. साप्ताहिक

काश! हम भी दीवाने बन जायें

१५ फरवरी १९८८ की बात है। समय रात्रि ८.३० बजे। स्थान नई दिल्ली का कोटला फिरोजशाह मैदान। मैदान में भारी वर्षा के कारण जगह-जगह पानी और कीचड़ भरा था। अगले दिन प्रातः ८ बजे ऋषि बोधोत्सव का कार्यक्रम वृहद् रूप से प्रारम्भ होना था। आर्य केन्द्रीय सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री सूर्यदेव, महामन्त्री डा० शिवकुमार शास्त्री, मन्त्री श्री रामशरण दास, पं० यशपाल सुधांशु श्री नन्दलाल आदि पण्डाल खड़ा कराने की व्यवस्था कर रहे थे। इससे पूर्व सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल मैदान का निरीक्षण कर और आवश्यक निर्देश देकर जा चुके थे। पानी और कीचड़ के गड्ढों को भरने के लिए मलबे के ट्रकों को मंगवाने के आदेश दिये जा चुके थे। परन्तु कार्यकर्ता किसकी प्रतीक्षा करे। एक बड़ा टब, बाल्टी और जग लाया गया और आर्यसमाज दीवानहाल के श्री लक्ष्मीचन्द, श्री ईश्वर, श्री खेमचन्द जुट गये। जग भर-भर कर टब में डाल रहे थे और एक ऋषि भक्त टब से पानी की बाल्टी भर-भर कर पण्डाल की सीमा से दूर फेंक कर आ रहे थे। लक्ष्मीचन्द फावड़े से कीचड़ साफ कर रहे थे।

कार्यकर्ताओं के इस उत्साह और लग्न को देखकर गर्व महसूस हो रहा था। मैंने जब उस ऋषि भक्त से परिचय जानना चाहा, तो वे मेरे प्रश्न को टाल गए और कहने लगे कि जब दस दीवाने इकट्ठे हो जाए तो ऋषि का कोई कार्य अधूरा नहीं रह सकता। उन्होंने अपने जीवन का सार बताया कि गुप्त दान दो, चुपचाप काम करो और पीछे रहो।।

काश! ऐसा दीवानापन हम सब में आए, तो वेद प्रचार कार्य कहां का कहां पहुंच जाए।।

—विमलकान्त शर्मा

मन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली

यह भारतीय आर्यसमाज क्या बला है ?

डा० भवानीलाल भारतीय

संसार उसी आर्यसमाज को जानता है जो महर्षि दयानन्द द्वारा १८७५ में बम्बई में स्थापित की गई थी और जिसकी सहस्रों शाखा प्रशाखायें आज संसार में सर्वत्र वैदिक धर्म के प्रचार में संलग्न हैं। आर्यमित्र साप्ताहिक के मई मास के अग्रलेख पर मेरी दृष्टि जाती है। इस सम्पादकीय का शीर्षक है—भारतीय आर्यसमाज का उदय। मैं सहसा चौंक पड़ता हूँ। आर्यसमाज तो आर्यसमाज होता है वह भारतीय, पाकिस्तानी या बरतानवी नहीं होता। महर्षि ने आर्य समाज की स्थापना का लक्ष्य संसार का उपकार करना निर्धारित किया था स्वदेश के प्रति असीम प्रेम होने पर भी उन्होने किसी 'भारतीय आर्यसमाज' की कल्पना नहीं की।

स्वामी अग्निवेश जी के प्रति मेरे हृदय में उठने वाले भावों और जज्बातों से मैं खूब परिचित हूँ। जब उन्होंने चतुर्थाश्रम की दीक्षा ली और श्याम राव से स्वामी अग्निवेश बने तब आर्यसमाज के लाखों अनुयायियों की भांति मैं भी उन्हे साधुवाद देने वालो में था। हमें उनसे अनेक आशायें थीं। यदि वे अपने लक्ष्य का संधान कर उसी दिशा में अग्रसर होते तो शायद आर्यसमाज का कायापलट करके ही रख देते, किन्तु ऐसा नही हुआ। राजनीति के माया जाल ने उन्हें ही नहीं, उनके साथी अन्य संन्यासियों को भी जकड़ लिया और वे आर्यसमाज से निरंतर दूर होते गये। मैंने अपनी किसी टिप्पणी में लिखा था तीन संन्यासी : तीन रास्ते। कितनी विचित्र बात है कि जिन तीनों संन्यासियों ने महर्षि दयानन्द की पताका के नीचे रहकर ही काम करने का निश्चय किया था, राजनीति ने उन्हें भटकाव के मार्ग पर डाल दिया। एक साधु जनता पार्टी (तब की) में रहा, दूसरे ने लोकदल का पल्ला पकड़ा तो तीसरे ने सत्ताधीशों का साथ देना ही उचित माना और इन्दिरा कांग्रेस में रहकर एम.एल.ए. बन गया। किन्तु जैसा होता है, राजनीति का जीवन हर एक को रास नही आता। लोकदल से एक बार एम०पी० बनने का मौका जिन्हें मिला, वे दुबारा राजनीति में अपनी स्थिति बरकरार नही रख सके। एम.एल.ए. बनने वाले महानुभाव को तो उनकी पार्टी ने दुबारा टिकट ही नहीं दिया। जनता पार्टी से नाता जोड़ने वाले स्वामी अग्निवेश का भी अपनी पार्टी मे पूर्वापेक्षा सम्मान कम ही हुआ और उन्हें कुछ अन्य मंचों की तलाश करनी पड़ी।

मैं राजनैतिक महत्त्वाकांक्षा रखने वालों को बुरा नही कहता। यह भी जीवन का एक अंग है और जिसे राजनीति में रस मिलता है वह उसे छोड़ेगा भी क्यों? किन्तु मेरा निवेदन है कि सार्वजनिक जीवन जीने वालों को एक ही मंच का आश्रय लेकर लोक सेवा के लिये स्वयं को समर्पित करना चाहिए। प० प्रकाशवीर शास्त्री जसी बहुमुखी प्रतिभा के लोग तो कम ही होते हैं जो राजनीति में रहकर भी आर्यसमाज की सेवा से कभी विरत नहीं हुए बल्कि जिन्होंने आर्यसमाज के गौरव को सदा बढ़ाया। मैं एक साधारण सा व्यक्ति हूँ। सारा जीवन अध्यापकी में गुजारा। १८ वर्ष की आयु में आर्यसमाज का सदस्य बना और अब जीवन के ६३वें वर्ष में प्रवेश करते समय तक भी आर्यसमाज की ही सेवा में रहा। आप कहेंगे कि आपने सिवाय कलम घिसने के और किया ही क्या? मेरा निवेदन है कि मैंने दयानन्द और आर्य समाज के यश को बढ़ाने के लिये ही कलम हाथ में ली। इससे मुझे बड़े भी मिले, जन-जन का आशीर्वाद और प्यार भी मिला सबसे बढ़कर मिला आत्म सन्तोष। क्या यह भी कम उपलब्धि है। मेरे कहने का अभिप्राय इतना ही है कि यदि आपको राजनीति ही करनी है तो उसमें आकण्ठ मग्न हो जाइये। बिहारी के शब्दों में—

"अनबूड़े बूड़े, तिरेजे बूड़े सब अंग।"

दो नावों पर सवारी करने का कोई लाभ नही।

मैं पुन: अपनी बात पर आता हूँ। स्वामी अग्निवेश अब तक कई प्रकार के कार्यक्रम बनाकर आर्यसमाज को अपने साथ लेने का यत्न कर चुके हैं। ये कार्यक्रम बुरे नहीं थे, किन्तु उनके पीछे स्पष्ट चिन्तन का अभाव था। देवराला के सती काण्ड का मसला केवल पद यात्रा से हल होने वाला नहीं था। उस एक दुर्घटना को हवा दी थी राजस्थान की तत्कालीन कांग्रेस बनाम राजपूत जाति की राजनीति ने। सती को लेकर आर्यसमाज का मानस तो नितान्त स्पष्ट है। ऐसी घटनायें लाखों में एक होती हैं और उसके लिये बहुत परेशान होने की आवश्यकता भी नहीं है। जिन लोगों ने सती प्रथा को गौरवान्वित किया। उनका यह प्रयास भी मात्र एकेडेमिक बहस तक ही सीमित रहा, अन्यथा राजमाता सिंधिया को तो अब तक परलोक में अपने स्वर्गीय पति के सान्निध्य में ही होना चाहिए था और कल्याणसिंह कालवी को अपने परिवार की विधवाओं को सती होने के लिये प्रेरणा करनी चाहिए थी। किन्तु जीते जी चितारोहण आसान नही है।

जहां तक पुरी के शंकराचार्य से शास्त्रार्थ का सम्बन्ध है, स्वामी अग्निवेश जी को इस अखाड़े में अकेले उतरने की जरूरत नहीं थी। शास्त्रीय वाद-विवादों का फैसला अब शास्त्रार्थों से नहीं होता। उचित तो यह होता कि इसके लिये आर्यसमाज के समस्त विद्वन्मण्डल को ही आगे लाया जाता और तब हम देखते कि निरंजनदेव जी हमारे विद्वानों के सामने कैसे आते हैं। फिर साम्प्रदायिक विरोधी मार्च में किसी फिल्मी अभिनेत्री को साथ लेकर चलना तो स्वतः ही इस कूच को मात्र प्रचारात्मक ही सिद्ध कर देता। यही बात नाथद्वारा के मन्दिर में हरिजनों के प्रवेश की थी। आर्यसमाज तो मन्दिरों में स्थापित मूर्तियों की पूजा का एकांत विरोधी है. फिर चाहे वह मन्दिर वल्लभमत का हो या रामानुज मत का। जहां तक मन्दिर में प्रविष्ट होने के सार्वजनिक अधिकार के हनन का प्रश्न है, यह नागरिकता के अधिकारों की सीमा में आता है और इसके लिये देश का संविधान अदालत में जाने की इजाजत देता है। यदि हरिजनो को भी नाथ जी से प्यार है और वे मन्दिर मे पूजा के लिये जाना चाहते हैं तो वे अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिये जो चाहे कर। हम तो उन्हे आर्यसमाज में आने से रोकते नही और न हम आर्यों को ही कोई माई का लाल किसी मन्दिर मे जाने से रोकता है। मेरा तो मानना है कि हमें वही कार्य अपने हाथ में लेना चाहिए जिसमे हमारा आर्यसमाजी चरित्र सुरक्षित रहे और हम अपनी आस्थाओ और मर्यादाओ की परिधि से न भटके।

यह तो अच्छी बात है कि स्वामी अग्निवेश जी १४-१५ जुलाई को भारतीय आर्यसमाज की स्थापना के समय ५१ आर्य सन्यासियों की उपस्थित को देखेंगे। मैं तो बहुत प्रयास करने पर भी इतने प्रबुद्ध और सूझ-बूझ वाले आर्य सन्यासियों के अस्तित्व पर भी विश्वास करने में असमर्थ हो रहा हूँ।

१०१ आर्य बहने भी इसमें आवेंगी यह भी अच्छी बात है। किन्तु आर्यसमाज के प्रबुद्ध वर्ग विद्वान्, लेखक, पत्रकार, उपदेशक और प्रचारकों का जहा तक ताल्लुक है, हमारे अब तक के प्रयास चाहने पर भी सफल नही हुए हैं। स्वामी जी यदि एक और आर्य बुद्धिवादी सम्मेलन करना चाहे तो अवश्य करें। मुझे तो भय है कि जब-जब आर्यसमाज मे बुद्धिवादियों को एक मंच पर लाने का प्रयास किया गया है तब-तब उस मंच को सभा संस्थाओं स्वयंभू

(शेष पृष्ठ ६ पर)

मांसाहार घोर पाप

पं० नन्दलाल 'निर्भय' सि० शास्त्री

नाकृत्वा प्राणिनां हिंसा मांसमुत्पद्यते क्वचित् ।
न च प्राणिवधः स्वर्ग्यस्तस्मान्मांसं विवर्जयेत् ॥
(मनु० ५।४८)

आधुनिक युग में प्रथम विधिवेत्ता माने जाने वाले महाराज मनु ने मांसाहार को सर्वथा निषिद्ध बताते हुए उपरोक्त श्लोक के माध्यम से कहा है कि—

"प्राणियों की हिंसा किए बिना मांस की उपलब्धि नही होती । प्राणियों का मारना सुखदायक नहीं । अत. मांस खाना सर्वथा निषिद्ध है ।" मांस भक्षी लोग इसका उल्लंघन करके महापाप के भागी बनते हैं ।

नितान्त खेद और दुर्भाग्य का विषय है कि आजकल सारे संसार में और यहां तक कि "अहिंसा ही परम धर्म है की उद्घोषणा करने वाले प्रथम देश भारत वर्ष में भी दिन प्रति दिन अण्डे, मांस मछली खाने का प्रचार हो रहा है । बड़े-बड़े डाक्टरों द्वारा इनमें विटमिन व अन्य पौष्टिक तत्व होने की घोषणा किये जाने के कारण अनेक युवक व युवतियां मांसाहार प्रारम्भ करते जा रहे हैं । भारत वर्ष में भी इसका प्रचार व प्रसार बढ़ रहा है । रामकृष्ण, गौतम दयानन्द आदि महापुरुषों के वंशज व उनको आदर्श मानकर उनके तुमुल स्वरों में जयघोष करने वाले आज इन आदर्शों को भूलकर रावण, जयचन्द का अनुकरण करके मानवता का ह्रास कर रहे हैं । आज मानवता दानवता के हाथों बुरी तरह से लुट-पिट रही है । समाज का यह अधोपतन बहुतांशतः मांस भक्षण के कारण है । मांस खाने की दलील देने वाले प्रायः कहा करते हैं कि जीव जीवस्य भोजनम् । इस प्रकरण में हम प्रमाण सहित सिद्ध कर सकते हैं कि मनुष्य को कदापि मांस भक्षण नही करना चाहिए । इस सम्बन्ध में कुछ प्रमाण दृष्टिगोचर हैं जो इस प्रकार है—

वस्तुतः ब्रह्माण्ड में समस्त जीवधारियो को आहार के आधार पर दो भागों में विभक्त किया है । प्रथम शाकाहारी और द्वितीय मासाहारी मानव सर्वथा शाकाहारियों की श्रेणी आता है । शारीरिक सरचना को दृष्टिगत रखते हुए दोनो प्रकार के जीवो में उनकी आवश्यकता को देखकर स्पष्टतया अन्तर नजर आता है जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं ।

(१) मांसाहारी प्राणियो के दात नुकीले व तीक्ष्ण होते हैं जिससे वे सुगमता से मांस को चीर-फाड़कर खा सकें मगर शाकाहारी प्राणियों के दांत चपटे होते हैं जिनसे वे अपने आहर को पीस सकें ।

(२) मांसाहारी प्राणियों का यकृत शरीर के अनुपात में दूसरे आन्तरिक अंगों की संरचना को देखते हुए काफी बड़ा होता है जिसमें पित्त की मात्रा अधिक होने से वे मांस को शीघ्रता या सुगमता से पचा लेते हैं । शाकाहारी प्राणियों में यकृत तुलनामय छोटा होता है क्योंकि शाक सब्जी को पचाने के लिए उन्हें अधिक पित्त की आवश्यकता नहीं होती ।

(३) मांसाहारी जीवधारियों की अंतड़ियां शरीर की आकृति अनुसार कम लम्बी होती है जो मांस को पचाने में सहायता प्रदान करती है जब कि शाकाहारी प्राणियों में अंतड़ियां ज्यादा लम्बी मांस लिपटकर मांस भक्षण करने वाले मनुष्य को सड़ाकर रोगी बना देती है ।

(४) मांसाहारी प्राणियो को पसीना नहीं आता अतः वो अपने शारीरिक तापमान को सामान्य रखने के लिए जीभ निकालकर मुंह खोलकर चलते हैं परन्तु शाकाहारियो को पसीना आता है ।

(५) मांसाहारी प्राणी पानी जीभ से चप चप करके पीते शाकाहारी घूंट-घूंट कर पीते हैं । जैसे गाय, भैंस, मनुष्य आदि ।

(६) मांसाहारी प्राणियों के चलने में आहट नहीं होती तथा उनके पजो में नकीले नख होते हैं ताकि उन्हें शिकार करने में आसानी रहे ।

(७) मासाहारी प्राणियों की आखे गोल होती हैं और प्रायः चमकती हुई है जिससे वो रात में भी देखने की क्षमता रखते हैं । जैसे—शेर, बिल्ली, अजगर आदि । शाकाहारियों की आंखें बादाम जैसी आकृति की होती है जैसे मनुष्य, गाय हाथी इत्यादि ।

(८) मासाहारियो को अन्धेरे में दिखाई देता है । किन्तु शाकाहारियों को दिखाई नही देता, ।

(क्रमशः)

भारतीय आर्यसमाज

(पृष्ठ १ का शेष)

नेताओं ने पादाक्रान्त ही किया है और पेशेवर नेता बुद्धिवादियों को लच्छेदार उपदेश देने का मोह सवरण नही कर पाये हैं। अत: यदि स्वामी जी सचमुच आर्यसमाज के बौद्धिक वर्ग को अपने साथ लाकर कुछ ठोस कार्यक्रम बनाना चाहते हैं तो हमारी शुभ कामनाए उनके साथ हैं ।

स्वामी अग्निवेश ने इस सम्मेलन मे उठाये जाने वाले जिन मुद्दों की चर्चा की है उनकी उपयोगिता और प्रासंगिकता को लेकर दो राय नही हो सकती किन्तु अच्छा तो तब होता जब देश और जाति के समक्ष प्रस्तुत आज की राजनेतिक, सामाजिक और आर्थिक चुनौतियों तथा उसके सम्बन्ध में आर्यसमाज के दृष्टिकोण को लेकर हम पहले एक गम्भीर बहस करते, तत्पश्चात् सम्पूर्ण आर्यसमाज को हम अपने से सहमत कराते और एक बद्ध कार्यक्रम के साथ आगे बढ़ते । इसके लिये किसी पृथक् भारतीय आर्यसमाज की आवश्यकता मेरे विचार से तो नहीं है ।

आध्यात्मिकता और भौतिकता का समन्वय

भगवानदेव 'चैतन्य', एम. ए., साहित्यालंकार १२०/एल-१ सुन्दरनगर-१७४४०२ (हि० प्र०)

आज ससार में पहले से कहीं अधिक भौतिक सुख सुविधाए हैं मगर लगता है कि इस समस्त सुख सुविधाओ के होते हुए भी आज मानव पहले से कहीं अधिक असुरक्षित, दुःखी, भयभीत तथा अस्थिर बुद्धि हो गया है। सब कुछ होते हुए भी इसे लगता है कि यह किसी चौराहे पर किसी लुटे हुये मुसाफिर की तरह खड़ा हुआ है। वह चल तो रहा है मगर उसे ठीक-ठीक मालूम नही कि जाना कहा है। इसका कारण केवल और केवल मात्र मनुष्य की गलत विचारधारा ही है। मस्तिष्क की विकृति से ही मनुष्य के लिए ऐसी स्थिति पैदा कर दी है। मस्तिष्क विकृत होता है भोगवाद के कीचड़ मे निरन्तर डुबकी लगाने से और स्वस्थ होता है—त्याग, निःस्वार्थ एव परोपकार की भावनाओ को हृदय में स्थान देने से। इसलिए भौतिकता और आध्यात्मिकता का समन्वय होना परम आवश्यक है। यह भी एक दुर्भाग्य ही रहा है कि समय समय पर यहा एक दूसरे के एकदम विपरीत विचारधारा का प्रचलन हुआ। कुछ लोगो का सन्देश था कि आत्मा कुछ नही, यह शरीर ही सब कुछ है। इसी की सुखसुविधाओ का ध्यान रखें। इसी को परिपुष्ट करके भौतिक सुखो का भोग करें। दूसरी ओर इसके एकदम विपरीत ऐसी भी विचारधारा का प्रचलन हुआ कि यह शरीर तथा भौतिक ससार मिथ्या है—स्वप्न है अत ससार तथा घर बार की उपेक्षा करके लोगो ने जगल का रास्ता पकड़ लिया।

ये दोनो विचारधाराए अपने अपने स्थान पर ठीक हैं मगर अनुयायियो ने अतिवादिता से काम लिया। शरीर की सत्ता को प्रमुख मानने वालो ने केवल जो दृष्यमान है उसी को अन्तिम सत्य मानकर स्वय को भोगवाद की भट्टी मे झोंक दिया। वे भौतिक भोगो में डूबते चले गये मगर शान्ति हाथ न लग सकी। सुख-शान्ति की इसी दौड़ के कारण विज्ञान के आविष्कारो मे वृद्धि हुई। केवल शरीर के पोषक इन लोगो ने यहा तक कह दिया कि इस शरीर की सुख सुविधाओं के लिए ऋण करके भी घी पीओ क्योकि पुनर्जन्म तो होना नही अतः ऋण देने का या पुन इस ससार मे आने का तो प्रश्न ही नहीं है। इनके अनुसार तो—"यावतजीवेत सुख जीवेत ऋण कृत्वा घृत पीवेत, भसमी भूतस्य देहस्य पुनरागमन कुत।" भोगवाद की इस पराकाष्ठा तक जब व्यक्ति पहुच गया तो धर्म उसके लिए एक ढोंग बन गया। आध्यात्मवाद कुछ लोगो की चालाकी लगा तथा इन लोगो ने ईश्वर को गालिया दी। इन्होने बैंक बैलैंस, कारे, कोठिया तथा अन्य समस्त भौतिक पदार्थ अपने चारो ओर इकट्ठे कर लिए। विषय वासनाओं मे कण्ठ तक डूबे मगर शान्ति नही मिली। मन तो चचल है अत. इसकी और ला और ला की माग निरन्तर बढती ही गई। यहा पर तो ययाति जैसे लोग भी हुये जिन्होने वरदाना में लम्बी लम्बी आयु प्राप्त करके भी भोगो को तृप्त करने में गुजार दी मगर प्यास ज्यो की त्यो ही बनी रही। तृप्ति मिलना तो दूर रही बल्कि तृष्णाओ की भूख और भी अधिक से अधिक बढती गई। स्थिति भी रेगीस्तान मे पानी की तलाश मे भटकते हुए मृग के समान हो गई। दम भी टूट गया मगर प्यास नही बुझ सकी। इस तथ्य को उदघाटित करने के लिये हमारे महापुरुषो ने कहा है—"भोगा न भुक्ता स्वमेव भुक्ता तृष्णा न जीर्णा = वयमेव जीर्णा।" अर्थात हम भोगो को नही भोगते हैं बल्कि भोग हमे भोग जाते हैं और तृष्णा कभी समाप्त नही होती है हम समाप्त हो जाते हैं। यह है भोग-वादियो की कहानी उन्हे शान्ति नही मिलती बल्कि जीवन के दोराहे पर वे प्यासे के प्यासे ही रह जाते हैं।

दूसरी विचारधारा ने कहा कि जो दिखता है वह सब एक भ्रम मात्र है, एक सपना है। सत्य तो वह है जो दिखाई नही देता है। जो अदृश्य है वही सब कुछ है जो दृश्य है वह कुछ भी नही। इस विचारधारा के प्रचलन से व्यक्ति को कितना लाभ हुआ यह तो एक अलग विषय है मगर समाज को इससे बहुत ही अधिक हानि उठानी पड़ी है। इसी विचारधारा से जहा एक ओर प्रबुद्ध व्यक्ति घर, परिवार और समाज को त्यागकर जगलो में चले गये वही दूसरी ओर साधारण व्यक्ति भी भ्रम में पड गया। उसकी समझ मे यह नही आ या कि जिस प्रकृति की अपनी एक अटल सत्ता है वह मिथ्या कैसे हो सकती? जो दिखता नही उसे तो सत्य माने और जो दिखता हो उसे बिल्कुल भी न माने यह बात थोड़ी सी भी बुद्धि रखने वाले के गले से नही उतरती है। कुछ लोग तो सामाजिक दायित्वो को केवल इसलिए ठुकराते चले गये कि यह मिथ्या है और कुछ ने आध्यात्मिकता को इसलिए छोड़ दिया कि यह हमारे बस की ही बात नही है। इस प्रकार समाज को अत्यधिक क्षति पहुची। तर्क की कसौटी पर भी यह बात ठीक नही उतरती है। निष्कर्षत यह बात कि— ब्रह्म सत्य जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापर।" अर्थात ब्रह्म ही सत्य है, जगत मिथ्या है। जीव ब्रह्म ही है दूसरा कुछ भी नही है। यह बात समाज के लिये अत्यधिक हानिप्रद रही।

वैदिक विचारधारा आध्यात्मवाद और भौतिकवाद के समन्वय की बात करती है। भौतिकता और आध्यात्मिकता को अलग अलग करके देखा ही नही जा सकता है। विगत इतिहास मे यदि देखा, गया तो उसके बहुत ही अधिक परिणाम आने वाली पीढियो को भोगने पड़े है। भौतिकता में सुख तो है मगर यह सुख अल्प सुख है। इस अल्प सुख में शान्ति नही। आध्यात्मिकता मे ही भूमा आनन्द है। उपनिषदो ने बड़ी सुन्दर बात कही है कि अल्प सुख तो उस परमानन्द का आभास मात्र है उससे व्यक्ति कभी भी परितृप्त नही हो सकता है। भूमा सुख मे शाश्वत शान्ति मिल सकती है। इस सम्बन्ध मे वैशेषिक दर्शन के रचयिता ने बड़ी सार्थक बात कही है—"यतोऽभ्युदय निःश्रेयस सिद्धि स धर्म।" इस सूत्र मे महामुनि कणाद जी कहते हैं कि जिससे इस लोक और परलोक (दोनो लोको की) की सिद्धि हो वह धर्म है। इस सूत्र ने आध्यात्मिकता और भौतिकता का जितना

सुन्दर समन्वय है। इस लोक की उन्नति के लिये भौतिक पदार्थ आवश्यक हैं मगर साथ ही परलोक या मोक्ष की प्राप्ति के लिये आध्यात्मिकता का अवलम्बन परमावश्यक है। वास्तविकता यह है कि आध्यात्मिकता भौतिकता के बिना लगडी और भौतिकता आध्यात्मिकता के बिना अन्धी है। मनुष्य जीवन रूपी सिक्के के ये दोनो दो पहलू हैं—एक के बिना दूसरे का बिल्कुल भी अस्तित्व नही।

आज हमे स्थिति बिल्कुल ही उल्टी दिखाई देती है। आज का मानव माना कीचड से धोकर अपने शरीर को स्वच्छ बनाना चाहता है। अपनी आत्मा पर लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष आदि कुवृत्तियो को सजाकर उसके पवित्र हो जाने की आशा कर रहा है। आज का मानव कांटो पर सोकर फूलो की सेज का सुख चाहता है। आज का मानव धार्मिक बनना नहीं चाहता है—तभी तो भीतर की पवित्रता समाप्त हो गई है, केवल बाहरी निशान रह गये है। आज तो देखने मे धर्म ही पाप का मुख्य कारण बन गया लगता है। इसी लिये नई पढी पर यह उक्ति चरितार्थ हो रही है —

खुदा के बन्दो को देखकर ही खुदा से मुनकिर हुई है दुनियां,
कि जिस खुदा के ऐसे बन्दे हैं वह कोई अच्छा खुदा नही।

तथाकथित धार्मिक व्यक्तियो की भीतरी पवित्रता समाप्त हो गई है—केवल बाहरी निशान रह गये हैं। पाच ककार धारण कर लो तुम सिक्ख हो गये। ईसा पर ईमान लाओ, गले मे क्रास लटका लो तुम ईसाई हो गए। मुहम्मद पर ईमान लाओ, विशेष टाईप की दाढी रखो तुम मुसलमान हो गये। कण्ठी धारण करके विशेष प्रकार का तिलक आदि लगाओ तुम सनातनधर्मी हो गए। आज यही तो बन गया है धर्म का स्वरूप। आज जहा तक पवित्रता की बात है—चाहे तुम जितने ही पाप करो, राम मन्दिर बनवा दो, गगा मे स्नान कर लो या किसी पण्डित को बिठाकर उससे जाप करवा लो तुम्हारे पाप धुल जायेंगे। अन्ध साहिबको माथा नवाओ, सीढ़ी की मिट्टी माथे से लगाओ तुम धर्मात्मा बन जाओगे। ईसा या मुहम्मद पर ईमान लाओ वह तुम्हारे समस्त पाप क्षमा करवा देंगे। मैं समझता हूं कि ऐसे धर्म से बडा और कोई पाखण्ड नही हो सकता है। यदि ऐसे तथाकथित धर्म की कबीर, नानक और दयानन्द महापुरुषो ने आलोचना की है तो बुरी बात नही। यदि कार्लमार्क्स से ऐसे धर्म को अफीम की सज्ञा दी तो इसमे भी कोई आश्चर्य की बात नहीं है। यदि इसे ही धर्म मान लिया जाये तो फिर अधर्म क्या है? तो क्या धर्म वास्तव मे बुरी वस्तु है? क्या उसे त्याग देना चाहिये? धर्म ने यदि व्यक्ति को इतना ही अधिक विकृत कर देना है तो उसे छोड कर उससे क्यो न पीछा ही छुडा लिया जाए? लेकिन सन्त भर्तृहरि ने तो हमारे समक्ष एक अलग ही कसौटी रखी है कि —

आहार निद्रा भय मैथुन च सामान्यमेतत पशुभिनराणाम।
धर्मोहितेषाम् अधिको विशेषो धर्मेणहीन पशुभि समान ॥

अर्थात खाना पीना सोना डर और सन्तान पैदा करना ये सब (गुण-अवगुण) तो पशुओ और मनुष्यो मे एक समान हैं। मनुष्य मे यदि कोई विशेषता तो वह यह है कि वह धर्म पर चलने वाला प्राणी है, और यदि ऐसा नही है तो वह भी पशु के समान ही है। अब जब इस कसौटी पर हम मनुष्यको कर सकतेहैं तो धर्म को छोडकरतो उसका गुजारा नहीहो सकता। वेद मे धर्म को क्रियात्मकता के साथ जोडा है—विश्वासात्मकता के साथ नही। वेद का सीधा आदेश है—'धर्म चर'। वैदिक साहित्य मे कहीं भी धर्म शब्द दिखावे या बाहरी चिन्हो के लिये प्रयुक्त नहीं हुआ है बल्कि वह तो इस आशय को प्रकट करता है— 'न त्रिय धर्म कारणम्' सस्कृत भाषा का शब्द है जो कि धारण अर्थ करने वाली धातु से बना है—अत "धारयते इति धर्म"। अर्थात् जिसे धारण किया जाये वह धर्म है। मनुष्य जीवन को उच्च व पवित्र बनाने वाली ज्ञानात्मक एव क्रियात्मक शुद्ध सार्वजनिक मर्यादा पद्धति ही धर्म है। जैमिनी मुनि ने मीमासा शास्त्र के दूसरे सूत्र मे धर्म का लक्षण—"चोदना लक्षणोऽर्थो धर्म"। किया है। अर्थात लोक परलोक के सुखों की सिद्धि हेतु गुणो और कर्मो मे प्रवृत्ति की प्रेरणा धर्म का लक्षण है। मनु महाराज जी सदाचार को परमधर्म मानते हुए लिखते हैं—"आचार. परमो धर्म"। इस सदाचार को प्राप्त करने के लिये वे एक अमुल्य जीवन पद्धति का निर्देश भी करते हैं। मनुष्य सदाचारी और धर्मात्मा कैसे बन सकता है इसके लिए उन्होंने एक महत्त्वपूर्ण सूत्र दिया है—

धृति क्षमा दमोऽस्तेय, शौचमिन्द्रिय निग्रह.।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशक धर्म लक्षणम् ॥

अर्थात धैर्य, क्षमा, मन को प्रलोभनो मे न फसने देना, चोरी त्याग, पवित्रता, इन्द्रिय निग्रह, ज्ञान, विद्या, सत्य और क्रोध न करना ये दस धर्म के अर्थात धर्मात्मा पुरुष के लक्षण हैं। इस सूत्र मे भी अध्यात्मिकता और भौतिकता का सुन्दर समन्वय है। इस लोक और परलोक की उन्नति के लिए भला ये गुण आवश्यक नही है तथा भला कौन इन सुन्दर नियमो को अपनाना नही चाहेगा? महात्मा व्यास कहते हैं कि जैसा व्यवहार तुम अपने प्रति दूसरो से चाहते हो, तुम भी प्राणी मात्र से वैसा ही व्यवहार करो यह धर्म का उत्कृष्टतम स्वरूप है। तुलसीदास जी भी इन्ही भावो को कुछ इस प्रकार व्यक्त किया है —

परहित सरस धर्म नही भाई, पर पीडा सम नही अधर्म भाई।

इस विषय मे महर्षि दयानन्द जी के विचार भी उल्लेखनीय हैं—"जो पक्षपात रहित न्याय सत्य का ग्रहण असत्य का परित्याग रूप आचार है उसी का नाम धर्म और उससे विपरीत का नाम अधर्म है।" इन शब्दों में भी समन्वय की भावना ही परिलक्षित होती है। धर्म वास्तव मे न तो कोई अजूबा है न पोथियो मे बन्द कोई गुप्त बात है न यह बाहरी चिन्हो या परिधानों पर आधारित है और न ही कोई रटने की वस्तु बल्कि जिस व्यक्ति में समस्त मानवीय गुणो का समावेश है वही धर्मात्मा पुरुष है धर्मात्मा वह नहीं जो बडी गद्दी पर बैठा है, जिसके सैकडो चेले हैं, जादूई करिश्मे दिखाता है बल्कि व्यक्तिगत जीवन को पवित्र बनाकर प्राणीमात्र को सुख शान्ति पहुचाने में जो कटिबद्ध है वही धर्मात्मा है। जिसने इस लोक और परलोक के क्षेत्रो को साधने में अपना जीवन लगाया है वही आध्यात्मिक पुरुष है। धर्म एक नियम है एक व्यवस्था है, सुखी जीवन बिताने का एक नुस्खा है। जिस प्रकार दुर्घटनाओ से बचने के लिए एक नियम बनाया गया है कि प्रत्येक चालक को सडक के बाए चलना है। यदि एक भी चालक कही इस नियम का उलघन करता है तो उसका परिणाम दुर्घटना, दुःख और क्लेश होता है। ठीक इसी प्रकार मानव जीवन को सुखमय बनाने के लिए चहुँमुखि उन्नति के लिए कुछ नियम बनाए गए हैं। जो व्यक्ति इनके अनुसार चलता है उसी का जीवन क्लेश-रहित बनता है। धर्म या आध्यात्मिकता न तो व्यक्ति को यह शिक्षा देती है कि वह इस समाज को झूठा या असत्य कहकर जंगल का रास्ता पकडे और न ही ऐसा निर्देश देती है कि वह भौतिकता में ही आकण्ठ डूब जाए बल्कि इसके विपरीत वह तो समन्वय की बात कहती है। धर्म के उपरोक्त विवेचित लक्षणों मे कही भी भौतिकता और आध्यात्मिकता का टकराव नही है। ये दोनो ही मनुष्यो की लक्ष्य प्राप्ति के लिए साधक है बाधक नही। किसी भी नदी को पार करने के लिए जिस प्रकार नौका का आधार पानी होता है ठीक इसी प्रकार भौतिकता, ससार सागर को तैरने के लिए केवल साधन मात्र है मगर यदि यह आधार (पानी) ही नौका मे प्रवेश कर जाए तो वह नौका को ही ले डूबेगा। व्यक्ति को भौतिकता मे डूबना नही है अर्थात उसे अपने ऊपर प्रभावी नहीं होने देना है बल्कि उसे केवल आधार मात्र ही बनाना चाहिए। उपनिषदकार ने इस बात को बहुत ही भावपूर्ण ढग से समझाया है —

विद्याचाविद्या च यस्तद वेदोभय सह।
अविद्यया मृत्यु तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते ॥

अर्थात अविद्या (भौतिकता) से मृत्यु पर विजय प्राप्त करो और विद्या (आध्यात्म) से अमृत की प्राप्ति करो। वैदिक संस्कृति का यही अमर सन्देश है कि यदि व्यक्ति इस जीवन को सुखमय ढग से बिताकर परलोक में भी अच्छी गति चाहता है तो उसे आध्यात्म मार्ग का अवलम्बन करना ही पड़ेगा मगर इसके लिए भौतिक प्रसाधनों को पूर्णतया त्यागने की आवश्यकता नहीं।

पुस्तक समीक्षा

आत्मा की यात्रा (अर्जी साफ व ओल-अंग्रेजी में)

लेखक स्वर्गीय वन्देमातरम् वीरभद्र राव

प्रकाशक उद्गीत प्रकाशन सस्था

१४-३-१७८, गोशामहल हैदराबाद (आन्ध्र-प्रदेश)

मूल्य ३५) रुपये मात्र

वन्दे मातरम् बन्धुओ मे ज्येष्ठ, स्वर्गीय वीरभद्रराव का जून १९८८ मे निधन हुआ। वे बाल ब्रह्मचारी थे और उन्होने अपना सारा जीवन देश जाति और धर्म की सेवा में ही व्यतीत किया। अध्यात्म के क्षेत्र मे उनकी अभिरुचि अधिक थी। प्रस्तुत पुस्तक उनके इसी गहन चिंतन की उपज है जो दुर्भाग्यवश उनके जीवनकाल मे प्रकाशित नही हो सकी।

परमात्मा, जीवात्मा और प्रकृति अपने स्वतन्त्र तथा समन्वित रूप में सदा से साधु, सन्तो एव मनीषियो की चर्चा का विषय रहे है। परमात्मा तो अनादि, अनन्त, सच्चिदानन्द स्वरूप है ही, किन्तु जीवात्मा जो पृथ्वी पर स्थूल शरीर धारण कर जन्म लेता है उसकी वस्तुस्थिति क्या है ? क्या वह एक कालिक होकर शरीर के साथ ही मृत्यु को प्राप्त हो जाता है अथवा वह किसी अनन्त पथ का यात्री है जो परमात्मा के आदेशानुसार अपने कर्म-फलानुसार भोग-योनि और कर्म (मनुष्य) योनि को प्राप्त होता हुआ बार-बार पृथ्वी पर जन्म लेता है ? विद्वान लेखक ने अपनी पुस्तक में इसी विषय को सुन्दर ढग से प्रस्तुत किया है। जीवात्मा अजर अमर है। जन्म मरण के चक्र से मोक्ष प्राप्त करना ही उसका लक्ष्य है। जिसके लिए उसे बार बार पृथ्वी पर जन्म लेना पडता है। एक शरीर के जर्जर हो जाने पर वह दूसरे शरीर मे चला जाता है, और उसकी यह अनन्त यात्रा लक्ष्य प्राप्ति तक निरन्तर चलती ही रहती है।

पुस्तक की भाषा सरल और सुबोध तथा विचारो का प्रवाह तर्कपूर्ण और हृदयस्पर्शी है। जिज्ञासु पाठक इससे अवश्य लाभान्वित होगे।

(२)

"जीवात्मा"

लेखक श्री वीरेन्द्रसिंह पमार

प्रकाशक श्रीमती महादेवी धर्मार्थ न्यास

२८ यू०बी० जवाहरनगर दिल्ली-११०००७

मूल्य ४०) रुपये

'जीवात्मा" नामक पुस्तक में लेखक श्री वीरेन्द्रसिंह पमार ने अपनी चिन्तन धारा को जिस प्रकार अभिव्यक्त किया है उस पर गम्भीर मनन-चिन्तन समय पर लेखको द्वारा लिखा जाता रहा है।

१—जीवात्मा हृदय देश में या मस्तिष्क प्रदेश में रहता है।

२—जीव ही ब्रह्म है अन्य नहीं आदि आलोचनायें आलोचको द्वारा होती ही रहती हैं। ऋषि दयानन्द उस स्थानीय हृदय को ही आत्मा का स्थान माना है।

गीता में 'हृद्देशे अर्जुन तिष्ठति" की चर्चा भ० कृष्ण ने की है। श्री वीरेन्द्रसिंह पमार स्वाध्यायशील लेखक व विचारक हैं। आपने आत्मा के विषय में पूर्व विद्वानो द्वारा दिये गये विचारों के साथ अन्य ग्रन्थों का मनन करके विशेष जानकारी 'जीवात्मा" नामक पुस्तक में दी है।

यह विषय अति गम्भीर है तत्वज्ञानियों द्वारा व्यक्त विचार यह कि जीवात्मा का परिभाषा क्या है ? कोई विभु को मानते हैं कोई देह परिमाण मानते हैं।

लेखक महोदय ने स्वाध्याय मनन के पश्चात्-पुस्तक की सरचना की है। आध्यात्म चिन्तकों के लिये अति उपयोगी है।

आशा और विश्वास के साथ कहना पडता है कि अध्यात्म प्रेमी प्रबुद्ध विद्वान्-विवादहीन बनकर इस विषय पर निर्णय लेकर स्वय समझ सकेंगे।

पुस्तक पठनीय और सग्रहणीय है।।

(१)

स्वामी दयानन्द का राजनीतिक दर्शन

मूल्य ५०) पचास रुपये

लेखक डा० लालसाहब सिंह

प्रकाशक आर्यसमाज ११ विधानसरणी कलकत्ता

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् विभिन्न विद्यालयो द्वारा तथा स्वतन्त्र विचारको द्वारा महर्षि दयानन्द के भिन्न-भिन्न मन्तव्यो पर शोध प्रबन्ध व अन्य ग्रन्थो की सरचना की है।।

स्वामी दयानन्द एक वीतराग निस्पृह सन्यासी थे विद्वान् समाज सुधारक महापुरुष थे। उनके लिखित ग्रन्थो में स्थान स्थान पर राजनीति की पुट स्पष्ट झलकती है।

सत्यार्थ प्रकाश का छठा समुल्लास राजनीति की शिक्षा का पूरा अध्याय ही पठनीय व स्मरणीय है। उनके साहित्य में राज-नीति के सैद्धान्तिक पक्ष पर चिन्तन और तत्कालीन राजनीति की चिन्तन धारा ने राष्ट्र को नयी दिशा बोध देने में सफल प्रयास रहा। यह सत्य है स्वामी दयानन्द ने सक्रिय राजनीति मे कभी भाग नही लिया था पर इतिहास उनके राजनीतिक पृष्ठों का गवाह है।

डा० लाल साहब सिंह की यह प्रशसनीय उपलब्धि है कि इस ग्रन्थ में सैद्धान्तिक राजनीति विज्ञान के साथ ही व्यावहारिक राज-नीति विज्ञान का इतना विपुल विवेचन किया है। विषय प्रतिपादन में विद्वान् लेखक ने ऋषि की अभिव्यक्ति को भलीभाति स्पष्ट किया है।

१९वी सदी के पुनर्जागरण के पुरोधा स्वामी दयानन्द का राज-नीतिक दर्शन सर्वथा मौलिक तथा उपादेय प्रतीत हुआ है। उनके राजदर्शन में समस्त तत्व सन्निहित है जिनके द्वारा वर्तमान सम-स्याओ का समाधान भली प्रकार सम्भव हुआ है।

पुस्तक प्रकाशन में मान्यवर पूज्य प० उमाकान्त उपाध्याय बधाई के पात्र हैं जिन्होने इस अमूल्य निधि को आर्यसमाज कलकत्ता द्वारा प्रकाशित कराकर आर्य जनों को राजनीति का बोध कराया है।

पुस्तक पठनीय एव राजनीति मे स्वामी दयानन्द का विवेचन किया है। लेखक के साथ प्रकाशक पुन बधाई के पात्र हैं। पुस्तक के लेखक की सफलता के साथ अनेक शुभ कामनाये।

—सच्चिदानन्द शास्त्री सम्पादक

यज्ञ द्वारा वर्षा संगोष्ठी

भारत सरकार के अनुदान से मण्डल शीघ्र ही एक अभूतपूर्व राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन कर रहा है।

विषय—यज्ञ द्वारा वर्षा प्रेरित करने की विधियां' संगोष्ठी मे भाग लेने के लिए तीन प्रकार के विद्वानो को आमन्त्रित किया जायगा।

१—वैदिक विद्वान जिन्होने विधिविधान समेतयज्ञ करके वर्षा कराई है।

२—वैदिक विद्वान जो वर्षा तो नही करा पाये, परन्तु उनका विधि-विधान सम्बन्धी ज्ञान इतना परिपूर्ण है कि वर्षा करा सकते हैं।

इसके अतिरिक्त कुछ प्रमुख वैज्ञानिक भी आमन्त्रित किये जा रहे हैं जो हष्टि यज्ञ पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करेंगे। आगन्तुक विद्वान अपना मन्तव्य दें। पृष्टीय लेख द्वारा प्रस्तुत करेंगे जो दस मिनट मे पढ़ा जा सके। तिथियो तथा कार्यक्रम की सूचना यथा समय दी जायगी।

लेख पाठ के लिये आमन्त्रित विद्वानो के आतिथ्य तथा आवास की उपयुक्त व्यवस्था की जायगी। उन्हे मार्ग व्यय भी दिया जायगा। अधिक जानकारी के लिये उपरोक्त पते पर सम्पर्क करें।

—जयकुमार मुद्गल, मन्त्री

वि० वि० मण्डल, ५१-कृष्णपुरी मथुरा

यज्ञ सम्पन्न

हजारीबाग जिलान्तर्गत पित्तीज आर्यसमाज द्वारा यजुर्वेद पारायण यज्ञ गत दिनो समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। यज्ञ में समीपवर्ती ग्रामीण क्षेत्रो के काफी लोगो ने श्रद्धापूर्वक भाग लिया। छोटा नागपुर आर्य प्रतिनिधि सभा रांची के महोपदेशक प० गोविन्द प्रसाद आर्य 'विद्यावारिधि' और प० वासुदेव शर्मा 'वसु' (बोकारो स्टील सिटी) के प्रवचनो व भजनोपदेश से प्रभावित होकर परिवारो के लोगो ने मद्य और मास का परित्याग कर नवीन यज्ञोपवीत धारण किया और इस क्षेत्र में आर्य समाज के संगठन को मजबूत बनाने के लिए प्रतीज्ञा की। —दयाराम पोद्दार, मन्त्री

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज मन्दिर, नैनीताल—

मैं २१ मई १९९० को पिथौरागढ़ से चलकर अल्मोड़ा में आर्य समाजी पूरनसिंह जी के यहां रात्रिवास करके २६ मई को प्रातः १० बजे आर्यसमाज मन्दिर नैनीताल पहुंचा। आर्यसमाज नैनीताल का वार्षिकोत्सव २० से २७ मई तक निश्चित तिथियों में हर वर्ष की भांति हुआ। इस बार ११६वें वार्षिकोत्सव में २६ मई को सत्यपाल जी० सत्यनारायण रेड्डी यजमान थे। मैंने राष्ट्रभाषा सम्मेलन की अध्यक्षता का सौभाग्य पाया। उत्सव की शोभा बढ़ाने वाले आचार्य जैमिनी शास्त्री थे।

कारण सूक्ष्म स्थूल शरीर उपचार

"स्वामी जी, नमस्ते! मेरा पुत्र १२ वर्ष का है। पालतू कुत्ते ने उसे काट लिया है। चौदह सुइयां लगवाना उचित है अथवा आयुर्वेदिक उपचार।"

—चन्द्रभूषण तिवारी, रानीकी सराय (आजमगढ़) उ० प्र०

समाधान यदि कोई कुत्ता, किसी मनुष्य को काटने के बाद दस दिन के अन्दर स्वयं मर जाय, तो समझ लीजिये कि कुत्ता पागल है। सरकारी चिकित्सालय मे कुत्ता काटे की चौदह एन्टीरैबिक सुइयां लगवाना परमावश्यक है। अन्यथा स्वस्थ कुत्ता के काटे घाव पर साधारण मरहम-पट्टी की जाती है।

रोग विवरण के साथ ७५ पसे वाले तीन डाक लिफाफे भेजें—

स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती (कन्दाहारी)

आर्यसमाज पिथौरागढ़ (उत्तर प्रदेश)

गायत्री परिवार के संचालक

आचार्य श्रीराम शर्मा दिवंगत

व्यक्ति के जीवन में कब नया मोड आता है—कुछ पता नही ? आचार्य श्रीराम शर्मा एक साधारण से व्यक्ति थे। स्वामी दयानन्द और आर्य समाज से प्रभावित होकर मथुरा मे आर्य समाज से दूर कैसे हटे और उसी के मिशन का एक अंग।

१ – गायत्री परिवार यज्ञ

गायत्री परिवार नाम से एक सस्था को जन्म दिया उसके द्वारा लाखो सनातनी परिवारो में गायत्री मन्त्र से यज्ञ कराकर सारे देश मे एक आन्दोलन खड़ा कर दिया।

२—युग निर्माण योजना के प्रवर्त्तक आचार्य श्रीराम शर्मा ने नयी शैली से धर्म क्षेत्र से कर्म क्षेत्र मे उतरें।

मथुरा मे वृन्दावन मार्ग पर आपका आश्रम बना है १९५८ में सर्वप्रथम गायत्री महायज्ञ रचाया था।

सरल से सरल साहित्य भी आम जनता तक पहुचाया है।

३—हरिद्वार में शान्तिकुंज आश्रम

करोडो रुपयो की लागत से शान्तिकुज नामक सस्था को जन्म दिया। जहा सैकडो भक्त कार्यकर्त्ता के रूप में समर्पित जीवन बिताकर सेवाभाव से लगे हैं।

हर वर्ग का अलग २ काम बटा है और स्वयसेवी जन बिना कुछ कहें कार्य मे तत्पर रहते है।

४—उद्योग विभाग

व्यक्ति की साधना के साथ उसे उद्योग धन्धे की भी शिक्षा दी जाती है जिससे व्यक्ति जीवन मे भक्ति के साथ आत्म निर्भर भी हो सके।

५—ब्रह्मवर्चस स्थान

शान्तिकुज के साथ कुछ दूर हटकर ब्रह्मवर्चस नाम से एक वैज्ञानिक योग सस्थान (वैज्ञानिक मशीनरी) स्थापित किया है जिसे देखकर बडी प्रेरणा मिलती है।

६—साहित्य की संरचना

गायत्री मैत्री से लेकर पुराणो स्मृतियो आदि पर भी आपने कलम चलाई है।

मैं समझता हू एक साधारण से व्यक्तित्व मे महान व्यक्तित्व के गुण छिपे थे।

जीवन में एक बार

विगत दिवसो मे मुझे उनके शान्तिकुज आश्रम को देखने का अवसर मिला। मतभेद या मन भेद कुछ भी हो पर उनके कार्यशैली से मैं प्रभावित हुए बिना नही रह सका।

पता चला कि वह दर्शन नहीं देते है ?

मैंने एक पर्चे पर नाम पता काम लिखकर भेज दिया। कार्यकर्त्ता बडे प्रभावित थे, यह कौन हैं जिससे आचार्य जी ने मिलना स्वीकार किया।

माता जी के पास

सर्वप्रथम भोजन कराया उसके बाद आचार्य जी के पास ले जाये गये। हमे देखकर बडे हर्षे और बोले, आप बिना मिले ही चले जाते तो हमे अति दु ख होता। मैंने कहा कि आपके पास समय की बन्दिश है।

बोले आप आत्मीय जन हैं—हमारी आत्मा हैं आपसे भला कैसे नही मिलता। लगभग एक घण्टे तक वार्तालाप चला, कुछ काय साधण सा ढढरन पाये चेहरा आर्य समाज के बारे में नानावार्त्ता फिर बोले मै भी कुछ पीछे हटकर ऋषि का ही कार्य कर रहा हू। हाथ पैरो मे सूजन भी शिथिलता मालूम दे रही थी।

अधिकारियों की व्यवस्था में

अब प्रात के दर्शन बन्द किये जायेंगे और सामने ऊचे स्थान पर बैठ कर ही दर्शन देंगे। लम्बी वार्त्ता के उपरान्त मैं चला आयात मेरे साथ श्री ओमप्रकाश गोयल कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक सभा भी थे। प्रसन्नता के साथ। पर क्या पता था कि जीवन की अवसान वेला समीप हैं आज वही हम सब से दूर अति दूर चले गये हैं।

गुरुकुल झज्जर

(पृष्ठ ३ का शेष)

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के उपप्रधान सचालक डा० देवव्रत आचार्य जी द्वारा व्यायाम शिक्षक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। यह शिविर १०जून से २४ जून तक चला इस शिविर में देश भर के करीब ढाई सौ आर्य वीरों ने भाग लिया। जिसमे मुख्यत उत्तरप्रदेश हरियाणा दिल्ली, बिहार, राजस्थान, पजाब, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक,मध्यप्रदेश,आन्ध्रप्रदेश के आर्यवीर थे।

इस पन्द्रह दिन के प्रशिक्षण में आर्य वीरों को आत्मरक्षा के उपायों के साथ-साथ चरित्र रक्षा से भी अवगत कराया गया। साथ ही योग व्यायाम दण्ड शूल क्षरिका, असि, परशु, मल्लखम्ब, धनुर्विद्या और सैनिक शिक्षा का प्रशिक्षण दिया गया। कई वर्षों से "राईफल ट्रेनिंग के लिए भी आर्य वीर दल ने माग की इस वर्ष हरियाणा सरकार से अनुमति पा ली। यहा आर्य वीरो को देश की रक्षा हेतु तैयार किया जाता है।

अन्तिम दिन दीक्षान्त समारोह मे हरियाणा सरकार के शिक्षा, मन्त्री और स्वास्थ्य मन्त्री भी पधारे।

शिक्षामन्त्री ने गुरुकुल मे स्वामी ओमानन्द जी द्वारा स्थापित पुरात्व सग्रहालय को १० हजार दिए और स्वास्थ्यमन्त्री ने व्यायाम शाला को ११ हजार रुपये दिये इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने ५ हजार रुपये दिये।

विश्व वेद परिषद् चण्डीगढ़ का महोत्सव

स्वामी आनन्दबोध और स्वामी वेदर्षि व्यास योगीके भाषण

दिनाक १-६-१९९० रविवार को आर्य समाज सैक्टर-१६ की यज्ञशाला में विश्व वेद परिषद् चण्डीगढ के महोत्सव का यज्ञ १०॥ बजे आरम्भ हुआ जब कि शाला जहा आर्य जगत के मूर्धन्य सार्वभौमिक नेता सार्वदेशिक के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती और विश्व भर में उच्चकोटि के विद्वान स्वामी वेदर्षि व्यास योगी विराजमान थे वहा यज्ञ श्रद्धालु आर्य स्त्री पुरुषो से शाला भर गई थी, पूर्णाहुति और यज्ञशेष वितरण के पश्चात् उत्तर प्रदेश से पधारे प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य के मनोहर गीतो से प्रथम सत्र सभा का आरम्भ हुआ।

तत्पश्चात समाज के विशाल हाल मे सभाध्यक्ष स्वामी आनन्दबोध जी का स्वागत समारोह चण्डीगढ की आर्य सस्थाओ के प्रमुख नेता डी ए वी कालेज के प्रिन्सिपल श्री कृष्णसिह आर्य स्वागताध्यक्ष ने माल्य अर्पण से आरम्भ करते हुये सार्वदेशिक सभा प्रधान की भूरि २ प्रशसा और आर्य-जगत पर छाये हुये उनके विशाल नेतृत्व का वर्णन करते हुये वहा सादर अभिनन्दन किया वहा महामहोपाध्याय आचार्य विश्वश्रवा जी जो अब सन्यासाश्रम में प्रवेश करके स्वामी वेदर्षि व्यास योगी बने हुये है, एव डा० भवानीलाल भारतीय और नगर तथा बाहर की आर्य समाजो तथा सस्थाओ से पधारे हुए बहनो और भाईयो का हार्दिक स्वागत किया।

रजि० नं० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१५-७-१९९०) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U ९३
R.N 626/57 Licensed to post without Prepayment License No U 93 Post in D.P.S.O on 13-7-1990

धर्मान्तरण के बाद सुविधायें कायम रखने का विरोध

कानपुर। आर्य समाज गोविन्द नगर के तत्वावधान में केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य की अध्यक्षता में आयोजित सभा मे एक प्रस्ताव पारित कर ससद मे केन्द्रीय सरकार द्वारा प्रस्तावित उस विधेयक का प्रबल विरोध किया जिसमें निम्न वर्ग को मिलने वाली सुविधायें बरकरार कायम रखने का प्राविधान है।

प्रस्ताव में कहा गया है कि सविधान मे हरिजनो, पिछडे वर्ग तथा अनुसूचित वर्ग की यह सुविधाये उनके आर्थिक उत्थान द्वारा हिन्दू समाज के साथ पूर्णकार एकाकार होजाने के लिये दी थी। इस भावनाको न समझने के कारण उक्त विधेयक मे धर्मान्तिरण द्वारा उनको राष्ट्रीय मुख्य धारा से अलग करने का प्रोत्साहन देने का षडयन्त्र है। आर्य समाज ऐसे धर्मान्तरण को राष्ट्रान्तरण समझता है। अत ऐसे राष्ट्र विरोधी विधेयक को वापस लिया जाये। वरना आर्य समाज देशव्यापी आन्दोलन करेगा।

सभा की अध्यक्षता श्री देवीदास आर्य तथा सचालन श्री मुकुन्द दोहरा ने किया। सभा मे सर्वश्री जातिभूषण बालगोविन्द अवस्थी, श्रीमती वसनाकपूर वीणाचोपड़ा आदि ने उक्त विरोध मे विचार रखे।

—मन्त्री आर्य समाज गोविन्द नगर कानपुर

शुद्धि समाचार

मोरीस मार्टीन सुबोध कुमार बने

स्थानीय आर्य समाज मन्दिर आरा मे २५ जुलाई को सन्ध्या ५ बजे मोरीस मार्टीन हवलदार एम एम पी ने स्वेच्छापूर्वक ईसाई मत को छोड कर वैदिक धर्म को स्वीकार कर हिन्दू समाज में प्रवेश किया। उनका शुद्धि सस्कार आर्य समाज के कवितोपदेशक श्री सियाराम निर्भय के पौरोहित्य मे पूर्ण वैदिक पद्धति से सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर उपस्थित श्री इन्द्रदेव नारायण अधिवक्ता, प्रो० [illegible] अनूपवाला, जगतबिहारी वर्मा, कन्हैयालालजी, राधा कृष्ण सिन्धी [illegible] आदि नगर के प्रसिद्ध समाजसेवियो द्वारा श्री सुबोध कुमार का हार्दिक अभिनन्दन किया गया।

—महावीर प्रसाद मन्त्री

श्री अमरनाथ जी प्रेमी भजनोपदेशक पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा का निधन

—श्री अमरनाथ जी प्रेमी ग्राम फज्जुपुर पो० धारीवाल जिला गुरदासपुर का दिनाक २८-६-९० स्वर्गवास हो गया है। वह लगभग २० साल से रोग से पीडित थे। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि ईश्वर दिवगत आत्मा को शान्ति व परिवार जनो को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—सम्पादक

—आपको बड़े दुःख के साथ सूचित किया जाता है कि पं० डी. चौधरी (अधिष्ठाता) आर्य अनाथालय एवम् निर्देशक स्थानीय डी ए. वी. शिक्षा सस्थान फिरोजपुर का देहान्त २६-५-९० दिन शनिवार को हो गया है।

—सन्तोष चौधरी

आर्य अनाथालय फिरोजपुर छावनी

—कठुआ आर्य समाज के एक विशेष कृपालु पण्डित छज्जूराम जी का २१-५-९० को ८८ वर्ष की आयु में निधन हो गया। वह पिछले कुछ समय से अस्वस्थ थे।

कार्य कारिणी की बैठक मे एक शोक प्रस्ताव द्वारा पण्डित जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट किया गया। उन्होने हैदराबाद आर्य सत्याग्रह मे भी भाग लिया था जिसके लिये गत सितम्बर १९८९ में वेद प्रचार सप्ताह के दौरान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी (प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा) द्वारा उनका शाल ओढाकर अभिनन्दन किया गया था।

—सुरेन्द्र गुप्त, मन्त्री

मद्यपान

सुरा का सोम पान आज चल रहा शक्ति भक्ति बल विवेक डस रहा।
चल रही राजकीय प्रवञ्चना-अर्थ का अनर्थ आज हस रहा।
मद्यपान दुर्गुणों का मूल है, जल रहा यह जिन्दगी का फूल है।
डूबता दिमाग के विलास मे, बुद्धिजीवियो की यह भूल है।
सिन्धु सा स्वदेश का मथन किया, सब्ज क्या सुरा का पान किया।
बह रहे है बोतलो की धार मे, राष्ट्र के चरित्र का पतन किया॥
हो रही युद्ध को घोर दृष्टि है पाप ताप सब इसी की सृष्टि है।
बढ़ रही ठौर ठौर वारुणी-फन्द इसी का आसुरी कुवृष्टि है॥
तन्त्र भी न आज तक स्वतन्त्र है, बन रहा मनुष्य आज यन्त्र है।
मद्यपान का निषेध शीघ्र हो शान्ति का यही अचूक मन्त्र॥

—सत्यव्रतसिंह चौहान सिद्धान्त शास्त्री

गुरुकुल होशंगाबाद में प्रवेश प्रारम्भ

आर्य गुरुकुल होशगाबाद (म०प्र०) वेदाग दर्शन योग शिक्षण संस्था है। यहा महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा निर्दिष्ट आर्ष पाठविधि के अनुसार शिक्षण देने की व्यवस्था है। इसमे आजीवन वैदिक धर्म का प्रचार करने के इच्छुक युवक ब्रह्मचारियो को प्राथमिकता दी जाती है। इनका सारा व्यय गुरुकुल वहन करता है। छठी सातवी आठवी उत्तीर्ण छात्रो को भी प्रवेश दिया जाता है। ये छात्र महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक (हरियाणा) की मध्यमा शास्त्री और आचार्य कक्षा की परीक्षा देते हैं। घृत दुग्ध आदि सहित मासिक व्यय २००) दो सौ रुपये होता है। शारीरिक आत्मिक और बौद्धिक उन्नति करने का शुभ अवसर उपलब्ध हैं।

शीघ्र सम्पर्क करे —

—जगद्देव नैष्टिक आचार्य

आर्य गुरुकुल होशगाबाद (म० प्र०) ४६१००१

सार्वदेशिक प्रेस दरियागन्ज नई दिल्ली मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र

वेदामृत

घर में सुख-समृद्धि हो

वास्तोष्पते प्रतरणो न एधि,
गयस्फानो गोभिरश्वेभिरिन्दो ।
अजरासस्ते सख्ये स्याम,
पितेव पुत्रान् प्रति नो जुषस्व ॥
ऋग्० ७-५४-२ ॥

हिन्दी अर्थ—हे गृहपति यज्ञिय अग्नि । तुम हमारे उद्धारक होओ । हे चन्द्रतुल्य [आह्लादक ! तुम गायों और घोड़ों से हमारे घर की समृद्धि करो । तुम्हारी मित्रता में रहते हुए हम ,अजर (वृद्धावस्था से रहित) हों पिता जिस प्रकार पुत्रों को, उसी प्रकार हमें आनन्दित करो ।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१ दयानन्दाब्द १६६ दूरभाष : ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष २९ अंक २८] श्रावण कृ० १५ सं० २०४७ २२ जुलाई १९९०

काश्मीर में पाकिस्तान की सीमा सील करने पर आर्यसमाज द्वारा स्वागत

दिल्ली १६ जुलाई ।

भारत सरकार द्वारा काश्मीर में पाकिस्तान की सीमा सील करने पर आर्य समाज ने स्वागत किया है ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने अपने प्रेस वक्तव्य में कहा कि उन्होंने १९८६ से ही भारत सरकार को सावधान करते हुए बार-बार मांग की थी कि काश्मीर से कच्छ की खाड़ी तक एक विशाल सुरक्षा पट्टी बनाकर वहां सेवा निवृत्त भूतपूर्व सैनिक और उनके परिवारों को बसाया जावे।

स्वामी जी ने कहा—पाकिस्तान पंजाब और काश्मीर में उग्रवादियों को प्रशिक्षित करके भेज रहा है। इसका मुंह तोड़ उत्तर दोनों स्थानों पर पाकिस्तान की सीमा सील कर ईंट का जवाब पत्थर से दिया जाना चाहिए। दरअसल पाकिस्तान भारत के शांति प्रस्तावों को रद्दी की टोकरी में फेंक कर कूटनीति द्वारा देश के टुकड़े-टुकड़े करना चाहता है।

सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

हिन्दू विस्थापित परिवारों की तबाही

हिन्दू होने और भारत माता की जय बोलने की इतनी बर्बर सजा ! कश्मीर घाटी में मौत और सरेआम इज्जत लुटने का आतंक और वहां से पलायन कर देश के दूसरे हिस्सो में आने पर भूख, बदहाली, भविष्य के अतुल अन्धकार में जूझने की विवशता । इनसे अच्छे तो वे पाक परस्त उग्रवादी हैं जो देशद्रोह के "पुरस्कार" स्वरूप ऐम्नेस्टी इंटर नेशनल सहित तमाम प्रगतिशील मानवाधिकार संगठनों की सहानुभूति पाते हैं। हां, इन विस्थापितों ने गुनाह किया है कि वे "बेचारे उग्रवादियों" की गोलियों का शिकार नहीं बन पाए—इन्हें सजा दो।

इन्हें गर्मी में मार डालो, ये बीमार पड़े तो दवा मत दो, खाने को रोटी मत दो इनके बच्चों को शिक्षा मत दो कि इनकी अगली पीढ़ी भी जान सके कि हिन्दू और देशभक्त होने का अंजाम क्या होता है। जम्मू में हजारों विस्थापित परिवारो की तबाह जिन्दगी देखकर "सेकुलर अन्तरात्माएं" यही कहेंगी ।

प्रस्तुत है जम्मू में रह रहे कश्मीरी विस्थापितों की उजड़ी जिन्दगी का आंखों देखा लेखा जोखा।

कश्मीर के विस्थापितों की यह हालत

भीषण गर्मी के कारण पचास विस्थापित मौत के शिकार, अनेक शिविरों हालत में चिकित्सा का कोई प्रबन्ध नहीं ।

१—पेयजल और सफाई की व्यवस्था न होने से तरह-तरह की बीमारियों का प्रकोप ।

२—महीने में एक परिवार को सिर्फ ६ किलो चावल और २ किलो आटा ही मिलता है ।

३—शिक्षा की व्यवस्था न होने से सैकड़ों बच्चों का भविष्य अन्धकारमय।

४—वर्षा ऋतु में जहरीले कीड़ों और सांपों का भय ।

५—वेतन कब मिलेगा ? कुछ पता नहीं ।

६—वयोवृद्ध लोगों को पेंशन के लिए चण्डीगढ़ तक का सफर करना पड़ता है ।

(पाञ्चजन्य २२-७-९०)

राजनैतिक नेताओं के पाखण्ड का पटाक्षेप

श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह का त्याग पत्र वापिस

ओमप्रकाश चौटाला की उठा पटक

देश की कोटि-कोटि जनता से अनूठा मजाक

श्री देवीलाल का पुत्र मोह

चन्द्रशेखर की रहस्यमयी खामोशी

अखिल भारतीय अंग्रेजी हटाओ सम्मेलन

११-१२-१३ अगस्त को इन्दौर में

सम्मेलन के अध्यक्ष श्री ज्ञानी जैलसिंह जी होंगे

इन्दौर—श्री जगदीश प्रसाद वैदिक द्वारा युद्धस्तर पर प्रारम्भ किया गया ।

उद्घोष—"अंग्रेजी हटाओ" आन्दोलन का प्रारम्भ ११-से १३ अगस्त १९९० को इन्दौर से अखिल भारतीय स्तर पर होने जा रहा है। श्री वैदिक जी की माग काफी समय से चल रही है।

उन्हीं की प्रेरणा से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के माननीय अध्यक्ष श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने तीन सूत्री योजना अंग्रेजी हटाओ मद्य निषेध आन्दोलन, गोहत्या बन्द करो, की घोषणा की थी। उसी के अन्तर्गत श्री वैदिक जी का यह जन-आन्दोलन अखिल भारतीय स्वरूप, इन्दौर मध्य प्रदेश मे प्रारम्भ होने जा रहा है ।

पूर्व राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैलसिंहजी इस आयोजन की अध्यक्षता करेंगे । उद्घाटन, उत्तरप्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री मुलायमसिंह जी करेंगे । स्वागताध्यक्ष डा० प्रभाकर माचवे जी होंगे । (शेष पृष्ठ १२ पर)

सम्पादक—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

ईश्वर में अविश्वास क्यों ?

शास्त्रार्थ महारथी पण्डित रामचन्द्र देहलवी

(यह भाषण पण्डित रामचन्द्र देहलवी जी ने आर्य समाज बाजार सीताराम के वार्षिकोत्सव के अवसर पर दिया था। पाठकों के लाभार्थ उसे यहां दिया जा रहा है) —सम्पादक

आजकल कुछ मित्रादि अथवा दूसरे व्यक्ति जब मुझसे मिलते हैं तो मुझसे प्रायः यह प्रश्न किया करते हैं, "क्या कारण है कि ईश्वर के अस्तित्व के विषय में इतने भाषण होते हैं फिर भी लोगों का ईश्वर में विश्वास समाप्त होता जा रहा है?" बात सत्य है और मुझे यह स्वीकार करना पड़ता है कि लोगों का ईश्वर में अविश्वास बढ़ता जा रहा है। आज मैं ईश्वर में अविश्वास क्यों बढ़ता जा रहा है, इसके क्या कारण हैं, इसी विषय पर विचार रक्खूंगा।

(१) परिवार में ईश्वर-भक्ति या पूजा का न किया जाना आजकल परिवारों में न ईश्वर-भक्ति है न ईश्वर आराधन किया जाता है, सन्ध्या, अग्निहोत्र आदि की ओर भी कोई ध्यान नहीं है। इनके न होने के कारण ईश्वर के अस्तित्व का विश्वास समाप्त होता जा रहा है। जहां हर समय रेडियो बजता है; सिनेमा के गाने गाये जाते हैं ? और अल्ला से ज्यादा नम्बर सुरैया का है, वहां ईश्वर को कौन पूछता है। जैसा घर का वातावरण होता है, वैसा ही प्रभाव पड़ता है। घर में ईश्वर भक्ति या पूजा न होने के कारण ईश्वर को भूल जाते हैं, ईश्वर का विचार ही नहीं रहता। ईश्वर में आस्था और विश्वास उत्पन्न करने के लिए ईश्वर-भक्ति और पूजा जारी रहनी चाहिए।

(२) ईश्वर को ऐसे रूप में रखना जो समझ में न आये—ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, सर्वव्यापक है, परन्तु साम्प्रदायी लोगों ने उसको साधारण जनता के सामने उल्टे ढंग से रक्खा है। साम्प्रदायी लोगों ने परमात्मा को गलत समझा और उसको उसी गलत रूप में लोगों के सामने रख दिया। इसमें परमात्मा का कोई दोष नही क्योंकि परमात्मा तो सबको ज्ञान देता है। जब भी कोई बुरा कर्म करने लगता है तो उसे उस कार्य के करने में भय, शंका और लज्जा होती है, परन्तु इस ज्ञान को लेता कोई-कोई है। जैसे मच्छर सारे में 'भिन-भिन' करता है परन्तु सुनाई उस समय देता है जब वह कान के पास आता है। साम्प्रदायी लोगों ने अपने अज्ञान के कारण मकान के एक आले में गणेश की मूर्ति रख कर ईश्वर घोषित कर दिया। परन्तु क्या गणेश ईश्वर हो सकता है ? कदापि नही।

क्या हाथी का सर कभी किसी बच्चे के सिर पर आ सकता है? ऐसी बातों में अविश्वास तो होगा ही। महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में मूर्ति पूजा को अवैदिक बताते हुए इसके खण्डन मे १६ युक्तियां दी हैं। मूर्ति-पूजकों ने मूर्तियों को ईश्वर का प्रतिनिधि बना दिया। मूर्ति ने भी इतनी गैरत (शर्म) तो की कि ईश्वर नही खाता तो वह भी नहीं खाती क्योंकि वह ईश्वर का प्रतिनिधित्व कर रही है। आज सारी बातें उल्टी हो गई हैं। लोग ईश्वर को बनाकर उसके मालिक हो गये हैं। जो सबका ख्याल रखता है, लोग उसका ख्याल रखने लगे हैं उसको ताला लगाकर रखते हैं। उसे जगाने और खिलाने का ध्यान भी पुजारी रखता है। वास्तव में तो पुजारी लोगों को यह शिक्षा देता है कि मूर्ति जड़ है, चेतन नही है, इसकी पूजा नही करनी चाहिए, परन्तु लोग छोडते नही हैं। पुजारी का अर्थ है पूजा × अरि = पूजा का शत्रु। दिन के प्रकाश में बत्ती जलाकर और घण्टी बजाता हुआ पुजारी लोगों को मूर्ति का एक एक अवयव दिखाता है और उन्हें यह बताता है कि अच्छी प्रकार देख लो, यह पत्थर है, जड़ है, चेतन नहीं। इसी प्रकार एक बार नहीं, दो बार नहीं सात बार ऊपर से नीचे तक दिखाता है कि पत्थर है। लोग फिर भी हाथ जोड़े ही खड़े रहते हैं तो वह हाथ में पानी लेकर उनके ऊपर फेंकता है कि अब भी समझ में नहीं आता तो एक चुल्लू पानी में डूब मरो परमात्मा का वास्तविक स्वरूप तो वेद ही बताता है।

सपर्यगाच्छुक्रमकायमव्रण मस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम्।
कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधात्
छाश्वतीभ्यः समाभ्यः ॥ (यजु० ४० । ८)

वह प्रभु सर्वत्र व्यापक, सर्वोत्पादक, शरीर तथा नस नाड़ी के बन्धन से मुक्त, शुद्ध और पाप रहित है। वह अन्तर्दर्शी, मन की बात जानने वाला, सर्वत्र प्रकट और स्वतन्त्र सत्ता है तथा ठीक-ठीक रचना करता है।

कुछ लोग कहते हैं कि ब्रह्म ही ब्रह्म है और सब कुछ मिथ्या है परन्तु यह भी गलत बात है। कोई भी वस्तु अकेली बेकार होती है चाहे डाक्टर हो या प्रोफेसर दुकानदार हो या दस्तकार। एक डाक्टर है परन्तु न उसके पास दवाई है न औजार है तो उसका होना और न होना बराबर है। डाक्टर है, दवाई भी है, परन्तु मरीज नही तब भी बेकार है। अतः सिद्धान्त यह निकला कि किसी भी कार्य के लिए तीन वस्तुओं का होना आवश्यक है। इसी प्रकार परमात्मा, जीवात्मा और प्रकृति तीनों का होना अत्यावश्यक है। यह सिद्धान्त भी अशुद्ध है कि जीवात्मा परमात्मा बन जाता है। जीवात्मा परमात्मा कदापि नही बन सकता। (क्रमशः)

सम्पादकीय—

कमजोर नेतृत्व और अराजक सरकार

महज चार महीनो मे जनता दल की आपसी जूतमपैजार की वह आशका सच निकली है जिसका खतरा दिखने पर लोक सभा चुनाव के समय के काग्रेसी विज्ञापनो का मजाक बनाया जाता था।

अराजक सरकार की आशका गलत नहीं थी और इसके बावजूद अगर इसका नेतृत्व सभालने के लिये वी० पी० सिह राजी हुए थे, तो वे इस अराजकता को खत्म करने का कोई नैतिक अधिकार भी नही रखते। राष्ट्रीय अखण्डता को बनाये रखने के लिये प्रधानमन्त्री चाहकर भी कोई सगत व्यवस्थित, दीर्घगामी कठोर कार्रवाई नही कर सकते। इस मामले मे यह तथ्य भी महत्वपूर्ण है कि जनता दल कुल मिलाकर मुख्यत एक उत्तर भारतीय क्षेत्रीय पार्टी है। पूर्व और दक्षिण में उसे मूलत क्षेत्रीय पार्टियो का समर्थन है। इससे दो बाते निकलती है। एक तो मूलत क्षेत्रीय पार्टी होने के नाते उनकी राष्ट्रवादी चिताए अधिक सबल नही हो पाती हैं। दूसरी बात यह है कि समाज क्षेत्रीय पार्टियो के साथ जुडे होने की वजह से जनता दल के राष्ट्रवादी सस्कार भी थोडा दबे रह जाते हैं।

जनता दल या विश्वनाथ प्रतापसिंह की तुलना मे काग्रेस को शायद अधिक राष्ट्रवादी नहीं माना जा सकता। लेकिन वस्तुगत रूप से काग्रेस ने इस जिम्मेदारी को ज्यादा अच्छी तरह से पूरा किया है। हम कह सकते हैं कि इसके पीछे काग्रेस का सच्चा राष्ट्र प्रेम न होकर सिर्फ वोट हथियाने का दिमाग था। बल्कि इसी दिमाग की वजह से काग्रेस ने कई राष्ट्रीय समस्याए पनपने भी दी ताकि फिर उसके खिलाफ कठोर कार्रवाई करके देशभक्ति के मुद्दे को भुनाया जा सके। यह भी कह सकते हैं कि काग्रेस की इस दिखावटी देशभक्त राजनीति में अपराधिकता का तत्व भी है, जिसका सबसे घिनौना रूप नवम्बर ८४ के दगो में दिखाई पडा था। कम से कम इन्दिरा गाधी में यह राष्ट्रवादिता इसलिए भी थी, क्योकि कही न कही उनके मन मे देश को अपना साम्राज्य समझने की भावना भी थी। इसलिए इन्दिरा गाधी ने सिक्किम को भारत मे मिलाया और पाकिस्तान का विभाजन करवाया। निश्चित रूप से यह कोई महान भावना थी या नही ?

लेकिन हमे यह याद रखना चाहिए कि राष्ट्र राज्यो के पीछे चाहे कितनी भी पवित्र भावना क्यो न हो, उनके बनने बढने और मजबूत होने के पीछे के तरीके कभी भी बहुत पवित्र नही रहे हैं। राष्ट्रवाद के विचारक मैकियावेली ने महान राजनीतिज्ञ को शेर और लोमडी का मिला-जुला रूप माना है। तमाम कारणो से काग्रेस में इस राजनीति की परम्परा बची हुई हालाकि जब राजीव गाधी ने पाकिस्तान को नानी याद दिलाने का सार्वजनिक सकल्प किया था, तब वे हास्यास्पद ही अधिक दिखे थे। राजीव ने इन्दिरा गाधी की दुर्गा तकनीक को उत्तराधिकार मे पाया ही नही है। लेकिन इस सबके बाद भी वे काग्रेस के ही नेता है और काग्रेस के पुराने फार्मूलों का ही वे इस्तेमाल कर रहे हैं।

विश्वनाथ प्रतापसिंह ने काग्रेस से अलग हटकर राजनैतिक समीकरण बनाया है, जिसमे अल्पसख्यक साम्प्रदायिकता की हिस्सेदारी सामान्य से बहुत अधिक है। इस मायने मे अरुण नेहरू और आरिफ के समीकरण ठेठ काग्रेसियों वाले ही थे। यह निर्विवाद सत्य है कि किसी भी देश की बहुसख्यक साम्प्रदायिकता फासीवाद के पास और अल्पसख्यक साम्प्रदायिकता अलगाववादके पास पहुचनेकी कोशिश करती है। इसलिए यह तो तय ही था कि विश्वनाथ प्रतापसिंह की अल्पसख्यक साम्प्रदायिकता देश को अलगाववाद के रास्ते पर धकेलेगी। इसमें अगर कोई कसर हो सकती थी तो विश्वनाथ प्रतापसिंह के ढुलमुल व्यक्तित्व ने उस कमी को भी पूरा कर दिया। अगर वे उत्तर प्रदेश मे डकैतो से खीझकर मुख्यमन्त्री पद छोड सकते है तो वे अलगाववादी आतक का मुकाबला कैसे करेंगे ? फिर जब उन्होने पूरी विपक्षी राजनीति मे पाकिस्तान वगैरह की धमकियो का जुबानी जवाब भी नही दिया तो वे आज यह काम कैसे कर सकते हैं।

इतना कमजोर रहने की शर्त पर ही सत्ता मिली थी काग्रेस से बाहर निकल कर उन्होने नैतिकता के नियमो ताक पर रख कर हर किस्म के तत्वो से इस तर्क के आधार पर समर्थन लिया कि जब आग लगती है तो बुझाने वालो का चरित्र नही पूछा जाता है। तो ये सभी तत्व अपना स्वार्थ साधना चाहते है। एसे हालात मे एक अराजक माहौल पैदा होता ही है। बाहर की उपेक्षा आज घर के लोग उठा-पटक की हवा ज्यादा दे रहे है जब कि उसकी नेता गिरी आपके हाथ न होकर दूसरो के हाथो मे है। श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह के नेतृत्व का यही सकट है हा यह ठीक है कि आप दूसरो के दम पर मुखिया बन गये। अब आप अपने से पूछें कि अपनो से ही आप खतरे के निशान पर खडे है खड ही नही है ओमप्रकाश चोटाला के कारण आप इतने क्षुब्ध है कि आपने पार्टी अध्यक्ष को त्याग पत्र तक दे दिया है। पिछली जनता पार्टी सरकार के सारे-कारनामे इस जनता दल ने छ मास में ही दिखा दिये। आगे देखिये होता है क्या—

फिजी के लोकतांत्रिक आन्दोलन को भारत सरकार द्वारा समर्थन की पुष्टि

विदेश मन्त्रालय का पत्र सार्वदेशिक सभा प्रधान के नाम

नई दिल्ली १४ जुलाई १९९०

विदेश मन्त्रालय के सचिव डा० मधुप मोहता ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के नाम अपने पत्र द्वारा सूचित किया है कि स्वामी जी के विदेश मन्त्री को लिखे गये पत्र के बाद विदेश मन्त्री श्री इन्द्रकुमार गुजराल ने ससद के दोनो में यह वक्तव्य दिया कि भारत सरकार फिजी में भारतीय मूल के लोगो की समस्या के प्रति सजग है तथा पूरी तत्परता से उनके मानवाधिकारो के सरक्षण हेतु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भरसक प्रयास कर रही है। श्री गुजराल ने कहा कि आज के इस युग में फिजी की इस गैर कानूनी सरकार की जातिवादी नीतिया स्वीकार नही हो सकती, जातीय भेदभाव तो दक्षिण अफ्रीका से भी पलायन कर रहा है और फिजी मे भी यह बहुत दिन नही टिक सकता। यह गैर कानूनी सरकार लोगो मे फूट डालकर शासन करने की पुरानी युक्ति को अपना कर सत्ता मे बनी रहना चाहती है, अत यह जरूरी है कि विश्व समुदाय इन घृणास्प्रद प्रथाओ के विरुद्ध अपनी आवाज उठायें।

श्री गुजराल ने यह भी कहा कि भारत लोकतन्त्र और जातीय समरसता की बहाली के लिये फिजी के बहादुर लोगो के सघर्ष मे लोकतान्त्रिक आन्दोलन के प्रति विश्व जनमत जागृत करेगा और उसे अपना समर्थन देता रहेगा।

हम जातीय भेदभाव के विरुद्ध उसका रूप चाहे कुछ भी हो और चाहे वह कहीं भी बरता जाये, जब भी मौका मिलेगा, अपनी आवाज बराबर उठाते रहेंगे।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

राष्ट्रीय पत्रकारिता का यह ओजस्वी पुरोधा!

स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

पुस्तक का नाम—राष्ट्रीय पत्रकारिता के पुरोधा

सम्पादक—वीरेन्द्र कुमार आर्य। परामर्शदाता मण्डल—क्षेमचन्द्र सुमन, जयप्रकाश भारती, डा० श्यामसिंह शशि, डा० वेदप्रताप वैदिक, रासासिंह तथा अन्य।

पृष्ठ संख्या—२६०, (आकार ९३×३६×१६) मूल्य १२५ रु० छपाई सफाई, साजसज्जा उत्तम।

मिलने का पता—(१) नया युग पुरुष केसरगंज, अजमेर (२) आर्य-समाज अनारकली, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-१

पिछले वर्ष मुझे समाचार मिला था कि क्षितीश जी के कतिपय पत्रकार मित्र उनके ७४ वें जन्म दिवस पर उन्हें एक स्मारिका भेंट करना चाहते हैं। साधारणतया ऐसी स्मारिकायें २५वें, ६०वें, ७५वें, ८०वें, जन्म दिवस पर या इन वर्षों की पूर्ति पर भेंटकी जाती हैं। भला ७४वा भी कोई सम्मान वर्ष होता है। पर व्यक्ति के लिए तो अपना प्रत्येक जन्म दिवस आत्मीयता की भावना रखता है। मुझसे जब किसीने निवेदन किया, तो मैंने अटपटा-सा एक शीर्षक दिया—"मेरे क्षितीश! हीरा हो, किन्तु कीचड़ में फंसे।"

क्षितीश जी के सम्पर्क में इतने दिनों से हूं। मैं समझता था कि इनके विषय में मैं बहुत कुछ जानता हूं, जिसे मुहावरे में कहना चाहिए—इनकी नस नस पहचानता हूं। पर इस स्मारिका को देखकर, जिसका सम्पादन भाई वीरेन्द्र कुमार आर्य ने किया और जिसका प्रकाशन सजधज के साथ 'नया युगपुरुष' अजमेर ने किया, मुझे ऐसा लग रहा है कि प्रतिदिन के परिचित क्षितीश जी को समझने-बूझने में मुझे धोखा ही हुआ है।

क्षितीश जी का एक स्वरूप पत्रकारिता का है, पर उन्होंने किसी संस्था से पत्रकारिता का पाठ्यक्रम नहीं सीखा। मैं अपने कई परिचितों को जानता हूं जिन्होंने विश्वविद्यालय के स्नातक होने के अनन्तर पत्रकारिता को जीवन का लक्ष्य बना लिया। पर क्षितीश जी की पत्रकारिता उनके कर्मयोग का का सहज परिणाम है। अफ्रीका के जंगलों में पत्रों और पत्रकारों ने जीवन में बड़े-बड़े काम किये। व लुप्त व्यक्तियों को बीहड़ वनों और भूमियों में से ढूंढ निकाला। विश्व समाचारों की प्राथमिकता पर विदेशी समाचार पत्र जितना धन व्यय कर सकते हैं, वह हमारी कल्पना के बाहर की बात है। हमारे देश की पत्रकारिता सम्भवतया अभी उस श्रेणी की नहीं है।

पत्रकारिता आज एक समुन्नत शृंखला का नाम है। प्रेस के कार्यालय में बैठा सम्पादक-मण्डल, जो अग्रलेख भी लिखता है, समाचारों का चयन भी करता है, उनकी भाषा भी संवारता है, संवाद का शीर्षक बनाता है और प्रातःकाल जब समाचार पत्र छप कर बाजार में आता है, वह स्वयं यह जानना भी चाहता है कि उसकी सम्पादन-कला की जनता पर क्या संवेदना हुई। सम्पादन-कला का अत्यावश्यक वह अंग भी है, जो दूर से संवाद इकट्ठे करता है, और टेलेक्स या टेलिप्रिण्टर द्वारा उन्हें सम्पादकके कार्यालय में भेजता है।

प्रत्येक समाचार पत्र या पत्रिका के कतिपय स्थायी स्तम्भ होते हैं :—

(१) वर्गीकृत विज्ञापन, (२) बड़े-बड़े नगरों के राज्य सम्बन्धी या जन सामाजिक समाचार, (३) बाजार के भाव (४) खेल कूद के विवरण आमोद-प्रमोद (५) लोकप्रिय विज्ञापन और औद्योगिक विवरण, (६) आतंकवाद, शान्ति और क्रान्ति के समाचार, (७) अन्तर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक और शासनिक नीति, (८) फलित ज्योतिष (फलित ज्योतिष स्वतन्त्र भारत की देन है)।

क्षितीश जी स्वयं कहते हैं—'१९४७ के देश विभाजन के बाद मेरी पत्रकारिता प्रारम्भ हुई। देश-विभाजन का उत्तरदायित्व कांग्रेसी सरकार और अंग्रेजों पर था। इसीलिए क्षितीश जी आज तक हिन्दू पक्षधर हैं। गुरुकुल कांगड़ी के वे १९२६ से विद्यार्थी बने। स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या या बलिदान हो गया था। उसी वर्ष क्षितीश जी गुरुकुल में प्रविष्ट हुए। १९३९ में हैदराबाद का सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ। १९३९ के अगस्त में जेल से छूटकर क्षितीश वापिस आये "आर्य सत्याग्रह में गुरुकुल की आहुति" पुस्तक लिखी। आत्माभिमानी तो वे ही जीविका के सम्बन्ध में पिता की सहायता किंचितमात्र भी उन्हें स्वीकार नहीं थी। जनगणना के अवसर पर, प्रवृत्ति के विरुद्ध भी, उपदेशकी स्वीकार की। कार्य क्षेत्र मध्यप्रदेश और विदर्भ बना। देश विभाजन के दुर्दिन आये 'अर्जुन' और हिन्दुस्तान जैसे समाचार पत्रों से क्षितीश जी की पत्रकारिता प्रारम्भ हुई। टेलिप्रिण्टरों के अभाव में तारों के बण्डलों के आधार पर ही समाचारों का सम्पादन आरम्भ हुआ। बाद में 'अर्जुन' को राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने खरीद लिया। मुझे याद है—उस समय की पत्रकारिता में ख्याति गणेश शंकर विद्यार्थी, कृष्णदत्त पालीवाल, विष्णुराव पराड़कर, माखनलाल चतुर्वेदी, इन्द्र विद्यावाचस्पति और आर्य समाज में आर्य मित्र के सम्पादक पं० हरिशंकर शर्मा की थी। यह युग हिन्दुत्व का था—कांग्रेस में भेद उत्पन्न होते जा रहे थे। इस क्रान्ति-काल के अवसर पर हिन्दुओं की प्रवृत्ति मुस्लिम विरोधी की ओर मुड़ चुकी थी।

जब से भिण्डरावाले ने अपने विचारों द्वारा सिक्खों को हिन्दुओं के विरुद्ध उकसाना आरम्भ किया, देश के सामने एक नयी समस्या उभरकर ऊपर आई, जो आज भी उतनी ही ज्वलन्त है, जितनी इन्दिरा के जीवन काल में थी।

क्षितीश जी का व्यक्तित्व और उनकी पत्रकारिता इन सब परिस्थितियों का सहज परिणाम है। आर्य समाज, मुस्लिम विरोधी मनोवृत्ति, हिन्दुत्व पोषक राष्ट्रीयता यह सब पाकिस्तानी मनोवृत्ति का स्वाभाविक परिणाम था। १९५२ से १९७७ तक "हिन्दुस्तान" में कार्य करते करते क्षितीश जी को कटु और मधु दोनों अनुभव हुए। सभी शीर्ष स्तम्भों पर और अनेक विधाओं में लिखने का अवसर मिला। रविवासरीय संस्करण के सम्पादन का भार भी संभाला। क्षितीश जी के कुछ ललित अग्रलेखों का संकलन भी तीन पुस्तकों के रूप में प्रकाशित हुआ।

क्षितीश जी आजकल "आर्य जगत्" (साप्ताहिक) के सम्पादक हैं। "आर्य जगत्" का सम्पादन मानो आग से खेलना है। "आर्य जगत्" आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का पत्र है। जब से क्षितीश जी ने उसे संभाला है, इसमें जान आ गई है। डी. ए. वी. संस्थाओं से इसका सम्बन्ध है। आर्य समाज का यह सर्वोत्तम पत्र है। आर्य जगत् की गति विधियों का यह प्रवर्तक और मार्गदर्शक है। विद्वानों का भी, दार्शनिकों का भी, कर्मकाण्डियों का भी और सक्रिय राजनीति से उपेक्षित होने पर भी राष्ट्रीय गतिविधियों को स्पष्ट और ठीक ठीक जनता के समक्ष रखने वालों का भी। क्षितीश जी की विश्वव्यापी गतिविधियों की पकड़ भी उल्लेखनीय हैं। क्षितीश जी का सबसे उत्कृष्ट गुण उनकी ईमानदारी है और उन्हें दूसरों की ईमानदारी भी पसन्द आती है।

मेरी आयु ८५ वर्ष की है, जीवन की सन्ध्या स्पष्ट सामने दीख रही है। आर्य समाज कर्मकाण्ड के दलदल में फंसता जा रहा है। रूढ़िवादिता अज्ञात छिद्रों से इस उदात्त संस्था के भीतर प्रवेश कर रही है। सत्ताधारी अपनी अपनी संस्थाओं को जोरों से पकड़े हुए हैं। भविष्य की न इन्हें सूझ है और न चिन्ता। संसार की एक मात्र उदात्त संस्था को इस प्रकार जर्जरित होते हुये देखकर आश्चर्य होता है और दुःख भी। क्षितीश जी ऐसे पत्र के जाने माने सम्पादक हैं। उन्हें सम्भलकर इस संस्था का नेतृत्व करना है—वे प्रयत्नशील हैं और जागरूक हैं। 'आर्य जगत्' के संचालकों ने उन्हें सम्पादकोचित स्वातन्त्र्यकी छूट दे रखी है। यह स्वातन्त्र्य ही उनका सम्बल है और सब लोग उनका सम्मान करते हैं।

पर्यटन-प्रेमी क्षितीश जी के एक लेख का मैंने विशेष आनन्द लिया—'जब मैंने बैरियर रीफ का पीछा किया।' यह कहानी १९४० की है। हैदराबाद जेल से मुक्ति होने के दिनों की कहानी ('निजाम की जेल में')

(शेष पृष्ठ ११ पर)

आर्यसमाज का आरम्भिक युग तथा शुद्धि आन्दोलन

लेखक : प्राध्यापक राजेन्द्र जिज्ञासु वेद सदन, अबोहर-१५२११६

मथुराश्रम बम्बई के प्रमुख स्वर्गीय महात्मा विश्वनाथजी ब्रह्मचारी की यह प्रबल इच्छा थी कि आधुनिक युग मे शुद्धि-आन्दोलन का इतिहास लिखा जावे। उन्होंने एतद्विषयक चर्चा करते हुए कई बार मुझे कहा कि महर्षि दयानन्द से लेकर प० लेखराम काल तक आर्य समाज द्वारा किये गये शुद्धि कार्य पर एक ओजपूर्ण, प्रामाणिक व प्रेरणाप्रद पुस्तक लिखू। मैंने हर बार उन्हे यही उत्तर दिया कि यह कार्य हो जावेगा, मैं करूगा परन्तु कुछ प्रतीक्षा कीजिये। देश का यह दुर्भाग्य है कि आज वह महान तपस्वी जाति रक्षक महात्मा विश्वनाथ हमारे मध्य नही। उनका आर्य समाज से बड़ा स्नेह था। अब पटियाला पजाबी विश्वविद्यालय से एक सज्जन ने शुद्धि आन्दोलन पर ही पी० एच० डी० कर लिया है। मैंने इस बन्धु का शोध प्रबन्ध विहगम दृष्टि से देखा है। अच्छा परिश्रम किया है परन्तु बहुत कुछ महत्त्वपूर्ण सामग्री इस पुस्तक मे नही आ सकी। किसी की भी कृति सर्वाङ्गपूर्ण होनी कठिन है।

सुना है कि दीनदयाल शोध सस्थान देहली से भी शुद्धि-आन्दोलन पर कोई पुस्तक छपी है। राष्ट्रीय स्वयं सेवक सघ के इस सस्थान ने शुद्धि आन्दोलन का इतिहास देते हुये बड़ी सकीर्णता (या यह कहें कि अज्ञानता) का परिचय दिया है। आर्य समाज पर इसमें गिनती की कुछ पक्तिया दी गई हैं। इसके लिए हम सघी भाइयों को कोई दोष नहीं देते। हमें तो हर्ष है कि वे शुद्धि की बात ही नही करने लगे, शुद्धि यज्ञ भी करने लगे हैं। वे प० लेखराम का नाम न भी लें कोई बात नहीं—इतिहास यही साक्षी देगा कि यह काम तो प० लेखराम का ही है।

हम आज इस लेख मे मैं आरम्भिक युग की कुछ महत्त्वपूर्ण शुद्धियो की चर्चा करूगा। यह वे शुद्धिया हैं जिनसे एक विशेष हलचल मची। कोई पाठक यह न समझे कि इस काल में इतने बन्धु ही शुद्ध किये गये। मैंने प० लेखराम जी के जीवन-चरित में इसी काल की और भी अनेक शुद्धियो का वर्णन किया है। आर्य समाज के आरम्भिक युग मे आर्य-समाज रावलपिण्डी, अमृतसर, मुरादाबाद, देहरादून, लाहौर, प्रयाग व देहली शुद्धि के कार्य में विशेष रूप से सक्रिय रहे। तब शुद्धि का विरोध केवल मुसलमान व ईसाई ही नहीं करते थे, प्रत्युत पौराणिक हिन्दू शुद्धि के सबसे बड़े विरोधी थे।

एक और विशेष बात शुद्धि के सम्बन्ध में यह थी कि कहीं-कही जागरूक सिख शुद्धि के कार्य में आर्य समाज के प्रबल समर्थक थे। प० लेखराम जी के चरित्र में भी मैंने कुछ घटनाए दी है और ऐसी घटनाए एक दो नही बीसियो घटित हुई कि ईसाई व मुसलमान बनाये गये सिखो को आर्य समाज ने शुद्ध करके उनके परिवारो से मिलाया। ऐसी घटना घटित होने पर समझदार सिख्खो आर्य समाज से सम्पर्क किया करते थे। आश्चर्य तो यह है कि कादियां के मिर्जाई जिन्होने देश विभाजन के पश्चात भी सिखो मे भ्रामक विचार पैदा करके हमारे राष्ट्र को हानि पहुचाने मे कोई कसर नही छोड़ी।

इन मिर्जाइयो के चक्र में आये हुये एक भी सिख को कोई अकाली भाई या सिंह सभाई जत्थेदार न बचा सका। हम केवल मुहम्मद यूसफ (पूर्व स्वर्ण सिंह) का एक उदाहरण देना ही पर्याप्त समझते हैं।

एक और बात उल्लेखनीय है। पूना मे आर्य वीर प्राध्यापक नानेकर जी ने कहा कि आर्य समाज के विद्वान आधुनिक काल में मुहम्मद उमर (महाशय कन्हैयालाल जी) देहरादून की शुद्धि को इस युग की पहली शुद्धि मानते हैं परन्तु यह ठीक नही। कन्हैयालाल जी की शुद्धि से कुछ वर्ष पूर्व महाराष्ट्र में बड़े सघर्ष से एक ईसाई बनाये गये युवक को शुद्ध किया गया था। मैंने श्री नानेकर जी से कहा कि मैंने मुहम्मद उमर जी को शुद्धि विषयक जो लिखा है वह तथ्यपूर्ण है। आर्य समाज के इतिहासज्ञ स्वर्गीय लौह पुरुष स्वामी श्री स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ने इस शुद्धि के बारे यह लिखा है कि जन्म के किसी मुसलमान की यह प्रथम शुद्धि थी। हमारा कथन यह नहीं कि यह प्रथम शुद्धि थी। स्वामी श्री स्वतन्त्रानन्द जी व मुन्शी केसरसिंह जी आदि आर्य विद्वानो ने शुद्धि का यही महत्त्व लिखा है। इस तथ्य को कोई झुठला नही सकता। यह ऋषि की एक अद्भुत देन है। हर्ष का विषय है कि श्रीयुत नानेकर जी ने भी अपने एम फिल के शोध प्रबन्ध में इस पहलु पर अच्छा प्रकाश डाला है। महर्षि के उपदेशो को श्रवण कर चालीस वर्ष पूर्व ईसाई बने हुए एक बगाली केदारनाथ शुद्ध हुए। पादरी खड़कसिंह तो ऋषि के दर्शन करके ही तृप्त हो गये और वैदिक धर्मी बन गये। पादरी खड़कसिंह की शुद्धि की चर्चा तो पटियाला वाले शोध प्रबन्ध में है केदारनाथ बगाली की शुद्धि का उल्लेख उसमे नही। इन शुद्धियो का तब बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा था।

श्री मुहम्मद उमर की शुद्धि के पश्चात जिस शुद्धि का सर्वाधिक महत्त्व है वह श्री मौलाना अब्दुल अजीज की। आपको हरजसराय नाम दिया गया। यह शुद्धि सस्कार दिसम्बर १८८३ मे सम्पन्न हुआ, श्री हरजसराय गुरुकुल कागड़ी के भूतपूर्व उपकुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा के पूर्वजो मे से एक थे। कुसगति से मुसलमान बन गये। वर्षों विधर्मी रहे। मौलवी फाजिल थे। गुरदासपुर मे अतिरिक्त सहायक कमिश्नर भी रहे। इससे बड़ा पद तब किसी भारतीय को प्राप्त ही नही हो सकता था। धर्मवीर लेखराम के प्रभाव से वे वैदिक धर्मी बने थे। स्वामी दर्शनानन्द जी की जीवनी मे मैंने एक पुस्तक के प्रमाण से इनका नाम 'मुन्शी रामजस' दिया है। वाद टिप्पणी वहा किसी कारण छूट गई। वास्तव मे इनका नाम हरजसराय ही था। प० लेखराम जी ने यही नाम लिखा है। इन्हे हरिराम भी कहा जाता था। इनकी शुद्धि की कहानी अपने आपमें एक इतिहास है। यह शुद्धि लाहौर मे हुई परन्तु इसमे अमृतसर के समाज का विशेष उद्योग था। अमृतसर के एक पौराणिक विद्वान ने भी सहयोग किया। प० लेखराम जी ने इस शुद्धि का श्रेय परोपकारिणी सभा को भी दिया है। लगता है कि तब आर्य समाज का कोई सगठन न था। केवल यही एक सभा थी अत परोपकारिणी सभा से शुद्धि का प्रमाण-पत्र लिया गया होगा।

श्री स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज के पिता श्री प० रामप्रताप जी उन दिनो लाहौर में अपने भाई प० जयराम जी (मेरठ निवासी सुप्रसिद्ध आर्य नेता) से मिलने गये। उन्हें तब यह जानकर बड़ा दु:ख हुआ कि जयराम आर्य बन गया है और यह जानकर और भी धक्का लगा कि जयराम मौलाना अब्दुल अजीज की शुद्धि मे सम्मिलित हुआ है। महात्मा हसराज जी ने एक भाषण मे कहा था कि तब आर्य समाज के सेवको का इस शुद्धि के कारण प्रचण्ड बहिष्कार हुआ था।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

मांसाहार घोर पाप (२)

पं० नन्दलाल 'निर्भय' सि० शास्त्री

स्वभाव-विरोध

यह सार्वभौमिक सत्य है मात्र अभिधारणा नहीं है कि प्राणियों का स्वभाव उनके भोजन की प्रतिक्रिया स्वरूप बदलता रहता है। आयुर्वेद में कहा है कि "जैसा खाओगे अन्न वैसा बनेगा मन।" इसके आधार पर मांसाहारियों के स्वभाव में क्या अन्तर हो जाता है यह जानना हमारे लिए आवश्यक है। कुछ अन्तर जो प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होते हैं निम्न हैं—

(१) मांसाहारियों में स्वभावतः दया किंचित मात्र भी नहीं होती वे निर्दयी और हिंसक होते हैं। किसी को कष्ट से तड़पते देखकर उनके अन्दर कोमल भावना पैदा नहीं होती परन्तु शाकाहारियो मे मूलतः दया की भावना होती है किसी को दर्द से तड़पते देखकर वह रुक सकता।

(२) शाकाहारियों में किसी जीव के जीवन रक्षा की भावना मन में रहती है अनेकों बार सुनने में आता है कि एक हाथी ने एक बच्चे की शेर से रक्षा की जब कि हिंसक और मांसाहारी जानवरों को ऐसा करते कभी नहीं सुना।

(३) मांसाहारी प्राणी भूख से व्याकुल होकर अपने ही नवजात शिशुओं का भक्षण कर जाते हैं परन्तु शाकाहारी प्राणी कभी ऐसा नहीं करते हैं। मांसभक्षी मनुष्यों को दुर्भिक्ष में ऐसा करते देखा गया है।

(४) मांसाहारियों में प्रायः धैर्य की कमी होती है जब कि शाकाहारी धैर्यवान् और उदात्त भावना से परिपूर्ण होते हैं।

(५) मांसभक्षी प्राणियों का श्वांस थोड़े ही परिश्रम से फूल जाता है और जल्दी ही थकावट का अनुभव करते हैं जब कि शाकाहारी शीघ्रता से नहीं थकते। जैसे कई बार शेर हिरण को दौड़कर जल्दी थक जाने से नहीं पकड़ पाता।

मांसाहार रोगों की जड़

यूरोप के प्रकाण्ड मानवतावादी एवं साहित्कार जार्ज बर्नार्ड शा ने एक बार मांसभक्षी मनुष्यों और शाकाहारियों का स्वास्थ्य सम्बन्धी सर्वे किया और निष्कर्ष निकाला कि मांसाहार स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद है और कितने ही प्रकार के रोगों के उत्पन्न करने का कारण है क्योंकि मांस के द्वारा मांसाहारियों के शरीर में अनेक रोगाणु प्रवेश कर जाते हैं। तथा रोगों के कारण बनते हैं। हृदय रोग, रक्तचाप व कैंसर आदि घातक रोग मांसाहारियों को प्रायः घेरे रहते हैं।

मांसाहार से बल वृद्धि—एक भ्रम

आज प्रायः लोगों में एक धारणा व्याप्त है कि मांस से बल वृद्धि होती है और इस धारणा का मुख्य आधार है—हमारी सरकार द्वारा मांस व अण्डों के भक्षण का प्रचार। प्रकृति के प्रत्यक्ष अवलोकन से भी हमारे इस विचार की पुष्टि होती है कि शाकाहार अधिक पौष्टिक और आरोग्यवर्धक होता है। हम स्पष्ट देखते हैं कि हाथी जो पूर्णतया शाकाहारी प्राणी के अन्दर शेर से कहीं अधिक शक्ति होती है अगर हाथी की सूंड में शेर फंस जाए तो उसका प्राणान्त तक हो जाता है, 'शेर' अपने तेज नखों और दन्तों के कारण ही शाकाहारियों प्राणियों पर काबू पा लेता है शक्ति के बल पर उतना नहीं। एक जंगली भैंसे के अन्दर कहीं अधिक शक्ति होती है। कई बार देखा गया है कि दो शेरों के बीच में एक मस्त जंगली सूअर बेफिक्र होकर पानी पीकर चला जाता है जब कि दो मस्त सूअरों के बीच एक शेर पानी पीने की हिम्मत नहीं करता। गैंडा पूर्णरूपेण एक शाकाहारी प्राणी है जिसके सामने कोई भी मांसाहारी प्राणी नहीं टिक पाता और यहा तक कि जिस जंगल में गैंडा रहता है उस जंगल में शेर नही रहता।

अतः यह सत्य है कि शाकाहारियों के अन्दर शक्ति का अतुल भण्डार होता है और उनके अन्दर सहनशक्ति भी अधिक होती है। यही कारण है कि हम पावर को घोड़े की शक्ति से मापते हैं न कि शेर की शक्ति से, घोड़े, भैंसे बैल काफी देर तक कठिन मेहनत का काम करते रहते हैं।

अण्डों में भी जीव होता है

कितने ही व्यक्ति अण्डे में जीव नहीं मानते यह उनकी अज्ञानता का द्योतक है सभी जीवधारी पानी में तैरना न जानने के अभाव में डूब जाते हैं। अण्डे के ही सन्दर्भ में हमें एक रेस्तरां के मालिक से एक जानकारी मिली। जब हम मांस और अण्डे का प्रयोग बन्द करने के लिए उससे आग्रह कर रहे थे तो अण्डे में जीव होने की पहचान करने का उन्होंने एक सरल उपाय बताया जो इस प्रकार है—एक अण्डा लेकर पानी से भरी बाल्टी में डाल दो यदि वह डूबकर पैंदी में बैठ जाए तो स्वस्थ जीव उसमें होगा। यदि बीच में तैरकर आ जाए तो रोगी है और ऊपर तैरने लगे तो बेकार है।

मांसाहारी वीर नहीं होते

कई व्यक्ति प्रायः कहते हैं कि मांसाहारी वीर होते हैं। वस्तुतः यह विचार गलत है। मांसाहारी वीर न होकर निर्दयी व अन्यायी होते हैं। वीरता वंश परम्परा सद्गुण व शिक्षा पर निर्भर करती है। भारतवासी इसी कारण वीर, बहादुर व देशभक्त होते हैं।

मांसाहारी पापी होते हैं।

परमेश्वर ने मनुष्य को समस्त प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ बनाया है। इसी कारण मनुष्य प्रत्येक प्राणी से अपना हित सोचने में सर्वदा सफल होता है अतः यह भी उसका नैतिक उत्तरदायित्व है कि जिन पशु-पक्षियों आदि का वह पालन करता है उनकी रक्षा करे न कि अपनी उदरपूर्ति का साधन बनाये। किन्तु आज का मानव मानवता तजकर दानव बन गया है। अपनी जिह्वा के स्वाद को पूरा करने के लिए निर्दोष, मूक पशु व पक्षियों का भक्षण कर रहा है, अपने को कब्र बनाकर मानव चोले को बर्बाद कर रहा है। यदि ध्यान से अवलोकन किया जाए तो आज के मानव ने केवल नभचरों में पतंग, थलचरों में चारपाई व जल चरों में नाव को छोड़ा है। मानव झूठे स्वार्थ के लिए मनमाना घोर पाप कर रहा है। परमात्मा उसे दूषित कर्मों की सजा जरूर देगा क्योंकि वह न्यायकारी है। अन्त में इतना ही कहूँगा—

जो मानव मानवता तजकर, पीता खाता मदिरा मांस।
उसका जीवन व्यर्थ जगत् में, मेरा है निश्चित विश्वास।।
सच्चा मानव वही कहाता, जो करता है परोपकार।
उसका जीवन धन्य सदा यश, गाता है उसका संसार।।
मानव सब मानवता धारें, पाए जगती में सम्मान।
सद्गुण धारें, दुर्गुण त्यागें, हे जगदीश्वर दो वरदान।।

श्रद्धा-स्मरण

नयन फिर सजल हो उठे

–रमेशचन्द्र, प्रधान-आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ

एक के बाद वरिष्ठ विभूतिया हमारे बीच से उठती चली जा रही हैं जिनके रिक्त स्थान की पूर्ति का कोई सकेत नही मिलता। काल-चक्र के क्रूर हाथ हमसे इन्हें छीन ले जाता है और हम ठगे से खड़े देखते रह जाते हैं। पू० प० विश्वम्भर प्रसाद शर्मा के निधन का समाचार पाकर मैं हतप्रभ रह गया। आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ नागपुर के साथ उनका इतना दीर्घकालीन एक आत्मीय सम्बन्ध था कि उनके बिछोह पर सहसा ऐसा लगने लगा कि हमारा सरक्षक उठ गया, हमारा पालवा चल बसा।

पडित जी के घटनापूर्ण जीवन, प्रेरक व्यक्तित्व एव कर्मठ कृतित्व को पक्तियो में बाधना बहुत कठिन है। उनके नाम का स्मरण आते ही एक साधु, विचारक, मनीषी कर्मठ ऋषि की छवि उभर कर सामने आती है। ईश्वर की कृपा से सभी प्रकार के वैभव से सम्पन्न होते हुए भी वे सादा जीवन उच्च विचार की साकार प्रतिमूर्ति थे। व्यवहार में स्नेहलता, आचार मे सादगी, विचारो मे स्पष्टता और निर्भीकता उनके ऐसे गुण थे जिसने मुझे सदैव प्रभावित किया। अहमन्यता से उनका कभी रिश्ता कायम नहीं हुआ और विनम्रता सदैव उनका भूषण बनी रही।

उनका जीवन स्वतन्त्रता सग्राम, पत्रकारिता, समाज सेवा, आर्य समाज, गोसेवा एव गोरक्षा तथा हिन्दी भाषा प्रचार को समर्पित रहा। उन्होने पत्नी श्रीमती शातिदेवी एव शिशु पुत्र कान्तिकुमार के साथ स्वतन्त्रता सग्राम में योगदान दिया और गाधी जी, जवाहरलाल नेहरू, कमला नेहरू के साथ जेल यात्राए की। पत्रकारिता के क्षेत्र मे विकास" बुलन्दशहर, 'आलोक, नागपुर, नवभारत, नागपुर, के सस्थापक सम्पादक रहे। आर्य' सेवक के यशस्वी सम्पादक थे। गोधन" दिल्ली, के आजीवन सम्पादक थे। आपके सम्पादकीय लेख तथा अन्य रचनाए सुलझी हुई विवेचनापूर्ण एव विचारोत्तेजक होती थी। माहेश्वरी समाज से आपका निकट का सम्बन्ध था उनके मुखपत्र 'माहेश्वरी समाज से आपका निकट का सम्बन्ध था उनके मुखपत्र 'माहेश्वरी" का आपने वर्षों तक सम्पादन किया और समाज का मार्ग दर्शन किया। इसके अतिरिक्त आपने कई पुस्तक-पुस्तिकाओ की रचना, प्रणयन एव प्रकाशन किया।

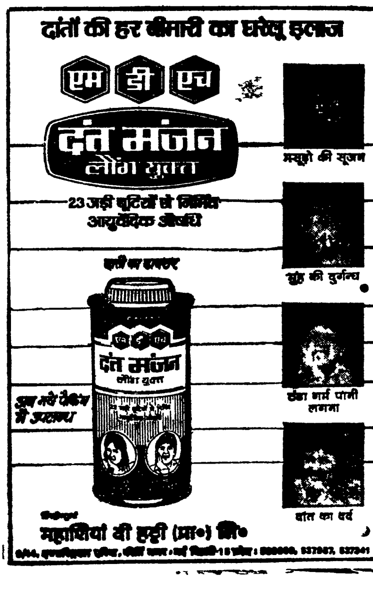
आर्य कुमार सभा और आर्य कुमार परिषद के माध्यम से आप बाल्यकाल से ही आर्य समाज से जुड़े। अनेको पदो पर रहकर आर्य समाज का कार्य किया। आर्य समाज हसापुरी नागपुर के आजीवन प्रधान रहे। आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ के सात वर्ष तक प्रधान पद पर रहे और आजीवन अन्तरग सदस्य रहे। आर्य प्रतिनिधि सभा म० प्र० व विदर्भ के अन्तर्गत सचालित आर्य गुरुकुल होशगाबाद के सरक्षक एव परम हितैषी थे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के आप अन्तरग सदस्य और गौरक्षा आन्दोलन के सूत्रधार एव प्रेरणा स्त्रोत थे। पशु क्रूरता निवारक समिति (एस पी सी ए) का कार्य भी आप सक्रियता पूर्वक करते रहे। वास्तव में आपका जीवन सत्यामय था। अपनी लेखनी के माध्यम से आपने आर्य समाज की विचारधारा और सुधारवादी आन्दोलन का प्रचुर प्रचार-प्रसार किया। नारी जागरण और सामाजिक कुरीतियो के निवारण में सभा प्रधान पडित जी के साथ मुझे सभा मन्त्री के रूप मे कार्य करने का सौभाग्य मिला। विचारो मे दृढ़ता के साथ साथ उदारता, एव समन्वयवादी तथा स्पष्ट मार्ग दर्शन उनकी कार्य शैली की विशेषता थी। उसके पश्चात उनका आशीर्वाद मुझे सदैव आत्मीय पत्र लिखकर उत्साहवर्धन करते रहते। हर निर्वाचन के बाद वे मुझे पत्र लिखना न भूलते और आशीर्वाद देते। उन्होने अपने हर कार्यक्षेत्र में युवाओ और महिलाओ का उत्साहवर्धन किया और उन्हे आगे बढाया। वे किसी पद पर रहे अथवा न रहे सभा के कार्यों में सदैव एकात्म निष्ठा से रुचि ली और निस्पृह भाव से सहयोग दिया। विगत दो तीन वर्षों से अस्वस्थता ने आप को विवश कर दिया था अन्यथा हर बैठक अथवा कार्यक्रम में अवश्य सम्मिलित होते। शक्ति भर उन्होंने सामाजिक कार्यों के लिए सदैव भ्रमण किया। यद्यपि आपने विधिवत् वानप्रस्थ या सन्यास नहीं ग्रहण किया था किन्तु क्रियात्मक जीवन मे आप सच्चे साधु परिव्राजक थे। दिल्ली स्थित भारत गो सेवक समाज कार्यालय वानप्रस्थाश्रम जैसा बना रहा। सामाजिक कार्यकर्ताओ और गो सेवको के लिए वहा का आतिथ्य सदैव खुला रहता। पडित जी के साथ अनेको सुखद एव प्रेरक स्मृतियां जुडी हुई है। गाभीर्य के साथ विनोदप्रियता उनके जीवन का अनूठा अग थी, विनोदी क्षणों मे उनकी निश्छल हसी की प्रति ध्वनि आज भी मेरे कानो में सजीव है।

पडित जी के ७५ वे वर्ष मे पदार्पण पर सभा के तत्वावधान में उनका अभिनन्दन कर उन्हे अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित किया गया था। इस ग्रन्थ मे पडित जी के व्यक्तित्व एव कृतत्व के विभिन्न पहलुओ पर प्रकाश डाला गया है। यद्यपि यह ग्रन्थ भी उनके जीवन का पूर्ण दस्तावेज नही कहा जा सकता है किन्तु फिर भी युवा पीढी उसे पढ़कर प्रेरणा ग्रहण कर सकती है। युवाओ से आग्रह है कि उसे अवश्य पढे।

पडित जी ने यो तो पूरा जीवन जिया। वे अपने पीछे अनेक प्रेरक प्रसग असख्य प्रशसक एव भरा पूरा पुत्र-परिवार छोड गये हैं। उनके परिवार में समन्वय की अद्भुत झाकी देखने को मिलती है। उनके पुत्र श्री डा० कातिकुमार एव पुत्र वधु श्रीमती डा० कुसुम शर्मा तथा पौत्रादि सुसस्कारित एव प्रबुद्ध महानुभाव है। आशा ही नही विश्वास है कि वे पडित जी की गौरवशाला परम्पराओ का निर्वाह करेंगे। आर्य समाज उनकी विरासत पर गर्व करेगा।

परम पिता परमात्मा दिवगत पुण्यात्मा को चिर शाति प्रदान करे और हम सब को उनके ज्योतिमय जीवन से प्रकाश ग्रहण करने की सामर्थ्य दे।

उजाले अपनी यादो के मेरे साथ रहने दो।
न जाने किस गली मे जिन्दगी की शाम हो जाये॥



आर्यसमाज का आरम्भिक युग

(पृष्ठ ५ का शेष)

इसके कुछ समय पश्चात जन्म के एक मुसलमान अब्दुलरहमान ने प० लेखराम जी के प्रभाव से वैदिक धर्म ग्रहण किया। पण्डित जी ने इसका श्रेय अपने एक मित्र मथुरा निवासी श्री चन्दू को दिया। यह मौलवी सेना में कार्यरत था और अरब मे भी कई हर्ष रहा। इसी का नाम नामी आर्य वीर सोमदत्त रखा गया। अजमेर मे आर्य विजय का सम्पादक बनकर बडी सेवा की। कही कही सोमदत्तजी का पूर्व नाम अब्दुल रहीम भी लिखा है।

आर्य समाज बावी कुई ने १३ दिसम्बर सन १८९१ को उ० प्र० नजीबाबाद के श्री अमाम उद्दीन को शुद्ध करके बृजमोहन नाम दिया।

इन दोनो शुद्धियो से कुछ पहले आर्यसमाज अमृतसर मे अब्दुल रहमान नाम के एक व्यक्तिको शुद्ध करके रामरखा नाम दिया। यह भाई पठानकोट मे रहता था।

आर्य समाज अमृतसर ने फिर शंकरदास नाम के एक व्यक्ति को शुद्ध किया। यह अमृतसर का ही रहने वाला था।

एक सिख रूड़सिंह कभी लाहौर में विधर्मी हो गया था। आर्य समाज लाहौर ने प० लेखराम काल में शुद्ध किया।

आर्य समाज प्रयाग ने दो महत्त्वपुर्ण शुद्धिया की। एक भगवानदास की और दूसरे भगवानदीन की। ये किस मत से शुद्ध किये गये, पता करना पडेगा। मेरा अनुमान यही है कि ये दोनो मुसलमानी मत तज कर आर्य बनाये गये।

हेमलटन नाम के एक ईसाई को आर्य समाज रुड़की ने शुद्ध किया।

आर्य समाज देहली ने बरेली के एक व्यक्ति को शुद्ध करके प्यारेलाल नाम दिया।

डेरा गाजी खा के आर्य समाज ने क्रिस्टोफर नाम के एक विद्यार्थी का शुद्ध करके तुलसीदास नाम दिया। डेरा गाजी खा समाज को आर्य समाज अमृतसर ने इस कार्य मे पूरा सहयोग दिया। श्री प० लेखराम जी व वीर चिरञ्जीलाल की सत्प्रेरणा से डेरा गाजी खा समाज शुद्धि मे बहुत अग्रणी रहा।

पाकपटन क जुम्मा खा का आय समाज कालका (हारयाणा) ने जमियतराय बना दिया।

लाहौर आर्य समाज ने लुधियाना के एक सिख सन्तसिंह को विधर्मियो से बचाकर शुद्ध किया।

शिमला का एक कायस्थ अब्दुल सईद मुसलमान बन चुका आर्य समाज अमृतसर ने शुद्ध करके गगाप्रसाद नाम रखा। इस शुद्धि पर कायस्थो मे बडा शोर मचा था।

दीनानगर में अब्दुल्ला नाम के एक मुसलमान ने वदिक धर्म ग्रहण किया उसका नाम शुद्ध सकल्प रखा गया। यह शुद्धि सस्कार अमृतसर समाज मे ही किया था।

बटाला में एक सिख हरनामसिंह को विधर्मियो से बचाकर शुद्ध किया गया।

मिर्जा गुलाम अहमद के चचेरे भाई मिर्जा अमामदीन आर्य समाज कादिया की स्थापना के समय ही प० लेखराम जी द्वारा वैदिक धर्म में दीक्षित हो गये। कादिया मे श्री पण्डित जी के प्रभाव से एक मुरादअली नाम का मुसलमान भी आर्य बना।

गुजरात (पश्चिमी पजाब) में एक महनासिह नाम का सिख कभी विधर्मी हो गया था। आर्य समाज अमृतसर ने उसे शुद्ध किया।

श्री प० लेखराम जी के प्रभाव से दीनानगर का एक नामी मुस्लिम वैदिक धर्मी बन गया परन्तु उसकी विधिवत शुद्धि न हो सकी। उसके नाम का भी हमे पता नही चल सका। उसने श्री प० लेखराम जी के बलिदान पर बडा हृदय स्पर्शी लेख दिया था। इस लेख का अनुवाद हमने छपवा दिया है।

बरेली का एक महाजन आनन्दीलाल मुसलमान होकर मक्का मदीना चला गया। प० लेखराम जी के बलिदान से कुछ समय पूर्व उसने उनको पत्र लिखकर आर्य बनने की चाह व्यक्त की थी। उसकी शुद्धि किसने की और कब की ? यह ज्ञात नही हो सका।

देवबन्द उ० प्र० का एक जैनी वकील आत्माराम मुसलमान बन गया। प० लेखराम जी के बलिदान के पश्चात आर्यों ने ही उसे शुद्ध किया। एक ला० जगदम्बाप्रसाद भटकता फिर रहा था मुसलमान बना। उसे भी आर्यों ने प० जी के बलिदान के बाद शुद्ध किया। अब्दुलगफ्फार को १९०३ मे धर्मपाल नाम दिया। उसको अनुचित मान दिया गया। वह कुपात्र था इसका परिणाम अच्छा न निकला। वह फिर गाजी महमूद बन गया। हैदराबाद दक्षिण के यशस्वी मौलाना हैदर शरीफ (देवबन्द के दार-उल-उलूम के स्नातक) सुकवि, विद्वान गवेषक व लेखक थे। वह पक्के व सच्चे आर्य और महर्षि के दृढ भक्त थे।

(शेष फिर)

० + ० = ०

बच्चुवर ! यदि आप एक दूसरी कक्षा के बच्चे से पूछें कि ०+० कितने होते हैं तो वह भी आपको उत्तर देगा कि ० ! परन्तु जो कुछ एक दस वर्ष का बच्चा समझ सकता है वह हमारी सरकार की समझ मे नही आ रहा। प्रकाशित हुआ है कि भारत सरकार अब कश्मीर समस्या हल करने के लिए फिर फारूख अबदुल्ला से बात करने लगी हैं अर्थात् ०+०=०। एक शून्य में फारूख अबदुल्ला दूसरे शून्य में मुफ्ती मुहम्मद सईद जब यह दोनों आपस में बात-चीत करेंगे तो परिणाम शून्य ही रहेगा। कश्मीर मे जो कुछ हुआ है वह बहुत कुछ फारूख अबदुल्ला के कारण से। जब तक वह जम्मू और कश्मीर का मुख्यमन्त्री रहा इसने अपने प्रान्त की तरफ ध्यान नही दिया वह अपना समय भ्रमण तथा नाच गानेमे गुजारता रहाथा। इससे पहले वाजदअलीके सम्बन्ध में सुना था कि वह नाच गाने मे अपना समय व्यतीत करता था इसलिए अन्त में राज और ताज दोनो से हाथ धो बैठा था। फारूख अबदुल्ला भी इस वजह से इकदार से वंचित हो गया और अब सरकार इससे बात करना चाहती है कि कश्मीर में राजनैतिक वातावरण कैसे उत्पन्न किया जा सकता है।

दूसरी शून्य में मुफ्ती सईद जब से वजीर दाखला बने हैं पजाब और कश्मीर के हालात बद से बदतर होते जा रहे है। पजाब और कश्मीर दोनों प्रान्त यह नये तजरबे कर रहे हैं। इसका यह नतीजा है कि दोनों प्रान्तो में हालात बिगड रहे हैं। अगर फारूख कश्मीर को सम्भाल सकता तो वह वहा ऐसे हालात पैदा न होने देता जैसे अब हो गए हैं। अब यह भी प्रकाशित हुआ है कि फारूख कश्मीर के बारे में कोई उत्तरदायित्व लेने को तैयार नही है। मैं इससे सहमत नही हूं। शीघ्र अथवा देर से वह लाजमी तौर पर इसके लिए तैयार हो जाएगा।

छुटती नही है मुह से यह काफिर लगी हुई। जिसने एक बार राजनैतिक इकदार का मजा चख लिया हो उसके लिए इसे छोड़ना मुश्किल हो जाता है। क्या हम रोज नही देख रहे कि वजीर बनने के लिए कितने पापड बेलते हैं। राजनैतिक व्यक्तियो का कोई चरित्र नही। यही वजह है कि हमारे देश की यह हालत हो गई है। मैं यह नही कहता है कि सब सियासी लीडर एक जैसे हैं परन्तु काफी सख्या इनमे ऐसे लोगों की है जो बिकाऊ माल होते हैं। मैं फारूख अबदुल्ला को बिकाऊ माल नहीं समझता परन्तु नालायक जरूर समझता हूं। वह कश्मीर के हालात को उत्तम नही बना सकता वह कोई बुद्धिमान और सियासत दार नही है। जो लोग कर्म के आधार पर नही जन्म के आधार पर वजीर बन जाते हैं उनकी यही गति होती है। वह भले ही फारूख हों। राजीव हो अथवा चोटाला हो। यह सब एक ही थैले के चट्टे बट्टे हैं। अब भारत सरकार फारूख से बात करने लगी हैं और करगे भी जनाब मुफ्ती साहब जो स्वय एक नाकाम और नाहिल वजीर साबित हो रहे हैं। पहले फारूक से बात किए बिना जगमोहन को गवर्नर बना कर भेज दिया। फिर इसे हटा दिया और हटाया भी उस समय जब वह सफल होने लगा था। इसके बाद एक नया गवर्नर वहा लगाया गया। अब इसके सर पर उस फारूख को बिठाया जा रहा है जो कश्मीर के वर्तमान हालात के लिए जिम्मेदार हैं— अर्थात् फारूख अबदुल्ला नये गवर्नर से जाकर कहे "हम तो डूबे हैं सनम तुमको भी ले डूबेंगे।

जम्मू और कश्मीर में हालात को बेहतर बनाने के लिए किसी से बात करना कोई अपराध नही है परन्तु वर्तमान वजीर दाखला मुफ्ती मुहम्मद सईद इस मियार के नही हैं कि वह इस समस्या पर बात करके कोई हल निकाल सकें। कश्मीर में अजीबो गरीब तजरबे हो रहे हैं। पहले एक गर्वनर नियुक्त किया गया और इसके सर पर जार्ज फर्नांडीज को बिठा दिया गया और अब दूसरा गवर्नर मुकर्र किया गया है और इसके सर पर फारूख अबदुल्ला को बिठाया जा रहा है। जम्मू और कश्मीर का मसला इनके लिए एक मजाक है इसलिए नित्य नये अनुभव किये जा रहे हैं न इससे पहले कोई इनका नतीजा निकला है न ही आईन्दा निकलेगा क्योंकि ०+०=०।

(प्रताप २५-६-९० के सौजन्य से)

भारत पर हमले के लिए बुखारी का पाक से गुप्त षड्यन्त्र : नकवी

लखनऊ, ११ जुलाई इण्डियन मुस्लिम यूथ कान्फ्रेंस के अध्यक्ष मुख्तार अब्बास नकवी ने यह सनीसनीखेज आरोप लगाया है कि जामा मस्जिद दिल्ली के इमाम मौलाना बुखारी ने आगामी ३० अक्तूबर को अयोध्या में राम मन्दिर का निर्माण शुरू होने से पहले पाकिस्तान और अन्य मुस्लिम देशो से भारत के खिलाफ युद्ध छेड़ने के सम्बन्ध में गुप्त बात-चीत की है।

श्री नकवी ने यहा एक बयान में कहा कि अगर केन्द्र सरकार ने राम जन्म भूमि मसले के सम्बन्ध मे इस माह के अन्त तक कोई फैसला नही किया तो देश मे स्थिति विस्फोटक हो जायेगी। श्री नकवी ने मुस्लिम समुदाय से अपील की कि वे राष्ट्रविरोधी मुस्लिम नेतृत्व और अलगाववादी ताकतो की बातों से गुमराह न हों जो देश की एकता और अखण्डता के विनाश पर तुली हुई है।

(पजाब केसरी १४-७-९०)

देश भक्ति को देश निकाला

भारत की राजधानी दिल्ली में केन्द्रीय सरकार की ठीक नाक के नीचे कश्मीरी आतकवादिया के शरण स्थल बने हुए हैं। जिम्मेदार लोग चिल्ला चिल्ला कर बता रहे हैं कि दिल्ली की जिस जामामस्जिद को वी. पी सिंह ने पचास लाख रुपये दिये उस मस्जिद मे तथा मस्जिद के तहखानो मे १०० से अधिक कश्मीरी मुजाहिद रह रहे हैं। केन्द्र द्वारा दिये गये ५० लाख रुपयो से जामा मस्जिद के नीचे से लाल किले तक एक पुरानी बन्द पडी सुरग कश्मीरी आत कवादियो के उपयोग के लिए खोदी जा रही है। इस कार्य के लिए शाही इमाम को अरब देशो ने २० करोड़ की सहायता भी दी है। परन्तु इमाम अब्दुल्ला बुखारी साहेब के विरुद्ध कोई कार्यवाही नही की जा रही।

वास्तव मे भारत सरकार पर इमाम साहब का बहुत प्रभाव है। इमाम साहेब के कारण भारत के गृहमन्त्री पद पर मुफ्ती मोहम्मद सईद को बिठा दिया, जो कि मुस्लिम कट्टरवाद के लिए विख्यात है। कश्मीर का बच्चा बच्चा मुफ्ती की फिरका परस्ती से परिचित हैं मुफ्ती साहब ने कश्मीर के अनन्तनाग शहर का नाम इस्लामाबाद कर दिया। १९८६ की फरवरी में मुफ्ती साहेब के द्वारा कश्मीर घाटी मे साम्प्रदायिक दगे भडकाये गये। जिन मे ६३ से अधिक मन्दिर ध्वस्त किये गये हिन्दुओ की दुकानो और घरों को लूटा गया फिर उन्हे आग लगा दी गई। घाटी के हिन्दू भय से कापने लगे। अपनी बहू बेटिया की इज्जत बचानी उनके लिए समस्या बन गई।

मुफ्ती साहेब से यह आशा नही की जा सकती कि वे दिल्ली की जामा मस्जिद के नीचे बन रहे पाकिस्तानी अड्डे को समाप्त करेंगे।

कैसी हालत हो गई है कि देशद्रोह को पुरस्कृत किया जाने लगा है और देश भक्ति को देश निकाला।

हम सीमाओ की रक्षा क्या करेंगे जब घर मे ही शत्रु की घुसपैठ का सफाया नही कर सकते। क्या हमारे नेता सैक्यूलरिज्म की वेदी पर भारत की बलि चढा देना चाहते हैं।

—डा० कैलाश चन्द्र

आर्यसमाज सोलापुर में

हैदराबाद मुक्ति सग्राम अर्द्धशताब्दी महोत्सव में कैप्टन देवरत्न आर्य का स्वागत भाषण

इस ऐतिहासिक हैदराबाद मुक्ति सग्राम के अर्द्धशताब्दी समारोह के अवसर पर स्वागताध्यक्ष के नाते सोलापुर नगरी मे आर्य समाज सोलापुर अर्द्धशताब्दी महोत्सव समिति की ओर से आप सबका हार्दिक स्वागत।

इसी बहुचर्चित सोलापुर नगरी मे आज से लगभग ५२ वर्ष पूर्व २७ दिसम्बर १९३८ को मानव अधिकारो और नागरिक सुरक्षा के लिए निजाम के जुल्मो सितम के विरुद्ध सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा और आर्य जनता ने एक स्वर से आर्य सत्याग्रह शुरू करने का अन्तिम निर्णय लिया था।

लोह पुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने सोलापुर मे ही इस युद्ध का सेनापतित्व सम्भाला था। प्रथम सर्वाधिकारी महात्मा नारायण स्वामी जी द्वितीय श्री चादकरण जी शारदा तृतीय महात्मा खुशहालचन्द जी चतुर्थ प० राजगुरु धुरेन्द्र जी, पचम प० वेदव्रत जी, छटे महाशय कृष्ण सातवें प० ज्ञानेन्द्र जी आठवें प० विनायकराव जी विद्यालकार के नेतृत्व मे आर्य सत्याग्रही खी जान की होली खेलने पर उतारू हो गये थे। इतने सत्याग्रही आये थे कि जेलों में उन्हे रखने के लिये जगह भी नही बची। कवि का यह कथन यथार्थ सत्य लगता है—

तेरे दीवाने जिस घडी दक्षिण दिशा को चल दिए,
हैरत में लोग रह गये।
दुनिया का दिल हिला दिया धन्य है,
तुमको ए ऋषि तूने हमें जगा दिया॥
सो सो के लूट रहे थे हम, तूने हमें बचा लिया।"

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वर्तमान वरिष्ठ उपप्रधान प० रामचन्द्रराव वन्देमातरम् जी ने तो उस समय पच्चीस बैंतो की सजा भी पायी थी और बैंत का प्रत्युत्तर वन्देमातरम् के जयघोष के साथ देते रहे। स्टेट काग्रेस के सेनापति स्वामी रामानन्द जी तीर्थ को आर्य समाज के इस साहसी उज्ज्वल नक्षत्र पर हमेशा ही गर्व रहा। लोह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल का यह कथन पूर्णत सही है कि यदि आर्य समाज ने पहले से भूमिका तैयार न की होती तो तीन दिन मे पुलिस एक्शन करना कदापि सम्भव नही था।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्यनीय स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती के अथक परिश्रम का परिणाम है कि आज तक लगभग दो हजार से अधिक आर्य सत्याग्रहियों को स्वतन्त्रता सेनानी पेंशन से सम्मानित किया जा चुका है। इस शुभ अवसर पर भारत वर्ष की समस्त आर्य समाजो के पदाधिकारियो का आह्वान करना चाहूँगा कि वे अपनी आर्य समाजो में अपना सारा ध्यान दयानन्द के सैनिक तैयार करने मे लगावें। देश की आजादी के पश्चात् अनेक सगठन सेना के रूप मे उभरे है। हिन्दू राष्ट्र सेना, हिन्दू एकता सेना, विजय सेना, हनुमान सेना, भीम सेना, तामिल सेना, शिव सेना, लाल सेना आदि। पर आज राष्ट्र की रक्षा के इन सेनाओ से कही अधिक आर्य वीरदल जैसी सस्थाओ को सक्रिय बनाने की आवश्यकता है। जहा हम दयानन्द के वीर सैनिक तैयार करने के साथ-साथ स्वार्थी और सकीर्णताओ से ऊपर नैतिक एव चरित्रवान युवको का निर्माण कर सकें जो देश को एकता के सूत्र मे पिरोकर पाखण्ड, अन्धविश्वास और कुरीतियो से बचाकर स्वर्णिम अतीत की भाति वर्तमान एव भविष्य को भी स्वर्णिम बनाने के लिए राष्ट्र की सेवा के प्रति पूर्णतया समर्पित है।

आर्य जगत् के समाचार

वैदिक विवाह सम्पन्न

—दिनाक ४-६-९० चम्पारण जिला के अन्तर्गत मधुमालती नामक ग्राम मे एक प्रसिद्ध आर्य समाजी परिवार के लडके की शादी होने के लिए बारात गई हुई थी। लडकी वाले का परिवार वैदिक विवाह का समर्थन नहीं कर रहा था। इसलिए अवधूतदेव, कबीर पन्थ, सनातन धर्म के अनुयायी होने के कारण लडकी वाले के परिवार से लडकेवाले का वैदिक विवाह पर आपस मे विवाद छिड गया। ग्राम के लोग भी इकट्ठा हो गये। यह विवाद इसने एक सभा का रूप धारण कर लिया, उपस्थित जनता ने यह निर्णय लिया कि अपने २ पन्थ के विषय में उसके विद्वान लोग अपने पन्थ के सिद्धान्तो को जनता के सामने रखें। जिसका सबसे उत्तम सिद्धान्त होगा, उसी के अनुसार विवाह सम्पन्न होगा। अन्त मे वैदिक रीति से संस्कार हुआ।

—प० ध्रुव जी आर्य चम्पारण जिला के जिला प्रचारक की सुपुत्री आयु० कुमारी कृष्णा आर्या का विवाह संस्कार श्री अमीरीलाल आर्य के सुपुत्र चि० शेषनाथ प्र० आर्य के साथ ९-६-९० को प० रामचन्द्रसिंह क्रान्तिकारी नेपाल के आचार्यत्व मे सम्पन्न हुआ। पूरे जिला के आर्य सदस्यो के साथ जिला सभा के प्रधान श्री जगत नारायण जी आर्य ने वर-वधू को आशीर्वाद दिया।

—बी० के० शास्त्री, मन्त्री
चम्पारण जिला आर्य सभा

अंग्रेजी में काम करना बन्द कर दें

—मुलायमसिंह यादव

लखनऊ १० जुलाई। मुख्यमन्त्रियो की बैठक मे सभी राज्यो खास कर उत्तरी राज्यो के मुख्यमन्त्रियो से अपील की कि वे सरकारी काम अंग्रेजी मे करना बन्द कर दें। उन्होंने कहा जहा तक उत्तर प्रदेश का सम्बन्ध है। किसी भी सरकारी या न्यायिक काम अथवा निर्देश के माध्यम के तौर पर अंग्रेजी का उपयोग नही होगा। जो भी व्यक्ति इस फैसले का उल्लंघन करेगा उसे दण्डित किया जायेगा।

(जनसत्ता १०-७-९०)

प्राज्ञ, विशारद, शास्त्री में प्रवेश आरम्भ
कोई मासिक शुल्क नहीं

प्राज्ञ, विशारद शास्त्री श्रेणियो के लिए ३१ जुलाई १९९० तक प्रवेश खुला है। भोजन दूध, पुस्तके, छात्रावास व मनोरंजन की सर्वथा निःशुल्क सुविधा के साथ ही हिन्दी टाइपिंग तथा संगीत सिखाने का प्रबन्ध। प्रवेश योग्यता कम से कम मैट्रिक पास। विद्याधिकारी तथा विद्यावाचस्पति उत्तीर्ण छात्रो को शास्त्री कक्षा में सीधा प्रवेश मिल सकेगा। स्थान सीमित है। प्रवेश लेने वाले शीघ्रता करे।

—नरेश कुमार शास्त्री एम० ए०, आचार्य
श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर
जिला जालन्धर-१४४८०१

राष्ट्रीय पत्रकारिता

(पृष्ठ ४ का शेष)

एक साहित्यिक कृति है। जिसकी वैरियर एल्विन उन दिनो मध्य प्रदेशी गोण्डो के लोकगीत और लोककथाओ के संग्रह में तल्लीन थे। मैं अपने पाठको से कहूगा—यदि क्षितीश जी के एक और पहलू को आप देखना चाहते हैं तो पुस्तक मे इस लेख को अवश्य पढें। यह उनका एक नया रूप है जिसे पाठक प्राय नहीं जानते।

'राष्ट्रीय पत्रकारिता के पुरोधा' पुस्तक को मैं प्यार से पूरी पढ गया हू। मैं नहीं समझता था, कि मेरे प्रति चिर के परिचित क्षितीश जी का व्यक्तित्व इतना अद्भुत है। उससे ईर्ष्या करने को मन चाहता है। आप उसके मन्तव्यो को स्वीकार करें, वह जैसा है, वैसा ही हो सकता था। परिस्थितियो से वह सदा जूझता आया है और साहस के साथ आगे बढता गया है।

देश के सामने आज बडी उलझनें हैं। इन उलझनो के बीच मे सब अन्धे हो गये हैं। समस्या देश की नही है—मानवता के बीच मे उभरती दानवता की है। विघटन के कगार पर खडा हुआ यह देश मानो क्षितीश जी को सम्बोधन करके कह रहा है—'धरती के हे पुत्र क्षितीश+ईश)! धरती के हे कण! आशीष तुम्हे है। त्रस्त व्यस्त सन्त्रस्त जगत् मे पत्रकारिता उभरेगी, उन्नत होगी—अजर अमर व्रत पत्रकारिता के हे पुरोधा!

रजि० न० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२२-७-१९९०) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U ९३
R N 626/57 Licensed to post without Prepayment License No U 93 Post in D.P.S O on 20-7-1990

शुद्धि समाचार

सालोमन गडकरी सुहास गडकरी बना

ईसाई युवक वैदिक धर्मी बना

आज दिनाक १५ ६ १९९० शुक्रवार को आर्य समाज मन्दिर मे वैदिक पद्धति से शुद्धि सस्कार किया गया जालना निवासी सालोमन गडकरी यह युवक क्रिश्चयन था पूव मैं माता पिता क्रिश्चियन बने थे, आर्य साहित्य के पढने से व सौ० गीता कल्याणी के परिश्रम से वह हिन्दू धर्म वैदिक मे आया प० नरदेव जी स्नेही इन्होने शुद्धि सस्कार करवाया उस समय उनका नाम करण किया गया व सालोमन का नाम सुहास रखा गया सुहास ने कहा की ससार मैं वैदिक तत्वज्ञान ही शान्ती प्रदान कर सकता है मै यह मानता हू इसलिए मैं पुन अपने वैदिक धर्म मैं लौटा हू।

स्वामी सन्तोषानन्द सरस्वती ने आशीर्वाद दिया उसे सत्यार्थ प्रकाश सप्रेम भेंट दिया गया।

कार्यक्रम का सचालन मन्त्री दयाराम राजाराम बसैये ने किया इस समय सभी समाज के सदस्य उपस्थित थे।

मन्त्री आर्य समाज औरगाबाद

आदर्श नगर आर्य समाज में

औषधालय का उद्घाटन

आर्य समाज मन्दिर आदर्श नगर लखनऊ मैं लायन्स क्लब लखनऊ विशाल के सौजन्य से सचालित स्वामी श्रद्धानन्द धर्मार्थ होम्योपैथिक औषधालय उदघाटन श्री गोपाल नारायण जी महरोत्रा डिप्टी गवर्नर के कर कमलो से १ जुलाई १९९० को प्रात सम्पन्न हुआ। इस समारोह मे लायन्स क्लब के सदस्यो एव क्षेत्रीय जनता काफी सख्या मे उपस्थित थी। औषधालय का उदघाटन करते हुये श्री महरोत्रा जी ने जनता जनार्दन की सेवा को परम धर्म बताकर नेत्रहीनो के लिये नेत्रदान करने करने का आह्वान किया और उपस्थित महानुभावो ने अपने नेत्रदान की सहर्ष घोषणा की।

—योगेन्द्र भाटिया, मन्त्री
आर्य समाज आदर्श नगर,
आलमबाग, लखनऊ

वार्षिकोत्सव

आर्य कुमार सभा रजि० किंग्जवे दिल्ली-९ के ४१ वे वार्षिकोत्सव के अवसर पर आयोजित समारोह मे प० विजय शकर शास्त्री ने कुमारो और युवको का आह्वान किया कि राष्ट्रीय एकता के लिये उन्हे जाति बन्धनो को नकारा होगा और अपने जीवन के समक्ष अपने माता पिता तथा गुरुजनो आदि बडो के उत्तम कार्यो को आदर्श के रूप मे रखकर एक नैतिक समाज के स्थापना हेतु जुट जाना चाहिये। इस अवसर पर यज्ञ हवन का आयोजन किया गया तथा चार युवको को यज्ञोपवीत धारण करा कर देश और समाज सेवा व्रत दिलाया गया। तथा यज्ञोपवीत की महिमा पर प्रकाश डाला गया।

—ओम सपरा आचार्य

अंग्रेजी हटाओ सम्मेलन

(पृष्ठ १ का शेष)

सम्मेलन के प्रथम दिवस प्रमुख वक्ता भाषा के सम्पादक डा० वेदप्रताप वैदिक होगे। द्वितीय दिवस कार्यक्रम की अध्यक्षता केरल के डा० चन्द्रशेखरन जी करेंगे तथा हरियाणा के पूर्व मुख्यमन्त्री श्री बनारसीदास गुप्त मुख्य अतिथि एव बिहार के पूव मुख्यमन्त्री श्री भगवत झा आजाद विशेष अतिथि के रूप मे पधारेंगे।

सम्मेलन के अन्तिम दिवस की रात्रि मे "अग्रेजी हटाओ' कवि सम्मेलन भी होगा।

आर्य हिन्दू मानवतावादी जनता से विशेष निवेदन है कि इस सम्मेलन को सफल बनाने हेतु पूर्ण सहयोग प्रदान करे। और उन तिथियो मे भारी सख्या मैं इन्दौर पहुचने की सूचना पूर्व ही दें। जिससे आवास आदि की सुविधा सासानी से हो सके।

—सम्पादक

[illegible] आर्य परिवार की आजमगढ़ से विदाई

[illegible] सेवा के क्रम में श्री देवनारायण भारद्वाज का परिवार एक वर्ष एक माह पूर्व आजमगढ मैं आया था। पुरुष आर्य समाज, महिला आर्य समाज, आर्य कुमार सभा एव आर्य वीर दल की गतिविधियों मे इस परिवार का पूर्ण योगदान रहा। श्री भारद्वाज के अलीगढ स्थानान्तरित के फलस्वरूप रहा। स्थानीय आर्य समाज मन्दिर मे दिनाक १७ जून १९९० को अपरान्ह ४ बजे एक भव्य विदाई समारोह मैं श्री भारद्वाज का भावभीनी विदाई दी गई।

आदर्श विवाह

—दिनाक २०-६-९० को विवेकानन्द सरस्वती इण्टर कालेज, उन्नाव के प्रागण मे [illegible] एम ए. साहित्याचार्य (प्रधानाचार्य विवेकानन्द स० इ० [illegible] विवाह [illegible] आशा एम ए (वाराणसी) के साथ वर-कन्या [illegible] की उपस्थिति में बिना किसी लेन-देन के श्री राधेश्या[illegible]रोहित, [illegible]नाथ ने सम्पन्न कराया। उक्त अवसर पर उपस्थि[illegible]न्य नागरिको के द्वारा नव दम्पत्ति को आशीर्वाद [illegible] और सभी लोगो ने इस विवाह भूरि भूरि प्रशसा की।

—दिनाक २९-५-९० को आर्य समाज मन्दिर उन्नाव के प्रागण मे श्री रमेश पुत्र श्री महगू तथा आयु० सावित्री पुत्री स्वर्गीय रजीत के साथ बिना किसी दहेज के लेन-देन के सादे समारोह मे वर व कन्या पक्ष के सम्बन्धियो एव आर्य समासदो की उपस्थिति में श्री राधेश्याम शर्मा के पौरोहित्य में वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। उपस्थित सभी सज्जनो ने नव दम्पत्ति को आशीर्वाद प्रदान किया।

—रविशकर शर्मा, मन्त्री
आर्य समाज उन्नाव

चुनाव

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल का वार्षिक चुनाव सम्पन्न हुआ। जिसमे निम्न अधिकारी चुने गय।

१. सरक्षक लाला इन्द्रनारायण, २ प्रधान श्री कृष्णलाल सूरी ३ वरिष्ठ उपप्रधान श्री लखीराम कटारिया, ४, उपप्रधान हरबसलाल कोहली ५ उपप्रधान श्री हरबससिंह खेर, ६ श्रीमती सुशीला त्यागी ७ महामन्त्री श्री रामसरनदास आर्य, ८ मन्त्री भूपसिंह गुप्ता ९ मन्त्री श्री सत्यपाल सैनी, १० कोषाध्यक्ष श्री गणेशदास ग्रोवर चुने गये।

अध्यापकों की आवश्यकता

गुरुकुल आर्य नगर हिसार मे आचार्य अथवा शास्त्री उत्तीर्ण एक ऐसे अध्यापक की आवश्यकता है जो शास्त्री कक्षाओ को योग्यता के साथ पढा सके।

इसके अतिरिक्त एक ऐसे बी.एस.सी. अध्यापक की भी आवश्यकता है जो नवमी एव दशमी कक्षाओ को गणित और विज्ञान पढाने में समर्थ हो। वेतन योग्यतानुसार सन्तोषजनक दिया जाएगा। प्रार्थी निम्न पते पर ३० जुलाई तक मिलें अथवा पत्र व्यवहार करें।

गुरुकुल मे पहुचने के लिए हिसार शहर से ५ कि० मी० की दूरी पर बालसमन्द रोड पर नहर के पुल पर उतरें।

निवेदक :
आचार्य गुरुकुल आर्य नगर, पो० आर्य नगर
जिला हिसार-१२५००१ हरियाणा

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र

घर में अन्न-समृद्धि हो

उपहूता इह गाव उपहूता अजावयः ।
अथो अन्नस्य कीलाल उपहूतो गृहेषु नः ।
क्षेमाय वः शान्त्यै प्रपद्ये शिवꣳ शग्मꣳ शयोः शयोः ॥
यजु० ३-४३ अथर्व० ७ ६० ६ ॥

हिन्दी अर्थ—इस घर में गाय, बकरी और भेड़ आमन्त्रित हैं। हमारे घरों में अन्न का पेय आमन्त्रित है। (हे गृह के देवो !) अपने कल्याण और शान्ति के लिए तुम्हारी शरण में आता हूँ। यहां सुख, कल्याण, शान्ति और कुशलता रहे

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१ वर्ष २६ अंक २६] | दयानन्दाब्द १६६ | दूरभाष : ३२७४७७१ | वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
श्रावण शु० ८ सं० २०४७ २९ जुलाई १९९०

वेदों का ज्ञान आज भी सार्थक

—उपराष्ट्रपति डा० शंकरदयाल शर्मा

नई दिल्ली १९ जुलाई। उपराष्ट्रपति डा० शंकर दयाल शर्मा ने आज कहा कि वेदों का ज्ञान आज की परिस्थितियों मे भी सार्थक है।

उपराष्ट्रपति ने आज यहां स्वर्गीय प० वन्देमातरम् वीरभद्र राव द्वारा लिखित पुस्तक 'वर्मी आफ दी सोल" का विमोचन करते हुए उक्त बात कही।

उपराष्ट्रपति ने कहा कि वेदों ने देश के सामाजिक सुधार आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आम धारणा यह है कि ये आध्यात्मिक उत्थान का मार्ग बताते हैं परन्तु वे व्यावहारिक भी हैं।

पुस्तक के लेखक आन्ध्र प्रदेश के स्वतन्त्रता सेनानी व विद्वान् प० वन्देमातरम् वीर भद्रराव को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए डा० शर्मा ने कहा कि डा० राव जैसे व्यक्ति वेदों से प्रभावित होकर स्वतन्त्रता संग्राम को समाज के पुनर्निर्माण का अवसर समझते थे।

उपराष्ट्रपति ने कहा कि वैदिक गणना पद्धति से आज के कम्प्यूटर परिणामों तक की जांच की जाती है।

डा० शर्मा ने कहा कि आज सबसे बड़ी आवश्यकता यह है कि हम योग साधना आदि द्वारा अपनी आत्मा को पहचानें।

पुस्तक की चर्चा करते हुए डा० शंकरदयाल शर्मा ने कहा कि यह पुस्तक हमें घृणा, द्वेष आदि से ऊपर उठकर प्राचीन भारतीय चिन्तन के अनुरूप निर्लिप्त भाव से बढ़ने की प्रेरणा देती है। उन्होंने पुस्तक के तेलुगु एवं हिन्दी संस्करण निकाले जाने की भी जरूरत बताई।

उन्होंने आर्य समाज को आह्वान किया कि वह अपनी श्रेष्ठ परम्पराओं के अनुरूप वेद व हिन्दी के प्रचार प्रसार के लिए और अधिक काम करे। समारोह में भूतपूर्व केन्द्रीय मन्त्री श्री पी० शिवशंकर भी शामिल हुए।



चित्र में दिखाई दे रहे हैं—श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम् श्री पी० शिवशंकर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, उपराष्ट्रपति श्री शंकरदयाल शर्मा सार्वदेशिक न्याय सभा के प्रधान जस्टिस भाई महावीरसिंह, प्रो० शेरसिंह

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि प० वीरभद्र राव जी वन्देमातरम् न केवल एक भाषाविद् थे अपितु एक महान् सन्त भी थे जिन्होंने अपने ज्ञान और अनुभूति के द्वारा यह महान् पुस्तक लिखकर समाज व राष्ट्र की अमूल्य सेवा की है।

समारोह मे बाबू सोमनाथ जी मरवाह एडवोकेट, डा सच्चिदानन्द शास्त्री न्यायमूर्ति जस्टिस महावीरसिंह जी, श्री विश्वमित्र उपाध्याय माता सरला महता, प्रो० शेरसिंह जी के० नरसिन्हा रेड्डी आदि महानुभाव उपस्थित थे। अन्त मे श्री विमल वधावन जी एडवोकेट ने उपराष्ट्रपति जी का धन्यवाद किया।

सम्पादक—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं को परिपत्र

माननीय प्रधान जी एवं मन्त्री जी

आर्य प्रतिनिधि सभा..............................

सप्रेम नमस्ते ।

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग सभा दिनाक ८ जुलाई ९० द्वारा सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया है कि आगामी २३ दिसम्बर से २६ दिसम्बर तक १९९० तक अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सार्वदेशिक सभा की ओर से राजधानी दिल्ली मे मनाया जायगा। इस निर्णय की सूचना १५ जुलाई के सार्वदेशिक पत्र मे प्रकाशित की जा चुकी है।

यह सम्मेलन अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर होगा। इसकी पूरी व्यवस्था के लिए सभा को अनेक क्षेत्रो मे व्यापक तैयारिया करनी पडेंगी। यह कार्य सभी आर्य समाजो, प्रतिनिधि सभाओ व आर्य सगठनों के सहयोग से ही सम्पन्न हो सकेगा।

आपने १९७५ मे दिल्ली में आर्य समाज स्थापना शताब्दी समारोह मे भाग लिया होगा, और उसके लिए की गई व्यवस्थाए भी देखी होगी। लेकिन आज यह घटना १६ वर्ष पुरानी हो चुकी है। उस समय दिल्ली मे लाख लोग शोभा यात्रा मे सम्मिलित हुए थे, आज हम चाहते हैं कि कम से कम १० लाख लोग इस सम्मेलन मे पधारें। इस सम्बन्ध मे आपकी सभा से हमारा निम्न प्रकार निवेदन है।

१—अपने प्रान्त की समस्त आर्य समाजो, शिक्षण सस्थाओ को आर्य महासम्मेलन की तिथियो की सूचना जारी करें और उनसे यह भी पूछे कि कितने लोग सम्मेलन मे दिल्ली पधारेंगे। उसके बाद आप अपनी सभा की ओर से हमे सूचित करेंगे कि आपके प्रान्त से कमसे कम कितने लोग सम्मेलन मे भाग लेंगे, ताकि उसी के अनुसार आवासादि की व्यवस्था हो सकेगी।

२—सम्मेलन की सफलता के लिये आपकी प्रान्तीय सभा सार्वदेशिक सभा को क्या-क्या सहयोग प्रदान करेगी।

३—इस सम्मेलन की सफलता और रोचकता के लिए आपकी सभा का कोई विशेष कार्यक्रम हो तो, वह भी लिखे।

४—सम्मेलन के लिये आर्थिक व्यवस्था के विषय मे अपने सुझाव भेजे।

हम चाहते हैं कि सम्मेलन की व्यवस्था के लिये होनेवाली बैठक मे आप की प्रतिनिधि सभा के दृष्टिकोण से कार्यक्रम बनाने मे सुविधा हो सकेगी।

अत: आप अपनी सभा की बैठक बुलाकर निर्णय से शीघ्र सूचित करने का कष्ट करे।

भवदीय :
स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
सभा-प्रधान

विशेष सूचना

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि श्री प० अशोक कुमार जी ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित सार्वदेशिक साप्ताहिक तथा वैदिक लाइट के ग्राहक बनाने के लिये अपना अमूल्य समय प्रदान किया है आर्य- जनो से निवेदन है कि आपके पास श्री अशोक कुमार जी के पहुंचने पर सार्वदेशिक साप्ताहिक व वैदिक लाइट (मासिक) के ग्राहक और विज्ञापन आदि देकर सभा का सहयोग करें। श्री अशोक कुमार जी ने अपनी सेवाए सार्वदेशिक सभा को प्रदान की हुई हैं।

—सम्पादक

पं० सच्चिदानन्द शास्त्री सभा मन्त्री विदेश यात्रा पर



आर्य प्रतिनिधि सभा, नीदर लैण्ड (होलैण्ड) के निमन्त्रण पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ६ सप्ताह के लिए वैदिक धर्म प्रचारार्थ होलैण्ड अगस्त माह में जा रहे हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा, नीदर लैण्ड हर वर्ष एक या दो बार वैदिक धर्म प्रचारार्थ भारत से वैदिक धर्म के विद्वानो को आमन्त्रित करती है। जो विद्वान वैदिक धर्म के प्रचारार्थ नीदरलैण्ड जाना चाहते हैं जिनकी अवस्था ५० वर्ष से ऊपर हो तो वे सीधे आर्य प्रतिनिधि सभा नीदर लैण्ड को पत्र लिख सकते हैं। पता इस प्रकार है—

Dr MAHENDRA SWARUP
President Arya Pratinidhi Sabha, Nederland
NIEUWE HOUTTUINEN 84,
1013 DD AMSTERDAM, NEDERLAND

एक जापानी की जबानी हिन्दुस्तान की कहानी

अखिको निशि आर्य प्रतिनिधि सभा टोकियो (जापान) के अध्यक्ष हैं। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सच्चिदानन्द जी के नाम १६-७-९० के भेजे गये अपने पत्र मे अपने सम्बन्ध में निम्न उद्गार निकाले हैं।

'People who are foreign born, who entertain love for India are none else but Indians in their previous births. They are placed in India by God for the good of India."

हिन्दी अनुवाद .—"जो लोग आज भारतेतर देशो में पैदा हुए हैं जिनमे भारत के प्रति प्रेम है वे पिछले जन्म के भारतीय ही हैं। भगवान ने इन्हें भारत के हित के लिए दूसरे देशो में पैदा किया है।"

अपने पत्र मे वे आगे लिखते हैं कि—

"वैदिक लाइट (सार्वदेशिक सभा का मासिक पत्र) के बारे में लिखते हुए निम्न विचार व्यक्त किये हैं।

"Vedic Light is the only contact between India and here (Japan) and it is very vital that we should keep ourselves in touch with it,

हिन्दी अनुवाद :—'वैदिक लाइट हमारे और भारत के बीच एक ऐसा माध्यम है जो विशेष महत्व रखता है। हम इस पत्र से वंचित नहीं रह सकते।"

(पैसी फिज्म) अर्थात अहिंसावाद पर अपने विचार व्यक्त करते हुए श्री अखिको निशि ने कहा है—

I am no saint. I never, believe in pecifism nor turn my left cheek, when I am hit on the right cheek For this very reason, Arya Varta was invaded by foreigners.

हिन्दी अनुवाद:—मैं कोई साधु नहीं हूं। मुझे अहिंसा में विश्वास नहीं है। यह भी नहीं कि एक गाल पर मारे जाने पर दूसरा गाल प्रस्तुत करूंगा। (मार खाने के लिये) इसी कारण ही मुल्क के भारत पर हमले होते रहे हैं।"

सभा इन विदेशियों के विचारों पर गर्व अनुभव करती है और दुःख भी कि हमारी अहिंसा हमारे देश के लिए अभिशाप साबित हुई है।

सम्पादकीय—

देश संकट में मित्रता का रूप क्या ?

सृष्टि जब से बनी और मानव के प्रादुर्भाव से सब सम्बन्धों के बीच एक विचित्र सम्बन्ध रहा है और मित्रता का, पारस्परिक प्रेम का। परस्पर प्रेम का होना दुनिया के उद्भव से आज तक चला आया है फिर आज द्वेष की आग में क्यों जला जा रहा है। इस सम्बन्ध की विवेचना अभी तक मनुष्यता की उच्च भाव भूमि पर हुई है। वेद ने कहा है कि—

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।

हम सबको मित्र की दृष्टि से देखें। इस उच्च आदर्श के मानने के बाद भी दुनिया के सभी रिश्ते-नाते, समय के टकराव और स्वार्थ की आंधी से आज निरन्तर दुर्बल और टूटते चले जा रहे हैं।

विश्व के नाना-वादों के चलते रहने पर भी द्वेष की आग बुझने के अतिरिक्त प्रज्वलित अधिक हो रही है। मित्रता के भावों को पनपाने में सारा संसार लगा हुआ है।

संसार में मित्र का होना आवश्यक है फिर प्रेम का कोई मूल्य भी तो नहीं है। पारिवारिक सम्पत्ति की तरह यह भी विरासत में नहीं मिलती है। और यह किसी पर थोपा भी नही जाता है मित्रता किसी संगी अथवा संगिनी की भांति शारीरिक सुख भी नहीं है। यह एक ऐसा अकथनीय सम्बन्ध है जो अपने साथ अन्य सम्बन्धों में कहीं अधिक गहरे समर्पण के भाव लेकर आता है और कहीं अधिक सुख प्रदान करता है।

पर आज की दूषित राजनीति में कोई किसी का न तो स्थायी मित्र होता है और न ही दुश्मन: इससे पता चलता है कि मित्रता का अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान है जो सदा बना रहता है।

मित्रता के भी अनेक रूप हैं ? महाभारत में कहा है जब द्रोण ने सर्वजित नाम का यज्ञ किया जो सब कुछ दान कर दिया। परिस्थितिवश द्रोण की मित्रता महाराज द्रुपद से थी। किन्तु कालान्तर मे आर्थिक स्तर पर आकर टूटगई। द्रुपद से कहा कहो कि तुम्हारे पुराना मित्र द्रोण आये हैं। यह सुनते ही द्रुपद ने कहा कि कह दो उनसे कैसा मित्र:—

ययो रेव समं वित्त ययोरेव सम श्रुतम्।
तयोर्विवाह सौख्य च न तु पुष्ट विपुष्टया.॥

जिनका धन मे समता नही जिनका ज्ञान बराबर नहीं और विवाह में समता नहीं उनकी पुष्टि न होकर दुराव ही होता है। मित्रता बराबरी वालो से हो सकती है गरीब-अमीर, दुर्बल बलवान, विवाद करते न्यायालय मे देखे जाते हैं। सम्बन्धो के इस दलदल में मित्रता का सम्बन्ध कमल की भांति नही दिखाई पड़ता। यही स्थिति छोटे राष्ट्र व बड़े राष्ट्रों में भी है एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को खाये जा रहा है स्वार्थ की राजनीति का दायरा सम्प्रदायवाद का घेरा मेरी बात मानो, मेरा धर्म मजहब मानो, मेरा खुदा मेरा कुरान व मुहम्मद साहब पर ईमान लाओ, इसी प्रकार अनेक वाद हिन्दू समाज में भी विद्यमान है ऐसा करोगे तो मुक्ति मिलेगी, अन्यथा नहीं।

वाद की बात जाने भी दें—क्या मित्रता बराबर वालों से ही होती है नहीं ? ऐसा नही ?

कृष्ण और सुदामा की मित्रता एक राजा दूसरा निर्धन गरीब ब्राह्मण। इन दोनों की मित्रता विवेचना से मिल सकती है)

आर्थिक समानता का तो प्रश्न ही नही था। फिर क्या इनकी मित्रता लोगों को बहकाने के लिये है। नहीं।

वस्तुत: मित्रता हम करते ही इसलिये हैं कि सकट काल में वह हमारे काम आये। यदि मित्र हम से दुर्बल हुआ तो हमारी क्या सहायता करेगा। आज सम्बन्धों के कच्चे धागे आर्थिक परिवर्तन, व्यवसायिक प्रतियोगिता की भाग दौड़ में कमजोर पड़ गये हैं। पहले दो भाइयों के प्रेम एवं राष्ट्रों के परस्पर प्रेम के व्यवहार को प्रेम का प्रतीक मानकर उदाहरण प्रस्तुत करते थे।

आज स्वार्थ के बिखराव में भाई-भाई, पास-पड़ोस, एक देश दूसरे देश को खाने को तैयार है कसी मित्रता।

आज की ऊंची व्यावसायिकता को रखकर प्रेम का अनुबन्ध हुआ है मित्रता कोई ऐसा सम्बन्ध नही है जो बताया जा सके, मित्रता हो सकती है की नही जा सकती है, ऊंच-नीच, योग्य-अयोग्य आर्थिक सन्तुलन इन सम्बन्धों को हम कोई भी नाम दे दें, पर उसे मित्रता कहना मित्र शब्द का अपमान करना होगा।

मित्रता की अवधारणा में एक महत्त्वपूर्ण तथ्य का सदा ही उल्लेख किया जाता है कि उनके मध्य लेन देन या उधारी के सम्बन्ध न हों, इसमें भी परस्पर प्रीति व्यवहार में दोष आ जाता है। मित्रता स्थायी नहीं रहती है। मित्रता में यह सब बातें दूर की है।

दुनियां में चोर-उचक्के लुटेरे-डाकू अपराधिक वर्ग में भी मित्रता के जो भाव देखे जाते हैं। ईमानदारी और वचनबद्धता देखी जाती है वह कभी-कभी विद्वानों, राजनेताओं, चिन्तकों अथवा कलकारों के मध्य में भी देखने को नहीं मिलती है क्या हम यह मान ले कि अपने अपराधिक हितों के कारण ही वे केवल एकता के सूत्र में बधे हैं। वा वे व्यवसायिक सम्बन्ध दुनियां के नैतिकतावादी विद्वानों के सम्बन्ध कही अधिक उच्चस्तर के हैं।

आर्थिक स्वार्थ पद और सत्ता की समानता वाले वर्ग में जो एकता व अटूटता रहती है उसमें अपना निहित स्वार्थ खेल खेलता है। उसे कुछ भी कहें पर वह मित्रता नहीं हो सकती है उसे व्यापारिक इमानदारी कहा जाय तो उचित होगा।

मित्रता के लिये व्यक्तियों के मध्य नि:स्वार्थ एव अपनत्व भरा सम्बन्ध होना प्रथम शर्त है इसलिये कहा जाता है कि मित्रता की नही जाती हो जाती है। और उसका बराबर वाले से होना एक अवसर हो तो कुछ बुरा भी नहीं है किन्तु वह सोची-समझी योजनाबद्ध हो तो फिर उसे भी मित्रता नहीं कहा जा सकता है। फिर भी

(शेष पृष्ठ ११ पर)

एक अगस्त १९९० को मावलंकर हाल (दिल्ली) में पं० बुद्धदेव विद्यालंकार का जन्मदिवस समारोह

उपराष्ट्रपति डा० शंकरदयाल शर्मा द्वारा शतपथ ब्राह्मण प्रथम काण्ड भाष्य का लोकार्पण

समर्पण शोध संस्थान (साहिबाबाद) के अध्यक्ष स्वामी दीक्षानन्द जी ने बताया कि आगामी १ अगस्त १९९० को आर्य जगत् के प्रख्यात विद्वान् स्व० पं० बुद्धदेव विद्यालंकार का जन्म दिवस है। उनकी स्मृति में शतपथ ब्राह्मण प्रथम काण्ड भाष्य का लोकार्पण—

उपराष्ट्रपति डा० शंकरदयाल शर्मा करेंगे।

यह कार्यक्रम मावलंकरहाल दिल्ली में सायं ४-३० बजे होगा। इस अवसर पर पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी महाराज आयोजन का सभापतित्व करेंगे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने दिल्ली के आर्य सामाजिक कार्यकर्त्ताओं को भारी संख्या में समारोह में शामिल होने का अनुरोध किया है। —सम्पादक

मध्यप्रदेश विधानसभा ने धारा ३७० हटाने सम्बन्धी संकल्प पारित किया

इका द्वारा चर्चा का बहिष्कार, जद द्वारा प्रस्ताव का विरोध

भोपाल ६ जुलाई। मध्य प्रदेश विधानसभा ने आज एक अभूतपूर्व कदम उठाते हुए जम्मू काश्मीर को विशेष दर्जा देनेवाली संविधान की धारा ३७० समाप्त करने का अनुरोध केन्द्र सरकार से किया है। उल्लेखनीय बात यह है कि इस आशय का अशासकीय प्रस्ताव कांग्रेस के वरिष्ठ विधायक श्री सुरेश सेठ ने पेश किया। श्री सेठ को छोड़कर इकाके अन्य सदस्य बहिर्गमन कर गए जबकि जद विधायको ने प्रस्ताव का विरोध किया। प्रस्ताव के पक्ष मे १३६ और विरोध मे २१ मत पड़े।

श्री सुरेश सेठ द्वारा इस अशासकीय संकल्प को लेकर इका विधायक दल में कल से ही तनाव व्याप्त था। कल रात विधायक दल की बैठक के बाद नेता प्रतिपक्ष श्री श्यामाचरण शुक्ल ने पत्र लिखकर श्री सेठ को निर्देशित किया था कि वे संकल्प वापस लें क्योकि यह इका की नीतियो के खिलाफ था। श्री सेठ ने इका विधायक दल के निर्देशो का पालन नहीं करते हुए आज सदन मे अपना संकल्प रखा। जैसे ही श्री सेठ ने संकल्प प्रस्तुत किया श्री श्यामाचरण शुक्ल के नेतृत्व मे सभी इका विधायको ने चुपचाप सदन छोड़ दिया। प्रतिपक्षी इका बैंचो पर श्री सेठ अकेले रह गये।

इका विधायको की अनुपस्थिति में जनता दलके विधायको ने ही विरोध की कमान सभाली। चर्चा के दौरान पक्ष विपक्ष मे कई तनावपूर्ण क्षण भी आये। जद विधायको की कई मुद्दो पर श्री सुरेश सेठ से सीधी मुठभेड़ भी हो गई। जद विधायको का मत था कि धारा ३७० समाप्त करने का यह उचित समय नही है। यदि हमने काश्मीर का विशेष दर्जा खत्म कर दिया तो देश को टूटने से कोई नही बचा सकेगा। असम मिजोरम अरुणाचल मणिपुर जैसे राज्य भी काश्मीर के रास्ते पर चल पड़गे। चर्चा की शुरुआत श्री सुरेश सेठ ने की और उसका समापन मुख्यमन्त्री ने किया।

मुख्यमन्त्री श्री सुन्दरलाल पटवा ने संकल्प के औचित्य को प्रतिपादित करते हुये कहा कि इसके जरिये हम केन्द्र सरकार के हाथ मजबूत करना चाहते हैं। हम केन्द्र सरकार को यह विश्वास दिलाना चाहते है कि धारा ३७० हटाने के मामले में मध्यप्रदेश की समूची जनता उसके साथ है। श्री पटवा ने इस सम्बन्ध मे भाजपा का दृष्टिकोण भी प्रतिपादित किया और स्पष्ट किया कि वह क्यो धारा ३७० समाप्त करने के पक्ष मे है। उन्होने कहा कि भारत और काश्मीर की जनता को बाटने वाली रेखा को हम धारा ३७० समाप्त करके मिटा देना चाहते हैं। डा श्यामाप्रसाद मुकर्जी का उल्लेख करते हुये श्री पटवा ने यह जानकारी भी दी कि भाजपा प्रारम्भ से ही इसका विरोध करता रही है।

श्री पटवा ने इस बात पर भी एतराज किया कि इस मुद्दे को लेकर भाजपा को सम्प्रदायवादी या कट्टरपन्थी कहा जाता है। पिछली सरकार ने वोटो की खातिर गलत निर्णय का लेकर काश्मीर को नासूर बना दिया है। यह हिन्दू मुसलमान का सवाल नही है। मध्य प्रदेश के जो अधिकारी काश्मीर को बचाने के लिये अपनी जान जोखिम मे डालकर जूझ रहे है उनमे कई मुसलमान भी हैं।

श्री पटवा ने मध्य प्रदेश कैडर के एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी श्री गफूर अहमद कुरैशी का खासतौर से उल्लेख किया जो वहा राज्यपाल के सलाहकार हैं। उन्होने कहा कि उनकी मा यहा बीमार हैं लेकिन देश के इस सपूत बेटे की मा को हम यह महसूस नही होने देगे कि वह यहा अकेली है। श्री कुरैशी की चिन्ताओ मे पूरा प्रदेश सहभागी है और इसीलिए नियमो को शिथिल करके राज्य सरकार ने उनके बेटे को नौकरी देने का फैसला किया।

श्री पटवा ने कहा कि जहा तक उचित समय का सवाल है, हमने चालीस वर्ष तक इन्तजार किया है। संविधान के इसी प्रावधान के कारण दुनियां के लोगो की नजर मे आज भी काश्मीर पूरी तरह भारत का अंग नही है। देश हित के मामले मतो के तराजू पर नहीं तौले जाने चाहिए। धारा ३७० समाप्त करने का इससे बढ़िया अवसर फिर नहीं आएगा।

बैंक खाते की झूठी खबर छापने पर मानहानि केस में अमिताभ ने स्वीडिश अखबार के खिलाफ मुकदमा जीता

सम्पादक ने माफी मांगी

लन्दन ११ जुलाई। बोफर्स घोटाले के सिलसिले में अमिताभ बच्चन की मानहानि करने वाले स्वीडन के एक अखबार को हर्जाना देने का निर्देश हुआ है। ब्रिटेन के हाई कोर्ट ने आज स्वीडन के अखबार 'डीगेंस नाइटर' को निर्देश दिया कि वह अमिताभ बच्चन को हर्जाना और मुकदमे का खर्च दे। अखबार ने अमिताभ बच्चन से बिना शर्त माफी भी मागी।

न्यायमूर्ति वाकफरसन ने स्वीडन के अखबार की यह दलील सुनने के बाद कि उसे भारत सरकार के किसी एजेन्ट ने गुमराह किया था, हर्जाने का फैसला दिया। अखबार ने सूचना देने वालों का नाम नही बताया। पर अमिताभ बच्चन से बिना शर्त माफी मागने का प्रस्ताव रखा।

अखबार ने इस साल ३१ जनवरी को छपी एक रपट में कहा था कि अमिताभ बच्चन का स्विट्जरलैंड बैंक में एक खाता है जिसमें बोफर्स घोटाले की रकम जमा हुई है।

अमिताभ बच्चन के वकील ने कहा कि वादी लदन मे भारतीय नागरिक के तौर पर रहता है। वकील के अनुसार 'वे न सिर्फ भारत के पूर्व प्रधानमन्त्री राजीव गांधी के करीबी मित्र हैं बल्कि भारत के प्रमुख फिल्म स्टार अमिताभ बच्चन के भाई भी हैं।'

मुकदमे की कार्रवाई शुरू होने से पहले कहा गया कि अखबार के वकील डानावस्की और सम्पादक क्रिस्टिना जटरस्ट्राम यह मान रहे थे कि उन्हे रपट के सूत्र ने गलत जानकारी दी। मुकदमे के खर्चे के बारे में अमिताभ बच्चन और डीगेंस नाइटर' के बीच किसी समझौते पर पहुचे बिना अदालत उठ गई।

अखबार के वकील के बयान के अनुसार सूत्र के धोखा देने की बात मालूम पड़ने पर मेरा मुवक्किल बिना किसी विरोध के वादी की बात मानता है। मुवक्किल मानता है कि वह बोफर्स घोटाले में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप मे कही भी शामिल नही है और उसे इस मामले मे सही या गलत किसी तरह का भुगतान नही हुआ है।' बयान मे आखिर मे कहा गया ऐसी हालत मे हमारा मुवक्किल और कुमार जटरस्ट्राम ३१ जनवरी को छपी रपट मे अमिताभ बच्चन को जो तकलीफ हुई उसके लिए बिना शर्त माफी मागते हैं।'

मुकदमे की सुनवाई के दौरान अजिताभके भाई व सिने स्टार अमिताभ बच्चन और उनकी मा तेजी बच्चन मौजूद थी। अमिताभ बच्चन ने भी इस मुकदमे मे गवाही देने की इच्छा जताई थी पर जैसे ही अखबारका माफी मागने वाला बयान सामने आया अदालत उठ गई।

इससे पहले तमाम नौजवान अमिताभ बच्चन को देखने के लिए लन्दन में इकट्ठा हो गये। वे हाथो मे तख्तिया लिए अमिताभ बच्चन का समर्थन जता रहे थे। (जनसत्ता २०-७-९०)

साम्प्रदायिकता कारण और निवारण

लेखक : श्री सत्यप्रकाश आर्य चनपटिया पश्चिमी चम्पारण बिहार-८४५४४९

आज साम्प्रदायिकता देश भर मे सोचने वालो को सबसे बडी और सर्वाधिक भयावह समस्या नजर आरही है, किन्तु हमारी चेतनाशील आखो को इसके भयावहता के निदान का कोई सार्थक उपाय नही सूझ रहा है। किन्तु मेरा यह सुविचारित मत है कि इसके कारणा की कडवी सच्चाई को ठीक तरीके से समझे बिना इस विषवृक्ष को जड से उखाडा नही जा सकता। दगा पीडितो के लिये अचानक उमड पडने प्रगतिशील करुणा और साम्प्रदायिकता के कारण की सतही तलाश, बीमार आखो से तात्कालिक लीपापोती तो हो सकती है स्थायी समाधान नही। समस्या का एक त्रासद पक्ष यह है कि देश की वर्तमान राजनीतिक और बौद्धिक सस्कृति मे अलगाववादी अस्मिताओ के साथ समझौता करने को ही राष्ट्रीय उदारता माना जाता है और राष्ट्र की सनातन अखण्ड अस्मिता को बनाये रखने के आग्रह को कट्टरपथी करार देकर कोसा जाता है।

भारत को तोडने और गुलाम बनाये रखने के जो उपाय अग्रेजो ने किये उनमे मैं एक सटीक उपाय था जनगणना। भारत की जनगणना पद्धति ने यहा के एकात्म समाज की परत दर परत को तोडा। अनजाने मैं ही यहा के लोगो के मानस मे जाति भाषा मजहब कर्मकाण्ड आदि कि अस्मिता का अहसास किया जाने लगा। भारतीय जनगणना प्रक्रिया मे यहा की जनसख्या की गणना ही नही की जाती। गणना की जाती है, सिख, जैन, हिन्दू, बौद्ध, मुसलमान, ईसाई, पारसी आदि की। इसका सहज परिणाम यह है कि भारत मैं सिख, जैन, हिन्दू, बौद्ध, मुसलमान, ईसाई, पारसी आदि तो है किन्तु भारतीय कोई नही है। मजहबी आधार पर भारतीय जन का यह विभाजन राष्ट्रीय स्तर पर भी उसे अलग रहने के लिये प्रेरित करता है। उनका मजहबी अस्मिता उन्हे राष्ट्रीय अस्मिता के साथ समरस हो जाने से रोकती है कि यदी उन्होने ऐसा किया तो पहचान का सकट खडा हो जायेगा। इसलिये जब तक इस देश की जनसख्या का हिसाब जाति और मजहब के आधार पर किया जाता रहेगा प्रत्येक निर्णायक घडी मे अल्पसख्यकवाद का यह नाग अपना फन फैलाएगा और भयभीत लोग इसे खुशामद का दुग्धपान करा कर इसका विषवृद्धि करने को बाध्य होते रहेंगे।

जब राजनैतिक उद्देश्य से धर्म के नाम पर सम्प्रदाय के नाम पर उसके अनुयायियो को भडकाया जाता है तब साम्प्रदायिकता का उदय होता है। साम्प्रदायिकता का सीधा रिश्ता अपने सम्प्रदाय की आक्रामक प्रतिष्ठा से जुडा है। जिस समाज मे विभिन्न सम्प्रदाय या समुदाय आपस मे एक दूसरे के साथ मिलकर रहने के बजाय एक दूसरे के मुकाबले अपनी प्रतिष्ठा जताने के लिये आक्रामक मुद्रा अपनायेंगे वहा साम्प्रदायिकता का जन्म होकर रहेगा। यह विचारणीय प्रश्न है कि जो मुसलमान अपने अपने हिन्दू मित्र को सिगरेट पीकर फेफडे न जलाने की नसीहत देता है वह रूपकवर को सती के नाम पर जिन्दा जलाने के घोर अधार्मिक कृत्य का समर्थन करने वाले उसी मित्र का मुखर विरोध क्यो नही करता? इसी तरह सामान्य हिन्दू लोग शाहबानो के साथ हुय अन्याय के खिलाफ आवाज क्यो नही उठा सकते? वे डरते हैं कि कही दूसरे के धर्म मैं हस्तक्षेप करने से बात बिगड न जाये। हमारे आपस के रिश्ते सिर्फ लीपापोती के जबानी रिश्ते हैं। अगर परस्पर विश्वास के आत्मिक रिश्ते होते तो दूसरे सम्प्रदाय के परकोटे मे पनपे जहर की देखते-बुझते हुये भी आगाह न कर पाने की बुजदिली क्यो होती? कितनी मस्जिदे और मुसलमानो के परिवार ऐसे हैं जहा हिन्दुओ की, अथवा कितने मन्दिर और हिन्दू परिवार ऐसे हैं जहां मुसलमानो का गाहे-ब-गाहे ही सही आना जाना चलता है? रिश्तो की इसी सवादहीनता के कारण सभी एक दूसरे से डरे हुये और शकित है। हिन्दू सोचता है कि अमुक मस्जिद या मुसलमान नेता के घर तलवारें जमा है और मुसलमान सोचता है कि अमुक मन्दिर के तलघर मैं त्रिशूल का कारखाना खुला है। ये सभी सवाद की अदृश्य दीवारे ही सम्प्रदायवाद का पुष्ट पोषण करती है जिससे हमारे राष्ट्रीय जीवन को खतरा पैदा हो रहा है।

हमारे देश मैं जैनो या बौद्धो ने कभी अपने को इस रूप में जताने की कोशिश नही कि की हम अल्पसख्यक है। हमारी फला-फला बातें सरकार को माननी ही पडेगी। पारसी स्पष्ट पहचाना जाने वाला एक अल्पसख्यक समुदाय है पर स्वतन्त्र भारत के इतिहास मे या उससे पहले भी कभी उन्होने अपनी आक्रामकता का परिचय नही दिया। सिखो ने एक कौम के रूप मे कभी अपनी आक्रामकता का परिचय आज तक नही दिया। उनके कुछ नेताओ ने जरूर कौम को गुमराह कर अलगाव और साम्प्रदायिक आक्रामकता का पाठ पढाने की हर सभव कोशिश पिछले पाच छ दशको से की है पर सिख कौम ने उसकी हमेशा उपेक्षा की है। यहा तक कि हिंसक उग्रवाद को धीरे-धीरे सिख कौम से जिस समझदारी से नकारा है, उसकी मिसाल इतिहास का एक मानदण्ड बन सकती है।

ईसाई समुदाय सीधे-सीधे दो हिस्सो मे बाटकर चलना होगा। एक है ईसाई कौम और दूसरा ईसाई पादरी। ईसाई कौम से इस देश को कभी कोई शिकायत नही रही और न उन्हे देश से कभी कोई शिकायत रही है। ईसाई पादरी जिस आक्रामक तरीके से विदेशी धन के सहारे यहा के भोले भाले लोगो के धर्मान्तरण और उसके माध्यम से राष्ट्रीय निष्ठाओ को प्रभावित करने मे लगे हुए हैं। उसके उदाहरण अवसर मिलते रहते है। लेकिन देश के ईसाईयो ने कभी खुद को पादरियो के इन राष्ट्र विरोधी कार्यों के साथ एकाकार नही किया और न देश से अलग मिलने वाली मागे कभी आक्रामक मुद्रा मैं पेश की है।

किन्तु मुस्लिम सम्प्रदाय को लेकर क्या हम इतने इत्मीनान से बात कर सकते हैं। मैंने मुस्लिमो के साथ सम्प्रदाय शब्द का प्रयोग जानबूझ कर किया है? सम्प्रदाय वह होता है जिसका धर्म ग्रन्थ, पैगम्बर और धार्मिक नियम तयशुदा हो, जिनमैं फेरबदल की कोई गुजाइस ही नही होती। कई बार कहे जाते के बाद भी यह तथ्य दोहराया जाना आवश्यक है। निश्चय ही इस आधार पर हिन्दू एक धार्मिक सम्प्रदाय नही है इसलिय वह साम्प्रदायिक आचरण या सोच का शिकार हो ही नही सकता। जैन, बौद्ध या सिख बेशक आज खुद को हिन्दू न कहना चाहे पर वे हिन्दुत्व में आयी कुछ बुराइयो या हिन्दुत्व के विरोधियो के खिलाफ लडने वाले सम्प्रदायो के रूप मे सगठित हुए। इस इतिहास को तो वे नही नकार पायेंगे। यह सच है कि वे सम्प्रदाय के रूप मे सगठित हुए पर यह भी सच है कि चू कि वे धर्मिक साम्प्रदायिक सकीर्णताओ से न्युनाधिक विहीन हिन्दुत्व मे से उपजे, इसलिये उसकी धार्मिक सहिष्णुता और उदारता भी लेकर बडे हुए। इसलिये इन सभी को साम्प्रदायिक कट्टरता को जताने की अक्सर नहीं सूझती।

ईसाई धर्म यकीनन सम्प्रदायबद्ध है पर उस कदर भारतीयकरण हो गया है कि यूरोप मैं औद्योगिक क्रान्ति के परिणाम स्वरूप उसमे जिस धार्मिक उदारता का समावेश हुआ, वही उदारता उसने भारत मे आकर यहा के हिन्दू परिवेश ने ग्रहण कर ली। यही कारण है कि ईसाई पादरी भारत के ईसाइयो को साम्प्रदायिक आधार पर आबद्ध नही कर पाये। पारसी धर्म का तो मामला ही जुदा है हिन्दुत्व के वैदिक रूप के समकालीन ही नही बल्कि समवयी प्राचीन अवेस्ता धारा का यह आधुनिक प्रतिनिधि उदारता, आत्मतोष और सहिष्णुता मैं शायद आधुनिक हिन्दुत्व से भी एक कदम आगे है।

पर दुर्भाग्यवश भारतीय मुस्लिम सम्प्रदाय को लेकर हम इतनी निश्चिन्त करने वाली बाते आज भी नही कर सकते। भारत के मुस्लिम सगठनो और मुस्लिम नेताओ ने कोई भी काम आज तक ऐसा नहीं किया जिससे इस देश के बहुसख्यक समुदाय के मन में भरोसा पैदा हो ये लोग भारत के मुस्लिम सम्प्रदाय को उस धारा से अलग मानते हैं जिसने हमले किये और बर्बर अत्याचार ढाये। बेशक १६४७ मे पाकिस्तान के रूप मे

भारत का विभाजन खुद को इस राष्ट्र से अलग मानने की यहां की इस्लामी अवधारणा की चरम अभिव्यक्ति भर था पर दुर्भाग्यवश इन नेताओं और सगठनो ने विभाजन पर आज तक न तो पछतावा है और न उस अवधारणा को नकारा है जिसने भारत माता का विभाजन करवाया, बल्कि खुद को अलग मानने और एक सम्प्रदाय के रूप में खुद को आक्रामक तरीके से जताने की कोशिश इन नेताओं और संगठनों ने हमेशा की है। देश के फैसलों से अलग अपना फैसला सरकार से अक्सर मनवाया है। शाहबानो के मामले पर उच्चतम न्यायालय के फैसले को संविधान संशोधन कर पलटवा देना एक उदाहरण है। देश के विभिन्न प्रदेशों मे उर्दू को दूसरी राजभाषा मानने जैसी नितान्त अवैज्ञानिक और साम्प्रदायिक मांग पर सरकार को घुटने टिकवा देना, केरल के मल्लापुरम नामक मुस्लिम बहुल जिला बनाने के लिये नम्बूदिरीपाद सरकार को विवश कर देना, अपना अलग से "पर्सनल ला" बनवाये रखकर खुद को भारतीय समाज के सर्वसम्मत संवैधानिक ढांचे में अलग और विशिष्ट रूप से दिखाना एक और उदाहरण है।

ऐसे और भी उदाहरण हो सकते हैं। पर इतने उदाहरण भी यह जानने के लिये काफी है कि कैसे देश के मुसलमानो को उनके नेताओ ने इस सम्प्रदाय मे व्याप्त अशिक्षा, गरीबी, और अज्ञान का लाभ उठाकर हमेशा मजहब के नाम पर देश की मुख्यधारा से अलग लाभ बन्द किये रखा है। अगर यह मामला धार्मिक और सामाजिक धरातल तक ही सीमित रहता तो शायद भारत के हिन्दू और मुस्लिम अपने तई समस्या का हल पारस्परिक सवाद से या एक दूसरे के असर ग्रहण कर तलाश लेते। पर एक व्यस्क वोट वाले हमारे लोकतन्त्र में मुस्लिम नेताओ ने मुस्लिम समाज को एक वोट बैंक बनाकर उसका जैसा राजनैतिक उपयोग किया, विश्व के तमाम लोकतन्त्रीय राष्ट्रो के इतिहास में यह बेमिशाल नजर आता है। अब चूंकि भारत के मुसलमानों का एक सम्प्रदाय के रूप में सोचने का ही नही वोट डालने का भी अभ्यास करा दिया गया है। इसलिये उनके वोट बैंक को बनाए रखने और उसे हथियाने की कोशिश कांग्रेस, कम्युनिस्ट पार्टियों और तथाकथित मध्यमार्गी दल करते रहे है। इस राष्ट्रघाती नासूर को पालने के लिये दो काम हो रहे हैं। एक काम मुस्लिम नेता और सगठन करते रहते है। वे इस्लाम को हर वक्त खतरे में पड़ा बता कर मुसलमानो को हमेशा डराते रहते हैं और उन्हें गैर मसलो में उलझाए रहते हैं। मसलन उर्दू सिर्फ मुसलमानो की भाषा नहीं है और न ही देश के सभी मुसलमान उर्दू जानते-बोलते हैं, पर उसे मुसलमानों की समस्या बनाकर हर दूसरे-चौथे दिन दीवार पर लिख दिया जाता है बाबरी मस्जिद से देश के मुसलमानो की भावनाएं कभी नहीं जुड़ी रही पर भावनाओं को भड़काया जा रहा है।

दूसरा काम कांग्रेस, जन्ता दल सहित तथाकथित मध्य मार्गी पार्टिया और वामपथी कम्युनिस्ट पार्टियां करती हैं। अगर मुस्लिम नेताओ और सगठनों का काम मुसलमानों को डराये रखकर उनका वोट बैंक बनाने का है, तो इन राजनीतिक दलों का काम इस डर को प्रमाणिक जैसा सिद्धकर घटिया तुष्टिकरण का है। वामपथी और मध्यमार्गी दल इस मुहिम में एक दूसरे से आगे रहना चाहते हैं कि मुसलमानो में यह भावना पैदा की जाये कि उनके लिये इस देश में तब तक असुरक्षा बनी रहेगी जब तक वे उन्हें वोट नही देगे। सवाल पैदा होता है कि यह असुरक्षा किससे है? जाहिर है कि बहुसंख्यक हिन्दू समुदाय से। बेशक यह बात ओठों पर न लाने की चालाकी सफलतापूर्वक बरती जाती है। परिणाम सामने है। इस्लामी सगठनो और नेताओ के साम्प्रदायिक लाम बन्दी, सरीखे हथकण्डों और वामपथी और तथाकथित मध्यमार्गी दलों द्वारा मुसलमानों में नकली असुरक्षा बोध पैदा कर उनके धार्मिक तुष्टिकरण की अन्तहीन कोशिशों से न केवल मुसलमानो और हिन्दुओं में पूरी लगातार बनी और बढ़ती रहता है बल्कि मुस्लिम समाज में साम्प्रदायिकता को आक्रामक शक्ल अख्तियार कर लेने दिया जाता है। चिन्ता का विषय वह है कि प्रतिक्रिया में हिन्दू भी अपने स्वभाव के विपरीत साम्प्रदायिक होना चाह रहा है। ऐसे मे मुस्लिम नेताओ तथा वामपथी और मध्यमार्गी कहे जाने वाले दलों को अपने तुष्टिकरण का रवैया बदलने की आवश्यकता है।

साम्प्रदायिकता का एक महत्वपूर्ण कारण यह भी है कि आज सभी धर्मों-साम्प्रदायो का जो स्वरूप हमारे सामने है उसमें सबसे बड़ा अभाव आध्यात्मिकता के तत्व का है क्योंकि सभी का प्रस्थान बिन्दु एक मानवीय आध्यात्मिकता है जो प्रत्येक व्यक्ति की स्वयं की शारीरिक मानसिक व आत्मिकता उन्नति के साथ-साथ समाज के सर्वांगीण विकास के लिये प्रेरित करती है। यही आध्यात्मिकता धर्म के मूल तत्वों सत्य न्याय क्षमा और आत्मसंयम आदि को जन्म देकर मनुष्य के अपने पराये का भेद की समाप्ती कर उसे अभिष्ट तक ले जाती है। वस्तुतः इसे ही नजर अन्दाज करना साम्प्रदायिकता को जन्म देने वाला सबसे बड़ा कारण है। किन्तु आज के साम्प्रदायिक जुनून ने आदमी के अस्तित्व को इतना बौना बना दिया है कि उनकी अपनी पहचान मजहबी पहचान ही बन कर रह गयी है। जो व्यक्ति स्वयं को पहले हिन्दू-मुसलमान, सिख ईसाई मानता हो बाद में भारतीय। वही अपनी पहचान के आलसी या नकली संकट से उबरने के लिये साम्प्रदायिक हो जाता है। जब तक पूरी ईमानदारी के साथ निःसंकोच अपने और पड़ौसी के घरों की मिट्टी को खोद कर उसमें उपजे साम्प्रदायिक विषाणुओं को नष्ट नहीं करेंगे, तब तक साम्प्रदायिकता के विषवृक्ष को भी पूरी तरह समाप्त नहीं किया जा सकता निश्चय ही धर्म का मूलतत्व इन सारी विसंगतियों से लड़ने का सर्वाधिक ताकतवर हथियार है। सिर्फ साम्प्रदायिकता के अन्त के लिये ही नहीं बल्कि शोषण, अन्याय, अलगाव और सवेदन हीनता पर टिकी आज की समाज व्यवस्था को बदल डालने के लिये धर्म की अनन्त ऊर्जा के स्रोत हैं धर्म के धनात्मक व गतिशील तत्व ही किसी न किसी रूप में सभी क्रान्तियो के प्राण तत्व रहे हैं तथा वे ही मानवीय संवेदना के वाहक भी साम्प्रदायिकता की महाव्याधि से निबटने के लिये धर्म के मूलतत्वों की पुनः प्राण प्रतिष्ठा अत्यन्त आवश्यक है।

अगर हम सचमुच साम्प्रदायिकता के विषवृक्ष को जड़ से उखाड़ना चाहते हैं तो आज से, बल्कि अभी से अपने अपने साम्प्रदायिक परकोटे से बाहर निकलकर दूसरों के अन्दर आवाजाही शुरू करके संवाद-हीनता को तोड़ना शुरू करना होगा और अपने-अपने धार्मिक विकृतियों पर खुलकर बहस करने का साहस जुटाना होगा, साथ ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य उस मानवीय सम्वेदना को जगाने का है जिससे किसी भी प्राणी के दुःखी होने पर स्वय दुःख का अहसास हो क्योंकि वही एक व्यक्ति को दूसरे के सुख-दुःख से भीतर तक जोड़ती है जिससे वह अपना बलिदान तक कर देने में आनन्दित होता है। साथ ही इन मुद्दों पर चेतनाशील बुद्धिजीवी, निष्पक्ष धर्म गुरु समर्पित राजनैतिक कार्यकर्ता गांव, मोहल्ले और कस्बो के स्तर पर छोटी-छोटी गोष्ठियां आयोजित कर परचे, लेख, और इस्तहारों द्वारा इनके विरुद्ध लड़ाई शुरू कर सकते हैं।

यदी भारत को वास्तव में साम्प्रदायिकता से मुक्त कराना है तो यहां के बुद्धिजीवी अपनी बौद्धिक दासता से मुक्त हो, राजनीतिज्ञ अपनी चुनावी और सत्तालोभ की राजनीतिक बाध्यता से उभरे, सज्जन भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय चेतना को जगाये तथा मानसिक क्रान्ति का सूत्रपात करें अन्यथा साम्प्रदायिकता का राक्षस इसे निगल जायेगा और फिर कोई मुहम्मद गौरी और क्लाइव किसी और रूप में आकर हमें अपनी गुलामी की जजीरों में पुनः जकड़ लेगा।

आर्यसमाज का शारीरिक एवं आध्यात्मिक पक्ष

विद्यानन्द सरस्वती, योगधाम आर्यनगर, हरिद्वार

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सांगोपांग वैदिक साहित्य का पहले अनुशीलन किया। साथ ही योगाभ्यास के द्वारा प्रज्ञाविवेक को उत्पन्न कर आर्ष एवं अनार्ष का विवेचन कर वैदिक आर्ष ज्ञान को सर्वोत्तम जानकर तदनुसार मानवमात्र को उत्तम मार्ग प्रदर्शित किया। 'मद्रमिच्छन्त ऋषयः' वैदिक सूक्ति के अनुसार ऋषित्व प्राप्तकर संसार के उपकार का उद्देश्य प्रत्येक आर्यजन का निश्चित किया। इसी मुख्य उद्देश्य की पूर्ति के लिए आर्य समाज का संगठन संगठित किया। संसार के उपकार का प्रकार बताते हुए उन्होंने तीन साधनों का संकेतित प्रथम शारीरिक, द्वितीय आत्मिक तथा तृतीय सामाजिक उन्नति करना।

एक शताब्दी से कुछ अधिक काल व्यतीत हो जाने पर, आइये हम सब आर्यजन विचारें कि मुख्य उद्देश्य की सम्प्राप्ति के लिए प्रथम दो साधनों में हमने कितनी सफलता प्राप्त की है।

शारीरिक उन्नति आर्यसमाज की आधार शिला ही सदाचार एवं ब्रह्मचर्य पर रखी गई। अतः शारीरिक शक्ति की उपेक्षा करने का कहीं संकेत नहीं मिलता। शारीरिक उन्नति के लिए अनेक विध प्रयास होते रहे हैं। शरीर को विकृत करने वाले पदार्थों को आर्य जगत् में सदैव हेय दृष्टि से देखा गया। दुर्गुण दुर्व्यसन में फंसे व्यक्ति को व्यसनों से मुक्त रहने तथा अभक्ष्य को त्यागने की प्रेरणा दी जाती रही। साथ ही यदि कोई दुर्व्यसनों को छोड़ने में असमर्थ देखा गया तो उसे आर्यसमाज की सदस्यता से पृथक् भी किया गया।

आर्यसमाज के सामाजिक यज्ञों तथा सम्मेलनों में स्वास्थ्य को दूषित करने वाले धूम्रपान, मद्यपान, मांसाहार आदि दुर्व्यसनों से हटाने के लिए आहुतियां डालकर प्रतिज्ञायें आज भी कराई जाती हैं। आंशिक रूप से शारीरिक वृद्धि के व्यायामादि साधनों का भी प्रयोग होता होगा परन्तु सर्वांश में नहीं कहा जा सकता कि आर्य उक्त दुर्व्यसनों से सर्वथा मुक्त हैं।

शारीरिक शक्ति संवर्धन के लिए प्राथमिक काल में अनेकों साधनों का खूब प्रयोग होता रहा। आर्यसमाज मन्दिरों में व्यायाम-शालायें खुली, यदाकदा खेलों का भी आयोजन किया जाता रहा। ब्रह्मचर्य काल या विद्यार्जन के समय डी॰ए॰वी॰ संस्थाओं की अपेक्षा गुरुकुलों में शारीरिक उन्नति के लिए विशेष बल दिया गया। जिसका शुभ परिणाम अनेक स्थलों पर समाज ने अनुभव किया।

आर्य पर्व पद्धति का निर्माण करते हुए, शारीरिक उन्नति का ध्यान रखकर ही आर्य विद्वानों ने दशहरा आदि पर्वों पर सामूहिक क्रीड़ा की पद्धति बनाई थी, परन्तु देखने में आता है कि आंशिक रूप से किसी आर्यसमाज के सदस्य शारीरिक ससाधनों का प्रयोग करते हों, नहीं तो पद्धति लुप्त हो रही है।

आर्य वीर दल एवं आर्य युवक परिषद् आदि नवयुवकों के संगठनों द्वारा ग्रीष्मकाल में विशेष रूप से इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु शिविरों का आयोजन होता है, उन शिविरों में प्रत्येक आर्यजन अपने पुत्र-पौत्रों को नहीं भेजते। नगरों में तो प्रचलन ही बहुत कम है। आर्य समाजों तथा अन्य संस्थाओं में रोगों से छुटकारा पाने के लिए ऐलोपैथिक आयुर्वैदिक या होम्योपैथिक आदि धर्मार्थ चिकित्सालयों का प्रबन्ध तो बहुत हो रहा है परन्तु व्यायाम तथा प्राकृतिक प्रयोगों द्वारा कैसे स्वस्थ रह सकते हैं? इसका ध्यान कम है।

'शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्' अर्थात् शारीरिक उन्नति सर्व धर्म कर्म का साधन है। इस साधन की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। आत्मरक्षा एवं धर्मरक्षा तथा राष्ट्र रक्षा, शारीरिक उन्नति पर आधारित है। अतः प्रत्येक आर्यजन का कर्त्तव्य है नित्य प्रति शारीरिक उन्नति स्वयं करें और अन्यों को कराने में सहयोग दें।

शारीरिक उन्नति पर ध्यान देने से ही व्यक्ति रोगों से मुक्त रहकर स्वस्थ मन से जितेन्द्रिय होकर आत्मिक उन्नति के लिए तत्पर हो सकता है तथा सामाजिक उन्नति भी कर सकता है।

आत्मिक उन्नति—शारीरिक उन्नति के साथ आत्मिक उन्नति परमावश्यक मानते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने ग्रन्थों में तथा वेदभाष्य में अनेक स्थानों पर उल्लेख किया है। उन्होंने प्रत्येक आश्रमवासी को प्रातः उठकर नित्य कर्म से निवृत्त होकर जल के किनारे एकान्त देश में जाकर कम से कम एक घण्टा योगाभ्यास करने का निर्देश दिया है। स्वयं भी अपने जीवनकाल में इस नियम का नित्य पालन करते रहे, जिसके परिणामस्वरूप वह संसार का वैदिक पथ का निर्देश देने में समर्थ हुए।

महर्षि दयानन्द के अनुवर्ती स्वामी सर्वदानन्द, नारायण स्वामी आत्मानन्द सरस्वती वेदानन्द 'दयानन्द' तीर्थ आनन्द स्वामी तथा सच्चिदानन्द सरस्वती आदि संन्यासियों ने तथा अन्य साधकों ने निज जीवन में यौगिक परम्परा को बनाये रखा है, पुनरपि वैदिक योग परम्परा से नवीन योगाभिलाषियों को सन्तुष्टि नहीं होती। आज 'चमत्कार को नमस्कार' की प्रथा चल रही है। ऐसे समय में पातञ्जल योग परम्परा जो वैदिक योग परम्परा है, उसका आश्रय लेकर सत्य को निज आचरण से प्रकट करना आवश्यक है। पातंजल योग परम्परा के विकास हेतु संगठित प्रयास के अभाव में गुरुकुलों के प्रबुद्ध स्नातक तथा अन्य आर्य योगाभिलाषी अनार्ष योग पद्धतियों का आश्रय ले रहे हैं। शेष आर्य नर नारी तो संक्षिप्त सन्ध्या हवन में तत्पर रहते हैं। इस प्रकार आत्मिक उन्नति के लिए गहन चिन्तन-मनन तथा आत्मिक दोष दर्शन कर, आत्मसुधार एवं संशोधन की आवश्यकता है।

आध्यात्म आत्म परमात्म विषय—वर्तमान में दृष्टिगोचर होता है कि प्रायः समाजों के वार्षिक उत्सवों पर, वेदकथाओं में या सम्मेलनों में ईश्वर के निराकार स्वरूप का निरूपण किया जाता है तथा ईश्वर उपासना के प्रकार बताये जाते हैं। ईश्वर भक्ति के संगीत तथा प्रवचन से प्रभावित श्रोता एवं व्याख्याता अपने कर्त्तव्य की इति श्री समझ लेते हैं। कभी शंका समाधान के द्वारा ईश्वर और मुक्ति के विषय पर प्रश्नोत्तर हो जाते हैं। इस प्रकार वर्तमान में चल रहे सम्पूर्ण क्रिया कलाप से आर्यसमाज का आत्मिक उन्नति का व्यवहारिक पक्ष रिक्त प्रतीत होता है।

योगमय जीवन न होने से हानि—जो नर-नारी नियमित जीवन व्यतीत करते हुए आत्म-चिन्तन तथा ध्यान-धारणादि योगांगों का पालन करते हैं उनके स्वभाव में छल-कपट का अभाव तथा सौम्यता स्नेह, सद्भाव आदि उत्तम गुणों का विशेष प्रभाव देखा जाता है। ऐसे ही व्यक्ति मान-अपमान से पृथक्, पदलोलुपता के जाल में नहीं फंसते, वे कर्त्तव्य भावना का पालन करते हैं।

इसके विपरीत जो अनियमित जीवन जीते हैं। अभक्ष्य का भक्षण करते हैं, साधनोपासना को जीवन में नहीं अपनाते, आत्म-चिन्तन न करने से निजदोषों को नहीं जान पाते, वे छल-कपट का व्यवहार करने वाले, असत्यभाषी क्रोधी दुराचार आदि दुर्गुणों से दूषित देखे जाते हैं। ऐसे ही रजोगुण से अभिभूत पदलोलुपता में लिप्त तथा अनेक विध सामाजिक मान-अपमान की लिप्सा में फंसे रहते हैं। इससे निष्कर्ष निकलता है कि योगमय चर्या के अभाव में

समाज की अनेक प्रकार से हानि होती है, जिसका परिणाम राजा-प्रजा सभी को भोगना पड़ता है। प्रत्येक आर्य नर-नारी को आत्म चिन्तन करना होगा कि हमारे जीवन में योगमय व्यवहार का कितना प्रयोग है? कहीं आध्यात्मिक पक्ष सुनने तक सीमित तो नहीं? कहीं वाणी विलासमात्र व्यवहार तो नहीं कर रहे? इस आचरण से न तो हमें आत्म साक्षात्कार से प्राप्तव्य शान्ति प्राप्त होगी न सामाजिक उन्नति करने में सक्षम हो सकेंगे। कठोपनिषद् ने स्पष्ट किया है—

'नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुधा श्रुतेन')

'आत्म तत्त्व का ज्ञान न तो प्रवचन करने मात्र से प्राप्त होगा व तार्किक प्रश्नोत्तर द्वारा और न इस विषय का बहुत बार प्रवचन सुनने मात्र से साक्षात्कार सम्भव हैं।' इसके लिए तो व्यवहार की शुद्धि तथा अन्तःकरण की पवित्रता आवश्यक है।

आध्यात्मिक उन्नति के उपाय—

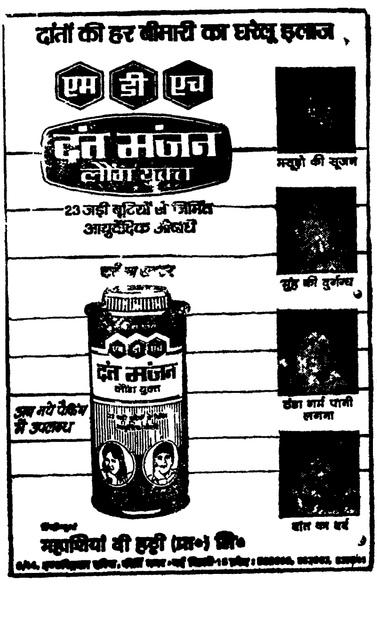
१—आत्मिक उन्नति के लिए, आर्यसमाज की साधारण सदस्यता के लिए व्यक्ति का योगमय जीवन होना आवश्यक हो।

२—समाजों के लिए साप्ताहिक सत्संगों में सर्व प्रथम सामूहिक साधना हो।

३—नवीन नर-नारियों को योग के लाभ तथा रहस्य वार्षिक उत्सवों पर बताये जाय, जिससे आत्मिक उन्नति के लिए आर्यसमाज के सदस्य बनें।

४—नैतिक शिक्षा तथा ध्यान योग प्रशिक्षण के शिविर लगाये जावे।

५—अवकाश के समय विद्यालयों तथा गुरुकुलों में प्रशिक्षण दिये जाय उत्तम साधकों को पुरस्कृत किया जाय।



६—सार्वदेशिक तथा प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के अन्तर्गत सुरम्य, एकान्त स्थानों पर साधना केन्द्र स्थापित व संचालित हों।

७—योगाभ्यासी, धर्मात्मा जितेन्द्रिय, संयमी, श्रेष्ठ पुरुष को अधिकारी बनाया जाय जिससे आबाल-वृद्ध आत्मिक उन्नति की इच्छा हो।

अध्यात्मकिरण की आशा—लगभग १० वर्षों से ध्यान योग शिविरों का संचालन देश के विभिन्न प्रान्तों में करने से अनुभव होता है कि इस यान्त्रिक भाग दौड़ से भरे अशान्त जीवन में जन-मानस शान्ति खोज ने लगा है। वैदिक योगमार्ग का राजयोग मिलने पर सन्तोष अनुभव करता है आज समाजों में योग शिविरों के आयोजन की मांग बढ़ रही है। योगाभिलाषा की भूख जागृत हो रही है।

योग्य अनुभवी, सौम्य शिक्षकों की आवश्यकता योग जिज्ञासुओं को रहती है, ऐसी स्थिति प्रत्येक आर्य नर-नारी को आत्म उन्नति के लिए प्रेरित करती हैं।

वर्तमान में नैतिकता एवं मानवता के उत्पादक योग के न अपनाने से राष्ट्र को जो अनेकविध हानि हो रही है, उसके निवारण हेतु राजकीय प्रयास जहां आवश्यक हैं वहां आर्यसमाज को भी इसमें विशेष प्रयत्न करना चाहिए। योगधाम को केन्द्र बनाकर युवकों में नैतिकता एवं योगाभिलाषा की तृप्ति के लिए 'योगमित्र मण्डल' की स्थापना की गयी है। गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय तथा कुलाधिपति की इच्छा है कि पुराने गुरुकुल भूमि पर योग-विश्वविद्यालय संचालित हो। अन्य स्थानों पर भी प्रयास किये जा रहे हैं। सुसंगठित, एक पद्धति से किये गये प्रयास संसार में भौतिक-वाद की आंधी तथा दुराचार अनैतिकता की लहर को कम करेंगे। तभी यह ऋषि-महर्षियों की योगविद्या फलीभूत होगी। भारत की शिरोमणि योग विद्या के आधार पर यह संसार का गुरु बनकर, शान्ति का सन्देश देता रहेगा।

अय मेरे प्रिय आर्य समाज

अंगड़ाई लेकर क उठ तू अय मेरे प्रिय आर्य समाज।
पाखण्डों में फंसे जगत को सतपथ तू दिखलादे आज॥
केवल तेरे ऊपर ही है सचमुच सकल विश्व को नाज।
प्राणीमात्र का हित चिन्तक तू ये है जगती की आवाज॥

आज अविद्या के चक्कर में इस दुनिया के हैं नस्नान।
वैदिक पथ को भूल गये है, झेल रहे है कष्ट अपार॥
दया धर्म, सच्चाई तजदी ऐसे दूषित हुये विचार।
मानव मानवता तजकर के बने हुये हैं, जग पर भार॥

दानवता से टक्कर ले तू धर्म युद्ध में ले तू भाग।
तेरा काम भलाई करना परहित का गा मधुमय राग॥
दुष्टों के शोणित से तुझको, पुन खेलना होगा फाग।
जाग जाग तू जग के प्रहरी पापिन निद्रा को दे त्याग॥

महर्षि दयानन्द बनकर तू, जग में कर वैदिक हुंकार।
बिस्मिल, भगतसिंह बनकर के बैरी दल का कर संहार॥
मानवता के हत्यारों के, निर्भय होकर शीघ्र उतार।
मुक्त कण्ठ से तेरी महिमा, गायेगा सारा संसार॥

—पं० नन्दलाल निर्भय भजनोपदेशक
ग्राम व पोस्ट बहीन जिला फरीदाबाद (हरियाणा)

श्रीराम जन्म भूमि

रामजन्म भूमि से हमारा है युग युग का नाता।
इसका जो भी प्रतिरोधक है वह नहीं हमको भाता।।
हुआ राम का जन्म यहीं पर यहीं कटा बालापन।
सरयू तीर अयोध्या नगरी सभी भांति है पावन।
गये यहीं से अरिदल का अभिमान मिटाने वन मे,
विजयी बनकर पुनः यहीं पर स्वीकारा सिंहासन।।
रामराज्य के संस्थापक का कौन नहीं यश गाता।
राम जन्म भूमि से हमारा है युग युग का नाता।।
राम यहां के राष्ट्र पुरुष हैं नहीं साधारण मानव,
उन्हें छोड़ राष्ट्र की कल्पना करना भी नहीं सम्भव।
उनका चारु चरित्र गानकर पावन बनती वाणी,
इस रहस्य को समझ न सकता कोई पामर दानव।।
जो लेता है समझ वही फिर उनका ही हो जाता।
रामजन्म भूमि से हमारा है युग युग का नाता।।
धर्म बदल देने से कोई पूर्वज बदल न सकता,
पावनतम सम्बन्ध रक्त का रोके से नहीं रुकता।
बन्द करो वह शिक्षा जिसको दे रहे यहां विदेशी,
जिसके कारण सदा परस्पर भ्रात-द्वेष का पकता।।
जन्म भूमि के प्रति निष्ठासे ही मानव सुख पाता।
राम जन्म भूमि से हमारा है युग युग का नाता।।
सदा विदेशी संकेतो पर जो यहां रास रचाते।
मजहब की ले आड व्यर्थ मे ही कुहराम मचाते।
देश द्रोह अलगाव वाद का करते पूर्ण समर्थन,
चुस पैठिये रह रहे जो यहा उनको सदा बचाते।
वह क्या देश भक्त हो सकता जो इनके गुण गाता।
राम जन्म भूमि से हमारा है युग युग का नाता।।
जो न यहां पर हुए उन्हें क्यों अपना पूर्वज मानें।
जिनका हममें रक्त उन्हें क्यो नहीं हम अपना माने।
आज अनेको मुस्लिम भी स्वीकार इसे कर मन से,
साथ हिन्दुओ के मिल मिलकर गीत लगे हैं गाने।।
विदेशियो का क्रीत दास दल व्यर्थ हमें भड़काता।
राम जन्म भूमि से हमारा है युग युग का नाता।।
राम विरोधी कोई शासन यहां नहीं चल पायेगा,
जनमत की ज्वाला मे उसका दुर्ग जल जायेगा।
हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई समझ एक मत होंगे,
सारा देश एक स्वर से फिर मचल मचल गायेगा।
राम हमारे हम है उनके हमको यही सुहाता।
राम जन्म भूमि से हमारा है युग युग का नाता।।

—राम किशोर शर्मा
आचार्य, श्री राधा कृष्ण संस्कृत महाविद्यालय खुरजा

पुस्तक समीक्षा

सामवेदीय ब्राह्मण दार्शनिक अध्ययन

मूल्य—१३०) रु०
ले०—डा० रूप किशोर शास्त्री, एम. ए पी. एच. डी.
प्रतिभा प्रकाशन, २९/५ शक्तिनगर, दिल्ली

सामवेदीय ब्राह्मणेतर, ब्राह्मण ग्रन्थो पर अपेक्षाकृत कम ही शोध कार्य हुआ है। पी. एच. डी. के लिए प्रस्तुत किया गया शोध प्रबन्ध है। इसमे अनुसन्धेय समस्त ब्राह्मण ग्रन्थो मे दर्शन की विधाओ का जीवन के क्षेत्र मे दर्शन की जिज्ञासाओ का तादात्म्य स्थापित करना इस प्रबन्ध का मुख्य उद्देश्य है।

इसमे कर्मकाण्ड के क्षेत्र को नई दिशा देने का प्रयास किया है। जिसका जीवन से साक्षात सम्बन्ध है।

दर्शन की उद्धृत सभी विधायें एवं जिज्ञासायें सत्यान्वेषी मान्यताओ से ओत प्रोत है। विषय वस्तु इसकी अपेक्षित, तथा वैशिष्ठ्य स्थान बनाना ही अभीष्ट है।

इस प्रकार लेखक ने एक महत्वपूर्ण विषय पर साङ्गोपाङ्ग विवेचन प्रस्तुत कर अध्येताओ के समक्ष अभिनव ज्ञान को खोल कर रखा है।

प्रस्तुत कृति वैदिक वाङ्मय तथा दर्शन के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी।

ले० डा रूपकिशोर के कार्य की सराहना एवं भविष्य मे जीवन की सफलता की कामनाओ के साथ—

(२)

आचार्य श्री पं. शिवकुमार जी शास्त्री दयानन्द सूक्ति सप्तशती पुस्तक पर उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा सम्मानित

हरदोई। आर्य जगत् के प्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान् आचार्य श्री प० शिवकुमार जी शास्त्री एम ए. विद्याभास्कर द्वारा रचित 'दयानन्द-सूक्ति-सप्तशती' जो सस्कृत मे श्लोक-बद्ध है। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा आपकी इस पुस्तिका पर दो हजार रुपए से प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया है।

प० शिवकुमार जी शास्त्री गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के सुयोग्य स्नातक वाराणसेय सस्कृत विश्वविद्यालय से आचार्य परीक्षा उत्तीर्ण कर आगरा से एम ए. किया।

गवर्नमेन्ट इण्टर कालिज उ० प्र० से सेवा निवृत्त होकर आप आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश म महोपदेशक है।

हम आर्य जगत की ओर से इस सम्मान पर हार्दिक बधाई देत है।

पुस्तक का मूल्य—१५) रु०
पता—प० शिवकुमार शास्त्री, चौगान चौक हरदोई (उ० प्र०)

सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा मन्त्री

आजीवन सदस्यों की सूची

१ मई १९९० से ३१ मई तक सार्वदेशिक साप्ताहिक के आजीवन सदस्य

१५५१६—श्री ठाकुरेन्द्रसिंह जी, ३/२ प्रेस कालोनी मायापुरी दिल्ली

१५५२०— , हृष मुनि जी ऋषि उद्यान, ऋषि घाटी पुष्कर मार्ग अजमेर (राजस्थान)

८०३८— , भारतेन्दु द्विवेदी, S/o कपिलदेव द्विवेदी, शान्ति निकेतन ज्ञानपुर वाराणसी

१५५३५— ,, मन्त्री जी, आर्य समाज, गज, सीहोर (म० प्र०)

१५५३०— ,, अनन्त दिमान, मौनतू दिमान C/o डा० विमलेश दिमान, एम ११६ माधव नगर ग्वालियर

१५६०६— ,, विमलादेवी, C/o श्री विजयसिंह नेगी, रतनपुर कोठद्वार गढ़वाल (उ० प्र०)

१५१०३— ,, रामलाल मलिक, आर्य समाज मन्दिर, मन्दिर मार्ग, आर्यनगर पहाड़गंज दिल्ली

६८७२— ,, सन्दीप कुमार सत्यप्रिय आर्य, C/o जयनारायण आर्य, सराय ग्वाली जयगंज अलीगढ़

१५६०७— ,, जी० सत्यदेव, १७-२-५२६, कुरानागुडा हैदराबाद (आ०प्र०)

१५६०८— ,, पूरनसिंह रावत, पल्टन बाजार अल्मोड़ा

१५१०१— श्रीमती अनिला देवी आर्य, C/o श्री वाचस्पति जी, अलकनन्दा बिल्डिंग आशा नगर, नासिक रोड नासिक

१५६२१—श्रीमती चन्द्रकान्ता आत्रेय, W/o श्री धर्मदेव आत्रेय, रतनगढ़ बिजनौर (उ० प्र०)

१५५३८—श्री रगा वजमला सत्यनारायण, शिवालय बीचे पुराना बाजार महबूब नगर वरगल

१५५३९—सगुणाबाई, W/o स्व० जवाहरलार जी, ४-९-८५ मारवाड़ी बाजार, महबूब नगर वारगल (आ० प्र०)

१५५४०—श्रीमती रुकमा बाई W/o स्व० मदनलाल जी, मारवाड़ी बाजार महबूब बाद वरगल

१५५४१—श्री चिदिराल शकर गुप्त, ४-३-१८ न्यू आबादी महबूब बाद

१५४४२— ,, रगम वैंकटय्या ६-३-९८ स्टेशन रोड महबूब बाद वरगल (आ० प्र०)

१५५४३— ,, शिपुला लक्ष्मी नारायण जी, ६-३ ९३ श्रीराम मन्दिर रोड महबूब बाद वरगल (आ० प्र०)

१५५४४— , बागरा नरसय्या, लालबहादुर नगर, ककर वोड महबूब बाद वरगल (आ० प्र०)

१५५४५— ,, मुरारि रोट्टि सोमय्या, पो० सूधन पल्लि कोरवी मण्डलम् महबूब बाद वरगल (आ० प्र०)

१५५४६— ,, चेम्नो जु विश्वनाथम् लालबहादुर नगर ककर वोड महबूब बाद वरगल (आ० प्र०)

१५५४७— ,, बगरा वैंकटय्या, लालबहारदुर नगर ककर वोड महबूब बाद वरगल (आ० प्र०)

१५५४८— ,, सकला लक्ष्माराम जी, पी. डब्ल्यू. डी. रोड महबूब बाद वरगल (आ० प्र०)

१५५४९— ,, शिवजीराम जी, लोया, मारवाड़ी बाजार महबूब बाद बरगल (आ० प्र०)

१५५५०— ,, कलकोटा किष्टय्या, पचिपाका रोड, महबूब बाद वरगल (आ० प्र०)

१५५५१— ,, पोतुगटिराम,, स्वामी जी, पो० नेरेडा कोरवी, मण्डलम् महबूब बाद वरगल (आ० प्र०)

१५५५२— ,, केसा नारायणजी, कोल बाजार महबूब बाद वरगल (आ. प्र.)

१५५५३— ,, रगमराघवय्या, पचिपाक रोड महबूब बाद बरगल (आ०प्र०)

१५५५४— ,, इक्कुल्ल नागभूषणम् वेणु गोपाल स्वामी मन्दिर मार्ग, महबूब बाद वरगल (आ. प्र.)

१५५५५— ,, मागम दासैय्या, बालपाका कोरवी मण्डलम् महबूब बाद वरगल (आ प्र.)

१५५५६— ,, सैंपिट सूरय्या, म न. ३-३-९६ सूर्यपेठ नम गोण्डा (आ. प्र.)

१५५५७— ,, कालुपति नागेश्वर राव १-५-१४८ राघाकृ सेस सूर्यपेठ नल्ला गोण्डा (आ. प्र)

१५५३८— ,, गुण्डा सूर्य नारायण, म. न. ३-४-४३ निकटरा पोल्लगुल्लु सूर्यपेठ (आ० प्र०)

१५५५९— ,, नेन्नमा मट्टैय्या जी, २-३-७ भवन मन्दिर वीथि, सूर्यपेठ नला गोण्डा (आ० प्र०)

१५५६०— ,, मद्दाला पुल्लया, २-२-१२ मेन रोड सूर्यपेठ नल्ला गोण्डा (आ० प्र०)

१५५६७— ,, उप्पला वेकन्ना जी २-२-९४ मस्जिद स्ट्रीट सूर्यपेठ नल्ला, गोन्डा (आ० प्र०)

१५५६२— ,, कानुपर्ति, किशन राव जी, १-४-१८१ दयानन्द स्ट्रीट सूर्यपेठ नल्ला गोन्डा (आ० प्र०)

१५५७३— ,, कानुपर्ति नागभूषणम् म० न० १-५-५-११७ सूर्यपेठ नल्ला गोन्डा (आ० प्र०)

१५५६४— ,, मेल पट्ला गोपाल जी, २-२-३१७ चन्द्रम्ना कुण्डा सूर्यपेठ नल्ला गोन्डा (आ० प्र०)

१५५६५— , श्रीमती कोदाटि, अम्बालम्मा, २-२-१२ मेन रोड पो० सूर्यपेठ नल्ला गोण्डा (आ० प्र०)

१५५६६— ,, सोम पाण्डु रगैया जी, १-२-१५६ मार्केट वार्ड सूर्यपेठ नल्ला, गोण्डा (आ० प्र०)

१५५६७— ,, चिन्ता पल्लि भिक्षम् ३०-१०-८१ हरिजन वाडा सूर्यपेठ नल्ला गोण्डा (आ० प्र०)

१५५६८— ,, तिरूनगरू जनार्दन जी, १-५-१३८ अलकार टाकीज रोड सूर्यपेठ नल्ला गोण्डा (आ० प्र०)

१५५६९— ,, कोन्तूर आप्पा राव, ३-७-४ बल पिण्टा बाजार सूर्यपेठ नल्ला गोण्डा (आ० प्र०)

१५५७०— , श्रीमती पालवाई लक्ष्मैया, अन्नपूर्ण सत्रम मार्ग, चन्द्रन्ना कुण्टा सूर्यपेठ नल्ला गोण्डा (आ० प्र०)

१५५७१— ,, तुल्ला बुच्चैय्या, १६-४-४८ किला मार्ग, वारगल (आ० प्र०)

१५५७२— ,, आबुल सोमेश्वरी जी १०-१०-४० मसम्मा गली, निर्मीजी पेठ, वारगल (आ० प्र०)

१५७७३— ,, कट्कम् लक्ष्मी नसैय्या जी, १६-५-१४४ आर्य वीर नगर रेलवे गेट वारगल (आ० प्र०)

१५५७४—कानुगाट्टे मल्लैय्या ११-११-७९, नरेन्द्र नगर वारगल (आ०प्र०)

१५५७५— ,, काटिवादि वीरग्ना जी, पो० आर्य पल्लि आर्य नगर देसाईपेठ वारगल (आ० प्र०)

१५५७६— ,, कुडिकाल वेंकट लक्ष्मी, ११-२२-२८१ नरेन्द्र नगर काशीकुण्टा वारगल (आ० प्र०)

१५५७७— ,, चन्दनाल बुच्मानन्दम् ५-११-१५६ डी हनुमान नगर, विद्यारम्यपुरी हनुमाकोण्डा वारगल (आ० प्र०)

१५५७०— ,, सिदे रामैय्या जी, पो० आर्य पल्लि वारगल (आ० प्र०)

१५५७४—श्रीमती चौटपेल्लि रत्नम्मा,, ११-१२५ नरेन्द्रनगर वारगल (आ. प्र.)

१५५८०— ,, दासी रगैया म०न० १८७५५ करीमाबाद वारगल (आ०प्र०)

१५५८१— ,, जोगुमी मुनि, वैंकटय्या ३३-८९ वेंकटेश नगर वाला नगर टाउनशिप हैदराबाद

१५५९२— ,, दासु लिंगैया जी १७-११-७० सुभाष नगर वारगल (आ०प्र०)

(शेष पृष्ठ ११ पर)

वेद प्रचार के लिए सम्पर्क करें

गौरव के साथ आर्य जनो के सूचनार्थ मे यह प्रकाशित करता रहा हू। ऋषि दयानन्द द्वारा निर्धारित आश्रम परम्परा के अनुरूप आर्यसमाज नागोरी गेट हिसार के भूतपूर्व मन्त्री कर्मठ कार्यकर्ता, ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त समाज सेवी सीताराम जी आर्य गृहस्थ आश्रम से मुक्त प्राप्त हो गये हैं विगत एक वर्ष से स्थानीय दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय मे आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान आचार्य श्री सत्यप्रिय जी शास्त्री के श्री चरणों मे स्वाध्याय एव अध्ययन में रत हैं वैसे श्री सीताराम जी आरम्भ से ही स्वाध्यायशील एव तर्क वितर्क करने मे अति कुशल रहे हैं। श्री सीतारामजी आर्य की प्रचारार्थ जरूरत हो तो प्रचारार्थ आमन्त्रित करके उनकी सेवाओ से लाभ उठावे।

पत्र व्यवहार का पता —

—सत्यप्रिय आचार्य
दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय
हिसार (हरियाणा) १२५००१

मित्रता का रूप क्या ?

(पृष्ठ १ का शेष)

मित्र को मित्र की दृष्टि से देखना यही गुण होना चाहिये। मित्रता में पानी और दूध के समीपता का भाव रहे तो आग से दूध-पानी का सामञ्जस्य बना रहेगा।

दूध ने अपने पास के सभी गुण जल को दे दिये परन्तु जल ने भी दूध को जलता देखकर अग्नि में अपने को जला दिया। मित्र पर विपत्ति देखकर दूध भी आग मे उछल-उछल कर आग मे बूझता है फिर भी पानी उसमें डालकर दूध को शान्त करता है सज्जनो की मित्रता ऐसी ही होती है।

आजीवन सदस्यों की सूची

पृष्ठ १० का शेष

१३५४३—श्रीमती कुन्नाल, जयलक्ष्मी, १९-८२२ रगाराईपेठ वारगल(आ प्र)
१५५८४—श्री नन्दनम सत्यम् जी, ४९-५२ पचशील कालोनी, रगारेड्डिनगर हैदराबाद (आ० प्र०)
१५५८५— , मामु नूरि को मुरय्या शौलून लक्ष्मी टाकीज के सामने जयप्रकाश नारायण मार्ग वारगल (आ० प्र०)
१५५८६—श्रीमती पेद्मुन्निलिंगम १०-१२-७१ लक्ष्मीपुरम् वारगल (आ०प्र०)
१५५४७—श्रीमती केदारी म न० ११-२२-२७५ नरेन्द्र नगर काशी कुग्गा वरगल (आ० प्र०)
१५५८८—श्री मुच्चेलिराम लिंगम् म० न० ११-९६३ नरेन्द्र नगर वरगल (आ० प्र०)
१५५८९— , भूषम राजैय्याह्, म.न. ११-१३४३ नरेन्द्रनगर वरगल (आ प्र.)
१५५९१— मेतुकु राजैय्या, ७-३-८९/५ राजपूत वाडा हनम कोण्डा वरगल (आ० प्र०)
१५५९२— ,, मोटे ईश्वरैया, ११ ७-१७० ग्रेन मार्केट वरगल (आ० प्र०)
१५५९३— , वीर लक्ष्मीवाई आर्या ६२-१-१२४ पिजलि बाजार हनुमान कोण्डा वरगल (आ० प्र०)
१५५९४— ,, विला सागर कुष्णय्या, १९-३-२७ रगाराईपेठ वरगल (आ प्र.)
१५५९५— ,, सामल अम्बादेवी, ११ २२-४८ नरेन्द्र नगर वरगल (आ प्र.)
१५५९६— ,, सगर वोइना, वीर गोविन्द, म०न० २०-९२-१०९ ईस्ट फोर्ट वरगल (आ० प्र०)
१५५९७— , कानुपर्ति गोवर्धनम् १-३-१३६ मलकार राड पो० सूर्यपेठ नल्ल गोण्डा

राज० न० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२१.७ १९९०) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U ९१
R N 626/57 Licensed to post without Prepayment License o U 91 Post in D P.S O.on 27-7-1990

सभा का एक और अनुपम प्रकाशन

डान आफ इण्डियन हिस्ट्री (अंग्रेजी)

भारत मे आर्यों के आगमन के विषय में पाश्चात्य इतिहासकारो और उनके समर्थको ने वर्षों से अनेक प्रकार की भ्रान्तिया पैदा कर रखी है। वह भारत मे आर्यों के आगमन का स्थान ईरान, मध्य एशिया अथवा यूरोप से मानते है, जबकि आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती की मान्यता है कि आर्य भारत के मूल निवासी थे क्योकि ईश्वरीय ज्ञान वेद आर्य ऋषियो के हृदयो मे ही प्रस्फुटित हुए थे और यह ग्रन्थ ससार के प्राचीनतम ग्रन्थो मे है। इसलिये ससार में सर्वप्रथम वैदिक सभ्यता का ही प्रचलन था। किन्तु दुर्भाग्य है कि आज भी देश के अन्दर ऐसे लोगो की कमी नही है, जो पाश्चात्य इतिहासकारो की भ्रान्तियो के शिकार ही नही हैं बल्कि अपने हिन्दी अथवा अग्रेजी लेखो द्वारा इस बात का आख मूदकर प्रचार कर रहे हैं।

प्रस्तुत पुस्तक "डान आफ इण्डियन हिस्ट्री" के लेखक ने श्री कर्मनारायण कपूर बी० ए० एल० एल० बी० ने महर्षि दयानन्द के मन्तव्यो के समर्थन मे इतनी प्रामाणिक सामग्री प्रस्तुत की हैं कि इतिहास के विद्वान भी उसकी उपेक्षा नही कर सकते हैं।

सार्वदेशिक सभा की ओर से लागतमात्र मूल्य पर यह पुस्तक अधिक से अधिक प्रचार प्रसार के लिए प्रकाशित की जा रही है। आशा है आर्य जनता इसका लाभ उठावेगी।

मैं लेखक के इस श्लाघनीय प्रयास पर उन्हे धन्यवाद देता हू।

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
सभा प्रधान

बरतानिया में पाकिस्तान

वर्षों तक भारत के मुसलमानो में [illegible] की भावना का प्रोत्साहन कर के इस देश के टुकडे तो अगरेजो ने [illegible] परन्तु इन्हें यह मालूम न था कि जिन मुस्लमानो को [illegible] पढा रहे हैं वह एक दिन इनसे कभी मुतालबा कर देंगे कि [illegible]निया में भी एक पाकिस्तान बनाया जाए जहा मुस्लमान अपनी सस्कृति सभ्यता मजहब और ईमान को सुरक्षित रख सकें—अनुमान किया जाता है कि इस समय बरतानिया मे कुल मिला कर कोई पन्द्रह लाख मुस्लमान हैं और अब इनकी तरफ से मुतालबा किया गया है कि इन्हे एक पृथक राज्य दिया जाए। जहा यह अपने मजहब के अनुसार इस्लामी हकूमत कायम कर सकें। कहते हैं कि अगरेज कौम बडी चतुर और चालाक है परन्तु अचम्भा यह है कि इसने इतिहास की इस रोशन हकीकत को नजरअन्दाज कर दिया कि मुस्लमान दुन्यिा मे कहीं भी गर मुस्लमान के आधीन चैन से नहीं बैठते। जब और जैसे इनका बस चलता है यह विद्रोह पर आमादा हो जाते हैं, अब ऐसा ही इन्होने बरतानिया में भी कर दिया है। कहा जा रहा है कि जितनी मुस्लिम सस्थाए हैं, बरतानिया में इनके प्रतिनिधियो ने ब्रेड फोरड में मिल कर यह माग की है कि मुस्लमानों को अपनी पारलीयामेंट बनाने दी जाये और इसके साथ ही एक इस्लामी राज्य भी बना दिया जाये। क्योकि यह माग नई नई है इसलिए मुस्लमान लीडर बडी सावधानी से अमल कर रहे हैं परन्तु बरतानवी अधिकारी इस पर काफी परेशान है। इनका कहना है कि शुरू शुरू मे बडी मासूमाना बाते की जाती है परन्तु ज्यू ही इस सस्था के पाव जम गये तो बडे मुतालबा होना शुरू हो जायेगे। बरतानिया की चिन्ता की एक वजह यह भी है कि इस सारी कोशिश के पीछे ईरान की सरकार का हाथ है। यह भी कहा जा रहा है कि अधिकाश मुस्लमानो ने ईरान की रहनुमाई भी स्वीकार कर ली है। इसका प्रमाण यह भी दिया जाता है कि इन्होने मुस्लमान रशीदी की मौत की सजा की तजवीज भी कर दी है। जिस बैठक मे यह मागें मागी गई हैं इसकी अध्यक्षता डाक्टर कमीम सदीकी कर रहे थे, और कोई ५०० के करीब मुसलमानो ने इसमे भाग लिया और दो दो मिनट के बाद "अल्लाह हो अकबर" के नारे लगा रहे थे। इन मांगो पर बरतानिया के गृहमन्त्री का ताअस्सर यह है कि ऐसे मुतालबात पर विचार करना ही (खारिज अजगौर) असम्भव है। बरतानिया मे मुस्लमान बडे निश्चिन्त होकर रह रहे हैं इसलिये इस माग का क्या मतलब है। —नरेन्द्र

पादरियों की समलैंगिक दुर्दशा

न्यू फाऊन्डलेंड का लाट पादरी परेशान

रोमन कैथोलिक चर्च को इस बात के लिए कसूरवार ठहराया जा रहा है कि इसके पादरी इग्लामबाजी करते रहे हैं और चर्च ने इन्हे लगाम न दी और आज सूरत हाल बदतरीन हो गयी है परिणामस्वरूप लाट पादरी को जनता से क्षमामांगनी पडी। समाचारो मे बताया गया है कि जब लाट पादरी का ध्यान इस कुत्सित की तरफ दिलाया गया तो इसने इन समाचारो का खण्डन किया और कहा कि न्यू फाऊन्डलैंड मे पादरी लौंडो को अपनी हवस का निशाना बना रहे है। —नरेन्द्र

रथ यात्रा मेले में वेद प्रचार

छोटा नागपुर। आर्य प्रतिनिधि सभा, राची के तत्वावधान में छोटा नागपुर के सबसे बडे रथयात्रा मेले मे आर्य समाज का एक प्रचार कैम्प गत वर्षों की भाति इसवर्ष भी लगाया गया जिसके अन्तर्गत वैदिक साहित्य का विक्रय और उसका नि.शुल्क वितरण किया गया। मेले मे खोये हुए बच्चो के सम्बन्ध में सूचनायें प्रसारित कर उनके पुनर्मिलन का प्रबन्ध किया गया।

—दयाराम पोद्दार, मन्त्री
छोटा नागपुर आर्य प्रतिनिधि सभा, राची

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र

वेदामृत

घर सभी सुविधाओं से युक्त हों

इमे गृहा मयोभुव ऊर्जस्वन्तः पयस्वन्तः ।
पूर्णा वामेन तिष्ठन्तः, ते नो जानन्त्वायतः ॥
अथर्व० ७ ६०-२ ॥

हिन्दी अर्थ—ये घर सुखदायी हैं अन्नादि से युक्त हैं और दूध आदि से सम्पन्न हैं। ये सभी अभीष्ट पदार्थों से परिपूर्ण रहते हुए प्रवासादि से लौटने पर हमको जानें।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१ | दयानन्दाब्द १६६ | दूरभाष : ३२७४७७१ | वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष २६ अंक ११] | भाद्रपद कृ० ४ सं० २०४७ १२ अगस्त १९९०

भारत की स्वाधीनता में आर्यसमाज का भारी योगदान

—डा० शंकरदयाल शर्मा उपराष्ट्रपति

दिल्ली ९ अगस्त। नई दिल्ली के मावलंकार सभागार मे प० बुद्धदेव विद्यालंकार जन्म शताब्दी समारोह का आयोजन गुरुकुल कांगड़ी के प्रख्यात विद्वान प० प्रियव्रत वेद वाचस्पति की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प० बुद्धदेव कृत शतपथ ब्राह्मण भाष्य का विमोचन माननीय उपराष्ट्रपति डा० शंकरदयाल शर्मा ने किया।

उपराष्ट्रपति शंकरदयाल शर्मा ने कहा वेदो का ज्ञान आज भी सार्थक है। भावी पीढ़ी को संस्कृत के अध्ययन के लिए विदेशो मे न जाना पड़, इसलिए वैदिक चिन्तन के साथ साथ संस्कृत के अध्ययन की ओर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। वेद तथा ब्राह्मणादि ग्रन्थो के छोटे छोटे ट्रैक्ट निकालकर उन्हे प्रचारित किया जावे। क्योंकि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेद प्रतिपादित वैदिक सिद्धान्तो के चिन्तन के प्रति भारत में विश्वास की भूमि तैयार करके भारत की स्वाधीनता में सक्रिय सहयोग प्रदान किया था।

डा० शंकरदयाल जी ने कहा पाश्चात्य विद्वानो ने यह सिद्ध कर

(शेष पृष्ठ २ पर)



चित्र में उपराष्ट्रपति डा० शंकरदयाल शर्मा प० बुद्धदेव विद्यालंकार की 'शतपथ ब्राह्मण' पुस्तक का विमोचन करते हुए। साथ में स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, प्रो० शेरसिंह, स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती डा० धर्मपाल जी।

सम्पादक—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

भाजपा और आर्यसमाज में मतभेद नहीं

दिल्ली ३ अगस्त।

"नव आर्य प्रतिनिधि सभा भाजपा का विरोध करेगी शीर्षक के अन्तर्गत २ अगस्त को प्रकाशित समाचार पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने कहा कि उपरोक्त वक्तव्य मनगढ़न्त, भ्रामक और असत्य है। आर्यसमाज से निष्कासित स्वामी अग्निवेश और इन्द्रवेश को आर्यसमाज के नाम पर न तो कोई वक्तव्य देने का अधिकार है और न ही कोई संगठन बनाने का। आर्यसमाज से उनके निष्कासन की पुष्टि ८ जुलाई को हुई सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग बैठक में भी हो चुकी है।

स्वामी जी ने कहा इस वक्तव्य में मेरा और डा० धर्मपाल का नाम द्वेषभावना से जोड़ा गया है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल का भी नवगठित प्रतिनिधि सभा से कोई सम्बन्ध नहीं है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का इन दिनो कोई वार्षिक अधिवेशन नही हुआ और न किसी बैठक में भाजपा के विरोध का निर्णय हुआ। यह आर्यसमाज और भाजपा के बीच मतभेद पैदा करने की गहरी साजिश है। स्वामी जी ने कहा कि भाजपा और आर्यसमाज में कोई झगड़ा नही है।

स्वामी जी ने यह भी बताया कि आर्यसमाज के सन्यासियों के सर्वोच्च संगठन यतिमण्डल की गत आबू पर्वत पर हुई बैठक मे भी इन तथाकथित वेशधारियो का आर्य समाज से बहिष्कार करने का आह्वान किया गया,था।

स्वामी जी ने कहा यह लोग अपने राजनीतिक लाभ के लिए आर्यसमाज के नाम का उपयोग करके आर्य जनता को गुमराह करने की जो साजिश कर रहे हैं, आर्य जनता उससे सावधान रहे।

सच्चिदानन्द शास्त्री

सभा-मन्त्री

आर्यसमाज का योगदान

(पृष्ठ १ का शेष)

दिया है कि कम्प्यूटर विज्ञान में संस्कृत ही सबसे उपयोगी भाषा है, जो उसे सरल बना देती है। इसी आधार पर कम्प्यूटर की गणना का कार्य वैदिक गणित पर तैयार हो रहा है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द-बोध सरस्वती ने अपने जोशीले उद्बोधन मे प० बुद्धदेव विद्यालंकार का श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए कहा पण्डित जी संस्कृत के महान् पण्डित और कुशल राजनीतिक भी थे। जिस शतपथ को लोग जगल कहते थे प०बुद्धदेवजी ने उसका भाष्य करके उसे एक पथ कर दिखाया। जीवन के हर क्षेत्र मे उन्होने चौतरफा लड़ाई लड़ी थी। उनमें वैदिक वाङ्मय के चिन्तन की प्यास और राष्ट्रीय अखण्डता और स्वतन्त्रता की ज्वाला थी। वह एक साहसी और क्रान्तिकारी योद्धा थे आर्यसमाज जैसी क्रान्तिकारी सस्था के लिए वह सदैव प्रेरणा स्रोत रहेंगे।

स्वामी जी ने कहा आज से ७२ वर्ष पूर्व उन्होने पण्डित जी का भाषण सुना था उस समय वह गुरुकुल से शिक्षा समाप्त करके बाहर निकले थे, योगीराज श्रीकृष्ण के जीवन पर बोलते हुए उन्होंने कहा था कि श्रीकृष्ण ने खण्ड खण्ड भारत को अखण्ड बनाया था, क्योंकि उस समय देश लगभग ८० रियासतों में विभक्त था। उनका वह भाषण पराधीन भारत को स्वाधीन करने के लिए एक प्रेरणा थी। हैदराबाद सत्याग्रह आन्दोलन मे भी प० बुद्धदेव विद्यालंकार ने एक बड़े जत्थे का नेतृत्व करते हुये गिरफ्तारी दी थी।

समर्पण शोध सस्थान के सस्थापक अध्यक्ष स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती ने प० बुद्धदेव विद्यालंकार को भावभीनी श्रद्धांजलि देते हुए समर्पणशोध सस्थान के कार्यक्रमो पर प्रकाश डाला।

डा० वाचस्पति उपाध्याय, डा० धर्मपाल, पंडिता प्रभात शोभा, प्रो० शेरसिंह और प्रियव्रत वेद वाचस्पति आदि विद्वानो ने भी प० बुद्धदेव विद्यालंकार के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। समारोह का आयोजन समर्पण शोध सस्थान की ओर से आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली द्वारा किया गया था।

फीजी में क्रूर मजाक

बीसवी शताब्दी के अन्तिम दशक में जब विश्व मे रंगभेद और जातिवाद के विरुद्ध आन्दोलन अधिक प्रभावशाली और परिणामकारी होता दीख रहा है, प्रशान्त महासागर में फीजी द्वीप समूह की अन्तरिम सरकार ने ऐसा संविधान जारी कर दिया है जो सभ्य मानवता और मानवाधिकारो को प्रतिष्ठित करने वाले सभी विश्व संगठनो के मुंह पर तमाचा है। इंसान की चमड़ी के रंग के आधार पर आदमी को आदमी से कहीं कम समझने वाली दक्षिण अफ्रीकी गोराशाही ने विश्व जनमत के दबाव में अश्वेतों के राष्ट्रीय नेता नेल्सन मण्डेला को रिहा किया और उनसे बातचीत शुरू की। लेकिन फीजी मे जो कुछ हो रहा है वह यही सूचित करता है कि विश्व मचों पर भारत सरकार की नस्लवाद विरोधी पैरवी में कमी रही, नही तो क्या मजाल कि सभ्य जगत को दर किनार करते हुए फौजी 'तानाशाह' मेजर जनरल सितिवेनी राम्बूका की कठपुतली अन्तरिम सरकार ने उस संविधान को लागू कर दिया जो अमानवीय और घोर नस्लवादी है। वहा जाकर बसे बहुसंख्यक भारतीयो से साथ नया संविधान ऐसा भेदभाव करता है कि वे कभी भी सत्ता पर अधिकार नही पा सकेंगे।

फीजी मे १९८७ के संविधान के तहत हुए लोकतांत्रिक चुनाव मे फीजी मे भारतीय बहुल नेशनल फेडरेशन और श्रमिक गठबंधन ने संसद मे बहुमत प्राप्त कर लिया था। फीजी मूल के स्वर्गीय डा० बावाद्रा के प्रधान मन्त्रित्व में बनी सरकार में भारतीयो का वर्चस्व था। पश्चिमी सैनिक अकादमियो मे प्रशिक्षित फौजी अफसर कर्नल राम्बुका ने दो दर्जन फौजियो की मदद से शासन का तख्ता पलट दिया। लोकतन्त्र की हत्या के बाद से सत्ता-सुख पाने के नशे मे चूर राम्बूका इसलिए अपने कुत्सित इरादो मे सफल हुए कि राष्ट्रमंडल की प्रधान ब्रिटेन की महारानी ने दखलन्दाजी नहीं की। न्यूजीलैंड और आस्ट्रेलिया ने अवश्य फीजी की घटनाओ पर चिंता व्यक्त की और फौजी शासक के विरुद्ध अभियान भी किया। दोनो देशो ने फीजी जाने वाली उपभोक्ता सामग्रियो के निर्यात पर भी रोक लगाई। लेकिन जब इजराइल, फ्रांस और अन्य पश्चिमी देशो ने फीजी को हर तरह की, हथियारो की भी, मदद पहुंचानी शुरू की तो न्यूजीलैंड और आस्ट्रेलिया का विरोध ढीला पड़ गया। राम्बूका ने दिखाने के लिए कुछ महीनो से अपने आपको बैरकवासी बना लिया है लेकिन उनका असली उद्देश्य तो फीजी का प्रधानमन्त्री बनना है। नया संविधान बरकों मे ही लिखा गया और उन्हीं के लिए बनाया गया है।

नए संविधान के अन्तर्गत संसद मे स्थानीय फीजी मूल के लोगो के लिए ३७ और भारतीय मूल के फिजियनो के लिए २७ स्थान होंगे। ऐसे संविधान मे मौलिक अधिकारा की गारंटी दिये जाने का उल्लेख कितना बड़ा मजाक है। १९८७ मे वहा भारतीय बहुसंख्यक थे। सैनिक विद्रोह के बाद हजारो वहा से चले गये फिर भी पचास प्रतिशत के आस पास अभी भी होंगे। फीजी की कृषि आधारित अर्थव्यवस्था का संचालन भारतीय ही करत हैं। गन्ने की खेती और चीनी उद्योग भारतीयो के हाथो मे है। सैनिक विद्रोह के बाद राजधानी सूवा मे भारतीयो के साथ अभद्र व्यवहार और उन पर आक्रमण की घटनाये भी हुई हैं। इस बीच डा बावाद्रा की पत्नी श्रीमती आदि कुइना बावद्रा के नेतृत्व में गठबंधन का प्रतिनिधिमंडल आस्ट्रेलिया सरकार से अपील करने गया कि वह न्याय करे और नस्लवादियो की मदद नही करे। पर उन्हे सफलता नही मिली। इसलिए अब जरूरी हो गया है कि भारत सरकार बड़े पैमाने पर अन्तरराष्ट्रीय मचो पर आवाज उठाए। सं. रा मानवाधिकार का कर्तव्य है कि वह लोकतन्त्र की हत्या करने वाले नस्लवादियो के बहिष्कार का अन्तर्राष्ट्रीय फरमान जारी करे।

(२७-७-९० के हिन्दुस्तान से साभार)

आदर्श सामाजिक व्यवस्था पर गोष्ठी सूचना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे निम्न कार्यक्रमानुसार एक गोष्ठी का आयोजन किया जाएगा।

मुख्य अतिथि श्री डॉ० सत्यनारायण रेड्डी, राज्यपाल (उत्तर प्रदेश)

विषय . आदर्श सामाजिक व्यवस्था

स्थान स्पीकर हाल, कान्स्टीट्यूशनल क्लब रफी मार्ग, नई दिल्ली

तिथि ९ सितम्बर १९९० रविवार

समय : साय ३ बजे से ६ बजे तक

इस गोष्ठी मे सारे देश तथा कुछ विदेशी प्रतिनिधियो के भी भाग लेने की उम्मीद है। मारीशस के उच्चायुक्त श्री आनन्द प्रिये निवूर मुख्य वक्ता होंगे तथा कानून विशेषज्ञ डा० लक्ष्मीमल सिंघ्वी, पूर्व लोकसभा अध्यक्ष डा० बलराम जाखड, दैनिक हिन्दुस्तान के समाचार सम्पादक श्री विश्व मित्र उपाध्याय के अतिरिक्त और भी कई गणमान्य व्यक्ति इस गोष्ठी में भाग लेंगे।

आपसे निवेदन है कि इस गोष्ठी मे भाग ले तथा पारित प्रस्ताव के कार्यान्वयन मे सहयोग दे।

संयोजक

डा० धर्मपाल प्रधान	विमल वधावन एडवोकेट	के० नरसिम्हा रेड्डी
दिल्ली आ०प्र० सभा	संयोजक कानूनी समिति	स्वतन्त्रता सेनानी
	सार्वदेशिक आ०प्रा० सभा	

इस गोष्ठी के सम्बन्ध में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तथा वरिष्ठ उप प्रधान प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव द्वारा जारी एक पत्र को भी यहा प्रकाशित किया जा रहा है जो कि इस गोष्ठी के विषय पर पर्याप्त रोशनी डालता है।

मित्रो !

आप सब जानते है कि मनुष्य स्वभाव से समूह मे रहनेवाला प्राणी है। और इसी प्रवृति के कारण सामाजिक व्यवस्था का जन्म होता है।

जैसा कि दार्शनिक शाफ्टबरी ने कहा है कि यदि खाना और पीना प्राकृतिक है तो इकट्ठा होकर रहना भी प्राकृतिक है। अत इस तथ्य मे कोई मतभेद नहीं हो सकता कि मनुष्य समूहो में रहता है।

एक अन्य दार्शनिक ऐरिस्टोटल की राय में कुछ मनुष्यो मे पशुवृति भी पाई जाती है और इन पशुवृतियो पर नियन्त्रण करने के लिए सामूहिक दबाव आवश्यक है और इसी आवश्यकता के कारण सामाजिक व्यवस्था का जन्म होता है।

विश्व मे विभिन्न प्रकार की सामाजिक व्यवस्थाओ का अनुभव मनुष्य द्वारा किया जा चुका है। जैसे फासिस्ट, नाजी, साम्यवाद पूजीवाद आदि। कल्याणकारी समाज की अवधारणा भी एक सामाजिक व्यवस्था के रूप में उभरती नजर आ रही है।

आर्य समाज के अन्तर्राष्ट्रीय सगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में ९ सितम्बर १९९० को आदर्श सामाजिक व्यवस्था नामक विषय पर एक गोष्ठी आयोजित करने का निश्चय किया गया है जिससे इस विषय का समाधान विश्व के सामने रखा जा सके कि आदर्श सामाजिक व्यवस्था क्या है ?

जैसा कि पहले कहा गया है कि मनुष्य के स्वभाव के कारण तथा कुछ पशुवृतियो पर नियन्त्रण के कारण सामाजिक व्यवस्था अत्यन्त आवश्यक है, जिसका कार्य नियम एव कानून बनाना तथा उनका पालन करवाना है।

फासिस्ट विचारो का प्रादुर्भाव सात दशक पहले इटली मे हुआ जिसमे उग्री राष्ट्रवाद और सैनिकीकरण पर जोर दिया परन्तु द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद ही इस सामाजिक व्यवस्था का अन्त हो गया। इस व्यवस्था मे व्यक्ति को राज्य के हाथ मे एक अस्त्र-शस्त्र की भाति माना गया है, जिसका प्रयोग मजबूत सैनिक राज्य बनाने के लिए किया गया। व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का बहुत कम सम्मान इस सामाजिक व्यवस्था मे था और नेता में विश्वास, उसकी आज्ञा, का पालन और युद्ध इस सामाजिक व्यवस्था के नारे थे।

हिटलर द्वारा प्रचलित नाजी सामाजिक व्यवस्था का दृष्टिकोण भी फासिस्ट व्यवस्था के समान ही था। अत इस व्यवस्था का अन्त भी हिटलर के साथ ही हो गया।

साम्यवाद को भी एक सामाजिक व्यवस्था के रूप में विश्व के कई देशो द्वारा मान्यता दी गई थी। वर्ग रहित समाज की रचना ही इस व्यवस्था का चरम उद्देश्य निर्धारित किया गया। जिसकी प्राप्ति के लिए कानूनो का सख्ती से पालन तथा उत्पादन के और अन्य आर्थिक ससाधनो पर राज्य का नियन्त्रण जैसे मार्ग बताए गए। एक शताब्दी से भी कम समय मे बुद्धिजीवियो द्वारा इस व्यवस्था की एक काल्पनिक योजना घोषित कर दिया और आज साम्यवाद व्यवस्था के नेतृत्वकर्ता देश सोवियत सघ द्वारा भी इस व्यवस्था मे बदलाव की प्रक्रिया चल रही है।

पश्चिमी देशो में पूजीवादी सामाजिक व्यवस्था का प्रचलन भी कुछ दशक पहले ही शुरू हुआ जिसमें साम्यवाद की तरह उत्पादन के तथा अन्य ससाधनो पर राज्यका नियन्त्रण नही था। बल्कि इसकी स्वतन्त्रता व्यक्तिगत रूप में नागरिको को दे दी गई। परन्तु आज पूजीवादी देशो के द्वारा भी कल्याणकारी सामाजिक व्यवस्था को अपनाने की कोशिश की जा रही है, जिससे मनुष्यो के कल्याण की कुछ न्यूनतम् आवश्यकताए राज्य द्वारा अवश्य पूरी की जाए।

इन सबके अतिरिक्त सृष्टिके प्राचीनतम ग्रन्थ वेद मे भी एक सामाजिक व्यवस्था का उपदेश मनुष्य को हुआ है जिससे वर्णाश्रम धर्म भी कहा जाता है। वर्ण तथा आश्रम दो अलग अलग शब्द हैं। वर्ण से अभिप्राय वर्ग और आश्रम से अभिप्राय जीवन की अवस्था से है।

व्यक्ति एक इकाई है और समाज सगठन है। प्रत्येक व्यक्ति के सामर्थ्य की कुछ सीमाए हैं जिनके बाहर की आवश्यकताओ के लिए उसे समाज पर निर्भर रहना पडता है। अत· समाज का यह कर्तव्य हो जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति के गुण, कर्म और धर्मानुसार कार्यों का विभाजन करे। इस प्रकार सभी इसी आधार पर ही वर्णो की सृष्टि हुई। बुद्धि के प्रयोग से लोग कल्याण तथा शिक्षा प्रसारके कार्य करने वालो को ब्राह्मण, रक्षा, देश सुरक्षा (आन्तरिक तथा बाहरी) तथा प्रशासन करने में योग्य व्यक्तियो को क्षत्रिय, अर्थ व्यवस्था का कार्यभार देखने वालो को वैश्य तथा शिल्प और शारीरिक श्रम सम्बन्धी कार्य करने वालो को शूद्र कहा गया।

इस प्रकार समाज के समस्त व्यक्तियो को चार प्रकार के वर्णो मे क्रम के आधार पर विभक्त कर दिया गया और इसके बाद क्योकि इस बटवारे का उद्देश्य यह कदापि नही था कि ये चार वर्ण अलग अलग जातिया बनकर आपस मे बैठने में द्वेष रखे। अत वेदका स्पष्ट आदेश था कि सभी वर्ण तेजस्वी हो और सब व्यक्ति अपने को अलग अलग न समझकर भूमि पुत्र समझे, सबके भोजन आदि के स्थान एक हो और प्रत्येक व्यक्ति सब वर्णो की समान भाव से सेवा करें।

इस प्रकार वर्ण का विभाजन के अतिरिक्त प्रत्येक व्यक्ति के जीवन को भी चार आश्रमो मे बाटा गया। ब्रह्मचारी आश्रम, शिक्षा ग्रहण करते समय तक विवाह उपरान्त सन्तान उत्पति पालन तथा अन्य दायित्वो के निर्वाह करते हुए गृहस्थ आश्रम, इसके बाद वानप्रस्थ तथा सन्यास आश्रम में प्रवेश करके जन सेवा के कार्यों के लिए अपने आपको न्यौछावर करने की व्यवस्था रखी गई। इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति बारी बारी से इन आश्रमो मे प्रवेश करके अपनी व्यक्तिगत तथा सामाजिक उन्नति के लिए सपूर्ण जीवन प्रयत्नशील रहता है।

इस प्रकार विश्व की विभिन्न सामाजिक व्यवस्था का अध्ययन करने के पश्चात् इस गोष्ठीके आयोजन का उद्देश्य होगा कि आदर्श सामाजिक व्यवस्था किस प्रकार की हो, यह निर्णय जनता के सामने प्रस्तुत किया जाए।

अत आप सब इसमें अपनी अपनी योग्यता अनुसार इस गोष्ठी के सफल आयोजन में सहयोग करें।

शुभकामनाओ सहित,

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती	प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव
प्रधान	उप प्रधान

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली।

श्रीकृष्ण के जीवन पर एक दृष्टि

स्व० श्री रघुनाथप्रसाद पाठक

हिन्दू जगत में श्रीराम और श्रीकृष्ण के समान आदर का पात्र कदाचित ही कोई दूसरा व्यक्ति होगा। हिन्दू समाज की रक्षा की इन्हीं दोनों महापुरुषों के नाम पर दी जाती है। इन दोनों में भगवान कृष्ण अधिक उच्च समझे जाते हैं। इसका कारण यह बतलाया जाता है कि महात्मा राम ने संसार में कर्तव्य और सदाचार को प्रतिष्ठित किया परन्तु कोई युगान्तकारी कार्य उनके हाथों से नहीं हुआ।

अवश्य ही उन्होंने अपने आचरण से संसार को कर्तव्य मार्ग दिखाकर धर्म राज्य की संस्थापना की थी। परन्तु श्री कृष्ण जी के समान उनकी सर्वाङ्गीणता पूरी नहीं उतरी श्रीकृष्ण ने धर्म राज्य और धर्मक्षेत्र की स्थापना की थी। उन्होंने राज्यक्रान्ति के साथ-साथ धर्म और समाज में भी क्रान्ति की। राम राजपुत्र थे और कृष्ण कारागृह में उत्पन्न हुए एक सरदार के पुत्र थे। जिस वातावरण में वे पले, वह बिल्कुल सीधा सादा और ग्रामीण जनों का था। उन्होने अनेक राज्य क्रान्तियां कराईं फिर भी स्वयं राजा नहीं हुए। सर्वत्र व्यवस्था निर्माण में लगे रहे।

भगवद्गीता के उपदेश द्वारा उन्होंने ज्ञान और कर्म का ऐसा उदात्त रूप प्रस्तुत किया है जिसकी गौरव गरिमा आज से हजारों वर्ष बीत जाने पर भी आज अक्षुण्ण बनी हुई हैं और न मालूम कब तक बनी रहेगी गीता में जिस निष्काम कर्म और यज्ञमय जीवन का प्रतिपादन किया गया है,महाराज कृष्ण उसके साक्षात प्रतिबिम्ब थे।

योगीराज श्रीकृष्ण के जीवन और जीवन के लक्ष्य को भली भांति समझने के लिए हमें उनके समय की राजनैतिक और सामाजिक स्थिति का अध्ययन करना चाहिये। उस समय भारतवर्ष बहुत से स्वतन्त्र राज्यों में विभक्त था। इन राज्यों को एकत्व में बांधने और उनको नियन्त्रण में रखने के लिए कोई चक्रवर्ती राज्य न था। यही कारण था कि बहुत से राजा स्वेच्छाचारी और विलासी बन गये थे और अपनी प्रजा को दुःखी रखते थे।

मथुरा में राजा कंस और मगध के राजा जरासंध के अत्याचार तो जगत प्रसिद्ध है ही। कंस तो अपने अत्याचारों में यहां तक बढ़ गया था कि उसने अपने देवता स्वरूप पिता राजा उग्रसेन को भी बन्दीगृह में डाल दिया था। उधर जरासंध ने बहुत से छोटे-छोटे राजाओं को भी कारागृह में डाला हुआ था। कौरवों और पांडवों में गृह कलह छिड़ा हुआ था। राज शक्ति पर ब्राह्मणों की शक्ति का प्रभाव नाम मात्र को था। धार्मिक प्रवृत्ति के लोगों का एक पृथक समुदाय बन गया था जो निवृत्ति मार्ग के पथिक बनकर संसार से उदासीन रहने में सुख मानते थे। ब्राह्मण वर्ग के घोर निवृत्तिवादी होने से राजसूत्र ऊल-जलूल ढंग पर उद्देश्य रहित घूमता था। प्रजा खाने पीने आदि की दृष्टि से सुखी होने के कारण विलासी बन गई थी। इस निरुद्देश्य राजसूत्र के कारण राजाओं का विलासी और अत्याचारी तथा प्रजा का पतित होना अवश्यम्भावी था।

सामाजिक स्थिति खराब होने लग गई थी। यद्यपि वैदिक व्यवस्था का पूर्णतया लोप नहीं हुआ था। तथापि इसका ह्रास अवश्य होने लग गया था। उन दिनों क्षात्रधर्म का प्राधान्य हो गया था। हम देखते हैं कि द्रोणाचार्य कृपाचार्य ब्राह्मणो ने ब्राह्मणवृत्ति को छोड़कर अधिकतर क्षात्रवृत्ति ग्रहण कर ली थी। यादव वंश वाले क्षत्रिय प्रवृत्ति को छोड़कर गोपालन आदि वैश्यों का धन्धा करते थे और समाज उन्हें शूद्र समझने लग गया था। वर्ण व्यवस्था मे प्रायः जन्म का प्राबल्य माना जाने लगा था। हम महाभारत में पढ़ते हैं कि एकलव्य नामक एक व्यक्ति को द्रोणाचार्य के चरणों में बैठकर धनुर्विद्या के सीखने का इसलिये सौभाग्य प्राप्त नहीं हो सका था कि वह जन्म से शूद्र समझा जाता था।

अवश्य उन दिनों स्त्रियो में गिरावट प्रारम्भ नहीं हुई थी। उदाहरणार्थ कौरवों की माता गंधारी को लीजिये। अपने पति जन्मान्ध महाराज धृतराष्ट्र के प्रति उन्होंने जिस निष्ठा का परिचय दिया वह सब जानते हैं।

एक शब्द में उस समय राजसूत्र अत्याचारी और आततायी राजाओं के हाथ में था स्त्री, शूद्र और वैश्यों के लिये ज्ञान-मार्ग का द्वार बन्द सा हो गया था। वर्ण व्यवस्था का रूप विकृत होने लग गया था। धर्मजीवी व्यक्तियों का एक पृथक समाज बन गया था वह समाज निवृत्ति मार्ग का पथिक था। दूसरी ओर अधर्म का प्राबल्य हो रहा था जो धर्म जीवी सज्जन धर्म से प्रेम रखते और सांसारिक कार्यों में भी प्रेम रखते थे अत्याचारी राजाओं के क्रीतदास बन गये थे। फिर अधर्म के नाश और धर्म की प्रतिष्ठा का सुयोग किस प्रकार सम्भव था। उस समय धर्म की प्रतिष्ठा और अधर्म विध्वंस की परम आवश्यकता थी। इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए श्री कृष्ण का प्रादुर्भाव हुआ था, ऐसा कहेंगे तो अत्युक्ति न होगी। महाराज कृष्ण का सबसे पहला कार्य कंस जरासंध आदि आततायी राजाओं का वध समझा जाता है। उन्होंने इन राजाओं को नष्ट करके प्रजा को उनके अत्याचारों से मुक्त किया। विशेषता यह है कि इन राज्यों को सदाचारी और सुयोग्य उत्तराधिकारियों को ही सौंपा वे स्वयं राजा न बने।

इन छोटे मोटे राज्यो की व्यवस्था ठीक करके उन्होंने युधिष्ठिर को चक्रवर्ती सम्राट बनाने का उद्योग प्रारम्भ किया। अपने इस कार्य में वे सफल भी हुए परन्तु दुष्ट दुर्योधन के कपट जाल में विलम्ब हुआ और अन्त में शान्ति स्थापना का भरसक यत्न करने के पश्चात् इस कार्य की पूर्ति और उसके लिए धर्म राज्य की स्थापना के लिए उन्हें महाभारत संग्राम का पांडवों द्वारा सूत्रपात कराना पड़ा।

महाभारत से भारत का सर्वनाश हुआ ऐसा समझदार देशवासी मानते हैं और उनकी धारणा ठीक भी है परन्तु महाभारत के द्वारा हुए सर्वनाश के लिए भी कोई भी महाराज कृष्ण को दोषी नहीं ठहराता। महाभारत की समाप्ति पर केवल १० व्यक्ति शेष बचे थे। अखिल भारत का राज्य युधिष्ठिर को प्राप्त हुआ था। दुःख है कि ऐसे महापुरुष के उदात्त जीवन को विलासी और कलुषित बनाने और प्रस्तुत करने में हमारे हिन्दू समाज को लज्जा नहीं आती। श्री कृष्ण शूरवीर थे, तेजस्वी और यशस्वी थे। व्यभिचार का उनके मत्थे दोषारोपण करना उनका अपमान करना है। सबसे बड़ा दुःख यह है कि हिन्दी साहित्य ने जितना इस महापुरुष के चरित्र के साथ अन्याय किया है उतना और किसी के साथ नहीं किया। आज की राजनैतिक और सामाजिक स्थितियों की श्री कृष्ण के काल की इन स्थितियों के साथ तुलना की जाए तो जमीन और आकाश का अन्तर देखना पड़ेगा आज संसार में आसुरी प्रवृतियां का बोलबाला है और प्रजा नाना प्रकार के के कष्टों और बन्धनों से पीड़ित हैं आज का राजसूत्र भी प्रकृति वादियों के हाथ में हैं और लक्ष्यहीन गति से चल रहा है। आज भी प्रवृत्ति और निवृत्ति मार्ग के समन्वय पूर्वक राजसूत्र के संचालन और धर्म राज्य की स्थापना की परम आवश्यकता है, वर्तमान महासंग्राम के पश्चात ऐटलांटिक चार्टरों आदि के द्वारा संसार को सुखधाम बनाए जाने की योजनाएं प्रकाश में आ रही हैं। देखें इनका क्या फल होता है। परन्तु इस समय तो लक्षण शुभ नहीं देख पड़ते हैं। आज संसार को श्रीकृष्ण के सन्देश को सुनने और क्रिया मे लाने की आवश्यकता है। उनका सन्देश यही है कि अधर्म का नाश और धर्म का प्रसार करो इसी में व्यक्ति और समष्टि का कल्याण है।

प्रभु ने वेद ज्ञान क्यों दिया ?

यशपाल आर्यबन्धु, आर्य निवास मुरादाबाद

वेद ईश्वरीय ज्ञान है। यह ज्ञान सृष्टि के आदि में अग्नि, वायु, आदित्य और अंगीरा नाम के चार ऋषियों के द्वारा ऋषियों के अन्तरात्मा में प्रकाशित किया गया। प्रश्न उठता है कि इस ज्ञान की क्या आवश्यकता थी ? क्या इसके बिना मानव मानव का काम नहीं चल सकता था ? परमेश्वर ने यह ज्ञान क्यों दिया ? आइये ! इस बात पर विचार करें कि ईश्वर ने वेद का ज्ञान क्यों दिया ?

परमपिता परमात्मा ने सृष्टि की रचना की तो उसके उपयोग की विधि बतानी भी आवश्यक थी। संसार में हम प्रायः देखते हैं कि कोई व्यक्ति यदि कोई मशीन बनाता है तो उसके प्रयोग की विधि बताने के लिए साथ में एक पुस्तिका आदि भी प्रकाशित करता है, जिसमें उसके चलाने या प्रयोग में लाने की विधि लिखी होती है। परमपिता परमात्मा ने सृष्टि रूपी मशीन बनाई तो उसके साथ उसके उपयोग की विधि बतानी भी आवश्यक थी। वेदज्ञान के द्वारा परमात्मा ने सृष्टि के उपयोग की विधि बताई है। यदि उस विधि के अनुसार हम सृष्टि का उपयोग करेंगे तो हमारा कल्याण होगा अन्यथा नहीं।

मनुष्य कर्मशील प्राणी है। कर्म करने के लिए ज्ञान की आवश्यकता होती है। जब तक मानव को विधि और निषेध, धर्म और अधर्म, कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य का बोध नहीं करा दिया जाता, उस पर कर्म का उत्तरदायित्व थोपना अन्याय कहलाता है। किन्तु विधि निषेध, धर्माधर्म, कर्त्तव्य का बोध करा देने पर बुरे कर्मों के लिए दण्डित करना अन्याय नहीं कहलाता। परम पिता परमात्मा ने वेद का ज्ञान इसी लिये दिया कि मानव समुदाय को पाप और पुण्य, धर्म और अधर्म का बोध हो जावे।

परमात्मा ने वेद का ज्ञान इस लिए भी दिया है कि मनुष्य उसे पाकर ज्ञानी बन सके। यदि परमात्मा यह ज्ञान मानव को न देता तो मानव कभी भी ज्ञानी और विद्वान नहीं हो सकता था। हम बिना निमित्त के ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते। जैसे हमारे चर्म चक्षु बिना सूर्य के प्रकाश के नहीं देख सकते इसी प्रकार वेद सूर्य के बिना हमारे ज्ञान चक्षु भी नहीं देख सकते। वेदज्ञान को पाकर ही मानव अपनी बुद्धि का सदुपयोग कर सकता है। महर्षि दयानन्द का कथन है कि—"अनन्त ज्ञान-सम्पन्न परमेश्वर मनुष्य की योग्यता बढ़ाने के लिए और उसे ऊंचे दरजे को पहुंचाने के लिए सदा प्रवृत्त है और इसी हेतु को सफल करने के लिए विद्या का प्रकाश करता है, जो यही प्रकाश वेद है।" (पूना का पांचवां प्रवचन) वेद में सभी विद्यायें हैं किन्तु बीज रूप में हैं। इसी से पता चलता है कि ईश्वर चाहता है कि मनुष्य अपने ज्ञान को बढ़ावें उसका विस्तार करें। इसमें महर्षि का कथन है कि—"अब यदि कोई पूछे कि ईश्वर ने सब विद्याओंके मूल तत्व ही में क्यों प्रकाशितकिये और साद्यन्त विद्या का और कला का क्यों विवरण नहीं किया ? तो उससे मेरा यह कहना है कि जैसे ईश्वर ने मनुष्यमात्र के बुद्धि व्यापार का उसी तरह बुद्धि उन्नति का भी अवकाश रक्खा।" (वही)

ईश्वर ने वेद का ज्ञान मानव को भाषा प्रदान करने के लिये भी दिया, मनुष्य भाषा बिना सीखे ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता। ईश्वर ने वेद का ज्ञान ही नहीं दिया, अपितु ज्ञान के माध्यम से मानव को भाषा भी प्रदान की। भाषा भावों का वाहन है। बिना भाषा के भावाभिव्यक्ति हो ही नहीं सकती। यदि परमेश्वर वेद का ज्ञान न देता तो मानव भाषा भी नहीं सीख पाता। इस सम्बन्ध में महर्षि का कथन है कि—"जैसे किसी मनुष्य के बालक को जन्म से एकांत में रख के उसको अन्न और जल युक्ति से देवे, उसके साथ भाषणादि व्यवहार लेशमात्र भी कोई मनुष्य न करे, कि जब तक उसका मरण न हो, तब तक उसको इसी प्रकार से रखे तो उसे मनुष्यपन का भी ज्ञान नहीं हो सकता। तथा जैसे बड़े वन में मनुष्यों को बिना उपदेश के यथार्थ ज्ञान नहीं होता, किन्तु पशु के जैसी उनकी प्रवृत्ति देखने में आती है, वैसे ही वेदों के उपदेश के बिना भी सब मनुष्यों की प्रवृत्ति हो जाती।" तात्पर्य यह कि मनुष्यों की प्रवृत्ति हो जाती।" तात्पर्य यह कि मनुष्य ज्ञान और भाषा दोनों ही निमित्त से प्राप्त करता है। अतः वेद का ज्ञान केवल ज्ञान देने के लिए ही नहीं था अपितु भाषा प्रदान करने का भी माध्यम था।

वेद ज्ञान देने का एक अन्य कारण भी है। ईश्वर ने वेद का ज्ञान इसलिए भी प्रकाशित किया कि जिससे उसका ज्ञान सामर्थ्य भी प्रकट होकर सफल हो सके। सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम समुल्लास में सृष्टि रचना के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुये महर्षि लिखते हैं कि—"जो तुम से कोई पूछे कि आंख के होने में क्या प्रयोजन है ? तुम यही कहोगे देखना। तो जो ईश्वर में जगत् की रचना करने का विज्ञान, बल और क्रिया है, उसका क्या प्रयोजन, बिना जगत् की उत्पत्ति करने के ? दूसरा कुछ भी न कह सकोगे। और परमात्मा के न्याय, धारण, दया आदि गुण भी तभी सार्थक हो सकते हैं जब जगत् को बनावे। उसका अनन्त सामर्थ्य जगत् की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय और व्यवस्था करने ही से सफल है। जैसे नेत्र का स्वाभाविक गुण देखना है, वैसे परमेश्वर का स्वाभाविक गुण जगत् की उत्पत्ति करके सब जीवों को असंख्य पदार्थ देकर परोपकार करना है।" हमने वेदोत्पत्ति के प्रसंग में सृष्टि-उत्पत्ति की चर्चा क्यों की ? इस लिए कि जैसे सृष्टि की रचना ईश्वर इसलिए करता है कि उससे ढंग के ज्ञान-सामर्थ्य का प्रकाश हो सके। यदि ईश्वर वेद ज्ञान का प्रकाश न करे तो फिर उसके ज्ञान-सामर्थ्य का साफल्य प्रकट करने के लिये भी आवश्यक है।

इस प्रकार यही सिद्ध होता है कि ईश्वर ने वेद का ज्ञान जीवों के कल्याण और उन्नति के लिए दिया है। वेद में मानव के अभ्युदय एवं निःश्रेयस की पूरी योजना एवं विधि निहित है। वेद का मुख्य प्रतिपाद्य विषय ही परमात्मा है, अतः परमात्मा तक पहुंचाने के लिये वेद का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है। वेद हमें जीने का सही ढंग बताते हैं। यदि वेद का ज्ञान न दिया होता तो मानव जीने का ढंग ही न जान पाता। वेद मानव को मानवता का पाठ पढ़ाता है। वह ही धर्म के तत्व का दर्शन कराता है। अतः मानव को सच्चा मानव बनाने के लिये वेद का ज्ञान दिया जाना अत्यन्त आवश्यक था इसी लिये वेद का ज्ञान परमात्मा ने दिया।

इस्लाम पर यह खाड सत्ति क्यों ?

श्री वीरेन्द्र

आज से लगभग ७० वर्ष पूर्व इल्लामा इकबाल ने "मशकूबा" के शीर्षक से एक कविता लिखी थी इसमे एक मुस्लमान अल्लाताला से शिकवा करता है कि वह मुस्लमानों से क्यो नाराज रहते हैं। इकबाल ने लिखा था —

रहमतें है तेरी ऐयार के काशनबाशो पर,
बर्क गिरती है तो बेचारे मुस्लमानो पर,'

इकबाल ने यह शिकायत लगभग ७० वर्ष पूर्व की थी, इसके पश्चात कई ऐसी घमसान की लडाईया हुई जिनमे मुस्लमान भी मारे गए और गैर मुस्लमान भी इसलिए इकबाल की इस शिकायत को दुनिया भूल गयी कि बर्क गिरी है तो बेचारे मुस्लमानो पर अब फिर कुछ ऐसे वाकियात हुए हैं जो यह प्रभाव डालते हैं कि इकबाल की यह शिकायत शायद ठीक थी। अभी एक महीना हुआ जब ईरान मे एक भयानक भूकम्प आया था जिसमें ५० हजार से अधिक लोग हताहत हुए थे और कई एक लाख के लगभग जख्मी हुए थे। इनकी जायदाद की तबाही का कोई अनुमान ही नहीं अब मक्का से सूचना आई है कि वहा हज के लिए जो लोग गए हुए थे इनमें से कोई दो हजार के लगभग एक सुरग में दम घुटने से मर गए। ईरान में मरने वाले भी मुस्लमान ही हैं। इससे पहले हम यह भी देख चुके हैं कि पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच लडाई होती रही है इसमें भी हजारो मुस्लमान मारे गए हैं। इससे पहले ईरान और ईराक के बीच जो युद्ध हुआ था इसमें लाखो मारे गए हैं वह भी सब मुस्लमान ही थे। वहा शीया और सुन्नी का झगडा था लेकिन ये तो दोनों मुस्लमान-इस्लाम के दो बडे केन्द्र हैं। ईरान और साऊदी अरब दोनो का आपस मे झगडा रहता है। पहले ईरान मे भूकम्प के कारण लोग मारे गए और अब साउदी अरब जो हज करने गए थे इनमें से दो हजार मारे गए हैं हमारे अपने देश मे कश्मीर एक ऐसा भाग है जहा मुस्लमानो की बहुत बडी सख्या है वहा भी प्रतिदिन जो मर रहे हैं अधिकतर मुस्लमान ही हैं।

जो कुछ अब हो रहा है इकबाल ने ७० वर्ष पहले सम्भवत इसका कुछ अनुमान लगा लिया था और शायद इसने इसलिए लिखा था —

ए खुदा शिकवा अरबाब वफा भी सुन ले।
खगरे हम से थोडा सा गिला भी सुन ले ॥
पर मेरे नाम पर तलवार उठाई किसने।
बात जो बिगडी हुई थी वह बनायी किसने।
हम जीते थे तो जन्गो की मुसीबत के लिए ॥
और मरते थे तेरे से नाम की इजमत के लिए।
थी न कुछ तेगजनी अपनी हकूमत के लिए ॥
सर बकफ फिरते थे क्या दहर मे दौलत के लिए।
आ गया ऐन लडाई मे अगर वकतए नमाज ॥
किबला वद होके जमी बोस हुई कौम मिजाज।
एक ही सफ में खडे हो गए महमूदा अायज ॥
न कोई बन्दा रहा और न ही कोई बन्दा नवाज।
सफे देर से बादल को मिटाया हमने ॥
नौइन्सान को गुलामी से छुडाया हमने।
तेरे काबे को खून लगाया हमने ॥
तेरे कुरान को सीने से लगाया हमने।
फिरभी हमसे यह गिला है कि वफादार नही ॥
हम वफादार नही तू भी तो दिलदार नहीं।
बुत सगम खानो मे कहते हैं मुसलमान गए ॥
मन्जिल देर से ऊटो के हुदी खवान गए।
अपनी बगलो मे दबाए हुए कुरान गए ॥
बनी अयार की अब चाहने वाली दुनिया।
रह गयी अपने लिए इक ख्याली दुनिया ॥
हम तो रुखसत हुए औरो ने सम्भाली दुनिया।
फिर न कहना हुई तोहीद से खाली दुनिया ॥

तेरी महफल भी गयी चाहने वाले भी गए।
शब की आहें भी गयी सुबहो के नालेभी गए ॥
दिल तुझे दे भी गए अपना सिला ले भी गए।
आके बैठे भी न थे और निकाले भी गए ॥"

इकबाल एक पक्का मुस्लमान था। इसलिए अपनी बजबात को जिस प्रकार पेश किया था इसी से ऐसा मालूम होता है कि ७० वर्ष पहले भी मुस्लमान अपने आपको सुरक्षित न समझते थे। संसार में दो ही मजहब इस समय अधिक रूप मे फैले हुए हैं। इस्लाम और ईसाईयत इस्लाम पूर्व पर हावी है। ईसाईयत पश्चिम में इसमें भी कोई शक नहीं कि इस समय ईसाईयत का दायरा इस्लाम से बहुत बडा है। मुस्लमान ईसाईयो की बनिसबत ज्यादा कट्टर है। लडते ईसाई भी आपस में बहुत ज्यादा है, लेकिन इनकी लडाई इन्ताही खौफनाक होती है अब तो वह भी अनुभव करने लग गए हैं कि यदि आपस में यह लडाई समाप्त न हुई तो यह दुनिया ही न रहे। इसलिए अब वह आपस मे समझौते कर रहे हैं परन्तु इस्लामी लोगो ने ऐसा सोचना शुरू नही किया। कई बार यह ख्याल जरूर पैदा होता है कि वजातन फवजातन उन पर जो कहर नाजल होता है जिसे हम अपनी जबान में साडसती कहते। कहीं वह आगाज तो नहीं इस अनजाम का जो इस्लाम का होने वाला है। कभी भूकम्प आते हैं कभी लोग दम घुट के मर जाते हैं और कभी आपस में ही लड मरते हैं।

यह सब क्यो हो रहा है हमारे शास्त्रो मे लिखा है कि हर मनुष्य को इसके कर्म का फल मिलता है। वह क्या होता है इसका निर्णय कोई और करता है परन्तु फल अवश्य मिलता है जो मजहब हिंसा के सहारे चलते हैं इनका खात्मा भी हिंसा की वजह से होता है इस्लाम इसकी मिसाल है जो हिंसा से फैला है और आज भी इस्लाम हिंसा को बढ़ावा देता रहता है और यह कारण है कि इस्लामी देश आपस में लडते रहते हैं। ऐसा मालूम होता है कि अल्लाताला भी इनसे अधिक नाराज है। यही कारण है कि इस्लामी देशो मे प्राकृतिक आपदाए आई हैं। इस्लामी देशो मे भी लेकिन जो साडसती इस्लामी देशो पर आई है दूसरे देशो पर नहीं। इसलिए सोचने की आवश्यकता है कि क्या इस्लाम मे कोई बुनियादी खामी तो नहीं जिसकी इसे यह सजा मिल रही है और क्या इसका अन्तिम दौर तो नही है।

(प्रताप के सौजन्य से)

एक असाधारण व्यक्तित्व स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती

पं० विद्यासागर शर्मा

लगभग पांच दशक पूर्व उरई (उ० प्र०) के बीच शहर में स्थित एक विशाल तालाब के किनारे आर्यसमाज मन्दिर के प्रांगण में अपार जन-समूह एकत्रित था। पता चला कि यहां हैदराबाद-सत्याग्रह से लौटे हुये आर्य समाज के वीर सेनानियों के सम्मानार्थ सभा का आयोजन है। उत्सुकता बढ़ी और मैं मंच के समीप ही श्रोताओं के समूह में समा गया।

प्रमुख सेनानियों में मैंने एक दिव्य प्रतिमा का प्रथम दर्शन किया। गेरुआ वस्त्र धारण किये हुये, सिर के बाल तथा दाढ़ी-मूंछ घुटाये हुये, चौड़ा दैदीप्यमान ललाट, भव्य आभा मय मुख मुद्रा उपस्थित जन-साधारण को आकर्षित कर रही थी। नगर के सम्भ्रांत व्यक्ति उस विभूति के गले में माल्यार्पण करते हुए उसका अभिनन्दन कर रहे थे। थोड़ी ही देर में मैंने उस महापुरुष का राष्ट्रभक्ति से ओत-प्रोत ओजस्वी भाषण सुना और उसी प्रथम साक्षात्कार ने मेरे बाल हृदय को सदा के लिये अपना भक्त बना लिया।

फिर कुछ दिनों पश्चात् ही सुना कि उन्हें असहयोग आन्दोलन के अपराध में झांसी के निकट ही कहीं गिरफ्तार कर लिया गया है। यह महान संन्यासी कोई और नहीं, तत्कालीन बुन्देलखण्ड आर्य समाज के विराट स्तम्भ पूज्य स्वामी दिव्यानन्द जी "सरस्वती" थे। जो उन दिनों स्वतन्त्रता-संग्राम के वीर सेनानी के रूप में भूमिगत स्थिति में थे। वे कभी-कभी महीनों जंगलों में रहकर कन्द-मूल फल और पत्तियां खाकर ही निर्वाह किया करते। नमक तो उन्होंने प्रारम्भ से ही जीवन भर के लिये त्याग रखा था। बुन्देलखण्ड क्षेत्र में आर्यसमाज की आज जो छवि उभर कर आई है, वह परम पूज्य स्वामी जी की महन्त साधना का ही परिणाम है। असहयोग आंदोलन में स्वामी जी ने गांव-गांव घूमकर राष्ट्रीयता की अलख जगाई और हजारों लोगों को देश-सेवा के लिए प्रेरित किया। यों तो सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा-दिल्ली के अन्तरंग सदस्य होने के नाते सारा भारतवर्ष ही उनका कार्यक्षेत्र रहा है। देश के कोने-कोने में पूज्यवर का अपूर्व सम्मान था। हम बुन्देलखण्ड-वासी समझते थे कि हम लोगों से अधिक इनके भक्त और कोई नहीं हो सकते। परन्तु उस समय हमारा गर्व चूर चूर हो गया जब कि एक बार सन् १९६६ में नागपुर, भिलाई नगर और रायपुर में मात्र चार दिन के लिये मुझे उनके साथ रहने का सुअवसर प्राप्त हुआ था और ज्ञात हुआ कि स्वामी जी के प्रति श्रद्धा-भक्ति में वहां के जन-समुदाय की अपेक्षा में हम तो नगण्य ही हैं।

ऐसे तपोपूत महर्षि का प्रादुर्भाव ग्राम—आटा, जिला—जालौन (उ०प्र०) के साधारण कायस्थ परिवार में आज से लगभग पचासी वर्ष पूर्व हुआ था और बुन्देली माटी इस महान विभूति को पाकर धन्य हो गई। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा उरई में हुई थी और इनके सम्बन्ध में भी यह उक्ति चरितार्थ हुई "अल्प काल विद्या सब, आई" स्वामी जी ने मात्र डिगरियां प्राप्त करना अपना लक्ष्य कभी नहीं बनाया। परन्तु उनका अध्ययन इतना गहन था कि जिसकी थाह पाना नितांत असम्भव था। सामाजिक ज्ञान हो या भौगोलिक अथवा ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, आध्यात्मिक? कोई भी विषय हो, स्वामी जी ऐसी-ऐसी गूढ़तम सारगर्भित विवेचनाएं विलक्षण तर्कों से प्रमाणित करते कि बड़े-बड़े विद्वान उनके सम्मुख नतमस्त हो जाया करते।

रामायण, महाभारत, गीता, पुराण और उपनिषदों के प्रकाण्ड पण्डित तो वे थे ही, उच्च कोटि के वेद-व्याख्याता भी थे। मेरा तो विश्वास है कि ऐसी विलक्षण बहुमुखी प्रतिभा उन्हें पूर्व जन्मों से ही प्राप्त थी। अन्यथा स्वामी जी बाल्य काल से ही घर परिवार त्यागकर योगी के रूप में अवतरित नहीं हो पाते। जहां तक मैं समझता हूं, प्रत्येक प्राणी अपनी चित्त-वृत्तियों के आधार पर ही सत्संग के प्रभाव में आता है और स्वामी जी में ये गुण जन्म जात रहे। निश्चित ही यह विषय मेरे जैसे अनभिज्ञ व्यक्ति के लिये बहुत ही कठिन प्रतीत होता है कि इतना अगाध ज्ञान और प्रगाढ़ विवेक शक्ति अर्जित करने के लिये उन्हें कहां-कहां नहीं भटकना पड़ा होगा? किन-किन महर्षियों के सानिध्य में रहे होंगे। कोई लेखा-जोखा नहीं। जब कभी प्रसंग वश लोगों ने उनसे यह सब जानने का प्रयास किया भी तो मुस्कराते हुए सहज ही उस विषय को टाल दिया करते थे। यद्यपि यदा-कदा चर्चाओं के प्रवाह में हम इतना ही जान सके कि पूज्य स्वामी ध्रुवानन्द जी "सरस्वती" दिल्ली और श्रीनारायण स्वामी नैनीताल के वे अनन्य भक्त थे। वैसे तो परम पूज्य स्वामी दयानन्द जी "सरस्वती" को वे अपना आराध्य देव मानते थे। जिनके महान आदर्शों को उन्होंने अपने जीवन में उतारा और आजीवन आर्यसमाज के उत्कृष्ट सिद्धांतों को जन-कल्याण की भावना से राष्ट्र के कोने-कोने तक प्रसारित किया।

पूज्य स्वामी जी प्रारम्भ से ही जब कभी चिरगांव पधारे तो वे सदैव ही आदरणीय श्री कालका प्रसाद जी बख्शी के यहां ही ठहरा करते थे। यद्यपि उनके प्रिय शिष्यों में भाई श्री रामेश्वर प्रसाद जी गुप्त, पं० बृजकिशोर जी मिश्रा तथा वैद्य श्री मुन्नूलाल जी तिवारी जैसे कई प्रतिष्ठित और धन सम्पन्न व्यक्ति भी प्रमुख रहे। परन्तु वे वहां कहीं भी नहीं ठहरा करते। यह बात भी है कि आठ-दस दिनों से अधिक वे कभी भी यहां नहीं रुके। अभी दिनांक ७ जनवरी को जब स्वामी जी यहां, पधारे तो उन्हें शुगर की कुछ शिकायत थी और रक्तचाप से भी परेशान थे। इससे कमजोरी का बढ़ना स्वाभाविक बात थी और हम सभी की इच्छा हुई कि स्वामी जी अभी यहीं रहें। ताकि चिकित्सा व्यवस्था ढंग की हो जाये। एक दिन मैंने विनय भी की कि—'गुरुदेव, अब आप कहीं भी न जायें, यहीं विश्राम करें। कुछ दिन हम लोगों को भी सेवा करने का अवसर मिल जायेगा।" तो हंसकर सहज ही टाल दिया और कहा "विश्राम तो मैं भी करना चाहता हूं, लेकिन जो कार्यक्रम निर्धारित कर लिये गये हैं, उन्हें तो पूरा करना ही है। यह देखो, खरौरा

(शेष पृष्ठ ८ पर)

पुस्तक समीक्षा

वेदामृत-सुखी गृहस्थ

(दाम्पत्य जीवन सुखी कैसे हो)

लेखक—डा० कपिलदेव द्विवेदी, कुलपति

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार)

पृष्ठ संख्या—१९२+१६

मूल्य—अजिल्द १२-५०

सजिल्द २५-००

प्रकाशक—**विश्व भारती अनुसंधान परिषद्**

शान्ति निकेतन, ज्ञानपुर (वाराणसी)

वेदों के अमृत कणों को सामान्य जन तक पहुंचाने की विशाल और महती योजना आधुनिक काल के विद्वन्मनीषी डा० कपिल देव द्विवेदी ने निश्चित की है। प्रत्यक्ष और व्यावहारिक जीवन से सम्बन्धित उपयोगी वेद-मन्त्रों को सरल सुबोध रूप में प्रस्तुत कर आज के दिग्भ्रमित समाज, विघटित परिवेश और कुण्ठित व्यक्तिमन: स्थिति में निर्माणात्मक और रचनात्मक चेतना उत्पन्न करना इस योजना का लक्ष्य है।

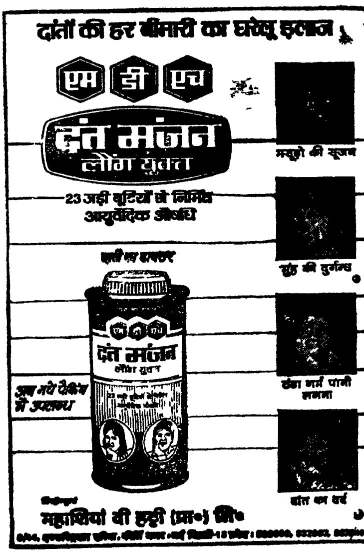
डा० द्विवेदी की वेदामृतम् ग्रन्थमाला को विषयानुसार ४० भागों में प्रकाशित करने की योजना है जिसके १२ पुष्प प्रकाशित हो चुके हैं। इसमें दाम्पत्य जीवन को सुखी एवं समृद्ध करने वाले १०० मन्त्रों का श्रम और निष्ठा से चयन किया गया है। वेद मन्त्र देकर, मन्त्र अन्वय, शब्दार्थ, हिन्दी और अंग्रेजी अर्थ दिया गया है। अनुशीलन के अन्तर्गत मन्त्र के मूलभाव और सांकेतिक अर्थ का विवेचन एवं स्पष्टीकरण है। मन्त्र की व्याख्या का यह अंश लेखक को प्रकाण्ड वैदुष्य और उनके प्रामाणिक जीवन अनुभव का परिचायक है। अन्त में आवश्यक टिप्पणी दी गयी है।

गृहस्थ जीवन का श्रेष्ठतम काल बताया गया है। इसकी उपमा आश्रम-दाता वृक्ष से दी गयी है। जो सम्पूर्ण समाज का भरण पोषण एवं योग क्षेम निर्वाह की विशिष्ट भूमिका का निर्वाह करता है। पति और पत्नी गृहस्थ रूपी रथ के दो चक्र सदृश हैं, जिनकी पारस्परिक एकता और सामञ्जस्य व्यापक परिप्रेक्ष्य में सम्पूर्ण समाज और राष्ट्र की सुख समृद्धि का आधार साधन है।

डा० द्विवेदी सिद्धहस्त लेखनी ने अमृतमय वेद-ज्ञान को सामान्य जन के लिए सुलभ कराया है। एतदर्थ वह हमारे सम्मान और प्रशंसा के पात्र हैं।

इस पुस्तक का यह द्वितीय संस्करण है। प्रथम संस्करण की शीघ्र समाप्ति इसकी लोकप्रियता बताती है। पुस्तक की छपाई, कागज एवं साज-सज्जा को देखते हुए पुस्तक का मूल्य कुछ कम लगता है। प्रचार कार्य के लिए ऐसा करना आवश्यक है। यह पुस्तक सभी परिवारों के संग्रह योग्य है।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सपादक



स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती

(पृष्ठ ७ का शेष)

(रायपुर) का आमन्त्रण है, वहां भी यज्ञ कराने जाना है।" और दिनांक १७ जनवरी को रायपुर के लिए चल दिये।

आज सोचता हूं कि यह कैसा—क्या आमन्त्रण था? और कैसा निर्धारित कार्यक्रम? याद आता है वह क्षण, जब कि यहां से विदा होते वक्त कदाचित पूज्यवर को महाप्रयाण का पूर्व आभास हो चुका हो। एक विचित्र गम्भीर भाव मुद्रा और जाने का हठ, हम सभी को उदासीन बना रहा था। स्वामी जी ने आशीर्वाद देते हुए सभी को आश्वस्त किया और कहा कि—"संध्या पूजा का नियमित ध्यान रखना।" और अपने स्वास्थ्य की किंचित् चिन्ता किये बिना रायपुर पहुंच ही गये। रायपुर से दूरस्थ अंचल के जंगल में कहीं उनकी तपोभूमि थी और प्रत्येक मकर संक्रान्ति के पावन पर्व पर वे वहां अवश्य ही पहुंचा करते थे।

अब की बार भाई मल्लूराम जी साहू भी मोटर साईकिल लेकर रायपुर से उनके साथ हो गये थे। तपोभूमि से फिर रायपुर लौटे और वहां से १० कि०मी० खरोरा का दुर्गम मार्ग भी मोटरसाइकिल से पीछे की सीट पर बैठकर पूरा किया। खरोरा में यजुर्वेद-पारायण यज्ञ का सात दिनों का भव्य आयोजन था। शारीरिक शिथिलता में ही वहां के समस्त कार्यक्रम स्वामी जी ने सुचारु रूप से सम्पन्न कराये। दिनांक ५ फरवरी के समापन समारोह में अपार जन समूह स्वामी जी के मधुर प्रवचनों से आनन्द विभोर हुआ किसी को क्या पता था कि गुरुदेव का यह अन्तिम सन्देश है। रात्रि के लगभग ग्यारह बजे स्वामी जी के हृदय में पीड़ा हुई, तुरन्त ही डाक्टर श्री देवसिंह जी वर्मा ने जांच करते हुए अपना उपचार प्रारम्भ करना चाहा, किन्तु स्वामी जी ने कहा—'अब कोई लाभ नहीं…आप यही मानते हो, तब ठीक है, जो करना हो करो, परन्तु मुझे अपना काम करने दो।" डाक्टर वर्मा अपने ढंग से उपचार में लग गये और स्वामी जी ने बड़ी जोरों से 'ओ३म्" शब्द का उच्चारण किया, कि अब काफी आराम है आघात टल गया और स्वामी जी शायद निद्रा-निमग्न हैं।

दिनांक ६ फरवरी १९८९ प्रात: लगभग चार बजे स्वामी जी उठे और एक शिष्य को तुरन्त ही वहां भूमि पर गाय के गोबर से लीपकर कम्बल बिछाने का आदेश दिया। आज्ञा का पालन हुआ और पूज्य स्वामी जी ने पद्मासन लगाकर आचमन किया और अब की बार पुन: जोर से "ओ३म्' शब्द की अमम ध्वनि गूंजी तथा ऋषि ने प्राणायाम के माध्यम से प्राण-वायु को ऊपर के लोकों में चढ़ाकर सहस्रदल कमल तक पहुंचाया और भौतिक शरीर को त्याग दिया। इस प्रकार एक दिव्य प्रकाश पुञ्ज ब्रह्मलीन हो गया। उपस्थित सैकड़ों नर-नारियों में करुण क्रन्दन मच गया। ऐसा प्रतीत हुआ, मानो कोई दूर प्रभाती गा रहा हो। "ऐसी करनी कर चलो, कि हम हंसे जग रोवे।'

अन्त में एक ही आकांक्षा है कि यदि हम सभी श्रद्धालु जन पूज्य स्वामी दिव्यानन्द जी "सरस्वती" के आदेशानुसार नियमित सन्ध्या, पूजा का ध्यान रखें तो गुरुवर के प्रति यह सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

स्वातन्त्र्य गौरवम्

—डा० कपिलदेव द्विवेदी, (वाराणसी)

(१)

स्वतन्त्रापि रेषा सदा सौख्य-दात्री
समाना प्रहर्त्री गुणाना प्रदात्री ।
त्वमेवासि लोके सदा मानदात्री,
सदा कीर्तिदात्री सदा मोददात्री ।।स्वतन्त्रा०।।

१—देश की स्वतन्त्रता सदा सुख देने वाली है, यह सकट को दूर करती है और गुणो की वृद्धि करती है, इससे ही ससार मे सम्मान होता है। यह यश और प्रसन्नता को देने वाली है।

(२)

न त्वत्त पर मानद लोकमध्ये
न त्वत्त पर सौख्यद किंचिदस्ति ।
त्वमेवासि लोकस्य चैतन्य दात्री,
सदा प्रेरणाभू सदा शक्ति स्रोत ।।स्व०।।

२—इस स्वतन्त्रता से बढ़कर ससार मे और कोई वस्तु सम्मान देने वाली नही है और न इसके अतिरिक्त कोई सुख देने वाला है। यह स्वतन्त्रता ही देश मे चेतना भरती है देशवासियो को प्रेरणा देती है और सदा शक्ति का स्रोत है।

(३)

विना त्वा जना शक्ति-कीर्त्यादि हीना,
सुबुद्धे विहीना सदा मान हीना ।
नरा पामरास्ते क्षुधा दैन्य ग्रस्ता,
अविद्यान्ध ग्रस्ता सदा शोक-ध्वस्ता ।।स्व०।।

३—स्वतन्त्रता के बिना मनुष्य शक्ति और यश आदि से रहित, बुद्धिहीन और सम्मानहीन होते हैं। पराधीन मनुष्य मूर्ख, भूख-दीनता आदि से त्रस्त, अविद्या के अन्धकार से ग्रस्त और सदा शोकमग्न होते है।

(४)

विना त्वा वृथा जीवन नैष्फलमेव
विना त्वा गति सर्वथा दुर्गतैव ।
विना त्वा शिरस्थ सदा मृत्युरेव,
विना त्वा विकासो न हर्षोऽपि रेव ।।

४—स्वाधीनता के बिना मनुष्य-जीवन व्यर्थ है, इसके बिना मनुष्य की दुर्गति होती है। इसके अभाव मे मृत्यु सदा सिर पर सवार रहती है। इसके बिना न विकास होता है और न जनता मे हर्ष होता है।

(५)

न यत्रास्ति ते दीप्ति सौख्यमूला
न यत्रास्ति ते श्री सदा कीर्तिदात्री।
न राष्ट्र न देश प्रदेशो विशेषो,
विना त्वा श्रित कीर्तिमिष्टा श्रियवा ।।

५—जहा स्वतन्त्रता की सुखद किरणें नही होती हैं, और कीर्ति देने वाली इसकी श्री नही होती है, वह राष्ट्र, वह देश और वह प्रदेश कभी अभीष्ट कीर्ति को नही प्राप्त कर सकता है।

(६)

त्वमेवासि सौख्यस्य मूल समन्तात्,
त्वमेवासि कीर्त्याविमूल पुरस्तात् ।
त्वमेवासि मानस्य शक्तेश्च हेतु:
त्वमेवासि शस्त्र त्वमेवासि हेति ।।

६—स्वतन्त्रता ही सभी सुखो का मूल है। यही देश की कीर्ति का आधार है। यही देश के सम्मान और शक्ति का साधन है। यही देश के लिए महान शस्त्र और अस्त्र हैं।

(७)

त्वदीये पदाब्जे मुदा देशभक्ता,
बलि दत्तवन्तो मुद प्राप्तवन्त ।
त्वदर्थापरा ये नरा मातृभक्ता,
सदा त्वास्तु तेषा यशो राजतेऽत्र ।।

७—स्वतन्त्रता के लिए देशभक्तो ने प्रसन्नता के साथ अपने जीवन की आहुति दी और वे प्रसन्नचित्त हुए। मातृभूमि की पूजा जो न्यौछावर हुए हैं, उनका यश ससार मे सदा अमर रहेगा।

(८)

त्वमेवासि शक्ति त्वमेवानुरक्ति,
त्वमेवासि सिद्धि त्वमेवासि ऋद्धि ।
त्वमेवासि मन्त्र त्वमेवासि तन्त्र
त्वमेवासि शान्ति त्वमेवासि कान्ति ।।

८—देश की स्वतन्त्रता ही शक्ति है, यही प्रेमभावना है, यह ऋद्धि और सिद्धि है। यही मन्त्र और तन्त्र है, यही शान्ति और कान्ति है।

(९)

त्वमेवासि दुर्गा, त्वमेवासि लभ्या,
अधृष्या त्वमेवासि दुर्धर्षरूपा ।
सदा स्नेह-स्रोत सदा शक्ति स्रोत,
त्वदीया कृपा याचते सर्व-लोक ।।

९—यह स्वाधीनता अजेय है, यही प्राप्य है। यह अपराजेय और उग्ररूप है। यह प्रेम और शक्ति का स्रोत है। सारा ससार इस स्वाधीनता की दृष्टि चाहता है।

(१०)

सदा भारते ते कृपा सतता स्यात्,
त्वदर्थापरा भारतीया भवेयु ।
विहाय स्वक स्वार्थजात जघन्य,
मुदा जीवन तेऽर्पयेयु पदाब्जे ।।

१०—यह स्वाधीनता भारत भूमि मे सदा विद्यमान रहे। सभी भारतीय इस स्वाधीनता की पूजा करे। वे अपने तुच्छ स्वार्थभाव को छोड़कर प्रसन्नता पूर्वक स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर अपना जीवन अर्पण करदें।

आर्यसमाज के निर्वाचन

—आर्य समाज मठपारा दुर्ग, गुलाबचन्द बसल प्रधान, टुन्नीलाल आर्य मन्त्री, राजाराम जी नामदेव कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य प्रतिनिधि सभा जनपद बरेली, जगदीश शरण आर्य प्रधान, विद्यासागर आर्य मन्त्री, रामकुमार वीरेश कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज कलकत्ता, रूलियाराम गुप्त प्रधान, यशपाल वेदालकार मन्त्री, विन्देश्वरी प्रसाद आयसवाल कोषाध्यक्ष चुने गये।

—गु० रा० मेवली में दिनाक ४-२-९० को विश्वस्त तथा कार्यकारी मण्डल की बैठक मे विधिवत चुनाव सम्पन्न हो गया। जिसकी अध्यक्षता पू० आर्यमुनि जी ने की।

सर्वश्री आर्यमुनि जी अध्यक्ष, (पदेन) प्रधानाचार्य, उपसचिव तुलाराम सचिव, सदाशिव जगताप वासी कोषाध्यक्ष चुने गये।

—दिनाक २७-५-९० को आर्य समाज सावली आदि पचपुरी गढवाल का वार्षिक चुनाव शान्तिप्रकाश जी प्रेम की अध्यक्षता मे निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ।

राजेसिंह जी नेगी प्रधान (अवकाश प्राप्त प्रधानाचार्य) ग्राम लैंगस, सावली, पौडी गढवाल (उ० प्र०) वासुदेव बिमल मन्त्री ग्राम व पो० ऑ० डैरामल्ला, सावली, पो० गढ़वाल (उ० प्र०) बख्शीराम जी आर्य कोषाध्यक्ष ग्राम अरकन्डाई धार, पो० ऑ० बगार, गौडी गढ़वाल (उ० प्र०) चुने गये।

—छोटानागपुर आर्य प्रतिनिधि सभा रान्ची का वार्षिक अधिवेशन व निर्वाचन प० जयमबल शर्मा के सभापतित्व मे सम्पन्न हुआ। निम्न पदाधिकारी सर्वसम्मति से निर्वाचित हुये।

प्रेमप्रकाश आर्य (राची) प्रधान दयाराम पोद्दार (राची) महामन्त्री, ओमाराम सैनी कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज नरेला दिल्ली का चुनाव सम्पन्न हुआ। लावकराम जी प्रधान, मा० पूर्णसिंह आर्य मन्त्री, सूरजभान जी कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज नौरोजी नगर 'बी' ब्लाक नई दिल्ली के भवन हेतु
दान की अपील

इस आर्य समाज के मन्दिर का निर्माण कार्य चल रहा है जो कि आप जैसे धर्म-प्रेमी दानवीरो की सहायता पर ही पूर्ण रूप से निर्भर है। इस उपलक्ष्य मे कुछ कार्य हो चुका है। धन की कमी के कारण भवन-निर्माण का यह पवित्र कार्य बीच ही मे न रुक जाए, इस लिए आप से प्रार्थना है कि इस शुभ कार्य के लिए अपना आर्थिक सहयोग देने की यथाशक्ति अवश्य कृपा करे।

सभी आर्य समाजो, स्त्री आर्य समाज, धार्मिक सस्थाओं से इस उच्च कार्य के लिए आर्थिक सहयोग नकद राशि/ड्राफ्ट/मनीआर्डर/चैक आर्यसमाज नौरोजी नगर, नई दिल्ली के पते पर भेजकर हमे अनुगृहीत करेंगे।

—मनोहरलाल चौधरी, मन्त्री

अन्तर्जातीय आदर्श विवाह

दि० ११-७-९० को कलकत्ता निवासी श्री अनिल कुमार वर्मा का विवाह श्रीमती सविता शर्मा के साथ वैदिक विधि से आर्य समाज मन्दिर मे सानन्द सम्पन्न हुआ। बिना आडम्बर के इस विवाह की जन साधारण मे बहुत प्रशसा हुई।

—मन्त्री-आर्य समाज

—आर्य समाज अर्जुननगर गुडगाव का वार्षिक चुनाव दि०१६-६-९० को सम्पन्न हुआ, जिसमे निम्न लिखित पदाधिकारी चुने गये।

रोशनलाल सेवक प्रधान, शिवदत्त आर्य मन्त्री, तिलकराज स्वतकार कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य जगत् के समाचार

मुसलमानों द्वारा लंका के गिरजाघर में १०० ईसाईयों का कत्लेआम

कोलम्बो, २६ जुलाई। मतूरतरन कोमाली के एक गिरजाघर मे पनाह लेने वाले १०० तमिल ईसाईयो को मुस्लिम इन्तहापसन्दो ने कल रात मार डाला यह सनसनी खबर का इनकशाफ नीलू के सैकडो जनरल और पारलियामैन्ट के माननीय सदस्य श्री जी करुणा कर्ण ने कल यहा ब्यान मे बताया कि यह मुस्लिम इन्तहापसन्द तनजीम एकता से सम्बन्ध रखते हैं। इन मुस्लिम हमलावरो ने तमिल ईसाईयो के हलाक करने के बाद गिरजाघर को आग लगा दी। एक अन्य वारदात में तमिल टाईगरों ने पुलिस की टोली पर फाईरिंग कर के २ मुस्लिम हलाक और दीगर १० जखमी कर दिए। बताया जाता है कि पिछले ६ सप्ताह से जारी तमिल और सरकारी फौज का लड़ाई मे मुसलमानो की तरफ से सरकार का साथ देने पर मुसलमानो और तमिलो में कशीदगी बढती जा रही है।

कैबली प्लानिंग का चीनी ढंग दूसरे बच्चे पर तिगना जुर्माना

पीकिंग, ३ अगस्त। चीन का अति अधिक आबादी वाला शहर शिघाई औस्तन सवाकरोड है। एक सरकारी सूचना के अनुसार दूसरा बच्चा होने पर ऐसे माता पिता को इनकी वार्षिक आय से तीन गुना रकम का दण्ड दिया जायगा। इस समय चीन के अधिकतर क्षेत्रो मे दूसरा बच्चा होने पर आय का १० प्रतिशत रकम का जुर्माना किया जाता है। अब तक किसानो को दूसरे बच्चे पर होने वाले जुर्माने से मुक्त रखा जाता था परन्तु आज से उन्हें भी मुक्त नहीं किया जाएगा और उन पर आम नागरिको की तरह आय का तीन गुना दण्ड दिया जाएगा।

शाकाहारियों की उन्नति के लिए लन्दन में रैली

लन्दन, २५ जुलाई। "यंग इण्डियन वैजीटेरियन" की ओर से पिछले दिनो एक विशेष पार्क मे शाकाहार के समर्थन में एक रैली की गयी एवान नुमायन्दगान के मन्त्री श्री बर्नार्ड वैथल और लेबर पार्टी के अनेक महत्वपूर्ण सासद इन हजारो बरतानवी समुदाय मे सम्मिलित हुए जो इस रैली मे उपस्थित हुए इनमे बडी सख्या मे जैनी और बौद्ध भी थे। श्री वैथल ने इस रैली मे सब्जी खोरी की सराहना करते हुए कहा कि अब ससार मे सब्जी खोरी अति लोकप्रिय होती जा रही है।

सत्यार्थ प्रकाश द्वारा हृदय वेध

उज्जैन। महर्षि दयानन्द द्वारा रचित सत्यार्थप्रकाश को पढकर नायगाव तहसील सभाजी नगर औरगाबाद की मस्जिद के पेश इमाम शेख अब्दुल रहमान के हृदय के सस्कार जाग उठे और उन्होने स्वेच्छा से परिवार सहित आर्य समाज मन्दिर सभाजी नगर मे अपना शुद्धि सस्कार सम्पन्न कराया।

आर्य जगत मे अब श्री धर्मपाल आर्य के नाम से सुपरिचित रहमान साहब का पिछले दिनो उज्जैन नगर में आगमन हुआ। जिनका आर्य समाज उज्जैन द्वारा स्वागत किया गया।

आपने अपने बच्चो को गुरुकुल मे पढाने का सकल्प व्यक्त किया है।

सत्संग सम्पन्न

दिनाक १५-७-९० को साय आर्यसमाज मन्दिर जी टी रोड फिरोजपुर छावनी मे शिरोमणि सभाका मासिक सत्सग आयोजित किया गया। देवयज्ञ के पश्चात गायत्री गान व ब्रह्मयज्ञ किया गया। कु० योगेश, कु० रिंकु के भजनो से सुसज्जित इस कार्यक्रम में श्री द्वारकानाथ वर्मा जी ने पराज्ञान के विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किये। सभा के प्रधान सत्यपाल शर्मा ने उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु चलविजयोपहार शील्ड वर्ष १९८९-९० हेतु आर्य समाज जी टी. रोड फिरोजपुर छावनी को प्रदान की।

—देवराज दत्त

अखिल भारतीय अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन

श्रद्धानन्द भवन कोठारी बाजार म. गा. मार्ग, इन्दौर(म. प्र.)४५२००७ तिथि भाद्रपद कृष्ण ५-६-७ सवत् २०४७ ११-१२-१३ अगस्त १९९० शनिवार, रविवार, सोमवार। सम्मेलन स्थल—नेहरू प्रक्षाल (स्टेडियम) छावनी, इन्दौर में आयोजित होगा।'

समारोह के कार्यक्रम

शनिवार भाद्रपद् कृष्ण ५ दि. ११ अगस्त १९९० प्रात काल १०॥ बजे अध्यक्ष-श्री ज्ञानी जैलसिंह जी पूर्व राष्ट्रपति, स्वागताध्यक्ष-डा० प्रभाकर जी माचवे, उदघाटनकर्ता-श्री मुलायमसिंह जी यादव (मुख्यमन्त्री उ० प्र०), सम्मान-अंग्रेजी हटाने के लिए सघर्ष करने वाले देशभक्तो की सम्मानकर्ता-श्रीमती सुमित्रा जी महाजन (सासद), स्मारिका विमोचन—श्री ज्ञानी जैलसिंह जी (पूर्व राष्ट्रपति), प्रमुख वक्ता डा० वेदप्रताप जी वैदिक सम्पादक 'भाषा'।

दोपहर १ बजे से ३ बजे तक भोजन। दोपहर ३ से ५ बजे तक खुली चर्चा। अंग्रेजी हटाने मे आने वाली कठिनाइया एव निदान रात्रि ७ से ८ बजे तक। भोजन रात्रि ८ से १० बजे तक। खुली चर्चा अपनी भाषा के लिए मेरा योगदान क्या होगा?

रविवार भाद्रपद ६ दि० १२ अगस्त १९९० प्रात काल १०॥ से १ बजे तक अध्यक्ष देशरत्न डा० न चन्द्रशेखरन् केरल, प्रमुख अतिथि श्री बनारसी दास जी गुप्त पूर्व मुख्यमन्त्री, हरियाणा विशेष अतिथि भागवत झा आजाद पूर्व मुख्यमन्त्री बिहार सकल्प वाचन।

दोपहर १ से ३ बजे तक खुली चर्चा। शिक्षा से अंग्रेजी की इतिश्री कैसे हो? रात्रि ६ से ८ बजे तक भोजन। रात्रि ८ से १० बजे तक प्रतिनिधियो का परिचय।

सोमवार भाद्रपद ७ दि० १३ अगस्त १९९० प्रात काल ९ से ११ बजे तक नगर चल समारोह। दोपहर १ से ३ बजे तक भोजन। दोपहर ४ से ६ बजे तक भावी कार्यक्रम की योजना। रात्रि १० बजे से कविसम्मेलन।

निमन्त्रित अतिथि—चौ० देवीलाल जी पूर्व उपप्रधानमन्त्री, अटलबिहारी वाजपेयी, सुन्दरलाल पटवा मुख्यमन्त्री म० प्र०, स्वामी आनन्दबोध सरस्वती आदि अनेक गणमान्य नेता पधार रहे है।

संगीत प्रेमी आर्यों हेतु शुभ-सूचना

आर्य समाज बिडला लाईन्स कमला नगर के अन्तर्गत प्रति मगलवार, गुरुवार व शनिवार साय ५ १५ से ६-१५ बजे तक सगीताचार्य आर्य विद्वान श्री जगदीश विद्यालकार सगीत कक्षाए चला रहे हैं।

शुल्क ५०) मासिक, योग्य किन्तु निर्धन शिक्षार्थियो के लिए शिक्षावृत्ति का प्रबन्ध है। सगीत प्रेमियो से दान की अपील है।

—जयप्रकाश आर्य बन्धु प्रधान आर्य समाज

रजि० न० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१२-८-१९९०) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U ९३
R N 626/57 Licensed to post without Prepayment License No U 93 Post in D.P.S.O on 10-8-1990

सिख आतंकवादियों की उ० प्र० में व्यापक गड़बड़ी की योजना

हरिद्वार ६ अगस्त। पंजाब के सिख आतंकवादी उ० प्र० मे व्यापक रूप से गड़बड़ी करने की योजना बना रहे है। मुख्य रूप से उनका निशाना प्रदेश का तराई वाला इलाका तथा बिजनौर, हरिद्वार तथा सहारनपुर जनपद भी बन सकते हैं इस बार आतंकवादी उ० प्र० मे खूनखराबा न करके राजनेताओ वरिष्ठ पुलिस अधिकारियो के परिजनो का अपहरण करने की ताक मे हैं। यह दुस्साहसिक कार्य योजना भिंडरावाला टाईगर फोर्स आफ खालिस्तान द्वारा चलाए जाने की सम्भावना है इस योजना के मूल मे तराई क्षेत्र के दुर्दान्त आतंकवादी दर्शन सिंह उर्फ घोड़ा को पुलिस हिरासत से छुड़ाया जाना मुख्य उद्देश्य हैं। सम्भावना है कि दर्शन सिंह घोड़ा को उ०प्र० में पंजीकृत विभिन्न अभियोगो के परिप्रेक्ष्य मे न्यायालयो मे प्रस्तुत किया जाएगा।

इस योजना को मूर्तरूप देने के लिए भिंडरावाला टाइगर फोर्स आफ खालिस्तान के दुर्दान्त आतंकवादी गुरबिन्दर सिंह तथा ने पंजाब से आतंकवादियों का एक समूह तराई क्षेत्र मे भेजा है कि वह दर्शनसिंह घोड़ा को छुड़ाने के लिए व्यापक रूप से उ० प्र० के राजनेताओ के पुत्रो व परिजनो का अपहरण कर घोड़ा को पुलिस हिरासत से मुक्ति दिला सकें।

(७ ८ ९० के दैनिक हिन्दुस्तान से साभार)

श्रीलंका में लिबरेशन के मुक्ति चीतों ने नमाज पढ़ते १७० मुस्लिमों को भून डाला

कोलम्बो ४ अगस्त। लिबरेशन टाइगर्स आफ तमिल ईलम (लिट्टे) के उग्रवादियो ने कल रात पूर्वी श्रीलका की दो मस्जिदो में घुसकर नमाज पढते समय करीब १७० मुसलमानो को गोली से उडा दिया। यह जानकारी आज यहा सरकारी सूत्रो ने दी। सूत्रो ने बताया कि हमले में १५० से १७० लोग तक मारे गए। सूत्रो के अनुसार लिट्टे के लगभग तीस-चालीस उग्रवादियो ने कल बट्टीकलोआ जिले के कथानकुडी गाव की मीरा और हुसैनिया मस्जिदो मे घुसकर इशा रात्रि की नमाज अदा करने के लिए जमा लोगो पर गोलिया बरसाई अधिकारिया ने बताया कि प्रारम्भिक खबरो मे कहा गया कि मीरा और हुसैनिया मस्जिदो में हुए हमला मे ९० व्यक्ति मारे गए तथा ७३ अन्य घायल हुए। श्रीलका मुस्लिम कांग्रेस के प्रवक्ता का कहना है कि आज सुबह तक मरने वाला की सख्या १७० हो गई है तथा १२५ व्यक्ति घायल है।

पहाड़गंज में भाषण प्रतियोगिता

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद पहाडगज ने स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष्य में चिन्मोट भवन मुलतानी ढाण्डा पहाडगज म ११ अगस्त (शनिवार) साय ८ से ६ बजे रात्रि तक '२१ वीं सदी का भारत' भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया है।

प्रतियोगिता में १२ वी कक्षा तक के छात्र छात्राए भाग ले सकते हैं। भाग लने के इच्छुक प्रतियोगी सम्पर्क करे।

—चन्द्रमोहन आर्य
ओ-२८ प्रताप नगर, दिल्ली-७

विदाई समारोह

—आर्य समाज गवा जिला बदायू के डा० ओम्प्रकाश शर्मा वे० आयु०/यू० आ० बुलन्दशहर के पद से सेवा निवृत होने पर पृथक-पृथक विदाई समारोहो का आयोजन कर उ० प्र० रा० आयु०/यू० चि० सेवा सघ बुलन्द शहर फार्मेसिस्ट सघ तथा आयुर्वेद सम्मेलन की बुलन्द शहर ने भव्य आयोजन कर अश्रुपूरित विदाई दी, इसमे उनके व स० श्री शिवराजसिंह जी की सेवा निवृत्ति पर उन्हे भी विदाई दी गई।

सविता-सदन गवा (बदायू)

श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय
खेडाखुर्द दिल्ली-११००८२ का

उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार सम्पन्न

गुरुकुल खेडा खुर्द दिल्ली मे नवीन ब्रह्मचारियो का उपनयन (जनेऊ) एक वेदारम्भ सस्कार ५ अगस्त १९९० दिन रविवार को सम्पन्न हुआ।

प्राचीन समय में ज्ञानार्जन और विद्याओं के सर्वोच्च केन्द्र गुरुकुल थे। यहा तपोमय जीवन के द्वारा व्यक्तित्व निखरता था। वैदिक साहित्य, दर्शन और याज्ञिक विधाओ को शिक्षा से सत्य और चरित्र के द्वारा यह देश विश्व मे गुरु बना रहा।

गुरुकुल की परम्पराओको अपने पवित्र सहयोग से एव गुरुकुल में आकर देखने से गुरुकुलो को जीवित रखा जा सकता है और ऋषि मुनि सन्त एव गुरुओ की आस्था को स्थिर किया जा सकता है।

वेद प्रचार सम्पन्न

—पन्डावल। आर्य समाज का वार्षिकोत्सव १६-१७ जून ९० को बडे ही समारोह पूर्वक मनाया गया जिसमे स्वामी पूर्णानन्द जी आगरा श्री धनीराम बेधडक रेडियो टी वी सिंगर हरियाणा श्री पूर्णसिंह ब्रह्मचारी व अन्य विद्वानो ने भजनो व्याख्यानो के द्वारा जनता का मार्ग दर्शन किया यज्ञ वेदी पर कई युवको ने यज्ञोपवीत लिया व मद्य मास आदि के छोड़ने का व्रत लिया जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पडा।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्

सार्वदेशिक साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१ दयानन्दाब्द १६६ दूरभाष : ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष २९ अंक ३२] भाद्रपद कृ० १४ स० २०४७ १ अगस्त १९९०

उत्तर भारत में अंग्रेजी हटाओ का बिगुल बजा

अगस्त के अन्त में आन्दोलन की रणनीति

इन्दौर ११ अगस्त । उत्तर भारत के सभी पाच मुख्यमन्त्रियों ने तय किया है कि वे दिल्ली मे आपस मे विचार विमर्श कर केन्द्र सरकार पर दबाव डालेंगे कि वह अपने सरकारी काम-काज की भाषा अंग्रेजी के बजाय हिन्दी को बनाए । प्रधानमन्त्री श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह स्वयं अन्तर्मन से मुख्यमन्त्रियो क इस निर्णय से सहमत हैं । यह घोषणा आज यहा अखिल भारतीय अंग्रेजी हटाओ सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री मुलायमसिंह यादव ने की । श्री यादव की इस घोषणा के प्रति मध्यप्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री सुन्दरलाल पटवा तथा हिमाचल प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री शान्ताकुमार ने भी स्वीकृति व्यक्त की । इन मुख्यमन्त्रियो की घोषणा का पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने भी स्वागत किया ।

स्थानीय जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम मे तीन दिवसीय सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री मुलायमसिंह यादव ने कहा कि उनके अपने राज्य मे हिन्दी को राजकाज की भाषा बनाने का निर्णय करने मे उन्हे प्रशासनिक तौर पर काफी कठिनाई आई थी, किन्तु अब निर्णय पर बड़ी ही सरलता से अमल हो रहा है । श्री यादव ने कहा कि उन्होने तमिल-तेलगु, कन्नड, बगला व उर्दू भाषा उत्तर प्रदेश के स्कूलो मे पढाए जाने के विशेष आदेश जारी किए हैं । यही नही, यह भी निर्णय लिया गया है कि इन भाषाओ को पढ़ने वाले छात्रों को सरकारी खर्च पर हिन्दी भाषी प्रदेशो की यात्रा भी करवाई जाएगी ।

आरक्षण विरोधी आग और भड़की

दिल्ली, वाराणसी, पटना में जमकर प्रदर्शन

नई दिल्ली ११ अगस्त । आरक्षण विरोधी आन्दोलनकारियो ने आज दिल्ली और वाराणसी आदि नगरो मे प्रदर्शन किए, किन्तु बिहार में कई स्थानो पर ट्रेन की बोगिया फूंक दी गई । पटना में स्थिति इतनी नाजुक है कि सभी सरकारी इमारतों पर सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी गई है । स्वचालित हथियारो से लैस अर्ध-सैनिक बलो के दस्ते लगातार चौकसी पर हैं ।

आरक्षण विरोधियो का मुख्य निशाना रेलगाडिया थी । सोनपुर रेल खण्ड के गुलटेन गज स्टेशन पर इन्टरसिटी एक्सप्रेस का एक कोच वैशाली स्टेशन पर यात्री गाड़ी के दो डिब्बे और रामपुर डुमराव स्टेशन पर भी दो यात्री डिब्बो मे आग लगा दी गई ।

दानापुर-मार्ग पर चलने वाली लम्बी दूरी की गाडिया रद्द कर दी गई हैं ।

अपने यहां तो संस्कृत मिट रही है

—मण्डन मिश्र

नई दिल्ली ११ अगस्त । दुनिया भर मे जहा संस्कृत के प्रति रुझान बढ़ रहा है । वहीं अपने देश मे इसका महत्व दिन प्रतिदिन कम होता जा रहा है । यदि ऐसा ही होना रहा तो वह दिन दूर नहीं जब हम अपनी प्राचीन विरासत और संस्कृति को पहचानना भी भूल जायेंगे ।

यह बात श्री लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ के कुलपति मण्डन मिश्र ने कही । जनसत्ता से बातचीत मे उन्होने कहा कि ब्रिटेन, फ्रांस, अमेरिका, जर्मनी और सोवियत संघ आदि देशा में पिछले दिनो सैकड़ो अध्ययन केन्द्र खुले हैं जहा संस्कृत का अध्यापन होता है । लेकिन भारत में पहले से जो संस्थाए इस क्षेत्र मे काम कर रही थी उनमें नई-नई बाधाए आने लगी हैं । मसलन उन्हे अनुदान मिलने में अड़चन आती हैं उनकी योजनाओ और कार्यक्रमो को आसानी से स्वीकृति नही मिलती । यदि वे कोई नई शुरुआत करना चाहती हैं तो नौकरशाही रोडे अटकाती है ।

ट्रिनीडाड भी खाड़ी देशों के हस्तक्षेप से प्रभावित

आर्यसमाज के शिष्टमण्डल की उप-उच्चायुक्त से भेंट

नई दिल्ली ११ अगस्त, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी के निर्देशानुसार आर्यसमाज की तरफ से सार्वदेशिक सभा के मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री तथा श्री विमल वधावन एडवोकेट संयोजक कानूनी समिति ने ट्रिनीडाड की नई राजनीतिक गतिविधियो पर विचार विमर्श किया तथा मुसलमान उग्रवादियो द्वारा प्रधानमन्त्री श्री रोबिन्सन के अपहरण और तत्पश्चात् दोनो टांगो पर गोली मारे जाने की भी निन्दा की । श्री सिंह ने बताया कि ६३ वर्षीय श्री रोबिन्सन

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के वार्षिक उत्सव पर श्री चिमनभाई मेहता राज्यमन्त्री मानव संसाधन मन्त्रालय भारत सरकार का

दीक्षान्त भाषण

श्री चिमनभाई मेहता विद्यामार्तण्ड उपाधि से सम्मानित एवं संस्कृत में मान पत्र भेंट

श्री विजयेन्द्र स्नातक एवं डा० इन्द्रसेन जैतली को भी विद्यामार्तण्ड उपाधि से सम्मानित कर मान पत्र भेंट किया गया

पूज्य सन्यासीवृन्द, माननीय कुलाधिपति जी, आचार्यगण ब्रह्मचारियो,

आर्य बन्धुओ तथा बहनो,

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की इस साधना स्थली मे आकर मैं गौरवमिश्रित हर्ष का अनुभव कर रहा हू। देश प्रेम, बलिदान, आत्म त्याग, सस्कृतिगत निष्ठा तथा मूल्य आधारित जीवन चेतना को विकसित करने मे उन्होने सारा जीवन लगा दिया। मैं सर्वप्रथम आचार्य प्रवर स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के प्रति विनम्रता के साथ श्रद्धाजलि अर्पित करता हू तथा आशा करता हूं कि इस दीक्षा मण्डप मे विराजमान प्रत्येक व्यक्ति नवस्नातको के साथ इस अवसर पर उन्हे श्रद्धा सहित स्मरण कर रहा होगा।

भाईयो,

उन्नीसवी शताब्दी के उत्तरार्द्ध में जब भारतीय पुनर्जागरण और सामाजिक-धार्मिक सुधार आन्दोलन शुरू हुए तब महर्षि दयानन्द ने आदर्श समाज व्यवस्था, राज्य व्यवस्था और परिपूर्ण शिक्षा नीति की रूपरेखा प्रस्तुत की। सर्वसाधारण जनता को शिक्षा प्राप्त करने का अवसर उस समय नही था। परिणाम स्वरूप बहुसख्यक जनता निरक्षर रह गई अज्ञान, शोषण और रूढियो मे जकडी जनता, कैसे खुशहाल रह सकती थी। महर्षि दयानन्द तथा स्वामी श्रद्धानन्द ने तत्कालीन शिक्षण सस्थाओ के प्रतिरोध मे अपनी शिक्षा सस्थाए स्थापित की तथा सभी वर्णों, वर्गों, जातियो और उप-जातियो के बालक-बालिकाओ को बिना किसी भेद भाव के, समानरूप से अध्ययन-अध्यापन का अवसर प्रदान किया। दयानन्द सरस्वती का मन्तव्य था कि शिक्षा, सबके लिए अनिवार्य हो। कोई भी वर्ग; शिक्षा से वचित न रहे। स्त्री शिक्षा और समाज में स्त्रियो की समान तथा आदरपूर्ण स्थिति का समर्थन भी स्वामी जी ने ही किया। आधुनिक सवेदना से पूर्ण शिक्षा की गगा, दयानन्द के कमण्डल से भी इस देश मे प्रवाहित हुई उनका सतत् प्रयत्न रहा कि अध्ययन के दौरान जाति या कुलसूचक कोई चिन्ह विद्यार्थी के नाम के साथ न रहे। धनी-निर्धन, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, छूत-अछूत, ऊच-नीच, समान-असमान तथा अपने पराने का कोई भेद न रहे। आज शिक्षण सस्थाओ मे बढ़ते अनाचार, अराजकता और लोभ, देश की नई पीढी को जिस दिशा में ढकेल रहे हैं, उससे उबरने के लिये स्वामी दयानन्द, गाधी, रवीन्द्रनाथ और श्री अरविन्द के शिक्षा दर्शन को स्वीकार करना जरूरी है। लोग समझते हैं कि दयानन्द और गाधी की जरूरत हमें आजादी के दौरान थी, पर सच्चाई यह है कि राजनीतिक स्वतन्त्रता के बाद हमे उनकी और जरूरत है। साधारण पाठशालाओ और पब्लिक स्कूलो के बीच दौडते शिक्षार्थियो को देखकर लगता है कि शिक्षा का व्यापारीकरण हो रहा है। हमने तय किया है कि शिक्षा सबको समान रूप से उपलब्ध होनी चाहिये। आज तकनीकी शिक्षा और चिकित्सा के क्षेत्र मे लाखो रुपया देकर सामान्य प्रतिभा का छात्र भी प्रवेश पा जाता है और निर्धन व्यक्ति, प्रतिभाशाली होकर भी उससे वचित रह जाता है। प्रतिभा के साथ न्याय होना चाहिए और प्रतिभा प्रदर्शन का सबको समान अवसर मिलना चाहिये। आज देश मे अमीर-गरीब के बीच की खाई को पाटने की आवश्यकता है। शिक्षा, रोजगार और विकास के अवसर सबको दिए जाए, इसके लिए हमारी सरकार कृत सकल्प है। आज विश्वविद्यालयो की मानविकी और तकनीकी ज्ञान जन सामान्य तक पहुचाना होगा। देशव्यापी साक्षरता के अभियान के साथ विस्तार की योजनाओ को लागू करना, विश्वविद्यालयो का कर्तव्य है। पुस्तकीय शिक्षा तब तक अपूर्ण है, जब तक हम ज्ञान-विज्ञान का लाभ जन साधारण तक नही पहुंचाते।

शिक्षा एक सतत प्रक्रिया है। अतः विश्वविद्यालयों का कार्य एक निश्चित अवधि मे विद्यार्थियो को उपाधि बांट देना ही नहीं है। शिक्षा का उद्देश्य तो व्यक्ति मे ज्ञानार्जन की तीव्र लालसा जगा देना है। वह विश्वविद्यालय मे हो या विश्वविद्यालय से बाहर, उसे समाज की नितनवीन समस्याओं से परिचित होना है और उसका समाधान ढूढना है। स्वामी दयानन्द ने ससार के शिक्षाविदो के सामने सतत् शिक्षा का आदर्श रखा था। स्वामी श्रद्धानन्द ने इसी लक्ष्य को आगे बढाया। यदि माता-पिता शिक्षित, चरित्रवान और धर्मनिष्ट हैं तो सन्तान मे भी इन सस्कारो का आरोपण हो सकेगा। माता-पिता के पश्चात् शिक्षक उसके निर्माण मे योग देता है। प्राथमिक पाठशालाओ से लेकर विश्वविद्यालयो तक शिक्षा की धुरी चरित्र कीनिर्माण होनी चाहिये। हमें रोजगारोन्मुख शिक्षाके साथ मूल्य आधारित शिक्षा को प्रोत्साहन देना है पर यह कार्य केवल सरकार नहीं कर सकती। विद्यार्थी मे तीव्र ज्ञान पिपासा, अन्वेषण, सहिष्णुता, तप, विद्यार्जन तथा राष्ट्र और समाज सेवा की भावना जाग्रत करना है। इसकी और समाज सेवा की भावना जाग्रत करना है। इसकी उपलब्धि मे शिक्षक समुदाय की अहम भूमिका है और उन्हे इस भूमिका को देश के सामाजिक एव आर्थिक विकास की पृष्ठभूमि को पूरा करना होगा। आज ससार को ऐसे ही विद्यार्थी और आचार्य चाहिए।

नवस्नातक गण,

आप जीवन क्षेत्र मे प्रवेश करने जा रहे है। मैं आशा करता हू कि आप राष्ट्र के कर्त्तव्यशील नागरिक बनेंगे। मैं चाहता हू कि आपका जीवन देश और समाज की चुनौतियो को सहर्ष स्वीकार करे और आप सच्चे मन से उनका मन्कीय निदान खोजकर मानव मात्र की सेवा करे। आचार्य प्रवर स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कहा था. 'लेना तो सभी ससार जानता है तुम इतने योग्य हो कि अपनी बुद्धि और विद्या मे से कुछ दे सको जो तुम्हारे पास है, उसे उदारता से फैलाओ, हाथ खुला रखो, मुट्ठी को बन्द न होने दो। जो सरोवर भरता है वह फैलता है, यह स्वभाविक नियम है।'

इस दीक्षान्त समारोहके अवसर पर श्री चिमनभाई मेहताजी को सस्कृत मे मानपत्र भेंट कर विद्यामार्तण्ड उपाधि से सम्मानित किया गया, मान पत्र गुरुकुल विश्वविद्यालय कागडी के कुलपति श्री सुभाष विद्यालकार ने पढा इस अवसर पर श्री विजयेन्द्र स्नातक एव श्री डा० इन्द्र सन जैतली को भी विद्यामार्तण्ड की उपाधि प्रदान कर मान पत्र भेंट किया गया, इस समारोह मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प्रो० शेरसिंह, स्वामी ओमानन्द प्रियव्रत विद्यावाचस्पति डा० धर्मपाल आदि ने भी अपने विचार प्रकट किये।

ट्रिनीडाड भी प्रभावित (पृष्ठ १ का शेष)

को पूरी चिकित्सा मिलने के बावजूद भी कुछ कमजोरी महसूस हो रही है। वैसे उनकी स्थिति में पूरा सुधार हो चुका है।

ट्रिनीडाड मे उग्रवादी गतिविधियो पर विशेष उल्लेख करते हुए श्री सिंह ने कहा कि कुछ गिने चुने अफ्रीका मूल के काले मुसलमान जिनको खाड़ी से वित्तीय तथा अन्य सहायता मिलती है, हमारे देश मे घुसपैठ कर गये और पूर्ण लोकतान्त्रिक व्यवस्था से चलने वाले देश मे इस समूह ने गडबडी फैलाने की कोशिश की परन्तु ट्रिनीडाड के किसी भी नागरिक समूह का समर्थन प्राप्त न होने के कारण इन उग्रवादियो ने पुलिस के समक्ष समर्पण कर दिया। इस समय १२० उग्रवादी मुसलमान पुलिस हिरासत मे हैं। जनसख्या का विस्तृत ब्योरा देते हुए श्री सिंह ने कहा कि ट्रिनीडाड में ४२ प्रतिशत हिन्दू, ६ प्रतिशत भारतीय मुसलमान, तथा ४० प्रतिशत अफ्रीकी ईसाई और बाकी १२ प्रतिशत मिले-जुले अन्य देशों के निवासी हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की तरफ से श्री सिंह तथा उच्चायुक्त श्री प्रेमचन्द्रदास को सत्यार्थ प्रकाश के ग्रन्थ भेंट किये गये और इस अवसर पर ट्रिनीडाड की जनता की खुशहाली के लिए शुभकामनाएं व्यक्त की गईं।

राम जन्म भूमि : बाबरी मस्जिद

सदानन्द आर्य, १६ बालीगंज सर्कुलर रोड, कलकत्ता-१९

एक मां अपने बेटे से ४३ वर्षों के पश्चात् मिलने आई। सन् १९४७ के साम्प्रदायिक रक्तपात में एक हिन्दू महिला को मजहबी दरिन्दो ने उठा लिया था। कौशल्यादेवी २० वर्षीया मा अपने नवजात शिशु रत्नलाल से छीन ली गई थी। शिशु रत्नलाल अपने पिता निहालचन्द की देख-रेख मे पला और सबने मा को मरा हुआ मान लिया। वर्षों बीत गये कि एक दिन प्रौढ रत्नलाल को बेटा कहती हुई एक वृद्ध महिला जम्मू आई। परिचय हुआ कि नवशिशु से बिछुडी हुई मा कौशल्यादेवी आई है अपने आत्मज से मिलने। आत्मज होते हुए भी मां-बेटे के रिश्ते मे बहुत अन्तर आ चुका था। मा अब कौशल्यादेवी न रहकर खुर्शीद बेगम थी, भारतीय न रहकर अब पाकिस्तानी थी। खुर्शीद बेगम ने पाकिस्तान को इनायतुल्ला नाम का बेटा भी दे दिया। मा की ममता ने अपने रत्नलाल बेटे का पता लगाने और मिलकर आने को बाध्य कर दिया तभी तो पासपोर्ट और वीसा बनवा कर भारत पहुची। देखकर निहाल हुई होगी पर फासला बहुत हो चुका था।

कलकत्ता के दैनिक अंग्रेजी पत्र "स्टेट्समैन' दिनाक २ जुलाई १९९० के अंक मे इस घटना को पढकर अनायास मुंह से निकल पडा "हमारे चलते फिरते मन्दिर मस्जिद बन गये।' गहराई से विचारने लगा कि इस प्रकार के अनेको मन्दिर मस्जिद बन चुके हैं और यह प्रवाह अब भी समाप्त नही हुआ है। ऐसे चलते चलते हमारी स्थिति क्या होगी ? आज हम राम जन्म भूमि के लिए मरने-मारने को तैयार हैं, एक समय ऐसा आ सकता है कि हमारी ही सतति उसको मस्जिद बना देगी। बात बहुत कटु है किन्तु हमारी अकर्मण्यता और देश की जनगणना मे परिवर्तन होता हुआ अनुपात हमें यह सब सोचने को बाध्य करता है। काश्मीर का इस्लामीकरण बहुत पुराना नहीं है और वह बौद्धकरण भी नहीं है जो देश की सीमाओ से आरम्भ होकर बढ़ता चला आ रहा है। एक हम हैं कि सब कुछ जानते और देखते हुए आख बन्द किये बैठे हैं। मिट्टी पत्थर से बनी बाबरी मस्जिद को हटाने के लिये हमारा खून खौल रहा है, मन्दिर बनाने के लिये आतुर हैं और इस मुद्दे पर सघर्ष करने के लिये हमारा तन, मन, धन सब कुछ अर्पण है। यदि ऐसा समर्पण हमारी सतति को बचाने के लिये लग गया होता तो राम की सौगन्ध खाने की आवश्यकता नहीं पडती, बल्कि राम की सुगन्ध सर्वत्र फैलती हुई दृष्टिगत होती। अंग्रेजी में एक कहावत है "पेनी वाइज पौंड फुलिश।' हमारी स्थिति और चिन्तन भी इसी प्रकार का बन गया है।

एक बहुत प्रसिद्ध कहानी है—दो महिलाओ की। एक बच्चे को लेकर दोनो में झगडा था। अबोध बच्चे को दोनो महिलाये अपना बेटा बताने का दावा कर रही थीं। न्यायाधीश से जब सहज मे गुत्थी सुलझती न लगी तब एक उपाय सूझा। न्यायाधीश ने अधीनस्थ कर्मचारी को आदेश दिया कि इस बच्चे के दो टुकडे करके दोनो माताओ को दे दिया जाए। सचमुच मे जबतक कर्मचारी हाथमें कटार लेकर बच्चेकी ओर बढ़ने लगातबतक एकमहिला चिल्लाई कि भगवन्। बच्चा को दे दो वही उसकी मा है। न्यायाधीश को सही मा का पता लग गया। मा अपने बेटे का वध होता नही देख सकती थी जबकि नकली मा को कुछ भी अनर्थ स्वीकार था। हमारे साथ ऐसा हो रहा है कि हम अपनी राम जन्म भूमि माग रहें हैं। नकली दावेदारो को अनर्थ करने का अवसर मिल गया है। हम अपनी माग में उलझे हुए है और उधर कुटिल और हिंसक लोग पूरे देश मे विघटन का विष फैला रहे हैं। हमारी भारत माता के लिए और टुकडे कर देना चाहते हैं। इससे हानि होगी भारत मां के असली बेटो की, भारत की सस्कृति और सभ्यता की। हमारा यह विशाल देश सिमटता चला जायेगा। अत हम हिन्दू लोग पुन अपने दावे पर विचार करें और उसको दूसरे दृष्टिकोण से सोचें।

निःसन्देह राम जन्म भूमि हमारी है। भगवान राम का यह स्मारक है। हमारे पूर्वज राम की सस्कृति के अनुपम उपासक और रक्षक हैं। आज बाबरी मस्जिद के जो रक्षक बने हुए हैं वे माने अथवा न मानें उनके पूर्वज भी 'राम' हैं। लाखो वर्ष पूर्व राम के सम्बन्ध को केवल पन्द्रह सौ वर्ष पूर्व पैदा हुई मान्यतायें कैसे झुठला सकती हैं। पन्द्रह सौ वर्ष ही क्यो भारत के निवासियो का यह मत परिवर्तन पाच सौ वर्षों से अधिक पुराना नही है। अत राम के प्रति द्वेष जताने वालो को हम कपूत कह सकते है गैर नही। कपूतो ने जिस किसी प्रकार से उस पवित्र भूमि के एक ओर अपना कब्जा जमा लिया है तो अब उनसे उलझने की अपेक्षा अच्छा है उनको वहीं तक पडा रहने दे। उनकी ओर से भूमि विस्तार की कुचेष्टा होती हो तो उसका जी जान से विरोध करें। हमे आक्रामक न बनकर प्रतिरक्षा की नीति रखनी चाहिए।

हमारे देश का इतिहास लाखो वर्ष पुराना है। रामायण काल, महाभारत काल, सम्राट अशोक काल और गुप्त काल जैसे सुनहरे युग इस देश ने देखे हैं। युगो की कला-कृतियां नगर और राजमहलो की शोभा अपने-अपने काल में अनुपम थी—किन्तु आज वह सब इमारतें कहा हैं ? इतिहास जीवित है परन्तु इतिहास के स्थान विशेष भूमि में समा गये। सम्राट अशोक ने पूरे देश मे महात्मा बुद्ध की शिक्षाओ को पत्थरो पर उत्कीर्ण करके लगाये थे पर आज कहा है वे पत्थर ? स्पष्ट है कि ईंट पत्थर की इमारतो का कार्यकाल होता है। इतिहास और शिक्षाये कागज के पन्नो पर जीवित रह सकती हैं पत्थरो पर नही। अत हम अपनी राम जन्मभूमि स्थल के साथ लगी मस्जिद को हथियाने में अपना श्रम नष्ट क्यो करें। समय अपने आप इस स्थान को रिक्त करेगा। राम भूमि का नाम राम भूमि सदैव रहने वाला है भले ही वह चबूतरा अथवा निर्माण कालान्तर मे टूट जाये किन्तु जब तक आर्य सस्कृति जीवित है, जब तक रामायण का पाठ हिन्दू घरो में है तब तक भला राम का कोई क्या बिगाडेगा। आवश्यकता है राम की कीर्ति और श्रद्धा को हमे अपने जीवन का आदर्श बनाने की।

स्थान-स्थान पर खुदाई से अथवा भूकम्प आदि से पृथ्वी मे समाये गये नगर और इमारतो के भग्नावशेष जब बाहर निकल आते है तब इतिहासकार उसमे पुराना इतिहास ढूढते हैं। हडप्पा सस्कृति आदि का सकलन पुराने खण्डहरो से हुआ है। हमारे देश के इतिहास के पृष्ठो में न्याय और अन्याय की घटनायें अमिट हैं उन घटनाओ का साक्षी यदि कोई है तो भग्नावशेष बाबर आदि के किये गये कारनामे कभी न कभी पृथ्वी से निकल सके इस लिये आवश्यक है कि मन्दिरो के ऊपर बनाई गई मस्जिदो को गवाहियां बनी रहे। हमने यदि भावना मे आकर इतिहास के तथ्यो को बदलने का प्रयास किया तो सभव है युगो के पश्चात् ऐसे प्रमाण इस भूमि से निकलने लगे कि तत्कालीन लोगो ने मस्जिद के ऊपर मन्दिर भी बनाये हैं। ऐसा होने पर इतिहास मे लिखी घटनाओ पर प्रश्न चिन्ह लग जायेगा। पाच सौ वर्ष पूर्व किये गये अन्यायो का प्रतिशोध सम्बन्धित भूमि को वापिस हथियाने मे नही है। प्रतिशोध का एक मात्र उपाय है कि राम के भक्त जो बाबर के भक्त बन चुके हे उनको वापस राम की पक्ति में बैठाने का सकल्प किया जाए। इतना सभव न हो तो उन सबके हृदय को जीता जाय जिससे हमारा यह खण्डित भारत पुन अखण्ड भारत बन सके। दो जर्मन देश पुन एक हो सकते हैं तब कोई कारण नहीं कि हमारी यह अप्राकृतिक सीमाये समाप्त होकर पुन विशाल देश न बने। ऐसा यदि हो जाता है तब हमारा नालन्दा विश्वविद्यालय और नानक जन्मभूमि वापिस मिल सकते हैं।

समस्त हिन्दू जाति के कर्णधारो से निवेदन है कि अपने भविष्य पर अपनी योजनाओ और अस्तित्व पर पुन विचार करे और एक ऐसे कार्यक्रम को कार्यान्वित करने का सकल्प ले कि जितनी भूलो से हम लोगो को मार पडी है और अपमानित होना पडा है उन भूलो का पुन शिकार न होना पडे। भूल सुधार की प्रक्रिया मे राम जन्म भूमि का मिलना अपने आप सरल होता जायेगा।

गृहमन्त्री अपने पद का दुरुपयोग करके आतंकवादियों को लाभ पहुंचाने में लगे हैं

गृहमन्त्री मुफ्ती साहेब हर प्रकार से कश्मारी मुस्लिम युवकों के लिए ही सोचते हैं। उन्हे न तो कश्मीर घाटी से अपने प्राणों की रक्षा के लिए अपने घर बार छोड़कर पलायन कर गए हिन्दू समाज की कोई चिन्ता है और न ही देश की अखण्डता की रक्षा की।

जो हिन्दू कर्मचारी डर के मारे सरकारी कार्यालयों में उपस्थित नहीं हो पा रहे उन हिन्दू कर्मचारियों के स्थान पर मुस्लिमों की भर्ती के आदेश दे दिए गए हैं।

कश्मीर से हजारों मुस्लिम युवक भागे हुए हैं जो भारत विरोधी कार्यों में लगे हुए हैं ' पाकिस्तान जाकर हथियार लाकर भारत के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष कर रहे हैं लोगों की हत्याएं कर रहे हैं। उनमे से १०० विद्रोही उग्रवादी पकड़े जा चुके हैं किन्तु उन पकड़े गए भारत के गद्दारों को जिन्होंने बम फेंके हैं, हत्याएं की हैं उन्हे जेलों से छोड़ने का रास्ता मुफ्ती साहेब निकाल रहे हैं। मुफ्ती साहेब ने घोषणा कर दी है कि पकड़े गए गद्दार एवं हत्यारों को राष्ट्र की मुख्य धारा में लाने के लिए छोड़ दिया जायेगा। इसके लिये इन गद्दारों को बहाना बनाना होगा कि वे किसी के बहकाने से भारत के विरुद्ध कार्य मे प्रवृत्त हुए और पाकिस्तान जाकर हथियारों का प्रशिक्षण ग्रहण कर वहां से हथियार लेकर कश्मीर घाटी में तोड़-फोड़ और हत्याओं के कार्य में लग गए।

संसार में कोई भी देश अपने राष्ट्र के विरुद्ध शस्त्र उठाने वालों को क्षमा नहीं करता बल्कि ऐसे देश द्रोहियों को मृत्यु दण्ड दिया जाता है। परन्तु मुफ्ती साहेब अपने गृहमन्त्री पद का दुरुपयोग करके कश्मीरी आतंकवादियो को लाभ पहुंचाने में लगे हैं। यदि उन्हे छोड़ा गया तो बाकी विद्रोहियों का मनोबल बढ़ेगा और छोड़े गए लोग फिर से विध्वंसक कार्यों में लग जायेंगे।

परन्तु समस्या केवल इतने पर ही समाप्त नहीं हो जाती। मुफ्ती साहेब इन विद्रोही युवकों को मुख्य धारा में लाने के बहाने से उन्हे सरकारी सेवाएं देने की योजना बना रहे हैं। कश्मीर के हजारो मुस्लिम युवकों को केन्द्रीय सेवाओं में लिया जा रहा है। गुप्तचर एजेन्सियों मे भी। यहां तक कि परमाणु केन्द्रों में भी इन्हें भर्ती किया जा रहा है। इससे तो कश्मीरी उग्रवादियों का प्रवेश सब जगह हो जाएगा। वे अधिक मात्रा मे विध्वंसक कर कार्य कर सकेंगे।

हमारी सरकार पता नहीं किस नींद में सोई है कि यह सब कुछ नही कर पा रही। जब बाड़ ही खेत को खाने लगे तो फिर रक्षा कौन करेगा?

—संवाद दाता

जय जय भारत माता

हिमगिरि तेरा मुकुट सुहाता, सिन्धु चरण पर शीश झुकाता।
गंगा-गोदावरि का शुभ जल, तेरी धरती पर लहराता।।
विन्ध्य भूमि पर तेरी माते, वीर जयी सेनानी आते।
ध्वज तेरा ऊंचा कर जाते, तुंग श्रृंग चढ़ जो फहराता।।
सारी दुनिया से तू न्यारी, देवों को भी तू प्यारी।
शिक्षा लेती जगती सारी, धर्म-तत्व की तू विख्याता।।
दयानन्द जैसे ऋषियों ने, व्यास-वाल्मिकि कवियों ने।
कण्व सदृश अनगिन यतियों ने, यश गा, बने सुसंस्कृति ज्ञाता।।
राम-कृष्ण की जन्मभूमि यह, ऋषि-मुनियों की कर्मभूमि यह।
तपी जनों की तपोभूमि यह, ज्ञान-रश्मि की तू उद्गाता।।
ज्ञान वेद का तुम्हीं बताती, तिमिर घटा का दूर भगाती।
मनुष्यता की नीति सिखाती, तू ही जग की हो निर्माता।।
शान्ति संदेश तू जग को देती, प्रथम प्रकाश धरणि है लेती।
सत्य अहिंसा तरुवर सेती, गौतम गांधी की तू माता।।
राणा शिवा यहीं पर आए, भगत सुभाष तुम्हीं ने जाए।
नतमस्तक तेरे चरणों पर 'आर्य' पुत्र है शीश झुकाता।।
जय-जय भारत माता।।

—राजेश्वराम आर्य

स्वामी संघ और विहिप पर बिफरे

नई दिल्ली ८ अगस्त। जनता पार्टी के सांसद डा० सुब्रमण्यम स्वामी ने विश्व हिन्दू परिषद पर दो वर्ष के लिए प्रतिबन्ध लगाने तथा राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के महत्वपूर्ण नेताओं को राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के तहत गिरफ्तार करने की मांग की है।

राज्यसभा में विशेष उल्लेख के माध्यम से रामजन्म भूमि बाबरी मस्जिद विवाद में विश्व हिन्दू परिषद् के रवैए को 'हिन्दू विरोधी' 'फासिस्ट' तथा 'असंवैधानिक' घोषित करते हुए डा० स्वामी ने यह मांग की। उन्होंने संघ को आतंकवादी संगठन घोषित करने की मांग भी की।

डा० स्वामी का कहना था कि राम जन्मभूमि बाबरी मस्जिद विवाद मे जहां बाबरी मस्जिद कमेटी का रुख सकारात्मक है और वह अदालत के फैसले को मानने को तैयार है, वहां वि०हि०प० का रवैया नकारात्मक है। उसने बात-चीत या अदालती फैसले के जरिए इस विवाद का हल करने की बात को मानने से इनकार कर दिया है।

उन्होंने कहा कि वि०हि०प० का यह रुख आम हिन्दुओं और मुसलमानों की भावनाओं के विरुद्ध हैं। हिन्दू धर्म ने हमेशा सहनशीलता का परिचय दिया है। इसीलिए वह विश्व में प्रसिद्ध रहा है। लेकिन वि.हि.प. का रुख इसके विपरीत है। उसने बाबरी मस्जिद गिराने की तारीख ३० अक्तूबर तय कर दी है।

डा० स्वामी ने आशा व्यक्त की कि राष्ट्रीय मोर्चा सरकार देश की एकता अखण्डता की रक्षा के लिए वि०हि०प० के लोगों के खिलाफ कार्रवाई करने से नहीं हिचकिचायेगी।

नेपाल में गौहत्या पर झगड़ा

५० जख्मी, ८२ मकानों को अग्नि से भस्म

काठमाडूं। पिछले रविवार यहां से १०० किलोमीटर दूर पूर्व में स्थित तोजिता में गोहत्या पर उठे हिन्दू और मुसलमानों के झगड़े में कम से कम ५० व्यक्ति जख्मी हो गए और ८२ मकान आग के लपेट मे आ गये। पुलिस के अनुसार पिछले वीरवार को मुसलमानों ने अपने मजहबी त्यौहार के सिलसिला में एक गाय को मारा जिस पर हिन्दुओं ने सख्त आपत्ति की जिससे कशीदगी बढ़ गई। पांच जख्मियों की अवस्था गम्भीर बताई गई है। अभी कोई गिरफ्तारी अमल में नहीं आई है।

ऋषि का सन्देश घर घर पहुंचाइये

वैदिक धर्म के प्रचार में रुचि रखने वाले आर्यो आधुनिक युग मे वैदिक धर्म के प्रचार के लिये भी वैज्ञानिक साधनो पर हमें ध्यान देना चाहिये। उन साधनो मे से एक साधन है कैसेट। जिसके द्वारा आप घर घर में ऋषि के सन्देश को पहुचा सकते हैं।

हमने इस कार्य को प्रारम्भ कर दिया है। सैकड़ो आर्यो ने हमसे वैदिक कसेट लिये हैं या डाक से मगवाये हैं। क्या आपने मगवाये हैं? यदि नहीं तो शीघ्र मगवाकर आर्य समाज के प्रचार कार्य मे अपना सहयोग दीजिये।

उच्चकोटि के भजनो, सन्ध्या, हवन, गायत्री-महिमा, योगासन-प्राणायाम, विवाहगीत आदि के उत्तम गुणवत्ता वाले कसेटो के विस्तृत सूचीपत्र को मगवाने के लिये आज ही हमें कार्ड लिखिये।

संसार साहित्य मण्डल
१४१ मुलुण्ड कालोनी बम्बई-४०००८२

वैदिक साहित्य में अग्नि का महत्व

कु० गीता भाटिया, वैदिक शोध संस्थान कन्याश्रम

"यत्र विश्वं भवत्येक नीडम्" अर्थात् जहां पर सारा संसार एक घोंसला है, इस वैदिक सूक्ति के अनुसार वेदों के अन्दर ही सारा संसार एक घोंसले की भांति दिखाई देता है।

मानव जीवन का कोई भी क्षेत्र चाहे वो हमारे सामाजिक जीवन से लेकर आध्यात्मिक तक कोई भी हो वेदों से अछूता नहीं रह पाया है, सृष्टि उत्पत्ति से लेकर उसके विकास तक का कोई पहलू ऐसा नहीं है, जो वेदों में सांगोपांग विवेचित न हो। वेदों की रचना आज से लगभग एक अरब, सत्तानवें करोड़ उनतीस लाख, उनचास हजार नब्बें वर्ष पूर्व हुई थी, और लगभग इतना ही समय सृष्टि उत्पत्ति का निर्धारित किया गया है। इससे विदित होता है कि जब से सृष्टि उत्पन्न हुई है, तभी से वेदों ने भी विकास पाया है और यही कारण है कि आज वैदिक साहित्य ही एकमात्र ऐसा साहित्य है जिसे सृष्टि का अभी तक का सर्वप्राचीन और सर्वप्रमाणिक साहित्य माना जाता है।

वैदिक साहित्य न केवल भारत का ही अपितु समूचे जगत का सर्वप्राचीन साहित्य है। वैदिक साहित्य तो सम्पूर्ण विश्व के जागरूक व्यक्तियों के लिये वह अमूल्य निधि है जिसकी प्रेरणा से मनुष्य में साहित्य के प्रति अपूर्ण रूचि पैदा हो सकती है और कोई भी विवेकशील प्राणी, जिसकी साहित्य में रूचि हो, उसके लिये तो ये वेदों का अध्ययन सागर से चुनकर निकाली गई यह अमूल्य मणि है, जिसका आश्रय लेकर व्यक्ति मानव जीवन के लिये एक सर्वोपयोगी साहित्य उपलब्ध करा सकता है, क्योंकि वैदिक साहित्य सृष्टि के विकास की पूर्वापर घटनाओं का एक ऐसा संयोजन है, जो आज के मनुष्य के समक्ष ऐतिहासिक साक्ष्य प्रस्तुत करता है, यही वजह है कि वेदों का महत्व न केवल उनकी सर्वप्राचीनता व उनमें निहित ज्ञान-विज्ञान के कारण से है अपितु वेदों के अध्ययन ने नवीन शोध कार्यों व विद्वानों को भी प्रभावित किया है।

वैदिक साहित्य ही मनुष्य के सम्पूर्ण ज्ञान का मूल है। वेदो के अध्ययन के बिना कोई भी ज्ञान पूर्ण नही कहा जा सकता है, जिस प्रकार किसी वृक्ष की शाखाओं के बारे में जानने से भी ज्यादा महत्वपूर्ण व जरूरी है उसकी जड़ के विषय में जानना, जिससे कि वह पेड़ नाना फूल-पत्तों के रूप में विकसित हुआ है, उसी प्रकार चूंकि संसार के सभी ज्ञानों का मूल यही वेद है, अतः किसी भी अध्ययन से पहले हमें उसकी जड़ को पकड़ना होगा। उसके विषय में गहन अध्ययन करना होगा, उसका महत्व जाने बगैर हम कैसे उससे विकसित शाखाओं के महत्व को समझने में समर्थ हो सकते हैं?

वस्तुतः सम्पूर्ण भारतीय साहित्य का मूल स्रोत यही वैदिक साहित्य है किसी भी साहित्य का चाहे वह संस्कृत हो या प्राकृत, अपभ्रंश हो या आधुनिक, अध्ययन तब तक पूर्ण नहीं कहला सकता जब तक कि वैदिक साहित्य का अध्ययन न कर लिया जाये। इस बारे में पाश्चात्य विद्वान विंटरनित्ज का यह कथन बड़ा ही उचित प्रतीत है—"जो मनुष्य वैदिक साहित्य से अपरिचित है, वह भारतीय संस्कृति को नहीं जान सकता।" इतना ही नहीं, बल्कि अपनी प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति को जानने के लिये भी हमें भारतीय साहित्य की शरण लेनी पड़ती है।"

वेद नित्य हैं, ज्ञान के भंडार हैं। सभ्यता एवं संस्कृति के द्योतक हैं, वेद आर्य हिन्दू संस्कृति के सुदृढ़ आधार स्तम्भ हैं, हिन्दू जाति की तो विशेष रूप से वेदो मे आस्था व श्रद्धा रही है, पृथ्वी के किसी भी स्थान पर रहने वाला हिन्दू अपने धर्म और संस्कृति के मूलतत्व वेदों को ही मानता है, यही कारण है कि धार्मिक पर्वों और सामाजिक समारोहों पर हिन्दुओं के घरों में आधुनिक काल मे भी वेद-मन्त्रों का उच्चारण पूर्ववत् श्रद्धा के साथ किया जाता है, प्रमुख धर्मशास्त्रकार महाराज 'मनु' ने भी अपने ग्रन्थ 'मनुस्मृति' में वेदों को सभी धर्मों का मूल स्वीकारा है—

"वेदोऽखिलो धर्ममूलम्।"

वेद ही सम्पूर्ण विश्व के ज्ञान के प्रथम प्रेरणास्रोत हैं, इस विषय में वेदों के सूक्त ही इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं, वैदिक साहित्य रूपी वृक्ष की चार विस्तृत शाखायें ही चार वेदों के नाम से जानी जाती हैं, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद, इनमें ऋग्वेद सर्वप्रथम व सर्वप्राचीन विकसित शाखा है जो कि धार्मिक, सामाजिक और व्यावहारिक स्रोतों का भी उद्गम स्थान है, अग्नि, इन्द्र और वरुण ये तीन प्रकार के देवता विशेष रूप से ऋग्वेद के वर्णनीय और स्तुत्य हैं। ऋग्वेद का सर्वप्रथम सूक्त अग्नि सूक्त माना जाता है, जिसमें जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त संस्कारों के विषय में बड़े ही सारगर्भित मन्त्र विद्यमान है, जिन्हें अग्नि देव की आराधना से ही पूर्ण माना जाता है, धर्म हो या पर्व जन्म हो या मरण, विवाह हो या वानप्रस्थाश्रम प्रवेश सभी के लिये अग्नि की उपासना की गई है, उदाहरण के लिये होली के पर्व को लीजिये, होली के पावन पर्व में वैदिक संस्कृति के दर्शन कराने वाला अग्निदाह और घर-घर में होने वाला उसका लघु-संस्करण वैदिक यज्ञों के व्यापक और विस्तृत रूप में विद्यमान होता है, अग्नि पूजा का तो विधान ही वेदों से माना जाता है।

लगभग २०० सूक्तों में अग्नि की स्तुति की गई है, अग्नि को 'जातवेदाः' भी कहा गया है, अर्थात् वह ज्ञान का आधार है, ऋग्वेद के मन्त्रों में अग्नि का विशेष सम्बन्ध यज्ञ की अग्नि से है। अग्नि को होता, यजिष्ठा, ऋत्वा आदि नामों से पुकारा जाता है, अग्नि को देवतानों के मध्य में मननशील और प्रकाशस्वरूप निहित किया है।[१]

वैदिक मन्त्रों में स्तुतिकर्ता ने अपने स्तुत्य देवता अग्नि की प्रातः सांय स्तुति करते हुये पापों से मुक्ति की कामना की है।[२] इससे भी विदित होता है कि ईश्वर की अपेक्षा भी वैदिक मन्त्रों को अधिक महत्व दिया गया।

इसी प्रकार किन्हीं मन्त्रों में स्तुतिकर्ता ने अग्निदेवता से पापमुक्ति के साथ ही साथ दीर्घायु की अभिलाषा भी प्रकट की है[३]। अन्य मांगलिक कार्यों पर भी अग्निदेव की पूजा होती है। विवाह अवसर पर पवित्र अग्नि की परिक्रमा आज भी हमारे लोक के (भारतीय) जीवन को प्रकाशित करने वाला अध्याय है, व्रज की होली के अवसर पर गाये जाने वाले गीत और लोकगीतों में आज भी खासतौर पर वेदों की ऋचाओं की ही संगीत गूंजता है, कहने का तात्पर्य है कि जिस प्रकार ऋतु और युद्ध के कार्यों का अधिष्ठाता इन्द्र है उसी प्रकार आर्यों के गृह-कृत्यों का अधिष्ठाता अग्नि इस प्रकार अग्नि ही आर्यों का प्रमुख देव है, और उसके बिना कोई धार्मिक कृत्य सम्पन्न नहीं होता है।

इस प्रकार यह निर्विवाद है कि वैदिक साहित्य का सर्वप्राचीन अंश ऋग्वेद में संकलित ये काव्यमय स्तुतियां ही हैं। ऋग्वेद की उसी कविता को संसार की सर्वप्राचीन कविता होने का गौरव प्राप्त है, बाद का सम्पूर्ण वैदिक साहित्य इसी के विकास का परिणाम है।

१—"यो मर्त्येष्वमृत ऋतावा, देवो देवेष्वरतिर्निधायि।
होता यजिष्ठो मह्ना शुचध्यै हव्यैरग्निर्मनुष ईरयध्यै।"

२—"यस्त्वा दोषा य उषसि, प्रशंसात्प्रियं वा त्वा कृणवते हविष्मान्।
अश्वो न स्वे दम आ, हेम्यावान्तमंहसः पीपरो दाश्वासम्।"

३—"यथा ह त्यद्वसवो गौर्यं, चित्पदि षिताममुञ्चता यजत्राः।
एवो ष्वस्मन्मुञ्चता व्यंहः प्रातार्यग्ने प्रतरं न आयुः॥"

पाकिस्तान के मन्त्री की सलाह

सिंध और बंगला देश का भारत में विलय

मुजफ्फर हुसैन

पाकिस्तान में अब वहां के मन्त्री ही मांग करने लगे हैं कि स्थाई शान्ति के लिए सिंध और बंगला देश का भारत में विलय कर देना चाहिए। "जिये सिंध आन्दोलन के नेता श्री जी० एम० सैय्यद के अलावा पाकिस्तान की सत्तारूढ़ पीपुल्स पार्टी के कई महत्वपूर्ण नेता और सरकार के कई मन्त्री भी सिंध के भारत में विलय के पक्षधर हैं। गत दिनों पाकिस्तान के शिक्षामन्त्री गुलाम मुस्तफा शाह ने राय दी है कि यदि पाकिस्तान और बंगला देश अपना जीवन सुख-शान्ति से व्यतीत करना चाहते हैं तो सिंध और बंगलादेश का भारत में विलय हो जाना चाहिए।

श्री मुस्तफा शां या बंगलादेश के तत्कालीन नेता शेख मुजी-बुर्रहमान पर यह आरोप लगाते हैं कि उन्होंने बंगलादेश को एक अलग राज्य के रूप में कायम रखकर अच्छा नहीं किया। युद्ध में पराजित हो जाने के बाद उन्हें तुरन्त यह प्रस्ताव रखना चाहिये था कि बंगलादेश के अलग अस्तित्व का कोई मतलब नहीं है यानी बंगलादेश एक राज्य के रूप में भारत का अंग बन जाए। आज बंगलादेश में जो अस्थिरता पिछड़ापन और चरमराती कानून-व्यवस्था है उससे तभी मुक्ति मिल सकती है जब वह भारत का अंग बन जाए। बंगला देश तीन ओर से भारत से घिरा है। यदि उसे कोई खतरा हो सकता है तो सिर्फ भारत से। विलय से भारत की वैज्ञानिक प्रगति का लाभ बंगलादेश को मिल सकता है। उसकी जितनी भी समस्याएं हैं। वे भारत से जुड़ी हैं। जब तक दोनों बंगाल (पूर्वी बंगाल यानी बंगलादेश और पश्चिमी बंगाल। एक नहीं हो जाते बंगलादेश की अर्थव्यवस्था नहीं सुधर सकी।

गुलाम मुस्तफा शाह मुहम्मद अली जिन्ना को अंग्रेजों का पिट्ठू कहते हैं। जमींदारों ने समाजवाद से बचने के लिए जिन्ना का सहारा लिया और उनके माध्यम से एक ऐसी रियासत बनाने की कोशिश की, जहां राजाओं और नवाबों को पूरी शरण मिल सकें।

पाकिस्तान में विख्यात लेखक खलीलुल हामिदी ने एक पुस्तक लिखी हैं। इस पुस्तक में गुलाम मुस्तफा शाह के बेबाक विचारों को शब्दबद्ध किया गया है। पुस्तक का नाम है 'तेहरीकी सफर की दास्तान" अपने दो यात्रा वृतान्तों में लेखक ने कई महत्वपूर्ण बातें कही हैं। श्री खलीलुल हामिदी मन में भारतीय लाबी शीर्षक के अन्तर्गत गुलाम मुस्तफा शाह के हवाले से लिखते हैं बंगलादेश के मौलाना अबुल कलाम मोहम्मद यूसुफ हमारे साथ ही ठहरे हैं। आज उनकी भेंट दो पाकिस्तानियों से हुई। ये पाकिस्तानी "राबता आलमे इस्लामी" के मेहमान हैं ये दोनो महानुभाव पाकिस्तान सरकार के केन्द्रीय मन्त्री हैं जिनमें से एक का सम्बन्ध सिंध से है और दुर्भाग्य से वे शिक्षामन्त्री के पद पर आसीन हैं।

मौलाना खलीलुल हामिदी लिखते हैं कि मौलाना अबुल कलाम मोहम्मद यूसुफ साहब ने मुझे बतलाया कि वह मन्त्री महोदय मुझ से मिलते ही कहने लगे कि मौलाना हम सिंधियों को आप बंगला-देशियो को बिना विलम्ब किए भारत में मिल जाना चाहिए।

मौलाना ने पूछा—"हम किस खुशी में अपनी आजादी गिरवीं रख दें? इस पर गुलाम मुस्तफा शाह ने उत्तर दिया—"आजादी बरकरार रहेगी" जिन राज्यो में हमारा बहुमत होगा वहां हमें अन्दरुनी आजादी होगी। भारत में लोकतन्त्र है. इस दृष्टि से केन्द्र में हिन्दुओं का बहुमत होगा और सत्ता भी उन्हीं के हाथों में होगी। राज्यो मे हमारा बहुमत होगा। इसलिए सत्ता भी हमारे पास होगी। मोहम्मद यूसुफ साहब बोले, इस समय पाकिस्तान में केन्द्र की सत्ता पीपुल्स पार्टी के हाथों में है जब कि पंजाब की सत्ता विरोधी दल के पास।

पंजाब पाकिस्तान का सबसे बड़ा और मजबूत प्रदेश है। यह बतलाइए इस समय वहां नवाज शरीफ की क्या चलती है? यही हाल हिन्दुस्तान में होगा। केन्द्र में हिन्दुओं की सत्ता होगी तो राज्यों में मुस्लिम जनता की बात कौन सुनेगा? मन्त्री महोदय मौलाना का यह तर्क सुनकर चुप हो गए। "लेकिन स्वयं मौलाना इस बात का जवाब नहीं दे सके कि आजादी के नाम पर सिंध और बंगला देश में क्या है? क्या भूखमरी और गरीबी में काट रहे जीवन को वे आजादी का जीवन कहेंगे। केन्द्र राज्यों के अधिकारों में हस्तक्षेप नहीं करता। तानाशाही में इन अधिकारों पर अति-क्रमण को रोकने वाली कोई संवैधानिक ताकत नहीं होती।

गुलाम मुस्तफा शाह का सम्बन्ध आज भले ही पीपुल्स पार्टी से हो, मगर शुरू से वे जिए सिंध आन्दोलन के प्रणेता श्री जी०एम० सैयद के अनुयाई रहे हैं। श्री सैय्यद की पुत्री हमीदा खोड़ू ने तो अपने इन विचारों को पाकिस्तान की संसद में रखा है। पीपुल्स पार्टी चूंकि जिए सिंध की समर्थक हैं और सिंध में उनकी अपनी सरकार होने से वे मुहाजिर पंजाबी और पठानों को बाहर निकाल देना चाहते हैं। इसलिए प्रतीत होता है कि इस नफरत को विरोधी दल भड़का रहा है। (पांचजन्य १२-८-९० से साभार)

अहा ! यह कैसा स्वराज्य है ? सभी ऋषि भक्त चिन्तित हैं !

वेदोपदेशक—ब्रह्मप्रकाश शास्त्री विद्यावाचस्पति शास्त्री सदन-११/१२४ पश्चिम आजाद नगर दिल्ली-११००५१

स्वराज्य प्राप्ति से पूर्व सभी देशवासियो के हृदयो मे उत्साह और उमग की लहरे हिलोरें ले रही थीं, सभी की यह मनोभावना थी कि दोहरी गुलामी ने हमारे राष्ट्र को गहरे गर्त में गिरा दिया है, जिससे कि हमारी सभ्यता व सस्कृति चौपट हो चली है, स्वराज्य मिलेगा तो दयानन्द का वैदिक राष्ट्र तथा गाधीजी का रामराज्य स्थापित होने मे देर नही लगेगी, ऋषि दयानन्द के अनुयायी तो स्वराज्य प्राप्ति के लिए अपने सर्वस्व की बाजी ही लगा चुके थे, क्योकि उन्हे आशा थी कि स्वराज्य होने पर ही 'कृण्वन्तो-विश्वमार्यम्" का वेद का सन्देश हम शीघ्र ही चरितार्थ कर सकेंगे।

१५ अगस्त सन् ४७ का दिन एक ऐतिहासिक दिन था, और भारत उमगो से भरा नाच रहा था :—

स्वतन्त्रता की रात है, स्वतन्त्र यह प्रभात है।
मा भारती की आरती को सब ही करते बात हैं ॥

उदीयमान युवक पडित नेहरू को प्रधानमन्त्री बनाया गया, और राष्ट्र को आशा हुई कि अवश्यमेव पडित नेहरू के नेतृत्व मे राष्ट्र उन्नति के शिखर पर पहुचेगा, कुछ ही समय बाद अन्न की समस्या उत्पन्न हो गई, तब हमारे प्रधानमन्त्री जी ने राष्ट्र को इन शब्दो में उद्बोधन किया—हे मेरे किसान भाइयो ! अन्न की समस्या हल करने का एकमात्र उपाय मैं तुम्हे बतलाता हू, तुम लोग मुर्गिया और मछलिया पालना आरम्भ कर दो, सरकार तुम्हे भरपूर अनुदान देगी।

पाठको ! यह था स्वराज्य का प्रथम उपहार, पडित जी की पडिताई रगलाई और पूरा राष्ट्र अधिकाश रूप मे मुर्गिया और मछलिया खाने वाला बन चुका है, और अण्डो को तो फलो मे ही शुमार किया जाने लगा है, महर्षि दयानन्द का शिष्य हू और प्रजातन्त्र भी है, इसलिए स्पष्ट बात करने मैं भय नही लग रहा है।

आज शासन करने वालो जवाब दो ? क्या तुम राष्ट्र पिता गाधी जी की सत्ता का पूर्ण रूप से हनन नही कर रहे हो ? याद रक्खो ! मासाहार से यह आतकवाद कभी भी समाप्त न होकर दिन प्रति दिन बढता ही जावेगा, और एक दिन तामसी वृत्तियों के कारण यह ससार पूर्ण विनाश को प्राप्त होगा।

प्यारे पाठको ! दूसरा पारितोषिक स्वराज्य का तब मिला, जब गोरक्षा आन्दोलन चल रहा था, उस समय पडित जी ने कहा था कि गो मास और गो चर्म के निर्यात से हमे पौन्ड और डालर मिलते हैं, जिनसे हम भारत के औद्योगीकरण के लिए मशीने और पुर्जे खरीदते हैं।

अब ! शासन चलाने वालो जवाब क्यो नहीं देते हो ? क्या गाधी जी गोहत्या के विरोधी नहीं थे। क्या लोकमान्य बालगगाधर तिलक ने यह नहीं कहा था कि स्वराज्य मिलते ही कलम की एक नोक से गोहत्या बन्द कर दी जावेगी, बेचारे विनोबा भावे भी इसी घटना को लेकर स्वर्ग सिधार गये, परन्तु उनकी बात पर ध्यान नही दिया गया।

पाठको ! आपको यह भी स्मरण होगा कि जब कांग्रेस के जयपुर अधिवेशन मे राजर्षि पुरुषोत्तमदास जी टण्डन ने हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने का प्रस्ताव रक्खा, तब नेहरू जी ने हिन्दी के बजाय हिन्दुस्तानी का पक्ष लिया था, और एक के विरोध मे कांग्रेस के सपूर्ण सदन ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का प्रस्ताव स्वीकार किया था।

नेहरू जी की ढिलमिल नीति के ही कारण दक्षिण वाले भडकते रहे हैं और आज तक भी हिन्दी राष्ट्रभाषा का रूप नहीं ले पाई है, और कभी भी हिन्दी व प्रान्तीय भाषाये न पनप सके इस नीति का आरम्भ से ही प्रयास किया जा रहा है। प्रत्यक्ष उदाहरण आपके सामने है पब्लिक स्कूलो की भयकर बाढ। मैंने छोटे-छोटे गावो तक मैं देखा है कि छोटे छोटे बच्चे बच्चियां टाई लगाने लगे हैं।

माता-पिता, चाचा-चाची, ताऊ-ताई आदि आदि शब्दो के स्थान पर डैडी-मम्मी, अकल-आन्टी आदि शब्दो का प्रयोग होने लगा है माता जी, पिता जी कहने वाले परिवार तो अब ढूढने पर ही बहुत कम मिलते हैं।

अब सब भाषाओं की जननी पर भी प्रहार

ससार के सभी विद्वानो तथा वैज्ञानिको ने स्वीकार किया है कि सस्कृत ही पूर्ण वैज्ञानिक और सबसे ललित भाषा है, सभी भाषाओ तथा विशेष कर के भारतीय भाषाओ की तो जननी ही सस्कृत है। इसमे भी किसी को आपत्ति नही होनी चाहिये कि सस्कृत ही सस्कृति की आत्मा है सस्कृत नही रहेगी तो बाल्मीकि और व्यास कहा रहेंगे। भवभूति, दण्डी कालिदास आदि सभी मिट जायेंगे, महर्षि पाणिनि और गौतम, कणाद पतञ्जलि भी इतिहास से मिट जायेंगे।

अब कौन ! यहा सर विलियम जोन्स की भाति कठिनाइयो को सहकर भी सस्कृत सीखने आयेगा, उस समय यहा पर गोरे अग्रेजो का राज्य था, अब तो काले यहीं जन्मे वाले हिन्दुस्तानी ही सस्कृत को मिटाने पर तुले हुए हैं। इसीलिए तो नई शिक्षा प्रणाली के द्वारा सस्कृत को मिटाकर पुन पराधीन को निमन्त्रित करने का अभियान छेडा है।

न रहेगा बास और न बजेगी बासुरी।

परन्तु ऐसा घृणित कार्य आर्य समाज के रहते हुए नही होने दिया जायेगा, हम सब महर्षि के ऋणी है जिसने अथक पुरुषार्थ से वेदोद्धार किया था।

अब रही नशाबन्दी की बात, जिसे राष्ट्रपिता चाहते थे, सपूर्ण देश मे शराब की दुकानो पर धरने दिये जाते थे, और देश को बिगाडने का सारा दोष अग्रेजो के मत्थे मढा जाता था, आज सारे राष्ट्र को शराबी बनाने का पूरा यत्न किया जा रहा है, इस बुरी लत के कारण गरीब आदमी तबाह हो रहा है और हमारी सरकार इसे अपनी आय का सर्वोत्तम साधन मान लिया है कालिजो के युवक और युवतिया हशीश और स्मैक आदि का सेवन करके अपने जीवन को बर्बादी की ओर ले जा रहे हैं। आकाशवाणी और दूरदर्शन ने मानो यह ठेका ले लिया हो, कि हम किसी भी कीमत पर राष्ट्र का चरित्र निर्माण नही होने देंगे।

इन्हीं माध्यमो के कारण ही जीवन निर्माण की प्रथम सीढी ब्रह्मचर्य आश्रम समाप्त प्राय सा हो चला है यही कारण है कि स्वामी श्रद्धानन्द जी तथा स्वामी दर्शनानन्द जी का स्वप्न पूर्ण करने में आर्य समाज को कठिनाई का सामना करना पड रहा है मुझे तो इन राष्ट्र के कर्णधारो की समझ और बूझ पर आश्चर्य ही होता है कि इन्होने तो बापू तथा नेहरू आदि की समाधियो पर माल्यार्पण करना ही एक मात्र उन्नति का साधन समझ लिया है केवल नाचने और गाने को ही ये लोग भारतीय सस्कृति समझ बैठे है, इन्हे विस्मरण हो चला है कि भारतीय सस्कृति का अध्ययन करने के लिए सारे ससार के लोग यहा आया करते थे और यहा के ब्राह्मणो तथा ऋषि-मुनियो के चरणो मे बैठकर अपने जीवन को कृत कृत्य करते थे, आज के स्वतन्त्र भारत की दुर्दशा का वर्णन कहा तक करू—भारत माता रुदन कर रही है —

अगर एक दो जख्म होते बदन पर।
तो अच्छा उन्हे करती मरहम लगा कर ॥
मगर जबकि जख्मो से फूला बदन हो।
तो कहिए न क्या कर तलाशे कफन हो ॥

काशी में शास्त्रार्थ मन्दिर के निर्माण का सुझाव

डा० वेद प्रकाश आर्य

हिंसा से दूर रहकर, पारस्परिक विचार विमर्श के द्वारा बौद्धिक धरातल पर सत्य की साधना के लिए 'शास्त्रार्थ-प्रणाली' हमारे देश मे युग-युग से चली आयी है। मननशीलता पर आधारित होने के कारण शास्त्रार्थ मनुष्य के नाम को सार्थकता प्रदान करते है। वैदिक कालीन ऋषियो के अनन्तर महावीर स्वामी, गौतमबुद्ध, कुमारिलभट्ट, मण्डन मिश्र और शकराचार्य अपने शास्त्रार्थो के लिए विख्यात रहे हैं। उन्नीसवी शताब्दी मे शास्त्रार्थ प्रणाली को अपनाकर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने स्वदेशवासियो मे नवजागरण का मन्त्र फूका। महर्षि के शास्त्रार्थों का उद्देश्य सत्य की साधना का मार्ग प्रशस्त करते हुए अखिल मानवता का कल्याण ही था। विद्वानो मे मतैक्य स्थापित करने का इससे कारगर उपाय हो ही क्या सकता था? महर्षि ने लिखा है—

"मनुष्य जन्म का होना सत्यासत्य का निर्णय करने कराने के लिए है, व्यर्थ के वाद-विवाद विरोध के लिए नही।'

महर्षि दयानन्द का "काशी शास्त्रार्थ' अनेक कारणो से विश्वविश्रुत रहा है। उन सन्यासी की अटूट सत्यनिष्ठा का यह ज्वलन्त प्रमाण उपस्थित करता है। आर्य समाज के ऋषि भक्त कार्यकर्ता प्रारम्भ से ही इस शास्त्रार्थ की स्मृति को बनाये रखने के लिए प्रयासरत रहे हे। "काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समारोह' का आयोजन कर सारी दुनिया का ध्यान इस ओर आकर्षित किया जा चुका है। "काशी शास्त्रार्थ स्थल" को एक रमणीक ज्ञानवर्द्धक प्रेरणादायी स्मारक के रूप मे परिणत करने के लिए इधर कई वर्षों से "काशी शास्त्रार्थ स्मृतिसभा" कार्यरत है। इस सभा के समर्पित मन्त्री डा० आनन्द प्रकाश का ध्यानाकर्षक लेख दिनाक ३० जून, १६६० के सार्वदेशिक पत्र मे प्रकाशित हुआ है। यह सन्तोष का विषय है कि 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री प० सच्चिदानन्द शास्त्री का भी उक्त सभा को सहज आशीर्वाद प्राप्त है। अब आर्य जगत का यह पुनीत कर्तव्य हो जाता है कि वह अपने सर्वतोभावेन सहयोग से 'शास्त्रार्थ स्मृतिसभा" की योजनाओ को मूर्तरूप प्रदान करे। सभा की योजनाओ का पूर्ण समर्थन करता हुआ मै कतिपय सुझाव प्रेषित कर रहा हू।

१—स्मारक स्थल पर एक भव्य "काशी शास्त्रार्थ मन्दिर' का निर्माण कराया जाय।

२—इस मन्दिर की सगमर्मर की भित्तियो पर काशी शास्त्रार्थ का विवरण (महर्षि के प्रामाणिक जीवन चरित्रा के आधार पर) उत्कीर्ण कराया जाय।

३—काशी मे महर्षि के प्रथम शिष्य एव चरणानुरागी श्री ज्योतिस्वरूप, महात्मा जगहरदास तथा शास्त्रार्थ मे निष्पक्ष और दृढ भूमिका का निर्वाह करने वाले शहर कोतवाल श्री रघुनाथ सहाय के चित्र भी परिचय सहित अकित कराये जाय।

४—तत्कालीन काशी नरेश महाराजा ईश्वरी नारायणसिंह एव महर्षि के प्रतिपक्षी विद्वानो विशुद्धानन्द शास्त्री तथा बालशास्त्री का भी सचित्र परिचय उत्कीर्ण होना चाहिए। प्रतिपक्षी को भी आदर देना महर्षि की शैली का अग था और यही भारतीय आर्य परम्परा रही है।

५—काशी मे महर्षि का सात बार पदार्पण हुआ। मन्दिर के सात द्वारो पर प्रत्येक बार के आगमन तथा उसके प्रभाव का वर्णन की प्रमाणित ग्रन्थो के विवरणो के आधार पर उत्कीर्ण कराया जाय। महर्षि के आगमन से काशी मे तथा पार्श्ववर्ती मीरजापुर के ग्रामीण क्षेत्रो मे सुधार की जो लहर दौड पडी थी, उसका भी समावेश किया जाना चाहिए।

६—स्मृति सभा—वैदिक सिद्धान्तो की एक शोधपरक मासिक वैचारिकी (पत्रिका) का प्रकाशन भी आरम्भ करे—जो विषय चयन, वस्तु-गाम्भीर्य एव आकर्षक प्रस्तुति के कारण सर्व जनग्राह्य हो सके

पुस्तक समीक्षा

वैदिक धर्म एवं संस्कृति

लेखक—डा० धर्मचन्द्र विद्यालकार।
मूल्य १०) रुपये
प्रवक्ता सनातन धर्म कालिज पलवल हरियाणा

वैदिक धर्म की मान्यताओ एव सस्कृति के मूल तत्वो पर बडा ही गम्भीर विवेचन समय २ पर विद्वानो द्वारा लिखित तथा मौखिक दोनो रूपो मे कार्य होता रहा है। परन्तु

"वैदिक धर्म एव सस्कृति' नामक लघु पुस्तिका मे लेखक ने यथा गुणा नाम के अनुरूप ही शैली व विषयो का चयन किया है। साथ ही सप्रमाण एव युक्ति सगत-सटीक विवेचन किया है।

दुनिया को छोड दे अकेले भारतवर्ष मे ही मानव ने आडम्बरो को ही धर्म समझ लिया है। जिसका विशद वर्णन न करके सक्षेप मे स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

तथ्य यह है कि "भारतीय चिन्तन धारा का मूलश्रोत" वेद है। अत "श्रुति प्रामाण्यतो धर्म के अनुसार वेद मार्ग से चल कर ही धर्म एव सस्कृति के मूल तत्वो को समझकर ही मानव समस्याओ का समुचित विश्लेषण कर सकता है। विषय वस्तु पठनीय एव मननीय है।

१—धर्म क्या है? २—भारतीय सस्कृति का स्वरूप है समाजोन्मुख परिवार, ४—वैदिक अकाल वर्ण व्यवस्था, ५—व्यक्ति और समाज, तथा उभरती हुई रेखा विद्यार्थी जीवन पर अच्छा दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है।

"सती प्रथा' जैसे निन्दनीय कृत्य पर समाज को आडे हाथो लिया है दिशा बोध देते हुए जीवन को सन्तुलित कैसे बनाया जाय। लेखक विषय वस्तु को किस सीमा तक देने मे सफल रहा है इसका आधार आप स्वय होगे। क्यो कि बिना अध्ययन किये, किसी प्रकार का निर्णय नही दिया जा सकता है। लेखक ने अपनी प्रतिभा का परिचय मात्र दिया है। इसके अवलोकन के उपरान्त ही निर्णय आपके हाथो मे है।

पुस्तिका "गागर मे सागर भरा गया है। जिससे मानव समाज अवश्य ही लाभान्वित होगा। श्री धर्मचन्द्र जी आपने सामयिक पुस्तक मे छोड की है। ऐसा साहित्य समाज मे गुणकारी ही होगा।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
—सम्पादक

रक्षा-बन्धन

येन बद्धो बलिराजा, दानवेन्द्रो महाबल ।
तेन त्वमपी बधनामि, रक्षे मा चल मा चल ॥

अर्थात् रक्षा के जिन सूत्रो मे शक्तिशाली बलि राजा को बाधा गया था उन्हीं धागों से मैं तुम्हें बाधता हू । हे रक्षा के सूत्रो, तुम भी विचलित न होना । रक्षा के सूत्र सचमुच बड़े बलशाली होते हैं जो बाधने वाले को प्रेम के पवित्र बधन मे बाधते हैं ।

रक्षा बन्धन का त्योहार प्रतिवर्ष श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है । कहा जाता है कि इसी रक्षा-सूत्र के बल पर इन्द्र ने युद्ध में राक्षसो को पराजित किया था । उसी दिन से यह रक्षा-बन्धन का त्योहार मनाया जाता है । यह भी कहा जाता है कि भारत की नारी को अपनी रक्षा की आवश्यकता पड़ी, तब रक्षा-बन्धन की नई प्रथा ने नए रूप मे जन्म लिया । तो बहनें अपने भाइयो की कलाई पर राखी बाधने लगी और उनसे अपनी रक्षा का प्रण लेने लगी । मुसलमानो के शासनकाल में सुन्दर कन्यायें अपनी रक्षा के लिए बलवान पुरुषो को राखी बाध कर अपना भाई बना लेती थी ।

इस पर्व के साथ मेवाड की रानी कर्मवती की कथा भी जुडी हुई है । जब बहादुरशाह जफर ने मेवाड पर आक्रमण किया तब चित्तौड की महारानी कर्मवती ने देश की रक्षा के लिए हुमायू के पास राखी भेजी थी । राखी पाते ही हुमायु ने अपने पुराने वैर भाव को भुला दिया और चित्तौड पहुचकर महारानी कर्मवती की सहायता की ।

राखी के धागो मे अद्भुत शक्ति है । इसी विषय मे यह प्रसिद्ध है कि सिकन्दर और पुरु का युद्ध आरम्भ होने से पूर्व सिकन्दर की प्रेमिका ने पुरु के हाथ में राखी बाधी थी और वचन लिया था कि उनके हाथो से सिकन्दर की मृत्यु नही होगी ।

प्राचीन काल मे गुरुकुलो में वर्षा की समाप्ति पर इसी दिन अध्ययन का नववर्ष शुरू होता था । समय के अनुसार नई प्रथा ने नए रूप में जन्म लिया बहनें अपने भाइयो को तिलक करती है तथा उनके हाथ पर राखी बाधती है और उनकी दीर्घायु के लिए कामना करती है । भाई अपनी बहन की रक्षा का वचन देता है भाई बहन को उपहार के रूप में रुपए और कपडे देता है । रक्षा बन्धन का त्योहार भाई-बहिना के पवित्र सम्बन्धो को मधुर और सरस बना देता है । बहनो को प्रतिवर्ष इस दिन का बेसब्री से इन्तजार रहता है ।

बहन तुम्हारी इस राखी का मूल्य भला क्या दे पाऊगा ।
बस इतना तेरे इगित पर, बहन सदा बलि-२ जाऊगा ॥

—पैराडाईज पब्लिक स्कूल,
सी-४७ किरण गार्डन उत्तमनगर नई दिल्ली ५९

एक आर्य युवक के हृदय की व्यथा

(कश्मीर के सम्बन्ध में)

पत्र पढा जब आपका, हर्षित हुआ अपार ।
समझ गया हू आपका, मुझ पर बड़ा दुलार ॥
मुझ पर बडा दुलार, दुखी हैं सब नर-नारी ।
मनमानी कर रहे, यहा पर अत्याचारी ॥
इन दुष्टो की चाल, फेल करके दम लेंगे ।
दुश्मन की हम दाल, नही अब गलने देंगे ॥
कटक पथ मे कितने भी हो, इसकी तो परवाह नही है ।
मुझको जो करले आकर्षित ऐसी कोई चाह नही है ॥
आह सुनी है जबसे मा की, तबसे यह व्रत धारा है ।
मा का कष्ट मिटायेगे हम ये सकल्प हमारा है ॥
स्वर्णिम अवसर हमे मिला है भारत का उद्धार करेंगे ।
विघ्न और बाधाओ से हम हे चाचा जी नही डरेंगे ॥

—सत्यप्रकाश आर्य जम्मू-कश्मीर

आर्य गुरुकुल ऐरवा कटरा इटावा (उ० प्र०)

दान हेतु अपील

आर्य गुरुकुल ऐरवा कटरा ऐसे पिछड़े क्षेत्र मे आर्य संस्कृति एव वैदिक धर्म का प्रचार व प्रसार कर रहा है। जहा अधिकांशत. मानव समाज मतावलम्बियो द्वारा विभ्रमित किया जा रहा है। गुरुकुल अपने प्रचार माध्यमो से क्षेत्रीय जनता को भ्रमित होने से बचा रहा है।

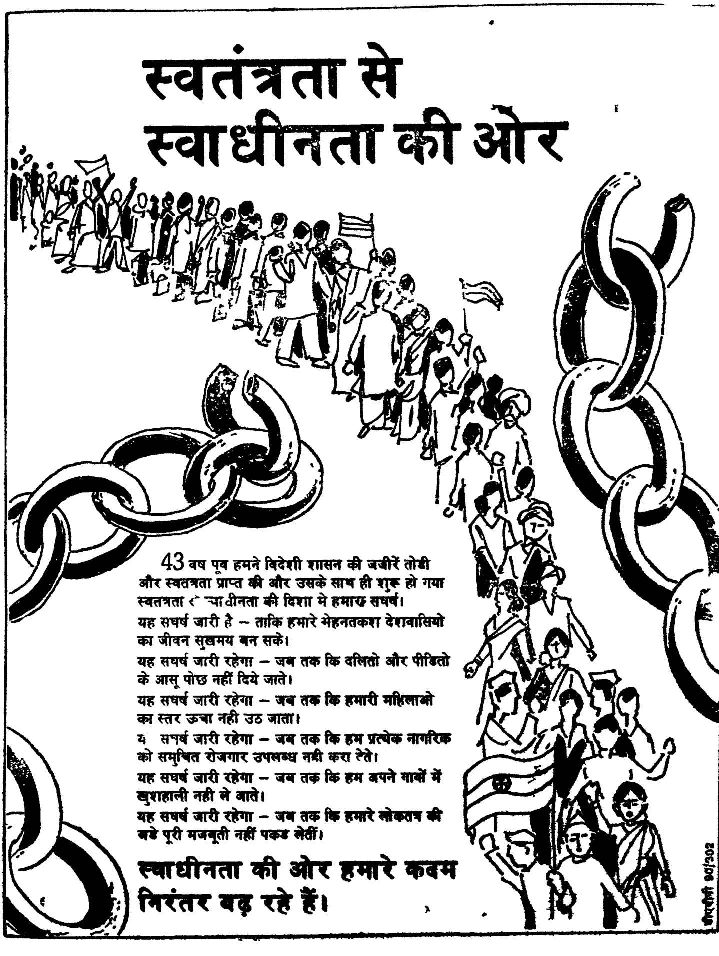
इस गुरुकुल के पास साधनो का अभाव है। फिर भी येन केन प्रकार से यह अपने कार्य को सुचारु रूप से चला रहा है। गुरुकुल ऐरवा कटरा २५ २६ २७ २८ अक्टूबर ९० मे अपने वार्षिकोत्सव पर समस्त मानवता के पुजारियो से आह्वान करता है कि वे आकर गुरुकुलीय व्यवस्था को देख हमारा मार्ग दर्शन कर सहयोग प्रदान करे।

वार्षिकोत्सव

—आर्य समाज जरोली जनपद बदायू का ११ वां वार्षिकोत्सव अषाढ़ कृष्ण पक्ष पचमी से सप्तमी तक सम्वत् २०४७ (तदनुसार दिनाक १२ जून से १५ जून) को हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इसमे श्रीमती पण्डिता मनोरमा शर्मा भजनोपदेशिका का महिला समाज पर विशेष प्रभाव रहा।

—हरिशंकर आर्य, मन्त्री

आर्य समाज जरोली जनपद बदायू (उ०प्र०)



रजि० न० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२६-८-१९९०)
R N 626/57 Licensed to post without Prepayment Licence No U 33 Post in D.P.S.O.

आर्य कन्या सदन प्रथम पुरस्कार से सम्मानित

द न प्रशासन के समाज क याण विभाग द्वारा बाल कल्याण व ... त्तोत्तम काय ... दिल्ली प्रदेश मे कायरत तमाम सामाजिक संस्थाओ मे से प्रथम ... राजीय पुरस्कार से सम्मानित ... हेतु इस वर्ष १९८९ ... कन्या सदन पटौदी हाऊस ... राज नई दिल्ली ... ने श्रेष्ठ स्थान प्राप्त किया है और ... को ... नाम चत्रालय मे दिल्ली प्रशासन के मुख्य सचिव श्री ... ने यह प्रथम पुरस्कार स्वरूप ... रुपये का चैक तथा प्रशस्ति पत्र एक विशेष समारोह मे प्रदान किया है।

इस विशेष समारोह मे आर्य अनाथालय के प्रधान लाला इन्द्र नारायण जी, आर्य बाल ... के प्रधान श्री रामकुमार गुप्ता जी, आर्य कन्या सदन की प्रधान श्रीमती शारदा नारंग जी, छात्रावास चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर की ओर से श्रीमती चित्रा चौधरी जी, श्रीमती ... चौधरी जी, श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री जी, ... समिति के अन्य अनेक सदस्यो, कर्मचारियों सहित दिल्ली के अनेक सामाजिक एव धार्मिक कार्यकर्ता नेता एव गणमान्य नागरिकों ने हिस्सा लिया।

संस्थाओं के अधिष्ठाता श्री हमीरसिंह रघुवंशी ने एक प्रेस विज्ञप्ति में बताया कि उपरोक्त व्यक्तियों के ... के मुख्य अधिष्ठाता श्री वीरेन्द्र प्रताप चौधरी जी द्वारा ... पर हमे दिये गये निर्देश उनकी लगन, मेहनत व कर्तव्यपरायणता के परिणाम स्वरूप ही हम दिल्ली की समस्त सामाजिक संस्थाओं मे अपनी संस्था को राजकीय प्रथम पुरस्कार प्राप्त कराने मे सफल हो सके हैं।

श्री रघुवंशी जी ने बताया कि इसी तारतम्य में हमें आर्य बाल गृह को। भी वर्ष १९८८-८९ हेतु भी इसी पुरस्कार का सम्मान प्राप्त हो चुका है ... इससे पूर्व भी छात्रावास चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर भी ... सम्मानित हो चुका है।

... की द्वारा सन् १९१८ में स्थापित दिल्ली ... श्री स्व० वेदराज जी चौधरी द्वारा प्रगति उत्थान ... उनके शुभ कार्यों के फलस्वरूप ही आर्य अनाथालय ... शाखाओं मे वर्तमान में ७५० से अधिक अनाथ, निराश्रित बालक-बालिकाओं का निःशुल्क पालन पोषण व शिक्षण द्वारा भारत के युग का एक आदर्श नागरिक बनाया जा रहा है। जो भी छात्र-छात्रा जितना पढ़ना चाहे संस्था पढ़ाती है। बच्चों को दिल्ली की तमाम औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थाओं में उनको आई० टी० आई० करवाकर आत्मनिर्भर बनाया जाता है और विवाह योग्य वर-वर की तलाश कर संस्था द्वारा उनका विवाह कर दिया जाता है।

श्री रघुवंशी जी ने बताया कि इन संस्थाओं में शिक्षा प्राप्त करके गये अनेक छात्र देश के विभिन्न नगरों में शासन के उच्च पदों पर कार्यरत् देश, समाज सेवा मे रत् हैं तथा कुछ छात्र विदेशों में भी कार्यरत् रहकर हमारे देश भारत को गौरवान्वित कर रहे हैं।

आर्य समाज रामकृष्णपुरम दिल्ली का चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज रामकृष्णपुरम (सैक्टर ९) नई दिल्ली २२ की अन्तरंग सभा का वार्षिक चुनाव गत २९ जुलाई १९९० को सम्पन्न हुआ। आगामी वर्ष के लिए निम्नलिखित पदाधिकारी सर्वसम्मति से मनोनीत किये गये।

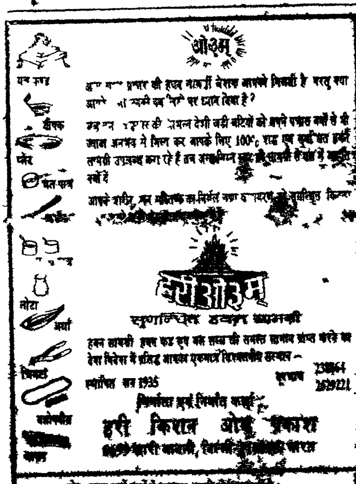
१—श्री हरबंसलाल कोहली—प्रधान
२—श्री सुरेशचन्द्र पाठक—वरिष्ठ उप-प्रधान
३—श्रीमती निर्मला सेठी—उप प्रधान
४—श्री फूलसिंह आर्य—मन्त्री
५—हरबंसलाल कपूर—कोषाध्यक्ष

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

द्वारा प्रकाशित साहित्य

आचार्य ... शास्त्री का धर्म परिवर्तन (लेखक—अमर स्वामी सरस्वती)	३)५०
महर्षि ... व्यवहार	९)५०
चौधरी का ... (हिन्दी)	१२)५०
चौधरी का ...	१२)००
... मञ्जरी	१२)००
दयानन्द और विवेकानन्द	१२)००
[illegible]	[illegible]
... (ले०—...)	[illegible]
...	१२)००
वैदिक ...	११)००
... (ले०—...)	३)००
...	३)००
...	३)३०
...	०)७५
... के नाम पर राजनैतिक ...	३)००
... की ...	०)५०
आर्य समाज	०)५०

प्राप्ति स्थान—
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-१



सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली मुद्रित तथा ... सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१ से प्रकाशित

919 कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख्य पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१ | दयानन्दाब्द १६६ | दूरभाष : ३२७४७७१ | वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष २६ अंक ३४] | भाद्रपद शु० १२ सं० २०४७ २ सितम्बर १९९०

वेद सुधा

मसद् भूम्याः समभवत
तद्यामेति महद् व्यचः ।
तद् वै ततो विधूपायत्
प्रत्यक् कर्त्तारं मृच्छतु ।।

अथर्व० ४ ।१९ ।६ ।।

अर्थ—पाप भूमि से पैदा होता है,(और) वह पाप विस्तृत रूप में आकाश तक च जाता है। वही (पाप) निश्चय ही वहां से (पापी को) सन्ताप देता हुआ वापस लौटकर (उसी पाप) करने वाले पर आ पड़ता है।

व्याख्या—कई बार अपने को आस्तिक समझने वाले लोग घबरा कर कहने लग जाया करते हैं कि ईश्वर पापी को सजा नहीं दे रहा। अनेकों अत्याचारियों और अन्यायियों को फलता-फूलता देखते रहने से न्यायकारी और दयालु भगवान् की न्यायप्रियता पर हम शक करने लग जाया करते हैं। पाप की शक्ति चारों ओर फैल जाती है। बड़े-बड़े महात्माओं का तेज भी उसके अन्धकार से ढक जाया करता है। निर्बल, असहाय और साधारण लोग पशु शक्ति के सामने अपने सिर झुका देते हैं। धर्म की ग्लानि और अधर्म का उत्थान होने से सब तरफ निराशा फैल जाया करती है। बुराई या धोखे का छोटा सा अंकुर बड़ी तेजी और विस्तार से फैल जाता है। बुराई में जल्दबाजी और तूफान हुआ करता है। भलाई में न तेजी होती है, न अधीरता और न अशान्ति। पाप जितनी जल्दी फलता-फूलता है, उतनी भलाई नहीं। उसका अंकुर भूमि से पैदा होकर ऊंचा आकाश तक बढ़ जाता है परन्तु अन्त में सिकुड़ कर बुराई का वृक्ष नष्ट हो जाता है। पाप-पापी से चलकर सब जगह घूमघाम कर वापस पाप करने वाले के पास लौट आता है। जो बोया था वही काटना पड़ता है। भगवान् के न्याय में देर हो सकती है अन्धेर नहीं। दूसरे की जड़ काटने वाले की अपनी जड़ भी कटेगी। पापी को कब दण्ड मिलेगा, यह ईश्वर ही जानता है। —प्रोफेसर सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज
आर्यसमाज लन्दन

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

छात्रों के आक्रोश के सामने सरकार झुकी

पुलिस बर्बरता, अश्रु गैस और लाठीचार्ज जैसे हथकंडे नाकाम

नई दिल्ली २६ अगस्त। मण्डल आयोग की सिफारिशों के बाद आरक्षण विरोध का जो सिलसिला शुरू हुआ उसने सरकार को झुकने पर मजबूर कर दिया।

यह बात उस समय स्पष्ट हो गयी जब आज प्रधानमन्त्री विश्वनाथ प्रतापसिंह की अध्यक्षता में मन्त्रिमण्डल की राजनैतिक मामलों की समिति ने यह निर्णय लिया कि सरकारी और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में आर्थिक रूप से पिछड़े लोगों के लिये पांच से दस प्रतिशत स्थान आरक्षित किये जायेंगे। इस फसले पर अन्तिम निर्णय होना अभी बाकी है।

सरकारी प्रवक्ता के अनुसार अन्तिम फैसला सभी राजनैतिक दलों के साथ विचार-विमर्श के बाद लिया जावेगा तथा आरक्षण का आधार पूर्णतः आर्थिक होगा।

सूत्रों का कहना है कि आज इस बैठक में आरक्षण के मुद्दे को लेकर काफी नोंक-झोंक हुई।

बैठक में समिति के स्थाई सदस्य इन्द्रकुमार गुजराल, अजीतसिंह तथा शरद यादव के अलावा आमन्त्रित सदस्यों के रूप में रामविलास पासवान और गृह राज्यमन्त्री सुबोधकान्त सहाय भी मौजूद थे।

ईराक की घेराबन्दी

अमेरिकी कमांडर पूरी ताकत से धावे के पक्ष में

न्यूयार्क २६ अगस्त। सऊदी अरब में उच्च अमेरिकी सैनिक कमांडरों का विचार है कि अगर इराक सऊदी अरब के क्षेत्र में अतिक्रमण करे तो उस पर पूरी ताकत से धावा बोल दिया जाना चाहिए।

'न्यूयार्क टाइम्स' के अनुसार ये विचार अमेरिकी कमांडरों के आक्रामक रुख को प्रकट करते हैं। अमेरिकी सेना इराकी वायु सीमा पर कब्जा करने की इच्छुक है। इराकी प्रक्षेपास्त्रों के चलने से पहले ही उस पर प्रक्षेपास्त्र छोड़कर सद्दाम हुसैन के कमांड नेटवर्क को तहस-नहस करने का भी उनका इरादा है।

टाइम्स ने अज्ञात सैनिक सूत्रों के हवाले से बताया है कि इराक द्वारा अमेरिकियों एवं अन्य विदेशियों को बन्धक बनाने और उन्हें सामरिक महत्व के स्थानों पर सेना तैनात करने की घोषणा के कारण सीधे हमला करके इराकी सेना का सफाया करने का अमेरिकी इरादा कठिन प्रतीत होता है। लेकिन राष्ट्रपति बुश को किसी भी सम्भावित हमले की स्थिति में कुछ 'बंधकों' से हाथ धोने के लिए तैयार रहना ही होगा।

टाइम्स के अनुसार : राष्ट्रपति को एक कठिन फैसला करना है और राष्ट्रीय सुरक्षा के मानिन्द वह यही कर सकते हैं कि जितने ज्यादा बन्धकों को बचा सकें, बचाएं।

अखबार ने सऊदी अरब में अमेरिकी वायुसेना के कमांडर और यहां मौजूद सभी सेनाओं के कार्यकारी प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल चार्ल्स ए हार्नर के हवाले से लिखा है कि इराकी हमले का जवाब देने के लिए वाशिंगटन अमेरिकी सेनाओं पर बहुत कम प्रतिबन्ध रखेगा, इसकी उन्हें आशा है।

उन्होंने कहा कि आमतौर पर वरिष्ठ अमेरिकी सेना अधिकारी इस बात के खिलाफ हैं कि इराक के खिलाफ उस तरह धीरे-धीरे युद्ध छेड़ा जाए। जिस तरह वियतनाम में किया गया था। वे चाहते हैं कि इराक पर पुरजोर और निर्णायक हमला किया जाए। तथा जितना जल्दी हो सके युद्ध जीता जाए।

सम्पादकीय–

देश कहां और किस ओर ?

स्वतन्त्रता की ४३ वी वर्ष गाठ पर देश के विभिन्न अचलो मे राष्ट्रीय ध्वज फहराये गये। ऐसे अवसर पर देश प्रेम की भावना पैदा करने के बजाय जाति मैं विभेद पैदा करने वाला आरक्षण तथा हजरत मुहम्मद साहब के जन्म दिन का अवकाश दिया गया। लेकिन देश-प्रेम की भावना का लेश मात्र की चर्चा तक नही।

जिन भगतसिह तथा पजाब के सैकडो बलिदानियो ने फासी का फन्दा गले लगाया, वह पजाब मातृभूमि और कर्मभूमि जल रही है। जम्मू-कश्मीर ४३ सालो के बाद भी मानसिक रूप से भारतीय राष्ट्रीयता के साथ क्यो नही जुड सका।

पूर्वाञ्चल किस तरह विध्वस के रास्ते की ओर अग्रसर है इन सबके होते हुए इनका समाधान न कर पाना फिर एक नया अध्याय खोल देना जो कि आरक्षण के नाम से जातिवाद को बढावा देकर देश को विघटन की ओर ले जाने का नया षडयन्त्र है।

भाषा और क्षेत्रवाद की समस्यायें आजादी के बाद ज्यो की त्यो बनी हुई है। सामाजिक न्याय की बात तो करते है पर इस पर समाजवाद की रेखा बन्द क्यो है, चाहिए तो यह था आरक्षण के नाम पर गरीब मानव को अर्थ के साथ जोडा जाता ऐसा न कर आर्थिक दृष्टिकोण से समाज पर दृष्टि डालकर उन्हे अलगाव की ओर धकेला जा रहा है। विकास के नाम पर शहर और गाव मे अन्तर क्यो हैं ? अमीर और अमीर हो रहा है गरीब अपनी रेखा से और नीचे जा रहा है। श्रमिक वर्ग श्रम करने के बाद भी आधापेट क्यो ? वस्त्रहीन नगा क्यो ?बीमारी के नाम पर परिवार दवाई से वञ्चित क्यो ?

जबकि चाहिये तो,वह था बुद्धिजीवी वर्ग को बढावा देकर जातिवाद को समाप्त कर योग्यता का मापदण्ड बनता। शासन अनुशासन से चलता है युवा वर्ग मैं आज जो आक्रोश जन्म ले रहा है वह सन् ४२ की क्रांति के समान ही उभार ले रहा है। समान शिक्षा के नाम पर प्रथम श्रेणी के मुकाबले तृतीय श्रेणी को आगे लाकर प्रशासन को लगडा किया जा चुका है।

धर्म के नाम पर बढती असहिष्णुता तथा साम्प्रदायिक उन्माद इस देश को प्रारम्भ से ही खाये जा रहा हैं।

राष्ट्र इन समस्याओ का समाधान चाहता है। जातिवाद, धर्मवाद की बुनियाद हिल चुकी है। परन्तु समाजवाद और लोकतन्त्र के नाम पर राज नीति के दावेदारो ने अपनी कुर्सी को सुरक्षित रखने के लिए देश मे तरह-तरह के झगडे उत्पन्न किये हैं। अभी तक समस्या का समाधान इन समस्त राजनीतिक पार्टीबाजो के पास नहीं है तब फिर इन बीमारियो के रहते देश क्या टूटने से बच सकेगा। नेता अपने ही उलझन भरे समय से निकालने हेतु अन्य चिन्ताओ के लिये समय ही नही है।

हा नित नयी समस्याओ को जन्म देकर नया सिर दर्द मोल ले रहे है। आज आरक्षण के नाम पर देश का युवा वर्ग चौराहे पर खडा है और सारी व्यवस्था को अव्यवस्था मे बदलने के षडयन्त्र रच रहा है। यदि देश के कर्णधारो ने अपने दाव पेचो से ऊपर उठकर इन प्रश्नो पर गम्भीरता पूर्वक समाधान की ओर पग नही उठाया तो राष्ट्र का भविष्य अन्धकारमय ही है।

आदर्श सामाजिक व्यवस्था

प्रतिनिधि सभाओं एवं आर्य समाजों के नाम पत्र

श्री प्रधान/मन्त्री जी

सादर नमस्ते।

आप जानते हैं कि विश्व मे कई प्रकार की सामाजिक व्यवस्थाओ का अनुभव भिन्न-भिन्न देशो मे किया है जैसे, नाजी, फासिस्ट, पूंजीवाद, साम्यवाद। परन्तु किसी एक या अन्य कारण से ये सभी व्यवस्थाए बहुत थोडे समय मे अन्त को प्राप्त हुई। इसके विपरीत वर्णाश्रम धर्म पर आधारित एक सामाजिक व्यवस्था जिसे भारतीय वर्ण-आश्रम व्यवस्था भी कहा जाता है, का वैदिक उपदेश हुआ। जिसमे कार्य दक्षता के आधार पर समाज के चार वर्णों की घोषणा हुई—ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य, शूद्र, और साथ ही यह उपदेश दिया कि समाज का प्रत्येक व्यक्ति अपने गुण, कर्म और स्वभाव के अनुसार किसी भी एक वर्ण मे दक्षता हासिल करे। इस प्रकार सभी नागरिक अपनी व्यक्तिगत तथा सामाजिक उन्नति के लिए पुरुषार्थ करें।

कुछ ऐतिहासिक कारणो से इस व्यवस्था मे शनै-शनै विकृतिया आनी प्रारम्भ हो गई। इन विकृतियो के विरोध तथा वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था से मूल रूप को उजागर करने के उद्देश्य से ही आगामी ९ सितम्बर रविवार को एक राष्ट्रीय गोष्ठी का आयोजन कान्सटीट्यूशन क्लब स्पीकर हाल, रफी मार्ग दिल्ली मे किया गया है, जिसमे मारीशस, ट्रिनीडाड के उच्चायुक्तो के अतिरिक्त कई विद्वान अपने विचारो को एक प्रस्ताव रूप मे रखेंगे। गोष्ठी का समय २ ३० बजे से साय ६ बजे तक होगा और तदोपरान्त जलपान की व्यवस्था होगी।

अत आपसे अनुरोध है कि आप स्वय या किसी सदस्य को भेजकर अपनी सभा समाज का प्रतिनिधित्व अवश्य कराए जिससे इस गोष्ठी के प्रस्तावो के कार्यान्वयन मे आप सहयोगी हो सकें। धन्यवाद

डा० धर्मपाल, प्रधान	विमल वधावन एडवोकेट	के० नरसिम्हा रेड्डी
दिल्ली, आर्य प्र० सभा,	सयोजक, कानूनी समिति	स्वतन्त्रता सेनानी
	सार्वदेशिक आ० प्र० सभा	

आरक्षण आर्थिक व सामाजिक पिछड़ेपन पर हो

महात्मा गाधी ने भारतीय-समाज को जाति-पाति व छुआछूत से युक्त बनाने का सकल्प लिया था। आजादी की लडाई के मध्य इसके लिए सशक्त जनमानस भी बनाया था। सविधान मे हरिजनो व वनजातियो के लिए विशेष प्रावधान भी कर दिए गए किन्तु पिछडी जातियों का आकलन और उनके लिए आरक्षण का प्रश्न २९ जनवरी १९५३ तक टलता रहा। फिर काकासाहेब कालेलकर की अध्यक्षता मे पिछडी जातियो का आयोग बनाकर उन्हे अध्यक्ष चुना गया। आयोग ने ३० मार्च १९५५ को जो रिपोर्ट दी वह भी महत्वपूर्ण है।

(१) आयोग ने पिछडे पन को जातिगत आधार पर निर्धारित करने का विरोध किया।

(२) आयोग ने जातिगत आधार पर सरकारी पदो के आरक्षण का भी विरोध किया।

आयोग के अध्यक्ष कालेलकर साहब ने भी जातिगत आधार पर पिछडे पन को निश्चित करने का विरोध किया।

यह रिपोर्ट ५६ ई० मे सरकार ने सदन मे रखी। पर कुछ मतभेदो के कारण सरकार ने राज्य सरकारो पर छोड दिया। पर यह सलाह भी दी नौकरियों मे आरक्षण जातिगत आधार पर न करके आर्थिक आधार पर ही किया जाना चाहिए।

इसके बाद द्वितीय आयोग श्री बी० पी० मण्डल की अध्यक्षता मे २० दिसम्बर १९७८ को बनाया। इस आयोग ने अपनी रिपोर्ट १९८१ में प्रस्तुत की यहा पर कुछ विवशताओ के कारण (कांग्रेस इ) ने मण्डल आयोग की सिफारिशो पर अमल ही नही किया।

किन्तु अब राष्ट्रीय मोर्चा सरकार ने इस पर अमल की घोषणा कर दी। परिणामत सारे देश का उच्च बौद्धिक वर्ग का विरोध खड़ा हो गया। यह सत्य है कि भारत मे भरसक प्रयत्नो के बाद भी जातीय चेतना पिछले चार दशको मे कम होने की बजाय अधिक प्रबल ही हुई है। मण्डल आयोग की सिफारिशा को क्रियान्वित करने के बाद देश मे जाति पर आधारित नए टकराव उग्ररूप मे उभरने की सम्भावना बढती ही जा रही है। अच्छा होता कि जातिगत के बजाय आर्थिक गरीबी को आधार मानकर चला जाता तो शायद इतना विरोध न होता।

उच्च तथा निम्न वर्ग तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाय तो उच्च वर्ग मे भी अनुपात गरीबी की रेखा से नीचे मिलेगा और निम्नवर्ग को देखा जाय तो उनके पास भी असीमित सम्पत्ति है सरकार को चाहिए कि भाव स्तर पर पता करे फिर आरक्षण करें। मैं समझता हू कुछ समय मे पिछडे वर्ग के लोग ही यह मांग करेंगे कि आर्थिक आधार पर आरक्षण होना चाहिए।

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की जोरदार तैयारिया

२३ दिसम्बर से २६ दिसम्बर १९९० तक

दिल्ली में आर्य जनों का ऐतिहासिक संगम

महर्षि दयानन्द गो-संवर्द्धन दुग्ध केन्द्र का उद्घाटन

फ्रैंच सत्यार्थ प्रकाश का विमोचन

समारोह के लिए विभिन्न समितियों का गठन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से जारी एक विज्ञप्ति मे सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने देश-देशान्तर के आर्य नर-नारियो से अपील करते हुए कहा कि आगामी २३ दिसम्बर १९९० से २६ दिसम्बर १९९० तक दिल्ली मे सार्वदेशिक सभा की ओर से होने वाले अतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मे अवश्य पधारे। उनका अनुमान है कि १० लाख आर्य जन उक्त महासम्मेलन में दिल्ली पधारेंगे। इस सम्मेलन को प्रभावशाली बनाने के लिए जोरदार तैयारिया प्रारम्भ हो चुकी है। इसके लिए अनेक समितियो का गठन किया गया है। विस्तृत कार्यक्रम की घोषणा शीघ्र की जायगी।

स्वामी जी महाराज ने समस्त आर्य समाजो, सस्थाओ व आर्य जनो से अपील की है कि इस महासम्मेलन की सफलता के लिए अपने परिवार के हर सदस्य की ओर से अधिक से अधिक राशि सग्रह करके सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-११०००२ के पते पर मनीआर्डर। चैक अथवा बैंक ड्राफ्ट् से भिजवाए । दानदाताओ की सूची सार्वदेशिक मे प्रकाशित की जायगी।

याद रहे यह महासम्मेलन १९ वी सदी का महानतम् सम्मेलन होगा।

डा. सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

के तत्वावधान में

आदर्श सामाजिक व्यवस्था

पर

२ सितम्बर १९९० (रविवार) को मध्याह्न २.३० बजे
विट्ठलभाई पटेल भवन, स्पीकर हाल, कान्सटीट्यूशन क्लब, रफी मार्ग, नई दिल्ली, मे एक सगोष्ठी होगी।

अध्यक्ष : **स्वामी आनन्दबोध सरस्वती**

विषय प्रवेश . **पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव**

वक्ता . **श्री लक्ष्मी मल सिघवी**
(प्रसिद्ध अधिवक्ता, सर्वोच्च न्यायालय)

श्री नूरी राजेश्वर राव
(विख्यात न्यायविद तथा स्वतन्त्रता सेनानी)

श्री आनन्द प्रिय नियूर
(उच्चायुक्त मारीशस दूतावास)

श्री डा. वाचस्पति उपाध्याय
(धर्माधिकारी सार्वदेशिक सभा)

श्री प्रेमचन्द जे० दास
(उच्चायुक्त ट्रिनीडाड दूतावास)

श्री वीरेन्द्र जी
(प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, पजाब)

श्रीमती सुखमापाल मल्होत्रा

कृपया समय से पूर्व अपना स्थान ग्रहण कर अनुगृहीत करे।

विनीत :

डा० धर्मपाल विमल वधावन एडवोकेट के०नरसिंह रेड्डी

दिल्ली की समस्त आर्य समाजों से निवेदन

मान्यवर प्रधान जी एव मन्त्री जी

सप्रेम नमस्ते।

आपको विदित हो कि सार्वदेशिक आर्य प्रनिनिधि सभा की अन्तरग सभा के निश्चयानुसार अर्न्तराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन आगामी २३ से २६ दिसम्बर १९९० तक रामलीला मैदान, दिल्ली मे मनाने का निश्चय किया गया है। तदनुसार कार्य प्रारम्भ हो इसके लिए सभा ने दिल्ली के समस्त आर्य समार्जो के प्रधान एव मन्त्री तथा विशिष्ट जनो की अत्यावश्यक बैठक आगामी २ सितम्बर १९९० को आर्य समाज दीवानहाल मे मध्यान्होत्तर तीन बजे आहूत की है।

इस बैठक मे आगामी कार्यक्रम तथा उप-समितियो का चयन किया जाना है।

आप अपनी समाज के प्रतिष्ठित सदस्यो के साथ आर्यसमाज दीवानहाल में २ सितम्बर (रविवार) को सायकाल ३ बजे पधारने की कृपा करें।

सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

गौहत्या विरोधी बिल : एक बार फिर हुआ विश्वासघात

सत्रह अगस्त को लोकसभा में गौहत्या पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए एक बिल पेश किया गया। यह बिल भारतीय जनता पार्टी के श्री गुमानमल लोढ़ा ने पेश किया था। शुक्रवार को एक शात दोपहर राष्ट्रीय मोर्चा सरकार के लिए लज्जानक दोपहर बन गई। क्योंकि दो घण्टे की बहस के बाद जब मतदान हुआ तो पहले तो इलेक्ट्रोनिक मशीनों ने प्रस्ताव के पक्ष में ३७ और विपक्ष में ३५ का निर्णय दे दिया। जब सभापति ने बोर्ड पर निर्णय देखा तो वह घबरा गए क्योंकि इसका मतलब साफ था कि सरकार हारगई और बिल पास होने से सरकार का अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया। इस पर उन्होंने सदन में मोजूद सदस्यों को पर्चियां बटवाई पर्चिया

(शेष पृष्ठ ४ पर)

गोहत्या विरोधी बिल

(पृष्ठ १ का शेष)

बटवाने के बाद उपाध्यक्ष ने अन्तिम परिणाम घोषित किए। प्रस्ताव ५० के मुकाबले ४२ मत से गिर गया और भाजपा और राष्ट्रीय मोर्चा सरकार की इज्जत बच गई।

अजीब दोहरी नीति हैं भारतीय जनता पार्टी की इस मुद्दे पर स्वयं भाजपा के ही सांसद इस बिल को लाये थे। बिल लाने से पहले श्री झूमरमल तावड़ी के नेतृत्व में गौरक्षा शिष्टमण्डल श्री एल०के० आडवाणी से मिला। श्री आडवाणी ने उन्हें आश्वासन भी दिया कि आप चिन्ता न करें हम अपने दम पर (भाजपा) बिल को निकाल लेंगे। जब प्रतिनिधि मण्डल ने आडवाणी जी से विहिप को राजी करने का अनुरोध किया तो आडवाणी जी ने यह आश्वासन दिया कि क्या आवश्यकता है हम जो हैं। सब आश्वासनों के बावजूद आडवाणी जी दूसरों को तो छोड़िए अपने ही सांसदों को वोटिंग के समय सदन में न ला सके। विडम्बना यह है कि कांग्रेस के श्री वसन्त साठे ने सदन में घोषणा की कि वह बिल का समर्थन करेंगे। वामपंथियों का विरोध से कोई अचम्भा नहीं हुआ। दु:ख तो भाजपा पर है जिन्होंने लापरवाही या जानबूझ कर न केवल अपने ही सदस्य को हरवाया। बल्कि करोड़ों हिन्दुओं की भावनाओं को ठेस पहुंचाई।

गौरक्षा के मामले में हमेशा भाजपा आरएसएस जनसंघ की नीति संदिग्ध रही है। १९६६ में जब गौरक्षा आन्दोलन हुआ तब भी आरएसएस जनसंघ ने आन्दोलन समाप्त करने में विशेष भूमिका थी। दिल्ली में साधुओं ने तो वह समां बांधा था कि पूरा देश हिल गया था। पुरी के शंकराचार्य स्वामी निरंजनदेव तीर्थ ने ८६ दिन का अनशन किया था। आन्दोलन के संचालन के लिए एक हाई पावर कमेटी बनाई गई थी जिसके अध्यक्ष जगद्गुरु शंकराचार्य पुरी के स्वामी निरंजनदेव तीर्थ थे। कोषाध्यक्ष गीता प्रेस गोरखपुर के श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार थे और महासचिव सनातन धर्म के कर्मठ नेता श्री प्रेमचन्द गुप्ता जी थे। जब शंकराचार्य जी का अनशन ८० दिन से ज्यादा चला तो सरकार डगमगाने लगी। आरएसएस के सर संचालक गुरु गोलवर जी ने एक चार्टर्ड प्लेन करवाया जिसमें श्री वसन्तराव ओक, प्रेमचन्द जी गुप्त इत्यादि पहले तो जेल से स्वामी करपात्री महाराज को लेने गए और फिर सब मिलकर पुरी के शंकराचार्य की भूख हड़ताल तुड़वाने गए उस समय गुरु गोलवरकर जी ने कहा था कि इस निर्मोही सरकार के सामने क्या हाथ पसारें, अब यह ज्यादा दिन नहीं चलने वाली है। हमारी सरकार आने वाली है। वैसे भी गौहत्या बन्द करने के लिए पूरे देश में माहौल तो बन ही गया है। स्वामी आनन्दबोध सरस्वती भी इस आंदोलन में सक्रिय थे। अगर मैं गलती नहीं करता तो स्वामी श्री गुरु जी की बातों से सहमत नहीं थे। स्वामी आनन्द बोध शंकराचार्य जी का अनशन तुड़ाने के हक में नहीं थे, पर गुरु जी के अड़ने पर अनशन टूटा। ७ नवम्बर को दिल्ली में साधुओं पर गोली चली, उसके तुरन्त बाद इन्दिराजी ने चुनावों की घोषणा कर दी।

गाय का हमारे लिए विशेष महत्व है। यह छोड़िए कि हमारे शास्त्रों में गाय को क्या दर्जा दिया गया है या भगवान श्रीकृष्ण गाय को कितना महत्व देते थे, पर इससे तो कोई भी इन्कार नहीं कर सकता कि हमारे जीवन में गाय का एक विशेष महत्व है। गाय का दूध, मक्खन छाछ गोबर यहां तक कि मरने के बाद उसकी हड्डियां भी काम आती हैं। हल जोतने के लिए गोवंश का प्रयोग सदियों से होता आया है। गौहत्या रोकना हिन्दुओं में कट्टरपन्थियों को बढ़ावा देना नहीं माना जा सकता। गाय तो हर प्राणी की मां है चाहे वह हिन्दू है, चाहे मुसलमान, चाहे ईसाई और सिख। जैसे हिन्दू सुअर को बुरा मानते हैं वैसे ही मुसलमान भाई भी गाय को पवित्र मानते हैं। यदि मांसाहारी, जो किसी भी मजहब से इन्साफ नहीं कर रहे, के लिए गौहत्या जारी रहे, देश के लिए अपमान की बात है। अफसोस भारतीय जनता पार्टी पर ज्यादा है जो एक तरफ तो गाय माता-बाप माता करते हैं दूसरी ओर समय आने पर मैदान से भाग जाते हैं। यह विश्वासघात नहीं तो और क्या है?

—अनिल नरेन्द्र

आरक्षण का आधार—आर्थिक

आज से लगभग ३० वर्ष पहले हर देशवासी का एक ही निर्णय होता था—हर प्रकार से अपने देश का हित !

यहां प्रस्तुत है पण्डित जवाहरलाल नेहरू द्वारा २७ जून १९६१ को मुख्यमन्त्रियों को भेजे गए पत्र का अवतरण ! इसमें पं० नेहरू को प्रभावित किये उच्च आदर्शों व अवसरवाद के बीच विरोधाभास के भेदों को स्पष्ट किया गया है।

अवतरण:

मैंने मुख्यमन्त्रियों को पारम्परिक रूढ़िवादिता त्यागने व क्षमता बढ़ाने की संस्तुति की थी। इसकी आवश्यकता तब पड़ी जब जाति व समूह के आधार पर विशेष रियायतें दी जाने लगीं ! मैंने हाल ही में एक बैठक बुलाई जिसमें सभी मुख्यमन्त्री उपस्थित हुए और राष्ट्रीय एकता पर विचार किया। इसके तहत यह मत व्यक्त किया गया कि आरक्षण व सहायता आर्थिक स्थितियों पर दिया जाए न कि हम किसी रूप में अनुसूचित जाति व जनजातियों की सहायता देने के बारे में निश्चित नियमों में बन्धे हैं और उन्हें सहायता की जरूरत भी है लेकिन फिर भी मैं किसी भी प्रकार के आरक्षण विशेषकर नौकरियों में के बिल्कुल पक्ष में नहीं हूं। मैं किसी भी दूसरे दर्जे या अक्षमता का सख्त विरोध करता हूं। मैं अपने देश को हर बात में प्रथम श्रेणी का देखना चाहता हूं। वह क्षण, जब हम दूसरे दर्जे की बात करते हैं हम कुछ खो चुके होते हैं।

पिछड़े वर्गों की सहायता देने का वास्तविक मार्ग उन्हें केवल अच्छी शिक्षा का अवसर दिलाना है। इसमें सबसे महत्वपूर्ण तकनीकी शिक्षा भी शामिल है। हाल ही में मैंने दो निर्णय लिये जो बहुत महत्वपूर्ण है। पहला—विश्वव्यापी फ्री प्राथमिक शिक्षा और दूसरा—मेधावी बालकों व बालिकाओं को प्रत्येक स्तर पर बड़ी मात्रा में छात्रवृत्ति। इससे न केवल साक्षर शिक्षा पर यह बात लागू होगी, बल्कि तकनीकी, विज्ञानपरक व चिकित्सकीय प्रशिक्षण में भी इसका उपयोग हो सकेगा। मैं यह सुविधा मेधावी व योग्य बालकों को ही देने पर जोर दे रहा हूं क्योंकि यही बालक बालिकाएं देश का स्तर ऊंचा उठा सकते हैं। मुझे सन्देह नहीं कि हमारे देश में हिन्दी प्रतिभाओं का विशाल आरक्षित भंडार है। परन्तु हम अगर उन्हें पर्याप्त अवसर दें।

लेकिन यदि हम जातीय व साम्प्रदायिक आधार पर आरक्षण देते हैं तो हम मेधावी व योग्य छात्रों को पीछे छोड़ जाते हैं, मात्र दूसरे दर्जे व तीसरे दर्जे की बात ही बच जाती है। मुझे दु:ख है कि साम्प्रदायिक आधार पर आरक्षण का व्यापार कितनी दूर तक फैला है।

मुझे यह जानकर हैरत होती है कि पदोन्नतियां भी जाति या सम्प्रदाय के आधार पर होती है यह मात्र भूल नहीं, बल्कि गम्भीर खतरा है। हमें पिछड़ी जातियों की हर प्रकार से सहायता करनी चाहिए, लेकिन क्षमता की कीमत पर नहीं। हम अपने सार्वजनिक क्षेत्र या किसी भी क्षेत्र का दूसरे दर्जे के लोगों के साथ कैसे निर्माण कर सकते हैं।

(जवाहरलाल नेहरू के पत्र मुख्यमन्त्रियों को (१९४७-१९६४) वोल्यूम ५, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, १९८९, पीपी ४५६-७)

"भारतीय आर्य समाज" एक मात्र भ्रान्ति

ओमप्रकाश भंवर मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

महर्षि दयानन्द ने सन् १८७५ में आर्यसमाज की स्थापना कर भारत राष्ट्र को अपनी अस्मिता की अनुभूति कराई थी। इस समाज की यही विशेषता थी कि 'इसके प्रति देश का प्रबुद्ध वर्ग आकृष्ट हुआ और आकृष्ट भी ऐसा हुआ कि इसके प्रति समर्पण की भावना से आन्दोलित होकर इसकी वेदी पर अपने प्राणों की बलि देने को कटिबद्ध रहा। इन लोगों मे स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी दर्शनानन्द, पं० लेखराम गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज, श्यामजी कृष्ण वर्मा, भाई परमानन्द इत्यादि के नाम उल्लेखनीय हैं। तब से लेकर अब तक की अनेक पीढ़ियां महर्षि के सिद्धान्तों पर मर मिटने वाली थी तथा सर्वथा निःस्वार्थ भाव से आर्यसमाज के कार्य को गति देने वाली थी।

महर्षि दयानन्द ने वेद को सर्वोपरि माना तथा अपना सारा जीवन उसे प्रतिष्ठापित करने में लगा दिया। उन्होंने वदिक साम्य-वाद का स्वरूप जन सामान्य के सामने प्रस्तुत किया जिससे पौर्व एव पाश्चात्य मनीषी तथा आलोचक चमत्कृत हो गए किन्तु इस शताब्दी के छठे दशक में एक ऐसे व्यक्ति ने आर्य समाज में प्रवेश किया कि उससे आर्यसमाज के प्रायः सभी मूर्धन्य संन्यासी एवं विद्वान प्रभावित हुये। यह व्यक्ति बड़े ही नाटकीय ढंग से आर्य समाज में प्रविष्ट हुआ। इस व्यक्ति ने ब्रह्मचर्य से संन्यास लिया, अपना प्रोफेसर पद छोड़ा और ऐसा लगा कि यह आर्य समाज में नये सिरे से क्रान्ति लायेगा। स्वयं तथा उनके सहयोगी लोगों ने भी अपना नामकरण करते हुये अपने नामों के अन्त में "वेश" शब्द लगाया तथा ये लोग जहां-जहां भी गये वहां का वातावरण एव वायुमण्डल अशान्त एवं विघटनकारी बना। अत्यल्प समय में ही ये लोग विवादास्पद हो गये तथा इनकी गतिविधि एवं कार्यविधि पर प्रश्नचिह्न लगने लगे।

शनैः शनैः ये बेनकाब होने लगे किन्तु कतिपय स्वार्थान्ध एवं महत्वकांक्षी युवक इनके चंगुल मे आ गये। जो दुष्परिणाम होना था वह सामने आया इनका जनाधार भी खिसकने लगा किन्तु जन-सामान्य को क्या पता लगता है किसने क्या मुखौटा लगा रखा है।

विश्वस्त जानकारी तो यह है कि ये तथाकथित सज्जन नक्सल-वादी, उग्रवादी तथा समाज में वर्ग विद्वेष को फैलाने वाले हैं।

आर्य समाज को "सन्ध्या हवन एण्ड कम्पनी" कहकर आर्ष परम्पराओं का उपहास करने वाले ये कैसे आर्य संन्यासी हैं तथा इन्हें आर्य समाज में प्रवेश करने की क्या आवश्यकता पड़ गई थी, यह एक यक्ष प्रश्न है। वस्तुतः ये मार्क्सवाद के प्रचारक हैं इन्होंने यह भली प्रकार समझ लिया था कि भारत में मार्क्सवाद या साम्य-की जड़ें जमाने के लिए आर्यसमाज में घुसपैठ के बिना यह कार्य सम्भव नहीं है। आर्यसमाज जैसे सशक्त मच इस देश में अन्य कोई नहीं। फलस्वरूप इस दुरभिसन्धि में वे कृतकार्य हो गए।

अभी मई १९९० में जयपुर में आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान की स्थापना की शताब्दी के समापन में आमन्त्रित होने में भी ये सफल हो गये तथा वहां "भारतीय आर्य समाज" की स्थापना का नया राग अलापा। ये वे ही अग्निवेश हैं जिन्होंने आर्य समाज की किसी भी मूर्धन्य संस्था से बिना अनुमति लिए दिवराला पहुँचने का संकल्प लेकर दिवराला नहीं पहुंच सके। सरकार ने गिरफ्तार कर बस में बैठाकर जयपुर लाकर छोड़ दिया और ये वहां से सीधे दिल्ली लौट गए। उस काण्ड में यदि बलात् दिवराला में प्रवेश करते समय शहीद भी हो जाते तो इनके पीछे रोने वाले कोई बीबी बच्चे भी नहीं थे।

यह उनका एक कायरतापूर्ण कदम था किन्तु सती प्रथा के विरोध से इनका क्या लेना-देना था, इन्हें तो समाचार-पत्रों की सुर्खियों में आना था, इनका वह लक्ष्य पूरा हो गया।

इन्हें अनेक उच्च पद सौंपे गये किन्तु प्रत्येक स्थान पर, इन्होंने विघटन उत्पन्न किया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का कार्यभार सम्भाला गुरुकुल कांगड़ी सम्भाला। सभा का कार्य चौपट हुआ, गुरुकुल में अव्यवस्था फैली तथा गोलियां चलने की नौबत आ पहुंची। महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के दसवें नियम में आदेश दिया था कि "सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम में परतन्त्र रहना चाहिए" किन्तु स्वामी अग्निवेश ने सर्वत्र निरंकुशता का परिचय दिया। कहां है उनकी महर्षि दयानन्द की अनुगामिता?

"भारतीय आर्य समाज" की घोषणा से स्वामी अग्निवेश का क्या अभिप्राय है? क्या महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्यसमाज के मन्तव्यों और सिद्धान्तों को स्वीकार करने वाले ईसाई तथा मुस्लिम सम्प्रदाय के भाइयों के लिये आर्यसमाज के द्वार अवरुद्ध है? धर्म निरपेक्षता के नाम पर सन् १९४७ से लेकर आज तक जो कुछ हो रहा है, वह राष्ट्रवादी जनता से छिपा हुआ नहीं है। कांग्रेस सरकार तथा उसी की उपज यह राष्ट्रीय मोर्चा सरकार मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति पर चलकर भारत राष्ट्र में अराष्ट्रीय तत्वों को प्रश्रय दे रही है। स्वामी अग्निवेश का आर्य समाज तो अब 'भारतीय आर्य समाज" होगा और महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज अभारतीय आर्य समाज माना जायेगा, कैसी विडम्बना है? आर्य समाज के मनीषी विचार करें।

जिस आर्यसमाज की सार्वदेशिकता है, उसमें 'कृण्वन्तो विश्व-मार्यम्" के वैदिक आदेश के विरुद्ध भारतीय आर्यसमाज" की स्थापना वेद और महर्षि दयानन्द के प्रति विश्वासघात है। "भार-तीय आर्य समाज" की स्थापना मात्र एक बौद्धिक दिवालियापन है। महर्षि ने अपने एक-एक शब्द को निर्भ्रान्त रूप से कहने का प्रयत्न किया है किन्तु स्वामी अग्निवेश स्वय तो दिग्भ्रान्त हैं ही, आर्य जगत् में भ्रान्ति उत्पन्न कर जनसामान्य को दिग्भ्रान्त करने का कुचक्र चला रहे हैं एव दुष्प्रयत्न कर रहे है। प्रत्येक आर्यसमाज तथा आर्य समाजी का कर्त्तव्य है कि वह इस दिशा मे गम्भीरता पूर्वक सोचे तथा जनता में उत्पन्न होने वाले भ्रम का बहुत सतर्कता एवं सावधानी से निराकरण करें।

मेरे पास स्वामी अग्निवेश की वास्तविकता के अनेक प्रमाण हैं। मैं कोई निराधार बात प्रस्तुत करने की चेष्टा नहीं कर रहा। राजस्थान के आर्य समाजी महानुभाव एव आर्य समाजें इस नये नारे तथा नारेबाज स्वामी अग्निवेश से सावधान रहें।

आर्य समाज मान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय

श्री जयप्रकाश आर्य बन्धु प्रधान आर्यसमाज बिडला लाइन्स दिल्ली

महर्षि दयानन्द की स्पष्ट अवधारणा थी कि विश्व मे शाति एव कल्याण की शाश्वत मार्ग वैदिक धर्म" ही कम्पास सुई की भाति सदैव स्थिर व अचूक दिशा है। इसी स्पष्ट व सनातन "वैदिक धर्म" के लक्ष्य को पुन जानने व मानने के पुनीत उद्देश्य से महर्षि ने केवल आर्यों (श्रेष्ठ) के आर्य-समाज की स्थापना "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" के वैदिक उद्घोष से करी है। जब कि जन-साधारण हेतु उन्होने गो-कृष्यादि" जैसी रूपरेखा की सस्था के गठन की प्रस्तावना की थी। किन्तु इस दूसरी सस्था का पृथक गठन व सचालन न बनाने के कारण ही आर्य समाज मे भी 'अपूज्यो की पूजा व पूज्यो की अपूजा की दोष आ गया है। जबकि महर्षि दयानन्द ने आजीवन इसी बुराई से सघर्ष किया था। इसी कारण आर्य कार्यकर्त्ता आर्य समाज से कतरा-कतरा कर अन्यान्य सगठनो मे सहयोग देने मे लगे हुए हैं।

आर्य समाज के माध्यम से कुछ भी सत्कार्य करने व कराने की उत्कठा से पूर्व कुशल वैद्य की भाति आवश्यक है कि रुग्ण आर्य समाज को सर्वप्रथम स्वस्थ बनाया जाए। उसके बाद ही उस पर सत्कार्यो हेतु भार डाला जाए। अब जबकि आर्य समाज का शुद्ध आर्यीकरण मुश्किल है तब वर्तमान परिवेश मे हम किन २ लक्ष्यो को निर्धारित करें? क्या हमें सिद्धान्तो से समझौता कर लेना चाहिए?

आर्यो, हमारा दृढ सकल्प है कि जब अन्य कोई विश्व कल्याण के वैदिक सत्य मार्ग को जानता ही नहीं है तो उन अन्यान्य मार्गों पर धन, श्रम व विचार में भटकना निरर्थक है। आइये—आर्य सिद्धान्तो से समझौता किए बिना कुछ एक समाधान उपायो के द्वारा ही हम इस सघठन को पुन शक्तिशाली बनावे।

१—आर्य समाज व सम्बन्धित समस्त सभी आर्य या दयानन्द नाम की सस्थाए (चाहे राजनैनिक, शक्षणिक व्यावसायिक आदि हो) मै वैतनिक व अवैतनिक पदो हेतु क्रमश न्यूनतम योग्यताए गुणाक निश्चित िग जाएं।' 'न्यूनतम योग्यताए गुणाक' के कार्यकर्ता न मिलने पर उस पद को रिक्त रखा जाए। पदानुकूल कार्यकर्ता के बनने/मिलने तक उस पद पर मात्र 'कार्यकारी पदाधिकारी' ही बनाया जाए।

योग्यताए गुणाक के मानक व स्तर परीक्षण के विषय—निज व परिवार मे वर्ण – आश्रम प्रणाली का पालन स्तर, सदाचार स्वाध्याय एव तन (समय), मन (विचार) व धन (आर्थिक दान) आर्य समाज के अनुकूल प्रदान करने का स्तर। निज सन्तान का आर्य गुरुकुलो में पठन-पाठन कराना इत्यादि भी हो। आर्य समाजो व शीर्ष सस्थाओ सभी मे पदो का चयन भिन्न २ विभागो के उत्तरदायित्व बोधक मन्त्री-मण्डल के रूप मे बनाने हेतु सविधान को सशोधित किया जाए।

२—आर्य समाजो को आर्यवीरो की चौकियो का रूप दिया जाए, प्रत्येक आर्य समाज हेतु जो कार्य क्षेत्र निश्चित किया जाए उसका विस्तृत विवरण (जन सख्या, भिन्न २ समुदाय सख्या, शैक्षणिक, सामाजिक, व्यापारिक, प्रशासनिक आदि सेवाए क्षेत्र में कार्यरत अनार्ष असमाजिक केन्द्रो) को उस-उस आर्य समाज द्वारा अपने कार्यालय या प्रमुख स्थान पर सुन्दर चार्टो व नक्शो व योजना विवरणा (प्रोजेक्ट) द्वारा प्रदर्शित किया जाना अनिवार्य किया जाए। लक्ष्यो का इस प्रकार वार्षिक निर्धारण व उन लक्ष्यो की प्रगति को वर्ष उपरान्त प्रादेशिक सभाओ मे प्रस्तुत करना अनिवार्य किया जाए।

३—आर्य समाजे अपने आवटित कार्य क्षेत्र में अनिवार्यत मोहल्ला स्तर पर आयु के अनुसार (आर्य टोली ५-१०, १०-१५) बालको, बालिकाओ को टोलियो सूचीबद्ध करे। इन टोलियो को क्रमश सस्कारवान करने के लिए उसी मोहल्ले के ऐसे परिवार म क्रमश निश्चित समय, वार पर एकत्रित कराए व आर्य समाज का पुरोहित हो शिष्टाचार शिक्षक के रूप मे एकत्रित बालको मे आर्य विचार प्रोत्साहित करें।

इसके लिए पुरोहितो मे आवश्यक दक्षता एव चयन का प्रबन्ध करना जिला प्रतिनिधि सभाओ का विशेष दायित्व बनाया जाए।

४—प्रत्येक आर्य समाज व दयानन्द एव आर्य नाम प्रयोग करने वाली सस्थाओ के समस्त कार्यो की समीक्षा व खातो का लेखा परीक्षण हर तीन वर्ष मे एक बार 'प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा अनिवार्यत करावे। इन सस्थाओ मे सभी लाभ के पदो प्रवेशो मे आर्य सस्कारित बालको, युवको को ५० प्रतिशत आरक्षण, शुल्क म विशेष छूट व आर्य-भत्ता प्रदान किया जाए।

ईश्वर पूजा का वैदिक स्वरूप (२)

शास्त्रार्थ महारथी रामचन्द्र देहलवी

जरूरत किसे कहते हैं जरा यह समझ लीजिए। जिसके बगैर जरूरत मन्द को जरर पहुच जाए। जिसे मैं कहू कि यदि मुझे हवा न मिले जो मेरी जरूरत मे दाखिल है। तो मुझे जरूर पहुच जाएगी नुकसान पहुच जाएगा पानी अगर न मिले तो नुकसान होगा रात को जितना आराम मिलना चाहिए यदि मुझे न मिले तो परेशानी होगी। क्यो नुकसान होगा, क्योकि यह मेरी आवश्यकता में शामिल है। भगवान के लिए ऐसी कौनसी चीज है जिसके बगैर उसे नुकसान पहुच जाएगा या हानि हो जाएगी बुद्धि मानो और अक्लम दों ने कभी यह बात सोची है। जब इतनी तफसाल से बात बयान की गई तो बात स्पष्ट हुई और यह समझ मे आ गया कि भग वान् को तो किसी चीज की जरूरत है ही नही। जिसे किसी वस्त की आवश्यकता ही नही उसकी सेवा कैसे की जाए जो जरूरत से खाली हो उसकी सेवा कैसे की जाए ? हमे तो कुछ देकर सेवा करने की आदत पडी हुई है। य बहिन और बेटिया बठी है। क्या कहना इनका ? इनका गुण यह है कि सबको खिलाकर खाती है। यदि कोई बेवक्त भी आ जाय तो अपना खाना भी उसे दे देती है और स्वय भूखा सो जावेगी। लेकिन यह भी तो उनकी सेवा करती है जिनकी कुछ आवश्यकता है। लेकिन यदि कोई ऐसा मनुष्य आए जिसकी कोई आवश्यकता ही न हो उसकी सेवा कैसे कर सकगा ?

मरे पास एक पस्तक थी जिसका नाम था—री एज आफ राजन उसे (टामस पेन) ने लिखा था। अ ग्र जी म लिखी हुई पुस्तक है। उसने इस सम्ब ध मे बडा अच्छा लिखा है हम खुदा की खिदमत उस तरह नही कर सकत जिस तरह हम उनकी करत है जो खिदमत के बगर अपना गुजारा नही कर सकते। हम अपनी खिदमत करवाये बग र नही रह सकते इसलिए जिस तरह हमारी खिदमत होती है इस तरह खदा की खिदमत नही की जा सकती क्योकि उसकी कोई जरूरत नही है कितना अच्छा लिखा है टामस पेन ने।

पूजा करने वालो ने जब यह बात समझ ली कि ईश्वर की सेवा कुछ देकर नही की जा सकती और उ हे श्रे ह तरीका आता था तो वे पडितो और पाधाओ से पूछने लगे कि वे कुछ बताय। कि त अफसोस कि पडित और विद्वान् आलस्य प्रसाद अज्ञान और स्वाथ के कारण लोगो को सही रास्ता न बता सके। जब न बता सके तो लोगा को तो पूजा करनी थी। इ होने अपने बना लिए। जसे आय लोगो को आय समाज स्थापित करने की आदत है ऐसे ही इ हे भी पूजा करने की आदत पडी थी इसलिए इ होने अपना रास्ता निकाल लिया।

इ होने अपनी अपनी मर्जी और क्षमता अनुसार अपन अपने ईश्वर बना लिए। किसी ने लकडी के बनाये किसी ने पत्थर के। जिसके पास सोना था उसने सोने के बना लिए जिसके पास चादी थी उसने चादी के बनाये। जो भी चीज जिसके पास थी उसी के उ होने ईश्वर बना लिए और फिर उन्हे खिलाना-पिलाना शुरू किया। लेकिन वे तो खाते नहा। अब आश्चय मे खड हैं कि हमने इन्हे खिलाने पिलाने क लिये बनाया था लेकिन वे तो खाते नही। कोई हम जसा आदमी देख रहा था आकर उसने पूछा कि अन्दर क्यो खड हो ? क्यो ताज्जुब मे खड हो ? कहने लग साहब हमने इनकी सेवा करने के लिए इनको बनाया था। अब इनको खिलाते पिलाते है तो यह खाते नही हम इनकी सेवा के सामान लाए थे लेकिन यह तो खाते ही नही है वह सज्जन बोले। जरा सोचिये विचार कीजिए। आपने इनको किनकी जगह बनाया है किनकी जगह मुकर्रर किया है ? उन लोगा ने उत्तर दिया भगवान् के स्थान पर। प्रश्न किया गया क्या भगवान् खात हैं ? उत्तर मिला नहीं भगवान तो नही खाते है। तो उस आदमी ने कहा कि जब भगवान खाते नही है तो वे इतने बेशम तो ह नही कि भगवान् जो खाता नही है उसकी जगह मुकरर होकर खुद खाने लग। कैसे खा ल ? उन्होने कहा हम भी नही खाएगे। इतना गरत तो हम मे हैं। इनको समझाना पडा।

बुद्धिवादियो ने इन्हे समझाया कि आपने सारा काम उल्टा कर दिया। जिसने सारे जगत को बनाया उसे तुमने बना दिया। सारा काम उल्टा हो गया। जिस बाप ने हमें बनाया था हमने उसे बना दिया। जो सवत्र था वह एकत्र हो गया जो गैर महदूद था वह महदूद हो गया। जो आजाद था वह कैद हो गया ब धन म आ गया। आप पूछगे बन्धन मे कसे आ गए ?

आप देखते है कि बड बड सेठो ने म दिर बनवा रखे है या उनके बड-बड मकान हैं। उनमे एक कोने मे उन्होने मन्दिर बनवा दिया है। उन मन्दिरो मे देवता रखे गए है अर्थात् परमात्मा सब जगह था। अब एक एक मकान मे मुकैयद हो गया। मकान के अ दर रहता है तो उस मकान से छोटा ही होगा। तो वह सवत्र था अब एकत्र हो गया। वह मकान जिसमे स्वय रहते है बडा अच्छा है खूब ऊ चा है। उसमे सभी तरह के आराम है। भगवान जी के लिए सेठ जी ने इतना छोटा मकान बनवाया है कि पुजारी जी भली प्रकार खड भा नही हो सकत है झुके झुके ही अपना काय कर देते है। अगर कोई आकर पूछे कि यह किसका म दिर है तो कहा जायगा कि यह म दिर सेठ जी का है। और यह दवता ? यह भी उन्ही के है—तो जो मालिक था सबका स्वामी था अब हम उसके स्वामी हो गये। काम उल्टा हो गया न ? म दिर भी सेठ जी का और उसमे जो भगवान है वह भी सेठ जी के अब सेठ जी। अपने भगवान की पजा भा करते है और उसकी रक्षा भी करते है। शाम को हमेशा ताला लगा देत है कभा कोई उठाकर न ले जाए—जा सारे जगत का रक्षक था अब हम उसके रक्षक बन गये। मैने यह सब बात इसलिए कही है कि एक सही नक्शा आपके सामने आ जाय। अब पजारी व सेठ जा की मर्जी प्रधान है जब चाहे म दिर खोल जब चाहे ब द करद खाना चाह एक दिन मे एक बार खिलाय और चाहे चार बार। भगवान् अब कोइ शिकायत नही कर सकते क्याकि सेठ जी का रिआया या प्रजा मे शामिल हो गये है। वह मालिक के सामने कसे बाल ? हमारी ना समझी से काम करने पर कितने काम बिगड गये ?

मै दिल्ली मे बाब सु दरलाल जी अहलवालिया के घर म किराये पर रहा करता था। उनका एक मन्दिर भी था। उसमे जो पजारी जी थे वे मेरे मित्र थे और करीब ही रहते थे। आप जानते है मित्रो मे हसी की बात हुआ करती है हमारी भी होती थी तो वह कह दिया करते थे कि हा आप कह लीजिए हम सनातनधर्मी है और आप आय समाजी है। मैने उनसे एक बार कहा कि आप ईमानदारी से बताइये कि क्या यह ठीक तरीका है ? वह कहने लगे पडित जी ठीक तरीका क्या है यह तो आप भी जानते है और मैं भी जानता हू कोई फक की बात नही है।

एक दिन शाम को वह अपने बेटे ऋषि को आवाज लगाकर यह पूछ रह थे कि रात होने वाला है तूने म दिर का दरवाजा ब द किया कि नही ? उसमे नकारात्मक उत्तर सनकर जरा वे नाराज हुए और बोले कि तूने अभी तक दरवाज ब द नही किये यदि कोई ठाकुर जी को उठाकर ले जाय तो आज तक कभी गये हुए वापस आये है ? मैने जरा हसा कर दी मैने कहा कभी आपने इनको गली कूचे मे घमने का मौका दिया है ? गली कचे मे घूमने वाले को अपने घर का पता ज्ञात रहता है। ठाकुर जी विचारो को क्या पता ? वे तो आज तक कभी बाहर गय हा नही। तो उन्हे अपने घर के रास्ते का कैसे पता चले ? इसलिए एक बार जाने के बाद वे आज तक लौट नही। हसने लगे। ह सत हसत कहने लगे पडित जी वर और बात तो छोडिये जन्माष्टमी आने वाला है जरा लाला जी से कह दीजिये कि ठाकुर जी के कपड बनवा देव। म कहता हू तो नाराज होने लगते है। आप उधर से जब निकल तो जरा कह दीजिये। पडौसी का इतना तो लिहाज होना चाहिए। मैं जब लाला जी के मकान के आगे से गुजरा तो वे बैठे हुए थे। मैंने उनको याद दिलवाया कि आप अपने कपड जब बनवाते है। तो ठाकुर जी का खयाल रखा कीजिए। कहने लगे आपको पुजारी जी ने कहा

(शेष पृष्ठ ९ पर)

डोगरे और कश्मीरी

क्या पाकिस्तान के सिन्ध की तारीख जम्मू मे दोराही जाएगी। हालात तो कुछ यही शकल अख्तयार कर रहे है। महाजरीन वह लोग हैं जो १९४७ मे भारत छोड़ कर पाकिस्तान गए थे परन्तु स्थानीय सिन्धी इन्हे बरदाश्त न कर सके और दोनो मे कुछ खींचातानी रहती है। जिसका परिणाम है वहा फसाद के कारण सैकड़ो लोग मारे जा चुके है और अब तो यह सन्देह हो रहा है कि शायद सरकार भी महाजरीन और सिन्धियो की आपस की अदावट का शिकार हो जाए। कुछ ऐसे ही हालात जम्मू में भी पैदा हो रहे हैं जो कश्मीरी अपना घर बार छोड़ कर इस समय जम्मू में डेरे लगाए बैठे है इन्हे जम्मू के कुछ लोग पसन्द नही करते। इन्हे डर है कि कश्मीरी कहीं इन पर हर क्षेत्र मे हावी न हो जाए। मै इस स्थिति को अति अफसोस नाक समझता हू। इसके लिए कौन उत्तरदायी है। मैं इस बहस म न पड़कर यह कहना चाहता हू कि जम्मू व कश्मीर एक ही प्रान्त है और कुछ परिस्थितयो ऐसी हो गयी कि उन्हे विवश होकर जम्मू में आकर ठहरे है ता इसलिए भी कि हम सब कहते है कि कश्मीर भारत का अटूट अग है इसलिए हर कश्मीरी का अधिकार है कि जहा भी जाकर रहना चाहे वह रह सकता है। दफा ३७० के कारण हमे जो नुकसान हुआ है इसका कुछ अन्दाजा अब लग रहा है यदि दफा ३७० न होती तो दूसर प्रान्ता से भी लोग जम्मू व कश्मीर जाकर आबाद हो सकते थे। इसका परिणाम यह है कि मुसलमानो ने हिन्दुओ का रहना असम्भव बना दिया है। जो हिन्दू निकले है उन्हे हम कश्मीरी पण्डित कहते है आखिर कही तो इन्होने अपना सर छुपाना है। अगर उन्हे जम्मू छोडन पर विवश किया गया तो इसके साथ यह प्रश्न पैदा हो जायगा कि जम्मू-कश्मीर भारत का अग है या नही इस समस्या को भी ओझल नही किया जा सकता। पचास हजार के लगभग जो कश्मीरी हिन्दू मुसीबत के मारे जम्मू मे आए हैं यदि यह यवन मत स्वीकार करन को तैयार हो जाते तब तो उन्ह वहा कश्मीर मे कोई कुछ न कहता परन्तु उनके इनकार करने पर अब यह सजा दी जा रही है तो दूसरी तरफ क्या जम्मू के हिन्दू अब इन्हे सजा देगे। यदि यह पण्डित फिर कश्मीर जाते हैं तो इन्हे वहा इस्लाम स्वीकार करना पड़ेगा या तो मार दिया जाएगा इसके बाद क्या जम्मू के हिन्दू देशमें मुह दिखाने योग्य रहेंगे। मैं जम्मू निवासियो की कठिनाइयो को अनुभव करते हुए मानता हू इस बात से इनकार नही कर सकते कि हम सब एक मुसीबत में फसे हुए हैं। यह जो आफत हम पर आई है यह सदैव तो नही रह सकती। शीघ्र ही यह निर्णय हो जाएगा। कश्मीरी पडित जम्मू के अतिरिक्त अन्य नगरो जैसे जालन्धर दिल्ली मे भी पहुच चुके हैं आज मुझे १९४७ के वह दिन याद आ रहे है, जब लाखो की तादाद मे शरणार्थी पाकिस्तान से आए। जिसे जहा सर छुपाने के लिए जगह मिली वह वहीं बैठ गया। आज शरणार्थियो और पुराने पजाबियो मे कोई अन्तर नही रहा। इसलिए जम्मू निवासी भाईयो और बहनो से कहता हू कि यह विपदा केवल कश्मीर पण्डितो की नहीं है सारे देश की है। वह यदि मर रहे है तो केवल इसलिए कि देशकी एकता कायम रहे। कश्मीरी पण्डितो या जम्मू के डोगरा का नही है यह देश की एकता का है और देश को बचाने का है। इसके लिए जो भी जितनी कुरबानी कर सके इसके लिए तैयार रहना चाहिए ऐसे हालात पैदा न हो कि कश्मीरी पण्डित यह कहने पर विवश न हो जाए कि —

बागवा ने आग दी, जब आशियाने को मर।
जिन पर तकिया था वही, पत्ते हवा देने लगे ।।

—वीरेन्द्र

राजमाता सिंधिया द्वारा सती-प्रथा का समर्थन किए जाने पर जबरदस्त हंगामा

नई दिल्ली २४ अगस्त भारतीय जनता पार्टी की उपाध्यक्षा तथा सांसद श्रीमती विजयाराजे सिंधिया द्वारा सती प्रथा का समर्थन किये जाने के मामले को लेकर आज राज्यसभा मे कुछ देर जबरदस्त हंगामा हुआ। कांग्रेस (ई) तथा कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यो ने श्रीमती सिंधिया के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करने की माग की। सदन मे आज शून्यकाल के दौरान यह मामला उठाते हुये कांग्रेस (इ) की सदस्या श्रीमती जयन्ती नटराजन ने श्रीमती सिंधिया के उस बयान को शर्मनाक बताया जिसमे उन्होने सती प्रथा का समर्थन किया है।

श्रीमती नटराजन ने कहा कि पूर्व सरकार ने सती प्रथा को बन्द करने का कानून बनाया था इस कानून के प्रावधानो के अनुसार सती प्रथा का समर्थन करने वाले निर्वाचित प्रतिनिधि तक को सदस्यता से अयोग्य करार दिया जा सकता है। उन्होंने श्रीमती सिंधिया के खिलाफ कदम उठाने की माग की।

भाजपा के अटल बिहारी वाजपेयी ने सती के मामले में अपनी पार्टी की स्थिति स्पष्ट करते हुये कहा कि भाजपा इस प्रथा के खिलाफ है। इस कुप्रथा को नष्ट किया जाना चाहिये। उन्होने कहा कि वे इस बात को स्वीकार नहीं करते कि कोई अपनी इच्छा से जलना चाहे। यदि कोई जलना भी चाहे तो हम उसे ऐसा नही करने देंगे।

श्री वाजपेयी ने स्पष्ट किया कि जहां तक सती प्रथा के बारे में श्रीमती सिंधिया के विचार हैं, वह उनके व्यक्तिगत विचार हैं, पार्टी के नहीं। विपक्ष के नेता पी॰ शिवशंकर ने वाजपेयी जी को सम्बोधित करते हुये कहा कि हम आशा करते हैं कि आप श्रीमती सिंधिया के खिलाफ अनुशासन की कार्रवाई करेंगे।

कम्युनिस्ट पार्टी के गुरुदास गुप्त ने कहा कि हम सती प्रथा के खिलाफ कानून बना चुके हैं तथा इसकी अवहेलना करने वालों के खिलाफ आवश्यक कार्रवाई की जानी चाहिये। कांग्रेस (इ) के अनेक सदस्यों ने इस मामले को समाप्त किया कि हम सती प्रथा पर विचार नहीं कर रहे हैं तथा इस विषय पर सदस्यों की बात को रिकार्ड में शामिल नहीं किया जायेगा।

ईश्वर का वैदिक स्वरूप

(पृष्ठ ६ का शेष)

होगा। मैंने कहा, 'हा, पुजारी ही कह सकते है। ठाकुर जी की क्या मजाल जो वह कह सके। वे तो आपकी प्रजा मे शामिल है। मालिक के सामने बन्दा कही बोल सकता है ?' कहने लगे, 'अच्छा हो जाएगा इन्तजाम।' मैने कहा, 'जन्माष्टमी से पहले ही हो जाना चाहिए। यह घटनाए मैं आपको क्यो बता रहा हू ? केवल इसलिये कि आपको यह पता चल जाय कि गलत विश्वासो और गलत तरीको से कितना नुकसान हो रहा है। जो हमारा रक्षक था, अब हम उसके रक्षक हैं वह हमारी कैद मे है। जो हमारा पोषक था अब खाने के लिए हमारा इन्तजार कर रहा है, वह हमारा मोहताज हो गया है।

एक भजनीक महाशय थे। अपने भजनो के बीच कह रहे थे कि मुसलमानो का खुदा खुदाबन्द ताअला और हिन्दुओ का जो मन्दिर मे रखा हुआ है तालाबन्द खुदा है। मैने यह बात सुनी थी मुझे अच्छी लगी इसलिए आपको भी सुना दी। उनकी यह बात सही थी। मन्दिर को अपने ईश्वर की रक्षा के लिये, उसमें ताला लगाना पडता है।

दिल्ली में एक बार जाटो के मुहल्ले से गाय निकालने के प्रयत्न मे झगडा हो गया। कसाई लोग जाटो के मुहल्ले से गाय निकालकर ले जाना चाहते थे। लोटनसिंह वगैरा जाट ये लोग लाठिया लेकर खडे हो गये और कह दिया कि हम अपने मौहल्ले से गाय को नही निकलने देगे। झगडे का इम्कान देखकर डिप्टी कमिश्नर ने उन्ह अपने जुलूस का रास्ता बदलने के लिए कहा। इस पर वे लोग नाराज हो गय और उन्हाने मुहल्लो म घुसकर लूटमार करनी शुरू की। वे एक मन्दिर मे घुस गये और जितने भी देवता वहा रखे थे सब तोड डाले। मन्दिर में पुजारी भी था। वह डर के मारे, कोने में एक लिपटी हुई चटाई थी, उसमे घुस गया। किसी को कुछ भी पता न चला। जब वे लोग सभी मूर्तियां तोडकर चले गये तो पुजारी भी बाहर निकल आए। बाद में जब मै उनसे मिला तो मैंने पूछा कि भगीरथ जी तुम कहा थे जब मन्दिर मे वे लोग मूर्तिया तोड रहे थे ? कहने लगे कि मैं मन्दिर में ही था। कोने में चटाई रखी थी लिपटी हुई। उसमे घुस गया था इसलिए बच गया। नही तो वे लोग मुझे मार डालते। वे तो मारने पर तुले हुए थे। गुस्से मे थे। मैने उनसे पूछा कि तुम्हे उस समय सबसे ज्यादा चिन्ता किसकी थी ? 'मुझे अपने बेटे की थी कि न जाने कहा हैं ?' (उसका बेटा आजकल अलवर राज्य मे मजिस्ट्रेट है) मैने पूछा कि तुम्हे देवताओ के टूट-फूट जाने का कोई गम नही है ? कहने लगे कि अजी वह तो जयपुर से फिर यहा आ जायेगे, कोई दो रुपये का, कोई चार रुपये का, कोई आठ का, लेकिन मेरा बेटा कहा से आ जाता ? अब जरा सोचने की बात है असलियत निकल आई कि नहीं ? भगवान बडे-बडाये पडे है दो रुपये, चार रु० को बिक रहे हैं। हमने इस प्रकार भगवान की बेइज्जती की तो आज हमारी भी बेइज्जती हो रही है। यह भगवान की पूजा का तरीका नही है। हमने गलत तरीके प्रयुक्त किए हैं। मैं आगे चलकर आपको ईश्वर-पूजा का सही प्रकार बताऊ गा।

मैं मेरठ मे व्याख्यान दे रहा था तो एक नवयुवक खडे हो गये और कहने लगे कि मै एक प्रश्न पूछना चाहता हू। मैंने कहा, नियमानुसार व्याख्यान के बाद प्रश्न पूछे जाते हैं, तभी आप पूछ लीजिये।' वे कहने लगे, 'जी तो प्रश्न पूछने को अभी कर रहा है। मैंने कहा 'अच्छा पूछिये।' पूछने लगे, 'आप ईश्वर को हर जगह मानते है या नही ?' मैंने कहा, 'हा, मानते हैं।'

प्रश्न : तो मूर्ति के अन्दर भी हुआ कि नही ?

उत्तर : हा, मूर्ति के अन्दर भी है और बाहर भी।

प्रश्न : तो आप मूर्ति का खण्डन क्यो करते है ?

उत्तर : हम मूर्ति का खण्डन नही करते। हम तो गलत मूर्ति-पूजा का खडन करते हैं।

प्रश्न : जब भगवान् मूर्ति के अन्दर है तो आप मूर्ति पूजा का ख[illegible] क्यो करते हैं ?

उत्तर : आपके मूर्ति पूजने का उद्देश्य भगवान की पूजा करना है। जब भगवान सब जगह है तो मूर्ति के अन्दर वाले ही भगवान को आप क्यो पूजते हैं ? मूर्ति से बाहर वाले को क्यो नही पूजते ? भगवान् तो सब जगह है। मूर्ति के अन्दर भी और बाहर भी।

मान लीजिए आप मुझसे मिलने आए और मैं आपको अपने दरवाजे के बाहर ही मिल जाऊ तो आपको मुझसे मिलने मे अधिक सुविधा होगी या मेरे अन्दर होने पर होगी ?

क्योकि भगवान् तो सब जगह है उससे बाहर ही मिल लीजिए। व्यर्थ मैं अन्दर वाले के क्यो पीछे पडे हैं ? आप मूर्ति मे दाखिल नही हो सकते और मूर्ति का खुदा बाहर नहीं आ सकता। क्यो मुश्किल मे पडते है सरल काम कीजिए और मूर्ति से बाहर वाले की ही पूजा कर लीजिए।

दूसरी बात यह है कि मूर्तिपूजा करने से तो मूर्ति की पूजा होती है। भगवान् की पूजा नही होती। वह तो सर्वज्ञ है। इसलिए उसे बाहर आने-जाने की आवश्यकता नही है। मैं इनके खिलाफ नही हू कि आप ईश्वर की पूजा करें किन्तु आप ईश्वर की पूजा करते कहा है ? आप तो मूर्ति को पूजते है, उस पर फूल चढाते है, पानी डालते है। क्या पानी और फूल मे भगवान् नही है ? प्रश्नकर्त्ता ने उत्तर दिया 'हा है। और उसको बनाया किसने है ? कि 'भगवान् ने' तो मैने कहा कि 'फूल की कीमत दुगनी हो गई। फूल को बनाया भी भगवान् ने है और उसके अन्दर वह व्यापक भी है किन्तु मूर्ति में व्यापक तो है परन्तु भगवान ने उसे बनाया नही है तो मूर्ति से अधिक महत्वपूर्ण फूल है। आप आठ आने पर रुपये को चढा रहे है। आपको अपनी मूर्तिया जो (आठ आने के समान मूल्य वाली है) उन्हे फूलो पर जो (एक रुपये के समान मूल्यो वाले हैं) चढाना चाहिये। आप तो कम कीमत चीजो पर महगी चीजे चढा रहे है। कहने लगे 'इससे तो सब उल्टा हो जाएगा।' मैने कहा कि उल्टा नही सुल्टा हो जाएगा। उल्टा तो अब है। क्या यह भगवान की पूजा हो रही है ? मै कहता हू यह पूजा नही हो रही बल्कि भगवान् का मजाक बनाया जा रहा है।

मै मानता हू कि कृष्णचन्द्र जी ऊचे दर्जे के आदमी थे। उन्हे अवतार कह लीजिए मुझे इसमे भी ऐतराज नही है। रामचन्द्र जी के बारे मे भी यही बात है। उन्हे भी आप अवतार कहिए। यदि वे ऊचे और श्रेष्ठ पुरुष थे तो आप उनके गुणो से लाभ उठाइये। लिखा है एक अग्रेज कवि ने—

> Lives of great men all remind us,
> That we can make our lives sublime
> And departing leaves behind us,
> The footprints on the sand of time.

बडे-बडे लोगो का जीवन हमे याद दिलाता है कि हम भी अपने जीवन को उच्च बना सकते है और दुनिया से रुखसत होते वक्त जमाने की धूलि पर अपने पैरो के निशान छोड जाए ताकि लोग उस रास्ते पर चल सके।

तो यदि आप कृष्णचन्द्र जी की मूर्ति रखते है तो दो बनवाइये। एक मुझे दीजिये और एक आप रखिए। देखिये मै उस मूर्ति को झाड-पोछकर साफ रखू गा और उनके जीवन से कुछ सीखू गा जिनकी वह मूर्ति है।

रामचन्द्र जी हैं। उनकी मूर्ति घर मे रखने का क्या लाभ। रामचन्द्र जी के चरित्र से वह मोटी पुस्तक रामायण भरी पडी हुई है। रामचन्द्र जी ने अपने पिता की आज्ञा मानी। आज्ञा मानकर वन चले गये। तो मै अपने बच्चो को सिखाऊ गा कि वे अपने मा बाप की आज्ञा माने। मेरे पिताजी तो मर गये। इसलिए मै अपने बच्चो को ही सिखाऊ गा। उन्ह यह बताऊ गा कि रामचन्द्र जी के पीछे चलने का क्या अर्थ है। पीछे चलने का यहा अर्थ है कि उनके गुणो को धारण करो।

नेपाल में शाही काफिले पर पथराव

कारों के शीशे तोड़े : २१ गिरफ्तार

काठमाण्डो २४ अगस्त नेपाल सरकार ने २१ व्यक्तियों को महारानी ऐश्वर्या और राजकुमार दीपेन्द्र के शाही काफिले पर पत्थर फेंकने के आरोप में गिरफ्तार किया। शाही काफिले पर कल शाम पशुपतिनाथ मन्दिर से वापसी के दौरान पथराव किया गया था।

गृहमन्त्रालय के प्रवक्ता ने कहा कि सरकार इस घटना में तोड़-फोड़ करने वाले तत्वों की शिनाख्त करके कड़ी सजा देगी। इस घटना के बारे में पूरी जानकारी देते हुए प्रवक्ता ने बताया कि महारानी और शाही परिवार के अन्य सदस्य शाम को देर से हरितालिका तीज उत्सव के अवसर पर पशुपतिनाथ मन्दिर गया था। यह उत्सव आमतौर से महिलाओं द्वारा मनाया जाता है। कुछ उपद्रवियों ने छबील के मिशा पार्क की झाड़ियों मे छिपकर मन्दिर से वापिस आ रहे शाही काफिले तथा महारानी की कार पर पथराव किया था। गृह और संचार मन्त्री योगप्रसाद उपाध्याय ने प्रेस ट्रस्ट को बताया कि सरकार पथराव में शामिल लोगों की तलाश कर रही है। उन्होने कहा कि महारानी की कार कोई क्षति नही पहुची।

सुरक्षा कर्मियो ने स्थिति को काबू मे लाने और शाही काफिले के लिये रास्ता साफ करने के लिए १४ राउन्ड गोलिया चलाई। गृह मन्त्रालय के प्रवक्ता ने कहा कि उपद्रवियो ने सेना पुलिस तथा यातायात पुलिस के वाहनो पर पत्थर फेंक कर उनके शीशे तोड़ दिये। स्थिति को काबू करने के लिये कुछ चक्र हवाई फायर करने पड़े।

उन्होने कहा कि महारानी की यात्रा के दौरान इस प्रकार की हरकतें बहुत दुःखद और निन्दनीय हैं। प्रवक्ता ने कहा कि इस मामले की जांच पड़ताल चल रही है।

(पंजाब केसरी २१ अगस्त १९९०)



डा० कपिलदेव द्विवेदी विदेश यात्रा पर



ज्ञानपुर (वाराणसी) विश्व-भारती अनुसंधान परिषद ज्ञानपुर के निदेशक तथा गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) के कुलपति डा. कपिलदेव द्विवेदी को अमेरिका तथा कनाडा के विभिन्न विश्वविद्यालयो ने वेद तथा भारतीय संस्कृति से सम्बन्धित विभिन्न विषयो पर व्याख्यान देने हेतु आमन्त्रित किया है। आप अमेरिका मे हो रहे वेद सम्मेलन मे भी अपने विचार प्रस्तुत करेंगे।

डा० द्विवेदी भारतीय संस्कृति के प्रचारार्थ अमेरिका, कनाडा, सूरीनाम गयाना तथा त्रिनिदाद भी जायेंगे। इन देशो मे विभिन्न विश्वविद्यालयो के अतिरिक्त आर्य समाज तथा अन्य धार्मिक संस्थाओ ने आपके प्रमुख शहरो मे कार्यक्रम रखे हैं। आपका विदेश यात्रा का उद्देश्य विश्व मे वेद का प्रचार करना है।

डा० द्विवेदी ने विदेशो मे वेद का सन्देश अंग्रेजी मे पहुचाने हेतु हाल ही मे "द ऐसेन्स आफ वेदाज" ग्रन्थ लिखा है जिसकी विदेशो में काफी माग है। आपने वेदामृतम् ग्रन्थमाला के १२ भाग—सुखी जीवन, सुखी गृहस्थ, सुखी परिवार, सुखी समाज, आचार शिक्षा, नीति शिक्षा, वेदो मे नारी, वैदिक मनोविज्ञान, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद तथा ऋग्वेद सुभाषितावली ग्रन्थ लोकप्रिय हो रहे है।

डा० कपिलदेव द्विवेदी वेद, संस्कृत साहित्य, व्याकरण तथा भाषा विज्ञान के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के विद्वानो मे से एक है। आपके ७० से भी अधिक ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके है तथा अनेक पुस्तको पर आपको पुरस्कृत तथा सम्मानित किया जा चुका है। इस वर्ष आपके ग्रन्थ 'भक्तिकुसुमाञ्जलि' पर उ० प्र० सरकार ने पुरस्कृत किया है। डा० द्विवेदी द्वारा रचित संस्कृत गीत वाइस आफ जर्मनी से प्रसारित हो रहे है। आपने आकाशवाणी द्वारा आयोजित गणतन्त्र दिवस पर अखिल भारतीय संस्कृत कवि सम्मेलन मे संस्कृत भाषा का नेतृत्व भी किया है। विगत वर्ष बी बी. सी. लन्दन से साक्षात्कार भी प्रसारित हुआ था।

डा० द्विवेदी अमेरिका, कनाडा आदि देशो की तीन मास की यात्रा पर ३ सितम्बर को दिल्ली से न्यूयार्क प्रस्थान कर रहे है।

—आर्येन्दु द्विवेदी, मन्त्री वि. भ. प. ज्ञानपुर (वाराणसी)

समस्त आर्यजगत में वेद प्रचार सप्ताह व श्रावणी पर्व सम्पन्न

—आर्यसमाज, 'सी' ब्लाक पंखा रोड, जनकपुरी दिल्ली मे वेदप्रचार सप्ताह का आयोजन दिनांक ६ से १४ अगस्त, १९९० रक्षाबन्धन से जन्माष्टमी तक किया गया। इस आयोजन के अन्तर्गत प्रतिदिन प्रात काल अथर्ववेद के मन्त्रो से वृहद् यज्ञ श्री मोहनलाल वशिष्ठ के ब्रह्मत्व मे किया गया। मन्त्रोच्चारण गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारियो ने किया। पूर्णाहुति १४ अगस्त, १९९० श्री कृष्णजन्माष्टमी के दिन सम्पन्न हुई।

रात्रि मे ७ से १३ अगस्त १९९० तक प्रतिदिन श्री विजयभूषण आर्य, के भजनोपदेश हुए और वैदिक प्रवचन प्रसिद्ध आर्य विद्वान प्रो० रतनसिंह जी गाजियाबाद द्वारा हुआ। प्रतिदिन लगभग २०० श्रोताओ ने लाभ उठाया। आसपास की समाजो के अधिकारी भी सम्मिलित होते रहे। दि० १४ अगस्त, ९० को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी समारोह प्रति ८ से ११ बजे तक बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया जिसमे प्रो० रतनसिंह, डा० महेश विद्यालंकार, श्री ब्रह्मदत्त स्नातक और श्री विजयभूषण आर्य प्रमुख वक्ता थे मच का सचालन वैद्य महेन्द्रपाल सिंह आर्य ने किया। —मन्त्री

—बारा कोटा, १४ अगस्त। रक्षा बन्धन का पावन पर्व जो कि ऋषि तर्पण और श्रावणी उपाकर्म के नाम से जाना जाता है, वैदिक ऋषियो के ऋण से उऋण होने हेतु वेद रक्षा एव प्रचार के व्रत ग्रहण का पर्व है। इस पवित्र अवसर पर आर्य समाज बारा सीता बाडी (कोटा) मे प्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य वेद प्रिय शास्त्री जी, हृदयग्राही, सरल सुबोध और प्रेरणाप्रद वैदिक प्रवचन निरन्तर ६ दिनो तक प्रात साय होते रहे।

—आर्यसमाज श्रद्धानन्द नगर, पलवल में वेद सप्ताह का आयोजन १२ १३, १४ अगस्त को हुआ। इसमे आर्यजगत के मूर्धन्य विद्वान आचार्य प्रेमभिक्षु' जी मथुरा वाले पधारे।

माननीय आचार्य जी ने प्रात साय तथा रात्रि मे वेद प्रचार किया। उन्होने आर्य समाज का सैद्धातिक पक्ष सरल तथा सुस्पष्ट भाषा मे रखा। भारी सख्या में नर-नारी कार्यक्रम में आते जाते रहे। उनकी अद्भुत विद्वता नगर मे चर्चा का विषय बनी हुई है।

१४ अगस्त को योगिराज श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर आचार्य जी ने आर्य समाज का दृष्टिकोण स्पष्ट करते हुए कहा कि आर्यसमाज श्रीकृष्ण के चरित्र की पूजा करता है चित्र की नही। काश! हम उनके गुणो पर चिन्तन करके उन्हे धारण करने का सकल्प ले पाते तो आज राष्ट्र का कायाकल्प हो जाता।

—अजीत कुमार आर्य

मन्त्री-आर्य समाज श्रद्धानन्द नगर पलवल (फरीदाबाद)

—आर्य समाज गोविन्दबाग, बलरामपुर जनपद गोडा (उ० प्र०) ने श्रावणी पर्व का उत्सव दि० ६ से १४ अगस्त ९० तक नगर के भिन्न भिन्न स्थानो पर यज्ञ, भजन व उपदेश का कार्यक्रम प्रतिदिन शाम को आयोजित किये।

सत रविदास मन्दिर हरिजन बस्तियो पर आयोजित कार्यक्रम बडे ही प्रभावशाली रहे। हरिजनो पर इसका बडा प्रभाव पडा और वे आर्यसमाज के कार्यक्रमो से बहुत प्रभावित हुए। उन्होने मासाहार व मदिरापान त्यागने का व्रत लिया। —हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव, मन्त्री

रजि० न० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२ ९ १९९०) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U ९३
R N 626/57 Licensed to post without Prepayment License o U 93 Post in D P S.O.on 31 8-1990



आर्य अनाथालय के वार्षिकोत्सव प श्री महेन्द्रकुमार जी शास्त्री बच्चो को सम्बोधित करते हुए। साथ मे खड़ हैं आर्य बालगृह के अधिष्ठाता श्री हमीरसिंह रघुवंशी।

आर्य अनाथालय, दिल्ली का ६६ वा उत्सव सम्पन्न

नई दिल्ली १६ अगस्त। अनाथ निराश्रित बालक बालिकाओ के लालन पोषण और शिक्षण क्षेत्र मे राष्ट्रीय महत्व की आर्यसस्था आर्य अनाथालय के ६६ व वार्षिकोत्सव के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप मे बोलते हुए केन्द्रीय महिला एव बालविकास उपमन्त्री श्रीमती ऊषा सिंह ने आर्य अनाथालय आर्य बालगृह तथा आर्य कन्यासदन द्वारा निराश्रित बच्चो के कल्याणार्थ किए जा रहे कार्यों की भूरि भूरि प्रशसा की। उन्होने देश की समाजसेवी सस्थाओ से अपेक्षा की कि वे सरकार द्वारा बाल विकास के कार्यक्रमो को प्रभावी रूप से लागू करने मे खुले मन से सहयोग करें।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए निगमायुक्त श्री ऋषिदेव कपूर आई ए एस ने कहा कि आर्य अनाथालय अपनी तरह की एक श्रेष्ठतम सस्था है जो अन्य सस्थाओ के लिए एक आदर्श है। यहा के सभी बालको के हृदयो मे राष्ट्रीयता से ओत प्रोत विचारों को फलते फूलते देखकर श्री कपूर ने सस्था के अधिकारियो की भूरि भूरि प्रशसा का।

पुरोहित की आवश्यकता

नगर की प्रमुख आर्य समाज जरीपटका नागपुर के लिए एक सुयोग्य आर्य पुरोहित की आवश्यकता है जो समस्त वैदिक सस्कार करने एव प्रवचन करने में सक्षम हो। सस्कृत अथवा सगीत की योग्यता वाले सज्जन को प्राथमिकता दी जावेगी। आवास की नि शुल्क व्यवस्था

दक्षिणा योग्यतानुसार। सम्पर्क करें —

मन्त्री

आर्य समाज जरीपटका नागपुर

श्रीमद्‌भगवद् गीता विवेचनी

विवेचनकर्ता —उत्तम प्रकाश व सल)

मे पढ़िये

श्री कृष्ण ने अर्जुन की एक भी शका का उत्तर नही दिया। गीतोपदेश निमम हत्या को न्यायोचित मानती है —

मूल्य ७५) रुपये

उत्तम विश्व साहित्य प्रकाशन

२४ श्रीराम रोड सिविललाईन्स देहली-११००५४

फोन २५११८७९

आरक्षण पर भाजपा सांसद का अनशन

नई दिल्ली, २५ अगस्त। भारतीय जनता पार्टी के सासद डा० जे० के० जैन ने आज यहा मण्डल आयोग की सिफारिशों को लागू किये जाने सम्बन्धी आदेश को रद्द किये जाने तक अनशन शुरू कर दिया।

मंडल आयोग के पक्ष में है विश्व हिन्दू परिषद्

नई दिल्ली २५ अगस्त विश्व हिन्दू परिषद् ने आज मडल आयोग की सिफारिशों को लागू करने का स्वागत किया है।

विश्व हिन्दू परिषद् के महासचिव श्री अशोक सिंघल ने कहा कि यह आवश्यक है कि पिछड़ी जातियो को समाज की मुख्य धारा से जोड़ा जाए। मगर उन्होने कहा कि प्रधानमन्त्री वी० पी० सिंह को रिपोर्ट पर राष्ट्रीय बहस चलानी चाहिए।

इस बीच अखिल भारतीय हिन्दू महासभा ने एक बयान में मडल आयोग की रिपोर्ट का विरोध किया है।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का चुनाव सम्पन्न

जिसमे निम्न पदाधिकारी निर्वाचित हुए —

प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष
सर्वश्री [illegible] आर्य	दिनकरराव देशपांडे	उग्रसेन राठौर
पाडुरगराव जी तेरकर	प्रो० कुशलदेव शास्त्री	प्रो० सत्यकाम पाठक
उपप्रधान	उपमन्त्री	पुस्तकाध्यक्ष
बलीराम पाटील	पन्नलाल करवार	हरिश्चन्द्र गुरुजी
उपप्रधान	उपमन्त्री	वेद प्रचार अधिष्ठाता
भगवन्तसिंह कपूर	सोपानराव तोडभिरकर	प्रो० अरुणकुमार नवबपुरे
उपप्रधान	उपमन्त्री	आर्य वीर दल अधिष्ठाता

सूचना

आर्य युवक परिषद दिल्ली (पजी) द्वारा सचालित "सत्यार्थ प्रकाश" की परीक्षाए २१ सितम्बर १९९० को सारे देश में होगी परीक्षा देने वाले सज्जन अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए निम्न पते पर सम्पर्क करें।

हरीओम प्रकाश एम० एस० सी०

एफ-६४ अशोक विहार दिल्ली-११००५२

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१ | दयानन्दाब्द १६६ | दूरभाष : ३२७४७७१ | वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे

वर्ष ३१ अंक ३५] | आश्विन कृ० ५ सं० २०४७ ९ सितम्बर १९९०

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के लिए व्यापक तैयारियां प्रारम्भ : अनेक उपसमितियों का गठन

दिल्ली २ सितम्बर। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की सफलता के लिये एक विशेष बैठक आर्य समाज दीवानहाल में हुई जिसमें दिल्ली की समस्त आर्य समाजो के प्रतिनिधियों ने बड़ी सख्या में भाग लिया।

कार्यवाही प्रारम्भ करते हुए सभामन्त्री प० सच्चिदानन्द शास्त्री ने अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनों के कार्य कलापों की चर्चा करते हुए कहा कि पिछले १५ वर्षों मे देश-विदेश में अनेक सम्मेलनो का आयोजन सफलता पूर्वक हुआ है। इन सम्मेलनो से आर्य समाज के कार्य मे व्यापक गतिशीलता आई है, जिसके लिए आर्यजगत के नेताओं, विद्वानो तथा प्रचारकों का महान् योगदान मिला है। सभा के अध्यक्ष स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने दिल्ली की आर्यजनता के साहस और संगठन के अनुशासन के प्रति कर्तव्य निष्ठा की भूरि-भूरि प्रशसा करते हुये स्मरण कराया कि १९७५ का ऐतिहासिक आर्यसमाज स्थापना शताब्दी समारोह अनेक कठिनाइयो और विषम परिस्थितियों में जिस असाधारण रूप से सफल हुआ वह सब दिल्ली के जागरूक आर्यजनो का ही पुरुषार्थ था। स्वामी जी ने दिल्ली के आर्य भाई बहनो का आह्वान करते हुए कहा—आगामी २१ से २६ दिसम्बर तक दिल्ली मे होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने के लिए आप उसी अनुशासन और कार्यशीलता का परिचय देंगे जो १९७५ में दिखाया था।

आर्य महासम्मेलन मे देश-विदेश से लाखो लोगो के पधारने की सम्भावना को ध्यान में रखते हुए व्यवस्था के लिये दिल्ली को पाच

(शेष पृष्ठ २ पर)

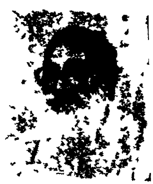
आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान डा० कपिलदेव द्विवेदी की विदेश यात्रा का विदाई समारोह



दिल्ली २ सितम्बर। आर्य समाज दीवानहाल मे आर्य जगत के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डा० कपिलदेव द्विवेदी का भव्य विदाई समारोह आयोजित किया गया। जिसकी अध्यक्षता सभा-प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने की। सभा-प्रधान जी ने श्री कपिल देव द्विवेदी जी के विषय में बोलते हुये कहा—श्री द्विवेदी जी ने बाल्यकाल में ही दो वेद यजुर्वेद और सामवेद को गुरुकुल के अध्ययन काल में ही कण्ठस्थ कर लिया था। इसलिये उन्हें द्विवेदी कहते हैं। श्री द्विवेदी सार्वदेशिक सभा द्वारा विदेश में वेद प्रचार हेतु जा रहे हैं।

इस अवसर पर उनका स्वागत करने वाले स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, पं० रामचन्द्र राव वन्देमातरम्, श्री सूर्यदेव, डा० धर्मपाल आदि ने पुष्प मालाओ द्वारा स्वागत किया। डा० द्विवेदी ने स्वागत के लिये सभी का आभार प्रकट किया उन्होंने कहा कि यह मेरी चौथी विदेश-यात्रा है। इससे पूर्व भी मैं तीन बार वेद प्रचार हेतु विदेश यात्रा कर चुका हूं।

आर्यसमाज के सन्त सिपाही



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से दिल्ली की समस्त आर्य समाजो के प्रतिनिधियो की सयुक्त बैठक मे दक्षिण भारत के महान् क्रान्तिकारी श्री के० नरसिन्हारेड्डी का अभिनन्दन किया गया। समारोह का आयोजन आर्यसमाज दीवान हाल मे सम्पन्न हुआ।

सभा की अध्यक्षता करते हुए स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि ६२ वर्षीय श्री रेड्डी आर्य समाज के सन्त सिपाही और आजन्म ब्रह्मचारी, रजाकार आदोलन के सशस्त्र सिपाही, दानवीर और आध्यात्मिक धारा के सन्त, समाज सेवी और कट्टर देशभक्त हैं। इन्होंने अपनी करोडो रुपये की पैतृक सम्पत्ति का दान कर दिया है। एक साधारण सी कुटिया में जन सेवा और राष्ट्र सेवा का व्रत लेकर आर्य समाज और आर्य सत्याग्रहियो के लिए इस समय कार्य कर रहे हैं। श्री रेड्डी आगामी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर सन्यास दीक्षा ग्रहण करेंगे।

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सम्पादकीय—

संस्कृत और हमारा कर्त्तव्य

सम्पूर्ण भारत मे जनगणना प्रारम्भ होने जा रही है जनगणना में एक कालम भाषा का भी है। मुसलमानो के लिये एक कालम उर्दू का है दूसरा सिक्खो का है। तीसरे कालम में हिन्दू और अन्य आयेंगे। मेरी प्रार्थना है कि तीसरे कालम मे संस्कृत लिखें जिससे एक अलग संस्कृतज्ञो की संख्या का ज्ञान हो सके।

जब हम ऋषि दयानन्द की महत्ता पर विचार करते है तो जिन बातो का महत्त्व हमारे दृष्टि पथ मे आता है उनमें संस्कृत का महत्त्व भी है।

ऋषि दयानन्द अंग्रेजी के विद्वान न थे फिर भी संसार को वे वह सन्देश देने मे समर्थ हो गये। जिसे उनके पूर्ववर्त्ती व समकालीन अंग्रेजी के विद्वान् सुधारक नही दे सके। तथा जिसने भाषा देश जाति वर्ण इत्यादि के भेदभाव से शून्य समस्त मानव समाज के हृदय पर असर किया तथा जो सदैव करते रहने की क्षमता रखता है। यह बात विविध भाषाओ के पण्डितो मुख्यतया अंग्रेजी के लाखो आश्चर्य मिश्रित आनन्द का विषय है तथा रही है।

निश्चय ही संस्कृत भाषा उस बहुमूल्य भण्डार की कुंजी है जिसके द्वारा ऋषि दयानन्द ने उसमे प्रवेश किया। उसके रत्नो की खोज की, उन्हे लोगो के सामने रखा और उस भण्डार का लोगो को स्मरण कराया। जहा तक भाषा का सम्बन्ध है ऋषि ने संसार के लोगो को अपने उदाहरण से बतला दिया कि संस्कृत का पण्डित अनुपम चमत्कार दिखला सकता है। यह भी बतला दिया कि हमारी सांस्कृतिक और साहित्यिक सम्पत्ति इतनी बहुमूल्य है कि उसकी तुलना संसार की अन्य कोई सम्पत्ति नही कर सकती है वह इतनी अधिक और विविध है कि भारत सन्तान को किसी बाहर वाले के आगे हाथ पसारने की जरूरत नही है। उसके अपनाने और उचित प्रयोग से ही उसका कल्याण तो क्या समस्त संसार का कल्याण हो सकता है और उसकी वास्तविक प्राप्ति की कुञ्जी संस्कृत भाषा है।

हमारा यह मुख्य कर्त्तव्य होना चाहिये कि हम सुव्यवस्थित रूपसे संस्कृत के प्रचार के उपाय सोचे और उन्हे काम मे लाये। संस्कृत शिक्षण मे हमारे देश और मनुष्य समाज के कल्याण की कितनी अधिक सम्भावना बनाये हैं।

हमारे बहुत से शिक्षित देशवासी आज की दुनिया में भारत के पुनर्निमाण मे संस्कृत को अव्यवहारिक और बेकार समझते हैं उनमें कुछ यह भी सोचते है कि वर्तमान और भूतकाल मे दृष्टि दौडाना व्यर्थ है।

यह प्रश्न हैं जो देश के महान व्यक्तियो के सामने उत्तर के लिये रखा जाता है। इस सम्बन्ध मे एक व्यक्ति का उत्तर देते है। जो हमारी सम्मति मे अच्छा उत्तर था उन्होने कहा था कि

बहुतबार मुझसे कहा गया है कि भूतकाल को देखने से पतन ही होता है हमें भविष्य की ओर देखना चाहिये। यह सत्य है कि भूतकाल मे से ही भविष्य बनता है अत जहा तक तुम देख सकते हो पीछे की ओर देखो और अपने पीछे के सुन्दर स्रोतो के गहरे घूंट पिओ और इसके बाद भविष्य भारतवर्ष को शानदार और महान व उच्च बना दो। जैसा कभी न रहा हो। महर्षि ने भी कहा था कि पीछे की ओर लौटो हमारे पीछे खड़े हो जाओ। हमारे महापुरुष महान थे। हमे अपने अस्तित्व और रक्तके अवयवो का अध्ययन करना चाहिये। हमारी उस रक्त मे निष्ठा होनी चाहिये। और उसमें भी जो इसने भूतकाल मे किया है।

हमार सुन्दर भविष्य अपने भूतकाल में से ही बन सकता है। भूतकाल तक पहुचने और ठीक समझने के लिये संस्कृत का पठन-पाठन अत्यन्त आवश्यक है।

संस्कृत की अनेकानेक विशेषताये है उनमे से एक विशेषता उसकी अपरिमिता और मानवोचित प्रेरणाये हैं। संस्कृत के पण्डितों की व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर सम्मति है कि संस्कृति के साहित्य के अध्ययन का प्रभाव मनुष्य के दिमाग और आचार पर बहुत ही उत्तम पड़ता है। अर्थात् एक शब्द में मानवता के लिये होता है।

संस्कृत साहित्य का विस्तार विविधता और बहुमूल्यता ये तीनो बातें समस्त कालो में इसकी महत्ता की द्योतक हैं। संस्कृत साहित्य मनुष्य के आन्तरिक जीवन को जैसा परिपक्व सुन्दर विश्वभावनामय वास्तविक अर्थों मे मानवोचित बनाने की क्षमता रखता है। वैसी क्षमता दुनिया का अन्य कोई साहित्य नहीं रखता है।

अत आज परीक्षा की कसौटी है संगठन की मांग है कि जनगणना में अपनी भाषा संस्कृत लिखाये। जिसे लोग मृत भाषा कहते हैं। संगठन का मूल उद्देश्य है कि देश मे अन्यो के मुकाबले अपनी भाषा-संस्कृत को सक्षम दिखाओ। देश का बहुत बड़ा भाग आज भी संस्कृत पढ़ता है। जानता है तो फिर भाषा के खाने में संस्कृत लिखाने मे संकोच क्यो हो।

आज आप स्वय तथा अधिक से अधिक संख्या में लोगो को प्रेरणा दें कि वह भाषा में संस्कृत लिखायें।

तभी उसकी महत्ता जानी जा सकेगी।

सुप्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री पं० आशानन्द जी दूरदर्शन पर

आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध प्रचारक एवं भजनोपदेशक स्वतन्त्रता सेनानी श्री प० आशानन्द जी का एक विशेष कार्यक्रम मंगलवार ११ सितम्बर को सायं ६-१५ से ६ ३० तक 'जमाना अपना अपना" के अन्तर्गत सम्पन्न करने का कार्यक्रम दूरदर्शन ने किया है।

आर्यसमाज के वयोवृद्ध श्री प० आशानन्द जी ने जीवनभर महर्षि दयानन्द सरस्वती, आर्य समाज की सेवा की है। जन-सामान्य से निवेदन है कि मगलवार को ६-१५ साय पर जमाना अपना अपना मे उनके दर्शन करें।

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

आर्य महासम्मेलन

(पृष्ठ १ का शेष)

क्षेत्रों में बाटा गया है। आवास एव भोजन व्यवस्था के लिए उप-समितियां गठित की गई हैं। आर्य समाज के स्कूलो, डी०ए०वी० स्कूल एव कालेज तथा निकटवर्ती धर्मशालाओं में आगन्तुक आर्य जनता के ठहरने के लिए समुचित व्यवस्था की तैयारियों पर विशेष रूप से ध्यान दिया जा रहा है। धन संग्रह समिति तथा स्वागत समिति का गठन भी शीघ्र किया जायेगा।

नामकरण संस्कार वैदिक रीति से संपन्न

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रचार वाहन के चालक श्री अशोक कुमार आर्य के प्रिय सुपुत्र का नामकरण संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से २३ अगस्त १९९० को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्द बोध सरस्वती की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वेदप्रचार अधिष्ठाता स्वरूपानन्द सरस्वती जी ने यज्ञ सम्पन्न कराया और बच्चे का नाम जितेन्द्र कुमार आर्य रखा। नामकरण संस्कार के पश्चात श्री श्यामवीर राघव, श्री दिनेश दत्त, प० चुन्नीलाल आर्य के मधुर भजन हुए। भजनोपदेश उपरान्त उपस्थित बहन-भाइयो ने बच्चे को आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव, श्री प्रियतम दास रसवन्त, स्वामी शान्ता नन्द जी महाराज, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि-सभा के सभी कर्मचारी उपस्थित थे।

नयी सरकार और अल्पसंख्यकों का नया रिश्ता

नये मुस्लिम नेतृत्व का उदय

शाहिद रहीम

आज राज्यसभा में प्रधानमन्त्री को मुसलमानों व अन्य अल्पसंख्यकों के लिए भी आरक्षण की घोषणा करनी पड़ी। इसे मण्डल आयोग की सिफारिशों को लागू करने और उसके बाद 'प्रदर्शनों, के उठ खड़े हुए राजनीतिक तूफान की तार्किक परिणति माना जा रहा है। जब कि इसके पीछे अल्पसंख्यकों. खासकर मुसलमानों का राजनीतिक दबाव काम कर रहा था। हाल ही में दिल्ली में ११ व १२, १३ को अल्पसंख्यकों के दो सम्मेलन हुए थे जिन्हें तथाकथित राष्ट्रीय समाचार-पत्रों ने बिलकुल तरजीह नहीं दी। लेकिन ये दोनों सम्मेलन अल्पसंख्यक राजनीति की बड़ी घटना थीं।

पहले सम्मेलन में खुद प्रधानमन्त्री उपस्थित थे और उसे आम मुसलमान सरकारी सम्मेलन मान रहे थे। दिल्ली के जामा मस्जिद में हुए दूसरे सम्मेलन में सरकार और वी०पी० सिंह की जमकर आलोचना हुई और यहां तक प्रस्ताव रखे गए कि यदि राष्ट्रीय मोर्चा सरकार मुसलमानों के लिए कुछ ठोस कदम नहीं उठाती है तो कांग्रेस से सौदा किया जाए। दरअसल यह चिन्तन मुसलमानों में उभर रहे नये नेतृत्व की विशेषता है जब कि पुराना नेतृत्व खुद को धर्म निरपेक्ष साबित करने के लिए हमेशा मुसलमानों की उपेक्षा करता रहा और कांग्रेस का पिछलग्गू बना रहा। पर अब पुराना नेतृत्व धीरे-धीरे कमजोर होता जा रहा है और नया नेतृत्व उसकी जगह ले रहा है जिसकी अपनी आकांक्षाएं और नीतियां हैं। प्रस्तुत है इसी सन्दर्भ में एक सूचनापरक विश्लेषणात्मक लेख। इसे आज प्रधानमन्त्री द्वारा अल्पसंख्यक वर्गों के लिए की गई घोषणा के साथ जोड़कर देखा जा सकता है।

इधर अनुचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लिये सरकार ने जब से विशेष सुविधाओं और आरक्षण का ऐलान किया है, मुस्लिम नेतृत्व, खास तौर पर वह लोग जिन्होंने जनता दल सरकार बनाने में अपनी भूमिका को कामकारी सिद्ध किया है यह सोचने लगे है कि प्रधानमन्त्री विश्वनाथ प्रतापसिंह मुसलमानों के लिये क्या कर रहे है।

मुसलमानों में यह एहसास आमतौर पर बढता जा रहा है कि विगत ९ महीने में जब सरकार ने उनकी समस्याओं के बारे मे सहानुभूति प्रकट की और कई घोषणाएं की, मगर कुछ ठोस नही किया। ऐसी शिकायत शाही इमाम अब्दुल्ला बुखारी, नायब इमाम, सैयद अहमद बुखारी, राष्ट्रीय मोर्चा के जफरयाब जीलानी, डा. शमीम एम. अफजल व मौलाना ओबैदुल्ला खां आजमी गाहे ब गाहे करते नही थकते।

विश्वस्त सूत्रों के अनुसार एम. अफजल और अब्दुलससमद सिद्दीकी ने महीने में ५ बार प्रधानमन्त्री से यह कहने का नियम बना लिया है कि वह मुसलमानो की समस्याओं के संदर्भ में कोई ठोस कदम उठाए। एम. अफजल ने श्रम एवं कल्याण मन्त्री राम विलास पासवान से यह मांग की थी कि जिस तरह पिछड़ी जाति और अनुसूचित जातियो के लिये मण्डल आयोग की सिफारिशों को लागू किया गया है, उसी तरह अल्पसंख्यक आयोग की सिफारिशे भी लागू होनी चाहिए और उसे सभा अधिकार दिये जाने चाहिये।

इसके अलावा मुसलमानों की माग है कि दगा विरोधी फोर्स जल्द बनाया जाए, सरकारी नौकरियो में मुसलमानो के लिये आबादी के आधार पर आरक्षण हो और उर्दू से सम्बन्धित गुजराल कमेटी की रिपोर्ट को लागू किया जाये।

शाही इमाम सहित उपरोक्त सभी नेता एक बात मानते है कि नयी सरकार ने सांप्रदायिक दगो पर नियन्त्रण पा लिया है। लेकिन नई पीढ़ी धार्मिक भावनाओ से ऊपर उठकर रोजगार के मसले का हल चाहती है। उसे नौकरी चाहिये, उद्योग धन्धो के लिये सस्ते ऋण चाहिए, शैक्षिक धरातल पर पोलिटेक्निक, इन्जीनियरिंग, मेडिकल और ला कालेजो के अलावा आधुनिक तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में प्रवेश के लिये आरक्षण चाहिए क्यो कि शिक्षा के इन क्षेत्रो मे प्रवेश के लिये मुसलमानो के पास ऊंची सिफारिशे और डोनेशन के लिये मोटी रकम नही है। मुसलमान शिक्षा संस्थाओ में भी जनसख्या के आधार पर आरक्षण चाहते हैं।

अपनी समस्याओं के प्रति सचेतना और प्रधानमन्त्री से लगातार कुछ ठोस करने की मुसलमानो की माग से विश्वनाथ प्रतापसिंह इस समय कुछ ज्यादा ही चिन्तित है। क्योंकि वह यह समझ रहे हैं कि मुसलमान घोषणाओ के बहकावे मे अब और नही रह सकता, वह सीधी सौदेबाजी कर रहा है। उधर मुसलमानों के मामले में बात को लम्बा खीचने का भारतीय जनता पार्टी का दबाव प्रधानमन्त्री पर बढ़ता ही जा रहा है।

इसी पृष्ठभूमि पर नायब इमाम सैयद अहमद बुखारी ने ९ अगस्त को प्रधानमन्त्री से मुलाकात की। उस मुलाकात मे जद नेता सुरेन्द्र मोहन और जावेद हबीब भी थे। नतीजे में प्रधानमन्त्री ने मुसलमानों की समस्या पर कुछ कर गुजरने का सकल्प लिया और आनन-फानन मे श्रम एवं कल्याण मन्त्री रामविलास पासवान ने दिल्ली मे ११ अगस्त को अखिल भारतीय अल्पसंख्यक सम्मेलन बुलाया। जिसमे मुसलमानों के अलावा सिखो और ईसाइयो के नेता और सांसद भी शरीक हुए। मुस्लिम नेताओ में डा. रफीक जकरिया, सैयद हामिद, आई. पी. एस. मन्जूर अहमद, बदरुद्दीन तैयब जी, गुलाब महमूद बनातवाला, इब्राहीम सुलेमान सेठ, जद सांसद एम. अफजल, अब्दुससमद सिद्दीकी, तेलगु देशम के सांसद खलीलुर्रहमान, मार्क्सवादी मुहम्मद सलीम, केन्द्रीय मन्त्री मुफ्ती मोहम्मद सईद रशीद मसूद, राज्यसभा उपाध्यक्ष डा. नजमा हेपतुल्ला, पूर्व मन्त्री मार्ग्रेट आल्वा (ईसाई नेतृत्व), असगर अली इन्जीनियर, दक्षिण के नेता डा. बजारत रसूल दैनिक अखबार रहनुमाए-दकन के संपादक विकारुद्दीन वसीम अहमद, इफानुल्लाह मेनन खां सासद), आजम खां (मन्त्री उ प्र. सरकार), सैयद शहाबुद्दीन, अजीज सेठ, इण्डियन यूनियन मुस्लिम लीग के अब्दुल लतीफ, माजपाई सिकन्दर बख्त और आरिफ बेग आदि सम्मेलन के आकर्षण थे।

लेकिन इस ११ अगस्त के अल्पसंख्यक सम्मेलन और जामा मस्जिद दिल्ली मे बुलाए गए जलसे से पहले ही प्रधानमन्त्री ने ससद मे मण्डल आयोग की रिपोर्ट पेश कर दी। जब वह रिपोर्ट पर अपना वक्तव्य दे रहे थे तभी कांग्रेस (इ) नेता पी. शिवशंकर ने हस्तक्षेप करते हुए पूछा कि इस रिपोर्ट मे अल्पसख्यको के लिये कितना हिस्सा है ? फिर उन्होने मांग की कि तमाम मुसलमानो को पिछड़ा समझते हुए उनके लिए भी आरक्षण दिया जाए। इस समय प्रधानमन्त्री ने यह स्पष्ट किया था कि मडल आयोग से मुसलमानों को फायदा पहुंचेगा और उनकी पीड़ित बिरादरियों जैसे अन्सारी, धोबी, नाई वगैरह को आरक्षण की सुविधा मिलेगी। उनके इस आश्वासन पर हगामा होने लगा तो अन्ततः उन्होंने घोषणा कर दी कि अल्पसख्यक आयोग को भी अनुसूचित जाति अनुसूचित जन जाति आयोग की तरह कानूनी अधिकार दिये जायेंगे। यह बात प्रधानमन्त्री ने दोबार दुहराई। फिर एक प्रेस सम्मेलन में कहा कि सरकारी नौकरियो के लिए जो चयन समितिया बनाई जाएंगी उसमें अल्पसख्यक समुदाय के प्रतिनिधि भी शामिल किये जायेंगे। जहां मुस्लिम आबादी ज्यादा है, वहां बैंक खोले जायेंगे और शिक्षा सस्थानो की स्थापना की आएगी। उस दिन प्रधानमन्त्री ने यह भी कहा था कि उन्होने बैंकों को आदेश जारी कर दिया है कि वे १५ सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत अल्पसख्यको को ऋण जारी करें।

परन्तु मुसलमानों ने राज्यसभा में उनकी घोषणा को दिल का बहलाना समझा तो वह मुस्लिम वोट बैंक हाथ से न निकलने देने की स्थिति मे

(शेष पृष्ठ १० पर)

देश के नेताओं यदि देश बचाना है तो आरक्षण पर ऋषि दयानन्द की बात मान लो

लेखक : श्री राममेहर एडवोकेट रोहतक

आज सारे मे आरक्षण बारे चर्चाये चल रही हैं और यह बात चर्चाओं तक सीमित न रह कर सारे देश में आरंक्षण के पक्ष में और विरोध में ज्वालाये उठ रही है दोनो ही देश की एकता और अखण्डता की अपनी लपेट मे ले रही हैं। इन आन्दोलनों के बहुत भयंकर परिणाम निकलेंगे जो देश के लिये घातक सिद्ध होंगे।

जब मे यह लाईन लिख रहा हूं तो नौजवानों के जलूस मण्डल आयोग की शिफारिश के विरोध में नारे लगाते हुए बिल्कुल मेरे साथ से गुजर रहे हैं नौजवानो मे जोश है और प्रदर्शनकारियों की संख्या समाप्त होने को नहीं आती। कल परसो मे इन्हीं प्रदर्शनकारियो ने सरकारी सम्पत्ति को बहुत नुकसान पहुंचाया और पुलिस ने भी लाठी चार्ज करने में कमी नहीं छोड़ी। बाते दोनो ही गलत हैं। राष्ट्र की सम्पति को नुकसान पहुंचाना भी और निहत्थे विद्यार्थियो पर लाठी चार्ज करना भी।

अभी-अभी नौजवानो का एक और भारी जलूस साथ से गुजर रहा है। वह बहुत जोर से नारे लगाते जा रहे हैं। देश के प्रधानमन्त्री के साथ अपनी बहुत सी रिश्तेदारियां बता रहे है और हाय-हाय के नारे भी लगा रहे हैं। जहा और नारे लगा रहे हैं उनमें एक नारा यह भी है "एक दो दिन की बात है इन्साफ हमारे साथ है।" जहां मै बैठा हूं आस-पास इसी विषय पर गर्मागर्म चर्चायें हो रही है और कभी-कभी कोई अफवाह भी चल जाती है जिसमें सरकारी सम्पत्ति को नुकसान, पुलिस के साथ विद्यार्थियों की भिड़न्त की बातें होती है। पता नही कितनी सच हैं, कितनी नहीं। जहां से मैं यह लाईन लिख रहा हूं यह न्यायालय का प्रांगण है और साथ से सड़क जाती है उपायुक्त को ज्ञापन-पत्र देने के लिये सभी प्रदर्शनकारियो को इसी रास्ते से गुजरना पड़ता है। अभी मैडिकल कालेज के छात्र-छात्राओ का जलूस बड़े शिष्टाचार के साथ आ रहा है। एक विद्यार्थी को बुलाकर मैंने पूछ लिया क्या बात है ऐसा तुम क्यों कर रहे हो उसनें कहा यदि लिखित परीक्षा में स्वर्ण-जाति के विद्यार्थी को ७० प्रतिशत अंक मिलते हैं तो उसका मैडिकल कालेज में दाखिला नहीं होता और अनुसूचित जाति का विद्यार्थी १० प्रतिशत अंक भी प्राप्त कर ले तो उसे डाक्टरी मे दाखिला मिल जाता है। भोला-भाला विद्यार्थी कहता है कि वकील साहब आप ही बताओ ऐसा डाक्टर मरीजो का क्या उपचार करेगा और यही कारण है कि जब बडे नेता बीमार होते है तो उन्हें विदेशो के अस्पतालों का सहारा लेना पड़ता है कई समूहो के प्रदर्शनकारियो मे से एक-एक को बुलाकर मैंने पूछा तो उन्होने अपने-अपने तर्क दिए और कहा कि पानी सिर से गुजर गया है। देश के नेता वोट की खातिर इस देश को पता नही कहां ले जायेगे। उन्हे वोट की चिन्ता है, देश की नही।

एक पक्ष यह है कि पिछड़ी हुई जातियो को नौकरियों तथा अन्य स्थानो पर आरक्षण मिलना चाहिए क्योंकि ये जातियां बहुत दिनों से दबी रही हैं और पता नही समाज के कितने अत्याचार इन्होने सहे हैं विधान के अनुसार यदि आरक्षण नही मिला तो यह पिछड़े के पिछड़े रह जायेंगे अतः उनका कहना है कि पिछड़ो जातियो के आधार पर आरक्षण उचित है।

दूसरा पक्ष यह है कि गरीब व्यक्ति हर जाति मे है और यदि कोई अनुसूचित जाति मे पैदा ना होकर किसी दूसरी जाती में पैदा हो तो उसे आक्षरण की सुविधाये क्यो ना मिले। आरक्षण जात-पात के आधार पर ना होकर आर्थिक आधार पर होना चाहिए।

वैसे दोनो पक्षो की बात सुनने के बाद दोनो की बातों मे वजन दिखाई देता है किन्तु यह दोनो ही सिद्धान्त देश के लिए घातक है तीसरा सिद्धान्त मे जिमको ठीक मानता हूं वह है ऋषि दयानन्द का सिद्धान्त।

ऋषि दयानन्द ने सन् १८७४ मे सत्यार्थप्रकाश नामक ग्रन्थ लिखा और यदि सत्यार्थप्रकाश के तीसरे और छटे समुल्लास को गहराई से पढ़ा जाये तो आरक्षण पर ऋषि दयानन्द का सिद्धान्त सामने आता है, यदि इसे अपनाया जाये तो यह राष्ट्र बच सकता है। नही तो राष्ट्र जहां भीतरी और बाहरी बहुत समस्याओ से उलझा हुआ है, वही आरक्षण समस्या भी देश के लिए घातक होगी। ऋषि दयानन्द का सिद्धान्त यह है कि "जब बच्चे आठ वर्ष के हो तभी लड़कों को लड़कों की और लड़कियों को लड़कियों की पाठशाला मे भेज देवें और सबको तुल्य वस्त्र, खान, पान आसन दिए जाये, चाहे वह राजकुमार वा राजकुमारी हो चाहे दरिद्र के सन्तान हों।" जात-पात आर्थिक परिस्थितियां इस बीच में नही आनी चाहिए इस समान व्यवस्था मे बिना ऊंच-नीच के भेद-भाव के वह विद्यार्थी पढ़े और जब स्नातक बनकर शिक्षा समाप्त करके निकले तो योग्यता के आधार पर इन्हें नौकरिया दी जावे। शिक्षा, खान, पान, वस्त्र, दवाई आदि पर सारा खर्च सरकार स्वयं करे और घर से विद्यार्थी को एक पैसा भी ना देना पडे और यदि घर वाले विद्यार्थी को खान-पान के लिए कुछ देना चाहें तो वह भी वर्जित हो।

मेरे विचार से यही रास्ता देश को बचाने, शक्तिशाली बनाने तथा सुसगठित करने का है। पर पता नहीं मेरी यह बात देश के नेताओं तक पहुंचेगी या नही और यदि पहुंचेगी तो क्या उनके गले से नीचे उतरेगी या नही। किन्तु मैं तो देश के नेताओं को यही कहना चाहता हूं कि :

"देश के नेताओ यदि देश बचाना हैं तो
आरक्षण पर ऋषि दयानन्द की बात मान लो"

आर्य समाज और राजनीति

श्री बलराज मधोक

महान् चिन्तक और प्रशासक विष्णुगुप्त चाणक्य ने अपनी महान् कृति अर्थ शास्त्र मे त्रयी (वेद) वार्ता (अर्थ सम्बन्धी ज्ञान) जीवन दर्शन और राजनीति विद्या के चार सर्वश्रेष्ठ अंग बताये हैं। एक दृष्टि से राजनीति सबसे अधिक महत्वपूर्ण है क्योकि ज्ञान विज्ञान और संस्कृति के पनपने के लिये जो उपयुक्त वातावरण है। "राजा कालस्य कारण" का यही भावार्थ है। इसलिये कोई देश और समाज राजनीति की उपेक्षा करके आगे बढ़ना तो दूर वह अपना अस्तित्व भी कायम नही रख सकता। इसलिये राजनीति के सम्बन्ध मे व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाय और इसे धर्म अर्थात् नैतिक मूल्यों और जनहित के आधार पर चलाना किसी भी समाज और राष्ट्र की प्रथम आवश्यकता होती है। जो लोग राजनीति को वारांगना कहते हैं वे या तो राजनीति का अर्थ ही नही समझते या स्वय नैतिक दृष्टि से इतने पतित होते हैं कि उन्हे वारांगना के सिवाय कुछ नजर ही नही आता। ऐसे लोग राजनीति को गन्दा और राष्ट्र जीवन का कलुषित करते हैं।

आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती आर्यावर्त अथवा हिन्दुस्तान और आर्य अथवा हिन्दू राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति चाहते थे। वे हिन्दू समाज की त्रुटियो और विकृतियो को भली प्रकार जानते और समझते थे। विशुद्ध वैदिक ज्ञान और परम्परा के आधार उन्होने उनका विश्लेषण किया, उनकी कारण मीमासा की और उनको दूर करने के उपाय सुझाए। उनके चिन्तन और विचार मन्थन का प्रमुख भडार सत्यार्थ प्रकाश है। राजनीति के सम्बन्ध मे एक पूरा अध्याय लिखकर उन्होने न केवल राजनीति राज्य और के प्रमुख अगो का विशद विवेचन किया अपितु यह भी स्पष्ट किया कि देश और समाज की सर्वांगीण उन्नति के लिये राजनीति को ठीक दिशा देना अत्यावश्यक है। यही कारण है कि आर्यसमाज ने अपने जन्मकाल से ही राजनीति को भी प्रभावित किया। वास्तव मे भारत विशेष रूप में उत्तर भारत मे राजनैतिक चेतना पैदा करने मे आर्य समाज ने न केवल प्रमुख भूमिका अदा की अपितु स्वतन्त्रता आन्दोलन को गति देने और उसे राष्ट्रवादी दिशा देने मे भी इसका मुख्य हाथ था।

हिन्दुस्तान मे विदेशी ब्रिटिश राज के विरुद्ध जनाक्रोश पैदा करने वाले गाधी के पूर्व के तीन प्रमुख नेता जो लाला लाजपतराय, लोकमान्य बाल गगाधर तिलक और विपिनचन्द्र पाल-लाल-बाल-पाल पर आर्य समाज और महर्षि दयानन्द का सर्वाधिक प्रभाव था। उनके चिन्तन पर महर्षि दयानन्द के प्रखर राष्ट्रवाद और यथार्थवाद की छाप बिल्कुल स्पष्ट थी।

लोकमान्य तिलक के निधन और काग्रेस पर गाधी जी का वर्चस्व कायम होने के बाद काग्रेस का चिन्तन आर्यसमाज और विशुद्ध राष्ट्रवाद के मार्ग से हटकर मुस्लिम तुष्टिकरण की ओर चल पड़ा। बार-बार यह घोषणा करके कि मुसलमानो के सहयोग के बिना स्वराज्य नही मिल सकता गाधी जी जाने या अनजाने मे ब्रिटिश शासको का खेल खेलने लगे। ब्रिटिश सरकार की यह सुविचारित नीति थी कि हिन्दू शब्द का अवमूल्यन करके इसे राष्ट्रवाचक शब्द के स्थान पर सम्प्रदायवाचक शब्द बताया जाय, हिन्दू सम्प्रदाय और मुस्लिम सम्प्रदाय को हिन्दुस्तान के दो परस्पर विरोधी समुदायो के रूप मे पेश किया जाय और उनकी सहमति को भारत की स्वशासन देने के लिए पहली शर्त रखा जाय। मुसलमान नेताओं और ब्रिटिश सरकार में इस मामले मे मिली भगत थी। सरकार हिन्दुओ और मुसलमानो मे सहमति पर बल देती, मुसलमान सहमति और सहयोग के लिये अपनी कीमत पेश करते। गाधी के नेतृत्व मे काग्रेस वह कीमत देने का वादा करती और ब्रिटिश सरकार वह कीमत तुरन्त देकर मुसलमानो को अपनी कीमत बढ़ाने के लिये उकसाती।

मिली जुली संस्कृति और मिले-जुले राष्ट्र की बात गाधी जी की मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति का ही अग थी। विशुद्ध राष्ट्र-से प्रेरित आर्यसमाज के काग्रेस में शामिल नेताओ ने इसका विरोध किया और भाई परमानन्द स्वामी श्रद्धानन्द और लाला लाजपत-राय सरीखे कुछ शीर्षस्थ आर्य समाजी राजनेताओं ने काग्रेस से नाता तोड लिया। परन्तु बहुत से अन्य आर्य समाजी स्वतन्त्रता प्राप्ति के लक्ष्य को लेकर काग्रेस से जुडे रहे। राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन उनमे प्रमुख थे परन्तु उनका जीवन गाधीवादी काग्रेस मे प्रभाव लगातार कम होता चला गया।

१९४७ मे भारत का विभाजन और पाकिस्तान के रूप मे भारत की प्राकृतिक सीमाओ के अन्तर्गत इस्लामी राष्ट्र और इस्लामी राज्य के रूप मे पाकिस्तान का उदय गाधी जी की मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति अग्रेजो की कूटनीति और मुसलमानो द्वारा इस्लाम-वाद को राष्ट्रवाद पर वरीयता देने का परिणाम था।

गाधी जी, जो छोटी छोटी बातो पर मरणव्रत रखते थे और जिन्होने कहा था कि "पाकिस्तान मेरी लाश पर बनेगा", न विभाजन के विरुद्ध मरणव्रत रखना ठीक नही समझा। परन्तु कुछ मास बाद भारत सरकार पाकिस्तान ५६ करोड रुपये देने को बाध्य करने के लिये उन्होने एक बार फिर मरणव्रत रख लिया। इससे गाधी जी की छवि सभी राष्ट्रवादियो की नजरो मे गिर गई और देश मे हिन्दुत्ववाद और राष्ट्रवाद की लहर उठने लगी। आर्य समाज की भूमिका इसमे महत्वपूर्ण थी। (क्रमश)

हैदराबाद राज्य मुक्ति आंदोलन में आर्यसमाज की भूमिका

आन्ध्र प्रदेश हिन्दी प्रचार सभा के तत्वावधान में मासिक गोष्ठी 'हैदराबाद राज्य मुक्ति आदोलन मे आर्यसमाज की भूमिका' विषय पर रविवार दिनाक ५ ८ १९९० को पूर्वान्ह ११ बजे प० वन्देमातरम रामचन्द्रराव वरिष्ठ उप-प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली की अध्यक्षता मे हिन्दी भवन मे आयोजित हुई।

साहित्य गोष्ठी के प्रारम्भ मे श्री जी० आर० नरसिम्हाराव, आन्ध्र प्रदेश हिन्दी प्रचार सभा ने कहा कि प० नरेन्द्र जी के मतानुसार आर्य-समाज द्वारा हैदराबाद राज्य मे किये गये कार्यों के इतिहास को चार कालो में विभाजित किया जा सकता है। प्रथम काल आर्य समाजो की स्थापना १८९२ से १९३० तक। द्वितीय काल १९३१ से १९४१ केन्द्रीय सगठन के अधीन में रहकर निजाम राज्य के निरकुशता के प्रति आदोलन। तृतीय काल १९४२ से १९४८ तक आर्यसमाज को एक क्रान्तिकारी आदोलन को सचालित करने का माना जाता है। १९४८ से आज तक रचनात्मक कार्यों का काल माना जा सकता है।

श्री सदानन्द नरसोजी अध्यक्ष आन्ध्र प्रदेश हिन्दी प्रचार सभा से हैदराबाद के मुक्ति आदोलन मे आर्य समाज की जो महत्वपूर्ण भूमिका अदा की उसका वर्णन करते हुए मुख्य अतिथियो का पुष्पमालाओ द्वारा स्वागत किया। स्वागत भाषण मे मुख्य अतिथियो का विस्तार पूर्वक परिचय कराया। प० वन्देमातरम रामचन्द्रराव जी को जीवित शहीद के रूप मे वर्णित किया गया। श्री खण्डेराव कुलकर्णी, भू० पू० प्रधानाचार्य केशव स्मारक विद्यालय नारायणगुडा कई स्वतन्त्रता सेनानियो के प्रेरणा स्त्रोत के केन्द्र बिन्दु थे। उनकी कई महत्वपूर्ण घटनाओ एव व्यक्तित्व का उल्लेख किया गया। आचार्य कृष्णदत्त भू० पू० प्रधानाचार्य हिन्दी महाविद्यालय तथा श्री नारायणराव पवार स्वतन्त्रता सेनानी का सविस्तार परिचय कराया गया।

प० वन्देमातरम रामचन्द्रराव जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे कहा कि आर्यसमाज के सघर्ष के पीछे उद्देश्य आज भी वैसे ही है। निजाम दक्षिण भारत का इस्लामीकरण करना चाहता था। निजाम को ब्रिटीश साम्राज्य से गोवा द्वारा हथियार, सैनिक आदि की मदद मिलती थी। उस समय आर्य समाजी कार्यकर्ताओ ने न सिर्फ प्लाइट नम्बर बल्कि चालक कौन से हथियार इसकी भी जानकारी प्राप्त की थी।

श्री खण्डेराव कुलकर्णी ने कहा कि स्वतन्त्रता केवल निशस्त्र प्रतिकार से प्राप्त नही हुई है। इसके लिए सशस्त्र आदोलन करना पडा। कई आर्य समाजी कार्यकर्ताओ को अपने प्राणो की बलिदानी देनी पडी। उन्होने अपने सस्मरण में कहा कि सर्वप्रथम डॉ० डी० जोशी पर देशद्रोह का मुकदमा चलाया गया। ५ वर्ष तक जेल में कई यातनाऐ सहनी पडी। उसी तरह इस सघर्ष मे धनगीर सेठ आदि कई कार्यकर्ता उल्लेखनीय है। मारवाडी गणेश उत्सव के समय नवाब बहादूर यार जग ने नारा लगाया था— मजहब नही सीखता आपस मे बैर रखना जबकि हैदराबाद मे २५ हजार हिन्दुओ का धर्मान्तरण कराया गया था।

—जी० आर० नरसिम्हाराव
मन्त्री

आरक्षण से इन जातियों का विकास असम्भव

आर्यसमाज के नेता व सुप्रसिद्ध समाज सुधारक डा० प्रशान्त वेदालकार ने प्रधानमन्त्री विश्वनाथ प्रतापसिंह द्वारा मण्डल आयोग के अनुसार २७ प्रतिशत पिछडी जातियो के लिए आरक्षण की बात को बिना राष्ट्रीय बहस के जल्दबाजी मे राजनीतिक स्वार्थ से दिया गया वक्तव्य कहा है। डा० वेदालकार ने कहा कि आरक्षण से इन जातियो का विकास असम्भव है।

वस्तुत इन सभी पिछडी जातियो के बच्चो के निवास, स्वास्थ्य व शैक्षणिक विकास की एक वृहद् योजना से भी इन जातियो का विकास हो सकता है। प्रधानमन्त्री ने पिछडी जाति के लोगो के आवास, शिक्षा व स्वास्थ्य के विकास की कोई क्रान्तिकारी योजना प्रस्तुत नहीं की।

वस्तुत प्रधानमन्त्री ने सवर्ण युवको को आन्दोलन करने के लिए स्वय बाध्य किया है। आरक्षण से जनता के किसी वर्ग के हितो की हानि होती है तो उस हानि की पूर्ति का उपाय पहले ही सोचना चाहिए था और यदि आरक्षण से योग्यता के अभाव के कारण कार्य के स्तर मे कमी आती है तो उसके स्थान पर उनके विकास की अन्य योजनाओ पर विचार अपेक्षित है।

डा० प्रशान्त वेदालकार ने यह भी कहा कि जब तक आरक्षण की व्यवस्था से पिछडी जातियो के समृद्ध, शिक्षित और सस्कारी लोगो को हटाया नही जायेगा तब तक आरक्षण का लाभ सबको प्राप्त नही हो सकता। प्रत्येक व्यक्ति को दो बार से अधिक आरक्षण की सुविधा देने से सभी के विकास की सम्भावना कम है।

—डा० प्रशान्त वेदलकार, ७/१२, रूपनगर, दिल्ली-७

आर्य समाज मन्दिर, शकरपुर, दिल्ली का वेद प्रचार 'सप्ताह'

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व दिनाक १२ से १४ अगस्त ९० तक हर्षोल्लास के साथ मनाया गया जिसमे चतुर्वेद शतक यज्ञ तथा स्वामी स्वरूपानन्द जी, श्री ब्र० राजसिंह आर्य, श्री रत्न सिंह शाण्डिल्य के द्वारा वेद प्रचार एव श्रीकृष्ण के जीवन पर प्रकाश डाला गया। श्री चुन्नीलाल एव श्री इन्द्रदेव के मधुर वाणी मे भजन सुनने को मिले। श्री धर्मेन्द्र कुमार आर्य द्वारा वैदिक धर्म के प्रचार के लिए साहित्य वितरित किया गया। प्रधान श्री ओमप्रकाश कौशिक द्वारा धन्यवाद करने के पश्चात कार्यक्रम समाप्त हुआ।

मन्त्री-आर्य समाज शकरपुर, दिल्ली

आर्यसमाज का उद्धार कौन करेगा ?

श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक अध्यक्ष —वैदिक सस्थान नजीबाबाद, उत्तर प्रदेश

एक समय वह था जब एक देवी ने अपने हृदय की टीस इन शब्दो मे व्यक्त की थी—'किं करोमि क्व गच्छामि कोवेदानुद्धारिष्यति" अर्थात् क्या करू, कहा जाऊ, वेद का उद्धार कौन करेगा ? तब वेद के तात्कालिक महाविद्वान् महामना श्री पण्डित कुमारिल भट्ट ने उस मार्ग से जाते हुए उक्त देवी की टीस को सुनकर कहा था— 'मा विरोम्येष बरारोहे भट्टो अस्मिन भूतले' अर्थात् ऐ सुन्दरी ! तू इस प्रकार विलाप मत कर मैं कुमारिल भट्ट अभी भूतल पर उपस्थित हू ।

तब महामना कुमारिल भट्ट ने वेद के उद्धार का बीडा उठाया था और अब गत उन्नीसवीं शताब्दी में वेद के उद्धार का बीडा महर्षि दयानन्द ने उठाया था तथा अपनी इहलोक लीला समाप्त करने से पहले उन्होने अपने पीछे अपना उत्तराधिकारी अपना मानसपुत्र आर्यसमाज स्थापितकर इस कार्य के लिये नियुक्त कर दिया था। परन्तु क्या आर्यसमाज सचमुच अपने इस उत्तरदायित्व का उस प्रकार से निर्वहन कर रहा है, जिस प्रकार से उसके सस्थापक परिव्राजकाचार्य देव व दयानन्द ने उसे यह कार्य सौंपा था ? यदि इस विषय पर विचार किया जाय तो परिणाम नकारात्मक ही निकलेगा ।

ऋषिवर कभी मिथ्यावाद से समझौता नही करते थे किन्तु इस समय कुछ आर्यसमाजियो ने आर्यसमाज से मच को खेल का मैदान बना रक्खा है जहा प्रत्येक वक्ता अपनी-२ रुचि के अनुकूल खेल खेलता रहता है। जिसके जो मन में आता है वह डालता है। चाहे अयोग्यता के कारण कहे या जानबूझ कर कार्यकर्त्ताओ को इससे कुछ लेना-देना नही कि उसने बात सिद्धान्त की कही है या सिद्धान्त विरुद्ध ? उन्हे तो अपनी कार्यवाही पजिका में मात्र इतना लिख देना होता है कि उत्सव बडी धूमधाम से तथा बडे उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ ।

पिछले दिनो मुझे अनेक लेख श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी के विषय मे आर्यपत्रो मे लिखने पड। उनसे मेरा कोई व्यक्तिगत विरोध नही किन्तु उन्हाने जो अनर्गल वक्तव्य दिये तथा लेख लिखे, उन्हे पढकर मुझे लेखनी उठानी पडी थी। इतने पर भी वह सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोडने को तैयार नही। तथा दूसरी ओर आर्यसमाजी भी आखे खोलने को तैयार नही। उन्हे मेरे द्वारा उनके विचारो पर उठायी गयी आपत्तियो को भ्रान्त सिद्ध करने के लिये मुझसे शास्त्रार्थ करना चाहिये। यदि वह इसके लिये तैयार नही तो शिरोमणि सभा द्वारा उन्हे इसके लिये बाध्य किया जाना चाहिये और यदि वह तैयार नही होते तो यह उनका दुराग्रह होगा और इस स्थिति से उनके आर्यसमाज के मच पर भाषणो का कोई अर्थ नहीं। आर्यसमाज व्यक्ति पूजा तथा कुछ व्यक्तियो की मोज मस्ती का मच नही है अपितु ऋषिवर दयानन्द द्वारा दिये गये वैदिक दृष्टिकोण के प्रचार प्रसार की वेदी है ।

एक दूसरे महापुरुष आर्यसमाज मे है श्री आर्य भिक्षुजी महाराज। जो यह कहकर जनता तथा आर्यसमाजो के कार्यकर्ताओ पर प्रभाव डालते हैं कि जब मैं वाराणसी मे वकालत करता था, जब मैं मुगलसराय का चेयरमैन था। आपसे यह पूछा जा सकता है कि आपने किसवष में बी ए किया था और किस वर्ष मे एल एल बी तथा किन वर्षो मे वकालत की थी और कब मुगलसराय नगरपालिका के चेयरमैन रहे थे ? आप सदैव द्वितीय श्रेणी मे यात्रा करते है या बस द्वारा किन्तु समाजो से किराया लेते है रेल की प्रथम श्रेणी का। इस प्रकार की आपकी गतिविधियो और अपनी योग्यता तथा व्यक्तित्व के विषय मे मिथ्यावक्तृता व्यक्तिगत नही अपितु सामाजिक पाप है एतदर्थ मैंने यह शब्द लिखे हैं, व्यक्तिगत बाते होती तो मैं चर्चा नही करता।

जहा तक प्रश्न योग्यता का है आप "अग्निमीडे को अग्निम-मीडे उच्चारण करते है। मैंने दो बार पहले तो रुडकी की रामनगर कालोनी आर्य-समाज के प्रथम वार्षिकोत्सव पर इस विषय मे कहा था, तब आपका उत्तर था कि पहले तो मै आप ही के कथनानुसार उच्चारण करता था, वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर मे आकर एक व्यक्ति ने मुझे इस प्रकार उच्चारण करना बताया। मैने कहा, अब सुधार करलो किन्तु उसके कुछ वर्ष पश्चात् आप वाराणसी की भोजूवीर आर्यसमाज के उत्सव पर मिले, तब भी वही पूर्ववत् अशुद्ध उच्चारण सुना तो मैंने इन्हे पुन उच्चारण शुद्ध न कर पाने और रुडकी म हुए वार्तालाप की स्मृति दिलायी तो उस समय वहा उपस्थित श्री पण्डित विद्यानन्द मन्तकी ने कहा 'किसे समझा रहे हो वह मान ही नही सकता। अबकी बार आप आर्यसमाज कल्याणी इलाहाबाद के उत्सव पर मिले तो सम्भवत आपको पिछली दो बार की वार्ता स्मरण हो आयी हो अतएव वहा आपने भाषण से पहले बडे विश्वानि देव सवितदुरितानि परासुव मन्त्र से प्रार्थना की तो दोनो स्थलो पर 'आसुव का उच्चारण आसुवम किया और जब सभा में उपस्थित जनो से गायत्रीमन्त्र का उच्चारण कराया तो तत्सवितुर्वरेण्यम् का तत सवितुर्वरेण्यम् बोला अर्थात् तत् का तत बना दिया। वाराणसी और रुडकी मे दोना स्थानो पर वार्तालाप में आपने यद्यपि यह स्वीकार किया कि मुझे आता जाता क्या है ? मैं हिन्दी नही पढा सस्कृत नही पढा। आप गुरुजनो से जो कुछ सुन लेता हू उसे ही गुलदस्ना बनाकर पेश कर देता हू। परन्तु यह स्वीकार करनेवाला व्यक्ति बार-बार बताने पर भी सुधार न कर तो उसके लिये उपयुक्त शब्दो को सब जानते है मुझे लिखने की आवश्यकता नही है।

गत २४ मई को आर्यसमाज कल्याणी इलाहाबाद क उत्सव पर आपने जो भाषण किया, वह इस प्रकार था 'जन्म हाटा है पापो का फल भोगने के लिये। अपराध नही किया तो दण्ड क्यो मिला ? जेल क्यो हुयी ? प्रश्न यह है कि जो पाप नहीं करते अर्थात् धर्मका आचरण करते है उनका जन्म नही

होगा ता कौन गति होगी ? यह सभी जानते है कि पाप का फन दु ख होता है भ्रार धम का फल सुख तथा सुख भौर दु ख दोनो शरीर के द्वारा ही भोगे जात है शरीर भोगायतन है। जन्म होने का भ्रर्थ है भात्मा को शरीर की प्राप्ति। यदि जन्म नहीं होगा तो भ्रात्मा धर्म के फल सुख को किस प्रकार प्राप्त करेगा ? प्रत्येक धर्मात्मा तो मोक्षाधिकारी नही हो जाता भौर मोक्ष मे सुख मिलता नही वहा तो भ्रानन्द की प्राप्ति होती है जो इन्द्रियो भौर इन्द्रिय समुच्चय शरीर का विषय ही नहीं। भ्रानन्द तो मन का भ्रात्मा का विषय है।

एक प्रश्न यह भी है कि जब पाप के परिणामस्वरूप ही जन्म होता है ता फिर सभी प्राणियो का जीवन दु खमय होना चाहिये, किन्तु ससार मे सुखी मानव ही नही कुत्ते तक भी पाये जाते है। ऐसे तो मनुष्य भी कम ही ही पाय जाते है जिन्हे जीवन मे दु ख ही दु ख प्राप्त होता रहता हो। हा, ऐसे लोग भ्रधिक हैं जिन्हे सुख भौर दु ख दोनो की प्राप्ति होती रहती है। कुछ ऐसे लोग भी ससार मे होते हे, जिन्हे जीवनभर या तो दु ख प्राप्त नही होता या नाममात्र को ही दु ख प्राप्त होता है। भ्रार्य भिक्षुजी की परिभाषा क भ्रनुसार तो ब्रह्मा के गुरु चारो भ्रादिकालीन ऋषि भ्रग्नि, वायु भ्रादित्य भौर भ्रगिरा भी पापी थे तो फिर उन्हे ईश्वरीय ज्ञानवेद क्यो प्राप्त हुभ्रा ? फिर ऋषिवर दयानन्द सरस्वती भी उसी श्रेणी मे भ्राते हैं भौर भ्राप स्वय भी तो। जो स्वय ही पापी है भ्रपने पूर्वकृति पापो का फल भोगने को ही जिसने जन्म लिया है उस पापात्मा को धर्मोपदेश करने का क्या भ्रधिकार है ?

जन्म तो है पाप का फल तो बिना जन्म लिये जीवात्मा ने पाप किस प्रकार किस माध्यम किस साधन भौर किस उपकरण से किये थे ? जब पाप कर रहा था तब जीवात्मा कहा भ्रवस्थित था ? भौर किस कारण से उसन पाप किये थे ? फिर परान्तकाल पश्चात् "हि परान्तकाले परिमुच्यन्ति सर्वे मोक्षानन्द प्राप्तकर लेने पर सबका जन्म किस पापके कारण होता है ? मोक्ष तो ज्ञान भौर निष्काम कर्म का फल है। जब तक पाप के सस्कार साथ है पाप ही क्यो, जबतक फल प्राप्ति की इच्छा से किये गय शुभ कर्मों भ्रर्थात् धर्म कार्यो के भी सस्कार साथ है तबतक मोक्ष नहीं हो सकता। ऐसी स्थिति मे पापो से निर्लिप्त रहते हुए जीवात्मा जन्म लेते है। जन्म ही न हो तो भ्रागे सृष्टि किस प्रकार चले ? सृष्टि ही समाप्त हो जाये, तो जीवात्माभ्रो की उपयोगिता ही क्या रह जायगी ? तथा मोक्षावधि पूर्ण करने पर जीवात्मा मोक्ष मे रहने के भ्रधिकारी नही रहते क्योकि वह भ्रपने द्वारा मोक्ष प्राप्ति के कर्मों का फल पूर्णरूपेण प्राप्त कर चुके। जीवात्मा भ्रपनी सीमित शक्तियो के कारण जो कर्म करता है, यह सीमित ही होते है भौर सीमित कम का फल भ्रसामित कदापि नही हो सकता।

जब सृष्टि नही होगी तो सृष्टिके उपादान कारण प्रकृति की उपयोगिता भी समाप्त हो जायगी भौर फिर परमात्मा की ही उपयोगिता कहा रह जायगी ? सृष्टि होगा नही तो परमात्मा के सृष्टि कर्तृत्व पुरुषार्थ दयालुता न्यायकारिता भ्रादि गुणो सहित परमात्मा हा भ्रनुपयोगी हो जयगा। उपयुक्त तथा इनसे सम्बद्ध भ्रन्य उत्पन्न होने वाले प्रश्नो के उत्तर भ्रार्य भिक्षुजी जन्म-जन्मान्तर मे भ्रनन्तकाल तक भी नही दे सकेगे।

मुरादाबाद मे एक भाषण म भ्रापने कहा था 'यज्ञ न करना पाप है, करना पुण्य नहीं कर्तव्य है। इसका भ्रर्थ है कि भ्राप पाप, पुण्य, कर्तव्य भ्रादि शब्दों के भ्रर्थ तक नही जानते। पाप भौर पुण्य परस्पर विलोम हैं। जो पाप है वह पुण्य नही भौर जो पुण्य है वह पाप नही हो सकता। कर्तव्य का भ्रर्थ है किये जाने के योग्य भौर भ्रकर्तव्य का भ्रथ है न किये के योग्य। किये जाने योग्य को ही कर्तव्य कहते हैं भौर न किये जाने योग्य को पाप कहते है। यज्ञका न किया जाना पाप है तो किया जाना कर्तव्य भ्रर्थात् धर्म है भौर धम का ही नाम पुण्य हैं। भ्रार्य भिक्षु जी पर्यायवाची भौर विलोम शब्दो का ज्ञान पहले प्राप्त कर प्रयोग बाद में। मेरा उनसे यह नम्र निवेदन है कि या तो मेरे उपर्युक्त विवेचनो को झुठलावें भौर भ्रपनी स्थापना को सत्य सिद्ध कर भ्रन्यथा भ्रायसमाज के मच पर भाषण करना छोडकर भ्रध्ययन प्रारम्भ करे।

इस प्रकार के वक्ताभ्रा से भ्रायसमाजी वेद प्रचार करायेंगे ? या जान-बूझकर स्वय भ्रार्यबन्धुभ्रों ने ही भ्रायसमाज का भ्रान्त चित्र जनता के सामने प्रस्तुत करने का सकल्प कर रक्खा है ?

भ्रार्य भिक्षुजी की एक विशेषता यह है कि जहा भ्रार्यसमाज भवन मे यज्ञशाला न हो वहा उसके लिये ५ १० सहस्र रुपये देने की घोषणा कर देते हैं भौर जहा भ्रार्यसमाज का भ्रपना भवन हो वहा भ्रार्यसमाज भवन के लिये कमरा बनवाने या कुछ सहस्र रुपये देने की घोषणा कर देते हैं। बस फिर क्या था दो चार वर्ष भ्रापको रुपये मिलने के लोभ मे बुलाया जाता रहता है, दक्षिणा भी भ्रधिकाधिक मिलती है भौर प्रथम श्रेणी का, रेल भाडा भी देते कही एक कौडी नही दी। इलाहाबाद की कल्याणी भ्रार्यसमाज के विषय मे भ्रपनी ऐसी घोषणा की बात स्वय मुझसे भ्रापने कही भौर कुण्डा जनपद प्रतापगढ मे दो वर्ष तक भ्रापने दस सहस्र देने की घोषणा की किन्तु दिये भ्राज तक दस पैसे भी नही। सम्भवत वह 'सत्य को ग्रहण करने भौर भ्रसत्य को छोडने तथा सब काम धर्मानुसार भ्रर्थात् सत्य भौर भ्रसत्य को विचार कर करने' वाले भ्रार्यसमाज के नियमो का पालन भौर क्रियात्मक भ्रर्थात् साचार प्रचार कर रहे हैं।

भ्रार्यसमाज को ऋषि दयानन्द ने वेद के उद्धार का दायित्व सौंपा था किन्तु इस समय तो इस प्रकार के वक्ताभ्रो भौर ऐसे व्यक्तियो के भ्रन्ध भक्तो से भ्रार्यसमाज के उद्धार का प्रश्न उपस्थित हो गया है। हमारा निवेदन है कि भ्रार्यों की शिरोमणि सार्वदेशिक भ्रार्य प्रतिनिधि सभा इस दायित्व को वहन करे। इन महापुरुषो से हमारे शास्त्रार्थ को व्यवस्था करे भौर यदि यह लोग शास्त्राथ के लिये तैयार न हो तो इनके लिये भ्रार्यसमाज की वेदी बन्द कर दे।

ईश्वर पूजा का वैदिक स्वरूप (३)

शास्त्रार्थ महारथी रामचन्द्र देहलवी

कृष्णचन्द्र जी के लिए भी यही बात है। कितने बड़े विद्वान थे। कैसे बड़े नीतिवान और बलवान् थे। तीनो गुण उनमें थे। हमको भी अपने अदर ये चीजें धारण करनी चाहिए। उन्होने छोटे-छोटे माडलिक राजाओ को मिलाकर एक महाभारत बना दिया था। आज भारत के टुकडे होते चले जा रहे हैं। आप न होने दीजिए इन टुकडो को। उनके चरित्रा को सीखिए पीछे चलने का यह अर्थ नही है कि आप नाचने लगें। किसी को राधा बना लें और आप उसके साथ नाचें। यह कृष्ण का चरित्र नही था।

यह बात कही जाती है तो लोग नाराज हो जाते है। क्या यह नाराज होने की बात है? कृष्ण जो क्या नचनिए थे? हर्गिज नही। वह आप्त पुरुष थे। योगी थे। लोगो ने सोचा-समझा नहीं। उसी का दुष्परिणाम आज देख लीजिए। क्या नाच की कोई कमी है? आज तो हमारी सरकार के बड़े से बड़े नेता नाच के हामी हैं। हमारे नेहरू साहब भी नाचते हैं। लोग कहा करते है नचनियो का राज्य हो रहा है। लोग कहते है हमे सुनना पड़ता है। प्रत्येक सास्कृतिक समारोह मे नाच पहले होता है। नाच ही सब जगह प्रधान है। यह नाच नही, नाश है जो हो ही रहा है।

राज्य नाच से कायम नहा रहते। मै कहता हू, बुद्धिमान् सारे कहते हैं और इतिहास इसकी पुष्टि करता है। राज्य बलवान् और नीतिवान् पुरुष किया करते हैं। तो कृष्ण जी के चरित्र के अनुसार अपना चरित्र बनाइए।

चित्र के बारे मे एक बात यह विशेष कहनी है कि किसी के भी चित्र में उनके सारे चरित्र नही आते। क्या जो चित्र कृष्ण जी का घर मे लगा है उसमे कृष्ण जी के सारे चरित्र चित्रित है या क्या किये जा सकते हैं? क्या स्वामी दयानन्द जी का सारा चरित्र एक चित्र मे आ जाता है? नहीं न! कोई भी चित्र ऐसा नही है जिसमें चित्रित व्यक्ति का सारा चरित्र आ जाय। तो चित्र से व्यक्ति को याद करके उसके चरित्र जानने की उत्कठा होती है और फिर चरित्र जानकर अपने को वैसा बनाने की इच्छा। तो कृष्णचन्द्र जी के जीवन से शिक्षा लेकर भारत की उन्नति करे। रामचन्द्र जी के चरित्र को भी ध्यान मे रखे। आज भाई-भाई आपस में छोटी-छोटी बातो के लिए लड़ते-फिरते हैं किन्तु राम ने अपने छोटे भाई भरत के लिए सारे अयोध्या के राज्य को ठोकर लगा दी। तो आप राम की तरह से भाई के लिए त्याग करना सीखे। अगर राम के चरित्र का हम पर इतना भी प्रभाव न पड़ा तो रामायण के पाठ का क्या लाभ?

इन सब बातो से आप अन्दाजा लगाइये कि मै कहा तक आपके साथ हू। जितनी बात बुद्धिपूर्वक होगी मै आपके साथ-साथ वहा तक मानूगा। आगे मै नही मानूगा। तो राम और कृष्ण की सच्ची सेवा यह है कि आप उनके चारित्रिक गुणो को जानकर अपने गुण भी वैसे ही बनाने का प्रयत्न करे, वैसे ही गुण धारण करे। यदि आप उनके ऊपर जलेबी रखने लगे, लड्डू रखने लगे या उन पर पानी डालने लगे तो यह उनकी पूजा नही है, न यह उनकी सेवा है। गुणो को धारण करना ही उनकी सेवा है।

मैं आपको अपने जन्म स्थान (नीमच छावनी) की बात सुनाता हू। वहा जब लोग मन्दिरो में आते है तो मन्दिर मे घुसने से पहले वहा लटका हुआ घण्टा बड़ी जोर से बजाते है और घण्टा बजाकर बोलते है, 'भेज ५६ करोड की चौथाई' अर्थात् १४ करोड भेज। मैंने उनसे पूछा 'भाई तुम सीधे से १४ करोड क्या नही मागते? छप्पन करोड की चौथाई क्यो कहते हो? बोले - 'अजी घण्टा तो यो बजाते हैं कि महादेव जी नशे मे रहते हे जरा जाग जायें, नशा कम हो जाय और वे हमारी बात सुन ले। छप्पन करोड की चौथाई यो कहते हैं कि वे भोले हैं उन्हे याद तो कुछ रहता नहीं है। छप्पन करोड ही याद रहेगा चौथाई याद नही रहेगी तो छप्पन करोड ही दे देंगे।

देखा आपने इन भक्तो को? अपने भगवान् को भी धोखा दे रहे है।

एक शख्स है जिसका कोई रिश्तेदार है और वह गुजर गया है। डाक्टर की दवाई जो उनके लिए लाई गई थी वह भी रखी हुई। आप जानते ह लोग यथाशक्ति अपने मरीज को बचाने की सारी कोशिशे करते है। डाक्टर के यहा मे लाई हुई दवा में से खुराक बाकी थी। वह रखी रही। मरीज गुजर गया। मुहल्ले मे सूचना भिजवा दी गई कि हमारे अमुक रिश्तेदार गुजर गए है। श्मशान भूमि मे उन्हे ले जाने के लिए लोग इकट्ठा हो गए। जब उनको अर्थी पर रखा गया तो ये दवा ले आए और लाकर उनके मुह मे डालने लगे। तमाम लोग चिल्ला उठे कि 'बेवकूफ तेरी अक्ल मारी गई है। अब तो ये मर गए मुर्दा हैं अब दवाई पिलाने का क्या लाभ?' बोला, मै लाया तो इन्ही के लिए था। लोगो ने कहा लाया तो इन्ही के लिए था लेकिन अब तो मर गये। जिन्दा तो है नही तू इन्हें अब क्या दवाई पिलाता है? अब क्या ये दवाई पी लेगे?' फिर वह बोला, यदि य नही पीते तो आप लीजिये, दवा के पैसे तो वसूल होने ही चाहिए। लोग कहने लगे कि तू बड़ा मूर्ख आदमी है हम दवाई क्यो पी ल हम कोई बीमार हे जो दवाई पीवे? तो उसने कहा, इसीलिए तो पिला रहा हू। आप पिलाने क्यो नही देत? इन सब बातो को मान लीजिए कोई आर्य पुरुष सुन ले और यह कह दे कि जो दो-चार घण्टे पहले जिन्दा था और अब मर गया है उसे दवाई पिलाने वाले को तो आप बेवकूफ बता रहे है जो कभी जिन्दा थे ही नही, प्रारम्भ से ही मन्दिर मे पत्थर के रखे है। उन्ह जो लोग खिलाते-पिलाते है और लड्डू-पेडे चढातेहैं वे कितने बड़े बेवकूफ होगे। इसको Rule of three से समझदार लोग लगा ले। अक्ल व हिसाब वाले ही सोच और विचारे। भगवान् की उपासना क्या लड्डू और जलेबी चढाने से होती है? नही! बिल्कुल नही!! यह उपासना का तरीका नही है!!!

मूर्ति के रखने मे कोई हर्ज नही! मैने पहले भी कहा था कि आप दो मूर्तिया बनवाए एक स्वय रख और एक मुझे दे। कह दीजिए लोगो को कि एक मूर्ति रामचन्द्र ले गया। लोग मुझसे पूछेंगे कि क्या करत है आप कृष्ण की मूर्ति का? मै उत्तर दूगा कि मूर्ति देखकर मैं उनके चरित्र याद करता हू कि उन्होने कितना बडा काम किया, कितने बड़े विद्वान् और नीतिमान् पुरुष थे जो सारी सभा मे वे ही प्रधान चुने गये। इसलिए हमको भी ऐसा ही बनना चाहिए। मैं यह नही सीखूगा कि उनके ऊपर लड्डू-जलेबी चढाने लगू कि चिड़ियाए आए और उन्हे खा जाये, सारी मूर्ति को खराब कर जाय। जिन लोगो ने यह तरीका अख्तियार कर रखा है कितना गलत काम किया है इसका कोई अन्दाजा हो सकता है? यह सरासर लोग भूल किये जा रह। ईश्वर की ऐसे पूजा नही होती।

एक साहब ने मुझसे पूछ लिया कि 'पण्डित जी आप अपने वालिद साहब की तस्वीर को क्या समझते हैं? मैंने कहा मैने कहा, 'इतना इसमे और जोड दीजिए कि जिसको मैंने ही खींचा हो।' मेने उत्तर दिया, 'क्योकि तस्वीर मैंने बनाई है इसलिए मैं तस्वीर का बाप हू। तस्वीर का कर्ता मै हू, इसलिए मैं तस्वीर का बाप हू। जो चीज मुझसे उत्पन्न हुई है वह मेरे बच्चे की जगह तो है हीं। उत्तर को सुनकर कहने लगे कि हा, उत्तर तो ठीक हो गया।

तो मैंने निवेदन किया कि आप मूर्तिया रख यदि रखना चाहे तो। किन्तु ऐसे रखे जैसे मैंने बताया है। कोई हर्ज नही है। मैं तो इनकी आवश्यकता नही समझता। यदि आप समझत है तो अवश्य रख और अपना चरित्र उन जैसा बनाए तभी कुछ लाभ होगा। वैसे कभी भी एक ही चित्र से सारे चरित्र प्रकट नही किये जा सकत। आज तक इस प्रकार के चित्रण मे कोई सफल नही हुआ है। तो चित्र को देखकर जिनका वह चित्र है उनके शुभ गुणो को धारण करने का प्रयत्न करे।

बहुत से लोग मूर्तियो के सामने नाचन है गाते हैं उनके सामने हाथ जोडते हैं। मूर्तियो में ज्ञान कोई नही है तब भी वे करत है। मान लीजिए कक्षा मे कोई मास्टर सो रहा हो और कुछ लडके उन सोते हुआ से छुट्टी मागकर चले जाते है कोई पेशाब करने चला गया, कोई पानी पीने। जब लडके लौट आये तो मास्टर ने पूछा, तुम कहा गये थे?' लडके बोले जी आपसे पूछकर पानी पीने गये थे 'कोई बोला पेशाब करने गये थे।' मास्टर ने पूछा कब पूछकर गये थे? लडको ने उत्तर दिया जब आप सोए हुए

(शेष पृष्ठ १० पर)

ईश्वर पूजा का वैदिक स्वरूप

(पृष्ठ १ का शेष)

थे । मास्टर ने सभी को ताडना की और कहा कि बेवकूफो यह इजाजत लेन का समय था ? हम तो सोए हुए थे हमे क्या पता क्या हो रहा है। खबरदार अब कभी भी ऐसे मत जाना । तब वे मूर्ति जो बेजानदार है उनके ऊपर हाथ जोडने या नाचने का क्या असर हो सकता है ? उनके सामने यह क्रियाए करना फिजूल है उसका कोई लाभ नही है ।

सच्ची उपासना क्या है यह अब मै आपकी सेवा मे वर्णन करूगा । जरा ध्यान से सुनिए .

मैने आपको अपने व्याख्यान के पूर्व भाग मे बताया था (चेतनो में) परमेश्वर और (जड पदार्थों मे) प्रकृति दोनो बिल्कुल पूरे हैं इन्हे किसी चीज की आवश्यकता नही है ।

प्रकृति कहती है यदि तुम मुझसे फायदा उठाना चाहो तो उठा लो। मेरा सही प्रयोग करोगे तो तुम्हे लाभ होगा । यदि गलत तरीके से मेरा प्रयोग किया तो हानि होगी । मान लीजिये चूल्हे के पास कोई देवी खाना बना रहा है । यदि वह देवी फूहडपन से काम करेगी उसके कपडे फैले होगे तो आग लग जाएगी और वह खाना बनाने वाली जल जाएगी या जलकर मर जायेगी क्योकि आग जरा भी लिहाज नही करेगी और जला देगी। अग्नि एक प्राकृतिक पदार्थ है और उसका ठीक प्रयोग नही किया गया इस लिए उससे हानि हुई । प्राकृतिक पदार्थ न अपने को जानते है तो वे जीवात्मा से कहत हैं कि तुम्ही सोच समझकर लाभ उठा लो हमे कुछ पता नही है।

(क्रमश)

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह अर्ध शताब्दी स्थगित

हैदराबाद आर्य सत्याग्रहियो की सूची पूर्णरूपेणसे न प्राप्त होने के कारण १६ १७ १८ सितम्बर अर्द्ध शताब्दी समारोह स्थगित कर दिया गया है। दिनाक एव तिथि पुन आपको सूचित करेंगे ।

—मन्त्री

आर्य वेद प्रचार मण्डल, फैजाबाद

नई सरकार

(पृष्ठ ९ ९ का शेष)

आकर अल्पसख्यको के सम्मेलन में पहुचे । जहा अपने भाषण मे उन्होने इस बात को स्वीकार किया कि भारत में अल्पसख्यको को अलग करके कोई सरकार नही चल सकती । बाद मे प्रधानमन्त्री ने राज्यसभा और लोकसभा मे कही गयी अपनी उपरोक्त बातो को दुहराया । बाबरी मस्जिद मामले पर विश्वनाथ प्रताप सिंह ने कहा कि दोनो पक्षो को अदालत का फैसला हर कीमत पर मानना होगा ।

अल्पसख्यक आयोग को सवैधानिक दर्जा देने के मामले पर प्रधानमन्त्री ने पूरी ईमानदारी से एक नई बात यह कही कि वह इस पर काबीना मे विचार कर रहे हैं । लेकिन केवल नौकरियो से मुसलमानो की समस्या हल नही हो जाएगी । करोडो को नौकरी देना उनके बस में नही । परन्तु वह अल्पसख्यको की सुरक्षा के साथ-साथ इस बात के लिए प्रतिबद्ध है कि अल्पसख्यक देश के नागरिक है और उन्हे उसका हिस्सा चाहिए । अल्पसख्यको की लडाई सुविधाओ की नही साझेदारी की लडाई है । इसलिए मुसलमानो को थोड दिन और सब्र से और धैर्य से काम लेना चाहिए ।

द गा पीडिता के लिए अल्पसख्यक सम्मेलन में प्रधानमन्त्री ने मुआवजे की रकम को बीस से पचास हजार करने की घोषणा के साथ यह कहा कि दगे की विधवाओ को सरकार ५०० रुपये मासिक पेंशन देगा । रेडियो और टी०वी० के बारे मे उन्होने कहा कि उसे आदेश जारी कर दिये गये हैं कि जिन लोगा ने इतिहास मे लोकतान्त्रिकता आधार पर जीवन जिया है उस पर काम करे ।

अन्तर्राष्ट्रीय प्रचारक दम्पत्ति कुंवर जोरावरसिंह व स्नातिका प्रभावती देवी जिन्होंने आर्य समाज के लिए जीवन दिया



महर्षि दयानन्द को अपना पथ प्रदर्शक मानकर और उनके उपदेशो को अपने जीवन में ढालकर जिन लोगो ने उनके सदेश को जन जन तक पहुचाने को अपने जीवन का ध्येय बनाकर कार्य किया। उनमे प्रचारक दम्पति कुवर जोरावरसिंह व उनकी विदुषी धर्मपत्नी प्रभावती देवी का नाम गौरव से लिया जायेगा उनके मधुर कठ से गाया सगीत हृदय स्पर्शी कविताये व ओजस्वी व्याख्यान श्रोताओ को प्रभावित किये बिना नही रहते।

प्रभावती देवी की मातृभाषा गुजराती है परन्तु वे इतनी अच्छी हिन्दी बोलती हैं। वे कन्या गुरुकुल बडोदा की स्नातिका हैं और शास्त्रीय सगीत की अच्छी जानकर है। उन की बडी बहन यशोदा कुमारी भी कन्या गुरुकुल बडोदा की आचार्या व मुख्याधिष्ठा भी रही है। उनका सारा परिवार आर्य समाजी हैं।

कार्य क्षेत्र

आसाम को छोडकर सारा भारत ही उनका प्रचार क्षेत्र रहा है। उत्तर प्रदेश, बिहार, बगाल, राजस्थान, आन्ध्र, महाराष्ट्र, गुजरात कच्छ काठियावाड, पजाब, हरियाणा, काश्मीर, हिमाचल प्रदेश, सिन्ध, उडीसा, मद्रास, मैसूर का शायद ही कोई नगर हो जहा उनकी सेवाओ से जनता को लाभ न उठाया हो।

उन्होने तीन विदेशी भाषाए सीखी हैं। जिसमे अफ्रीका महाद्वीप के केनिया, युगान्डा, टोगानिका मजीकर, बोलीयन कोम्गो तथा दक्षिण रगरीया के बैंकोक थाईलैण्ड व सिंगापुर ७ देशो का वहा की जनता के निमन्त्रण पर प्रचार प्रवास किया है। वहा के कई नगरो से उन्हे छपे मान पत्र मिले हैं। जिन्हें मान पत्र न कहकर प्रमाण पत्र कहते हैं। उनका निर्वाह दक्षिणा से हुआ है परन्तु कभी किसी से दक्षिणा ठहराई मागी नही। अपने घर आये हुए विद्वानो का भी वे दक्षिणा वस्त्रो से सम्मान करते रहे है।

सामाजिक क्रान्ति

आर्य समाज जन्म जाति को नही मानता। परन्तु इस सस्था के बहुत थोडे लोगो ने जन्म जाति के बन्धनो को तोडा है। उन थोडे लोगो में उन का नाम विशेष रूप से लिया जाता है। उन्होंने अपना विवाह प्रान्तीय व जातीय बन्धनो को तोडकर एक गुजराती कन्या से किया और परिवार मे लगभग सभी विवाह प्रान्तीय व जातीय बन्धनो को तोडकर किये हैं।

धाय गांव के मूले गुर्जरो की शुद्धि उनके चाचा भीमसिंह जी के सहयोग से की। अपने गाव ७ मजिबी को कुए से पानी भरवाने का उन्ही का प्रयत्न था। उनके घर मे चमार की लडकी भोजन बनाती रही है। उनका जीवन इतना परोपकार मय रहा है कि बरसाना जैसे तीर्थस्थान के पण्डे पुजारियो ने भी उन्हें गांव का प्रधान निर्वाचित किया।

अपनी आय का दशमाश वे गरीबों को कपडे बाटने व दीन दुखियो की सहायता मे व्यय करते है। इस दान प्रक्रिया मे वे धार्मिक भेद भाव नहीं रखते। गाव के सभी शुभ कार्यों मे उनका चन्दा सबसे अधिक होता है। यो तो उनके अपने २० मकान हैं। परन्तु ४ कमरों का आश्रम विभाग भी है जिसमे किसी को भी ठहरने की नि शुल्क व्यवस्था है।

साहित्य

वे अधिकाश कवितायें अपनी ही गाते हैं। अन्य कवियो की भी अच्छी कविताओ व भजनो का भी ये प्रयोग करत हैं।

उनकी कविता की १६ पुस्तके छप कर जनता के हाथो में पहुची है। पाकिस्तान के विरोध मे लिखी उनकी कविता पाकिस्तान पच्चीसी" तो इतनी लोकप्रिय हुई कि हिन्दी के अतिरिक्त गुजराती, मराठी, व उर्दू सस्करण भी प्रकाशित हुए। एक दर्जन समाचार पत्रो ने उनकी प्रशसा की व आर्यसमाज के सभी नेताओ तथा सावरकर मुजे व श्यामाप्रसाद मुखर्जी जैसे नेताओ ने भी उसकी भूरि भूरि प्रशसा की।

उनकी कविता श्रोता को रुलाये बिना नही रहती। अन्तिम सन्देश बलिदान व वीरता की अनूठी कविता है।

यद्यपि अब वे वृद्ध हो चले हैं। फिर भी प्रचार मे सलग्न है और जो समाजे अर्थाभाव से प्रचार से वचित रहती हैं उन्हे भी समय देते हैं।

कुवर जोरावरसिंह मथुरा जिले के बरसाना ग्राम के निवासी हैं। बरसाना राधा कृष्ण के भक्तो की मान्यता से राधा की जन्मभूमि व प्रसिद्ध तीर्थ है। महर्षि दयानन्द के विचारो ने उनका कायाकल्प किया और आज वे आर्य समाज के उच्च प्रचारको की श्रेणी में है। आशा है वे अन्त तक आर्य समाज का प्रचार करेंगे।

दिलीप कुमार एम०ए०, बरसाना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा का वार्षिक अधिवेशन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा का वार्षिक साधारण अधिवेशन दिनाक २८ अक्तूबर, १९९० रविवार को सभा के मुख्य कार्यालय, दयानन्द मठ, रोहतक मे होना निश्चित हुआ है। इस अवसर पर सभा तथा इससे सम्बन्धित आर्य शिक्षण सस्थाओ के वार्षिक वृतान्त आय-व्यय तथा बजट स्वीकार किये जायेंगे और सभा के लिए आगामी वर्ष के लिए पदाधिकारी तथा अन्तरग सदस्यो आदि का निर्वाचन किया जावेगा। सभा से सम्बन्धित आर्य समाजो के (जिनका सम्बन्ध कम से कम दो वर्ष पूर्व हो चुका है) के प्रतिनिधियो से निवेदन कि वे अपने आर्य समाजो से गत वर्ष का प्राप्तव्य वेद प्रचार दशाश तथा सर्वहितकारी का शुल्क १३ अक्तूबर १९९० तक सभा के उपदेशको द्वारा अथवा सभा कार्यालय रोहतक मे धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा अवश्य भेजने का कष्ट करें। जिन आर्य समाजो से प्राप्तव्य धनराशि समय पर प्राप्त हो जावेगी, उनके प्रतिनिधियो को ही समय पर अधिवेशन का एजेण्डा भेजा जावेगा। —वेदव्रत शास्त्री

आर्य समाज मन्दिर का शिलान्यास

ग्राम ढाणी माहू (भिवानी) मे १८ अगस्त १९९० शनिवार को ब्रह्मचारी ओमस्वरूप आचार्य गुरुकुल डिकाडला (पानीपत) की अध्यक्षता मे स्वामी प्रेमानन्द सरस्वती अध्यक्ष सन्यासाश्रम गाजियाबाद (उ० प्र०) ने आर्य-समाज मन्दिर की आधार शिला रखी। तीन चार दिन गाव मे वेद प्रचार किया। ८० यज्ञोपवीत दिये गये तथा सैकडो रुपये का वैदिक साहित्य चौ० मुशीराम बिन्झोल वेद प्रचार ट्रस्ट की ओर से बाटा गया। बहुत से नौजवानो ने धूम्रपान और शराब छोडने का व्रत लिया। ग्राम सभा ने एक एकड भूमि दानस्वरूप दी है।

ध्यानसिंह आर्य

आर्य समाज ढाणी माहू भिवानी

रजि० नं० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (९-९-१९९०) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U ९३
R.N. 626/57 Licensed to post without Prepayment License No U 93 Post in D.P.S.O.on 7 9 1990

ऊंचा वही कहाता है

ऊंचा वही कहाता है जिसका उच्च विचार हो
निज कर्त्तव्य निभाये जिसको देश धर्म से प्यार हो ॥
जो पुरुष विवेकी होते हैं निज पर काबू कर पाते हैं ।
इन्द्रियां वश मे कर लेते वह जितेन्द्रिय कहलाते हैं ॥
दुष्ट दुराचारी व्यसनी ही जीवन मे बीमार हो ॥१॥
जो सदा स्वजन, विद्वानो की सेवा मे समय लगाता है ।
वह आयु विद्या, प्रज्ञा कीर्ति चार पदारथ पाता है ॥
जो मधुर सत्य वाणी बोले जन जन से करता प्यार हो ॥२॥
जो सत्य पथ पर चलकर औरो को सत्यपथ दिखलाये ।
देश धर्म से प्यार करे कल्याण मार्ग ही अपनाये ॥
धर्म नही जाने देता तन जाना ही स्वीकार हो ॥३॥
जो बनकर सूर्य प्रकाश सभी अज्ञान अंधेरा हरता है ।
वह नाम अमर पद पाता है जो देश धर्म पर मरता है ॥
[illegible] ।
ऊंचा वही कहाता है जिसका उच्च विचार हो ॥

ले० स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

आर्य समाज गांवों की जनता तक पहुंचे

भारत वर्ष में ६ लाख गांव हैं । शहरो की आबादी बहुत थोडी है । अब देहाती उठ-उठ कर शहरो मे आ रहे है । क्योंकि गावो मे वह सुख सुविधा नही जो शहरो में उपलब्ध है । परन्तु शुद्ध जल, वायु वातावरण व शुद्ध घी दूध और सादा जीवन तो ग्रामो में ही मिलता है । आर्य समाज आज तक शहरो व बडे कस्बो तक ही सीमित रहा है । गावो में यातायात के साधन कम होते हैं । शिक्षा की कमी होती है । परन्तु अब स्थिति बदली जा रही है । अतः हमे ऋषि ऋण उतारने हेतु ग्रामो में पहुचाना होगा । ग्रामीण मढी, मसान, कब्र पूजा, पशुबलि, भूत-प्रेत, जादू, टोना, तीर्थ-यात्रा, मृतक श्राद्ध, छूत-छात, ग्रह-गोचर के बडे पाखण्ड होते हैं इन बातो पर उन्हें समझाया जा सकता है । देहातो में शादी पर बेतहाशा शराब मास पर खर्च करते हैं । वह विवाह सादा भी थोडे समय मे थोडे खर्च से छोटी बारात से भी हो सकता है । परिवार नियोजन के बारे मे समझाया जा सकता है कि ज्यादातर बच्चो की शिक्षा, बीमारी का इलाज नहीं हो सकता है । सिगरेट, तम्बाकू के फजूल खर्च से बचने और मुकदमेबाजी से बचने की बात समझायी जा सकती हैं । दहेज जैसी बुरी प्रथा से उन्हे बचाया जा सकता है । इस प्रकार काम करने से आर्यसमाज लोकप्रिय हो सकती है ।

—स्वामी सुबोधानन्द, दयानन्द मठ, (हि० प्र०)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में
२३ से २६ दिसम्बर तक दिल्ली मे
अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से २३, २४, २५ व २६ दिसम्बर १९९० को अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली मे मनाया जाएगा । इस महासम्मेलन मे देश विदेश के लाखो आर्यों के भाग लेने की सम्भावना है । इस अवसर पर उच्च-कोटि के विद्वान् आमन्त्रित किए जा रहे हैं।

सभी आर्य बन्धुओ तथा समस्त आर्य समाजों से निवेदन है कि वे इस सम्मेलन के लिए तन-मन-धन से सहयोग दें तथा अधिक से अधिक संख्या मे इस महासम्मेलन का लाभ उठाने के लिए अभी से तैयारी कर लें।

दानियों की सूची सार्वदेशिक साप्ताहिक में प्रकाशित की जायेगी, दान की राशि मनीआर्डर, चैक, बैंक ड्राफ्ट आदि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा रामलीला मैदान, नई दिल्ली के पते पर भेजें।

डा० [illegible] शास्त्री
सभा-मन्त्री

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज नई दिल्ली मुद्रित तथा [illegible] शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित

सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख्य पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१ दयानन्दाब्द १६६ दूरभाष : ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष २९ अंक ३६] आश्विन कृ० १२ सं० २०४७ १६ सितम्बर १९९०

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा मण्डल आयोग की

वेद सुधा

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा
जातानि परिता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्तु
वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥
(ऋग्: १०-१२१-१०)

अर्थ—हे प्रजा के स्वामिन् परमेश्वर ! आप से अन्य इस उत्पन्न हुए जगत को व्याप्त करने वाला कोई नहीं है। जिस शुभ कामना को लेकर हम आपकी भक्ति करते हैं वह पूर्ण होवे और हम धन ऐश्वर्य के स्वामी बनें।

शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शंयो रभिस्रवन्तु नः ॥ (यजु० ३६-१२)

अर्थ—हे सर्व व्यापक और सर्व प्रकाशक परमेश्वर ! आप अभीष्ठ फल और आनन्द की प्राप्ति के लिये कल्याणकारी होवें और हम पर सदा सुख की वृष्टि करें।

तेजोऽसि तेजो मयि धेहि।
वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि।
बलमसि बलं मयि धेहि।
ओजोऽसि ओजो मयि धेहि।
मन्युरसि मन्युं मयि धेहि।
सहोऽसि सहो मयि धेहि।
(यजु० १९-९)

अर्थ—हे ईश्वर ! आपका तेज महान् है, मुझे भी तेज धारण करायें ! आप अनन्तवीर्य हैं, मुझ में भी वीर्य धारण करायें। आप बल के भण्डार हैं, मुझे भी बल देवें। आप ओजस्वी हैं, मुझे भी ओज प्रदान करें। आप दुष्टों पर क्रोध करते हैं, मुझे भी दुष्टों पर क्रोध करने की शक्ति दीजिये। आप अत्यन्त सहनशील हैं, मुझे भी सहन शक्ति प्रदान करें।

—कर्मनारायण कपूर

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

आरक्षण नीति का विरोध

आर्य समाज के विद्वानों की मांग

६ सितम्बर १९९०। आर्यसमाज की सर्वोच्च संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आज राजधानी के विट्ठल भाई पटेल भवन में "आदर्श सामाजिक व्यवस्था" विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने की। मारीशस के उच्चायुक्त श्री आनन्दप्रिय निबूर इस गोष्ठी के मुख्य अतिथि थे तथा ट्रिनीडाड के उप-उच्चायुक्त भी उपस्थित थे। सेमिनार में प्रमुख वक्ता डा० लक्ष्मीमल सिंघवी थे, पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव, श्रीमती सुषमापाल तथा आर्य समाज के अन्य अनेक विद्वान् उपस्थित थे।

गोष्ठी के संयोजक श्री विमल वधावन एडवोकेट ने बताया कि इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से दो महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किए गये हैं। प्रथम प्रस्ताव मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा यह महसूस करती है कि विश्व की वर्तमान परिस्थितियों में एक ऐसी सर्व स्वीकारीय सामाजिक व्यवस्था के निर्माण की आवश्यकता है जिसका ढांचा वर्ग रहित हो। जो समस्त राष्ट्रों में एकता शान्ति तथा भाई-चारे को बढ़ावा दें और शोषण रहित हो। सभा का दृढ़ मत है कि वर्णाश्रम पर आधारित सामाजिक व्यवस्था उपरोक्त आकांक्षाओं को पर्याप्त रूप से पूरा कर सकती है। संगोष्ठी में यह निश्चय किया गया कि सामाजिक व्यवस्था की इस अवधारणा के प्रचार एवं प्रसार के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा लक्ष्यबद्ध होकर प्रयत्न करेगी।

दूसरे महत्वपूर्ण प्रस्ताव में मण्डल आयोग की सिफारिशों को लागू करने से उत्पन्न स्थिति पर चिन्ता व्यक्त करते हुए यह स्पष्ट कहा गया कि मण्डल आयोग ने जिस जल्दबाजी से

(शेष पृष्ठ ११ पर)

सभा प्रधान जी को शिमला में १२१००) की थैली भेंट

आर्य समाज लोअर बाजार शिमला के १०८वे वार्षिकोत्सव पर दिनांक ८ सितम्बर १९९० को सभा-प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती को श्रीमती द्रौपदी देवी सुपुत्री स्व० महाशय कन्हैयालाल जी सर्राफ जेजों दोआबा, जिला होशियारपुर ने आर्य समाज लोअर बाजार शिमला के मन्त्री श्री सुदर्शन कुमार कपूर की प्रेरणा पर सभा के शुद्धि प्रचार तथा वेद प्रचार कार्यार्थ दस हजार रुपये के इन्दिरा विकास पत्र स्थिर निधि की स्थापना के लिए भेंट किए। आर्यसमाज ने सार्वदेशिक सभा के रचनात्मक कार्यक्रमों के लिए सहयोग के रूप मे २१०० रुपये की राशि भेंट की।

सभा-प्रधान जी दिल्ली से ६ सितम्बर को रात्रि की गाड़ी से रवाना हुए। आर्य समाज के कर्मठ नेता और हिमाचल प्रदेश के पूर्व मन्त्री पं० विद्याधर जी ने कालका रेलवे स्टेशन पर प्रधान जी की अगवानी की और अपने शिमला स्थित बावनार होटल में स्वामी जी के आवास की सुव्यवस्था की। स्वामी जी ९ सितम्बर को प्रातः दिल्ली लौट आये।

आर्य समाज के उत्सव में स्वामी जी महाराज ने आर्य जनों से एकजुट होकर महर्षि दयानन्द के सन्देश को जन जन तक पहुंचाने और विधर्मी तथा देश द्रोही ताकतों के विरुद्ध शक्ति के साथ मुकाबला करने का आह्वान किया।

अब आर्य समाज का समय आया है

—डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

भारत की सामाजिक रचना में जातिवाद इतना समाया हुआ था कि लाखो चोटे करने पर भी वह हमारे जीवन मे से निकल नहीं सकता था। हर बात जातिवाद की चट्टान-सम भूमि पर टिकी हुई थी। 'स्त्री शूद्रौ नाधीयाताम्' हमारी शिक्षा का गुर था। समाज के एक वर्ग को हमने इतना असमर्थ बना दिया था कि वह समझने ही यह लगा था कि उस वर्ग का काम उच्च वर्ग की सेवा करना है। समाज में ऐसी स्थिति का उत्पन्न हो जाने के अनेक कारण थे, परन्तु उन कारणो के न रहने पर भी समाज के किसी वर्ग को अपाहिज पन का दर्जा दे देना मानवता का अपमान है। मुझे स्मरण है कि एक बार हम लोग जो गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के छात्र थे विश्वविद्यालय के समीप के कुछ अछूत कहे जाने वाले वर्ग के व्यक्तियो की इस शिकायत पर कि गाव वाले उन्हे गाव के कूए से पीने का पानी नही भरने देते, जत्था बनाकर उस गाव मे लोगो को समझाने गये कि वे व्यक्ति तुम से सिर्फ इतना चाहते हैं कि आप लोग इन्हे पीने के पानी के लिए न तरसाओ। हमें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि हमारा विरोध गांवके उच्च वर्ग के लोग ही नही कर रहे थे गाव के दलित वर्ग के व्यक्ति भी हमारा विरोध करने लगे। स्थिति यहा तक बिगड़ी कि जब हमारी प्रेरणा पर दलित-वर्ग ने गाव के कूए से पानी लेना शुरू किया तब गाव के चमारो ने उस कूए से पानी लेना छोड दिया। हमे तब तक यह नही पता था कि चमार भी अपने अपने म से किसी वर्ग को अछूत समझते हैं। अछूत भी अपने सरीखे किसी मानव को अछूत समझे तो यह अमानवता की चरम सीमा है।

अब तक राजनीतिज्ञो को यह कभी नही सूझा कि मानव को मानवता के अधिकारो से वंचित करना सबसे बड़ा अपराध है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद जब यह स्थिति उपस्थित हुई कि चुनाव में हर व्यक्ति को वोट देने का अधिकार है तब राजनीतिज्ञ गणना करने लगे कि किस व्यक्ति के सबसे ज्यादा वोट हैं। जब अधिकार पाना वोटो की संख्या पर आधारित हो गया और दीखने लगा कि सबसे अधिक वोट तो उनके बनते हैं जिन्हे समाज के कर्णधारो ने पानी पीने के अधिकार से वंचित कर रखा है तब नेताओ की आंखे खुली और नेता लोग मानवता के अधिकारो से वंचित इन लोगो के पांवो के तलवे चाटने लगे।

आर्य समाज अपने जन्मकाल से अछूतोद्धार का काम करता रहा है। आर्य समाज के प्रत्येक उत्सव मे एक न एक दिन अछूतोद्धार का होता है। प्रत्येक आर्य समाज मे अछूतोद्धारिणी सभा होती हैं। अछूतोद्धार पर अनेक व्याख्यान दिये जाते हैं। अब तक किसी के सिर जू तक नही रेंगी। अब जब समाज का पुनर्निर्माण करने के यत्न जारी हुए तब दिल्ली बन्द और भारत बन्द के कार्यक्रम शुरू हो गए है। परन्तु दुःख इसी बात का हैं कि इस समय जो आन्दोलन उठा है वह गलत आधार पर उठा है और आधार गलत होने के कारण इसका कालान्तर मे विफल हो जाना निश्चित है।

इस समय जो आन्दोलन उठा है उसका आधार क्या है? इस आन्दोलन का आधार यह है कि अछूतो या दलितो को वे अधिकार दिये जायें जो अब तक उच्च वर्ग के व्यक्तियो के पास थे। परन्तु यह बात बिल्कुल गलत है कि विधान के अनुसार किसी व्यक्ति या वर्ग को कोई अधिकार दिया गया है या दिया गया था। इसके विपरीत यह बात ठीक है कि पिछड़ें या दलित वर्ग को विशेष रूप से कुछ अधिकार देने की व्यवस्था की जा रही है जो अब तक दलित वर्ग के पास दलित होने की वजह से नही थे। भारतीय विधान के अनुसार मानवता के सब अधिकार सब भारतीयो को एक समान हैं, परन्तु 'रिजर्वेशन' का परिणाम यह है कि भारतीय समाज को दो भागों मे बाटकर जो अधिकार सबके एक समान हैं वे सिर्फ दलित कहे जाने वाले व्यक्तियो को दिये जायें, अन्य लोगों को न दिये जायें क्योंकि अन्य वर्ग तो पहले ही भोग रहा हैं, और इस प्रकार भारत का सारा मानव समाज एक वर्ग में आ जाय। परन्तु हमारा यह सब कुछ कहना अरण्य रोदन मात्र है। यहां युक्ति हार कर बैठ जाती है क्योंकि हमने युक्ति से कुछ नहीं कहना, वस्तु स्थिति को देखकर कथा का समाधान करना है। वस्तु स्थिति यह है कि समाज का एक वर्ग पिछड़ा हुआ है, उसे ऊपर उठाने का हमने यत्न करना है, वह यत्न 'रिजर्वेशन' द्वारा ही हो सकता है।

परन्तु 'रिजर्वेशन' के विरुद्ध आन्दोलन करने का परिणाम क्या होगा? परिणाम यह होगा कि 'रिजर्वेशन' नहीं होगा। समाज इस समय जिस स्थिति मे है उस स्थिति में ही बना रहेगा। अछूत अछूत रहेगा, दलित व्यक्ति दलित ही रहेगा। परन्तु यह स्थिति भारतीय संविधान को स्वीकृत नहीं है। संविधान सबको समान स्थिति मे लाना चाहता है। संविधान के अनुसार सबको एक स्थिति में लाने के लिए 'रिजर्वेशन' जरूरी जान पड़ता है। परन्तु अगर रिजर्वेशन लाया जाता है तो अछूतो या दलितो को जो अधिकार मिल जायेगा, समाज के अन्य वर्गो को नही मिलेगा। इस प्रकार भारतीय समाज जो जात-पात के कारण दो वर्गों में बटा हुआ है वह सदा के लिए दो वर्गों मे बटा रहेगा जो भारतीय संविधान के विपरीत है।

भारतीय समाज को एक रखने का क्या उपाय है। इसका उपाय यही है कि न उच्च जाति को विशेष अधिकार दिये जायें, न दलित जाति को विशेष अधिकार दिये जायें। सम्पूर्ण समाज को एक-जुट रखा जाय। जहा तक नौकरियो का सम्बन्ध है वहा वर्ग-भेद को आधार बनाने के स्थान मे योग्यता को आधार बनाया जाय। जो जिस योग्य हो उस योग्यता के आधार पर उसे वह स्थान दिया जाय, अन्यथा एक ऐसा समाज उत्पन्न हो जायेगा जिसमें दलित होना एक फैशन हो जायेगा।

इस स्थिति को लाने का क्या उपाय है? यह स्थिति तभी लायी जा सकती है जब जात-पात को ही समाप्त कर दिया जाय। भारतीय-संस्कृति का यही रूप था। शास्त्रों मे लिखा है—'जन्मना जायते शूद्र संस्काराद् द्विज उच्यते'—प्रत्येक व्यक्ति जन्म से शूद्र होता है, संस्कार, अर्थात योग्यता से वह बड़ा या छोटा बनता है, रिजर्वेशन या रियायत से नहीं।

आर्य समाज का यही दृष्टिकोण है। जरूरत इस बात की है कि आर्य समाज के नेता एक आन्दोलन खड़ा करें जिसमे न रिजर्वेशन को स्थान हो न एन्टी रिजर्वेशन को स्थान हो, सिर्फ संस्कार या योग्यता को स्थान हो। इस समय जो आन्दोलन चल रहा है वह अगर सफल हुआ तो जैसे पहले योग्य व्यक्तियो की समाज मे प्रमुखता थी वैसे अयोग्य व्यक्तियो की प्रमुखता हो जाएगी। योग्यता की टेस्ट मे जो गिरे होंगे वे ही समाज मे मूर्धन्य स्थान प्राप्त करेंगे।

यह समय आर्य समाज के लिए चैलेंज का है। क्या आर्य समाज इस चैलेंज को स्वीकार करेगा?

युधिष्ठिर के दरबार में अरबी नहीं संस्कृत बोली जाती थी

कानपुर। केन्द्रीय आर्य सभा के अध्यक्ष तथा प्रसिद्ध आर्य समाजी नेता श्री देवीदास आर्य ने शिया सम्प्रदाय के गुरु मौलाना हुसैन हैदर साहब के इस बयान का खण्डन किया है कि युधिष्ठिर के दरबार मे अरबी बोली जाती थी।

श्री आर्य का कहना है कि महाभारत युग मे संस्कृत का बोलबाला था और अरबी का अभी जन्म भी नहीं हुआ था।

श्री आर्य का कहना है कि मौलाना साहब का यह कथन भी सरासर असत्य है कि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने अपने ग्रन्थ 'महर्षि दयानन्द' में लिखा है कि महाभारत काल में कारोबार अरबी में चलता था।

श्री देवीदास आर्य ने मौलाना जी को सलाह दी है कि [illegible] को पुनः पढ़ें और अपना भ्रम दूर करें वरना प्रमाण के साथ अपनी बात को पेश करें।

—[illegible]

सम्पादकीय—

१४ सितम्बर को राज्यभाषा और लिपि विषयक निर्णय

भारतीय संविधान परिषद् ने १४ सितम्बर १९४९ में राज्यभाषा और लिपि विषयक निर्णय हिन्दी और देवनागरी लिपि के पक्ष में किया था यद्यपि जिस रूप में और जिन प्रतिबन्धों के साथ 'भारतीय संघ की राज्य भाषा देवनागरी लिपि लिखित हिन्दी होगी' यह निर्णय किया गया था। उससे पूर्ण सन्तोष नहीं हो सकता है। फिर भी प्रसन्नता की बात यह है कि लोक मत का आदर करते हुये उन लोगों ने भी जो किसी अवस्था में भी हिन्दी के राष्ट्रभाषा व राज्यभाषा बनाने का घोर विरोध कर रहे थे उसे स्वीकार करना ही उचित समझा।

हमें प्रसन्नता है। अब जिस रूप में वह लगभग सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ है उसमें अनेक आक्षेप योग्य स्थलों को निकाल भी दिया है। यद्यपि अब भी सरकारी कार्यों के लिये अंकों के अन्तर्राष्ट्रीय रूप के ही प्रयोग का ही विधान किया गया है। पर-राष्ट्रपति की अनुमति से देवनागरी अंकों के प्रचलन को भी स्वीकृत किया गया है।

जिन प्रांतों में हिन्दी राज्यभाषा घोषित की जा चुकी है उनको अन्त प्रांतीय पत्र-व्यावहारिक हिन्दी में करने की स्वतन्त्रता दे दी गई है। धारा सभी-हाईकोर्ट आदि में भी कुछ थोड़ी सी बातों को छोड़कर हिन्दी में शेष सारी कार्यवाही हो सकेगी। १५ वर्ष के अन्त कालीन समय को हम अब भी अत्यधिक समझते हैं। किन्तु दक्षिण भारतीयों तथा अन्य अहिन्दी भाषियों के लिये इतने समय को देना आवश्यक समझा गया। देवनागरी अंकोंके स्थान पर अन्तर्राष्ट्रीय या अंग्रेजी अंको के प्रयोग पर जो बल दिया गया और जो दक्षिण भारतीय सदस्यों तथा माननीय डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी तथा श्री गाडगिल आदि की अपील पर स्वीकृत कर लिया गया था। सभी के लिये यह अत्यन्त आश्चर्य जनक था।

१३ सितम्बर को सम्विधान परिषद् को दोनों समय के अधिवेशन में आद्योपान्त सुना गया था। दक्षिण भारतीय सदस्यों में से प्राय. प्रत्येक ने इस बात पर बल दिया था कि जब हम ९५ प्रतिशत तक तुम हिन्दी वालों की बात मानने को तैयार हो गये हो, तो तुम्हें अन्तर्राष्ट्रीय अंकों के प्रयोग विषयक हमारी बात को अवश्य मान लेना चाहिये। संविधान परिषद के अनेक हिन्दी समर्थक सदस्यों ने यह समझकर कि कहीं इस पर अड़े रहने से हिन्दी और देवनागरी लिपि विषयक प्रस्ताव ही गिर जाये। इसे अनुचित समझते हुए भी मान लिया। अंग्रेजी भाषा के प्रति श्री आयंगर और अन्य दाक्षिणात्य सदस्यों का मोह आश्चयजनक था। उनका यह कथन सर्वथा अशुद्ध ही था कि अंग्रेजी के द्वारा ही हमें स्वतन्त्रता मिली।

दास मनोवृत्ति के अनेक उदाहरण अनेक सदस्यों के भाषणों में दृष्टिगोचर हुए थे। मुस्लिम सदस्यों ने महात्मा गांधी जी के नाम की दुहाई देते हुए हिन्दुस्तानी और उर्दू लिपि को भी राष्ट्रभाषा तथा लिपि घोषित करने का प्रतिपादन किया। किन्तु उन्हें क्रमश. १४ और १२ से अधिक मत न मिल सके। उस समय पर मौ० आजाद का भाषण निराशाजनक था। जिसमें उन्होंने रोमन लिपि को सर्वोत्कृष्ट बताते हुए आशा प्रकट की कि भविष्य में भारत उस लिपि को स्वीकार करेगा। ये वही राष्ट्रवादी आजाद थे जिनके विषय में प्रसिद्ध था कि उन्होंने देवनागरी लिपि को अपनाने का पूर्ण समर्थन किया था।

कांग्रेस के प्रधानमन्त्री श्री शंकरराव देव द्वारा हिन्दुस्तानी का समर्थन भी उसी पुरानी अपरिवर्तित मनोवृत्ति का सूचक था। जिसे हम अभिनन्दनीय नहीं समझते थे।

श्रद्धेय श्री पुरुषोत्तमदास जी टण्डन माननीय घनश्यामसिंह गुप्त, डा० रघुबीर जी आदि अन्य जिन महानुभावों के निरन्तर प्रयत्न से देवनागरी लिपि में लिखी हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकृत कराने में सफलता प्राप्त की। किन्तु साथ ही यह लिखना आवश्यकीय है कि देवनागरी अंकों के प्रयोग विषयक आन्दोलन को हमें जारी रखना होगा। साथ ही साथ जनमत को प्रबल बनाना भी पड़ेगा।

हिन्दी साहित्य को दार्शनिक वैज्ञानिक, ऐतिहासिक राजनैतिक सब दृष्टि से खूब समृद्ध करना चाहिये।

सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप-प्रधान पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव द्वारा प्रधानमन्त्री विश्वनाथ प्रतापसिंह को लिखा गया पत्र

माननीय श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह जी
प्रधानमन्त्री भारत सरकार
नई दिल्ली

सप्रेम नमस्ते।

समस्त विश्व के आर्य समाजों की सर्वोच्च संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने यह निर्णय लिया है कि आर्य समाज उन लोगों तथा राजनीतिक पक्षों का समर्थन करेगा जो मण्डल आयोग की सिफारिशों के पूर्णतया विरोधी हों। और जिन नेताओं के सहारे आपने उन मण्डल आयोग की सिफारिशों को कार्यान्वित करने का आदेश दिया है।

मण्डल आयोग में ऋग्वेद आदि हिन्दू धार्मिक ग्रन्थों के विकृत स्वरूप के सहारे जिन सिफारिशों को रिपोर्ट द्वारा प्रेषित किया गया है उनका यह प्रयत्न भारत की जनता की आंखों में धूल झोंकने के समान है। इसके परिणाम स्वरूप महर्षि दयानन्द और उनके अनुयायियों ने जातिवाद को मिटाकर जातिवाद रहित समाज के निर्माण में जो सराहनीय कार्य आज तक किया था उसको विनष्ट करने का यह दुष्प्रयास है। भारतीय संविधान की धारा ३४० के अन्तर्गत मण्डल आयोग में जो आदेश जारी हुए हैं उसमें 'जाति' का शब्द कहीं नहीं है केवल 'वर्ग' शब्द का प्रयोग हुआ है। कमीशन ने संविधान के इस कानून का उल्लंघन करके जन्मजात जाति को ही मूल मानकर अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की है। इस प्रयत्न में उन्होंने मजहबी अल्पसंख्यकों को आरक्षण का प्रलोभन देकर उन्हें टुकड़ों टुकड़ों में विभाजित करने का प्रयत्न किया है। सन् १९३१ की जनगणना से लेकर आज तक कभी भी जाति के परिचायक नामों के आधार पर उनकी कोई सूची नहीं बनायी गई है। फिर ऐसे समय पिछड़ेपन के लोगों की संख्या के आधार पर यह मण्डल आयोग की सिफारिशों को लागू करने का निर्णय किस प्रकार किया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस दिशा में आपने अटकलबाजी से काम लिया है।

जिस बात को हम पसन्द नहीं करते और जिसकी हम कड़ी निन्दा करते हैं वह है आपकी सरकार के समर्थकों द्वारा कुछ ऐसे लोगों को जिन्हें आर्य समाज से निष्कासित कर दिया है और जिनकी संख्या अंगुलियों पर

(शेष पृष्ठ ९ पर)

आरक्षण नहीं संरक्षण चाहिए

—देवेन्द्र कुमार, प्रबन्धक आर्यसमाज भवन, हरिद्वार

आज भारत का सम्पूर्ण जन जीवन मानसिक और आर्थिक पतन, इन दो प्रकार की समस्याओ से ग्रसित है। मानसिक और आर्थिक पतन का प्रभाव देश मे प्रत्येक वर्ग तथा जाति पर व्यापक रूप से देखने को मिलता है। प्रत्येक वर्ग और जाति में सर्वत्र दो प्रकार के व्यक्ति पाये जाते है। एक गरीब वर्ग तथा दूसरा धनिक वर्ग है, जो आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न हैं, किन्तु उसका मानसिक स्तर प्रायेण अपने तक सीमित है। इसलिए इसे मानसिक पतन कहा जाये तो आपत्ति नही होगी। आर्थिक पतन की पीड़ा से पीड़ित व्यक्ति अर्थाभाव मे, मानसिक दृढता बनाए रखे यह असम्भव है।

भारत में प्रजातन्त्र की धवल प्रणाली प्रचलित है। प्रजातन्त्र का स्वरूप धवल है। प्रजातन्त्रके धवल स्वरूप को धूमिल बना, भारत में लोकतन्त्र आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न लोगो की कठपुतली बन गया है। मानसिक दृष्टि से पतित लोग अपनी-अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए लोकतन्त्र को नचाने मे लगे हैं और डोर खींच-२ कर अपनी गन्दी से गन्दी कुत्सित चालो का प्रदर्शन कर रहे है।

आर्थिक दृष्टि से निर्बल समूह इनकी कुत्सित चालो को न समझ पाने के कारण, मोहित हो उद्धार की आशा में इन्हे सत्ता सौप देता है। क्योकि आर्थिक निर्बलता के कारण वह निर्वाचन मे लाखो करोडो झोकने की क्षमता नही रखता इसलिए सत्ता सोपने के लिए उसे असमर्थ होना पडता है। सत्ता सौपने पर इनसे प्राप्त होता है। वर्ग सघर्ष, जातीय द गे, मंहगाई और सरक्षण विहीन व्यवस्था तथा आरक्षण जैसी अनेकानेक विषम समस्याये।

भारत वर्ष में इस समय आरक्षण विरोधी आग की लपटो मे जल रहा है तो कही पक्षधर आन्दोलन कर रहे हैं। पजाब तथा कश्मीर में लगी आग इतना तीव्र रूप धारण कर चुकी है, जिसे बुझा पाना एक भीषण चुनौती है। शेष देश को आरक्षण की भयकर आग मे झोक देना बुद्धिमानी न होगी। यदि यह आग इसी तरह फैलती गई तो पजाब तथा कश्मीर से भी कही अधिक विकराल रूप धारण कर लेगी, जिसे बुझाने के लिए कितना खून बहाना पडेगा।

लोकतन्त्र मे आरक्षण का क्या औचित्य है, औचित्य विहीन आरक्षण से जातिवाद को बढावा मिला है, तथा मिलेगा। क्या यह आरक्षण जातिवाद को समाप्त करने का कोई अनोखा ढू ढ कर लाया गया फार्मूला है।

क्या ? सभी जाति और वर्ग के लोगो का आर्थिक तथा मानसिक सुधार इस आरक्षण से सम्भव है। क्या ? आरक्षण से विषमता समाप्त होकर एकता स्थापित होगी। यदि इस आरक्षण व्यवस्था से जातिवाद को बढावा मिलता है तथा अनेक अन्य समस्याये पैदा होती है तो नि सन्देह ऐसे आरक्षण का नि सकोच विरोध होना ही चाहिए।

एक जगह पर भीड जमा थी। लोग जानकारी कर रहे थे, क्या हुआ ? पता चला झगडा हो गया है। किसी को जाति सूचक शब्द से सम्बोधित किया गया है। जाति सूचक शब्द बोलना अपमान है, एक गाली है। इसने गाली दी है। किसका कब खून बहने लगे कुछ पता नही। बात सुलझा दी गई। तभी शोर हुआ और आवाज आने लगी। जो भीड इधर थी, उधर चली गई। झगडा क्या था ? मैं इस जाति का हू, मुझे आरक्षण नही दिया गया, सुविधा से वञ्चित कर दिया गया। वहा वही वर्ग था जो जाति सूचक शब्द बोलने पर सघर्ष कर रहा था। वहा जाति सूचक शब्द बोलने पर अपमान था, गाली थी। यहा सुविधाओ के लिए वही जाति, वर्ग की प्रसन्नता का कारण है। जाति उसके लिए न गाली है और न उसका अपमान है। यह कैसी आरक्षण व्यवस्था है जो मानव को जातीयता के गहरे पङ्क मे बदलने को बाधित करती है। मानव, मानव को सुधारने के स्थान पर बिगाडने का कार्य करती है। यह आरक्षण व्यवस्था जिस क्षेत्र मे भी होगी सर्वत्र प्रत्येक वर्ग और जाति के व्यक्ति को दुर्गन्धयुक्त आरक्षण की गन्दी खाई मे धकेलती रहेगी मानव गिरता रहेगा तथा जातीयता को जीवित रखने के लिए रक्त बहता रहेगा। फूट डालो और राज करो, अग्रेजो की चाल की तरह जाल में फसता रहेगा।

लोकतन्त्र मे आरक्षण व्यवस्था स्वार्थ सिद्धि का एक विघटनकारी घिनौना षडयन्त्र है। क्या आरक्षण से जातीय सघर्ष समाप्त हो जाएगा। चोरी, डकैती, लूट, हत्यायें बन्द हो जायेंगी। आरक्षण प्राप्त मानव का अस्त व्यस्त जीवन सुरक्षित हो जायेगा। नही, तो फिर—

लोकतन्त्र एक जनाधार प्रणाली है। प्रत्येक वर्ग और जाति के व्यक्ति का वोट मूल्य बराबर है। ऐसा नही है, अमुक वर्ग या किसी जाति के वोट का मूल्य दुगुना है। या किसी को दो-दो मतो के प्रयोग का अधिकार प्राप्त हो। समान मत प्राप्त कर विधान सभा और लोकसभा में गए व्यक्ति, कैसे भूल जाते है कि सभी को समान उन्नति के अवसर एव साधन उपलब्ध कराये जाये। आरक्षण के द्वारा पक्षपात की धूल आखों मे झोककर भारत माता के आसू क्यो बहाते हैं।

यह आरक्षण लोकतन्त्र प्रणाली के विरुद्ध है। हमें आरक्षण नही सरक्षण चाहिए, जहा सभी वर्ग और जाति के व्यक्ति चैन की श्वास ले सके। माताओ और बहिनो के सम्मान की रक्षा हो। व्यवसाय नौकरी पर गया व्यक्ति सकुशल घर वापस लौटे। आज मानव का जीवन सरक्षण विहीन है। कब कोनसी आपदा किसको आ घेरे कुछ पता नही। आरक्षण क्षेत्र सीमित एव सकीर्ण है। सरक्षण का क्षेत्र दृष्टिकोण व्यापक होने के कारण सुख और शान्ति प्रदान करने वाला है। हमे ऐसा सरक्षण चाहिए जहा शिक्षा, न्याय, भोजन, वस्त्र, यातायात, चिकित्सा व्यवसाय सुविधा प्राप्त करते समय, वहा न भय हो और न हो आतक। पक्षपात रहित सुविधाओ मे प्राप्त करते हुए प्रत्येक प्राणी प्रीति का जीवन व्यतीत कर सके तथा चिन्ता मुक्त होकर अपनी मानसिक और आर्थिक उन्नति कर सके।

राष्ट्रभाषा का अपमान राष्ट्रद्रोह है

श्री भगवानदेव "चैतन्य" एम.ए. साहित्यालंकार, १९०/एस-३ सुन्दरनगर-१७४४०२ (हि०प्र०)

अभी हाल ही में हम सबने मिलकर अपना स्वतन्त्रता दिवस मनाया। हर वर्ष दिवस को मनाने में मात्र औपचारिकता की बू आने लगती है। वही घोषणाएं, वही वायदे और वही रटी रटाई समस्त बातें दोहराई जाती हैं मगर वास्तविकता से हम सभी परिचित हैं। जिन सपनों को लेकर स्वतन्त्रता संग्राम में हजारो और लाखो वीरों ने अपने प्राणो की आहुतियां दी थीं तथा नारकीय यातनाएं सही थी वे सपने न तो साकार हुए हैं और न ही जिस ढर्रे पर हम चल रहे हैं उस ढग से उन सपनो के साकार होने की कोई सभावना ही है। मैं तो यहां तक कहता हू कि जब तक हमारी अपनी संस्कृति, भाषा और वेशभूषा हमारे साथ आत्मसात नहीं हो जाती है तब तक स्वतन्त्रता का कोई सार्थक मायना ही नहीं है। आज हमारा सभी कुछ अंजुलि से रिसते हुए पानी की तरह समाप्त होता चला जा रहा है और स्थित यही रही तो एक समय ऐसा भी आ सकता है जब हम खाली हाथ चौराहे पर लुटे लुटे से खड़े हुए होगे और इतिहास हमारा उपहास उड़ा रहा होगा। चौदह सितम्बर को हिन्दी दिवस मनाने की औपचारिकताएं भी निभाई गई मगर ईमानदारी से कितने राष्ट्रभक्त आज राष्ट्रभाषा का प्रचार और प्रसार चाहते हूं। जिस मैकाले और अग्रेजीयत के विरुद्ध हमारे स्वतन्त्रता सग्रामी लड़ते रहे वही हमारी छाती पर बैठकर शहीदों का मजाक उड़ा रही है। महात्मा गांधी ने कहा था स्वतन्त्र भारत मे मैं कलम की पहली नोक से समूचे राष्ट्र में हिन्दी भाषा को लागू करू गा। उन्होंने तो यहां तक कहा कि आजादी के छः महीने बाद भी यदि कोई आदमी संसद या विधान सभा में अग्रेजी बोलता हुआ पाया गया तो मै उसे गिरफ्तार करवा दू गा। अच्छा हुआ गांधी जी चल बसे अन्यथा आज संभवतः लगभग सभी सांसद तथा विधायक जेलों में होते।

संविधान की धारा ३४३ में हिन्दी को राजभाषा तो माना गया मगर पन्द्रह वर्ष तक (अर्थात १९६५ तक) सरकार का कार्य अग्रेजी और हिन्दी दोनो भाषाओं मे चलाने का प्रावधान भी चालाकी से रख दिया गया। यही नहीं इसी बीच १९५९ मे ससद में श्री जवाहरलाल नेहरू ने अहिन्दी भाषी राज्यों को अग्रेजी के प्रश्न पर निषेधाधिकार प्रदान कर दिया। सन १९६८ में संसद ने राजभाषा संशोधित विधेयक पास कर दिया जिसमें प्रावधान था कि जबतक एक भी अहिन्दी भाषी राज्य चाहेगा, सघ सरकार का कार्य अंग्रेजी में चलता रहेगा। इस प्रकार अंग्रेजी के वर्चस्व को चिरजीवी बनाने और महात्मा गांधी तथा शहीदों के सपनों को पूर्णतया ध्वस्त करने की साजिश को सिरे चढ़ा दिया गया। नीतियों का कार्यान्वयन और निर्धारण कुछ इस तरह से होता चला गया कि आज हिन्दी बोलने वालों, लिखने और पढ़ने वालों को अजीब दृष्टि से देखा जाता है। कहां तो राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रयोग पर गौरव अनुभव किया जाना चाहिए था और कहां इसे हेय दृष्टि से देखा जाने लगा है। चाहिए तो यह था कि स्वतन्त्रता के पश्चात एकदम समूचे देश में राष्ट्रभाषा हिन्दी को लागू कर दिया जाता मगर ऐसा नहीं हुआ। इसके विपरीत जिस तरह से अंग्रेजी को प्रोत्साहित किया गया उससे भारतवर्ष का आम आदमी स्वतन्त्रता के प्रसाद से वंचित ही रह गया। कुछ मुट्ठी भर लोगो ने बड़ी ही चालाकी के साथ समस्त सुख सुविधाओं को अपने काबु में कर लिया और अंग्रेजी की ढाल के बल पर आज भी वही लोग समस्त पद और प्रतिष्ठाओं का भोग कर रहे हैं। अग्रेजी एक ऐसी दीवार के रूप मे खड़ी हो गई है कि भारतवर्ष की बहुसंख्यक जनता उस पार की सुख सुविधाओ की ओर झांक तक भी नहीं सकती है।

प्रश्न सुविधाओं का तो है ही मगर सबसे प्रमुख बात तो अपनी अस्मिता की है। बड़ा आश्चर्य होता है कि इस राष्ट्र की अपनी कोई राष्ट्रभाषा नहीं जिसका प्रचलन काश्मीर से कन्याकुमारी तक समरूप से हो। हिन्दी के गुण तो बहुत गाए जाते हैं। प्रत्येक प्रशासक और नेता हिन्दी के उत्थान और इसके कार्यान्वयन के लिए बड़ी बड़ी बातें करते हैं मगर वास्तविकता यह है कि सरकारी तन्त्र मात्र दो प्रतिशत अंग्रेजी बोलने वालों की तुष्टि के लिए ९८ प्रतिशत भारत की मिट्टी से जुड़े भारतियो को बलिवेदी पर चढ़ा रहा है। जो कार्य मैकाले और समूचा अंग्रेजी तन्त्र परतन्त्र भारत में नहीं कर पाया था वह काले अग्रेज पैदा करने का कार्य स्वतन्त्र भारत में दिन दूना और रात चौगुना हो रहा है। ईसाई मिशनरी तो अपने इस कार्य मे लगे हुए हैं मगर अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा देने वाले पब्लिक स्कूलों की पूरे देश में एक ऐसी बाढ़ आ गई है जिसने शहर और कस्बे तो दूर रहे गांवों तक को अपनी लपेट में ले लिया है। इस प्रकार से घर घर में काले अंग्रेज पैदा हो रहे हैं। आज का बालक पैंतीस को नही समझता। इसे समझाने के लिए उसे "थर्टीफाइव" कहना पड़ता है। हमारी संस्कृत, सभ्यता, भाषा, वेशभूषा, अस्मिता और भारतीयता की सरेआम होली जलाई जा रही है और स्वतन्त्रता के चवालीस वर्षों से हम और हमारे राष्ट्रनायक यह सब होता हुआ देख रहे हैं। शहीदों के बलिदानो और स्वतन्त्रता का इससे बड़ा उपहास भला और क्या होगा। भाषावाद, सम्प्रदायवाद, क्षेत्रवाद और तथाकथित धर्मनिरपेक्षवाद ने राष्ट्र की जड़ें खोखली कर दी है। इन सबसे छुटकारा पाने के लिए आज तक जो भी प्रयास किए गए उनसे इन बीमारियो ने और भी अधिक भयकर सा रूप धारण किया है क्योंकि प्रयास सही दिशामे नहीं किए गए। जिस प्रकार उल्टा निदान करने से बीमारी बढ़ती ही जाती है ठीक इसी प्रकार ये समस्याए भी विकट से विकटतर होती चलीं गई। इन समस्याओं को तुष्टिकरण की नीति से यद्यपि समाप्त नहीं किया जा सकता है बल्कि राष्ट्रीय एकता और अखण्डता को मध्यनजर रखते हुए एक समान नागरिक संहिता को दृढ़ता के साथ लागू करने की आवश्यकता है। "धर्मनिरपेक्ष" शब्द की सही परिभाषा के विपरीत 'सम्प्रदायवाद" को जिस प्रकार से आजतक वोट को राजनीति के लिए प्रयोग किया जाता रहा है, इससे ही राष्ट्र के लिए ऐसी विकट परिस्थितियां पैदा हो गई हैं जिनके अभिशाप में सांस लेना तक कठिन हो गया है। आतंकवाद का जनूनी शासन सम्प्रदायवाद और तुष्टिकरण की खुराक पाकर जिस तरह से मानवता का खून गलियों और पगडण्डियों में बह रहा है उस ढंग से तो हमारी अस्मिता तक ही समाप्त हो जायेगी।

आज राष्ट्र के समक्ष यदि सबसे बड़ी कोई समस्या है तो वह है अपनी अस्मिता की रक्षा करना। इसके लिए ढिलमुल और तुष्टिकरण की नीति को त्यागकर कुछ कठोर कदम उठाने की आवश्यकता है। हम राष्ट्रभाषा हिन्दी को ही लें। एक ही आदेश से समूचे राष्ट्र में इसे तुरन्त लागू किया जाना चाहिए। इसके बारे में कोई भी किसी भी प्रकार का समझौता नहीं किया जाना चाहिए। इस राष्ट्र का नागरिक, चाहे वह किसी भी सम्प्रदाय या क्षेत्र का हो, राष्ट्रभाषा का सम्मान करना उसका परम कर्तव्य है। यदि वह सम्मान नहीं करता तो उसे राष्ट्रद्रोही घोषित करके कठोर से कठोर दण्ड दिया जाना चाहिए। राष्ट्रीय एकता को मध्यनजर रखते हुए शेष सभी बातों पर भी इसी प्रकार के कठोर और एकता स्थापित किए जाने वाले नियम बनाने चाहिए। वोट और तुष्टिकरण की नीति को छोड़ कर राष्ट्ररक्षा और राष्ट्रीय एकता को प्रमुखता दी जानी चाहिए। हिन्दी में प्रचुर मात्रा में पुस्तकें नहीं हैं या अन्य उत्तर-दक्षिण के बहाने बिल्कुल निराधार हैं। अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों की बाढ़ को रोकना होगा और इसके लिए सबसे आसान उपाय यही है कि हिन्दी को वह स्थान दिया जाय जो आज अंग्रेजी को दे रखा है। ऐसा करने पर हिन्दी स्कूलों की सम्भवतः बाढ़ आ जायेगी। जहा अंग्रेजी स्कूलों की बाढ़ से हमारी अस्मिता और संस्कृति की जड़ें खोखली हो रही हैं, इसके विपरीत हिन्दी के पठन पाठन से ये जड़ें मिट्टी की बहुत बहुत गहराई तक जा कर स्थापित हो सकेगीं। जिससे हम उस दिशा की ओर मुड़ सकेंगे जो शहीदो की दिशा थी। उनके सपने साकार तभी हो सकेंगे जब हम अपनी मिट्टी से जुड़ेंगे। हिन्दी दिवस मनाने की सार्थकता इसी में है कि हम इस जन जन की भाषा को तन्त्र की भाषा बनाने के लिए ईमानदारी से कार्य करें। वायदों और नारों में बहुत भटक चुके हैं। अब तो कुछ करके दिखाने का अवसर है। यदि अब भी इस दिशा की ओर नही मुड़ तो वह स्थिति शीघ्र ही आने वाली है जहां से मुड़ने की कोई संभावना नहीं है।

हिन्दी के लिए ऐसा भी करें

(१) केन्द्रीय भर्ती परीक्षाओं में हिन्दी :

जैसा कि आपने समाचार-पत्रो मे पढा होगा कि ससदीय राजभाषा समिति ने अपना तीसरा प्रतिवेदन सरकार को दे दिया है जिसे दिसम्बर, १९८६ में ससद मे प्रस्तुत कर दिया गया था। इसमें केन्द्रीय सरकार की सभी भर्ती परीक्षाओ मे लिखित प्रश्न पत्रो मे और साक्षात्कार में हिन्दी के वैकल्पिक प्रयोग की सुविधा की सशक्त शब्दो मे सिफारिश की गई है। साक्षात्कार मे भी समिति ने हिन्दी के प्रयोग की सुविधा दिए जाने की सस्तुति की है। समिति ने यह भी कहा है कि जहा-जहां अ ग्रेजी भाषा का एक पृथक से प्रश्न-पत्र अनिवार्य है उसके विकल्प मे हिन्दी भाषा के प्रश्न-पत्र का विकल्प भी दिया जाए जैसा कि १९६८ मे राजपत्रित ससदीय सकल्प के अनुसार आवश्यक भी है। अब सभी हिन्दी प्रेमियो का कर्त्तव्य है कि समिति की सिफारिशो का सहारा लेकर जिन जिन भर्ती परीक्षाओ मे हिन्दी के विकल्प की सुविधा नही दी गई है उसके लिए निरन्तर प्रयास करते रहें और इसकी माग हिन्दी सलाहकार समितियो, नगर राजभाषा कार्यान्वयन-समितियो, राजभाषा कार्यान्वयन समितियो और राजभाषा सम्मेलनो आदि सभी मन्चो से करते रहें। इस कार्य मे कर्मचारियो के सघो का भी पूर्ण सहयोग लिया जाए क्योकि अनेक कार्यालयो ने समिति को यह कहा कि कर्मचारियो की ओर से माग न होने के कारण हिन्दी विकल्प की सुविधा नही दी गई है। अत इस विषय में सम्बन्धित मन्त्रियो और सचिव, राजभाषा विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली को पत्र लिखे जाने और उनकी प्रतिया केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद, नई दिल्ली-२३ को भेजी जानी जरूरी है।

(२) राज्य सरकारों की भर्ती परीक्षाओं में अंग्रेजी भाषा की अनिवार्यता और उसका विकल्प हटाए जाने की आवश्यकता।

देखने मे आया है कि उत्तर प्रदेश और राजस्थान जैसे हिन्दी भाषा-भाषी राज्यो की अनेक भर्ती परीक्षाओ मे अभी भी अ ग्रेजी एक अनिवार्य विषय है और परीक्षाओ के अन्य विषयो के प्रश्नो के उत्तर अ ग्रेजी में भी दिए जाने का विकल्प है। अब भारत सरकार के कृषि वैज्ञानिक भर्ती बोर्ड द्वारा कृषि अनुसधान वैज्ञानिको की नियुक्ति हेतु जो अखिल भारतीय प्रतियोगितात्मक परीक्षा ली जाती है और जिसमे बैठने की योग्यता कम से कम स्नातकोत्तर है, उसमें भी अ ग्रेजी अनिवार्य विषय नही है और अन्य व्यावसायिक प्रश्नपत्रो के उत्तर हिन्दीमें देने का विकल्प है फिर कोई कारण नही कि राज्य सरकारो की भर्ती परीक्षाओ में अग्रेजी एक अनिवार्य विषय रहे। राज्य सरकारो की भर्ती परीक्षाओ मे अग्रेजी भाषा की अनिवार्यता और अन्य प्रश्न-पत्रो के उत्तर अ ग्रेजी में देने के विकल्प की सुविधा हटवाए जाने के लिए अभियान चलाये जाने की आवश्यकता है। जब-जब भी आप समाचार-पत्रो मे राज्य सरकारो के ऐसे विज्ञापनो मे किसी भर्ती परीक्षा में अ ग्रेजी भाषा की अनिवार्यता देखें अथवा अन्य प्रश्न-पत्रो के उत्तर देने मे अ ग्रेजी के विकल्प को देखे तो उसे हटवाए जाने के लिए सम्बन्धित राज्य के मुख्य मन्त्री और मुख्य सचिव को पत्र भिजवाकर उसकी प्रति केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद, नई दिल्ली-२३ को भी भिजवा दे।

(३) केन्द्रीय प्रशासनिक न्यायाधिकरण में हिन्दी का प्रयोग :

सरकारी अधिकारियो और कर्मचारियो के विवादो को निपटाने के लिए एक प्रशासनिक न्यायाधिकरण स्थापित किया गया है जिसके क्षेत्रीय कार्यालय हिन्दी भाषी क्षेत्र मे भी स्थित हैं। उनमें अभी तक हिन्दी के प्रयोग की सुविधा नही दी गई है, जिसके कारण समूह 'ख', 'ग' और 'घ' के कर्मचारियो को विशेष कठिनाई होती है। अत. केन्द्रीय गृह-मन्त्री को कर्मचारियो के सघो के माध्यम से न्यायाधिकरणो मे हिन्दी के प्रयोग की सुविधा के लिए माग भिजवाई जाए और इस विषय को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियो, राजभाषा कार्यान्वयन समितियों और राजभाषा सम्मेलनो मे भी उठाया जाए।

—जगन्नाथ
संयोजक ,राजभाषा कार्य
केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद
एफ. वाई.-६८, सरोजनी नगर, नई दिल्ली-२३

हिन्दी का भविष्य

प्राचीन हिन्दी कवियों के ऐसे-ऐसे गीत मैंने सुने हैं कि सुनते ही मुझे ऐसा लगा है कि वे आधुनिक युग के हैं। इसका कारण यह है कि जो कविता सत्य है, वह चिरकाल की आधुनिक है। मैं तुरन्त समझ गया कि जिस हिन्दी भाषा के खेत में भावो की ऐसी सुनहरी फसल फली है, वह भाषा भले ही कुछ दिन यो ही पडी रहे, तो भी उसकी स्वाभाविक उर्वरता नही मर सकती, वहा फिर खेती के सुदिन आएगे और पौष मास मे नवान्न उत्पन्न होगा।

—रविन्द्रनाथ ठाकुर

आर्य समाज और हिन्दी

आर्य समाज के सस्थापक स्वामी दयानन्द की मातृभाषा गुजराती थी और वे सस्कृत के निष्णात विद्वान थे, फिर भी उन्होने अपने सिद्धान्तो के प्रचार के लिये सर्वत्र हिन्दी में उपदेश देने के साथ २ अपने समस्त ग्रन्थों का प्रवचन हिन्दी मे किया। हिन्दी को उन्होने आर्य भाषा की सज्ञा दी। आर्य समाज के उपनियमो मे भी आर्य समाज की समस्त कार्यवाही हिन्दी में ही करने का उन्होने प्रावधान रखा। उनके अनुयायियो ने भी पिछले ११४ वर्षों मे हिन्दी की अप्रतिम सेवा की। पजाब और दिल्ली जसे उर्दू के गढ में अपनी शिक्षण सस्थाओ और हिन्दी की पत्र-पत्रिकाओ द्वारा उक्त क्षेत्रो को हिन्दी भाषा-भाषी क्षेत्र बना दिया है।

लेकिन पिछले ८-१० वर्षो मे आर्यसमाज से व्यापारिक मनोवृत्ति रखने वाले लोगो ने विशुद्ध आर्थिक लाभ की दृष्टि से आर्य समाज के नाम पर शिक्षा का व्यापार करने के लिये दिल्ली की डी० ए० वी० प्रबन्धकतृ समिति ने अबतक ३५० डी० ए० वी० पब्लिक स्कूलो की स्थापना कर दी है। प्रतिवर्ष ऐसे स्कूलो की सख्या सुरसा के मुह की भाति द्रुतगति से बढती जा रही है।

आर्य समाज के सदस्यो की अधिक सख्या मध्यम श्रेणी के आर्थिक वर्ग से सम्बन्धित है, उनके और सर्वसाधारण लोगो के लिये हजारो रुपया खर्च कर इन स्कूलो से प्रवेश लेना और प्रतिवर्ष बडी राशि खर्च करना असम्भव नही तो कठिन अवश्य है।

वर्तमान मे राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ द्वारा सचालित सरस्वती शिशु मन्दिर और बिहार सरकार का नेतरहाट आवासीय विद्यालय, जो हिन्दी माध्यम से सचालित है, उनकी असामान्य सफलता मन मे हर्षोल्लास उत्पन्न करती है। दिल्ली की डी ए वी सस्था को शिक्षण सस्थाओ के क्षेत्र मे १०४ वर्षों का लम्बा अनुभव है। क्या वह समय की चुनौति स्वीकार कर हिन्दी माध्यम के आदर्श स्कूल खोलने का साहस दिखायेगी? यदि नही तो आर्य समाज का अ ग्रेजी हटाओ अभियान सर्वसाधारण लोगो की दृष्टि मे को री मृगमरीचिका व आत्मप्रवचना प्रमाणित होगा। साथ ही आर्यसमाज के नेताओ की कथनी और करनी मे अन्तर होने से उनके प्रति लोगो की अच्छी धारणा हो, यह सन्देहास्पद है?

—दयाराम पोद्दार, मन्त्री
छोटा नागपुर आर्य प्रतिनिधि सभा राची
कार्यालय · आर्य समाज मन्दिर
स्वामी श्रद्धानन्द पथ

आर्य समाज और राजनीति (२)

श्री बलराज मधोक

परन्तु गोडसे द्वारा गांधी जी की हत्या ने गांधी जी को नया जीवन दे दिया सरदार पटेल की स्थिति दुर्बल हो गई तथा पं० नेहरू मौलाना आजाद और जयप्रकाश नारायण जैसे लोगों को हिन्दुओं के विरुद्ध विषवमन करने का अवसर दे दिया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और हिन्दू महासभा पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया और इनके साथ जुड़े हुए अनेक आर्यसमाजियों को भी जेलों में डाल दिया गया। इस प्रकार खण्डित भारत में जो स्वयंसिद्ध हिन्दू राष्ट्र है, हिन्दू होना जुर्म बन गया और भारत सरकार विभाजन पूर्व की मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति के साथ-साथ पाकिस्तान के तुष्टीकरण की नीति भी अपनाने लगी।

इस स्थिति को बदलने के लिये १९५१ में डाक्टर श्यामप्रसाद मुकर्जी ने आर्यसमाज और राष्ट्रीय स्वयसेवक संघ के सक्रिय सहयोग से भारतीय जनसंघ बनाया। जनसंघ के निर्माण में आर्यसमाज की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण थी और इसकी पहली कार्य समिति में अनेक प्रमुख आर्यसमाजी शामिल थे। भारतीय जनसंघ का चिन्तन भी आर्यसमाज के चिन्तन के अनुरूप था। इस प्रकार आर्यसमाज ने स्वतन्त्र भारत की राजनीति में फिर अपनी परम्परागत भूमिका निभानी शुरू की।

१९५३ में डा० मुकर्जी के काश्मीर की जेल में रहस्यमय निधन के बाद बहुत से आर्य समाजी नेता उससे अलग होने लगे और राष्ट्रीय स्वयसेवक संघ ने जनसंघ को अपने शिकंजे में ले लिया। इस प्रकार राजनैतिक क्षेत्र में आर्यसमाज का प्रभाव कम हो गया।

१९६५ में भारतीय जनसंघ का अध्यक्ष बना। मैंने आर्यसमाज के प्रमुख लोगों को फिर भारतीय जनसंघ के साथ जोड़ने का प्रयत्न किया। इसमें मुझे सफलता भी मिली। १९६७ के चुनाव में श्री रामगोपाल शालवाले (स्वामी आनन्दबोध सरस्वती) श्री प्रकाशवीर शास्त्री, श्री शिवकुमार शास्त्री, श्री जगदेव सिद्धान्ती, स्वामी रामेश्वरानन्द और श्री ओमप्रकाश पुरुषार्थी जैसे प्रमुख आर्यसमाजी जनसंघ के टिकट पर या जनसंघ के समर्थन से लोकसभा के लिये चुन लिए गये। इस प्रकार आर्य समाज की आवाज संसद में भी गूंजने लगी और भारत की राजनीति पर इसका प्रभाव स्पष्ट दिखने लगा।

फरवरी १९६८ में श्री दीनदयाल उपाध्याय, जो मेरे बाद भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष बने थे की रहस्यमयी हत्या और एक कम्युनिस्ट सहछात्री के रहस्यमय ढग से जनसंघ के अध्यक्ष बनने के बाद भारतीय जनसघ राष्ट्रवाद और हिन्दुत्व के मार्ग से हटकर नेहरूवादी कांग्रेस और मुस्लिम तुष्टीकरण के मार्ग पर चलने लगा। फलस्वरूप मेरे जैसे आर्यसमाज के संस्कारों वाले अनेक लोगों को उसी प्रकार जनसंघ छोड़ना पड़ा या उन्हें उसमें से निकाल दिया गया जैसे भाई परमानन्द स्वामी श्रद्धानन्द और लाला लाजपतराय को गांधीवादी कांग्रेस को छोड़ने के लिये बाध्य होना पड़ा था।

१९७१ में भारतीय राजनीति में एक नया मोड़ आया। भारतीय जनसंघ समेत सभी विरोधी दलों ने मिलकर जनता पार्टी बनाई जिसने उस वर्ष के चुनाव में कांग्रेस को उखाड़ फेंका और केन्द्र में जनता पार्टी की सरकार बन गई। जनसंघ इसका सबसे बड़ा घटक था, इसके संसद में ९० सदस्य थे। दूसरा बड़ा घटक चोधरी चरणसिंह का लोकदल था। इसके ८५ सदस्य थे। नई सरकार में चोधरी चरणसिंह एकमात्र आर्यसमाजी थे। यदि जनसंघ और लोकदल मिलकर काम करते तो नई सरकार हिन्दुस्तान की राजनीति और नीतियों को राष्ट्रवादी हिन्दुत्ववादी दिशा देने का मार्ग प्रशस्त कर सकती थी। हुआ इसके बिल्कुलल विपरीत। जनसंघ के नए नेताओं और उनके अभिभावकों को विचारधारा की अपेक्षा नियन्त्रण और कुर्सी का मोह अधिक था। इसलिए उन्होंने राजनीति में गुणात्मक बदल लाने के बजाय अपनी सारी शक्ति जनतापार्टी को अपने नियन्त्रण में लाने में लगा दी। इसने सिकन्दर बख्त और जार्ज फर्नांडीज जैसे प्रगतिवाद के लबादे में काम करने वाले सम्प्रदायवादियों का खेल खेला। फलस्वरूप जनता पार्टी का ढाई वर्ष का शासन राष्ट्रहित और हिन्दू हित की दृष्टि से कांग्रेस के शासन से भी निकृष्ट सिद्ध हुआ। इस सरकार ने अल्पसंख्यक आयोग बनाया, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय का स्वरूप और अधिक साम्प्रदायिक बनाया और उर्दू को दूसरी राज्यभाषा बनाने की नीति की शुरुआत की। चोधरी चरणसिंह अकेले मन्त्री थे जिन्होंने इन राष्ट्रघाती नीतियों का विरोध किया।

अल्पसंख्यक आयोग बनाने के विरोध में मैंने तथा कुछ अन्य राष्ट्रवादियों ने जनता पार्टी छोड़ दी और भारतीय जनसंघ को पुनर्जीवित किया। जनता सरकार टूटने पर जनसंघ के अन्य लोग भी जनता पार्टी से निकल आये. परन्तु जनसंघ में लौटने के बजाय उन्होंने भारतीय जनता पार्टी के नाम से एक और जनता पार्टी बना ली। इसका झंडा, चिन्तन और प्रेरणास्रोत भी वही थे जो जनता पार्टी के थे। परन्तु इसकी लगाम फिर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के हाथ में आ गई।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और आर्यसमाज में एक बुनियादी अन्तर है। आर्यसमाज विचार प्रधान संगठन है। राष्ट्रीय स्वयं-

सेवक संघ के लिए विचार का महत्व कम नियन्त्रण का अधिक है। इसकी कार्य पद्धति एक शासकानुवर्तित्व के आधार पर चलती है; इसलिए इसमें विचारमन्थन का प्रश्न ही नहीं उठता। आर्य समाज के लोग विचार प्रधान होने के कारण संघ में टिक नहीं पाते। वैसे भी संघ का महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के प्रति दृष्टिकोण वस्तु परक नहीं है। संघ द्वारा स्वामी विवेकानन्द को महत्व देने और राष्ट्र निर्माण में महर्षि दयानन्द की भूमिका की उपेक्षा करने का यही कारण है। यह आर्य समाज को अपना प्रतिद्वन्द्वी संगठन समझता है, सहयोगी नहीं। इसलिये यह किसी प्रमुख आर्यसमाजी को राजनीति में आगे बढ़ता नहीं देख सकता। यही कारण है कि इसने और भाजपा ने शहाबुद्दीन जैसे हिन्दू विरोधी पाकिस्तानी एजेंटों को तो संसद में लाने के लिए अपनी शक्ति लगाई परन्तु स्वतन्त्र बुद्धि वाले हिन्दुत्ववादी आर्य समाजियों को सहयोग देना तो दूर रहा, उन्हें हराने में अपना पूरा जोर लगा दिया। इस कारण स्वाभाविक रूप में आर्य समाज संघ को सन्देह की दृष्टि से देखने लगा है।

समय के थपेड़ों से संघ के चिन्तन में कोई बदल आया है या नहीं यह तो अगले चुनाव के समय ही पता लगेगा, परन्तु यह स्पष्ट है कि यह अपने नियन्त्रण से बाहर किसी हिन्दू नेता या हिन्दू शक्ति को आगे आने में हर सम्भव अड़चन डालेगा।

कांग्रेस का चिन्तन और तौर-तरीके सर्वथा हिन्दू-विरोधी है। इसलिए जो आर्य समाजी कांग्रेस से जुड़े हुए हैं वे वैचारिक दृष्टि से बिल्कुल पंगु बन गये हैं।

इन हालात में आर्यसमाज का भारत की राजनीति पर प्रभाव नगण्य हो गया है। इसके कारण राष्ट्रहित को भी धक्का लगा है और आर्य समाज को भी। इस स्थिति को बदलना आवश्यक है।

आज की परिस्थिति में आर्य समाज के लोग कांग्रेस या भाजपा को अन्दर से बिल्कुल प्रभावित नहीं कर सकते। जो लोग ऐसा नहीं मानते वे या तो इन संगठनों की रीति-नीति से अनभिज्ञ हैं, और या जानबूझकर निहित स्वार्थों के कारण सत्य को स्वीकार नहीं कर सकते।

केवल आर्य समाजियों का राजनैतिक संगठन बहुत व्यापक और प्रभावी नहीं हो सकता क्योंकि देश में आर्यसमाज के संगठन के साथ जुड़े हुए लोग अधिक नहीं हैं। इसलिए आर्यसमाज को देश की राजनीति को अपने चिन्तनानुसार प्रभावित करने के लिए अपने विचारों से जुड़े हुए किसी व्यापक संगठन को उसी प्रकार अपना समर्थन देना चाहिए जैसे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भाजपा को देताहै। जनसंघ शुरु से ऐसा संगठन था और अब है। हिन्दू महासभा भी आर्यसमाज के चिन्तन के अधिक निकटहै। अब जब कि भारतीय जनसंघ, हिन्दू महासभा इत्यादि राष्ट्रवादी हिन्दुत्ववादी संगठनों ने मिलकर हिन्दुस्तान हिन्दू महासंघ बना लिया है, आर्यसमाज के लिए स्थिति आसान हो गई है। आर्यसमाज इसे अपना ले तो यह महासंघ शीघ्र ही एक प्रभावी शक्ति बन सकता है और आर्यसमाज के राजनैतिक फ्रन्ट की भूमिका अदा कर सकता है।

ऐसा करने से आर्यसमाज न केवल भारत की राजनीति को प्रभावित कर पाएगा अपितु कांग्रेस और भाजपा पर भी दबाव डाला जा सकेगा कि वे हिन्दू हितों की उपेक्षा न करें। इस प्रकार किसी को बिना शर्त समर्थन देने के बजाय आर्यसमाज महासंघ के माध्यम से ले और दे के आधार पर अन्य संगठनों के साथ तालमेल भी कर सकेगा। इससे आर्यसमाज का वर्तमान गैर राजनैतिक चरित्र भी बना रहेगा और वह भारत की राजनीति को भी सफलता से प्रभावित कर सकेगा।

आरक्षण आर्थिक आधार पर किया जाये

नई दिल्ली। राजधानी के सभी आर्य समाजों की शिरोमणि संस्था दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की बैठक में पारित प्रस्ताव में यह कहा गया है कि देश की एकता अखण्डता एवं राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखते हुए। आरक्षण जाति के आधार पर नहीं बल्कि आर्थिक आधार पर किया जाना चाहिए सभा की अध्यक्षता डा० धर्मपाल जी ने की।

महामन्त्री श्री सूर्यदेव जी ने कहा कि आर्यसमाज प्रारम्भ से ही दलितों, अछूतों एवं कमजोर वर्गों के उत्थान एवं कल्याण के लिये प्रयत्नशील रहा है। आर्य समाज जाति के आधार पर नहीं कर्म के आधार पर नहीं वर्णव्यवस्था में विश्वास करता है। और अनुसूचित जातियों में जन्मे व्यक्तियों को आर्यसमाज में पुरोहित जैसा सम्मान जनक स्थान के लिये प्राप्त है।

श्री सूर्यदेव ने आगे कहा कि वर्तमान सरकार ने बढ़ती हुई महंगाई एवं अन्य अनेक असफलताओं को छिपाने के लिये गलत नीतियों के द्वारा आरक्षण जैसी समस्यायें पैदा करके एकता अखण्डता को खतरा पैदा कर दिया है।

केन्द्रीय मन्त्री श्री रामविलास पासवान एवं श्री शरद यादव के वक्तव्य अत्यन्त गैर जिम्मेदार एवं जनता को भड़काने वाले हैं।



छोड़ दिया ब्रह्मास्त्र देश पर है आरक्षण

विश्व नाथ प्रताप सिंह, गये देश को भूल।
कुर्सी को ही धर्म का, समझ लिया है मूल।।

समझ लिया है मूल, पाप मे है जिनका मन।
'छोड दिया ब्रह्मास्त्र देश पर है "आरक्षण" ।।

"द्रोण पुत्र बन गए" दिखादी है कुटिलाई।
पाप किया है घोर, शर्म ना किंचित आई।।

जाति-पाति का चाह, रहे हैं रोग बढाना।
भारत का जो चाह रहे हैं नाश कराना।।

जनता को खुद गर्ज, चाहते है लड़वाना।
कीकर बोकर आम चाहते हैं जो खाना।।

दया करो भगवान, देश को स्वर्ग बना दो।
नेताओ को वेद, धर्म का मर्म बता दो।।

बने विक्रमादित्य, वीर से त्यागी नेता।
राम, कृष्ण, चाणक्य, शिवा सम बने विजेता।।

उन्नति पथ पर देश, हमारा बढता जाए।
सकल विश्व का गुरु, पुन भारत कहलाए।।

अबला, दीन, अनाथ, निर्बल का कष्ट मिटाता :
निर्दोषो का मददगार नेता कहलाता ।।

नेता की हो एक, सदा ही कथनी करनी।
जनता की तो उसे चाहिए पीडा हरनी।।

देशभक्त, बलवान, बने सब नेता त्यागी।
पक्षपात से दूर, धर्म के हो अनुरागी।।

फिर भारत मे कही, गरीबी नही रहेगी।
सुख की सरिता अजब, धरा पर यहा बहेगी।।

हर्षित होकर विश्व, लगाएगा तब नारा।
देवो की है पुण्य, भूमि यह भारत प्यारा।।

विश्वनाथ प्रताप सिंह जी जलदी जागो।
तुष्टिकरण की झोंप, भावना गन्दी त्यागो।।

सच्चे ईश्वर भक्त, बनो कर्तव्य निभाओ।
भारत वर्ष महान, इसे जग मे चमकाओ।।

—प० नन्दलाल निर्भय सि० शास्त्री, भजनोपदेशक
ग्राम पोस्ट बहीन जिला फरीदाबाद (हरियाणा)

वेदा सुबं गुरुकुल में यज्ञोपवीत संस्कार

आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल जी की अध्यक्षता मे यज्ञोपवीत सस्कार हुआ जिसमे आर्य समाज पटेल नगर, माडल हाऊन, रोहताश नगर, राजौरी गार्डन, सीताराम बाजार के सदस्यो ने बस द्वारा पधार कर बच्चो को आशीर्वाद तथा गुरुकुल को सहयोग दिया। महाशय जी ने ग्यारह हजार रुपये देने की घोषणा की। आर्य समाज पटेल नगर ने १५५१ रुपये, श्री के० के० श्रीधरन ५०१ रुपये, श्रीमती सोनादेवी ५०१ रुपये, श्री देशराज सेठी, श्री शान्तिस्वरूप, श्री अशोक कुमार गुप्ता, श्री कृष्णचन्द्र शर्मा ने सौ-सौ रुपये दिए तथा आए हुए सभी ने सहयोग दिया।

—आचार्य प० प्रकाशचन्द्र शास्त्री
आर्यसमाज बाजार सीताराम दिल्ली-६

उपनयन संस्कार

बरंगल श्रावणी पूर्णिमा के दिन श्रीमति श्री वेतिचन्द्रकला जनार्दन के प्रथम द्वितीय पुत्र चि० ओ३म्प्रकाश मधुसूदन तथा श्रीमति श्री माणिक्यसा पत्नी सककूबाई रुक्काञ्चा के प्रथम पुत्र चिरंजीव श्रवणकुमार के उपनयन संस्कार विद्यावाचस्पति आर्य पुरोहित ने अपने निवास पर सम्पन्न किया।

प्रधानमन्त्री को पत्र

(पृष्ठ ३ का शेष)

गिनी जा सकती है आरक्षण समर्थको के रूप में प्रस्तुत करना, आपके मित्रो के इस प्रयत्न को हम सिर्फ उनकी राजनैतिक शरारत ही मानते है।

हमें आश्चर्य है कि पिछडे वर्गों को समुन्नत स्तर पर पहुचाने का जो कार्य पिछले ४० वर्षों में हल नही किया जा सका उसके लिए आगे और कितना समय लगेगा। आर्य समाज एक राजनीतिक सगठन नही हैं। आप जिसे राजनीतिक कहते हैं उस दलदल से वह अपने आपको बहुत दूर रखता है। हम जानबूझ कर किसी प्रकार की गडबडी पैदा नही करने देंगे। आर्य समाज एक देश भक्त सस्था है। वह अपनी प्राचीन विरासत, अर्थात अपनी प्राचीन सस्कृति और भाषा पर भी गर्व करता है। लेकिन पिछले १०० वर्षो मे किया गया हमारा सारा कार्य जन्मजात और जातिवाद के विरोध के क्षेत्र मे जातीयता से परे है। आर्य समाज ने सामाजिक व्यवस्था की स्थापना मे, शोषण के उन्मूलन मे जो सराहनीय कार्य किया है उसको विनष्ट होते नही देखा जा सकता।

इसीलिए हमारी प्रार्थना है कि आप मण्डल आयोग की सिफारिशो के कार्यान्वयन के सम्बन्ध मे ७ अगस्त १९९० को की गयी घोषणा को तुरन्त वापस ले। आपकी इस घोषणा के कारण देश गृह युद्ध के कगार पर पहुच चुका है। युवको के आत्मदाह की घटनाओ के समाचार आरक्षण के समर्थको और विरोधियो के परिणाम स्वरूप, मृतको की सख्या मे रोज वृद्धि, जनजीवन मे रुकावट इत्यादि देश के अहित करने वाली घटनाओ की सख्या बढती जा रही है। लोग यह समझने पर मजबूर हो रहे है कि आपका यह कदम लोगो का ध्यान वर्तमान बढती हुई महगाई, पाकिस्तानी सहयोग से पजाब और काश्मीर मे होने वाले हिंसात्मक काण्डो पर नक्सलवादियो की वारदातो की तरफ से हटाने का षडयन्त्र है। इससे देश का नुकसान ही होगा, इसलिए प्रार्थना है कि आप ७ अगस्त की घोषणा को तुरन्त वापस ले और अपने मित्रो द्वारा होने वाले विघटनकारी कार्यों को रोकने का प्रयत्न करे।

—वन्देमातरम रामचन्द्रराव
वरिष्ठ उप-प्रधान सभा

जन्मदिवस समारोह सम्पन्न

वेदों के अप्रतिम विद्वान् स्वामी समर्पणानन्द जी सरस्वती (प० बुद्धदेव जी विद्यालकार) का ९५वां जन्म दिवस गुरुकुल प्रभात आश्रम (टीकरी) भोलाझाल, मेरठ (उ०प्र०) में सोल्लास सम्पन्न हुआ। प्रातःकाल उनकी पावन स्मृति में एक बृहद् यज्ञ का आयोजन किया गया। तदन्तर एक सभा आयोजित हुई, जिसमें गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने स्वरचित सस्कृत श्लोक, कविता तथा ओजस्वी व्याख्यानों से पूज्य स्वामी जी को अपनी भावपूर्ण श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

आचार्य

शिविर सम्पन्न

लुधियाना २८ अगस्त। यहां से २५ किलोमीटर दूर अहमदगढ़ में आर्य युवक सभा पंजाब क स्पोर्टस विंग की अहमदगढ़ शाखा के द्वारा युवकों को कसरत और कराटे सिखाने के लिये सात दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में ८० प्रशिक्षार्थियों ने भाग लिया। कराटे के प्रसिद्ध प्रशिक्षक स्पोर्टस विंग के सयोजक श्री राजेन्द्र महेन्द्रू ने युवकों को कराटे का प्रशिक्षण दिया और श्री प्रकाशचन्द्र शास्त्री ने शिविर का संचालन किया।

शिविर का समापन समारोह कल आर्यसमाज मन्दिर अहमदगढ़ में सम्पन्न हुआ जिसकी अध्यक्षता आर्य युवक सभा पजाब के प्रधान एव आर्य वीर दल के अधिष्ठाता श्री रोशनलाल शर्मा ने की। इस अवसर पर युवकों ने अपने करतबों का प्रदर्शन किया। श्री राजेन्द्र महेन्द्रू तथा सुश्री शालिनी सूद ने अपने करतबों एव कला कौशल से समारोह मे उपस्थित जन समूह को मन्त्र मुग्ध कर दिया।

आर्य युवक चुनौती स्वीकार करें

आज देश का हर वर्ग राजनीतिज्ञो के पीछे भागता है। समाज उन व्यक्तियो और सस्थाओं को सम्मान नहीं दे रहा है जो रचनात्मक कार्यों मे लगे हुए हैं। जो जितना अधिक तिकडमी, भ्रष्ट असामाजिक और अपराधी प्रवृत्ति का व्यक्ति होगा वह उतना ही प्रतिष्ठित, सफल, कुशल और सम्मानित व्यक्ति माना जाएगा। उनके लिए प्रतिष्ठा के सभी द्वार खुले हैं। जो डाकुओ से मिला होगा वह अपने सार्वजनिक जीवन मे किसी प्रकार का चुनाव नही हारेगा। जिसे काले धन की सहायता मिलती है वह राजनीति का मुखिया बन जाता है। जिसके पीछे कोई जाति वर्ग या मजहब होता है उसके सकेत पर सत्ता प्रतिष्ठान उठक-बैठक लगाते हैं। हम सब इस बात से भली प्रकार से परिचित है। देश मे गद्दार देशभक्ति का उपदेश देते हैं और विदेशी धन पर पलने वाले स्वदेशी के प्रवक्ता बनते हैं। देश की अखण्डता को खण्डित करने वाले राष्टीय एकता के सूत्रधार समझे जाते हैं।

त्यागी-तपस्वियो को सम्मान देने की व्यवस्था जिस समाज ने की थी उसने सत्ता और सम्पत्ति के तत्व का गहरा चिन्तन किया था। यही कारण है कि भारतीय सस्कृति ने सम्मान सत्ता और सम्पत्ति को कभी एक स्थान पर केन्द्रित नही होने दिया। जब तक वह व्यवस्था बना रही मेरे देश का चरित्र बना रहा। इसके कारण अब त्यागी एव अपरिग्रही को दरिद्री सेवक बताकर दुत्कारा जा रहा है। जिसके पास जितनी अधिक सम्पत्ति है उसे उतना ही सम्मान मिलता है। जो सत्ता मे है सम्पत्ति का मालिक है आज वही समाज का मालिक है उसका ही सम्मान किया जाता है और उसके बिना समाज का हर काय अधूरा माना जाता है मर्यादाये जब भग हो जाती है तो अमर्यादित जिन्दगी कोई भी बन्धन नही मानती।

उपरोक्त इस स्थिति को बदलकर देश के नव निर्माण का काय केवल आर्य समाज के चरित्रवान निष्ठावान तथा अनुशासित युवा ही कर सकते हैं। वही अपने त्याग और बलिदान से आर्य समाज के उसका पुराना गौरव पूर्ण स्थान दिलायेगे।

—मामचन्द्र रिवाडिया शोषित वर्ग समाज
जी ४१ डी डी. फ्लैट अजमेरी गेट दिल्ली ६ फोन ७१३७४५



वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्य समाज पहूरजिरा की ओर से दिनाक ६० श्री शि मा सूर्यवंशी (गुरुजी) आर्य के पौरोहित्य मे श्रावणी वोपोत्सव पर्व अत्यन्त उत्साहपूर्ण वातावरण मे बृहद यज्ञ द्वारा सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम मे मन्त्री आर्य पहूरजिरा के सूर्यकान्त पारसकर, श्री मुरलीधर मावडे (गुरुजी) श्री रामेश्वर पारस्कर, श्री रा० म० पारसकर और श्री लक्ष्मण जी पारसकर, प्रधान इनके प्रभावी भाषण हुये।

सूर्यकान्त पारस्कर आर्य, मन्त्री
आर्य समाज पहूर-जिरा

आचार्य आर्य नरेश वैदिक की जून व जुलाई मास की वेद प्रचार यात्रा इस प्रकार रही।

हिमाचल · आर्य समाज बिलासपुर, इण्डस्ट्रियल एरिया बिलासपुर, आर्य समाज शिमला, आर्य कन्या विद्यालय शिमला। ग्राम अर्की, उच्चत्तर विद्यालय अर्की, कन्या हाई स्कूल अर्की, पारिवारिक सत्सग तलोगडा, रा स्व सघ शिविर मे वैदिक राष्ट्र भक्ति प्रवचन ग्राम भाणत (राजगढ) आर्यसमाज कर्मपुर, पारिवारिक सत्सग रमण गुप्त परिवार, आर्य समाज कसौली।

उत्तर प्रदेश योगासन व प्राणायाम प्रशिक्षण आर्य समाज मसूरी, टी० बी० सैनिटोरियममल बाग, पारिवारिक सत्सग हरनामसिह रोड व आर्य कालोनी मसूरी, गौरी कुण्ड, हनुमान चट्टी केदारनाथ आदि, राजपुर रोड देहरादून, गुरुकुल कोटद्वार, ग्राम काण्मी पारिवारिक सत्सग देहरादून, मुनिकी रेती ऋषिकेश, मोहननगर हिण्डन एयर फोर्स कालोनी गाजियाबाद, ग्राम अम्बेटा देवबन, ग्रीन पार्क मार्केट दिल्ली।

उपरोक्त स्थानो पर वैदिक सिद्धान्तो पर प्रकाश डाला गया और वैदिक साहित्य तथा कैसेट आदि से प्रचार किया गया।

कामेश्वरनाथ चतुर्वेदी, उपमन्त्री
जिला प्रचार मन्त्री आर्य समाज मसूरी

कश्मीर मण्डल आर्य समाज की तरफ से दिनाक ६-७-९० को उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा तथा माण्डलिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान वरिष्ठ आयुष्मन श्री प्रफुल्ल कुमार बलियार जी के प्रत्यक्ष तत्वावधान मे तथा श्री रामचन्द्र विश्वाल व विद्यावाचस्पति श्री लक्ष्मण कुमार शर्मा जी शास्त्री की व्यवस्था में यज्ञ और प्रवचन के साथ श्रावणी महोत्सव समारोह पूर्वक मनाया गया।

शरत् कुमार पण्डा, प्रचार मन्त्री,
आर्य समाज सोनपुर (उडीसा)

आर्य समाज सावली आदि पचपुरी पौडी गढ़वाल श्रावणी पर्व दिनाक ६-८-९० श्रावणी पर्व (रक्षाबन्धन) से दिनाक १४-८-९० श्री कृष्ण-जन्माष्टमी तक आर्य समाज पचपुरी द्वारा विद्यालयो, कालेजो मे वेद-प्रचार सप्ताह का कार्यक्रम सम्पन्न किया गया जिसमें नैतिक शिक्षा, व्यसन मुक्ति, सदाचार आदि विषयो पर प्रभावशाली प्रवचन समाज के पदाधिकारियो द्वारा किए गए।

वासुदेव विमल, मन्त्री
आ० स० पचपुरी

आर्य समाज राजगांव में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी ६-८-९० श्रावणी पर्व से १४-८-९० जन्माष्टमी पर्व तक वेद प्रचार सप्ताह धूमधाम के साथ मनाया गया, प्रत्येक दिन सुबह शाम यज्ञ एव रात्रि ८-३० बजे से १०-३० बजे तक भाषण, प्रवचन हुआ जिसमे सैंकडो ग्रामीण नर, नारी, बच्चे ने भाग लिया, अन्तिम पूर्णाहुति के दिन गुरुकुल आश्रम सलखिया के ब्रह्मचारियों का आसन, व्यायाम, लाठी चलाना, गले से छड मोडना, सीने पर पत्थर तोड़ना प्रदर्शन हुआ, ग्रामीण जनता हजारों की सख्या मे प्रदर्शन देखने को आये सबने ब्रह्मचारियों की भूरि-भूरि प्रशसा की।

अभिराम आर्य, मन्त्री
आर्य समाज राजगांव, मोरगा जिला रायगढ (म० प्र०)

आरक्षण नीति का विरोध

(पृष्ठ १ का शेष)

सामाजिक और शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े हुए वर्गों के बारे में छानबीन की है, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा कडे शब्दों में उसकी भर्त्सना करती है। मण्डल आयोग ने हिन्दू धर्म शास्त्रों की गलत व्याख्या के आधार पर अपने निष्कर्ष निकालकर केवल जाति के आधार पर अपनी छान-बीन कर के सविधान की धारा ३४० की सीमा का उल्लघन किया है। इसके अतिरिक्त आयोग ने ३३५ में निर्धारित प्रशासन मे कार्य की क्षमता की भावना का भी ध्यान नही रखा।

प्रधानमन्त्री द्वारा ७ अगस्त १९९० को मण्डल आयोग की सिफारिशों को लागू करने की घोषणा पर देशभर में भयकर विरोध हुआ। आरक्षण के विरोध में आन्दोलनो में अब तक कई लोगों की जानें ही नही गई अपितु एक प्रकार से गृह-युद्ध की स्थिति पैदा हो चुकी है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का सुझाव है कि वर्तमान में जातिवाद के कारण जो स्थिति पैदा हो गई है उसे समाप्त करने के लिये जात-पांत को समाप्त किया जाये। और एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था कायम की जाये जो किसी भी प्रकार के शोषण से मुक्त हो और केवल योग्यता व समान अवसर को प्राथमिकता दी जाये। वैदिक वर्णाश्रम ही इस व्यवस्था का विकल्प हो सकता है।

दिनाक २ सितम्बर, ९० से ९ सितम्बर, ९० तक आर्य समाज कठुआ मे वेद प्रचार सप्ताह एवम् गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें आर्य जगत् के प्रसिद्ध वैदिक प्रवक्ता श्री ब्रह्मचारी अखिलेश्वर जी पूरा सप्ताह हमारे मध्य रहकर ज्ञान की अमृतवर्षा की।

सुरेन्द्र गुप्ता, मन्त्री
आर्यसमाज, कठुआ

विवाह की स्वर्ण जयन्ती

फाजिलका के प्रसिद्ध आर्य समाजी महाशय हरिकृष्ण जी के सुपुत्र श्री प्रकाशचन्द के गृह निवास सैक्टर २८ चण्डीगढ मे उनकी पचासवीं विवाह वर्षगाठ के उपलक्ष मे देवयज्ञ ब्रह्म यज्ञ के साथ साय समय भजनो और स्वामी आत्मानन्द जी महाराज के उपदेश के साथ हर्ष उल्लासमय वातावरण मे बधाईयो के साथ पुष्प वर्षा की गई। घर में वेद पाठार्थ हमने सामवेद उर्दू हिन्दी भाष्य परिवार को भेंट किया लगभग ४५ हजार का दान आर्य समाज सैक्टर २७ और अन्य समाज सस्थाओ को भेंट किया। भोजन के साथ ही उत्सव सम्पन्न हुआ।

—आशुराम आर्य, मन्त्री
विश्ववेद परिषद चण्डीगढ

शोक समाचार

चण्डीगढ, चौ० रूपचन्द एडवोकेट जो पुरानी पीढी के प्रसिद्ध अत्यन्त लगनशील दीवाने आर्यसमाजी थे और देश जाति के अनथक सेवक थे जिनका ११-९-९० को ८६ वर्ष की आयु मे स्वर्गवास हो गया। १४-९-९० को शान्ति यज्ञ के साथ प्रि० कृष्णसिह आर्य, चौ० कृष्णलाल जी, प० इन्द्रराज शर्मा, बहिन यशोधादेवी और श्री प्रेमदत्त ठाकर ऐडवोकेट आदि अनेक महानुभावो ने श्रद्धाञ्जलि अर्पित की, परिवार ने ११००) रु० प० गुरुदत्त निर्वाण शताब्दी ५००) रु० प्रत्येक आर्य समाज आदि अनेक सस्थाओ को भी दान दिया। चौधरी जी आर्य समाज के प्रधान और वेद परिषद के सदा सरक्षक रहे।

—सर्वश्री धर्मवीर कपूर भ्राता गण की वधु रानी श्रीमती उषा कपूर का आकस्मिक निधन ११-७-९० को हुआ, जिसका शान्ति यज्ञ १४-७-९० को हुआ जिसमे स्व० उषा जी का गुणो का वर्णन करते हुए उन्हे श्रद्धाजलि दी गई। विश्व वेद परिषद की शोक सभा में भी श्रद्धाञ्जलि देते हुए परिवार को इस वियोग के दु:ख को सहन करने और दिवगत आत्मा की शान्ति के लिये परमेश्वर से प्रार्थना की गई सर्वश्री कपूर रोलर फ्लोर मिल्ज ने २१०००) रु० का दान भेंट किया।

रजि० न० डी० (सी०) १०८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१६-९-१९९०) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U ९३
R.N. 626/57 Licensed to post without Prepayment License No U 93 Post in D.P.S.O.os 13-9 1990

पिछले सप्ताह संसद में

७ सितम्बर को कांग्रेस (आई) के श्री वसन्त साठे ने मनुस्मृति, आदि-शंकराचार्य और वेदो के उद्धरण पढ़ना शुरू किया तो प्रधान मन्त्री श्री वी पी सिंह ने कहा कि हमे वेद की शिक्षा मत दीजिए, सीधे एक वाक्य में कहिए कि आप मण्डल आयोग की सिफारिशो पर अमल का समर्थन करते हैं या विरोध।

इससे पूर्व जब श्री साठे ने पैगम्बर मुहम्मद के जन्म दिन पर छुट्टी की घोषणा के लिये प्रधान मन्त्री की आलोचना की तो श्री सिंह ने फिर पूछा आप इस छुट्टी के विरोध मे हैं या समर्थन मे?

आरक्षण पर चली बहस में भाग लेते हुए भारतीय जनता पार्टी के श्री राम नाइक ने कहा कि बेहतर होता यदि प्रधानमन्त्री घोषणा से पहले सभी दलो से सहमति ले लेते। आज उनकी स्थिति चक्रव्यूह मे फंसे अभिमन्यु जैसी है, फिर भी हम आश्वस्त करना चाहते हैं कि बाहर निकालने यानी सहमति तैयार करने मे हमारी पार्टी उनको सहयोग देने को तैयार है।

आर्य समाज राष्ट्र का सच्चा प्रहरी

आर्य वेद प्रचार-मण्डल मौजपुर दिल्ली के तत्वावधान मे दिनांक १५ अगस्त १९९० को राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती ने की।

इस सम्मेलन को पंडित नन्दलाल निर्भय भजनोपदेशक बहीन (फरीदाबाद) ने सम्बोधित किया।

स्वामी जगदीश्वरानन्द जी ने वैदिक पथ पर चलने की जनता से अपील की। इस अवसर पर आर्य वीर दल द्वारा भी योगासन व अन्य प्रदर्शन दिखाए गए।

—छोटन लाल आर्य, प्रधान, आर्य वेद प्रचार मण्डल मौजपुर, दिल्ली

निर्वाचन

आर्य समाज अनाज मण्डी शाहदरा का वार्षिक चुनाव १२-८-९० को निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ।

प्रधान-श्री सीताराम आर्य, उपप्रधान-श्री जयप्रकाश गुप्त व सत्यप्रकाश निर्मोही, मन्त्री-श्री आनन्द प्रकाश शर्मा, उपमन्त्री-श्री ज्ञानचन्द गुप्त, कोषाध्यक्ष-श्री योगेश्वर शर्मा, पुस्तकाध्यक्ष-श्री हरपालसिंह शर्मा, लेखा-निरीक्षक-श्री प० रामफूल शर्मा। —मन्त्री

वेदप्रचार मण्डल दिल्ली देहात का चुनाव सम्पन्न

अध्यक्ष-प० उदय श्रेष्ठ (पालम गाव), उपाध्यक्ष चौ० राजकुमार (अरुणानगर), महासचिव-श्री गोपाल भारद्वाज (मुनीरका), सचिव-श्रीमती भगवान देवी आर्या (महरौली), प्रचार सचिव-श्री क्षेत्रपाल (पालम कालोनी) कोषाध्यक्ष-श्री चरन सिंह आर्य (हैदरपुर), लेखानिरीक्षक-श्री उदयसिंह यादव (नजफगढ)

का ...

११) आर्य समाज पिलानी ...

दिल्ली को धर्म रक्षा महाभियान के लिये प्रदान ...

सुभाषचन्द्र आर्य, मन्त्री आर्य समाज ...

पूज्य स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती जी के निधन का समाचार पढ़कर बहुत दुःख हुआ। आप एक महान आर्य नेता थे, समय-समय पर, हिन्दी तथा गौरक्षा आन्दोलन के समर्थन करने पर आपको जेल जाना पड़ी। संसद मे आपकी सिंह गर्जना सुनकर सत्ताधारी नेता कांप उठते थे। भाइ करनाल संसद क्षेत्र से श्री वीरेन्द्र के मुकाबले में चुनाव लड़ रहे थे, तो जनता का कहना था कि 'आर्य समाजी नेता आपस में लड रहे हैं' परन्तु जनता ने हिन्दी तथा गौ माता के प्रति आपके बलिदान की सराहना की और विजय आपकी हुई। आप एक ऐसे सन्यासी थे जो कि समय के उतार चढ़ाव को भली भांति जानते थे और भारत सरकार की हिन्दू विरोधी नीति का उत्तर बड़ी जोरदार आवाज में देते थे। आज एक साहसी आर्यविद्वान हमारे बीच से चला गया उसकी कमी का पूरा होना असम्भव है।

मदनलाल गुप्ता (हरियाणा निवासी)

—स्व० डा० रामरक्षपाल के इकलौते पुत्र गीरिश कुमार के दयानन्द मैडीकल कालेज लुधियाना से अचानक लापता हो जाने पर कई दिन पीछे उसका शव मिला जिसका शान्ति यज्ञ लाजपतराय भवन चण्डीगढ में किया गया, इस मृतक पुत्र की अकेली माता विधवा डा० प्रभात रह गई है जिसके जीवन का सहारा मात्र यही एक पुत्र था अपने मृतक जवान पिता की धरोहर इसकी युवा मा का, सर्वश्री सत्यपाल, श्याम सुन्दर अशोक ... भवन परिवार के साथ बहुत अधिक नागरिको ने आकर सहानुभूति प्रकट की हमने शान्ति पाठ के लिये सामवेद भेंट किया।

—श्री सत्यदेव सेठ के आर्य परिवार सैक्टर २१ मे उनकी स्व० धर्म-पत्नी आर्यदेवी श्रीमती सुशीला जी की १४ वी पुण्य तिथि पर १५-७-९० को प्रात १ से ५ बजे साय तक गायत्री यज्ञ होता रहा पूर्णाहुति के पश्चात कुमारी नम्रता का भजन और डा० बी० डी० भवन का वेदोपदेश हुआ। परिवार को सामवेद की प्रति भेंट की गई।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१ | दयानन्दाब्द १६६ | दूरभाष : ३२७४७७१ | वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे

वर्ष २८ अंक ३७] | आश्विन शु० ४ सं० २०४७ २३ सितम्बर १९९०

राजधानी दिल्ली में हिन्दी दिवस की धूम

राष्ट्र भाषा ही देश की एकता का सम्बल

लोकसभा के केन्द्रीय कक्ष तथा कान्स्टीट्यूशन क्लब में नेताओं तथा विद्वानों के उद्गार

नई दिल्ली १२ सितम्बर। संसद् भवन के केन्द्रीय कक्ष मे राष्ट्रभाषा दिवस कई हिन्दी संस्थाओं तथा संसदीय हिन्दी परिषद् के संयुक्त तत्वावधान मे एक भव्य समारोह के रूप में मनाया गया। जिसका उद्घाटन न्यायालय के न्यायधीश श्री के० जगन्नाथ सेट्टी ने अपने हिन्दी भाषण से किया।

हिन्दी नागरी प्रचारिणी सभा के सहसंयोजक डा० पद्माकर पांडे ने कहा कि पाण्डवों के वनवास की अवधि १२ वर्ष थी। राम के वनवास की अवधि १४ वर्ष और हिन्दी को १५ वर्षों के लिए वनवास दिया गया था। परन्तु आज ४४ वर्ष बीतने के बाद भी संसद में हिन्दी के वनवास की अवधि पूरी नही हो पाई है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा आयोजित समारोह में सांसद श्री रामचन्द्र विकल ने कहा कि भारत से बाहर हिन्दी और भारतीय संस्कृति का बेहद सम्मान है। "हिन्दी राष्ट्र का गौरव है' यह राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है। देश को उसे पूर्ण सम्मान दिलाने में निष्ठा से जुड़ना चाहिए।

वरिष्ठ पत्रकार श्री जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी ने कहा कि यदि हिन्दी को अब अपना स्थान प्राप्त नहीं हुआ तो उसे उसका समुचित स्थान कभी नही मिल पाएगा। उनका मत था कि बिना राजनीतिक संकल्प के हिन्दी का उत्थान सम्भव नही है।

कान्स्टीट्यूशन क्लब में आयोजित 'हिन्दी जनता की भाषा'' विषय पर एक परिचर्चा में सूरीनाम के भूतपूर्व राजदूत श्री बच्चूप्रसाद ने कहा कि सभी भारतीय भाषाएं आगे बढ़ें और व्यवहार में सामाजिक कार्यों में, पारिवारिक कार्यों में हिन्दी का प्रयोग करे तो उससे हिन्दी को बढ़ावा मिलेगा।

विदेश मन्त्रालय में हिन्दी के अधिकारी श्री लक्ष्मण चतुर्वेदी ने कहा कि हिन्दी के प्रति अपने को बांधने की प्रतिज्ञा करें और हिन्दी में बातचीत करें तथा काम में हिन्दी का प्रयोग करें।

हिन्दी धर्म-कर्म की भाषा है हमें प्रयास करना चाहिए कि हिन्दी में काम करने का संकल्प लें। प्रसिद्ध शिक्षा विद् श्री डा० चन्द्रकान्त भारद्वाज ने कहा हिन्दी सारे देश की भाषा है न कि किसी एक प्रान्त की हिन्दी के उत्थान के लिए हम सभी हृदय से संकल्प लें।

वेद सुधा

महान् सौभाग्य के लिए उठें

सं चेध्यस्वाग्ने प्र च वर्धयेमम्
उच्च तिष्ठ महते सौभगाय।
मा ते रिषन् उपसत्तारो अग्ने
ब्रह्माणस्ते यशसः सन्तु मान्ये॥

अथर्व० [illegible] ६ २॥

हिन्दी अर्थ—हे अग्नि! तुम प्रदीप्त हो और इस यजमान की समृद्धि करो। महान् सौभाग्य के लिए उठो (प्रयत्नशील हो)। हे अग्नि! तेरे उपासक कभी नष्ट न हों। तेरे स्तुतिकर्ता यशस्वी हों, अन्य नहीं।

महान् ऐश्वर्य प्राप्त हो

[illegible] रोदसी [illegible],
[illegible] नः सुवितय प्र भूतम्।
इदं दिवे नमो अग्ने पृथिव्यै
सपर्यामि प्रयसा यामि रत्नम्॥

ऋग्० ६-२४ २॥

हिन्दी अर्थ—हे द्यावापृथिवी! तुम दोनों के शाश्वत नियम सत्य सिद्ध हों। तुम दोनो हमारे महान् अभ्युदय के लिए होओ। हे अग्नि! द्युलोक और पृथिवी को यह हमारा प्रणाम है। मैं प्रेम से (या हविरूपी अन्न से) तुम्हारी पूजा करता हूँ और रत्नों को प्राप्त करता हूँ।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की जोरदार तैयारियां

देश-विदेश से लाखों आर्यों का शुभागमन

आर्य समाजों तथा आर्य जनों से सहयोग की अपील

सहयोग राशि बैंक ड्राफ्ट, चैक अथवा मनीआर्डर द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली के पते पर भेजकर अनुगृहीत करें।

—मन्त्री सार्वदेशिक सभा

राष्ट्रवादी पत्रकार-साहित्यकार-आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन

—शिवकुमार गोयल

आचार्य क्षेमचन्द्र 'सुमन' हिन्दी साहित्य तथा आर्य समाज की एक महान विभूति हैं। १६ सितम्बर को वे अपने जीवन के ७८ वर्ष पूर्ण कर ७९ वे वर्ष मे पदार्पण कर चुके हैं। १४ सितम्बर को हिन्दी दिवस के अवसर पर उ० प्र० हिन्दी सस्थान ने लखनऊ मे आयोजित भव्य समारोह मे उन्हें सम्मानित किया गया है।

श्री सुमन जी गुरुकुल ज्वालापुर के छात्र रहे। वहां उन्होंने आर्यसमाज के प्रख्यात विद्वान आचार्य नरदेव शास्त्री 'वेदतीर्थ' तथा साहित्याचार्य प० पदमसिंह शर्मा के श्रीचरणो मे बैठकर साहित्य, पत्रकारिता और आर्यसमाज की सेवा का सकल्प लिया। गुरुकुल के छात्रो की आर्य किशोर सभा के मासिक किशोर मित्र' का सम्पादन कर उन्होने पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश किया था। बाद में सहारनपुर से आर्यसमाजी विद्वान शीतल प्रसाद विद्यार्थी द्वारा सम्पादित आर्य ' मे उन्होने कार्य किया। सुमन जी की पहली कविता 'आर्य' मे ही छपी थी।

आर्य समाज के प्रख्यात विद्वान तथा आर्य जगत के तेजस्वी पत्रकार प० हरिशकर शर्मा ने सुमन जी को आगरा बुलाकर 'आर्य सन्देश' मे उप-सम्पादक पद पर नियुक्त किया। सन् १९३८ के दिन थे। आर्य समाज ने हैदराबाद में निजाम के हिन्दू विरोधी आदेशो को चुनौती देकर धर्म स्वातन्त्र्य की रक्षा के लिए ऐतिहासिक आन्दोलन चलाया तो 'आर्यमित्र' साप्ताहिक से अर्द्ध साप्ताहिक का सम्पादन किया। सुमन जी वे आर्यसमाज के सेनानी अत' उन्होने 'आर्यमित्र' को अपनी सेवाए प्रदान की। वे हैदराबाद के आन्दोलन मे जेल जाना चाहते थे उनके मित्र श्री क्षितीश वेदालकार हैदराबाद आन्दोलन मे जेल गये थे। किन्तु सुमन जी ने आर्यमित्र के माध्यम से प्रचार का भार समाला तथा रात-रात भर जागकर आर्य मित्र मे हैदराबाद आन्दोलन से सम्बन्धित सामग्री को प्रभावी ढग से देते रहे।

सन् १९४१ मे सुमन जी लाहौर से प्रकाशित आर्य समाज के प्रसिद्ध हिन्दी दैनिक मिलाप में चले गए। आर्य समाज के तेजस्वी पत्रकार श्री खुशहालचन्द खुर्सन्द उसके सम्पादक थे। सुमन जी ने अगस्त क्रांति के बारे मे अ ग्रेजो के विरुद्ध ओजस्वी लेख लिखे, सभाओ मे वे कविताए पढते थे। गुप्तचर पुलिस ने अपनी रिपोर्ट मे लिखा था 'यदि इस आर्य समाजी पत्रकार को छूट मिली रही तो यह नए-नए भगतसिंह पैदा कर अ ग्रेजो की हत्याओ के लिए उभारता रहेगा। परिणामत सुमन जी को 'मिलाप कार्यालय से २३ मार्च १९४२ को गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हे फिरोजपुर जेल मे बन्द रखा गया। जेल मे रहकर उन्होने राष्ट्रीयता से ओत प्रोत कविताए लिखी। एक कविता किसी प्रकार जेल से बाहर पहुचकर किसी पत्र मे छप गई। प जाब सरकार ने उन्हे अपने राज्य से निष्कासित कर दिया। उन्हें इतना खतरनाक माना गया कि उनका बाहर रहना राज के लिए घातक घोषित कर उनके गाव बाबूगढ (हापुड) मे नजरबन्द कर दिया गया। सुमन जी पूरे तीन वर्ष तक गाव मे नजरबन्द रहे।

उन्होने अब तक लगभग ७५ पुस्तको की रचना की जिनमे स्वाधीनता सग्राम तथा उसके सेनानियों की प्र रक जीवनिया, हिन्दी साहित्य का इतिहास काव्य, निबन्ध आदि हैं। 'हिन्दी साहित्य को आर्य समाज की देन' उनकी पुस्तक बहुत लोकप्रिय हुई। उन्होने १९७५ मे आर्य समाज शताब्दी वर्ष मे प्रकाशित 'स्वामी दयानन्द और आर्य समाज" स्मारिका का सम्पादन भी किया। २५ मार्च सन् १९७३ को मारीशस मे आयोजित सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन के हिन्दी कवि सम्मेलन की अध्यक्षता सुमन जी ने की था। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में १० मार्च १९७३ को उनका अभिनन्दन किया गया था।

सुमन जी का सरकार ने 'पद्मश्री उपाधि से अलकृत किया। उन्हें हिन्दी साहित्य सम्मेलन तथा नागरी प्रचारिणी सभा ने सम्मानित किया। सुमन जी शुरू से ही वैदिक धर्म, राष्ट्रभाषा, राष्ट्रभक्ति के प्रति समर्पित रहे ह। जब कभी सस्कृत, हिन्दी तथा सस्कृति पर आघात हुए सुमन जी ने उसका प्रबल विरोध किया। उत्तर प्रदेश सरकार ने उर्दू को दूसरी भाषा बनाने का षड्यन्त्र रचा तो सुमन जी ने उसका डटकर विरोध किया। उन्होंने कविता के नाम अश्लीलता तथा फूहड़पन को साहित्य विरोधी बताया। ऐसे सिद्धान्तनिष्ठ विरले ही होते हैं।

आचार्य क्षेमचन्द्र 'सुमन' को संस्थान-सम्मान

हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार पद्मश्री आचार्य क्षेमचन्द्र 'सुमन' को उनकी दीर्घकालीन साहित्य-सेवाओं के लिए उत्तर प्रदेश हिन्दी सस्थान द्वारा इक्कीस हजार रुपये का 'सस्थान-सम्मान' प्रदान किया गया है।

सुमन' जी ने एक ओर जहा काव्य, निबन्ध, जीवनी, समीक्षा, इतिहास, पत्रकारिता, साहित्येतिहास, सस्मरण आदि अनेक विधाओं पर लगभग तीस मौलिक ग्रन्थो की रचना करके हिन्दी साहित्य के भण्डार को समृद्ध किया है, वहीं दूसरी ओर अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थो और पत्र-पत्रिकाओ को सम्पादित करने का श्रेय भी उन्हे प्राप्त है। दस खण्डों में प्रकाशित 'दिवगत हिन्दी सेवी' नामक सन्दर्भ-ग्रन्थ के प्रणयन द्वारा हिन्दी भाषा और साहित्य के सवर्द्धन तथा विकास का वास्तविक इतिहास प्रस्तुत करने का जो अभूतपूर्व अनुष्ठान 'सुमन' जी ने प्रारम्भ किया है, वह उनकी अक्षय कीर्ति का स्तम्भ है।

'सुमन' जी जहा हिन्दी अकादमी, दिल्ली द्वारा विशिष्ट 'साहित्यकार' के रूप मे सम्मानित हो चुके हैं वहा उन्हे भारत सरकार के सूचना एव प्रसारण मन्त्रालय द्वारा 'भारतेन्दु पुरस्कार' भी प्राप्त हो चुका है। इसके अतिरिक्त सस्कृति मन्त्रालय की ओर से आपको 'एमेरिटस फैलोशिप' भी प्रदान की गई थी।

—इन्द्रसेन

कवि सभा दिल्ली ३०/३०६ पचशील मार्ग-७

- विश्वास नगर, शाहदरा, दिल्ली-३२

सम्पादकीय—

आजकल पितरों का श्राद्ध करना है ?

पितर कौन हैं ?

आश्विन मास में जो पितृपक्ष मानकर मृतको को श्राद्ध करते हैं वे केवल पिता-पितामह तथा प्रपितामह एव माता, दादी और परदादी का ही श्राद्ध करते हैं। किसी भी परिवार मे चार पीढी से अधिक के नहीं दिए जाते देखते हैं। अत इससे यही ज्ञात होता है कि श्राद्ध तथा तर्पण उपयुक्त तीन पीढी के जीवितो का ही तर्पण सबमान्य है।

आजकल हिन्दू कहे जाने वाले समाज में मृतको पितरो का श्राद्ध चल रहा है। वे मृत पितरो को पिण्डदान देने के लिए गया आदि स्थानो में जाते हैं उनके नाम पर ब्रह्मभोज दान आदि करते हैं। और वह समझते हैं कि ऐसा करके हमने अपने मृत-पितरो की आत्माओं को शान्ति दिलादी है। उन्हे वैतरणी पार कराके स्वर्गलोक का अधिकारी बना दिया है।

मृत पितरों को मरने के पश्चात योग दर्शन साधनपाद से सूत्र १३ (सतिमूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगा) के अनुसार मूल कारण के विद्यमान होने पर ही धर्माधर्म रूप कर्माशय का फल जन्म आयु तथा भोग होता है। जन्म का नाम जाति व जीवन काल का नाम आयु और सुख-दुःख के हेतु शब्दादि विषयो की प्राप्ति का नाम भोग है।

ये तीनो धर्माधर्म रूप कर्माशय का फल होने से कर्म विपाक कहलाते हैं। इससे स्पष्ट है कि मनुष्यो को अपने कर्मों के आधार पर जाति-भोग और आयु वर्तमान शरीर छोडने पर प्राप्त होती है। कौन जानता है कि उसके मृतक पितर किस योनि में हैं और उनका भोग क्या है।

अत मृतक के दूसरे जन्म के भोगानुसार उसके नाम पर उसके वर्तमान शरीर के अनुसार भोग देना असम्भव ही है किसी के नाम पर किसी को कुछ दें अथवा खिलावें तो हम पायेंगे कि जीवितों को भी नहीं पहुचता, तब मृतको को कैसे पहुच सकता है।

यह विज्ञान का युग है हम इक्कीसवी सदी में प्रवेश करने जा रहे हैं परन्तु पुरानी गली-सडी मान्यताओ, दकियानूसी कुप्रथाओं ने हिन्दू समाज को आज भी बुरी तरह जकड रखा है।

मृतक श्राद्ध और तर्पण की वर्तमान प्रथा पूर्णतया अवैदिक है और निश्चित रूप से पौराणिक युग की काल्पनिक देन है। पिंडदान की एक रस्म अंधाधुंधी सी डाल दी है। वास्तव में पिण्ड तो शरीर को कहते हैं जैसे—यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे कहा जाता है।

जो पिण्डदान किए जाते हैं वे तो आटे या चावल के होते हैं—

भावना तो यह है कि अपने पितरो की सेवा मे तन-मन-धन सदा अर्पण करते रहें। केवल जीवितो को ही अर्पण हो सकता है।

शतपथ ब्राह्मण के १४-८, १५-७, प्राणो वै गया" अर्थात् प्राण को ही गया कहा गया है। इससे सिद्ध है कि जीवित शरीर से ही सेवा की जा सकती है और वह सेवा भी जीवित की जा सकती है मृतक की नहीं ?

यजु० अ० १६ मन्त्र १७ का अवलोकन करे। पिंड शरीर को भी कहा है ? हमने सप्रमाण सिद्ध किया है कि पाठको को जानकारी हो जाय कि वास्तव में पितर कौन-कौन है ? और उनका सत्कार जीवन काल में ही सम्भव है मृतकों का श्राद्ध-तर्पण हो नही सकता है। अत इस भ्रम का निवारण कर अपनी अमित समय सत्कर्मों में व्यय कर पुण्य के भागी बनें।

वैसे इस चरम महंगाई में श्राद्ध के नाम पर बड़े बड़े ब्रह्मभोज अब प्राय समाप्त ही हैं। फिर भी अन्धविश्वास के रूप मे यह प्रथा भारतीयों में जड जमाये हुए हैं। वेद केवल अपने जीवित पितरो के प्रति कर्तव्य पालन करने की शिक्षा देता है। इसलिये महर्षि दयानन्द ने मृतक श्राद्ध और तर्पण को अवैदिक और अज्ञानतापूर्ण बतलाकर खण्डनात्मक रूप प्रदान कर हिन्दू समाज में पुनर्जन्म को सिद्धकर जाति आयु और भोग का प्रतिपादन किया है

यह मानव ज्ञान की पहुच से सर्वथा बाहर है। अत उसे कोई वस्तु पहुचना या पहुचाना बुद्धि गम्य नहीं है।

वैदिक सस्कृति के महान उद्धारक वेदो के परम निष्णात महर्षि दयानन्द ने स्पष्ट किया है कि पितृयज्ञ के दो भेद हैं—श्राद्ध और तर्पण ? जिस क्रिया से सत्य का ग्रहण किया जाय उसका नाम श्राद्ध है।

श्रत् सत्य दधाति यया क्रियया सा श्रद्धा श्रद्धया यत्क्रियते तत् श्राद्धम्।

अर्थात् जिस कर्म से विद्यमान माता-पिता पितर पूर्वज पूज्य आचार्य साधु सन्यासी तृप्त हो, प्रसन्न किये जायें उसका नाम तर्पण है।

तृप्यन्ति तर्पयन्ति येन पितृन् तत् तर्पणम। परन्तु यह जीवितो के लिए है मृतको के लिए नहीं। वेद का प्रमाण है—

उपहूताम पितर सोम्यासो बर्हिष्येषु निधिषु प्रियेषु।
त आगमन्तु त इह श्रुवन्त्वधि ब्रुवन्तु ते अवन्त्वस्मान्॥

अथर्व० १८-१-४५

हे पितरो ? पूज्य पुरुषो ! इसयज्ञ में आप आवें और हमारे वचन सुनें। और सुनकर अच्छी प्रकार समझावें। पितरो की ओर से जो कुछ पुत्रो के लिए कहने योग्य हो वह कहें और हमारी रक्षा करें।

इसी प्रकार वेदादि सत्य शास्त्रो का पठन-पाठन धार्मिक विद्वानो का सग परोपकार धर्मानुष्ठान सत्यभाषण जीवित माता-पिता और अतिथि की सेवा करना तर्पण कहलाता है।

भारत के महान कूटनीतिज्ञ चतुर चाणक्य ने कहा है कि —

जनिता चोपनेता च यस्तु विद्या प्रयच्छति।
अन्नदाता भयत्राता पञ्चैते पितरा स्मृता॥

अर्थात जन्म देने वाले, माता पिता, विद्या प्रदान करने वाले आचार्य, राष्ट्र को सन्मार्ग पर ले चलने अग्रणी नेता, अन्नादि से तुष्ट करने वाले कृषक और भय से मुक्त कर रक्षा करने वाले रक्षक यह पांचो पितर हैं, पूज्य हैं, सम्माननीय है।

श्राद्ध और तर्पण जीवितो के लिये है मृतको के लिये नही ? महर्षि दयानन्द ने इसे पितृयज्ञ 'श्राद्ध तथा तर्पण यज्ञ' यज्ञ पर अपने तीन ग्रन्थो सत्यार्थ प्रकाश ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका तथा पचयज्ञमहाविधि मे सक्षेप से विचार किया है। विद्वान और सुधी जन समाज मे लगी, कठिन बीमारी से गम्भीरता पूर्वक विचार कर समाज को पतन से बचावें और स्वय लाभ उठावें।

आर्य सस्कृति मे दैनिक पच महायज्ञो को कर्तव्य कर्मो मे बताया गया है।

१. ब्रह्मयज्ञ—प्रात साय सन्ध्योपासन करना।

२ देवयज्ञ—हवन-यज्ञ से वातावरण को सुवासित करना।

३ पितृयज्ञ—पितरो के प्रति श्रद्धा-भक्ति तथा उनकी तृप्ति करना।

४ बलिवैश्वदेवयज्ञ—जो कुछ पाकशाला मे भोजनार्थ हो उसका दिव्य-गुणो के अर्थ उसी पल अग्नि मे नित्य होम कर। कुत्तो कगालो, कुष्ठी, रोगी, पशु पक्षी, कीडे आदि को यज्ञ के पश्चात देना और उनको प्रसन्नता सदा करना बलिवैश्व देवयज्ञ कहाता है।

५ अतिथि यज्ञ—जिसमें अतिथियो की यथावत सेवा करनी होती है।

मैंने यहा तीसरे पितृयज्ञ या स्पष्टीकरण दिया है इस यज्ञ के भी दो भेद बताये हैं एक तर्पण और दूसरा श्राद्ध।

तर्पण — उसे कहा है जिस कर्म से विद्वान देवगण ऋषियो को सुखयुक्त करते हैं उसी प्रकार जो लोगो का श्राद्ध से सेवन करना है वह श्राद्ध कहलाता है यह तर्पणादि कार्य विद्यमान जो प्रत्यक्ष हैं उन्हीं पर घटता है मृतको पर नही ? क्योकि उनकी प्राप्ति और उनका प्रत्यक्ष होना दुर्लभ है। अत मृतको को सुख पहुचाना सर्वथा असम्भव है।

इसी कारण विद्यमानो के अभिप्राय से तर्पण और श्राद्ध वेद मे कहा है—

आर्यसमाज पर प्रहार

स्वागत है ! स्वागत है !!

अभी-अभी मैं राजस्थान की यात्रा से लौटा हूं। यद्यपि इस यात्रा मे मेरा स्वास्थ्य कुछ-कुछ ढीला हो गया परन्तु मेरा मन अत्यन्त प्रफुल्लित है। इस यात्रा मे आर्य जनों ने बताया कि आर्य-समाज के विद्वान् लेखक, गुरुकुल कांगड़ी के सुयोग्य स्नातक श्री डा० ओम् प्रकाश जी वेदालंकार "आचार्य" राजकीय कालेज गंगापुर सिटी के विरुद्ध किसी धर्म द्वेषी, ने राजस्थान सरकार को यह शिकायत भेजी है कि डा० वेदालंकार आर्यसमाजी हैं और आपने कालेज पुस्तकालय के लिए आर्यसमाज का साहित्य भी क्रय किया है।

इस पर किसी के हस्ताक्षर के बिना एक पत्र लेकर एक जांच अधिकारी उनकी जांच करने गंगापुर आ गया। शूरता की शान स्वामी श्रद्धानन्द जी के इस मानस पुत्र ने राजस्थान के मुख्यमन्त्री जी को लिखा है कि मुझे गर्व है कि मैं आर्यसमाजी हूं। मैं जन्म से ही आर्यसमाजी हूं। नौकरी छोड़ सकता हूं, आर्यसमाज नहीं छोड़ सकता। क्या आर्यसमाजी होना या आर्यसमाज की सेवा करना कोई अपराध है ? ऐसा ही पत्र आपने सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी को भी लिखा है।

यह लिखते हुए भी हमें गौरव होता है कि हमारे माननीय डा० ओमप्रकाश जी श्री प्रो० रामसिंह जी के, श्री हरिश्चन्द्र जी सामवेद भाष्यकार के सगे भाजे, वीर शिरोमणि लाला इच्छाराम जी के दोहित्र हैं। जिस आर्य पुरुष की पीठ पर ऐसे पूर्वजों का कर्मबल हो, वह किससे दबेगा ! सब लोग समझते हैं कि श्री भैरों सिंह जी शेखावत जैसे सूझबूझ वाले मुख्यमन्त्री की जानकारी के बिना किसी शरारती राज्याधिकारी ने किसी शरारती राजनेता के संकेत पर यह जांच आरम्भ करदी है।

घर छेड़े से मिलते हैं, मिलाले तारें तम्बूरा।
मिलाले जिसका जी चाहे बजाले जिसका जी चाहे।।

आर्यसमाज इस प्रहार का स्वागत करता है। आर्यसमाज के भीतर छद्मवेशी इसका नाश करने पर तुले हुये हैं और बाहर से कुछ शरारती ऐसे घिनौने षड्यन्त्र रच रहे हैं प्रभु। की वाणी वेद में अटल विश्वास रखने वाले आर्यवीर इस चोट का उत्तर देने को तैयार बैठे हैं। मैं यह देखकर गद्गद् हो गया कि बीसियों आर्यवीर इस चोट का उत्तर देने के लिए सार्वदेशिक सभा के आदेश की बाट देख रहे हैं। डा० वेदालंकार की दृढ़ता ने सब आर्यों में एक नया उत्साह पैदा कर दिया है। मुझे भी पूछा गया कि हम क्या करें ? मैंने कहा शत्रु को चोट तो करने दो फिर पता लग जावेगा कि—

लेखराम की सेना को, ना जालिम मौत डराती है।

आर्यों में परस्पर प्रेम कैसा हो ?

स्कूलो, पाठशालाओं व भव्य भवनो की सम्पदा के कारण आध्यात्मिक लोगों ने और कुछ राजनैतिक लोगो ने अनेक आर्य समाजो मे वमनस्य व झगड़े पैदा करके प्रचार व संगठन को बड़ी हानि पहुचाई है। आवश्यकता इस बात की है कि आर्य लोग हृदय में भरपूर श्रद्धा लेकर, मिलकर धर्म रक्षा करें। समाज सेवा करें।

आर्यों मे परस्पर प्रेम कैसा हो ? इसका उदाहरण आर्यसमाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री पण्डित सत्यपाल सरल जी ने सुनाया। कुछ समय पूर्व आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के मन्त्री श्री ओम् प्रकाश भाबर व सरल जी जयपुर में श्री पण्डित शान्तिप्रकाश जी के निवास पर दर्शनार्थ गये। रात्रि का समय था। पण्डित जी का पुत्र व पुत्र-वधू किसी विवाह पर नगर में गए हुए थे।

दोनों को देखकर वयोवृद्ध तपस्वी विद्वान् झूम उठे। पण्डितजी ने दोनो से भोजन पूछा। इन्होने कहा कि हम तो दर्शन करने आए हैं। पण्डित जी ने कहा मैं भोजन बनाऊंगा आपको करना पड़ेगा और यहीं सोना पड़ेगा। ये न करते रहे परन्तु पण्डित जी ने कहा मेरा पुत्र व पुत्र-वधू क्या कहेंगे कि अतिथि घर से बिना खाए-पिए गए।

दोनो ने कहा अच्छा हम भोजन स्वयं बना लेंगे आप हमें रसोई दिखा दे। यह बात भी पण्डितजी को माननी पड़ी। फ्रिज में रबड़ी तथा दही पड़ा हुआ था। उन्होने कहा, "हम तो बस दही खा लेंगे।" परन्तु पूज्य पण्डितजी नही माने। दोनों ने जैसा तैसा आटा बनाया और रोटियां भी कच्ची-पक्की बनाई। खाकर बातें करके सो गए। रात्रि के दो बजे पण्डित जी का पुत्र व पुत्र वधू आए। अतिथि तो गहरी नींद सोए हुए थे। पण्डित जी ने द्वार खोला। उन्होंने पूछा ये कौन सोए हुए हैं ?

पण्डित जी ने बताया कि राजस्थान सभा के मन्त्री जी व आर्य समाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सरल जी। उन्होंने पूछा, 'इनके भोजन का क्या ?' पण्डित जी ने सब कहानी बताई तो उन्होंने कहा, 'हमें फोन करके क्यो न बुलवा लिया ?

प्रातः अतिथि उठकर चलने लगे तो उनकी आवाज सुनकर पण्डित जी का पुत्र व पुत्र वधू भी जाग गए और कहा बिना अल्प-हार किये आप नहीं जा सकते। यह है आर्यत्व ! यह है धार्मिकता, यह है संगठन की शान।

यदि पण्डित जी ने अतिथियों के लिए हृदय के द्वार खोले तो श्री ओम् प्रकाश भाबर व श्री सरलजी का आटा गूंधना व स्वयं रोटियां बनाना व खाना क्या कोई कम महत्त्व की बात है। आत्मीयता इसी का नाम है। धर्म भाव इसी को कहते हैं।

क्या आर्यजन इससे कुछ शिक्षा लेंगे ? ईर्ष्या, द्वेष व वैमनस्य को दूर कर सब आर्य पूरी श्रद्धा से प्रेम पूर्वक आर्य सेवा करें। समाजों का वातावरण बदलें। (मधुरलोक सितम्बर से साभार)

तीन सूत्रीय कार्य

तीन सूत्रीय कार्य मे, जुट जाओ सब आर्य।
निश्चय समझो हो सफल तीन सूत्रीय कार्य।।
रामकृष्ण के देश मे, मांसाहार शराब।
बन्द कराओ देश में, जीवन और शराब।।
बच्चा-बच्चा देश का, हो जाओ तैयार।
गूंगी बहरी बन रही ये भारत सरकार।।
गौ भगतों की टोलियो, नहीं करें परवाह।
पर्वत भी हट जायेगा, छोड़ देयगा राह।।
निजाम हैदराबाद को, दीया सबक सिखाय।
हुई खोखली जड़ सभी, शासन दिया हिलाय।।
नेता जन एक बात को रक्खें ध्यान हमेश।
देश राष्ट्र के नाम नहीं, इण्डिया में सन्देश।।
अंगरेजी भाषा विदेशी, करो न इससे प्यार।
हिन्दी को अपनाइये हाय देश उद्धार।।

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

दस साल में संस्कृत लुप्त हो जाएगी

श्री लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ के कुलपति डा० मंडन मिश्र से ज्योतिर्मय की बातचीत

संस्कृत के विद्वानों, व्यवहार करने वालों और उनके जानकारों की एक पूरी पीढ़ी अब विदा हो रही है। चिन्ताजनक स्थिति यह है कि उसकी विरासत सम्भालने वाली पीढ़ी तैयार ही नहीं हुई है। संस्कृत पढ़ने पढ़ाने का प्रचलन तेजी से घटा है और घटता ही जा रहा है। क्षय की यह प्रक्रिया इतनी तीव्र है कि कुछ ही वर्षों में संस्कृत पूरी तरह लुप्त हो जाएगी। कहना है श्री लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ के कुलपति डा० मण्डन मिश्र का। उनसे हुई बात-चीत इस प्रकार है।

● समाज में संस्कृत के अध्यापन का तेजी से क्षय हुआ है। वह प्रत्यक्ष दिखाई देता है। इस क्षय का क्या कारण है ?

—उदासीनता ही इसका सबसे बड़ा कारण है। सभी स्तरों पर संस्कृत के प्रति उदासीनता है। अधिकारियों में, विद्वानों के, अध्यापकों में, अभिभावकों में और छात्रों में सभी स्तरों पर संस्कृत की उपेक्षा है, लेकिन उन लोगों की जिम्मेदारी ज्यादा है जो नीति निर्धारक और निर्णायक स्थानों पर बैठे हैं। दुर्भाग्य से आज उन्हीं स्थानों से संस्कृत को ज्यादा उपेक्षा हो रही है। उदाहरण के लिये त्रिभाषा फार्मूले को ही लें। सन् १९६८में जब इस फार्मूले का गठन किया गया तो संस्कृत की पूरी तरह उपेक्षा कर दी गई। इसके पहले माध्यमिक स्तर तक संस्कृत अनिवार्य विषय थी। लेकिन नई शिक्षा नीति में उसे हटा दिया गया।

ऐसा नहीं है कि इस बात को महसूस नहीं किया गया। संस्कृत से अनुराग रखने वालों ने इस मुद्दे पर बार-बार ध्यान आकर्षित कराया, लेकिन कोई परिणाम नहीं निकला। नई सरकार से हमें उम्मीद थीं। उसने नई शिक्षा नीति का पुनरावलोकन करने के लिए रिव्यू कमेटी भी बनाई। इस कमेटी से भी लोग मिले, लेकिन अभी तक तो कोई पहल होती नहीं दिखाई दी।

यह स्थिति हमेशा नहीं थी। पहले सरकार में और प्रशासनिक क्षेत्र में उच्च पदों पर ऐसे लोग थे जो संस्कृत का मुद्दा उठने पर तत्परता से पहल करते थे। एक मिसाल है। सन् १९६१ में पश्चिम बंगाल सरकार ने संस्कृत को पाठ्यक्रम से हटा दिया। पता नहीं यह कैसे हुआ। लेकिन इससे सभी संस्कृत प्रेमी क्षुब्ध हुए। उस समय विधानचन्द्र राय पश्चिम बंगाल के मुख्यमन्त्री थे। हम लोग उनसे मिले। उन्हें अपनी भावनाओं से अवगत कराया। उन्होंने हमारी बात को न केवल गौर से सुना बल्कि आश्चर्य भी व्यक्त किया कि उनसे बिना पूछे यह निर्णय ले लिया गया। तुरन्त उन्होंने इस निर्णय को रद्द किया और संस्कृत को पाठ्यक्रम में जारी रखा। आज हम किसी से ऐसी उम्मीद नही कर सकते। तो यह कहना ज्यादा सही होगा कि उच्चस्तर पर उपेक्षा के कारण संस्कृत की ज्यादा हानि हुई है।

● लेकिन लोगों में भी तो कोई विशेष उत्साह नहीं दिखाई देता।

लोगों में संस्कृत के प्रति विशेष उत्साह नही होने के दो मुख्य कारण हैं। एक तो यह कि इस भाषा का अध्ययन अर्थकारी नहीं संस्कृत का शिक्षक ही हो सकता है। जब कि दूसरे विषयों की शिक्षा छात्रों के लिए जीविका के कई क्षेत्र खोल देती है। इसके अलावा अब स्थिति भी नहीं है कि लोग ज्ञानार्जन के लिए ही पढ़ें। ज्ञानार्जन के लिए पढ़ने की प्रवृत्ति का लोप हो गया है। एक समय था जब लोग सिर्फ विद्वत्ता के लिए पढ़ते थे। उस समय विद्वत्ता का सम्मान था। आपने सुना होगा कि राजा महाराजा और अमीर उमराव विद्वानों के आगे नतमस्तक होते थे। उनके लिए आसन छोड़ देते थे। राजा रईस और जागीरदारों के लिए यह प्रतिष्ठा का मापदंड था कि किसने कितने विद्वानों को सम्मानित किया है। लेकिन अब कहीं भी ऐसा होता नहीं दिखाई देता। इसलिए संस्कृत न तो अर्थकारी है और न ही उससे मान प्रतिष्ठा मिलती है तो उसके प्रति महत्त्वाकांक्षी लोगों में भी कहां से उत्साह जागृत होगा।

● संस्कृत के प्रचार और शिक्षण में लगी संस्थाओं की क्या स्थिति है ?

—दयनीय। करीब आठ हजार संस्थाएं इस समय किसी न किसी रूप में संस्कृत का काम कर रही हैं। इनमें अधिकांश के पास साधनों का अभाव है और ज्यादातर उन्हीं संस्थाओं के पास साधनों की कमी है, जो शिक्षा के क्षेत्र से जुड़ी है। आमतौर पर शिक्षा से जुड़ी संस्थाओं को सरकार से सहायता मिलती है, लेकिन संस्कृत शिक्षण की संस्थाएं यहां भी उपेक्षित हैं। करीब सात हजार शिक्षण संस्थाओं में से केवल सात सौ को सरकारी अनुदान मिलता है। साल के लिए अनुदान की जो राशि नियत है वह अत्यन्त अल्प है कुल ५० लाख। सात सौ संस्थाओं में ५० लाख की राशि के क्या मायने हैं। एक संस्थान के लिए हजार रुपए का औसत भी नहीं आता। अधिकांश संस्थान के लिए हजार रुपए का औसत भी नहीं आता। अधिकांश संस्थाओं के लिए पांच सौ रुपए से अनुदान शुरू होता है। इससे एक अध्यापक का वेतन भी नहीं निकलता। वेतन तो क्या नारियल दक्षिणा का प्रबन्ध भी नहीं हो सकता।

● ऐसी कितनी संस्थाएं हैं जिन्हें संरक्षण और सहयोग मिले तो वे संस्कृत शिक्षण के क्षेत्र में उल्लेखनीय काम कर सकें ?

—ऐसी संस्थाओं की संख्या पांच हजार के आस-पास है। इन संस्थाओं में ऐसे लोग भी हैं, जो विद्याविभूति से सम्पन्न हैं। उनकी प्रतिभा से समाज को लाभ उठाना चाहिए।

● पांच हजार संस्थाओं को ही संरक्षण क्यों मिले। ऐसे प्रयास क्यों नहीं किया जाए कि गांव गांव में संस्कृत के अध्ययन अध्यापन को प्रोत्साहन मिले।

—गांव-गांव में संस्कृत के अध्ययन अध्यापन को प्रोत्साहन मिले, यह अच्छी बात है। लेकिन इसका एक समस्या मूलक पहलू भी है कि गांव-गांव में पढ़ाने वाले शिक्षक कहां से आयेंगे। भारत में छह लाख गांव हैं पर हमारे यहां छह लाख शिक्षक तो छोड़िए छह लाख संस्कृत जानकार भी नही हैं। जानकार शब्द 'मैं' उस व्यक्ति के लिये प्रयोग कर रहा हूं जो संस्कृत पढ़ लिख और समझ सके।

● संस्कृत जानने वालों और इस भाषा के विद्वानों की कितनी संख्या होगी।

—जानने वालों की संख्या पचास हजार के आस-पास है। यह उन लोगों की संख्या है जो संस्कृत से जीविका चलाते हैं। इनमें मुश्किल से एक प्रतिशत लोग विद्वान श्रेणी के हैं। मैं उनके पास सुरक्षित विद्या वैभव को सरक्षित करने पर ही जोर दे रहा था। ये विद्वान भी पचास वर्ष से अधिक आयु के हैं। इसलिए ज्यादा से ज्यादा दस वर्ष समय शेष है जिसमें हम उनकी विरासत को बचाने का उपाय कर सकते हैं। दस बारह साल बाद जब वे नहीं रहेंगे या उनकी इन्द्रियां शिथिल पड़ने लगेंगी, उन्हें सुनाई कम देने लगेगा, या देखने में कठिनाई होगी तो उनसे ज्ञान सम्पदा अर्जित करना और भी कठिन हो जायेगा।

● संस्कृत के प्रचार में लगी निजी और स्वयंसेवी संस्थाओं की क्या दशा है ?

—एक तो इस क्षेत्र में ईमानदारी से कोई खास काम नहीं हो रहा। जो संस्थाएं निजी या स्वयं सेवी ढंग से चल रही हैं, वे भी समय के प्रवाह की शिकार हैं। प्रवाह यह है कि साधन जुटाते तो संस्कृत के नाम पर हैं लेकिन उन्हें लगाते दूसरे कामों में हैं। उदाहरण के लिए कोई मठ या आश्रम संस्कृत गुरुकुल या पाठशाला के लिए सौ रुपये का चन्दा जुटाता है, तो वहां शिक्षा के लिए सिर्फ दस रुपए ही खर्च होंगे। बाकी नब्बे रुपये मठ या आश्रम के दूसरे कामों में खर्च होते हैं।

● सरकार ने केन्द्रीय संस्कृत मंडल का गठन किया था। उसकी क्या भूमिका है ?

—इस संगठन के पास भी साधन नहीं हैं। साधन के अलावा अधिकार भी कुछ नहीं हैं। हालांकि उप राष्ट्रपति महोदय मंडल के अध्यक्ष हैं। लेकिन मंडल कोई निर्णय नहीं ले सकता। नीतियां तय नहीं कर सकता। वह केवल सलाहकार की भूमिका में है। तीन-चार महीने में एक बार बैठक हो जाती है। कुछ प्रस्ताव पास हो जाते हैं, सिफारिशें तय हो जाती हैं, सुझाव लिख दिये जाते हैं। फाइलें टेबल पर रखी रहती हैं। मंडल उन पर कार्रवाई के लिए कुछ नहीं कर सकता। उससे आगे जा ही नहीं सकते। कुछ राज्यों में पहले से परामर्श मंडल या अकादमियां बनी हुई हैं। स्वयंसेवी संस्थाएं हर जगह हैं लेकिन साधनों के अभाव में वे भी सेमिनार और कांफ्रेंस से आगे नहीं बढ़ पाती।

● संस्कृत मंडल में सुनते हैं अफसरशाही की भरमार है। जब कि इसके पहले संस्कृत परिषद में संस्कृत के विद्वानों का वर्चस्व था?

—हां, यह सही है। मंडल में संस्कृत के अधिकारी विद्वानों का उतना वर्चस्व नहीं है। इसमें मन्त्रालय के सचिव और सरकारी अधिकारियों का ही प्रभुत्व है। कुछेक विद्वान हैं भी तो उनकी कोई निर्णायक भूमिका नहीं है। इसलिए उनका होना नहीं होना बराबर है। इससे पहले केन्द्रीय संस्कृत परिषद में पण्डितों का बाहुल्य था। चूंकि वे संस्कृत से सीधे जुड़े थे, इसलिए उन्हें इस क्षेत्र की आवश्यकताओं और समस्याओं की अच्छी समझ थी। कुछ काम भी होता था। अब तो हालत यह है कि थोड़ा बहुत जो काम होता है वह भी सरकारी ढर्रे में उलझ कर रह जाता है।

● आजादी के बाद संस्कृत के प्रचार और शिक्षण की दिशा में क्या कोई भी प्रयास नहीं हुए ?

—हुए तो सही लेकिन जैसा कि मैंने कहा दो बातें प्रमुख हैं एक तो इसका अध्ययन अर्थोपार्जक नहीं रहा, दूसरे संस्कृत के विद्वानों को वैसी मान प्रतिष्ठा भी नहीं रही। आरम्भ के २०-२५ वर्षों में तो फिर भी ज्यादा फर्क नहीं आया। उस समय बाबू राजेन्द्रप्रसाद, सरदार पटेल और लाल बहादुर शास्त्री जैसे लोग थे, जो संस्कृत और उसके विद्वानों का यथेष्ट आदर करते थे। शास्त्री जी के समय में तो विद्वानों को वर्ष में एक बार सम्मानित करने का सिलसिला भी चला था। उन्हें बुला कर भी दक्षिणा दी जाती। ११ मार्च के आस पास यह होता था। इससे पण्डितों का आर्थिक प्रयोजन भले ही सिद्ध न होता हो लेकिन उनके पांडित्य को मान्यता तो मिलती थी। अपने आप में यह भी एक बड़ी बात थी। आगे चलकर यह सिलसिला उदासीनता के कारण बन्द हो गया।

● भाषायी आंदोलनों के कारण भी संस्कृत की हानि हुई होगी।

—मुझे नहीं लगता कि भाषायी आंदोलन के कारण संस्कृत को हानि हुई होगी। क्योंकि इस लहर के आंदोलन या तो अंग्रेजी के खिलाफ चले या हिन्दी के खिलाफ हुए। संस्कृत के खिलाफ तो कभी कोई आंदोलन हुआ ही नहीं। इस तथ्य पर विचार करते हैं तो आश्चर्य होता है कि दक्षिण भारत में सबसे ज्यादा भाषायी आंदोलन हुए। वहां तो उत्तर दक्षिण का आन्दोलन हुआ और बरसों तक चला। इस आन्दोलन ने बीस साल में दक्षिण भारत का माहौल ही बदल दिया, लेकिन वहां संस्कृत की स्थिति उत्तर भारत की अपेक्षा अच्छी है। संस्कृत के सबसे ज्यादा और अच्छे विद्वान् दक्षिण में ही हैं।

● दक्षिण भारत में संस्कृत की अच्छी स्थिति किस आधार पर है ?

—दक्षिण भारत के देवस्थानों और मठों में कई अच्छे प्रचलन हैं जिनका उत्तर में भी अनुकरण होना चाहिये। इन प्रचलनों के कारण दक्षिण में संस्कृत अच्छी स्थिति में है। जैसे वहां के जीवन में मन्दिर का स्थान प्रमुख है और मन्दिर से संस्कृत के अध्ययन की प्रेरणा मिलती है। वैदिक विद्वानों की प्रतिष्ठा है। तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, ओडीशा आदि प्रान्तों में देवस्थान ट्रस्ट, मठ और आश्रमों से भी संस्कृत के अध्ययन अध्यापन को अच्छा बल मिलता है। कांची और शृंगेरी के दोनों शांकरमठों ने भी संस्कृत और संस्कृति के रक्षण परिवर्धन की दिशा में अच्छा काम किया है। उत्तर भारत के मठ इतने साधन सम्पन्न नहीं हैं। पुरी का मठ तो इतना निर्धन है कि उसका अपना निर्वाह ही मुश्किल से हो पाता है। यद्यपि वहां के शंकराचार्य निरंजनदेव तीर्थ जी महाराज इस समय के गिने-चुने चार पांच लोगों में से एक हैं। द्वारिकामठ के पास साधन है लेकिन वहां के आचार्य की अपनी प्राथमिकताएं हैं।

● संस्कृत के अध्ययन केन्द्रों की दृष्टि से किन स्थानों का उल्लेख किया जा सकता है ?

—संस्कृत अध्ययन का सबसे बड़ा केन्द्र इस समय पुरी है। वहां कई आश्रम पाठशाला और गुरुकुल चलाते हैं। इसके बाद पु ` का क्रम आता है। तिरुपति, उडुपी, कांची, तिरुअनन्तपुरम भी उल्लेखनीय हैं। बनारस, जयपुर, मथुरा, हरिद्वार ऋषिकेश आदि परिचित नाम तो हैं ही।

● इन केन्द्रों में शास्त्र और साहित्य आदि विषयों में प्रमुख और गौण रुचि का क्रम ?

—साहित्य के अध्ययन की प्रवृत्ति ज्यादा है। उसके बाद व्याकरण का क्रम आता है। षड् शास्त्र और वेदावेदांगों का अध्ययन तो विरले ही करते हैं।

● इस क्रम के अनुसार शास्त्रों के अध्ययन की प्रवृत्ति ज्यादा तेजी से लुप्त हो रही है। इस तरह तो थोड़े ही समय बाद सारे शास्त्र लुप्त हो जायेंगे। इस ओर किसी का ध्यान नहीं गया है क्या ?

गया है। लेकिन वह पर्याप्त नहीं है ? राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान वेद पाठों के रिकार्ड तैयार करा रहा है। इसमें अच्छे वेदपाठी विद्वानों का सहयोग मिल रहा है। किन्तु रिकार्ड तैयार करने से शास्त्र चिह्न रूप में ही बचेंगे जब कि अध्ययन अध्यापन की प्रक्रिया और प्रवृत्ति को बचाया जाना चाहिए। न केवल बचाना चाहिए बल्कि उसे बढ़ावा मिलना चाहिए। आरम्भिक तौर पर कम से कम हजार बारह सौ विद्वान तैयार करने चाहिये जो शास्त्रों के अध्ययन अध्यापन को गति दें।

● फोर्ड फाउंडेशन भी रिकार्ड तैयार करवा रहा है। उसके लिए वैदिक विद्वान कैसे तैयार हो गए ? वे लोग तो रिकार्ड अपने देश ले जायेंगे।

—फोर्ड फाउंडेशन वेदों के पाठ तैयार नहीं कर रहा। वह यज्ञ चर्चा रिकार्ड करा रहा है। इसमें किसी विद्वान को आपत्ति नहीं है।

ईश्वर पूजा का वैदिक स्वरूप (४)

शास्त्रार्थ महारथी रामचन्द्र देहलवी

अब भगवान् के बारे मे भी विचार कर लीजिए। वह भी पूर्ण है। उसे भी किसी चीज की आवश्यकता नहीं है He needs nothing for himself वह तो आवश्यकता से खाली है He is Perfect वह पूर्ण है। तो अब प्रश्न यह है कि पूजा कैसे की जाय ? उसकी खिदमत या सेवा कैसे की जाय ?

भगवान् की पूजा, सेवा या खिदमत का तरीका यह है कि जो ईश्वर के गुण है, जिनके धारण करने से आदमी का उत्थान हो सकता है उन्नति हो सकती है अथवा परमात्मा से मिलकर श्रेष्ठ हो सकती है, उन गुणो को अपने अन्दर धारण करें और अपने को ईश्वर-सा अर्थात् ईश्वर के गुणा से युक्त बनाने का प्रयास करे।

ईश्वर के गुणो का वर्णन विस्तार से वेदो और शास्त्रो मे किया है उन्हे वहा से जानकर अपनाए यहाँ उनके वर्णन की आवश्यकता नही है।

जीवात्मा के अन्दर ग्रहण करने की योग्यता विद्यमान है। जीवात्मा ईश्वर के गुणो को ग्रहण करने की क्षमता रखता है। वह दयालु बन सकता है, न्यायकारी भी बन सकता है। प्रात और साय सन्ध्या करके बनने की चेष्टा करें। और अमल भी वैसा ही करे।

सन्ध्या क्या है ? Introspection है। आत्म-निरीक्षण है। प्रात और साय अपना आत्म-निरीक्षण करिए देखिए कि जीवन के दैनिक व्यवहार में कहा कहा कमी है, उन्हे निकालिए और ईश्वर के गुणो को धारण कीजिए।

लोग कहा करते है जी ! बगैर मूर्ति या चित्र के गुणा को कैसे याद करे ? यही तो विचारणीय चीज है। गुणो को याद करने के लिए चित्र की आवश्यकता नही है अभी आपकी समझ मे यह बात एक उदाहरण से आ जाएगी। आप जितने भी यहा बैठे है भली प्रकार जानते है। आजकल बेईमानी, बदनामी छली का अत्यन्त जोर है। प्रत्येक आदमी दूसरे को ठग करके अपना मतलब सिद्ध करना चाहता है। इससे किसी को भी इन्कार नही। सब लोग इन बुराइयो से परिचित हैं। जब खूब परिचित हैं तो क्या बेईमानी का या चोरी का चित्र खीच सकते है ? नही खीच सकेंगे। दुनिया का बड़े से बड़ा चित्रकार भी चोरी या बेईमानी का चित्र नही खीच सकता है और न बना सकता है !! जब इनकी तस्वीरे नही खीची जा सकती और बिना तस्वीरो के आप इन्हे जानते हैं क्योकि यह जहनी चीजे हैं, बुद्धि से जानने की चीजें हैं। बुद्धि से सोची और विचारी जाती हैं। किसी के माल को बगैर उसकी इजाजत के अपने तसर्रुफ मे लाना चोरी है। इसकी तस्वीर नही खीची जा सकती है। इसकी कागज पर कोई तस्वीर नही खीची जा सकती। किन्तु दिमाग मे तो खिची हुई है आपने समझ लिया है चोरी को, कि चोरी यह है। अर्थात् गुणो को बगैर तस्वीर के जान लेने की जीवात्मा मे योग्यता है। गुणो को हम जहनी नक्शे से जान लेते हैं। बेईमानी या ईमानदारी, बदकारी और जिनाकारी सब पहचानी जाती है। तो इसी तरह परमात्मा के गुणा को भी जहनी नक्शे से जाना या पहचाना जा सकता है। परमात्मा कैसा है ? न्यायकारी है। किसी के साथ रिआयत नही करता चाहे कोई कितना ही बड़ा शख्स क्यो न हो There is no respect of persons with God परमात्मा किसी भी शख्सियत से प्रभावित नहीं होता चाहे वह कितना ही शक्तिशाली क्यो न हो क्योकि वह सर्वशक्तिमान् है। वह तो जैसा कर्म कोई करेगा उसको वैसा ही दण्ड देगा।

भगवान् के इस गुण को आप धारण करें। जहा इसाफ का मुआमिला आ जाय डरे नही, घबरायें नही, अभियुक्त की शख्सियत से प्रभावित न हो बल्कि साफ कहें कि अमुक व्यक्ति दोषी है। नौशेरवा आदिल अपने न्याय के प्रसिद्ध थे क्योंकि उसने अपने बेटे को भी नही छोड़ा, फासी पर लटका दिया। वहा पर कौम का सवाल नहीं है। वहा पर तो नेकी और गुणो से मतलब है। चाहे किसी भी धर्म का हो। भलाई सब जगह भलाई ही है।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि ईश्वर के गुणो का ध्यान करने के लिए मूर्ति की आवश्यकता नहीं है। और यदि मूर्ति से ध्यान एकाग्र करने की आदत पड़ी हुई है तो अपने गुन या गुनी को सामने बिठाकर उसके द्वारा ध्यान क्यों नहीं एकाग्र करते ? वह तो बड़ी कीमती चीज है। उसमे ध्यान एकाग्र कीजिए। ईश्वर का बनाया हुआ है आपका पुत्र जिसके लिए आपको प्रत्येक क्षण चिन्ता बनी रहती है कि रोगी न हो जाय। तो उसी मे अपने मन को केन्द्रित कर लीजिए। यदि आप उस बच्चे के एक अग के बारे मे भी सोचेंगे तो भगवान की कारीगरी की थाह न पा सकेंगे। मूर्ति मे ध्यान केन्द्रित नही होता बल्कि ख्याल मुन्तशिर हो जाता हैं। कभी आख मे, कभी कान मे कभी कही और कभी कही। तो मूर्ति मे मनुष्य का ध्यान केन्द्रित हो ही नही सकता।

ध्यान का लक्षण करते हुए लिखा है ध्यान निर्विषय मन मन के निर्विषय होने को ही ध्यान कहते है अर्थात ध्यान तभी होता है जब मन मे कोई विषय न हो। रात को सोते समय यदि चिन्ताए होती हैं तो नीद नही आती और चिन्ताए दूर होते ही नींद आ जाती है। यह पता भी नही चलता कि नीद कब आ गई। इसी प्रकार ध्यान भी तभी होता है जब मन विषयहीन हो जाय। मै नही कह रहा हू। साख्य के रचियता कपिल मुनि ने लिखा है। यदि मन मे विषय आ गए तो मनुष्य विषयो के विचार मे फस जाएगा। जैसे मनुष्य किसी खूबसूरत शक्ल को देखने के बाद कभी उसकी आख के बारे मे सोचता है, कभी नाक के बारे मे, कभी बालो आदि के बारे में। इस प्रकार विचारो की श्रृखला चल पड़ती है। तो मन मे मूर्ति का ध्यान करने से मन उसमे केन्द्रित नही होता बल्कि अस्थिर हो जाता है, ध्यान बहुत सी चीजो मे बट जाता है। इसलिए मूर्ति को सामने रखने से भगवान् का ध्यान कभी नही हो सकता।

अपना मन भगवान् के गुणो पर केन्द्रित करो, खूब गहराई से विचार करो उन पर, और फिर उनके जैसा अपने को बनाने का यत्न करो उपर्युक्त उदाहरणो व स्पष्टीकरणो से मैंने ईश्वर-पूजा के लिए मूर्ति की अनावश्यकता प्रकट की है।

सेवा कैसे की जाय ? कोई चीज उसे देकर उसकी पूजा हो सकती है ? मैंने आपको अपने व्याख्यान मे बताया है कि ईश्वर और प्रकृति दोनो पूरे है। इन्हे किसी भी चीज की आवश्यकता नही है। तो इन दोनो की सेवा इन्हे कोई चीज देकर नही होगी बल्कि अपने लाभार्थ वस्तुए इनसे प्राप्त करके इनकी सेवा होगी। अपूर्ण की सेवा, उससे कुछ लेकर व उसे कुछ देकर होती है और पूर्ण की सेवा उससे कुछ (अपने लाभ के लिए व उन्नति के लिए जितना जरूरी है) लेकर हुआ करती है।

मुझसे जो मेरे पास ज्यादा है उनमे से ले लीजिए। और जो मेरे पास नही है, आपके पास है, वह मुझे दे दीजिये। मेरा काम तो ऐसे ही चल रहा है क्योकि मैं अपूर्ण हू, पूर्ण नही हू। तो मुझमे जो ज्यादा है लोग मुझसे ले लेते हैं और जो अन्यो मे ज्यादा है मैं अपनी आवश्यकतानुसार ले लेता हू। अभी मैंने एक गाना इन भजनीक महाशय से ले लिया क्योकि इनके पास था और मेरे पास नही था। यदि मेरे पास कोई चीज हो और उनके पास न हो तो वे मुझसे ले ले। तो मेरा काम लेन-देन से चलेगा। किन्तु भगवान का काम लेने-देने से नही बल्कि केवल उससे लेने ही लेने से चलेगा। क्योकि वह पूर्ण है। और उसके पूरेपन मे कोई फर्क नही आता। वह सबको दिये जा रहा है। क्यो दे रहा है ? वजूद को सफल कर रहा है। यदि उसका वजूद निरर्थक हो तो वह निकम्मा साबित होगा। इसलिए परमात्मा कैसा है वह दाता है। तो परमात्मा की सेवा हम उससे कुछ लेकर करेंगे।

यदि हम उसे कुछ देना चाहे तो भी क्या दें ? उसके पास तो सारी चीजें। वह अपार भण्डार (प्रकृति) का स्वामी है। यदि चाहे तो भी हम उसे कुछ दे नही सकते क्योकि हमारे पास अपना है क्या जो दमे ? इसलिए भगवान् से उसके गुण ग्रहण करके हम ईश्वर की पूजा कर सकते हैं।

प्रकृति से भी हम ले रहे हैं, लेते आए हैं आज की आधुनिक साज-सज्जा की सामग्री, रेडियो, ग्रामफोन, टेलीविजन, रेलगाड़ी, हवाई जहाज आदि सभी प्राकृतिक पदार्थ है जो हमने प्रकृति से प्राप्त किये।

प्राकृतिक वस्तुओ के दो प्रकार के प्रयोग या उपयोग किए जा सकते हैं।

सही उपयोग और गलत उपयोग यदि हम सही उपयोग करेंगे, हमारे लिए वस्तुए लाभकारी होगी यदि गलत इस्तेमाल करेंगे तो हमे हानि हो जाएगी।

गलत प्रयोग के घातक परिणाम होते हैं। जहर शब्द के लिए सस्कृत साहित्य मे 'विष विप्रयोगे शब्द का प्रयोग होता है। और विष शब्द का अर्थ है गलत इस्तेमाल, अनुचित उपयोग। किसी भी चीज का गलत इस्तेमाल घातक हो सकता है। तो वस्तुओ का गलत इस्तेमाल उनको हलाहल या जहर बना देता है।

जिस चीज का भी गलत इस्तमाल किया जाएगा वह हमारे लिए जहर होगा। इसी प्रकार यदि भगवान् को ठीक प्रकार हमने न समझा तो वह हमारे लिए बजाय लाभदायक होने के अत्यन्त हानिप्रद हो जायेगा। लोगो ने ईश्वर के समझने में बडी गलती की है और किये जा रहे है। इस गलत विश्वास और नासमझी ने ऐसो को ही हानि पहुचाई है। लोग धर्म के नाम पर अब तक ठगे जा रहे है और हानि उठा रहे है।

चार एक शब्द है। उससे पहले अति लगाने से वह अत्याचार बन जाता है। जिस चीज के साथ भी अति होगी वह बिगड जाएगी।

टामस पेन का वह वाक्य कि We cannot serve God in the manner we serve those who cannot do without such service ईश्वर की उपासना का जो ढग मैंने बताया है यह उसी ओर सकेत करता है। मनुष्य की सेवा जैसे की जाती है वैसे भगवान् या ईश्वर की नही की जा सकती। जो लोग ईश्वर की भी मनुष्य की तरह सेवा करना चाहते है वह गलत रास्ते पर जा रहे हैं। उन्हे उससे कुछ लाभ न होगा। ऋषि दयानन्द ने जब शिव पर चूहे चढते देखे तो उन्हे यही तो खयाल हुआ कि जो शिव चूहे को अपने ऊपर से नहीं हटा सकता वह जगत् की कैसे रक्षा कर सकेगा ? इस सवाल से सारी आगे की घटनाए सम्बद्ध है।

तो मैं आपको बता रहा हू कि मूर्तियो का सही उपयोग कीजिए, गलत इस्तेमाल छोड दीजिये।

मान लीजिये आपका एक बच्चा है। आपके पास एक घडी भी है। आपका बच्चा घडी पर चावल रखने लगे, दाल डालने लगे, लड्डू रखने लगे जलेबिया चढाने लगे, रायता उस पर डाल दे। सब चीज उस पर डालने लगे तो आप उसे ऐसा करते देखकर क्या करेंगे ? क्या आप उसे डाटेंगे नही ? मना नही करेंगे ? अरे बेवकूफ घडी बिगाडेगा ? क्यो इस पर यह चीजे डाल रहा है ? बच्चा उत्तर दे कि पिताजी यह चलती है तो मैं इसे खिला पिला रहा हू। क्या हर्ज है ? क्या यह कोई खाती है ? क्या यह रायता व पानी पीती है जो तू इस पर डाल रहा है ?

आप घडी के बारे में तो इतना तर्क कर रहे हैं लेकिन मूर्ति के बारे में यह तर्क क्यो नही करते ? बुद्धि का प्रयोग हमे दोनो जगह करना चाहिये। जैसे घडी के ऊपर जलेबी चढाना बेकार है वैसे ही मूर्ति के ऊपर भी कोई चीज चढाना बेकार है। तो मूर्ति के ऊपर कोई चीज चढाने या उनके सामने हाथ जोडने, लेट जाने या नाचने से न भगवान् की पूजा होती है और न धर्म की रक्षा।

हमको ईश्वर व प्रकृति दोनो का ही सही उपयोग करना चाहिए। ईश्वर के गुणो को हम धारण करे और श्रेष्ठ बने। प्रकृति के पदार्थो का मनुष्यमात्र के भले के लिए प्रयोग करे। प्रकृति का गलत प्रयोग हमे नुकसान पहुचाएगा। किसी फारसी के शायर ने लिखा है

अगर सदसाल गब्र आतिश फरोजद,
चू यकदम अन्दरा उफतद बिसोजद।

गब्र कहते है आग के पुजारी को। यदि आग का पुजारी सौ साल तक आग को रोशन रखता रहे और एकदम उसमे कूद पडे तो आग उसे फौरन जला देगी। आग वहा जरा भी लिहाज नही करेगी। आग प्राकृतिक पदार्थ है। उसका गलत प्रयोग किया गया तो उसने नतीजा दे दिया।

प्रतिदिन लोग अन्धविश्वास या यू कहिए कि नासमझी से काम करने के कारण अपने जीवन से हाथ धो बैठते हैं। क्या ऐसे लोग गगा और यमुना मैया की जय बोलते हुए नही चले जाते हैं जो तैरने की विद्या सीखे भी नही हैं और नदियो के पानी मे घुस जाते हैं, बडे जोर से गगा मैया की जय, जमुना मैया की जय चिल्लाते हुए लोग चले जाते हैं ? कोई नही रोकेगा ऐसे नासमझ समझ लोगो को। गगा मैया या जमुना मैया ऐसे नासमझ लोगो की प्रतिक्षा में है कि वे आयें और बिना तैरने की विद्या सीखे मुझमें घुसे। वह उन्हे पानी मे ही दबोच लेगी और अपने बेटो, जल जन्तुओ, मछली, कछुओ आदि को खिला देगी। अपने नादान व नासमझ बेटो का वह थोडा सा भी लिहाज नही करेगी, उन्हे छोडेगी नहीं। सैकडो बार ऐसे दु खद समाचार सुने जाते हैं कि अमुक युवक डूब गया, इस मुहल्ले का इकलौता बच्चा डूब गया। प्राकृतिक चीजो के दुरुपयोग या नासमझी से किये उपयोगो का यह फल है।

इसके विपरीत यदि कोई कस्साब पशुओ का वध करके आया है खून मे हुआ है, जमना को मैया भी नही कहता है बल्कि उसे कुछ और ही नाम से पुकारता है, किन्तु तैरने की विद्या जानता है और उसे जानकर पानी में घुसता है तो उसको जमुना या गगा मैया अपनी छाती पर तैरा देगी और वह बखूबी पानी मे अपने करतब दिखाता रहेगा। कभी चित तैरेगा, कभी पट। गगा या यमुना उसका कुछ न बिगाड सकेगी। क्यो ? क्योकि वह तैरने की विद्या सीखकर पानी मे घुसा है। वह उसका भक्त नही है तो भी नदी उसका लिहाज करती है। परन्तु जो नासमझ श्रद्धालु हैं, चाहे वे दयाछियो से उसके भक्त हो उनके साथ कोई लिहाज नही करेगी और उन्हें डुबो देगी।

इसी प्रकार जो ईश्वर की उपासना, बिना उसके गुण, कर्म व स्वभाव जाने, अन्धाधुन्ध करते हैं उनको किञ्चित्मात्र भी ईश्वर से लाभ प्राप्त नही हो सकता। कहा भी है बेइल्म नतवा खुदारा शनाख्त। इसलिए ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव से परिचित होकर अपने को लाभान्वित करना चाहिये। यही उसकी सच्ची उपासना है पूजा है और यही उसकी भक्ति है।

जड मूर्ति को पूजने से तो जडता के अतिरिक्त और कुछ प्राप्त नही हो सकता।

॥ ओ३म् शान्ति शान्ति शान्ति ॥

आदर्श सामाजिक व्यवस्था

९ सितम्बर १९९० की गोष्ठी पर एक रिपोर्ट

विमल वधावन एडवोकेट, संयोजक कानूनी समिति, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

हाल ही मे सारे विश्व ने देखा कि लगभग ७० वर्ष पुरानी साम्यवादी सामाजिक व्यवस्था का किस प्रकार पतन प्रारम्भ हुआ। साम्यवाद के सबसे प्रबल समर्थक सोवियत संघ में ही इस व्यवस्था के विरुद्ध सबसे पहले आवाज उठी और पेरिस्त्राईका के नाम पर देश की व्यवस्था मे कई बुनियादी परिवर्तन किए गये। सोवियत संघ के वर्तमान राजनेता मिखाईल गोर्वाच्योव ने इतने बुनियादी परिवर्तनो के बावजूद भी सत्ता पर अपनी राजनैतिक पकड ढीली नही होने दी।

गत अप्रैल मास मे प० वन्देमातरम रामचन्द्रराव जी के दिल्ली निवास के समय इसी विषय पर कुछ चर्चा भी हुई। सोवियत संघ ही नही पिछले कुछ वर्षों में विश्व के कई अन्य देशो की सामाजिक व्यवस्थाओ मे मूलभूत परिवर्तन हुए है जैसे पोलैण्ड के चुनावो मे कम्यूनिस्ट पार्टी के प्रत्याशियो की करारी हार, हंगरी मे तो कम्यूनिस्ट पार्टी ने अपना नाम ही बदल कर समाजवादी पार्टी रख लिया, ईस्ट जर्मनी तथा चैकोस्लोवाकिया में भी कुछ इसी प्रकार के परिवर्तन हुए, चीन मे भी लोकतान्त्रिक व्यवस्था के समर्थक छात्रो द्वारा बड़ा उग्र आन्दोलन हुआ परन्तु इस आन्दोलन को सैनिक बल के प्रयोग से दबा दिया गया। आज नही तो कल चीन में भी इसी प्रकार के परिवर्तन की सम्भावनाओ से इन्कार नही किया जा सकता। श्री गोर्वाच्योव ने भी जनता मे एक कसक महसूस की जो कि साम्यवाद व्यवस्था के खिलाफ थी, परन्तु उन्होने इन विरोधी विचारो को सैनिक बल से दबाने की अपेक्षा लोकतान्त्रिक तरीके से उन्हे सुना और परिवर्तन को पेरिस्त्राईका के नाम से लागू किया।

किसी भी क्रान्तिकारी कार्य की पृष्ठभूमि पर क्रान्तिकारी ज्ञान का होना भी आवश्यक है जिसे मार्क्स और लेनिन सरीखे उच्च कम्युनिस्ट नेताओ ने भी नहीं समझा परन्तु महर्षि दयानन्द ने इनसे भी पहले इस बात को महसूस किया था कि वेदों मे उपदेशित समस्त विचार अवधारणाए एव मान्यताए ही क्रान्तिकारी ज्ञान हैं और इसी ज्ञान के आधार पर किया गया कार्य सफल हो सकता है। मानव निर्मित समस्त व्यवस्थाओ मे कोई न कोई कमी सम्भव हो सकती है परन्तु वेद ईश्वरीय ज्ञान होने के कारण हर प्रकार से सुख कारक ही होगा। साम्यवाद की ही तरह कुछ दशक पहले फासिस्ट तथा नाजीवाद का पतन भी इसी प्रकार के कारणो से हुआ। इन व्यवस्थाओ में भी मनुष्य की व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का बहुत कम सम्मान था अत ऐसी अवस्था मे कुछ समय तक तो सत्ता के प्रभाव से हिटलर अपनी मान्यताओ को जनता पर लादता रहा परन्तु उसके अन्त के साथ ही उसके द्वारा प्रतिपादित सामाजिक व्यवस्था का भी अन्त हो गया।

पण्डित वन्देमातरम जी की इच्छा थी कि कुछ अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के विद्वानो को लेकर एक संगोष्ठी (सेमिनार) का आयोजन किया जावे जिससे इस बात का प्रचार हो कि वेदो तथा मनुस्मृति द्वारा उपदेशित वर्णाश्रम व्यवस्था अपने प्रतिपादन के लगभग दो अरब वर्ष पश्चात् भी समाज के लिए सर्व-सुखकारी हो सकती है यदि प्राचीन शुद्ध रूप के अनुसार समाज इस पर कार्यान्वयन करें।

वर्णाश्रम व्यवस्था का मूल सिद्धान्त यह है कि गुण कर्म और स्वभाव के अनुसार मनुष्य के लिए चार कार्य वर्ग बनाए तथा जीवन की अवस्थाओ को भी चार भागो मे विभाजित किया गया। चार कार्य वर्ग थे—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र तथा जीवन की चार अवस्थाए थी—ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ, तथा संन्यास प्रत्येक व्यक्ति, विश्व में किसी भी कोने मे रहता हो और किसी भी समुदाय से सम्बन्धित हो, अपने जीवन को इन चार अवस्थाओ मे विभाजित पाता है। ब्रह्मचारी अर्थात् विद्यार्थी जीवन के अन्त में प्रत्येक मनुष्य अपनी अर्जित शिक्षा तथा इच्छा के अनुरूप अपने लिए चार मे से एक कार्य वर्ग चुनता है। अत स्पष्ट है कि ब्राह्मण आदि चार वर्णो मे से एक व्यक्ति को स्वय चुनना होता है। एक साधारण सी बात है कि किसी वकील का पुत्र या पुत्री वकील ही हो, यह तब तक नही कहा जा सकता जब तक वह कानून की पढाई पूरी करके परीक्षा में उत्तीर्ण न हो जाए। इसी प्रकार कोई डाक्टर, राजनेता, प्रशासक या दाल चीनी का व्यापारी या सफाई कर्मचारी पैदा नही होता अपितु इन सब वर्गों में से मनुष्य किस वर्ग मे रहेगा यह निर्भर करता है उसके ब्रह्मचारी जीवन मे अर्जित गुणो पर, उसके स्वभाव पर तथा उसकी योग्यता पर। ससार के समस्त पेशो को सुविधा की दृष्टि से चार बडे वर्गों मे बाट दिया गया जिन्हे वर्ण व्यवस्था कहा गया। अत स्पष्ट है कि ब्राह्मण का बच्चा ब्राह्मण तभी बन सकता है जब उसके गुण तथा कर्म ब्राह्मणो जैसे हो, वह अपनी विद्या अध्ययन के बल पर नि स्वार्थ भाव से समाज के दुःख दूर करता हो तथा ज्ञान के प्रचार-प्रसार में कार्यरत हो। इसी प्रकार एक सफाई कर्मचारी का बच्चा यदि ब्रह्मचारी जीवन मे उच्च कोटि की विद्वता हासिल कर लेता है तो गृहस्थ जीवन मे प्रवेश के समय स्वाभाविक रूप से उसे ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि कार्य वर्गों मे से एक चुनना होगा, वह सफाई कर्मचारी नही रहेगा।

(क्रमश)

आर्यनेता अर्जुनदेव महाना की जघन्य हत्या

उ० प्र० की राजधानी लखनऊ में दिन दहाड़े हत्याओं का सिलसिला जारी : लखनऊ जिले में भारी रोष व तनाव व्याप्त

लखनऊ जिला, आर्य उपप्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान बाल सदन मोती नगर लखनऊ के अध्यक्ष तथा नगर की अनेक सामाजिक संस्थाओं से जुड़े श्री अर्जुनदेव महाना की दिन दहाड़े १ बजे गोली मार कर जघन्य हत्या कर दी गई।

वे ६१ वर्ष के थे अपने पीछे पत्नी एक पुत्र तथा तीन पुत्रियां छोड़ गये। आप श्री कृष्ण बलदेव महाना पूर्व उ प्र सभा कोषाध्यक्ष के छोटे भाई थे। श्री महाना को उस समय गोली मारी गई जब वह पंजाब सिंध बैंक के मुख्य द्वार मे अपने पेट्रोल पम्प का लगभग २ लाख रुपया नगद जमा करने जैसे ही बैंक के मुख्य द्वार पर पहुचे। ४ नौजवान लड़को ने छीना झपटी की और एक थैला लेकर भागने मे सफल हो गये। जब श्री महाना व उनका कर्मचारी श्री शिव प्रसाद दीक्षित पैसा बचाने का प्रयास कर रहे थे हत्यारों ने फायर कर दोनो को गम्भीर रूप से घायल कर दिया।

श्री महाना मेडिकल कालेज पहुचते ही चल बसे। श्री दीक्षित की हालत चिन्ताजनक बनी हुई है। श्री महाना लखनऊ नगर के अत्यन्त लोकप्रिय आर्य नेता थे। वह पेट्रोल पम्प तथा ईंट भट्टे का व्यापार करते थे जैसे ही उनके गोली लगने का समाचार नगर मे फैला आलमबाग बाजार बन्द हो गया और लखनऊ, कानपुर रोड जाम कर दी गई। नगर के पुलिस अधिकारी ए० डी० एम० घटना स्थल पर पहुच गये। तथा जनता को विश्वास दिलाया कि हत्यारो को शीघ्र ही पकडेंगे।

२४ घण्टे के अन्दर मुख्य अभियुक्त महेन्द्र कुमारसिंह को इन्सपेक्टर आलमबाग श्री श्यामचन्द ने गिरफ्तार कर ४० हजार रु० भी बरामद कर लिये। महेन्द्र कुमारसिंह स्थानीय इलैक्ट्रिक इन्जीनियरिंग पाली टैक्निक का छात्र है बाकी ३ हत्यारे अभी फरार हैं। जिले की समस्त आर्य समाजों विभिन्न संस्थाओं व प्रतिष्ठानों में शोक व्याप्त हो गया।

जिला सभा लखनऊ के तत्वावधान में लखनऊ जनपद की समस्त आर्य-समाजों की एक शोक सभा आदर्श नगर आर्य समाज मन्दिर में हुई जिसमें उ० प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी जिला सभा के प्रधान श्री देवव्रत अवस्थी, मन्त्री श्री चन्द्र कुमार खाबड़ा, श्री विश्वम्भर दयाल गुप्त प्रकाशक आर्य मित्र तथा समस्त आर्य समाजों के अधिकारियों व सदस्यों ने भारी संख्या मे उपस्थित होकर स्व० आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

शोक समाचार

यह बड़ी दुखद सूचना है कि आर्य समाज नरोरा अणुविहार कालोनी जनपद बुलन्द शहर (उ प्र) के संस्थापक भूतपूर्व प्रधान व प्रमुख सक्रिय कार्यकर्ता श्री विश्वम्भर नाथ श्रीवास्तव का देहावसान दिनांक १०-८-९० को हो गया। आप अनन्य ऋषि भक्त एवं वेदानुयायी थे। आपका जीवन वैदिक सिद्धान्तों से ओतप्रोत था। मृत्यु के एक दिवस पूर्व तक उन्हें आर्य-समाज अणुविहार नरोरा के सत्संग भवन निर्माण व वैदिक प्रचार हेतु चिन्तातुर पाया गया। इसके पूर्व आप राजस्थान परमाणु विद्युत परियोजना आर्य समाज रावतभाटा (कोटा) के वर्षों प्रधान रहे। एवं उक्त आर्य समाज के प्रचार प्रसार मे तत्पर रहे। आप अपने पीछे सुयोग्य पुत्र श्री अशोक कुमार श्रीवास्तव इन्जिनियर एन. ए पी. पी. छोड़े गये हैं जो निष्ठावान आर्य समाजी हैं। इनकी पुत्रवधू पुत्रियां दामाद सभी वैदिक धर्मी है।

—धर्मसिंह, मन्त्री
आर्य समाज अणुविहार नरोरा

कश्मीर के विस्थापितों के लिए

आर्य महिला सभा द्वारा सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी को ७०००) रुपये का चैक भेंट

नई दिल्ली। आर्य समाज ग्रेटर कैलाश मे आर्य महिला सभा दिल्ली द्वारा पृथ्वी सूक्त पर एक यज्ञगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमे दिल्ली की महिलाओ ने बढ़ चढ कर भाग लिया और अपने विचार रखे। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी को दिल्ली आर्य महिला सभा की ओर से ७०००) का चैक भेंट किया गया यह राशि कश्मीर के विस्थापित के लिए है। श्रीमती माता सरला मेहता ने अपनी ओर से १०००) रु० भेंट किया आर्य महासम्मेलन के लिए यह राशि दी है स्वामी जी ने आभार प्रकट करते हुए कहा कि जब भी कभी हमे सम्मेलनो मे धन की आवश्यकता पडी है तो दिल्ली की माताओ ने हमें पूर्ण सहयोग दिया है। आगामी आर्य महा सम्मेलन मे भी माताए इसी प्रकार हमे सहयोग प्रदान करेंगी।

अब धमाका उर्दू को लेकर होगा

नई दिल्ली १३ सितम्बर। त्रिभाषा फार्मूला बना हुआ है उसमे परिवर्तन करके उर्दू लाने का निर्णय भारत सरकार ने लगभग कर लिया है।

सस्कृत के स्थान पर अब उर्दू को तीसरी भाषा के रूप में तो लिया ही जायेगा।

सस्कृत के स्थान पर उर्दू लाने का यह प्रस्ताव गुजराल समिति के सुझावो के लागू करने के नाम पर रखा जा रहा है।

पिछले दिनो अनेक मुसलिम सासदो और इमाम बुखारी के दबाव मे आकर प्रधान मन्त्री वी० पी० सिंह ने उर्दू को त्रिभाषा फार्मूले के अन्तर्गत लाने पर अपनी सहमति दे दी हैं।

इस विषय पर जब प्रधान मन्त्री ने अपने कुछ उच्च अधिकारियो से राय मागी, तो उन उच्च अधिकारियो ने लिखित रूप से सूचित किया है कि उर्दू को त्रिभाषा फार्मूले मे जोड़ने से हिन्दी भाषा-भाषी क्षेत्रों मे भाषा को लेकर गम्भीर समस्याए उत्पन्न हो जायेंगी और उपद्रव भी हो सकते हैं पर प्रधानमन्त्री के विशेष निर्देश पर यह निर्णय लिया गया हैं कि शीघ्र ही उर्दू को आगे बढाने के लिए और त्रिभाषा फार्मूले मे लाने के लिए एक प्रस्ताव बनकर मन्त्रिमण्डल की बैठक के लिए तत्काल प्रस्तुत किया जाये।

(दैनिक जागरण १४ ९-९० से साभार)

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह दिनांक ६, ७ अक्टूबर चण्डीगढ़ में

चण्डीगढ। दिनाक ६, ७ अक्टूबर को केन्द्रीय आर्य सभा चण्डीगढ के तत्वावधान में पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह का आयोजन किया जा रहा है जिसमे आर्य जगत के सन्यासी विद्वान व नेता पधार रहे हैं। दिनाक ६ अक्टूबर को सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी पधार रहे हैं। अत आर्य बन्धुओ से निवेदन है कि अधिक से अधिक सख्या मे पहुच कर प० गुरुदत्त विद्यार्थी को अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करें।

—सम्पादक

ग्राम सिरोड़ी जिला गाजियाबाद में आर्य महासम्मेलन

आर्य उपप्रतिनिधि सभा गाजियाबाद जनपद का तृतीय आर्य महासम्मेलन ३० सितम्बर से २ अक्तूबर १९९० तक रविवार, सोमवार और मगलवार को समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। जिसमे उच्चकोटि के विद्वान सन्यासी, महोपदेशक तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

आयोजन स्थल—जनता इन्टर कालेज सिरोली (सिरोड़ी)

क्या आरक्षण का जहर हमारी एकता को नष्ट करेगा ?

मुम्बई ९ सितम्बर। वैदिक समाजवाद समिति ने आरक्षण को निरधारित के लिये आपातकालीन व्यवस्था बताया जिसका आधार शुद्ध आर्थिक होना चाहिये। जाति प्रथा को गलत मानते हुये, समिति ने जद नेताओ के परस्पर विरोधी और हिंसक बयानो को देश की एकता के लिये गम्भीर बताया। मुलुड आर्य समाज के तत्वावधान मे आयोजित समारोह मे गरीब और पिछडे वर्ग के लोगा के उत्थान के लिये शिक्षा औषधि और न्याय मुफ्त देने की सरकार से माग की। अगर सरकार पिछडो के प्रति इमानदार है तो उन्हे योग्यता हासिल करने का भरपूर मौका दे महगाई की मार से राहत दे तथा आरक्षण का लालच देकर प्रतिभा को कुठित व निष्क्रय न होने दे।

जाति प्रथा के बन्धन अपने आप समय की धारा मे समाप्त होते जा रहे हैं। रेल बस हवाई जहाज सिनेमा होटल हस्पताल और सार्वजनिक स्थलो पर जाति प्रथा का नहीं धन का प्रभुत्व छाया हुआ है। वोट की राजनीति करने वाले नेता देश को जनता को गुमराह कर रहे हैं। सभा मे सर्वश्री अशोक कुमार मेघराज गुप्त, सुरेन्द्र कुमार मलहोत्रा, पृथ्वीराज सिंह शिवदत्तसिह और भूपेश गुप्त ने अपने विचार प्रगट किये, सभा का सचालन ओमप्रकाश आर्य ने तथा अध्यक्षता श्री त्रिभुवन आर्य ने की।

—मन्त्री

महापारायण यज्ञ

वैद्य धर्मपाल स्वतन्त्रता सनानी दिनाक ३०-९-९० से ७-१०-९० तक अथर्ववेद महापारायण यज्ञ करा रहे हैं। यह यज्ञ राष्ट्र कल्याण की भावना से कराया जा रहा है। इस यज्ञ में अनेक धार्मिक सामाजिक तथा राजनैतिक महापुरुष भाग ले रहे हैं। दिनाक ६, ७ अक्टूब को योगमुद्रा से ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी (पूर्व श्रृगी ऋषि) के प्रवचन होगे। सभी आर्य सज्जनो से प्रार्थना है कि अधिक से अधिक सख्या मे सम्मिलित हो।

प्रोग्राम

दिनाक ३०-९-९० से ७-१०-९० तक

प्रात ६ बजे से ९ बजे तक यज्ञ एव प्रवचन

साय ३ बजे से ६ बजे तक ,, ,,

दिनाक ७-१०-९० को प्रात ७ बजे पूर्णाहुति होगी।

—जसवन्तसिंह, कोषाध्यक्ष

रजि० नं० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२१ ९ १९९०) बिना टिकट भेजने का आर्डर्स नं० U ६१
R.N. 626/57 Licensed to post without Prepayment Licen[illegible] [illegible] Post in D P.S O.[illegible] 21-9 1990



आर्य अनाथालय के वार्षिकोत्सव पर मच पर बैठे हुए श्री सूर्यदेव जी प्रधान आर्यसमाज दीवान हाल श्रीमती वीणा मलहोत्रा श्रीमती शारदा नारंग सचिव व प्रधान आर्य कन्या सदन श्री रामकुमार गुप्ता जी प्रधान आर्य बाल गृह श्री आर० डी० कपूर आयुक्त दिल्ली नगर निगम अध्यक्षता, श्रीमती ऊर्षासिंह उपमन्त्री कल्याण मन्त्रालय भारत चीफ गेस्ट लाला श्री इन्द्र नारायण जी प्रधान आर्य अनाथालय, श्री सुशीलप्रकाश चौधरी प्रधान चन्द्रवती चौधरी स्मारक ट्रस्ट श्री महेन्द्रकुमार शास्त्री मन्त्री आय बाल गृह छात्रावास श्री हमीरसिंह रघुवशी अधिष्ठाता मच से बोलते हुए।

आर्य अनाथालय दिल्ली के उत्सव पर

विशिष्ट सेवाओं के लिए कर्मचारी पुरस्कार से सम्मानित

सस्थाओ के मुख्य अधिष्ठाता श्री वीरेन्द्र प्रताप चौधरी ने सस्था के कार्यो मे हो रही प्रगति के बारे में जानकारी दी। तथा उक्त विशिष्ट सेवाओ हेतु अन्य स्टाफ सहित अधिष्ठाता श्री हमीरसिह रघुवशी को ५०१) रु० पुरस्कार से सम्मानित किया गया तथा परीक्षा मे अच्छे अक प्राप्त दो बच्चो को भा सम्मानित किया गया तथा इंजनियस क्लब दिल्ली मे प्रथम श्रेणी मे पास सस्था के सात बालका को ३००) रु० प्रतिवष के हिसाब से वजीफे का शुभारम्भ किया।

सस्था के सचिव श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री ने इनसस्थाओ को दिये गये अनेक दानी महानुभावो के सहयोग की घोषणाय की तथा आय अनाथालय के प्रधान लाला इन्द्र नारायण ने सभी दानियो का आभार व्यक्त किया।

आय बाल गृह के प्रधान श्री रामकुमार गुप्ता कन्या सदन के प्रधान श्री शारदा नारग, चन्द्रवती चौधरी स्मारक के प्रधान श्री सुशील प्रकाश चौधरी ने मुख्य अतिथि व अध्यक्ष महोदय का बड़ा सुमन से स्वागत किया। देश विदेश के अनेक गणमान्य नागरिको सहित नर नारी बच्चो प्रतिष्ठित व्यक्तियो ने इस समारोह मे भाग लिया।

—हमीरसिह रघुवशी अधिष्ठाता

पुरोहित की आवश्यकता

आय समाज तिमारपुर को एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है। जो पाठशाला के बच्चो को भी धार्मिक शिक्षा दे सके एव सस्कार करा सक। विज्ञापन तिथि से १५ दिन के अन्दर प्रार्थना पत्र आना चाहिए।

—वीरसिंह मन्त्री
आय समाज तिमारपुर, दिल्ली-७

गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाय

वैदिक समाजवाद समिति की मांग

बम्बई १६ अगस्त वैदिक समाजवाद समिति की सभा मे वक्ताओ ने कहा कि गाय सम्पूण मानव जाति को भी दूध खाद और बैल देकर महान उपकार करती है। अत वह माता के समान है। भारत कृषि प्रधान देश है इसलिये सरकार को चाहिये कि वह गाय को कूर शेर की जगह राष्ट्रीय पशु घोषित करे। क्योकि गौ वश राष्ट्र की अथव्यवस्था की रीढ है। समिति ने इस बात पर गहरा दु ख व्यक्तकिया कि गाय जैसे लाभकारी प्राणी के प्राण रक्षा का एक गैर सरकारी प्रस्ताव लोकसभा मे सब आठ वोटो स नामजूर हो गया। भाजपा के सासदो की प्रशसा करते हुये कांग्रेस के वसत स ठे को एक सुलझा हुआ नेता बताया जिन्होने इस महत्वपूर्ण प्रश्न को पहचानने मे कोई गलती नहीं की। [illegible] था अर्थात सरकार गाय जैस सब हितकारी पशु को भी साम्प्रदायिकता के रग मे रगना चाहते हैं।

समिति के उद्देश्य को स्पष्ट करत हुये मन्त्री ओमप्रकाश आय ने बताया कि हमारा उद्देश्य बिना किसी भेदभाव के प्रत्येक परिवार को सीमित स्वस्थ सुखी और सुन्दर बनाना है जिससे धम, अथ काम मोक्ष सभी को प्राप्त हो सकें प्रधानमन्त्री को लिखे पत्र में समिति ने दावा किया कि उसके पास सुख देश की सभी समस्याओ का समाधान कर सकते हैं।

मन्त्री वैदिक समाजवाद समिति

वार्षिक अधिवेशन

आय प्रतिनिधि सभा हरियाणा का वार्षिक साधारण अधिवेशन (चुनाव) दिनाक ४ नवम्बर ९० रविवार को प्रात ११ बजे सभा के मुख्य कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ गोहाना मार्ग, रोहतक में होना निश्चित हुआ है।

—[illegible]

सार्वदेशिक प्रस दरियागंज नई दिल्ली मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक
सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०११ | दयानन्दाब्द १६६ | दूरभाष : ३२७४७७१ | वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे

वर्ष २९ अंक १८] | आश्विन शु० ११ सं० २०४७ ३० सितम्बर १९९०

आर्य समाज संगठन से निष्कासित स्वामी इन्द्रवेश और अग्निवेश को तथाकथित भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के गठन का अधिकार नहीं है

यतिमण्डल का सर्वसम्मत प्रस्ताव

दिल्ली के गुरुकुल गौतमनगर में वैदिक यति मण्डल की एक आवश्यक बैठक श्री स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में हुई, जिसमें स्वामी अग्निवेश एवं स्वामी इन्द्रवेश द्वारा निर्मित तथाकथित भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के सम्बन्धमें विचार किया गया और सर्वसम्मति से निम्न प्रस्ताव पारित किया गया:—

'आर्य समाज के संविधान के अनुसार बिना सार्वदेशिक सभा की अनुमति के कोई भी नया संगठन नहीं बन सकता। जहां तक स्वामी अग्निवेश एवं स्वामी इन्द्रवेश का सम्बन्ध है, वे सार्वदेशिक सभा से पहले ही निष्कासित हैं अतः उन्हें आर्यसमाज के संगठन में हस्तक्षेप करने का कोई भी अधिकार नहीं है। इसलिए उन द्वारा स्थापित संगठन सर्वथा अवैधानिक एवं आर्यसमाज के लिए घातक है अतः उसे अमान्य घोषित किया जाता है।"

इस बैठक में पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती, स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती तथा स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती तथा अन्य अनेक महानुभाव उपस्थित थे।

वेद सुधा

घर में अन्न-समृद्धि हो

उपहूता इह गाव उपहूता अजावयः।
अथो अन्नस्य कीलाल उपहूतो गृहेषु नः॥
क्षेमाय वः शान्त्यै प्रपद्ये
शिवꣳ शग्मꣳ शंयोः शंयोः॥
यजु० ३-४३, अथर्व० ७-६०-५॥

हिन्दी अर्थ—इस घर में गाय, बकरी और भेड़ आमन्त्रित हैं। हमारे घरों में अन्न का पेय आमन्त्रित है। हे गृह के देवो! अपने कल्याण और शान्ति के लिए तुम्हारी शरण में आता हूं। यहां सुख, कल्याण शान्ति और कुशलता रहे।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

ऋषि वचनामृत

१—मेरी अन्तःकरण से यही कामना है कि भारतवर्ष के एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त तक आर्य समाज स्थापित हो और देश में व्यापी हुई कुरीतियां उन्मूलित हो जाएं।

२—सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् सामान्य सार्वजनिक धर्म, जिसको सदा से सब मानते आये, मानते हैं और मानेंगे भी इसलिए उसको सनातन नित्यधर्म कहते हैं कि जिसका विरोधी कोई भी न हो सके।

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

दानवीर लाला दीवानचन्द जी का १०६वां जन्म दिवस समारोह सम्पन्न

आर्य समाज दीवानहाल में २३ सितम्बर १९९० को स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता में स्व० लाला दीवानचन्द जी का १०६वां जन्म दिवस समारोह धूमधाम से सम्पन्न हुआ। स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती ने लाला दीवानचन्द जी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए कहा—लाला जी एक गरीब परिवार में पैदा हुए थे ८ वर्ष की आयु में उनके सिर से माता-पिता का साया उठ गया और वह अनाथ बालक १० रुपये मासिक पर नौकरी करने लगा। बाद मे उन्होंने रेलवे इंजन की राख का कारोबार शुरू किया और इस कार्य से लाखों रुपया कमाया। उन्होंने ढाई लाख रुपया देकर आर्य समाज दीवानहाल का निर्माण कराया था। दीवानहाल आज दिल्लीमें ही नहीं पूरे देश में आर्यसमाज की गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र बनाहै। आर्यसमाज ने आज तक जितने भी आन्दोलनों का संचालन किया उनका सूत्रपात आर्य समाज दीवानहाल से ही हुआ। यह सब स्व० लाला दीवानचन्द जी की ही दान वीरता का प्रताप था। जीवन में किए गए धनोपार्जन का एक भाग मानव कल्याण के लिए दान करना उनके जीवन का मुख्य आदर्श था। जो समाज सेवी महानुभावों के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

स्वामी जी के अतिरिक्त समारोह में श्री लाला इन्द्रनारायण हाथी दांत वाले, श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री और श्री सूर्यदेव जी, महेश विद्यालंकार ने भी स्व० लाला दीवानचन्द जी के प्रति अपनी-अपनी श्रद्धाञ्जलियां अर्पित कीं।

सम्पादकीय—

आज हमें राम का आदर्श चाहिये ?

राम का धरा पर अवतरण देवरक्षा, देवकाय के लिये हुआ। ऐसे महापुरुषों का आगमन प्रभु की विशेष कृपा से होता है। संकट काल में ही भक्त जन जब प्रभु से प्रार्थना करते हैं क्योंकि देव-दानवों से आतंकित होते हैं देव भी अकेले नहीं रहते हैं—उनके साथ सन्त, मुनि, महात्मा, संन्यासी सबकी प्रार्थनायें भी रहती हैं। किन्तु न्याऊं का ठौर कौन पकड़े नव देवता ही आगे आते हैं।

प्रभु कृपा से राम का जन्म अकारण नहीं हुआ। भगवान राम ने सबको आश्वस्त किया। आप निर्भय हों, मैं राक्षसों का विनाश करूंगा। मानव विग्रह ग्रहण करूंगा।

निसिचर-हीन करहुँ महि भुज उठाई करि॰।

अवि डरपहुं मुनि सिद्ध सुरेशा तुमहिलागि धरिहहु नर वेसा॥

किसी भी देश का आदर्श दानवेन्द्र नही हो सकते हैं। क्योंकि देव-दानव दोनों ही एक पिता की सन्तान हैं। परन्तु—

आदर्श तो होगे योगियों में रमण करने वाले राम।

इन्द्र का सम्बन्ध इन्द्रियों से है, राम हृदय में रमने वाले भग-वान् हैं। '—धीरे-धीरे युगान्तर में इन्द्र की दुर्दशा देवताओं की हीन दशा। सन्त तुलसीदास ने देवताओं को स्वार्थी कहा है उन्हें कुत्ते के समान बताकर मजाक भी उड़ाई है।

(सरिस स्वान-मघवान जवानूं मघता महा मलीन)

देवताओं को भी घृणा की दृष्टि से देखा है क्यों कि वह भी निरे स्वार्थी हो गये थे। पर पूरे मानस में देवगण पुष्प वर्षा करते ही दिखाये गये हैं। तुलसीदास देवगणों के सामने राक्षसों से घृणा करते हैं, क्रुद्ध है, पर देवताओं से भी असन्तुष्ट हैं ऐसा क्यों हुआ—

इसे समझना होगा। विलास अविवेक और अन्याय को।

आज राम बनकर रावणों को मारना होगा। राम बनकर अहिल्या का उद्धार भी करना होगा।

राम ने जनकपुर जाते हुए अहिल्या का उद्धार किया उसे इन्द्र-इन्द्री पाप से मुक्त किया। राम इन्द्र के पापो को जानते थे उसके पुत्र जयन्त और बालि के पापो को भी जानते थे। राम-इन्द्र के नही कामी इन्द्र विरोधी थे जो लोभी हैं ईर्ष्यालु हैं हर समय गद्दी की चिन्ता मे स्वयं भ्रष्ट होता है। दूसरो को भी भ्रष्ट करता है।

रावण-ऋषि-मुनियो को मारता है इन्द्र-ऋषियो की तपस्या भग करता है। ऋषित्व से गिराता है। राजा-बुरा नही है किन्तु विदेह जैसा राजा बनो। राम जीवन मे केवल ऋषियो बनवासियों और पिछड़ो के यहा जाते हैं कभी किसी राजा के यहा नही।

केवल एक उपवाद है विदेह जनक के यहा! वहां भी गुरु विश्वामित्र के कहने पर।

अयोध्या मे इन्द्र की अप्सरा-पद्धति विरुद्ध एक स्त्री व्रत प्रति-ष्ठित किया साथ ही? सीता रहित जीवन भी जिये। सीता को छोड़ने पर राम ने दूसरा विवाह भी नही किया। किसी नारी से बात तक नही की।

राम आदर्श है जो जीवन भर एक के लिये रोते रहे, लड़ते रहे? अत उन्हे इन्द्र पद्धति के विरुद्ध एक पत्निव्रत की स्थापना की थी क्योंकि पति-पत्नि की मर्यादा बनाती थी इन्द्र ने अहिल्या की देह को अपवित्र किया था स्त्री देह अहिल्या का संकट देह-सम्बन्धी है। राम विदेह पुत्री को अपनाते हैं यहां देह नहीं मन द्वारा जाने वाला प्रेम तत्व महत्वपूर्ण है।

प्रेम तत्व कर-मम अरुतोरा, जानत प्रिया एक मन मोरा॥

रावण अपने समय का इन्द्र ही था देवेन्द्र नहीं। दानवेन्द्र था।

वनवास के समय इन्द्र-पुत्र जयन्त ने सीता के साथ बल प्रयोग किया वह कामी पुत्र था राम ने उसे दण्डित किया। मारा नहीं। सबको मारा भी तो नहीं जा सकता है मात्र एक आंख फोड़ डाली। इन्द्र चुप रहे। प्रतीत होता है कि इन्द्र पुत्र के व्यवहार से तंग आ गये थे। राम-रावण युद्ध में इन्द्र मौन रहें कितना आश्चर्य! देवों का कार्य और देवेन्द्र मौन रहे?

राम रावण के निर्णायक दौर में इन्द्र ने अपना रथ भेजा पर राम विजय की ओर थे फिर भी रथ स्वीकार कर लिया, लौटाया नहीं। दुनियां एक बार पुनः इन्द्र के स्वार्थ से परिचित हो गई। क्या यह रथ प्रारम्भ में नही भेजा जा सकता था परन्तु राम ने इन्द्र को एक काम और सोपा कि राम-पक्ष के घायल अधमरों को चैतन्य करते हेतु। इन्द्र की सुधा वृष्टि से वानर भालू आदि सभी स्वस्थ चैतन्य हो गये।

गोस्वामी जी को यह बात अच्छी नहीं लगी वे सभी को प्राण-दान तो करना चाहते थे किन्तु इन्द्र द्वारा नही। उसे यह श्रेय नहीं दिया जाय।

(प्रभु सक त्रिभुवन मारिजिआई केवल सक्रहि दीन्हिबड़ाई)

गोस्वामी जी यहां राम से इन्द्र का अपमान भी नहीं होने देते हैं किन्तु एक ऐसा काम सौंपते हैं जिसे वे स्वय नहीं करना चाहते। महान् व्यक्ति सब काम स्वयं नही किया करते हैं।

युद्ध में लंका विजय पर माला पहनाने वाले इन्द्र हैं ऐसे इन्द्रों की कमी नही राम को इनकी आवश्यकता भी है क्योंकि युद्ध के साथियों से राज-काज नहीं हो सकता। उसके लिये इन्द्र का सहयोग अपेक्षित है हां ताड़ना सहित राम ने इन्द्र को अपने दरबार में स्थान नही दिया। वहां स्थापित हुए हनुमान? न इन्द्र सुग्रीव और न विभीषण। राम इन्द्र के प्रति सावधान थे उसे दण्ड देकर पुनः अपने काम पर लगा दिया। और पूजा की दुनियां से उसे बाहर कर दिया। पूजनीय हुए हनुमान, वनवासी हनुमान हाथ में गदा लेकर राम राज्य की रक्षा करने लगे। हनु-मान मन के मन्दिर में विराजमान और इन्द्र मन के मन्दिर से बाहर हो गये। यह राम की एक विजय इसे पूर्णता तक पहुंचाया सन्त तुलसी दास ने।

राम की प्रेरणा, केकैयी का त्याग

माता केकैयी ने ईर्ष्या वश होकर नही बल्कि सोच-समझकर राम को भेजा था प्रेरणा राम की थी राम को अभिषेक की घोषणा हुई सारी अयोध्या आनन्द विभोर हो उठी? पर उस रात राम नियम से प्राणायाम मे बैठे थे राम को ऐसा लगा कि देवता लोग कुछ विनती कर रहे हैं।

रमा-मद्वती व्रतती मधु कुकुमार का।

देवत लोक कार्य चरित व्रत।

राम के मन में यह आभास हुआ कि देवता पूंछ रहे हैं कि रावण संहार वाली की उस प्रतिज्ञा का क्या हुआ? उसी समय राम उठकर सीधे मा केकैयी के पास ज ते हैं केकैयी कल होने वाले प्रिय पुत्र के अभिषेक वार्ता से प्रसन्न थी पर फिर पूछा राम? तुम यह क्या कर रहे हो लोग मुझे कहेंगे कि मैं तुम्हारी सद्गत मय कारिणी हूँ रात में क्या हो गया जो तुम यहां आये हो। राम बोले मां मैं क्या करूं? मेरी समाधि भग हो गई मैं कल-राजकाज में बंधने के बाद हिल भी न सकू गा।

पर ऐसा लगा कि देवता लोग मेरे से कह रहे हैं कि आप राज्य

(शेष पृष्ठ ११ पर)

आर्य समाज और उसके मन्तव्य

शास्त्रार्थ महारथी पंडित रामचन्द्र देहलवी

आर्य—श्रेष्ठ, कुलीन और सदाचारी मनुष्य को कहते हैं।

समाज—मनुष्यों के समूह और सभा को कहते हैं, अर्थात् ऐसा स्थान या सभा जिसका उद्देश्य स्वयं सदाचारी बनना और अन्यो को बनाना है।

इसकी स्थापना पाच अप्रैल सन् १८७५ को बम्बई मे हुई थी जो हिन्दुस्तान का एक बहुत बडा नगर है।

इसके संस्थापक व प्रवर्तक का शुभ नाम श्री दयानन्द सरस्वती है, जो आदित्य ब्रह्मचारी थे। सत्यमानी, सत्यकारी व सत्योपदेशक थे। वेद और शास्त्रो के महान् विद्वान थे।

इनके जीवन का उद्देश्य ससार को मिथ्या ज्ञान, मिथ्या विचार और मिथ्या विश्वास से मुक्त करके बुद्धि और सत्य के पथ पर लाना था। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए इन्होने आर्य समाज की स्थापना की और कई ग्रन्थ लिखे, जिनमे मुख्य सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका और संस्कार विधि है। ऋग्वेद और सम्पूर्ण यजुर्वेद का भाष्य सस्कृत और हिन्दी दोनो भाषाओ मे किया है।

इस समाज के स्वामी जी ने दस नियम बनाये—

(१) सब सत्य, विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

(२) ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा-अनन्त, निर्विकार अनादि अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है—उसी की उपासना करनी योग्य है।

(३) वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है। वेद का पढना-पढाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

(४) सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोडने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

(५) सब काम धर्मानुसार, अर्थात् सत्य और असत्य का विचार करके करने चाहिए।

(६) ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

(७) सबसे प्रीति पूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बरतना चाहिए।

(८) अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।

(९) प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

(१०) सब मनुष्यो को सामाजिक, सर्वहितकारी नियम पालने मे परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहे।

इन नियमो को मानने वाला आर्य समाज का सदस्य हो सकता है।

अनादि पदार्थ और उनके गुण, कर्म व स्वभाव

ईश्वर, जीव और प्रकृति इन तीन पदार्थों को आर्यसमाज अनादि मानता है।

ईश्वर—वह है जिसके ब्रह्म परमात्मादि नाम है। वह सच्चिदानन्दादि लक्षणयुक्त है। उसके गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र है, जो सर्वज्ञ, निराकार, सर्वव्यापक, अजन्मा अनन्त सर्वशक्तिमान्, दयालु, न्यायकारी, सब सृष्टि का कर्त्ता-धर्त्ता-हर्त्ता, सब जीवो को सत्य-न्याय से फलदाता आदि लक्षणयुक्त है। वह एक ही है अनेक नही।

जीव—ईश्वर से नितान्त भिन्न एक परिछिन्न चेतन पदार्थ हैं। कुछ गुणो मे साधर्म्य और कुछ गुणो मे वैधर्म्य भी है। प्रयत्न, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुःख और ज्ञान गुण वाला है।

प्रकृति—जड पदार्थ है और जगत् बनाने की सामग्री है।

प्रत्येक वस्तु को बनाने से पूर्व उसके लिये तीन कारणो की आवश्यकता होती है। उनके नाम और उनकी परिभाषा यह है—

(१) निमित्तकारण (मुख्य व साधारण दो प्रकार के हैं)

(२) उपादन कारण।

(३) साधारण कारण।

निमित्तकारण—उसे कहते हैं जिसके बनाने से कुछ बने, न बनाने से न बने, आप स्वय बने नही, दूसरे को प्रकारान्तर बना देवे।

उपादान कारण—उसे कहते हैं जिसके बिना कुछ न बने, वही अवस्थान्तर रूप होकर बने और बिगडे भी।

साधारण कारण—उसे कहते हैं जो बनाने मे साधन हो और साधारण निमित्त हो।

(१) मुख्य निमित्त कारण परमात्मा है जो सब सृष्टि को कारण (प्रकृति) से बनाने, धारण और प्रलय करने तथा सबकी व्यवस्था रखने वाला है।

साधारण निमित्त कारण जीव है, जो परमेश्वर की सृष्टि मे से पदार्थों को लेकर अनेक विध कार्यान्तर बनाने वाला है इसी के लिए परमेश्वर ने सृष्टि का रचना किया है।

(२) उपादान कारण प्रकृति है जिसको सब ससार के बनाने की सामग्री कहते है। वह जड होने से आप से आप न बन सकती है न बिगड सकती है किन्तु किसी चेतनकर्ता के बनाने से नियमपूर्वक बनती व बिगाडने से नियमपूर्वक बिगडती है।

(३) साधारण कारण वे उपकरण (औजार) हैं जिनसे कोई वस्तु बनाई जाती है। देश और काल भी इसमे सम्मिलित हैं।

पदार्थों के प्रकार

पदार्थ दो ही प्रकार के होते हैं—नित्य और अनित्य।

नित्य—जिनका न आदि हो और न अन्त हो।

अनित्य—जिनका आदि भी हो और अन्त भी हो।

तीसरी प्रकार के पदार्थो का होना ही असम्भव है। जैसे 'अनादि सान्त या सादि अनन्त।

ईश्वर, जीव और प्रकृति तीनो नित्य पदार्थ हैं। इनका न आदि है और न अन्त है।

परन्तु जगत् स्वरूप से अनित्य है। यह उत्पन्न होकर नियत काल तक स्थित रहकर विनष्ट हो जाता है। ईश्वर मे उत्पादक और विनाशक दोनो शक्तिया अनादि काल से (अर्थात् स्वाभाविक) है। इनके प्रभाव से जगत् की उत्पत्ति और विनाश अनादि काल से एक के पीछे दूसरा रहता है। ऐसे होते रहने को 'प्रवाह से अनादि' कहते हैं।

जगत को उत्पन्न करने का उद्देश्य

जीवात्मा की शक्तियो के पूर्ण विकास अर्थात् किये हुए कर्मो के फलभोग और परमानन्द (मुक्ति) की प्राप्ति के लिए जगत् का निर्माण हुआ।

अथवा

प्रकृति से परमात्मा पर्यन्त ज्ञान प्राप्त करके सामान्वित होने के अर्थ जगत् उत्पन्न किया गया है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये भगवान् ने सृष्टि के आरम्भ मे चार ऋषियो के द्वारा वेद ज्ञान का प्रकाश किया। ऋषियो के नाम ये है—अग्नि, वायु, आदित्य और अगिरा। ये देहधारी मनुष्य थे और सब जीवो से अधिक पवित्र आत्मा थे। यह पवित्रता उन्होंने पूर्व सृष्टि मे किये हुए कर्मों से प्राप्त की थी।

ऋषि उसे कहते है, जो वेद-मन्त्रो के अर्थो के सूक्ष्मद्रष्टा हो या जिनमे ऐसी योग्यता हो।

वेद चार ये हैं—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद।

वेदों के चार विभाग का कारण

(१) ऋग्वेद में सब पदार्थों के गुणो का प्रकाश किया है जिससे उनमे प्रीति बढकर उपकार लेने की प्रवृत्ति हो सके।

(२) यजुर्वेद मे गुण-ज्ञान के अनन्तर क्रियारूप उपकार करके सब जगत्

(शेष पृष्ठ ४ पर)

दिल्ली की सिख राजनीति में हिंसा की आशंका

नई दिल्ली १७ सितम्बर । राजधानी की सिख राजनीति हिंसा और फजीहत के दौर से गुजरने वाली है । बादकुओं के प्रवक्ता सिख स्टुडेंट्स फेडरेशन के महासचिव अमरजीत सिंह चावला ने दिल्ली अकाली दल (बादल) नेताओं को 'माकूल जवाब' देने का ऐलान किया है । फेडरेशन नेताओं ने दिल्ली के गुरुद्वारों के नशाखोरी व्यभिचार और भ्रष्टाचार का गढ़ बन जाने के आरोप लगाए हैं ।

मौजूदा विवाद की जड़ १५ सितम्बर को सनलाइट कालोनी स्थित बाला साहब गुरुद्वारे के पाठी हरदेवसिंह का अपहरण और उसके बाद सिख स्टुडेंट्स फेडरेशन के नेताओंकी पिटाई और उनका जेल भेजा जाना है । हरदेव सिंह को पुलिस के मुताबिक सिख स्टुडेंट्स फेडरेशन (दिल्ली) अध्यक्ष सुखबीर सिंह खालसा, महासचिव हरविंदर सिंह बिंदी समेत तमाम लोगों ने अपहरण कर लिया और उन्हे वे अपने गुरुद्वारा रकाबगंज ले गए । बाद में पुलिस ने वहां छापा मार कर हरदेवसिंह को रिहा करवाया और दस लोगों को जेल भेज दिया ।

पर इस बारे मे फेडरेशन का बयान एकदम अलग है । फेडरेशन के नेता अमरजीत सिंह चावला के अनुसार फेडरेशन की दिल्ली इकाई ने काफी लम्बे अरसे से यहां गुरुद्वारा सुधार अभियान छेड़ा था । इसके तहत गुरुद्वारो में जुआखोरी, शराबखोरी, जेब काटने, व्यभिचार के मामलों में लिप्त लोगों की धरपकड़ की जा रही थी । ऐसे लोगों से माफीनामा लिखवाकर और चेतावनी देकर उन्हें छोड़ दिया जाता था ।

श्री चावला के अनुसार पाठी हरदेवसिंह को जब पकड़ा गया उस समय वह शराब पिये था । उन पर महिलाओं से सम्बन्ध रखने के भी आरोप थे । उनके अनुसार उसे बचाने के लिए दिल्ली अकाली दल (बादल) अध्यक्ष अवतार सिंह हित, उनके भांजे बलविंदर सिंह तलवडी, दल के जमनापार जिले के अध्यक्ष सुरिंदरजीत सिंह बाजवा ने पुलिस और उनके साथ आये गुंडों ने गुरुद्वारा रकाबगंज में सो रहे सुखबीरसिंह खालसा और उनके साथियों पर हमला किया । उन्हें बुरी तरह से पीटा । उनके बाल तक उखाड़ दिये बाद में उन्हें जेल भिजवा दिया ।

सिख स्टुडेंट्स फेडरेशन के अनुसार शुक्रवार को गुरुद्वारा नानक प्याऊ ने संगत से इस तरह के छापों की इजाजत ली थी । उन्होंने पुलिस और अवतारसिंह हित की आलोचना की थी । इससे नाराज होकर श्री हित ने पुलिस की मदद से उनकी पिटाई की और झूठे मामले में फंसा दिया । अमरजीत सिंह चावला ने कहा कि फेडरेशन इन मसलों से निपटेगी और सुधार के काम जारी रखेगी । उन्होंने अवतार सिंह हित और दूसरे नेताओं पर सुधार के अभियान में अड़चन डालने का आरोप लगाते हुये चेतावनी दी कि उन्हें अमृतसर जाकर सजा दी जायेगी । और किसी कीमत पर कोई समझौता नही होगा ।

अब तो हम फैसला करके ही दम लेंगे । फेडरेशन के नौजवान दिल्ली और पंजाब की सरकारों के खिलाफ हैं । यह लोग हमारी ताकत घटाना चाहते हैं । इन सबसे सख्ती से निपटा जाएगा ।' फेडरेशन महासचिव ने नाराजगी भरे स्वरों में कहा कि उन्होंने जांच करके इस कांड में शामिल लोगों की सूची तैयार करा ली है । उन्होने गुरुद्वारा परिसर में पुलिस प्रवेश पर कड़ी आपत्ति की ।

इस बारे मे अवतार सिंह से सम्पर्क करने की सारी कोशिशें बेकार रहीं । डीजीपीसी अध्यक्ष और महासचिव भी नहीं मिल सके । पर डीजीपीसी सूत्रों के अनुसार पाठी हरदेवसिंह व्यभिचार के मामले में चार अन्य पाठियों के साथ पकड़ा गया था उन्हें गुरुद्वारा बाला साहब छोड़ने के तमाम बार आदेश दिये गये फिर भी वह वहां जमा रहे ।

इस कांड से अकाली राजनीति में ध्रुवीकरण शुरू हो गया है । फेडरेशन ने यहां तक कहा है कि हरबंस सिंह मनचन्दा की अध्यक्षता के दौरान डीजीपीसी की जो स्थिति थी वैसे ही हालात बना रहे हैं । मालूम हो कि मनचन्दा की आतंकवादियों ने हत्या कर दी थी ।

अकाली दल अध्यक्ष गुरचरणसिंह गिल ने आरोप लगाया है कि फेडरेशन पर किए गये हमले की एवज में अवतारसिंह हित ने श्री बाजवा को अपने दल का पदाधिकारी बनाया है । अकाली दल (मान) महासचिव चरणजीतसिंह केसरी ने इस हत्याकांड की कड़ी भर्त्सना करते हुये कहा कि अवतार सिंह हित गुरुद्वारा चुनाव के पूर्व आतंक फैलाना चाहते हैं । इस आतंक का जवाब आतंक से दिया जायेगा । अकाल तख्त के पूर्व जत्थेदार हरचरणसिंह दिल्ली ने कहा कि वे छोटे मामलो में नही बोलना चाहते पर इस घटना ने उन्हें स्तब्ध कर दिया है कि राजनीति में लोग इतना नीचे गिर सकते हैं । अकाली दल (मान) दिल्ली अध्यक्ष महेन्द्र सिंह ने भी फेडरेशन नेताओं पर हुये हमले की कड़ी निन्दा की है ।

(जनसत्ता १८ सितम्बर से साभार)

आर्यसमाज के मन्तव्य

(पृष्ठ ३ का शेष)

का अच्छे प्रकार से हित सिद्ध हो सके, इस विद्या को जनाया है ।

(३) सामवेद मे ज्ञान, कर्म और उपासना काड की वृद्धि का फल कितना और कहा तक होना चाहिये, इसका विधान किया है ।

(४) अथर्ववेद— तीन वेदो मे जो-जो विद्या है उन सबके शेष भाग की पूर्ति, विधान, रक्षा और संशय-निवृत्ति के लिये है ।

मनुष्य-समाज और मनुष्य जीवन के चार विभाग

वेदो के उपदेश और मनुष्य-शरीर की रचना के आधार पर मनुष्य-समाज का विभाग चार भाग मे किया है जिनको वर्णनाम से कहते है और वे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र हैं और मनुष्य-जीवन का विभाग चार आश्रमो मे किया गया है । वे ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ व सन्यासाश्रम है ।

ब्राह्मण वर्ण—अविद्या के नाश, विद्या की वृद्धि और सदाचार की शिक्षा के लिये । शम, दम, तप, शौच, आस्तिक्य, ज्ञान और विज्ञान इसके विशेष गुण होगे ।

क्षत्रिय वर्ण—अन्याय के नाश, देश और जाति, पतित और दु:खित जनों की रक्षा के लिए । शौर्य, तेज, धृति, दक्षता और युद्ध से पलायन न करना और ईश्वर भावादि क्षत्रिय के विशेष गुण होंगे ।

वैश्य वर्ण—जीवन यापन की आवश्यक सामग्री को उत्पन्न करना और इधर-उधर से लाकर जुटाना वैश्य कर्म है ।

शूद्र वर्ण—जिसको पढने-पढाने से कुछ भी न आवे, व निर्बुद्धि व मूर्ख होने से शारीरिक श्रम द्वारा उपर्युक्त तीनो वर्णो की सेवा और सहायता करने के लिए शूद्र है ।

ये वर्ण गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर होते है, जन्म के आधार पर नही ।

आर्य समाज मनुष्यमात्र के बालको व बालिकाओ को बिना किसी भेद-भाव के समान रूप से विद्या प्राप्त करने का अधिकारी मानता है और विद्यालय मे पढ़ाई की समाप्ति पर जिस-जिस विद्यार्थी का जो-जो वर्ण उनकी योग्यतानुसार इनका आचार्य निश्चित करे वह-वह उनका वर्ण मानता है चाहे उनके पिता का वर्ण कुछ भी हो ।

धर्माचरण से नीच वर्ण उच्च वर्ण को और अधर्माचरण से उच्च वर्ण नीच वर्ण को प्राप्त हो सकता है ।

आर्यसमाज जन्मना जातिगत आधार पर आरक्षण स्वीकार नहीं करती

तथाकथित भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा आर्यसमाज की प्रवक्ता नहीं

आर्य जनता इन भ्रान्तियों से दूर रहे

डा० भवानीलाल भारतीय प्रोफेसर : दयानन्द शोध पीठ, पंजाब विश्वविद्यालय

स्वामी दयानन्द ने जन्मना जाति की धारणाको सर्वथा अस्वीकार किया था। वे मनुष्य मात्र को समान अवसर, समान अधिकार तथा समान रूप से आगे बढने की बात कहते थे। आज जो तथाकथित पिछडी जातियो को जन्म के आधार पर केन्द्रीय सेवाओ मे तथा सार्वजनिक सस्थानो में आरक्षित स्थान देने की बात कही जाती है वह स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज के मन्तव्यो के सर्वथा प्रतिकूल है। आर्थिक विपन्नता के सताये आज हजारो ब्राह्मण हैं जो भिक्षोपजीवी होकर अथवा साधारण यजमान वृत्ति से येन केन प्रकारेण अपना निर्वाह कर रहे हैं। उनकी सन्तानोको किस आधार पर आरक्षण की सुविधा से वचित किया जा सकता है। इसी प्रकार राजस्थान मे ऐसे हजारो राजपूत परिवार हैं जिनके पास न तो कृषि की भूमि है और न नौकरी। उनकी स्त्रिया पर्दे में रहती हैं तथा किसी भी प्रकार की आर्थिक समानता इनमे दिखाई नही देती। इसके विपरीत अनुसूचित जातियो और अनुसूचित जन-जातियो के कई ऐसे सम्पन्न लोग हैं जिनकी प्रथम पीढी ने तो आरक्षण का लाभ उठाया ही अब आर्थिक और शैक्षिक दृष्टि से सम्पन्न हो जाने पर वे अपनी कान्वेट शिक्षित सन्तानो को भी वे ही लाभ दिलाना चाहते हैं जो उन्हे केवल अनुसूचित जाति मे जन्म लेने के कारण प्राप्त हैं। जब कि इन्हीं जातियो के दरिद्र, अशिक्षित तथा अन्य प्रकार से पिछडे लाखो लोग अभी तक, ४० वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी इन सुविधाओ से वचित हैं।

तथाकथित पिछडी जातियो की स्थिति तो और भी भिन्न है। ये जातिया न तो दलित रही और न अस्पृश्य तथा अछूत। किसी समय इनमे शिक्षा का पिछडापन भले ही रहा हो, किन्तु अपने-अपने व्यवसायो से सदा आगे रहने के कारण इनके सभी वर्ग आर्थिक दृष्टि से विपन्न होने की बात नही कर सकते। इन्होने विगत वर्षों में समुचित शिक्षा भी प्राप्त की और सुयोग्यता के बल पर आगे भी बढाते रहे हैं।

आर्यसमाज का तो प्रारम्भ से ही विचार रहा है कि प्रत्येक नागरिक को अपनी उन्नति करने का स्वतन्त्र और निर्बाध अवसर सदा ही मिलते रहना चाहिये। दूसरी बात, जिस पर आर्यसमाज जोर देता रहा है वह है, तथाकथित अनुसूचित तथा पिछडी जातियो की सामाजिक स्थिति को सुधारना तथा उन्हें सब प्रकार से समुचित बना कर तथाकथित उच्चवर्ग के बराबर लाना। किन्तु राजनैतिक स्वार्थ की दृष्टि से सरकार की नीति सदा से ही वर्ग विशेष को बढाने की रही। आर्यसमाज चाहता है कि सभी वर्णों या वर्गों के छात्रो के लिये एक से छात्रावास रहे जहा जन्मना ब्राह्मण और जन्मना शूद्र बालक भी साथ-साथ रहें। सरकार ने इसके विपरीत 'हरिजन छात्रावास' बनाये जिसका अर्थ यही था कि हरिजनो मे सदा-सदा के लिये यह भाव भरा रहे कि वे हरिजन ही हैं उच्च जातियो से भिन्न हैं। उनकी रसोई और उनका खान पान तथा उनका पानी का नल भी पृथक् ही रहेगा। आर्यसमाज का तो स्वप्न रहा कि ब्राह्मण और शूद्र एक ही बस्ती या मोहल्ले में पास पास रहें। किन्तु शासन ने हरिजनो को पृथक् बस्तियां बसाकर उनमे वर्ग द्वेष के बीज बोये। आर्यसमाज ने किसी जन्मना दलित को अपने गुरुकुल में शिक्षित कर उसे पण्डित और स्नातक की सज्ञा दी तो कांग्रेस ने उसे 'चमार' ही रहने को कहा और उसे आरक्षित स्थान के फलस्वरूप बनाया। आर्यसमाज ने चमारो को पण्डित बनाया जब कि राजनैतिक दलों ने उनके पाण्डित्य पर हरताल फेर कर उन्हें जाति के खाने में चमार लिखने पर मजबूर किया। आर्यसमाज के स्वामी श्रद्धानन्द संन्यासी थे, जो वर्ण, वर्ग या जाति के भेद से ऊपर सर्वथा सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र परिवार होता है, किन्तु वही स्वामी श्रद्धानन्द एम पी, बनने के प्रलोभन मे पुन चमार बने। तो आर्यसमाज और राजनीतिक दलो की नीतियो में यह स्पष्ट अन्तर है।

यह भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा क्या है ?

आर्यसमाज के सगठन से सभी लोग परिचित हैं। आर्यसमाज का सार्वदेशिक सगठन १९०८ मे बना और भारत के विभिन्न प्रान्तो के साथ-साथ विदेशो की आर्यसमाजे और आर्य प्रतिनिधि सभाये भी उसी के साथ जुडी। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सगठन मे जम्मू-काश्मीर, पजाब, हरियाणा, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, मध्यभारत, उडीसा, आन्ध्रप्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, बगाल असम तथा कर्नाटक जैसे राज्यो की आर्य प्रतिनिधि सभायें सम्बद्ध हैं उसी प्रकार मारिशस, फिजी, अफ्रीका तथा इग्लैण्ड की आर्यसमाजे भी जुडी हैं ? यदि दुर्जनतोष न्याय से भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्माण का औचित्य मान भी लें तो वह तभी सम्भव है जब हमारे देश के उपर्युक्त प्रान्तो की आर्य प्रतिनिधि सभाये मिल बैठ कर ऐसा निर्णय करें और उसके लिये सर्वप्रथम अपने सविधानो मे सशोधन करें।

मैं १४-१५ जुलाई को मावलकर सभागार मे बैठकर भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का निर्माण करने वाले सज्जनो से यह पूछना चाहता हू कि—

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आदर्श सामाजिक व्यवस्था (२)

(९ सितम्बर १९९० की गोष्ठी पर एक रिपोर्ट)

विमल वधावन एडवोकेट, संयोजक कानूनी समिति, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

अब यहीं पर एक व्यवस्था का प्रश्न उठता है कि क्या शूद्र के बच्चो को पढ़ने-लिखने की वही सुविधाएं उपलब्ध हो सकती है जो एक ब्राह्मण के बच्चे को उपलब्ध हैं। इसका भाव हल फिर वही आर्यसमाज ही दे सकता है उसने गुरुकुल शिक्षा पद्धति की शुरुआत की जिसमे राजा से रंक तक, समाज के समस्त परिवारो के बच्चो को समान रूप से शिक्षा दीक्षा की व्यवस्था रखी गई थी। समान आसन समान भोजन, समान वस्त्र तथा समान शिक्षा।

इन विचारो के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से ही इस गोष्ठी के आयोजन का कार्यक्रम बनाया जा रहा था। अन्ततः जुलाई माह में एक आर्य नेता श्री बालेश्वर अग्रवाल जी के माध्यम से मारीशस के उच्चायुक्त श्री आनन्द प्रिय निबूर तथा ट्रिनीडाड के उपउच्चायुक्त श्री चन्द्रदत्त सिंह जी से सम्पर्क किया गया। प० वन्देमातरम् तथा श्री के० नरसिम्हा रेड्डी जी के साथ इन दोनो उच्चायुक्तो मे हुई मुलाकात सन्तोषजनक रही। दोनो उच्चायुक्त अपने पूर्व जीवन मे आर्य समाज से सम्बन्धित रहे हैं। अन्य कई विषयो के अतिरिक्त इस गोष्ठी की चर्चा भी इनसे की गई तो दोनो ने निमन्त्रण सहर्ष स्वीकार कर लिया। इस प्रकार जुलाई के दूसरे सप्ताह मे ही ९ सितम्बर १९९० को गोष्ठी के आयोजन का निश्चय लिया गया।

आर्यसमाज की स्थापना के समय से ही नही बल्कि उससे भी पहले से महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मगत जातिवाद प्रथा से लड़ते रहे हैं। सामाजिक स्तर पर सभी मनुष्य एक जैसे हो, तथाकथित जाति वर्ग बनकर दूसरे से लड़ने की अपेक्षा सब आर्य बने तथा आपस में सहयोग का समन्वय करते हुए समाज की उन्नति के लिये प्रयत्नशील रहे। इसीलिये "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" (विश्व को आर्य बनाओ) का नारा दिया गया था। आर्य बनाने का अभिप्राय कोई अलग जाति वर्ग बनाने से नहीं अपितु आर्य अर्थात् श्रेष्ठ मानव बनाने से था, अपना मानसिक स्तर ऊंचा एव खुला करने से था।

प्रधानमन्त्री विश्वनाथ प्रतापसिंह ७ अगस्त १९९० को मण्डल आयोग की सिफारिशो को लागू करने की घोषणा ने महर्षि दयानन्द तथा आर्यसमाज द्वारा किये गये आज तक के समस्त प्रयत्नों पर पानी फेर दिया। कहा महर्षि दयानन्द ने जातिवाद को जड़ से उखाड़ने की बात कही और कहा कि सब उच्च मानव (आर्य) बनो और वर्ण व्यवस्था को वैदिक उपदेशानुसार कर्म पर आधारित करने का निर्देश दिया। उसके बिल्कुल विपरीत पहले से बड़े हुये समाज को और अधिक जातिगत आधार पर बांटने के लिये यह मण्डल आयोग का लालच सामाजिक एव शैक्षणिक पिछड़े वर्ग को दिया गया। सरकार ने यह भी नही सोचा कि जो वर्ग शिक्षा के क्षेत्र में पहले से ही पिछड़ा हुआ है उसे जब तक शिक्षा के लिए विशेष सुविधाए देकर ऊंचा नही उठाया जायेगा तब तक नौकरी मे उनके लिये आरक्षण देने का उन्हें क्या लाभ प्राप्त हो सकेगा। मात्र देवीलाल की रैली को विफल करने के लिये तथा स्वयं को पिछड़े वर्गों का मसीहा साबित करने के उद्देश्य से यह कुटिल चाल वी०पी० सिंह ने चली।

सयोग से यह सब राजनैतिक घटना चक्र हमारी गोष्ठी के विषय के साथ मिलता जुलता प्रतीत हुआ और दूसरी तरफ आर्य जनता की इसी जातिगत आधार पर हुए आरक्षण के विरोध में उठती आवाज को देखते हुए पूज्य स्वामी आनन्दबोध जी तथा पण्डित वन्देमातरम् जी ने यही निर्णय लिया कि संगोष्ठी के दो सत्र रखे जाए—पहले सत्र में वर्ण व्यवस्था के प्राचीनतम शुद्ध रूप पर विचार किया जाए तथा दूसरे सत्र में वर्तमान परिस्थितियों (मण्डल आयोग) पर भी विद्वानो के मत लिये जायें।

इसी कार्यक्रम के अनुसार सगोष्ठी में दो प्रस्ताव पारित किये गये 'जो कि सार्वदेशिक पत्र १६-९-९० के अंक में प्रकाशित हो चुके हैं। दूसरे प्रस्ताव में मण्डल आयोग की कानूनी धार्मिक, सामाजिक प्रशासनिक दृष्टि से कई कमियों को जनता के सामने रखते हुये सरकार से इन सिफारिशों को वापस लेने के लिए अनुरोध किया गया। मण्डल आयोग का सभी विद्वानो ने एक मत होकर विरोध किया। वक्ताओ में स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, पण्डित वन्देमातरम् रामचन्द्रराव, सुप्रसिद्ध संविधान विशेषज्ञ डा० लक्ष्मीमल सिंघवी, हैदराबाद के वरिष्ठ एडवोकेट श्री नूरी राजेश्वर राव, श्रीमती डा० सुषमापाल श्री छोटूसिंह एडवोकेट, श्री राजगुरु जी शर्मा, डा० सच्चिदानन्द शास्त्री एव डा० धर्मपाल आदि थे।

एक दिन पहले से ही करीब २५० स्वतन्त्रता सेनानी देश के विभिन्न हिस्सो से इस सगोष्ठी में भाग लेने के लिये उमड़ पड़े थे। समस्त स्वतन्त्रता सेनानी मण्डल आयोग की सिफारिशो को लागू किये जाने की घोषणा से चिन्तित थे और सरकार के प्रति सबके मन मे रोष भरा हुआ था। स्वतन्त्रता सेनानी आर्य समाज की तरफ से प्रधानमन्त्री तथा विभिन्न मन्त्रियों के विरोध में प्रदर्शन की माग कर रहे थे परन्तु समयाभाव के कारण यह सम्भव न हो सका। अत ९ सितम्बर को ही गोष्ठी स्थल के समीप विभिन्न अखबारों कार्यालयो तथा समाचार एजेन्सियों यूनीवार्ता तथा भाषा के कार्यालयों पर इन स्वतन्त्रता सेनानियों द्वारा श्री के० नरसिम्हा रेड्डी के नेतृत्व मे प्रदर्शन किया गया तथा मण्डल आयोग की निन्दा करते हुए एक ज्ञापन पत्र इन सभी कार्यालयों को दिया गया।

इस सगोष्ठी के प्रस्तावों को पारित करने के बाद सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती तथा वरिष्ठ उपप्रधान पं० वन्देमातरम् रामचन्द्र राव ने पत्रकारों को सम्बोधित करते हुये कहा कि सार्वदेशिक सभा देश तथा विदेश की समस्त आर्यसमाज इकाईयों को निर्देश देती है कि वेदों तथा मनुस्मृति में उपदेशित वर्णाश्रम व्यवस्था के मूल तथा शुद्ध रूप को उजागर करने के लिये समय-समय पर इस प्रकार की संगोष्ठियाँ एव परिचर्चा के कार्यक्रम बनाएं तथा समस्त आर्य जनता स्वयं इस सकल्प को प्रारम्भ करें कि वर्ण का निर्धारण कर्म से होगा न कि जन्म से। आर्य समाज जातिवाद को नहीं मानता और न ही जातिवाद पर आधारित किसी प्रकार की सामाजिक व्यवस्था को चलने देगा।

वेद, महर्षि दयानन्द तथा आर्यसमाज की दृष्टि में समस्त विश्व के मनुष्यों की एक जाति है इसमें किसी प्रकार का भेद नहीं हो सकता। पशु-पक्षियों तथा जानवरों की जातियां मनुष्य जाति से भिन्न हैं।

भारत देश में उभरता जातिवाद एवं गरीबी के कुछ कारण तथा उसके निवारण

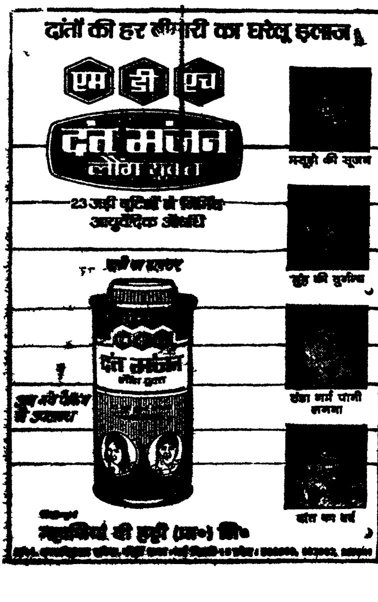
पं० भगवान सहाय विद्यावाचस्पति आर्यसमाज अमर कालोनी, नई दिल्ली-२४

भारतीय संविधानुसार अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जन-जातियो के प्रति बनाया गया आरक्षित नियम जिसकी अवधि वर्तमान समय में ४१ वष है। ने समानता तथा शांति के क्षेत्र में समस्याओं को प्रतिदिन बढ़ावा ही दिया है। आरक्षण का लाभ वर्ग विशेष को न पहुच कर सम्पन्न वर्ग जिसमे कुटिलता चातुर्य भरा है को पहुच रहा है। वर्तमान समय में भी चारो ओर यही दृष्टिगोचर होता है कि वास्तविक अधिकारी किसी कार्य सम्बन्धी विशेष योग्यता रखते हुए भी उसे कार्य क्षेत्र मे प्रवेश पाने से वंचित रह जाता है जब कि झूठे जाति प्रमाण-पत्र के आधार पर एक सम्पन्न एव कुटिल व्यक्ति उस अधिकार को छीन लेता है। इसी प्रकार रिक्तियो की पूर्ति हो जाती है। फलत गरीब सदैव गरीब ही रहेगा। अमीर सदैव अमीर ही रहेगा, वर्ग भेद चिर-स्थायी रहेगा।

जिस देश मे कथित हरिजनों को जिन्दा जलाया जाता हो, जिनकी बहू-बेटियों की लाज असुरक्षित हो यहा सरकार मूक दर्शक है, हा! दोषी को दण्ड न देकर सकट ग्रस्त लोगो के आसू अवश्य पोछ रही है। आरक्षण का ढिंढोरा पीट कर वोट बटोरने के अतिरिक्त और क्या है। देश को स्वतन्त्र हुए ४१ वर्ष हो गए। क्या आरक्षण के माध्यम से जातिवाद कम हुआ गरीबी समाप्त हुई? जिस देश में हजारों वर्षों से निर्धनो, अशिक्षितो को दबाया जा रहा हो, उनके साथ मानवीय व्यवहार नही किया जाता हो तथा जहा धर्माचार्य आदि शकराचार्य यह घोषणा करे कि शूद्र पढ़ें तो जिह्वा कटवा दो और सुने तो कान मे शीशा पिघला कर डलवा दो और आज भी पुरी के वर्तमान शकराचार्य ने घोषित किया है कि जन्म से शूद्र व्यक्ति मन्दिर मे प्रवेश नही कर स०ता, हजारो वर्षो से जिन लोगो की आत्माओ को धर्म और जन्म जाति के ठेकेदारो पीडित किया जा रहा है आरक्षण के नाम पर निम्न वर्ग को कुछ सुविधा दी जाती है तो इन्ही ठेकेदारो के पेट मे साप लोटने लगता है। यह अत्यन्त आवश्यक है कि देश में गरीबों के रक्षार्थ तथा ईमानदारी से आरक्षण नियम लागू होना चाहिए। किन्तु आरक्षण नीति आज तक वास्तविक अधिकारियो को पूरी-पूरी सुविधा नही पहुचा पाई है। मैं मानता हूँ। (मैं ही नही प्रत्येक देश हितैषी) यह मानने को मजबूर है कि कही न कही नीति दोष युक्त अवश्य है। वर्तमान सरकार ने आरक्षण के आधार पर अन्य अछूत जातियो के लोगो को एम०पी० मिनिस्टर एम०एल०ए० विभागाध्यक्ष कलेक्टर एस०पी० जैसे पद प्रदान किये। इतन पर भी वे हरिजन ही रहे क्या कारण है क्यो नही परिवर्तन हुआ शिक्षा क्षेत्र में टुकड़ा डालकर वर्ग भेद के कारण स्नातक एव स्नातकोत्तर की उपाधि लेकर भी चमार एव हरिजन ही बना रहता है।

जिस सरस्वती मन्दिर में गुरु चरणो मे बैठकर १४ १६ वष रह कर भी वर्ग भेद मिटा नही पाए तो अन्यत्र कहा वर्ग भेद मिट सकेगा। इस कथन को नकारा नही जा सकता कि दिल्ली, हरियाणा पजाब तथा अन्य महा नगरो के अतिरिक्त राजस्थान, उत्तर प्रदेश बिहार आदि प्रान्तो के गावो मे अनुसूचित जाति को पीने योग्य पानी को हाथ नही लगाने दिया जाता है। लो! मिटा लो छुआछूत।

गरीबो मिटाने चा रहे। एक व्यक्ति के पास उसके पूर्वजो से चला आ रहा वैभव पर्याप्त मात्रा में है। जैसे कि उसके पास चार फैक्ट्रीया हो दो हजार बीघा जमीन का फार्म व अन्य सम्पत्ति फिर भी वह एक सरकारी पद पर आसीन है। यही व्यक्ति निर्धनो तथा बेरोजगारो का शोषण करता है कारखाने में मजदूरों का कृषि फार्म में मजदूर किसानो का यहा तक कि अपनी पद-शक्ति का भी दुरुपयोग गरीबो के शोषण से करता है। और यही व्यक्ति आरक्षण विरोधी नारा लगाता है। राष्ट्र की सम्पत्ति को जलाता है, लोगो को बहकाता है। अधिकारी लोग व्यवस्था करने वालो को आज्ञा नहीं देते और कहते हैं इनमे हमारे भी बच्चे हैं। देश की सम्पत्ति जले फूके इन्हें कोई चिन्ता नहीं क्योंकि इनके अपने घर का तो कुछ हनन न हो रहा।



उपर्युक्त सम्बन्धी सुझाव

सर्वप्रथम देश की शिक्षा प्रणाली का राष्ट्रीयकरण होना चाहिए। क्योंकि समाज शिक्षा-स्तर के बिना देश उन्नति नही कर सकता। आज धनाढ्य परिवार अपने बच्चों को कान्वेन्ट स्कूलो के माध्यम से हजारों रुपये दान देकर भी प्रवेश दिलवाते हैं तत्पश्चात् शिक्षा पर भी भारी रकम खर्च की जाती है तो बच्चे क्यो नही अच्छे अक प्राप्त करेंगे। मनुष्य स्वाभाविक ज्ञान का अधिकारी नही है, उसके पास तो केवल नैमित्तिक ज्ञान है। जैसा गुरु एव सग का प्रभाव व्यक्ति पर पड़ता है मनुष्य का निर्माण उसी स्तर पर होता रहता है। दूसरी ओर साधारण सरकारी स्कूलो में जहा अध्यापको को ऊचे वेतन मिलते हैं परन्तु वे अपने कर्तव्य से सर्वथा विमुख हैं। ऐसे स्कूलो में बच्चे तीन-तीन साल तक एक ही

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्यसमाज जन्मना जातिगत

(पृष्ठ १ का शेष)

(१) आपके इस जमावडे में उक्त सभाओ के कौनसे अधिकृत प्रतिनिधि थे ?

(२) क्या वे अपनी सभाओ की साधारण या अन्तरग सभाओ से यह अधिकार लेकर आये थे कि उन्हे किसी भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा को सठित करने के लिये उन सभाओ ने अधिकृत किया है।

(३) यदि ऐसा नही है तो उन्हें दयानन्द सरस्वती जैसे ऋषि कल्प महापुरुष द्वारा स्थापित ११५ वर्ष पुराने आर्यसमाज के सार्वभौम सगठन को विकृत करने तथा उसमें दरार पैदा करने का पाप करने का साहस क्यो हुआ।

(४) यदि उन्हे आर्यसमाज के वर्तमान नेतृत्व कार्यप्रणाली तथा अन्य किसी बात से असन्तोष था तो क्या उसे उठाने के लिये उन्होने आर्यसमाज के मच का ही उपयोग क्यो नही किया। झटपट एक नया सगठन बनाने का दुष्प्रयास क्या वैसा ही नही है जिसके बारे मे स्वय महाराज ने सत्यार्थ प्रकाश के ११ वे समुल्लास मे लिखा है कि झटिति एकमत चलाने में प्रवृत्त होना मनुष्यो के लिये हितकारक नही हो सकता।

(५) आपको आरक्षण के बारे मे सार्वजनिक वक्तव्य देने का, और वह भी आर्यसमाज के नाम पर अधिकार किसने दिया। निश्चय ही वर्तमान सरकार की २७ प्रतिशत आरक्षण देने की नीति का अब आपने आख मूद कर समर्थन कर दिया और आकाशवाणी तथा दूरदर्शन जैसे सरकारी प्रचार तन्त्र ने उसे झटपट प्रसारित भी कर दिया तो क्यो इससे यह सिद्ध नही होता कि यह काम आपने सरकारी पिट्टू के रूप मे किया है।

(६) आर्यसमाज की नीतियो के निर्माता शास्त्रज्ञ विद्वान साधु सन्यासी, विचारक चिन्तक तथा नेता होते हैं। आप बतायें कि आरक्षण समर्थक अपने वक्तव्यो को प्रसारित करने से पूर्व आपने किन वेदज्ञ, शास्त्रज्ञ विद्वानो से परामर्श किया था अथवा आर्यसमाज के नीति निर्माता किस सर्वोच्च सगठन से उसका अनुमोदन कराया था।

(७) आर्यसमाज सदा से ही अनुशासन प्रिय विचारवान लोगो का एक प्रबुद्ध सगठन रहा है। उसकी नीतियो का निर्धारण तथा घोषणा पर्याप्त सोच विचार तथा पारस्परिक विमर्श के पश्चात की जाती है। केवल अपने को अग्रिम पक्ति मे लाने का प्रयास ठीक नही है।

(८) हर आदमी को अपना सार्वजनिक जीवन बनाने का सार्वप्रिय होने का तथा सार्वजनिक प्रश्नो पर अपने विचार व्यक्त करने का अधिकार तो है किन्तु हमे आर्यसमाज के १० वे नियम का ध्यान रखना चाहिए कि व्यक्ति उन्नति के कामो को करने मे तो हम स्वतन्त्र हैं किन्तु सामाजिक सर्वहितकारी कामो मे हम परतन्त्र ही हैं।

आर्यसमाज के प्रान्तीय संगठनों से मेरी अपील

अन्त मे मेरा आर्यसमाज की प्रान्तीय सभाओ के अधिकारियो से यह अपील और निवेदन है कि वे सरकार, प्रसार तन्त्र तथा भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के स्वयम् नेताओ को यह स्पष्ट कह दे कि उनकी सभाये न तो आरक्षण विषयक उनके उन वक्तव्यो का ही अनुमोदन करती हैं और न वे कोई ऐसा वक्तव्य आर्यसमाज के नाम से प्रसारित करने के ही अधिकारी है साथ ही वे उन्हें यह भी कह दें कि बिना प्रान्तीय सभाओ की स्वीकृति या अनुमोदन के किसी तथाकथित भारतीय प्रतिनिधि सभा का सगठन आर्यसमाज के सविधान के सर्वथा प्रतिकूल फलत अवांछनीय है।

भारत में उभरता जातिवाद

(पृष्ठ ७ का शेष)

कक्षा में रहते हैं। स्कूलों का परीक्षाफल निम्न श्रेणी का रहता है। ये विद्यार्थी अति निर्धन परिवारों से आते हैं जिनके माता-पिता दो जून की रोटी का प्रबन्ध करने में सक्षम नहीं है। और अध्यापक अब इन्हें अपने बच्चों को ट्यूशन पढ़ाने को मजबूर करते हैं।" अपने कर्तव्य का उन्हे कोई ज्ञान नहीं यदि समान शिक्षा अनिवार्य हो जाये तो जहा पैसे के बल पर कान्वेन्ट स्कूलों के बच्चे सब प्राप्त करते हैं वहां गरीब विद्यार्थी भी उच्चश्रेणी प्राप्त नहीं कर सकते हैं। इस विषय पर युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती लिखते हैं विद्या पढ़ने के लिये लड़के और लड़कियो को अलग-अलग पाठशालो में भेजना चाहिये। पाठशालाओ में सभी को समतुल्य वस्त्र खान-पान आसन दिये जाये। चाहे वह कोई राजकुमार हो अथवा कोई दरिद्र की सन्तान हो। सबको तपस्वी होना चाहिये।

राजनियम तथा जातिनियम होना चाहिये कि पांच अथवा आठ वर्ष के पश्चात् कोई व्यक्ति अपने बच्चे को घर पर नहीं रख सकता। पाठशाला अवश्य भेजे जो न भेजे वह दण्ड का भागी हो। सत्यार्थप्रकाश तृतीय समुल्लास मे असमान शिक्षा प्रणाली से देश विकासोन्मुख हो ही सकता।

आर्थिक संरक्षण

उपर्युक्त प्रकरण में एक उदाहरण दिया गया था कि जिस व्यक्ति के पास अतुल्य सम्पदा पहले से ही हो उसका पुत्र कोई भी सरकारी पद का अधिकारी नही बन सकता। गरीबी के आकड़े ईमानदारी से निकाले जाए। वास्तविक गरीबी अधिकतर पिछड़े वर्ग में ही पाई जाती है। वर्ग भेद का ध्यान न रखते हुए किसी गरीब व योग्य व्यक्ति को ही पद प्राप्त होना चाहिये। चाहें वे गरीब ब्राह्मण ही क्यो न हो। पिछड़े वर्ग को भी यदि आरक्षण देते हो तो उन्हें दो। जिसके पास सभी साधन तथा सुख सुविधाएं हैं तो उसका नाम आरक्षण सूची से हटा दिया जाना चाहिये।

शासन द्वारा चलाई गई रोस्टर प्रणाली जिसके कारण समकक्षीय लोगो में असन्तोष फैलता है, समाज में वर्ग-भेद उत्पन्न होता है, को समाप्त करना चाहिये किसी भी नीति को बनाने से पूर्व सरकार का यह कर्त्तव्य बन जाता है कि वह उसका गहन अध्ययन व चिन्तन करके ही उसको लागू करें ताकि वे सभी सुधार नागरिकों की आवश्यकताएं देश की शान्ति तथा अखण्डता एवं एकता को चिरस्थायी रखते हुए समूच राष्ट्र को एक सुदृढ़ ढांचा प्रदान कर सकें। परमात्मा मेरे देशके शासन कर्त्ताओंको सद्बुद्धि दे।



आर्य समाज की गतिविधियां

श्री एम. नारायण स्वामी जी का शुद्धि कार्य विवरण

मास अगस्त

दिनाक ४-८-९० को समाज मन्दिर मे तीन ईसाई परिवारो के १६ सदस्यो को शुद्ध कर वैदिक धर्म मे दीक्षित किया गया तथा एक मुस्लिम परिवार के ४ सदस्यो को वैदिक धर्म मे दिक्षित किया गया।

६-४-९० को प्रातः ध्वजारोहण के साथ उपाकर्म सस्कार सम्पन्न किया गया और हैदराबाद सत्याग्रह बलिदान दिवस भी मनाया गया।

११-८-९० को साप्ताहिक सत्सग मे एक ईसाई व्यक्ति को वैदिक धर्म की दीक्षा दी गई।

१२-८-९० को रामनाथपुरम मे शुद्धि की व्यवस्था की गई और व्यक्तियो को ईसाई तथा मुस्लिम धर्म के वैदिक धर्म मे दीक्षित किया।

२५-८-९० को ध्वजारोहण का कार्यक्रम एम वी. तुलसीदास जी के द्वारा सम्पन्न हुआ। इसके पश्चात तिरुनेलवेली में श्री पट्टन स्वामी जी द्वारा २७ व्यक्तियो को शुद्ध कर वैदिक धर्म मे दीक्षित किया गया।

२६-८-९० को तुलाकापट्टि गया वहा पर तीन मुस्लिम परिवारो को शुद्ध किया।

इस प्रकार इस मास मे ७ मुस्लिम परिवारो के २९ सदस्य तथा २० ईसाई परिवारो के ६२ सदस्य शुद्ध होकर वैदिक धर्म मे दीक्षित हुये। कुल ९१ सदस्य शुद्ध किये गये।

आर्य समाज जातिवादी आरक्षण के विरुद्ध

दिल्ली, १० सि०। आर्यसमाज बिड़ला लाईन्स दिल्ली की साधारण बैठक मे प्रस्ताव पारित किया गया है कि वर्तमान सरकार द्वारा थोपी जा रही आरक्षण नीति निन्दनीय है। श्री वी. पी सिह नेतृत्व वाली यह सरकार जातिवाद को भड़का कर देश को बाटने की कोशिश कर रही है।

आर्य समाज के प्रधान श्री जयप्रकाश आर्यबन्धु ने घोषणा की कि जन्मना जातिवाद को समाप्त करने के लिए आर्य समाज पूर्णतया कटिबद्ध है और आर्य समाज की ओर से माग की सरकार देश मे आर्थिक रूप से पिछड़े सभी परिवारो का स्तर ऊचा उठाने तथा पैतृक जाति, सम्प्रदाय व सम्पदा के भेदो से पृथक रखकर, प्रत्येक मानव मात्र को शिक्षा की समान सुविधाये प्रदान करने के दूर दृष्टिपूर्ण सकल्प की घोषणा करे।

उन्होने यह भी स्पष्ट किया कि स्वामी अग्निवेश गुट को, आर्य समाज के नेता के रूप मे थोपने की कोई चाल सफल नही होने दी जायगी।

सूचना

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास, महर्षि दयानन्द मार्ग, जोधपुर, राजस्थान मे सन्यासियो एव वानप्रस्थियो के लिये रहने की व्यवस्था है। उनके रहने व भोजन की व्यवस्था न्यास की ओर से नि शुल्क होगी। जो भी वानप्रस्थी या सन्यासी यहा रहने के इच्छुक हैं। कृपा कर न्यास के मन्त्री के पत्र द्वारा सम्पर्क करे।

—जगदीशसिह आर्य

प्रवेश सूचना

श्रीमद्दयानन्द अनाथालय यमुना बृज, आगरा निराश्रित, असहाय, अनाथ बालक एव बालिकाओ को भारतवर्ष के किसी भी क्षेत्र से प्रवेश हेतु आमन्त्रित करता है। प्रवेश के समय आयु १ वर्ष से कम एव १२ वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिये। इनके आवास, भोजन, शिक्षा एव चिकित्सा को आदि पूर्ण सुविधाए उपलब्ध हैं। स्वावलम्बी होने पर बालको को पृथक कर दिया जाता है और बालिकाओ की आश्रम द्वारा योग्य वरो से विवाह सम्पन्न करा दिया जाता है।

—ओ३म् प्रकाश गुप्त, मन्त्री
श्रीमद्दयानन्द अनाथालय
यमुना बृज, आगरा-६

वेद गोष्ठी का आयोजन

प्रतिवर्ष की भाति अजमेर मे सम्पन्न होने वाले ऋषि मेला समारोह में २६ व २७ अक्टूबर ९० को अन्तर राष्ट्रीय दयानन्द वेद पीठ की ओर से परोपकारिणी सभा द्वारा सचालित अनुसन्धान विभाग के तत्वावधान मे एक वेद गोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। इस गोष्ठी का विषय है—

"अथर्ववेद समस्या और समाधान"

इसमे विचार हेतु अथर्ववेद का कुन्ताप सूक्त, गोहनो अतिथि, यज्ञविधि, उच्छिष्ट ब्रह्म, अथर्ववेद की भाषा, अथर्ववेद और जादूटोना, अथर्ववेद और मन्त्रविद्या, वेदत्रयी और अथर्ववेद, अथर्ववेद के मन्त्रो मे पाठ भेद, आदि विषयो पर विद्वानो के खोजपूर्ण लेख आमन्त्रित किये जाते हैं। सभी विद्वानो से अनुरोध है अपने शोध निबन्ध १५ अक्टूबर ९० तक सयोजक को प्रेषित कर प्रेषित कर दे। इनमें से उत्कृष्ट निबन्धो का चयन परोपकारी के विशेषाक रूप मे प्रकाशित किया जाता है। —धर्मवीर सयोजक वेदगोष्ठी

नेत्र चिकित्सा शिविर

राष्ट्र धर्म व मानवता के सबल रक्षक आत्मशुद्धि आश्रम के २४ वे स्थापना दिवस वार्षिकोत्सव पर विशाल यज्ञ-सत्सग समारोह एव नि शुल्क नेत्रशिविर दिनाक २६ सितम्बर से २ अक्टूबर मगलवार १९९० तक होगा।

—स्वामी धर्ममुनि (मुख्याधिष्ठाता) एव सब सदस्य गण
आत्मशुद्धि आश्रम (रजि०ट्रस्ट) बहादुरगढ (रोहतक) हरियाणा

वैवाहिक विज्ञापन

शिक्षित एव सम्पन्न परिवार के २७ वर्षीय बी ए. तथा व्यवसाय मे सलग्न आर्य युवक (वैश्य) के लिए आर्य परिवार की सुन्दर सुशील शिक्षित कन्या चाहिए प्रथम बार में सम्पूर्ण विवरण के साथ लिखें।

ओम प्रकाश गुप्त मैसज आर्य सेल्स
गज न०, २ नजदीक जमुना प्र० धर्मशाला
बेतिया ८४५४३८ (बिहार)

आज तुम्हारे हाथों में

मेघ छटें कटुता संशय के अब सारे बातो बातों में।
भविष्य देश का है आर्यों, आज तुम्हारे हाथो मे ।।

ऊंच नीच के ये झगड़े, तुम आज मिटा दो सारे।
द्वेष भाव का जहर कही भी, अब न हो बीच हमारे।।

आज कसौटी के कगार पर राष्ट्र हमारा खड़ा हुआ।
फूट परस्ती का ये मसला विकराल रूप से अड़ा हुआ ।।

जन निर्दोष फसे न अब आतंकवाद की घातो मे।
भविष्य देश का आर्यों, आज तुम्हारे हाथो मे ।।

अब न भूख अज्ञान गरीबी गला देश का घोट सके।
आज राष्ट्र की अखण्डता पर कोई कर न चोट सके ।।

ऐ आर्यों, तुम्हारे पास जभी आत्म शक्ति का बल होगा।
हमे अटल विश्वास हमारा हर अभियान सफल होगा।।

सुख को बाटो जाकर के असहायो और अनाथो मे।
भविष्य देश का है आर्यों, आज तुम्हारे हाथो मे ।।

आपस के इस भेद भाव को मिल करके अब तोड़ो।
सारे जग को आर्य बनाकर सबके दिल को जोड़ो।।

ये संस्कृति है उच्च हमारी, उज्ज्वल इतिहास हमारा।
'वसुधैव कुटुम्बकम का तुम आज गुंजा दो नारा ।।

फसे नही अब राष्ट्र हमारा 'रश्मि' झंझावातो मे।
भविष्य देश का है आर्यों आज तुम्हारे हाथो मे ।।

—मोहनलाल शर्मा 'रश्मि'
फ्रीलेन्डगंज, दाहोद, गुजरात

कोटि प्रणाम!

मर्यादा पुरुषोत्तम तुम थे, मर्यादाओ के अनुरक्षक।
सत्य धर्म के अद्वेषवेता, मानवता के बने सुरक्षक ॥

विप्र धेनु-सुर-सन्त जनों को किया तुम्हीं ने निर्भय।
दूर किया सारी धरती की दानवता, अन्याय अनय

निर्बल को दे नया सहारा नव युग का आह्वान किया।
जन-जन में जागृति ला करके, चेतना का अनुदान दिया ।।

स्थापित कर मानवता का, अनुपमेय सा मेरुदण्ड।
मार गिराया समस्त राक्षसोंको, जो थे अति तीव्र उद्दण्ड ।।

रावण जैसे असुरो का वध करके, भू उद्धार किया।
वैदिक पथी बनाकर सबको जगती का उपकार किया ॥

ऋणी तुम्हारा सदा रहेगा, महिमण्डल सारा हे राम।
आज तुम्हारे विजयदिवस पर युगके कवि का कोटि प्रणाम ।।

—राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

वार्षिकोत्सव

—गुडगाव आर्यसमाज रामनगर का वार्षिकोत्सव ५ ६ ७ अक्तूबर १९९० को गुडगाव की समस्त आर्य समाजो की ओर से मनाया जायेगा।

कार्यक्रम

१ से ७ अक्तूबर प्रात यज्ञ
१ से ४ अक्तूबर रात्रि वेद प्रवचन
५ ६ ७ अक्तूबर वार्षिकोत्सव

इस शुभावसर पर आर्यजगत के सुयोग्य विद्वान विदुषी भजनोपदेशक एव प्रसिद्ध गायक पधारेंगे।

—ओम प्रकाश, मन्त्री

राम का आदर्श चाहिये ?

(पृष्ठ २ का शेष)

का भार मत सम्हालिये। अतः कुछ स्पष्ट न हो पाया और मैं आपके पास चला आया हूँ। वस्तुतः मेरे मन में राज्य की आकांक्षा नहीं है।

केकैयी ने परिहास में कहा कि लगता है कि अंकस्व जावकी को देखकर कुछ और तरह लग रहा होगा। यह सुनकर राम की आंखों में आंसू आ गये।

वे कहते हैं कि तुमने मुझे इतनी विद्या सिखाई उसको दण्ड कला विविध गमन श्री का क्या होगा। केकैयी ने पूछा कि बताओ तुम्हें अपनी धनुर्विद्या से क्या करना है। तीक्ष्ण नेत्र देख केकैयी गम्भीर हो गई।

केकैयी के सामने स्व० और समाज का द्वन्द्व खडा हो जाता है। पं० सातवलेकर जी ने वाल्मीकि रामायण मे लिखा है कि—

भौतिकवादी रावण का प्रभाव बढ़ता जा रहा है वशिष्ठ विश्वामित्र अगस्त्य ऋषि चिन्तित थे रावण की बढती शक्ति को रोकने का संकल्प लिया गया। माता केकैयी को इसकी जानकारी थी।

केकैयी ने समाज के लिये अपने स्व० को होम कर दिया, ममता को छोड़ा, कर्त्तव्य को महत्व दिया। केकैयी के वर्चस्व ने ही राम को सही दिशा दी। अन्यथा अयोध्या में ही रामकथा सिमट कर रह जाती। भौतिकवादी संस्कृति का वर्चस्व हो जाता। मां केकैयी एक श्रेष्ठ और कुशल राजनीति की धुरी थी।

जिस कारण राम आज आदर्श बन ?

राम को याद करके रावण का तर्पण करो

दुष्टता का दण्ड कभी-कभी मरने के बाद भी भोगना पड़ता है। रावण को ही देखो, त्रेता युग समाप्त होकर कलियुग आ गया है फिर भी वह प्रतिवर्ष मारा जाता है।

रावण मारा तो बहुत स्थानों पर जाता है पर उसका तर्पण भी होता है। बस्तर की जन जातियां गोंड, धत्री और प्रजा पौष की पूर्णिमा से दो दिन पूर्व अपने गांव के समीप किसी तालाब के तट पर घास की बालियों से रावण के दस सिर बनाती हैं और फिर गांव का मुखिया तीर-मार कर रावण के सिरों को मार गिराता है इसके बाद चावल और मांड़ की रोटी पानी में विसर्जित करके रावण का तर्पण किया जाता है अन्त में विभीषण का राज्याभिषेक होता है।

> गंग-संग बरसाती नाले कुछ दिन तक बहते जैसे।
> सब में राम और एक रावण साथ साथ रहते ऐसे।।
> जिस पल मनुज राम का उठता रावण जाता है मारा।
> विजय सदा श्रम की होती है यही दशहरे का नारा।।

राम को हनुमान चाहिये

एक बार एक महात्मा जी ने पूछा—बताओ सबसे प्रथम स्वय सेवक कौन था ? सबने पृथक्-पृथक् उत्तर दिये। परन्तु वे सन्तुष्ट नहीं हुए। अन्त में उन्होंने ही बताया : सर्वप्रथम स्वयं सेवक भक्त हनुमान जी बने थे मेरे मन में हनुमान जी का वही स्वरूप है।

मैं हनुमान बनूं तो देश की पहाड़ सदृश समस्याओं से निपटने का प्रयास करूंगा।

आज समस्याओं का जो रावण अपने देश को झकझोर रहा है उसके विपरीत अपने साथियों राम भक्तों को ललकारूंगा। आओ सभी साथी हनुमान बनो। और राम को मणिमाला की मणि की तरह हृदय में धारण करो। इसके लिये चाहिये हनुमान को राम जैसा सच्चरित्र और उसे राम जैसा साथी, निश्चय ही हनुमान बनने पर ही अयोध्या जीती जायेगी और रावण भी मारा जायेगा। नकली हनुमान बनाने से साथी का अभाव खटकेगा। बिना सच्चे हृदयग्राही रामभक्त हनुमान व उसकी वानर सेना भी क्या कर सकेगी।'

शोक समाचार

—महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्मृति सभा की अन्तरग बैठक २६ अगस्त, १९९० ने अपने संस्थापक एवं अन्तर्गत सदस्य तथा आर्यसमाज के गौरव श्री अर्जुनदेव माहना की नृशस हत्या के प्रति अत्यन्त दुख व्यक्त करते हुये, अधिकारियो से माग की कि अपराधियो को कठोर दण्ड दिया जाय। आदरणीय माहना जी अत्यन्त सदाचारी, मृदुभाषी, ऋषि के मिशन के समर्पित और सच्चे समाजसेवी थे। उनका उच्चकोटि का व्यक्तित्व और आदर्श चरित्र, एक अनुकरणीय उदाहरण के रूप मे हमे प्रेरणा देता रहेगा।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि ऐसे उदार चरित्र महामानव की आत्मा को शान्ति प्रदान करे और उनके परिजनो को इस आघात को सहने की शक्ति दे।

—डा० आनन्द प्रकाश, मन्त्री

—बडे दुखित हृदय से आपको सूचित किया जा रहा है कि स्वामी अमृतानन्द जी महाराज का स्वर्गवास दिनाक १३-८-९० को प्रात ७-१५ बजे आर्य समाज मन्दिर नरेला में हो गया है।

—आपको अत्यन्त दु:ख के साथ सूचित कर रहा हू कि स्वामी महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के अनन्य भक्त श्री कान्ति स्वरूप जी मवाना (मेरठ) का स्वर्गवास मई मास से हो गया है। यह रिटायर्ड इन्जीनियर थे। उन्होने अपना पूर्ण जीवन वेदो के स्वाध्याय मे लगाया हुआ था।

—आर्य समाज के रावल के अधिकारी एव सदस्यगण सलग्न महर्षि दयानन्द बाल मन्दिर केराकत के आचार्य एव छात्रो की यह महती सभा श्रद्धेय बैजनाथ प्रसाद पुस्तक विक्रेता के आकस्मिक निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है तथा दिवगत आत्मा की चिर शान्ति के लिए परमेश्वर से कामना करती है कि परमात्मा इस कठिन वियोग की घडी मे उनके शोक सतप्त परिवार को बल प्रदान करें।

—आर्य जगत को यह समाचार देते हुए बहुत दुख हो रहा है कि १० अगस्त ९० को गुरुकुल कांगडी के सुप्रसिद्ध स्नातक श्री सोमकीर्ति जी विद्यालकार का देहावसान हो गया। वे मियाणी (पाकिस्तान) के निवासी थे और स्वर्गीय श्री हरिराम हकीम के सुपुत्र थे। उन्होने सन १९२४ मे गुरुकुल कागडी से रसायन शास्त्र लेकर वेदालकार परीक्षा में सर्वोच्च अक प्राप्त किये। इसी कारण उन्हे अनन्तराय पदक प्राप्त हुआ।

—डा० प्रशान्त वेदालकार, सयोजक

—श्री रणबीरसिंह सुपुत्र श्री लेखराम ग्राम आहूलाना (रोहतक) का दिनाक १८-८-९० को दो मास की अल्पकालीन बीमारी के बाद देहावसान हो गया। उनकी आयु लगभग ८२ वर्ष की थी। वे आर्यसमाज के एक सक्रिय एव कर्मठ कार्यकर्ता थे। उन्होने आर्य समाज द्वारा चलाए गए हैदराबाद सत्याग्रह व हिन्दी रक्षा आन्दोलनो मे भाग लिया।

—राम कुमार आर्य

—बडे दुख के साथ सूचित करना पड रहा है कि आर्य समाज क व ऋषि दयानन्द को अनन्य भक्त आर्य समाज हावडा के कर्णधार श्री पुष्कर लाल जी आर्य का निधन दिनाक ४ जुलाई १९९० को हो गया है।

—आर्य समाज महाराजपुर की यह सभा आर्य प्रतिनिधि सभा म० प्र० व विदर्भ के भूतपूर्व प्रधान तथा भारत गौ-सेवक समाज के प्रधान मन्त्री, वरिष्ठ पत्रकार प० विश्वम्भर प्रसाद शर्मा का दिनाक १६ मई ९० को निधन हो जाने पर अश्रुपूरित शोक श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवगत आत्मा को ईश्वर शान्ति प्रदान करे। एव परिवार को इस असीम दुख सहन की क्षमता प्रदान करे।

—जयनारायण, मन्त्री

वार्षिकोत्सव

—आर्य समाज पुष्पनगर (आजमगढ) का १८ वा वार्षिकोत्सव एव यजुर्वेद पारायण यज्ञ दिनाक २६ सितम्बर से २९ सितम्बर १९९० तक मनाया गया। स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती पिथौरागढ एव श्री महेन्द्र पाल जी कलकत्ता पधारे।

रजि० न० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१०-२४।१९९०) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U 93
R N. 626/57 Licensed to post without Prepayment License No U 93 Post in D.P.S.O.on 28-9-1990

त्रिभाषा फार्मूले में उर्दू की अनिवार्यता यथोचित नहीं

दिल्ली २१ सितम्बर। भारत सरकार द्वारा त्रिभाषा फार्मूला के अन्तर्गत उर्दू को अनिवार्य भाषा के रूप मे स्थान देना उचित नही है, क्योकि पूरे भारत मे उर्दू पढने वालो की सख्या केवल ७ प्रतिशत है। अत उर्दू को अनिवार्य भाषा बनाने का प्रस्ताव न्यायपूर्ण नही है, अपितु अल्पमत जनमोर्चा सरकार की मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति का एक कुटिल अग है। विगत ६ माह के कार्यकाल मे जनमोर्चा सरकार ने जो भी काम हाथ मे लिये वह सब उलटे पडते रहे हैं। उक्त विचार प्रकट करते हुए आर्य समाज के सर्वोच्च सगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने सरकार को चेतावनी देते हुए कहा कि यदि उर्दू को अनिवार्य भाषा के रूप मे थोपा गया तो आर्यसमाज देश व्यापी आन्दोलन आरम्भ करेगा। स्वामी जी ने कहा कि अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय के कुछ छात्रो का १६ प्रतिशत ही उर्दू पढने मे रुचि रखता है जैसा कि विश्वविद्यालय के आकडो से पता चलता है। सम्पूर्ण भारत मे २ प्रतिशत मुस्लिम वर्ग ऐसा भी है जो उर्दू के स्थान पर विद्यालयो में सस्कृत पढना अधिक उपयोगी समझता है।

स्वामी आनन्दबोध ने कहा कि पूर्ववर्ती केन्द्र सरकार ने त्रिभाषा फार्मूले मे सस्कृत को स्थान देने का मन बना लिया था। देश मे सस्कृत पढने वाले छात्रो की सख्या इस समय प्राप्त के आकडो के अनुसार लगभग २८ प्रतिशत है तथा सस्कृत मे उच्च शिक्षा प्राप्त करने वालो की सख्या लगभग ३२ प्रतिशत है। अत त्रिभाषा फार्मूले के अन्तर्गत अनिवार्य भाषा के रूप मे सस्कृत को ही स्थान दिया जाना चाहिए। पूर्व प्रधानमन्त्री स्व० श्रीमती इन्दिरा गाधी ने अनौपचारिक रूप से इस बात को स्वीकार भी कर लिया था।

स्वामी जी ने कहा सरकार द्वारा गठित जाफरी उर्दू कमेटी ने उर्दू के सम्बन्ध में जो आकडे प्रस्तुत किए हैं वह चौंकाने वाले हैं। जाफरी कमेटी के अध्यक्ष सरदार अली जाफरी ने अपने बयान में मुख्य रूप से कहा है कि उर्दू को लादा न जाय, अपितु जहा उसकी आवश्यकता अनुभव की जाय, वही लागू की जाय।

स्वामी जी ने सरकार को आगाह करते हुए कहा ऐसी परिस्थितियो मे भी सरकार यदि उर्दू को त्रिभाषा फार्मूले मे अनिवार्य रूप से लागू करती है तो देश की राष्ट्रवादी जनता शान्त नही रहेगी अपितु भारत की प्राचीन वेद वाणी सस्कृत की पुनप्रतिष्ठिा के लिए आन्दोलन चलायेगी।

वार्षिकोत्सव

—आर्य समाज अनारकली मदिर मार्ग नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव सोमवार ५ नवम्बर से रविवार ११ नवम्बर तक समारोह पूर्वक मनाया जायेगा। प्रतिदिन प्रात काल श्री अनिल मल्होत्रा के सयोजकत्व मे आर्य समाज के विद्वान प० जैमिनी द्वारा यजुर्वेद महायज्ञ होगा। एव सायकाल श्री अजय सहगल के सयोजकत्व मे आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान आचार्य यशपाल सुधाशु एम ए की कथा होगी।

शुक्रवार ९ नवम्बर को मध्याह्न २ बजे से स्त्री आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव होगा।

आर्य विवाह केन्द्र

की सेवाओ से लाभ उठाए। आप अपने विवाह योग्य पुत्रों अथवा पुत्रियो के सम्बन्धो के लिए पूर्ण विवरण भेजें ताकि उचित सम्बन्ध स्थापित किये जा सकें।

सयोजक
चन्द्रप्रकाश आर्य
म०न० ७१A पाकेट सी
मयूर विहार फेस-२ दिल्ली

फोन २२१६४८४
२२०७१००

सूचना

दिल खोलकर दान दें

यदि आप चाहते हैं कि हमारे नवयुवक धार्मिक बनें उनके अन्दर वैदिक सस्कृति का प्रसार हो तथा शुभ कर्मों मे उनकी लग्न हो घर २ मे यज्ञ हो, स्थान २ पर धार्मिक परीक्षाओ के केन्द्र स्थापित हो, वैदिक साहित्य निशुल्क वितरण किया जाये जिससे हमारे समाज के नवीन सेवक आये, तो आप दिल खोलकर भारतीय सिद्धान्त परिषद नजीबाबाद को अपनी पवित्र कमाई मे से अधिक से अधिक दान देकर यश तथा पुण्य के भागी बनें।

—विद्यारत्न आर्य, मन्त्री
भारतीय सिद्धान्त परिषद नजीबाबाद उ० प्र०

सुयोग्य आर्य कन्या चाहिए

२८ वर्षीय १७४ से मी, ५० कि ग्रा बी.काम, एल एल बी. (प्रथम) (अग्रेजी माध्यम से), अनाज एव तिलहन का थोक व्यापार एव जीवनबीमा ई एजसी, मासिक आय १४००) निर्व्यसिनी, शाकाहारी आर्यसमाजी युवक हेतु गुरुकुल शिक्षा प्राप्त या आर्य परिवार की सुशील, धार्मिक, सस्कारी कन्या के अभिभावको से पत्रव्यवहार आमन्त्रित हैं, कृपया पहली बार मे ही सम्पूर्ण विवरण फोटोग्राफ के साथ भेजे।

—श्री अमृतलाल के शाह
नगर पचायत के पास, तलोद ग प्रातीज
जिला साबरकाठा ३८३ २१५

सार्वदेशिक प्रस दरियागज नई दिल्ली मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०११ | दयानन्दाब्द १६६ | दूरभाष : ३२७४७७१ | वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष २६ अंक ११] | कार्तिक कृ० ३ सं० २०४७ ७ अक्तूबर १९९०

भारतीय जनता पार्टी सरकार से समर्थन वापस लेने पर विचार करे : आर्यसमाज की मांग

दिल्ली २६ सितम्बर। आर्यसमाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने देश की वर्तमान स्थिति पर चिन्ता प्रकट करते हुए कहा कि वी०पी० सिंह की गलत नीतियों के कारण जगह-जगह छात्रों की हत्यायें और आत्मदाह की घटनाएं बढ़ती जा रही हैं।

स्वामी जी ने इन परिस्थितियों के लिए अप्रत्यक्ष रूप से भारतीय जनता पार्टी को भी दोषी ठहराते हुए कहा कि इसके समर्थन से ही यह अल्पमत सरकार चल रही है। स्वामी जी भाजपा के नेताओं को चेतावनी दी है कि यदि जल्दी ही सरकार से समर्थन वापस लेकर प्रधानमन्त्री को न बदला गया तो देश को भारी नुकसान उठाना पड़ेगा और भाजपा के प्रति भी जनता का मोह भंग होगा।

पुलिस की गोली से पवन साहनी की मृत्यु पर शोक व्यक्त करते हुए स्वामी जी ने कहा पवन आर्य विचारों का युवक था तथा आर्यसमाज की कई संस्थाओं से जुड़ा हुआ था। हाल ही में हैदराबाद में आयोजित आर्य सत्याग्रह अर्द्धशताब्दी समारोह में स्वामी जी की उपस्थिति में पवन ने भारी वर्षा के बावजूद आर्य वीर दल के युवकों का नेतृत्व करते हुए कई शराब के ठेके बन्द करवा दिये थे। स्वामी जी ने सरकार से अपील करते हुए कहा कि पवन साहनी सहित पुलिस की गोली से मारे गये छात्रों को दस-दस लाख रुपए का मुआवजा तुरन्त दिया जाये।

मंडल रिपोर्ट वापस लेने तक संघर्ष जारी रखने का संकल्प

नई दिल्ली २ अक्तूबर। आरक्षण विरोधियों ने आज यहां एक विशाल रैली में मंडल आयोग की सिफारिशों के बारे में सरकारी निर्णय को वापस लिये जाने तक अपना आन्दोलन जारी रखने का संकल्प लिया।

छात्र तथा अन्य आरक्षण विरोध संगठन के नेताओं ने बोट क्लब पर आयोजित इस रैली को सम्बोधित करते हुये इस सिलसिले में सरकार के साथ बातचीत करने से साफ इन्कार कर दिया। उन्होंने कहा कि उच्चतम न्यायालय के स्थगनादेश के बावजूद आरक्षण विरोधी आन्दोलन नहीं रुकेगा। उन्होंने आरोप लगाया कि प्रधानमन्त्री विश्वनाथ प्रतापसिंह ने देश को बांटने की साजिश की है जिसका उन्हें पुरजोर जवाब दिया जायेगा।

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक अधिवेशन

एवं निर्वाचन तथा महर्षि दयानन्द आर्य अतिथिशाला का भव्य उद्घाटन स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता में होगा

पटना १ अक्तूबर। बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री प्रो० योगेन्द्र नारायण ने सूचित किया है कि बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, नया टोला पटना ४ का त्रैवार्षिक अधिवेशन एवं निर्वाचन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता में रविवार दिनांक १४-१०-९० को सम्पन्न होना निश्चित हुआ है, साथ ही प्रो० नारायण ने यह भी सूचित किया कि उसी दिन सायंकाल में आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में नवनिर्मित महर्षि दयानन्द आर्य अतिथिशाला का उद्घाटन भी पूज्य स्वामी जी के करकमलों

वेद सुधा

जो जागता है, वह पाता है

अग्निर्जागार तमृचः कामयन्ते,
अग्निर्जागार तमु सामानि यन्ति।
अग्निर्जागार तमयं सोम आह
तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः॥

ऋग्० ५-४४-१५, साम० १८२७॥

हिन्दी अर्थ—अग्नि (या तेजस्वी व्यक्ति) जागता है, उसको ही ऋचाएं चाहती हैं। अग्नि जागता है उसके पास ही सामवेद की ऋचाएं जाती हैं। अग्नि जागृत है, उससे सोम कहता है कि मैं तुम्हारी मित्रता में सुखपूर्वक निवास करता हूँ (प्रसन्न रहता हूँ)।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

ऋषि वचनामृत

१—मैं अपना मन्तव्य उसी को जानता हूँ कि तीन काल में सबको एकसा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना वा मत-मतान्तर चलाने का लेश मात्र भी अभिप्राय नहीं है। किन्तु जो सत्य है उसको मानना, मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझको अभीष्ट है।

२—ज्ञान प्राप्ति से आत्मा की उन्नति और आरोग्यता होने से शरीर के सुख से व्यवहार और परमार्थ कार्यों की सिद्धि होना। उससे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये सिद्ध होते हैं। इनको प्राप्त होकर मनुष्यों को सुखी होना उचित है।

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्य समाजें स्वामी अग्निवेश व इन्द्रवेश को स्थान न दें

स्वामी सुमेधानन्द जी की आर्य जनता से अपील

वैदिक यतिमण्डल का सर्वसम्मत प्रस्ताव

नई दिल्ली के गुरुकुल गौतमनगर मे वैदिक यतिमण्डल की एक आवश्यक बैठक श्री स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में २१ ९-९० को हुई जिसमें स्वामी अग्निवेश एवं स्वामी इन्द्रवेश द्वारा निर्मित तथाकथित भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के सम्बन्ध में विचार किया गया और सर्वसम्मति से निम्न प्रस्ताव पारित हुआ —

"आर्य समाज संगठन से निष्कासित स्वामी इन्द्रवेश और अग्निवेश को तथाकथित भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के गठन का अधिकार नहीं है।"

अविकल प्रस्ताव—आर्य समाज के संविधान के अनुसार बिना सार्वदेशिक सभा की अनुमति के कोई भी नया संगठन नहीं बन सकता। जहां तक स्वामी अग्निवेश एवं स्वामी इन्द्रवेश का सम्बन्ध है, वे सार्वदेशिक सभा से पहले ही निष्कासित हैं अतः उन्हें आर्य समाज के संगठन में हस्तक्षेप करने का कोई भी अधिकार नहीं है। इसलिए उनके द्वारा स्थापित संगठन सर्वथा अवैधानिक एवं आर्यसमाज के लिए घातक है अत उसे अमान्य घोषित किया जाता है।

स्वामी सुमेधानन्द
मन्त्री वैदिक यतिमण्डल

शेष प्रस्ताव अगले अंक में)

अश्मन्वती रीयते सम् रभध्वम् उत्तिष्ठत प्र तरता सखाय।
अत्रा जहाम् ये असन्न शेवा शिवान् वयमुत्तरेमाभि वाजान॥
ऋ० १०-५३ ८ अथर्व० १२-२-२६ यजु० ३५-१०॥

हम भवसागर पार करें

अबला दीन अनाथ जनों का, प्रभुवर हम उद्धार करें।
अपने ही पौरुष के बल पर, हम भवसागर पार करें॥

चट्टान भरी जीवन की सरिता,
प्रकोप प्रभजन लाती है।
पग पग पर विहगों की कविता
हस हस, खिल खिल गाती है॥१॥

प्रबुद्ध प्रवीर, प्रशान्तमना प्रखर प्रवाह प्रतिसार करें।
अपने ही पौरुष के बल पर हम भवसागर पार करें॥१॥

उठो वीर प्रशस्त बाहुबल,
पुरुषार्थ, प्राण नव प्राप्त करो।
शैल श्रृंखला सघुत पथ है,
प्रातसध्य आशु पर नही डरो॥२॥

उठो देव दौर्बल्य हरो दुरप्तम दुखो को प्यार करें।
अपने ही पौरुष के बल पर हम भवसागर पार करें॥२॥

दुर्जन, दुर्मन दुर्बलता
दुर्जीव, दुष्ट जो दुष्कुल हो।
त्याग तृण सम तृषित जन को
व्यामोह हरो मन व्याकुल हो॥३॥

तट ओर निरख प्रत्यूष हुआ, अब पथ-परिणय स्वीकार करें।
अपने ही पौरुष के बल पर, हम भवसागर पार करें॥३॥

कर प्रकमसम स्वेद कणों से,
हर्षित हो सरिता तर जाए।
श्रीयुक्त शिवकारी शक्ति
ऐश्वर्य, सुमेधा, ज्ञान बढ़ाए॥४॥

प्रत्याशा परिपूर्ण प्रभु, हम तन-मन का परिष्कार करें।
अपने ही पौरुष के बल पर, हम भवसागर पार करें॥४॥

—[illegible] शर्मा
११९८ किलोकरी (रिंग रोड) नई दिल्ली

आगरा में जातीय संघर्ष और धर्म परिवर्तन

—ब्रह्मदत्त स्नातक—
सी ४ बी० ११२ बी० जनकपुरी, दिल्ली ५८

मुगल साम्राज्य की वैभवशाली राजधानी आगरा सामाजिक सुधार के क्षेत्र में अग्रणी रहा है। आर्यसमाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने बाबा साहेब अम्बेडकर, माननीय काशीराम, गुलाब सेहरा जैसे तथाकथित दलित वर्ग के नेताओं से एक शताब्दी पूर्व अप्रैल १८६४ मे मानवीय समानता का पाठ इसी नगर में सिखाया था। स्वामी जी सन् १८६४ तथा उसके बाद भी यहां पधारे और यहा रहे थे। यहा से बीच-बीच में अपने गुरु के चरणों में मथुरा आते जाते रहे।

इस शिक्षा का प्रभाव सवर्णों पर तो यह पड़ा कि वे जातिगत ऊच नीच मे ढीले पडे और दलित कहे जाने वाले वर्ग अपनी शिक्षा, आर्थिक स्थिति को ऊचा कर के समान आध्यात्मिक, सामाजिक नागरिक अधिकारों को पाने के लिए जुट गए और उसमें उनको उल्लेखनीय सफलता भी मिली। जनसख्या के आधार पर तथाकथित परिगणित जातियो में सर्वाधिक सख्या उस क्षेत्र मे जाटवों की है। आगरा मे चमड़े के व्यवसाय का केन्द्र होने के कारण वहां जाटवों मे अन्य परिगणित जातियो की तुलना में अधिक समृद्धि आई। इसका उदाहरण आगरा के अनेक परिवारो ४, ६ और ८ तक व्यक्ति (आई०ए०एस०), (आई०पी०एस०) और गजटेड अफसर श्रेणी में उनको नियुक्त देखा जा सकता है।

इसके पीछे उनका सगठन और साधना अवश्य है परन्तु इसके साथ ही परिगणित जातियो के प्रति अन्य लोगों का सहयोगपूर्ण व्यवहार भी है। भारतीय शुद्धि सभा के १९२८ में महामन्त्री स्व० डा० भागीसिंह ने उस दिशा मे बहुत कार्य किया था। आगरे के ही स्व० बाबू श्रीराम (सेहरा) और आर्य प्रतिनिधि सभा (उ०प्र०) के बाद में बने प्रधान स्व० बाबू पूरनचन्द एडवोकेट ने इस दिशा में सराहनीय कार्य किया था। तृतीय दशक में आगरे से परिगणित जाति के जो छात्र गुरुकुल वृन्दावन (मथुरा) में आये थे उनमें से ही एक पूर्व सांसद और कांग्रेस (इ) के पूर्व महासचिव [illegible] थे। इनके पिता जी बाबू श्रीराम जी को पिता जी कहकर पुकारते थे और बाबू जी की प्रेरणा से उन्होंने चमड़े के जूते बनाना छोड़कर उन्हें बनाने में केमिकल के होलसेल, पैसे और पानी की [illegible]

(शेष पृष्ठ ११ पर)

सम्पादकीय—

आर्य समाज का साहित्यिक परोगम

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा आने वाले समय मे अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन करने जा रही है । आर्य समाज की स्थापना शताब्दी १९७५ में सभा द्वारा मनाई गई थी और उस समय कुछ कार्य करने का सकल्प लिया था । आज हमें सोचना है कि हम कितना आगे बढे हैं :

सभा ने आर्य समाजिक जगत का ध्यान साहित्य की पूर्ति की ओर दिलाया । उसमें सभा ने वेदों के भाष्य से लेकर ऋषि के ग्रन्थों तथा अन्य विद्वानों के साहित्य का प्रकाशन किया । हमें सन्तोष है कि आर्य जगत् ने इस कार्य में हमारा पूर्ण सहयोग दिया । जो भी साहित्य सभा ने प्रकाशित किया उसे आर्य जनता ने ग्रहण किया ।

सार्वदेशिक सभा के अतिरिक्त तीस के लगभग बड़े संस्थानो ने भी महान प्रकाशनार्थ कार्य किया । उनका भी साहित्य जनता तक पहुंचा । फुटकर लेखकों द्वारा प्रकाशित साहित्य की सूची सस्थानों से भिन्न है उसे भी जनता ने स्वीकारा ।

इसमें प्रान्तीय सभाओं का भी यदि सहयोग मिलता तो अधिक उपयोगी होता पर उनके पास इतने अधिक काम की भरमारहै कि इधर उनका ध्यान ही नहीं है फुटकर व्यक्तियों द्वारा भी बहुत ही प्रशसनीय कार्य प्रकाशन तथा लेखन में किए जा रहे हैं जो कि प्रशंसनीय हैं ? परन्तु उनको साधन नहीं उपलब्ध होते, जिससे लेखन व प्रकाशन का महत्व पूर्ण कार्य किया जा सके । जो हो रहा है वह भी योजना बद्ध न होने से उपयोगी नहीं हो रहा है । अतः मैं सभाओं और संस्थानो के समक्ष एक योजना प्रस्तुत कर रहा हूं । जो इसे उपयोगी समझें इस ओर ध्यान देकर अपनाने का संकल्प लें । वैसे आज विश्व विद्यालयों मे वैदिक साहित्य तथा महर्षि दयानन्द की विचार धारा पर विभिन्न प्रकार से शोध कार्य भी किये जा रहे हैं जो कि स्तुत्य हैं । आर्य समाज के विद्वानों से—

वैदिक साहित्य के उच्चस्तर पर तीन भाग किये जा सकते हैं जो महत्व-पूर्ण तथा उपयोगी हैं ?

१—आर्य ग्रन्थों के शुद्धिकरण का ?

२—ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों के विषय में हिन्दी तथा अन्य भाषाओं में ग्रन्थों का लेखन व प्रकाशन ।

३—विदेशों के लिए उपयोगी साहित्य ।

१—आर्य ग्रन्थों की शुद्धि

आर्य ग्रन्थों का एक बहुत बड़ा जगत जाल है जो आर्य हिन्दू समाज के लिए सिरदर्द भी है जिसे समझना विचारना चाहिए कि कौन से प्राचीन ग्रन्थ आर्ष है और कौन अनार्ष ?

यह काम शोध (रिसर्च) का है ऋषि दयानन्द ने ऐसे ग्रन्थों पर कड़ा प्रहार किया है ऋषि के बाद भी विचारकों ने लेखन का कार्य किया है । आज इस पर तात्कालिक आवश्यकता है ।

सार्वदेशिक सभा तथा अन्य सभायें उपयोगी विद्वानो का इस कार्य में उपयोग आर्थिक सहायता देकर कर सकती हैं जैसे स्वामी करपात्री जी महाराज द्वारा 'वेदार्थ पारिजात" का उत्तर विद्वान प० आचार्य विशुद्धानन्द जी द्वारा लिखाकर 'वेदार्थ कल्पद्रुम" के रूप में स्वल्प मात्र में दिया है उस पर शेष कार्य भी होना है । ऋषि दयानन्द ने महान साहस करके सस्कृत साहित्य रूपी जंगल के झाड़-झंखाड़ को साफ किया और विद्वानों को सावधान भी किया । यदि इस ओर ध्यान नही दिया तो विधर्मी विद्वान इन्हीं अनर्गल बातों द्वारा प्रहार भी करेंगे ।

हमारे विद्वान साहस के साथ इस कार्य को अपने हाथ में लें और आवश्यक ग्रन्थों का अनुशीलन कर परिशोधन करें ।

(१) गृह्य सूत्रों का निर्ममता से संशोधन होना चाहिए और यथाशीघ्र कुछ प्रसिद्ध यज्ञों और इष्टियों की पद्धति भी बनानी चाहिए । यह नहीं विचारना है कि ऋषि दयानन्द जो कर गए वह पर्याप्त है और आगे जो ऋषि उत्पन्न होगा वह आकर करेगा यहां इति न होकर आवश्यक पग उठाने चाहिए । जिस पर कुछ ध्यान दिया जा रहा है ।

(१) मनुस्मृति रामायण और महाभारत का परिशोधित रूप प्रकाशित होना चाहिए । इधर कुछ कार्य विद्वानों द्वारा पं० सातवलेकर से लेकर अभी तक किया जा रहा है ।

यह पुस्तकें संशोधन कर ग्रन्थो का ऊहापोह अनुशीलन कर हिन्दु समाज के विद्वानो को दी जाये और उन पर चिन्तन कर समाज को जागृत किया जाए ।

आख्यायिकायें छोड़ दें और पौराणिक कल्पना बिल्कुल न रहें । ऐसा आभास कराया जाय कि यह इतिहास की पुस्तकें हैं । गप्पाष्टक से बिल्कुल साफ-सुथरी हो ।

महाभारत के वे अंश जिनको नीति कहते हैं उन्हें इतिहास से अलग करके प्रकाशित किया जाय । शेष प्रश्न उलझन भरें उनका समाधान किया जाय ।

२—ऋषि दयानन्द के ग्रन्थ

सत्यार्थ को शोधकर उसके प्रत्येक समुल्लास के पैराग्राफ अलग करके उनके ग्रन्थों मे जहां काट छांट की जा रही हो, उन पर गम्भीरता से लेखनी चलनी आवश्यक है ।

ऋषि के ५१ मन्तव्यो की चोटियां बनाकर लगभग २५ग्रन्थ हर मन्तव्य पर नई शैली से लिखने चाहिए । यह काम भिन्न भिन्न विद्वान अपनी रुचि के अनुसार हाथों में लेकर पूर्ण करें ।

इन ग्रन्थों में आकाश पाताल की बातें न होकर सर्वसाधारण के उपयोगी बातें होनी चाहिए । जिससे ऋषि के सम्मानित सद्गुणो के ग्रहण करने में व्यावहारिक कठिनाइयां न हों उन पर प्रकाश डाला जाये ।

(३) अंग्रेज चले गये परन्तु अंग्रेजी का महत्व अभी सौ साल तक रहेगा और आगे भी । अतः अंग्रेजी के साथ-२ अन्य देशों में वहां की भाषा में भी साहित्य का प्रकाशन भी होना चाहिए । क्योकि अपनी आवाज उन तक पहुंचाने में साहित्य एक साधन है उसकी सहायता लेनी आवश्यक है । अंग्रेजी का सत्यार्थ प्रकाश एक ऐसा भी होना चाहिए जैसा बाइबिल का है । बाइबिल के हाशिये पर वह संकेत दिये गये हैं ।

आज सत्यार्थ प्रकाश कई भाषाओं में प्रकाशित है जैसे अंग्रेजी, चीनी, फ्रैंच, उर्दू, डच तथा भारतीय भाषाओं में भी प्रकाशित किये गये ।

पाश्चात्य देशों की अभिरुचि और मनोवृत्ति को ध्यान में रखकर साहित्य को तैयार करना भी जरूरी है । आज भी आर्य समाज में ऐसे विद्वान हैं जिनसे यह काम कराया जा सकता है ।

भारत में भिन्न-भिन्न देशों के लोग आते रहते हैं वे यह जानना चाहते हैं कि भारतीय संस्कृति क्या है ? भारतीय सभ्यता क्या है । इन विषयों पर अधिक और अच्छा लेखन कार्य होना आवश्यक है ।

प्रचार की शैली में सभाओं को आवश्यक है कि वह स्थानिक धारा सभाओं के सदस्यों तथा राजदूतों तक इनकी प्रतियां पहुंचायी जायें ।

सार्वदेशिक सभा ने इस ओर ध्यान दिया है कि विभिन्न देशों के विद्वानों को वैदिक साहित्य देकर उनसे प्रार्थना भी की । कि इसे अपनी भाषा में अनुवादित कर अपने देश के लोगो लोगों तक पहुंचावें ।

आर्य समाज में यह अति उपयोगी साधन सिद्ध होगा ।

आज यह हमारा पुनीत कर्त्तव्य होना चाहिए कि हम अपने साहित्य को दूसरो तक कैसे पहुंचायें । जिससे वह हमसे भली भांति परिचित हो सके ।

साहित्य के काम में पार्टी बाजी तथा धड़े बन्दी से काम नहीं लेना है । ऋषि के मिशन के हम सेवक हैं साहित्यकार सब एक हैं, प्रकाशक सब एक हैं सगठित होकर आने वाले आर्य महासम्मेलन के अवसर तक इस विषय में गम्भीरता से विचारें और इस साहित्य की धारा को आगे बढ़ावें ।

ऋषि भक्तों तक यह एक आवाज दे रहा हूं आप इस पर गम्भीरता से विचार कर अपने पग उठायें ।

प्रश्न भारतीय नागरिक के कल्याण का है न कि जाति विशेष के कल्याण का

—मांगेराम आर्य २६९, बांकनेर, दिल्ली

महाभारत के बाद भारत मे अविद्या के कारण धार्मिक अन्धविश्वास ने जन्म लिया। वाम मार्ग प्रशस्त हुआ। भारतीय नागरिक जन्म जात वर्गो मे बट गया। राष्ट्रीय भावना प्राय लोप हो गई। धीरे-धीरे प्रान्तीय, जातीय व वंशीय भावना के साम्राज्य के कारण, अक्षात्र धर्म के स गठ होने के कारण भारत मे कोई केन्द्रित शक्ति नही रही। राष्ट्रीय भावना के अभाव मे मुहम्मदबिनकासिम (७१२ ई०), मुहम्मद गौरी (१२०६ ई०) और लार्ड क्लाईव (१७५७ ई०) ने भारत को राजनीतिक दासता के जाल मे फसाने मे सफलता प्राप्त की। विदेशियो ने अपनी राजनीतिक स्थिति को सुदृढ करने के लिए भारतीय नागरिको का सामाजिक और आर्थिक शोषण किया भारतीय नागरिको को शिक्षा प्राप्त करने से वंचित रखा। इस प्रकार भारतीय नागरिक सामाजिक, आर्थिक व शैक्षिक रूप से पिछड गया। पिछडेपन का मूल कारण राष्ट्रीय भावना का अभाव था। राष्ट्रीय भावना के अभाव का मूल कारण जाति–पाति था। जाति-पाति का मूल कारण अविद्या थी।

आज देश मे फिर धर्म और जाति-पाति के नाम पर सत्ता मे अधिकार और नौकरियो मे आरक्षण को बढावा दिया जा रहा हैं। कुछ टुकडो के लिए देश और समाज को टुकडो मे बाटा जा रहा है। आरक्षण रूपी रिश्वत देकर वोट बंक बढाया जा रहा है। राजनीतिक अपनी कुर्सी मजबूत करने के लिए समाज मे वर्ग स घर्ष को बढ़ावा देकर देश की स्वतन्त्रता को स कट मे डाल रहे हैं। भारत की स्वतन्त्रता प्राप्ति मे देरी का कारण भी धार्मिक आधार पर सत्ता पर अधिकार प्राप्त करना था।

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने सत्ता पर अधिकार बनाए रखने व चौ० देवीलाल की चुनौती को ध्यान में रखकर बिना अपने सहयोगी राजनीतिक दलो के साथ विचार विमर्श किये। ७ अगस्त १९९० को मडल कमीशन की सिफारिशें लागू कर दी। उनका तर्क है कि हमने चुनाव घोषणा पत्र में जनता को वचन दिया था कि मडल कमीशन की सिफारिशे लागू करेंगे। किन्तु जनता दल के २४० प्रत्याशियों ने चुनाव लडा, जिनमें से १४१ विजयी रहे। ५४५ सदस्यीय लोक सभा मे ५२५ स्थानो के लिए हुए चुनाव मे १४१ स्थान प्राप्त करना क्या यह जनादेश है? भारत की बहुसख्यक जनता ने आपको सत्ता नही सौपी है। आपके सहयोगी दलो ने आपको सत्ता दिलाने मे सहयोग दिया है। और उन्ही से कोई सलाह किए बिना आरक्षण नीति की घोषणा करना मानो स्वार्थ पूर्ण राजनीति फसल काटना है।

श्री रामविलास पासवान श्रम व समाज कल्याण मन्त्री भारत सरकार का कहना है कि म डल कमीशन मनु के दुष्कर्मो को धो रहा है। मन्त्री जी को पता होना चाहिए कि मनु ने व्यक्ति को जन्म से नही कर्म से चार वर्णों म से कोई भी एक वर्ण चुनने की व्यवस्था दी है। वर्ण चुनने का समय भी ब्रह्मचर्य आश्रम की समाप्ति पर है। किन्तु म डल आयोग ने तो जन्म से वर्ण मानकर जातिवाद को बढावा दिया है। अब बताइये दुष्कर्मी कौन हुआ? वोट के लिए समाज को जातिवाद की भट्टी मे झोकना क्या राजनीतिक चाल नही है?

श्री शरद यादव केन्द्रीय कपडा मन्त्री ने पिछडी जाति वालो को अपने हक के लिए मरने को तैयार रहने के लिए कहा है। स्पष्ट है कि श्री शरद जी अब राष्ट्रीय नेता नही रहे बल्कि वे पिछडी जाति के नेता बन गये हैं, उन्हे अब मन्त्री पद पर बने रहने का नैतिक अधिकार नही है। भारतीय समाज को टुकडो के लिए टुकडो मे बाटना उनको आपस मे लडाना भारत के लिए अत्यन्त घातक सिद्ध होगा।

म डल आयोग ने अग्रेजो द्वारा तैयार की गई सन् १९३१ की सूची को ध्यान मे रखकर पिछडो को आरक्षण देने की बात कही है। अग्रेजो की 'फूट डालो और राज करो" की नीति को जीवित रखकर भारतीय समाज से कैंसर को समाप्त करने के नाम पर भविष्य मे भारतीय समाज को असाध्य कैंसर रूपी जाति वाद के रोग से पीडित कर दिया है। सन १९५५ मे काका कालेलकर साहब ने जाति के नाम पर आरक्षण का विरोध किया था तत्कालीन प्रधानमन्त्री पण्डित जवाहर लाल नेहरू ने उनकी बात मान ली थी। किन्तु आज स विधान की मूल भावना के विरुद्ध जाति के आधार पर आरक्षण देकर प्रधानमन्त्री जी असवैधानिक कार्य किया है।

भारत मे कर्नाटक राज्य के साथ दो-तीन अन्य राज्यो को छोड कर किसी भी राज्य सरकार ने पिछडी जाति की सूची तैयार करने के लिए पूर्ण सर्वेक्षण नही किया है। भविष्य मे मनमाने ढग से सूची तैयार करने के भारतीय समाज मे वमनस्य बढेगा जिससे समाज कमजोर ही नहीं होगा बल्कि इसमे हिंसक वातावरण भी बन सकता है। फिर इतिहास श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह व उनके सहयोगियों को क्षमा नहीं करेगा। १९३२ के साम्प्रदायिक प च निर्णय की देन अनुसूचित जाति और जनजाति को आरक्षण देना है। इन वर्गो को ४० सालो मे भी आरक्षण द्वारा उच्च वर्गो मे पूर्ण रूप से नही लाया जा सका है। वर्ग स घर्ष की अनेक घटनाओ के कारण भारतीय समाज मे असन्तुलन और भेदभाव विद्यमान है। मण्डल आयोग की सिफारिशें लागू होने पर तो समाज मे भारी असन्तुलन, विद्वेष, शत्रुता और वैमनस्य बढ जाएगा। देश कमजोर होगा। राष्ट्र टूट भी सकता है।

भारतीय समाज को टूटने से बचाने के लिए, जातिवाद को समाप्त

(शेष पृष्ठ ९ पर)

अग्निवेश का कारनामा—

राष्ट्रीय आर्य कार्यकर्ता सम्मेलन की रपट

—वेद प्रकाश

स्वामी अग्निवेश आर्यसमाज के पुनरुत्थान के नाम पर क्या करने जा रहे हैं, इसका अनुमान उनके द्वारा दिल्ली के मावलंकर हाल में १४ तथा १५ जुलाई १९९० को किये गये राष्ट्रीय आर्य कार्यकर्त्ता सम्मेलन' को देखने सुनने से हो गया। अभी तक डा० भवानीलाल भारतीय ने उनके द्वारा मुस्लिमो को आर्यसमाज में प्रविष्ट कराने तथा भारतीय आर्यसमाज बनाने के बारे में जो कुछ लिखा था वह सब वहां सिद्ध हो गया। यद्यपि अपराध बोध से दबे स्वामी अग्निवेश बारम्बार अपनी सफाई देते रहे और उपर्युक्त आशय के लेख लिखे जाने की निन्दा भी करते रहे परन्तु उनके सहयोगी वक्ताओ ने उनका आशय स्पष्ट कर दिया।

स्वामी अग्निवेश तथा उनके साथियो ने आर्यसमाज के वर्तमान नेतृत्व के कारण अप्रासंगिक हो जाने वाले आर्यसमाज के बारे में जो भी कहा, वह अधिकांशत सत्य था। बढ़ता हुआ पाखण्ड साम्प्रदायिकता जातिवाद देश के विघटन का खतरा, अंग्रेजियत का बोलबाला इत्यादि विषय ऐसे हैं जो आज प्रत्येक की जुबान पर हैं परन्तु आर्यसमाज के नेतृत्व ने वास्तव में इस दिशा मे काफी समय से कुछ ऐसा नही किया जिससे सामाजिक संगठन होने के नाते उसे प्रासंगिक माना जा सके।

किन्तु इससे यह तात्पर्य नहीं लेना चाहिये कि स्वामी अग्निवेश आर्यसमाज के यथार्थ स्वरूप को निखारने के लिये कुछ करना चाहते हैं। वैसे तो आर्यसमाज में वे अपने जन्मकाल से ही विवादास्पद रहे हैं, लोग उन्हे कम्युनिस्ट, नक्सलवादी और न जाने क्या-क्या कहते रहे हैं। अग्निवेशजी ने भी अपनी इस छवि से हटकर कुछ करना उद्देश्य नही बनाया है। गुरुकुल कांगड़ी पर कब्जे वाले मामले को लेकर आर्यसमाज में उनका जो व्यापक विरोध हुआ उससे उन्हे काफी पीछे हटना पड़ा। स्वामी इन्द्रवेश जी ने अपने भाषण मे इस तथ्य को स्वीकार किया, "हमने सन् १९७० में काम शुरू किया और ७७ में हमें छोड़ देना पड़ा। हम किसान आन्दोलन और राजनीति की ओर चले गये। हम सभाओं पर कब्जा करने की राह पर भी गलत चले थे। हमें दयानन्द और शहीदों की राह पर आना चाहिये था।" यद्यपि सम्मेलन के अन्तिम चरण मे अग्निवेश जी द्वारा दिये गये भाषण से यह भली प्रकार सिद्ध हो गया कि ये सन्यासिद्वय अभी भी उस राह से अधिक दूरी पर नही चलना चाहते हैं।

दोनो दिन के सम्मेलन में अग्निवेश जी का यह प्रयास रहा कि हिन्दू' नामक व्यक्ति और उसके संगठनो का जबर्दस्त विरोध किया जाये ताकि अपनी छवि सेक्यूलर नेता की बन सके, जैसा कि आजकल के हमु हे नेताओं का स्वभाव बन चुका है। दूसरा, मुसलमानो ईसाइयो तथा सिक्खो की झूठी प्रशंसा करना जिससे वे इनकी सहानुभूति अर्जित कर सकें। इसके लिये उन्होने झूठ का और वाक्छल का सहारा लेकर जो पाप किया है, उसकी निवृत्ति भगवान ही जाने कैसे होगी। एक पुस्तिका भी प्रकाशित कराई जिसमें असत्य की भरमार है।

स्वामी जी ने उपर्युक्त दिवसो को ऐतिहासिक बताया और कहा कि हम न तो पुराने संगठन को त्यागना चाहतेहैं और न किसी व्यक्ति या संस्था से विरोध करना चाहते हैं। हमे सभी का आशीर्वाद और सहयोग चाहिये जिससे हमारी शक्ति बढ़ सके। उनको शिकायत थी कि आर्यसमाज देश में फली समस्याओ को चुनौती क्यो नही देता।

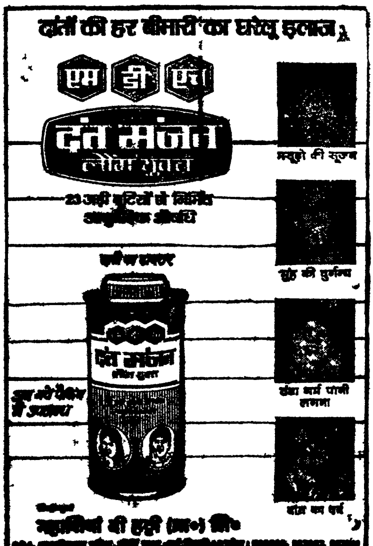
अग्निवेश जी आर्यसमाज को राजनीति की तरह नेतावादी संगठन मानते हैं और नेतृत्व की आलोचना कर स्वयं को नेता-पद के योग्य मनवाना चाहते हैं। इसमें भी कोई बुराई नही कि वे आर्यसमाज के शीर्षस्थ नेता बन जाए। परन्तु दिक्कत यह है वे अभी तक आर्यसमाज को ठीक से जान ही नही पाये हैं, और यदि जानते भी हैं तो उसका वह रूप उनको स्वीकार्य नही, कम से कम पिछले दो दिनो के सम्मेलन से तो उन्होने यह सिद्ध किया है।

आर्यसमाजी अग्निवेश जी जैसे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त नेता (जैसा कि उनके सहयोगी प्रचारित करते हैं) से पूछ सकता है कि जिन दंगो के बारे में आपने हाय-तोबा मचाई वहां आपने क्या किया या कश्मीर-पंजाब के मसले पर आप क्या करते रहे हैं? अपने आपको आर्यसमाजी मानने के नाते आपने क्या किया? नेतृत्व की आलोचना का ही दम्भ करते रहे। या फिर आपके पास समय नही था क्योंकि 'बन्धुआ मजदूर मुक्ति मोर्चा के स्वयम्भू नेता होने के नाते आपका एक पैर विदेशो मे रहता है?

स्वामी अग्निवेश जी के कार्यक्रम से मात्र ये तथ्य उजागर हुये हैं—

१—हिन्दुओं का जबर्दस्त विरोध करो और हो सके तो आर्य समाज और प्रमुख हिन्दूवादी संगठनो को आमने-सामने खड़ा कर दो।

२—ईसाई, मुसलमानो, सिक्खो को आर्यसमाज मे प्रविष्ट



कराओ और जी-भर कर इसका समर्थन करो।

३—आर्यसमाज को दो धड़ों मे विभाजित करने का सामान कर दो और मुंह से यही कहते रहो कि हम ऐसा नहीं चाहते हैं।

४—आर्यसमाज में जो नये लोग आये हैं, उनका ब्रेनवाश करके उनमें आर्यसमाज के सम्बन्ध में भ्रान्त तथ्य भर दो।

वैसे तो दोनो दिनो के कार्यक्रमो के सारे चरणो में हिन्दू-विरोधी स्वरूप मुखर रहा, परन्तु प्रथम दिन के द्वितीय चरण मे सम्पन्न हुये साम्प्रदायिकता-विरोधी महासम्मेलन' में तो मुस्लिम चाटुकारिता की हद थी। आर्यसमाज के सिद्धान्तो के परखच्चे उड रहे थे। इसमे वक्ता थे—बहाबी नेता डा० असगर अली इन्जीनियर एव न्यायाधीश राजेन्द्रसिंह सच्चर, जीवनसिंह उमरा नगल तथा गुरुचरणसिंह बब्बर।

शुरुआत मे ही एक महिला का भजन था—

वर्गवाद की जगह आज हम साम्यवाद को लायगे।
भगवानो की जगह आज भगवानी को बैठायगे॥

आप विद्वान् समझ ल कि अग्निवेश जी क्या कहलवाना चाहते हैं। पश्चात अग्निवेश जी ने भूमिका मे उन सब तथ्यो का जिक्र किया जो दयानन्द और आर्यसमाज को उदारवादी (?) ठहराने के विलक्षण प्रमाण हैं। यानि दयानन्द मुसलमानो को बहुत चाहता था और हिन्दुओं को बिलकुल नही। इसीलिये दयानन्द ने जहा ईसाई-मुसलमानो का एक स्थान पर खण्डन किया वहा हिन्दुओ का दस स्थानो पर किया।" आगे स्वामी जी फरमाते हैं, 'दयानन्द को जहर किसने दिया ? उसे तलवार से मारने कौन दौड़ा ?" यानि हिन्दू सब दृष्टि से बुरे और मुसलमान सबसे अच्छे। स्वामी अग्निवेश के सारे वक्ताओ ने यही रुख अपनाये रखा।

वहा बैठे तथाकथित प्रतिनिधियो मे से एक ने भी नही पूछा कि स्वामी जी ! मुसलमान-ईसाई इत्यादि हिन्दूतर सारे बढ़िया हैं, परन्तु जिन हुतात्माओ को आप नाम स्मरणपूर्वक आज जनता की भावनाए भडकाने के लिए काम मे ला रहे हो उन प० लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द और महाशय राजपाल जैसो के हत्यारे कौन हैं ? हैदराबाद सत्याग्रह का नाम भी आपकी जुबान पर नही आया, क्यो ?

डा० असगर अली तो स्वामी अग्निवेश जी के इस रुख से पहले से ही परिचित हैं, उन्होने जब आर्य जनो के मच से उन्हे ऐसी चाटुकारिता करते देखा, तो वे भी खुलकर बोले, 'आर्यसमाज की बुनियाद किसी मजहब के खिलाफ नहीं है। मजहब दिमाग से नही, दिल से ताल्लुक रखता है। सारे मजहब इन्सानो की भलाई के लिए होते हैं।"

'यह गलत धारणा है कि इस्लाम गर मुस्लिमों को काबिले कत्ल या काफिर समझता है। यह बात कुरआन शरीफ में कही नही कही गई है।'

'अगर अल्लाह चाहता तो सबको एक ही मजहब को मानने वाला बना सकता था मगर उसने सब लोगो को अलग-अलग मजहब वाला जान-बूझकर बनाया क्योंकि वह आजमाना चाहता कि अलग-अलग मजहब वाले होकर भी लोग अमन के साथ रह सकते हैं या नही।

इसी प्रकार जनाब डा० साहेब मुहम्मद बिन कासिम की वकालत पर उतर आये और बताने लगे कि वह फिरकापरस्त नही था, उसने हिन्दुओ को उलेमाओ की सलाह पर अहले किताब मानकर उन्हे मुआफ कर दिया और उनके साथ समझौता कर लिया। जिन इतिहासकारों ने इसको फिरकापरस्ती की नजर से देखा है, वे साम्प्रदायिक हैं डाक्टर साहेब ने यह नही बताया कि राजा दाहिर की कन्याओं को वह किसकी आज्ञा से हरण करके अरब ले गया था। हजरत मुहम्मद की या कुरआन शरीफ की ? क्योंकि वह भी कट्टर मोमिन था।

डा० साहेब की नजर में रामजन्मभूमि एक बकवास है। सेक्यूलरिज्म के बिना भारत की प्रजातान्त्रिक व्यवस्था टिक नहीं सकती और कश्मीर की समस्या के मूल में कई कारण हैं (मुस्लिम कट्टरता नही)।

स्वामी अग्निवेश जी को डा० साहेब के उपर्युक्त भाषण में कोई आपत्तिजनक बात नही दिखाई दी अत उन्होंने अपनी टिप्पणी में उनकी प्रशसा के अतिरिक्त कुछ नही किया। धर्म निरपेक्षता के अलम्बरदार जो ठहरे!

पूर्व न्यायमूर्ति राजेन्द्रसिंह सच्चर की प्रशसा के पुल बांधे स्वामी अग्निवेश ने जिससे यह भ्रम पैदा हो गया कि सच्चर कट्टर आर्य समाजी सोच के व्यक्ति होगे। स्वामी जी ने, उनके पिताश्री भीमसिंह सच्चर का बारम्बार नामोल्लेख भी किया परन्तु श्री सच्चर ने आते ही लोगो के भ्रम को समाप्त कर दिया और स्वामी जी को भी बता दिया कि मैं आर्यसमाज मे बड़ों की आज्ञा मानकर चला जाता था, अन्यथा मेरा कुछ लेना-देना नही था आर्यसमाज से।

अपने भाषण मे श्री सच्चर जी आज के आर्यसमाज को दकियानूस सोच का पैमाना बताते हुये यह सिद्ध करते रहे कि रामजन्म भूमि उस स्थान पर नही है जहा बाबरी मस्जिद है। आगे तो मुसलमानो की वकालत मे चाटुकारिता के सारे पैमाने खुद तोड़ते रहे—'पाकिस्तान बनने मे आज के हिन्दोस्ता का कोई भी मुसलमान दोषी नही है। उन्हे स्वय को अपराधी महसूस नही करना चाहिए कश्मीर पर कबाइली हमले के वक्त उसे बचाया एक मुसलमान ब्रिगेडियर उस्मान ने। देश का पहला परमवीर चक्र एक मुसलमान को मिला था। एक बार मेरी कोर्ट में चार लोग आये थे जो पाकिस्तान को मिलिट्री सीक्रेट्स बेचा करते थे। चारो को दस दस वर्ष की कैद हुई और वे सबके सब हिन्दू थे। आज के मुसलमान को देश के प्रति अपनी वफादारी की कसम खाना जरूरी नहीं है।"

कश्मीर समस्या को सच्चरजी ने उठाया, कश्मीर में आज जो हो रहा है उसमें हमारी गलती है। भारत के अनेक हिस्सो में मुसलमानों के साथ जो दगे होते हैं, उसे देख-सुनकर क्या घाटी के मुसलमान दुःखी नही होगे ? उन्हे गुस्सा नही आयेगा !"

ये सच्चर जो पी यू सी एल (Peoples'Union of Civil Liberties) के नेता हैं। हिन्दुओं को साम्प्रदायिक समझने और मुसलमानो को देशभक्त मानने में इनका क्या जवाब हो सकता है।

ये तो रह गई उन लोगो की बातें जो पढ़े लिखे माने जाते हैं अब देखिये परम्परागत सिक्ख मत के विद्वान् श्री जीवनसिंह उमरानगल का व्याख्यान। यहा यह बता देना आवश्यक समझता हूँ कि श्री जीवनसिंह उग्रवाद का विरोध करते हुये अपना एक बेटा खो चुके इसलिये धन्यवाद के पात्र हैं आदर के भी। परन्तु वे जो कुछ कह रहे हैं, वह आर्य सिद्धान्तो के विरुद्ध है या नहीं, यह देखना सभासदों का काम है। उमरानगल जी का कहना था, 'हम सब हिन्दू-मुस्लिम-सिख-ईसाइयो को मिलकर रहना चाहिये। क्योकि हम सब आरिया (आर्य) हैं। आ (हाथ से अपनी ओर बुलाने का सकेत करते हुए)+रिया+आरिया (अर्थात् आर्य) अर्थात् जो बाहर से आए। पहले हम सब एक थे, बाद में अलग अलग हो गए। हम पूजा करने, इबादत करने कही जाएं, इससे मतलब नही। जो मुसलमान बने, उन्हे मस्जिद के लिए जगह दो इत्यादि।" आर्य जन विचार सकते हैं कि ऐसे सिद्धान्त-विरोधी भाषण 'राष्ट्रीय आर्य कार्यकर्ता सम्मेलन में होते रहे और अध्यक्ष जी (स्वामी अग्निवेश) की कोई टिप्पणी तक नहीं।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

सत्यार्थप्रकाश का फ्रैंच संस्करण : लुईज मोरे की अपूर्व देन

—प्रह्लाद रामशरण, मारीशस

नई दिल्ली मे हुए तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन के बाद १४ नवम्बर १९८३ की शाम को मैं डा० सत्यकेतु वेदालकार से मिलने उनके घर पर गया था। उनके आराम कक्ष मे कोई एक घण्टे तक उनसे बाते हुई थी 'आर्य समाज का वृहद इतिहास' की चर्चा करते हुए उन्होने बताया कि इस काम मे उन्हें कितने सरकारी दस्तावेजो, सन्दर्भ ग्रन्थो और पुरानी पत्र-पत्रिकाओ के अको की छानबीन स्वय करनी पडती है। इसी मुलाकात के समय मैंने डा० जी से स्वामी दयानन्द द्वारा लिखित ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के फ्रैंच सस्करण, जिसे लुईज मोरे ने तैयार किया था, पर उनसे कुछ प्रश्न किये थे।

डा० सत्यकेतु वेदाल कार पचास ग्रन्थो के लेखक हैं। वे गुरुकुल के छात्र इतिहास के प्राध्यापक, उपकुलपति और कुलाधिपति पदो पर रह चुके हैं। उन्होने आर्य समाज का वृहद इतिहास सात खण्डो मे लिखा। दुर्भाग्य यह है कि गत १६ मार्च १९८९ को कार दुर्घटना मे उनकी मृत्यु हो गई। इस साक्षात्कार के पुनश्च मे श्रीमती डा० सत्यकेतु वेदालकार का उद्गार पढ़ा जा सकता है।

प्रश्न—डा० सत्यकेतु वेदालकार जी, सन् १९३६ मैं किस उद्देश्य से आपने यूरोप की यात्रा की थी ?

उत्तर—सन् १९३६ मे मैं गुरुकुल कागडी महाविद्यालय मे इतिहास का प्राध्यापक था। उस पद पर लगभग सोलह वर्षों तक मैंने कार्य किया था, इसलिये उस समय के प्रसिद्ध गाधीवादी उद्योगपति स्व० जमनालाल बजाज, मेरे इतिहास प्रेम और मेरी विद्वता से परिचित ही नही काफी प्रभावित भी हुए थे। अत उन्होने ही जर्मनी के म्यूनिक विश्वविद्यालय से डी०लिट् की उपाधि प्राप्त करने के लिए मेरी छात्रवृति का प्रबन्ध करवाया था। इस तरह से प्राचीन भारत के इतिहास पर डी लिट् करने के उद्देश्य से मेरी यूरोप यात्रा हुई थी। मेरी थीसिस का विषय था—भारत मे प्रचलित जातिवाद का मूल स्रोत। इस विषय का विवेचन करत हुए मुझे अग्रवाल जाति के मूल पर विशेष रूप मे प्रकाश डालना था।

प्रश्न—उस समय आपकी उम्र क्या थी और क्या आपने परिवार सहित यूरोप की यात्रा की थी ?

उत्तर—तब मेरी आयु ३३ वर्ष की थी। मेरे परिवार में मेरी पत्नी, साढ़े पाच वर्ष का पुत्र और एक आठ वर्षीय कन्या थी। हमारी यूरोप यात्रा सपरिवार हुई थी।

प्रश्न—अपनी उस यात्रा का कोई विशेष सस्मरण बताने का कष्ट करेंगे ?

उत्तर—सन् १९३६ मे जब मैंने यूरोप की यात्रा के लिए कलकत्ता से प्रस्थान किया था, तब जर्मनी मे हिटलर डिक्टेटर बन चुका था। उन्होने अपनी फैसिस्ट विचारधारा के जरिए जर्मनी को एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप मे सगठित कर लिया था। एक जर्मन स्टीमर से यात्रा करते समय मेने स्वाभाविक तौर पर फैसिज्म की आलोचना कर दी। सुनने वाले बिगड गए और तब से स्टीमर के समस्त नाविक और यात्री एक तरह से हमारे शत्रु बन गये। उन्होंने स्टीमर में ही हमारा बहिष्कार कर दिया उस स्टीमर में हम अकेले भारतीय थे। अत मैंने सोचना शुरू किया। अगर स्टीमर मे यह हाल है तो म्यूनिक मे जहाँ मेरा दाखिला हुआ था, क्या दशा होगी ?

प्रश्न—कब और किस प्रकार से फ्रास के भारत प्रेमी बुद्धिजीवियों से आपका सान्निध्य हुआ था ?

उत्तर—पेरिस की एक महिला थी—मादेम्वाजेल पासकालीन मालेत। उनसे मैं पहले से परिचित था। वे १९३४-३५ में भारत की यात्रा पर आई थी और गुरुकुल कागडी मे कुछ समय तक ठहर चुकी थी। वह महिला भारतीय आतिथ्य का बहुत कटु अनुभव लेकर पेरिस लौटी थी। अत जब मेरी यूरोप यात्रा की बात पक्की हो गई तब मैंने उनको पत्र लिखा और सौभाग्य से जर्मन स्टीमर पर चढने से पहले ही उनका उत्तर आ गया था, जिसमे उन्होने मुझे पेरिस आने का निमन्त्रण दिया था। जिस स्टीमर पर हम यात्रा कर रहे थे, वह कार्गो अर्थात् मालवाही जहाज था। इसीलिए अनेक बन्दरगाहो पर माल उतारते चढाते हुए काफी लम्बे अर्से तक हमारी यात्रा जारी रही। उसे यूरोप पहुचने मे कोई तीन महीने लगे थे। अत मैंने रास्ते मे ही विचार बदल लिया था और जर्मनी के बजाय पेरिस जाने का निश्चय कर लिया था। हमारा पासपोर्ट बेल्जियम का था। और वहा से पेरिस की यात्रा के लिए कस्टम अधिकारी ने यह सोचकर हमे परेशान नही किया क्योकि अगली ट्रेन से हम पेरिस के लिए प्रस्थान करने वाले थे। नवम्बर की उस शीत भरी शाम को हम पे[illegible] पहुचे थे। वहा हमने मादेम्वाजेल पासकालीत का आतिथ्य ग्रहण किया था। उन्ही की सहायता से मैंने इतिहास पर डी. लिट् करने का दाखिला सोबोर्न यूनिवर्सिटी में लिया था।

प्रश्न—मादम लुईज मोरे कौन थी और उनसे आपका परिचय कहा और कैसे हुआ ?

उत्तर—पेरिस के सोबोर्न यूनिवर्सिटी मे इन्डोलाजी का अत्यन्त उन्नत विभाग है, वहा सप्ताह मे एक दिन भारत से लगाव रखने वाले फ्रैंच स्त्री पुरुष तथा पेरिस के विद्याव्यसनी लोग एकत्र होकर आपस मे मल मुलाकात करते और भारतीय सभ्यता तथा सस्कृति पर विचार करते थे। ऐसी ही एक सभा मे जिसमे डा० फूशेत, मादाम लुईनमोर मार्सेल रनू जूल्ये ब्लोच्छ और श्रीमती सुपक जैसे इण्डोलाजिस्ट शामिल थे मेरा परिचय मादम लुईज मोरे से हुआ था। श्रीमती मोर भारत से बहुत प्रेम करती थी। उनके घर पर भारत के प्रसिद्ध समाचार पत्र जैसे 'हिन्दुस्तान टाइम्स 'हिन्दू टाइम्स' और 'अमृतबाजार पत्रिका आदि आती थी। वह साडी पहनती थी और भारतीय ढग का भोजन बनाती थी। मेरी पत्नी से वह काफी हिल-मिल गई थी। उन्ही के घर पर जाकर भारत के पत्रों के जरिये मुझे अपने देश की राजनीतिक गतिविधियो की जानकारी मिलत[illegible]। श्रीमती मोरे का घर पेरिस मे छोटा सा भारत के नाम से जाना जा[illegible]।

मादाम लुईज मोरे एक सुशिक्षित महिला थीं। वह अपने एकमात्र पुत्र के साथ रहती थी। फ्रैंच और अग्रेजी पर उनका पूरा अधिकार था। वे प्राय लीग आफ नेशन के दस्तावेजो को अग्रेजी से फ्रेंच मे अनुवाद करती थी। प० जवाहरलाल नेहरू जब भी पेरिस आते थे प्राय उन्ही के घर पर ठहरते थे। ऐसे ही सर तेज बहादुर सप्रू, प्रसिद्ध वैज्ञानिक सी वी रमण आदि भारतीय बुद्धिजीवियो के साथ उनकी अच्छी मैत्री थी। वह भी प्राय भारत की यात्रा पर आया करती थी।

प्रश्न सत्यार्थ प्रकाश को फ्रैंच मे अनुवाद करने का विचार किसका था। ? किसके आग्रह पर आपने मादाम लुईज मोर को वह भार सौपा था ? उन्होने किस हैसियत से पुस्तक का अनुवाद किया था और इस कार्य मे किसने व्यय वहन किया था ?

उत्तर—स्वनामधन्य स्व० स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज प्राय गुरुकुल कागडी पधारते रहते थे। वह उस युग के आर्य समाज के समर्पित नेता थे। मै अपने विद्यार्थी जीवन के समय से ही उनके सम्पर्क मे आया था। स्वामी जी को मेरी ईमानदारी और कर्मशीलता पर पूरा विश्वास था। अत मेरे पेरिस प्रवास के समय स्वामी जी ने एक पत्र लिखकर "सत्यार्थ प्रकाश" का फ्रैंच अनुवाद कराने की इच्छा प्रकट की थी।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के आग्रह पर मैंने मादाम लुईज मोरे को इस

कार्य के लिये राज़ी किया था। वह बड़ी निष्ठा और लगन से इस कार्य को करने लगी। उन्हें हिन्दी का अधिक ज्ञान नहीं था, इसलिये मैं उन्हें हिन्दी सिखाता था और वह मुझे फ्रेंच सिखाती थीं। डॉ० मारक्वीस का सत्यार्थ-प्रकाश का अंग्रेजी संस्करण उन्होंने पढ़ डाला किन्तु उससे उन्हें सन्तुष्टि नहीं मिली। इसलिये स्वामी दयानन्द जी महाराज का वास्तविक भाव जानने के लिये उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश के हिन्दी संस्करण का ज्ञान मुझसे हासिल किया था और तभी उन्होंने पुस्तक का ट्रांसलेशन किया था। सत्यार्थप्रकाश के फ्रेंच अनुवाद पर कितना खर्च हुआ था, याद नहीं है किन्तु उसका सारा व्यय स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी ने वहन किया था।

प्रश्न—किस देश मे किस प्रकाशन गृह से और किस वर्ष मे सत्यार्थ-प्रकाश का फ्रेंच संस्करण प्रकाशित हुआ था ?

उत्तर—सन् १९४० ईसवी मे बेल्जियम मे सत्यार्थप्रकाश का फ्रेंच संस्करण प्रकाशित हुआ था। छपाई के समय द्वितीय विश्वयुद्ध छिड़ गया था फ्रांस और बेल्जियम पर जर्मन हवाई जहाजो द्वारा जो बमबारी हुई थी उसमे प्रकाशन गृह के साथ-साथ सत्यार्थ प्रकाश की प्रायः समस्त प्रतियां नष्ट हो गई थी। किन्तु एक प्रकाशक के जरिए पुस्तक की चार प्रतियां जैनेवा पहुंचाई गई थी, जहां से भारत लाने मे सफलता प्राप्त हुई। अतः उन चार प्रतियों को निम्नलिखित स्थानो और व्यक्तियो के पास रखा था। एक प्रति मसूरी के पुस्तकालय में, दूसरी प्रति सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पास, तीसरी प्रति स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के पास और चौथी प्रति मेरे पास थी उसे मैंने मारीशस भेज दिया था किन्तु मुझे याद नहीं है कि किसके जरिए उसे मारीशस भेजा था।

प्रश्न—मादाम लुईस मोरे का स्वतन्त्र भारत के साथ कैसा सम्बन्ध था ? उनकी मृत्यु कहां और कब हुई थी ?

उत्तर—मादाम लुईस मोरे का भारत प्रेम अनुपम था। भारत को स्वराज मिलने पर आल इण्डिया रेडियो का विस्तार हुआ था और उसमे फ्रेंच विभाग खोला गया था। भारत के प्रधानमन्त्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के निर्देश पर मादाम मोरे उस विभाग की अध्यक्षा बन गई थी। इस पद से उस महिला ने भारतीय संस्कृति का समुचित प्रचार-प्रसार करने में भारी योगदान दिया था। इसी पद पर कार्य करते हुए उनकी मृत्यु दिल्ली मे सन १९६१ मे हुई थी।

प्रश्न—किस विषय में आपने डी. लिट् की सर्वोच्च उपाधि ली थी ? और भारत लौटकर आपका कार्यक्षेत्र क्या रहा ?

उत्तर—पेरिस यूनिवर्सिटी से इतिहास, भारत के प्राचीन इतिहास पर मैंने डी लिट् की सर्वोच्च उपाधि ली थी। मेरी थीसिस में मैंने यह प्रमाणित किया था कि प्राचीन भारत मे भी कुछ सार्वभौम सम्राट थे और कुछ गण-राज्य भी थे जिनकी स्थितियां प्रायः ग्रीक साम्राज्य मे ग्रीक सिटी स्टेट के समान थी। उनमे भी सार्वभौम राजा होते थे और गणराज्यो की प्रभुता को स्वीकार करते थे। किसी शासन पर आक्रमण के समय सार्वभौम सम्राट अपने अधीनस्थ राजाओ की रक्षा करते थे और इस तरह से गणराज्य अपने सार्वभौम सम्राट के साथ मिलकर के साथ मिलकर आक्रान्ता शत्रु का मुका-बला करते थे।

यूरोप से लौटकर मैंने अपना सारा समय पुस्तक प्रणयन मे लगाया और आज तक कोई पैंतालीस ग्रन्थ लिखे हैं, जिनमें कोई बीस हजार पृष्ठ हैं। इसके अतिरिक्त मैंने थोड़ी बहुत राजनीति में भी दिलचस्पी ली है और कुछ समय तक उत्तर प्रदेश विधान परिषद के सदस्य के रूप मे भी रहा हूं। १९७४ से मैं गुरुकुल कांगड़ी का उपकुलपति नियुक्त हुआ और आजकल उसी संस्था का कुलाधिपति हूं। साहित्य सृजन, इतिहास लेखन के अलावा मैं लखनऊ, कलकत्ता, विश्वभारती, शांति निकेतन और जयपुर आदि के विश्वविद्यालयो मे व्याख्यान देने के लिए भी जाता रहा हूं। विदेशो की यात्रा का शौक भी रहा है और यूरोप को छोड़कर, चीन, इण्डोनेशिया और कौनिया की सांस्कृतिक यात्राएं भी मैंने की हैं।

प्रश्न—आप कबसे आर्यसमाज का वृहद इतिहास लिख रहे हैं ? इस कार्य की प्रेरणा आपको कैसे मिली थी ?

उत्तर—मैंने गुरुकुल कांगड़ी के कुलाधिपति पद पर रहते हुए इतिहास लेखन का कार्य शुरू किया था। इसकी प्रेरणा मुझे १९३८ से मिली थी। जब मैं पेरिस मे सत्यार्थप्रकाश का फ्रेंच अनुवाद करवा रहा था, तब उसकी भूमिका मे मैंने आर्य समाज के विकास और विस्तृत कार्यक्षेत्र का परिचय दिया था। उसी के प्रारम्भ मे बताया गया है कि संसार मे आर्य समाज की संख्या हजारों में है। आर्य समाज द्वारा संचालित स्कूल, कालेज, विद्यालय गुरुकुल और अनाथालय सारे भारत मे व्याप्त हैं। आर्य समाज ने मूर्तिपूजा का खण्डन किया है और अन्धविश्वासों को हटाने में बहुत सशक्त कार्य किया है। छुआछूत के भावो को मिटाया है और स्त्री शिक्षा का प्रचलन करके नारी को समाज में यथोचित स्थान दिया है। इसके साथ साथ विधवा विवाह का प्रचार करके भारतीय समाज को सुदृढ़ बनाया है। इन बातो को पढ़कर यूरोप की विदुषी मादम मौस और प्रियसन महोदय को विश्वास नही हुआ था। उन्होने कहा था—पहले हमने स्वामी विवेकानन्द और राजा राममोहनराय आदि गुरुओ और सुधारको के नाम सुने हैं, किन्तु स्वामी दयानन्द और आर्य समाज का नाम नहीं सुना है।

अतः इसी समय मैंने मन ही मन आर्य समाज का वृहद इतिहास लिखने का फैसला कर लिया था। किन्तु स्वदेश लौट कर मैंने विविध विषयो पर उच्चकोटि के अनेक ग्रन्थ लिखने मे अपने समय का सदुपयोग किया और 'आर्य समाज का वृहद् इतिहास' के लेखन का कार्य १९८० से पहले शुरू नहीं किया जा सका। बात यह हुई कि १९७९ मे मैं सख्त बीमार पड़ गया और लम्बे अर्से तक अस्पताल मे पड़े पड़े मैंने ईश्वर से प्रार्थना की कि यदि मुझे इस बार स्वास्थ्य लाभ हो जाय तो शेष जीवन आर्य समाज का इतिहास लिखने और प्रकाशित करने मे लगाऊं था। ईश्वर ने मेरी प्रार्थना सुन ली। मुझे स्वास्थ्य लाभ हुआ और तभी से तन-मन और धन से मैं इस महान कार्य मे जुट गया हू। अब तक तीन खण्ड तैयार हो चुके हैं और भविष्य में प्रति वर्ष एक-एक खण्ड ७१० पृष्ठो का पूरा करने का सकल्प कर चुका हु। यह सात खण्डो में पूरा होगा।

प्रश्न—'आर्य समाज का वृहद इतिहास' ग्रन्थ के जरिए आप विश्व को क्या सन्देश देना चाहते हैं ? मारीशस के आर्य समाजियो से आप क्या अपेक्षा करते है ?

उत्तर—'आर्य समाजियो का वृहद इतिहास' के जरिए मैं यही सन्देश दुनिया को देना चाहता हु कि ऋषि दयानन्द के बताए मार्ग पर चलकर, अर्थात प्राचीन वेद विहित आर्य धर्म का पालन करके ही मानव उन्नति के के पथ पर अग्रसर हो सकता है। मनुष्य को सांसारिकता का पालन करना चाहिये, किन्तु उसमे उसे लिप्त नहीं होना चाहिए। मानव कल्याण ही मानव जीवन का चरम आदर्श है। इस इतिहास ग्रन्थ के द्वारा महर्षि दया-नन्द का सन्देश समस्त मानव समाज तक पहुचाने का प्रयत्न किया गया है। आर्य समाज की शिक्षा, राजनीति, साहित्य, संस्कृति आदि महान उप-लब्धियो को इस ग्रन्थ मे उजागर किया गया है। मेरी इस योजना के द्वारा अब विश्व के समस्त मानवो को आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के उज्ज्-वल स्वरूप से परिचित होने का सुनहरा अवसर मिलेगा।

१९८३ मे महर्षि दयानन्द के निर्वाण शताब्दी के अवसर पर अजमेर मे हुए भव्य समारोह में भाग लेने के लिए सैंकड़ो की संख्या में मारीशस-वासी अजमेर पधारे थे। उसी समय उन्होने आर्य समाज का वृहद इतिहास के प्रत्येक खण्ड की ५०० प्रतियां खरीदने का वचन दिया था। जैसे-जैसे प्रत्येक खण्ड उपलब्ध होता जायेगा, वैसे वैसे उनकी ५०० प्रतियां मारीशस के पाठको के लिए मगाने का समुचित प्रबन्ध हो, ऐसी मेरी मनोकामना है। इस कार्य मे मैं आपके सहयोग की आशा करता हु।

पुनश्च—श्रीमती डा० सत्यकेतु वेदालंकार २० मई १९८६ के पत्र (मेरे नाम) मे लिखती हैं—"डा० साहब तो इस महान कार्य को करके चले गए। सात सात सौ पृष्ठों के सात खण्ड, कुल ५००० पृष्ठ उन्होंने आठ वर्ष के अल्प समय मे अकेले ही यह विशाल कार्य कर दिखाया है। मैं चाहती हू कि इस पुस्तक का प्रचार प्रसार हो और यह घ घर के कोने कोने मे पहुंचे मारीशस में भी इसे उचित स्थान मिलना चाहिये। इस विषय में आपका सहयोग चाहती। योग्य सेवा से अवगत करें।

भारतीय नागरिक व जाति

(पृष्ठ ३ का शेष)

करने के लिए, लोगो मे सौमनस्य-मित्रता की भावना भरने के लिए, देश को शक्तिशाली बनाने के लिए भारत सरकार को चाहिए कि वह मडल आयोग की सिफारिशों को लागू करने के अपने ७ अगस्त १९९० के आदेश को वापिस ले ले। और किसी विशेष कल्याण के लिए नही बल्कि भारत के प्रत्येक नागरिक के कल्याण के लिए कार्य करें। सर्वेभवन्तु सुखिन' का लक्ष्य बनायें। सभी भारत वासियो को शिक्षा के पूर्ण अवसर एव उत्तम साधन उपलब्ध कराए। शिक्षित नागरिक सामाजिक रूप से सम्मानित नागरिक बन जायेगा। तब भारत मे "आरक्षण तन्त्र शासन प्रणाली' के स्थान पर हमारे सविधान मे उल्लिखित "प्रजातन्त्र शासन प्रणाली से देश मजबूत होगा।

आरक्षण कोई मानव के कल्याण के लिए उत्तम व्यवस्था नही है। आरक्षण एक अपमान है। पिछड़ापन बढाने वाला है। आरक्षण हो तो वह अधिकार प्राप्ति के लिये नही, बल्कि कर्त्तव्य के लिये होना चाहिए। कर्तव्य निष्ठ व्यक्ति कभी पिछडा नहीं रह सकता। कर्तव्य निष्ठ व्यक्ति समाज का शोषण कभी भी सहन नही कर सकता। वह कभी साम्प्रदायिक नही हो सकता।

जातिवाद की सोच समाप्त करने के लिये जाति व धर्म के नाम पर आरक्षण देने की नीति को सदा सदा के लिये तिलान्जलि दे देनी चाहिए। पिछडी जाति नही बल्कि पिछडा व्यक्ति होता है। गरीब व अमीर समस्त वर्ग नही होता बल्कि व्यक्ति होता है। स्पष्ट है कि व्यक्ति के चरित्र का निर्माण करना सरकार का सबसे बडा कार्य है। उसके लिये शिक्षा केन्द्रो की स्थापना करना, उद्योग स्थापित करने के लिये आर्थिक सहयोग देना, किसानो को सुविधा प्रदान करना, सब युवको को रोजगार देना व उन्हे स्वरोजगार के लिये प्रेरित करना, छात्रो की प्रतिभा को स्फूटित करने के लिये अग्रेजी भाषा की अनिवार्यता समाप्त कर क्षेत्रीय भाषाओ को शिक्षा व परीक्षा का माध्यम बनाना आदि कार्यो को करना सरकार का परम कर्तव्य है। वोट की राजनीति छोड कर, जातिवाद की अन्धी गली मे न जाकर भारत के नागरिक को कल्याणार्थ समर्पित वर्तमान सरकार को अपना समय पूरा होने तक पूर्ण जनसमर्थन मिलता रहेगा।

अग्निवेश का कारनामा

(पृष्ठ ६ का शेष)

उमरानगल जी का शुक्रिया अदा करके (Wellpresfed) चोगे में सजे हुए स्वामी अग्निवेश की अत्यन्त प्रशंसा करते हुए सत्यव्रत सामवेदी को राष्ट्रीय समस्याओ पर बोलने के लिए बुला बैठे। शायद सामवेदी जी का भाषण ही सारे भाषणों में ऐसा था जो चाटुकारिता से परे था अगले दिन स्वामी दीक्षानन्द जी भी स्पष्टता पूर्वक बोले)।

श्री सामवेदी जी ने साम्प्रदायिकता का विरोध करते हुए कहा कि आर्यसमाज साम्प्रदायिकता विरोधी सगठन था जो अब स्वयं एक सम्प्रदाय बन चुका है। किन्तु उन्होने हिन्दूवाद को नही कोसा प्रत्युत देश मे फैले साम्प्रदायवाद के मूल कारणों की खुली विवेचना की। उन्होने श्री सच्चर जी की आलोचना करते हुए कहा—'हम वेद को प्रमाण मानते हैं और उसका सन्देश विश्वभर में फैलाना चाहते हैं ओर मुसलमान कुरआन् के बारे में यही कहते हैं, इस विवाद का निर्णय कैसे हो ? कुरआन को अल्लाह का पैगाम कैसे माना जाये। मुस्लिम आक्रान्ताओ और उपद्रवियो ने लूटमार, कत्ल और बलात्कार कुरआन के आधार पर क्यो किए? जहा तक हिन्दुस्तान के मुस्लिमो की देशभक्ति का प्रश्न है तो बिहार के गाव का नाम पाकिस्तान क्यो रखा जाता है ? कश्मीर मे पाकिस्तान-समर्थक नारे क्यो लगाये जाते हैं ? भारत के प्रदेशों मे ही आतकवादी महाभारत-रामायण को दूरदर्शन पर देखने पर प्रतिबन्ध कैसे लगा लेते है ? हम प्रत्येक प्रकार की साम्प्रदायिकता के विरुद्ध है।"

स्वामी अग्निवेश के सिद्धान्त विरुद्ध शुद्धि-आन्दोलन की वकालत करते हुए उन्होने जोरदार शब्दो मे कहा, साम्प्रदायिकता खत्म करने का तरीका है कि धर्मपरिवर्तन किया जाये, शुद्धि की जाए। महाराजा रणजीतसिंह के शासनकाल में कश्मीरी पण्डितो ने शुद्धि का विरोध किया था, उसी का खामियाजा वे भुगत रहे हैं। आज कश्मीर मे ताण्डव हो रहा है।"

साम्प्रदायिकता को बढावा देने वाले तुष्टीकरण में विश्वास रखने वाले स्व० चौधरी चरणसिंह के बारे में उन्होने कहा, "कैसे आर्यसमाजी थे चौ० चरणसिह जिन्होने उर्दू को उत्तरप्रदेश की द्वितीय राजभाषा बनवा दिया था ?'

सत्यव्रत जी के भाषण का नतीजा यह निकला कि उन्हे फिर मच पर नजर नही आने दिया गया। किन्तु श्रोताओ की तालियो की गडगडाहट बता रही थी कि लोग उनसे सहमत हैं अग्निवेश से नही। एक कार्यकर्त्ता प्रतिनिधि की टिप्पणी थी "सामवेदी जी के भाषण से पूर्व तो चापलूसी हो रही थी।" (क्रमश)

दयानन्द सूक्ति सप्तशती

लेखक—श्री शिवकुमार मिश्र

प्रकाशक—देववाणी परिषद दिल्ली, ६-वाणी विहार, नई दिल्ली-५९

मूल्य—१५) रुपये

संस्कृत साहित्य की "सप्तशती-प्रणयन-परम्परा" मे उक्त कृति नवीनतम रचना है। इस रचना में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द जी के सिद्धान्तो व विचारो को संस्कृत भाषा मे पद्यबद्ध किया गया है। स्वामी दयानन्द जी ने जीवन का समाज का, धर्म का, राष्ट्र का व राजनीति का कोई अग ऐसा नही छोड़ा, जिस पर अपने सुलझे हुए, स्वस्थ व उदात्त विचार प्रकट न किये हो। जीव, ईश्वर वेदमहिमा, वेदाध्ययन अधिकार, सृष्टि निर्माण प्रयोजन मूर्तिपूजा, बाल-विवाह पुनर्विवाह योग शिक्षा, वर्णाश्रम व्यवस्था, श्रेष्ठ (आर्य) जीवन, रूढि विरोध, आर्ष ग्रन्थ, सुख प्राप्ति आदि विषयो पर विचार प्रकट किये गये महर्षि के विचारो को संस्कृत सूक्तियो का रूप दिया गया है।

इस 'सप्तसती' के माध्यम से महर्षि दयानन्द के समस्त विचारो व सिद्धान्तो का ज्ञान भली प्रकार करा दिये जाने का सफल प्रयास किया गया है। संक्षेप मे हम इसे महर्षि दयानन्द रचित सभी ग्रन्थो का 'एकत्र निचोड़' कह सकते है।

सूक्ति—'सप्तसती' की भाषा संस्कृत है कही कही काव्य दोष व मुद्रण त्रुटिया भी दृष्टिगत होती है नाम से भी प्रथम प्रणीत 'दयानन्द रचित सात सौ सूक्तियो' की होती है, दयानन्द के सिद्धान्त प्रतिपादित की प्रतीति 'सूक्ति सप्तशती' के कुछ अध्ययन के पश्चात तथापि भाषा मे सुबोधता, सरलता व प्रवाहमयता होने के कारण पुस्तक रोचक, पठनीय व संग्रहणीय है। लेखक का प्रयास स्तुत्य है।

नागलराया दिल्ली में यजुर्वेद पारायण यज्ञ

दिनांक १०-९-९० से १६-९-९० तक यजुर्वेदपारायण यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसके ब्रह्मा श्री प्रणव प्रकाश शास्त्री थे। प्रतिदिन यज्ञोपरान्त श्री नन्दलाल निर्भय सिद्धान्त शास्त्री ग्राम बहीन जिला फरीदाबाद हरियाणा के मधुर भजनोपदेशो का सैंकड़ो नर-नारियो ने रसास्वादन किया। कई युवको ने मद्य, मांस त्यागने का व्रत लिया।

दिनांक १९-९-९० को राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता श्री रघुराज शास्त्री ने की।

इस सम्मेलन मे श्रीमती सावित्रीदेवी आर्य पालम कालोनी दिल्ली, श्री नन्दलाल निर्भय, श्री प्रणव प्रकाश शास्त्री गीता कालोनी दिल्ली ने राष्ट्र की वर्तमान दुर्दशा पर प्रकाश डालते हुए उपस्थित जन समूह से वैदिक पथ पर चलने की अपील की।

एक पारित प्रस्ताव मे जातिगत आधार पर देश में आरक्षण लागू करने पर भारत की जनता दल सरकारी निन्दा की गई।

—महाशय हरिकिशन आर्य
व्यवस्थापक आर्य समाज नागलराया नई दिल्ली-४५

प्रस्ताव पारित

प्रान्तीय आर्य महिला सभा द्वारा आयोजित वेद सम्मेलन मे महिला सभा की बहिने मण्डल आयोग की सिफारिशो को लागू करने की घोषणा का बड़े शब्दो में भर्त्सना करती है। प्रस्ताव मे जातिवाद आधार पर आरक्षण को प्रधान मन्त्री श्री वी० पी० सिंह द्वारा उठाया गया यह कदम शुद्ध राजनैतिक स्वार्थों की चर्म सीमा है, इससे देश मे गृह युद्ध का सा माहौल बन गया है।

प्रान्तीय आर्य महिला सभा की यह दृढ़ और उपयुक्त माग है कि आरक्षण जातिवाद पर आधारित न होकर आर्थिक आधार पर ही होना चाहिए।

—कृष्णा चड्ढा, सभा मन्त्रिणी

आर्य समाज की गतिविधियां

शाहदरा में आर्य वीर प्रदर्शन

जिस प्रकार (यमुनापार) आर्य वीर दल शहादपुरी प्रति रविवार को अनेक स्थानो पर जाकर सन्ध्या-यज्ञ व प्रदर्शन करता रहा है उसी प्रकार दिनांक २३-९-१९९० ई० दिन रविवार को ५१ आर्य वीर साइकिल यात्रा करके अपने सरक्षक रतिराम शास्त्री एव रवीन्द्र कुमार आर्य के साथ (अनाज मण्डी) आर्य समाज शाहदरा पहुचे। वहा पर प्रात चल रहे यज्ञ मे उपस्थित हुए। यज्ञ के उपरान्त ब्र० आजाद सुरेन्द्रसिह आर्य ने अपने भजन सुनाए तथा आर्य वीरो का प्रदर्शन हुआ। श्रीमान प्रधान जी व मन्त्री जी के साथ समस्त आर्य भद्र पुरुषों ने मुक्त कण्ठ से सराहना की व श्रद्धेया माता जी श्रीमती ईश्वरदेवी धवन जी ने इस कार्यक्रम की अध्यक्षता की तथा सभी ने समस्त आर्य वीरो का अभिनन्दन कर आशीर्वाद दिया।

—ब्र० आजाद सुरेन्द्रसिह आर्य
वरिष्ठ व्यायाम शिक्षक सा० आ० वी० दल

विविध समाचार

दण्डी विरजानन्द सस्कृत महाविद्यालय करतारपुर का वार्षिक समारोह दिनांक १५-१६ सितम्बर को मनाया गया। इस अवसर पर सर्वश्री वीरेन्द्र जी, डा० भारतीय तथा महात्मा आर्य भिक्षुजी के प्रवचन हुए। दण्डी जी को श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए डा० भारतीय ने गुरु विरजानन्द के जीवन एव इतिहास का विस्तृत परिचय दिया।

११ सितम्बर को डा० प्रद्युम्न कुमार स्मारक भाषण देते हुए आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली मे डा० भवानीलाल भारतीय ने आर्य समाज की वैदिक अध्ययन पर विस्तार पूर्वक प्रकाश डाला। डा० रामकरण शर्मा ने मुख्य अतिथि के रूप मे बोलते हुए महर्षि दयानन्द द्वारा वैदिक चर्चा के पुनरुद्धार की प्रशसा की। अध्यक्ष पद प० मनोहर विद्यालकार ने ग्रहण किया।

आर्यसमाज नया नगल (रोपड) मे वेद प्रचार सप्ताह डा० भवानीलाल भारतीय के प्रवचनों सहित मनाया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय फर्टि-लाइजर्स के अधिकारियो के गृहो पर यज्ञ तथा पारिवारिक सत्सग के कार्यक्रम रक्खे गये।

श्री कृष्ण जन्म का महोत्सव चण्डीगढ की सभी समाजो की ओर से सैक्टर १६ मे आयोजित किया गया। इसकी अध्यक्षता चण्डीगढ के प्रशासक श्री वीरेश्वरराम ने की। डा० भवानीलाल भारतीय तथा प्रिंसिपल कृष्णसिह आर्य के भाषण हुए।

—सवाददाता

नामकरण संस्कार सम्पन्न

आर्य समाज सिउरा टिउनी के प्रधान की अध्यक्षता मे रामपुर निवासी श्री ओमकार व मनोर के पुत्र का नामकरण सस्कार वेदरीति से २-७ ९० को सम्पन्न हुआ बच्चे का नाम डोरीलाल आर्य रखा गया।

—मन्त्री

पी० एच० डी० से सम्मानित



दयानन्द शोध पीठ पजाब विश्वविद्यालय के शोध छात्र श्री नरसिंह चरण पण्डा को उनके महत्त्वपूर्ण तथा अग्रेजी माध्यम से लिखे गये ग्रन्थ 'Contribution of the Arya Samaj and Swami Dayanand to the Vedang Literature" (वेदाग साहित्य को आर्य समाज तथा स्वामी दयानन्द की देन) पर पजाब विश्वविद्याल ने डाक्टर आफ फिलासफी की उपाधि प्रदान की यह शोध ग्रन्थ डा० भवानीलाल भारतीय भारतीय के निर्देशन मे लिखा गया है। —सवाददाता

आर्य समाज संस्था संस्कार निर्माण करती है

श्री महर्षि दयानन्द आर्य शिक्षण समिति के द्वारा आयोजित लोकमान्य तिलक पुण्य तिथि के अवसर पर उपसचालक नगर निवेश श्री वी पी मालवीया ने कहा कि आर्य समाज सस्कार निर्माण करता है। नियमितता आदमी को सस्कारित करती है। नियमितता राष्ट्रीयता की भावना पैदा करती है।

श्री कमलाकर हट्टेकर ने कहा कि दुर्बल बल की सेवा सर्वोपरि उपकार है।

अध्यक्षता करते हुए श्रीमती विमला श्रीवास्तव ने कहा कि आज देश विदेशी ताकते देश को तोडने मे लगी हैं किन्तु आर्य समाज उनके मनसूबो को पूरा नही होने देगा। तिलक जी से हमे ज्ञान, रोशनी और दिशा मिलती हैं।

अजमेर के दयानन्द शोधपीठ को मान्यता

अजमेर। दयानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय में गत आठ वर्षों से सचालित दयानन्द शोधपीठ को अजमेर विश्वविद्यालय ने उक्त अनुसधान केन्द्र के रूप में गत वर्ष से ही मान्यता प्रदान कर दी थी। इस शोधपीठ मे वेद, सस्कृत सम्बन्धी निर्धारित विषयो मे अब एम. फिल /पी एच डी तथा विद्यावारिधी के छात्र-छात्राओ के प्रशिक्षण के लिये सुयोग्य प्राध्यापको की सुव्यवस्था कर दी गई है। साथ ही शोधार्थियो के मार्ग दर्शन के लिये एक अतिरिक्त एम० ए० एम० फिल विदुषी की शोध सहायता के रूप मे नियुक्ति भी कर दी गई है जो शोधार्थियोको धारावाहिक सस्कृत सभाषणार्थ प्रशिक्षण देगी।

आगरा में जातीय संघर्ष

(पृष्ठ २ का शेष)

बनाने का काम किया। द्वितीय विश्व महायुद्ध मे इस व्यापार व्यवसाय मे उनको काफी लाभ हुआ।

उस समय के एक अन्य छात्र बालकृष्ण ने बाद मे काशी विश्वविद्यालय के आयुर्वेद महाविद्यालय की सर्वोच्च परीक्षा उत्तीर्ण की और किसी ऊचे सरकारी पद पर सफलतापूर्वक कार्य किया। जिस काल मे जाटवो में वर्तमान चेतना नहीं आई थी भरतपुर निवासी आगरा के एक हरिजन नेता (डा० माणिकचन्द जाटव) धुआधार भाषण जाटवो की उन्नति के लिए देते थे जिससे उनमे चतना आई। हमने जातिप्रथा का कुभाव सहभोजो में उन दिनो भी देखा, जब कि सवर्णों की भांति जाटव भी भगियो को अस्पृश्य मानते थे। पर जाटवों द्वारा इस्लाम स्वीकार करने का वक्तव्य पनवाडी सघर्ष के सन्दर्भ मे श्री छत्रपति अम्बेश के नाम से पढा तो आश्चर्य हुआ। ऐसे ही राजनीतिज्ञ समय-समय पर उनके बौद्ध धर्म स्वीकार करने की शिक्षा देते हैं।

रजि० न० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (७-१०-१९९०) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U ९३
R 626/57 Licensed to post without Prepayment License No. U 93 Post in D.P.S.O on 5 10 1990

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा पटना का अधिवेशन

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा की एक महत्त्व बैठक श्री मुनीश्वरानन्द भवन, नया टोला मे १६-९-९० को श्री भूपनार शास्त्री सभा प्रधान की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई। सर्वसम्मति से १४-१ रविवार को श्री मुनीश्वरानन्द भवन, पटना में ६४ वा वार्षिक अधिवेशन तथा निर्वाचन सम्पन्न कराने का निश्चय किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के पूज्य प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती की अध्यक्षता करने के लिए प्रार्थना की गयी है।

—सर्वेन्द्र शास्त्री सहमन्त्री

तपोवन का शरद् महोत्सव १० अक्तूबर से

देहरादून, १५ सितम्बर। वैदिक साधन आश्रम, तपोवन देहरादून का ४१ वें वर्ष का शरद् महोत्सव दिनांक १० अक्तूबर से १४ अक्तूबर तक चलेगा जिसम वृहद् यज्ञ के अतिरिक्त, योग-साधना-शिविर तथा वेद-प्रवचनों का आयोजन किया जाएगा।

यज्ञ के प्रभारी श्री महात्मा दयानमुनि वानप्रस्थी होंगे, योग-साधना शिविर का निर्देशन योगधाम ज्वालापुर के सचालक श्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती रहेंगे और मुख्य प्रवचनकर्ता होंगे श्री स्वामी दयानन्द विदेह।

उल्लेखनीय है कि प्रति वर्ष अप्रैल तथा अक्तूबर मे होने वाले तपोवन के महोत्सवो म दूर-दूर से सैकड़ो श्रद्धालु जन आया करते हैं। यज्ञ की पूर्णाहुति वाले दिन तो देहरादून नगर से भी हजारो लोग उपस्थित होते हैं इसीलिए इसे अब तपोवन मेला कहा जाने लगा है।

—देवव्रत बाली, मन्त्री
वैदिक साधन आश्रम सोसाईटी तपोवन

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री विदेश यात्रा पर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री चार सप्ताह के लिए हालैंड आर्य प्रतिनिधि सभा के निमन्त्रण पर वैदिक प्रचार तथा आर्य समाज की गतिविधियों की जानकारी हेतु विदेश यात्रा पर ६ अक्तूबर १९९० को रवाना होंगे इसी दिन प्रात १०-३० पर सभा कार्यालय में एक विदाई समारोह का आयोजन किया गया।

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज कुन्दरकी (मुरादाबाद) का वार्षिकोत्सव (रविवार, सोमवार मगलवार) ७ ८ व ९ अक्तूबर १९९० को होना निश्चित हुआ है।

आर्य वीर दल शिक्षकों के लिए विशेष सूचना

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के सभी शिक्षको को डा० देवव्रत आचार्य की आज्ञानुसार सूचित किया जाता है कि २४ दिसम्बर हेतु सभी शिक्षक अपनी स्वीकृति कार्यालय पलवी मेरठ उ० प्र० को शीघ्र भेजे।

— कार्यालय सचिव

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी शताब्दी समारोह स्थगित

अलीगढ मे प० गुरुदत्त विद्यार्थी का शताब्दी समारोह जो ६-७ अक्तूबर १९९० को होना था वह वर्तमान मे अशान्त वातावरण के कारण स्थगित हो गया।

—किशनलाल प्रधान

दीपावली पर वैदिक ग्रन्थों पर विशेष छूट

हिन्दी पुस्तकें—स्वामी विद्यानन्द सरस्वतीकृत

१—ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका की विस्तृत व्याख्या भूमिका भास्कर भाग १, २	(११०० पृष्ठ)	३००)
२—वेदार्थ भूमिका		२५)
३—आर्यों का आदिदेश और उनकी सभ्यता		६०)
४—वैदिक यज्ञो का स्वरूप		१०)
५—वैदिक पीयूषधारा	(देवेन्द्र कुमार कपूर)	१५)
		४१०)

ENGLISH BOOKS BY SW VIDYANAND SARASWATI

1	The Brahma Sutra	(611 Pages) H B	150-00
2	Vedicconcet of God (By Devendra Ku. Kapoor)		30 00
3	Vedic Concept of yoga Meditation		30-00
4	Lectures on yoga meditation		45-00
5	S M Vedic Lores		15-00
			270-00

१५ नवम्बर तक ड्राफ्ट। धनादेश भेजने पर हिन्दी का पूरा सेट ४१०) रुपये की बजाय केवल २७०) (दो सौ सत्तर) में तथा अंग्रेजी का पूरा सेट २७०) की बजाय केवल १८०) (एक सौ अस्सी) में डाक व्यय सहित भेजा जायेगा।

पता —
देवेन्द्र कुमार कपूर
इण्टरनैशनल आर्यन फाउण्डेशन
१०२, कैप्टन विला, माउण्ट मेरी रोड
बान्द्रा (पश्चिम), बम्बई-५०

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

द्वारा प्रकाशित साहित्य

आचार्य बृहस्पति शास्त्री का धर्म अभिनव (लेखक—अमर स्वामी सरस्वती)	[illegible]
महर्षि का व्यवहार	[illegible]
चौदहवीं का चांद हिन्दी	[illegible]
चौदहवीं का चांद उर्दू	[illegible]
[illegible] —	[illegible]
दयानन्द और विवेकानन्द	[illegible]
वदिक युग आदि मानव	[illegible]
न्याय दर्शन (ले०—स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती)	[illegible]
सांख्य दर्शन	[illegible]
वैशेषिक दर्शन	[illegible]
वेद रहस्य (ले०—कर्मनारायण कपूर)	[illegible]
वैदिक सनातन धर्म	[illegible]
आत्मा का स्वरूप	[illegible]
मुक्ति [illegible]	[illegible]
धर्म के नाम पर राजनैतिक षड्यन्त्र	[illegible]
कन्या कुमारी कोष की ओर	[illegible]
आर्य समाज	[illegible]

प्राप्ति स्थान—
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नई दिल्ली-२

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक

सार्वदेशिक साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख्य पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१ दयानन्दाब्द १६६ दूरभाष । ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष २६ अंक ४०] कार्तिक कृ० ११ सं० २०४७ १४ अक्तूबर १९९०

इमाम की धमकी पर 'चुप्पी' से जनता पार्टी चकित

नई दिल्ली ८ अक्टूबर जामा मस्जिद के शाही इमाम के नेतृत्व में मुसलमान रूढ़िवादियो द्वारा दी गई इस धमकी पर कि वे भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी की रथ यात्रा को आगे नही बढ़ने देंगे, प्रधानमन्त्री विश्वनाथ प्रतापसिंह और गृह-मन्त्री मुफ्ती मोहम्मद सईद की चुप्पी पर भाजपा स्तब्ध और आश्चर्य चकित है।

दूसरी तरफ केन्द्र सरकार के प्रवक्ता और उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री मुलायमसिंह यादव अयोध्या में बड़े ढ़ाचे को मस्जिद बताकर बाबरी मस्जिद संघर्ष समिति के पक्ष को मजबूत कर रहे हैं तथा इस प्रकार साम्प्रदायिक तनाव के बीज बो रहे हैं । दो पक्षो मे से किसी एक का इस ढग से समर्थन करने का अर्थ है अदालत को प्रभावित करना और ऐसा करना हर दृष्टि से अनुचित है।

श्री कमलापति त्रिपाठी का पार्थिव शरीर वैदिक रीति से अग्नि को समर्पित

वाराणसी ९ अक्टूबर । वयोवृद्ध स्वतन्त्रता सेनानी श्री कमलापति त्रिपाठी का पार्थिव शरीर आज वाराणसी में मणिकर्णिका घाट पर वैदिक मन्त्रोच्चारण के साथ अग्नि को समर्पित कर दिया गया।

अन्तिम सस्कार में देश के प्रमुख नेताओ, साहित्यकारो एव गणमान्य नागरिको ने इस महान् देशभक्त और भारतीय राजनीति के वटवृक्ष को अन्तिम विदाई दी । उत्तर प्रदेश सरकार ने इस अवसर पर तीन दिन के शोक की घोषणा की है।

श्री त्रिपाठी के शव को फूलो से सजी एक गाडी मे रखा गया जिसमें उनके बड़े पुत्र लोकपति त्रिपाठी तथा अन्य पुत्रो के साथ कांग्रेस अध्यक्ष श्री राजीव गांधी भी सवार थे । प्रधानमन्त्री श्री वी०पी० सिंह, उपराष्ट्रपति डा० शकरदयाल शर्मा के अतिरिक्त मन्त्रिमण्डल के कई सदस्यों ने भी श्री त्रिपाठी के शव पर पुष्पांजलि अर्पित की।

भारत सरकार की आत्मघाती योजना ५०० करोड़ का मांस प्रतिवर्ष निर्यात होगा

महात्मा गांधी के अहिंसा सिद्धान्त की दुहाई देने वाली भारत सरकार विदेशी मुद्रा कमाने के लोभ मे आठवी पचवर्षीय योजना से देश के पशुधन को समाप्त करने के लिए कटिबद्ध है। सरकार ने निम्नलिखित कत्लखानों के निर्माण की योजना बनाई है जिनसे वे १९८९-९० में निर्यात किए गए ११० करोड़ रुपये मूल्य के मास के स्थान पर ५०० करोड रुपयो का मास प्रतिवर्ष निर्यात कर सके।

(क) कत्लखानो का निर्माण

१. श्रीनगर २. माझीतर (सिक्कम), ३ कावरनकान हुब्ली (बगलोर), ४. हैदराबाद, ५ देहली ६ मंगलगिरि (गटुर) ७ विशाखापट्टनम (आ०प्र०) ८ रुद्रारम (आं०प्र०),

(ख) वर्तमान कत्लखानों में सुधार

१. इलाहाबाद, २ वाराणसी, ३ अलीगढ ४ जालन्धर ५ पुणे, ६ बजबज (बंगाल) ७ सईदापेट (मद्रास), ८ पेराम्बुर (मद्रास), ९ बडी-दमन १० बड़ा दीप, ११ चण्डीगढ़

(ग) पक्षियो द्वारा नुकसान पहुँचाने के नाम पर रक्षा मन्त्रालय ने निम्न स्थानो पर कत्लखानो को लगाने की योजना बनायी है—

१. ग्वालियर, २ गोरखपुर ३ जोधपुर, ४ डबोगल ५ तेजपुर ६ चबुआ ७ सिरसा, ८ श्रीनगर ९ जम्म १० गोलाइकुडा, ११ हैदराबाद, त्रिवेन्द्रम, १३ बैंग्लोर १४ पटना, १५ नागपुर, १६ कलकत्ता, १७ मद्रास १८ बम्बई, १९ देहली, २० हिन्डन, २१ आगरा, २२ अम्बाला

देश के प्रबुद्ध व्यक्तियों, सस्थाओ एव जनता से अपील एव आग्रह है कि वे सरकार की इस आत्मघाती नीतियो का डटकर विरोध करे जिससे देश का पशुधन विदेशी मुद्रा के लोभ मे समाप्त नही हो जाये एव हम अपनी भावी पीढ़ी के लिए अन्धकारमय भविष्य न छोड जायें।

शाकाहार के लिए राष्ट्रव्यापी मुहिम चलाने का आह्वान

८ अक्टूबर । बम्बई महानगर के महापौर श्री छगन भुजबल ने एक समारोह मे जीव दया व शाकाहार के महत्व की चर्चा करते हुए कहा कि आज नही तो कल हमे शाकाहार के लिए राष्ट्रव्यापी मुहिम चलाने को बाध्य होना ही पड़ेगा। उन्होने कहा कि पाश्चात्य देशो मे मांसाहार भोजन के खिलाफ एक ऐसी लहर चल पडी है कि सभी देश शाकाहारी भोजन पर जोर दे रहे हैं।

सम्पादक—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

आरक्षण या सर्वनाश करण

सरकार ने वोट बटोरने व कुर्सी कायम रखने की राजनीति के लिए आरक्षण का सहारा लिया है। महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने जातिवाद का खण्डन किया है। कर्म करने को प्राथमिकता दी है। पिछड़े वर्ग के लोग अपनी योग्यता से आगे बढ़े हैं। वे आर्य जगत मे पुरोहितो, ब्राह्मणो का कार्य कर रहे हैं। इनको चारो वेदो का ज्ञान है। वे अच्छे लेखक व कवि भी हैं। बहुत अच्छी पुस्तको का प्रकाशन किया है।

वर्तमान सरकार ने हिन्दू (आर्य) जाति मे फूट डाल दी है। सरकार का यह घृणित कार्य सरकार को ले डूबेगा। निकट भविष्य मे सरकार को हानि पहुचेगी जिसकी पूर्ती नही होगी।

अंग्रेज भारत पर बहुत वर्षो तक राज कर गए लेकिन वे हिन्दुओ को आपस मे लडा नही सके। मुसलमानो को हिन्दुओ से लडा दिया और देश का बटवारा करा दिया। इस सरकार को बने केवल ९ मास हुए हैं। प्रधान मन्त्री श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह और इनके सहयोगी मन्त्रियो ने हिन्दुओ को हिन्दुओ से इस थोड़े समयमे लडा दिया हो हररोज लडके और लडकियां आत्मदाह कर रहे हैं लेकिन सरकार अपनी हठधर्मी पर अड़ी हुई है। इस सरकार के मन्त्री लोगो को चिढा रहे हैं। देशकी करोडो रुपये की सम्पत्ति नष्ट हो रही है। शिक्षा की हानि हो रही है। यातायात की समस्या है, लोग घरो से बाहर निकल कर अपने सगे सम्बन्धियो को खुशी-गमी मे पहुच नही पाते। प्राईवेट बसें बहुत कम चल रही हैं वे लोग मनमाने पैसे वसूल कर रहे हैं। सरकार यह सारा तमाशा देख रही है। यह देश का सर्वनाश करण हो रहा है या आरक्षण हो रहा रहा है।

यह सरकार हिन्दुओ के वोट से सत्ता मे आई है और हिन्दुओ का नाश कर रही है।

राम जन्म भूमि के मुद्दे पर सरकार उच्चतम न्यायालय की दोहाई देती है कि अदालत का निर्णय आने तक मन्दिर का निर्माण न हो। दूसरी ओर आरक्षण के मुद्दे पर उच्चतम न्यायालय के निर्णय की प्रतीक्षा नही करती यह दोरुखी नीति क्यो। सरकार ने श्री देवीलाल की ९-८-९० की रैली को विफल बनाने के लिए जल्दबाजी से ७-८-९० को जातीय आरक्षण की घोषणा कर दी। राजा साहब ने अपनी व्यक्तिगत विजय और आगामी चुनाव की राजनीति के लिए यह मार्ग अपनाया। आरक्षण लागू करने से जातिवाद को बढ़ावा मिलेगा, देश का ह्रास होगा हिन्दुओ मे आपस मे शत्रुता बढ़ेगी। इस सरकार ने अपने सहयोगी राजनैतिक दलो से भी इस पर परामर्श करने की आवश्यकता नही समझी, साराश मे देश की मालिक बन बैठी। यह एक स्वार्थ सिद्धी है।

आर्य समाज जातिवाद आरक्षण के विरुद्ध है। आर्थिक आधार पर आरक्षण में विश्वास रखता है और सबके लिए समान अधिकार का समर्थक है।

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के मासिक अधिवेशन मे दक्षिण दिल्ली की समस्त ५० आर्य समाजे मण्डल आयोग की सिफारिशो को लागू करने की सरकार को घोषणा की कड़े शब्दों मे भर्त्सना करती हैं और प्रधानमन्त्री श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह द्वारा लिया गया यह निर्णय सरासर गलत है। यह गृहयुद्ध को शुरू करने की योजना है। सरकार से प्रार्थना है कि वह मण्डल आयोग की शिफारिशे रद्द कर दे।

—रामसरनदास आर्य, महामन्त्री
दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल नई दिल्ली

आर्यसमाज और आरक्षण?

आरक्षण के कारण भारत मे धधक रही भीषण ज्वाला।
तोड़ फोड़ हड़तालो ने विध्वंस देश में कर डाला।।
रेल, बसे, मोटर कारें आगे बढ़ने नहीं पाती हैं।
पत्थर वर्षा होती उन पर या आग लगा दी जाती है।।
इसलिए राज्य सरकारो ने विद्यालय आदि बन्द करे।
लाठी व गोली काण्डों से कितने ही छात्र व युवक मरे।।
अविवेकपूर्ण आरक्षण से यह दु:खद दशा हो पाई है।
सम्प्रदायवाद व जातिवाद की भीषण आग जलाई है।।
कश्मीर, असम, पंजाब और लंका मे आग तो रही धधक।
यह बुझ न सकी आरक्षण की गई भीषण ज्वाला और भड़क।।
पथ भ्रष्ट राजनेताओ के झगड़ो से जनता परेशान।
छिड़ रहा परस्पर युद्ध यहा महाभारत जैसा ही महान्।।
जाति आधार पे लड़ने को दुर्योधन बन गये पासवान।
धृतराष्ट्र बने हैं वी पी. सिंह इस भारत के मन्त्री प्रधान।।
शकुनि की नीति चला रहे श्री ताऊ जी नेता किसान।
कौरव दल में है घिरा हुआ अभिमन्यु रूपी हिन्दुस्तान।।
दुःखी द्रौपदी रूपी भारत कृष्ण-कृष्ण पुकार रही।
यह दशा देख जो मौन उन्हे वह बार-बार धिक्कार रही।।
जाति धर्म के नाम पर क्या फिर से भारत को काटोगे?
यह तो अनेक हैं फिर इसको कितने टुकड़ों मे बांटोगे?
इस भांति देश विभाजन के सब ही प्रबन्ध हैं कर डाले।
अपनी सरकार से अपने देश रक्षा के पड़ गये हैं लाले।।
तज आर्थिक आधार जाति आधार पे होगा आरक्षण।
तो इसके कारण हो सकता है भारत का फिर से विघटन।।
यह आरक्षण की राजनीति है केवल वोटों के कारण।
सत्ता न हाथ से छिन जावे, इस देश का चाहे हो विघटन।।
आरक्षण के कारण अयोग्य ऊंचे पद तक पा जाते हैं।
योग्य युवक सेवा के लिए दर-दर की ठोकर खाते हैं।।
यह सहन नही होगा युवको का जीवन घाती आरक्षण।
प्रत्येक क्षेत्र मे युवको का योग्यता अनुसार होवे चयन।।
ऋषि दयानन्द ने जन्म-जातिगत सब अधिकार मिटाया है।
गुण-कर्म-योग्यता के बल पर ही अधिकार बताया है।।
सत्यार्थ प्रकाश मे लिखा है कि कोई भी हो विद्यार्थी जन।
सबको समान सुविधाए हो चाहे धनवान हो या निर्धन।।
"भास्कर" इस ही सिद्धान्त से भारत का जन-जन उन्नत होगा।
गुण-कर्म-योग्यता के कारण ही बलशाली भारत होगा।।

—पं. भगवती प्रसाद

वैदिक यति मंडल का सर्वसम्मत प्रस्ताव

वैदिक यतिमण्डल की बैठक २३ ९ ९ को स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में गुरुकुल गौतम नगर, नई दिल्ली मे सम्पन्न हुई। जिसमे पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती, स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती तथा अन्य अनेक सन्यासी, विद्वान व वानप्रस्थी उपस्थित थे।

यतिमण्डल द्वारा प्रो० वेदव्यास के विरुद्ध सर्वसम्मति से निम्न प्रस्ताव पारित हुआ

वैदिक यतिमण्डल की विशेष बैठक मे आर्य प्रादेशिक सभा तथा डी० ए० वी० कालिज मैनेजिंग कमेटी के प्रधान प्रो० वेदव्यास जी को स्वामी विद्यानन्द जी द्वारा ८ जुलाई १९९० को रजिस्टी द्वारा भेजे गए पत्र पर विचार हुआ। इस पत्र मे स्वामी विद्यानन्द जी ने प्रो० वेदव्यास जी के वेद, ऋषि दयानन्द तथा आर्य समाज विरोधी मन्तव्यो का उल्लेख करते हुए उनसे अनुरोध किया था कि क्योकि आपकी ऋषि दयानन्द तथा आर्यसमाज की मान्यताओ मे आस्था नही है, इसलिए आपको स्वेच्छापूर्वक आर्यसमाज का परित्याग कर देना चाहिए। प्रो० वेदव्यास जी के सन् १९३३ से १९८७ तक के लेखो के आधार पर उनकी मान्यताओ की ऋषि दयानन्द की मान्यताओ से तुलना करते हुए स्पष्ट सिद्ध किया गया था कि दोनो मे ३ व ६ का सम्बन्ध होने से प्रो०वेदव्यास जी का आर्यसमाज मे कोई स्थान नही है।

सबसे पहले सन् १९३३-३४ मे लिखी अपनी पुस्तक Ancient India मे श्री वेदव्यास जी ने ऋषि दयानन्द की वेद विषयक मान्यताओ के विरुद्ध लिखा था। यही विचार उन्होने १९५० के आसपास मोतीलाल बनारसी दास द्वारा प्रकाशित अपनी रचना 'Destruction of 'Harappa' मे दुहराए। १९७७ मे पेरिस में हुई World Conference of Sanskrit Scholars. मे और फिर १९८१ मे बनारस मे हुई विद्वतगोष्ठी में उन्होने वेद के विषय मे दयानन्द के विपरीत पाश्चात्यो की विचारधारा का प्रचार किया। यह सब १९८७ मे डी० ए० वी० द्वारा प्रकाशित Feeicitations (अभिनन्दनग्रन्थ) मे लिखे गए स्वय उन्ही के लेखो से सिद्ध है। सत्यार्थ-प्रकाश मे प्रतिपादित महात्मा हंसराज जी द्वारा प्रवर्तित शिक्षा पद्धति का परित्याग कर लार्ड मैकाले की इच्छानुसार English Medium Co-educational Public Schools खोलकर उनमे लडके-लडकिया तैयार करने लगे जो केवल देखने मे (क्योकि चेहरा बदला नही जा सकता) भारतीय रह गए हैं। अन्यथा बोलचाल, रहन-सहन, खान-पान, आचार-विचार आदि की दृष्टि से पूरे अंग्रेज या ईसाई बन गए हैं। डी. ए वी द्वारा प्रकाशित मासिक The Young world में समय-समय पर प्रकाशित लेख भी इसी प्रकार के दूषित, घृणित तथा मिथ्या एव आर्य समाज विरोधी विचार फैलाए जा रहे हैं। यह Young world' लाखो की सख्या मे छपकर घर-घर पहुचाया जाता है और यह सब प्रो० वेदव्यास जी की आखो के सामने उनके निर्देशन मे हो रहा है।

आर्य समाज मे उच्च पदस्थ किसी व्यक्ति का निरन्तर ६० वर्ष से उसी की विचारधारा के विरुद्ध खुल्लमखुल्ला प्रचार करते रहना आर्यसमाज के लिए खुली चुनौती है। आर्य समाज के पत्र-पत्रिकाओ मे एतद्विषयक लेख प्रकाशित होने के बाद वैदिक यति मण्डल के अध्यक्ष पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने जून १९८१ मे प्रो० वेदव्यास जी के नाम पत्र लिखकर इन बातो की ओर उनका ध्यान आकृष्ट किया। किन्तु श्री वेदव्यास जी ने, उसका उत्तर देना तो दूर, उसकी पावती स्वीकार करने के सामान्य शिष्टाचार का पालन करना भी आवश्यक नही समझा। आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा ने प्रो० वेदव्यास जी को अपना पक्ष सिद्ध करने के लिए शास्त्रार्थ की खुली चुनौती भी दे डाली।

बैठक मे गत एक वर्ष में प्रचार सामग्री के अतिरिक्त स्वामी विद्यानन्द जी तथा श्री रामनाथ सहगल के बीच हुए पत्र व्यवहार पर भी विचार किया गया। पत्र व्यवहार से स्पष्ट है कि श्री सहगल जी ने स्वामी जी द्वारा लिखी गई बातो मे से किसी एक का उत्तर भी देने का साहस नहीं किया। बातो ही बातो मे बातो को टालने का प्रयास करते रहे। वैदिक यति मण्डल की निश्चित सम्मति है कि ऋषि दयानन्द, आर्य समाज और वेद के विरुद्ध प्रचार करने में स्वतन्त्र नहीं है। इसलिए संसार भर के आर्य सन्यासियो वानप्रस्थियो तथा नैष्ठिक ब्रह्मचारियो से निर्मित वैदिक यतिमण्डल—

(१) प्रो० वेद व्यास को आर्य समाज और उसके द्वारा सचालित संस्थाओ में किसी भी प्रतिष्ठित पद के लिए अयोग्य घोषित करता है।

(२) आर्य जनो, आर्य समाजो, आर्य सस्थाओ प्रान्तीय सभाओ से अपील करता है कि वे प्रो० वेदव्यास जी के वेद और ऋषि दयानन्द विरोधी अभियान को समाप्त करने के लिए अपने-अपने स्तर पर अपेक्षित कार्यवाही करे जिससे आर्य समाज मे रहते किसी व्यक्ति को आर्य समाज की मान्यताओ के विरुद्ध प्रचार करने का साहस न हो।

(३) सार्वदेशिक सभा से अनुरोध करता है कि जिस प्रकार अतीत मे आर्य समाज के सिद्धातो के विरोधी प० भीमसेन शर्मा प. अखिलानन्द, स्वामी सत्यानन्द, प० विश्वबन्धु, स्वामी विद्यानन्द विदेह आदि के विरुद्ध सार्वदेशिक स्तर पर आदेश दिए गये थे, उसी प्रकार प्रो. वेदव्यास जी के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही करे।

(४) स्वामी ओमानन्द जी तथा स्वामी सुमेधानन्द जी से अनुरोध करता है कि वे सार्वदेशिक सभा को लिखें कि सभा की अगली बैठक मे इस विषय को विचारार्थ प्रस्तुत किया जाये और इसके अनुकूल वातावरण बनाने का प्रयास करें।

(५) स्वामी विद्यानन्द जी द्वारा प्रो० वेदव्यास जी को ८ जुलाई १९९० को लिखे गये पत्र को बडी सख्या मे देश भर में वितरित किया जाये।

(६) अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर समस्त सन्यासियो वानप्रस्थियो, नैष्ठिक ब्रह्मचारियो, विद्वानो व उपदेशको का एक सम्मेलन किया जाये।

स्वामी सुमेधानन्द, मन्त्री-वैदिक यति मण्डल

महर्षि दयानन्द की क्षमाशीलता

—पं० नन्दलाल निर्भय 'सिद्धांतशास्त्री'

महापुरुष अपने सद्गुणो एव उच्च आचरण की छाप ससार में छोड जाते हैं। नर-नारी उन दिव्यात्माओ का गुणगान करते रहते हैं। महान पुरुष कभी मरते नही उनके सद्गुण, सद्व्यौहार उन्हे अमर कर देते हैं। उनके जीवन चरित्र पढकर अथवा सुनकर पतित व्यक्ति भी महान बन जाते हैं।

महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज उन्ही महानपुरुषो मे से थे। वे धार्मिक और विद्वान थे। वे बाल ब्रह्मचारी तथा योगी भी थे। वे उदार हृदय, दयावान व क्षमाशील थे। वे सच्चे साधु व देशभक्त नेता थे।

ज्येष्ठवदी १३ सम्वत १९२५ की घटना है वे पाखण्ड का खण्डन करके कर्म की प्रधानता पर व्याख्यान दे रहे हैं थे। वे गगा स्नान से मोक्ष मिलने की धारणा को गलत बता रहे थे तथा पुरुषो का स्वाग करना पाप बता रहे थे। आस पास के क्षेत्र मे स्वामी जी की कीर्ति फैल रही थी। उनके व्याख्यानो को सुनने नर, नारी प्रतिदिन हजारो की सख्या में आते थे। उनका व्यक्तित्व व विद्वता सबको प्रभावित कर देती थी।

एक दिन कर्णवास के ठाकुर राव कर्ण सिंह स्वामी जी के पास आकर कहने लगे। ओ दयानन्द तू देवी देवताओ को गालिया क्यो देता है और गीता गगा की निन्दा क्यो करता है ?

महर्षि दयानन्द ने गम्भीरता पूर्वक उत्तर दिया, भोले भाई ! मैं किसी को गालिया नहीं देता और किसी की निन्दा भी नहीं करता। मैं तो सदैव सच्चाई का प्रचार करता हू। याद रखो ठाकुर साहब, गगा न्हाने से कभी किसी को मुक्ति नही मिल सकती। शुभ कर्मों के बिना कल्याण असम्भव है। यदि आप कल्याण चाहते हो तो वेद पथ पर चलना सीखो।

यह सुनकर राव कर्णसिह नाराज हो गया तथा स्वामी जी पर हमला करने को आगे बढा। महर्षि ने उसे एक हाथ से पीछे धकेल दिया। इससे वह दो बार भारी क्रोधित होकर स्वामी जी पर झपटा। वह नगी तलवार हाथ मे लिए हुए था। स्वामी दयानन्द ने उसका यह कुकृत्य देखकर शेर जैसी फुर्ती दिखाई तथा उसका तलवार वाला दाहिना हाथ पकडकर उसकी तलवार छीन ली। तलवार को धरती पर टेक कर उसके दो टुकडे कर दिये और उसे फटकार लगाते हुए कहा कि यदि शास्त्रार्थ करना है तो अपने गुरु रगाचार्य को वृन्दावन से बुलवालो और यदि युद्ध करना हो तो जयपुर या जोधपुर नरेश से जाकर भिडो। मैं सन्यासी हू तुम्हारा कोई अनिष्ठ नही करूगा। तुमने अपना धर्म छोड दिया है किन्तु मैं सन्यासी का धर्म कदापि नही छोडूगा। अगर चाहू तो एक घूसे मे तुम्हारे प्राण निकाल दू। लेकिन मैं ऐसा नही करूगा। जाओ भगवान तुम्हे सुमति प्रदान करे। कर्णसिह का मुह पीला पड गया तथा अपना सिर नीचा करके वहा से चला गया। नर-नारी महर्षि दयानन्द की जय का उद्घोष करने लगे।

एक बार महर्षि दयानन्द अनूपशहर मे व्याख्यान दे रहे थे। उनकी तर्क शैली, विद्वता पर नर-नारी मुग्ध थे। सब उनके व्याख्यान बडे श्रद्धाभाव से सुनते थे।

एक दिन एक ब्राह्मण स्वामी जी के निवास स्थान पर आया। उसने नमस्ते करके स्वामी जी का अभिवादन किया। उसके बाद स्वामी जी को एक पान भेंट किया तथा वहा से रफू चक्कर हो गया, स्वामी जी ने पान को मुख मे रख लिया, शीघ्र ही उनको पान मे विष होने का ज्ञान हो गया। वे उसी वक्त किसी को भी बिना बताये गगा के किनारे चले गए। उन्होंने वहा जाकर उस विष को न्यौली क्रिया द्वारा पेट से बाहर निकाल दिया। इस बात की चर्चा सब जगह फैल गई।

सैयद मोहम्द तहसीलदार महर्षि दयानन्द जी महाराज का भक्त था। उसने यह बात सुनी तो बहुत नाराज हुआ। उसने उस पाखण्डी विष देने वाले व्यक्ति का पता लगा लिया तथा उसे गिरफ्तार करवा लिया। दूसरे दिन प्रात काल उस दुष्टात्मा को लेकर स्वामी जी के पास पहुचाया तथा हाथ जोडकर नमस्ते की।

स्वामी जी ने यह सब कुछ देखकर अपना मुह उनकी उनकी ओर से फेर लिया। यह देखकर सैयद मोहम्मद तहसीलदार घबराकर कहने लगा। स्वामी जी महाराज क्या मैंने कोई गलती की है ? तब महर्षि ने कहा 'हा, भारी गलती की है आपने ! इस व्यक्ति को क्यो पकड लिया आपने तहसीलदार जी ! इसे तुरन्त छोड दो। सैय्यद मोहम्मद बोलें, "स्वामी जी यह हत्यारा है इसे दंडित करना मेरा भी तो फर्ज।"

महर्षि दयानन्द ने कहा "मैं ससार को बन्धन मे डालने नही अपितु बन्धन मुक्त कराने आया हू। अरे देखो। यह पापी अपने पाप के कारण ही तो काप रहा है। इसे तुरन्त बन्धन मुक्त कर दो।" सैय्यद मोहम्द ने उसे तुरन्त आजाद कर दिया। वह स्वामी जी का गुणगान करता हुआ वहा से चला गया। ऐसे क्षमाशील थे महर्षि दयानन्द।

यदि आज ससार उनके बताए हुए वेदपथ पर अग्रसर हो जाए तो विश्व का कल्याण हो जाए। आज जो आपसी कलह नाना प्रकार के मत-मतान्तर एव पाखण्ड पनप रहे हैं सबका खात्मा हो जाये। इस समय चारो ओर दु.ख का साम्राज्य है वह समाप्त होकर सुख की वर्षा जगत मे होने लगे। परमात्मा सबको सुबुद्धि प्रदान करे।

वैदिक पथ पर चलें, चलायें। सकल विश्व को स्वर्ग बनायें ॥

मत दुनियां को बहकाओ तुम

अय कुर्सी के दीवानो अब, मत दुनिया को बहकाओ तुम।
मानव चोला, है अनमोला, मत इसको व्यर्थ गवाओ तुम ॥

वे महर्षि दयानन्द योगी, मानवता के थे दीवाने।
वेदो के थे विद्वान महा, वे देश भक्त थे मर्दाने ॥
वे राज विधर्मी हिला गए, गाकर स्वतन्त्रता के गाने ॥
निर्भीक, सत्य पथगामी थे, ऋषि ईश भक्त थे मस्ताने।

यदि भला आप चाहो अपना, ऋषि के सद्गुण अपनाओ तुम।
मानव चोला, है अनमोला मत इसको व्यर्थ गवाओ तुम ॥

इस दुनिया मे पाखण्डवाद, दिन रात रहा है बढ भारी।
अज्ञान, अविद्या की कीचड, मे फसे हुए हैं नर-नारी ॥
ईश्वर को भूल बहुत ज्यादा, है दुखी आज दुनिया सारी।
रावण के वशज पनप गए, ना रहे राम से बलधारी ॥

सत्ता के लालच मे आकर, वृथा मत पाप कमाओ तुम।
मानव चोला, है अनमोला, मत इसको व्यर्थ गवाओ तुम ॥

इस भारत की भोली जनता, ने तुम पर था विश्वास किया।
तन-मन-धन से की मदद बडी, था सुनो तुम्हारा साथ दिया।
सम्मान दिया तुमको पूरा, बदले मे कुछ भी नही लिया।
तुम धोखा देते रहे हमें, हमने था कडवा घूट पिया ॥

विश्वास घात करना छोडो, सच्चे मानव बन जाओ तुम।
मानव चोला, है अनमोला, मत इसको व्यर्थ गवाओ तुम ॥

तुम इन्द्रवेश, तुम अग्निवेश, निज नाम सार्थक कर जाओ।
वेदो के सच्चे पथिक बनो, मत इधर-उधर धक्के खाओ ॥
तुम स्वामी श्रद्धानन्द बनो, तुम वीर लाजपत बन जाओ।
भारत को जग मे चमकाओ, कुविचार तजो आगे आओ ॥

बन धर्मवीर, बन कर्मवीर, अपना कर्त्तव्य निभाओ तुम।
मानव चोला, है अनमोला मत इसको व्यर्थ गवाओ तुम ॥

—पं. नन्दलाल निर्भय, सिद्धांत शास्त्री
—ग्राम-पोस्ट बहीन जिला फरीदाबाद (हरियाणा)

प्रधानमंत्री वी०पी० सिंह ठीक भी हैं, गलत भी हैं

बिलकुल ठीक सिर्फ आर्य समाज है

(डा. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार)

प्रधान मंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह तथा उनके पुष्ट-पोषक बिल्कुल ठीक कहते हैं कि किसी मनुष्य को जाति के कारण मानवता के अधिकारो से वंचित नही किया जा सकता। अगर किसी को सदियो तक इन अधिकारो से वंचित रखा गया है तो उसका उन अधिकारो के लिये आन्दोलन करना सर्वथा उचित है। इतना ही नही कि उसका उन अधिकारो को पाने के लिये आन्दोलन करना उचित है, अपितु उसका यह मागना भी उचित है कि अब तक समाज ने उसके साथ जो अत्याचार किये हैं उनका इसे मुआवजा मिलना चाहिए। मुआवजे का अर्थ है दूसरो की अपेक्षा कुछ अधिक रियायतें। यहा तक तो श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह तथा उनके पुष्ठ पोषक ठीक हैं।

परन्तु जब प्रधानमंत्री कहते हैं कि अगर किसी पद के लिये समाज के किसी कार्य के लिये दो उम्मीदवार हो एक उस पद के लिये शिक्षा आदि की दृष्टि से योग्य हो दूसरा शिक्षा तथा संस्कृति की दृष्टि से सर्वथा अयोग्य ही नही कुछ ही अयोग्य हों, परन्तु इन छात्रो में से एक उच्च-जाति का हो, दूसरा निम्न-जाति का हो, तो निम्न जाति वाले को प्राथमिकता दी जानी चाहिये, तब श्री विश्व नाथ प्रताप सिंह गलत तथा अनुपयोगी बात कहते हैं। अगर मंडल-कमीशन ने भी यह बात कही है, तो कमीशन ने भी गलत बात कही है सही बात तो यह है कि जिससे व्यक्ति का भी भला हो समाज का भी भला हो अगर अयोग्य व्यक्ति को उसके साथ की गई ज्यादतियो के बदले के कारण सामाजिक संस्थानो में थोप दिया जायेगा तो उस व्यक्ति का निम्न जन-जाति होने के कारण तो भला हो जायेगा, परन्तु जिस समाज का वह अंश है और जिसकी सेवा के लिये वह चुना गया है उसका भट्टाढोल जायेगा। इसलिए मैं कहता हू कि प्रधानमंत्री ठीक भी हैं और गलत भी। ठीक इसलिए हैं क्योंकि जो कदम वे उठाना चाहते हैं उससे निम्न जाति के लोगो के साथ अब तक किये गये भेदभाव दूर हो जायेंगे गलत इसलिए हैं क्योंकि इस भेद-भाव की दूर करने के लिये जो रियायतें वे उन्हे देना चाहते हैं उन्हे पाने के लिये समाज के ये दो वर्ग सदा के लिये पक्के हो जायेगे,। जैसे अब तक समाज मे छूतअछूत, उच्च निम्न बने हुए है, जात-पात बनी हुई है वह सदा के लिये स्थिर होजायेगी। यह मोटी सी बात आज के राजनीतिज्ञो की समझ मे नही बैठती येजात पात को हटाने के स्थान में जात-पात को स्थिर करने मे लगे हुए हैं। समाजदो वर्गों में बाट कर उन्हे परस्पर भिड़ाने के मार्ग पर अनजाने चल पड़े हैं।

अगर मनुष्य ने मनुष्य पर जन्म के कारण भेद भाव को उत्पन्न कर दिया है तो जन्म की जाति पर प्रहार करना उचित है। यह भेद-भाव जन्म के आधार को स्थिर कर देने से दूर नही हो सकता है। जैसा हमने कहा, श्री वी० पी० सिंह ठीक भी हैं, गलत भी हैं, बिल्कुल सही दृष्टिकोण केवल आर्य समाज का है। आर्य समाज का दृष्टिकोण क्या है। आर्यसमाज का दृष्टिकोण यह है कि सारे झगडे की जड ही जात-पात है। इसे ठोकर लगाओ तब झगड़ा अपने आप मिट जायेगा, तुम तो जात पात को बढ़ावा दे रहे हो उसकी नीव इतनी पक्की कर रहे हो कि आज जो अपने को अछूत नही कहते वे भी अपने को अछूत कहने लगेंगे। उन्हे तो अधिकार चाहिए। छूत-अछूत मे क्या रखा है। यही सही दृष्टिकोण है जो आर्य-समाज का है।

मुझे आज वह दिन याद आ रहा है कि जब गुरुकुल विश्वविद्यालय काएक स्नातक जो जन्म से निम्न वर्ग का होने के कारण पार्लियामेंट का सदस्य चुना गया था, मेरे पास आकर कहने लगा कि गुरुकुल विश्व विद्यालय के वाइस चांसलर होने की हैसियत से मैं उसे सर्टीफिकेट दे दू। कि वह जन्म से निम्न-जाति का है। मैंने कहा ऐसा बेढ़ंगा सर्टीफिकेट क्यो माग रहे हो। हमने तो तुम्हे वेदादि शास्त्र पढ़ाकर ब्राह्मण बनाया है। 'तुम ब्राह्मण होकर अछूत बनाना चाहते हो?' उसने उत्तर दिया कि वह निम्न जाति के कोटा मे से लड़कर चुना गया है परन्तु प्रतिपक्षी ने अदालत में उसके विरुद्ध केस दायर कर दिया है कि आर्य समाज जन्म की जाति को नहीं मानता, इसलिये वह पार्लियामेन्ट की सदस्यता का अधिकारी नही है।

वी० पी० सिंह, और कांग्रेसभाई भी इसी रास्ते पर चल रहे हैं, सब लोग अधिकार लिप्सु हैं, सब रिजर्वेशन चाहते हैं, छूत-अछूत कोई नही है, सब रियायतो के भूखे हैं। आप उन्हे अधिकार दें, बस अधिकार दें। उन्हे अछूत कह कर रियायतें दे सब अपने को अछूत कहने लगेंगे। गुण्डा कह कर रिजर्वेशन दे सब अपने को गुण्डा कहने लगेंगे।

इस समय जो स्थिति है उसका इलाज सिर्फ यह है कि जन्म की जात-पात को समाप्त किया जाये। "जाति-पाति न पूछे कोई, हर को भजे तो हरि को होई"—यही आर्यसमाज का नारा है। यही भविष्य मे होने वाला है। समाजशास्त्र का यह पुराना नियम है कि सामाजिक-रचना मे जो विसगति होती है उन्हे दूर करने के लिये समाज की रचना मे उथल-पुथल मचती रहती है और वे विसगतियो दूर कर नवीन समाज का निर्माण होता है। उसके बाद उसकी रचना मे फिर कुछ विसगतिया जन्म लेती हैं, फिर समाज मे उथल-पुथल मच कर समाज का पुनर्निर्माण होता रहता है। आज हमारे समाज का जो रूप है वह इन विसगतिया को दूर करते-करते बना है। आज समाज बहुत बदल चुका है। उथल-पुथल जारी है। जन्म की जात-पात इन्ही विसगतियो मे से एक विसगति है। वर्षों गुजर गये, महर्षि दयानन्द ने भारत में चली आ रही जन्म की जात-पात के विरुद्ध आवाज उठाई थी। यह हमारे सामाजिक रचना की एक बड़ी भारी विसगति थी। यह हमारी राजनीति मे उठे बवंडर से दूर होकर रहेगी। इस विसगति से दूर होने का रूप वही होगा जो हो रहा है। एक जात दूसरी जात को खायेगी। अन्त में सब जाते मिट कर फिर मिल जायेगी और सिर्फ एक जाति मानव-जाति रह जायेगी।

योरुप मे यह हुआ, अफ्रीका मे यह हुआ, भारत मे यही होगा और होकर रहेगा। समय आयेगा जब न'एन्ट्री-रिजर्वेशन होगा, न प्रो०-रिजर्वेशन' रहेगा ऋषि दयानन्द का सोचा हुआ विचार "शूद्रो ब्राह्मणता मेति ब्राह्मणश्च शूद्रताम्' ही आयेगा क्योकि जीवित-समाज का यही रुख है। समता की यह स्थिति कैसे आयेगी यह कहा नही जा सकता, परन्तु यह कहा जा सकता है कि जन्म-जात भेद-भाव मिट कर रहेगा, मिट कर रहेगा, मिट कर रहेगा। किसी तरह का 'रिजर्वेशन' नही रहेगा, सारा समाज एक हो जायेगा। समाज मे जो उथल-पुथल हो रही है, जो उखाड़-पछाड़ हो रहा है वह परमात्मा की देन है। क्योकि इसी से समाज का भला होने वाला है इसी से अन्त मे ऋषि दयानन्द का स्वप्न पूरा होने वाला है।

मानव मूल्यों के पक्षधर : महर्षि दयानन्द

—भगवान देव "चैतन्य" एम. ए. साहित्यालंकार २८ एल, २ सुन्दर नगर १७४४०२

गत शताब्दी मे अनेक समाज सुधारक हुए, जिनके नाम से कालान्तर मे अलग-अलग मत व सम्प्रदाय चल पडे मगर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने साफ शब्दो मे यह घोषणा की है कि मेरा कोई भी नया मत चलाने का बिल्कुल भी इरादा नही है। वे सही अर्थों मे मानवता के सही पालक, पोषक व रक्षक हुए है। वे एक विलक्षण प्रतिभा के मालिक थे। यही कारण है कि वे मान-अपमान को एक ओर रखकर के केवल मानवता के प्रचार व प्रसार मे आजीवन लगे रहे और अन्त में मानवता का निर्देशन करने के कारण ही गरल पीकर 'प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो" कहकर इन्होने इस लोक से प्रस्थान किया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती एक ऐसे युग मे इस धरा पर अवतरित हुए जब चारो ओर मानव जाति को समाप्त करने के षडयन्त्र स्वयं मानवो द्वारा ही किए जा रहे थे। आपस के वैर-विरोध, अन्धविश्वास, पाखण्ड और अधर्म का सर्वत्र साम्राज्य, धर्म के गीत तो अवश्य गाए जाते थे, किन्तु धर्म एक रूढिवाद के दायरे मे सिमट कर रह गया था। वेदो का पठन-पाठन जो प्रत्येक मानव का परम धर्म था, लगभग सभी भुला चुके थे। नारी जाति को केवल भोग की सामग्री समझकर ही प्रयोग मे लाया जाता था। जातिवाद के कारण मानवता छिन्न-भिन्न हो रही थी। ऐसे ही विकट समय मे महर्षि जी ने मानवता का सन्देश प्रत्येक हृदय मे आरोपित करने के लिए ठोस कदम उठाए। उन्होने धर्म मे आए रूढिवाद को हटाकर धर्म की सही और स्पष्ट परिभाषा की। उन्होने साफ शब्दो मे वेदाज्ञा को दुहराया— "सत्य वद् धर्म चर" अर्थात् धर्म बोलने की नही बल्कि आचरण करने की एक आचार संहिता है। उन्होने अपने प्रबल तर्को के आधार पर फिर से ईश्वरीय ज्ञान वेद का पठन-पाठन प्रारम्भ कराया। इस बात का श्रेय महर्षि जी को ही माना है कि मैक्समूलर जैसे पाश्चात्य विद्वानो के हृदयो मे भी वेद के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हुई जो कि वेदो को गडरियो के गीत कहा करते थे। इसका प्रमुख कारण यह था कि वे ऐक विशाल दृष्टिकोण को लेकर चले थे। उनके सोचने का दायरा किसी विशेष जाति या मत और देश तक ही सीमित नही था बल्कि वेद तो "वसुधैव कुटुम्बकम्" का उद्घोष लेकर चले थे। वे समूचे विश्व को मानवीय मूल्यो से ओत प्रोत होता हुआ देखना चाहते थे। उनका लक्ष्य था "कृण्वन्तो विश्वमार्यम"—अर्थात सम्पूर्ण विश्व को आर्य बनाना। आर्य शब्द का अर्थ उन्होने श्रेष्ठ व सज्जन किया है। नारी जाति पर जितना उपकार महर्षि जी का है, शायद ही किसी अन्य पर हो। जाति-पाति एव भेदभाव के व कट्टर विरोधी थे। उनकी दृष्टि में हम सभी उस परमपिता परमात्मा की सन्तान है और हमारी एक ही जाति है— 'मानव'।

महर्षि दयानन्द जी ने न केवल अपने जीवनकाल में अपनी पवित्र देन से मानव जगत को उपकृत किया अपितु आज भी अपनी अमर कृति सत्यार्थ प्रकाश" के माध्यम से अपनी देन द्वारा ससार की मानवता को आलोकित कर रहे हैं। यह विलक्षण ग्रन्थ महर्षि जी के जीवन की सम्पूर्ण शिक्षाओ और अनुभवो का सग्रह है। इसमे धर्म के नाम पर चलने वाले सभी आडम्बरो का पर्दाफाश करके धर्म को एक ऐसी सच्ची, पवित्र तथा अपरिवर्तनीय परिभाषा दी है जो मानव को सही अर्थो मे मानव बनने की प्रेरणा देती है। इस अमरग्रन्थ की रचना चौदह समुल्लासो मे की गई है प्रथम दस में वैदिक धर्म के अनुसार ईश्वर, ब्रह्मचर्य, बच्चों की शिक्षा, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास आदि का वर्णन तथा राजनीति, वेद, [मोक्ष, भक्ष्याभक्ष्य का वर्णन किया गया है। वेदानुसार जब इन सभी विषयो का वर्णन कर चुके तो उन्होने यह भी आवश्यक समझा कि धर्म के नाम पर जो अधर्म तथा अनेक अवैदिक मत-मतान्तर देश-देशान्तर मे फैले हुए हैं, उनका खण्डन भी किया जाये। वास्तव मे मण्डन जितना आवश्यक है, खण्डन भी उतना ही आवश्यक है। इसलिए अन्तिम चार समुल्लासो मे महर्षि जी ने सभी मत मतान्तरो का कच्चा चिट्ठा एक स्वस्थ समालोचना के रूप में पाठको के सम्मुख रखा है ताकि वे सत्यासत्य का निर्णय सहज में कर सकें। इस ग्रन्थ से प्रेरणा पाकर अब तक लाखों जीवन मानवता के सही रूप को पहचान कर दानवता के घोर नरक से उठकर देवत्व के सुखी और शान्त तथा समृद्धि के स्वर्ग मे पहुच चुके हैं।

सत्यार्थ प्रकाश महर्षि द्वारा रचित एक ऐसा विलक्षण ग्रन्थ है जिसे पढकर धर्म का वास्तविक और स्पष्ट अर्थ सहज ही निकाला जा सकता है। यह ग्रन्थ एक ज्योति पुञ्ज है जिसका प्रत्येक समुल्लास वस्तुतः अपने मे अपार प्रभा समेटे हुए हैं जो अन्धकार को विदीर्ण करने की पूरी सामर्थ्य रखता है। इस लघु लेख में सभी समुल्लासो का परिचय दे पाना तो असमभव है किन्तु ग्रन्थ की भूमिका पर यहा थोडा सा दृष्टिपात करना अभीष्ट है मानवता के प्रति इस ग्रथ की उपयोगिता सहज ही मे सिद्ध हो सके। इस ग्रन्थ मे किसी भी प्रकार का पक्षपात उपयोग में नहीं लाया गया है। न ही वह ग्रन्थ विशेष जाति, धर्म या समुदाय के लिए ही रचा गया है बल्कि महर्षि जी के शब्दो मे ही—"मेरा इस ग्रन्थ को बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य-सत्य अर्थ के प्रकाश का प्रकाश करना है, अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य, और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है वह सत्य नही कहाता जो सत्य के स्थान मे असत्य और असत्य के स्थान मे सत्य का प्रकाश किया जाए, किन्तु जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना ही सत्य कहाता है। मनुष्य पक्षपाती होता है वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे विरोधी मत वाले के सत्य को भी असत्य सिद्ध करने मे प्रवृत्त होता है, इसलिए वह सत्य मत को प्राप्त नहीं हो सकता।

महर्षि जी द्वारा लिखित उपर्युक्त शब्द, जो उन्होने—इसी ग्रन्थ की भूमिका मे लिखे हैं, मनन करने योग्य हैं। वे किसी मत विशेष की पुष्टि के लिए उचित अनुचित तर्क देने के पक्ष मे नही थे। वास्तव मे "सत्यार्थप्रकाश" का निर्माण मानव मात्र की भलाई के लिए किया गया है। इसके सृजन मे महर्षि जी का यही लक्ष्य था कि अनेक मतो और सम्प्रदायो में बटी हुई मानवता को पुन एक सूत्र मे बाधा जाए। भूमिका मे ही वे लिखते हैं 'परन्तु इस ग्रन्थ मे ऐसी बात नही रखी है और न किसी का मन दुखाना या किसी हानि का तात्पर्य है, किन्तु जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो, सत्यासत्य को जानकर मनुष्य सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करे, क्योकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नही है, वे चाहते थे यदि प्रत्येक विद्वान अपने अपने दायरो को न बढाकर समूचे मानवता की उन्नति परध्यान दे तो ही वास्तव मे मानवता का अकुर प्रत्येक हृदय मे प्रस्फुटित हो सकता है। ···· यद्यपि आजकल बहुत से विद्वान प्रत्येक मतो मे हैं, वे पक्षपात छोड सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् जो-जो बातें सबके अनुकूल सब मे सत्य है, उनका ग्रहण और जो एक दूसरे के विरुद्ध बात हैं, उनका त्यागकर परस्पर प्रीति से बर्ते बर्तावें तो जगत का पूर्ण हित होवे क्योकि विद्वानों के विरोध से अविद्वानो मे विरोध बढकर अनेक विध दुःख की वृद्धि और सुख की हानि होती।"

कुछ साम्प्रदायिक लोगो ने सत्यार्थ प्रकाश का खण्डन का पिटारा कहा है, मगर इसका निराकरण भी भूमिका की इन पक्तियो से ही जाता है ····श्रोता व पाठकगण भी प्रथम प्रेम से देखकर इस ग्रन्थ का सत्य-सत्य तात्पर्य जानकर यथेष्ट करें। इसमे यह अभिप्राय रखा गया है कि जो-जो सब मतों में सत्य बातें हैं, वे-वे सभी में अविरुद्ध होने से उनको स्वीकार करके जो-जो मत-मतान्तरो मे मिथ्या बातें हैं—उन-उनका खण्डन किया है।········ महर्षि जी किसी देश विशेष के दायरो तथा पक्ष पात से बिल्कुल ही मुक्त थे।·········यद्यपि मैं आर्यावर्त देश मे उत्पन्न हुआ और बसता हूं, तथापि जैसे इस देश के मत-मतान्तरों की झूठी बातों का पक्षपात न कर यथा तथ्य प्रकाश करता हू, वैसे ही दूसरे देशस्थ व मत वालों के साथ भी बरतता हूं·········मैं भी जो किसी एक का पक्षपाती

(शेष पृष्ठ १० पर)

ऋषि दयानन्द का एक विवादास्पद पत्र

डा० भवानीलाल भारतीय

परोपकारी के मई १९९० के मुख पृष्ठ पर ऋषि दयानन्द का एक पत्र (मूल की फोटो) छपा है, जिसका शीर्षक है "पण्डित कालूराम जी महाराज निवास स्थान रामगढ़ जिला सीकर इलाके जयपुर को श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने पत्र द्वारा निम्नलिखित उपदेश किया।"

इस पत्र को सार्वदेशिक साप्ताहिक ने भी उद्धृत किया है। प्रस्तुत पत्र को लेकर अनेक व्यक्तियों को शंका हुई। यमुनानगर के स्वाध्याय शील आर्य श्री इन्द्रजीत देव ने मुझे पत्र लिखा, पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक जी से भी इस पर चर्चा हुई तथा सार्वदेशिक के सम्पादक डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने भी इस पर मेरे विचार जानने का प्रयत्न किया। अतः इस पत्र के कथ्य पर विचार करना आवश्यक है।

मेरे विचार से यह पत्र प्रामाणिक नहीं है कारण कि (१) उपदेश संख्या-२ के अन्तर्गत इसमें लिखा है—

(अ) त्रिवर्ण को तत्सवितुः गायत्री मन्त्र (दिया जाय)

(आ) द्विजों की स्त्रियों को (विश्वानि देव (मन्त्र दिया जाय)

(इ) शूद्र और उनकी स्त्रियों को (विश्वानि देव) मन्त्र (दिया जाय)

(ई) ईसाई मुसलमान आदि को भी विश्वानि देव मन्त्र (दिया जाय)

(उ) अन्त्यजादि को परमात्मानमिति मन्त्र (दिया जाय)

हमारा कथन—स्वामी दयानन्द ने गायत्री मन्त्र का विधान आर्य मात्र (आशूद्र स्त्री द्विज पर्यन्त) के लिये किया है। यह पत्र चैत्र बदि १४ गुरुवार सं० १९३९ को लिखा बताया गया है। किन्तु स्वामी जी ने सत्यार्थप्रकाश लेखन के समय ही अपना यह मत स्थिर कर दिया था कि गायत्री मन्त्र वर्ण, लिंग भेद के बिना सभी स्त्री पुरुषों को दिया जाना चाहिए। यथा तृतीय समुल्लास में महाराज लिखते हैं—"पिता माता वा अध्यापक अपने लड़का-लड़कियों को अर्थ सहित गायत्री मन्त्र का उपदेश कर दें।" इसी समुल्लास में स्त्री और शूद्रों के वेद पठनाधिकार का निरूपण 'यथेमां वाचं कल्याणी' [२६.२] इस यजुर्वेदीय श्रुति के प्रमाण से किया है। अतः यह लिखना निरा बेतुका है कि ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य को तो यजुर्वेदोक्त गायत्री मन्त्र देना चाहिए और द्विजो की स्त्रियों शूद्र तथा शूद्र स्त्रियों को "विश्वानिदेव" मन्त्र दिया जाय। संस्कारविधि के गृहाश्रम प्रकरण में महाराज ने संध्योपासना नित्य कर्म स्त्री पुरुष दोनों के लिये समान रूप से कर्तव्य बताये हैं। यथा—"सदा स्त्री पुरुष दस बजे शयन और रात्रि के पहिले प्रहर या चार बजे उठके प्रथम हृदय में परमेश्वर का चिन्तन करके धर्म, अर्थ का विचार किया करें……।" इसी प्रकरण में आगे सन्ध्या और हवन[अग्निहोत्र] की विधि स्त्री पुरुष दोनों के लिये एक सी लिखी है। उदाहरणार्थ

अथाग्निहोत्रम्

जैसे सायं प्रातः दोनों संधि वेलाओं में सन्ध्योपासना करे इसी प्रकार दोनों स्त्री पुरुष अग्निहोत्र भी दोनो समय में नित्य किया करे।" इस प्रकार स्वामी जी के मतानुसार सन्ध्या तथा अग्निहोत्र के कर्तव्य चातुर्वर्णिक स्त्री पुरुषों के लिये समान रूप से कर्तव्य है। जब संध्या विधि में गायत्री मन्त्र [तत्सवितुर्वरेण्यं] के जप का समान रूप से विधान है तो द्विजों अथवा शूद्रों की स्त्रियों के लिये पृथकशः "विश्वानिदेव" मन्त्र की व्यवस्था देना परस्पर विरुद्ध है। अत. यह आदेश ऋषि दयानन्द का नहीं हो सकता।

इस पत्र का चौथा अनुच्छेद भी दयानन्दीय सिद्धान्त के विरुद्ध है। उसमें लिखा है—"जो कोई ब्राह्मण हो उसको सन्यास देकर नाम के अन्त में 'सरस्वती' शब्द हाक। चाहिये और क्षत्रिय वैश्य को 'आनन्द' शब्दान्त जैसे अच्युतानन्द और शूद्र को दास जैसे अच्युतदास।"

यह तो सारा कथन ही ऋषि की भावना के विपरीत है। इसमें निम्न कारण है—

१—सत्यार्थप्रकाश के पंचम समुल्लास में संन्यास ग्रहण के अधिकार की मीमांसा करते हुए महाराज स्पष्ट लिखते हैं कि चतुर्थाश्रम ग्रहण करने का अधिकार मात्र ब्राह्मण को ही है। (यहां यह नही भूलना चाहिए स्वामी दयानन्द गुण, कर्म, स्वभाव से ही ब्राह्मणादि की व्यवस्था मानते हैं) फिर विवादास्पद पत्र में सभी वर्ण वालों को सन्यास का अधिकारी कहना अनुपयुक्त है।

२—ब्राह्मण संन्यास लेवे तो उसके नाम के अन्त में 'सरस्वती' शब्द हो, यह भी प्रचलित नियम के विपरीत है। शंकराचार्य के पश्चात् सन्यासियों के दशधा भेद हो गये थे जो निम्न प्रकार हैं—१. गिरि, २ पुरी ३ भारती. ४ सरस्वती ५ वन ६. पर्वत ७.अरण्य, ८ सागर, ९ तीर्थ, १० आश्रम। संन्यास ग्रहण करने वाले गुरु का जो नाम भेद होता है वही शिष्य का भी होता है। उदाहरणार्थ, स्वामी दयानन्द के दीक्षा गुरु पूर्णानन्द सरस्वती थे अतः उन्होंने शुद्ध चैतन्य (दयानन्द) को भी दयानन्द सरस्वती का नाम प्रदान किया। आलोच्य वाक्य का यह कथन भी प्रमाण रहित है कि क्षत्रिय, वैश्य यदि संन्यास लेवे तो उनके नाम के अन्त में "आनन्द" शब्द आवे। प्रथम तो स्वामी दयानन्द के मतानुसार क्षत्रिय और वैश्य को संन्यास लेने का अधिकार ही नही है। यदि यही लोग संन्यासी बनकर 'आनन्द' शब्द को अपने नाम के साथ लगावें तब तो स्वामी दयानन्द से ही यह पूछा जायेगा कि वे तो जन्मना ब्राह्मण थे, फिर उन्होंने संन्यास के समय अपना नाम आनन्दान्त क्यों रक्खा? शूद्र को तो संन्यास का अधिकार ही नहीं है, फिर स्वामी जी ने "दासान्त" नाम रखने का तो निषेध किया है और दास नाम वाले शूद्र तथा गर्हित कहा है। पुनः दासान्त नाम रखने वाला संन्यासी कैसे हो सकता है। ध्यातव्य है कि प्रचलित सनातन धर्मी संन्यासियों में भी दासान्त नाम रखने की प्रथा नही है। यह पूरा वाक्य ही स्वामी जी की विचारधारा और मान्यताओं के प्रतिकूल है।

चतुर्थ उपदेश के बाद एक वाक्य लिखा मिलता है—"ओं सर्वात्मानयन्तर्यामिनं कृपामृत सागरं परमात्मानमहं शरणं प्रपद्ये" इस वाक्य की पूर्वापर क्या संगति है। क्या यह स्वामी दयानन्द ने कोई नया मन्त्र बनाया है? तथ्य तो यह है कि वेदोक्त मन्त्रों के अतिरिक्त स्वामी जी ने अन्य सभी साम्प्रदायिक मन्त्रों का निषेध किया है। यथा प्रथम समुल्लास में ही महाराज ने श्री गणेशाय नमः आदि दस कपोल-कल्पित वाक्यों का खण्डन किया है। फिर वे उक्त वाक्य क्यों लिखने बैठे? और इसकी संगति क्या है?

अन्य बिन्दु भी आपत्तिजनक हैं। यथा—अन्त्यजों का उपदेशक और अध्यापक बनने का विधान शास्त्रों और स्वयं ऋषि के आदेश के विरीत हैं। उपदेशक और अध्यापक का कार्य ब्राह्मणों का ही है। बिन्दु आठ मे कहा गया है कि भगवा वस्त्र सबको होना चाहिए, यह भी विपरीत बात है। काषाय (भगवा) वस्त्र संन्यासी धारण करते हैं न कि गृहस्थ या ब्रह्मचारी। सब मन्त्रों के आरम्भ मे ओ३म्कार का प्रयोग करना, यह भी संस्कारविधि निर्दिष्ट विधान के प्रतिकूल है। क्योंकि संस्कारविधि में निम्न मन्त्रों को बिना ओम् का उच्चारण किये ही बोलने का लिखा है—(१) स्वस्तिवाचन और शान्तिकरण के मन्त्र, (२) समिधाग्नि दुवस्यत तथा सुसमिद्धाय मन्त्र, (३) तस्त्वा-मन्त्र (४) विवाह विधि मे ममेयमस्तु, त्वष्टावासो, इमाम्त्वी द्यावापृथिवी, प्रहविष्यामि, जीव रुदन्ति, पूषात्वेतो, आदि

अनेक मन्त्र (५) सन्ध्योपासन मे अघमर्षण के ऋतं च सत्यं को छोड़कर अन्य दो मन्त्र, (६) मनसा परिक्रमा के प्रथम 'प्राचीदिगग्नि' को छोड़कर अवशिष्ट पांच मन्त्र, (७) शालाकर्म में वास्तोष्पते प्रतरणो, वास्तोष्पते शग्मया, अमीवहा वास्तोष्पते, सर्पदेवजनाद् तथा अवशिष्ट अनेक मन्त्र। इस प्रकार जब स्वयं ऋषि ने ही मन्त्र के आरम्भ में ओम् बोलने या न बोलने का पृथकशः विधान कर दिया है तो यह आदेश वदतोव्याघात युक्त है।

तब इस पत्र की स्थिति क्या है ?

१ यह तो स्पष्ट है कि यह लेख स्वयं ऋषि का नहीं है।

२. यह स्वामीजी के निकट रहने वाले किसी लेखक का है क्योंकि ऋषि के आदेश से लिखे गये तथा हस्ताक्षरित अन्य पत्रों से इसका लेख बहुत मिलता-जुलता है।

३ पं० कालूराम के विषय में श्री इन्द्रजीतदेव ने जिज्ञासा की है। तत्सम्बद्ध निवेदन है कि पं० कालूराम शर्मा सीकर [राजस्थान] जिले के रामगढ़ कस्बे के निवासी ऋषि के समकालीन तथा उनके भक्त थे। उनको लिखे ,तथा उनके द्वारा लिखे [स्वामी जी द्वारा तथा स्वामी जी को] कुछ पत्र ऋषि के पत्र व्यवहार में में संगृहीत है।

४. एक अनुमान यह हो सकता है कि पं० कालूराम ने स्वामी जी से कुछ प्रश्न पूछे हों, कुछ जिज्ञासायें की हों और उनका उत्तर लिखने के लिये स्वामी जी ने अपने लेखक को कहा हो। किन्तु लखक ने महाराज के वास्तविक आशय और अभिप्राय को समझे बिना ही स्वमत से कुछ (ये दस बिन्दु) लिखकर स्वामी जी के हस्ताक्षर करा लिये हों। अनवधानतया विश्वास वश महाराज ने भी इस पर हस्ताक्षर कर दिये हों। हस्ताक्षर भी जाली हों तो आश्चर्य नहीं।

५ यह पत्र उस समय का लिखा है जब स्वामी जी शाहपुरा में विराज रहे थे क्योंकि उनका शाहपुरा गमन फाल्गुन कृष्णा १४ सं० १९३७ को हुआ था और ज्येष्ठ कृष्णा ४ सं० १९४० पर्यन्त वहां विराजे थे।

६. सेठ जयनारायण पोद्दार द्वारा लिखित तथा सं० १९६८ (१९११ ई०) में प्रकाशित पं० कालूराम जी की जीवनी के पृष्ठ २६ से यह तो सकेत मिलता है कि उक्त पंण्डित जी ने पत्र लिखकर स्वामी जी से उपदेश प्रदान करने की याचना की थी, जिसके उत्तर स्वामी जी का निम्न आशय का पत्र उन्हें मिला था— "श्रीयुत पण्डित कालूराम शर्मादिभ्यो दयानन्द सरस्वती स्वामिन: आशिषोभायासुस्तमाशामिहास्ति भवदीयश्च नित्यमाशास्महे। आपने धर्म जिज्ञासा की उसका उत्तर यह है कि इस विषय में जो सत्यार्थप्रकाशादि मद्रचित ग्रन्थ हैं उनमें स्वमन्तव्यामन्तव्यादि सर्व धर्म विषय लिखा हुआ है उसी रीति से कार्य करो। इत्यादि।" पोद्दार जी की पुस्तक में न नो पत्र पूरा उद्धृत है और न उसके लिखे जाने की तिथि ही बताई गई है। यही पत्र (इतना ही) प० भगवद्दत्त द्वारा सगृहीत पत्र व्यवहार द्वितीय संस्करण के पृष्ठ ३८४ पर उद्धृत किया गया है। इसकी अनुमानित तिथि १७ मार्च १८८३ अंकित है, इस आधार पर कि स्वामी जी ८ मार्च को शाहपुरा पहुंचे थे और वहीं से उन्होंने यह पत्र लिखा होगा।

७. यदि प० कालूराम की जीवनी में उद्धृत पत्र तथा सार्वदेशिक एवं परोपकारी में प्रकाशित स्वामी जी के उपदेशात्मक पत्र की पृष्ठभूमि का विचार किया जाये तो हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं—

(१) प० कालूराम ने स्वामी जी से लिखित रूप से उपदेश भेजने के लिये कहा।

(२) इसके उत्तर में स्वामी जी ने पत्र के आधार पर इतना ही लिखा कि उनके द्वारा रचित सत्यार्थप्रकाशादि में वर्णित स्वमन्तव्यामन्तव्यादि धर्म विषय को पढ़कर वे यथोचित उपदेश ग्रहण कर लें। परन्तु आलोच्य पत्र तो सत्यार्थप्रकाश में व्यक्त मत से नितान्त विसंवादी स्वर प्रस्तुत करता है। इसीलिये इसकी प्रामाणिकता शंकास्पद है।

(३) ऐसा अनुमान होता है कि स्वामी जी के किसी पौराणिक लेखक ने उक्त पत्र-व्यवहार की ओट में अपनी ओर से ही कुछ ऊटपटांग बातें [आलोच्य पत्र में अंकित उपदेश के बिन्दु संख्या १,२,३,४,८] लिखकर पं० कालूराम जी को पुनः भेजने का विचार किया होगा तथा महाराज के हस्ताक्षर भी करा लिये होंगे, अथवा स्वामी जी ने उस पर कर दिये होंगे। किन्तु यह पूरी सम्भावना है कि यह पत्र पं० कालूराम जी को भेजा नहीं गया; तभी तो इसका मूल आलेख परोपकारिणी सभा के संग्रह में मिला।

(४) हस्ताक्षर तो स्वामी जी के ही हैं किन्तु उनके हस्ताक्षर प्रायः कोष्ठकों में मिलते हैं जो उलटे होते हैं। विवादास्पद पत्र में किये गये हस्ताक्षर सीधे कोष्ठक में हैं। इससे भी इस पत्र की विश्वसनीयता पर शंका होती है। यह करामात भिमसराम "लेखक" की हो सकती है जो प्रच्छन्न रूप से महाराज का विरोधी था।

(५) मेरी आज की डाक में गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का मासिक मुख पत्र आर्य वैदिक दर्शन [अगस्त १९९०] मिला है। इसके माननीय सम्पादक ने भी इस पत्र पर विद्वानों के विचार आमन्त्रित किये हैं।

(६) अभी तो इस विषय में इतना लिखना ही सम्भव है। आगामी मास में ऋषि मेले के अवसर पर अजमेर जाने पर विवादास्पद पर कुछ अधिक जानकारी प्राप्त करूंगा।

चुनाव समाचार

— आर्य समाज भीलवाड़ा रामस्वरूप जी बेली प्रधान सत्यनारायण सोलंकिया मन्त्री सुन्दरलाल कालेरा कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज कपूरथला रोशनलाल प्रधान सत्यदेव मन्त्री राजेन्द्र कुमार कोषाध्यक्ष चुने गये।

—गुरुकुल रामलिंग वेडसी जिला धाराशिव ब्र० चन्द्रहास शास्त्री प्रधान बुद्धदेव आर्य मन्त्री ब्र० प्रभाकर कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज मन्दिर सोलापुर बलराज कुमार जुल्का प्रधान बाबूसिंह आर्य मन्त्री मुरलीधर सारडा कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज सनौर जिला पटियाला प्यारेलाल प्रधान विनोद कुमार मन्त्री सोहनलाल कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना सुभाष गुप्त प्रधान विजय सरीन मन्त्री ओमप्रकाश गुप्त कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य महिला समाज खण्डवा (म० प्र०) श्रीमती शान्तिदेवी खण्डेलवाल प्रधान श्रीमती चन्द्रकान्ता पालीवाल मन्त्री श्रीमती पदमावती राठौर कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज सूजापुर पो० बडी धामनी थादला खेमचन्द आर्य प्रधान श्री प्रकाश मन्त्री शकरलाल कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज विधान सारणी कलकत्ता कलियाराम गुप्त प्रधान यशपाल वेदालकार मन्त्री विन्देश्वरी प्रसाद कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य कुमार सभा गुरुकुल आमसेना उडीसा ब्र० कुञ्जदेव शास्त्री प्रधान ब्र० जगतबन्धु आर्य मन्त्री ब्र० कर्मवीर आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य उपप्रतिनिधि सभा लखनऊ आचार्य वेदव्रत अवस्थी प्रधान चन्द कुमार छाबडा मन्त्री शिवनाथ शर्मा कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य केन्द्रीय शिरोमणि सभा फिरोजपुर द्वारकानाथ वर्मा प्रधान देवराजदत्ता मन्त्री मनोज कुमार कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य वीर दल गुरुकुल करतारपुर पंजाब ब्र० अनन्त कुमार आर्य प्रधान ब्र० विमल प्रकाश आर्य मन्त्री ब्र० आशीष सामन्त कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज बरहरवा जिला साहिबगंज बिहार सुर्यपाल राय प्रधान सरयू प्रसाद आर्य मन्त्री शुकदेव प्र० कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य उपप्रतिनिधि सभा पीलीभीत कृष्ण कुमार शास्त्री प्रधान मोहनलाल मन्त्री विश्रामसिंह कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज पुणे चाननलाल गुप्ता प्रधान सोमव्रत वाचस्पति मन्त्री सुरज कुमार अरोरा कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज चेम्बर बम्बई गुलजारीलाल आर्य प्रधान ईश्वर मित्र शास्त्री मन्त्री जयगोपाल बिरमानी कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज ब्रह्मपुरी दिल्ली ओमप्रकाश मदान प्रधान कृष्ण आर्य मन्त्री रविन्द्र कुमार आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज मन्दिर लुधियाना रोड फिरोजपुर छावनी द्वारिकानाथ वर्मा प्रधान देवराज दत्त मन्त्री नरेन्द्र छाबडा कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज गुडगावा छावनी हिम्मत राय प्रधान पदमचन्द आर्य मन्त्री जगदीशचन्द कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज सिरसल कैथल सेवाराम आर्य प्रधान अशोक कुमार मन्त्री मा० मदनलाल कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज सिविल लाइन्स अलीगढ विद्या प्रसाद जैसवाल प्रधान रामदीन आर्य मन्त्री ओमप्रकाश शर्मा कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज पखा रोड सी ब्लाक जनकपुरी दिल्ली विद्यासागर मदान प्रधान वैद्य महेन्द्रपालसिंह आर्य मन्त्री हरिकृष्णलाल गुलाटी कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज सितारपुर तोताहेडी महेन्द्रगढ हरियाणा रामेश्वरदयाल शर्मा प्रधान राजेराम आर्य मन्त्री मामचन्द आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज गया बिहार बुलाकचन्द राय आर्य प्रधान सोममित्र शास्त्री मन्त्री मुन्शीप्रसाद कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य उपप्रतिनिधि सभा बदायूं (उ० प्र०) रामकुमार आर्य प्रधान महेन्द्र कुमार एडवोकेट मन्त्री गिरीशचन्द आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

—वैदिक सत्सग मण्डल नजीबाबाद विद्यारत्न आर्य रेडियोसिंगर प्रधान महेन्द्रसिंह आर्य मन्त्री बालस्वरूप आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

—महिला आर्य समाज दुर्गाकुण्ड काशी श्रीमती सावित्री देवी आर्य प्रधान श्रीमती विद्योतमा मन्त्री श्रीमती विमला यादव कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज लाजपत नगर कानपुर डा० आशारानी राय प्रधान सुरेन्द्र कुमार डग मन्त्री वीरेन्द्र कपिल कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य महाशय धर्मपाल प्रधान डा० शिवकुमार मन्त्री ओमप्रकाश कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज विश्वकर्मा नगर सरैया रामऔतार शर्मा प्रधान हरिनारायण शर्मा मन्त्री गणेश शर्मा कोषाध्यक्ष चुने गये।

— आर्य समाज जगदीशपुर प० चम्पारण बिहार नथुनीसिंह आर्य प्रधान दामोदर प्रसाद आर्य मन्त्री रामनारायणसिंह आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज लक्ष्मीपुर प० चम्पारण बिहार गौरीशकर प्रसाद प्रधान रामचन्द लोहिया मन्त्री मदनप्रसाद कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज आनन्द बाग दुर्गाकुण्ड वाराणसी यज्ञदत्त गौतम प्रधान शिवमित्र शास्त्री मन्त्री रतिरामसिंह कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्योपप्रतिनिधि सभा वाराणसी रामगोपाल आर्य प्रधान डा० ओमप्रकाश शास्त्री मन्त्री रविप्रकाश आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज अनाज मण्डी शाहदरा सीताराम आर्य प्रधान आनन्द प्रकाश शर्मा मन्त्री योगेश्वर सर्वज्ञ कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज बल्लभगढ हरियाणा बाबूराम प्रधान सुरेश मदान मन्त्री नवल किशोर कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज तिलक नगर नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव चुनाव २२-७ ९० का सभी सदस्यो की उपस्थिति मे सम्पन्न हुआ, जिसमे निम्न पदाधिकारी चुने गये।

१. प्रधान—श्री यशपाल कैजे
२ मन्त्री—श्री बलदेवराज
३. कोषाध्यक्ष —श्री हरदेव ग्रोवर

दमा की औषधि का निःशुल्क वितरण

प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी शरद पूर्णिमा बुधवार दिनांक ३ अक्तूबर १९९० को दमा की वानस्पतिक औषधी आर्य समाज लातूर महाराष्ट्र पीएम द्वारा डा० चारिटेबलट्रस्ट के सहयोग से नि शुल्क वितरण की गई ?

दमा श्वास पुरानी खासी, इत्यादि कफ विकारो पर इस वानस्पतिक औषधियो का अच्छा लाभ देखा गया है। अत इच्छुक लोगो ने नि शुल्क औषधी वितरण का लाभ उठाया।

शोधपीठ को राज्य सरकार द्वारा अनुदान

शोधपीठ के निदेशक प्रो० श्री दत्तात्रेय जी आर्य ने सूचित किया कि राज्य सरकार द्वारा गत दो वर्षों से तकनीकी आपत्तियो के कारण रुका गया उसका अनुदान भी राज्य सरकार द्वारा पुन प्रारम्भ कर दिया गया है। उन्होने यह भी सूचित किया कि आर्य समाज शिक्षा सभा ने अब योग्य शोधार्थियो को २००) दो सौ रु० मासिक छात्रवृत्ति भी देने की व्यवस्था कर दी गई है।

शोक समाचार

हमे अत्यन्त दु ख के साथ यह समाचार लिखना पड रहा है कि पिछले महीने मे दिनाक २५ ९ ९० को दिल्ली मे आरक्षण विरोधी आन्दोलन मे श्री पवन साहनी की पुलिस द्वारा गोली चलाने से मृत्यु हुई। श्री पवन साहनी आर्य समाज के सभी कार्यक्रम, जलसे और जलूसो मे कार्य किया करते थे। इस आर्य युवक ने हैदराबाद आर्य अर्ध-शताब्दी समारोह मे ५० से भी ज्यादा शराब के ठेके बारिस मैं भीगते हुए बन्द करवा दिये थे। जो कि प्रत्येक कार्यकर्ता के लिए प्रेरणा का कार्य था। भगवान दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें।

—अशोक कुमार, मन्त्री
आर्य समाज बिन्दापुर नई दिल्ली-५९

मानव मूल्यों के पक्षधर

(पृष्ठ ६ का शेष)

होता, तो जैसे आजकल के स्वमत की स्तुति, मण्डन और प्रचार करते और दूसरे मत की निन्दा, हानि और बन्ध करने मे तत्पर होते हैं, वैसे मैं भी होता। परन्तु ऐसी बातें मनुष्यपन से बाहर हैं, क्योकि जैसे पशु बलवान होकर निर्बलो को दु ख देत और मार भी डालते हैं, जब मनुष्य शरीर पाकर वैसा ही कर्म करते हैं तो वे मनुष्य स्वभाव युक्त नहीं किन्तु पशुवत् हैं, और जो बलवान होकर निर्बलों की रक्षा करता है वही मनुष्य कहाता है और जो स्वार्थवश होकर पर हानि मात्र करता रहता है वह मानो पशुओ का भी बडा भाई है। महर्षि ने मनुष्यपन की जितनी सुन्दर एव अनुकरणीय परिभाषा हमारे सम्मुख रखी है। वास्तव मे वे सभी महापुरुषो मे अतुलनीय और अनुपम थे उनके द्वारा दिये गये प्रवचन एव रचित ग्रन्थो का एक-एक शब्द मानव मूल्यो की अमर थाती है। वर्तमान समय के अन्धकारमय वातावरण मे वह देव पुरुष हमारा कर्णधार बन सकता है क्योकि वह देश, काल जाति मजहब, ऊच नीच, काले और गोरे के सकुचित दायरो से परे हमे एक ऐसे खुले वातावरण मे जीने का मन्त्र दे गया है, जो हमारी सुख-शान्ति तथा अमर प्रेम की शाश्वत नीव की आधारशिला बन सकता है।

संवेदना

श्री राजेन्द्र कुमार गुप्ता मुरादाबाद की धर्मपत्नी श्रीमती साधना गुप्ता का १२ सितम्बर ९० को हुये निधन पर सार्वदेशिक सभा श्री राजेन्द्र गुप्ता और उनके परिवार के प्रति हार्दिक सवेदना प्रकट करते हुये दिवगत आत्मा की सदगति की प्राथना करता है।

मेवात के हिन्दुओं की दुर्दशा

हरियाणा के गुड़गाव व फरीदाबाद जिला, राजस्थान के भरतपुर व अलवर जिले के बीच का हिस्सा मेवात कहलाता है। यहा की आबादी बहुसख्यक मुस्लिम मेव हैं। कस्बो को छोड़कर गावो मे १०-१०, ५-५ घर हिन्दुओ के हैं।

मेवात क्षेत्र की प्रमुख समस्याये निम्न प्रकार हैं।

१. गोहत्या

मेवात के अनेक गावो में दिन निकलने से पूर्व हजारो की सख्या मे गोहत्या हो जाती है। इस बात का प्रमाण थानो में दर्ज रिपोर्टों मे है जो कि कभी कभी दर्ज हो जाती है। क्योकि सरकार को सूचित करने से गावो में बसे अल्पसंख्यक हिन्दुओ को जान का खतरा है।

२. धर्मपरिवर्तन

ग्रामो मे बसे हरिजन आदि को लालच व धमकी देकर उनका धर्म परिवर्तन करा दिया जाता है। अगर यही सिलसिला चलता रहा तो ग्रामीण क्षेत्रो मे बसे हिन्दू मेवात छोड़कर अन्य जगह आकर आबाद होने को मजबूर हो जायेंगे।

३ हिन्दुओ की जमीन पर जबरदस्ती कब्जा करने का प्रयास किया जा रहा है।

४ मेवात क्षेत्र के हिन्दुओ को सरकारी नौकरी मे बिल्कुल नहीं लिया जा रहा है क्योकि एम० एल० ए० व मिनिस्टर हिन्दुओ की सिफारिश नही करते।

५ हिन्दुओ को अपने धार्मिक कार्य करने का प्रचार करने की भी आजादी नहीं है। नगीना मे आनन्द कुमन के जलसे मे झगडा करना व मरोडा मन्दिर का माइक चुरा लेना इसका प्रमाण हैं।

६. हिन्दू मन्दिरो मे चोरिया कर ली जाती है।

७. बस मे सफर कर रही हिन्दू लडकियो से भद्दे मजाक व शैतानी हरकत की जाती हैं।

८. धार्मिक कार्यकर्ताओ को जान से मारने की धमकी जाती हैं।

९ दूर-दूर से हिन्दू औरतो को लाकर इस क्षेत्र मे बेचा जाता है।

१० स्थानीय एम०एल०ए०, मिनिस्टर व राजनैतिक नेता हिन्दुओ के साथ नाइन्साफी सरकारी मशीनरी पर नाजाईज दबाव डालते हैं।

११ मेवात से हिन्दू लडकियो को जबरदस्ती अपहरण कर ले जाते है।

साराश है कि अगर सरकार ने समय रहते कोई ठोस कदम हिन्दुओ की सुरक्षा का ना उठाया तो हिन्दू मेवात से पलायन करने को मजबूर होगा बल्कि हम यह कहना चाहते है कि मेवात से हिन्दुओ ने पलायन करना शुरू कर दिया है। सरकार अपने उच्चाधिकारियो से गुप्त रूप से जांच पड़ताल करवा उक्त विषयो पर जानकारी प्राप्त करे क्योकि हिन्दू इतने भयभीत है कि सार्वजनिक तौर पर अपने उपर गुजरे जुल्म को भी कहने को तैयार नही जब तक उसे सुरक्षा की गारन्टी न दी जावे। हिन्दुओ ने काफी सख्या में मेवात से बाहर आकर अपने कारोबार शुरू कर दिये हैं।

—सत्यपाल आर्य, प्रधान
आर्य वेद प्रचार मण्डल, मेवात

आर्य समाज बापरस का १९९० के लिए निर्वाचन

प्रधान—श्री कुवरपालसिंह
मन्त्री—मा० सत्य प्रकाश गौड़
कोषाध्यक्ष—प्रकाशचन्द

संघर्ष संजीवनी पुस्तक का विमोचन

२१ अक्तूबर रविवार। आर्यसमाज मन्दिर दीवान हाल में पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह जी संघर्ष संजीवनी (लाला दीवानचन्द जी की जीवन गाथा पर लिखित) पुस्तक का विमोचन एव लोकार्पण करेंगे। समारोह की अध्यक्षता स्वामी आनन्दबोध सरस्वती करेंगे।

पुस्तक की लेखिका डा० श्रीमती सुषमापाल मल्होत्रा हैं।

कार्यक्रम ११। बजे से आरम्भ होगा इस अवसर पर आर्य जगत् के प्रमुख विद्वान व नेता लाला दीवानचन्द जी के जीवन पर प्रकाश डालेंगे। अत समस्त आर्य बन्धुओ से निवेदन है कि उक्त समारोह में पधार कर कार्यक्रम की शोभा बढ़ायें।

निवेदक

श्री सूर्यदेव — डा० धर्मपाल
डा० शिवकुमार — श्री अशोक मल्होत्रा

दीप जलाओ

भारत माता कहती सबसे गौरवमय सत्पथ अपनाओ।
पूज्य पूर्वजो की यश गाथा स्वय सुनो सर्वत्र सुनाओ।।

किया सदा सम्पूर्ण विश्व ने
तीर्थ भूमि भारत का आदर।
जो भी यहा आ हुआ दीक्षित,
वही बना सम्मानित भू पर।

यही सभ्यता प्रेम पूर्वक सभी बन्धुओं को समझाओ।
भारत माता कहती सबसे गौरवमय सत्पथ अपनाओ।।

चाल विदेशी चली देश में,
भूल गये निज ताना बाना।
लगा उन्हीं के सकेतो पर,
अच्छा गीत उन्ही के गाना।

इसीलिये जो भटक गये है उन्हें प्रेम से गले लगाओ।
भारत माता कहती सबसे गौरवमय सत्पथ अपनाओ।।

अपनी चाल छोड़ जो होता,
अन्यो का अनुयायी जग में।
होता है अस्तित्व न उनका,
स्मरणीय धर्म के मग में।

आवश्यक है यही यथार्थता देशवासियो को बतलाओ।
भारत माता कहती सबसे गौरवमय सत्पथ अपनाओ।।

अपनी जैसी दिव्य सस्कृति,
कही किसी के पास नही है।
अपने सा प्रेरणा प्रदाता
सोचो तो इतिहास कही है।

कामधेनु और छोड़प्राप्त कर बकरी मत मन मे हर्षाओ।
भारत माता कहती सबसे गौरव मय सत्पथ अपनाओ।।

राम कृष्ण आदर्श जहा हैं,
उनके जसा कौन देश है।
उन्हें छोड़कर अन्यो का भजन
पैदा करता यहा क्लेश हैं।।

अत: विगत गौरव पाने को पुन वेद की दीप जलाओ।
भारत माता कहती सबसे गौरवमय सत्पथ अपनाओ।

—आचार्य रामकिशोर शर्मा
श्री राधाकृष्ण महाविद्यालय खुरजा, बुलन्दशहर

रजि० न० डी० (डी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१४.१०-१९९०) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U ९३
R 626/57 Licensed to post without Prepayment License No U 93 Post in D.P.S.O.on 12-10-1990

प्रान्तीय आर्य महिला सभा के तत्वावधान में वेद-प्रचार एवं स्वागत

क्रान्तिकारी कार्यों में महानगरी दिल्ली की विशेष भूमिका रही है। समय-समय पर आर्य सम्मेलनों द्वारा जनता में वैदिक विचारो से राष्ट्रीय चेतना का निरन्तर कार्य होता रहा है।

युग दृष्टा देव दयानन्द समाज के नव जागरण में हम नारियों के ऊपर जो उपकार किया है वह इतिहास मे स्वर्णाक्षरो से लिखे हैं। आज हमें वेद पढने और मानवीय अधिकारो से जहा वंचित थे उससे हम प्रकाशित हैं।

हमारी सभी प्रबन्ध कर्मशील वेद विदुषी बहनें अपनी अनुभूति के आधार पर मार्ग दर्शन कर रही है।

हमारा परम सौभाग्य है कि जहा डा० ऊषा शर्मा शशिप्रभा कुमार नारी जाति की भावी पीढ़ी को नयी दिशा बोध करायेंगी।

साथ ही वेदमन्त्रो की प्रतियोगिता में जो भी भाग लिया है उससे उनका भी उत्साह वर्धन किया गया है।

पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी का आगमन

हमारा परम सौभाग्य है। हमारी प्रार्थना पर पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी हमारे यहा पधारे हैं। हमारी प्रान्तीय आर्य महिला सभा की ओर से कश्मीर से आये पीडित भाइयों के सहायतार्थ कुछ तुच्छ राशि एकत्रित की है वह पूज्य स्वामी जी महाराज को भेंट रूप में दे रहे हैं जो कि उन भाइयो को आवश्यकतानुसार सामान दिया जा सके। पूज्य स्वामी जी को ७ हजार रुपये की थैली भेंट की गई।

साथ ही उन्होने आश्वासन भी दिया कि आगामी दिसम्बर मास मे होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भी तन-मन-धन से सहयोग करना है।

अन्त में अपने सभी आगन्तुक महानुभावों का हार्दिक स्वागत कर आभार व्यक्त किया गया। विशेष श्रद्धानन्द ... समाज की बहनो का अति आभार प्रदान किया जिनके प्रयत्नों से यह कार्य सफल हुआ।

अन्त मे प्रभु के आशीर्वाद एव सभी भाई-बहनो का प्यार मिलता रहे। जिससे हम सदा ऋषि-ऋण से उऋण होने मे सदा तत्पर रहे।

—सरला महेता संयोजिका
प्रान्तीय आर्य महिला सभा दिल्ली राज्य

सार्वदेशिक आर्य ....

रामलीला मैदान, नई दिल्ली-११०००२
दूरभाष ३२७४७७१ ३२६०९८५

२३ दिसम्बर से २६ दिसम्बर ९० तक दिल्ली मे होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एक संग्रहणीय स्मारिका प्रकाशित करने जा रही है। स्मारिका के माध्यम से जहां आपको प्रामाणिक, खोजपूर्ण लेख, कविताए एव अन्य स्वाध्याय की सामग्री उपलब्ध होगी वहां विज्ञापन भी भारी संख्या में होंगे। विज्ञापन दाताओं से सानुरोध प्रार्थना है कि अपने अपने विज्ञापन यथाशीघ्र भिजवाने की कृपा करें।

स्मारिका का आकार १८×२४ सेंटीमीटर होगा।
प्रसार संख्या छ हजार

विज्ञापन दर

रंगीन पृष्ठ (एक)	१००० रुपये
सादा पन्ना (एक)	५०० रुपये

● मास, मदिरा एव धूम्रपान अश्लील सामग्री के विज्ञापन स्वीकार नही होंगे।

— निवेदक :—

आनन्दबोध सरस्वती — प्रधान
डा. सच्चिदानन्द शास्त्री — महामन्त्री

डा. शिवकुमार शास्त्री
प्रधान सम्पादक (स्मारिका) ५५१६२०७

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में २३ से २६ दिसम्बर तक दिल्ली में

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से २३, २४, २५ व २६ दिसम्बर १९९० को अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली मे मनाया जाएगा। इस महासम्मेलन मे देश विदेश के लाखों आर्यों के भाग लेने की सम्भावना है। इस अवसर पर उच्च-कोटि के विद्वान् आमन्त्रित किए जा रहे हैं।

सभी आर्य बन्धुओ तथा समस्त आर्य समाजो से निवेदन है कि वे इस सम्मेलन के लिए तन-मन-धन से सहयोग दें तथा अधिक से अधिक संख्या मे इस महासम्मेलन का लाभ उठाने के लिए अभी से तैयारी कर लें।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१ वर्ष २९ अंक ४१] | दयानन्दाब्द १६६ | दूरभाष : ३२७४७७१ | वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
कार्तिक शु० ९ सं० २०४७ २८ अक्तूबर १९९०

महर्षि दयानन्द का आर्य समाज धर्म नहीं आन्दोलन है

दिल्ली में ऋषि निर्वाणोत्सव पर आर्य नेताओं के उद्‌गार

नई दिल्ली १८ अक्टूबर।

हैदराबाद के सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी आर्य नेता पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव की अध्यक्षता में आर्यसमाज के हजारों अनुयायियों ने महर्षि दयानन्द निर्वाणोत्सव बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया।

आज प्रातः ८ बजे रामलीला मैदान में वैदिक मन्त्रोच्चारण के साथ पं० यशपाल सुधांशु ने यज्ञ कराया। स्वामी जीवनानन्द जी के द्वारा ध्वजारोहण के पश्चात् आर्य वीर दल के गणवेशधारी नौजवानों ने ध्वजगीत गाया।

सभा की अध्यक्षता करते हुए पं० वन्देमातरम् जी ने कहा कि वेद और महर्षि दयानन्द के आदर्शों पर चलकर आज की समस्त समस्याओं का समाधान हो सकता है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि महर्षि दयानन्द का आर्य समाज एक सर्वतोन्मुखी आन्दोलन है। आर्यसमाज कोई धर्म नहीं, कोई सम्प्रदाय नहीं, कोई मजहब या कोई पन्थ भी नहीं। आर्य समाज सत्य सनातन वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार का सदेशवाहक है।

स्वामी जी ने आगामी २३, २४, २५ और २६ दिसम्बर १९९० को होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने को आर्य जनता से जोरदार अपील की।

इस अवसर पर सांसद श्री रामचन्द्र जी विकल, श्रीमती सुषमापाल मल्होत्रा डा० वाचस्पति उपाध्याय, डा० धर्मपाल, श्री सूर्यदेव, श्री डा० शिवकुमार शास्त्री आदि ने भाषण दिये। सार्वदेशिक न्याय सभा के प्रधान न्यायमूर्ति श्री महावीरसिंह को आर्ष साहित्य भेंट करके उनका स्वागत भी किया गया।

आर्य समाज ने देश की आजादी, शिक्षा प्रसार व जातिवाद मिटाने के लिए अद्वितीय कार्य किया

—ज्ञानी जैलसिंह

नई दिल्ली। पूर्व राष्ट्रपति महामहिम ज्ञानी जैलसिंह जी ने डा० सुषमापाल मल्होत्रा द्वारा लिखित "संघर्ष संजीवनी" (लाला दीवानचन्द की जीवन यात्रा) पुस्तक का करतल ध्वनि के बीच २१ अक्तूबर को आर्यसमाज दीवान हाल में लोकार्पण किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने की।

इस अवसर पर अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुये श्री ज्ञानी जैलसिंह ने कहा इतिहास हमारे अतीत को भविष्य के लिए जिन्दा रखता है और डा० सुषमा पाल ने लाला दीवानचन्द का यह जीवन चरित्र लिखकर एक स्तुत्य कार्य किया है। श्री जैलसिंह ने आगे कहा कि आर्यसमाज एक ऐसी संस्था है जिसने प्रारम्भ से ही जातिवाद, भेदभाव सामाजिक कुरीरितिया आदि दूर करने के लिए अद्वितीय कार्य किया है। साथ ही आर्यसमाज ने अनगिनत देशभक्त पैदा किये हैं और देश की आजादी मे भी उल्लेखनीय काम किया है। ज्ञानी जैलसिंह जी ने आह्वान किया कि हम सभी को परिश्रम करके देश को उन्नति के मार्ग पर ले जाना चाहिए, यही भारत मां की सच्ची सेवा है।

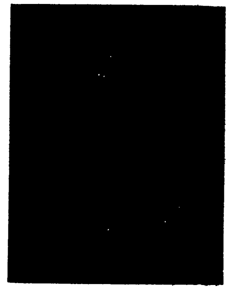
आर्यसमाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी ने लाला दीवानचन्द जी को एक महान दानवीर, समाज सेवी व कर्मयोगी बताते हुये उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की और उनके व्यक्तित्व से प्रेरणा लेकर समाज सेवा करने का अनुरोध किया।

इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुये प्रो० विजेयन्द्र स्नातक, श्री केदारनाथ साहनी, सुप्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी व सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान प०रामचन्द्रराव वन्देमातरम् आर्य प्रादेशिक सभा के प्रधान प्रो० वेद व्यास, राष्ट्रीय स्वय सेवक संघ के सर्व कार्यवाही प्रो०राजेन्द्रसिंह, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल आदि ने भी लाला दीवानचन्द जी की समाज के प्रति की गई सेवाओ का स्मरण कर उन्हे श्रद्धांजलि अर्पित की। (शेष पृष्ठ ११ पर)

सम्पादक—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

स्वामी दयानन्द सरस्वती : वर्तमान सन्दर्भ में

विमल वधावन, एडवोकेट, संयोजक कानूनी सैल सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा



पूज्य स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन का मुख्य कार्य चाहे धर्म प्रचार ही था परन्तु इसी कार्य के माध्यम से जहां उन्होंने समाज के प्रत्येक वर्ग, गृहस्थ, विद्यार्थी, स्त्री, राज कार्य करने वालों आदि के कर्त्तव्यों का उपदेश किया वहीं समाज की लगभग सभी बुराईयों और कुरीतियो का स्पष्ट विरोध किया। स्वयं भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद के शब्दों में "स्वामी दयानन्द की सबसे बड़ी विशेषता थी उनकी दूरदर्शिता। यह देखकर आश्चर्य होता है कि जिन बातों पर महात्मा गांधी ने अधिक बल दिया और उन्हें रचनात्मक कार्य कहा, प्राय: वे सभी काम स्वामी दयानन्द के कार्यक्रम में ५० वर्ष पूर्व शामिल थे। चाहे वह स्वभाषा स्वदेशी और स्वराज्य का मामला था या अछूतोद्धार, स्त्री शिक्षा और नैतिक शिक्षा का।"

इससे स्पष्ट है कि स्वामी दयानन्द मात्र धार्मिक नेता ही न थे बल्कि विचारो एवं कर्मों से सच्चे राष्ट्रवादी सामाजिक नेता भी थे। समाज सेवा के क्षेत्र में स्वामी दयानन्द और उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज ने जो कार्य किये हैं उनके महत्व से इन्कार नहीं किया जा सकता। स्वामी दयानन्द ने सारे भारतवर्ष का भ्रमण करके अपने भाषणों और शास्त्रार्थों के माध्यम से वैदिक सभ्यता एवं संस्कृति का अत्यधिक प्रचार किया। उपदेशों के बाद श्रोताओं द्वारा तरह-तरह के प्रश्नों से भी स्वामी जी का मार्ग दर्शन प्राप्त किया जाता था।

एक बार किसी भक्त ने प्रश्न किया कि पहले जैसी उत्तम मनोवांछित सुपात्र सन्तान हुआ करती थी वैसी अब क्यों नहीं होती? स्वामी जी ने उत्तर दिया कि पहले लोग वैदिक संस्कार किया करते थे, सदाचारी होते थे इसलिये उनकी सन्तान में ओज होता था, तेज होता था, और शूरवीरता होती थी। इस युग में इन संस्कारों को त्यागकर लोग इन्द्रियाराम और विषयानन्द को ही प्रधानता दिए हुए हैं, लोगों के घरों में कुरीतियों की भरमार है इसलिए उनकी सन्तान भी निस्तेज, दीन, दुखिया, उत्पन्न होती हैं।

बुलन्दशहर में एक सभा के दौरान वहां के तत्कालीन कलेक्टर ने अपना एक सेवक सभा स्थल पर भेजा और दर्शनो की इच्छा प्रकट की। उत्तर में स्वामी जी ने पूछा कि आपको किस समय अवकाश होगा। कलेक्टर महाशय ने इस पर उत्तर भिजवाया कि चार घण्टे पश्चात अवकाश ही अवकाश है। मुलाकात के समय कलेक्टर को राज्य-धर्म पर उपदेश देते हुए कहा "जिसके सिर पर एक परिवार के भरण पोषण का भार होता है उसे बड़ी दौड़ धूप करनी पड़ती है। रातों जागना पड़ता है और सिर खुजलाने का भी अवकाश नहीं होता परन्तु हजारों मनुष्यो का बोझ आपके कन्धो पर है। दीन दुखियों का संकट निवारण करना आपका कर्त्तव्य है है फिर भी आपको अवकाश ही अवकाश है, ऐसा जानकर बहुत आश्चर्य हुआ क्योंकि यह तो सर्वथा ही राज्य धर्म के विपरीत है।

स्वामी जी का विचार था कि शिक्षण कार्य को अधिकाधिक संगठित एवं सुदृढ़ करके ही इन सब बुराईयो, कुरीतियों और अज्ञानता को दूर किया जा सकता है। पंजाब के एक शहर में जब स्वामी जी रेलगाड़ी से उतरे तो एक बहुत बड़े उद्योगपति स्वयं अपनी गाड़ी लेकर स्वामी जी को लेने आए। रास्ते में एक विशाल भव्य मन्दिर की ओर संकेत करते हुए उन्होंने स्वामी जी को बताया कि लाखों रुपये स्वयं लगाकर उन्होंने इस मन्दिर को बनवाया है। इस पर स्वामी जी ने पूछा कि १०-१५ वर्ष पश्चात अगली पीढ़ी आपके अनुरूप सभ्य, सदाचारी, परोपकारी बनकर आप ही के चरण स्पर्श करती। इस पर वह सज्जन बहुत शर्मिन्दा हुए परन्तु इस घटना से यह कदापि न समझना चाहिए कि स्वामी दयानन्द का ईश्वर में विश्वास नहीं था इसलिए उन्होंने मन्दिर निर्माण का विरोध किया। ये तो स्वामी दयानन्द ही थे जिन्होंने एक ईश्वरवाद की भावना पर बल दिया। विरोध तो उन्होंने केवल उन मतमतान्तरों का किया जो सबके अनुकूल नहीं थे, जो मिथ्या थे और जिनसे आपस में विरोध बढ़ने की सम्भावना थी। स्वामी दयानन्द ने मूल रूप से ईश्वरीय ज्ञान का वैदिक प्रचार किया जिससे मानवता के वास्तविक कर्तव्यों का ज्ञान लोगों को हुआ। वेदों में ऐसा कोई भी उपदेश नहीं है जिससे भिन्न मतों में विरोध या घृणा उत्पन्न हो इसीलिए स्वामी जी ने कहा कि वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। अछूतोद्धार पर अपने उपदेश देते हुए स्वामी जी ने कहा था कि जो मनुष्य कुत्तों को छूता है, बिल्लियों से खेलता है, भैंस, ऊंटों तथा अन्य कई घृणित जीव जन्तुओं को भी छू लेता है, वह मनुष्यों को अछूत समझें, उनसे दूर भागा करें यह कितना अन्याय है कितना अधर्म है।

स्वामी दयानन्द बचपन से ही उच्चकोटि के ब्रह्मचारी थे जिन्होंने वेद की शिक्षा स्वामी विरजानन्द जी के आश्रम में प्राप्त की। एक बार स्वामी विरजानन्द जी ने आवेश में आकर दयानन्द जी पर लाठी का एक प्रहार किया तो उनकी भुजा पर कड़ी चोट आई। इस पर एक अन्य शिष्य नयन० सुखदास जी ने गुरु जी से कहा कि ये दयानन्द हमारे समान गृहस्थी नहीं है इसमे सन्यासी की आत्मा है इन्हे न तो अवाच्य कहना उचित है और न मारना। गुरु जी ने नयनसुख के वचन को स्वीकार करते हुए कहा कि बहुत अच्छा आगे से हम इन्हें आदर और प्रतिष्ठा पूर्वक पढ़ाएंगे। नयनसुख से अप्रसन्नता व्यक्त करते हुए स्वामी जी ने कहा कि तुमने मेरे लिए गुरु जी से क्यों कुछ कहा? उनका हमारे साथ कोई द्वेष तो है नहीं, यदि मारते हैं तो हित-बुद्धि से प्रेरित होकर ही मारते हैं।

आज राम जन्म भूमि बाबरी मस्जिद विवाद के कारण जो अस्थिरता की तलवार समाज के सिर पर टंगी नजर आज आ रही है, मंडल आयोग की सिफारिशों को लागू करने के कारण जो जाति युद्ध शुरू होता नजर आ रहा है और अर्थ व्यवस्था की चरमराती हालत में भी स्वामी दयानन्द के उपदेशों से स्पष्ट तथा निर्विरोध मार्ग दर्शन प्राप्त किया जा सकता है।

जैसा कि उपरोक्त मन्दिर निर्माण विरोध की घटना से स्पष्ट है कि स्वामी दयानन्द का यह दृढ़ मत था कि मन्दिरों, मस्जिदों, गुरुद्वारों आदि से किसी मत-मतान्तर के मानने वालो का उद्धार नहीं हो सकता। मानवता का उत्थान तो तभी होगा जब ऐसी सभ्यता और संस्कृति का विकास हो जिससे मनुष्यों में आपसी विरोध, क्लेश एवं दुर्भावना खत्म हो। स्वामी दयानन्द का इस मन्दिर-मस्जिद विवाद पर स्पष्ट उपदेश होता कि यदि एक विशाल राष्ट्रीय उच्च महाविद्यालय इस स्थान पर स्थापित कर दिया जाए तो स्वामी दयानन्द के शिष्यो ने प्रत्येक आर्य समाज मन्दिर को मात्र हवन या सत्संग का केन्द्र ही न बनाते हुए, साथ में विद्यालयों, औषधालयों तथा अन्य समाज सेवी कार्यक्रमों को भी इनका अंग बनाया। अब तो कानूनी सहायता केन्द्रों की स्थापना भी इन आर्य समाज मन्दिरों में होने लगी है।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा का चुनाव सम्पन्न

सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, बिहार के मुख्यमन्त्री श्री लालूप्रसाद यादव तथा बिहार के पूर्वमन्त्री रामलखन सिंह का अभिनन्दन

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के लिए बिहार सभा की ओर से

स्वामी जी महाराज को २० हजार रुपए की थैली भेंट

श्री भूपनारायण शास्त्री पुनः प्रधान निर्वाचित

पटना १४ अक्टूबर। बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा का ६४ वा वार्षिक अधिवेशन मुनीश्वरानन्द भवन नया टोला मे आज सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्यपाद स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे बिहार प्रान्त के कौने कौने से आए १११० प्रतिनिधियो ने भाग लिया। स्वामी जी ने ओ३म् ध्वजारोहण करने के पश्चात् प्रतिनिधियो को सम्बोधित करते हुए कहा कि आर्य समाज की बढ़ती हुई लोकप्रियता तथा समाज के जागरूक कार्यकर्ताओ के सतत प्रयास से हम यह आशा करते है कि इस सदी के अन्त तक विश्व मे आर्य सभ्यता का विकास होगा। बिहार के आर्यों को सगठित देखकर आर्य समाज को नई शक्ति मिलेगी, ऐसा मेरा विश्वास है। स्वामी जी ने कहा सबको सगठित रूप से बिहार मे वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए प्रयत्नशील रहना है।

इस अवसर पर प्रतिधियो की विशाल उपस्थिति मे श्री भूपनारायण शास्त्री आगामी ३ वर्ष के लिए पुन सर्वसम्मति से प्रधान चुने गये। उनके साथ मन्त्री प्रो० योगेन्द्र नारायण तथा कोषाध्यक्ष श्री रामचन्द्र प्रसाद निर्वाचित हुए।

इसके उपरान्त स्वामी जी ने बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा १४ सुसज्जित कमरो वाले नवनिर्मित अतिथिशाला का उद्घाटन किया। स्वामी जी ने इस निर्माण कार्य को वर्तमान पदाधिकारियो की कर्मठता की महान उपलब्धि कहते हुए विचार प्रकट किया कि बिहार में आर्य समाज के प्रचार माध्यम का यह स्थाई केन्द्र हो गया है।

इस अवसर पर सार्वजनिक सभा मे बिहार सभा के अधिकारियो की ओर से श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती, मुख्यमन्त्री श्री लालूप्रसाद यादव और राज्य के पूर्वमन्त्री श्री रामलखन सिह का अभिनन्दन किया और मानपत्र अर्पित किया।

मुख्यमन्त्री श्री यादव ने कहा सामाजिक कुरीतियो के उन्मूलन, आडम्बर पाखण्ड और अन्धविश्वासो को दूर करने में आर्य समाज की क्रान्ति चिरस्मरणीय रहेगी। उन्होने अपनी वचनबद्धता को दोहराते हुए कहा कि बिहार मे आर्य समाज के कार्य मे हर प्रकार की रुकावट को सरकार दूर करेगी। स्वामी जी महाराज ने उन्हे अपना आशीर्वाद देते हुए कहा कि आर्य समाज एक सार्वभौमिक आदोलन है। इसने भारतीय स्वतन्त्रता सग्राम मे सर्वाधिक त्याग और बलिदान दिया है किन्तु कभी भी कोई अधिकार नही मागा। समारोह मे श्री रामलखनसिंह यादव, भूपनारायण शास्त्री तथा अन्य कई लोगो ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए।

सभा द्वारा अभिनन्दन कार्यक्रम के अन्तर्गत सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी द्वारा निम्न विद्वानो का अभिनन्दन किया गया और उन्हे एक-एक शाल भेंट की—

१—प० वासुदेव शर्मा	२—श्री रामलखन सिंह यादव
३—प० गगाधर शास्त्री	४—प० सवेन्द्र शास्त्री
५—प० उमाकान्त शास्त्री	

अन्त में प्रो० श्यामनन्दन शास्त्री ने सभी अतिथियो और प्रतिनिधियो का धन्यवाद करते हुए सभा को विसर्जित किया।

प्रचार विभाग
बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री द्वारा हालैण्ड में वैदिक प्रचार

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा. सच्चिदानन्द शास्त्री गत ६ अक्टूबर को हालैण्ड के दौरे पर रवाना हो चुके हैं। वेद प्रचार के उद्देश्य से लगभग ४ हफ्ते की अपनी विदेश यात्रा के दौरान जहा शास्त्री जी के द्वारा हालैण्ड की विभिन्न आर्य समाजो में वैदिक उपदेश दिए जायेंगे वहीं आर्य समाज की गतिविधियो के अधिकाधिक प्रचार के लिए भी हालैण्ड के आर्य जनो को मार्ग दर्शन मिलेगा। शास्त्री जी की वापसी नवम्बर १९९० के प्रथम सप्ताह मे अपेक्षित है। इस बीच यदि सम्भव हुआ तो वह गयाना, सूरीनाम, व ट्रिनीडाड की आर्य समाजो का भी निरीक्षण करेंगे।

वैदिक प्रचार की दृष्टि से शास्त्री जी की इस विदेश यात्रा का आर्य-जगत को विशेष लाभ होगा। डा सच्चिदानन्द शास्त्री वहा अपने साथ वैदिक तथा आर्य साहित्य भी काफी मात्रा में प्रचारार्थ ले गए हैं।

प्रो० शेरसिंह की आर्य जनता से अपील

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य सम्मेलन को सहयोग दें

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा नई दिल्ली मे आयोजित २३ से २६ दिसम्बर १९९० तक अन्तर्राष्ट्रीय आर्य सम्मेलन को सफल करने के लिए हरयाणा के सभी आर्यसमाजो तथा आर्य संस्थाओ से अनुरोध किया गया है कि वे इन तिथियो मे अपने उत्सव आदि के कार्यक्रम न रखे और इस सम्मेलन को सफल बनाने मे तन, मन तथा धन से पूरा सहयोग करे।

हैदराबाद आर्य सत्याग्रहियों का सम्मान १७ नवम्बर को होगा

सन् ३८-३९ में ऐतिहासिक आर्य सत्याग्रह में हरियाणा प्रदेश से अन्य प्रदेशो से अधिक संख्या मे सत्याग्रही निजाम की जेलो में गये थे। भारत तथा हरयाणा सरकार ने उन्हे स्वतन्त्रता सेनानी घोषित करके पेन्शन देकर सम्मानित किया है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा की ओर से भी इन्हें १७ नवम्बर को रोहतक मे सम्मानित करने का निश्चय किया है। इस अवसर पर एक स्मारिका भी प्रकाशित की जायेगी।

स्वामी अग्निवेश : आरक्षण आर्यजनता सावधान

राजपालसिंह शास्त्री की लेखनी से सम्पादक "मधुरलोक"

आर्य (हिन्दू) जनता के मस्तिष्क मे एक बात डोल रहा है कि ये आरक्षण के नाम पर कुछ-कुछ ढोंगी गेरूवे वस्त्रधारी, कम्युनिस्टो के दलाल छद्मवेशा अग्निवेश कब से गरीब और बन्धुआ मजदूरो के, हितैषी बने। आज इनके पास लाखा रुपया बैंको में जमा है और ये इस अवसर की खोज मे हैं कि सार्वदेशिक सभा इन्हे भूमि दे द और अपना रुपया लगाकर भवन निर्माण करा दें। और आपको रहने को स्थान दे दिया जाय। सभा के नेता भी इन रगे सियारो से चिरकाल से भली-भांति परिचित हैं। आज ये गरीब बन्धुआ मजदूरो का नेता बनकर विदेशो से धन लाने के लिए यात्रा करते रहते हैं।

आरक्षण के पक्ष का स्वांग क्यों ?

पहले आपको आर्य सभा से बहिष्कृत किया तत्पश्चात् आपके काले कारनामो से परेशान हो पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा ने निकाला और फिर निकाल दिया सार्वदेशिक सभा नई दिल्ली ने और अब श्री चन्द्रशेखर जी ने आपका बिस्तर बिस्तर से सारा समान निकाल कर बाहर फैंक दिया। अब आप घर के न रहे न रहे घाट के। अब आपन फिर आर्यसमाज की शरण लेनी चाही। कभी दिवराला काण्ड के नाम से सार्वदेशिक सभा को आगे रखकर नौटकी की। अब भारतीय आर्य समाज का नाम लेकर नया हथकण्डा अपनाया। लेकिन आर्य भाईयो को यह ध्यान और ज्ञान होना चाहिए कि वे अग्निवेश पजाब और सार्वदेशिक सभा के द्वारा आर्य समाज से सदा के लिए निष्कासित है। आज टेलीविजन, रेडियो और समाचार पत्रो के माध्यम से जनता मोर्चा सरकार इनके मुह से यह कहलवा कर जनता को भ्रम मे डाल रही है कि आर्य समाज की घोषित आरक्षण नीति के पक्ष मे है। यह बात ठीक है—आर्य समाज का सगठन आरक्षण के विरोध मे नहीं है। उसका विरोध जातिगत आरक्षण न देकर आर्थिक पिछड़ेपन को आधार की मान्यता देना है।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान माम्य श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने प्रेस वक्तव्य द्वारा तथा जन समाओ के द्वारा आरक्षण नीति की स्पष्ट घोषणा की है। इसके बाद भी जन मोर्चा सरकार के नेता श्री वी० पी सिंह इन ढोंगी साधुओ के द्वारा आर्य समाज के नाम को बदनाम कर गलत बयानबाजी करा कर जनता को सरासर धोखे में डाल रहे हैं। इस छल प्रपच की नीति का ही दुष्परिणाम है कि सारा देश आज गृह-युद्ध की आग मे जल रहा है। छात्र तो आत्मदाह कर ही रहे हैं लेकिन सरकार भी आत्मदाह कर चुकी है। उसकी चमडी जल चुकी है और कोई भी इफेक्शन (जहरीला) कर सकता है। नेताओ को क्या पता था कि—

आरक्षण की जेवडी बन गई काला नाग।
बस में रेल—जहाज मे लगी हर तरफ आग॥
तेल छिडक कर अपने को कुछ युवक जलाते।
नेताओ की नीद हराम अपने को क्या समझाते॥

काठ की हडिया देर तक नही चढा करती। अग्निवेश जैसे ढोंगिया के बयानो के सहार कितने दिन झूठे बयान कराये जायेंगे।

आर्यसमाजियो सावधान

इस छद्मवेशी साधु ने पजाब सभा को खाया गुरुकुल कागडी को बरबाद किया आर्य सभा के नाम पर राजनीति की पैंतराबाजी में आर्य समाज के यश को मिटटी मे मिला दिया ! एक लोकदल मे गया और एक गया कांग्रेस मे और गये स्वय जनता दल मे। इनके झूठे बयानो से श्री वी० पी० सिंह जी से सौदा चल रहा है। इसलिए आर्य समाज को दाव पर लगा दिया।

आर्यो ! जब जब स्वामी दयानन्द और आर्य समाज पर इस प्रकार के बादल की घटायें छाई हैं। आप लोगों ने उससे सघर्ष करके सामना किया है। देश खतरे मे है। हमे और आपको बडी सूझ का परिचय देना है। और ऐसे व्यक्तियो को आय समाज के मच से दूर हो रखना है। जो आरक्षण के नाम पर आर्य समाज के द्वारा अपनी छवि बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं।

मैं स्वय इनके लच्छेदार भाषणो को सुनकर प्रभावित था। मेरे जैसे अनेक आर्य मार्ग-भ्रष्ट हो गए। जब इनके कारनामे देखे तो आर्यजनता को सचेत करना अपना परम कर्त्तव्य समझता हू। अत जागते रहो।

आरक्षण या संरक्षण—

आज इस आरक्षण के नाम पर गडे-सडे मुर्दे भी खडे हो गए है और आरक्षण की सौदेबाजी सरकार से कर रहे हैं। जातिगत आरक्षण मे कुछ सवर्णों को छोड कर देश की लगभग ६५० जाति-बिरादरियो के नाम हैं। ४०-४२ वर्षों मे सरकार ने जातिगत आरक्षण की नीति अपनाई, आज समाज की मान्यता है कि जातीय या वर्गवाद को बढावा न देकर आर्थिक पिछडेपन के आधार पर सभी को आरक्षण मिलना चाहिए। राजनीति की वोट बटोरने वाली नीति ने एक नए वर्ग सघर्ष को जन्म दिया है। आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द छुआछूत और भेदभाव की नीति से मानवता को नया रूप प्रदान किया था। इसी का बिगडा रूप महात्मा गाधी ने "हरिजन" के नाम पर एक नया मोड दिया था। इस कडवे घूट को भी राष्ट्र ने प्रेम से पिया। इस आरक्षण की ओट लेकर ईसाई और मुसलमान भी उभर कर खडे हो गये हैं। और उन्होने भी सरकार से माग की है धर्म से परिवर्तित होकर जो हिन्दू ईसाई और मुसलमान बनें उन्हे भी आरक्षण के नाम पर अनुसूचित और जनजातियो वाली वे सुविधायें मिलनी चाहिए। हमारी यह मान्यता है कि उन्हें सुविधा अवश्य दी जावे।

परन्तु हमारी यह भी माग है कि जिन ईसाईयो की पी० एल० ४८० के नाम पर जो धन विदेशो से आता है उसमें २० प्रतिशत सरकार खर्च करती है और ८० प्रतिशत ईसाईयो के पादरी आर्य (हिन्दू) जनता को धर्म परिवर्तन करने पर उस राशि का दुरुपयोग करते है। आरक्षण नीति मे वो धन राशि भी सरकार अपने हाथ में लेकर सम्पूर्ण देश के गरीबो पर सरकार स्वय खर्च करे। यही नीति मुसलमानो के लिए भी लागू होनी चाहिए जो पेट्रो डालर मुस्लिम देशो से मुसलमानो के लिए आता है और मुसलमान अपने पर ही खच करते हैं। उसे भी सरकार अपने हाथो मे लेकर समान रूप से मानवता के लिए व्यय करे।

छापा मारकर पुलिस ने पूरी मालगाडी कब्जे में कर ली

सैकड़ों बैल जब्त

समकालीन के तारीख ११ सितम्बर के अक मे बसई ता० १० की एक अच्छी खबर श्री सजय बोरा ने दी है। उस खबर का अनुवाद देना ही ठीक समझ कर दिया जा रहा है।

बसई रेल पुलिस ने आज प्रात सवेरे गुजरात से आई हुई एक मालगाडी पर छापा मार कर गैरकानूनी कतल के लिए लाये गए छ सौ से अधिक सशक्त बैल जब्त किये और कतल के लिए देवनार ले जाये जाने वाले पशुओ के लिए एक नियमित प्रचलित षड्यन्त्र को उजागर किया।

महाराष्ट्र पशु परिरक्षण कानून धारा ६,९ और ११ के अनुसार खेती के लिए काम आने वाले और जवान बैलो की कतल एक दडपात्र अपराध है। इस तरह की कतल के लिए जानवरो की ढुलाई करने वाला मनुष्य भी अपराधी ठहरता है। जिस किसी स्थान पर इस प्रकार का अपराध किया

(शेष पृष्ठ १० पर)

२८ अक्तूबर १९९०　　　सार्वदेशिक साप्ताहिक　　　५

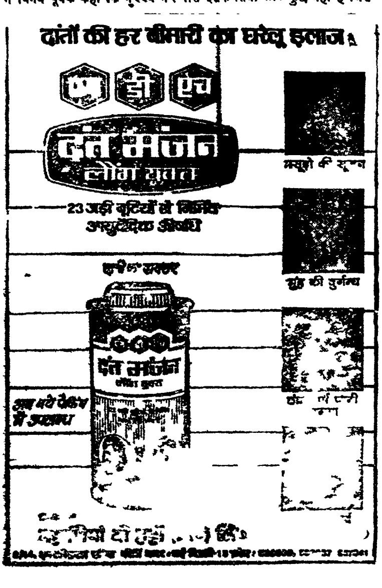
ऋषि दयानन्द के बाद कौन ?

प० ब्रह्मानन्द "प्राजाद" सिद्धान्ताचार्य बम्बई

१८ वी शताब्दी मे एक ओर भारत वर्ष की स्थिति एक गीले गुथे आटे की भांति थी जिसे दोनो ओर से भय था यदि बाहर रखें तो कौवे और अन्दर रखें तो चूहे दोनो ही खाने की ताक मे थे। भारतवासियो पर अंग्रेजो के अत्याचार वेद धर्म सस्कृति शिक्षा आदि को बदलने का बृहद कुत्सित आयोजन परतन्त्रता आदि से सर्वत्र देशवासी त्रस्त हो चुके थे इन्हे इनसे उबारने वाला कोई दृष्टिगोचर नही हो रहा था सर्वत्र निराशा छायी थी। अविद्यान्धकार, ढोंग पाखण्ड मूर्तिपूजा सतीप्रथा पर्दाप्रथा बाल विवाह स्त्री शुद्र को विद्या व शिक्षा-सूत्र से वंचित रखना पीड़ित वर्ग की वेद विरुद्ध निन्दनीय कार्य तथा कथित धर्म नेताओ द्वारा धर्म की नित-नूतन कल्पित धर्म की व्याख्या एवं उस पर आचरण के लिए विवश धर्मप्रिय मानव समुदाय पूर्णत ऊब चुका था ऐसे विषम समय मे ईसाइयो द्वारा हिन्दुओं का ईसाईकरण लालच या भय से भी जारी था। हमारे गौरवमय प्रेरणास्पद इतिहास को छीनालेदर कर इसमे कपोल कल्पित इतिहास की रचना भारतवासियो को पूनत ईसाई बनाने के लिए कुचक्र को चलना तथा देशवासियो को धर्म सस्कृति सदाचार सहिष्णुतादि से दूर कर पूर्ण भौतिक वादी बनाने का दुष्प्रयास अविराम चल रहा था।

वही दूसरी ओर मथुरा की एक जीर्णशीर्ण कुटिया मे कृशकाय प्रज्ञाचक्षु व्याकरण सूर्य गुरुवर्य स्वामी विरजानन्द से आदित्य बाल ब्रह्मचारी वेदज्ञ स्वामी दयानन्द सरस्वती जी गुरु की सेवा कर उनसे शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। शिक्षा पूर्ण हुई दीक्षा भी हो चुकी। पुरातन परम्परानुसार स्वामी दयानन्द ने अपने गुरु की प्रिय वस्तु लौंग लाकर उनके चरणो मे सादर अर्पण कर विनम्र हो उनसे विदा लेने की विनती की। गुरु विरजानन्द जी ने कहा कि दयानन्द हमे तुमसे इन लौंगो की दक्षिणा नहीं चाहिए। दयानन्द ने विनय पूर्वक कहा कि गुरुदेव मेरे पास इसके सिवा और कुछ नही है जिसे मैं आपके चरणो मे भेंट कर सकू। स्वामी विरजानन्द जी ने गम्भीर स्वर मे कहा कि दयानन्द तुम्हारा जीवन तुम्हारे पास है जाओ इसे वेदोद्धार देश एवं जन कल्याण मे लगाकर भारत से अविद्यान्धकार कुरीतियां कुप्रथाएं अशिक्षा दूर करो। भारत मां परतन्त्रता की बेड़ियो मे जकड़ी है उसके बन्धन काटो। बस मुझे दक्षिणा देना चाहते हो तो इसे स्वीकार कर हमे दक्षिणा दो। स्वामी दयानन्द ने गुरु जी की आज्ञा शिरोधार्य कर उनका आशीर्वाद प्राप्त कर कार्य क्षेत्र मे उतर आए।

जिस समय आचार्यप्रवर गुरुदेव दयानन्द कार्य क्षेत्र मे आए उस समय सारा ससार एक तरफ था और दूसरी ओर निर्भीक ऋषि दयानन्द ने वेद और सत्य का प्रकाश लेकर अविद्यान्धकार की पाखण्ड नगरी मे आग लगा दी बस फिर क्या था चारो ओर से कुढ बैठे लोगो को और भी अवसर मिल गया और उन सबने मिलकर ऋषि को मिटाना चाहा किन्तु उनका दुर्भाग्य कि आदित्य ब्रह्मचारी दयानन्द से उन्हे मुह की खानी पडी। इतिहास इस बात का साक्षी है कि गुरुदेव दयानन्द ने सर्वप्रथम हरिद्वार मे कुम्भ मेले के अवसर पर पाखण्ड खण्डिनी पताका लहराकर कोपीनधारी दयानन्द ने तथा कथित धर्मविध्वंसको को शास्त्रार्थ को चुनौती दी इसी प्रकार काशी शास्त्रार्थ मे वहा की पण्डित मण्डली को मुह की खाना पडी थी ऋषि के यक्ष प्रश्नो का उत्तर किसी से भी देते न बन पडता था। सर्वत्र ऋषि दयानन्द की विजय हो रही थी। ऋषि ने कुरीतियो कुनीतियो अशिक्षा अविद्या वेदो के दुष्प्रचार के बढते हुए दुष्प्रभाव का समूलोच्छेदन किया। परिणामत विरोधियो की सख्या म बढ गयी इसमें अब हिन्दु मुस्लिम ईसाई आदि अनेक प्रकार के मत सम्प्रदायो के असख्य अनुयायी थे। परिणामत इसका प्रकोप ऋषि को कई बार विष के रूप में मिला किन्तु ऋषि ने उफ तक न की कहते हैं कि भगवान शकर ने देवो के हितार्थ एक बार गरल पान किया था किन्तु ऋषि ने ससार के कल्याणार्थ अनेक बार विषपान ही नही अपितु अनेक अन्य भी असहनीय कष्टो को सहा किन्तु अपने पथ पर सर्वदा अडिग रहे। ऋषि दयानन्द ने सत्य को आधार बना ईश्वर को अपना रक्षक मान कर ही राजस्थान मे कहा था कि यदि अज्ञानी जग मेरे जीते जी मेरी इन अंगुलियो को काट कर बत्ती का काम क्यो न ले तो भी मैं सत्य धर्म से न हटूंगा। राजन यदि मै चाहू तो आपकी राज्य की सीमा को एक दौड मे पार करलू किन्तु परमेश्वर के उस असीम राज्य मे यदि मैं जन्म जन्मान्तर तक भी दौडता रहू तो भी उससे पार न हो सकूंगा। और इसी पर ऋषि दयानन्द मे अडिग रह कर देश कल्याणार्थ अनेकस कार्य किए। जब हमारे देशवासी पराधीनता मे भी सोते थे तो ऋषि रातो को जाग कर देश कल्याण का उपाय सोचते थे। उन्होने विचारा कि यदि इस देश से अंग्रेजी राज्य समाप्त हो जाए और स्वदेशी राज्य आने पर पुन सत्य धर्म न्याय शिक्षा समाज सुधारादि कार्य हो सकेगा। अत ऋषि ने प्रच्छन्न रूप से अंग्रेजो को खदेडने का बीडा उठाया। और तत्कालीन राजाओ महाराजाओ के पास जाकर सिंह का माद मे सुप्त सिंह को जगाया। अनेक क्रान्तिकारियो के लिए मार्गदर्शक बने सन् १८५७ की स्वतन्त्रता वाली सुप्त अग्नि का पुन प्रदीप्त कर देशवासियो को स्वतन्त्रता कराने का बिगुल बजा दिया परिणामत मातृभूमि की बलिवेदी पर 'वय बलिहृता स्याम की वेदोक्ति को सार्थक करते हुए अनेक क्रान्तिकारियो ने स्वदेशी राज्य हेतु अंग्रेजो से लोहा लिया। ऋषि ने सर्वप्रथम स्वदेशी राज्य का नारा लगाया इस बात का साक्षी ऋषि का अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश है। परिणामत बाल गंगाधर तिलक ने (इन्होने पूना में ऋषि दर्शन किया और अपने प्रश्नो का यथेष्ट उत्तर भी पाया) जैसे सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारियो ने स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। की सार्थकार सार्थक घोषणा कर क्रान्तिकारियो की अग्नि में घी का काम किया। यद्यपि कहने को तो आज इतिहास यही कहता है कि स्वतन्त्रता की जन्म दाता भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस है कि जिसके सस्थापक स्वय एक अंग्रेज (सर ए० ओ० ह्यूम अवकाश प्राप्त जिला जज इटावा उ० प्र०) थे किन्तु इतिहास वालो को शायद यह तथ्य



नही मालूम कि सत्यार्थ प्रकाश की रचना कांग्रेस के जन्म से कई दशक पूर्व की है तब तो शायद कांग्रेस के रूप का स्वप्न मे भी किसी कांग्रेस के न रहा हो।

ऋषि दयानन्द ने अपनी दृष्टि चारो ओर रखी। हिन्दुओ की हो रही दुर्दशा को सुधारने का आजीवन निस्पृह भाव से कार्य किया।

ऋषि के पश्चात् ऋषि की आत्मा गुरुदत्त, लेखराम स्वामी श्रद्धानन्द जैसे आर्य-शिरोमणियो में रहकर सर्वदा समाज सुधार करती रही। ऋषि ने अपने समय मे ही पुण्यनगरी मुंबई मे आर्य समाज की स्थापना करते हुए वह सर्वथा स्पष्ट कर दिया था कि ससार का उपकार करना, सत्य का प्रचार करना, उसको ग्रहण, करना असत्य का परित्याग, एकमेव निराकार परमेश्वर की उपासना, वेद को ही ईश्वर प्रदत्त अपौरुषेय ग्रन्थ का मानना, समान एव यथा योग्य व्यवहार, अविद्या का नाश करना कहा था। और इस समाज के प्रत्येक सदस्य को नियमानुसार आचरण तथा ससार को वेदोक्ति 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के अनुसार पुन आर्य बनाना बताया था। ससार के समस्त विद्वानो ने आर्य समाज के इन सार्वभौम दशो नियमो को नतमस्तक हो स्वीकार किया क्योकि ये नियम अकाट्य है। और उसी ऋषि की ही अहर्निश सेवा का ही पुण्य प्रताप है कि आज भी उपरोक्त नियमो को सारा ससार निर्विरोध किसी न किसी रूप मे स्वीकार करता है।

परन्तु दुर्भाग्य हमारा यही हैं कि जब से आर्यों में आपसी भेद-भावनाए, कुर्सीमोह पद-प्रतिष्ठा लोभ आदि को स्वार्थी समाज विरोधी, प्रगति अव-रोधक भावनायें पनपी बस तभी से आर्यों को उच्चतम स्थिति भी पतन की अथाह खाई की ओर बढ चली है। पहले के आर्य समाजी सर्वदा समाज को उन्नति मे ही अपनी उन्नति समझते थे और अपना सर्वस्व समाज के हितार्थ अर्पण कर अपने को धन्य समझते थे किन्तु आज तथा-कथित आर्यजन आर्य समाज का समूलोच्छेदन क रने मे जुटे हैं। इन्हें बस पद, प्रतिष्ठा, मान, झूठी वाहवाही, चाटुकारिता खूब भाती है। ये हमेशा होती रहे समाज चाहे किसी भी गर्त मे चला जाए इन्हे इसकी किंचितमात्र भी चिन्ता नहीं है। युवाशक्ति आज जो कि राष्ट्र की रीढ है उसका ह्रास इन्ही अधिकारियो द्वारा आज हो रहा है उन्हे आगे न लाकर उन्हे उत्साहित करने की बजाए हत्सोहित कर रहे है परिणामत हमारे नवयुवक दिशा विहीन होकर अनेक अनैतिक समाज विरोधी निंदनीय दुष्कार्यों से जूझ रहे हैं और इसका परि-णाम भी इन्ही को भोगना पडेगा यह ध्यान रखना चाहिए।

कहते है कि पहले आर्य समाजी होने पर न्यायालय मे न्यायाधीश यह कहते हुए अपना न्याय आर्य के पक्ष मे इसीलिए देता था कि आर्य सर्वदा सत्य बोलत हैं। किन्तु आज न एसे आर्य रह गए तो फिर न्यायाधीश ही कहा से मिलेंगे?

ऋषि के पश्चात् और आजादी के पूर्व आर्य समाज मे जो उत्साह था वह आज आगे क्योंकर ठण्डा होता जा रहा है। हम ऊपर उठने उन्नति करने की बजाए नीचे और अवनति की ओर क्यो अग्रसर होते जा रहे हैं? क्या इसका कारण हमारी अदूरदर्शिता समाज विरोधी कार्य, अनेक निन्दनीय कार्य नहीं है? क्या हमने कभी मिलकर अपनी हो रही अवनति पर विचारा है? या फिर समाज मे आकर उत्सव मे हार पहन लेना, चुनाव मे तिकडम भिडा कर पद पाना, और पदाभिमान मे आकर समाज की अवनति करना ही सीखा है? प्रभु हमे सद् बुद्धि दे और हम सन्मार्ग पर चलें। आज ऋषि की दिव्य आत्मा मोक्ष पाकर भी शायद सुखी न होगी क्योकि उसकी लगाई पुष्प वाटिका आज वीरान होती जा रही, पुष्पो की सुगन्धी समाप्त हो रही है। आज यदि हम इसकी दुर्दशा देखते हुए भी यदि आखें बन्द किए हुए हैं तो हमे धिक्कार है। अस्तु

ऋषि दयानन्द ने सारे ससार को जगा दिया और एक नई राह दिखाई किन्तु आज फिर सारा ससार सो रहा है उसे कौन जगाएगा? मतमतान्तरो की प्रबल आंधी १८ वी शताब्दी से भी दूने वेग से आज बह रही है, अविद्या फिर अपने पाव पसार रही है, कुप्रथाए फिर प्रारम्भ हो रही है (दिवरालादि सतीकांड) आज देश पराधीन तो नही है किन्तु इसका भय समाप्त है क्या? आज यही यक्ष प्रश्न बार-बार सामने आता है कि ससार का उपकार करने वाली आर्य समाज आज स्वय अवनति की ओर बढ रही है तब से ससार का उपकार कैसे होगा? क्या हमारे आर्य जन आपसी बैर-भाव, लोभवृत्ति त्याग कर समाज कल्याण के लिए क्या फिर से ऋषि पथ के अनुयायी बनेंगे हमे विश्व को आर्य बनाना है, किन्तु पहले स्वय को। अत अब आर्यों एक दयानन्द से काम नही चलेगा समय की मांग के साथ आज घर-घर दयानन्द, गुरुदत्त लेखराम, श्रद्धानन्दादि प्रभृति महात्माओ नेताओ की आवश्यकता है।

सम्पूर्ण वेद भाष्य १० खण्ड ८ जिल्द में मूल्य ५५०) रुपए

ऋग्वेद भाग १ से ५ तक (महर्षि दयानन्द)	२६०)
यजुर्वेद भाग-६	७०)
सामवेद भाग-७	५०)
अथर्ववेद भाग-८	५०)
अथर्ववेद भाग ९+१०	६०)
वेदो का भाष्य का नेट मूल्य—	४९०) रु० है।

अलग-अलग लेने पर १५ प्रतिशत कमीशन दिया जायेगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नई दिल्ली-२

आरक्षण और आत्मदाह

—डा० सुषमा—

सात अगस्त को प्रधानमन्त्री विश्वनाथ प्रतापसिंह की सरकार द्वारा मंडल आयोग की रिपोर्ट को लागू करने की घोषणा के दुष्परिणाम सम्पूर्ण राष्ट्र को लगातार भोगने पड़ रहे हैं। विभिन्न जातियों के बीच जैसे तनाव और संघर्ष की कभी न गिरने वाली दीवार खड़ी हो गई है। आरक्षण विरोधियों और आरक्षण समर्थकों ने जैसे आपस में युद्ध करने की ठान ली है। जन-जीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। लगता है जैसे वह फिर से टुकड़ो में बट गया है और सभी अपनी-अपनी जातियों की पहचान मे बटने को विवश हो गए बीच दूरी को बढ़ा दिया है। राष्ट्र की सम्पत्ति का जो नुकसान हुआ है, वह तो समय के साथ पूरा हो जायेगा लेकिन जो बहुमूल्य जीवन इस आरक्षण की बलिवेदी पर परवान चढ़ गए हैं उन्हे कभी भी वापिस लौटाकर नही लाया जा सकेगा। बच्चे और युवावर्ग जो देश का भविष्य है आज 'आत्मदाह' जैसे भयावह कदम उठा रहे हैं। 'आत्मदाह' की घटनाओ मे जिस प्रकार वृद्धि हुई है उसे देखकर ऐसा लगता है जैसे 'आत्मदाह' और 'आरक्षण' एक दूसरे के पूरक हो गए हैं।

'आत्मदाह' एक पाप है। फिर ,क्या कारण है कि यह पाप बढ़ता जा रहा है। 'आरक्षण' के नाम पर 'आत्मदाह' के प्रयास दिन प्रतिदिन बढ़ते ही जा रहे है। शायद इसका सबसे बड़ा कारण उनकी भविष्य के प्रति आशंका है। इस आशंका ने ही उनके जीवन को निराशा और असन्तोष की भावना ,से भर दिया है। देश में पहले से ही बेरोजगारी बढ़ रही थी। उस पर जाति के आधार पर 'आरक्षण' की घोषणा ने उनके गिने-चुने अवसरो को भी छीन लिया है। इसी आशंका ने उनके मन में कुंठा को पनपने का अवसर दिया है। कहते हैं "आशा जीवन है तो निराशा "मृत्यु" कहो इसी निराशा ने तो उन्हें 'आत्मदाह' जैसे रास्ते पर चलने को बाध्य नही कर दिया ? यदि ऐसा न होता तो वे अपने पवित्र आन्दोलन को 'आत्मदाह' के पाप से कलंकित न करते।

आज आवश्यकता इस बात की है कि सरकार वर्तमान स्थिति का अवलोकन करे। सोचे, कि क्या देश स्वतन्त्र होने के इतने वर्षों में कभी भी देश की स्थिति इतनी अधिक बिगड़ी ? क्या देश के बच्चों ने 'आत्मदाह' जैसे भयंकर कदम उठाए ? इस 'आत्मदाह' के अनेक प्रयासों और उससे हुई मौतों ने प्रत्येक संवेदनशील व्यक्ति को भीतर से झकझोर दिया है। लेकिन विचारणीय बात यह है कि किसी भी व्यक्ति द्वारा इस प्रकार के कदम उठाना क्या उचित है ? इस पर गम्भीरता से सोचें तो एक बात तो स्पष्ट रूप से सभी एकमत होकर कहेंगे कि इस पाप कदम को नही उठाना चाहिए। गलत और अन्याय का विरोध करना प्रत्येक प्राणी का धर्म है। लेकिन उसके लिए सही मार्ग चुनना होगा। उस सही मार्ग पर चलकर ही तुम अपना कर्म का फल प्राप्त कर सकते हो। अन्यथा गलत राह पर चलने के खतरे के दुष्परिणाम तुम्हें ही भुगतने होगे। इस सम्बन्ध में संस्कृत का निम्न श्लोक उद्धृत किया जा सकता है

'मनसा चिन्तयन् पापं कर्मणा नाभिरोचयेत।
तत्प्राप्नोति फलं तस्य त्येव धर्म विदो विदुः॥

अर्थात् यदि मन में पाप का विचार आए तो उस पाप को आचरण में नहीं लाना चाहिए। धर्म के जानने वाले कहते है कि जब कोई कर्म किया जाए तभी उसका फल मिलता है।

आज सरकार को 'आरक्षण' और उससे उत्पन्न 'आत्मदाह' की समस्या के हल को सर्वोपरि स्थान देना चाहिए। उन्हें चाहिए कि प्रत्येक मनुष्य को समान अवसर, समान अधिकार और समान रूप से आगे बढ़ने के अवसर मिले। जहां तक अनुसूचित और पिछड़ी जातियों की सामाजिक स्थिति को सुधार कर उन्हें उच्च वर्ग के बराबर लाने की बात तो समझ में आती है लेकिन जाति के आधार पर नौकरियों में आरक्षण की बात हमारी समझ में नहीं आती। क्या इस प्रकार का 'आरक्षण' जातिगत खाई को पाटने की जगह उसे गहरी करने का प्रयास नही है ? सरकार को 'आरक्षण' शब्द को जड़ से उखाड़ फेंकना होगा तभी वह जातिवाद को मिटा पाएगी। अन्यथा यह आग भड़कती रहेगी और हमारे निर्दोष और और मासूम बच्चे इस आग में झुलसते रहेगे।

आवश्यकता आज इस बात की है कि वर्तमान सरकार को ही जाति पर आधारित आरक्षण से उत्पन्न समस्या का हल ढूढना चाहिए। इस समय जब कोर्ट ने भी सभी स्थगन आदेश पारित कर दिए हैं तो उसे समय मिल गया है कि वह 'राम के आदर्श राज्य' पर विचार करे। प्रभु राम ने जनमत के कारण ही अपनी पवित्र पत्नी सीता का त्याग कर दिया था। राज्य की भलाई के लिए निजी सुखों को तिलांजलि दे दी थी। उनके लिए जनमत संग्रह ही प्रमुख था। आज सरकार को भी उन्ही की राह पर चलकर जनमत संग्रह द्वारा इस समस्या का समाधान ढूंढना चाहिये।

अन्त में 'आत्मदाह' करने वाले बच्चों से यही कहना चाहूँगी कि ऐसे पाप कदम को न उठाएं। तुम राष्ट्र की आशा के दीपक हो। उसका जीवन हो उसकी आंखें हो और उसका भविष्य हो। तुम्हें ऐसा कोई भी कदम नहीं उठाना चाहिए जो राष्ट्र की आशा के दीपक को बुझा दे। उसे अन्धा बना दे। जिससे उसका भविष्य अन्धकारमय हो जाए। एक बात कभी मत भूलना कि बड़ी से बड़ी मुसीबत में भी जीवन के प्रति निराशावादी दृष्टिकोण मत अपनाना। जीवन में हतोत्साहित मत होना।

क्योंकि उत्साह बड़ा बलवान होता है। उत्साह से बढ़कर दूसरा कोई बल नही है। जो उत्साही लोग है उनके लिए इस संसार में कोई भी वस्तु दुर्लभ नही है। श्री बाल्मीकि रामायण में लक्ष्मण सीता वियोगातुर राम से निम्न श्लोक में यही कहते हैं—

उत्साहो बलवानार्य नास्त्युत्साहत्परं बलम्।
सोत्साहस्याति लोकेऽस्मिन्न किञ्चिदपि दुर्लभम्॥

अतः प्यारे बच्चो और युवकों उत्साह के बल पर तुम आगे बढ़ो। तुम्हारी विजय अवश्य होगी।

आर्य समाज अमर है।

आचार्य प्रेमभिक्षुः (सम्पादक 'तपोभूमि' मासिक)

आगरा से प्रकाशित २ अगस्त ९० के जागरण में में 'जनवाणी' के अन्तर्गत श्री एस०एस० प्रभाकर (आगरा) का पत्र आर्यसमाज एक मृत संस्था पढ़ने को मिला। यह लेख श्री रोशनलाल जी गुप्त (मन्त्री, आर्योप सभा, आगरा) के पत्र 'हम करेंगे जाटवों का सम्मान शीर्षक पत्र के उत्तर में है जो उन्होंने जनवाणी के जाटवों के मत परिवर्तन के विचार से पीड़ित और प्रेरित होकर लिखा था।

लेखक का अनुभव है कि—"आर्यसमाज के आदर्श ऊंचे और लुभावने हैं, परन्तु वह वास्तविकता से मेल नहीं खाते।" जब कि सचाई यह है कि आर्यसमाज के आदर्श (सिद्धांत) मात्र ऊंचे और आकर्षक या महान् ही नहीं, वरन वे स्वयं में एक वास्तविकता हैं, क्योंकि वे सत्य, सनातन, अपरिवर्तनीय और शाश्वत हैं।

यहां स्मरणीय है कि आर्यसमाज न तो एक मत पन्थ (दयानन्द पन्थ) या सम्प्रदाय है और न एक सम सामायिक आन्दोलन है, जिसका महत्त्व समय बीतने पर वह समाप्त या कम हो जाता है।

आर्यसमाज का मूलाधार स्वयं परमेश्वर की कल्याणी वेद है। इसीलिये आर्यसमाज के तृतीय नियम में—'वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना 'परम धर्म' कहा है, ऋषि दयानन्द कृत 'सत्यार्थ-प्रकाश' आदि को नहीं, आर्यसमाज के दश नियमों में एक भी स्थल पर 'दयानन्द' शब्द नहीं आया है। आर्यसमाज में प्रवेश के समय 'दयानन्दं शरणं गच्छामि' कहने की आवश्यकता नहीं होती। तो वेद ही आर्यसमाज का सर्वस्व है। आर्यसमाज के वेद प्रचारक संगठन है। वेद सार्वभौम है, अतः आर्यसमाज सार्वभौम है, वह मानवतावादी और राष्ट्रवादी है, स्मरण रहे वैदिक धर्म ही सनातन धर्म है मानव धर्म है, शाश्वत और सार्वभौम धर्म है। आर्यसमाज के दश नियम सार्वभौम मानव धर्म के स्वर्ण सूत्र है। सत्य, न्याय, प्रेम, सेवा परोपकार, सदाचार, सद् व्यवहार और मानवता ही इन नियमों की आत्मा है। "संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है' ऐसा संगठन कभी मृत नहीं हो सकता, हां, आज के वातावरण में सत्य न्याय, सेवा सदाचार और परोपकार की बातें 'युग बाह्य' समझी जाती हैं। और इसीलिये आर्यसमाज का कोई युग बाह्य' समझी जाती हैं। और इसीलिये आर्यसमाज को कोई युग बाह्य या वास्तविकता से दूर कहे तो भले ही कहे, पर यह सत्य नहीं है।

यह ठीक है कि शराब-मांस के बढ़ते हुए दौर, रहन-सहन और आचार व्यवहार में पाश्चात्य सभ्यता के बढ़ते हुए दुष्प्रभाव जीवन के प्रति सर्वथा अध्यात्म शब्द अति भौतिकतावादी दृष्टिकोण (आर्यसमाज अध्यात्म और भौतिकता के समाधान को स्वीकारता है, तथा वर्तमान युग के प्रतीक भ्रष्टाचार-दुराचार का आर्यसमाज किसी भी रूप में समर्थन नहीं कर सकता, इसीलिये यदि आर्यसमाज को वास्तविकता से दूर' कहा जावे और इसीलिये आर्यसमाज में भीड़ कम हो तो यह उसके लिये गौरव की बात है। आर्यसमाज को भीड़ नहीं, सदाचारी जीवन चाहिये। हम भूले नहीं—"सत्यमेव जयते नानृतम्" अन्ततः विजय सत्य की ही होगी, सत्य अमर है, मानवता अमर है, वेद अमर है, अतः आर्यसमाज अमर है।

आर्यसमाज की गतिविधियां इसलिये भी कम प्रतीत हो सकती हैं, क्योंकि आर्यसमाज शोर-शराबे मात्र प्रदर्शन, तोड़-फोड़ और असत्य मूलक प्रवृत्तियों में विश्वास नहीं रखता, जो आज के युग का दूसरा नाम बन गई है। आर्यसमाज 'नींव का पत्थर बनकर' मानवता और राष्ट्रीयता के भव्य भवन निर्माण के कार्य में आज भी पूर्ण शक्ति से लगा है। देश में स्वराज्य लाने में, तपस्-तप-त्याग बलिदान और सर्वस्व होमने में वह सबसे आगे था। सन् ११-१२ तक के आन्दोलनों में तथा क्रान्तिकारी योजनाओं में भाग लेने वाले ८० प्रतिशत विशुद्ध आर्यसमाजी थे बाद में कांग्रेस की राष्ट्रीय (मुस्लिम तुष्टिकरण) की दुर्नीति (जिसके कारण पाकिस्तान बना और आज भी जिसके कारण राष्ट्र खण्ड खण्ड हो रहा है) के कारण उसने अपने को प्रायः कांग्रेस से अलग ही कर लिया, पर वह राष्ट्रोत्थान के महत्त्वपूर्ण कार्यों में भारत मां और मानवता की सेवा में निरन्तर संलग्न रहा। देश के बटवारे के मूल्य पर जो कथित 'स्वराज' मिला उसे 'सुराज' बनाने चरित्र-निर्माण या 'मानव' निर्माण और राष्ट्र की आन्तरिक सुरक्षा, कुरीति निवारण, सुरीति प्रसारण, शान्ति और सद्भावना के कार्यों में वह आज भी सेवारत है।

नशा-निषेध, हिन्दी गौरव रक्षा, संस्कृत-संस्कृति रक्षा, सती-प्रथा-विरोध, नाथद्वारा मन्दिर में सभी को समान प्रवेशाधिकार तथा शुद्धि संगठन हेतु व्यापक कार्य, इसके ताजा उदाहरण हैं। हां, आर्यसमाज आज की राजनैतिक कुर्सियों की लड़ाई से दूर रहा है, इसीसे उसका रचनात्मक कार्य सर्व साधारण को दिखता नहीं है, क्योंकि आर्यसमाज सफेद लाल-नीली टोपियों के बदलने में नहीं, टोपियों के नीचे की खोपड़ियों मानव के मन-मस्तिष्क और चिन्तन के बदलने में विश्वास रखता है। वह वैचारिक क्रान्ति का का अग्रदूत है।

……फिर पता नहीं लेखक महोदय को यह तथ्य क्यों नहीं दीख पड़ रहा है कि आर्यसमाज के स्वरों की ही आज सर्वत्र प्रतिष्ठपना हो रही है। आर्यसमाज की वेदोक्त सत्य वैज्ञानिक मान्यताओं का कल तक विरोध करने वाले भी आज उन्हें अपना रहे हैं। देश की स्वतन्त्रता को स्वर देने के साथ ही आर्यसमाज के नारी शिक्षा, नारी सम्मान, विधवा-विवाह, प्रचलन, बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह निषेध, दलितोद्धार आदि विविध वेदोक्त सेवा कार्यों को आज सभी ने मान लिया है। यह तो आर्यसमाज का 'दिग्विजय' है। हां यह बात अलग है कि अन्य संगठनों द्वारा इन सेवा कार्यों को अपना लेने से आर्यसमाज के क्षेत्र में कुछ चहल-पहल कम दिखाई दे। पर साथ ही यह भी ज्ञातव्य है कि अन्य संगठनों द्वारा इन सेवा कार्यों को भी स्वार्थवश या अज्ञानवश भिन्न दिशा दे दी है, जिसके दुष्परिणाम भी प्रत्यक्ष हैं।

आर्यसमाज का नारी जागरण अभियान अपने मूल भारतीय संस्कृति से कटकर आज पाश्चात्य सभ्यता से अभिभूत है। फलतः देवियों के स्थान पर 'लेडियां' उसे नेतृत्व दे रही हैं। आर्य समाज ने 'पर्दा प्रथा' के विरुद्ध आन्दोलन किया था, पर आज बेपर्दगी और अर्धनग्न फिल्मी सभ्यता की कला के नाम पर कामवासना के व्यापार के खिलाफ मोर्चा लेने की आवश्यकता हो गई है। इसी प्रकार आर्यसमाज का दलितोद्धार का कार्य जो "अज्येष्ठा सो अकनिष्ठासः' वेद की इस पावन ऋचा के आधार पर मानव-समता मूलक या विशुद्ध मानवतावादी था उसे आज दलितों को 'हरिजन' संज्ञा देकर और इस प्रकार एक नया वर्ग बनाकर राजनैतिक खिलाड़ियों ने जो विकृत रूप दिया है उसी का दुष्परिणाम जनवाणी (आगरा) जैसे दुर्भाग्यपूर्ण काण्ड हैं। इसका एकमात्र उपचार आर्यसमाज के साथ मिलकर या उसके स्वर में स्वर मिलाकर जन्मगत जाति पांत की विद्वेष मूलक अमानवीय मान्यता को हटाकर गुण-कर्म स्वाभाव पर आधारित वेदोक्त वर्ण व्यवस्था ही है, जिसमें पारस्परिक घृणा, विद्वेष, ऊंच-नीच, छोटे बड़े की दुष्ट मान्यता के लिए कोई स्थान नहीं है। हां, स्वयं आर्यसमाज को अभी इस दिशा में क्रियात्मक रूप से बहुत कुछ करना है। (क्रमशः)

आर्य समाज की गतिविधियां

वी. पी. के कृत्य जिन्ना से भी बुरे : राजीव

कानपुर, ११ अक्तूबर। पूर्व प्रधानमन्त्री और इकाध्यक्ष राजीव गांधी ने आज यहां कहा कि प्रधानमन्त्री वी पी सिंह के कृत्य मोहम्मदअली जिन्ना से भी बुरे हैं। यह बात उन्होंने आज सद्भावना यात्रा के दौरान कालका मेल में पत्रकारो से बातचीत करते समय कही। उन्होंने कहा कि श्री वी पी सिंह की ढुलमुल कार्यशैली देश को नुकसान पहुचा रही है और उन्होंने अपने स्वार्थ की पूर्ति और आम जनता का ध्यान मूल समस्याओ से हटाने के लिये दो सम्प्रदायो के बीच खतरनाक रेखा खींच दी है।

आर्य वीर दल तेड़ा का स्थानीय शिविर सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के व्यायाम शिक्षक श्री हरिसिंह आर्य के सचालन मे एक स्थानीय शिविर आर्य विद्यालय इन्टर कालिज तेडा (मेरठ) के प्रागण मे ९ अक्टूबर से १६ अक्टूबर तक विधिवत कार्यक्रम के अनुसार चला। जिसमें ३० आर्य वीरो ने प्रशिक्षण लिया। इस स्थानीय शिविर का समापन डा० देवव्रत आचार्य जी के कर-कमलो द्वारा हुआ। आर्य वीर दल तेडा की स्थानीय कार्यकारिणी का भी गठन हुआ जो इस प्रकार है।

सरक्षक—श्री गेन्दासिह तोमर
शाखा नायक—श्री सतेन्द्र कुमार कौशिक
उपशाखा नायक—ब्रिजेश शर्मा
अधिष्ठाता—वीरेन्द्र कुमार
मन्त्री—कृष्णपालसिंह

आर्य समाज में दशहरा पर्व

आर्यसमाज खण्डवा के प्रधान कृष्णलाल आर्य तथा मन्त्री लक्ष्मीनारायण भार्गव ने जानकारी दी कि दिनाक ३०-९-९० को आर्य समाज मन्दिर मे दशहरा पर्व बडी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर श्री नारायण सहाय जी ने पर्व पद्धति को पढकर सुनाया। श्री भावजी भाई मानुशालीजी ने पर्व पर व्याख्यान दिया। श्री श्यामलाल जी ने यज्ञ सम्पन्न कराया। श्री घनश्यामदास जी ने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का सचालन लक्ष्मीनारायण भार्गव ने किया।

—लक्ष्मीनारायण भार्गव, मन्त्री
आर्य समाज, खण्डवा

आर्य समाज अजमेर द्वारा पुष्कर में पुस्तकालय तथा वाचनालय की स्थापना

आर्यसमाज अजमेर द्वारा प्रसिद्ध तीर्थ पुष्कर मे सचालित वैदिक सत्सग आश्रम मे १५ अक्टूबर, ९० से एक नि शुल्क पुस्तकालय तथा वाचनालय की स्थापना की गई है। आर्य समाज अजमेर के प्रधान श्री दत्तात्रेय जी आर्य के अनुसार इस पुस्तकालय मे पुष्कर मे विदेशी पर्यटको की बढती हुई सख्या को ध्यान मे रखकर भारतीय दर्शन, योग तथा आर्य समाज और वैदिक सिद्धान्तो अग्रेजी पुस्तको तथा कुछ प्रसिद्ध पत्र पत्रिकाओ का सग्रह किया गया है और साथ ही हिन्दी मे भी उपरोक्त सब विषयो मे पर्याप्त पुस्तकें उपलब्ध की गई है।

सरकार शाही इमाम के इशारे पर चल रही है : आडवाणी

राजस्थान, ११ अक्टूबर। भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी ने आरोप लगाया है कि राष्ट्रीय मोर्चा सरकार राम जन्मभूमि के मामले पर शाही इमाम के इशारे पर चल रही है। एक सभा में उन्होने कहा कि मन्दिर निर्माण मे अडियल रुख और आरक्षण का विवाद, ऐसी दो बडी भूलें है जिनके लिए देश वर्तमान राष्ट्रीय मोर्चा सरकार को कभी माफ नही करेगा।

शोक समाचार

अपार दुख के साथ सूचित करना पड रहा है कि आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य प० वासुदेव शास्त्री, षट्शास्त्री, व्याकरणाचार्य प्राध्यापक गुरुकुल म० वि० वैद्यनाथधाम (देवघर) का आकस्मिक निधन अचानक हृदयगति रुक जाने के कारण २६ अगस्त के २.३० बजे रात्रि को देवघर अस्पताल में हो गया। उनका अन्त्येष्टि सस्कार गुरुकुल महाविद्यालय वैद्यनाथधाम की ओर से वैदिक रीत्यनुसार चन्दन, घृत हव्यद्रव्यादि से बडे आकर्षक ढग किया गया। —प० द० व्यासनन्दन शास्त्री

—हम सभी आर्यजन श्री सियाराम जी आर्य के दिनाक ३०-९-९० को आकस्मिक निधन हो जाने से अत्यन्त दुखी हैं उनके निधन से अपूर्व क्षति हुई है। उनकी सामाजिक कार्यों में बहुत लगन थी। उन्हे वर्ष १९८८ के वार्षिकोत्सव पर सम्मानित किया गया था। आज की सभा ईश्वर से प्रार्थना करती है कि उनकी दिवगत आत्मा को सद्गति एव शान्ति प्रदान करे। एव उनके शोक सन्तप्त परिवार को धैर्य प्रदान करे। —श्रद्धानन्द

वार्षिकोत्सव

श्री सर्वदानन्द संस्कृत महाविद्यालय साधु आश्रम अलीगढ़ का ८०वां वार्षिक महोत्सव १०, ११, १२, नवम्बर को बड़ी धूम-धाम से मनाया जा रहा है जिसमें उच्च कोटि के सन्यासी, महोपदेशक पधार रहे हैं। आर्य जनता अधिक से अधिक संख्या में भाग लेकर पुण्य के भागी बनें।

जोधपुर में महर्षि दयानन्द स्मृति सम्मेलन सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती की अन्तिम कर्मस्थली जोधपुर के महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास में दिनांक २७ ९-९० से दिनांक ३० ९-९० तक महर्षि दयानन्द स्मृति-सम्मेलन एवं सामवेद पारायण महायज्ञ का आयोजन हुआ। २९ मई १८८३ को की इसी स्थान पर महर्षि दयानन्द को प्राणघाती विष दिया गया था। महर्षि की इसी स्मृति में उक्त सम्मेलन एवं महायज्ञ का आयोजन किया गया। सामवेद पारायण महायज्ञ के ब्रह्मा आचार्य श्री अर्जुन देव जी स्नातक आगरा एवं वेदपाठी श्री रामनारायण जी शास्त्री भरतपुर एवं श्री रतनलाल जी पालड़िया अजमेर थे। जोधपुर नगर के हजारों श्रद्धालुओं ने बड़ी श्रद्धा और भक्ति से यज्ञ में भाग लिया।

दिनांक २९-९-९० को राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री छोटूसिंह जी की अध्यक्षता में, आए हुए आर्यसमाजों के प्रतिनिधियों की सम्मिलित बैठक में स्मृति भवन की वर्तमान दशा एवं भावी योजनाओं पर विचार विमर्श करके यह निर्णय लिया गया कि स्मृति भवन में सन्यास एवं वानप्रस्थ आश्रम खोला जायेगा जहां निःशुल्क आवास एवं भोजन की सुविधा के साथ पूर्ण स्वाध्याय की व्यवस्था भी की जायेगी। आगामी वर्ष जब स्मृति सम्मेलन आयोजित हो उससे पूर्व एक भव्य यज्ञशाला का निर्माण भी कराया जाय।

माल गाड़ी कब्जे में

(पृष्ठ ४ का शेष)

जाता हो वहां छापा डाल कर पशु कब्जे में लेने का अधिकार पुलिस को प्राप्त है। गुजरात और राजस्थान से कत्ल के लिए पशु राज्य के बाहर ले जाने पर कानूनी प्रतिबन्ध है। परन्तु लम्बे अरसे से खेतीबाड़ी के बहाने से रेल और ट्रकों द्वारा सैकड़ों पशुओं का निकास इन दो राज्यों से चल रहा था। ये सब हृष्ट-पुष्ट और सशक्त पशु देवनार कत्लखाने में लाये जा कर वहां काट दिये जाते थे। गुजरात के साबरमती स्टेशन से गुरुवार रात बसई स्टेशन पर जो मालगाड़ी आई उसमें ७७ डिब्बे थे। हर डिब्बे में आठ बैल इस हिसाब से कुल ६१६ बैल इस मालगाड़ी में भरे थे। इन बैलों को छुड़ाने के लिए आठ से दस कसाई व्यापारी ट्रक लेकर वहां आए थे। इस अवसर पर अखिल भारतीय कृषि गोसेवासंघ के महामन्त्री केशरीचन्द मेहता ने बसई रेल पुलिस को इस गैरकानूनी ढुलाई की खबर पहुंचाई तब रेल पुलिस निरीक्षक बर्गे की अगुआई में चुने हुए पुलिसों की टुकड़ी ने छापा डाल कर पूरी रेल में भरे पशुओं पर कब्जा कर लिया। मलबार हिल के नगरसेवक श्री गुणवंत सेठ ने भी इस काम में जहमत उठाई। बाजार भाव के हिसाब से इन पशुओं की कीमत लगभग १२ से १५ लाख रुपये होती है। पुलिस ने तमाम पशु कब्जे में कर लिये तब अखिल भारत कृषि गोसेवासंघ ने पालघर के फर्स्ट क्लास मैजिस्ट्रेट के कोर्ट में अर्जी दाखिल किया। अदालत ने इन पशुओं का कब्जा कसाईयों को सौंपने के विरुद्ध मनाही हुक्म जारी किया। जब तक यह मुकदमा चलेगा तब तक सभी बैलों का कब्जा कृषि गोसेवासंघ को सौंप दिया गया है। (शान्ति सेवक पाक्षिक से साभार)

आर्य जगत् के समाचार

मुफ्ती मुहम्मद सईद पक्षपाती हैं कश्मीरी विस्थापितों का आरोप

नई दिल्ली, १९ अक्टूबर। कश्मीर घाटी मे अल्पसख्यक हिन्दुओ की बढती हुई हत्याओ पर कश्मीरी समिति ने गहरी चिन्ता व्यक्त की। समिति के प्रधान श्री सी०आई० गाडू ने एक प्रेस वक्तव्य मे कहा कि घाटी मे आतकवादी क्रमबद्ध तरीके से अल्पसख्यको की हत्या कर रहे है। उनकी सम्पत्ति लूटी जाती है, घरो को आग लगा दी है, लेकिन सरकार मूक दर्शक बनी तमाशा देखती रहती है।

राहत देने मे अल्पसख्यक जाति के प्रति भेद-भाव बरतने के लिये उन्होने गृह मन्त्री, मुफ्ती मुहम्मद सईद की कडी आलोचना की। उन्होने बताया कि कुछ दिन हुए इडवारा में बहुसख्यक मुसलमानो की सम्पत्ति जल कर नष्ट होने पर सरकार ने उन्हे तुरन्त तीन करोड रुपये की वित्तीय सहायता की मन्जूरी दे दी। लेकिन आतकवाद के कारण कष्ट पा रहे हिन्दुओ की सहायता के लिये उसने कुछ नही किया।

दिल्ली मे भाग कर आये हुये कश्मीरी विस्थापितो के प्रति "सौतेला व्यवहार" करने के लिये श्री गाडू ने दिल्ली प्रशासन की भी भर्त्सना की। प्रशासन के कर्मचारी जाच करने के बहाने घरो मे आकर उनके परिवारो को तग करते हैं। यद्यपि उनके राशन कार्ड बने हुए हैं और उन्हे वित्तीय सहायता भी प्राप्त है। यह बडे दुःख की बात है कि सरकार दूसरे देशो से आये हुए विस्थापितो की तो बहुत चिन्ता करती है किन्तु उसे कश्मीरी विस्थापितो की कोई चिन्ता नही जो आज अपने ही देश मे शरणार्थी बन गये हैं।

गु. आ. वि. आमसेना में आर्य वीर दल शिविर सम्पन्न

गु० म० वि० आमसेना, खरियार रोड (कालाहाण्डी) उडीसा में दिनाक ३०-९-१९९० से ६-१०-१९९० तक एक बडे शिविर का आयोजन किया गया। जिसमे १२१ आर्य वीर और ४० आर्य वीरागनाओ ने उडीसा तथा मध्य प्रदेश प्रात के विभिन्न जिलों से आकर पूर्ण अनुशासन मे रहकर भाग लिया। पूज्य स्वामी धर्मानन्द सरस्वती का तन-मन-धन से योगदान सराहनीय रहा। इस शिविर मे डा० आजाद सुरेन्द्रसिंह आर्य वरिष्ठ व्यायाम शिक्षक सा० आ० वी० दल ने आर्य वीर एव वीरागनाओ को प्रशिक्षित किया तथा उत्कल सभा के महामन्त्री जी द्वारा बौद्धिक कार्य सम्पन्न हुआ।

महाविद्यालय गु. आमसेना उडीसा में योग शिविर सम्पन्न

विद्यालय में उत्कल व म० प्र० प्रांत के ५० आर्य जना ने आकर गु० म० वि० होसगाबाद के आचार्य जी के सरक्षण मे योग और आध्यात्म बारे मे १ सप्ताह का आ० वी० दल के शिविर के साथ ही अलग प्रागण मे प्रशिक्षण लिया। इसमे म०प्र० प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री बसल साहब एवम् उनके सहयोगी सक्सेना साहब का विशेष योगदान रहा।

—स्वामी धर्मानन्द सरस्वती
आचार्य गु० म० वि० आमसेना (उत्कल)

स्वामी ओ३म् प्रेमी का निधन

आर्य समाज के सुप्रसिद्ध सन्यासी स्वामी ओम प्रेमी जी महाराज जो गत ८-१० वर्षों से गुरुकुल होशगाबाद मे रहकर आत्म साधना मे सलग्न थे, अल्पकालिक रोग से ग्रस्त होकर ७३ वर्ष की आयु मे गत ९ सितम्बर १९९० को शाजापुर मे उनका निधन हो गया है। उनके निधन पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने गहरा दुःख प्रकट करते हुए इसे आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति बताया। शोक सभा में दिवगत की आत्मा की सद्गति की प्रार्थना की गई।

२८ वां कच्चाहार दिवस

पिथौरागढ (उ० प्र०) करावा चौथ ७ अक्टूबर १९९० को २८ वे कच्चाहार दिवस पर स्वामी गुरुकुलानन्द कच्चाहारी ने ५६ वे वर्ष मे प्रवेश करते हुये, शरीरान्त होने पर नेत्रबैंक को नेत्रदान तथा मेडिकल कालेज को शवदान की इच्छा दुहराते हुये निम्नाकित सकल्प लिये —

(१) दो से अधिक गुरुकुलो की स्थापना (२) पाच-यज्ञ व सोलह-सस्कार (५) एक सौ से अधिक जनो को नैष्टिक ब्रह्मचर्य-वानप्रस्थ-सन्यास-की दीक्षा (४) सस्कृत भाषा-प्रसार (५) पशु बलि बन्दी के साथ शाकाहार-प्रसार (६) मद्यनिषेध (६) अभियान एव (७) आरोग्यसेवा।

—डा० राजेशकुमार पुनेठा, मन्त्री

योग प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आर्यसमाज फरीदाबाद सैक्टर ७ मे १५ से ३०सितम्बर तक क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर मे ७५ शिविरार्थियो ने स्थायी रूप से व ४५ शिविरार्थियो ने अस्थायी रूप से भाग लिया। इस शिविर का सचालन आर्य जगत के महान योगी व दर्शनो के प्रकाण्ड विद्वान स्वामी सत्यपति परिव्राजक की अध्यक्षता मे हुआ। इन १५ दिनो की दैनिक दिनचर्या के अन्तर्गत प्रात ३-४५ बजे से साय ९-४५ तक व्यक्तिगत उपासना, आसन और व्यायाम, क्रियात्मक योग प्रशिक्षण योग के आठ अगो की विस्तृत व्याख्या, योगदर्शन शिक्षण, विवेक व वैराग्य सम्बन्धित प्रवचन, शका समाधान, सन्ध्योपासना विधि एवम् सन्ध्या के मन्त्रो की विस्तृत व्याख्या व भौतिकवाद तथा अध्यात्मवाद के पक्ष व प्रतिपक्ष पर विस्तृत चर्चा की जाती थी।

वेद प्रचार सम्पन्न

दिनाक १४-९-९० से १६ ९-९० तक केशरिया आर्यसमाज के द्वारा सिशवा पटना मे प्रचार हुआ। अरेराज १७-९-९० से लेकर १९-९-९० तक एव ओलहां में नए आर्यसमाज की स्थापना हुई। २०-९-९० से लेकर २२-९-९० तक पचीस जवानो ने यज्ञोपवित्र धारण किये।   —उपदेशक प० श्री गगाधर शास्त्री

आर्यसमाज ने देश की आजादी

(पृष्ठ १ का शेष)

उल्लेखनीय है कि लाला दीवानचन्द जी ने १० वर्ष की अल्पायु मे मजदूरी द्वारा अपना जीवन प्रारम्भ किया और कठोर परिश्रम व बुद्धि कौशल द्वारा अपार धन अर्जित किया। उन्होने अपने जीवन काल मे लगभग एक करोड रुपये का सात्विक दान विभिन्न धार्मिक सामाजिक शिक्षण, सस्थाओ को दिया था।

स्वामी दयानन्द सरस्वती

(पृष्ठ २ का शेष)

पिछडे वर्गों के सामाजिक उत्थान के लिए तो स्वामी दयानन्द ने भी सम्पूर्ण जीवन भरसक प्रयत्न किए परन्तु इतना भयकर विद्रोह तो कभी नही हुआ। गुरुकुल शिक्षा पद्धति की शुरूआत का एक उद्देश्य यह भी था कि गरीब अमीर तथा समस्त वर्गों के परिवारो से आए विद्यार्थी समान आसन, समान वस्त्र, समान भोजन तथा समान शिक्षा प्राप्त कर सके। सरकार की इस प्रकार की आरक्षण नीतियो से तो जातिवाद और मजबूत होगा, समानता होनी तो मुश्किल नजर आती है। वर्तमान सन्दर्भ में स्वामी दयानन्द सरस्वती के उपदेशो का आज भी उतना ही महत्व है जितना १०० वर्ष पहले था। मानवता सदैव ऋणी रहेगी स्वामी दयानन्द की तथा उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज की जो उन उपदेशो का भार अपने कन्धो पर लादे हुए आज भी समाज की सेवा मे प्रयत्नशील है।

रजि० नं० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२८-१०-१९९०) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U ९३
R 626/57 Licensed to post without Prepayment License No. U 93 Post in D.P.S.O.on 25-10-1990

श्री धर्मदेव जी पी. एच. डी. से सम्मानित

आर्य जगत को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्य समाज के युवा कार्यकर्ता, आर्य समाजस्थ अनेक संस्थाओं के पदाधिकारी श्री धर्मदेव विद्यार्थी को मेरठ विश्वविद्यालय से आर्य समाज पर शोध कार्य करने के कारण पी. एच. डी. की उपाधि दी जा रही हैं। उनका विषय था "१८८३ से १९४७ तक पंजाब में आर्य समाज का शिक्षा क्षेत्र में योगदान" सम्प्रति इस समय डी ए वी पब्लिक स्कूल टोहाना (हिसार) में प्राचार्य पद पर कार्यरत हैं। अनेक आर्य संगठनों ने उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।

—चमन लाल

महामन्त्री आर्ययुवक दल हरियाणा

चम्पारण जिला में लगातार एक माह का वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

चम्पारण जिला आर्य सभा के तत्वावधान में १ अगस्त ९० से ४ सित. ९० तक, वेद प्रचार सप्ताह लगातार निम्नलिखित आर्य समाजों में सम्पन्न हुआ। बगहा, चमपटिया, मझौली, मोतिहारी, हरिनगर, रक्सौल, स्वामी ज्ञानानन्द सरस्वती (बकुली) प० व्यासनन्दन शास्त्री, प्रवक्ता भागलपुर विश्वविद्यालय, श्री रामचन्द्र जी 'क्रान्तिकारी' (नेपाल) श्री दिवाकर जी आर्य (पटना) श्री प्रभुदयाल जी मिश्रा प्रचारक आदि विद्वानों उपदेशकों तथा भजनोपदेशको का प्रवचन तथा भजनोपदेश उपर्युक्त आर्य समाजों में सम्पन्न हुए।

—वी० के० शास्त्री

मन्त्री, चम्पारण जिला आर्य सभा

वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्य समाज पीपाड नगर में दिनांक ११-९-९० से १५-९-९० तक भव्य वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया। इस अवसर पर स्वामी चन्द्रदेव जी सरस्वती (कंकर खेड़ा मेरठ), भजनोपदेशक श्री सत्यपाल जी सरल (देहरादून) स्वामी प्रेमानन्द जी सरस्वती (ब्यावर) एवं श्री देवी प्रसाद जी आर्य (बाडमेर) के प्रातः एवं सायं भजन व प्रवचन होते रहे।

—चम्पालाल आर्य, मन्त्री

आचार्य नरेन्द्र भूषण का अभिनन्दन

सोनीपत ९ सितम्बर। आर्यसमाज सोनीपत नगर के वार्षिकोत्सव के अवसर पर प्रतिष्ठित मलयालम मासिक 'आर्यनाटम्' के सम्पादक, सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, गीता रहस्य आदि अनेक ग्रन्थों के मलयालम अनुवादक सुप्रसिद्ध विद्वान आचार्य नरेन्द्र भूषण जी का अभिनन्दन यहां किया गया। सम्मेलन की अध्यक्षता हैदराबाद के प्रसिद्ध विद्वान् श्री मदन मोहन विद्यासागर ने की। इस अवसर पर स्वामी सत्यपति जी ने बताया कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है और वेदों के विद्वानों के सत्कार से ही देश, जाति, धर्म की रक्षा एवं उन्नति हो सकती है।

-पुस्तकालयाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी
विश्वविद्यालय हरिद्वार
जि० सहारनपुर (उ० प्र०)

सार्वदेशिक साप्ताहिक के पाठकों को सूचित ... दिनांक २१-१०-९० का सार्वदेशिक साप्ताहिक का अंक प्रेस की असुविधा के कारण न निकल सका। इसका हमें खेद है।

—सम्पादक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

रामलीला मैदान, नई दिल्ली-११०००२

दूरभाष : ३२७४७७१, ३२६०९८५

२३ दिसम्बर से २६ दिसम्बर ९० तक दिल्ली में होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एक संग्रहणीय स्मारिका प्रकाशित करने जा रही है। स्मारिका के माध्यम से जहां आपको सन्देश, गवेषणापूर्ण लेख, कविताएं एवं अन्य स्वाध्याय की सामग्री उपलब्ध होगी वहां विज्ञापन भी भारी संख्या में होंगे। विज्ञापन दाताओं से सानुरोध प्रार्थना है कि अपने-अपने विज्ञापन यथाशीघ्र भिजवाने की कृपा करें।

स्मारिका का आकार १८×२४ सेंटीमीटर होगा।

प्रसार संख्या छः हजार

विज्ञापन दर

रंगीन पृष्ठ (एक)	१००० रुपये
सादा पन्ना (एक)	५०० रुपये

● मांस, मदिरा एवं धूम्रपान सम्बन्धी सामग्री के विज्ञापन स्वीकार नहीं होंगे।

—: निवेदक :—

आनन्दबोध सरस्वती — प्रधान

डा. सच्चिदानन्द शास्त्री — महामन्त्री

डा. शिवकुमार शास्त्री
प्रधान सम्पादक (स्मारिका) ५५२६२०७

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में
२३ से २६ दिसम्बर तक दिल्ली में

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से २३, २४, २५ व २६ दिसम्बर १९९० को अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली में मनाया जाएगा। इस महासम्मेलन में देश विदेश के लाखों आर्यों के भाग लेने की सम्भावना है। इस अवसर पर उच्च-कोटि के विद्वान् आमन्त्रित किए जा रहे हैं।

सभी आर्य बन्धुओं तथा समस्त आर्य समाजों से निवेदन है कि वे इस सम्मेलन के लिए तन-मन-धन से सहयोग दें तथा, अधिक से अधिक संख्या में इस महासम्मेलन का लाभ उठाने के लिए अभी से तैयारी कर लें।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख्य पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१ दयानन्दाब्द १६६ दूरभाष : ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष २६ अंक ४२] मार्गशीर्ष कृ० २ सं० २०४७ ४ नवम्बर १९९०

राम जन्मभूमि श्रीराम की जन्म स्थली है

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

दिल्ली २८ अक्तूबर। आर्य समाज मन्दिर हनुमान रोड, नई दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर एक प्रश्न के उत्तर में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि बाबर विदेशी आक्रान्ता था। अयोध्या श्रीराम की जन्म स्थली है भारत सरकार को राम भक्तों की कोमल भावनाओं के साथ घिनौना खिलवाड़ नहीं करना चाहिए। रामजन्मभूमि पर राम मन्दिर के निर्माण को बरबंता से नहीं रोका जा सकता।

आर्यसमाज हनुमान रोड की ओर से राममन्दिर के निर्माण हेतु राष्ट्रपति से अनुरोध किया गया कि उत्तर प्रदेश में हो रहे अत्याचारों को रोके और मुलायमसिंह सरकार को बर्खास्त करें।

सार्वदेशिक सभा का वार्षिक अधिवेशन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की आगामी अन्तरग सभा की बैठक वार्षिक अधिवेशन दिनाक १० तथा ११ नवम्बर १९९० को आर्यसमाज दीवानहाल, दिल्ली में अपराह्न दो बजे से होगी। अन्तरंग सभा में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के कार्यक्रमों को तैयार किया जायेगा।

टेलीफोन वालो : हाय या हैलो नहीं, सिर्फ हरिओम कहो !

लन्दन २८ अक्तूबर (आई०ए०एन०एस०) आप 'हाय" या हैलो क्यो बोलते हैं जब कि आसानी से हरिओम कह सकते हैं।

अब यही तरीका उन बहुत से छात्रों ने अपना लिया है, जिन्होने बोलचाल की सस्कृत का यहा पाठ्क्रम पूरा किया है। इस प्राचीन भारतीय भाषा के एक विद्वान डाक्टर सत्यनारायण शास्त्री इन छात्रों के प्रेरणा स्रोत है जो इस भाषा को पुनर्जीवित करने पर आमादा है। भारतीय विद्या भवन की लन्दन शाखा के प्रोफेसर श्री शास्त्री का दावा है कि यह भाषा मृत नहीं हुई बल्कि २१वी सदी में लाखों लोग संस्कृत में ही बातचीत किया करेंगे। डा० शास्त्री का कहना है कि अब तक ४०० से अधिक छात्र अपने बच्चों के साथ संस्कृत में ही बात-चीत करने लगे है। बंगलूर में तो ४ हजार ऐसे परिवार है जो अपनी [illegible] संस्कृत का एक ऐसा गांव भी है संस्कृत के अलावा कुछ बोला [illegible] जाता।

सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तथा पं. रामचन्द्र राव वन्देमातरम नैपाल के महाराजाधिराज से भेंट करेंगे

दिल्ली २१ अक्टूबर सभा कार्यालय की विज्ञप्ति के अनुसार आगामी १२ नवम्बर को सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तथा प० रामचन्द्र राव वन्देमातरम नैपाल जावेंगे। वे महाराजाधिराज से श्री वीरेन्द्र तथा नेपाल के प्रधान मन्त्री श्री भट्टा राई मिलेंगे।

सरकार की पैंतरेबाजी

५० लाख जामा मस्जिद को नही दिया

नई दिल्ली, २८ अक्टूबर। सरकार ने आज स्पष्ट किया कि उसने न तो जामा मस्जिद के लिए पचास लाख रुपया का दान दिया है और नहीं हजरत मुहम्मद के जन्म दिन को राष्ट्रीय छुट्टी घोषित किया है। कुछ अखबारो में इस बारे मे छपे विज्ञापनो का खण्डन करते हुए सरकार ने स्पष्ट किया है कि जामा मस्जिद एक ऐतिहासिक इमारत है और देश मे ऐसी कुछ और इमारतो के साथ-साथ इसकी भी सुरक्षा सरकार का पुरातत्व विभाग करता है, जिस पर पैसा भी खर्च होता है। इसी प्रकार अरुणाचल प्रदेश में तवाग मठ तथा कलकत्ता मे मयेर चार्च की भी सुरक्षा की जाती है।

हजरत मुहम्मद के जन्म दिन को राष्ट्रीय छुट्टी घोषित करने के बारे मे भी सरकार का कहना है कि ऐसा नही किया गया है। विज्ञापनो मे कहा गया था कि इस छुट्टी की घोषणा तो लाल किले से की गई लेकिन भगवान राम, श्री कृष्ण और भगवान शिव के जन्म दिवसो पर भी छुट्टी नहीं की जाती।

सरकार का कहना है कि केवल स्वतन्त्रता दिवस गणतन्त्र दिवस और महात्मा गाधी जयन्ती ही राष्ट्रीय सरकारी अवकाश हैं। दशहरा और दीवाली पर अनिवार्य तौर पर सारे देश मे छुट्टी रहती है। जबकि रामनवमी और जन्माष्टमी पर आमतौर पर उत्तरभारत मे छुट्टी रहती है।

हिन्दुस्तान २९-१०-९० से साभार

गुरुकुल ऐरवा-इटावा के उत्सव पर स्वामी आनन्दबोध सरस्वती पधारे

इटावा २९ अक्टूबर। गुरुकुल ऐरवा के वार्षिकोत्सव पर जाते हुए स्वामी आनन्दबोध सरस्वती इटावा रेलवे स्टेशन पर उतरे। इटावा आर्यसमाज के अधिकारियों ने स्वामीजी का जोरदार स्वागत किया। आर्यसमाज

(शेष पृष्ठ १२ पर)

सम्पादक—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

समत्वं योग उच्यते (समता ही योग है)

—राम निवास लखोटिया

भारत मे ही नही वरन् समस्त विश्व मे योग की महिमा स्वीकार की गई है। हमारे देश के आध्यात्मिक ग्रन्थो मे, विशेषकर पातञ्जलि के योग-सूत्रो उपनिषदो और गीता मे योग के विभिन्न प्रकारो का विशद् विवरण मिलता है। विभिन्न प्रकार की परिस्थितियो मे और भिन्न भिन्न प्रकार की प्रकृति वाले मनुष्यो के लिए विभिन्न प्रकार के योग का वर्णन मिलता है। इसी जीवन मे मुक्ति दिलाने और परमानन्द प्रदान कराने का सही उपाय वास्तव मे योग ही है। तो यह योग क्या ? यदि इसकी सबसे अच्छी परिभाषा के बारे मे पूछा जाय तो मेरी राय मे गीता के दूसरे अध्याय के ४८ वें श्लोक मे इसकी बहुत ही सुन्दर परिभाषा दी गई है

समत्व योग उच्यते । अर्थात् समता ही योग है। या यू कहिए कि समता ही परमात्मा का स्वरूप है। पूरा श्लोक निम्न प्रकार है—

योगस्थ कुरु कर्माणि सङ्ग त्यक्त्वा धनजय।
सिद्धय सिद्धयो समो भूत्वा समत्व योग उच्यते । २ ४८ ॥

भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को निष्काम कर्म योग का मर्म बतलाने के बाद कहा कि हे धनजय ! तू आसक्ति का त्याग करके सिद्धि और असिद्धि मे सम होकर योग मे स्थित होकर कर्मो को कर अर्थात् युद्ध कर। क्योकि समत्व या समता भाव ही योग कहा जाता है।

यदि व्यवहारिक जीवन के विभिन्न क्रिया कलापो को हम देखें और इस परिभाषा को जानने का प्रयत्न कर तो हम पायगे कि यदि हम अपने सभी कर्मो मे समता रखना सीख लें तो हम सांसारिक चिन्ताओ एव परेशानियो से बिल्कुल मुक्त हो जायगे और फिर अनुकूल अथवा प्रतिकूल परिस्थितियो मे रहते हुए भी तथा सफलता या विफलता की स्थिति के बावजूद भी हम आनन्द की स्थिति मे होगे अर्थात समता होने से हमे दुख का आभास ही नही होगा। उदाहरणार्थ हमने पूरे यत्न से विदेश मे एक नया व्यापार प्रारम्भ किया। दिन रात पूरी मेहनत की। खूब धन कमाया। लेकिन प्रतिकूल राजनैतिक परिस्थियो के कारण हमे अपना व्यापार एव जमीन जायदाद धन दौलत वही छोड़कर वापस आना पड़ा जैसा कि कुवैत के भारतीयो के साथ अभी हुआ है तो हमे असुविधा तो अवश्य होगी। हमे धन का अभाव भी होगा। लेकिन यदि हमे अपनी बुद्धि को समता मे रखना सीख लिया अथवा सफलता या विफलता, जय या पराजय हानि या लाभ किसी भी परिस्थिति मे सम रहना सीख लिया और यह निश्चय कर लिया कि हमारे अधीन केवल कर्म करना है उस कर्म का फल हमारे अधीन है ही नही तो इस प्रकार भगवान श्रीकृष्ण की वाणी मे वास्तविक आस्था रखने से जब अनुकूल व प्रतिकूल परिस्थितियो मे समता की भावना आ जाती है तब व्यक्ति को कोई दुख नही होता। वह सुख व दुख की लौकिक स्थिति से ऊपर उठ जाता है और फिर वह जो स्थिति प्राप्त करता है वह स्थिति होती है परमानद की वह स्थिति होती है ब्रह्म की। इसी बात को भगवान श्रीकृष्ण ने आगे चलकर गीता मे निम्न श्लोक के माध्यम से कहा है—

श्रुतिविप्रति प ना ते यदा स्थास्यति निश्चला।
समाधावचला बुद्धिस्तदा योगमवाप्स्यसि ॥ [२ ५३]

इसका तात्पर्य यह है कि जब साधक शास्त्रो के विभिन्न मतो एव तर्कों मे न फसकर सत्सग के द्वारा अपनी रुचि श्रद्धा और योग्यता का निर्णय कर लेता है अथवा भगवान की शरण मे होकर उनसे विनती करता है तो उसकी बुद्धि निश्चल हो जाता है। जब साधक यह निश्चय कर लेता है कि परमात्मा का स्वरूप विभिन्न मतो के अनुसार कितना ही भिन्न भिन्न प्रकार का क्यो न हो मुझे तो बस परमात्मा को ही प्राप्त करना है। एसा होने से साधक सुगमता पूवक परमात्मा के साथ नित्य योग को प्राप्त होता है।

यही बात गीता मे छठे अध्याय के २३ व श्लोक मे दुख सयोग वियोगम् पद स कही गई है। यह पद और समत्व योग उच्यते एक ही ध्येय की ओर इगित करते है।

समता दो प्रकार की होती है—साधनरूप समता और साध्यरूप समता। जो समता अ त करण की होती है वह साधन [illegible] अनुकूलता प्रतिकूलता सिद्धि असिद्धि आदि मे सम रहना और मन को विचलित नही करना अर्थात् अन्त करण मे राग द्वेष न होना। इस साधन स्वरूप समता से स्वत सिद्ध समता की प्राप्ति होती है। दूसरी समता अर्थात् साध्यरूप समता जो परमात्म-स्वरूप की होती है। उसका वर्णन ऊपर वर्णित (२ ५३) श्लोक मे तदा योगमवाप्स्यसि पद से हुआ है। इस प्रकार की समता वाली बुद्धि रखने से जब साधक ससार के व्यवहार-क्षेत्र मे आता है तब उसके सामने लाभ हानि अनुकूल प्रतिकूल सिद्धि असिद्धि परिस्थिति आन पर भी वह इनमे राग द्वेष नही करता बल्कि उन्हे ईश्वरीय कृपा समझकर उनमे सम रहता है। ऐसा करने पर वह ससार से ऊचा उठ जाता है और साध्यरूप समता की प्राप्ति करता है। ऐसा होने पर स्वत सिद्ध समरूप परमात्मा की प्राप्ति हो जाती है। जैसा कि गीता के पाचव अध्याय के १९व श्लोक मे इसी बात को निम्न प्रकार से कहा गया है—

इहै व तैर्जित सर्गो येषासाम्ये स्थित मन ।
निर्दोष हि सम ब्रह्म तस्माद ब्रह्मणिते स्थिति ॥ (५।१९)

इस श्लोक का तात्पर्य यह है कि भगवान श्रीकृष्ण समता की विशेष महिमा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि जिनका अन्त करण समता मे स्थित है उन्होने इस जीवित अवस्था मे ही सम्पूर्ण ससार को जीत लिया है। क्योकि ब्रह्म तो निर्दोष और सम है इसलिए समता बुद्धि से होने से वे ब्रह्म मे ही स्थित है। इसी समता को गीता ने योग कहा है- समत्व योग उच्यते और इसकी प्राप्ति ही गीता मनुष्य ज म की पूर्णता मानती है।

एक अन्य स्थल पर गीता ने इसी समता की बात को दूसरी प्रकार से निम्न श्लोक मे कहा है—

त विद्या दु ख सयोग वियोग योगसज्ञितम्।
स निश्चयेन योक्तव्यो योगोऽनिर्विण्णचेतसा ॥ (६।२३।)

इस श्लोक का तात्पर्य यह है कि भगवान श्री कृष्ण अर्जुन को समझाते हुए कहते हैं कि जिस स्थिति मे दुखों के सयोग का ही वियोग है उसी को योग नाम से जानना चाहिए। वह योग जिस ध्यान योग का लक्ष्य है उसका अभ्यास बिना उकताये हुए चित्त से निश्चय पूवक करना चाहिए। अर्थात जिस दुख स्वरूप ससार या शरीर के साथ सम्बन्ध मान लिया (जब कि उसके साथ हमारा सम्बन्ध है ही नही हुआ नही और होना सभव भी नहीं) तो यही दुख सयोग हुआ। यह केवल हमारा माना हुआ है स्वाभाविक नही है। इसका वियोग होते ही असली योग अथवा स्वाभाविक योग की प्राप्ति हो जाती है। इसी को अर्जुन ने नष्टोमोह स्मृतिलब्धा (गीता १८७३) कहा है। इस प्रकार भगवान श्रीकृष्ण ने योग सज्ञितम् पद देकर दुख के सयोग से वियोग का नाम योग बताया है और समत्व योग उच्यते कहकर समता को ही योग बताया है। ये दोनो बात तत्वत एक ही हैं क्योकि साधनरूप समता ही अन्त मे साध्यरूप समता मे परिणत हो जाती है।

पतञ्जलि ने चित्त वृत्ति के निरोध को योग कहा है—योग श्चित्तवृत्ति निरोध (योग दर्शन १।२) । ये सभी पद अन्तत समता की ओर ले जाकर साधक को योग की स्थिति मे ले जाते हैं। ऐसे योग की अनुभूति जब कर्मो के द्वारा की जाती है तो वह कर्मयोग कहलाता है। यदि विवेक विचार के द्वारा उसकी अनुभूति हो तो वह ज्ञानयोग कहा जाता है। प्रेम के द्वारा इसकी अनुभूति होने पर वह भक्ति-योग तथा प्राणायाम आदि के द्वारा होन पर हठयोग यम नियमादि आठ अगो द्वारा होने पर अष्टाग योग और गुरु कृपा होने स सहज योग या सिद्धयोग कहलाता हैं। इस लिए हमे ससार के कर्मो को करते हुए अपने व्यवहारिक जीवन में, अन्त करण मे समता वाली बुद्धि रखनी चाहिए। इससे हमे इसी लोक में मुक्ति और [illegible]

व्रत उपवास का तात्त्विक रहस्य

मनुष्य को प्रात:काल से लेकर, जहां तक सम्भव हो, निराहार रहने का प्रयत्न करना चाहिए। धीरे-धीरे व्रत काल के समय को बढ़ाना चाहिए। इस प्रकार वह जितनी देर दिन चढ़े तक व्रत पूर्वक रहेगा उतना ही अच्छा तात्पर्य यह कि मनुष्य को प्रात: से आरम्भ करके व्रत के अभ्यास काल को बढ़ाना चाहिए। न रहा जाए तो जल या नीबू रस मिला पानी या कोई अन्य पेय आहार ही पीना चाहिए। आदर्श यह है कि मनुष्य मध्याह्न (दिन के १२ बजे) दोपहर तक निराहार रहे।

इस का कारण यह है प्रात: समय प्राण शक्ति शरीर से मल के त्यागने मे सलग्न होती है, अत: इस पर भोजन के पाचन का भार नही डालना चाहिए। वस्तुत जब तक शरीर शौच, स्नान इत्यादि द्वारा मल मूत्र से विशुद्ध न हो जाय और तीव्र भूख न लगे, तब तक आहार की आवश्यकता ही नहीं।

स्मरण रहे कि प्रकृति ने दिन का पहला पहर (३ घन्टे) शरीर की शुद्धि और ज्ञान ध्यान इत्यादि सूक्ष्म मानसिक कार्य के लिए निर्धारित किया है।

इस समय शरीर में प्राण शक्ति पर्याप्त होने के कारण, समस्त शरीर मन, मस्तिष्क और इन्द्रिया, अपनी प्राकृतिक अवस्था मे स्फूरित और कार्य की शक्ति से भरपूर होती हैं।

इस समय मानव को शारीरिक तथा मानसिक परिश्रम और अपने दैनिक कार्य को निपटा लेना चाहिए। इस समय प्रत्येक प्रकार का शारीरिक और मानसिक परिश्रम सहज होने के कारण दिन का यह मुख्य भाग काम करने के लिए उपयुक्त समय है।

भारत में अंग्रेजी राज्य से पहले सज्जनो का यह सनातन आचार था कि वह अपना मुख्य दैनिक कार्य निराहार (खाली पेट) रहकर करते थे। इस व्रत का पालन करने के कारण विद्यार्थी उच्चकोटि के पण्डित बन जाते थे। वेद की एक पुस्तक मे लिखा है कि विद्यालय में प्रवेश के समय शिष्य को आदेश दिया जाता था—

"अपोऽशान कर्म कुरु" जल पीओ और अपना कार्य सम्पन्न करो।

व्रत उपवास से शरीर में आकाश तत्व बढ जाता हैं, जिस कारण साधक अपना मानसिक, वैज्ञानिक और आध्यात्मिक प्रयत्न सहज ही, बिना कठिनाई के कर सकता है। अत बुद्धिजीवी लोगो, विचारको, मनीषियो आध्यात्मिक साधको, योगियो साधु सन्त महात्माओ के लिये व्रत का अभ्यास अत्यावश्यक है—व्रत पूर्वक रहकर वह अपना कार्य सहज ही निर्विघ्न कर सकेंगे। व्रत काल मे ही मनुष्य सूक्ष्म, दूरवर्ती, इन्द्रियो के अगोचर विषयो पर, एकाग्र मन होकर धारणा, ध्यान और समाधि लगा सकता है।" व्रत उपवास का अभ्यास एक परम औषधि भी है। प्राचीन काल से लेकर आज तक, स्वस्थो और रोगियो के लिए उपवास की महिमा सुप्रसिद्ध रही है। इसके सम्बन्ध मे प्रसिद्ध कथन है "लघन परम औषधम्" "उपवास सबसे उत्तम औषधि है" जब तक पाश्चात्य वैद्य विद्या का प्रचार भारत मे नही हुआ था तब तक उपवास का अनुष्ठान भारत मे होता रहा। उपवास मे प्राण शरीर की नस नस से रोग को बाहर निकाल फैंककर रोग का मूल उच्छेदन करता है। ('आत्म सुधार' से साभार)

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन (दिसम्बर १९९०) को सफल बनाने में दिल्ली के ग्रामीण क्षेत्रों में भारी उत्साह

पश्चिमी दिल्ली स्थित मटियाला गाव के प्रधान चौधरी अमरजीत सिंह जी द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती को अपनी ओर से १० हजार रुपये की थैली अपने निवास स्थान पर सम्मेलन को सफल बनाने के लिए भेंट की। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल और पश्चिमी दिल्ली के कर्मठ कार्यकर्त्ता प० अशोक कुमार भी उपस्थित थे। —सम्पादक

नीदरलैंड में वैदिकधर्म प्रचार और आर्यसमाज

भारत से दूर जाकर बसे भारतीयो मे अपने हिन्दू वैदिकधर्म के प्रति स्नेह श्रद्धा के भाव यहां आकर देखा। समय-समय पर भारत से वैदिकधर्म प्रचार-प्रसार हेतु यदा-कदा वैदिक विद्वान् आते रहते हैं। तब उनके द्वारा भारतीयो में अपने धर्म की और अधिक रुचि बढ़ाई जाती है।

भारत में जैसे शिक्षा के माध्यम से धर्म की प्रेरणा दी जाती रही थी उसी प्रकार यहा भी आर्यसमाज तथा अन्य हिन्दू सनातन धर्मी भाइयो का आपसी तालमेल काफी अनुकरणीय है।

हिन्दी प्रचार कार्य

नीदरलैंड में भिन्न २ शहरो मे हिन्दी प्रचार के हिन्दी विद्यालय चलाये जा रहे हैं जिनमें एक आर्य भाई स्थानीय बच्चो तथा युवा वर्ग को एकत्रित कर हिन्दी पढ़ाने का कार्य करते हैं। सिलाई संगीत, व्यायाम आदि के कार्य भी चलाये जाते हैं।

भारत की तरह यहा भी (ओ३म्) के झण्डे सनातन धर्म मन्दिरो मे लगे देखे जा रहे हैं इस प्रकार भारतीयो में हिन्दी भाषा की प्रगति से सन्तोष प्रद है।

यहा हालैंड मे बोल-चाल की भाषा हिन्दी या डच हैं अंग्रेजी नही।

६ नवम्बर ९० एक मास तक श्री प० सच्चिदानन्द शास्त्री सभामन्त्री का कार्यक्रम निरन्तर नीदरलैंड मे चलता रहेगा। उनके आने से आर्यजनता प्रसन्नता का अनुभव कर रही हैं—जन सम्पर्क स्थापित करके आर्यसमाज के कार्य मे प्रगति देने हेतु शास्त्री जी प्रयत्नशील हैं।

हिन्दी तथा हिन्दू स्कूल

हिन्दी विद्यालयो के चलाने का श्रेय आर्यसमाज को हैं जिनके द्वारा भिन्न २ स्थानो पर विद्यालय चलाये जा रहे हैं जिनका व्यय आर्यसमाज वहन करता है। और हिन्दू विद्यालय सरकार के ही व्यय से आर्यसमाज व सनातन हिन्दू दोनो मिलकर सचालन करते हैं(The hague) Rotterdam रोटड्म और एम्सटडम (Amstedam) मे चलाये जा रहे हैं।

प० राम अवध बिहारी जी

भारत मूल के सूरी नाम से नीदरलैंड मे आकर बसे प० राम अवध बिहारी जी के ७५ वे वर्षगाठ के अवसर पर इतरख स्थान मे आर्यसमाज के मन्दर यज्ञ भजन कर उन्हे दीर्घायुष्य की कामना प्रभु से की। प० राम अवध बिहारी जी के द्वारा इतरख आर्यसमाज की स्थापना मे योगदान और कार्य में प्रगति दी गई। बडे ही कर्मठ और क्रियाशील व्यक्ति है।

प० ऋषि तिवारी जी से भेंट

आर्यसमाज के पुराने सेवक स्वाध्यायशील, एक अनुभवी पुराने व्यक्ति है उनसे भेंट की। उनसे मिलकर प्रसन्नता प्रकट की। बोल-चाल व्यवहार मे अच्छी हिन्दी का प्रयोग तथा ऋषिकृत ग्रन्थो का गहन अध्ययन किन्तु आर्य समाज काम मे सरल स्वभाव, देखकर अनुभव हुआ कि ऐसे अच्छे व्यक्ति भी यहा हैं आपके द्वारा हिन्दी के विद्यालय चलाकर हिन्दी को बढावा मिला है।

सार्वदेशिक सभा के द्वारा कार्यक्रम रखने का श्रेय डा० महेन्द्रस्वरूप जी को हैं तथा प० शुभधन जी जो पुरोहित पंडित का कार्य करते है। जिनके आवास पर मैने निवास किया है।

—सच्चिदानन्द शास्त्री

महानता के प्रतीक : पं० शिवकुमार शास्त्री

—पं. नन्दलाल निर्भय सिद्धान्त शास्त्री

प्रत्येक मानव अपने कार्य-व्यवहार से जाना जाता है। जो दूसरों के दु:ख-सुख का अपना दु:ख सुख समझता है वास्तव में वही सच्चा मानव है। जो दूसरों की उन्नति को अपनी उन्नति समझता है वही तो सज्जन माना जाता है। सज्जन अपनी अमिट छाप संसार में छोड़ जाते हैं। नर-नारी उनका यश गान युगों-युगों तक गाते रहते हैं। ऐसे ही महात्मा थे पूज्य पण्डित शिवकुमार जी शास्त्री।

मैंने अपने सैंतालीस वर्ष के जीवन काल में सैकड़ों वेद प्रचारक देखे हैं। जिनसे मैंने बहुत कुछ सीखा है। उन सभी में बड़े गुण थे। मानव जाति उनकी सदैव ऋणि रहेगी।

पण्डित शिवकुमार शास्त्री के साथ मुझे आर्यसमाज का काम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनका उदार हृदय व विनम्र स्वभाव मुझे सदैव याद आता रहेगा। वे जितने बड़े विद्वान व वक्ता थे उतने ही बड़े दयालु व परहितकारी भी थे। वे सदैव दूसरों के अच्छे-अच्छे कामों की प्रशंसा करना अपना धर्म समझते थे। वे कहा करते थे "भले व्यक्ति की बड़ाई करने में कभी भी कंजूसी नहीं बर्तनी चाहिए। हमें सत्पुरुषों को साधुवाद देना चाहिए।"

उनके सद्व्यवहार की दो घटनाएं मैं कभी नहीं भूल सकता। उन्हीं के प्रभाव से मैं उपदेशक बनकर वेद प्रचार कर रहा हूं।

अक्तूबर सन् १९६८ में आर्यसमाज कोसी कलां जिला मथुरा (उत्तर प्रदेश) का वार्षिक उत्सव चल रहा था। तीसरे दिन मैं भी उत्सव देखने की चाहना से वहां गया। दोपहर की कार्यवाही चल रही थी। मैं मंच के सामने दरी पर नीचे बैठ गया। थोड़ी देर बाद मेरे पास श्री महीपाल जी भजोपदेशक आए तथा मेरा हाथ पकड़ कर मंच पर ले गए।

श्री कुंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर भजनोपदेश कर रहे थे। उनका कार्यक्रम समाप्त हुआ तदन्तर श्री महीपाल जी ने मंच संचालक से मुझे पन्द्रह मिनट का समय देने को कहा। मंच संचालक ने तपाक से कह दिया कि अब अन्तिम व्याख्यान एक घण्टा श्री शिवकुमार शास्त्री सांसद का होगा। अब समय नहीं दिया जा सकेगा।

इतना सुनते ही पण्डित शिवकुमार जी बोल उठे। उन्होंने कहा "अरे इस नौजवान को मेरे समय में से ही पन्द्रह मिनट का समय अवश्य दे दो। उनके ऐसा कहने पर मुझे समय दे दिया गया। मैं महर्षि दयानन्द के उपकारों पर बोला। श्री शास्त्री जी ने मेरी कमर थपथपा कर शाबाशी दी। इस प्रकार मानो एक पिता का प्यार मुझे मिल गया।

उनके उदारभाव व विनम्रता की एक दूसरी घटना मुझे भली भांति याद है। जिसने मुझे श्री शास्त्री का पथगामी बना दिया।

सन् १९८४में अम्बहटा जिला सहारनपुर आर्यसमाज का वार्षिक उत्सव था। श्री उत्तमचन्द्र शरर, श्री सोहनलाल पथिक, पण्डित बिहारीलाल शास्त्री व श्री शिवकुमार शास्त्री वहां पधारे हुए थे। मुझे भी उस उत्सव पर इन विद्वानों के साथ वेद प्रचार करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

अन्तिम दिन आर्यसमाज अम्बहटा के मन्त्री श्रीकृष्ण चन्द्र आर्य कार्यक्रम बना रहे थे। अन्तिम व्याख्यान पण्डित शिवकुमार शास्त्री का रखा गया परन्तु श्री शास्त्री जी ने कार्यक्रम पढ़कर कहा, हे मन्त्री जी बात सुनो ये पण्डित नन्दलाल निर्भय अच्छे गायक व कुशल वक्ता हैं। ये उगते सूर्य हैं। इन्हें आर्यसमाज का कार्य आगे पूरे जोश व उत्साह के साथ करना है। आज अन्तिम दिन सबसे पीछे श्री नन्दलाल निर्भय को ही बोलने का अवसर दिया जाए। उनकी इस बात का पण्डित बिहारीलाल जी ने भी समर्थन कर दिया। मुझे सबसे पीछे बुलवाया गया।

राष्ट्ररक्षा सम्मेलन था। मैंने एक घण्टा भजनोपदेश किया। श्री शास्त्री जी मेरे पास मंच पर ही बैठे रहे तथा शान्ति पाठ होने से पहले उन्होने मेरे कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा की। मैंने भाव-विभोर होकर उनके चरण पकड़ लिए तो मेरे हाथ थामकर बोले अरे निर्भय जी आप तो पण्डित हो। आप ऐसा मत करो। मैं उनकी यह बात सुनकर बहुत शर्मिंदा हुआ। वे इतने महान् थे।

उनके जीवन की अन्य कई घटना मुझे याद हैं। वे निराभिमानी पवित्र हृदय, विनम्र व वेदों के प्रकांड विद्वान थे उनकी कथनी, करनी में कोई अन्तर नही था। वे महर्षि दयानन्द के सच्चे भक्त व निष्ठावान वेद प्रचारक थे। उनका अभाव कभी पूरा नही होगा।

(शेष पृष्ठ ९ पर)

डा० कपिलदेव द्विवेदी अमेरिका में

न्यूयार्क। भारत के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान, गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) के कुलपति तथा विश्वभारती अनुसधान परिषद् ज्ञानपुर (वाराणसी) के निदेशक डा० कपिलदेव द्विवेदी अमेरिका, कनाडा, सूरीनाम गुयाना की धर्मप्रचार यात्रा पर हैं। डा० द्विवेदी ने गीता मन्दिर न्यूयार्क में वेदों की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सामाजिक और धार्मिक जीवन मे जो स्थान वेद दे सकते हैं वह अन्य ग्रंथ नहीं। आपने आधुनिक युग में वेदों के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। गीता मन्दिर की ओर से आपका स्वागत स्वामी जगदीश्वरानन्द जी ने किया।

आर्य समाज न्यूयार्क मे डा० कपिलदेव द्विवेदी ने वेदों मे मनोविज्ञान विषय पर बोलते हुए कहा कि हमें वेदों में मनोविज्ञान विषय पर विशद विवरण प्राप्त होता है। मन की पवित्रता, विचारों की शुद्धि और तपस्या को मुक्ति का साधन माना गया है। मन संजीवनी शक्ति है, मन वर्तमान, भूत और भविष्य तीनों काल मे विद्यमान है। मन मे संसार का सारा ज्ञान और बुद्धि निहित है, तथा मन योग्य सारथी है और द्यावा, पृथ्वी लोक, परलोक, वर्तमान, भूत और भविष्य सभी को अपनी परिधि में रखता है। आपने कहा कि मन, आत्मा का प्रतिनिधि है तथा मन ही का प्रेरणा स्रोत है, इसकी प्रेरणा से सारे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष होते हैं आर्य समाज न्यूयार्क द्वारा श्री धर्मजीत जिज्ञासु ने डा० द्विवेदी का स्वागत किया तथा उन्होने वेदामृत ग्रन्थमाला के १२ भाग (सुखी जीवन, सुखी गृहस्थ, सुखी परिवार, सुखी समाज, आचार शिक्षा, नीति शिक्षा; वेदो में नारी, वैदिक मनोविज्ञान तथा चारों वेदो के सुभाषितावली) और अंग्रेजी में "दि ऐसेन्स आफ द वेदाज (वेदों का सार) प्रकाशित करने हेतु धन्यवाद दिया।

आर्य समाज, ओहियो में डा० द्विवेदी ने परिवार सुखी कैसे हो विषय पर बोलते हुए कहा कि परिवार को सुखी बनाने का एकमात्र उपाय यह है कि व्यक्ति सभी पुरुषार्थी हों और सद्गुणों को अपनायें। वेदों की शिक्षा है कि स्वपुरुषार्थ से उपार्जित धन का भोग किया जाना चाहिए। सन्तोष ही सुख का साधन है तथा परिवार के सुख के लिए आवश्यक है कि व्यक्ति निर्भय और साहसी हों। परिवार की समृद्धि के लिए सत्यनिष्ठा, सत्य व्यवहार और उचित साधनो को अपनाना आवश्यक है। ओहियो आर्यसमाज की ओर से श्री सुमन कुमार मिश्र ने डा० द्विवेदी का स्वागत एवं अभिनन्दन किया।

डा० कपिलदेव द्विवेदी ने आर्यसमाज न्यूजर्सी में "जीवन के उद्देश्य एव लक्ष्य". पर तथा आर्य समाज वैस्टचेस्टर, न्यूयार्क में "जीवन और ऐश्वर्य" विषय पर विस्तृत प्रकाश डाला। आनन्द आश्रम मनरी में आपने कहा कि वेद हमारे प्रकाश स्तम्भ हैं और हमें विश्वशांति का उपदेश देते हैं। श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी ने आपका स्वागत किया और वेद तथा भारतीय संस्कृति पर किए जा रहे कार्यों की सराहना की।

डा० कपिलदेव द्विवेदी अमेरिका के पश्चात कनाडा, सूरीनाम, गुयाना प्रमुख नगरों में व्याख्यान देगे। तीन मास बाद दिसम्बर मे स्वदेश वापस लौटेंगे।

—मन्त्री

स्वामी अग्निवेश—आर्यसमाज के इतिहास को दूषित न करें

—डा. भवानी लाल भारतीय

क्रान्तिधर्मी नामक पत्र (सितम्बर १९९०) में उर्दू पत्र नई दुनिया के सम्पादक श्री शाहिद सिद्दीकी को दिया गया स्वामी अग्निवेश का एक इण्टरव्यू छपा है। कांग्रेस और जनता दल के नेताओं की ही भांति स्वामी अग्निवेश भी यदि मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति को अपनायें तो इस पर हमें कुछ नहीं कहना। हमारा निवेदन तो इतना ही है कि वे अपने तथाकथित साम्प्रदायिकता विरोधी अभियान को चलाते समय स्वामी दयानन्द और आर्य समाज को न लपेटें। स्वामी दयानन्द का इस्लाम तथा उसके अनुयायियों के प्रति क्या रुख या रवैया था इसे आर्य समाज के इतिहास तथा महर्षि के जीवन का अध्ययन करने में ही अपना अधिकांश जीवन लगा देने के कारण हम स्वामी अग्निवेश से कहीं बेहतर समझते हैं। स्वामी दयानन्द ने देश की दरिद्रता पर आंसू बहाये तो साम्प्रदायिकता के नग्न ताण्डव की ओर से भी वे कभी विमुख नहीं हुए।

स्वामी अग्निवेश को इस बात की तो चिन्ता है कि हिन्दू मुसलमान, सिख और ईसाई मिल बैठकर अपनी गरीबी और बेचारगी को दूर करने के उपाय नहीं ढूंढते। मैं स्वामी जी से यह कहना चाहता हूं कि वे इन सम्प्रदाय वालों से इसके साथ यह भी पूछें कि संकीर्ण सम्प्रदायवाद को बढ़ाने में भी उक्त मतवालों ने इतना जोश और उत्साह क्यों दिखलाया है। सत्य तो यह है कि दरिद्रता और कट्टर मतवाद दोनों से ही हमें लड़ना है। इस्लाम साम्प्रदायिकता तो आज भारत के लिए ही नहीं संसार के सभी सभ्य देशों के लिए खतरा बन रही है। आज ग्रेट ब्रिटेन के मुसलमान अपने लिए अलग कानून की मांग करते हैं और फ्रांस में रहने वाले मुसलमानों की लड़कियां बुर्का पहन कर स्कूलों में जाने का आग्रह करती हैं। भारतीय मुसलमानों में कट्टरवाद देश के विभाजन के बाद भी कम नहीं हुआ, अपितु बढ़ा ही है। अतः साम्प्रदायिक संकीर्णता से मुंह मोड़ कर केवल गरीबी की दुहाई देना नाकाफी है।

पत्रकार सिद्दीकी ने कहा कि भारत के मुसलमानों के सबसे बड़े विरोधी लोग आर्य समाज में ही हैं और स्वामी जी ने बड़ी मासूमी से इसे मान लिया तथा इसे दुर्भाग्य की बात बताया। उन्हें शायद ज्ञात नहीं कि आर्य समाज तो राष्ट्र विरोधियों का शत्रु है चाहे वे हिन्दू हों मुसलमान हों सिख हों या ईसाई हों। मुसलमान वर्ग से आर्य समाज की कोई जाति दुश्मनी कभी नहीं रही। हमारे शास्त्रार्थ कर्ता तो हजारों मुसलमान श्रोताओं की उपस्थिति में इस्लाम के मुल्ला मौलवियों से शास्त्रार्थ करते रहे। वैर और विरोध का जहर तो राजनैतिक लोग ही फैलाते हैं या वे लोग जो क्षुद्र और तुच्छ लोक प्रियता अर्जित करने के लिए स्वामी अग्निवेश की ही भांति मुसलमान पत्रकार से लल्लोचप्पो करते हैं और खुद इस्लाम के भयंकर संकीर्ण विस्तारवाद से कबूतर की भांति अपनी आंखें मूंद लेते हैं।

अब स्वामी जी के इतिहास ज्ञान की परीक्षा करें। इस इण्टरव्यू को देने के पहले यदि स्वामी अग्निवेश आर्यसमाज का इतिहास या महर्षि का मेरा लिखा जीवनचरित ही पढ़ लेते तो शायद उन्हें ऐसी गलतबयानी नहीं करनी पड़ती। परन्तु उन्हें पढ़ने पढ़ाने की फुर्सत ही कहां है? वे तो कभी बन्धुआ मजदूरों की मुक्ति का आन्दोलन छेड़ते हैं तो कभी दिवराला या नाथ द्वारा की यात्रा करते हैं। कभी आरक्षण समर्थक बयान देते हैं तो कभी और कोई शिगूफा छोड़ते हैं। मैं इन कामों को बुरा नहीं कहता। सभी कार्यक्रम अपने अपने स्थान पर अच्छे हैं किन्तु आर्य समाज की सेवा के लिए तो आपको इन बहुधंधी कार्यक्रमों से थोड़ी देर के लिए छुटकारा पाकर, एक निष्ठ होकर महर्षि के मिशन की सेवा में ही लगना होगा।

"सब देवत सब जाय" की कहावत को ध्यान में रखकर वे अपने जीवन का एक ध्येय बनायें। सस्ती ख्याति अर्जित करने के लिए भिन्न भिन्न प्लेट फार्मों पर जाने के प्रलोभन से बचें।

स्वामी अग्निवेश कहते हैं कि आर्य समाज की स्थापना ८ अप्रैल १८७५ को हुई। यह तिथि किसी प्रामाणिक ग्रन्थ में नहीं है। स्वामी जी आर्य समाज के इतिहास को पुनः पढ़ें। जिस मुसलमान बन्धु ने आर्य समाज बम्बई के भवन निर्माण के लिए जो राशि दी वह १८७५ में (आज से ११५ वर्ष पहले) नहीं दी थी। वह तब दी जब आर्य समाज बम्बई का भवन काकड़वाड़ी में बनने लगा। यह घटना स्वामी दयानन्द के निधन के बाद की है। लाहौर में आर्य समाज के जो दस नियम बनाए गये वे बम्बई में निर्मित २८ नियमों से काट छांट कर नहीं बनाए गए। किन्तु यह सोचकर बनाये गये कि संस्था के संविधान तथा उसके शाश्वत नियमों एवं उद्देश्यों को पृथकशः परिभाषित किया जाए। संविधान तो बदला जा सकता है किन्तु सिद्धान्त और उद्देश्य अपरिवर्तित रहते हैं। दस नियमों के निर्धारण का कार्य भी किसी नवाब के यहां नहीं अपितु डा० रहीम खां की कोठी पर सम्पन्न हुआ था। अधिक जानने के लिए पाठक मेरी पुस्तक महर्षि दयानन्द के भक्त प्रशंसक और सत्संगी पढ़ें।

स्वामी अग्निवेश का यह कथन तो महामिथ्या तथा इतिहास के विरुद्ध है कि "स्वामी दयानन्द के जीवन का अधिक हिस्सा मुसलमानों के घरों में ठहरने, उनसे मिलने जुलने, और उन्हें इकट्ठा करने में गुजरा। पता नहीं स्वयं को सन्यासी कहने वाला कोई व्यक्ति इतनी गलत बयानी कैसे और क्यों करता है? आर्य समाज की स्थापना के पहले तो स्वामी जी मन्दिरों, नदियों के घाटों तथा धर्म स्थानों पर ठहरते थे। आर्य समाज की स्थापना होने और अपने अनुयायियों की संख्या बढ़ने पर महाराज के निवास की व्यवस्था आर्य समाज के अधिकारी तथा भक्त गण ही करते थे। स्वामी जी से मिलने के लिये सभी लोग आते थे हिन्दू अधिक और मुसलमान कम। स्वामी दयानन्द का मिशन था आर्यावर्त की उन्नति वैदिक धर्म का प्रचार, आर्य विद्या का उत्थान न कि मुसलमानों को इकट्ठा (संगठित) करने में उन्होंने अपनी आधी जिन्दगी गुजारी जैसा कि उक्त स्वामी जी कहते हैं।

पता नहीं देवबन्द के इस्लामी विद्यालय को अपनी झोली का सारा धन दे डालने का गपोड़ा स्वामी अग्निवेश को कैसे मिल गया। शायद यह उन लोगों की करामात है जो मुजफ्फरनगर जिले के ग्राम सोरम की एक पचायत के पुराने रिकार्ड के नाम पर समय समय पर उल्टी सीधी बनावटी बातें लिख लिखकर आर्य समाजी पत्रों में छपाते रहते हैं। स्वामी जी के पास न तो झोली रहती था और न उसमें धन। उन्हें तो फर्रुखाबाद कासगंज आदि स्थानों में स्वस्थापित संस्कृत पाठशालायें चलाने के लिए भी सेठ साहूकारों के दान पर निर्भर रहना पड़ता था। भला स्वामी जी ने इस्लाम के दर्शन और शिक्षा में ऐसी क्या खूबी देखी कि वे देवबन्द जैसे इस्लामी साम्प्रदायिकता के गढ़ की स्थापना के लिए कुछ धन देते। जो अवधूत अपने विद्या गुरु दण्डी विरजानन्द को दक्षिणा देने के लिए मुश्किल से आधा पाव लौंगों का जुगाड़ कर पाया, वह अपनी झोली से रुपए निकाल कर देवबन्द के लिए देता इससे बढ़कर सत्य का अपलाप और क्या हो सकता है और वह भी इसलिए कि इसे सुनाकर मुसलमान अखबार नवीस को खुश किया जा सके।

(क्रमशः)

आर्य समाज अमर है। (२)

आचार्य प्रेमभिक्षुः (सम्पादक 'तपोभूमि' मासिक)

सभी जानते हैं कि वर्ण चार हैं, तीन नहीं। पर कैसा दुर्भाग्य है कि राजनीति के पण्डों द्वारा 'सवर्ण' शब्द का प्रयोग केवल ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य के लिए ही हो रहा है, शूद्र के लिए नहीं। आखिर शूद्र भी तो एक वर्ण होने से वर्ण के अन्तर्गत है, फिर वह सवर्ण क्यों नहीं ?

यथेमां वाचं कल्याणी मावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्म राजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय॥

इस पवित्र वेद मन्त्र तथा अन्य अनेक मन्त्रों में ब्राह्मण, क्षत्रिय की भांति वैश्य, शूद्र और स्त्री अर्थात् सभी मनुष्य मात्र को समान रूप से वेद स्वाध्याय की व्यवस्था है। महर्षि मनु तो सुस्पष्ट घोषणा करते हैं-'शूद्रो ब्राह्मण तामेति ब्राह्मण श्चैति शूद्रताम्' अर्थात् शूद्र कुल में उत्पन्न व्यक्ति (अपने गुण कर्म स्वभावानुसार) ब्राह्मणत्व को प्राप्त कर लेता है तथा ब्राह्मण कुलोत्पन्न शूद्रत्व को। हमारा इतिहास ऐसे उद्धरणों से भरा पड़ा है। शूद्र कुलोत्पन्न वाल्मीकि, गणिका (वैश्या) के गर्भ से उत्पन्न वशिष्ठ क्या ऋषि, महर्षि नहीं बन गये ? गोत्र-हीन जाबालि-पुत्र सत्यकाम को ऋषि 'ब्राह्मण' पद देते हैं। और ऋषि (ब्राह्मण) कुल में उत्पन्न रावण तो शूद्रत्व से भी पतित होकर अनार्य (दस्यु) बन गया। राम क्षत्रिय होकर सर्व पूज्य बन गये तथा क्षत्रिय कुलोत्पन्न विश्वामित्र राजर्षि और फिर ब्रह्मर्षि बने। पवित्र वेद के—

'ब्राह्मणोस्यमुखमासीद्' (यजुर्वेद ३१।११) इस मन्त्र में चारों वर्णों की तुलना राष्ट्र-पुरुष के विभिन्न अंगों से करते हुए जहां ब्राह्मण को राष्ट्र पुरुष के मुख, क्षत्रिय को उसकी भुजा और वैश्य को उरू तुल्य कहा है, जहां शूद्र को राष्ट्र-पुरुष को खड़ा रखने वाले 'चरण' तुल्य माना है। वह राष्ट्र पुरुष का आधार है, इसी से सभी चरण वन्दना ही करते हैं। पैर में कांटा लगता है, आंख में आंसू आता है। पौराणिक काल में भी राष्ट्र की रक्षा करने वाली अष्टभुजी दुर्गा की कल्पना (कार्टून) द्वारा बताया है कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र उनमें से प्रत्येक के दो-दो हाथ मिलकर जब 'अष्टभुजी दुर्गा' के रूप में एकजुट हो जाते हैं, तभी राष्ट्र-रक्षा सम्भव है। इन सभी उद्धरणों में कहीं भी छोटे-बड़े (ऊंच-नीच) की दुष्ट कल्पना नहीं है।

महाभारत के पश्चात् मध्ययुग या वाममार्ग काल में जब हमारा नाम, धाम, एव उपास्यदेव, धर्मग्रन्थ, धर्म, गुरुमन्त्र, अभिवादन आदि सब कुछ उलट गया सभी सामाजिक क्षेत्र में भी 'पूजिय विप्रशील गुहा हीना, शूद्र न पूजिय वेद प्रवीणा' जैसी अवैदिक दुष्ट मान्यतायें चल पड़ीं। यज्ञों में पशु बलि, नारी-अपमान, जन्मगत जाति-पांति की स्थिति तभी बनी। महावीर स्वामी और महात्मा बुद्ध जैसे युग पुरुषों ने इन अवैदिक मान्यताओं के विरुद्ध स्वर ऊंचे किये, पर पवित्र वेद से परिचय न होने के कारण कालान्तर में "मूर्तिपूजा" से एक अन्य भयकर रोग को और साथ लेकर वही विकृतियां नये रूप में पुनः आ गई। सन्त कबीर, भक्त रैदास, दादू दयाल आदि ने पुनः इनके विरुद्ध स्वर बुलन्द किये, पर पौराणिक मतवाद के रूप में मनुष्य का स्वार्थ फिर हंसने लगा और आज तो राजनीति की गोटी लाल करने के लिए भाई को भाई से अलग किया जा रहा है—"फूट डालो और राज्य करो" की दुर्नीति चल रही है।

इसी बीच हमारी इस दुर्बलता का लाभ विदेशी आक्रान्ताओं—मुसलमान और ईसाइयों ने भरपूर उठाया। ईश्वरीय कृपा से युगों के बाद महर्षि दयानन्द आये। उन्होंने सदियों, सहस्राब्दियों के बाद वैदिक शंखनाद किया, 'वेदों की ओर लौटो' का सन्देश दिया। जो हम भूल गये थे उसे पुनः याद कराया, नूतन क्रान्ति के साथ नवयुग आया। उसी क्रम में शुद्धि-संगठन के स्वर गूंजे। वैदिक धर्म का द्वार पुनः मानव मात्र के लिए खुला।

लेखक के अनुभव के आधार पर कुछ मुस्लिम भाई शुद्ध होकर पुनः इस्लाम में चले गये, यह ठीक भी है। किन्तु इनकी संख्या स्वल्प ही रही है, और ऐसा किसी लोभ वश ही हुआ है। दूसरी ओर यह सत्य है कि स्वामी श्रद्धानन्द के सफल नेतृत्व मे जो लाखों शुद्धियां हुई—हमारे ही मथुरा जनपद में नन्हीं, नौगांव, तरौली, तेहरा आदि जो गांव के गांव नव मुस्लिमों के शुद्ध हुए वे आज भी हिन्दू समाज के गौरवमय अंग बन राष्ट्रीय धारा के साथ अभिन्न हैं। पिछले दिनों ही मथुरा जनपद के बगहा बुराबई (छोटी कोसी) गांव को शुद्ध किया गया। करसौदा, उस पार के जाटव बन्धुओं की ईसाइयत की बाढ़ से रक्षा की गई। बाजना में दयानन्द सेवाश्रम चलाकर · अराष्ट्रीयकरण का सफल सामना किया गया। गत वर्ष ही स्वामी धर्मानन्द (गुरुकुल आमसेना) द्वारा ७००० शुद्धियां हुई। मुसलमानों ईसाइयों के कई प्रसिद्ध विद्वान के रूप में दीक्षित हुए हैं। श्री प० जयप्रकाश आर्य, डा० आनन्द 'सुमन' पं० महेन्द्रपाल आर्योपदेशक, पं० जीवनमित्र जी एवं पं० अमरेश आर्य के नाम उल्लेखनीय हैं। ये सभी सर्वात्मना वैदिक धर्म प्रचार मे सलग्न हैं।

जहां तक जाटव बन्धुओं का सम्बन्ध है उनकी शुद्धि की गई, लेखक द्वारा ऐसी शब्द योजना ही असगत और अशुद्ध है, क्योंकि ये तो हमारे समाज के अभिन्न अंग हैं ही, और यज्ञोपवीत देते समय खान-पान, आचार व्यवहार की शुद्धि की प्रेरणा या "व्रती जीवन" की दीक्षा तो सभी को दी जाती है। पूर्ण सिद्धान्तः आर्य समाज पूर्ण समतावादी और मानवतावादी है, जैसा कि विवेचन किया जा चुका है। जैसे पहिये में धुरी से परिधि तक लगे हुई सभी अरे समान होते हैं वैसे ही प्रभुदेव की पावन प्रजा रूप सभी मानव समान हैं। प्रभु कहते हैं—"तुम्हारी (प्रपा) प्याऊ समान से, तुम्हारा (अन्नः भाग) अन्न सेवन समान से, तुम सभी को समान रूप से संसार रूपी जुए में जोड़ता हूं।"

आर्य समाज के गुरुकुलों में शिक्षित अनेक जाटव बन्धु आज शास्त्री और आचार्य हैं। अनेकों उपदेशक, भजनोपदेशक तथा संन्यासी है, जिनकी चरण वन्दना कर लोग स्वयं को धन्य समझते हैं।

आर्य समाज आज भी दलितोद्धार, पतितोद्धार, मानव-निर्माण और 'स्वराज' को 'सुराज' बनाने के अपने राष्ट्र कार्य और लोककल्याण कार्य में लगा है। अमेरिकन विद्वान डेविड महोदय के शब्दों में—"आर्य समाज आग की वह भट्टी है, जिसे स्वामी दयानन्द ने जलाया था और जिसमें संसार भर का (वैचारिक) कूड़ा कचरा जलकर भस्मासात हो जावेगा।" झीनी सी राख की (औचित्य की) परत उस पर आ गई। आओ हम सभी मानवता और राष्ट्रीयता प्रेमी उसे मिलकर हटायें और उच्चस्वर में कहें।

पेरिस में हिन्दी

—सुनील शास्त्री भूतपूर्व ऊर्जा मन्त्री, उत्तर प्रदेश सरकार

वर्ष १९७९ की बात है, नई-नई उमर का नवयुवक था। दुनिया देखने की ललक थी, चल दिया यूरोप की ओर जा पहुंचा पेरिस में। एक होटल मे ठहरा और वहा से पेरिस घूमने का कार्यक्रम बनाया। चूंकि उस समय तक मैं विद्यार्थी जीवन मे ही था, इसलिए जेब मे अधिक पैसे न थे और किफायतदारी की तरफ विशेष ध्यान था।

वहा होटल मे, सुबह के नाश्ते मे बहुत बड़ी गोल डबल रोटी बड़े तवे के आकार की मिलती थी। दोपहर मे इधर-उधर जाकर खाने का झंझट कौन पाले यह सोचकर उसी डबल रोटी मे से ही कुछ हिस्सा बचाकर एक लिफाफे मे रख लिया और घूमने को निकल पड़ा।

पेरिस मे सबसे पहले एफिल टावर देखना चाहता था। मुझे बताया गया था कि जहा मैं ठहरा हू, वहा से एफिल टावर ज्यादा दूर नही है। इसलिए मैंने वहा तक पैदल जाने का ही निर्णय किया। इस निर्णय के पीछे जहा एक ओर पैदल चलकर पेरिस को अच्छी तरह से देखने की भावना थी वही पैसे बचाने की भी कम खुशी न थी।

लिहाजा मैं पैदल ही एफिल टावर देखने को निकल पड़ा, किन्तु अनजान और अपरिचित शहर होने के कारण शीघ्र ही मुझे आभास हो गया कि बगैर किसी की सहायता के मैं वहा पहुंच नहीं पाऊंगा। अत उधर से गुजरते हुए पेरिसवासी से पूछा, "कैन यू प्लीज टेल मी व्हिच वे लीडस टू एफिल टावर" (क्या आप कृपा कर मुझे बतायेंगे कि एफिल टावर को कौन-सा रास्ता जाता है?)

उन सज्जन ने एक बार मेरी ओर देखा और मुस्करा कर आगे बढ गए। मैं भौचक्का-सा खड़ा उनका मुंह देखता रह गया। थोड़ी देर बाद एक दूसरे सज्जन दिखाई दिये। मैंने साहस कर उनसे भी पूछा—कैन यू यू काइन्डली गाइड मी टू एफिल टावर (क्या आप मुझे एफिल टावर के लिए मार्ग दर्शन कर सकते हैं?) उन्होने एक उड़ती-सी नजर मेरे ऊपर डाली और आगे बढते चले गये। मैं बड़ा हैरान कि आखिर कोई बोलता क्यो नही? तभी एक तीसरे सज्जन को देखकर मैंने उनसे भी अपना वही सवाल दोहराया। उन्होने मेरी तरफ देखा तो जरूर, पर मेरी बात सुनी-अनसुनी करते हुए वे आगे बढते चले गये।

मैं बड़ा दुखी था कि रास्ता बताना तो दूर रहा, कोई मेरी बात का जवाब तक नही देता था। क्या पेरिसवासी इतने अशिष्ट और घमण्डी हैं कि अभ्यागतो की बात का उत्तर तक नही देते है! इतने में मेरी नजर एक और व्यक्ति पर पड़ी जो काफी गोरा-चिट्टा, नीली आखो और कुछ भूरेबालो वाला था। मैंने अन्तिम प्रयास के रूप मे उससे भी पूछने का निश्चय किया और उसके नजदीक आने पर अपना सारा साहस बटोर कर अपना सवाल उसके सामने भी दोहरा दिया। मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब मुझे अपने सवाल का जवाब भी मिला और वह भी हिन्दी मे। मैंने आश्चर्यचकित होकर उसकी ओर देखा और उनसे उनका परिचय पूछा तो ज्ञात हुआ कि मूल रूप से वे पाकिस्तानी नागरिक है और मुझे देखते ही उन्होने पहचान लिया था कि मैं भारत या पाकिस्तान से आ रहा हू और सम्भवत भाषा की कठिनाई अनुभव कर रहा हू। मैंने उनसे अपनी बात बताई और कहा कि आपसे पहले मैं कई पेरिस वासियो से यह सवाल पूछ चुका हू, किन्तु उन्होने मेरी बात पर ध्यान तक नही दिया, उत्तर मिलना तो दूर की बात है। आपको उत्तर मिलेगा भी नही, कभी नही मिलेगा। क्योकि आप अपनी बात अंग्रेजी मे कहते हैं। कोई पेरिसवासी अंग्रेजी मे पूछी गई किसी बात का कोई उत्तर नही देता है। इसमे वे अपना अपमान समझते है तथा इस मामले मे वे बड़े हठी या दृढ होते है आप अपनी मातृभाषा हिन्दी मे पूछकर देखे आपको अवश्य उत्तर मिलेगा।

मैंने कुछ अविश्वास के भाव से उनकी ओर देखा तो उन्होने कहा आप घबड़ाइए नही, मेरी बात पर यकीन कीजिए, मैं अलग हटकर खड़ा हो जाता हू और आप इसी समय आजमाकर देख लीजिए। हिन्दी मे पूछे गये सवाल का उत्तर आपको तुरन्त मिलेगा।

उनकी बात रखने के लिए मैंने उधर से गुजरते हुए एक पेरिस वासी से डरते-डरते हिन्दी मे पूछा "क्या आप कृपा करके मुझे एफिल टावर का रास्ता बताने का कष्ट करेंगे।' और आश्चर्य का ठिकाना न रहा। जब वे सज्जन रुक गये और टावर एफिल, मे 'फी' पर काफी जोर देते हुए बड़ी नम्रता पूर्वक उंगलियो के इशारो से उन्होने मुझे एफिल टावर का रास्ता बताया। जाहिर है कि वे मेरी भाषा समझ नही सके पर मेरे प्रश्न मे 'एफिल टावर' का शब्द आने से उन्होने अनुमान लगा लिया कि मैं क्या पूछ रहा हू और तदनुसार उन्होने इशारो से ही उत्तर भी दिया था क्योकि वे यह जान गये थे कि मैं उनकी भाषा नही समझ पाऊंगा।

इतनी दूर विदेश में हिन्दी में पूछे गये अपने प्रश्न का उत्तर पाकर मैं गद्गद था और मातृभाषा के उपयोग का महत्व समझ रहा था।

(राष्ट्रभाषा, फरवरी १९९० से साभार)

सम्पूर्ण वेद भाष्य १० खण्ड दें जिल्द में

मूल्य ५५०) रुपए

ऋग्वेद भाग १ से ५ तक (महर्षि दयानन्द)	२९०)
यजुर्वेद भाग-६	७०)
सामवेद भाग-७	५०)
अथर्ववेद भाग-८	५०)
अथर्ववेद भाग ९+१०	९०
वेदो का भाष्य का नट मूल्य—	५५०) रु० है।

अलग-अलग लेने पर १५ प्रतिशत कमीशन दिया जायेगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नई दिल्ली-२

सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत : स्थिर निधियां

श्री रामशरण बाली स्थिर निधि २ हजार रुपए

(अन्तरग ३ जून ८४ द्वारा स्वीकृत)

सस्थापक—श्री रामशरण बाली एम० जी० न० १८ बोदा बाग कालोनी (रीवा)

इस निधि का ब्याज वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार मे खर्च किया जायगा।

श्री हनुमान प्रसाद स्थिर निधि २६ हजार रुपए

(अन्तरग ३ जून १९८४ द्वारा स्वीकृत)

(सस्थापक—स्व० हनुमान प्रसाद जी—गाजीपुर)

श्री हनुमान प्रसाद जी ने सभा को ११ हजार रुपए दिए थे। बाद में उनका देहान्त हो गया। आर्य समाज गाजीपुर के मन्त्री श्री नारायण प्रसाद जी ने सभा को सूचित किया कि इस राशि को सभा ६ वर्ष के लिए फिक्सड डिपोजिट मे रख दे। उसके बाद यह राशि जब २६ हजार हो जायेगी तो इसकी स्थिर निधि—स्व० हनुमान प्रसाद स्थिर निधि के नाम से सभा बना दे और इस निधि के ब्याज को सभा धर्म प्रचार आदि जिसमे भी उचित समझे व्यय करे। स्व० हनुमान प्रसाद जी की यही इच्छा थी।

स्व. श्री सुरेशचन्द्र एवं श्रीमती शकुन्तला नक्ला वनवासी उपकार स्थिर निधि ५ हजार रुपए

(सस्थापक—श्रीमती शकुन्तला नक्ला)

अन्तरग ३ जून ८४ द्वारा स्वीकृत

इस निधि का ब्याज अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ द्वारा वनवासी क्षेत्रो मे नवयुवक और नवयुवतियो में वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार तथा उन्हे आर्य वीर और वीरागना बनाने मे शिक्षार्थ व्यय किया जावे। यह धन अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ के खाते मे जमा रहेगा। प्रति वर्ष १४ मार्च को स्व० सुरेशचन्द के जन्म दिवस पर पति-पत्नी का फोटो सार्वदेशिक पत्र मे प्रकाशित करना अनिवार्य होगा।

श्री भोलाराम कृष्णाकुमारी ग्रोवर स्थिर निधि पचास हजार

(सस्थापक—श्रीमती कृष्णा कुमारी ग्रोवर)

अन्तरग ३ जून ८४ द्वारा स्वीकृत

यह निधि ५० हजार रुपए के मूलधन से सैन्ट्रल बैंक मे जमा की गयी है। इस निधि का ब्याज तिमाही लेकर आर्य वीर, आर्य वीरागना दल वनवासी क्षेत्रा में वनवासा विद्यार्थियों धार्मिक पुस्तको के प्रकाशन अथवा शुद्धि (पुनर्मिलन) कार्यों पर व्यय किया जावे। ८ नवम्बर को प्रतिवर्ष दोनो (पति-पत्नी) के चित्र सार्वदेशिक साप्ताहिक मे प्रकाशित किए जावे। यह पत्र श्रीमती कृष्णा कुमारी ग्रोवर २३२ गली मस्जिद वाली, छोटी बजरिया, रेलवे रोड गाजियाबाद तथा क्रमश चन्द्रभान ग्रोवर गाजियाबाद, आनन्द स्वरूप मलिक नई दिल्ली तथा श्री सुमन रामकुमार बत्रा नई दिल्ली को उनके पतो पर भेजा जावे।

श्री कृष्णदत्त शर्मा तथा आनन्दीबाई स्मृति स्थिर निधि तीन हजार रुपए

(अन्तरग १५ १२ ८४)

निधिकर्त्ता—श्री शरदचन्द शर्मा श्री ऋषि परफ्यूमरी वर्क्स धार (मध्य प्रदेश)

शर्तें

निधि का ब्याज अनाथ बच्चा के विद्याध्ययन, धार्मिक ट्रैक्टों के नि शुल्क वितरण, अथवा वेद प्रचारार्थ ट्रैक्टादि के प्रकाशन पर सभा व्यय करेगी।

श्री जे० नारायणराव स्थिर निधि दस हजार रुपए

सस्थापक—श्री जे० नारायणराव २५ वेद मन्दिर के आर रोड बसवान गुडी बगलौर

यह निधि कन्नड सत्यार्थ प्रकाश के लिए है। इसके ब्याज से कन्नड सत्यार्थ प्रकाश पढने वालो को एक प्रति पर १) रुपए की छूट सभा दे। यदि ब्याज बच जावे तो ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका यदि कन्नड में हो तो उसके पढने वालो को भी १) रुपए प्रति छूट दी जावे। (अन्तरग १५-१२-८४ द्वारा स्वीकृत)।

श्री माखनसिंह परमार स्थिरनिधि एक हजार रुपए

निधिकर्त्ता—माखनसिंह परमार खाटसूर जिला शाजापुर (मध्य प्रदेश)

यह राशि ६ वर्ष के लिए फिक्सड डिपाजिट मे रखी जावे, तदुपरान्त इस निधि का ब्याज वानप्रस्थाश्रम में सहायता के पात्र व्यक्तियो को सभा देवे। (अन्तरग १५ १२-८४ द्वारा स्वीकृत।)

श्री ओमप्रकाश परमार स्थिर निधि दो हजार एक रुपए

(सस्थापक श्री प्रह्लादसिंह परमार पो० खाटसूर जिला शाजापुर मध्य प्रदेश)

शर्तें

यह राशि पहले छ वर्ष के लिए फिक्सड डिपाजिट में रखी जावे। तदुपरान्त स्थिर निधि बनाकर इसका ब्याज सन्यासियो व वानप्रस्थियो की सहायतार्थ सभा व्यय करे। (अन्तरग १५-१२-८४ द्वारा स्वीकृत)।

मास्टर मेहरचन्द मेहता होशियारपुर स्मृति स्थिर निधि २०४००) रुपए

(सस्थापक—श्री शान्ति स्वरूप मेहता)

शर्तें

प्रत्येक ५१००) के निधि के हिसाब से इसका ब्याज (क) टकारा मे किसी विद्यार्थी की विद्या पर, (ख) मोहन आश्रम मे दवाई हेतु (ग) किसी गुरुकुल के योग्य और निर्धन विद्यार्थी की सहायता पर, (घ) किसी कन्या गुरुकुल की योग्य एव समाज प्रचार मे लगनशील कन्या के अध्ययन पर सभा इन चार कामा मे हिसाब से खर्च करे। (अन्तरग १५-१२-८४ द्वारा स्वीकृत)।

श्रीमती सुशीला देवी स्थिर निधि ६ हजार रुपए

सस्थापक—श्री रामकृष्ण नैय्यर १/१५१ सर्विस आफीसर फ्लैट सरदार पटेल मार्ग, नई दिल्ली

शर्तें

इस निधि का ब्याज सभा द्वारा वेद प्रचार तथा शुद्धि कार्य पर व्यय किया जावे। (अन्तरग १५ १२-८४ द्वारा स्वीकृत)।

श्रीमती चमनदेवी ज्वालापुर स्थिर निधि १३ हजार रुपए

यह निधि प्रारम्भ मे ५०००) रुपए स्थापित की गई थी तथा आगे बढाने की स्वीकृति भी दी थी। (स्वीकृति अन्त-रग १६-१०-८२)

शर्तें

इस निधि के ब्याज से वृद्ध सन्यासी, बूढे उपदेशक एव असहाय विद्यार्थियो की सहायता की जावे। इस वर्ष २७६०) रुपए व्यय किए गए।

श्रीमती छाया अरोडा स्थिर निधि ६१००)

यह निधि प्रारम्भ मे ५०००) रुपये से स्थापित की गई थी। बाद मे ११००) की वृद्धि की गई। (अन्तरग १३-५ ८२ द्वारा स्वीकृत)।

शर्तें

इस निधि के ब्याज की राशि आर्य अनाथालय बरेली को भेजी जाये।

श्री मजर विशवम्भर दयाल दमयन्ती देवी स्थिर निधि ५ हजार रुपए

(अन्तरग दिनाक १६ १०-८२ द्वारा स्वीकृत)

शर्तें

ब्याज राशि सभा वेद प्रचारार्थ व्यय करेगी।

श्री शम्भूसिंह-सूबेदार स्थिर निधि ५०००)

इस निधि का ब्याज वेद प्रचारार्थ सभा व्यय करेगी। (अन्तरग दिनाक १६-१०-८२ द्वारा स्वीकृत)।

स्व० श्रीमती चन्द्रवती नई दिल्ली स्थिर निधि (१ लाख २५ हजार रुपए मात्र)

सभा द्वारा यह निधि स्थापित की गई। अन्तरग दिनाक १५-१२-८४ द्वारा स्वीकृत हुई। जिसका ब्याज आर्य कन्याओं की शिक्षादि की व्यवस्था आदि पर व्यय किया जावेगा।

आर्य जगत् के समाचार

टंकारा समाचार

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज की पावन जन्मभूमि मे स्थित उनके जन्म-गृह पर स्वामी जी का १०७ वा निर्वाण दिन उपदेशक महाविद्यालय टंकारा के ब्रह्मचारी एव कार्यकर्ता, आर्यसमाज के सदस्य एव आर्य वीर दल के आर्य वीरो की उपस्थिति मे आर्यसमाज के मन्त्री श्री हसमुख भाई आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ, जिसमे उपदेशक विद्यालय टंकारा के उपाचार्य अरुण कुमार एव छात्रो ने तथा अन्य सदस्यो ने अपनी श्रद्धाञ्जलि स्वामी जी के प्रति अर्पित की।

—अरुण

दीपावली पर्व दयानन्द निर्वाण दिवस सम्पन्न

प्रतिवर्षानुरूप इस वर्ष गुरुवार दिनाक १८-१०-९० को दीपावली पर्व तथा म०दयानन्द निर्वाण दिवस वेद प्रचार धूम धामसे' आर्य समाज मोगरगा (त० औसा, जिला लातूर) महाराष्ट्र मे मनाया गया।

सन्ध्या-हवन, विशेष आहुतियो से सत्सग उपरात महर्षि दयानन्द का गुण-गान हुआ। श्री मनोहर लक्द गुरुजी श्री अनप्पा महामुरे, श्री शिवाजीराव निकम तथा इन्द्रजीत गिरी आदि वक्ता थे।

(१) श्री मोहर मारुतीराव गुरुजी (प्रतिनिधि आर्यसमाज व सहायक शिक्षक, नव भारत विद्यालय खरोसा) को महाराष्ट्र शासन ने इस वर्ष आदर्श शिक्षक से गौरवान्वित किया है।

(२) श्री अन्नप्पा मलसिदप्पा महामुरे (कोषाध्यक्ष आ० स० मो०) को श्री महाराष्ट्र शासन ने स्वतन्त्रता सेनानी घोषित कर सम्मानित किया।

—व्यकटराव शामराव मुरखे, मन्त्री

मदनपुर माथुर परिवार के वयोवृद्ध बा. बद्री नारायण जी चल बसे

शिकोहाबाद १८-१०-९० बा० बद्री नारायण जी का जन्म ३ सितम्बर १८९१ मे हुआ था। वह उम्र मे सम्पूर्ण शिकोहाबाद मे सबसे बड़े थे। वह कई सप्ताह तक केवल दूध व फलो के रस का ही सेवन करते रहे। दिनाक १८-१०-९० को रात्रि १२-३० बजे इस असार ससार से विदा ले गये। वह मृत्यु के समय ९८ वे वर्ष मे चल रहे थे।

बाबूजी नारायण इन्टर कालेज तथा नारायण डिग्री कालेज शिकोहाबाद के कार्यालयाधीक्षक १९५६ तक रहें। अपने कार्यकाल में कड़े परिश्रम, ईमानदारी व कार्य कुशलता के लिये प्रसिद्ध थे। बाबूजी स्वभाव से सरल, एव मृदुभाषी थे। बाबूजी का सम्मान जीवन भर बना रहा। वह गुणो से भरपूर महामानव थे।

बाबूजी का दिनाक १८-१०-९० को दिन क ११ बजे अन्तिम सस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। अन्येष्टि स्थल पर आर्य समाज के सदस्य एव शहर के इष्ट मित्र व परिवारीजन सभी उपस्थित थे। उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री इन्द्र माथुर ने चिता मे अग्नि प्रज्वलित की। ऋषि दयानन्द के विचारो के अनुसार उसी दिन २ बजे घर पर परिवारीजनो ने शुद्धि यज्ञ किया। वैदिक परम्परानुसार अस्थि चयन २०-१० ९० को किया गया।

सामवेद पारायण महायज्ञ

श्री अशोक गुप्ता ने अपने नव निर्मित आवास 'सुधाकुञ्ज' ए-२७१ सूरजमल विहार दिल्ली-९२ मे गृह प्रवेश के शुभ अवसर पर २१-९-९० से ३०-९-९० तक श्री प्रकाशचन्द जी शास्त्री के नेतृत्व में सामवेद पारायण महायज्ञ का का सफल आयोजन किया। २१ ९-९-९० को सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य आनन्दबोध जी सरस्वती ने पधार कर सारगर्भित प्रवचन किया व आशीर्वाद दिया।

—रामकृष्ण,

यज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज मन्दिर राजपुरा टाऊन स्वामी सदानन्द जी महाराज की अध्यक्षता मे विश्व कल्याण गायत्री महायज्ञ ४-१०-९० से १४-१०-९० तक ४१२०० आहुतियो के साथ सम्पन्न। जिसकी पूर्णाहुति १४-१०-९० साय ५ बजे डाली गई।

—वेदपाल आर्य, प्रचार मन्त्री
आर्य समाज मन्दिर राजपुर टाऊन

स्वामी वेदानन्द जी का निधन

स्वामी ओमानन्द जी महाराज के प्रिय मित्र स्वामी वेदानन्द जी का लम्बी बीमारी के बाद ८८ वर्ष की आयु मे निधन हो गया।

स्वामी वेदानन्द जी ने बारह आर्य समाजो की स्थापना की वे एक कवि हृदय व्यक्ति थे। उन्होने कई भजनो की पुस्तके लिखकर पाखण्ड वाद का भण्डा फोड किया।

दिनाक १-१०-९० का उनका दाह सस्कार वैदिक रीति से सम्पन्न कराया गया।

उनके पैतृक गाव कौडल (हथीन) की जनता उनका महा सम्मान करती थी।

—नन्दलाल निर्भय, महामन्त्री
क्षेत्रीय आर्य समाज (हथीन)

महानता के प्रतीक

(पृष्ठ ४ का शेष)

—आर्यसमाज को आज श्री शिवकुमार जी शास्त्री जैसे देशभक्त विद्वानो की परम आवश्यकता है। अन्त मे मैं केवल यही कहूँगा।

श्री शास्त्री जी महा, वेदो के पण्डित थे महा।
पूरा दिखाया कर उसे, जो कुछ उन्होने था कहा।।
ओजस्वी वक्ता थे निपुण, प्रकाड वे विद्वान थे।
सच तो यही है शास्त्री जी तो अजब इन्सान थे।।
उनके अधूरे काम को, पूरा करे हम धर्म है।
प्रचार वेदों का करे, दुनिया मे शुभ कर्म है।।
भगवान भारतवर्ष पर, इतनी कृपा अब कीजिये।
वीर बलशाली बनें हम वर हमे ये दीजिये।।

राम जन्मभूमि और आर्यसमाज

आर्य समाज एक सार्वभौम सगठन है 'ससार का उपकार करना आर्य-समाज का मुख्य उद्देश्य है, पर घर का दिया जलाकर मन्दिर मे तुम जलाना' की नीति के आधार पर सार्वभौम सगठन होते हुए भी, अपने जन्म-काल से ही आर्य समाज, भारत राष्ट्र, राष्ट्र भाषा हिन्दी, देव भाषा सस्कृति, और सस्कृति की पावन प्रतीक गो माता तथा आर्य (हिन्दू) जाति के हितो का सजग प्रहरी रहा है।

अपनी इस टेक को निभाने के लिए आर्य समाज देश के स्वतन्त्रता-सग्राम मे प्रथम पक्ति मे था, जिसमे उसने अपने हजारो हजारो आर्य वीरो का बलिदान दिया, इसी टेक के लिए आर्य समाज ने शुद्धि सगठन, नारी-उद्धार और दलितोद्धार का बिगुल बजाया, जिसमे स्वामी श्रद्धानन्द, प० लेखराम, महा० राजपाल जैसी शत-शत हस्तियो को होम दिया, इसी टेक के लिए हैदराबाद सत्याग्रह मे २२ हजार आर्य वीरो को निजामशाही की दुर्गन्ध जेलो मे झोका और सकडो बलिदान दिये, शिव मन्दिर सत्याग्रह किया और इसी टेक के लिए तथाकथित स्वतन्त्र भारत मे भी हिन्दी रक्षा और गोरक्षा आन्दोलन में सबसे आगे रहकर सर्वाधिक बलिदान दिया। तब आज जब आर्य (हिन्दू) जाति चतुर्दिक् से सकट के बादल मडरा रहे हैं, आर्य समाज शान्त नहीं बैठ सकता। अपनी इसी टेक को निभाने के लिये उसे आगे आना ही होगा।

यह ठीक है सिद्धान्तत आर्य समाज मूर्तिपूजा को राष्ट्रीय और पतन-पराजय, जातीय ह्रास, दीनता और दासता का प्रमुखतम कारण मानता है। पर यहा प्रश्न मूर्तिपूजा का नही, अस्तित्व की रक्षा का है। यह आर्य (हिन्दू) जाति के जीवन और मरण का प्रश्न है। हैदराबाद सत्याग्रह मे भी तो मन्दिरो की रक्षा हेतु ही आर्य समाज ने सत्याग्रह का बिगुल बजाया था। फिर आर्य समाज सत्य का पुजारी है। यह सत्य और ऐतिहासिक तथ्य है कि अयोध्या मे बाबर ने श्रीराम जन्मभूमि पर बने मन्दिर को तोडकर मस्जिद बनवाई, इसी प्रकार वाराणसी के विश्वेश्वर मन्दिर को ढहाकर औरगजेब ने आलमगीर मस्जिद व कृष्ण जन्मभूमि मथुरा मे गोविन्द देव मन्दिर को ध्वस्त करके ईदगाह मस्जिद बनवाई। अन्य सैकडो मन्दिरो को नष्ट करके यत्र-तत्र सैकडो मस्जिदें बनी। तब राम जन्मभूमि मन्दिर के निर्माण की माग सत्य और न्याय की माग है, राष्ट्रीयता की माग है। आर्य समाज को इसमें सर्वात्मना योगदान करना ही चाहिए।

आर्य समाज को तो स्वय सर्वप्रथम इस माग को लेकर कार्यक्षेत्र मे आना था। पर हर्ष का विषय है कि आज विश्व हिन्दू परिषद् रा०स्व०से० सघ, जैसे सगठन स्थिति मे आ चुके है जो आर्य समाज के शुद्धि-सगठन और दलितोद्धार आदि कार्यों को आगे बढ़ा रहे हैं। पुत्र-पौत्रों को आगे बढते देख जैसे पिता-पितामह को सच्ची आन्तरिक प्रसन्नता होती है, वैसी ही प्रसन्नता आर्य समाज को इन सगठनो को बढ़ते देख होनी चाहिए इन सगठनो का भी कर्तव्य है कि वे आर्य समाज के तप-त्याग और बलिदान को नहीं भुलावें, जिसके कारण ही वह जीवित रह सके हैं और पुत्र-पौत्रो की अपने पिता-पितामह के प्रति भक्ति एव कृतज्ञता की भावना की तरह ही आर्य समाज के प्रति भक्ति एव कृतज्ञता के भाव रख इस धर्म-युद्ध मे आर्य समाज के आशीर्वाद की कामना करें। तदर्थ सार्वदेशिक सभा से अनुरोध करे कि वह आर्य समाजो को सहयोगार्थ निर्देश करे।

आरक्षण का अभिशाप

आज मात्र राजनैतिक लाभ के लिए समाज को बाटा जा रहा है शहर बनाम गाव, हिन्दू बनाम मुसलमान, शूद्र बनाम सवर्ण, पिछडी जाति बनाम अगली जाति के नारे दिये जाते हैं। देश एक बार विभाजन की त्रासदी भोग चुका है, कौन कह सकता है कि कल जाति के नाम पर इस प्रकार की माग नहीं उठेगी? जिसकी कल्पना ही कितनी भयावह है।

—आचार्य प्रेमभिक्षु

आर्य समाज की गतिविधियां

गुरुकुल विराटनगर की अपील

यह जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य भक्त अमर शहीद शुक्रराज शास्त्री को तपस्वी नेपाल आर्यसमाज को मान्यता नेपाल सरकार से मिल चुकी है। आज से ४१ वर्ष पूर्व नेपाल में श्री शास्त्री को पेड़ से लटका कर फांसी दी गयी थी। उनका अपराध केवल यह था कि नेपाल मे वैदिक धर्म के सिद्धान्तो और आर्य समाज की मान्यताओ का प्रचार करना। समय ने पलटा खाया और उन्हीं शुक्रराज शास्त्री को एक शहीद के रूप मे प्रतिष्ठित किया गया।

कई वर्षों के सद्प्रयास के बाद श्री रामकुमार जी अग्रवाल ने विराटनगर मे (१,७५०००) की भूमि सुरम्य स्थान पर गुरुकुल के लिए प्रदान की। गुरुकुल विराटनगर की आधारशिला आर्य जगत् के वीतराग सन्यासी पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के कर कमलो से रखी गयी है।

दानी महानुभावो! अभी उस भूमि पर कच्चे फूस के ८ कमरे बने हुए हैं। वहीं पर छात्र रहते हैं और यज्ञ अध्ययन का कार्य चलाते हैं। अब विद्यालय भवन छात्रावास यज्ञशाला, गौशाला औषधालय निर्माण के लिए गुरुकुल को पर्याप्त धन राशि की आवश्यकता है विद्या दान ही सबश्रेष्ठ दान है यह समझकर उदारता पूर्वक दान राशि नेपाल आर्य समाज विराटनगर, स्टेट बैंक आफ इण्डिया शाखा जोगबनी जिला पूर्णिया बिहार मे चैक ड्राफ्ट भेजकर पुण्य के भागी बनें।

निवेदक
गुरुकुल विराटनगर परिवार
आर्यनगर (जतुवा) १८ जनपद
मोरग, कोशी अचल (नेपाल)

देहरादून जनपद के जनजाति-क्षेत्र में वेद-प्रचार

देहरादून २० अक्तूबर। इस जनपद का पर्वतीय जनजाति क्षेत्र जो चकराता तहसील मे स्थित है और उसका भी विशेषकर त्यूनी क्षेत्र जो दुर्गम मार्ग से ही सम्पर्क करने योग्य है, पिछड़ा होने के साथ-साथ वैदिक प्रचार से एकदम अलग रहा है। त्यूनी के एक पवित्रात्मा प० पत्नीराम का महर्षि दयानन्द के अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' से परिचय होने के पश्चात् उनके जीवन मे क्रान्ति आई और उन्होने स्वय को मास मदिरा आदि के सेवन से अलग करके नया मोड़ लिया। वे गत वर्ष एक सप्ताह के लिए वैदिक साधना आश्रम तपोवन देहरादून के योग साधना-शिविर में भी सम्मिलित हुए।

प० पत्नीराम जी ने जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा के प्रधान प० देवव्रत बाली पत्रकार से सम्पर्क करके उनसे प्रार्थना की कि त्यूनी मे वेद-प्रचार का आयोजन किया जाए। आर्यसमाज देहरादून के प्रधान श्री यशपाल आर्य जी के सक्रिय सहयोग और सलाह से १६ तथा १७ अक्तूबर को त्यूनी मे वेद प्रचार का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

आर्यो मेवात चलो

आर्य महासम्मेलन मेवात रविवार १८ नवम्बर १९९० पिनगवा जिला गुड़गावमे आर्य वेदप्रचार मण्डल मेवात की ओर से आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत् के विद्वान्, संन्यासी महात्मा एव राजनैतिक नेता पधार रहे हैं जिसमें मेवात क्षेत्र के हिन्दुओ की ज्वलन्त समस्याओं पर विचार किया जाएगा।

—पदमचन्द आर्य

आर्य समाज पंजाबी बाग एक्स्टेन्शन, नई दिल्ली
ऋषि निर्वाण उत्सव

आर्य समाज पजाबी बाग एक्स्टेंशन नई दिल्ली जिसकी कुछ समय पूर्व स्थापना हुई की ओर से बड़ रोचक कार्यक्रम किये जा रहे हैं। जिससे यहा की जनता मे वैदिक धर्म विचारधारा और आर्य समाज के सिद्धान्तो पर बहुत प्रचार हो रहा है।

समाज में रविवार २१ अक्टूबर १९९० को प्रात ८ बजे से १२ ३० बजे तक ऋषि निर्वाण उत्सव बड़ भव्य रूप से मनाया गया इसमे प्रात हवन यज्ञ और भजनो के कार्यक्रम के पश्चात् बच्चो का रगारग कार्यक्रम हुआ इसमे यहा के बालक बालिकाओ ने महर्षि दयानन्द के जीवन पर और आर्य समाज की शिक्षाओ पर सुन्दर भाषण दिए और गीत कविताए बोली। सब बच्चो को पुरस्कार दिया गया। इसके मुख्य अतिथि श्री सत्यानन्द जी आर्य थे तत्पश्चात् स्वामी आर्य भिक्षु जी प्रो० रतनसिंह जी एव प० जेमिनी शास्त्री के व्याख्यान हुए उन्होने बड़ आकर्षक एव प्रभावपूर्ण शैली से बड़ी सुगम भाषा मे महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र और शिक्षाओ पर प्रकाश डाला ये सफल कार्यक्रम समाज के प्रधान श्री मदनमोहन सलूजा मन्त्री श्री सरदारीलाल चोपड़ा महिला समाज की प्रधाना श्रीमती जनकदुलारी एव मन्त्राणी श्रीमती प्रकाश मिगलानी तथा अन्य सभी आर्य बन्धुओ के सहयोग और सहायता से सम्पन्न हुआ।

महर्षि का १०७ वां निर्वाण दिवस

महर्षि दयानन्द सरस्वती का १०७ वा निर्वाण दिवस आर्य समाज मेस्टन रोड कानपुर म अमावस्या बृहस्पतिवार दीपावलि १८ अक्तूबर ९० को प्रात समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर मृत्युञ्जय दयानन्द को श्रद्धाञ्जलि समर्पित करते हुये श्रीयुत जयदेव गुप्त एम ए श्री सहदेव शास्त्री एव प्रो० लक्ष्मीधर आदि ने कहा कि उस समय की सस्था थियोसौफिकल सोसायटी या अन्य मतान्तरो से आर्य समाज के दूसरे नियम के आधार पर किसी ने समझौता नही किया।

—डा० विजयपाल शास्त्री मन्त्री

१११ वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मेस्टन रोड कानपुर का १११ वा वर्षिकोत्सव शिवरात्रि के अवसर पर शनिवार ९ फरवरी से शिवरात्रि मगलवार १२ फरवरी, १९९१ तक समारोहपूर्वक श्रद्धान द पार्क मे मनाया जाना निश्चित हुआ है।

—डा० विजयपाल शास्त्री मन्त्री

राज० न० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (४-११-१९९०) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U ९३
R . 626/57 Licensed to post without Prepayment License ' o U 93 Post in D P.S O on 2 11-990

भारतीय सिद्धान्त परिषद् भंग

वेदमुनि परिव्राजक

नजीबाबाद १५-१०-९०। सार्वदेशिक पत्र दिनांक २८-९-९० के अंक मे छपी भारतीय सिद्धान्त परिषद नजीबाबाद को दान देने सम्बन्धी खबर का खण्डन करते हुए इसी परिषद के संस्थापक श्री वेदमुनि परिव्राजक ने सार्वदेशिक पत्र को सूचित किया है कि परिषद को काफी समय पहले भंग किया जा चुका है और श्री विद्यारत्न आर्य स्वयम्भू मन्त्री है और परिषद के नाम पर धन बटोरना ही इनका पेशा है।

श्री परिव्राजक ने कहा कि न तो कही परीक्षा केन्द्र है और न ही कहीं परीक्षाओ द्वारा धर्म प्रचार होता है अत आर्य बन्धु भावनाओ मे बह कर धन न भेजें।'

पितृ पक्ष मेला प्रचार

आर्य समाज, गया की ओर से आर्य समाज मन्दिर चाँद चौरा, गया मे पितृ पक्ष मेला प्रचार दिनांक ६ सितम्बर से १२ सितम्बर तक सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ, जिसमे आर्यजगत के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री नरपाल सिंह के भजनोपदेश तथा व्याख्यान का अच्छा प्रभाव पड़ा। समाज की ओर से आर्य साहित्य का वितरण भी किया गया।

—सोमभित्र शास्त्री, मन्त्री

उत्सव सूचना

आपको यह जानकर हर्ष होगा कि हमारी आर्य समाज कायमगंज का वार्षिकोत्सव दिनांक १५, १६, १७, १८ दिसम्बर १९९० को होना निश्चय हुआ है। अत आप अपने आने की स्वीकृति प्रदान करने की कृपा करें। आर्य समाज कायमगंज सदैव आभारी रहेगा। मार्ग व्यय दिया जाएगा।

—ब्रह्मानन्द, मन्त्री

आर्य समाज गौतम कालोनी नई दिल्ली गुरुवार १८ अक्तूबर १९९० मध्याह्न ३ बजे से दीपावली पर्व पर महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज का १०७वां निर्वाणोत्सव आर्यसमाज के मन्त्री कैप्टन भागमलसिंह की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री राजेश सहल जी अपने भजन के द्वारा दयानन्द जी को मार्ग प्रदर्शक के रूप मे प्रस्तुत किया। प्रचारमन्त्री श्री कृष्ण माधव प्रसाद ने उनकी जीवनी और उपदेशो की ओर संकेत दिलाते हुए लोगो एव युवाओ से आग्रह किया कि वेदों की उक्ति पर ध्यान देते हुए महर्षिजी द्वारा बनाये गये मार्ग का अनुकरण करें।

—कृष्ण माधव प्रसाद आर्य, प्रचार मन्त्री

वार्षिकोत्सव

दिनांक २९ अक्टूबर से ४ नवम्बर १९९० तक पूज्यपाद श्री स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती द्वारा स्थापित गुरुकुल सेवा सुदं दिल्ली मे ४ नवम्बर १९९० रविवार को वार्षिक उत्सव मे ९ बजे तक बच्चो को आशीर्वाद देने के लिए एक सभा का आयोजन किया गया है। जिसमें आर्य जगत के मूर्धन्य सन्यासी, विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

—रामलाल मलिक

गुरुकुल

(पृष्ठ १ ...)

मस्जिद इटावा से अनेक आर्य पुरुष स्वामी जी ... ।

गुरुकुल ऐरवा के उत्सव पर जिला सभा के अध्यक्ष ... जी ने १००१) रुपया स्वामी जी को भेंट किया। स्वामी जी ने यह धनराशि गुरुकुल ऐरवा को सार्वदेशिक सभा की ओर से दान कर दी।

गुरुकुल का उत्सव बड़े उत्साह से मनाया गया आस पास के ग्रामों से हजारों आर्य समाजी कार्यकर्ता उपस्थित थे।

उत्सव स्थगित

आर्य समाज नकुड़ जिला सहारनपुर का ६० वां वार्षिकोत्सव जो दिनांक २, ३, ४ नवम्बर को मनाया जा रहा था वह प्रशासन से स्वीकृति न मिलने के कारण अनिश्चित काल के लिए स्थगित किया जाता है।

—भूपेन्द्र कुमार चौहान, मन्त्री
आर्य समाज नकुड़

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख्य पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१ दयानन्दाब्द १६६ दूरभाष : ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष २६ अंक ४३] मार्गशीर्ष कृ० १० सं० २०४७ ११ नवम्बर १९९०

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के लिए बम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा एक लाख ग्यारह सौ ग्याहर रुपए की राशि भेंट

आर्यसमाज भवन (मुलुण्ड शाखा) बम्बई के नए भवन का स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा उद्घाटन तथा कांदेवल्ली में दयानन्द विद्यालय का शिलान्यास

बम्बई २ नवम्बर १९९० को आर्यसमाज काकडवाडी द्वारा जवाहरलाल नेहरू रोड मुलुण्ड (प० बम्बई) में निर्मित आर्यसमाज के भव्य भवन का उद्घाटन करते हुए स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा—बम्बई के आर्य जनो ने इस क्षेत्र मे आर्य समाज भवन का निर्माण करके प्रशंसनीय कार्य किया है। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई के प्रधान श्री ओंकारनाथ जी मन्त्री श्री धर्मवीर गुलाठी और कैप्टन देवरत्न आर्य तथा बम्बई के सभी आर्य समाजों के प्रधान व मन्त्रियों की ओर से स्वामी जी का भव्य स्वागत किया गया।

४ नवम्बर को स्वामी जी की अध्यक्षता मे राष्ट्रीयता सवर्द्धन सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें शिव सेना के प्रधान श्री बाल ठाकरे, श्री प्रमोद जी स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती आदि अनेक महानुभाव उपस्थित थे। इस सम्मेलन मे बड़ी सख्या मे बम्बई की जनता ने भाग लिया। इस सम्मेलन मे डा० वागीश द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव जो सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ प्रस्ताव अलग से दिया जा रहा है।

श्री सेठ प्रतापसिंह शूरजीवल्लभदास की अध्यक्षता मे दयानन्द विद्यालय का शिलान्यास समारोह

आर्य समाज माटुंगा द्वारा बृहत्तर बम्बई के उपनगर कांदेवल्ली मे दयानन्द विद्यालय का शिलान्यास स्वामी जी द्वारा किया गया। इस समारोह की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के पूर्व प्रधान सेठ प्रतापसिंह शूर जी वल्लभदास द्वारा की गई। आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान प० रुद्रमित्र शास्त्री ने यज्ञ कराया। समारोह के सयोजक सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री कैप्टन देवरत्न आर्य थे। इस अवसर पर बम्बई की आर्य समाजो की ओर से स्वामी जी का भव्य स्वागत किया गया। इस अवसर पर श्री ओंकारनाथ जी आर्य बम्बई के उद्योगपति श्री सत्य-प्रकाश जी, श्री भगवतीप्रसाद जो गुप्त तथा श्री मिठाई लालसिंह आदि अनेक गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे।

स्वामी जी ने बम्बई के आर्य जनो द्वारा आर्यसमाज के रचनात्मक कार्यक्रमो मे निरन्तर प्रगति पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा आज देश की विकट परिस्थितियो का समाधान आर्य समाज व दयानन्द के सिद्धान्तो द्वारा ही हो सकता है।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के लिए दो लाख से अधिक की राशि स्वामी जी को भेंट

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के लिए स्वामी जी की अपील पर बम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आर्य जनो ने बड़े उत्साह से धन सग्रह करके स्वामी जी को दो लाख सत्तरह हजार रुपए से अधिक की राशि भेंट की जिसका विवरण निम्न प्रकार है—

[शेष पृष्ठ २ पर]

सुखी समाज

जीवन भर पुरुषार्थी रहें

कुर्वन्नेवेह कर्माणि, जिजीविषेच्छतं समाः। एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति, न कर्म लिप्यते नरे॥ यजुर्वेद ४० २॥

हिन्दी अर्थ—इस ससार में मनुष्य कर्म करता हुआ ही सौ वर्ष जीने की इच्छा करे। इस प्रकार से तुम्हारी मुक्ति होगी। इसके अतिरिक्त अन्य प्रकार से मुक्ति नही होती है। निष्कामभाव से किया हुआ कर्म मनुष्य मे लिप्त नहीं होता है अर्थात् निष्काम भाव से कर्म करने वाला व्यक्ति कर्म बन्धन मे नही पड़ता।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

दयानन्द उवाच

- जो बलवान होकर निर्बलो की रक्षा करता है वही मनुष्य कहाता है। और जो स्वार्थ वश दूसरों को हानि पहुंचाता है वह मानो पशुओं का भी बड़ा भाई है।
- विद्या वृद्ध के लिए द्रव्य व्यय हो कला कौशल की उन्नति के लिए धन लगाया जाय।
- जो ससार में देने वाला होता है वही सबका प्यारा होता है और कोई भी उसका विरोधी नहीं होता है।
- मनुष्य को चाहिए, कि मन और वाणी को सर्वदा वश में रखे।

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता में (मुलुण्ड शाखा) बम्बई आर्यसमाज द्वारा पारित प्रस्ताव

आर्य समाज बम्बई की (मुलुण्ड शाखा) के उद्घाटन समारोह के शुभ अवसर पर राष्ट्रीयता सवर्द्धन सम्मेलन देश की वर्तमान राजनैतिक अवस्था पर गहरी चिन्ता व्यक्त करता है। इस सम्मेलन का यह निश्चित मत है कि स्वतन्त्र भारत की वर्तमान दुर्दशा का मुख्य कारण राजनैतिक दलों की वोट बटोर नीति है। देश के विभाजन से पूर्व डा० अम्बेडकर और मुहम्मदअली जिन्नाह ने बटवारे से पूर्व पाकिस्तान और हिन्दुस्तान से आबादियों के तबादले का प्रस्ताव किया था। किन्तु अदूरदर्शी नेताओं ने उसे अनदेखा करके उस पर आचरण नहीं किया। अत अखण्ड भारत में अंग्रेजी कूटनीति के कारण हिन्दू-मुसलमान की जो खाई खोदी गई थी, जिसके कारण भारत दो हिस्सों में बट गया, वह स्वतन्त्र भारत मे और अधिक गहरा होकर हिन्दू-मुस्लिम दंगे और भी भयानक रूप मे होने लगे जिससे राष्ट्रीय एकता और अखण्डता को आघात पहुचा।

राजनैतिक पार्टियो द्वारा अल्पसख्यको के मत प्राप्त करके राजगद्दी को बनाये रखने की नीति से ही नागालैण्ड, काश्मीर और पजाब की समस्याओ का जन्म हुआ। अल्पसख्यक आयोग तथा मुस्लिम तुष्टीकरण की गलत नीति के कारण ही देश की राजनीति ने भयानक राजनीतिक मोड लेकर देश को साम्प्रदायिकता की जलती हुई आग मे झोक दिया है। रामजन्म भूमि और बाबरी मस्जिद का मामला भी सोमनाथ के मन्दिर के पुनर्निर्माण की तरह हल किया जा सकता था किन्तु इस समय देश मे कोई सरदार पटेल जैसा लौह नेता नही है।

वर्तमान विश्वनाथ प्रतापसिंह सरकार की घिनौनी मुस्लिम तुष्टीकरण की वोट की नीति के कारण काश्मीर से हिन्दुओ का पलायन हुआ और पजाब की जलती हुई खालिस्तानी सम्प्रदायवाद की भट्टी को और अधिक हवा देकर राजनेता अपनी मतपेटियो को सुरक्षित करने का दुष्प्रयास कर रहे हैं।

इस सम्मेलन का निश्चित मत है कि अयोध्या मे मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम की जन्म स्थली है। बाबर विदेशी आक्रान्ता था। अत जिस सरदार पटेल ने सोमनाथ मन्दिर को बनवाकर दासता की निशानी को निर्मूल किया था, उसी प्रकार देश की बहुसख्यक हिन्दू जाति की धार्मिक भावनाओ का आदर करते हुए राष्ट्र की सभी राजनैतिक पार्टियो से यह सम्मेलन अनुरोध करता है कि अयोध्या मे राममन्दिर का निर्माण करके देश मे सच्ची राष्ट्रीय एकता की स्थापना करे।

यह सम्मेलन अयोध्या मे राममन्दिर निर्माण के आन्दोलन को दबाने के लिये भारत के प्रधानमन्त्री तथा उत्तर प्रदेश के अदूरदर्शी मुख्यमन्त्री के अत्याचारपूर्ण भूमिका की तीव्र भर्त्सना करता है और शहीद होने वाले कार सेवको के बलिदान पर विनम्र श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए उत्तर प्रदेश सरकार को शीघ्र बर्खास्त करने की माग करता है।

त्यौहार दीवाली मनाओ

अज्ञान का तमसोम क्षय ज्ञान की ज्योति जगाओ।
नाशकारी कुप्रथायें मिटा करके विजय पाओ॥
सुकीर्ति सद्ज्ञानमय प्रिय हिन्दी का गौरव बढाओ।
राष्ट्र नैया डूबने ना दो किनारे पर लगाओ॥
हवन यज्ञादि रचाकर देवो का पूजन कराओ।
पुन्य-प्रद शिव वेद रूपी दीप घर-घर में जलाओ॥
आनन्द कन्द ऋषिराज दयानन्द यति को ना भुलाओ।
सुख शान्तिमय उत्साह से त्यौहार दीवाली मनाओ।

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

आर्य महासम्मेलन को दान

[पृष्ठ १ का शेष]

आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई द्वारा	१,१,११ -०० रुपये
श्री रामसिंह राठौर	५,०००-०० रुपये
श्री पच्छय्या जी	५१,०००.०० रुपये
स्व० सदाजीवतलाल जी की धर्मपत्नी द्वारा	११,०००-०० रुपये
आर्यसमाज मुलुण्ड की जन सभा द्वारा सग्रह	१,४६४-०० रुपये

इसके अतिरिक्त उद्योगपति श्री सत्यप्रकाश ने २१ हजार रुपये की राशि भिजवाने का आश्वासन दिया। बम्बई समाज के प्रधान श्री ओंकारनाथ जी तथा अन्य आर्य जनों ने भी धन सग्रह करके और राशि भिजवाने के लिए स्वामी जी को आश्वस्त किया।

स्वामी जी ने अपने बम्बई के दौरे से लौटकर प्रसन्नता प्रकट करते हुए बम्बई के आर्य नेताओ तथा आर्य जनो का हार्दिक आभार प्रकट किया।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा भारतीय जनता पार्टी के नेताओं तथा अन्य राम-भक्तों की रिहाई की मांग

नई दिल्ली ३० अक्टूबर,

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आज भारत के राष्ट्रपति, महामहिम श्री रामास्वामी वेंकटरामन, से एक पत्र द्वारा अयोध्या मे राम जन्म-भूमि विवाद को शीघ्र सुलझाने की माग की है। उन्होंने कहा कि राम जन्म-भूमि विवाद को बहुत आसानी से सुलझाया जा सकता था। लेकिन इस धार्मिक विवाद को राजनीतिक रूप देकर बुरी तरह उलझा दिया गया है।

इस समय सपूर्ण उत्तर-प्रदेश एक भयकर आग मे जल रहा है, जिससे देश की एकता और अखण्डता खतरे मे पड गयी है। मुलायमसिंह की सरकार ने लाखो राम भक्तो को जेल मे बन्द करके इस आग को और भडकाया है।

स्वामी जी ने राष्ट्रपति जी को उनके नैतिक एव सवैधानिक कर्तव्य की याद दिलाते हुए उनसे इस विवाद को शीघ्र सुलझाने का आग्रह किया तथा भारतीय जनता पार्टी के नेताओ तथा अन्य सभी बन्दीकृत राम-भक्तो की रिहाई की भी माग की। उनके इस आदेश से ही देश मे पुन सद्भावना का वातावरण बनाने मे सहायता मिलेगी।

स्वामी जी ने याद दिलाया कि आर्य समाज ने देश की स्वतन्त्रता की लडाई मे बडा योगदान दिया था। अत वह आज की बिगडती हुई हालात को अनदेखा नही कर सकता। भारत सरकार ने इस समय देश मे पजाब, काश्मीर, असम आदि की गम्भीर समस्याओ की ओर ध्यान न देकर अपने आपको राम जन्म भूमि विवाद को उलझा लिया है। सरकार को चाहिए इससे निकल कर पहले बडी-बडी समस्याओ की ओर ध्यान दें।

आर्य समाज का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज पुण्य नगर आजमगढ़ का अठारहवां वार्षिकोत्सव २९ से ३० सितम्बर १९९० तक आर्यजगत के विद्वान एव मुख्य चिकित्साधिकारी पिथौरागढ स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती (पू०पू० डा० ज्ञानप्रकाश शास्त्री फलाहारी) की अध्यक्षता में वेद मन्दिर के प्रागण मे सम्पन्न हुआ।

समापन समारोह के अवसर पर प० महेन्द्रपाल जी (पूर्व इमाम) कलकत्ता ने कहा कि आज मानव समाज नाना प्रकार के विवाद, जातिवाद, आतकवाद, अल्पसख्यकवाद के चक्कर में पड़कर आपस मे लड़-कट-मर रहे हैं। आजकल आरक्षण को लेकर पूरे देश मे आगजनी तोड़-फोड़ की घटनायें प्रतिदिन हो रही है। पण्डितजी ने स्वामी दयानन्द के अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के आधार पर आरक्षण के बारे मे बतलाते हैं—शिक्षा का सबको समान अधिकार है एक-बराबर शिक्षा सबको गुरुकुल में मिलनी चाहिए। जहा पर राजा एव प्रजा सभी के लड़के एक साथ शिक्षा प्राप्त कर सके।

गोहत्या बन्दी : एक राष्ट्रीय मांग

श्री विमल वधावन एडवोकेट

भारतवर्ष की इस पवित्र-पावन धरती पर गोहत्या का अधर्म प्राचीन आर्य काल से लेकर मुस्लिम शासन काल तक नहीं था परन्तु ब्रिटिश साम्राज्य के भारत में पदार्पण के साथ ही इस अधर्म की नींव रखी गई । इससे पहले हिन्दू-मुस्लिम दोनों ही गाय को पूजनीय मानते थे। अन्तर केवल इतना था कि हिन्दुओं ने गाय को धार्मिक रूप से भी पूजनीय माना था क्योंकि हिन्दुओं के महापुरुष श्री कृष्ण का चित्रण सदैव गाय के साथ ही किया गया था। बस इसी बात का लाभ अंग्रेजों ने उठाया और यह प्रचार किया कि गाय का तो केवल हिन्दुओं के साथ मात्र धार्मिक सम्बन्ध है अतः दूसरे समुदाय के लोगों द्वारा इसके मांस भक्षण में कोई पाप नहीं है, इन सब कुकर्त्यों के पीछे ब्रिटिश नेताओं की "फूट डालो और शासन करो' की नीति काम कर रही थी; इसी दुष्ट नीति के तहत ही तो हिन्दू और मुस्लिम समुदाय में वैमनस्य पैदा हुआ, कई दंगे हुए और असंख्य जानें गई ।

गाय के प्रश्न पर सबसे पहले आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आवाज उठाई और उन्हीं के कदमों पर चलते हुए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने भी स्वराज्य मिलने के पश्चात् पूर्ण गोवध रोकने का आश्वासन भी दिया। महात्मा गांधी तो गोहत्या और नरहत्या को समान समझते थे। शासन सम्भालने के बाद पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने तो 'केटिल प्रिजरवेशन एण्ड डेवलपमेंट कमेटी' भी बना दी थी, इस कमेटी ने १९४९ में अपनी रिपोर्ट इस प्रकार दी।

"जब तक भारत में सम्पूर्ण गोवध बन्द नहीं होगा, तब तक अधिक अन्न उपजाओ की योजना सफल नहीं हो सकेगी।"

गोहत्या बन्दी का प्रश्न न तो साम्प्रदायिक है और न किसी के हृदय को आघात पहुंचाने वाला, विडम्बना ही है कि हमारी सरकार ने इस ओर कभी पहल करने की सोची हो नहीं स्वतन्त्र भारत की सरकार भी ब्रिटिश सत्ता की तरह आज तक इसी गलत फहमी में है कि गोहत्या बन्दी हिन्दुओं की एक धार्मिक मांग ही है और इस पर दूसरे समुदायों द्वारा विरोध होगा, परन्तु इस लेख के द्वारा राजनैतिक, सांस्कृतिक, स्वास्थ्य सम्बन्धी, भिन्न मत-मतान्तरों तथा धार्मिक पहलुओं की तरफ से यह सिद्ध किया गया है कि यदि देश में गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगा दिया जाए तो देश की दरिद्रता, दुःख, दीनता और समस्त देशवासी समृद्ध तथा खुशहाल होंगे ।

राजनैतिक विचार

श्री बालगंगाधर तिलक ने जनता को यह आश्वासन दिया था कि जब हम स्वराज्य प्राप्त कर लेंगे तब पांच मिनट में पहली कलम की नोक पर गोवध निषेध कानून पास कर देंगे। डा० राजेन्द्र प्रसाद ने अपने एक रेडियो भाषण में कहा था कि 'जो देश कभी घी और दूध का भंडार कहा जाता था आज वहां विदेशियों से डिब्बा बन्द पाउडर का दूध और मक्खन मंगाया जाता है, वनस्पति घी भारतवासियों के पेट में विकार उत्पन्न कर रहा है, रोगों की भरमार बढ़ती जा रही है। भारतीयों का सात्विक जीवन आज समाप्त होता नजर आ रहा है, इन सबका मात्र एक ही कारण है। गाय तथा गोवंश की घटती संख्या।" डा० राजेन्द्रप्रसाद का यह भी कहना था कि "पतन का यह क्रम तब तक नहीं रुकेगा जब तक भारत की सरकार गाय तथा इसके वंश की पूर्ण सुरक्षा की गारन्टी अनुकूल नहीं दे देती।"

मुसलमानों के बादशाहों ने भी समय-समय पर गाय की रक्षा हेतु कानून बनाए, मुगल बादशाहों के पहले शासक बाबर ने अपने पुत्र हुमायूं को एक वसियत में लिखा कि अपने राज्य में गाय की कुर्बानी कभी न होने देना, हुमायू को भी गौमांस से अत्यन्त घृणा थी, हुमायूं के कुछ संस्मरण फारसी में लिखे गए जिनका अंग्रेजी अनुवाद सन् १९०४ में मेजर चार्ल्स स्टुअर्ट ने किया, जिसके अनुसार "एक बार अपनी ईरान यात्रा के दौरान अपने सौतेले भाई कामरान और मां राय की बेगम के पड़ाव पर आराम करते हुमायूं ने भोजन मंगवाया तो उन्हें उस भोजन में गाय का मांस होने की शंका हुई। पता लगाने पर उनका सन्देह ठीक निकला तो वह क्रोधित हुए और बोल उठे हाय रे कामरान पेट भरने का तेरा यह रास्ता ? अपनी पवित्र मां को भी तू ये गौ माम खिलाता है ? उसके लिए गाय बकरियां लाने में तू असमर्थ हो गया ? हमारे तो पिता की कब्र को झाड़ने वालों तक के लिए गौ मांस खाना अनुचित है। पिता जी ने जिस तरह अपने कुटुम्ब वालों का गुजर किया क्या उस तरह हम चारो पुत्र नहीं कर सकते ? इन शब्दों के साथ दुःखी बादशाह हुमायूं ने भोजन का थाल एक तरफ सरका दिया और शरबत का गिलास पीकर ही उठ खड़े हुए।

गोरक्षा के सिलसिले में यही दृष्टिकोण हुमायूं के पुत्र अकबर का था । अकबर के राज्य का पूरा विवरण 'आइन-ए अकबरी' नाम की किताब में मिलता है जिसमें गौरक्षा का एक पृथक अध्याय ही है। इसमें लिखा है कि भारत जैसे सुन्दर देश में खेती का आधार गाय ही है, उसके दूध, घी मक्खन आदि से भारतवासियों का पेट भरता है। इसके बैल खेती करके सारे भारत के लिए अन्न उपजाते हैं। इसलिए गाय तथा उसके वंश की हत्या करना जुर्म है, महाराजा अकबर की स्वयं अपनी गौशाला बड़ी विस्तृत थी। महाराजा अकबर के दरबार से १३ जिला हिज्ज सन् ११ शाही (इस्लामिक तिथि) को एक राजकीय फरमान इस प्रकार जारी हुआ।

"सल्तनत के प्रबन्धकगण, कर्मचारी, अमीर उमराव, परगनों के हाकिम और शाही मुल्कों के कारबार के जिम्मेदार जान लें कि न्याय के युग मे आज यह फरमान जारी किया जा रहा है जिसका पालन सबके लिए परम आवश्यक है।

गाय की जाति चाहे वह नर हो या मादा, अत्यन्त ही लाभ देने वाली है क्योंकि मनुष्य और पशु अन्न खाकर जीते हैं, अन्न खेती के बिना नहीं हो सकता, खेती हल चलाने से होती है और हल चलते हैं बैलों से, इससे स्पष्ट है कि समस्त संसार और पशुओं तथा मनुष्यों के जीवन का आधार एक गाय जाति ही है। अतः हमारी ऊंची हिम्मत और साफ नियत का यह तकाजा है कि हमारे राज्य में गौहत्या की रस्म बिल्कुल न रहे। यदि कोई व्यक्ति यह काम करेगा तो उसको सुल्तानी गजब में फसना पड़ेगा और वह दण्डनीय होगा, उसके हाथों और पांवों की ऊंगलियां कटवा दी जायेंगी।"

अकबर की इस परम्परा को उसके पुत्र जहांगीर ने भी उसी प्रकार निभाया।

ब्रिटिश नेताओं के अतिरिक्त भारत की धरती पर आज तक राजनीति करने वाले सभी प्रकार के लोगों ने गौ तथा उसके वंश की रक्षा पर आवश्यक बल दिया। १९२४-२५ में कांग्रेस के एक सम्मेलन में गौरक्षा पर बोलते हुए पण्डित मदनमोहन मालवीय तो रो पड़े थे। गांधी जी तो सदैव यही कहते थे कि देश की सुख-समृद्धि गाय के साथ ही जुड़ी है।

गाय भारतीय संस्कृति का प्रतिरूप

सत्य, न्याय और शान्ति जहा भारतीय संस्कृति को सुरक्षित रखे हुए हैं, अतिथि सेवा इस देश की मर्यादा थी। सदाचार और स्वावलम्बी जीवन इस देश का चरित्र था। इन सब का आधार एव प्रेरणास्रोत गाय ही हैं। उसका परोपकारी जीवन, उसकी सौम्य आकृति, परिश्रमी रूप और शान्त वातावरण ही तो भारतीय संस्कृति का उद्गम है।

गाय से स्वास्थ्य लाभ

दूध गाय माता की एक स्वर्णिम देन प्राणधारियों को है। जिन उपायो से शरीर की गाडी स्वस्थ रहकर अपने मार्ग पर चलती जाए वे सब पोषक तत्व दूध मे विद्यमान हैं। सबसे अधिक सुपाच्य होने के कारण बच्चो के जीवन का तो पहला उपहार ही दूध होता है। गाय के दूध में जीवन निर्माण की समस्त सहायक सामग्री रहती है। दूध मे ५ प्रतिशत मक्खन होता है। इसमे विद्यमान कैल्शियम हड्डियो को मजबूत रखता है। विटामिन तथा प्रोटीन भी दूध मे पाया जाता है। गाय के दूध मे दस गुण होते है–यह स्वादिष्ट, ठडा, कोमल चिकना, गाढा, पौष्टिक, सात्विक, सुपाच्य, बाहरी प्रभाव को देर से ग्रहण करने वाला, चित को प्रसन्न करने वाला होता है। इन गुणो से यह दूध दर्जनो बिमारियो से शरीर को दूर रखने की ताकत रखता है। मिरगी, पागलपाल और सन्तान न होने जैसे रोगो के लिए तो गाय का दूध और घी राम बाण है। अलग-२ रग की गाय का दूध भिन्न-भि न रोगो के लिए उपयोगी होता है। गाय की त्वचा कोमल होने से सूर्य की किरणो से उसी र ग का प्रभाव उसके दूध मे आ जाता है। भैस की त्वचा मोटी होने से उसमे सूर्य किरणो का प्रवेश कठिन होता है। हृदय तथा पीलिया रोगी को लाल र ग की गाय का, यक्ष्मा के रोगी को कपिला और दमा रोगी को काली गाय का दूध देना श्रेयस्कर माना गया है। आयुर्वेद के अनुसार घी खाने से आयु बढती है और बुद्धि विकसित होती है, दूध पीने से वीर्य बहुत शीघ्र बनता है अत दूध घी आदि वस्तुओ के बिना भोजन व्यर्थ है।

दूध, घी आदि के अतिरिक्त गाय के शरीर से निकला एक-एक तत्व प्राणधारियो के लिए मूल्यवान सम्पत्ति है। गाय को देखने से, उसके श्वास को सू घने से, गोबर की गन्ध से, गोमूत्र के एक निश्चित मात्रा मे औषधि रूप मे पीने से और उसकी गैस से कई प्रकार के रोगो के कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। गाय के गोबर को सडाकर गैस तैयार की जाती है, गोबर मे मेन्थल, नौसादर, फिनोल, इ डोल और फार्मेलीन आदि तत्व पाये जाते हैं जिनकी गन्ध मात्र से कई सूक्ष्म कीटाणु नष्ट हो जाते है। गोबर को उबाल कर लेप करने गठिया रोग दूर हो जाते हैं। भयकर कब्ज में जब पेट फूल गया हो तो तीन तोले (तीस ग्राम) गाय मूत्र मे थोडा सा सेधा नमक डाल कर पीने से लाभ होता है। बच्चो के पेट मे कीडे होने पर भी आयु के अनुपात मे गोमूत्र देने से लाभ होता है। गोबर को शरीर पर लेप करके स्नान करने से खुजली समाप्त होती है। गोबर की राख को चेचक के छालो पर डालने से जलन नही होती। हैजे से बचाव के लिए अपने निवास के आसपास के तालाबो जलाशयो और नालियो आदि मे गोबर नियमित डलवाना चाहिए। वह स्त्री-पुरुष जिनको प्रयास करने पर भी सन्तान प्राप्त न होती हो तो उन्हे गाय के दूध-घी-दही आदि के सेवन के साथ-साथ गोशाला मे जाकर वास करना चाहिए और नियमित गौसेवा में रहना चाहिए। गोमूत्र और गोबर की गन्ध से शीघ्र ही दम्पति को वीर्य-वृद्धि का लाभ होता है।

हिन्दू, सिक्ख, ईसाई और इस्लाम की दृष्टि में गाय

उपरोक्त समस्त फायदो के कारण ही जहा हिन्दू समुदाय मे गाय को माता के समान पूजनीय माना गया है वही अन्य मतो मे भी गौरक्षा को बडा महत्व दिया गया है। सिक्खो के गुरु रामदेव जी का तो बलिदान ही गोरक्षा के उद्देश्य से हुआ था, गाय के दूध की प्रशसा तो सिखों के धार्मिक ग्रन्थ तक मे भी की गई है। ईसाई समुदाय के धार्मिक ग्रन्थ बाईबल में भी गाय को देवता माना गया है। स्वय मुहम्मद साहब ने तो गाय को जानवरो का सरदार कहा है और आदेश दिया कि उसकी बुजुर्गी और इज्जत राम किया करो। स्वय हजरत ने भी कभी गाय की कुर्बानी नहीं की और न ही मक्के में आज तक गाय की कुर्बानी होती है कुरान मे तो यहा तक लिखा है कि हरा पेड काटने वाले, मनुष्य खरीदने वाले, गाय को मारने वाले और दूसरों की स्त्री के साथ कुकर्म करने वाले खुदा के यहा कभी माफ नही किये जायेगे। युनानी दवाओ की पुस्तको मे गाय के गोश्त की बडी निन्दा की है और उससे पागलपन और कोढ जैसी बीमारिया पैदा हो जाती है। दूसरी तरफ स्वय हजरत ने अपनी प्यारी बेगम आयशा से कहा था 'गाय का दूध शरीर की सुन्दरता और आरोग्यता बढाने का प्रधान साधन है।"

गोवंश की रक्षा तथा देश की अर्थ व्यवस्था

यदि गाय तथा उसके वश से प्राप्त सहायता को आर्थिक आकडो मे मापा जाए तो स्पष्ट होगा कि हमारे भारत देश का ही नही बल्कि विश्व के समस्त देशो का आर्थिक ढाचा गाय के कन्धो पर ही खडा प्रतीत होगा। जिन देशो ने गौवश की रक्षा के लिए सख्त कदम उठा लिये है उन देशों मे आरोग्यता खुशहाली, समृद्धि और खाद्यान्नो की बाहुलयता दूर से ही देखी जा सकती है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने तो गाय तथा इसके वश से प्राप्त आर्थिक लाभ का स्पष्ट नक्शा अपनी लघु पुस्तिका "गौकरुणानिधि" मे खीच कर ही रख दिया है। उनके अनुसार गाय के दूध और अन्य उत्पादो से गाय के पूरे जीवन मे कई हजार मनुष्यो को तृप्त किया जा सकता है। है। इसके अतिरिक्त एक गाय अपने जीवन में अनुमानत ५ या ६ बछडे और बछिया पैदा करती हैं। पुन. बछिया के दूध से भी देश मे इन उत्पादो की वृद्धि होगी दूसरी तरफ बछडे बडे होकर बैल बनते हैं और प्रत्येक बैल अपने जीवन मे हजारो मन अन्न का उत्पादन कराने में सहयोग करते हैं इस प्रकार बैल से भी लाखो मनुष्यो के अन्न की आवश्यकता पूरी होती है। इन सब के विपरीत गाय के मास से केवल ८० या १०० मनुष्यो को ही तृप्त किया जा सकेगा और वह भी गाय के जीवन मे केवल एक ही बार। अत सहज ही निर्णय लिया जा सकता है कि गाय तथा इसके वश की रक्षा से देश के हजारो लाखो मनुष्य का पेट भरता है या इसकी हत्या से मात्र ८० या १०० मनुष्यो का।

इसके अतिरिक्त महर्षि दयानन्द ने यह भी स्पष्ट किया कि जब देश मे दूध और उसके अन्य उत्पादो की बाहुलयता हो जाएगी तो अन्न की खपत मे स्वत ही कमी हो जाएगी जिसका निर्यात विदेशो को करके विदेशी मुद्रा भी अर्जित की जा सकेगी। जब देश के जवानो को दूध के उत्पादनो की प्रचुर मात्रा उपलब्ध होगी तो शराब आदि नशो का भी स्वत ही सेवन कम हो जाएगा।

अत भारत सरकार को गाय तथा गोवश की रक्षा के लिये राष्ट्रहित में सख्त से सख्त कदम उठाने चाहिए जिससे भारत देश फिर से प्राचीन रूप सुख-समृद्धि को प्राप्त कर सके।

आर्यसमाज और राजनीति

आर्यबन्धु जयप्रकाश—प्रधान आर्यसमाज, बिड़ला लाइन्स, दिल्ली-७

आर्य समाज के छठे नियम—(संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।) से धारणा बनती है कि जिस समाज की आर्य समाज उन्नति करना/कराना चाहता है उसमाज पर सर्वप्रथम आर्य समासदो की समुचित पकड़ भी होनी चाहिए, जैसा कि वर्तमान समाज पर सर्वाधिक वर्चस्व राजनीतिज्ञो का दिखाई देता है। अतः कतिपय आर्य चिन्तकों के अन्दर आर्य समाज के राजनैतिकरण की इच्छायें हिलोरें लेती रहती हैं। भूतकाल में बहुत से आर्य नेताओ ने भारत के स्वतन्त्रता संग्राम मे अपने बलिदान दिए हैं। उसी क्रम में विभिन्न राजनैतिक व अर्ध राजनैतिक संगठनो को आर्यों का उच्चस्तरीय सहयोग दिया गया। इसी क्रम मे कुछ आर्यों द्वारा स्वतन्त्र राजनैतिक दल बनाने का एक असफल प्रयोग भी किया गया था, अन्य दलो के सहयोग के बल पर एक आर्य नेता को तो प्रधानमन्त्री का सर्वोच्च प्रशासनिक पद भी प्राप्त हुआ। यह सब होने पर भी हम "समाज" को महर्षि दयानन्द के स्वपनो के अनुसार किन्चित ढाल पाये हो क्या कोई कह सकता है ?

वस्तुतः भारतीय राजनीति के चरित्र व उसकी उपादेयता को समझ कर ही हम आर्य समाज की राजनैतिक सम्भावनाओ का आकलन कर सकते हैं। राजनैतिक सम्भावनाओ के निरस्त होने पर भी "आर्य समाज" सामाजिक उन्नति के मूल लक्ष्यो को प्राप्त करने के लिए कैसे अग्रसर हो ? आगे इसी पर विचार किया जाएगा।

राजनैतिक दल का चरित्र

प्रत्येक राजनैतिक दल स्वचिन्तन पर निर्मित जनाधार के अस्तित्व से संगठित होता है। हम यह भी भली-भांति जानते हैं कि जब भी "हिन्दुओ में साम्प्रदायिकता (चाहे प्रतिक्रियास्वरूप कहते हुए ही) बढ़ा दी जाएगी, तब रा० स्व० संघ इसका सर्वाधिक लाभ स्वप्रसूत भा० ज० पार्टी को ही उठाने देगी। भा० ज० पा० के हिन्दू रवैये या कट्टरवाद से भयाक्रान्त कुछ अल्पसंख्यको को व हिन्दुओ को जातिवाद आदि तुष्टिकरणो से कांग्रेस व जनता पार्टी दोनो ही अपना-अपना जनाधार-निर्माण मे लगे रहते है। मजदूर वर्ग में महगाई आदि असन्तोष का जनाधार कम्युनिस्टो के पास तथा प्रान्तीय भाषा प्रेम से व केन्द्र से सम्मानपूर्ण व्यवहार के मिलते रहने से त्रुटियो के कारण-क्षेत्रीय/प्रान्तीय दलो का प्रादुर्भाव हुआ है। ये सब असन्तोष जन्य दल हैं व कुछ दलो का हित केन्द्रीय सत्ता को कमजोर रखने मे ही निहित है। इनमें से कुछ दलो का उनके उत्पत्ति काल मे, आर्यों ने भरपूर पोषण भी किया है। किन्तु कालान्तर मे दल के जनाधार-निर्माण की लालसा मे आर्यों की स्थिति, इन दलो मे शनैः शनैः नगण्य होती जाती है।

यह भी एक प्राकृतिक नियम है कि यदि एक पक्ष से हम राग रखते हैं तो उसके सभी विपक्षी हमसे द्वेष करेंगे।

आर्य समाज का चरित्र व राजनैतिक सम्भावनाएं

उपरोक्त कोई जनाधार आर्य समाज को कभी भी प्रिय नही हो सकता है। अतः आर्य समाज का विद्यमान राजनैतिक दलो से कोई सामजस्य दीर्घकाल हेतु कभी भी नहीं बनेगा। उपरोक्त जनाधारो को लेकर यदि कोई नया संगठन बनाया भी जाता है तो सर्वप्रथम उस जनाधार वाला संगठन ही इस नए संगठन को उठने ही नही देगा। हिन्दू महासभा का जनाधार असंघ में जाना एक अपवाद इसलिए है क्योंकि हिन्दूमहासभा मे अस्तित्व समाप्त होता जा रहा था। किन्तु अब सभी राजनैतिक दल इस दृष्टि से सजग रहते हैं व आर्य समाज में भी अब पूर्वापेक्षा अस्तित्व का अभाव हो गया है अतः आर्य समाज के लिए राजनैतिक फ्रन्ट बनाना या किसी भी राजनैतिक फ्रन्ट को समर्थन देना पुनः आत्मघाती कदम होगा।

आर्य समाज का वर्तमान चरित्र ब्राह्मणत्व का ही रह गया है। यदि आर्य समाज को सामाजिक उन्नति को मूल उद्देश्य हेतु संघर्ष करना है तो केवल ब्राह्मणत्व के बल पर भी इस लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। भारत के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम की असफलता के निराशापूर्ण वातावरण में जैसे तब सर्वप्रथम आशाओ का नवसंचार महर्षि दयानन्द व आर्यसमाज के माध्यम से प्रारम्भ हुआ व अन्ततः सन् १९४७ में भारत ने राजनैतिक आजादी पायी, उसी प्रकार अब फिर एक नयी सामाजिक क्रान्ति का बिगुल बजाने का समय व दायित्व आर्य समाज को ही निभाना होगा। इस सामाजिक क्रान्ति की रूपरेखा को आर्य समाज के अलावा अन्य कोई नही जानता है फिर मानने का प्रश्न ही कहा है। इसका चित्रण करने से पूर्व विश्व व भारत की वर्तमान परिस्थितियो का वर्णन उपयुक्त होगा।

वर्तमान मानव समाज

मानव ने बुद्धि एवं परिश्रम के बल पर नए-नए अविष्कारो के द्वारा अत्यधिक भौतिक सुख-सुख जुटा लिए हैं। किन्तु सात्विकता के स्थान पर राजसिकता व तामसिकता का बहुभोर प्रभाव होने के कारण व्यापक अशांति सर्वत्र फैली हुई है।

भारत भी इसका अपवाद नही है। यहा धर्मनिरपेक्षता के अन्तर्गत राजनीतिज्ञो ने समस्त सत्ता पर एकाधिकार कर लिया है तथा सम्प्रदायो, वर्गों को अपनी कठपुतली बनाकर शोषण, भ्रष्टाचार, अलगाववाद, अश्लीलता आदि को बढ़ावा दिया है। सत्ता में बुद्धिजीवियो व व्यापारियो की समान भागीदारी नही है। यह एकाधिकार अराजनैतिक विषयो मे तो और भी खलता है। शिक्षा, संचार न्याय व समाज कल्याण जैसे विषयो को स्वायत्तता देने का पाखड तो बहुत किया जा रहा है किन्तु अन्तत इन क्षेत्रो पर राजनैतिक पकड़ स्वय सिद्ध है। श्रीमती इन्दिरा गाधी के काल से ही बार-बार विभिन्न क्षेत्रो से व्यवस्था परिवर्तन की आवाज उठती रहती है। किन्तु अभी कोई परिपक्व विचार नही बन पाए हैं।

व्यवस्था परिवर्तन

जीवन मे प्रत्येक व्यक्ति की कामना होती है कि यदि वह अपने क्षेत्र मे सर्वश्रेष्ठ या जिस श्रेष्ठता वाला है। उसको उसी स्तर का मान व धन प्राप्त होना चाहिए, कुछ व्यक्ति समाज मे ऐसे भी हो सकते हैं जिनको ज्ञान, बल या धन किसी की भी अत्यल्प मात्रा ही प्राप्ति होते। अच्छी व्यवस्था उसी को कह सकते हैं जिसमे कि प्रत्येक को सन्तुष्ट रखा जाए। आपने देखा होगा कि राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री, मुख्यमन्त्री फिर न्यायाधीश, राज्यपाल आदि तथा डाक्टर आदि भिन्न-भिन्न शपथ लेकर पद ग्रहण करते हैं। क्या हम प्रत्येक क्षेत्र मे ऐसे शपथ लेकर कार्य करने वाले नागरिको को तैयार नही कर सकते है ?

समाज मे शिक्षण, रक्षण व पोषण का दायित्व ग्रहण करने वाले नागरिक जितने ज्यादा बनाए जाएगे। यह व्यवस्था स्वयमेव उतनी ज्यादा सफल होती जाएगी। इसमे कही कोई राजनीति या सम्प्रदाय की आवश्यकता नही है। इस शिक्षण रक्षण व पोषण के व्रती-नागरिको की श्रेष्ठ अभिव्यक्ति उनके समानुपातिक प्रतिनिधित्व पर तथा केन्द्रीय सरकार के समकक्ष स्तर-तक गुणात्मक सर्वोच्चाधिकार विकसित करके हम सामाजिक जीवन से क्षुद्रता व राजनैतिक स्वार्थों को समाप्त कर सकते हैं। जब जीवन की विभिन्न विधाओ को अभिव्यक्ति का व श्रेष्ठता स्थापित करने का अवसर अपने-अपने क्षेत्र में ही मिल जाएगा तो राजनीति पर भी अनावश्यक दबाव समाप्त होने लगेगे। इसी दबाव के कारण राजनीतिज्ञ मजबूरन वर्ग-वैमनस्य बढ़ाते है जबकि समाज का आधार वर्ग सहयोग बनाना होता है।

आर्य समाज जनाधार कैसे बनाए

इस व्यवस्था परिवर्तन के आन्दोलन का नेतृत्व करके आर्यसमाज अपने ही अनुकूल एक "समग्र क्रान्ति' का सूत्रपात समाज मे कर सकता है।

आर्य समाज की शिरोमणि सभा "सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा" २२ से २६ दिसम्बर १९९० मे अन्तर्राष्ट्रीय आर्यसभा सम्मेलन का आयोजन कर रही है। प्रबुद्ध विचारको को चाहिए कि वे अभी से अपना-अपना व्यावहारिक दृष्टिकोण इस विषय पर प्रस्तुत करें ताकि महासम्मेलन में इस विषय पर विचार व निर्णय की रूपरेखा बनाने का वातावरण शीर्ष नेताओ के समक्ष प्रस्तुत हो सके।

मेरा विचार है कि यदि इस प्रकार गुण आधारित तीन उच्चाधिकार प्राप्त सत्ताओ का केन्द्र सरकार मे जब भी गठन किया जाएगा तो शिक्षा-सत्ता पर "आर्य समाज" का ही वर्चस्व अवश्य ही स्थापित हो सकेगा। अतः अत्यन्त उत्साह से 'शिक्षक रक्षक पोषक" समानुपातिक प्रतिनिधित्व हेतु जनाधार निर्माण की ओर कदम बढ़ाकर वर्णाश्रम व्यवस्था का स्वपन पूरा करना ही हमारे लिए राजनीति की अपेक्षा अधिक श्रेयस्कर मार्ग है।

सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत : स्थिर निधियां

गताक से आगे)

६०००) वीर विद्यासागर शुद्धि एव दलितोद्धार
स्थिर निधि देवेन्द्रनाथ शास्त्री द्वारा स्थापित

यह निधि श्री विद्यासागर जी के ज्येष्ठ भ्राता श्री देवेन्द्रनाथ शास्त्री १५ आर्य कुटीर नरेला ने अपने कनिष्ठ भ्राता की स्मृति मे स्थापित की। १-९-८३ की अन्तरग द्वारा स्वीकृति दी गई।

श्री चौधरी टोपनदास व श्रीमती रामदेवीसहायता स्थिर निधि

(सस्थापक—चौ० भगवानसिंह पुत्र और श्री विजय कुमार नाती पौत्र)

इस निधि का ब्याज भूकम्प, बाढ़, सूखा आदि पीड़ितो की सेवा, सहायता एव रक्षा कार्य पर व्यय किया जायेगा। गत वर्ष निधि मे ३०००/- की वृद्धि की गई।

९-४-८३ की अन्तरग द्वारा स्वीकृति हुई। इस समय तक ८०००) रुपए प्राप्त हुआ है। आगे भा धन बढ़ाने की स्वीकृति दी गई।

५०००) श्री कल्याणमल मांगेलाल तापड़िया
साहित्य प्रकाशन स्थिर निधि

शर्ते

१ इस निधि का ब्याज ही वैदिक साहित्य के प्रकाशनार्थ खर्च होगा। मूल राशि नही।

२ इस राशि को निधिकर्त्ता अथवा उसके किसी भी सम्बन्धी को वापस लेने का अधिकार न होगा।

१०००००) श्रीमती रामजीबाई श्री मूलचन्द
भूटानी धर्मार्थ औषधालय स्थिर निधि

(सस्थापक—श्री गोविन्दराम भूटानी)

शर्ते

१ इसका ब्याज ही व्यय होगा। मूल राशि नही।

२. इस निधि मे वृद्धि करने का भी दानी को अधिकार होगा।

३ औषधालय ग्रेटर कैलाश में खोला जायेगा।

४ ब्याज श्री गोविन्दराम मन्त्री आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश द्वारा प्रमाणित औषधियो के बिलो के भुगतान मे खर्च होता रहेगा। यह निधि १५-१२-८३ की अन्तरग द्वारा स्वीकृत हुई।

४०००) श्री यशोदा देवी सहायता स्थिर निधि

इस निधि का ब्याज अनाथ बच्चो की पढाई पर खर्च होगा और सभा को खर्च करने का अधिकार होगा। निधि कर्त्ताओ या उसके किसी सम्बन्धी को मूल राशि वापस लेने का अधिकार न होगा।

(१५ १२ १९८३ की अन्तरग द्वारा स्वीकृत)।

श्री हरिकिशन लाल स्मृति (गाजियाबाद)
स्थिर निधि १ लाख रुपए

(सस्थापक श्रीमती इन्द्रावती आर्या)

५००००, बैंक मे फिक्सड डिपाजिट में जमा है जो सात वर्ष मे ब्याज द्वारा दूना होकर १ लाख हो जाएगा तभी निधि की शर्तों के अनुसार ब्याज खर्च किया जाएगा।

इस निधि का ब्याज निम्न प्रकार खर्च होगा।

१०००) वार्षिक अनुदान उपदेशक विद्यालय टकारा।

५००) वार्षिक अनाथालय पटौदी हाउस दरियागज दिल्ली। विकलागो को सहायार्थ।

५००) आर्य अनाथालय फिरोजपुर की लड़कियो की शादियो के लिए।

१००००) वेद प्रचार आर्य वीर, दल, दयानन्द सेवाश्रम सघ मुख्यत बासवाडा, नागालैंड आसाम पर्वतीय क्षेत्रो के पिछड़े वर्गों के उत्थान धर्म रक्षा महाभियान,मीनाक्षीपुरमआदि के सेवार्थ, अथवा यदि कभी किसी पुस्तक के प्रकाशन मे इस निधि के ब्याज का उपयोग आवश्यक हो तो पुस्तक मे मेरे पतिदेव के साथ मेरा चित्रभी निधि के ब्याज से प्रकाशित करने के विवरण के साथ निधि का उल्लेख किया जाए।

प्रति वर्ष १७ सितम्बर को मेरे पूज्य पतिदेव हरिकिशनलाल जी की स्मृति मे चित्र सहित सक्षिप्त जीवन परिचय भी निधि के उद्देश्य के उल्लेख सहित सार्वदेशिक साप्ताहिक मे प्रकाशित किया जाए।

इस निधि के सचालन आदि पर सार्वदेशिक सभा का पूर्ण स्वत्व होगा।

जिस पत्र म इस निधि के विवरण का उल्लेख हो उसकी ३ प्रतिया निम्न पते पर भेजी जाती रहे—

१—श्री दयाराम गोयल एडवोकेट (नोटरी) रमतेराम रोड, गाजियाबाद

२—श्री जयकिशन गुप्त १६-४६, पजाबी बाग, नई दिल्ली

३—श्रीमती जयश्री दीवान द्वारा बी. के दीवान
गुजरात रोड लश्कर ग्वालियर।

यशोवर्धन स्थिर निधि ६ हजार रुपए

(सस्थापित द्वारा स्व०श्री म० बनवारी लाल आर्य गाजियाबाद)

(पुत्र की पुण्य स्मृति मे)

शर्तें इस प्रकार हैं

१—कम से कम ५ सार्वदेशिक पत्र निर्धन व अधिकारी व्यक्तियो को नि शुल्क हर वर्ष बदलते रहकर भेज दिया जाया करे।

२—इस निधि के ब्याज से मुख्यत स्व. प रामचन्द्र जी देहलवी तथा स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज जी कृत साहित्य प्रकाशित करके उसका लाभ इस निधि मे जमा करके उन्नत किया जाय।

दानी महोदय ने इस निधि की राशि बढाने की भी स्वीकृति चाही थी जो दी गई। प्रारम्भ मे यह राशि ३१००) थी। इस निधि की स्वीकृति ३०-५-८१ की अन्तरग बैठक ने दी।

श्री सरदारी लाल आर्य नय्यर स्थिर निधि
५ हजार रुपए

शर्तें

१—इस निधि का ब्याज ही खर्च किया जायेगा। मूल नही।

२—इस निधि का ब्याज प्रतिवर्ष गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में अध्ययन कर रहे किसी निर्धन होनहार व मेधावी वेदपाठी छात्र के अध्ययन पर छात्रवृत्ति के रूप मे व्यय किया जाएगा। यदि किसी अन्य गुरुकुल मे भी ऐसे ही वेदपाठी को सहायता की आवश्यकता हो तो सभा को अधिकार होगा कि वह ब्याज की पूरी राशि दूसरे विद्यार्थियो को देकर उक्त निधि से सहायता कर दें। ऐसा न होने पर ब्याज की पूरी राशि गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के छात्रो को ही दे दी जाए।

३—इस निधि के ब्याज से सभा प्रतिवर्ष २ प्रतिशत का दशांश ले सकेगी।

४—इस निधि की मूल राशि दानी को वा उनके किसी उत्तराधिकारी को वापस लेने का अधिकार न होगा।

५—दानी अपनी इच्छानुसार इस निधि में राशि को बढ़ा सकेंगे।

(क्रमश)

महर्षि दयानन्द का एक पत्र

—इन्द्रजित् 'देव', यमुनानगर—हरयाणा

"सार्वदेशिक" के आषाढ शुक्ल ६, सम्वत् २०४७ तदनुसार १ जुलाई, १९९० के अंक मे महर्षि दयानन्द के एक पत्र की प्रति प्रकाशित हुई है। इस सम्बन्ध मे सन्तोष की बात यह है कि सार्वदेशिक' में इस पत्र की प्रति के साथ सम्पादक ने अपनी टिप्पणी मे विद्वजनो से प्रत्येक मन्त्र से पूर्व 'ओ३म्" शब्द बोलने के विषय मे विचार करने की अपील की है। मैं उनकी भावना का समर्थन करते हुए निवेदन करना चाहता हू कि केवल इस बात पर ही नही, इस पत्र में उल्लिखित अन्य बातो पर भी विद्वजन विचार करे। चर्चा का आरम्भ करते हुए उनकी सेवा मे निम्नलिखित शकाये प्रस्तुत करता हू जो समाधान की खोज मे हैं—

(१) महर्षि के जितने भी पत्र आज तक "परोपकारी' मे प्रकाशित हुए हैं, उनमे यह स्पष्ट होता है कि पत्र किस स्थान से भेजा गया था। प्रस्तुत पत्र मे यह बात स्पष्ट नही होती कि महर्षि ने यह पत्र कहा से लिखा/लिखवाया था।

(२) अन्य सभी पत्रो में पत्र प्राप्त करने वाले को सम्बोधित करके वाक्य रचना की गई है जो स्वाभाविक व पत्र लेखन के सहज नियमो के अनुकूल है परन्तु इस पत्र मे ऐसा क्यो नही ?

(३) पत्र के आरम्भ मे लिखित "श्री स्वामी दयानन्द जी महाराज ने उपदेश किया" शब्दो से प्रतीत होता है कि यह पत्र किसी अन्य का है या महर्षि के नाम से किसी अन्य व्यक्ति ने भेजा है क्योकि महर्षि या कोई भी अन्य व्यक्ति स्वय अपने नाम के साथ श्री, जी व महाराज जैसे आदरसूचक शब्दो का प्रयोग नही करता।

(४) पत्र के आरम्भ मे लिखित 'सख्या २' का क्या तात्पर्य है ? क्या सख्या १ का भी कोई पत्र था ? वह पत्र जब तक उपलब्ध न हो इन उपदेशो पर अन्तिम निर्णय कैसे हो सकता है ?

(५) प्रस्तुत पत्र से यह स्पष्ट नही होता कि यह दससूत्रीय उपदेश प. कालूराम को महर्षि ने क्यो दिया ? क्या पण्डित जी महर्षि से पत्र व्यवहार कर रहे थे ? विश्वास नही होता कि बिना मागे महर्षि ने किसी को उपदेश भेज दिया हो। यदि पण्डित जी ने उपदेश मागा या चाहा था तो महर्षि के पत्र का आरम्भ कुछ-कुछ इस प्रकार का होना चाहिए था—आपका पत्र प्राप्त हुआ है। आपने जिन विषयो मे मार्गदर्शन चाहा है, उन विषयो मे मेरा उपदेश निम्नलिखित है ।

(६) प्रारम्भ से लेकर अन्त मे हस्ताक्षरो तक पूर्ण पत्र एक ही प्रकार के हस्तलेख मे है (मूलपत्र की फोटो प्रति 'परोपकारी' मे देखे) यदि यह माना जाए कि पत्र महर्षि द्वारा स्वयं लिखा गया है तो 'श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज जैसे शब्द न होते और यदि (हस्ताक्षरो तक) किसी अन्य व्यक्ति द्वारा लिखा गया है तो इसे प्रमाण की कोटि मे कैसे रखा जा सकता है ?

(७) (मूल) पत्र की आरम्भिक तीन पक्तियो के बाद 'ओ३म्' लिखा गया है। तत्पश्चात् क्रमवार दस उपदेश लिखे गए हैं। सभी विद्वजन जानते हैं कि परमेश्वर का निज । गुणवाचक नाम ओ३म् पत्रो के बिल्कुल आरम्भ मे ही लिखा जाता है, न कि पत्रो के मध्य मे।

(८) 'सब मन्त्रो से पूर्व ओ३म्कार का प्रयोग करना' इस प्रथम उपदेश में 'ओ३म्कार' शब्द प्रयुक्त है।

(९) 'सस्कार विधि' महर्षि की अन्तिम कृति है। प्रत्येक लेखक की अन्तिम कृति ही प्रामाणिक मानी जाती है क्योकि लेखक अपनी रचना मे वाछनीय परिवर्तन, परिवर्धन व परिष्कार करता है। 'सस्कार विधि' का प्रथम सस्करण सम्वत् १९३२ में लिखा गया था। इसमे सस्कृत पाठ एकत्र (एक स्थान पर) तथा भाषा (हिन्दी) पाठ एकत्र (दूसरे स्थान पर) रखा गया था। द्वितीय व अन्तिम सस्करण महर्षि ने सम्वत् १९४० मे तैयार किया। सस्कारो का उपदेशार्थ, प्रमाण, वचन और प्रयोजन भी सस्कारो की विधि से पूर्व लिखा। कुछ अन्य सशोधन परिवर्तन भी किए गए। यहां जो पत्र विचारणीय हैं, वह सम्वत् १९३९ मे लिखा था। यदि यह मान लिया जाए कि सवत् १९३९ मे महर्षि का यह विचार बना था कि प्रत्येक मन्त्र के आरम्भ में ओ३म्' बोलना चाहिए तो 'सस्कार विधि' के द्वितीय (सशोधित) सस्करण में जो सवत् १९४० मे तैयार किया गया, महर्षि ने इसकी भूमिका मे एसा आदेश क्यो नही दिया या इसमे स्वय प्रत्येक मन्त्र के आरम्भ मे 'ओ३म्' क्यो नही लिखा ? यदि उपदेश क्रम १ को सत्य मान लिया जाए तो फिर भी सहज अर्थ निकलेगा कि चैत्र सम्वत् १९३९ मे महर्षि के विचार मे प्रत्येक मन्त्र से पूर्व ओ३म्' बोलना चाहिए परन्तु डेढ वर्ष बाद आषाढ सम्वत् १९४० मे 'सस्कार विधि' का सशोधन करते समय स्वय महर्षि ही ऐसा आदेश देना या पुस्तक में प्रत्येक मन्त्र के आरम्भ मे "ओ३म् लिखना भूल गए क्योकि इसमे किसी मन्त्र के आरम्भ मे ओ३म् लिखा है तथा किसी मन्त्र के आरम्भ "ओ३म् नही लिखा।

(१०) 'रामचरितमानस का पाठ करने वाले लोग श्रद्धा व अज्ञानवश प्रत्येक दोहे व चौपाई के अन्त मे रामा ! हो रामा इन शब्दो का भी पाठ करने लगे हैं। वे नही जानते कि वे ऐसा करके कितनी निरर्थकता का सृजन कर रहे है। अभ्यासवश वे उन चौपाइयो व दोहो के अन्त मे भी रामा ! हो रामा ! बोल जाते हैं जिनमे रावण व मेघनाद, रावण मन्दोदरी, बाली व तारा, जैसे पात्रो के परस्पर सम्वाद होते है या प्रकृति की मनोहारी छटा का वर्णन होता है। इसी प्रकार की स्थितियो की कल्पना करके आप स्वय सोच लीजिए कि प्रत्येक चौपाई व दोहे के अन्त मे "रामा हो रामा !" बोलना कितना व्यर्थ ही नही असगत भी है। इसी प्रकार कुछ उत्साही आर्यसमाजी वेद परायण मन्त्रो के अवसरो पर प्रत्येक मन्त्र के अन्त मे परन्तु 'स्वाहा' शब्द से पूर्व 'ओ३म्" शब्द जोड कर आहूति देने लगे हैं। इस प्रकार मे ओ३म् बोलने मे क्या तुक है ? अनेक मन्त्र ऐसे है जिनमे हम ईश्वर से प्रार्थना नही करते परन्तु ईश्वर मनुष्यो को उपदेश दे रहा है। ऐसे मन्त्रो से पूर्व 'ओ३म्' बोलना सर्वथा असगत नही तो और क्या है ?

(११) सब सब जानते हैं कि 'ओ३म्' शब्द मन्त्र भाग (पद) नही है। वेदमन्त्र काव्यबद्ध होने से गेय है। प्रत्येक काव्य गायन व सगीत के नियमो में गाया जाता है। यदि हम मन्त्र से पूर्व 'ओ३म्' शब्द जोडकर मन्त्र गायन करेगे तो फलत सुविधाजनक गायन के नियमो मे बद्ध गान मे व्यवधान उपस्थित होगा व राग बिगडेगा। मन्त्र नाम है, विचार का। प्रत्येक मन्त्र के आरम्भ में यदि 'ओ३म्' बोलना अनिवार्य है तो क्यो किसी हिन्दी या अन्य भाषा के प्रत्येक गीत या भजन के आरम्भ मे 'ओ३म् नही बोलते ?

(१२) प्रस्तुत पत्र के उपदेश क्रम २ मे यह स्पष्ट नही होता कि त्रिवर्णो, द्विजो की स्त्रियो, शूद्रो व उनकी स्त्रियो व ईसाई मुसलमान आदि को उपदेश में वर्णित विभिन्न मन्त्रो मे क्या करना चाहिए तथा क्या नही करना चाहिये। इस उपदेश में एक उलझन अन्य उत्पन्न होगी। वर्ण चार है—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र। इनमे से जन्मना सभी शूद्र हैं। परन्तु ब्राह्मण क्षत्रिय व वैश्य, इन तीन वर्णस्थ मनुष्यो को ही द्विज (विद्या माता से जिसका दूसरा जन्म होता है) माना जाता है। यही तीन वर्ण (द्विज) मन्त्र पाठ कर सकते है क्योकि विद्या इनके ही पास होती है। उपदेश मे कि वर्णस्थ मनुष्यो व द्विजो को मन्त्र पाठ का पृथक् पृथक् उपदेश देने मे महर्षि को क्या आवश्यकता प्रतीत हुई ?

(१३) उपदेश क्रम ४ के विषय मे भारी स्पष्टीकरण वाछनीय है क्योकि यह महर्षि द्वारा 'सत्यार्थप्रकाश मे उपदिष्ठ निम्नलिखित प्रसग के सर्वथा विपरीत है :—

प्रश्न—सन्यास ग्रहण करना ब्राह्मण ही का धर्म है, या क्षत्रियादि का भी ?

उत्तर—ब्राह्मण ही को अधिकार है। क्योकि जो सब वर्णों मे पूर्ण विद्वान्, धार्मिक, परोपकार प्रिय मनुष्य है उसी का ब्राह्मण नाम है। बिना पूर्ण विद्या के धर्म परमेश्वर की निष्ठा और वैराग्य के सन्यास ग्रहण करने मे ससार का विशेष उपकार नही हो सकता। इसीलिए लोकश्रुति है कि ब्राह्मण को सन्यास का अधिकार है, अन्य को नही। यह मनु का प्रमाण भी है —

एषवोऽभि हितो धर्मो ब्राह्मणस्य चतुर्विधि:।
पुण्योऽक्षफल प्रेत्य राजधर्मं निबोधत॥

—मनुस्मृति (६/९७)

यह मनु जी महाराज कहते हैं कि—'हे ऋषियो ! यह चार प्रकार अर्थात् ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यासाश्रम करना ब्राह्मण का धर्म

है। यहां वतमान मे पुण्य स्वरूप और शरीर छोडे पश्चात् मुक्तिरूप अक्षय आनन्द का देने वाला सन्यास धर्म है। इसके आगे राजाओं का धर्म मुझसे सुनो।

सत्यार्थ प्रकाश के पचम समुल्लास के उपरोक्त उद्धरण स स्पष्ट है कि मनु महाराज व महर्षि दयानन्द केवलमात्र ब्राह्मण को ही सन्यास लेने का अधिकारी मानते थे। इसके विपरीत प्रस्तुत पत्र में उपदेश दिया गया है कि ब्राह्मण जब सन्यास ग्रहण करे तो नाम के अन्त मे सरस्वती शब्द लगाए तथा क्षत्रिय वैश्य व शूद्र जब सन्यास ग्रहण करें तो । सत्यार्थ प्रकाश व 'मनुस्मृति के उपदेश के विपरीत इस उपदेश को कैसे मान्यता दी जा सकती है ?

(१४) उपदेश क्रम ४ के अन्त मे शाखा सर्वात्मान यन्तर्यामित कृपामृत सागर परमात्मानमह शरण प्रपद्ये वाक्य की इसी क्रम मे वर्णित उपदेश से क्या सगति है ?

(१५) उपदेश क्रम ८ के अनुसार सभी आर्यों को भगवा वस्त्र पहनना चाहिए जबकि सस्कार विधि के अनुसार (सन्यास सस्कार विधि) केवल सन्यासी को ही काषाय वस्त्र धारण करने चाहिए। परस्पर विरोधी दोनो मान्यताओं में जो विरोध है उस पर विद्वानो को निणय लेना पडेगा।

(१६) उपदेश क्रम ५ के सम्बन्ध मे भी भ्रान्ति उत्पन्न हुई है। अन्त्यज (शूद्र) स्वजाति के उपदेशक कैसे हो सकते हैं ? जाति तो सभी मनुष्यो की एक ही है। जो पढ़ा-लिखा ही न होगा वह उपदेशक कैसे बनेगा ?

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि महर्षि दयानन्द के उक्त पत्र में शकाये व भ्रम निहित है। विद्वानो की सेवा मे निवेदन यह है कि इन प्रश्नो के उत्तर दिए जाने चाहिए ताकि स्थिति स्पष्ट हो सके यू सार्वदेशिक मे इस पत्र को प्रकाशित कर देने से ही सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि का दायित्व पूण नही होता। धर्मार्य सभा में इस पत्र के विषय मे तुरन्त निणय किया जाना चाहिए। इस सम्बन्ध मे स्मरणीय है कि धर्म आर्यसभा के धर्माधिकारी श्री आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री ने अपने पत्र दिनाक २१ (२-८४ को श्री जयनारायण द्वारका आर्य पुरोहित (मारीशस) को यह निर्णय सार्वदेशिक धर्मार्य सभा की ओर से भेजा था कि प्रत्येक मन्त्र के आरम्भ में ओ३म् नही बोलना चाहिए वहा ऋषि ने "ओ३म्' लिखा है या मन्त्र भाग है वहीं-वहीं 'ओ३म् बोलना चाहिए। अब धर्मार्य सभा को फिर निर्णय लेना होगा। यह अनिवार्य हो गया है।

स्वामी अग्निवेश—आर्यसमाज के इतिहास को दूषित न करें

—डा. भवानी लाल भारतीय

(गताक से आगे)

अब सत्यार्थ प्रकाश के उत्तरार्द्ध को लेकर स्वामी अग्निवेश ने जो ऊट-पटाग लिखा है, उस पर विचार करे। स्वामी जी लिखते हैं—'यदि उन्होंने (ऋषि ने) चार पन्ने इस्लाम के बारे मे लिखे तो ४० पन्ने पुराणो के विरुद्ध लिखे हैं। हिन्दुओ के देवी देवताओ के विरुद्ध लिखे हैं। यदि इस वाक्य की भाषा को अभिधार्थ (Literal Sense) मे लिया जाये तब तो मैं कहूगा कि अग्निवेश जी ने सत्यार्थप्रकाश को पढा क्या देखा भी नही है। इस्लाम की आलोचना मे सत्यार्थप्रकाश में कितने पृष्ठ है और आर्यावर्तीय मत-मतान्तरो के खण्डन मे (जिसे अग्निवेश जी पुराणा और देवी देवताओ के विरुद्ध लिखा कहते हैं) कितने पृष्ठ हैं, यह तो आलोच्य ग्रन्थ के समुल्लासो के पृष्ठो की गणना करके ही जाना जा सकता है। किन्तु सवाल चार पन्नो या चालीस पन्नो का नही है। स्वामीजी को वेदातिरिक्त जिन-जिन भारतीय (भारत देशोत्पन्न) तथा सैमेटिक मत मतान्तरो की आलोचना मे जितना कुछ लिखना उचित और अभीष्ट जान पडा उतना उन्होने निर्भीक होकर, बिना किसी का पक्षपात किये लिखा। फिर आप मुसलमान पत्रकार को खुश करने के लिए यह क्यो कहते हैं कि इस्लाम की आलोचना चार पन्नो की है और हिन्दू धर्म की चालीस की। इण्टरव्यू देने वाला इतना भी नही जानता कि स्वामी दयानन्द ने पुराणो या देवी देवताओ के विरुद्ध नही लिखा। उन्होने तो यह बताया है कि वास्तव मे पुराण नाम धारी ग्रन्थ कौन से है और भागवत, ब्रह्मवैवर्तादि प्रचलित अठारह पुराणो को पुराण की सज्ञा क्यो नही दी जा सकती। इसी प्रकार वे देवी देवताओ के विरुद्ध नही लिखते, अपितु बताना चाहते हैं कि वास्तव में देवी देवता हैं क्या ? अल्प पाण्डित्य का यही हश्र होता है। अच्छा होता आर्यसमाज के नेता अथवा स्वयभू प्रवक्ता बनने के पहले उक्त स्वामी जी कुछ अधिक स्वाध्याय कर लेते।

इसी प्रसग मे स्वामी अग्निवेश स्वामी जी को हानि पहुचाने वालो के बारे में और भी गलतबयानी करते हैं। आपका कहना है कि "किसी मुसलमान, सिख या जैन ने इन पर (स्वामी दयानन्द) हमला नही किया। जब भी हमला हुआ हिन्दू कट्टरपथियो ने किया।" (क्रान्तिधर्मी सितम्बर १९९० पृ० १०) स्वामी दयानन्द के भौतिक शरीर को नष्ट करने के लिए किन-किन ने, कब-कब कैसे कैसे हमले किए यह जानने के लिए तो मेरी पुस्तक "नवजागरण के पुरोधा" पढनी चाहिए। सत्य यह है कि स्वामी जी पर हमले सभी ने किए, कोई पीछे नही रहा। अब इनका ब्यौरा सुनिये—

१. पौराणिक हिन्दुओ ने महाराज को मारने के अनेक प्रयास किए यह तो स्वय अग्निवेश जी मानते ही हैं और उसका ढिढोरा भी पीटते है।

२ गगा तट पर विचरण करते समय महाराज को गगा मे डुबो देने का दुष्प्रयास कतिपय मुसलमान गुण्डो ने किया, जिसमे वे कृतकार्य नही हुए।

३ रायपुर (जिला पाली, राजस्थान) मे मुन्शी करीमबख्श और अन्य मुसलमानों ने महाराज को पीटने का षड्यन्त्र किया। (द्रष्टव्य ऋषि दयानद का जीवनचरित प० घासीराम द्वारा सम्पादित भाग २ पृ० १७७ वि० स० २०१५ का सस्करण)

४. जोधपुर मे मिया फैजुल्ला खा के भतीजे माहम्मदहुसैन न स्वामी जी को मारने के लिए तलवार म्यान से बाहर निकाली।

५ जोधपुर मे ही डा० अली मर्दान ने औषधि मे धीमा विष देकर महाराज को मृत्यु के कगार तक पहुचाया।

६. १८७८ मे जब महाराज ने अमृतसर में सिख मत के किन्ही अन्ध-विश्वासो का खण्डन किया तो निहग सिखो ने उन्हे मार डालने की धमकी दी। (उक्त जीवनचरित पृ० १०५)

७. जैन मतानुयायी ठाकुरदास मूलराज मामडा ने भारतीय दण्ड सहिता (ताजीरात फौजदारी) की धारा २८५ के अन्तर्गत ६ फरवरी १८८१ को स्वामी दयानन्द को नोटिस भेज कर उन पर अभियोग चलाने की धमकी दी। १३ जून १८८२ को उसने पुन एक अग्रेज सालिसिटर से स्वामीजी को कानूनी नोटिस भेजा और सत्यार्थप्रकाश (प्रथम सस्करण) के जैन मत विषयक १२ वे समुल्लास मे, उसके विचार के अनुसार आपत्तिजनक अशो को हटाने के लिए कहा। (द्रष्टव्य नवजागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती पृ० ४७२-४७३)

अब आप इस बात को छोड दें कि स्वामीजी को नष्ट करने के लिये किसने अधिक प्रयास किए। हमारा तो मानना है कि सभी इन्सानियत पसन्द लोगो न स्वामी दयानन्द के प्रयासो की सराहना की और मानवता के शत्रुओ ने उनको हानि पहुचाई। इसमे हिन्दू मुसलमान का भेद या विचार करना व्यर्थ है।

स्वामी अग्निवेश आगे कहते है कि बाद वालो ने आर्यसमाज को ऐसा बना दिया जिससे मालूम होता था कि आर्य लोग मुस्लिम विरोधी है, सिख विरोधी है, ईसाई विरोधी है। मेरा निवेदन है कि इस बात को इतने हल्के-पन से टाल दना उचित नही है। उन तथ्यो का गम्भीरता से परीक्षण किया जाना चाहिए कि आर्यसमाज तथा इतर मतावलम्बियो के सम्बन्धो मे बिगाड क्यो आया। इसके लिये जिम्मेदार ऐतिहासिक परिस्थितियो और तथ्यो की गम्भीर छानबीन की जानी चाहिए। इस प्रकार सस्ता फैसला देना उचित नही कि बाद वालो (शायद स्वामी अग्निवेश का तात्पर्य है स्वामी दयानन्द के परवर्ती आर्यसमाजी नेताओ) ने इन रिश्तो को बिगाडा। आर्यसमाज और अन्य मतमतान्तरो के पारस्परिक सम्बन्धो और उनमें आये उतार चढाव की गम्भीर मीमासा कोई इतिहासज्ञ ही कर सकता है, सस्ती लोकप्रियता हासिल करने के लिए इण्टरव्यू देने वाला व्यक्ति के वश का यह काम नही है।

यहा स्वामी अग्निवेश का खुशामद भरा एक और स्वर उभर कर सामने आता है जब वे कहते हैं कि "इस्लाम और आर्यसमाज के दृष्टिकोण मे बहुत एकता है।" स्वामीजी ने इस्लाम और आर्यसमाज मे क्या एकता देखी, इसका उन्होने विस्तार नही किया। यह उनका विषय ही नही है। यह तो तुलनात्मक धर्म Comparative Religion विषय के अन्तर्गत आता है।

(शेष पृष्ठ १० पर)

पं० नन्दलाल निर्भय का कमाल : राजू को लिया निकाल

मेवात क्षेत्र में हिन्दुओं पर जुल्म ढहाना एक मामूली बात है। मेव (मुसलमान) हिन्दुओं की बहिन, बेटियों पर मनमाने अत्याचार करके उनका सतीत्व नष्ट करना अपना मूलाधिकार समझते हैं। धर्म परिवर्तन कराके, इस्लाम को जड़ें मजबूत करना मेवों का मुख्य उद्देश्य है।

मेवात क्षेत्र मे गौ हत्या एक धन्धा बन गया है। प्रतिदिन सैकड़ों गौओं की निर्मम हत्या दिन निकलते ही कर दी जाती है। ऐसा कोई गांव नहीं जहां गौ हत्या नहीं होती हो।



राजू

इस क्षेत्र मे तावडू, नूंह, हथीन व फिरोजपुर झिरका ये चार विधान सभाई हल्के हरियाणा के हैं। भरतपुर अलवर (राजस्थान) जिलों की कुछ तहसीलें भी इसी मेवात मे लगती हैं।

मेवात के नेता मेव, मुसलमानों की दिल खोलकर सहायता करते हैं। इसलिए इस क्षेत्र मे हिन्दुओं पर रात-दिन अन्याय होता है। हिन्दु विधायक, सांसद व मन्त्री कमजोर दिल, लालची व निकम्मे हैं। वे अपने आपको हिन्दु कहलवाने मे डरते हैं। उन्हे धर्म, कर्म शर्म से कोई मर्ज नही उन्हे तो केवल कुर्सी से प्यार है।

मेवात क्षेत्र से आज-कल गरीब देशभक्त हिन्दुओं का पलायन जोरों पर है। वे भयभीत हैं। उनकी पुकार वहां कोई भी सुनने वाला नहीं। उन्हें बेकसूर पीटा जाता है। उनसे तरह तरह की बेगार ली जाती है।

इस क्षेत्र में देश, विदेश से मुल्ला मौलवी तबलीक लेकर आते हैं। इस्लाम की दुहाई देकर मेवों को भड़काते हैं। इस समय खाड़ी के देशों से लगभग ७०० करोड़ डालर इस्लाम का प्रचार करने व हिन्दुओं को मुसलमान बनाने के लिए हर वर्ष भारत मे आ रहा है। उसी के कारण मेवात मे भी जहर फैलाया जा रहा है।

बंगाल हैदराबाद, बिहार, उत्तर प्रदेश आदि प्रान्तों से लड़के, लड़कियों औरतों को बहला फुसला कर हिन्दु बनकर लाया जाता है तथा यहां उनकी बिक्री की जाती है व मुसलमान बनने को विवश किया जाता है।

अभी लगभग एक पांच वर्ष के बालक राजू पुत्र जवाहरलाल को उत्तर प्रदेश से रूपड़ाका (मेवात) का एक इदरीश नाम का व्योपारी (कसाई) चार महीने पहले अपने ग्राम ले आया तथा उसका नाम राजुद्दीन रख दिया।

किसी तरह इसकी खबर आर्य नेता पण्डित नन्दलाल निर्भय महामन्त्री क्षेत्रीय आर्यसमाज हथीन को लग गई। बस फिर क्या था ऋषि दयानन्द के सेनानी नन्दलाल निर्भय अकेले ही रूपड़ाका ग्राम [मेवात] मे गए, वहां के सरपंच से राजू को वापिस हिन्दुओं (आयसमाज) को दिलवाने को कहा। उस पर बात का कोई असर न हुआ। उसने बालक राजू को देने से साफ इन्कार कर दिया।

विवश होकर पण्डित नन्दलाल निर्भय थाना हथीन गए तथा श्री हेतराम आर्य प्रधान क्षेत्रीय आर्यसमाज हथीन को साथ लेकर राजू का मुसलमानों के चंगुल से निकालने की प्रार्थना की। सज्जन थाना प्रभारी ने बात को ठीक समझकर पुलिस दल के साथ रूपड़ाका ग्राम मे छापा मारकर राजू को बरामद कर लिया।

अब यह मासूम बच्चा पण्डित नन्दलाल निर्भय ग्राम बहीन जिला फरीदाबाद के घर पर है। नवभारत टाइम्स दिल्ली व दैनिक जागरण दिल्ली तथा अमर उजाला आगरा को इस बालक का फोटो व विवरण प्रकाशन हेतु दे दिया गया है जिससे उसके माता पिता उसे ले जा सकें।

मैं इस लेख के द्वारा आर्य [हिन्दू] जनता को सावधान करना अपना धर्म समझता हूँ। विधर्मियों की चालों से सावधान रहे तथा भारत सरकार पर दबाव डाल जिससे राष्ट्र विरोधी तत्व पनपने नही पाए

आशा है आर्य जनता अपनी पावन वैदिक सभ्यता, संस्कृति की रक्षा करने मे समर्थ हो सकेगी।

वेदप्रकाश आर्य सी०ए०
११३ ए ग्राम किलोकरी पोस्ट जंगपुरा
भोगल नई दिल्ली-१४

स्वामी अग्निवेश

(पृष्ठ ६ का शेष)

मेरा तो यही कहना है कि इस प्रसंग मे यह वाक्य मुसलमान पत्रकार को खुश करने के लिये ही कहा गया है। आगे स्वामी अग्निवेश दिल्ली दरबार के समय स्वामी दयानन्द द्वारा आयोजित भारत के तत्कालीन धार्मिक नेताओं के उस सम्मेलन की चर्चा करते हैं जो १८७७ की जनवरी के आरम्भ मे हुआ था। स्वामी अग्निवेश को पढने लिखने से तो कोई मतलब है नहीं, अब तो वे पूरे लीडर हैं। उन्हे यह भी पता नहीं कि उक्त सम्मेलन कब हुआ था। वे तो इसे १८६६ मे आयोजित बताते हैं। १८६६ मे तो स्वामी जी राजस्थान तथा उसके पार्श्ववर्ती पश्चिमी संयुक्त प्रान्त (उत्तर प्रदेश) में ही रहे थे।

इन्टरव्यू मे स्वामी अग्निवेश द्वारा कही गई कुछ अन्य बातें हमारे लिए विशेष महत्त्व की नहीं हैं। वे अयोध्या के प्रस्तावित राममंदिर के स्थान पर वे एक राम रहीम अस्पताल खोलने का सुझाव देते हैं। उनकी धारणा है कि अयोध्या मे राम मन्दिर बनाने वालों का मुख्य उद्देश्य तो हिन्दू संसार के लिए मक्का के तुल्य एक सर्वमान्य तीर्थ स्थान बनाने का है जहां विश्व भर के हिन्दू आकर अपनी श्रद्धा प्रकट करेंगे। स्वामीजी के ये सुझाव महन्त अवैद्यनाथ तथा विश्वहिन्दू परिषद् के महामन्त्री को कहां तक स्वीकार्य हैं अथवा सैयद शहाबुद्दीन तथा बाबरी मसजिद कार्यवाही समिति वाले उनके इन विचारों का कहां तक अनुमोदन करते है यह हमारे लेखन की परिधि में नहीं आता। मुझे तो आपत्ति स्वामीजी के इस कथन पर है कि 'भारत तो अब आकर अंग्रेजों के कारण इतना लम्बा चौड़ा नजर आता है। उनके कथन का अभिप्राय यह है कि आसेतु हिमाचल भारत की कल्पना को अंग्रेजों ने ही साकार किया है। अन्य शब्दों में काश्मीर से कन्याकुमारी और अटक से लेकर ब्रह्मदेश पर्यन्त भारतीय उप महाद्वीप की भौगोलिक एकता साम्राज्यवादी अंग्रेजों के कारण हो सम्भव हो सकी। शायद अग्निवेश जी ने उस वृहत्तर भारत का इतिहास पढ़ा हो नहीं जिसकी सीमायें अशोक और कनिष्क के काल मे भी हमारे आज के भारत से कहीं अधिक विस्तृत थी। वे महाभारत काल के भारत का भी उपहास करते हैं और कौरव पाण्डवों की राजधानी हस्तिनापुर को एक छोटा सा गांव कहते हैं। महाभारत के जिस युद्ध मे चीन का भगदत्त, अमेरिका का बभ्रुवाहन, यूरोप का बिडालाक्ष, ईरान का शल्य (यह सब स्वामी दयानन्द की साक्षी से लिख रहा हूं) आया उस युग के आर्यों के पुरुषार्थ, पराक्रम और गौरव का अवमूल्यन कोई कुलाम्ब पसन्द व्यक्ति भले ही करे कोई आर्यसमाजी तो हरगिज नहीं करेगा।

गायत्री मन्त्र एक विवेचन

गायत्री मन्त्र का बडा महत्व माना जाता है। निस्सन्देह इसमें महत्ता है भी। पर इस मन्त्र के साथ बहुत से अन्ध विश्वास भी जुड गए हैं इन अन्ध विश्वासो से बचना भी आवश्यक है। जैसे गायत्री मन्त्र की माला फेरना।

गायत्री जाप से बुद्धि का तेज होना आदि-आदि। केवल शाब्दिक जाप का स्मरण होने के सिवाय कोई महत्व नही है। हा मन्त्र पर अर्थ पूर्वक विचार कर आचरण करना तो अत्यन्त लाभदायक ह।

शुद्ध गायत्री मन्त्र तत्सवितुवरेण्य से आरम्भ होता है। प्रणवपूर्वक तीन महा व्याहृतियो से युक्त मन्त्र वास्तव मे गुरुमन्त्र है। गुरुमन्त्र का छन्द भी बृहत्ति है। मन्त्र भी बृहत्त है सारगर्भित है इसीलिए गुरु है। तत्सवितुर्वरेण्य यह मन्त्र लघु है। क्याकि गुरु शब्द सापेक्ष है। कोई लघु होगा तो ही कोई गुरु कहाएगा। लघु मन्त्र का विनियोग यज्ञ मे होता है। सन्ध्या मे ध्यान मे चिन्तन मे गुरुमन्त्र का विनियोग होता है। यहा चिन्तन से अभिप्राय अध्यात्म से योग से उपासना से है। वेदो को सहिता कहा जाता है। महर्षि पाणिनि ने सहिता की परिभाषा की है— 'पर सन्निकर्ष सहिता' अर्थात् जहा पूर्व का और पर का गहरा सम्बन्ध है उस पूरे समूह को सहिता कहा जाएगा।

वेदो मे वर्णित समस्त ज्ञान का पूर्वापर गहरा सम्बन्ध है इसीलिए वेद सहिता कहे जाते हैं। महर्षि अपने वेद भाष्य मे प्रत्येक अध्याय के अन्त में लिखते है कि (उदाहरण के लिए ऋग्वेद के दूसरे सूक्त के अन्त में लिखते हैं) जो प्रथम सूक्त में अग्नि शब्दार्थ का कथन किया है उसके सहायकारी वायु, इन्द्र, मित्र और वरुण के प्रतिपादन करने से प्रथम सूक्तार्थ के साथ दूसरे सूक्तार्थ की सगति समझ लेनी।

ऋग्वेद और यजुर्वेद दो वेदो के भाष्य महर्षि ने किए इन दोनो मे प्राय इस प्रकार की सगति वाली बात सर्वत्र महर्षि ने दोहराई है। इससे स्पष्ट है कि ज्ञान एक सुसगत रूप मे ही चलता है। ज्ञान के समझने में सन्दर्भ का ज्ञान आवश्यक है। सन्दर्भ ज्ञान से ही अर्थ की सगति यथार्थ रूप में स्पष्ट हो जाती है।

गुरुमन्त्र केवल यजुर्वेद के छत्तीसवें अध्याय के तीसरे क्रम पर नियोजित है। किन्तु गायत्री मन्त्र तो यजुर्वेद में तीन बार ऋग्वेद में व सामवेद मे एक-एक बार पढा गया है। तीनो वेदो मे गाए जाने से भी इसे गायत्री मन्त्र कहते हैं।

कुल मिलाकर गुरुमन्त्र के अन्तर्गत आए पाठ को छोडकर यह वेदो में कुछ पाच बार पढा गया है। एक ही मन्त्र को पाच-पाच बार पढे जाने से इसमे पुनरुक्ति दोष सभावना पैदा हो सकती है। परन्तु यह दोष इसलिए इस मन्त्र पर आरोपित नही हो सकता क्योकि प्रत्येक स्थल पर इसका अर्थ सन्दर्भ की दृष्टि से बदल जाएगा। अनेक भिन्न-भिन्न सन्दर्भो मे इस मन्त्र को पुनः पुन. पढा जाना भी इस मन्त्र के महत्व का बोधक है।

इन समस्त सन्दर्भों पर युक्ति युक्त विवेचन एक लघु लेख मे सभव नहीं है। इसके लिए तो एक गुरुग्रन्थ की अपेक्षा होती है। हम यहा सकेत भर करना चाहेंगे कि सर्वप्रथम प्रस्तुत मन्त्र की मूल भावना को समझ लेना चाहिए। इससे मन्त्र के सदर्भपूर्वक भाव को समझने मे महत्वपूर्ण सहायता प्राप्त होगी।

गायत्री मन्त्र का छन्द "निचृद् गायत्री" है। निचृद् गायत्री से अभिप्राय है कि निकृष्ट गायत्री छन्द यहा इस महान् मन्त्र को निचृद् छन्द युक्त इसलिए कहा गया है कि गायत्री छन्द में चौबीस अक्षर होते हैं। अक्षरो की गणना भी केवल स्वर अक्षरो की होती है। स्वर चाहे ह्रस्व हो चाहे दीर्घ चाहें प्लुत। एक स्वर को एक ही माना जाएगा। दीर्घ अथवा प्लुत से कोई अन्तर इस आधार पर इसकी गणना नीचे की जा रही है —

त० स० वि० तु० वं० रे० ण्य० भ० र्गो० दे०व० स्य० धी० म०हि०। धि० यो० यो० न:० प्र० चो० द० या०।

अन्त का "त्" स्वर रहित हलन्त्य या समझा होने से उसे नही गिना जा सकता। ऐसे ही मध्य में भी जो सयुक्त अक्षर होंगे वे भी स्वर रहित हलन्त्य होते हैं वे भी नही गिने जाते हैं। उनमे जो स्वर अक्षर या मात्रा रूप स्वर है वही गिना जाएगा।

इस प्रकार इस मन्त्र मे कुल गिनने से स्पष्ट होता है कि गायत्री मन्त्र मे तेईस अक्षर ही हैं। चौबीस नही। जब कि गायत्री छन्द चौबीस अक्षरो का होता है। छन्द की दृष्टि से अधूरापन ही "निचृद्" अर्थात् निकृष्टपन का द्योतक है।

छन्द सम्बन्धि यह न्यूनता एक और सकेत भी देती है कि इस मन्त्र मे कुछ अधूरापन भी है यह अधूरापन अर्थ या भाव सम्बन्धित है। ऐसा हमारा विचार बना है। इसे हम सिद्धान्त रूप मे नही कह सकते। क्योकि इसके लिए तो चारो वेदो का गम्भीर अवगाहन करना है। केवल गुरुमन्त्र पर या एक ही मन्त्र पर विचार कर सिद्धान्त की प्रस्थापना समुचित नही कहाएगी पर इस मन्त्र पर विचार करे तो यह बात स्पष्ट हो जाती है कि मन्त्र में एक शब्द का अभाव है। क्योकि मन्त्र में तत् शब्द का प्रयोग है। तत् शब्द इस मन्त्र मे द्वितीया के एक वचन के रूप मे प्रयुक्त है। तत् अर्थात् उसको। जब हम उसको कहेगे तो प्रश्न उठता है—उससो किसको? किसके सन्दर्भ मे तत् कहा जा रहा है इसे जान लेना आवश्यक है।

गायत्री मन्त्र को हम यदि ग मे अन्वयपूर्वक पढें तो इसका स्वरूप इस, प्रकार होगा। सवितु देवस्य वरेण्य भर्ग तत् धीमहि। प्रथम भाग के इस अन्वय म स्पष्टत यत् शब्द का अभाव अखरता है। शुद्ध वाक्य रचना की दृष्टि से इसमे यत् का प्रयोग समीचीन प्रतीत होता है। किन्तु प्यारे प्रभु की वाणी कभी दोषयुक्त तो हो नहीं सकती? पर बारम्बार चिन्तन से इस मन्त्र का अर्थ हमे यही स्पष्ट होता रहा है कि सवितु देवस्य यत् भर्ग वरेण्य तत् धीमहि।

एक दिन जब इस अभाव पर विचार करते करते हमने यजुर्वेद का ३६ वा अध्याय टटोला और गुरुमन्त्र के ऊपर वाले दूसरे क्रम के मन्त्र पर दृष्टिपात किया तो हमारे हर्ष का ठिकाना न रहा। गुरुमन्त्र से ठीक पहले यजुर्वेद छत्तीसवे अध्याय का दूसरा मन्त्र इस प्रकार है —

यन्मे छिद्र चक्षुषो हृदयस्य मनसो० ।

यहा सर्वप्रथम शब्द यत्—मे है। यत् मे है। यत्+मे का सन्धि करने पर यन्मे रूप बनता है।

हमे स्पष्ट बोध हुआ कि इस मन्त्र मे जो यत् शब्द है उसकी अनुवृत्ति गुरुमन्त्र मे भी अर्थात् तीसरे मन्त्र मे भी आ रही है। सहिता मे अनुवृत्तिया का होना स्वाभाविक ही है। ऊपर के मन्त्र का 'यत्" शब्द नीचे के मन्त्र मे भी चला आ रहा है। इस प्रकार मन्त्र का अर्थ एक दम स्पष्ट हो रहा है।

सवितुदेवस्य यत् वरेण्य भर्ग तत् धीमहि। सविता देव के जो वरणीय शुद्ध गुण कर्म स्वभाव है हम उनको धारण करें। अर्थात् गुरुमन्त्र या गायत्री मन्त्र मे हम भी आपके समान बने ऐसी प्रेरणा आप हमें देते रहे।

इस अर्थ को जान लेने पर जाप की निरर्थकता भी स्पष्ट हो जाती है कि हम भगवान् जैसे बने।

केवल हम तेरे जैसे बने, हम तरे जैसे बने ऐसा कहने भर से तो हम प्रभु जैसे बन नही सकते। इसके लिए आवश्यक है कि हम परमात्मा के गुण, कर्म, स्वभाव को ठीक-ठीक जानकर वैसे ही बनने का निरन्तर यत्न करते रहे। ऐसा प्रयत्न आशातीत फलदायक होगा। अपने को श्रेष्ठ गुण, कर्म, स्वभाव वाला बना लेना ही मन्त्र का सही जाप है।

फिर हमने जहा-जहा वेदो में अन्यत्र गायत्री मन्त्र आया है उन-उन स्थलो पर भी पिछले सन्दर्भो पर ध्यान दिया जिससे इस मान्यता की पुष्टि होती है कि सर्वत्र यह मन्त्र ऊपर के मन्त्रो से जुडा हुआ है।

यजुर्वेद के तीसरे अध्याय में पैंतीसवा मन्त्र गायत्री मन्त्र है। इसमे २२ वे मन्त्र से लेकर चौतीसवे मन्त्र पर्यन्त मन्त्रो मे जो भाव वर्णित है पैंतीसवें मन्त्र में उन गुण कर्म स्वभावो को धारण करने की बात कही गई है। (शेष पृष्ठ १२ पर)

राज० न० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (११-११-१९९०) बिना टिकट भेजने का आदेश न० U ९३
R 626/57 Licensed to post without Prepayment License No U 93 Post in D.P.S.O.on 9-11-1990

स्व० पं० शिवकुमार शास्त्री जी का ७६ वां जन्मदिवस समारोह

नई दिल्ली। दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा के तत्वावधान मे आर्य समाज डिफेन्स कालोनी मे रविवार १४ अक्तूबर को आर्य जगत के लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान, शिक्षाविद राजनेता भूतपूर्व सांसद स्व० प० शिवकुमार शास्त्री का ७६ वा जन्म दिवस बडे समारोह पूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूज्यपाद स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज ने की। आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान व भूतपूर्व केन्द्रीय मन्त्री प्रो० शेरसिंह ने प० शिवकुमार शास्त्री से ५० वर्षो से घनिष्ठ सम्बन्धो का उल्लेख करते हुए उन से जुडे कई प्रेरक सस्मरण सुनाए व उनके वेद प्रचार के लिए समर्पित जीवन वैदिक साहित्य के महान पण्डित व उच्चकोटि का वेदोपदेशक आदि गुणो की चर्चा की। श्री प्रेमचन्द श्रीधर ने उन्हे मूल्यो की राजनीति करने वाला महान ध्येयवादी राजनीतिज्ञ बताया। आर्य समाज के प्रसिद्ध लेखक वेद बन्धु प० अभि विनय भारती सम्पादक वेदोद्धारणी ने शास्त्री जी को लेखनी व वाणी का जादूगर बताते हुए प्रभावी वक्ता तथा प्रतीकात्मक कथाओ से अपनी बात स्पष्ट करने वाले उन्हे असाधारण धर्मोपदेशक बताया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल जी ने शास्त्री जी को बहुगुणी प्रतिभा का धनी बताते हुए उनके विलक्षण व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री ने आर्य विद्वानो के जन्मदिवस मनाने की परम्परा कायम करने वाले आयोजको को बधाई देते हुए उनके जीवन से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। श्री कृष्णलाल शास्त्री ने भी शास्त्री के व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डाला।

आर्य जगत् के सम्पादक प० क्षितीश वेदालकार ने आर्य समाज के ओजपूर्ण दस्तावेज के रूप मे अकथनीय सस्मरण सुनाते हुए शास्त्री जी की तुलना आदर्श उपदेशक,आदर्श राजनीतिज्ञ आदर्श पिता आदि से उन्हें आदर्शो का प्रकाश स्तम्भ बताया। पूज्यपाद स्वामी दीक्षानन्द जो ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे उनके जीवन के कई पहलुओ पर प्रकाश डालते हुए उन्हे विलक्षण व्यक्तित्व' का धनी बताया।

डा० जगन्नाथ अस्वस्थ

दिल्ली २८ अक्टूबर

कृष्ण नगर दिल्ली आर्य समाज के भूतपूर्व प्रधान डा० जगन्नाथ जी का आपरेशन हुआ है जिसमे इनका एक पैर काट दिया गया है। डा० साहब अपनी पत्नी के साथ तपोवन वैदिक आश्रम देहरादून मे गये हुए थे। उन्हे वहा पैर मे खुजली हुई तदुपरान्त डाक्टर साहब दिल्ली आ गये यहा उनके उपचार के दौरान उनका एक पैर काट दिया गया है। सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती डा साहब को देखने गये। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना कि उन्हे शीघ्र स्वास्थ्य लाभ करे।

—सम्पादक

आर्य सभा मौरीशस का अस्सी वां स्थापना दिवस सम्पन्न

दिनाक २१ अक्टूबर नई दिल्ली आर्य सभा मौरीशस की विज्ञप्ति के अनुसार आर्यसमाज की अस्सी वी वर्षगांठ के उपलक्ष्य मे भव्य कार्यक्रमो का आयोजन किया गया। २१ अक्टूबर को जिमखाना मे आयोजित एक समारोह मे आर्य सभा की सगीत समिति द्वारा सगीत का कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुख्य अतिथियो मे गवर्नर जनरल महामहीम सर विरासामी रिंगाडू प्रधानमन्त्री श्री अनिरुद्ध जगन्नाथ शिक्षामन्त्री श्री परसुरामन नगर पालिका के मेयर श्री ऐडन भारतीय उच्चायुक्त श्री किशन कुमार शिवसिंह राणा आदि की उपस्थिति मे प्रमुख आर्य सेवको को आर्य भूषण उपाधि से सम्मानित किया गया। आर्यसभा भवन मे १९ अक्टूबर में आयोजित महिला सम्मेलन मे श्रीमती रिंगाडू श्रीमती सरोजनी जगन्नाथ तथा महिला अधिकार मन्त्री श्रीमती शिवराज कुमारी राणा आदि की उपस्थिति मे गयासिंह आश्रम के बच्चो द्वारा सगीत के कार्यक्रम तथा अन्य कई रोचक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये।

(पृष्ठ ११ का शेष)

फिर यही गायत्री मन्त्र तीसवे अध्याय के दूसरे क्रम पर है। इसम अन्य मन्त्र में वर्णित भावो को धारण करने की प्रेरणा है।

पुन यजुर्वेद मे २२ वें अध्याय के नौवें क्रम पर पढा गया है। इसके प्रथम मन्त्र से आठवें मन्त्र तक जो कहा गया है। उसे धारण करने की बात कही गई है।

इसी प्रकार सामवेद उत्तरार्चिक मे ६, ३, १०, १ में पढा गया है यहा ऊपर के नौ मन्त्रो से गायत्री मन्त्र की सगति स्पष्ट झलकती है।

इसी प्रकार ऋग्वेद के ३-६२-१० क्रम पर [illegible] है इसकी भी ऊपर के मन्त्रों से स्पष्ट सगति है।

अत वेद मनीषियो से हम प्रार्थना करना चाहते हैं कि प्रत्येक मन्त्र का सन्दर्भ पूर्वक चिन्तन करें। साथ ही देवता पर भी विशेष ध्यान दें।

'तच्चक्षुर्देवहित' मन्त्र मे कही सूर्य का उल्लेख नहीं है किन्तु इसका देवता सूर्य है। जब हम सूर्यवत् आचरण या सूर्य का अनुकरण करेंगे तब हम शतायु या शतोत्तरायु होगे। यह मन्त्र पढा गया है। पूरे अध्याय के अन्त में पढा गया है। पूरे अध्याय के अनुसार आचरण करने पर अन्त में इस फल की प्राप्ति होती है।

आशा है विद्वान् मनीषी हमारे इन विचारो पर ध्यान देकर अनुश्रुतियों की सुसगति लगाकर मन्त्रो के वास्तविक भावो को जानेंगे व जनायेंगे।

—वेदभूषण

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली मुद्रित तथा डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख्य पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१ | दयानन्दाब्द १६६ | दूरभाष : ३२७४७७१ | वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष २९ अंक ४४] | मार्गशीर्ष शु० १ सं० २०४७ १८ नवम्बर १९९०

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का वृहद् अधिवेशन सम्पन्न

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के लिए जोरदार तैयारियां

सुखी समाज

सारे संसार का कल्याण हो

स्वस्ति मात्र उत पित्रे नो अस्तु,
स्वस्ति गोभ्यो जगते पुरुषेभ्यः।
विश्वं सुभूतं सुविदत्रं नो अस्तु,
ज्योगेव दृशेम सूर्यम् ॥
अथर्व० १।३१।४॥

हिन्दी अर्थ—हमारे माता और पिता का कल्याण हो। गायों, समस्त संसार और सभी पुरुषों का कल्याण हो। हमारे लिए सभी ऐश्वर्य और उत्तम ज्ञान हो। हम चिरकाल तक सूर्य को देखें।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

दयानन्द उवाच

- मनुष्य जैसे अपने लिए सुख चाहे वैसे औरो के लिए सुख चाहे।
- जैसे अपने लिए कोई दुःख नही चाहता वसे औरों के लिए भी न चाहे।
- जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही कहना लिखना और मानना सत्य कहाता है।
- धर्म के तीन स्कन्ध हैं—एक विद्या का अध्ययन दूसरा यज्ञ अर्थात् उत्तम क्रियाओ का करना, तीसरा दान अर्थात् विद्यादि का देना।

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सम्मेलन के लिए सभा-प्रधान जी को दानदाताओं द्वारा लाखों रुपए की राशि भेंट

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का वृहद् अधिवेशन दिनाक ११ नवम्बर १९९० को आर्य समाज दीवानहाल दिल्ली में, सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन मे बगाल, उ०प्र०, बिहार, दिल्ली, राजस्थान पजाब, हरियाणा, महाराष्ट्र, गुजरात, बम्बई, आ० प्र०, दक्षिण अफ्रीका, मध्यभारत, म०प्र० हि०प्र० आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा और अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ के प्रतिनिधियो ने बड़ी सख्या में भाग लिया। मुख्य महानुभावो में पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव, श्री सत्यानन्द मुञ्जाल, श्री रामसिंह राठौर, प्रो० शेरसिंह महाशय धर्मपाल स्वामी ओमानन्द सरस्वती, आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

इस अधिवेशन में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन के आयोजन पर विस्तार से विचार-विमर्श हुआ। सभा प्रधान जी ने सदन को बताया कि उन्हे बम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा से १ ११,१११-०० रुपये की थैली भेंट की गई है। इसके अतिरिक्त ११,०००-०० रुपय २ सदाजीवतलाल की धर्मपत्नी ने भेंट किया था। बिहार सभा से २०,०००) रुपये दिल्ली म सतप्रावा कन्या विद्यालय की ओर से ५१,०००-०० रुपये भेंट किये गये हैं। इनके अतिरिक्त अन्य कई महानुभावो से भी धन राशिया प्राप्त हुई हैं। इस अवसर पर स्वामी जी को सम्मेलन के लिए निम्न महानुभावो द्वारा थैलिया भेंट की गई।

१—आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली	५१,०००-००
२—माता सतप्रावा ट्रस्ट दिल्ली	५१ ०००-००
३—सभा मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री दिल्ली	४० ००० ००
४—श्री के० नरसिम्हा रेड्डी (आ० प्र०)	१०,०००-००

सभामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री गत दिनो हालैण्ड गये थे उन्हे वहा आर्य बन्धुओ ने जो दक्षिणा आदि दी थी वही सब राशि उन्होने सम्मेलन के लिए भेंट की है। इस अवसर पर आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल जी ने ३१,००० ०० रु० आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश विदर्भ के प्रधान श्री रमेशचन्द्र श्रीवास्तव ने ७५,०००-०० रुपये आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल प्रधान श्री वटुकृष्ण वर्म्मन ने २५,०००-०० रुपये आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के महामन्त्री श्री अश्विनी कुमार ने १ ०० ०००-०० रु०, आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यभारत के प्रधान स्वामी सत्यानन्द ने २१,०००-००रु०, आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के मन्त्री प्रो० योगेन्द्र नारायण ने ११ ०००-०० रु० और श्री के० नरसिम्हा रेड्डी ने २०,००० ०० रुपये की राशि यथा शीघ्र सम्मेलन से पूर्व सार्वदेशिक सभा को भेंट करने की घोषणा की।

इनके अतिरिक्त बम्बई में श्री रामसिंह राठौर ने ५१,००० रु० श्री भगवती प्रसाद गुप्त व श्री सत्यप्रकाश ने भी स्वामी जी को अच्छी राशि भेजने का वचन दिया है। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश, हरियाणा, हि०प्र०, राजस्थान और गुजरात के प्रतिनिधियो ने भी अपनी सभाओ की राशि निश्चत करके शीघ्र सभा को भेजने का आश्वासन दिया।

सम्मेलन मे देश की वर्तमान स्थिति पर भी गम्भीरता से विचार हुआ राम जन्मभूमि विवाद तथा केन्द्र मे नई सरकार के गठन पर भी विचार हुआ और प्रधानमन्त्री श्री चन्द्रशेखर को भी एक विशेष पत्र भेजा गया है। (शेष पृष्ठ २ पर)

अधिवेशन में पारित प्रस्ताव

(पृष्ठ १ का शेष)

सदन द्वारा सर्वसम्मति से पारित प्रस्ताव निम्न प्रकार है—

प्रस्ताव

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का दृढ़ विश्वास है कि रामजन्म भूमि के प्रकरण मे अयोध्या तथा अन्य अनेक स्थानो पर कारसेवको का जो अमानवीय नर सहार, वह देश के तत्कालीन प्रधान मन्त्री श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह की नितान्त अदूरदर्शिता, सत्ता से जुडे रहने की अहितकर भावना और अल्पसख्यक समुदाय के तुष्टीकरण की नीति का ही परिणाम था।

सभा यह आशा करती है कि वर्तमान प्रधान मन्त्री श्री चन्द्रशेखर वी० पी० सरकार द्वारा अपनाई गई गलत नीतियो के परिणाम को ध्यान में रखते हुए शुरू मे ही अयोध्या मे कार सेवको पर हुए नर सहार की न्यायिक जाच कराने का आदेश देगे तथा शहीद हुए कार सेवको के हर परिवार को एक-एक लाख रुपया हरजाना देने की व्यवस्था करेगे।

आर्य समाज की दृष्टि मे रामजन्म भूमि बाबरी मस्जिद का मामला इतना पेचीदा नही था, जितना कि उसे वी० पी० सिंह की सरकार ने बनाने का प्रयत्न किया था। मर्यादा पुरुषोत्तम राम सारे भारतीयो के लिए सर्वगुण सम्पन्न मानव ही नही, एक आदर्श राजा भी थे। हमारे नेताओ ने आजादी की लडाई के समय देश मे रामराज्य की स्थापना का ही आदर्श सामने रखा था। ऐसे महान राजा के जन्म स्थान पर यदि मन्दिर बनाने का विचार किया जाये तो कोई भी देश भक्त भारतवासी उसका विरोध नही करेगा। हमारे देश के मुसलमान नागरिको को भी जो मूर्तिपूजा का विरोध करते हैं। का बाबरी मस्जिद के नाम पर पैदा किए जाने वाले साम्प्रदायिक तनाव का विरोध करना चाहिए। वह भी उस मस्जिद के लिए जिसमें पिछले ५० वर्षों से कभी नमाज नही पढी गई और जिसकी पुरानी स्मृतिया आज भी उसके मन्दिर होने का प्रमाण प्रस्तुत करती हैं।

हमारे पास ऐसे उदाहरण मौजूद हैं, जहा मुस्लिम देशो मे भी जन साधारण की सुविधा को ध्यान मे रखते हुए मस्जिदो का स्थानान्तरण किया गया है। भारत की राजधानी दिल्ली मे ही महारानी विक्टोरिया की मूर्ति को हटाकर सग्रहालय में रखवाकर उसके स्थान पर अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी की प्रतिमा स्थापित की गई।

पर्याप्त विचार विनिमय के बाद सार्वदेशिक सभा इस निष्कर्ष पर पहुचती है कि इस विवाद को हल करने के लिए मस्जिद को किसी अन्य उपयुक्त जगह स्थानान्तरित करके वहा राम मन्दिर का निर्माण शुरू करने दिया जाय। यदि वर्तमान गतिरोध जारी रहा और देश के रामभक्त सगठनो को पुन अन्दोलन छेडना पडा तो आर्य समाज उनको अपना समर्थन देने मे पीछे नही हटेगा। सभा को इस बात की प्रसन्नता है कि शिया मुसलमान जो वास्तव मे बाबरी मस्जिद के अधिकारी हैं, इस व्यवस्था से असहमत नही है।

सभा आशा करती है कि श्री चन्द्रशेखर जो देश मे फैली वर्तमान जटिल परिस्थिति को सुलझाने के लिए वचनबद्ध हैं, सभा के सुझाव को स्वीकार करते हुए उस पर तुरन्त कार्यवाही करेंगे।

श्री निःशुल्क गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या में वेद प्रचार सप्ताह

श्री निःशुल्क गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या फैजाबाद में वेद प्रचार सप्ताह २२ से २८ सितम्बर ९० तक मनाया गया। इस अवसर पर दिल्ली से पधारे प० वेद व्यास आर्य भजनोपदेशक ने अपने मधुर भजनों के माध्यम से महर्षि दयानन्द जी के जीवन चरित्र को बड़े ही चित्ताकर्षक ढग से प्रस्तुत करते हुएकहा कि वेदमानव मात्रके लिए परमात्माका उपदेशहै। वेदके द्वारा ही ससार के समस्त मानवो ने एक सत्य धर्म पर चलकर एकता सभव है।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के लिए सतभ्रावां विद्यालय करौलबाग की ओर से पचास हजार रुपए भेंट

नई दिल्ली ७ अक्टूबर, सतभ्रावा आर्य कन्या विद्यालय के प्रांगण में एक सादे समारोह के अन्तर्गत विद्यालय के प्रधान प्रबन्धक श्री तीरथ राम आहूजा द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को दिसम्बर मे होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के लिए पचास हजार रुपए की थैली भेंट की गई। श्री आहूजा जी ने अपने सम्बोधन मे कहा कि विद्यालय प्रशासन के द्वारा इस महासम्मेलन में हर प्रकार की सहायता एव योगदान किया जाएगा। २३ दिसम्बर से २६ दिसम्बर तक महासम्मेलन मे भाग लेने वाले आर्य बन्धुओ के लिए ठहरने तथा खानपान की व्यवस्था भी विद्यालय की ओर से की जाएगी।

इस सभा मे सर्वश्री धर्मपाल, श्री चन्द्रदेव, श्री सूर्यदेव, श्री अजय मल्ला, श्री विमल वधावन एडवोकेट, श्री रामलाल मलिक तथा लाला इन्द्रनारायण के अतिरिक्त श्री तीरथराम आहूजा जी के परिवार के अन्य सदस्य भी उपस्थित थे। लाला इन्द्रनारायण जी ने आर्य महासम्मेलन के पच्चीस हजार रुपए देने की घोषणा की। करौलबाग आर्य समाज की ओर से भी महासम्मेलन के लिए धन सग्रह का वचन दिया गया। इस अवसर पर श्री रामलाल मलिक ने कहा कि महासम्मेलन में चार दिन तक रामलीला मैदान मे वह स्वय ऋषि लगर की व्यवस्था करेगे।

स्वतन्त्रता सेनानियों को बसपास देने पर मुख्यमन्त्री के निर्णय का स्वागत

हैदराबाद २५ सितम्बर।

पूर्व हैदराबाद राज्य आर्य स्वतन्त्रता सेनानी सघ के अध्यक्ष व हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद के साहित्य मन्त्री श्री पी राजवीर आर्य ने आन्ध्र-प्रदेश के मुख्यमन्त्री डा० मर्रिचेन्ना रेड्डी जी के इस निर्णय का हार्दिक स्वागत किया है कि स्वतन्त्रता सेनानियों के लिये २ अक्तूबर गांधी जयन्ती पावन दिवस से निःशुल्क बसपास देने की घोषणा करके स्वतन्त्रता सेनानियों के प्रति राष्ट्र की ओर से सम्मान प्रदान किया है।

स्मरण रहे इससे पूर्व भी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली द्वारा दिसम्बर मास मे हैदराबाद में आयोजित हैदराबाद आर्य सत्याग्रह अर्ध शताब्दी समारोह में डा० मर्रिचेन्ना रेड्डी जी ने मुख्य अतिथि के रूप राज्य के स्वतन्त्रता सेनानिया के पेंशन में दुगनी वृद्धि करने की घोषणा की थी।

स्वतन्त्रता सेनानियो के प्रति माननीय मुख्यमन्त्री जी के हृदय मे जो सम्मान की भावना है उसका स्वतन्त्रता सेनानी सघ की ओर से आदर करते हुये हार्दिक धन्यवाद उन्हें अर्पित किया जाता है इन दोनो निर्णयो से राष्ट्रवादियो का मनोबल ऊंचा हुआ है।

दीपावलि और महर्षि दयानन्द निर्वाण पर डा. सच्चिदानन्द शास्त्री का नीदरलैण्ड में रेडियो पर भाषण

आज का पर्व कार्तिक की अमावस्या दर्शेष्टि और नवसस्येष्टि दोनो दृष्टियो से विधि पूर्वक है। वर्ष के प्रथम सस्य धान्य का शुभागमन, ग्रहो की शोभा और समृद्धि आवास योग्य समुचित बनाता है। यही लक्ष्मी की पूजा थी। वास्तविक पूजा का भाव योग्य स्थान का प्रदान ही है, किन्तु रूढ़ि की आस्था के कारण लक्ष्मी का सत्वास पूजन तिरोहित हो गया।

(१) और उसके स्थान पर उलूकवाहिनी : लक्ष्मी जी की पूजा प्रचलित हुई तथा उसके उपासकों की बुद्धि पर ऐसा विश्वास जमाया कि वह अपनी उपास्य देवी के आगमन की प्रतीक्षा में दीवाली की रात जागरण में बिताते हैं। इसी तरह रात्रि मे द्यूत (जुआ) खेलने मे भी व्यतीत करते हैं। मन. कल्पित लक्ष्मी की प्रतीक्षा मे साक्षात् आई लक्ष्मी को दूर हटाते हैं। इसीलिए कहा है कि—

हमारे वेद में आदेश है "अक्षैर्मा दीव्य" इस कल्याणी वाणी का साक्षात् अनादर करते हैं। साथ ही खुले हुए घर मे चोर घुसकर चोरी भी कर लेते हैं। इन बाह्याडम्बरो से नवसस्येष्टि का सर्वथा लोप हो गया और गृह शोधन परिमार्जन, दीपो की पंक्ति, प्रकाशन, मिष्ठान्न, खाद्यवितरण, जुआ खेलना आदि अविद्या के तत्व शेष रहे। यज्ञ-होम के कार्य नष्ट हो गये।

(२) दीपावली के विषय मे विजयादशमी पर्व के साथ एक कथा प्रचलित हुई कि इस दिन भगवान रामचन्द्र जी वनवास से वापस राजधानी अयोध्या मे आये। इस आगमन की खुशी मे प्रजा ने प्रसन्नता पूर्वक दीपमाला की। इसी का रूप आज भी प्रसन्नता प्रकट की जाती है। क्योकि भगवान राम रावण-वध के पश्चात अयोध्या लौटकर आये इस पर मत भेद है कि वह रावण वध फाल्गुन या वैशाख में हुआ। किन्तु प्रचलित कथानक के आधार पर जनता का प्रसन्नता का दिन है अत दीपावलि की गई।

वैदिक धर्मावलम्बी जनो का परम कर्तव्य है कि जहा वे इस तथ्य का खोजबीन सत्यता को प्रकट करे वहीं पर शारदीय नवसस्येष्टि का पर्व और गृहशोधन आदि का स्वरूप आर्य हिन्दू जनता मे प्रचार-प्रसार करे।

(३) आर्यों का यह पर्व किसी विशेष कृत्य के लिए माना गया है इस प्रकार से किसी वर्ग विशेष के साथ भी सम्बन्ध रखता है।

वैदिक धर्म की मान्यता चातुर्वर्ण्य व्यवस्था चारो आश्रमो मे व्यवस्थित है इसका सम्बन्ध पशुओ मे, गौ और वनस्पतियो मे अश्वत्थ ब्राह्मण वर्ण के अन्तर्गत है श्रावणी उपाकर्म स्वाध्याय से सम्बन्ध होने से ब्राह्मण पर्व है लोक में भी श्रावणी (सलूनो) ब्राह्मणो का पर्व कहलाती है।

विजय दशमी क्षत्रियो का दिग्विजय यात्रा और क्षात्रधर्म से सम्बन्धित होने से क्षत्रिय पर्व माना है।

शारदीय नवसस्येष्टि या दीपावलि का पर्व वैश्य कर्म (कृषि-वाणिज्य और उनकी समृद्धि देवी लक्ष्मी) से है। अत. दीपावलि पर्व वैश्य पर्व है।

शूद्र पर्व होली पर्व परस्पर के मनोमालिन्य को आग में भस्मकर राख कर दो यह शूद्रभाव नष्ट करके द्विज तत्व की वृद्धि की जाय।

यहा पर दीपावलि का सम्बन्ध नवीन सस्य-अन्न-धन के आगमन से लक्ष्मी जी की वृद्धि का संकेत है इसी अवसर पर व्यवसायी वर्ग अपने आय-व्यय के खातो का भी पूजन कर नया रूप देते हैं। यह सब बाते पर्व की वैश्यत्वको सिद्ध करतेहैं। विशेष रूप से भी—ब्राह्मण: वर्ण स्वाध्यायसे अज्ञान को दूर ज्ञान का प्रसार तथा क्षत्रिय वर्ण शूरवीर बनकर अन्याय को हटाकर न्याय को दिलाये। और वैश्य वर्ण समृद्धि देकर अभाव को दूरकर भाव को पैदा करें।

इसी प्रकार हमारे पर्व भी विशेष वर्ग से सम्बन्ध रखते हैं और सर्वसाधारण मे सम्मिलित संगठन के पर्व भी हैं।

परन्तु—दीपावलि पर्व की एक महत्वपूर्ण घटना से भी सम्बन्धित है।

(४) इसी दिन अद्वितीय महान आत्मा आर्य समाज के संस्थापक वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द की आत्मा इस नश्वर शरीर को छोड़कर परमात्मा में लीन हुई थी।

ऐसे महापुरुषों का प्रयाण साधारण मानवों की भांति शोक प्रकट करने वाला न होकर उनका आगमन और प्रयाण लोक के कल्याण व आनन्द को बढ़ाने वाला ही होता है।

महापुरुषो का लोक में आगमन लोक कल्याण तथा बलिदान ससार के सुख के लिए होता है। उनका बलिदान स्वय जनता के लिए परोपकारार्थ देहोत्सर्ग उत्तम आदर्श जनता के अनुकरण तथा सुख का सयोजन करता है। इस पचभौतिक शरीर छोड़ते हुए उनकी आत्मा स्वय सन्तोष अनुभव करती है।

सन्तोष इसलिये कि वे अपने इस लोक में आने का उद्देश्य पूर्ण करते हुए इस लोक के जीवन को परोपकार मे छोड़ रहे हैं।

आनन्द इसलिए कि उनका जीवात्मा प्राकृत बन्धनो से मोक्ष पाकर परम प्रभु का सम्पर्क प्राप्त कर रहा है। साथ ही प्रभु की लीला का वर्णन करके—

"तेरी इच्छा पूर्ण हो" की कामना से अन्तिम यात्रा पूर्ण होती है—इस प्रकार आज आर्य समाज के लोग महर्षि दयानन्द के गुणगान का अवसर भी दीपावलि पर्व पर उपस्थित है।

ऊपर कहा है कि इस पर्व पर दीपावलि तथा महर्षि दयानन्द के गुणो की चर्चा करके शिक्षा ग्रहण करने का शुभावसर भी है।

ऋषि की विशेषताए

(१) जगत् उद्धारक—ससार का उपकार करना ही ऋषि का उद्देश्य था व्यक्ति परिवार का नही।

(२) भारत हितैषी—स्वदेश एव जाति, भक्ति, प्राचीन गौरव एव राष्ट्रवादी देशभक्त थे।

(३) शिक्षा प्रचारक—गुरु शिष्य सम्बन्ध, आश्रम व्यवस्था, ब्रह्मचर्याधार, सहशिक्षा विरोध समता भाव होना।

(४) समाज सुधार—अगणित कुरीतियो-कुप्रथाओ से युक्त स्त्री शूद्रोनाधीयताम्, बलिप्रथा सती प्रथा, बालविवाह, विधवाउद्धार दहेज, अस्पृश्यतानिवारण, मद्यनिषेध, प्राणि हिंसा।

(५) देव गिरा— सस्कृत प्रचार-प्रसार हेतु गुरुकुल कन्या विद्यालयो की ओर ध्यान दिया।

शहीद छात्रों के परिवारों को सहायता राशि

नई दिल्ली ६ नवम्बर १९९०,

मण्डल आयोग विरोधी आन्दोलन में पुलिस की क्रूरता के कारण मारे गए छात्रो की स्मृति में आज वीर अर्जुन कार्यालय मे एक सादे समारोह मे मृतक छात्रो के परिवारो को ११-११ हजार रु० भेंट किए गए। इस समारोह की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने की।

श्रद्धांजलि सभा को सम्बोधित करते हुए आर्य समाजी नेता स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि प्रधानमन्त्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने पिछडे वर्गों के उत्थान के नाम पर जो राजनैतिक खेल खेला है वह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है। उन्होने कहा कि स्वामी दयानन्द जैसे अग्रणी समाज सुधारक ने जिन बातो को त्याग दिया था वी० पी० सिंह ने उन्हे बडे ही गलत व भेदभावपूर्ण तरीके से पुर्नस्थापना करने का प्रयास किया है।

स्वामी जी ने कहा कि मण्डल आयोग लागू करने के पीछे वी० पी० सिंह की भावना पिछडो के उत्थान की न रह कर अपनी गद्दी बचाना रही है। जब उन्होने चौधरी देवीलाल काशीराम व महेन्द्र सिंह टिकैत को एकजुट होते देखा तो उन्होने बौखलाहट मे इस रपट को लागू करने की राजनैतिक चाल चली।

स्वामी जी ने कहा कि उन्होंने अपनी इस लम्बी आयु के दौरान अंग्रेजो का राज देखा, जलियावाला बाग काड देखा, साइमन कमीशन देखा किन्तु मण्डल आयोग विरोधी आंदोलन के दौरान जिस तरह अत्याचार छात्रो पर किए गए वैसे कभी अपने जीवन मे नही देखे।

उन्होने मडल आयोग विरोधी आदोलन के दौरान निर्भीक रूप से अपनी सशक्त लेखनी से सच्चाई को लगातार उजागर किए रखने के लिए वीर अर्जुन के सम्पादक श्री अनिल नरेन्द्र को बधाई देते हुए कहा कि इसके लिए जमाना आपको हमेशा याद रखेगा।

स्वामी जी ने कहा कि वीर अर्जुन ने समय की आवाज को सुना, रोते हुए समाज को सुना देश के कर्णधारो की भावनाओ को सुना व अपने दायित्व का बडे सुन्दर तरीके से निर्वाह किया।

उन्होने कहा कि शहीद छात्रो के परिवारजनो को दी जाने वाली सहायता राशि कितनी है प्रश्न इस बात का नही अपितु प्रश्न है उसके पीछे छिपी भावना का 'वीर अर्जुन के इस प्रयास से सरकारी रवैये से हतोत्साहित होते युवाओ को नया उत्साह मिला है। उनमे एक नई शक्ति का सचार हुआ है। उन्होने कहा कि हमारे पास मा की गोद मे देने को उसका बेटा नही है, बहन की राखी के लिए उसके भाई की कलाई नहीं है किन्तु उन शहीदो को उनके बलिदान को याद करने के लिए भावना तो है।

उन्होने आन्दोलन के दौरान शहीद हुए छात्रो के प्रति अपनी सवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि मेरी तो परमात्मा से यही प्रार्थना है कि ये छोटे छोटे फूल जो देश का एकता की खातिर कुर्बान हो गए वह फिर भारतवर्ष मे जन्म ल।

अल्पसंख्यक आयोग में दो और सदस्य शामिल करने की आलोचना

नई दिल्ली ६ नवम्बर (वार्ता) भारतीय जनता पार्टी ने वी० पी० सिंह की सरकार के अल्पमत मे रह जाने के बाद अल्पसख्यक आयोग मे दो और सदस्यो को शामिल करने के निर्णय की आलोचना की है।

पार्टी के महासचिव मुरली मनोहर जोशी ने आज यहा कहा कि सरकार ने गत तीन नवम्बर को एक अधिसूचना जारी कर बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी के सदस्य जावेद हबीब तथा एक अन्य मुस्लिम नेता अब्दुल रऊफ भारी को इसका सदस्य नामजद किया। उन्होंने सरकार के इस निर्णय को तुष्टीकरण की नीति का एक और ज्वलन्त उदाहरण बताया।

उन्होने कहा कि वैसे इस आयोग में पाच सदस्य होते हैं जो प्रत्येक अल्पसख्यक समुदाय का प्रतिनिधित्व करते हैं। लेकिन अब इसमें अध्यक्ष एस० एम० एच० बर्नी को मिलाकर मुस्लिम समुदाय के तीन प्रतिनिधि हो गए हैं। आयोग के अन्य सदस्य हैं—होमी दस्तूर खान, (पारसी) बलवन्तसिंह रामूवालिया (सिख), वेकिन पार्टिन (ईसाई) तथा बम्म चिरिमो (बौद्ध)।

नीदरलैण्ड में पुरोहित सभा

मेरे नीदरलैण्ड पहुचने पर, जब यह ज्ञात हुआ कि यहां पर ३० के लगभग आर्य समाज हैं और उनके सदस्यो की संख्या अधिक नहीं है फिर भी—सूरीनाम मे सत्ता परिवर्तन के साथ राजनीति में एक नया मोड आया और वहा के भारतीय सकट की घडी जान कर एक-डेढ लाख भारतीय हालैण्ड सूरीनाम से आकर बस गये। सूरीनाम पर शासन हालैण्ड सरकार का था।

यहा आने पर जैसे अपना सिर छिपाया वैसे ही आर्यसमाज की स्थापना और मन्दिर-भवनो का निर्माण भी किया। आज नीदरलैण्ड में २५ ३० आर्य समाजें हैं जिनमे साप्ताहिक अधिवेशन अन्य सुधार कार्य होते रहते हैं।

भारत से भी समय-समय पर विद्वान् उपदेशक यहा आकर ऋषि दयानन्द की मान्यताओ का प्रचार-प्रसार करते हैं।

आज कल एक मास तक के लिये प्रतिनिधि सभा के आमन्त्रण पर सार्वदेशिक सभा दिल्ली से आकर प्रचार कार्य मे व्यस्त हू। जहा-जहा भी मैं गया वहा-वहा पर उपदेशक पुरोहितो से साक्षात्कार हुआ। इनकी सख्या भी २०-२५ तक है। कई आर्यसमाजो के विशाल भवन भी है।

आर्यसमाजों की सूची तथा पंडित जन

आर्य समाज — पंडित जन

(१) एमसटर्डन—प० ऋषि तिवारी, प० शुभधन जी, प० शिवराज, प० रामराज बख्शा, प० विक्रम प० नैपाल, प० साहबदीन प० रामखिलावन।

(२) डेनहाग—प जगदीश दातादीन, प० अवधविहारी, प० भाई लाल, प० ठाकुर, प महावीर।

(३) रोटरडमे—प० शुभधन जी प० गणेश जीवन, प जयपाल (पिता-पुत्र), प० अयोध्या प्रसाद जी।

(४) इतररख—प० बन्धु, प० शिवराज जी।

(५) यूदन—प० सहती।

(६) (खुडऊ नेगन—प० बोधा, एन्स सदेई प० शीतलजी, प० विश्वेश्वर जी।

—सम्पादक

मंडल आयोग बनाम राष्ट्रीय अखंडता

—श्री रामनिवास बसोठिया

यह हर्ष का विषय है कि सर्वोच्च न्यायालय के १-१०-९० के निर्णयानुसार मंडल आयोग की पिछड़ी जातियों के लिए २७ प्रतिशत की नीति को लागू करने पर उस समय तक के लिए रोक लगा दी गई है जब तक कि इस बारे में याचिकों पर पूरी सुनवाई एवं फैसला नहीं हो जाता। इस निर्णय से देश में एक बार फिर से कुछ शांति का वातावरण बना है और सर्वत्र इसका स्वागत किया गया है। इस मुद्दे पर तो कोई भी विवाद नहीं है कि शैक्षणिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति से पिछड़े हुए नागरिकों के स्तर को बढ़ाने के लिए सरकार द्वारा ठोस कदम उठाये जाने चाहिए। लेकिन प्रधानमन्त्री ने, बिना देशव्यापी चर्चा या बहस के, मंडल आयोग की सिफारिशों के एक पहलू अर्थात् २७ प्रतिशत आरक्षण लागू करने का जो निर्णय अगस्त ९० में लिया उसी से देश में इतनी भयानक स्थिति पैदा हो गई है और एक प्रकार का जाति-युद्ध प्रारम्भ हो गया है। ऐसा क्यों? आइए, इस पहलू की समीक्षा की जाय।

यह निर्विवाद है कि आज देश की सबसे बड़ी आवश्यकता है—देश की अखण्डता। प्रस्तुत लेख में मंडल आयोग एवं उसकी सिफारिशों के वैधानिक एवं अन्य प्रमुख पहलुओं और विशेषकर देश की अखण्डता की दृष्टि से समीक्षा करने का प्रयत्न किया गया है। तथा इस विषम स्थिति से निपटने के लिए अब क्या किया जाय, इस बारे में भी कारगर सुझाव दिए गये हैं।

मंडल आयोग की रपट :

आरक्षण सम्बन्धी मुद्दों को समझने के लिए यह जरूरी है कि मंडल आयोग की पृष्ठ-भूमि के बारे में आवश्यक जानकारी प्रस्तुत की जाए। संविधान की धारा ३४० (१) के अन्तर्गत राष्ट्रपति को यह अधिकार प्राप्त है कि वह सामाजिक एवं उन्हें आर्थिक सहायता प्रदान करने की दृष्टि से एक आयोग गठित करे। लेकिन ऐसे आयोग द्वारा आरक्षण सम्बन्धी सुझाव देने का कोई भी वैधानिक प्रावधान नहीं है। लेकिन मंडल आयोग के गठन करते समय राष्ट्रपति जी द्वारा यह भारी भूल हो गई कि उन्होने आयोग को आरक्षण सम्बन्धी सुझाव देने के लिए भी अधिकृत कर दिया। इसके अतिरिक्त उस आयोग के पांचो सदस्यो को पिछड़ी जाति या अनुसूचित जाति से ही लिया गया। इस प्रकार उच्च वर्ग या जाति से एक भी सदस्य उस आयोग में नहीं लिया गया। यह दूसरी प्रमुख भूल हुई। मंडल आयोग ने १९३१ की जनगणना के आधार पर पिछड़े वर्ग की ३,७४३ जातियो की एक सूची तय कर दी जबकि संविधान के अनुसार यह सूची जाति के आधार पर नहीं बनाई जाकर केवल 'पिछड़े वर्ग" के आधार पर ही बनाई जानी चाहिए थी। यदि ऐसा होता तो संविधान मे वर्णित "सामाजिक एवं शैक्षणिक स्थिति से पिछड़े वर्ग" के बारे मे मंडल आयोग सही रूप से सिफारिशें पेश कर पाता। लेकिन उस आयोग ने ऐसा नही किया। यह उसकी तीसरी प्रमुख भूल हुई। फिर जल्दबाजी में विशेषज्ञों के सुझावों की अवहेलना करते हुए १९८० में उसने अपनी रिपोर्ट पेश कर दी। यह उसकी चौथी भूल हुई। फिर दस वर्षो तक उस रपट पर धून जमती रही। और, एकाएक उस रिपोर्ट पर, संसद में तथा देश में बिना बहस या चर्चा किये, उसके लागू करने की घोषणा प्रधानमन्त्री ने कर दी। और, उसके बाद क्या हुआ, यह किसी से छिपा नहीं है।

मंडल आयोग की सिफारिशो की एक सबसे बड़ी कमजोरी यह है कि वह जातिवाद के आधार पर है और देश की अखण्डता एवं एकता पर कुठाराघात करती है जबकि संविधान में "जाति" के स्थान पर 'वर्ग' शब्द का प्रयोग किया गया है। संविधान की भावना तथा देश की आवश्यकतानुसार तथाकथित उच्च जाति के वे नागरिक या समुदाय भी पिछड़े वर्ग में आ जाते है जो सामाजिक तथा शिक्षा अर्थात् आर्थिक स्थिति से पिछड़े वर्ग में आ जाते हैं जो सामाजिक तथा शिक्षा अर्थात् स्थिति से पिछड़े वर्ग के गिने जाते है, जैसे—मजदूर, कारीगर, चपरासी वर्ग के व्यक्ति चाहे वे किसी भी जाति के ही क्यों न हों। दूसरी बात मंडल आयोग की सिफारिशों की कमजोरी के विषय में मुख्य रूप से जो सामने आती है वह यह कि आयोग की सिफारिशों से वास्तविक रूप से पिछड़े वर्ग के गरीब व कमजोर वर्ग को कोई भी विशेष लाभ नहीं मिलेगा। बल्कि यदि उसके अनुसार आरक्षण हुआ तो उसका लाभ अधिकांशतः पिछड़ी जाति के सम्पन्न व्यक्तियों या उच्च पदाधिकारियों को ही मिलेगा जैसे पिछड़े वर्ग के सांसदों, विधायकों, राजनीतिज्ञो, अफसरों आदि की सन्तानों को। इस प्रकार पिछड़ेपन का कोई ठोस हल इस आयोग द्वारा नहीं निकलता। तीसरी प्रमुख हानि इसकी सिफारिशों को लागू करने पर जो होगी वह है "योग्यता या कार्यकुशलता" पर कुठाराघात। यदि डाक्टरों, इंजीनियरों, नर्सों, उच्च अफसरों आदि की नियुक्ति केवल "आरक्षण" के आधार पर होगी तो "योग्यता एवं कार्य कुशलता की बलि चढ़ा दी जाएगी। यह कदम संविधान की धारा ३३५ की स्पष्ट भावना के विरुद्ध होगा। वैसे संविधान की धारा १६ (४) के अनुसार आवश्यकता होने पर, सरकार पिछड़े वर्गों के लिए उचित आरक्षण नीति, बिना किसी मंडल या अन्य आयोग के भी, अपना सकती है। लेकिन ऐसा करने पर 'योग्यता' को ध्यान में रखना संविधान के अनुसार अति आवश्यक है। फिर आरक्षण के आंकड़ों पर दृष्टिपात करें तो ज्ञात होगा कि अनुसूचित जाति आदि के लिए वर्तमान २२.५ प्रतिशत आरक्षण एवं प्रस्तावित २७ प्रतिशत पिछड़े वर्ग के लिए आरक्षण करने के लगभग ५० प्रतिशत कुल आरक्षण हो जाता है। फिर महिलाओं के लिए ३० प्रतिशत आरक्षण की बात भी उठाई जा रही है तथा, विकलांगों, भूतपूर्व सैनिकों आदि के ५ प्रतिशत आरक्षण पहले से है ही। गरीब ईसाइयो तथा मुसलमानों के लिए भी आरक्षण का मुद्दा सामने आ रहा है। इस प्रकार जातिवाद समाप्त होने के बजाय मंडल आयोग की सिफारिशों को लागू करने से जातिवाद स्थायी तौर पर जम जायेगा और उसकी जड़े और गहरी हो जायेंगी। इसलिये देश की अखण्डता को कायम रखने तथा वर्तमान विषम स्थिति से निबटने के लिए निम्न सुझाव पेश किये जा रहे है—

(१) सरकार को सभी राजनैतिक दलो एव विभिन्न वर्गों से बातचीत एवं देश व्यापी बहस कराने के पश्चात ही 'आरक्षण' सम्बन्धी सर्वमान्य नीति अपनानी चाहिये।

(२) आरक्षण का सिद्धांत यदि आवश्यक समझा जाय तो केवल सामाजिक एवं शैक्षणिक दृष्टि से पिछड़े वर्गो (न कि जातियो) के लिये ही होना चाहिए और उसका लाभ 'आर्थिक' दृष्टि से पिछड़े सभी नागरिको को, बिना [illegible] या वर्गभेद के, मिलना चाहिये। यही सिद्धांत न्यायपूर्ण एव उचित भी है।

(३) एक नया आयोग सरकार द्वारा गठित होना चाहिए जो पिछड़े वर्ग के सभी नागरिकों के सामाजिक एव शैक्षिक स्तर को ऊंचा करने एवं उन्हें उच्च नौकरियो के लिए समान अवसर प्रदान कराने के बारे में कारगर सुझाव दे सके।

(४) सरकार द्वारा अनुसूचित जातियों की वर्तमान आरक्षण नीति की समीक्षा शीघ्र ही करायी जानी चाहिए ताकि उसके अनुभव के आधार पर पिछड़े वर्ग के लिए नई आरक्षण नीति, कमजोर वर्गो के लिए बनाई जा सके।

(५) सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक दृष्टि से कमजोर व पिछड़े वर्ग के व्यक्तियो के उत्थान के लिए छात्रवृत्ति, आर्थिक सहायता, निःशुल्क शिक्षा व स्वरोजगार प्रशिक्षण आदि की व्यवहारिक योजना ८वीं पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत अवश्य ही सम्मिलित की जानी चाहिए।

(६) 'आरक्षण' की नीति यदि अपनाई गई तो उसमें यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि एक बार नौकरी मिलने पर भविष्य मे उच्च पद के लिए तरक्की केवल 'कार्य कुशलता व योग्यता' के आधार पर ही की जायगी न कि 'आरक्षण' के नाम पर योग्यता की बलि भी नहीं चढ़ाई जाय।

आशा है कि प्रधानमन्त्री उपरोक्त सुझावों को अमल में लाकर देश को वर्तमान एवं भावी जातिवाद के संकट से बचायेंगे तथा पिछड़े वर्गों का और उनके साथ देश का भी सही अर्थों में भला करेंगे।

स दाधार पृथिवींद्यामुतेमाम्

—देवेन्द्रकुमार

पश्य देवस्य काव्यं न ममार न जीर्यति :

उपरोक्त वाक्य की प्रेरणा है कि यदि हम ईश्वर का दर्शन करना चाहते हैं तो उसकी विचित्र सृष्टि का दर्शन करें। वह स्थूल सृष्टि ही उस चेतन एवं विराट पुरुष का शरीर है। ईश्वर का सृष्टि रूप यह शरीर न नष्ट होता है, न ही जीर्ण शीर्ण अर्थात् वृद्धत्व को प्राप्त होता है अपितु नित्य नवीन रहती है।

सृष्टि के पदार्थों का सूक्ष्म अवलोकन करें तो निश्चित ही रचना के पीछे रचनाकार के अस्तित्व की प्रतीति होगी। कलाकृति की ओट मे अवश्य ही कलाकार खड़ा दिखाई देगा। जगती के कण-कण में इसके स्वामी की पदचाप सुनाई देगी।

तेरी बेमिसाल कुदरत का हर एक पत्ते मे दफ्तर है।
तेरा देखा है सिक्का सब्त हमने दाने दाने में।।

परन्तु देखना भी दो प्रकार का होता है। घटनामात्र को देखना मकान मे चोर घुस आये परन्तु चौकीदार न तो उसे भगाता है और न ही शोर करता है तो इसको देखना कैसे कहा जा सकता है? यथार्थ देखना तो वह है—जब व्यक्ति घटनाओं में व्याप्त नियमों का ज्ञान प्राप्त करता है। पेड़ से टूटकर सेब पृथ्वी पर गिरता है तो न्यूटन को पृथ्वी की आकर्षण शक्ति का ज्ञान हो जाता है और यही वस्तुत. देखना है। जेम्सवाट को केतली के बार-बार ऊपर उठने से भाप की विशाल शक्ति का अनुमान होता है यही तो वास्तविक दर्शन या सत्य से साक्षात्कार है देखना शुरू कर तो कोई कारण नही कि प्रत्येक पदार्थ के कण कण मे छिपा हुआ ससार का स्वामी हमारी दृष्टि से देखना शुरू करे तो कोई कारण नहीं कि प्रत्येक पदार्थ के कण-कण मे छिपा हुआ ससार का स्वामी हमारी दृष्टि से ओझल रहे।

क्या तमाशा है कि चिलमन से लगे बैठे हो।
साफ दिखते भी नही, सामने आते भी नही।।

हम चिन्तन की आंख से ईश्वर का साक्षात्कार कर सकते हैं। एक 'लघु रचना' नेत्र के विषय मे चिन्तन करे। आख भी कितनी विचित्र रचना है। आख के विषय में हजारो वर्षों से मेडिकल साइंस की दृष्टि से अध्ययन हो रहा है। नगर-नगर मे नेत्र विशेषज्ञ दुकान खोले बैठे हैं। इतने समय के उपरान्त भी आख को पूर्ण रूप से जानने की गारन्टी क्या कोई दे सकता है? इतनी बड़ी अवधि मे हमारे हजारो विशेषज्ञ नेत्र रचना का कुछ अश ही जान पाये। हर अंग के विशेषज्ञ हैं—दन्त विशेषज्ञ, कर्ण विशेषज्ञ, हड्डी विशेषज्ञ इत्यादि। परन्तु इन सारे विकास के परिणाम स्वरूप भी हमारे पास इन अगो की सरचना की आंशिक जानकारी ही है पेड़ की पत्ती के विषय मे विचार करे तो एक पत्ती एक पूरा कारखाना हो है इन जटिल रचनाओं के पीछे अवश्य कोई महाबुद्धिमती सत्ता विद्यमान है।

आवश्यकता है उन आखो की जो अपने प्रियतम स्वामी का दर्शन करने की भूखी हों—

रोशन है तेरे जलवे हर एक शै मे लेकिन।
है चश्म कार तेरी मेरा कसूर क्या है?

आज हम विज्ञान की आश्चर्य जनक खोजो से हतप्रभ हो रहे हैं क्योंकि विज्ञान प्रतिदिन ही मानवीय कल्पना को सचाई बदलता जा रहा है। जब मानव हो इतने बड़े चमत्कार कर सकता है तो किसी चामत्कारिक शक्ति ईश्वर को मानने की क्या आवश्यकता है? वस्तुत विज्ञान ही हमारा ईश्वर है। जो हमारी नित्य की भौतिक आवश्यकताओ को पूरी कर रहा है इस प्रकार के विचारों ने विज्ञान को ही ईश्वर के स्थान पर ला बिठाया है।

ईश्वर के विचार को धक्का पहुचाने में जहा तथाकथित विज्ञान का हाथ रहा है वही धर्म के नाम पर खून की होली खेलने वाले, विश्व को वर्गों मे बाटने वाले, मानव-मानव में ही जाति एवं छुआछूत की भावना पैदा कर ऊची एव नीची सामाजिक स्थितियों का निर्माण करने वाले आडम्बर एव ढोंग से पूर्ण तथाकथित धर्म ने भी ईश्वीर विचार को धक्का पहुचाने में बहुत बड़ी भूमिका निभाही है किसी उर्दू के शायर ने इस स्थिति को भाप कर ही लिखा है—

खुदा के बन्दो को देखकर ही, खुदा से मुनकिर हुई यह दुनिया।
कि ऐसे बन्दे हैं जिस खुदा के वो कोई अच्छा खुदा नही है।।

विज्ञान प्राकृतिक तत्वो मे छुपे हुए नियमो की खोज करता है। इसका अर्थ है कि सारा भौतिक जगत नियमों एव व्यवस्था से बधा हुआ है। प्रत्येक वस्तु के नष्ट होने अथवा निर्माण या प्रत्येक घटना में कोई न कोई नियम अवश्य व्याप्त है। अत. सिद्ध हुआ कि सृष्टि मे पद-पद पर व्यवस्था वर्तमान है और व्यवस्था की कल्पना बिना व्यवस्थापक के नही की जा सकती। छोटा सा कार्यालय भी बिना अधिकारी के नही चल सकता फिर महाविशाल सृष्टि को हम बिना किसी स्वामी के चलता पाये तो निश्चित ही हम अधेरे में रहते हैं या सच्चाई को स्वीकार करने की शक्ति हममे नही है।

सूर्य हमारी पृथ्वी से लाखो गुना बड़ा है। सूर्य का तल २१ खरब वर्ग मील क्षेत्र फल के लगभग है। एक वर्ग मील के ताप को मात्रा समुद्र पर १० लाख जहाजो को चला सकती है। पृथ्वी पर जितना ताप आता है उससे २ करोड़ २२ गुना से भी अधिक ताप आकाश मे बिखर जाता है।

'बेटलगाइज" नामक नक्षत्र २१ करोड ५० लाख मील के व्यास है। अन्टारेस' नामक नक्षत्र इससे भी बड़ा है। उसका व्यास ३९ मील है। इसमे लगभग १४ नील के लगभग पृथ्वीयां समा सकती है। 'अल्फा' और हरक्यूलस' ३० करोड़ मील व्यास के हैं। ऐसे भी नक्षत्र हैं जिनका प्रकाश १ लाख ८६ हजार मील प्रति सेकेंड के वेग से चलकर साठ हजार वर्षों मे हम तक पहुचता है। कई वैज्ञानिको ने ४० करोड़ सूर्यों की गणना की है। यह तो विश्व ब्रह्माण्ड की एक झलक है तो समस्त विश्व ब्रह्माण्ड की इस आश्चर्यकारी व्यवस्था का तो कहना ही क्या? वस्तुत यह अनन्त परमात्मा की शक्ति का थोड़ा सा नमूना है।

हे अनन्त रमणीय कौन तुम, यह मैं कैसे कह सकता।
कैसे हो क्या हो? इसका भार विचार न सह सकता है।।
हे विराट् हे विश्व देव तुम कुछ हो ऐसा होता भान।
मन्द्र गम्भीर ध्वनि स्वर सयुत यही कर रहा सागर गान।।

आर्य समाज आरक्षण नहीं संरक्षण का हिमायती

–शशिकान्त आर्य

(लेखक :—शशिकान्त आर्य–आर्य समाज के युवा तुर्क हैं। विज्ञान स्नातक, साहित्य मे स्नातकोत्तर और विधि के अध्येता हैं। आर्य समाज की आर्य भारती सवाद समिति के मुख्य सम्पादक और युवा सम्मेलन दक्षिण भारत के सयोजक हैं। पीढियो से आर्यसमाजी रहे निष्ठावान प्रतिष्ठित परिवार में उत्पन्न हुए और आर्य समाज की गतिविधियो मे सक्रिय रहे है। पिछले कुछ समय से आर्यसमाज के सगठन को नई पहचान और नई शक्ति देने मे जुटे है। प्रस्तुत लेख मे विचारशील युवालेखक आरक्षण जैसे ज्वलन्त सामयिक विषय पर आर्य समाज के वैचारिक और सैद्धान्तिक पक्ष को स्पष्ट किया है और आर्य समाज से नयी भूमिका निभाने का आह्वान है।)

सरकारी नौकरियो में मण्डल आयोग अनुशसा के आधार पर पिछडी जातियो को २७ प्रतिशत आरक्षण देने की राष्ट्रीय मोर्चा सरकार की राजनीतिक प्रपचपूर्ण घोषणा मे राष्ट्र को झकझोर दिया है। दो माह से सम्पूर्ण राष्ट्र और समाज तीव्र प्रतिक्रियात्मक आन्दोलन से उद्वेलित है। सरकार की कुटिल राजनीति ने समाज और राष्ट्र को जन्मगत जाति के खाचो में बाट किया है। अग्रजो की विदेशी सत्ता ने देश के दो टुकडे धर्म के आधार पर किये थे। किन्तु आज के शासक देश की अनेक जाति और वर्गो मे बाट देना चाहते हैं।

आर्य समाज का दृष्टिकोण :–

आर्य समाज जन्मगत जाति निर्धारण का विरोधी है। हम सम्पूर्ण मानव समाज की एक ही जाति मानते है। आर्य समाज दो ही वर्ग मानता है अच्छा और बुरा। यह वर्ग भेद भी जन्म से नही गुणो से है। वैदिक सस्कृति और परम्परा मे आर्ष ग्रन्थो और साहित्य मे इसे ही आर्य अनार्य या सुर-असुर या देव-असुर के रूप मे निरूपित किया गया है। उन्नति या अवनति से यह वर्ग भी परिवर्तनीय रहा है। कई ऋषियो के पुत्र पददलित होकर राक्षस-असुर कहलाये और कई असुरो की सन्ताने आत्म उन्नति के सन्मार्ग पर चलकर ऋषि जैसे गरिमामय और पूज्य पद को प्राप्त हुई।

मनु की व्यवस्था :–

सामाजिक व्यवस्था मे जाती प्रथा के लिये मनु को दोषी ठहराया जाता है। परन्तु मनु ने जाति व्यवस्था नही वर्ण व्यवस्था का प्रतिपादन किया है। वर्ण का आधार ही व्यक्ति की योग्यता-कर्म-विशेषज्ञता को माना है न कि जन्म परिवार को। ब्राह्मण की श्रेष्ठता उसके बुद्धिजीवी होने से है। स्वास्थ्य या शारीरिक शक्ति भी बिना ब्रह्मचर्य के सम्भव नही अत. क्षत्रिय को ब्राह्मण के बाद रखा गया। वैदिक सस्कृति अर्थ प्रधान नही रही। भौतिकवादी अर्थ लोलुपता तो असुरो मे रही है। आज पाश्चात्य व्यक्ति केन्द्रित अर्थ प्रधान बहिर्मुखी भौतिकवादी प्रदशन और आर्थिक सम्पन्नता समृद्धि का मापदण्ड भी उसी का आधुनिक सस्करण है और उसी का ताडव तथा समाज का विघटन गलाकाट शोषण की सस्कृति असुर प्रवृत्ति की पहचान है। वर्ण व्यवस्था मे व्यापार कृषि, पशुपालन उद्योग का तृतीय क्रम है। वैश्य के रूप में और शूद्र वह है जिसे कोई विशेष योग्यता दक्षता नही न बुद्धि स्तर पर न चरित्र की न विशेष कर्म कौशल की जो केवल शारीरिक श्रम सेवा से ही समाज के लिये उपयोगी है।

आधुनिक समाज व्यवस्था :–

कम्युनिष्ट श्रमिक राज्य की बात करते हैं। वास्तव मे वे समाज मे शूद्र प्रभुत्व स्थापित करना चाहते हैं। उसका परिणाम अन्तत पिछडापन होता है। अत जब भी मौका मिला, सम्भव हुआ बुद्धिजीवी ब्राह्मण घुटन को तोड कर वहा से भाग खडा हुआ। आज सत्तर वर्षों के बाद गोर्बाच्योव ने उस पद्धति की अप्रासगिकता स्वीकार कर ली है। जर्मनी का एकीकरण इतिहास का नवीनतम सबक है। चीन भी उन अर्थों मे कम्युनिस्ट नही है जिसमें माओ युग था। उसने पश्चिम के द्वार खोल दिये हैं विकास के लिये, घुटन में हल्का झोका भी झरोखे से आकर राहत देता है। वहा भी मुक्ति की छटपटाहट है ध्यान मेन चौक गवाह है।

वैश्य प्रभुत्व के औद्योगिक विकास की एकागिता सभी स्वीकारते हैं। अर्थ प्रधान समाज की दौड मे सबसे आगे रहने वाले अन्तत नीद के लिये और सुख के लिये तरसते है। और भाग खडे होते हैं शान्ति की खोज मे कभी दुस्साहिक कार्यों मे तो कभी हिप्पी बन कर तो कुछ योग के सौदागरो के पास। कभी रजनीश तो कभी महेश योगी उन्हे ठगते हैं। मृगतृष्णा की भटकन, नशीली दवाए, असाध्य रोग, तनाव, कुण्ठा अशान्ति, अपराध जीवन के अग होते हैं। क्षत्रिय प्रभुत्व या केवल शक्ति समाज को पशुता की ओर ले जाती है। महाभारत के कारण परिणाम मूमत समाज मे

शक्ति श्रेष्ठता की स्थापना ही है। कोई भी उनसे फिर साबका करना नही पसन्द करेगी।

बौद्धिक प्रभुत्व की शाश्वत आवश्यकता :–

वस्तुत मनुष्य मे बुद्धि ही उसे प्राणि जगत मे सर्वश्रेष्ठ बनाती है अत मनुष्य समाज मे भी बौद्धिक प्रभुत्व ही श्रेयस्कर है। मनु वास्तव मे समाज मे बौद्धिक प्रभुत्व ही के समर्थक है जो तब ब्राह्मण का प्रतीक थी। कालान्तर मे ब्राह्मण जन्मना होने से आज लोग कथित ब्राह्मण विरोधी और मनु निन्दक हो गये है। आज बुद्धिजीवी इसे बतौर फैशन अपनाते हैं वस्तुस्थिति अभिप्राय से अनभिज्ञ हो कर।

आज आवश्यकता न केवल आर्य समाज में अपितु मानव समाज मे ब्राह्मणवाद की पुनर्स्थापना है तभी हम सही उन्नति उत्कर्ष पर पहुच सकते हे। बुद्धिजीवी नेतृत्व हमे चाहिये। बुद्धि का सम्मान होना चाहिये। प्रतिष्ठा अर्थ से नही बुद्धि प्रखरता से मिलना चाहिये। चन्द्रगुप्त को चाणक्य का अनुगामी बनना होगा। भामाशाह को राणा प्रताप का सहयोगी बनना चाहिये। केवल अर्थ प्रभत्व या सेवा प्रभुत्व हमे मैकाले का कलकं समाज दे सकता है जो परस्पर सघर्ष पैदा कर झूठे जातिद्वाता से विघटन को ही निरन्तर बढावा देगा।

महर्षि दयानन्द की स्पष्ट मान्यता है बल्कि निर्देशात्मक आदेश है कि एक विद्वान की बात को सभी अन्यो से अधिक मान्यता दी जाए। उसके पास वीटो का अधिकार है।

आज देश मे लोकतन्त्र की दुर्दशा हम देख रहे है। इसका कारण सब धान एक पसेरी होना हैं। योग्यता का कोई अतिरिक्त लाभ नही। अठारह वर्षीय अनपढ मूर्ख को भी एक वोट का अधिकार है। जबकि सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश और वैज्ञानिक और शिक्षाविदो जैसे योग्य विचारक, शिक्षित, समझदार, दूरदर्शी व्यक्तियो को भी एक ही वोट का अधिकार है। जहा मूर्ख और विद्वान की राय को बराबर का महत्व मिलेगा वहा स्वार्थी, सकुचित पदलोलुप, कलुषित राजनीति ही होगी। (क्रमश)

सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत : स्थिर निधियां

(गतांक से आगे)

श्री चिरंजीलाल मल्ला गोसवर्धन स्थिर निधि

१ लाख रुपए

(चिरंजीलाल मल्ला चैरिटेबल ट्रस्ट अध्यक्ष श्री मुल्कराज मल्ला द्वारा स्थापित।)

—सभा अधिक से अधिक आय प्राप्त करने के लिये अपनी इच्छा से इस राशि का विनिमय करेगी।

—इस निधि से प्राप्त आय गोवंश की रक्षा, नस्ल सुधार उसके हित, पालन-पोषण आदि में व्यय तथा अन्य किसी ढंग से प्रयुक्त की जा सकेगी जिससे कि गो-संवर्द्धन तथा दुग्ध उत्पादन मे वृद्धि हो और सर्वसामान्य जनता विशेषत पिछडी जातियो के स्वास्थ्य में सुधार हो।

।— पशुओ की बीमारियो की रोकथाम के लिए अनुसंधान कार्य मे व्यय करना।

४—इस निधि की आय सम्पूर्ण अथवा आंशिक धनराशि का उपयोग पशु चिकित्सालय पशुओ के रोगो पर अनुसंधान नस्ल सुधार शोध केन्द्रो की स्थापना पर इस शर्त के साथ किया जा सकेगा कि इस प्रकार के केन्द्र (चिकित्सालय) का नाम 'लाला चिरंजीलाल मल्ला रखना होगा।

५—इस निधि की राशि को 'चिरंजीलाल मल्ला चैरिटेबिल ट्रस्ट को वापिस लेने का अधिकार न होगा।

इस निधि की स्वीकृति १-९-८१ की अन्तरंग सभा न दी।

स्त्री आर्य समाज (पारिवारिक सत्संग मंडल) डी ब्लाक सुदर्शन पार्क नई दिल्ली ने १८९३८)६४ (अठारह हजार नौ सौ अडतीस रुपए चौसठ पैसे) की एक स्थिर निधि सभा में कायम की है। इस निधि के ब्याज का उपयोग निम्न कार्यों मे होगा।

धार्मिक पुस्तको के प्रकाशन, गरीब छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति। प्रकाशित पुस्तको पर श्रीमती ईश्वरी देवी जी आर्य समाज डी० ब्लाक सुदर्शन पार्क नई दिल्ली की स्थिर निधि के ब्याज से प्रकाशित किए जाने का उल्लेख हो। इस निधि के धन को कोई भी कभी वापिस लेने का अधिकारी नही होगा। २१-२ ८२ को अन्तरंग सभा ने इसका स्वीकृति दी।

श्री चननलाल शर्मा, एव श्रीमती पुरुषत्तोम देवी ५०००)

श्री चननलाल शर्मा एव श्रीमती पुरुषोत्तम देवी वेदप्रचार हिन्दी भाषा प्रचार निधि। इस निधि का ब्याज ही खर्च किया जा सकेगा। श्री चननलाल जी कलेरकला गुरुदासपुर) के निवासी हैं।

२६-१२-८० की अन्तरंग बैठक ने यह निधि स्वीकार की।

श्रीमती विद्यावती कोडा स्थिर निधि

५०००) पाच हजार रुपए की स्थिर निधि श्रीमती विद्यावती कोडा धर्मपत्नी श्री निरंजन देव जी विद्यालकार बी. ५-१५८ सफदरजंग इंकलेव नई दिल्ली ने अपने ज्येष्ठ पुत्र स्व फ्लाइट लेफ्टिनेंट श्री प्रियदेव कोडा की पुण्य स्मृति मे १-४-७८ को सभा मे स्थापित की थी। इस निधि के ब्याज का आधा भाग हवन आदि हेतु शम्भूदयाल वैदिक सन्यास आश्रम गाजियाबाद के श्री जनार्दन भिक्षु जी को जब तक उनका इस आश्रम से सम्बन्ध होगा, दिया जाएगा।

श्री भवानी लाल गज्जूमल शर्मा स्थिर निधि

विश्वकर्मा कुलोत्पन्न स्व, श्रीमती तिज्बो देवी भवानीलाल शर्मा ककुहास की पुण्य स्मृति में स्व भवानीलाल शर्मा (कानपुर) अमरावती विदर्भनिवासी ने सार्वदेशिक पत्र के हितार्थ पाच हजार रुपए की स्थिर निधि १९५९ मे स्थापित की थी जिसके ब्याज का आधा सार्वदेशिक को दिया जाता है तथा आधा असल राशि मे जमा कर दिया जाता है। गत वर्ष २०००) हजार प्रतियां आर्य समाज के दस नियम की व्याख्या छपाई गई।

शर्मा जी ने ५) हजार रुपये के दान से एक दूसरी निधि सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशनार्थ कायम की थी। इस निधि से गतवर्ष तक सत्यार्थ प्रकाश के ४ अच्छे संस्करण ५ ५,-१० तथा २० हजार की संख्या मे छप चुके थे।

चन्द्रभानु वेदमित्र स्मारक निधि

यह निधि स्व श्री चन्द्रभानु जी रईस तीतरो (सहारनपुर उत्तरप्रदेश) निवासी की पुण्य स्मृति मे उनके सुपुत्र स्व. श्री म वेदमित्र जी जिज्ञासु द्वारा प्रदत्त ५ हजार के दान से १९२५ मे मथुरा शताब्दी के अवसर पर स्थापित हुई थी। दानी की इच्छानुसार इस राशि के ब्याज से आर्य साहित्य प्रकाशित किया जाता है।

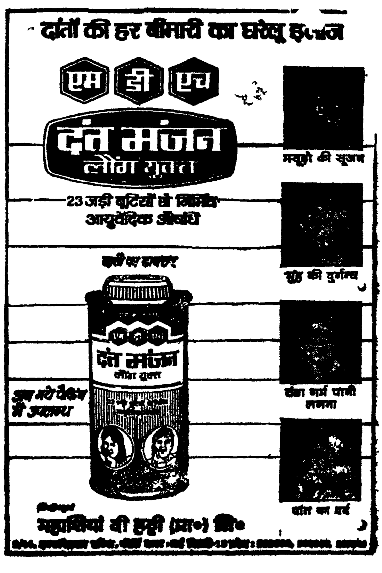
गंगाप्रसाद गढ़वालप्रचार ट्रस्ट

सार्वदेशिक सभा के पूर्व प्रधान स्व. श्री गंगाप्रसाद जी चीफ जज ने २ हजार के दान से एक स्थिर निधि स्थापित की थी जिसका ब्याज दानी महोदय तथा उनके बाद आर्य समाज टिहरी (गढवाल) की अनुमति से उक्त समाज के कार्यों पर खर्च किए जाने का प्रावधान किया गया था।

श्री मूलचन्द बजरंगलाल डीडवानी पीलवा (राजस्थान) स्थिर निधि

(स्व. श्री प मूलचन्द जी ने अपने जीवन काल मे ५ हजारकी राशि सभा को दान की थी जो उपर्युक्तनिधि के नाम से जमा है। इसके ब्याज ब्याज से महर्षि दयानन्द कृत ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश तथा अन्य साहित्य प्रकाशन का प्रावधान हुआ था। इस निधि के ब्याज से दयानन्द दी मैन एण्ड हिज मिशन ट्रैक्ट छप चुका है। गत वर्ष इस निधि से वेद का इस्लाम पर प्रभाव पुस्तक छपाई गई।

(क्रमश)



आर्यसमाज के पत्रकार जो आर्यसमाज के झण्डे तले जेल गये

–प्रा० राजेन्द्र 'जिज्ञासु' वेदसदन, अबोहर १५२११६

शुद्धि आन्दोलन के सम्बन्ध मे हम अपनी लेखमाला को अभी आगे चलाएंगे। हर्ष का विषय है कि विदर्भ से श्री विद्याभूषण जी आर्य सरीखे वयोवृद्ध आर्य सेवक व कई और प्रबुद्ध पाठकों ने शुद्धि-आन्दोलन विषयक हमारे शोध पूर्ण लेखन को बहुत उपयोगी जानकर इस विषय को आगे चलाने की प्रेरणा की है।]

आज शोधकर्ता शोध विषय में नये-नये विषयो पर शोध करते हुए ठोस सामग्री चाहते हैं। आर्यसमाज की पत्रकारिता को देन पर श्री मदनमोहन जी राजस्थान वालो ने पी० एच० डी० की उपाधि प्राप्त की है। अभी बहुत करना शेष है। आज हमने सार्वदेशिक के लिए जिस विषय को चुना है इस पर हम कई लेख देंगे। हमारा पूरा यत्न होगा कि इस विषय मे किसी भी आर्य पत्रकार का नाम छूट न जावे। यदि किसी का नाम छूट गया तो इसका कारण हमारा अज्ञान ही होगा, पक्षपात का तो प्रश्न ही नही। हमारी अपने विचारशील पाठको से विनती है कि वे हमारे लेख पढते ही ऐसे जिस भी आर्य पत्रकार का उन्हें ज्ञान हो – हमे लिख भेजे। हम अपनी सूची से मिलान कर लेंगे। सबके परिचय के लिए बहुत सक्षेप मे लिखा जावेगा।

यह बात समझ लेनी चाहिए कि हम आर्यसमाज के लिए कारावास मे जाने वाले पत्रकारो की ही चर्चा करेंगे वैसे तो अनेक आर्यसमाजी ऐसे है व थे जो पत्रकार भी थे और जेल भी गये।

दूसरी बात यह भी जान लीजिए कि हमारी परिभाषा मे वही पत्रकार नही है जिसको कभी सम्पादक बनाया गया हो या जो सम्पादक है। आर्य-समाज व आर्यसमाज से बाहर भी ऐसे पत्रकारो की सख्या कहीं अधिक है जो किसी पत्रिका के सम्पादक न होते हुए भी सम्पादको से कहीं अधिक लिखते है। उदाहरण के लिए आर्यसमाज में अध्यापक शरर जी की कवितायें आर्यसमाजी पत्रों व दैनिक पत्रो मे पचास वर्ष से छप रही है। आपके जोश-पूर्ण, भावपूर्ण व ओजस्वी लेख भी इतने ही काल से आर्य पत्रो में छप रहे हैं। पचास वर्षों से पत्रकारिता के क्षेत्र क जाने-माने कवि व लेखक को कोई मूर्ख ही पत्रकारों की श्रेणी से बाहर रखेगा। आप हैदराबाद सत्याग्रह के पश्चात् भी दो बार जेल हो आये हैं। हिन्दी सत्याग्रह मे जेल गए फिर एक व्याख्यान के कारण जेल गये। लम्बा अभियोग चला था।

समाजो के पत्रो पर प्राय [मन्त्री] का नाम सम्पादक के रूप छपता है। कई ऐसे सम्पादक हैं जो पत्रकार व लेखक के रूप मे तो नियमित नही लिखते रहे परन्तु सम्पादक रहे व आर्यसमाज क लिए जेल भी गये। सार्व-देशिक के दो भूतपूर्व मन्त्री इसका उदाहरण है। श्री ओमप्रकाश जी त्यागी व ला० रामगोपाल शाल वाले दोनो सार्वदेशिक के सम्पादक रहे व दोनो आर्यसमाज के लिए जेल भी गये।

पाठक हमे क्षमा करेंगे हम कालक्रम से अपनी सामग्री न दे पायेंगे। इसका कारण हमारी व्यस्तता है। यत्न तो यही होगा कि पहले अतीत के आर्य पत्रकारो को ही लिया जावे।

महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज ने मुरादाबाद से उर्दू व हिन्दी दोनों भाषाओ मे लेखनी चलाई। उनके लेख तब भी चाव से पढे जाते थे जब आप अभी जवान ही थे। नाम तब नारायण प्रसाद था। वे आर्यसमाज के हृदय सम्राट थे। जेल गए। यह सर्वविदित है।

महात्मा मुन्शी राम [स्वामी श्रद्धानन्द जी] सदैव अगारों पर खेलते रहे जिन आर्य पत्रकारो पर आरम्भिक युग में अभियोग चले, महात्मा जी उनमे से एक थे। धौलपुर सत्याग्रह का नेतृत्व किया। आर्यसमाज के लिए जेल जाने को सदा उद्यत रहे परन्तु आर्यसमाज के लिए कई बार सघर्ष करते हुए जेल जाने का अवसर तो आया परन्तु सरकार ही टाल जाती। वैसे वे जेल गये परन्तु सिखो के लिए।

महाशय कृष्ण जी आप प्रकाश उर्दू साप्ताहिक व आर्य पत्रिका अंग्रेजी के सम्पादक रहे। आपका अंग्रेजी पर भी बड़ा अधिकार था। हैदराबाद सत्याग्रह के सर्वाधिकारी बन कर जेल गये। हिन्दी सत्याग्रह मे भी जेल गये।

महात्मा आनन्द स्वामी जी कभी आर्य गजट के सम्पादक रहे। सब जानते हैं कि वे हैदराबाद सत्याग्रह के सर्वाधिकारी के रूप मे जेल गये। हिन्दी सत्याग्रह मे भी जेल गये थे।

स्व० श्री डा० ज्ञानचन्द जी एक पत्र निकालते थे। नाम सम्वत वर्त-मान था। इस पर अभियोग चला। आप दण्डित भी हुये। जेल गये थे।

पूज्य स्वामी आत्मानन्द जी महाराज व स्वामी सत्यानन्द जी महाराज दोनो पजाब सभा के प्रधान रहे। दोनो लिखते रहते थे। श्री स्वामी आत्मा नन्द जी तो कवि भी थे। दोनो समय-समय पर धर्म रक्षा के लिये जेल गये। श्री प०बुद्धदेव जी विद्यालकार को कौन नही जानता। आप हैदराबाद सत्याग्रह मे व हिन्दी सत्याग्रह म भी जेल गये।

श्री प० नरेन्द्र जी हैदराबाद तो आर्यसमाज व देश हित मे कभी जेल से बाहर व कभी जेल के भीतर आते-जाते ही रहते थे।

श्री प० जगदेव सिंह सिद्धान्ती व श्री प० रघुवीर सिंह जी शास्त्री दोनो गुरु शिष्य व मित्र बन्धु भी थे। दोनो को आर्यसमाज के झण्डे तले जेल जाने का सौभाग्य प्राप्त था। सिद्धान्ती जी तो हैदराबाद सत्याग्रह मे भी जेल गए थे।

श्री प० त्रिलोकचन्द जी शास्त्री उर्दू, हिन्दी दोनो के सिद्ध हस्त लेखक थे। सस्कृत, उर्दू व हिन्दी के कवि थे। आर्य मान, व आर्य जगत् के सम्पादक रहे। और भी आर्य पत्रो मे लिखा करते थे। धर्म रक्षा के लिए हैदराबाद की जेल मे तो उन्हे जाने ही न दिया गया परन्तु हिन्दी सत्याग्रह में पूरे परिवार के साथ जेल गए थे।

स्वामी विद्यानन्द सरस्वती (प्रि० लक्ष्मीचन्द जी दीक्षित) आर्य पत्रो मे लिखते ही रहे हैं। आर्यसमाज के झण्डे तले एक से अधिक बार जेल गये हैं।

स्व० श्री प० मेहरचन्द जी सम्पादक आर्य वीर उर्दू हिन्दी के लोग अब भूलते जा रहे है। आप हिन्दी सत्याग्रह मे आर्यसमाजी सम्पादको में सबसे पहले जेल गये थे।

श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज आर्यसमाज के सभी हिन्दी पत्रो के लिए लिखते रहे। जेल जाने मे कभी पीछे नही हटे। हैदराबाद सत्याग्रह, हिन्दी सत्याग्रह व गऊ रक्षा सत्याग्रह सब मे कारागार गये।

स्वामी अभेदानन्द जी महाराज सार्वदेशिक के प्रधान रहे। बहुत प्रभाव-शाली वक्ता व लेखक थे। सर्वाधिकारी के रूप मे हैदराबाद सत्याग्रह मे गये थे।

महात्मा आर्य भिक्षुजी ज्वालापुर वाले आर्य गजट के आप सम्पादक रहे है। आप भी हिन्दी रक्षा के लिए कारागार मे गए थे। (शेष पृष्ठ १० पर)

आर्यसमाज के पत्रकार

(पृष्ठ ९ का शेष)

श्री प० शान्तिप्रकाश जी शास्त्रार्थ महारथी आर्य समाज के अनेक पत्रो मे लिखते चले आए हैं। आप १९३७ ई० के लगभग एक व्याख्यान देने पर जेल मे धर दिए गए। पाव मे भी बेडिया डाली गयी। हाईकोर्ट ने इन्हे निर्दोष घोषित कर जेल से मुक्त करने का आदेश दिया। आप पजाब सभा के मुख पत्र आर्योदय के सम्पादक रहे।

श्री प० शिवकुमार जी शास्त्री ने लेखनी व वाणी से आर्य समाज की सेवा की। आपको भी आर्यसमाज के झण्डे तले जेल जाने का गौरव प्राप्त हुआ।

श्री स्वामी दीक्षानन्द जी पत्रो मे कम ही लिखते हैं परन्तु अपने वैश्वानर के सम्पादक हैं। हिन्दी सत्याग्रह व गऊ रक्षा सत्याग्रह मे जेल गए थ।

आचार्य सत्यप्रिय जी हिसार व आचार्य भद्रसेन जी साधु आश्रम होश्यारपुर दोनो सहपाठी हैं। दोनो हिन्दी सत्याग्रह में जेल गए। आचार्य सत्यप्रिय जी गऊ रक्षा के लिए भी जेल गये।

आचार्य भगवान् देव जी [स्वामी ओमानन्द जी] हैदराबाद सत्याग्रह मे जेल गए। गऊ रक्षा के लिए भी जेल गए। हिन्दी सत्याग्रह मे पकड में न आए। बाद मे पकडे गये।

आचार्य नरेन्द्र भूषण जी केरलीय सारे देश मे सबसे पहले गऊ रक्षा के लिए १९६६ मे सत्याग्रह करके त्रिवेन्द्रिय के कारागार मे गए थ।

श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब हिन्दी सत्याग्रह मे जेल गए। कई पत्रो का सम्पादन आपने किया है।

श्री क्षितीश जी वेदालकार हैदराबाद सत्याग्रह मे प्रथम जत्थे मे जेल गए थे।

पाठक प्रतीक्षा कर। हम अगले अङ्को में भी ठोस जानकारी दगे।

एक आवश्यक सूचना

आर्य समाज के महाधन, अनेक शिक्षण सस्थाओ के जनक एवं प्रबन्धक सार्वदेशिक सभा और आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के मन्त्री आर्यप्रतिनिधि सभा हरियाणा के उप-प्रधान, गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति, आर्य महाविद्यालय किरठल के आचार्य, ससद सदस्य सम्राट आर्योदय, जागृत-हरियाणा आर्य मर्यादा और सार्वदेशिक पत्रो के सम्पादक स्वर्गीय प० रघुवीर सिंह शास्त्री का जीवन चरित लिखने का दायित्व डा० सुरेन्द्र सिंह कादियाण, एम ए, पी एच डी को सौंपा गया है। शास्त्री जी के जीवन के वृत्तान्त भेज। पत्र व्यवहार का पता—

—डा० सुरेन्द्र सिंह कादियाण, एम ए पी एच डी
बाई ४५४/४५५ कैम्प न० १, नागलोई दिल्ली-४१

डा० पूर्णानन्द जी का अभिनन्दन

हिन्दी दिवस के अवसर पर आर्यसमाज बीसलपुर में नगर की साहित्यिक सस्था 'दर्पण' के द्वारा आर्य समाज के भू पू प्रधान वयोवृद्ध, पत्रकार, समाज सेवी डा० पूर्णानन्द का अभिनन्दन किया गया। अभिनन्दन मे एक गरम शाल, प्रशस्ति पत्र, १०१ रुपए एव नारियल प्रदान किया गया। तत्पश्चात डा० साहब के सम्मान मे एक कविगोष्ठी का आयोजन हुआ जो देर रात तक चलता रहा।

श्री पुष्करलाल जी आर्य का संक्षिप्त जीवन परिचय

जन्म – कार्तिक वदी ११ सवत १९७७

स्वर्गवास – आषाढ सुदी १२ सवत २०४७ तदनुसार ४-७-९०

इनका जन्म ग्राम नख्वा जिला हिसार, हरियाणा मे हुआ था। माता का नाम श्रीमती गागी देवी तथा इनके पिता का नाम श्री रामजी अग्रवाल था। ५ भाइयो व २ बहन मे ये सबसे छोटे थे। इनका जन्म पूर्ण पौराणिक परिवार मे हुआ था। इनकी शिक्षा कोई विशेष नही थी। इनका विवाह ग्राम धराड जिला भिवानी के श्री तुलसीरामजी की पुत्री श्रीमती राममवेरी आर्य से हुआ था।

विवाह के पश्चात ये कलकत्ता आ गये तथा जूट हैसियन का व्यवसाय आरम्भ किया। अपने ज्येष्ठ भाई श्री रामप्रताप जी अग्रवाल, जो कि आर्य विचारो से परिपूर्ण थे, उनकी प्रेरणा तथा लगन से इनका आर्य समाज से सम्पर्क हुआ। तभीसे ये महर्षि दयानन्द के कट्टर अनुयाई तथा पौराणिकता तथा अन्ध-विश्वास के विरोधी बन गये। आर्यसमाज हवड़ा मे इनका विशेष सहयोग रहा तथा इन्ही के प्रयत्न से आर्य हवड़ा समाज इस भव्य स्थिति मे पहुच पाया है। इसके अलावा इनके द्वारा मुख्य वेद-प्रचार के निम्न कार्य किये गये :–

(१) साहित्य-वितरण – मृत्यु पर्यन्त ये साहित्य का वितरण हर समय, हर जगह करते रहे। देश के सभी मुख्य नेताओ तथा सासदो को भी इन्होने साहित्य दिया।

(२) समाज-स्थान. – इनके प्रयास से निम्न समाजो की स्थापना हुई।

(१) महिला आर्यसमाज सिल्लीगुडी
(२) आर्यसमाज दार्जिलिंग
(३) आर्यसमाज कर्सियाग
(४) आर्यसमाज भिवानी
(५) आर्यसमाज नखवा (जन्मस्थान)
(६) आर्यसमाज तिगडाना जिला भिवानी
(७) आर्यसमाज भुवनेश्वर

इसके अलावा देश के सारे गुरुकुलो वैदिक स्नातको तथा आर्यसमाज के हर कार्य को इनका विशेष सहयोग रहा। पुरी के शकराचार्य से वाद-विवाद, बड़ा बाजार की आर्यसमाज की भूमि खाली करवाने में भी इनका विशेष सहयोग रहा।

वार्षिकोत्सव

—आर्यसमाज नेकवा का छठा वार्षिक उत्सव २४ अक्तूबर से २ नवम्बर तक हर्षोल्लास मनाया गया। २४ अक्तूबर से ऋग्वेद का पारायण यज्ञ श्री इन्द्रजीत शास्त्री व करुणाकर शास्त्री सुपुत्र श्री बालदिवाकर हंस ने सम्पन्न कराया।

१० अक्तूबर को 'रत्न सिंह' शहीद टूर्नामेन्ट डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल चालू है। उसका उद्घाटन आर० सी० जीवन प्रधानाचार्य कागड़ा मे २ नवम्बर को किया।

श्री वीरेन्द्र जी मालिक वीर प्रताप २ नवम्बर को आर्य समाज मन्दिर की आधारशिला रखी। १० अक्तूबर को डा० ओमदत्त शर्मा, श्रीमति राज बाला, आशाराम महोपदेशक व भजनोपदेशक कार्यक्रम सम्पन्न किया। —सन्तोराम आर्य

हालैण्ड देन्हाग में शुभ विवाह सम्पन्न

दिनांक २८-७-९० को आयुष्मान सुकुमार श्री विद्याधर जय-जयराम जी का शुभ विवाह संस्कार देन्हाग निवासी आयुष्मति शकुन्तला कल्लू जी के साथ आनन्द पूर्वक सम्पन्न हुआ विवाह में आगन्तुक जनों ने वर-वधू को आशीर्वाद दिया साथ ही सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से नव दम्पति को बधाई और शुभ कामनाएं दीं।

अष्टम् श्री बूडमल आर्य पुरस्कार बाल्मिकि रामायण भाष्य पर स्वामी जगदीश्वरानन्द जी सरस्वती

हिण्डोन सिटी। आर्य समाज हिण्डोन सिटी द्वारा प्रतिवर्ष साहित्य सेवा के लिए दिया जाने वाला श्री बूडमल आर्य पुरस्कार इस बार स्वामी जगदीश्वरानन्द जी सरस्वती को उनके बाल्मिकि रामायण भाष्य पर दिया गया। सम्मानस्वरूप आपको २१०१) इक्कीस सौ एक रुपये, शाल और अभिनन्दन पत्र प्रसिद्ध शोधकर्ता इतिहासज्ञ विद्वान प्राध्यापक राजेन्द्र जी जिज्ञासु द्वारा प्रदान किया गया। समारोह का सचालन डा० ओमप्रकाश वेदालकार प्राचार्य राजकीय महाविद्यालय गगापुर सिटी ने किया। विशाल जनसमूह की उपस्थिति मे स्वामी जी का नागरिक अभिनन्दन भी किया गया।

बृजकिशोर सिंह यादव राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत

मख्वा सुमेरपुर (२० सितम्बर) आर्य समाज मख्वा सुमेरपुर के उप-प्रधान कार्य निष्ठा, शिक्षण के प्रति समर्पण, उत्साह एव ईमानदारी के कारण शिक्षक दिवस के अवसर पर राष्ट्रपति महोदय द्वारा सम्मानित किए गए। वर्तमान समय मे आप ग्राम चन्द्रपुरवा के जूनियर हाई स्कूल के प्रधानाचार्य पद पर रहते हुए विद्यालय का कायाकल्प करने मे लगे है आपके सत्प्रयास से विद्यालय के वातावरण में आदर्श गुरुकुल के दर्शन होते है। प्राकृतिक मनोरमा देखते ही बनती है। श्री सिंह न्यायप्रिय साहसिक एव निष्ठावान सामाजिक कार्यकर्ता भी है।

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज बीसलपुर का ८० वार्षिकोत्सव दिनाक ९, १०, ११ नवम्बर १९९० को मनाया गया।

नामकरण-संस्कार सम्पन्न

आज दिनाक २२-१०-९० दिन रविवार को श्री विजयप्रकाश मेहता, आर्य समाज चान्दपुर (सन्तपुर) कटिहार (बिहार) के नाती एवं श्री सुनीलप्रसाद सिंह के पुत्र का नामकरण संस्कार श्री पं० ब्रह्मचारी व्यास नन्दन शास्त्री वैदिक महोपदेशक बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा पटना के आचार्यत्व मे वैदिक रीत्यानुसार सुसम्पन्न हुआ। मन्त्री

रजि० नं० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१८-११-१९९०) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस U न० ९३
R . 626/57 Licensed to post without Prepayment License No U-93 Post in D P.S O on 16-11-1990

सम्पादक के नाम पत्र

सर्वप्रथम आपको मेरा पत्र लिखने का मुख्य वृतात इस प्रकार प्रकार से है । "मैं आपका सार्वदेशिक साप्ताहिक समाचार पत्र नियमित रूप से पढता हूँ । समाज सेवा का मन मे भाव रखते हुए समाज सेवा में लीन हूँ । आपको मेरा यह पहला पत्र है । आपके साप्ताहिक में अत्यन्त महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती । आशा है आप इसी तरह समाज सेवा मे हमेशा लीन रहकर लिखते रहेंगे यही मेरी आशा है । धन्यवाद ! —सुनीलकुमार गौतम राही' चादपुर बिजनौर [उ०प्र०]

ग्रामीणक्षेत्र में वैदिक धर्म प्रचार का भव्य आयोजन

आर्य उप प्रतिनिधि सभा नैनीताल, स्थानीय आर्य समाज एव ग्रामवासियो के सहयोग से हरिजन बहुलग्रामो मालधन, करनपुर तथा गढी नेगी मे वैदिकधर्म प्रचार का दिनांक ७-९-९० से ११ ९ ९० तक भव्य आयोजन हुआ जिसमे शिरोमणि सन्यासी तथा उच्च-कोटि के उपदेशको एव भजनोपदेशकों ने भाग लिया । त्यागमूर्ति स्वामी ओमानन्द ने अपने प्रवचनों में सत्यज्ञान एव कर्तव्य को मुक्ति का मार्ग बताया ।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल हरियाणा का तेरहवां प्रान्तीय महासम्मेलन सम्पन्न

८-९ सितम्बर ९० को डी०ए०वी०सी० सै० स्कूल करनाल में सम्पन्न हुआ जिसका आयोजन श्री जगदीशचन्द्र मथोक तथा श्री गोपालसिंह आर्य तथा श्री लाजपतराय तथा श्री अमरनाथ कुमार ने किया । पहले दिन ८ सितम्बर को भारी वर्षा के बावजूद बाहर से आए आर्य वीरो तथा नगर के सैकडो गणमान्य व्यक्तियो महिलाओ तथा बच्चो ने एक विशाल शोभायात्रा निकाली जिसमें आर्यवीरो ने लाठी, भाला, तलवार तथा योगासन आदि का प्रदर्शन किया ।

रात्रि को ९ से ११॥ बजे तक आर्य वीर सम्मेलन हुआ जिसमें प्रो० उत्तमचन्द शरर प्रो० ओमकुमार प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य श्री उमेदसिंह शर्मा, स्वा० सच्चिदानन्द स्वा० रत्नदेव आदि ने भाग लिया । वक्ताओ ने क्षात्र शक्ति का महत्व बताते हुए युवाओ का शारीरिक एव चारित्रिक विकास का सन्देश दिया इस सम्मेलन की अध्यक्षता आचार्य डा० देवव्रत ने की तथा इसका आयोजन श्री अजीतकुमार आर्य (पलवल) ने किया ।

रविवार ९-९-९० को प्रात प्रो० उत्तमचन्द शरर (पानीपत) की अध्यक्षता मे वेद तथा राष्ट्र रक्षा सम्मेलन हुआ जिसमें प्रो० ओमकुमार (जींद) डा० देवव्रत आचार्य (दिल्ली) श्री वेदप्रकाश आर्य (रोहतक) श्री लाजपतराय स्वामी सच्चिदानन्द आदि ने भाग लिया । इसका सयोजन श्री कृष्णदेव शास्त्री ने किया । सम्मेलन का उद्घाटन दयालसिंह कालेज करनाल के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य ने अपने विचार से किया ।

वेदप्रचार मेला

आर्य समाज तिनेरी की ओर से बराबर वेदप्रचार मेला में २९-९० से ४-९ ९ तक वेद प्रचार कराया गया ।

—देवप्रसाद मन्त्री

शोक समाचार

दिनाक १८-१०-९० दीपावली के दिन श्रीमती सोमलता शास्त्री धर्मपत्नी स्व० श्री शिवकुमार जी शास्त्री भूतपूर्व सॉसद का हृदय-गति अवरुद्ध होने के कारण देहावसान हो गया ।

—रवीन्द्र शास्त्री

आर्य समाज निर्माण विहार ए ब्लाक निर्माण विहार (निकट डी डी ए फ्लेट्स) नई दिल्ली ११००९२ का दसवा वार्षिकोत्सव सोमवार, दिनाक १२-११-९० से रविवार १८-११-९० तक स्थान आर्य समाज मन्दिर ए-ब्लाक (निकट डी डी.ए फ्लेट्स) निर्माण विहार मे सम्पन्न होगा दिनाक १८-११-९० को सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती पधार रहे हैं ।

—रमेश राणी सहल, मन्त्राणी

—आर्य समाज रेलवे हरथला कालोनी, मुरादाबाद का वार्षिकोत्सव दिनाक २८, २९ व ३० अक्टूबर को मनाया गया, जिसमें स्वामी सत्यानन्द, सन्यासिनी सुजाता, रामलाल, प० ज्ञान प्रकाश, महावीरसिंह मुमुक्षु तथा यशपाल आर्य बन्धु ने अपने ओजस्वी व्याख्यानो तथा प्रभावशाली भजनोपदेशो द्वारा देश के लिए सकट की इस घडी मे हताश व निराश न होकर साहस पूर्वक कर्तव्य कर्म करते रहने का आह्वान किया ।

—मनोहरलाल बाबूजा मन्त्री

पातञ्जल ध्यान योग शिविर सम्पन्न

हरिद्वार आर्य नगर योगधाम मे दिनांक १० अक्टूबर से प्रारम्भ किया गया ध्यान योग शिविर दिनाक १७ अक्टूबर १९९० को सम्पन्न हुआ शिविर मे देश के विभिन्न प्रदेशो से योगाभिलाषी सम्मिलित हुए । वर्तमान मे यान्त्रिक जगत् की भागदौड से उत्पन्न अशान्ति असन्तोष, ईर्ष्या, द्वेष वृत्ति तथा लोभवृत्ति के बढ जाने से मानव जगत् पूर्ण रूप से बेचैन है इन सभी परिस्थितियो से अपने आपको बचाने के लिए पातञ्जल ध्यान योग की पद्धति का आश्रय बताया गया ।

—स्वामी योगानन्द सरस्वती पातञ्जल योगधाम आर्यनगर, ज्वालापुर (हरिद्वार)

शिविर सम्पन्न

आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर गुडगाव (रायगढ) का कार्यक्रम दिनाक ११ १०-९० से १८ १०-९० तक क्षेत्रीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया । जिसमे आर्य वीरो को उपव्यायाम शिक्षक श्री जनकराम आर्य द्वारा आसन प्राणायाम, दण्ड बैठक, लाठी, ब्रह्मचर्य पालन आदि का प्रशिक्षण दिया गया । प्रशिक्षण शिविर मे ४१ आर्य वीर प्रशिक्षण प्राप्त किये शिविर का सचालन पूर्ण रूप से प० सुखराम आर्य एव उपव्यायाम शिक्षक श्री जनकराम आर्य एव ब० श्री बयर्षन आर्य ब० श्री कर्मवीर आर्य के द्वारा (सान्निध्य) मे हुआ ।

महर्षि दयानन्द निर्वाणोत्सव कार्यक्रम

दीपावली १८ अक्टूबर १९९० ।

१८-१०-९० दिन गुरुवार को आर्य कुमार सभा गुडगाव के द्वारा ऋषि निर्वाणोत्सव कार्यक्रम बडी कुशलतापूर्वक मनाया गया जिसमें क्षेत्रीय आर्य समाज के मन्त्री श्री प्रहलाद प्रसाद आर्य वानप्रस्थी श्री उज्ज्वलानन्द जी प्रचारक धर्मसिंह आर्य, भुगाऊराम आर्य और स्थानीय आर्य समाज गुणागाव रामनाथ कपूर के पदाधिकारियो सहित सभी सदस्य शामिल थे । गुरुकुल आश्रम आमसेना से तीन ब्रह्मचारी ब० कर्म वीर आर्य, ब० गोवर्धन आर्य, ब० मोहन आर्य भी पधारे थे । और गुरुकुल आश्रम का सत्रकिया से चालीस ४० ब्रह्मचारी भी पधारे थे । प्रात ८ बजे वानप्रस्थी उज्ज्वलानन्द जी द्वारा ध्वजारोहण किया गया तत्पश्चात ९ बजे तक ब० श्री गोवर्धन आर्य एव ब० कर्म वीर आर्य एव भजनोपदेशक श्री सुखराम आर्य के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ ।

सार्वदेशिक प्रस दरियागज नई दिल्ली मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित ।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख्य पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१ दयानन्दाब्द १६६ दूरभाष : ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष २६ अंक ४५] मार्गशीर्ष शु० ८ स० २०४७ २५ नवम्बर १९९०

नेपाल में आर्यसमाज : स्वामी आनन्दबोध सरस्वती और पण्डित वन्देमातरम् रामचन्द्र राव का नेपाल दौरा

महाराजाधिराज तथा प्रधानमन्त्री से भेंट

नई दिल्ली १४ नवम्बर, सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तथा वरिष्ठ उपप्रधान पंडित वन्देमातरम् रामचन्द्रराव आज नेपाल के तीन दिवसीय दौरे से वापिस लौटे। ११ नवम्बर को रात्रि ७ बजे नेपाल के त्रिभुवन अन्तर्राष्ट्रीय विमान स्थल पर दोनों आर्य नेताओं का नेपाल आर्य समाज, विश्व हिन्दू परिषद्-महासंघ, सनातन धर्म सेवा समिति तथा विभिन्न हिन्दू संस्थाओं के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं द्वारा भव्य स्वागत किया गया। उसी दिन रात्रि ८ बजे नेपाल आर्यसमाज के समस्त पदाधिकारियों के साथ दोनों आर्य नेताओं ने आर्य समाज को मजबूत बनाने की कार्य विधि पर विचार विमर्श किया।

१२ नवम्बर को नेपाल आर्य समाज का एक प्रतिनिधि मण्डल सार्वदेशिक सभा के इन नेताओं के साथ नेपाल के प्रधानमन्त्री श्री कृष्णप्रसाद भट्टाराई से मिला। इस अवसर पर प्रधानमन्त्री ने यह विश्वास व्यक्त किया कि आर्यसमाज सरीखे शान्तिवादी और ईश्वर-भक्त संगठनों के रहते नेपाल के अस्तित्व को कोई आंच नहीं आ सकती।

१३ नवम्बर को स्वामी जी तथा पण्डित वन्देमातरम् जी ने महाराजाधिराज नेपाल नरेश पांच सरकार श्री वीरेन्द्र से उनके राजमहल में भेंट की तथा उन्हें महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत वेद भाष्य का एक सेट भी भेंट किया। महाराजाधिराज ने पण्डित वन्देमातरम् को नेपाल

(शेष पृष्ठ १२ पर)



नेपाल के प्रधानमन्त्री श्री भट्टाराई के साथ लम्बी बात-चीत करते हुए स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तथा श्री पण्डित रामचन्द्रराव वन्देमातरम्

सुखी समाज

ईश्वर ही सबका रक्षक है

विचिद्धि त्वा जना इमे,
नाना हवन्त ऊतये।
अस्माकं ब्रह्मेदमिन्द्र भूतु ते,
अहा विश्वा च वर्धनम्॥

ऋग्० ८-१-३, अथर्व २०-८५-३

हिन्दी अर्थ—आवश्यकतानुसार ये सभी लोग अपनी रक्षा के लिए नाना प्रकार से तुझे पुकारते हैं। हे इन्द्र! हमारी यह प्रार्थना (स्तुति) सदा तुम्हारी वृद्धि के लिए हो।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में नेपाल से सैकड़ों कार्यकर्त्ता आयेंगे

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान पण्डित रामचन्द्रराव वन्देमातरम् ने नेपाल से लौटने पर सूचना दी है कि अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर नेपाल आर्यसमाज से सैकड़ों नवयुवक तथा कर्मठ कार्यकर्ता दिल्ली आयेंगे।

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सार्वदेशिक साप्ताहिक के आजीवन सदस्य १ जून से ३१ अक्टूबर १९९० तक

१२२१७ श्री बी एस. रावत ४३८ फर्श बाजार शाहदरा दिल्ली
१५६२५ ,, ब्र० सत्यप्रिय जी ४/४२ राजेन्द्र नगर सै० ५ साहिबाबाद गाजि०
१५६३६ ,, मन्त्री जी आर्य समाज शुगर मिल सतोली जिला मेरठ (उ०प्र०)
१५६४० ,, मनोहरलाल के आर्य रूपाणी ट्रेडर्स स्टेशनगज नरसिंहपुर
१५६६९ ,, मन्त्री जी, आर्य समाज मोठ
१५६७४ ,, मतीसुलोचनादेवी,C/o हेमन्तकुमार ए/१२९ लोहियानगर गाजि०
१५६७५ ,, शामराव झोलवा जी, गौर वेई गोदावरी निवास शास्त्री नगर सोसायटी यवतमाल
१५६७० ,, श्रीकृष्ण जी, ३५ न्यू आर्य नगर गाजियाबाद (उ०प्र०)
१५६७१ ,, रामकिशन S/o तिखाराम जी ग्राम भवी पो० पतला जिला मेरठ
१५६७२ ,, रामचन्द जी, ग्राम भवी पी० पतला जि० मेरठ
१५६७४ ,, भीमसिंह जी मो० भूड गाजियाबाद (उ० प्र०)
१५६७६ ,, हरप्रसाद शास्त्री आर्य समाज सदर बाजार झासी
१२०८१ , मन्त्री जी आर्यसमाज दयानन्द मार्ग, रेलवेरोड शकूरबस्ती दिल्ली
१५६७८ ,, हीरालाल S/o श्री हीरामसिंह जी ११२ लोहिया नगर गाजि०
१५७२० ,, पार्थ सारथी, १-१-२२ कमसरी बाजार बोबिन पाल्ले सिकन्द्राबाद
१५७११ ,, शिवरामपिराजी आर्य,धन तुल्य हनुमानमन्दिर रामनगर आसना
१५७१२ ,, इन्द्रजीत त्यागी ६७/१ लाल क्वाटर गाजियाबाद (उ० प्र०)
१५७१३ ,, शिवराज त्यागी, १६६ नया आर्य नगर मेरठ रोड गाजियाबाद
१५७२४ ,, मन्त्री जी, आर्य समाज जगपुरी भोगल, नई दिल्ली
४०१ ,, सोहनलाल शारदा, शारदा किराना भण्डार शाहपुरा भीलवाड़ा
१५७३३ ,, रामवती जी, C/o श्री रघुवर जी, ४१० शिब्बनपुरा गाजियाबाद
१५७३६ ,, जयदेव जी, C/o श्री फगुनीरामजी, ग्राम डडीसरा कराहटी मथुरा
१५७४२ ,, मती रामवती देवी, ग्राम कमालपुर दनकौर बुलन्दशहर
५२६७A ,, कु० सुवंचा मित्तल C/o हर्षवर्धन, १६६,गाजियाबाद (उ०प्र०)
१५७४९ ,, मती किरनदेई C/o श्री करणसिंह २७७ शिब्बनपुरा गाजियाबाद
१५७५१ ,, डा० कुलभूषण गुप्ता म न ६७१ब्लाक १० देवनगर करौलबाग
१५८५१ ,, गजेन्द्रसिंह कच्छवाह C/o नवयुवक सघ नागौरीबोरा मडोर जयपुर
१५७५६ ,, छिद्दालाल जी, ११७ नया आर्य नगर मेरठ रोड गाजियाबाद
१५७१८ ,, गोपालसिंह जी, ५८ आर्य नगर गाजियाबाद (उ० प्र०)
६५८ ,, ओमप्रकाश तलवार, विजय तलवार ३/४५पजाबीबाग नई दिल्ली
१५७६१ ,, महेशचन्द्र पालीवाल सी-५१ देवकी स्पार्टमेन्टस खानपुर दिल्ली
१५७६३ ,, माणिकबेन परमाभाई परमार नटवरलाल वकीलकी,चाल अहमदाबाद
१५७६४ श्री घनश्याम दास जी, कमेठी बाजार शाहबाद मरकन्डा कुरुक्षेत्र
१५७६५ ,, ओमवीर सिंह जी, १२१ नया आर्यनगर गाजियाबाद (उ प्र)
१५७८८ श्रीमती किरनदेवी W/oराधेश्याम अग्रवाल २३४०धर्मपुरा दिल्ली७
१५७८९ ,, सरला नारायण W/o डा० प्रताप नारायण २/२११, राजनगर गाजियाबाद
१५७९३ ,, रानी सेन वर्मा W/o श्री आर, सेन वर्मा, १०८ नवयुग मार्केट गाजियाबाद
१५७९४ श्री प्रेमचन्द जी, भारतीय प्रेस गुदड़ी बाजार मेरठ (उ० प्र०)
१५७९६ , यशपाल जी शास्त्री, ३५२ शिब्बनपुरा, पटेल मार्ग गाजियाबाद
१५७९७ ,, स्वर्णकुमार जी, जे-३७ पटेलनगर गाजियाबाद (उ प्र.)
१५७९८ श्रीमती कुन्तश शर्मा, १६५ नया आर्यनगर पटेल मार्ग गा० (उ प्र,
१५७९९ कु०ज्योत्सना गौतम न०-३ ब्लाक एल, सब्जी मण्डी अष्टाघर, दिल्ली
१५८२२ मन्त्री जी आर्यसमाज कमाठीपुरा, आठवी गली चौक बम्बई
१५८२३ श्री जगदीश प्रसाद जी, म न ८१, मौ० कैला बालान गली दिल्ली गेट, गाजियाबाद
१५९१९ ,, मन्त्री जी आर्य समाज कोटा सहारनपुर (उ प्र)
१५८५८ ब्र० चेतनदेव जी, वैश्वानर वैदिक साधनाश्रम अलीगढ़ (उ.प्र.)
१५१११ श्री निवर्ति राव विठोबा जगताप, ग्रा. पो आनापुर, ता० बसव कल्याण, बीदर कर्नाटक
१५-२५ ,, भटीग राव प्रेम जी, जगताप, ग्रा पो आनापुर, ता० बसव कल्याण बीदर (कर्नाटक)
१५८२६ ,, मुकेश जी, १५० बी लोहियानगर गाजियाबाद (उ. प्र.)
१५८१४ , ओमदत्त जी शर्मा, कुर्द गाजियाबाद, उ० प्र०
१५७५३ ,, आनन्द रक बन्धु १२१ वार्ड न०१ निकट गुडमण्डी पानीपत हरि.
१५८४४ ,, सभा राजेश्वर पुत्र राजुला ११-३-१५ वारगल (आ प्र)
१५०२७ ,, अमपटी नरसिंहमा गोलीपुरा अम्बरूप हैदराबाद (आ. प्र)
१५८४५ ,, दौलतराम अरिन्दमा, ७/१६४ फर्श बाजार जवाहरगली शाहदरा दिल्ली
१५८५४ ,, मती भगवती देवी W/o स्व शिवशंकर साव मीना बाजार गली, पटना
१५८५५ श्रीमती माया देवी, द्वारा शिवचन्द प्रसाद, फ्री प्रेस लेन राजेन्द्र पथ पटना (बिहार)
१५८५६ श्री धनराज शाह, ग्राम सकनपुरा बेली रोड मिटनरी कालेज पटना (बिहार)
१५८६५ श्रीमती विद्यावती जी, ३७ नई बस्ती गाजियाबाद (उ प्र)
१५८७५ श्री पाशिकटि रामुलु म०न० १६-५-२२० रेलवे गेट वारगल
१५८७६ ,, पाशिकट्टि लक्षमय्या जी, म०न० १६-४-८८ अडर ब्रिज वारगल (आ प्र.)
१५८७७ ,, पी० सम्मैय्या जी, म०न० १०-११-४ गिरमा जी पेठ वारगल (आ० प्र०)
१५८७८ ,, बलापा दासु लक्ष्मी नारायण वेंकटेश्वर क्लाना स्टोर वर्णाका जी पैठ वारगल
१०४१६ ,, रामपरिहार श्री राममवन, कदोई बाजार घास मण्डी जोधपुर (राज०)
१५९२० सचिव स्व० आर० एन० पार्वा मैमोरियल लाइब्रेरी २०१ एल बारामुन्डा हाउसिंग बोर्ड कालोनी भुवनेश्वर उडीसा
१४०९९ श्री शिवराम आर्य, म०न० २७१ ग्रा०पो० पूठकला दिल्ली
१२५२१ ,, मन्त्री आर्य समाज कृष्णनगर दिल्ली
९०६३ ,, रामफेर त्रिपाठी ग्राम महादेव पो० परसवा गोण्डा
१५९११ श्री गणेश दास जी बी-५ लक्ष्मण पार्क दिल्ली-५१
१५९१२ श्री करुणेश रावत द्वारा डा० बी, एन रावत, भिवानी स्टैन्ड रोहतक (हरि०)
१५९२१ लाहोटी टैक्नोप्लास्ट प्रा०लि०,६३/1 पार्वतीभवन विलेपार्ले बम्बई
१३४४७ श्री मन्त्री जी आर्यसमाज जगपुरा विस्तार लिंक रोड, नई दिल्ली

सम्पादकीय—

सफलता का रहस्य अनुशासन

महाकवि जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित कामायनी मे 'मनु" कहते हैं।

सिर नीचा कर किसकी सत्ता, सब करते स्वीकार यहा।
मौन भाव से प्रवचन करते, जिसका वह अस्तित्व कहा॥

यह पंक्तियां अनुशासन की महत्ता को परिलक्षित करती हैं-जिसका अर्थ है कि अनुशासन मे ही अस्तित्व निहित है।

मानव जीवन का सर्वाधिक महत्व पूर्ण काल वह होता है जब विद्या-उपार्जन हेतु गुरु चरणो में आता है और विद्यार्थी बनता है। इसी समय की सफलता पर उसके भावी जीवन की सफलता निर्भर करती है। जिसका विद्यार्थी जीवन सुन्दर तथा उचित ढग से व्यतीत होता है। उसका शेष जीवन स्वत सफल बनता चला जाता है। विद्यार्थी जीवन को सुयोग्य बनाने मे अनुशासन का महत्व पूर्ण स्थान है। यही कारण है कि प्राचीन काल मे मे भी हमारे यहा उपनयन सस्कार को सभी सस्कारो मे अति महत्वपूर्ण माना गया है। उपनयन सस्कारो का मूल भारतीय वैदिक वाङ्मय से परिपूर्ण है।

प्राचीन पारसी शास्त्रो की मान्यता के अनुसार मेखला एव यज्ञोपवीत का सम्बन्ध पारसियो से भी है।

स्मृतियो मे उपनयन सस्कार के सन्दर्भ मे शिष्यो के जिन गुणो का वर्णन किया गया है। वे वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे भी समान रूप से महत्वपूर्ण तथा विधि सम्मत है।

(१) निरुक्त द्वारा उद्धृत विद्या सूक्त मे आया है कि जो शिष्य विद्या को घृणा की दृष्टि से देखे, कुटिल एव असयमी हो, ऐसे शिष्य को विद्या ज्ञान नही देना चाहिए।

किन्तु जो पवित्र ध्यान मग्न बुद्धिमान, ब्रह्मचारी गुरु के प्रति सत्य हो तथा जो अपनी विद्या की रक्षा धन कोषो की भांति करे, उसे शिक्षा देनी चाहिए।

(२) याज्ञवल्क्य ने विद्यार्थी के उपर्युक्त गुणों के साथ कुछ और गुण भी जोड़ हैं जैसे कृतज्ञ गुरु से घृणा न करने वाला स्वस्थ तथा व्यर्थ का छिद्रान्वेषण न करने वाला।

(३) आपस्तम्ब धर्म सूत्र के अनुसार विद्यार्थी को सदा अपने गुरु पर आश्रित एव उनके नियन्त्रण मे रहना चाहिए। उसे गुरु को छोड़ किसी अन्य पास नही रहना चाहिए।

गौतम का कहना है कि —

विद्यार्थी को असत्य भाषण नही करना चाहिए, प्रतिदिन स्नान करे और सूर्य की ओर नही देखना चाहिए। तथा ब्रह्मचारी को नैत्यिक जीवन मे मास मदिरा, दिन शयन, अजन, छाता, प्रेम व्यवहार, क्रोध, लालच मोह व्यर्थ विवाद, जुआ, पशु हनन, अश्लील बातचीत स सदा दूर रहना चाहिए।

उपरोक्त सभी नियमो की पृष्ठभूमि में यही बात निहित है कि जीवन का वास्तविक निर्माण विद्यार्थी जीवन मे ही होता है। यह ऐसी अवस्था होती है जब मन में सस्कार ग्रहण करने की क्षमता अधिक होती है। साथ ही साथ भावुकता भी अधिक रहती है।

अत. विवेक शक्ति स्वरूप कार्य करती है। इससे अनुशासन के कारण मानना पड़ता है कि जिनका उनके मन के अनुसार को कोई ठोस लाभ नहीं दीखता। परन्तु भविष्य का परिणाम तो लाभकारी होता है।

परीक्षाओं मे सफलता प्राप्त करना अनुशासन के कारण सरल हो जाता है। अनुशासित विद्यार्थी अपने मन को अध्ययन मे लगाने के अभ्यास हो जाते हैं। जिससे उनका अध्ययन ठोस और अच्छा होता है तथा परीक्षा में अच्छी सफलता मिलती है।

अनुशासन करने से जीवन मे व्यवस्था का वातावरण बनता है जो लोग अनुशासन नही मानते, उन्हे अपने मन की चचलता को दबाने मे सफलता नही मिल पाती तथा उसी कारण वे अपने अध्ययन को सुचारु रूप से पूर्ण नही कर पाते। अनुशासन से दैनिक जीवन मे व्यवस्था आ जाती है। इसके द्वारा अनेक गुणा का विकास होता है। नियमित रूप से कार्य करने की क्षमता का विकास होता है तथा कर्तव्य और अधिकार का समुचित ज्ञान हो जाता है। यह एक ऐसा गुण है जिससे मनुष्य सर्वप्रिय बन जाता है।

अनुशासित विद्यार्थी के लिए सबकी सद्भावनाये स्वभावतया बनी रहती हैं। परिवार मे अनुशासन मानने की एक परम्परा बन जाती है। जिससे व्यक्ति गृह कलह से बच जाता है।

वर्तमान युग मे प्रजातन्त्र की स्थापना हुई और स्कूलो कालिजो और विश्व विद्यालयो मे यूनियनो का सगठन बना। अध्यापको में भी कुछ ऐसे लोग है जो अनेक प्रकार से अनुशासन के कार्य में बाधक बन जाते हैं। मज-दूरो और मालिको जैसा सम्बन्ध छात्रो और अधिकारियो मे माना जाता

(शेष पृष्ठ ४ पर)

इतिहास की पुस्तक के अनर्गल अंश

सभा-प्रधान जी का हिमाचल प्रदेश के मुख्यमन्त्री को पत्र

माननीय श्री शान्ताकुमार जी,
मुख्य-मन्त्री
हिमाचल प्रदेश सरकार

सादर नमस्ते !

विषय—हिमाचल प्रदेश के स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा छठवीं कक्षा में पढ़ाई जा रही "प्राचीन भारत" नामक पुस्तक के पृष्ठ सं० ४७ व ४९ के आपत्ति जनक स्थल

माननीय मन्त्री जी,

हिमाचल प्रदेश के स्कूलो के कक्षा ६ में पढ़ाई जा रही इतिहास की पुस्तक "प्राचीन भारत' में (वैदिक युग का जीवन) नामक अध्याय मे गोमास तथा नशीले पदार्थों के उपयोग करने का वर्णन किया गया है।

उदाहरण स्वरूप —

[पृष्ठ ४७ पर] वास्तव मे विशिष्ठ अतिथियो के लिए गोमास का परोसा जाना सम्मान सूचक माना जाता था।

[पृष्ठ ४९ पर] मास भी खूब खाया जाता था, मधु नशीली तथा सुरा जैसे पेय भी पीते थे। एक और अति विशिष्ट पेय भी था जिसे सोम कहा जाता था।

आप जानते हैं कि विदेशी और विधर्मी लोगो ने हमारी गुलामी की कड़ियो को मजबूत करने के लिए इस प्रकार के विभत्स वर्णन लिखकर आर्य हिन्दू जाति के धार्मिक विश्वासो पर कुठाराघात किया है और हमारे इतिहास को बिगाड़ा है। जिससे हमारी युवा पीढ़ी और विद्यार्थी गण अपने धर्म का इस प्रकार का दूषित स्वरूप देखकर उस पर गर्व न कर सकें।

हमारा सौभाग्य है कि इस समय आप जैसे राष्ट्रवादी और देशभक्त हिमाचल प्रदेश के मुख्यमन्त्री पद पर विराजमान हैं। कृपया आप शिक्षा मन्त्रालय को आदेश देकर उपरोक्त पुस्तक के पृष्ठ सख्या ४७ और ४९ पर दिये गये आपत्ति जनक स्थानो पर चेपी लगवा दे और भविष्य मे इस प्रकार के आपत्ति जनक इति-हास को प्रकाशित न करने का आदेश दें।

आशा है आप अपने शिक्षा मन्त्रालय को उचित आदेश देकर अनुगृहीत करेंगे।

उत्तराकाशी

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
सभा प्रधान

जात-पात-तोड़क मंडल बनाओ

—डा. सत्यव्रत सिद्धांतालंकार

ऋषि दयानन्द को क्रान्तदर्शी कहा जा सकता है। क्रान्तदर्शी वह होता है जो दूर होने की घटना को, जिसे हम नहीं देख सकते, देख लेता है। जब ऋषि दयानन्द ने भारत मे चल रही सामाजिक व्यवस्था को देखा तब उन्होने देख लिया कि यह व्यवस्था समाज को किधर ले आएगी। ऋषि ने देख लिया था कि यहा का समाज सामाजिक रूप मे दो भागो मे बटा हुआ है। इन दो भागो मे से एक भाग अपने को 'आर्य' कहता है, दूसरा अपने को 'अनार्य' कहता है। दक्षिण भारत मे जो अपने को 'अय्यर' कहते हैं वे 'आर्य' शब्द का ही अपभ्रंश है। जो नायर' कहते हैं वे 'न आर्य'—'अनार्य' 'नायर शब्द है जो अनार्य शब्द का अपभ्रंश होकर बना है। जब अंग्रेज इस देश मे आये तब उन्होने इन शब्दो का यहा के लोगो को आपस मे लडाने का भरपूर उपयोग किया जिस कारण उत्तर भारत तथा दक्षिण भारत एक न हो सके। जैसे उत्तर तथा दक्षिण मे विरोध को आधार बनाकर अंग्रेजो ने हिन्दी तथा अंग्रेजी के विरोध को प्रश्रय ही नही बढ़ावा भी दिया, वैसे ही हिन्दुओ तथा मुसलमानो के आपसी विरोध को प्रश्रय तथा बढावा देते रहे। देश को दो भागो मे बाटकर और उन्हे एक दूसरे से लडाकर ही अंग्रेजो की नींव भारत मे जम सकी। जब तक देश के लोग आपस मे लडेंगे नही तब तक इन दोनो को आपस मे मिलाने का बहाना बनाकर ही तीसरी शक्ति की सार्थकता हो सकती है?

अंग्रेज चले गये परन्तु देश वासियो के हाथ मे एक ऐसा मन्त्र दे गये जिसके जाप से यहा के लोग चैन से न बैठ सके, आपस मे लडते रहें। यह मन्त्र था—'रिजर्वेशन' का। यहा केवल हिन्दू, मुसलमान, पारसी, ईसाई ही नहीं रहते, सब प्रकार के लोग रहते हैं। अधिकार देना हो तो सिर्फ गांधी, जवाहर को ही अधिकार नही देना, हिन्दुओ को, मुसलमानो को, ईसाइयो को अधिकार देना है। बिल्कुल समझदारी की बात है। वे लोग तो जाते हुए ऐसा जाल बिछा गये जिससे हिन्दू तथा मुसलमान सदियो तक लडते रहे। उनकी राजनैतिक आशायें पूरी हो रही है, और जो लोग सदियो तक भाई-भाई की तरह रहे, वे एक दूसरे के खून के प्यासे हो गये। हिन्दू मुसलमान की बात छोडिये, सिर्फ हिन्दुओ को ही लीजिये। अंग्रेजो को क्यो कोसे, उनका काम ही सबको आपस मे भिडाकर राज करना था। जो उन्होने करना था वह वे कर गये।

अब लीजिए—हिन्दूओ की बात। हिन्दुओ मे भी अनेक वर्ग हैं, परन्तु उनमे मुख्य दो वर्ग है—उच्च वर्ण के, निम्न वर्ग के। ऋषि दयानन्द को मैं क्रान्तदर्शी इसलिए कहता हू क्योंकि वे देख रहे थे कि यह घुन अगर लगा रहा तो देश को खा जाएगा। इसलिए उन्होने वेदो के आधार पर वर्ण-व्यवस्था का नारा बुलन्द किया था। वर्ण व्यवस्था का आधारभूत तत्व क्या है? वर्ण व्यवस्था का आधारभूत तत्व यह है कि समाज मे न कोई ऊचा है न कोई नीचा है—जन्म से सब एक समान हैं। मनुष्य का स्वभाव है कि वह अधिकार लिप्सा को छोडना नही चाहता। क्षेत्र कोई भी सकता है। राजनीति का क्षेत्र हो धर्म का क्षेत्र हो, कही भी हो—अगर वहा किसी तरह का भी विशेष अधिकार मिलता हो तो उसके लिए वह लड मरता है। ऋषि दयानन्द ने जब देखा कि देश मे वर्ण भेद जन्म के आधार पर टिक गया है, तब उन्होने इसके विरुद्ध नारा बुलन्द किया। आज के राजनीतिज्ञ जब अधिकारो के लिए लड रहे है तब वे देख रहे थे कि समय आएगा जब वर्ण व्यवस्था का स्थान मानव को अधिकार लिप्सा के कारण जात-पात का रूप ले लेगी और देशवासी जन्मगत अधिकारा के लिए आपस मे लड मरेंगे। ऋषि दयानन्द की वर्ण व्यवस्था अपने ढग की निराली सामाजिक व्यवस्था थी। उसमे जन्म को वह स्थान नही था जो मानव की योग्यता को स्थान था। उन्होने तो यहा तक कहा कि अगर योग्यता के आधार पर कोई ब्राह्मण है और उसकी सन्तान शूद्र-वृत्ति की है, तो शूद्र वृत्ति के बालक को ब्राह्मण के सुपरिवार दो, और शूद्र व्यक्ति के, ब्राह्मण वृत्ति के बालक को, ब्राह्मण के सुपुर्द कर दो। सामाजिक पुर्ननिर्माण का यह स्वप्न या प्लेटो ने लिया था, या दयानन्द ने लिया था।

आज देश मे उबाल आ रहा है। उबाल आयेगा, उच्च-वर्ग तथा निम्न वर्ग के लोग आपस में अधिकार लिप्सा के लिए लड मरेंगे, जुलूस निकालेंगे, रैलिया करेंगे रिजर्वेशन होगा, एन्टी-रिजर्वेशन होगा, यह दयानन्द आज से सौ वर्ष पहले देख रहा था। इसीलिए दयानन्द का नारा था—न कोई जन्म का ब्राह्मण है, न कोई जन्म का शूद्र है—सब एक समान है। यह बात न तो गाधी को सूझी, न जवाहर लाल को सूझी, न वी० पी० को सूझी। परिणाम यह है कि जात-पात को पक्का करने के लिए एक वर्ग पिस रहा है, दूसरा वर्ग उसी जात पात को पक्का करने के लिए कटिबद्ध है। यह लडाई चलेगी और तब तक चलेगी जब तक जन्मगत जात-पात नही उखड जायेगी। समय था जब आर्य समाजी अपने नाम के साथ सिर्फ आर्य' शब्द का प्रयोग करते थे और आज आर्य समाज के दो दीवाने मुझे याद आते हैं—सन्तराम बी ए तथा भूमानन्द जिन्होने एक मडल की रचना की थी जिसका नाम था—"जात-पात तोडक मडल" आज भी, रिजर्वेशन या एन्टी रिजर्वेशन के स्थान मे जगह-जगह 'जात-पात-तोडक' मडलो के स्थापन करने का दिन फिर से आ गया है जो देश वासिया के लिए ऋषि दयानन्द का चैलेंज है। क्या इस चैलेंज को स्वीकार करने के लिए तैयार हो।

सफलता का रहस्य

(पृष्ठ ३ का शेष)

है। अत अनुशासन के लिए स्थान ही नही रह जाता है। छात्रो की अनुशासन हीनता इतनी बढ जाती है कि वे अपना तथा संस्था का अहित ही करते हैं। धीरे-धीरे कतिपय छात्रो मे भी नेतागिरी की लालसा प्रबल हो जाती है। और वे अनुशासन हीनता बढाते है। छात्रो को अनुशासन का ज्ञान रखना आवश्यक है। पर राजनीति को दाव पेच का मोहरा बनाकर अपने मूल कर्तव्य को भूल जाना हानिकर होता है। ऐसी स्थिति अनुशासन हीनता में ही उत्पन्न होती है।

पाश्चात्य सभ्यता का विकास और प्रयास अनुशासन को बिगाडने मे सहायक हो रहा है।

स्वतन्त्रता, समानता और बन्धुत्व की भावना अच्छी होते हुए भी विद्यार्थियो के लिये घातक सिद्ध हो रही है। क्योकि आज विद्यार्थी मानता है कि छात्र और अध्यापक का सम्बन्ध सामान्यतया कुछ समता जैसा है। अत उस पर गुरुओ जैसा प्रभाव नही पड पाता है। इन सिद्धातो के कारण भी अनुशासन मे बाधा पडती है। पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली जिस रूप मे आज चलाई जा रही है उसमे छात्रो को पर्याप्त खाली समय मिलता है जब वे स्वच्छन्द हो जाते हैं अनुशासन मे एक बाधा यह भी है।

अत भावी जीवन को आनन्दमय बनाने के लिये विद्यार्थी को आवश्यक है कि वे अनुशासन मे रहें। अनुशासन सफलता का घनिष्ठ सम्बन्ध है। अनुशासन मे ही सफलता है।

आर्य समाज आरक्षण नहीं संरक्षण का हिमायती (२)

—शशिकान्त आर्य

भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास को देखिये। मंगल पांडे का १८५७ का सशस्त्र संघर्ष क्यो असफल रहा ? उसका मूल कारण बुद्धिजीवी नेतृत्व का समर्थन नहीं था। यदि हिंसा ही आधार साम्य हो तो नेताजी सुभाषचन्द्र बोस अधिक सफल रहे यदि हिटलर की हार और जापान पर अणुबम आक्रमण न होता तो परिणाम दूसरे होते। इसका कारण नेताजी सुभाषचन्द्र बोस स्वयं बुद्धिजीवी रहे। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी भारत के स्वतन्त्रता संग्राम का सफल नेतृत्व केवल इसीलिये कर सके क्योकि वे बुद्धिजीवी ब्राह्मण थे। कांग्रेस के अग्रिम नेता नेतृत्व बुद्धिवादी था। उसे बुद्धिजीवी वर्ग का सहयोग समर्थन मार्गदर्शन मिला। अम्बेडकर जैसे लोग भी वस्तुत ब्राह्मण अर्थात् बुद्धिजीवी रहे। परन्तु आज हमारे समाज मे हम पत्रकार, शिक्षक, वैज्ञानिक, न्यायविद्, साहित्यकार आदि बुद्धिजीवी ब्राह्मणो को समुचित प्रतिष्ठा नहीं देते बल्कि उन्हे बाध्य करते हैं कि वे उद्योगपतियो श्रमिक, कृषक, व्यापारी नेताओ के पिछलग्गू बने। इसके बावजूद यह सत्य है कि हाल ही में २० वर्षों के इतिहास मे देश मे जो भी परिवर्तन हुए राजनीति मे भी उसमे बुद्धिजीवी वर्ग ने हमेशा अग्रणी और निर्णायक भूमिका निभायी। फिर भी हम क्यो इस सच और तथ्य को नकारना चाहते हैं। क्यो बुद्धिजीवी के ऊपर पिछडो को लादना चाहते हैं ? क्यो ऐसे समाज मे विकास सम्भव है ?

आरक्षण नीति और आर्य समाज :-

हाल ही मे राजनीति कुचक्र षडयन्त्र मे निहित स्वार्थ के कारण पिछडी जातियो को जन्म के आधार पर सरकारी नौकरियो मे आरक्षण देने की घोषणा ने राष्ट्र मे विस्फोटक स्थिति बना दी है। उसी सदर्भ में बुद्धिजीवी आशंकित, कुण्ठित हो उठे हैं। पहले से ही राष्ट्र प्रतिभा पलायन से चिन्तित है, यह कदम उस प्रवृत्ति को तीव्र करेगा और खामियाजा देश को भुगतना पडेगा।

अत आर्य समाज को इस आरक्षण नीति का पुरजोर विरोध कर राष्ट्र के प्रहरी के कर्त्तव्य को निभाना चाहिये। यदि सरकारी नौकरी पुरस्कार है तो वह योग्य को मिलनी चाहिये योग्यता के आधार पर न कि खैरात मे जन्मगत जाति के कारण।

आर्य समाज मे छोटा समूह आरक्षण का समर्थन इस आधार पर करता है कि जातीय व्यवस्था समय का सत्य है। जातीय भेदभाव तथ्य है और शिक्षा मे समान अवसर, एकरूपता, सुविधा नही है। हम उस समूह को सही ठहराता है।

आरक्षण के समर्थन में दिये जाने वाले ये तर्क खोखले, सतही और भ्रामक है। यह जातीय व्यवस्था और भेदभाव यदि वर्तमान का सच है ता क्या उसे सही मान र मजबूत किया जाना चाहिये या उसके निर्मूलन के प्रयास होने चाहिये। यदि प्रचलित प्रथा को आधार मानकर समर्थन किया जाये तो बाल विवाह, सती, मूर्ति पूजा पाखण्ड, साम्प्रदायिकता छुआछूत सभी को स्वीकार कर सारे निर्णय लेने चाहिय। तब धर्म के आधार पर पाकिस्तान का निर्माण, खालिस्तान का विरोध क्षेत्रीय भाषायी प्रान्तीय संघर्षों का विरोध आर्य समाज किस आधार पर कर सकता है ? फिर कल को जातीय सूबे बने राजपूताना, मराठा, जाटवाणा तो आर्यसमाज भी क्या दो चार ग्राम को लेकर आर्य राष्ट्र या आर्यावर्त्त बनायेगा या फिर जाटो-मराठो की तरह आर्य समाजियो को भी पिछडी जाति मे शामिल कर आरक्षण लाभ देने की माग करेगा ? अत आर्य समाज कभी यथास्थिति के कारण किसी नीति का समर्थन विरोध नही करता। बल्कि अपने उद्देश्य ससार के उपकार अर्थात् शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति के सन्दर्भ में नीति निर्धारण करता है फिर भले ही तात्कालिक अस्थायी हानि अलोकप्रियता, विरोध सहना पडे। आर्य समाज का इतिहास इस तरह के संघर्ष का ही इतिहास रहा है।

अत जन्मगत जातीय आधार पर आरक्षण का समर्थन अवसरवादी राजनीति प्रेरित है या स्वार्थवश। उसका कोई सैद्धान्तिक आधार नही है। आर्य समाज के अनथक प्रयासो से समाज में जन्मगत जातीय व्यवस्था का २०-३० प्रतिशत कम हुआ या वह सरकार के इस अदूरदर्शी निर्णय से समाप्त होकर पुन समाज मे जन्मगत जाति प्रथा को नयी शक्ति से स्थापित करने मे सहायक बनेगा। लोग जो अपनी जाति नही जानते (आर्य समाजी भी) वे अपनी जाति बता कर उसे ३७०० की मण्डल सूची मे ढूंढेंगे या शामिल कराने के प्रयत्न करेंगे। उस जातीय मे अन्तर्जातीय विवाह बन्द हो जायेंगे और लोग उन्ही मे कैद हो जायेंगे। अफीम के नशे की लत की तरह आरक्षण सुविधा है जो एक बार मिलने पर कोई खोना नही चहता और वोटो की राजनीति कभी उसे समाप्त करने करने का साहस नही कर सकती। इन पिछडी जातियो का अन्य अनारक्षित अगली जातियो से संघर्ष होगा जो देश में छिट-पुट स्तर पर ही सही खुलकर पिछले दिनो आरम्भ हो गया है।

और जहा तक शिक्षा मे समान अवसर, एकरूपता, सुविधा स्तर की बात है या समान अनिवार्य शिक्षा की दुहाई और आरक्षण समर्थन का सम्बन्ध है वह हास्यास्पद इसलिये भी है कि सरकारी घोषणा स्पष्टतया केवल सरकारी नौकरियो मे आरक्षण से सम्बन्धित है और स्पष्टीकरण में साफ कहा गया है कि शिक्षा संस्थानो में सेना वैज्ञानिको के लिये यह लागू नही होगी। संसद – विधायिका न्यायालय के सम्बन्ध मे मौन है सरकार। फिर इस आरक्षण से किस प्रकार अनिवार्य समान शिक्षा एकरूपता सुविधा स्तर का लक्ष्य कैसे प्राप्त होगा या यह कैसे परस्पर सम्बन्धित है ?

वस्तुत समाज में वर्ण व्यवस्था मे शूद्र को भी आवश्यक सुविधा के अवसरो से वंचित नही रखा गया है। ब्राह्मण और तथाकथित सवर्णों को केवल कुछ विशेषाधिकार दिये गये हैं। यह विशेषाधिकार योग्यता विशेषज्ञता क्षमता क आधार और कसौटी पर है तथा अयोग्यता, अक्षमता के कारण उनमे कटौती तथा पूर्ण वंचित किया सम्मिलित है। वैदिक समाज व्यवस्था मे समाज मे सही दिशा मे स्वस्थ प्रतियोगिता को प्रोत्साहन

मिलता है। महर्षि दयानन्द ने कहीं भी जन्मगत जातीय आधार को किसी स्तर पर किसी भी रूप में कहीं भी समाज व्यवस्था में शामिल नहीं किया है। हाँ मानवीय आधार पर मानवता के लिये दीन हीन दु खियों की सहायता कर्तव्य माना है। वहा भी उनको बिना योग्यता अनुचित लाभ या आरक्षण नही अभिप्रेत है बल्कि न्यूनतम सुविधाओ की आपूर्ति ही भाव है।

संरक्षण ही सही मार्ग :—

आर्य समाज और महर्षि दयानन्द से बढ कर वर्तमान इतिहास मे कोई और पिछडों का हमदर्द और मसीहा नही है। महर्षि का पूरा जीवन और आर्य समाज का पूरा इतिहास पिछडो के कल्याण का गवाह है। लेकिन वह क्षणिक, राजनैतिक या बनावटी नहीं है और अन्यायपूर्ण नही है। न्याय का पथ कभी भी नही छोडा जा सकता। न्याय ही समाज का आधार होता है। न्याय मे भी कल्याण की भावना को हमारे शास्त्रो में आवश्यक माना गया है। हम बडी लाइन को मिटाकर छोटी करने या योग्य को अक्षम बना कर समानता लाने के घोर विरोधी हैं। आर्य समाज हमेशा छोटी को बडी लाइन बनाकर अक्षम को योग्य बनाकर असमर्थ को समर्थ बना कर सकारात्मक ढग से समानता का समर्थक रहा है।

अत आर्य समाज पिछडो को आरक्षण नहीं सरक्षण देना चाहता है। जिस प्रकार माता पिता शिक्षक अपनी सन्तानों छात्रो में कमजोर पर विशेष ध्यान देते हैं। परन्तु उन्हे अन्य योग्यो पर वरीयता नहीं देते हैं बल्कि हर सम्भव उपाय से उसे भी सक्षम योग्य बनाने का प्रयास करते हैं। उसी प्रकार आर्य समाज, समाज के पिछडो के उत्थान विकास, कल्याण के लिये उन्हे वही सरक्षण देने का हिमायती है। हम किसी से छिन कर उसे वचित कर किसी अन्य को देने के विरोधी है परन्तु वचित को उत्पादन और अवसर बढाकर उसकी क्षमता बढा कर उसे विकसित कर साथ लाना चाहते हैं। महर्षि दयानन्द और आर्य समाज न्याय के मार्ग पर चलते हुए अहिंसक परिवर्तन के अनुगामी हैं। आर्य समाज विश्व मे समानता एवम् समुदाय में एकता का समर्थक है। वह समाज और राष्ट्रों की विघटनकारी प्रवृत्ति का विरोधी है।

भारत मे गरीबी पिछडापन, असमानता, भेदभाव आदि विकट समस्याए एक वास्तविकता है। इनका हल आर्य समाज वर्तमान जाति व्यवस्था को समाप्त कर, सभी को जीवन की न्यूनतम सुविधाए प्रदान कर स्वास्थ्य, शिक्षा, न्याय के समान अवसर देकर, अनिवार्य निशुल्क समान शिक्षा, त्वरित सुलभ न्याय, जीवन मे सत्य, सहिष्णुता अहिंसा और नैतिकता जैसे चारित्रिक मूल्यो की स्थापना से करना चाहता है। जीवन पद्धति मे बदलाव समाज में वर्णाश्रम व्यवस्था और बुद्धि की श्रेष्ठता या ब्राह्मणवाद को प्रभुत्व को लाकर सभी समस्याओ का निराकरण करने का समर्थक है।

अत सरकार को तथाकथित पिछडी जातियो के विकास कल्याण और समान अवसर उनकी भागीदारिता बढाने और सामाजिक न्याय के लिये सरकारी नौकरियों में आरक्षण जैसे स्टंट बन्द करना चाहिये और उनके लिये छात्रवृत्ति, छात्रावास, विशेष शिक्षण और प्रतियोगी परीक्षाओं के लिये अतिरिक्त तैय्यारी पाठ्यक्रम के अलावा शिक्षा, चिकित्सा, न्याय, व्यवस्था के लिये बेहतर कार्यक्रम योजना बनाकर क्रियान्वित करनी चाहिये। किसी के साथ न्याय करने के नाम पर अन्याय से न्याय या योग्यता बुद्धि को नजर-अन्दाज कर स्तर के मापदण्डों को घटाना या दोहरे मापदण्ड अपनाना विनाशकारी घातक मार्ग है।

अत आर्य समाज सभी बुद्धिजीवियो को आह्वान करता है कि राष्ट्रीय सकट मे जबकि हम पजाब, कश्मीर, असम में विघटन आतकवादी समस्याओ से तथा देश मे साम्प्रदायिक सघर्ष जैसे दानवी चुनौती से जूझ रहे हैं आर्थिक क्षेत्र मे विकास और महगाई के सकटो मे घिरे हैं ऐसे मे टकराव की ओर कलुषित क्षुद्र स्वार्थी राजनीति की शिकार आरक्षण रोग से देश को मुक्त कराने आगे आकर न्यायोचित सही मार्ग के लिये सघर्ष का नेतृत्व करें। और राष्ट्र को इस मुठभेड हिंसक विषाक्त वातावरण से उबारने के लिये एकजुट होकर कार्य करे। आर्य समाज हिंसक आन्दोलन का विरोधी है और आत्मदाह तथा आत्महत्या जैसे कायरतापूर्ण कार्यों की निन्दा करता है। अहिंसक शान्तिपूर्ण गाधीवादी जन आन्दोलन से जनचेतना से और बुद्धि द्वारा विचारो से ही हर समस्या का समाधान सम्भव है। बुद्धिर्यस्य बल तस्य यह तथ्य है। श्रीकृष्ण के बुद्धि बल से ही पाण्डव संख्या शक्ति मे कम होकर भी महाभारत मे विजयी रहे। विचार और नीति से ही सब कुछ पाया जा सकता है।

वैदिक साम्यवाद

—प्रो० बुद्धि प्रकाश आर्य, आर्य विद्यापरिषद रामगंज, अजमेर

वैदिक वाङमय साम्यवादी विचारधारा का पक्षपोषक है। साम्यवादी के नाम से प्रायः आधुनिक कम्यूनिज्म का अर्थ लगाया जाता है जबकि वैदिक साम्यवाद और आधुनिक कम्यूनिज्म मे मूलभूत अन्तर विद्यमान है। वैदिक साम्यवाद आस्तिकता के धरातल पर प्रतिष्ठापित है जिसमे उदात्तता, प्रेम, सहयोग, विश्वबन्धुत्व तथा अहिंसा की भावनायें सुगुम्फित हैं जबकि आधुनिक साम्यवादी विचारधारा (कम्यूनिज्म) अनीश्वरवादी है। आत्मा, परमात्मा, कर्मफल तथा परलोक सुधार जैसे वैदिक मूल्यो को कम्यूनिज्म में कोई स्थान नही दिया गया है। वैदिक साम्यवाद मे मानवता के आस्थापरक शाश्वत मूल्य विद्यमान हैं अतः यह धारा सर्वकालीन, सार्वग्राह्य है। यह सत्य है कि देश काल एव परिस्थिति के अनुसार मानवीय मूल्यो मे क्षणिक परिवर्तन किये जा सकते हैं किन्तु इनमे विद्यमान मूल भावना शाश्वत एव अपरिहार्य होती है। जिन्हे हम मानव जीवन की सफलता का आधार माना गया है कहा भी है "सत्यमेव जयते"।

प्रश्न उठता है कि वेदादि शास्त्रो मे ऐसे कौन से प्रमाण है जिनके कारण "वैदिक साम्यवाद" को सिद्ध किया जा सकता है। इसकी व्यावहारिकता को हम किन ठोस प्रमाणो द्वारा प्रमाणित कर सकते हैं? वेदो मे अनेक स्थलो पर समाज और व्यक्ति के लिए निर्देश दिए गए हैं कि वे इस त्रिगुणात्मक प्रकृति की विभिन्नताओ एव विषमताओ से ऊपर उठकर समानता एव एकसूत्रता में बंधकर व्यक्ति तथा समाज को समुन्नत करे। इन मन्त्रों मे समता, एकता तथा आत्मीयता के प्रति आग्रह विद्यमान हैं। ऋग्वेद के संगठन सूक्तो मे कहा गया है

> संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
> देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते ॥
> समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
> समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ॥
> समानो मन्त्रः समितिः समानी
> समानं मनः सह चित्तमेषाम्" आदि

इन सभी मन्त्रो मे समता, एकता, एकरूपता तथा हर प्रकार के समान व्यवहारो के प्रति विशेष आग्रह विद्यमान है। इन मन्त्रो का चयन करके महर्षि दयानन्द ने भी अपनी एतद्विषयक मान्यता को पुष्ट कर दिया है। जिस समाज या राष्ट्र की मान्यतायें, सभायें विचार तथा स्तर समान नहीं होंगे और जहाँ ऊंच नीच, हुजूर मजूर, धनी-निर्धन तथा सवर्ण-असवर्ण की भावनायें मानव मस्तिष्को में जड़ी भूत हो जाती है वह समाज या राष्ट्र आपसी द्वेष तथा ईर्ष्या जन्य संघर्षों की आग में जल भुन कर नष्ट हो जाता है।

वेदो के उपर्युक्त संगठन सूक्तो मे समष्टिवादी दृष्टि को प्रधानता दी गई है। व्यष्टि (व्यक्ति) को घटक मानकर समष्टि का निर्माण ही वेदो का अभिप्रेत है। यही कारण है कि मन्त्रो मे न (अस्माकम्) व (युष्माकम्) आदि बहुवचन बोधक सर्वनामो का प्रयोग किया गया है। चूंकि व्यक्ति के ही समष्टि का निर्माण होता है अतः महर्षि दयानन्द ने व्यक्ति के निर्माण पर विशेष बल दिया है यही कारण है कि शिक्षा शास्त्रियो ने महर्षि दयानन्द को व्यक्तिवादी समाज सुधारक माना है जिसका उद्देश्य श्रेष्ठ समाज की स्थापना करना है जिसे आर्य समाज का नाम दिया गया है। व्यक्तिवादिता का सुदृढ़ आधार भी साम्यवादी विचार धारा पर आधारित हैं। महर्षि की व्यक्तिवादी विचारधारा अरस्तू के चिंतन से मेल खाती है जिसने व्यक्ति को घटक मानकर उसे विशेष महत्व दिया है।

प्राचीन भारत की सामाजिक परम्परायें वैदिक मूल्यो से ओतप्रोत होती थीं जिसका प्रभाव आज भी भारतीय सामाजिक परम्पराओ मे देखने को मिलता है। समतामूलक दृष्टि से अभिभूत होकर ही हमारे आधुनिक धर्म गुरुओ ने निर्योग्य एव दलित जातियो के नामकरण मे साम्यवादी दृष्टि रखी है जैसे मेहतरो को मेहत्तर (महत्तर) तथा उनकी पत्नियो को मेहतरानी अर्थात श्रेष्ठरानी की संज्ञा देकर सम्मान प्रदान किया है। इसी प्रकार कुम्हार को 'प्रजापति' महाजन को श्रेष्ठी (श्रेष्ठ पुरुष) तथा चमार को चर्मकार सुनार को स्वर्णकार के नाम से पुकारा गया है। इसी भावना से प्रेरित होकर तो महात्मा गांधी ने भी भंगियो को 'हरिजन' कहकर वैदिक साम्यवादी विचारधारा को आगे बढ़ाया है।

साम्यवादी परम्परा की यह शृंखला आज भी लोक रीतियो व सामाजिक मूल्यो मे देखने को मिलती है जैसे अभाव ग्रस्त क्षेत्रो में कुयें खुदवाना सदावर्त बांटना, दान देना, धर्मशालायें, सड़को पर वृक्ष लगवाना, तथा पियाऊ की व्यवस्था करना आदि। हिन्दू समाज मे जजमानी प्रथा भी साम्यवादी धारा का ही सामाजिक प्रयोग है। इस प्रथा के आधार पर काम करने वाले व्यक्ति को यजमान लोग पूरा संरक्षण प्रदान करते हैं। वैदिक व उत्तर वैदिक काल मे इस प्रकार के नियम बनाये गये थे कि यदि आवश्यकता से अधिक धन अर्जित हो जाए तो उस धन का निवेश निर्धनो की सहायतार्थ कर दिया जाये। सम्भवतः यह वैदिक सूक्तो मे विद्यमान समतामूलक निर्देशो का ही प्रभाव है जो न्यूनाधिक मात्रा में आज भी विद्यमान है जिसके आधार पर दान पुण्य द्वारा समानता लाने अथवा निर्धनो को सहायता पहुंचाने का कार्य किया जाता है।

साम्यवाद का ही आधुनिक लचीला रूप समाजवाद है जिसमें व्यक्ति के स्थान पर समाज को महत्व दिया गया है। जबकि साम्यवादी धारा मे व्यक्ति को महत्व दिया जाता है। वस्तुतः आधुनिक साम्यवाद और वैदिक साम्यवाद मे भी अन्तर है आधुनिक साम्यवाद मे नास्तिकता विद्यमान है। इसमे ईश्वर आत्मा मोक्ष आदि मान्यताओ को अवांछनीय घोषित किया गया है जबकि वैदिक साम्यवाद आस्तिकता के सशक्त एव व्यापक धरातल पर फल फूल रहा है। आधुनिक साम्यवादी धारा मे हिंसा, बलपूर्वक समानता लाने का विधान है तथा भौतिक मूल्यो को प्रधानता दी गई है। आधुनिक साम्यवादी अन्त क्रियायें प्रतिफल की ओर विशेष लगाव रखती है जबकि वैदिक साम्यवाद में प्रेम, दया, सहानुभूति, त्याग, दान तथा न्याय के लिए संघर्ष की सामाजिक अन्त क्रियाओ पर विशेष बल दिया गया है। आधुनिक साम्यवाद, शोषण, उत्पादन, वितरण तथा संघर्षों की समस्याओ की सीमा मे सीमित रहकर मानव को संवेदना शून्य तथा बर्बर बनाता चला जा रहा है भले ही वह तथाकथित सामाजिक सुरक्षा तथा खुशहाली का दावा करे किन्तु यह ध्रुव सत्य है जिस आध्यात्मिक एव समता मूलक मस्ती का अनुभव वैदिक साम्यवादी करता है और प्रपंच शून्यता का आनन्द प्राप्त करता है वह अपने मे अलौकिक है अनुपम है। उसमें आध्यात्मिकता, ज्ञानयुक्त भक्ति व कर्म की पवित्र त्रिवेणी अजस्र रूप में प्रवाहित हो रही हैं। साम्यवादी लोकतान्त्रिक प्रक्रिया का समर्थन करते हुए महर्षि दयानन्द ने ने धर्मार्य, राजार्य तथा विद्यार्य सभा का भी प्रावधान किया है। वस्तुतः प्रजातन्त्र (लोकतन्त्र) की व्यवस्था का उद्देश्य ही साम्यवादी सामाजिक ढांचे का निर्माण करना है जिसमे समानता की प्रधानता दी गई है।

आज आवश्यकता है ऐसे ही वैदिक साम्यवाद को प्रतिष्ठापित करने की। वर्तमान लोकतन्त्र कथनी करनी मे बिल्कुल भिन्न हो गया है। इसमे सुधार लाने के लिए जनमन जागृत करना होगा और वैदिक साम्यवादी व्यवस्था को आधार मानकर चलना होगा तभी देश मे पुनः खुशहाली, समृद्धि तथा न्याय व्यवस्था स्थापित हो सकेगी।

सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत : स्थिर निधियां

(गतांक से आगे)

श्री डा० सूर्यदेव शर्मा स्थिर निधि

श्री डा० सूर्यदेव शर्मा एम० ए० डी० लिट् (अजमेर) ने सत्यार्थ प्रकाश के १ वा १॥ रुपए मूल्य के संस्करण के प्रकाशनार्थ १० हजार रुपए की स्थिर निधि कायम की थी जिसके ब्याज से यह ग्रन्थ छपा करेगा। पहले ४ हजार रुपए की स्थिर निधि सार्वदेशिक की सहायतार्थ कायम की थी जिसकी स्वीकृति २६-४-६१ की अन्तरंग बैठक ने दी थी। श्री शर्मा जी ने ६ हजार रुपए की राशि प्रदान करके इस स्थिर निधि के स्थान पर सत्यार्थ प्रकाश निधि कायम की है। इसकी स्वीकृति १४ ११-७६ की अन्तरंग बैठक ने दी।

श्री देवव्रत धर्मेन्दु एवं श्रीमती आविज्ञीदेवी आर्य साहित्य प्रकाशन स्थिर निधि

दिल्ली निवासी श्री प० देवव्रत जी धर्मेन्दु के दो हजार के दान से ११-२-१९६३ की अन्तरंग की स्वीकृति से यह स्थिर निधि कायम हुई थी, जिसके ब्याज से उनकी दयानन्द वचनामृत, वैदिक सूक्ति सुधा और वेद सन्देश नामक पुस्तकों के प्रकाशन का प्रावधान किया गया था। अब यह राशि १२ हजार कर दी गई है।

गत वर्ष दयानन्द वचनामृत व वेद सन्देश पुस्तकें छपाई गई। १०-११-७९ की अन्तरंग के निश्चयानुसार इस निधि का नाम देवव्रत धर्मेन्दु आविज्ञीदेवी पुस्तक प्रचार निधि रखा गया।

श्री जगतराम महाजन १०० दयानन्द नगर अमृतसर

यह निधि १९६५ मे श्री स्व० लाला जगतराम जी अमृतसर निवासी द्वारा प्रदत्त ४०००) के दान से स्थापित हुई और अन्तरंग ने इसकी २९-१२-१९६५ की बैठक मे स्वीकृति प्रदान की। इस निधि के ब्याज से - उडीसा के स्वामी ब्रह्मानन्द जी केरल में आर्य युवक समाज द्वारा वहां की क्षेत्रीय भाषाओं में बारी-बारी से भी वितरण के लिए ट्रैक्टों के प्रकाशन की व्यवस्था हुई है। इस व्यवस्था के भा होने की अवस्था मे ईसाई मत खण्डन विषयक साहित्य के प्रकाशन के लिए सार्वदेशिक सभा अधिकृत की गई।

श्री लाला लब्भूराम जालन्धर स्मारक वैदिक साहित्य वितरण निधि

यह निधि लाला लब्भूराम जी ने ५ हजार की राशि से कायम की थी। इसके ब्याज से सत्यार्थ प्रकाश एवं अन्य वैदिक साहित्य देश देशान्तर मे फ्री वितरण किए जाने की व्यवस्था की गई है। विदेशी भाषाओं मे प्रकाशित साहित्य के लिए भी इस निधि का ब्याज प्रयुक्त हो सकेगा।

देश मे हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं का साहित्य भी आवश्यकतानुसार वितरित हो सकेगा। यह सहायता योग्य व्यक्तियों को मुफ्त या आधे मूल्य पर दी जाएगी।

दानी महोदय के पश्चात् इसके क्रियान्वयन की सूचना उनके सुपुत्र श्री विश्वमित्र जी कपूर जालन्धर को दी जाया करेगी और वे यथा समय अपना प्रतिनिधि नियुक्त करेंगे। इस प्रकार परम्परागत प्रथा चलती रहेगी। प्रचुर साहित्य निःशुल्क देश-देशान्तर मे वितरित किया गया।

श्री मोहनलाल जी मोहित मोरिशस स्थिर निधि

यह निधि १३-१-१९६५ की अन्तरंग के निश्चयानुसार ३ हजार रुपए के प्रारम्भिक दान से स्थापित हुई थी। सन् १९७५ मे यह राशि ५० हजार रुपए की गई। वर्ष १९८६ मे यह राशि ७० हजार रुपए कर दी गई है। इस वर्ष इस निधि मे १० हजार रुपए की वृद्धि की गयी।

इस निधि का ब्याज किसी आर्य विद्वानों द्वारा लिखित और सार्वदेशिक सभा द्वारा स्वीकृत ग्रन्थ के प्रकाशन में सभा द्वारा प्रयुक्त होगा। साथ ही मोरिशस के उन आर्य विद्यार्थियों को आवश्यकतानुसार सहायता दी जाएगी। जो गुरुकुल व आर्य महाविद्यालय आदि मे आर्य समाज की सेवार्थ उपदेशक का प्रशिक्षण प्राप्त करते हो।

स्व० श्री बनवारीलाल पचेरी वाला (साहिब गंज बिहार) स्थिर निधि

यह निधि तीन हजार रुपए से कायम की गई थी। इसके ब्याज को अंग्रेजी साहित्य व सत्यार्थ प्रकाश के भारतीय भाषाओं के प्रकाशन व वितरण पर व्यय किए जाने की व्यवस्था की गई है।

उपयुक्त व्यक्तियों एवं संस्थाओं को साहित्य मुफ्त दिए जाने की भी एक शर्त निर्धारित की गई थी और इसका निर्णय सार्वदेशिक सभा पर छोड़ा गया था। इस निधि की राशि मय ब्याज के सन् १९८६ मे ५१२५) रुपए बैंक से मिलनी थी जिसके लिए बैंक से पत्राचार जारी है शीघ्र ही धन प्राप्त हो जाएगा।

स्व. श्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती स्थिर निधि

श्री स्वामी दिव्यानन्द जी १९ सिविक सेक्टर भिलाई (म प्र) ने ४०,००० रुपए (चालीस हजार) मात्र दान देकर स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती स्थिर निधि स्थापित की थी जिसकी स्वीकृति १६-१०-१९७३ की अन्तरंग बैठक ने दी। श्री स्वामी जी ने मृत्यु से पूर्व यह राशि ७५ हजार कर दी थी।

इस निधि के ब्याज से सत्यार्थ प्रकाश और आर्याभिविनय पुस्तक हिन्दी तथा देश-विदेश की विभिन्न भाषाओं मे छपा करेगी। प्रत्येक प्रकाशन पर अच्छे स्थान पर इस निधि का उल्लेख करना होगा। गत वर्ष इसी निधि के ब्याज से संस्कृत सत्यार्थ प्रकाश छपवाया गया था।

श्रीमती कौशल्या देवी (अमृतसर) स्थिर निधि

श्रीमती कौशल्या देवी (१६ मजीठा रोड अमृतसर) ने (दस हजार रुपया मात्र) के दान से यह स्थिर निधि कायम की है। इसके ब्याज से वेदाध्ययन करने वाले छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्तियां दी जाया करेगी। २१-३-१९७६ की अन्तरंग बैठक ने इसकी स्वीकृति दी। बाद में इस निधि को बढ़ाकर इन्होंने १२०००) रुपए कर दिया।

स्व. राजवैद्य मूलचन्द जी आर्य (दिल्ली) स्थिर निधि

६५००) (छ हजार पांच सौ रुपए मात्र) के दान से स्व० राजवैद्य मूलचन्द आर्य स्थिर निधि स्थापित की गई है। इसके ब्याज से आर्य गुरुकुल एटा (उ० प्र० मे पढ़ने वाले छात्रों को सहायता दी जाया करेगी। २७-३-७७ की अन्तरंग बैठक ने इसकी स्वीकृति दी।

श्री माधोप्रसाद तथा श्रीमती विद्यावती स्थिर निधि

यह निधि श्री माधोप्रसाद आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर (सहारनपुर) ने दस हजार के दान से कायम की है। इसकी स्वीकृति १६-११-१९७५ की अन्तरंग बैठक ने दी। इस निधि का ब्याज वैदिक धर्म के प्रचार एवं समाज कल्याण पर खर्च होगा। बाद मे बढ़ाकर यह राशि २९ हजार रुपए कर दी गई। इसके अतिरिक्त उन्होंने १५ हजार रुपए धरोहर रूप मे जमा कराया था जो बढ़ाकर ९० हजार रुपए कर दिया गया तथा यथा समय स्थिर निधि मे परिवर्तित होगा।

स्व. लाला बाबूराम शाहदरा दिल्ली स्मारक स्थिर निधि

दिल्ली शाहदरा के प्रसिद्ध एवं वयोवृद्ध आर्य स्व० लाला बाबूराम जी ने एक वसीयत के द्वारा जो दान दिया था उसमे से इस सभा को लगभग ४५ हजार नकद १ मकान, १ प्लाट २ सौ वर्ग गज का प्राप्तव्य था। ४६०५१) ५१ नकद रुपए प्राप्त हुआ तथा शाहदरा का मकान ४ हजार रुपए मे बेच दिया गया। १९-३-६४ की अन्तरंग ने यह दान स्वीकृत किया था। दान से सभा ने शाहदरा मे बाबूराम आर्य औषधालय के नाम से एक आयुर्वेदिक औषधालय चलाती रही है जो अब अनिवार्य कारणों से बन्द है।

दयानन्द आश्रम

२२५०) की यह निधि शुद्ध हुए मुसलमान बन्धुओं (नव मुस्लिमों) की सहायतार्थ १९२७ मे कायम की गई थी। इसका ब्याज इसी कार्य मे व्यय होता है।

(क्रमशः)

आर्य सत्याग्रह दर्शन : एक समीक्षा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में अखिल भारतीय आर्य सत्याग्रह अर्धशताब्दी समारोह दिनांक २९ ३०-३१ दिसम्बर १९८९ के दिन केशव स्मारक विद्यालय, नारायणगुडा, हैदराबाद के विशाल प्रांगण में बड़ी धूम-धाम से सम्पन्न हुआ। इस महोत्सव के शुभ अवसर पर "आर्य सत्याग्रह दर्शन" नामक अर्धशताब्दी स्मारिका प्रकाशित की गई। इस स्मारिका के सरक्षक और प्रधान सम्पादक इस नगर द्वय के प्रसिद्ध व परम आदरणीय आर्य समाजी नेता प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव जी है। सम्प्रति वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के वरिष्ठ उप प्रधान है। यह सस्मारिका उन अमर शहीदों और अनाम स्वतन्त्रता सेनानियो के नाम समर्पित की गई है जिनके संघर्ष और बलिदान के कारण हैदराबाद निजाम राज्य भारतीय संघ में विलीन हुआ।

भारतीय स्वतन्त्रता सग्राम के इतिहास मे हैदराबाद राज्य आर्य सत्याग्रह एक अविस्मरणीय स्वर्णिम अध्याय है। सन् १९३८ ३९ में आर्यसमाज ने यदि निरंकुश और धर्मान्ध निजाम शासक का सत्याग्रह के माध्यम से प्रतिरोध न किया होता तो सन् १९४८ मे हैदराबाद राज्य की मुक्ति न हुई होती और न भारत संघ में उसका विलीनीकरण हुआ होता इस सस्मारिका में उसी अद्वितीय संघर्ष का ब्योरा सुधी पाठक गणों को देने का सात्विक प्रयास किया गया है।

संस्मारिका का कलेवर बहुत ही कलात्मक आर्यसमाज की प्रवृत्तियो और दिव्य गुणों को प्रतिबिम्बित करने वाला बना है जो पाठकों को सहज ही आकर्षक करने वाला है। "आर्य सत्याग्रह दर्शन" पुरानी पीढ़ी के लिए पुराने यादों को ताजा करने वाला ही है किन्तु नई पीढ़ी के लिए आंख खोलने वाला" और ५० वर्ष के अद्वितीय इतिहास को सही परिप्रेक्ष्य मे वर्णन करने वाला दस्तावेज है। चू कि आजकल हैदराबादके अन्तिम निजाम को सर्वगुण सम्पन्न शासक बताने का कुचक्र चल रहा है। इस संस्मारिका का प्रकाशन समयोचित बन गया है। इस संस्मारिका की प्रति कमलानिलयम, १४-३-१७८, गोशामहल स्टेडियम, हैदराबाद-५०० ०१२ से प्राप्त की जा सकती है। संस्मारिका का मूल्य १००) रुपये है। सस्मारिका का मूल्य कम होना चाहिए था, ताकि विद्यार्थियों को पढ़ने का अवसर मिले छापे की और कम्पोजिंग की त्रुटियो का इसे शुद्धिकरण होता तो और भी अच्छा होता। फिर भी यह सस्मारिका बहुत सुन्दर बनी है। पठनीय है, सग्रहणीय है।

टी आर एस चौहान, धर्मवन्त हिन्दी विद्यालय
याकुतपुरा, हैदराबाद [आ० प्र०]

ऋषि निर्वाण

आर्यसमाज कठूआ मे ऋषि निर्वाण दिवस दिनाक १८ अक्तूबर १९९० वीरवार को समारोह पूर्वक मनाया गया।

प्रात. हवन-यज्ञ किया गया जिसमे श्री अवतार कृष्ण त्रिशल (सचिव, काश्मीरी हिन्दू समिति जिला कठूआ) व श्री शशि सूम्बड़िया जी प्रिंसीपल मनु शिक्षा केन्द्र राजबाग) सपत्नीक यजमान थे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्यसमाज कठूआ के भूतपूर्व प्रधान व वरिष्ठसदस्य माननीय डाक्टर कुलदीप मलहोत्राजी ने की। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता २७४ मीडियम रेजिमेन्ट के सूबेदार और विद्वान पण्डित श्री जयतराम जी 'आर्य' थे जिन्होने बड़े शानदार ढंग से महर्षि जी की जीवन गाथा को प्रस्तुत किया। —सुरेन्द्र गुप्त

अहिंसा के देश में हिंसा चिन्ताजनक विषय

—प्रो० बर्नू दारो

(रूसी हिन्दी विद्वान् का सभा भवन में स्वागत)

मास्को विश्व विद्यालय के हिन्दी विभाग अध्यक्ष प्रो० "अलेकसेई बर्नू दारोव का दिनांक १६ अक्तूबर ९० को हिन्दी प्रचार सभा के तत्वावधान में हिन्दी भवन में उच्च शिक्षा एवं शोध संस्थान हैदराबाद हिन्दी विभाग के अध्यक्ष प्रो० कृष्णकुमार गोस्वामी की अध्यक्षता में सम्मान-समारोह सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सभा के प्रधानमन्त्री डा० पाण्डुरग ढगे ने स्वागत करते हुए मुख्य अतिथि का शाल ओढ़ाकर सम्मान किया। यह स्वागत समारोह का कार्यक्रम केन्द्रीय हिन्दी विश्व विद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष प्रो० वे० वेंकटरमणराव के सौजन्य से आयोजित हुआ और उन्होने मुख्य अतिथि का परिचय देते हुए बताया कि प्रो० बर्नू दारोव सास्कृतिक सद्भावना यात्रा पर भारत आये हैं, विशेषकर दिल्ली, हैदराबाद और मद्रास के तीन महानगरों मे प्रत्यक्ष रूप से हिन्दी भाषा गतिविधियो एवं साहित्यक प्रवृत्तियों का परिचय प्राप्त करना एवं उनका अनुसन्धान करना उनका उद्देश्य है। कार्यक्रम का सचालक विवरण पत्रिका के प्रबन्ध सम्पादक डा शीलम् वेंकटेश्वर राव ने किया। प्रो० बर्नू दारोव ने अपने भाषण में बताया कि रूस भारत का न केवल आपद्मित्र है, अपितु आत्मीय बन्धु भी है। भारत के सांस्कृतिक एव साहित्यिक मूल्यों को हमारा देश आदर्श के रूप में स्वीकारता है। समस्याओ के समाधान हेतु रूस भारत की ओर देखता है। वहा की जनता में हिन्दी भाषा एवं साहित्य के प्रति विशेष आदर व अनुराग है।

शोक समाचार

विदित हो कि बक्सर आर्यसमाज के भूतपूर्व मन्त्री राजेश्वरीप्रसाद आर्य की पूज्य माता श्रीमती छुलछनी कुंवर आर्या का दस बजे दिन में स्वर्गवास हो गया। उनका अत्येष्टि सस्कार वानप्रस्थी श्री बिहारी बाबा के द्वारा पूर्ण वैदिक रीति के अनुसार हुआ। —विश्वनाथ मन्त्री

देश हित चिन्तकों से मार्मिक अपील

आप आर्यावर्त भारत वर्ष के रहने वाले हैं—इसलिये अपने को हिन्दू कहते हैं। राम तो विश्वव्यापी व सर्वत्र पूज्य रहे हैं—वे मर्यादा पुरुषोत्तम राम अयोध्या में पैदा हुये, इसे भी सब मान रहे हैं। प्रधानमन्त्री कहते हैं कि राम का मन्दिर अयोध्या में नहीं बनेगा तो कहा बनेगा ? ये सब केवल शब्द जाल है—यह सच है ?

बाबर आक्रामक शासक था। उसका जन्म हजारो वर्ष बाद में हुआ। इतिहास बताता है कि उसने मन्दिरो को तोड़कर मस्जिद बनवाई। मुसलमान शब्द का शाब्दिक अर्थ है नेक इन्सान। वह ऐसा ही करता है। इसलाम धर्म के प्रवर्तक मुहम्मद साहब की जीवनी जो अबू सलीम मुहम्मद अब्दुल हुई ने लिखी है उसमें स्पष्ट रूप से पृष्ठ पर यह लिखा है कि हजरत साहब ने जब मक्का छोड़कर अपने रहवासी मकान के समीप मदीना में मस्जिद नबी का निर्माण कार्य करवाया तो वह दो अनाथो की जमीन को उनकी इच्छानुसार उन से क्रय करके बनवाई। उन्होंने कोई अतिक्रमण नही किया न किसी मन्दिर को तोड़कर मस्जिद को बनवाया।

मस्जिद के निर्माण के सिद्धान्त ही है कि जहा इबादत न होती हो तो वह मस्जिद नहीं कहलाती है। चूं कि राम जन्मभूमि पर अतिक्रमण करके मस्जिद बनाई गई थी।

देश मे प्रकाशित होने वाले ८० प्रतिशत समाचार पत्र निर्विवाद रूप से स्वीकार कर रहे हैं कि इतिहास साक्षी है कि मन्दिर को तोड़कर वहा जोर जबरदस्ती से मस्जिद बनाई गई है। अतः यदि तुष्टीकरण की नीति को भी समर्थन देना है तो सिवायों की इच्छानुसार उस मस्जिद को अन्यत्र बनवाकर सच्चे रूप में उन्हें नमाज अदा करने व पूजा अर्चा की छूट दे देना चाहिये तथा मूल स्थल पर सोमनाथ के मन्दिर के जीर्णोद्धार के समान उक्त स्थल, राम जन्म भूमि पर प्रस्तावित मन्दिर निर्माण की आज्ञा प्रदान कर इस समस्या को आसानी से हल करने का साहसिक कदम उठाकर सद्भावना, प्रेम व एकता का अनुपम उदाहरण पेश करना चाहिये।

—ठाकुरदास आर्य, इन्दौर

स्थापना दिवस सम्पन्न

आर्य समाज सान्ताक्रुज बम्बई ने अपने ४६ व स्थापना दिवस के साथ-साथ महर्षि दयानन्द सरस्वती का १०७ वा निर्वाण दिवस एव प० गुरुदत्त विद्यार्थी का निर्वाण शताब्दी समारोह भी मनाया। प्रात ८ बजे यज्ञ के पश्चात् कार्यक्रम आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई के तत्वावधान मे प्रारम्भ हुआ। बम्बई महानगरी की समस्त आर्य समाजो ने समारोह में भाग लिया। समारोह के मुख्य अतिथि पद को प्रसिद्ध उद्योगपति एव समाजसेवी श्री देवेन्द्र कुमार कपूर, डा० सोमदेव शास्त्री श्री रामचन्द्र जी आर्य, श्रीमती लज्जारानी गोयल, श्री भगवती प्रसाद जी गुप्त श्रीमती शिवराजवती आर्या, श्री ओम्प्रकाश आर्य तथा कैप्टिन देवरत्न आर्य ने अपने विचार प्रकट किये।

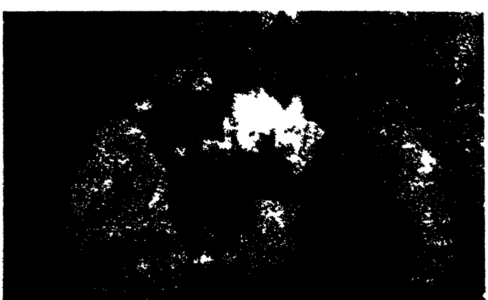
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिवेशन मे अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के लिए दान (१८ नवम्बर १६६०)



सभामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री को हालैंड से प्राप्त दक्षिणा आदि से ४० ० ० रुपये की राशि सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को भेंट करते हुए।



श्री कुलभूषण जी ने सतप्रावा ट्रस्ट दिल्ली की ओर से ५१ ०००/ की राशि प्रधान जी को भट की।



श्री रामसिंह राठौर प्रधान भी सत्यम केन्द्र गाजीपुर, दिल्ली ने ५१,००० रुपये देने का वचन दिया श्री रामसिंह राठौर का स्वागत करते हुए श्री सुखदेव जी व महाशय धर्मपाल जी।

पं. आशुराम जी आर्य का निधन

आर्य जगत् को यह जानकर अत्य त दुख होगा कि आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान वेदो के उर्दू अनुवादक तथा विश्ववेद परिषद चण्डीगढ के महामन्त्री प० आशुराम आर्य का १० नवम्बर १६६० को पी जी आई चण्डीगढ मे हृदयाघात के कारण निधन हो गया। वे ७७ वष के थे। प० आशराम जी तीन दिन पूव ही अपनी इग्लड म बसी पुत्रियो से मिलकर भारत लौटे थे। अचानक अस्वस्थ हो जाने के कारण उन्हे अस्पताल मे दाखिल कराया गया। १६१३ मे मुलतान जिले के खानगढ में ज मे प० आशुराम आर्य देश विभाजन के पश्चात अम्बाला तथा बाद मे चण्डीगढ के निवासी बन गए। उन्होने कुछ काल तक डी ए वी स्कूल मे अध्यापन किया तथा इसके बाद पौरोहित्य कम को स्वीकार किये। वे एक सफल कर्मकाण्डी पुरोहित थे और चण्डीगढ तथा समीपवर्ती नगरोमे उन्हे सस्कारो यज्ञो तथा अन्य कमकाण्डो के लिए आमन्त्रित किया जाता था। पि त कुछ वर्षों से उन्होने चारो वेदो का उदू मे अनुवाद करने का बीडा उठाया था। तीन खण्डोमे वे ऋग्वेद यजुवद तथा सामवेद के कुछ अशो के उदू अनुवाद प्रकाशित भी कर चुके थे जिनका उदू भाषी वग मे स्वागत हुआ था। प० आशुराम जी आर्य समाज के लिए सवथा समर्पित रहे। ईश्वर उनकी दिवगत आत्मा को शा ति प्रदान करे। पण्डित जी की अन्त्येष्टि १२ नवम्बर को हुई। इस अवसर पर पजाब विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० अ र पा बम्बा तथा अ य हजारो नागरिक विद्यमान थे।

—भवानीलाल भारतीय

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज हरजेन्द्रनगर कानपुर ७ के साप्ताहिक अधिवेशन दिनाक ११ ११ ६० दिन रविवार को दानवीर एवं समाज सेवी चौ० ईश्वरसिंह जी मलिक हरियाणा के देहावसान से सभी आयजन शोक प्रकट करते हुए एक अपूर्णीय क्षति कहा और उसी दिन दिवगत आत्मा के लिए सद्‌गति एवं शान्ति तथा सतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई। ब्रह्मजी आर्य

रजि० न० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२१ ११ १९९०) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस U न० ९३
R 626/57 Licensed to post without Prepayment License No U 93 Post in D P S O on 23-11-990



10150—पुस्तकालयाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी
विश्वविद्यालय हरिद्वार
जि० सहारनपुर (उ० प्र०)

नेपाल के गृहमन्त्री श्री योगप्रसाद उपाध्याय जी के साथ श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती छात्रों को पुरस्कार देते हुए साथ में हिन्दू विद्यापीठ के प्रधानाचार्य भी दिखाई दे रहे हैं।

नेपाल दौरा

(पृष्ठ १ का शेष)

राज्य के नए संविधान की एक प्रतिलिपि भेंट की। उल्लेखनीय है कि नेपाल मे गत ९ नवम्बर को ही नए संविधान की घोषणा की गई थी।

इस तीन दिवसीय नेपाल दौरे मे कई स्थानो पर दोनो आर्य नेताओ का स्वागत तथा स्वामी जी के प्रवचन समारोह आयोजित किए गए। मातृभूमि सेवक संघ द्वारा संचालित हिन्दू विद्यापीठ ललितपुर मे स्वामी जी के द्वारा छात्रो को पुरस्कार वितरण किया गया। इस अवसर पर गुरुकुल के छात्रो द्वारा उपस्थित नेताओं के समक्ष महर्षि दयानन्द तथा दण्डी गुरु विरजानन्द के वार्तालाप को संस्कृत भाषा में अत्यन्त मनभावनी नाटकीय शैली में प्रस्तुत किया गया।

समिति द्वारा आयोजित एक स्वागत समारोह में दोनों नेताओं का स्वागत नेपाल के गृह तथा संचार मन्त्री श्री योगप्रसाद उपाध्याय द्वारा किया गया। नेपाल आर्य समाज द्वारा आयोजित एक अन्य स्वागत समारोह मे शिक्षा तथा संस्कृति मन्त्री श्री केशर जंग रायमाझी द्वारा दोनों नेताओ का स्वागत किया गया।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तथा पण्डित वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने अमर आर्य शहीद श्री शुक्रराज शास्त्री जी के स्मारक स्थल पर जाकर श्रद्धांजलि अर्पित की।

१४ नवम्बर रात्रि ७ बजे त्रिभुवन अन्तर्राष्ट्रीय विमान स्थल पर आर्य समाज के सैकड़ो व्यक्तियो द्वारा विदाई समारोह का भी आयोजन किया गया। ●

शोक समाचार

—बड़े दुख के साथ समाचार है कि मगोह आर्यसमाज के पद सम्मानित सभासद, प्रसिद्ध लेखक विद्वान्, स्वतन्त्रता सेनानी भूतपूर्व जिला पंचायत अधिकारी प० वेदभूषण वेदालंकार का निधन हृदय गति रुकने से दिनांक २५ १०-९० को साय हो गया था। उनका संस्कार वैदिक रीति से मगोह में किया गया।

—[illegible]

आर्यसमाज में महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस मनाया गया

लखनऊ। आर्य उपप्रतिनिधि सभा लखनऊ एव आर्य कुमार सभा के सयुक्त तत्वावधान में आज आर्यसमाज चन्द्रनगर के सभागार में ऋषि निर्वाण पर्व का आयोजन किया गया। जिसमें भारी संख्या मे आर्य नर-नारियो ने भाग लेकर ऋषि दयानन्द के बताये पथ पर चलकर राष्ट्र रक्षा का संकल्प लिया।

इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के महामन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने अपने सन्देश मे कहा कि आज देश भौतिकवाद के चक्कर में फसकर अपनी अस्मिता खो रहा है। शासन द्वारा राष्ट्रीय समृद्धि के नाम पर विविध घोषणाए करके विघटनकारी तत्वो को बढ़ावा दे रहा है जाति भेद आज देश को [illegible] रहा है। शासन अपने बयानो से आग मे घी का काम कर रहा है। समारोह की अध्यक्षता करते हुए ब्रह्मचारी आर्य नरेश ने कहा कि आज राजनैतिक दल शान्ति का स्वस्थ मार्ग नहीं दिखा पा रहा है, सभी के आगे वोट की राजनीति बाधा बन गयी है ऐसे सकट के अवसर पर राष्ट्र आर्य समाज की ओर देख रहा है। उन्होंने कहा कि इस गम्भीर सकट के समय आर्य समाज के सामने सबसे बड़ा दायित्व यही है कि वह महर्षि दयानन्द का सन्देश जन जन तक पहुचायें। लखनऊ के प्रसिद्ध आर्यवक्ता पण्डित हरिवंशलाल मेहता ने बोलते हुए कहा कि सुख का साधन वेदपथ का अनुसरण है।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

पानीपत गत २ ३ व ४ नवम्बर १९९० को स्थानीय वीर भवन में धूमधाम से सम्पन्न हुए आर्य समाज पानीपत के ९४ वा वार्षिकोत्सव में इस बार वेद प्रचार का छटा ही निराली थी। गत वर्षों की अपेक्षा इस बार प्रचार तथा विज्ञापन अच्छा रहा इस कारण श्रोताओ की सख्या बहुत रही। वेद कथा २८ अक्टूबर से १ नवम्बर तक समाज मन्दिर मे मनाई गई जिसमे मुख्य वक्ता प्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य वेद प्रकाश जी श्रोत्रिय थे, जिनके व्याख्यानो को लोगो ने बहुत ही सराहया। भजनोपदेश प० सत्यपालसिंह जी तथा प० दिनेश दत्त आ के हुए।

श्री स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती का सम्मान समारोह श्री विजयकुमार आई ए एस की अध्यक्षता में हुआ। इस अवसर पर प्रो० शेरसिंह, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा डा० धर्मपाल प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा प्रो० उत्तमचन्द शरद, श्री महेन्द्र नाथ शर्मा, श्रीमती सुशीला आर्या ने भी अपने विचार व्यक्त किए। अपराह्न में डा० [illegible] और प्रो० शेरसिंह ने सामयिक राष्ट्रीय परिस्थितियों पर अपने विचार व्यक्त किये। प्रोफेसर [illegible] ने कहा कि [illegible] समाज को दूर करने का एक मात्र उपाय आर्य समाज के सिद्धान्तों को अपनाना है।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र

सुखी समाज

विश्व को आर्य बनाओ

इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।
अपघ्नन्तो अराव्णः ।।
ऋग्० ९।६३।५ ।।

हिन्दी अर्थ—तुम सब आस्तिकता (या ऐश्वर्य) को बढ़ाते हुए, कर्मठ, संसार को आर्य बनाते हुए, कृपणों को नष्ट करते रहो ।

(अनुशीलन शेष पृष्ठ २ पर)

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१ वर्ष ९१ अंक ४६] | दयानन्दाब्द १६६ | दूरभाष : ३२७४७७१ | वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
मार्गशीर्ष शु० १५ सं० २०४७ २ दिसम्बर १९९०

पंजाब के स्कूल एजूकेशन बोर्ड की तरफ से संस्कृत पर एक और चोट

दिल्ली २४ नवम्बर को विश्वस्त सूत्रों से पता चला है कि पंजाब में हिन्दी को समाप्त करने की कोशिश करने के पश्चात् अब संस्कृत को भी खत्म करने का मंसूबा बनाया जा रहा है।

पंजाब के स्कूल एजूकेशन बोर्ड की ओर से यह आदेश दिया गया है कि मैट्रिक की परीक्षा में जो विद्यार्थी संस्कृत की परीक्षा का पेपर देंगे, उन्हें ३०) रुपया फीस देनी पड़ेगी । यह जुर्माना किसी दूसरी भाषा या दूसरे विषय की परीक्षा देने वालों पर नहीं है। मुगलकाल में हिन्दुओं पर इसी प्रकार का जजीया लगाया गया था। अब पंजाब का शिक्षा विभाग भी उसी रास्ते पर चलकर हिन्दी और संस्कृत को हटाने पर तुल गया है। आर्यसमाज तथा अन्य हिन्दू संगठनों को सजग रहकर इस चुनौती पर गम्भीरता से विचार करना चाहिए।

पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने अपने एक विशेष अग्र लेख द्वारा इसकी चर्चा करते हुए बताया कि विदेशों की सभी यूनिवर्सिटियो में संस्कृत की पढ़ाई अनिवार्य है और कम्प्यूटर के लिए भी संस्कृत भाषा को उपयुक्त माना है।

उन्होंने यह भी बताया कि गुरु गोविन्दसिंह ने अपने १२ शिष्यों को संस्कृत पढ़ने हेतु काशी भेजा था। किन्तु हमारे अकाली भाई गुरु महाराज के महान आदर्श को भी भूलने का प्रयत्न कर रहे हैं।

हमारे सभी धर्म ग्रन्थ, वेद, मनुस्मृति, गीता, षड्दर्शन आदि सब संस्कृत में ही हैं। इसलिए संस्कृत भाषा के सम्बन्ध में ऐसा निर्णय करना हमारी संस्कृति पर भारी चोट है, जिसे सहन नहीं किया जा सकता।

श्री वीरेन्द्र जी ने यह भी कहा है कि इस मामले को सुप्रीम कोर्ट में चैलेंज किया जाय या कोई व्यापक आन्दोलन छेड़ा जाय।

आर्यसमाज घोषणा-पत्र जारी करेगा

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में आर्य समाज एक घोषणा-पत्र जारी करेगा। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने श्री वीरेन्द्र जी की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया है जो समिति घोषणा पत्र तैयार करेगी।

समिति के सदस्य:—

१—श्री वीरेन्द्र जी
२—प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव
३—क्षितीश वेदालंकार
४—डा० प्रशान्त वेदालंकार
५—श्री वेदप्रताप वैदिक
६—डा० धर्मपाल
७—श्रीमती डा० सुषमापाल मल्होत्रा

आर्य जन भारी संख्या में दिल्ली आ रहे हैं

नई दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की एक विज्ञप्ति के अनुसार आगामी २३ से २६ दिसम्बर १९९० तक होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को विशाल पैमाने पर आयोजित करने की सभी बुनियादी तैयारियां की जा चुकी हैं । लाखों की सख्या मे देश-विदेश से आर्य जनता के दिल्ली पहुंचने की आशा है जिसके लिए दिल्ली प्रशासन के १८० विद्यालयो तथा लगभग १०० आर्य समाजों एव धर्मशालाओं में आगन्तुकों के आवास की व्यवस्था हो चुकी हैं। सार्वदेशिक आर्य वीर दल के कार्यकर्ता दिल्ली के मुख्य रेलवे स्टेशनों, अन्तर्राष्ट्रीय बस अड्डे आदि पर सम्मेलन में आने वाले लोगों का स्वागत तथा सम्मेलन स्थल के लिए मार्ग दर्शन करेंगे।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर देश-विदेश के उच्च नेता तथा महानुभाव भी भाग लेंगे। वेद सम्मेलन का उद्घाटन पूर्व केन्द्रीय मन्त्री डा० कर्णसिंह जी करेंगे। एक अन्य समारोह में जम्मू-काश्मीर के पूर्व राज्यपाल श्री जगमोहन के भाग लेने की भी स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है।

सभा-प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने समूची आर्य जनता से अपील की है कि इस विशाल कुम्भ से वैदिक विचार धारा के प्रचार-प्रसार को एक नई गति देने का सकल्प लेने के लिए अधिक से अधिक सख्या में भाग लें।

सम्पादक—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

भारत से सूरीनाम में प्रथम आर्य विद्वान

सूरीनाम डच गयाना मे सर्वप्रथम आर्य विद्वान भारत देश से श्री पण्डित भाई परमानन्द जी १९१० में आये थे। भाई परमानन्द जी आर्य पण्डित और कांग्रेस के नेता भी रहे हैं। १९०५ में आपको राजद्रोही बताकर सरकार ने सजा दी फिर १९०७ में अचानक सरकार ने अन्डेमान से भारत लाकर छोड़ दिया था। उन दिनों महात्मा मुन्शीराम ने इनका स्वागत कर सारे भारतवर्ष को जगाया, फिर भारत कांग्रेस ने भाई परमानन्द जी को प्रवासी भारतीयों को देखने के लिये विदेश यात्रा पर भेजा था। भाई परमानन्द जी सिर्फ तीन दिन सूरीनाम मे ठहरे थे और तीन चार व्याख्यान दिये, हन्सू, क्वाटा और कप्तान बेईती तथा पारामारीबोऊ शहर में। उन्होंने कप्तान बोईती में हिन्दी पाठशाला में गये थे, मुन्शी बालगोविन्द और श्री सतनारायण महाराज विद्या पढ़ाते थे। चालीस पचास लड़के वहां हिन्दी भाषा और गणित पढ़ते थे और रामायण समाज भी वहीं पर था, उन्हीं लोगों को या जहां भाई परमानन्द जी गये, सभी लोगों में वैदिक पुस्तके दी सत्यार्थप्रकाश तभी से सूरीनाम में प्रचलित हुआ। बाद में फिर मेहता जैमिनी जी वैदिक मिशनरी भूमण्डल वेद प्रचारक १५ अगस्त १९२९ में आगे और तमाम वैदिक पुस्तकें लाकर सूरीनाम में सस्ते में बेचा और वेद का प्रचार खूब किया। उन दिनो के विद्वान जैसे पण्डित रामप्रसाद जी शुक्ल पण्डित हिन्दोरी, पण्डित जयमंगलसिंह पण्डित मथुरा, पण्डित कौशल प्रसाद जी आदि विद्वान गिने जाते थे। मेहताजी ने आर्य समाज को सरकार मे रजिस्टरी कराने की अनुमती दी, और आर्य दिवाकर सभा के नाम से प्रथम आर्य समाज सरकार में जायत हुई १९३० में।

१९३४ में पण्डित अयोध्या प्रसाद बी. ए. आये कलकत्ता आर्य समाज से। उन दिनो सारे सूरीनाम में आर्यो का बोल बाला हो चुका था। स्वामी दयानन्द अनाथालय भी बन गया था और चालीस लड़के भी पाले जाते थे, पच्चीस आर्य समाजें भी बन गई थीं, हिन्दी स्कूलें भी साथ में चलती थी। भारत से लगातार प्रचारक सूरीनाम में आते रहे है। जिनमें स्वामी भास्करानन्द जी का नाम सारे वेस्टएन्डिज में प्रचलित है। सूरीनाम, गयाना और ट्रीनिडाट मे उन्होंने २२ साल रहकर तीनों देशों में प्रचार करते रहें। आर्य दिवाकर सभा के पास तेरह स्कूलो हैं अनाथालय भी हैं बीसों आर्य समाजें यत्र तत्र हैं। एक विशाल मन्दिर बन रहा है आपसे भी धन के लिये अपील है मदद दीजिये ताकि मन्दिर पूर्ण बन जावे।

—आर. किशुन दयाल

वेद-मन्त्र का अनुशीलन

[पृष्ठ १ का शेष]

इस मन्त्र में शिक्षा दी गई है कि संसार भर को आर्य बनाओ। इसके लिए कुछ आवश्यक तत्त्व भी बताए गए हैं, जिनके पालन से आर्यत्व का प्रचार हो सकता है। वे तत्त्व हैं—१. आस्तिकता का प्रचार, २. कर्मठता, ३. स्वार्थी तत्त्वों का विनाश।

संसार में सभी की कामना रहती है कि श्रेष्ठ बनें। आर्य किन गुणों से बनता है? इसके लिए बताया गया है कि जो मर्यादा का पालन करता है, सत्कर्मों को करता है और दुर्गुणों को छोड़ता है; वह आर्य है।

कर्तव्यमाचरन् कर्म, अकर्तव्यमनाचरन्।
तिष्ठति प्रकृताचारे,य: स आर्य इति स्मृत:॥ वसिष्ठ स्मृति

चाणक्य का भी कथन है कि आर्यवृत्त अर्थात् आर्यों के चरित्र का अनुसरण करे।

आर्यवृत्तम् अनुतिष्ठेत्। चा० सूत्र ३१०

आर्यत्व के प्रचार के लिए आवश्यक है कि जन-साधारण में आस्तिकता की भावना उत्पन्न की जाए। जब तक मनुष्य के हृदय में आस्तिकता का अभाव। अत: लोगों में ईश्वर के प्रति अनुराग और निष्ठा उत्पन्न करनी होगी।

आर्यत्व के लिए दूसरा कर्तव्य है—कर्मठता, कर्मनिष्ठा या कार्य-संलग्नता। कर्मठता या उद्योग ही किसी समाज या राष्ट्र को आगे बढ़ाता है। कर्तव्यनिष्ठा जागरूक समाज का सर्वोत्तम लक्षण है।

मन्त्र में तीसरी बात कही गई है कि आर्यत्व के प्रसार के लिए स्वार्थी तत्त्वों को नष्ट करना आवश्यक है। इन स्वार्थी तत्त्वों को अरावन् अर्थात् अदाता कहा गया है। स्वार्थभावना समाजहित और राष्ट्रहित को नष्ट कर देती है। अत: मन्त्र की शिक्षा है कि स्वार्थी तत्त्वों को सर्वथा नष्ट करें।

पशु दिवस के अवसर पर पशुओं की हत्या का विरोध

आर्य प्रतिनिधि सभा नीदरलैण्ड का सरकार को ज्ञापन डा० महेन्द्रस्वरूप ने ४ अक्टूबर १९८८ से ४ अक्टूबर १९८९ तक नीदरलैण्ड में "Het Jaar Van Het Dier" अंग्रेजी में अनुवाद "अर्थात् जानवरों का साल" के रूप में साल भर जानवरों की सुविधाओं, देखभाल और जानवरों के साथ उचित व्यवहार किया जाये इसके बारे मे टेलीविजन व समाचार पत्रों द्वारा बड़ा प्रचार किया गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा, नीदर लैण्ड की तरफ से सभा प्रधान डा० महेन्द्र स्वरूप ने २ अक्टूबर १९८८ को नीदर लैण्ड की महारानी तथा सरकार को पत्र लिख कर तथा समाचार पत्रों में भी लेख भेज कर सब से पहले विरोध किया। नीदर लैण्ड की महारानी ने पत्र को कृषिमन्त्री को भेजा जिसका उत्तर २४-२-१९८९ को आया जिसे मैं अपने २ अक्टूबर १९८८ के पत्र के साथ भेज रहा हूं। इस वर्ष फिर ४ अक्टूबर १९९० को आर्य प्रतिनिधि सभा, नीदर लैण्ड की तरफ से जलूस के रूप में पार्लियामेण्ट भवन पर प्रदर्शन करके विरोध किया कि जानवरों के दिवस पर कोई जानवर ना मारा जाये और सब बूचड़खानो में जहां जानवरों को काटा जाता है वहा ४ अक्टूबर को छुट्टी रहनी चाहिये।

प्रधान मन्त्री से ४ अक्टूबर को भेंट ना हो सकी पर प्रधान मन्त्री व दोनों पार्लियामेण्ट के अध्यक्षों व मन्त्री महोदय को भी विरोध पत्र दिये। जब तक केवल ४ अक्टूबर के दिन (जिसे यहां जानवरों के दिवस के रूप में मनाते हैं) जानवरों का मारना बन्द नहीं होगा तब तक आर्य प्रतिनिधि सभा नीदर लैण्ड हर वर्ष पार्लियामेण्ट भवन के सामने प्रदर्शन किया करेगी।

महेन्द्र स्वरूप, प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा, नीदर लैण्ड

सम्पादकीय—

उपासना ही व्यक्तित्व निर्माण में साधक है

हर पूजा उपचार का एक तत्व दर्शन है, उस क्रिया के माध्यम से कुछ सोचना सीखना पड़ता है और तदनुरूप ढलने के लिए इष्ट-देव के प्रति आत्म समर्पण का अभ्यास करना होता है। वस्तुत: विभिन्न साधना उपचारों के पीछे छिपा हुआ प्रेरणा प्रवाह ही दिव्य शक्ति की प्रचण्डता से ओत-प्रोत प्राण-पुंज है। यदि उसे न समझा जाए और न हृदयंगम किया जाए तो फिर इतना ही समझना चाहिए कि मात्र क्रिया-कृत्यों तक सीमित श्रम उपचार से कोई वैसा बड़ा प्रयोजन सिद्ध न हो सकेगा जैसी कि आमतौर से अपेक्षा की जाती है। किन्तु यदि कर्म काण्डों से सन्निहित भावनिष्ठा को सच्चे अर्थों में हृदयंगम किया गया तदनुरूप जीवन चर्या को ढाला गया तो निश्चित रूप से अन्त: चेतना में देवत्व की उमगें उभरेंगी और व्यक्तित्व उच्च स्तरीय बनाने के साथ-साथ अद्भुत कार्य कर सकने में समर्थ सिद्ध पुरुष भी बना देगी।

देव शक्तियों के स्वरूप, स्तर एवं क्रिया-कलाप के सम्बन्ध में इस तथ्य को जितनी जल्दी समझा जा सके उतना ही उत्तम है कि वे चमचागीरी, जीभ की लपालपी, छोटे-मोटे पुष्प दीप जैसे उप-हारों से प्रभावित होकर किसी को अपना भक्त मान बैठने और उसकी उचित अनुचित कामनाओं की तत्काल पूर्ति में लग जाने वाले नहीं हैं। इस आधार पर उन्हें फुसलाने-बहलाने को ही यदि कोई पूजा याचना समझता हो तो इस भ्रम-जंजाल में फंसने के उपरात निराश होने की अपेक्षा यही अच्छा है कि बिना किसी भजन-पूजन के ही काम चलाया जाए। पुरुषार्थ के आधार पर सफलता पाने में नीतिमत्ता भी है और वास्तविकता भी। छुटपुट जादुई उपचारो के उल्टे उस्तरे से देवताओं की हजामत बनाने के धन्धे मे हाथ डालने की उपेक्षा उसे न करना ही अधिक समझदारी की बात है।

देवताओं को पूजा बटोरने और वरदान बांटते रहने वाले अन्धेर नगरी का बेवूफ राजा नहीं मान बैठना चाहिए और न उनसे पात्रता का अभाव रहने पर भी मनमाने अनुग्रह पाने की आशा ही करनी चाहिए। दैवीशक्तियां देती तो बहुत कुछ हैं पर देने से पूर्व हजार बार यह ठोकती बजाती हैं कि मागने वाला आखिर किस स्तर का व्यक्ति है? अनुदानों का सदुपयोग करने की उसकी प्रमाणिकता क्या है? जो मागा जा रहा है वह किस प्रयोजन के लिए है? इन प्रश्नो का सन्तोषजनक उत्तर मिलने पर ही देवता किसी को अपना अनुग्रह अनुदान देते देखे गये हैं।

पेड़ों की आकर्षण शक्ति, आकाश मे उड़ने वाले बादलों को धरती पर उतरने और बरसने के लिए विवश करती है। साधक की चरित्र निष्ठा और समाज निष्ठा का समन्वय ही ऐसी आकर्षण शक्ति का उद्भव करता है। जो देवी अनुदानों को साधक पर बरसने के लिए विवश कर सके। अस्तु मनुहार के लाभ लालच में दैवी शक्तियों को बहेलियों और मल्लाहों की तरह फसाने का विचार छोड़कर अपना प्रयास यह करना चाहिए कि अपनी पात्रता किस प्रकार इस स्तर तक विकसित की जाए कि दैवी शक्तियों को बादलों की तरह बरसने के लिए विवश होना पड़े। बर्तन जितने बड़े होते हैं उतना ही पानी उनमें भरा जा सकता है। विपुल जलाशय भी बर्तन की परिधि से अधिक पानी दे सकने में असमर्थ रहते हैं। दैवी शक्तियां भी ऐसे अनुबन्धों मे बन्धी हुई हैं।

वरदान मांगने की अपेक्षा अपनी स्थिति ऐसी बनानी चाहिए कि दूसरे को वरदान दे सकना अपने लिए भी सम्भव हो सके। वस्तुत: आशीर्वाद देना उदारमना सन्तों का ही काम है। पिछड़ों को उठाने असक्तों की सहायता करने और विकासोन्मुखों को छात्र-वृत्ति देने जैसे उदात्त प्रयोजन सन्तों को ही पूरे करने पड़ते हैं। भगवान तो एक व्यवस्था मात्र है। जो आग या बिजली की तरह मात्र सदुपयोग की शर्त पर ही अनुग्रह करता है। दुरुपयोग की कुमार्गगामिता का दण्ड देने में ईश्वर भी नहीं चूकता। इस संदर्भ में उसे भक्त-अभक्त में कोई अन्तर करते नहीं पाया जाता। नौकरी पाने के लिए अर्जी देनी पड़ती है और मंजूरी भी उसी पर मिलती है। पर यह ध्यान देने की बात है कि इस बीच आवेदनकर्ता को परीक्षा एवं प्रतियोगित से होकर अनुकम्पा नहीं करने लगता वरन यह भी देखता है कि प्रार्थना करने वाला अभीष्ट पात्रता एवं प्रामाणिकता अर्जित किये हुए है या नही?

उपासना का वास्तविक प्रयोजन अपने मन मन्दिर को बुहार कर इस योग्य बनाना है कि उस स्वच्छता से सन्तुष्ट होकर ब्राह्मी शक्ति उस क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए सहमत हो सके। शरीर को नित्य स्नान कराते हैं, कपड़े नित्य धोते हैं, दांतों का मजन नित्य करना होता है, कमरे में झाड़ू नित्य लगाते हैं, इस दैनिक स्वच्छता का प्रयोजन इतना ही है कि मलीनता के कारण उत्पन्न होने वाली दुर्गन्ध, रुग्णता एवं कुरुचि से बचा जा सके। इसमें कोई अतिरिक्त चमत्कार नही होता। स्वच्छता अपनाने से चित्त हलका होता है। सभ्य लोगों की पंक्ति में सम्मानपूर्वक बैठने का द्वार खुलता है और मलीनता जन्य बीमारियों से सहज ही बचाव होता रहता है। इतने से सन्तुष्ट होकर कोई स्नान, मंजन आदि से ऋद्धि-सिद्धियों के वरदान चमत्कार चाहे तो उसे बाल बुद्धि, बचकाना ही कहा जायेगा उपासना के फलितार्थों के सम्बन्ध में भी इस दृष्टिकोण से सोचा जाना चाहिए।

ईश्वर आदर्शों का समुच्चय है। उपासना का अर्थ होता है समीप बैठना। समीप बैठना वैसा जैसा कि गीली लकड़ी आग के समीप पहुंच कर अपना गीलापन समाप्त कर लेती है और आग की ऊष्मा को अपने में धारण करके सूखती चली जाती है। अधिक निकट पहुचने पर स्वयं आग बन जाती है। उपासना का वास्तविक स्वरूप यही है। महानता की समस्त उत्कृष्टताओं के पुंज, पर-मेश्वर का सानिध्य प्राप्त करके साधक उसकी गुण गरिमा को क्रमश: अपने में अधिकाधिक मात्रा में भरता चला जाए। यही दैवी विभूतियां व्यक्तित्व को श्रेष्ठ शान्त उदार और उदत्त बनाती हैं। कहना न होगा कि व्यक्तित्व सम्पन्न व्यक्ति एक प्रकार से सिद्ध पुरुष ही होता है उसका मूल्य हर क्षेत्र में सामान्य मनुष्यों की तुलना में हजारो-लाखो गुना अधिक आका जाता है। तदनुरूप उस पर चारो ओर से सम्मान सहयोग भी बरसता है। जो इस स्तर का लाभ पा सकेगा उसे सम्भवत: उच्चस्तरीय सफलताएं भी मिलती चली जायेंगी। ऐसे लोग ही हर क्षेत्र में श्रेय पाते और प्रगति के उच्च शिखर पर जा पहुंचते हैं। इसी सुखद प्रतिफल को यदि कोई चाहे तो उपासना का चमत्कार कह सकता है।

ईश्वर निष्पक्ष न्यायकारी है, उसके दरबार में किसी का मूल्य उसकी प्रामाणिकता एव परमार्थ परायणता के आधार पर ही आंका जाता है। न उसे प्रशंसा की आवश्यकता है न पूजा सामग्री की। नाम लेने न लेने का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। उसे किसी उपहार की भी आवश्यकता नहीं। विश्व सम्पदा के अधिष्ठाता की ऐसी इच्छा आवश्यकता हो भी नहीं सकती। यह हमारी अपनी क्षुद्रता है जो इतनी बड़ी शक्ति का नगण्य उपहारों से प्रभावित करके उससे उचित, अनुचित मनोरथो की पूर्ति करा लेने की बात सोचते हैं। ऐसा पक्षपात तो कोई ईमानदार भी नहीं करता। फिर

[शेष पृष्ठ ६ पर]

आर्य समाज नीदरलैण्ड में पं. सच्चिदानन्द शास्त्री के कार्यक्रम

आर्य प्रतिनिधि सभा, नीदरलैण्ड के प्रधान डा० महेन्द्रस्वरूप जी के आमन्त्रण पर मैं नीदरलण्ड ६ अक्टू ९० को दिल्ली से प्रात चलकर रात्रि ९।। बजे अम्सटडेम हवाई अड्डे पर उतरा।

सामान लेकर बाहर आने पर देखा--

डा० महेन्द्र स्वरूप जी प्रधान सभा श्री शुभधन जी अम्सटडेम श्री देवनारायण शुभधन रोटरडेम, श्रद्धानन्द माल्हू आदि आर्य नेताओ के दर्शन किये जो मुझे लेने आये थे। हवाई अड्डे से चलकर प० शुभधन जी के घर आवास की व्यवस्था रखी गई और एक मास तक पडित जी का आतिथ्य स्वीकार किया।



डा० महेन्द्र स्वरूप
प्रधान-आर्य प्रतिनिधि सभा नीदरलैंड

एक बार रोटरडेम मे प० देवनारायण शुभधन जी के घर पर भी ५-६ दिन निवास किया साथ ही २ दिन प० बिश्वेश्वर जी के घर भी रहा।

कार्यक्रम निम्न प्रकार रहे :

प्रारम्भ में उसी दिन

(१) ७ तारीख को प० अवधबिहारी जी की वर्षगाठ पर यज्ञ-भाषण, इतरख मे हुआ।

(२) प० शिवराज जी के घर पर आर्यसमाज भवन का उद्घाटन-मार्सनबुक मे हिन्दी विद्यालय देखने गये।

अम्सटडेम, रोटरडम आर्य सभा प्रभाकर आर्य स , फैकल, आसन, शाति बिनय, रोटरडम, अम्सडम आदि स्थानो पर भाषण दिये।

दीपावलि पर्व पर

रेडियो द्वारा दीपावलि पर्व का महत्व और स्वामी दयानन्द पर आधा घण्टे का भाषण हुआ।

१५ १५ मिनट के तीन भाषण आर्य समाज का सन्देश स्वामी दयानन्द और वेद विषय पर विचार रेडियो पर दिए।

समुद्र में ३० कि. मी लम्बा बाध और ५ कि मी खम्भो पर समुद्र में पुल तथा लाखो बीघा कृषि भूमि समुद्र पार कर बनाना फूलन डाम देखा।

आर्य प्रतिनिधि सभा के सघठन पर सन रणजीत रामवरन मतइ आदि से बातचीत तथा द्वितीय पक्ष डा० महेन्द्र स्वरूप से वार्ता करके एक स्थिति पैदा की।

सभी आर्य समाजो मे भाषणो ने रुचि ली और भाषणो का आयोजन किया।

एक मास के पश्चात भारत वापसी का समय आ गया। सन रणजीत और मतऊ आर्य प्रतिनिधि आर्य समाज द्वारा सभा मन्त्री प० सच्चिदानन्द शास्त्री का अभिनन्दन करके उन्हे सूरीनाम के नक्शे पर बनी एक घडी भेट की।

प्रतिनिधि आर्य समाज नीदरलैण्ड आसन में विदाई समारोह

सम्पूर्ण अक्टूबर १९९० मास मे वैदिक धर्मप्रचार पूर्ण कर भारत वापसी की तैयारी मे लगा था। तभी सन रणजीत मन्त्री प्रतिनिधि आर्य समाज



श्री रणजीत आर्य मन्त्री प्रतिनिधि
आर्य समाज नीदरलैंड



श्री श्रद्धानन्द माल्हू
आर्य समाज रोटरडेम
(वेद प्रचार मे विशेष सहयोगी रहे)

का सन्देश मिला कि ३ नवम्बर को हम सभी आर्यजन आपसे कुछ वार्ता और विदाई समारोह का कार्यक्रम रख रहे हैं। मैं स्वीकृति देकर ठीक समय पर पहुच गया।

सभापति राम्बरन मतौ ने अध्यक्षता की और सभी आगन्तुक जनो का परिचय कराया गया। बीच मे मन्त्री श्री रणजीत जी ने सक्षिप्त नीदरलैण्ड आर्य समाओ का परिचय देकर अपनी कुछ परेशानी भी बताई, जो सगठन सम्बन्धी थी फिर उन्होंने योरुपीय देशो का एक सम्मेलन नीदरलण्ड मे करने का विचार रखा। शास्त्री जी ने सभी जनो का अपने आगमन पर कार्यक्रम रखने और उनके विचारो को सुनने पर बधाई दी।

साथ ही सार्वदेशिक सभा को जो कुछ राशि भिन्न-२ स्थानो पर दी गई उसके लिए भी सभी को धन्यवाद दिया और कहा कि योरोपीय सम्मेलन न कर अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का रूप दे और समय अनुकूल होने पर आयोजन करे। लगभग दो हजार व्यक्तियो के आवास भोजन की व्यवस्था करे। इस पर कुछ व्यक्ति मिलकर (डा. महेन्द्र स्वरूप जी तथा रामवरन मतौ) योजना को सही रूप दे। अन्त मे धन्यवाद के साथ शान्ति-पाठ कर सभा विसर्जित की गई।

हिन्दू आर्यों की स्थिति और संस्कृति का विनाश

-स्वामी दयानन्द का आगमन

१८ वी शताब्दी मे एक ओर भारत की स्थिति एक गीले (गुथे) आटे के समान थी। जिसे दोनो ओर से खतरा था। यदि बाहर रखे तो कौवे आदि से भय और अन्दर रखे तो चूहो से भय, दोनो ही खाने की तलाश में थे।

भारत वासियो और उनकी सस्कृति के विनाश पर ७ सौ साल तक मुगलो के अत्याचार रहे इसके बाद अग्रेजो के शासन मे अत्याचार सस्कृति सभ्यता का विनाश, इतिहास, रहन सहन, खान, पान, धर्म, पूजा पाठ पर आघात से त्रस्त आर्य जन किसी महापुरुष के आगमन की प्रतीक्षा मे थे तभी मूलशकर के रूप मे एक महापुरुष का अवतार हुआ। वही बाद मे स्वामी दयानन्द सरस्वती के नाम से धर्म, जाति, समाज सुधारक के रूप मे जाना गया।

महर्षि ने अपना उत्तराधिकारी आर्य समाज के नाम से एक सस्था को जन्म दिया। जिसने देश-विदेश मे जो काया पलट की वह इतिहास के पृष्ठ पर स्वर्णाक्षरो मे अकित है।

मैं जब नीदरलैण्ड गया तो वहा के आर्य भाइयों मे महर्षि दयानन्द के प्रति जो आस्था भाव देखने को मिले वही आर्यसमाज के द्वारा वहाँ आज भी विद्यमान है।

आर्य जनता मे उत्साह धर्म के भाव वैदिक धर्म के प्रति श्रद्धा देखकर लगा कि घर में घुसे चोरो से हम कितना सावधान हैं। इसे ऋषियो की मान मर्यादा के साथ सुरक्षित रखना है। [शेष पृष्ठ १५ पर]

मारीशस में आर्यसमाज : स्थापना की ८०वीं वर्षगांठ

पण्डित धर्मवीर घूरा, शास्त्री, मन्त्री उपदेशक मण्डल आर्य सभा मारीशस बाक्वा

प्रथम तो हम चलें देखें कि हिन्द महासागर के बीच माडेगास्कर के दक्षिण में, मारीशस टापू में आर्यसमाज का कार्य प्रारम्भ हो सका।

मारीशस मे सन् १८९९ में भारतीय पलटन के सिपाहियों द्वारा यहां के प्रथम आर्य समाजी भाइयो को विशेषकर कुछ सत्यार्थप्रकाश प्रदान किये गये। आप थे पण्डित तिवारी जी, पर जाते समय स्वदेश के लिए आपने यह अमूल्य ग्रन्थ श्री भिखारीसिंह जी दिया अपने कुछ मित्रोके साथ इस ग्रन्थका पठन प्रारम्भ किया और सन् १९१० ई० मे जब आर्यसमाज की नींव क्यूपीपें नगर मे रखी गई तो सर्वप्रथम प्रधान श्री खेमलाल लाला जी और मन्त्री श्री गुरुप्रसाद दलजीतलाल जी को नियुक्त किया गया। उस समय केवल १७ सदस्य थे, लोगो ने कठिन परिश्रम और त्याग के साथ काम करना शुरू किया। वे आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी के विचारो को और सत्यार्थ प्रकाश की बातो को जन समुदाय में समझाने में लग गये। सन् १९०१ में महात्मा गाधी जी दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटने लगे तो कुछ दिनों के लिए इस टापू में भी रुके हुए थे। आपने यहां पर प्रवासी भारतीयों को कहा कि—

१—एकता से रहो।
२—अपने बच्चों को खूब पढ़ाओ।
३—राजनीति में भी सहयोग दो।

गाधीजी तब चले गये। सन् १९०७में आपने डा०मगनलाल मणिलाल जी को हमारी स्थिति मे सुधार लाने के उद्देश्य से यहा पर भेजा, डा० जी सपत्निक विराजे थे। आप ही के सहयोग से मारीशस में आर्यसमाज का कार्य अधिक बल पकडने लगा। आपने यहा पर हमारे लिए प्रथम प्रेस मगाया। आज भी वह प्रेस आर्य सभा में पड़ा है, २ जून सन् १९११मे वैदिक धर्म प्रचार के लिए आर्य पत्रिका निकाली गई। आज तक आर्य समाज द्वारा आर्य सिद्धान्त के प्रचार प्रसार के उद्देश्य से आर्य सभा मारीशस एक पाक्षिक हिन्दी अंग्रेजी पत्र आर्योदय निकालने में लगी है। ८०वी वर्षगाठ के शुभावसर पर एक आर्योदय, स्मारिका का प्रकाशन करवाया है जो पठनीय है। यह अक ऐतिहासिक है।

इस ऐतिहासिक अवसर पर स्वामी सत्यप्रकाश जी भारत से पधारे थे, यहा पर तीन मास तक प्रचार कार्य करने के बाद आप अक्तूबर मास के अन्त में स्वदेश लौट गये। जो स्मारिका छापी है उसमें आपके दो सुन्दर तथा सारगर्भित लेख हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं मे छपे हैं।

मारीशस में सर्वप्रथम स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी ने सन् १९१४ मे पदार्पण किया था। आपने यहा पर २ वर्ष तक डट कर काम किया। इस टापू की सभी दिशाओ मे आप गये। आर्यसमाज की अनेक नई-नई शाखाए खुलवाई। यहा के जवानो को प्रचार कार्य और शिक्षण कार्य करने के लिए प्रेरित किया। जब आप भारत जाने लगे तो आप ही की प्रेरणा से प्रेरित होकर युवक काशीनाथ किस्टो जी और युवक सहदेव रामा जी भारत गये वे विद्याध्ययन करके लौटे। तब आप दोनो प० काशीनाथ किस्टो और प० सहदेव रामा नामसे यहा पर विख्यात प्रचारक और लेखकभी बने तत्पश्चात् तेज गति से कार्य करने लगे। प० काशीनाथ जी ने बाक्वा नगर मे सन् १९२२ ई० में आर्यन वैदिक स्कूल खोला, उस समय केवल १२ विद्यार्थी पढ़ने आते थे और आज १००० से अधिक विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण के लिए आते हैं। इस पाठशाला मे यहा के पुलिस कमिश्नर जो एक प्रवासी भारतीय हैं आपके बच्चे भी पढ़ने आते हैं, ७५ डाक्टर, बैरिस्टर आदि के भी बच्चे आते हैं। इस देश की नामी पाठशालाओ में एक है। सब शिक्षण कार्य यहां के शिक्षा मन्त्रालय द्वारा चलाये जाते हैं। सरकारी सहायता प्रचुर मात्रा मे मिलती है। आर्य समाज एक डी० ए० वी० कालेज भी चलती है जिसका निर्माण सन् १९७० में किया गया था। यहा पर करीब ५०० विद्यार्थी हैं। यह राजधानी पोटलुई में है। आर्य भवन के एकदम पास। आर्य सभा की और प्राथमिक पाठशालाए लावाचीर और,कुआशेरी गावो में हैं जहा कि करीब १,००० विद्यार्थी पढते हैं। इन शिक्षालयो मे हिन्दी, उर्दू तमिल तेलेगू, मराठी, अरबी, अंग्रेजी तथा फ्रेन्च भाषाए पढाई जाती हैं। रविवारो को धार्मिक, सैद्धान्तिक और साहित्य की माध्यमिक कक्षाए चलाई जाती हैं। यहा सस्कृत की भी पढ़ाई होती है।



प० धर्मवीर जी घूरा

यहा पर एक बात स्मरणीय है कि प० काशीनाथ किस्टो जी ने सन् १९४१ ई० में आर्य वीर का प्रकाशन किया था। आर्य पत्रिका का प्रकाशन सन् १९११ में किया गया था। आर्यसमाज द्वारा प्रकाशित पत्रो ने रामबाण का सा कार्य किया। दर्जनो लेखकों लेखिकाओं तथा कवियो को जन्म दिया। लिखने के लिए प्रेरित किया।

आर्य समाज के प्रचार के बावजूद भी गत १० वर्षों में १०हजार प्रवासी भारतीय सन्तानें गैर धर्मों में चली गई। इससे हमें बहुत दुखी होना पडता है, यदि यहा पर ८० वर्षों से आर्य समाज का कार्य नही होता तो स्थिति और चिन्ताजनक होती। प० वासुदेव विष्णुदयाल जी एम०ए० जो लाहौर के डी०ए०वी० मे पढ़कर स्वदेश लौटे उन्होने गत ४० वर्षों के अन्दर प्रकाशन और लेखन के क्षेत्रों में बहुत ही प्रशसनीय कार्य किया हैं। पर अब आप वृद्धावस्था के कारण बीमार रहते हैं और आराम तथा सेवा मे लगे हैं हमारे इतिहास मे आपका नाम स्वर्ण अक्षरो द्वारा लिखा जायेगा और लिखा जा रहा है। यहा पर आपने एक नव जागरण ला दिया आपने वेदों पर खोजका कार्य कियाहै और विश्व के चोटीके अंग्रेजी तथा फ्रेन्च पत्रो में भी शोध लेख दिये। (क्रमश)

मुझे गर्व है मैं हिन्दू हूं : चन्द्रशेखर

देश का सौभाग्य है कि आठवें प्रधानमन्त्री के रूप मे हमारे देश को एक दृढ़ राष्ट्रवादी नेता श्री चन्द्रशेखर का नेतृत्व प्राप्त हुआ है, परन्तु साथ ही कार्यकाल की अनिश्चितता इस प्रधान मन्त्री के गले का कांटा बनी हुई है। ७ नवम्बर को वी पी सिंह के बहुमत खोने तथा १६ नवम्बर को ही श्री चन्द्रशेखर के बहुमत प्राप्त करने के अवसर पर संसद में जो भाषण बाजिया हुई उनमे प्रत्येक अवसर पर श्री चन्द्रशेखर ने अपने विचारों को राष्ट्रवादिता और समाजवादिता से प्रेरित होकर प्रस्तुत किया। श्री चन्द्रशेखर ने १६ नवम्बर को लोक सभा मे ही कहा था कि मुझे गर्व है मैं हिन्दू हू। उनकी इस टिप्पणी पर एक अंग्रेजी दैनिक की तरफ से एक विशेष साक्षात्कार किया गया जिसमें पता चलता है कि श्री चन्द्रशेखर देश की सामाजिक और धार्मिक परिस्थितियो से ही नहीं, देश के गौरव पूर्ण इतिहास और भारतीय संस्कृति की मूल भावनाओ से भी पूर्ण रूप से परिचित है।

श्री चन्द्रशेखर का कहना है कि आधुनिक धर्म समुदायो ने अपनी-अपनी निश्चित मान्यताए और औपचारिकताए घोषित कर रखी हैं और उनके अनुयायी यदि उन औपचारिकताओ से बाहर जाते है तो उन्हे इस मत से बाहर कर दिया जाता है, परन्तु हिन्दू धर्म समुदाय एक ऐसा मत है जिसमे आस्तिक और नास्तिक दोनो ही हिन्दू हैं। कोई एक तरीके से पूजा करे या किसी अन्य तरीके से, किन्ही औपचारिकताओ का पालन करे या न करे। इस प्रकार व्यक्ति का मन बन्धनो से मुक्त होकर स्वतन्त्र प्रकृति का बनता है। दूसरा हिन्दू मत मे अन्य मतों की निन्दा आदि कही नही की गई। इन सब कारणो से हिन्दू मत ही सर्वश्रेष्ठ है क्योकि इस मत मे सबके लिए समान आदर है। इस विशेषता के बिना तो इस मत का अस्तित्व ही असम्भव था। इस मत के मानने वाले वालो का सैनिकीकरण करने का जब भी प्रयास हुआ वह असफल रहा।

श्री चन्द्रशेखर ने यह भी कहा कि यदि मेरे इन विचारो को लोग गलत अर्थ में समझते हैं तो मुझे उसकी भी कोई चिन्ता नहीं है। जिनके दिमाग गन्दे हैं वे अच्छी चीजो को भी गलत ही समझते हैं। उन्होंने स्पष्ट कहा कि मेरा विचार हिन्दुओ की चापलूसी या उन्हें बहकाना नहीं है। हिन्दुओं को चापलूसी के बल पर नहीं जीता जा सकता क्योकि हिन्दू मत का मार्ग दर्शन करने के लिए एक अलग तर्क और ज्ञान है। जाति और मत-मतान्तरो के चक्कर मे वह लोग पड़ते हैं जिन्हें भविष्य से कोई आशा न हो। यदि हम मानवता और उसकी समस्याओ को नही समझते तो किसी मत-मतान्तर के पालन का कोई लाभ नही।

स्वा. विवेकानन्द ने एक बार कहा था कि एक मेढक कुए मे गिरा और जब बाहर नही निकल पा रहा था तो उसने यह विश्वास कर लिया कि समुद्र इससे बड़ा नहीं हो सकता। इसी प्रकार आज के मत-मतान्तरो ने अपना-अपना कुआ बना रखा है जिसमें गिरने के बाद मानवता के समुद्र को देखने में लोग असमर्थ होते हैं।

श्री चन्द्रशेखर ने कहा महाकवि तुलसी दास तो बाबर के काफी बाद में पैदा हुए। उन्होने रामायण लिखी और उनसे बढ़कर रामभक्त कोई नहीं हो सकता। परन्तु उन्होंने भी इस्लाम धर्म के विरुद्ध एक शब्द भी नहीं कहा। यह था हिन्दू धर्म मत, इसलिए मुझे हिन्दू होने पर गर्व है। यह कोई साम्प्रदायिकता नही है। यह तो अपनी सभ्यता, संस्कृति और पैतृक विचार-धारा पर गर्व करने वाली बात है। कोई भी व्यक्ति जिसे अपने देश के इतिहास पर गर्व न हो, वर्तमान का ज्ञान न हो और भविष्य से आशा न हो वह राष्ट्रवादी नही हो सकता।

दोनो मतो के नेताओ से अपील करते हुए श्री चन्द्रशेखर ने कहा कि जब बाबर इस देश मे आया था तो उस समय मात्र १०,००० मुसलमान थे जब उन्हे समाप्त नही किया जा सका तो आज १२ करोड़ मुसलमानो को इस देश मे क्या खतरा हो सकता है। दूसरी तरफ जब बाबर, औरंगजेब और तैमूर जैसे मुसलमान शासक हिन्दू मत को समाप्त नही कर सके तो आज के कुछ मुल्ला व मौलवी इसे कैसे समाप्त कर सकते हैं। अत लोग इस वास्तविकता को समझे और स्वीकार करें कि समस्या का समाधान इकट्ठे बैठकर विचार करने से ही होगा।

इसके अतिरिक्त देश की अन्य सभी समस्याओ पर भी नए प्रधानमन्त्री ने पिछले कुछ दिनो मे जो विचार व्यक्त किए हैं उनसे धैर्य और दृढ़ता की झलक मिलती है। हम ये कामना करते है कि परमात्मा श्री चन्द्रशेखर के इस उत्साह में वृद्धि करे तथा प्रशासनिक कुशलता दिखाने की उन्हे सामर्थ्य प्रदान करे। दूसरी तरह हमें इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि मूल प्रश्न यह नही है कि सरकार या कोई राजनीतिक दल हमारे लिये क्या कर सकता है। मूल प्रश्न यह है कि हम सब देशवासी किस प्रकार यथा स्थान देश के भविष्य को उज्ज्वल बनाने मे सहयोग कर सकते हैं।

—विमल वधावन एडवोकेट

साम्प्रदायिकता विरोधी आयोजन

–आचार्य रामकिशोर शर्मा

देश मे बढ़ती हुई साम्प्रदायिकता पर अकुश लगाने के लिए उत्तर प्रदेश शासन ने साम्प्रदायिकता विरोधी सघर्ष समिति का गठन किया है। वामपन्थी दल भी इसके सहयोगी हैं। एक जुलाई को लखनऊ मे भाकपा के महासचिव [श्री इन्द्रजीत गुप्त ने कहा कि वामपन्थी दल ७, १३ और १६ सितम्बर को क्रमश मथुरा, वाराणसी और फैजाबाद मे प्रदर्शना और रैलियो का आयोजन किया। उन्होने कहा कि इन्ही शहरो में रैलिया आयोजित करने की योजना इसलिए बनाई गई क्योकि विश्वहिन्दूपरिषद् इन्ही शहरो में तीन धार्मिक स्थलो की मुक्ति की माँग कर रही है। श्री गुप्त ने कहा कि अन्त मे १० अक्टूबर को लखनऊ मे एक विशाल रैली आयोजित की गई। भाकपा के महासचिव ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी को छोड़कर देश के सभी प्रमुख राजनैतिक दल अयोध्या मे इस विवादित स्थल की यथा स्थिति भग किए जाने के पक्ष मे नही हैं। राष्ट्र के खण्ड २ कर देने वाली साम्प्रदायिकता पर रोक लगनी ही चाहिये। अग्रेजो द्वारा भड़काई गई साम्प्रदायिकता के कारण ही तो सभी सम्प्रदायो के राष्ट्रभक्त नेताओ के विरोध करने पर भी सन् १९४७ में भारत का विभाजन हो गया, जिसके फलस्वरूप एक करोड़ से अधिक लोग बेघरबार तथा लगभग साढे सात लाख असमय मे काल के गाल मे चले गए विगत इतिहास से शिक्षा लेकर विशुद्ध राष्ट्रीय भावना से यदि इसका उपचार किया जाता है तो मैं समझता हू प्रत्येक राष्ट्रभक्त का समर्थन मिलेगा अन्यथा वोट बैंक मात्र की कामना से अब तक की भाति इसे मिटाने का नाटक किया गया सो रोग बढता ही गया ज्यो ज्यो दवा की वाली स्थिति बनी रहेगी।

इसीलिये इस महत्वपूर्ण विषय पर ईमानदारी से विचार होना चाहिये। प्रत्येक राष्ट्र मे सस्कृति, सभ्यता भूमि भाषा एव पूर्वज पृथक २ होते हैं। उनका सम्मान करना ही राष्ट्रीयता है यही सामान्य नियम है। किन्तु यहा राष्ट्रीयता के नाम पर जो कुछ किया गया और किया जा रहा है उससे साम्प्रदायिकता को ही बल मिला और मिल रहा है। १५ जुलाई को लखनऊ मे वामपन्थी दलों द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय साम्प्रदायिकता विरोधी सम्मेलन मे मुख्यमन्त्री श्री मुलायमसिंह यादव ने कहा कि राज्य सरकार राम जन्मभूमि बाबरी मस्जिद विवाद पर प्रधानमन्त्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह का समर्थन करती रहेगी। इसी सम्मेलन में जनता दल के वरिष्ठ नेता श्री चन्द्रशेखर ने कहा कि अयोध्या मे प्रस्तावित राम मन्दिर के गम्भीर परिणाम होगे। श्री यादव ने अनेको स्थानो पर कहा कि अदालत के निर्णय से पूर्व मन्दिर का निर्माण नही करने दिया जायेगा। ५ सितम्बर को मद्रास मे तो श्री यादव ने विश्व हिन्दू परिषद् से अपील की कि वह मन्दिर निर्माण योजना वापिस ले ले। बी० एस० पी० आदि पार्टियो के नेता भी ऐसे ही विचार व्यक्त कर चुके हैं। इस सब से ऐसा प्रतीत होता है कि इन सबकी दृष्टि में अयोध्या मे श्री राम मन्दिर का निर्माण साम्प्रदायिक कार्य है। यह सब जानते हैं कि श्री राम इस देश के पूर्वज हैं उनका जन्म अयोध्या मे हुआ जन्म स्थान पर ही महाराज वीर विक्रमादित्य ने मन्दिर का निर्माण कराया। १५२८ मे बाबर के सेनापति मीरबाकी ने मन्दिर को तुड़वाया। मन्दिर की रक्षा और वापिस लेने हेतु हुये ७६ युद्धो में तीन लाख से अधिक हिन्दू वीरो का बलिदान हुआ। राष्ट्रीय मुसलमान बन्धु भी इसे हिन्दुओ को सौंपने का शासन से आग्रह कर रहे हैं।

भारतीय सस्कृति मे धर्म अर्थ काम और मोक्ष रूप पुरुषार्थ चतुष्टय को मानव जीवन का लक्ष्य माना है। वेद शास्त्रों मे इसके साधन बताये गए हैं। काव्यशास्त्र के आचार्य श्री विश्वनाथ जी ने काव्य को पुरुषार्थ चतुष्टय का सरलतम उपाय मानते हुये लिखा है।

"चतुर्वर्गफल प्राप्तिर्हि काव्यतो रामादि वतप्रवर्तितव्यन रावणादिवदिति कृत्याकृत्यप्रवृत्ति निवृत्त्युपदेशद्वारेण सुप्रतीतैव" अर्थात् रामादि के समान व्यवहार से पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति होती है, रावणादि के व्यवहार से नहीं। इससे स्पष्ट सिद्ध है कि श्री राम भारतीय सस्कृति के मूर्तरूप थे। यद्यपि उनका जन्म सूर्यवंशी महाप्रतापी राजा रघु के कुल में हुआ था इसी लिये उन्हें राघव भी कहा जाता है। धर्म की मर्यादाओ के अनुपम पालक होने के कारण उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम का गौरव प्राप्त हुआ। अपने देश की ही नहीं विश्व की सभी भाषाओ में उनके चरित्र को चित्रित किया गया है। अपने विशिष्ट गुणो के कारण वे केवल क्षत्रियो के ही नहीं 'अपितु सम्पूर्ण मानव जाति के आदर्श बन गये'। इसीलिये मुसलमान हो जाने पर भी इण्डोनेशिया आदि देशो के निवासी रामायण पढते है, और रामलीला का नाटक खेलते हैं रामायण सीरियल को विश्वभर में सभी ने उत्साह पूर्वक देखा। श्री गाँधी जी की रामराज्य की योजना ने ही सम्पूर्ण देश को सगठित किया था। सच तो यह है कि श्री राम भारत की आत्मा हैं उनके बिना भारत की कल्पना नही की जा सकती। उनके जन्म स्थान पर मन्दिर बनना ही चाहिये। प्रत्येक राष्ट्र मे राष्ट्रीय महापुरुषो के स्मारक है। यह विशुद्ध राष्ट्रीय कार्य है। इसे साम्प्रदायिक रग देना मूर्खता नही तो और क्या है।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के जन्म के समय केवल भारतीय सस्कृति ही थी। मानव मात्र इसी का उपासक था। वे इस देश के पूर्वज थे। यहा रहने वाले हम सभी उनके वशज हैं। सबसे उनका रक्त का सम्बन्ध है। मजहब बदल जाने से पूर्वज नही बदल जाते और पूर्वजो का सम्मान करना प्रत्येक का कर्तव्य है। इसीलिए २० अगस्त को नई दिल्ली मे ६ राष्ट्रवादी मुस्लिम सगठनो के पदाधिकारियो की सयुक्त बैठक मे फैसला किया गया, कि ३० अक्टूबर को अयोध्या मे श्री राम मन्दिर के निर्माण से पूर्व विवादास्पद बाबरी मस्जिद को स्वय मुसलमान हटाकर इस खतरनाक विवाद को समाप्त करने की पहल करेंगे। बैठक मे भारतीय मुस्लिम युवा सम्मेलन के अध्यक्ष श्री मुख्तार अब्बासनकवी मुस्लिम फारमो के अध्यक्ष श्री अम्मल सईद, मुस्लिम सघर्ष वाहिनी के अध्यक्ष श्री शरीफ जमाल कुरेशी, प्रगतिशील मुस्लिम महिलामडल की अध्यक्ष श्रीमती नफीस बेग मुसलमी ने हिन्द के अध्यक्ष मुहम्मद आलम को या राष्ट्रवादी मुस्लिम मोर्चा के अध्यक्ष डा० साबिर बेग ने भाग लिया। श्री नकवी ने कहा कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम की सस्कृति मर्यादा एव जन्मभूमि की रक्षा करना मात्र हिन्दुओ का ही कर्तव्य नही है बल्कि समस्त राष्ट्रवादी भारतीयो का धर्म है? क्योकि श्री राम किसी धर्म जाति एव समुदाय के नही हैं बल्कि वे भारत की अस्मिता, गौरव एव मर्यादा के प्रतीक हैं। अनेको अन्य मुस्लिम मनीषी भी इनसे सहमत हैं। तथा श्री राम को रसूल और उनकी जन्मभूमि को काबा के समान मानते हैं।

यह सब तथा १९४९ के बाद श्री राम जन्मभूमि मे पूजा का प्रारम्भ कराने और १ फरवरी ८६ को वहा लगा ताला खुलवाने से न्यायालय का मत जानते हुए, अयोध्या के इस स्थल को देखने गये एक दल जिसमे अवकाश प्राप्त न्यायाधीश श्री जे० डी० जैन आर० एन० शर्मा सर्वोच्च-न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता एस० एम० आबरी लखनऊ दिल्ली एव विभिन्न न्यायालयो के लगभग ५० प्रमुख विधिवेत्ता थे वहा बने साक्ष्यो के आधार पर अयोध्या के विवादित स्थल मन्दिर था जिसे तोड़कर मस्जिद बनायी गयी है वहा बने देवी देवताओ के चित्र एव कमल कलश आदि की आकृतियो से प्रमाणित है कि विवादित स्थल शतप्रतिशत हिन्दू मन्दिर है, सरकार इस मामले पर निष्पक्षता पूर्वक विचार नही कर रही है इस कथन को सुनते हुए भी श्री वी० पी० की सरकार न्यायालय का नाम लेकर सभी राष्ट्रवादी हिन्दू और मुसलमानो आदि को अपमानित किया है। परिस्थिति वश बनायी गयी नितान्त अस्थायी धारा ३७० को बनाये रख कर काश्मीर को राष्ट्र की धारा मे नही मिलने दे रही और यहा के हिन्दुओ को बरबाद कर रही है। पजाब और आसाम का आन्दोलन इसी धारा की उपज है। उर्दू विश्व विद्यालय का अल्प सख्यक बहुल ४१ जिलो के विशेष विकास का धर्मान्तरित अनुसूचित आदि जातियो को आरक्षण का किसी भी प्रदेश मे बहुसख्यक हो जाने पर भी प्राप्त सुविधाये देते रहने का आश्वासन जामामस्जिद को दान बिना किसी माग के मुहम्मद साहब के जन्म दिन को राष्ट्रीय अवकाश घोषित कर सरकार ने तुष्टिकरण की अति ही करदी। मस्जिद गिरिजाघर बनाने तथा हिन्दुओ को धर्मान्तरित करने को तो विदेशो से धन और प्रचारक आ सकते हैं, किन्तु श्री राम जन्मभूमि मन्दिर हेतु नही शासन का यह कहना हिन्दुओ का विरोध नही तो और क्या है?

(क्रमश)

सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत : स्थिर निधियां

(गताक से आगे)

श्री घरियालाल जी का दान

श्री घरियालाल जी जानकीगज लश्कर ग्वालियर निवासी ने वेद प्रचारार्थ ५ हजार रुपये की राशि २१-१-१९६० को सभा को दान मे दी थी।

श्री लाला जगन्नाथ जी का दान

स्व० श्री लाला जगन्नाथ जी दिल्ली ने अपनी पाच हजार रुपये की पोस्ट आफिस की जीवन बीमा पालिसी इस सभा को दान मे दी थी। इसमे से दो हजार रुपए दानी के निर्देशानुसार सर्वदानन्द साधु आश्रम हरदुआगज को दे दिए गए थे, शेष ३३०१) ८६ सभा को प्राप्त हुए थे। इसका ब्याज वैदिक साहित्य के प्रकाशन पर व्यय किया जाता है।

श्री मोहन लाल लखोटिया स्थिर निधि

श्री मोहनलाल जी लखोटिया, लखोटिया निकेतन १/ए, नवलोक प्रेस कलकत्ता द्वारा प्रदत्त (पाच हजार रुपये मात्र) के दान से यह स्थिर निधि कायम की गई। २१-३-१९७८ की अन्तरग बैठक ने इसकी स्वीकृति दी।

श्री स्व० रामलुभाया पुरी साहित्य प्रचार तथा सहायता निधि

श्री रामलुभाया पुरी दिल्ली के दस हजार के दान से श्री रामलुभाया पुरी साहित्य प्रचार तथा सहायता निधि के नाम से यह निधि स्थापित हुई। १६-११-१९७५ की अन्तरग ने इसकी स्वकृति दी। निधि से वेद और आर्य शास्त्रो मे नारी तथा ब्रह्म कुमारी सस्था नामक पुस्तक छपवाई गई थी।

श्री अमोलकराम स्थिर निधि

श्री अमोलकराम जी दिल्ली ने दस हजार के दान से स्थिर निधि कायम की है। गतवर्ष एक हजार रुपये से बढाकर ११०००) कर दी गई। जिसका ब्याज आर्य साहित्य के प्रकाशन मे खर्च होगा। इस निधि से अमर शहीद प० लेखराम के चित्र छपवाए गए।

१-३-१९७९ की अन्तरग ने इसकी स्वीकृति दी।

श्रीमती जानकी देवी ज्योति प्रसाद दिल्ली स्थिर निधि

१२६७२५) (एक लाख छब्बीस हजार सात सौ पच्चीस रुपए मात्र) के दान से यह निधि स्थापित की गई है जिसका ब्याज मुख्यत सस्कृत के प्रचार तथा छात्र-छात्राओ की सहायता मे व्यय हुआ करेगा। अन्तरग दिनाक २७-१०-७४ ने स्वीकृति दी।

महात्मा शिवचरणदास शोध ग्रन्थ प्रकाशन स्थिर निधि

महात्मा शिवचरणदास जी दरियागज दिल्ली से ५०११) पाच हजार ग्यारह रुपए के दान से वैदिक सिद्धान्तो एव आर्य समाज विषयो पर लिखे गए शोध ग्रन्थो के प्रकाशनार्थ १९७५ मे स्थापिति की गई।

इस निधि से ए-क्रीटिकल स्टडी आफ दी कन्ट्रीब्यूशन आफ आर्य समाज टू दी इण्डियन एजूकेशन शोध ग्रन्थ छप चुका है।

वसीयत

१-५-६६ की अन्तरग सभा मे दो वसीयते स्वीकृत हुई।

एक वसीयत के अनुसार जो श्री प० देवव्रत धमन्द्र जी आर्योपदेशक का सभा को एक मकान गाजियाबाद मे प्राप्त होना है जिसका मूल्य लगभग ४० हजार है। इसके अतिरिक्त बैको में जमा रुपया भी प्राप्त होगा। सभा ने गाजियाबाद का मकान प्राप्त कर लिया है किराएदारो से २६५ रुपए मासिक किराया सभा को मिल रहा है। मोटेशन का प्रयत्न चल रहा है।

दूसरी वसीयत के अनुसार सभा को ४० हजार के मूल्य के मकान के अतिरिक्त जेवर तथा बैको व डाकखाने मे जमा रुपया भी प्राप्त होना है। यह वसीयत स्व० प० साधुराम जी शाहदरा ने की थी।

पहली वसीयत से प्राप्त धन आर्य कुमारो और कुमारियों के आचार्य वैदिक साहित्यके प्रकाशनमे व्यय होगा तथा दूसरी से प्राप्त धन,धर्मार्थ कार्यों, विद्वानो तथा सन्यासी महात्माओ की वृद्धावस्था में सहायता देने में व्यय होगा।

१८-७-७० की अन्तरग ने निश्चयानुसार शाहदरा की एक और वसीयत स्वीकृत की गई थी। जिसके अनुसार सम्पत्ति का विवरण इस प्रकार है।

१—३ प्लाट जिनका क्षेत्रफल १ हजार वर्गगज से अधिक है। वर्तमान मूल्य लगभग दस लाख रुपया है।

२—३ मकान जिनकी कीमत लगभग ३० हजार रुपया १७८) मासिक किराया प्राप्त हो रहा है।

वसीयतकर्त्री श्रीमती गगा देवी का देहान्त हो जाने से इस वसीयत की सम्पत्ति को अधिकृत किए जाने के लिए कानूनी कार्यवाही की जा रही है। सम्पत्ति पर उसके रिश्तेदारो ने अवैध कब्जा किया हुआ है।

जोधपुर की सम्पत्ति

आर्य समाज जोधपुर की निम्नलिखित सम्पत्ति सभा के नाम है —

१—५६५० वर्ग गज भूमि प्रताप हाई स्कूल के सामने श्री रणछोड मन्दिर के पास।

२—आर्य श्मशान भूमि २७७२ वर्ग गज।

३—गुरुकुल मारवाड मण्डोर ७ मकान कुल भूमि २५३६६ वर्ग गज।

४—गोशाला मारवाड मण्डोर १ कोठरी (चारे की) ४ अन्य कोठरियां, ३० हजार वर्ग गज।

रणछोड मन्दिर के पास जो प्लाट था उसे सरकार ने हस्तगत करके उसके बदले ३ प्लाट अन्यत्र दे दिये थे।

इस सम्पत्ति पर कुछेक व्यक्तियो ने अवैध कब्जा किया हुआ है। जिसकी मुक्ति के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के तत्वावधान मे समुचित कार्यवाही की जा रही है।

महर्षि दयानन्द विदेश प्रचार स्थिर निधि

श्रीयुत प० हरदयाल शर्मा (फिजी) द्वारा प्रदत्त पचास हजार के दान से महर्षि दयानन्द विदेश प्रचार के नाम से एक स्थिर निधि कायम गई थी जिसकी स्वीकृति ३०-३-६८ की अन्तरग की बैठक मे दी थी। इस निधि के ब्याज से भारत से बाहर मुख्यत फिजी मे प्रचारार्थ एक उपदेशक रखने का प्रावधान किया गया था।

निधि से एक ही मार्ग पुस्तक का प्रकाशन किया गया था।

सभा फिजी में किसी सुयोग्य प्रचारक को भेजने के लिए प्रयत्नशील है।

क्रमश

[पृष्ठ ४ का शेष]

आज वापस चलने की बेला है

माया प छी चलने को तैयार—डेनहाक से आकर सामान बाधने को तत्पर २ बजे रात तक पं० सुमधन व श्रीमती सुमधन डा० महेन्द्र स्वरूप, अन्तिम विदाई को देने में लगे रहे। प्रात स्नान ध्यान से निवृत्त होकर ८ बजे अमसटर्डम हवाई अड्डे पर चलने को तैयार और चल दिय। एक मास जिस




प० शुमधन जी, अमसटडरम   श्रीमती प० सुवधन जी

घर मे रहे हो, घोसला छोड़ने को मन नही कर रहा था। भावभीनी विदाई दुखी हृदय से प्रस्थान और हवाई जहाज की ओर दो कदम बढे अन्त मे सबको राम राम कहा, कहा सुना माफी देना।

जहाज पर चढे और उड़े-एथेन्स व दुबई रुककर प्रात बम्बई पहुचे वहा पर शान्ताक्रूज आर्य समाज से प प्रकाशचन्द शास्त्री मुझे लेने आये थे। कैप्टन जी के घर पर स्वामी आनन्दबोध सरस्वती से मिला सारी हालैण्ड की कथा कही और यह प्रचार यात्रा समाप्त हुई।

नीदरलैण्ड की आर्य समाजों से प्राप्त धन पं० सच्चिदानन्द शास्त्री द्वारा सभा में जमा

	हालैण्ड	भारत	
१	२०० गि०	२००० रु०	जन्म दिवस पर
२	२५० गि०	२५०० रु०	प० शुमधन जी रोटरडम
३	११० गि०	११०० रु०	आ० स० फैकल विश्वेश्वर जी
४	३२० गि०	३२०० रु०	वैदिक ज्योति रोटरडम
५	?०० गि०	३००० रु०	प्रभाकर आ० स० रोटरडम
६	५०० गि०	५००० रु०	प० शुमधन आ० स० अमसटरडम
७	१०० गि०	१००० रु०	प० रामबालक अमसटरडम
	० गि०	४१०० रु०	आर्य सभा आन्द्रीस्ट्रीम रोटरडम
६	?०० गि०	३० ० रु०	आ० स० आसन डेनहाक
१०	१?० गि०	१?०० रु०	प० शुमधन रोटरडम
११	३० गि	३०० रु०	यज्ञ मैं शुमधन रोटरडम
१?	?५० गि०	२५०० रु०	प० शुमधन रोटरडम
१३	०० गि०	३००० रु०	जगदीश रीतेश नीनेश अमसटर्डम
१४	१०० गि०	१००० रु०	प० ऋषि तिवारी अमसटर्डम
१५	१०० गि०	१००० रु०	शुमधन रोटरडम
१६	१० गि०	१००० रु०	पुस्तके व ? डे
१७	४०० गि०	४०० रु०	साप्ताहिक सार्वदेशिक
१८	१५० गि०	१५०० रु०	प० रामरूप जी एव छागुर भाई
१६	५०० गि०	५००० रु०	प्रभाकर आर्य समाज रोटरडम
२०	१२० गि०	१२०० रु०	जयजयराम डेनहाक
२१	६० गि०	६६०० रु०	प० शुमधन रोटरडम

कुलयोग ४७६०   ४७६००

नीदरलैण्ड आर्य समाजों की ओर से ४० हजार रुपये सच्चिदानन्द शास्त्री द्वारा सार्वदेशिक सभा के प्रधानजी को भेंट



आज दिनाक ११-११-६० को सार्वदेशिक सभा के ८२वे वृहद अधिवेशन मे प० सच्चिदानन्द शास्त्री द्वारा नीदरलैण्ड की आर्यसमाजो से प्राप्त धन सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के लिये ४०) चालीस हजार की थैली भेंट की।

सभा प्रधान जी ने श्री शास्त्री जी के त्याग की सराहना करते हुए कहा कि लोग अपने लिए धन माग कर लाते हैं परन्तु यह एक उदाहरण है कि शास्त्री जी का जीवन त्यागमय है। आपका सारा जीवन अपनी परम्परा के अनुसार ही है। शास्त्री जी द्वारा थैली भेंट करने पर आये प्रतिनिधियो ने भी भूरि-भूरि प्रशसा की।

उपासना ही व्यक्तित्व

[पृष्ठ ३ का शेष]

ईश्वर जैसी महान शक्ति प्रशसा पूजा जैसे उपहासास्पद उपहारो बदले, कर्मफल की समस्त नियम मर्यादाओ को नष्ट भ्रष्ट कर देगी, यह सोचना मन्दबुद्धि का परिचय देना है।

ईश्वर उपासना जिन्हे भी करनी हो वे इन तथ्यो को ध्यान मे रखते हुए करे। उस आधार पर उपलब्ध होने वाली दिव्य प्रेरणाओ के सहारे अपने गुण, कर्म, स्वभाव की प्रसुप्त विशेषताओ को विकसित करें और उन्ही समस्त सिद्धियो विभूतियो को पाने के अधिकारी बने जो भक्तियोग की साधना करने वालो मे मिलने की बात शास्त्रकारो एव आप्त जनो ने अपने प्रतिपादनों मे समय समय पर बताई है।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल प्रदर्शन

आचार्या डा. आशारानी राय, उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र० ने सार्वदेशिक आर्य वीर दल हरदेन्द्र नगर कानपुर के कार्यक्रम का उद्घाटन ध्वजारोहण करके किया और कहा कि देश के विभिन्न अचलो मे अशान्ति व तनाव है, युवको को सम्प्रदाय भाषा व अन्य मुद्दो पर बाटा जारहा है। राष्ट्रीय एकता व सद्भावना के लिए आवश्यक है कि युवा पीढी शारीरिक रूप से स्वस्थ हो, तभी मानसिक, नैतिक व आध्यात्मिक उन्नति सभव है। आर्य वीर दल अधिष्ठाता श्री शिवपूजन आर्य ने अतिथियो का माल्यार्पण से स्वागत किया, व्यायाम शिक्षक तथा शाखा नायक राजकुमार आर्य ने कार्यक्रम को सफलतापूर्वक सचालित कराया तथा स्वय श्री अभूतपूर्व तलवार जिमनास्टिक का प्रदर्शन किया। शिक्षक श्री उमाशकर आर्य ने भी सुन्दर प्रदर्शन किया। आर्य वीर दल के प्रदर्शन में सर्वांग सुन्दर व्यायाम, भाला, लाठी बाक्सिग, झूला, वेटलिफ्टिग, रिंग प्रदर्शन, सिंगलबार, डबलबार, विशिष्ट योगासन, जिमनास्टिक, तलवार, पिरामिड आदि उल्लेखनीय रहे।

आर्य समाज ग्रेटर कैलाश II में शुद्धि

दिनाक २२-१०-९० मिस टेरेसा इसाक २१ वर्षीय ईसाई युवती ने अपनी इच्छा से हिन्दू वैदिक धर्म में दीक्षा प्राप्त की और फिर उसकी शादी बडी धूमधाम से श्री मनीश शर्मा गाजियाबाद निवासी से सम्पन्न कराई गई। श्री रघुनन्दन गुप्त मन्त्री आर्य समाज व पुरोहित श्री मनोहर जी ने आशीर्वाद दिया।

रघुनन्दन गुप्त मन्त्री
H-133 ग्रेटर कैलाश दिल्ली

बाल दिवस पर विशेष कार्यक्रम

विश्व बाल वर्ष के उपलक्ष्य में समाज कल्याण विभाग दिल्ली प्रशासन द्वारा जारी निदेशो के अनुसार आर्य बाल गृह, आर्य कन्या सदन पटौदी हाउस, दरियागज तथा छात्रावास, चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर, चन्द्र आश्रय गृह, ईस्ट आफ कैलाश, नई दिल्ली मे श्री रामकुमार। खेल प्रशिक्षक श्रीमती कुसुम एव श्रीमती सरला जी के कुशल निर्देशन में ५०० से अधिक बालक-बालिकाए विभिन्न प्रकार के खेलो, सास्कृतिक कार्यक्रमो, स्वास्थ्य प्रतिरक्षण अभियान आदिका दिनाक ८-११-९० से विशेष कार्यक्रम चल रहा था। जिसके १४ नवम्बर के समापन समारोह मे सस्थाओ के सचिव श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री व अधिष्ठाता श्री हमीरसिंह रघुवशी जी ने समाज कल्याण विभाग दिल्ली द्वारा प्रदत्त पुरस्कार विभिन्न कार्यक्रमो मे विजेता छात्रो को प्रदान किये।

आज दिनाक १२-११ ९० को सस्था के स्वास्थ्य अधिकारी डा० रमेश बसल ने समस्त बच्चा के समूह को सम्बोधित करते हुए रोग प्रतिरक्षण अभियान मे चर्म रोग से बचाव व स्वास्थ्य मे सफाई के महत्व पर प्रकाश डाला।

शान्ति यज्ञ सम्पन्न

दिनाक २७, २८, अक्टूबर ९० तक आर्यसमाज पोठिया (कोटद्वार) के तत्वावधान में श्री शेष नारायण आर्य, ग्राम सिमरिया कसबेव पो० पोठिया (कटिहार) के पूज्य माता एवम् पूज्य पिता के दिवगत आत्मा की शान्ति हेतु वैदिक रीत्यानुसार शान्ति यज्ञ का आयोजन श्री प० ब्र० व्यास नन्दन शास्त्री वैदिक महोपदेशक (वि० रा० आ० प्र० सभा पटना-४) के आचार्यत्व मे सुसम्पन्न हुआ।

—शेष नारायण आर्य

[आर्य संस्थाओं व आर्य समाजों की ओर से राम जन्मभूमि अयोध्या में निहत्थे राम भक्तों की हत्याओं के विरोध में भर्त्सना-प्रस्ताव

आर्य समाजों एवं आर्य संस्थए अपनी-अपनी सभाओं मे अयोध्या में निहत्थे साधुओं और कारसेवको पर हुए अत्याचार की कठोरतम शब्दों में भर्त्सना करती हैं और शासन की इस स्वेच्छाचारिता, बहुमत की उपेक्षा और उनकी धार्मिक भावनाओं का सम्मान न करने के लिए तथा अल्पसंख्यको के प्रति तुष्टीकरण की नीति अपनाने के प्रति गम्भीरतम चिन्ता व्यक्त करती हैं। ये सभाएं सरकार को पूरी गम्भीरता से सतर्क करा रही हैं कि अयोध्या में जन्मभूमि पर राम मन्दिर का प्रश्न बहुसख्यक वर्ग के धर्म, इतिहास और सम्मान का प्रश्न है। सरकार अपनी तुष्टिकरण की नीति छोड़कर देश के बहुमत की भावनाओं का सम्मान करे।

आर्य समाज एव आर्य सस्थाएं अयोध्या में कारसेवा मे बलिदान हुए धर्मरक्षकों की मृत्यु पर शोक प्रकट करती हैं। उनके सम्बन्धियो के प्रति सम्वेदना प्रकट करती हैं और परमेश्वर से प्रार्थना करती हैं कि इन दिवगत आत्माओं को सद्गति एवं शान्ति प्राप्त हो।

निम्न आर्यसमाजो एव सस्थाओ द्वारा निन्दा प्रस्ताव हमे प्राप्त हुए है।

आर्य समाज कलकत्ता १९ विधान सारणी

आर्य समाज रुद्रपुर नैनीताल

आर्य समाज जनक नगर सहारनपुर

आर्य समाज सुभाष नगर फैजाबाद

आर्य उपप्रतिनिधि सभा मेरठ

आर्य प्रतिनिधि सभा फैजाबाद

आर्य वेद प्रचार मण्डल स्वामी दयानन्द मार्ग फैजाबाद

आर्य समाज टाडा अफजल जिला मुरादाबाद

आर्य समाज न्यू मोती नगर दिल्ली

उपदेशक सभा की बैठक सम्पन्न

आर्य समाज दीवानहाल में दिनांक २८-१०-९० को दिल्ली के उपदेशक पुरोहित तथा समाज मे कार्यरत महानुभावो की बैठक श्री सूर्यदेव महामन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई। जिसमें सभी उपस्थित विद्वानों का अभिनन्दन करते हुए, सभामन्त्री श्री सूर्यदेव ने बताया कि इस बैठक का मुख्य उद्देश्य दिल्ली मे वेद प्रचार को गति देने तथा आर्य समाज के कार्यक्रमों मे एक रूपता लाने के लिए बुलाई गयी है। इस अवसर पर आर्य समाज के माननीय विद्वान पण्डित प्रेमचन्द श्रीधर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए सुझाव दिया कि आर्य समाज के यज्ञ के कार्य में में एक रूपता लाने के लिये तीन दिन का एक आयोजन किया जाय जिसमें यज्ञ पद्धति (सार्वदेशिक सभा द्वारा स्वीकृति) के सम्बन्ध मे यज्ञ की प्रत्येक प्रक्रिया पर प्रकाश डाला जाये, यज्ञ उन्हीं विद्वानो से कराया जाये जो इसमें पारगत हो जिससे यज्ञ प्रेमियो पर समाज के विद्वानों का अच्छा प्रभाव पड़े।

साप्ताहिक सत्सग में सत्यार्थ प्रकाश का पाठ करते समय केवल कठिन वाक्यों का विश्लेशन किया जाये, समय की अवधि पूर्व निश्चयानुसार होनी चाहिए।

सत्सग में हम वेद मन्त्र की व्याख्या अवश्य कर, इसकी उपेक्षा करने से हम वेद प्रचार के साथ न्याय नही करते। इसके लिए हम स्वाध्याय करके जाये तथा उदाहरण देकर प्रवचन को सरल व रुचिकर बनाये, उदाहरण सैद्धान्तिक ही होने चाहिए।

अन्त में सभामन्त्री श्री सूर्यदेव ने सभी महानुभावों का धन्यवाद करते हुए कहा कि शीघ्र पुन: इसी प्रकार की बैठक बुलायेंगे जिससे अन्य महानुभावों के विचार सुनने का अवसर मिलेगा उन्होने कहा कि दिल्ली में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में २१ दिसम्बर से २६ दिसम्बर तक आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया है। हम सभी लोगों को चाहिए कि इस आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने के लिए हमें अभी को कार्यों में जुट जाना चाहिए।

प्रचार मन्त्री

आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली

रजि० न० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२ १२-१९९०) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस U न० ९३
R 626/57 Licensed to post without Prepayment License No U 93 Post in N,D P.S.O.on 30-11-1990

श्री लाला इन्द्र नारायण जी ने आर्य महासम्मेलन की सफलता के लिए अपनीफर्मईस्ट आर्ट कारपोरेशन की ओर से पच्चीस हजार रुपये की राशि माननीय सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वतीजी को भेट की।





प्रान्तीय आर्य महिला सभा की ओर से ग्रेटर कैलाश मे कश्मीर विस्थापितो को कम्बल तथा रजाईया बाटते हुए।

प्रान्तीय आर्य महिला सभा की ओर से कश्मीर विस्थापितों को वस्त्र वितरण

दिनाक १३-११-९० को कश्मीर विस्थापितो को प्रान्तीय आर्य महिला सभा की अधिकारी बहिनो ने कश्मीर विस्थापित शिविरो में जाकर कम्बल तथा रजाईया बाटी। अधिकारी बहिनो के नाम–श्रीमती सरला जी मेहता, प्रकाश आर्या, शान्तिदेवी मलिक, कृष्णा चड्ढा, तारा वैद, कृष्णा [illegible] शकुन्तला आर्या रामचमेली तथा श्रीमती शान्तिदेवी जी अग्निहोत्री [illegible] डा० धर्मपाल जी विशम्भर नाथ जी भाटिया और रामलुभाया [illegible]

अलीगज कैम्प—४८ रजाईया ४८ कम्बल।

पालिका धाम—१३ कम्बल २ रजाईया।

कृष्णा मार्कीट लाजपत नगर—५२ कम्बल।

ग्रेटर कैलाश पार्ट २—१८ कम्बल केदारनाथ साहनी जी के द्वारा दिलवाई।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के लिए दुकानों की बुकिंग

दिल्ली के रामलीला मैदान मे २७ से २९ दिसम्बर १९९० तक आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के लिए दुकान के इच्छुक महानुभावो से निवेदन है कि वे सार्वदेशिक सभा के कार्यालय मे आकर सम्पर्क कर। दुकानें १०×१० फोट और १०×२० फीट में होगी। किराया ४ दिन का छोटी दुकान ४००) और बडी का ८००) रुपया होगा।

किराया राशि अग्रिम सभा मे प्राप्त होने पर सम्बद्ध पार्टी के नाम दुकान का आरक्षण कर दिया जायेगा।

सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

पंजाब में हिंसा

जालन्धर में आतंकवादियों ने १५ को गोलियों से उड़ाया

चण्डीगढ २५ नवम्बर। पजाब के जालन्धर शहर के व्यस्त इलाके में आज रात आतंकवादियो ने १५ व्यक्तियो को गोली से उडा दिया तथा दस को घायल कर दिया। घायलो मे एक बच्चा भी है। भारत सरकार की कमजोर नीति के कारण पिछले चार साल से आतंकवादी निर्दोष लोगो की हत्याए कर रहे हैं।

राज्य के अन्य स्थानो पर गत २४ घण्टो के दौरान ९ आतकवादियों सहित १९ व्यक्ति मारे गए। अन्य घटनाओं में उग्रवादियों ने एक यात्री बस पर गोलिया चलाई और एक खाली सिनेमाहाल मे शक्तिशाली बम का विस्फोट किया।

योग साधना एवं आर्य वीर दल शिविर सम्पन्न

गुरुकुल आश्रम आमसेना मे ३० सितम्बर से ५ अक्टूबर तक उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी धर्मानन्द जी की प्रेरणा एव देख-रेख मे उपरोक्त दोनो शिविर उत्साह पूर्वक सम्पन्न हुए।

योग साधना शिविर मे अष्टायग योग क्रियात्मक ध्यान पान्जल योग दर्शन की पद्धति से श्री अमृतलाल जी शर्मा गुरुकुल होशगाबाद ने किया। इसका सचालन श्री गुलाबचन्द्र बसल वेद प्रचार अधिष्ठाता म० प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा ने अत्यन्त श्रद्धा एव योग्यतापूर्वक किया। इसमें १५ साधको ने लाभ उठाया, सभी अत्यन्त प्रभावित एव सन्तुष्ट हुए। अनेको ने अपने [illegible] छोडने का सकल्प लिया।

चुनाव समाचार

आर्य समाज दानापुर पटना, सर्वश्री वेदप्रकाश प्रधान अनलकुमार मन्त्री ज्ञानेश्वरप्रसाद कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज सरस्वती विहार दिल्ली कुवर दयानन्द प्रधान कृष्णदेव मन्त्री विशिनदास कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज पालम कालोनी दिल्ली, वैद्य गोपाल गोष्ठवाल प्रधान कैप्टन भगवानसिंह मन्त्री नेगीराम कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज पुरा नगर आजमगढ, लालताप्रसाद गुप्त प्रधान विद्याधर आर्य मन्त्री हरिदत्त उपमन्त्री चुने गये।

आर्य समाज डी.डी ए फ्लैटस [illegible] दिल्ली, प० [illegible] प्रधान अशोककुमार शास्त्री मन्त्री जे डी चावना कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज पोरबन्दर जुगलकिशोर वी शर्मा प्रधान डा० भानुकान्त एम पटेल मन्त्री हृषभट्ट जी ठकरार कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज सुलतानपुर पट्टी नैनीताल, ओमप्रकाश प्रधान दुर्गासिंह मन्त्री चोखेसिंह कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज गोहावर जिला बिजनौर, यशपालसिहजी प्रधान चिनसन्ता सिंह मन्त्री भूपालसिंह कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज गगोह, सग्रामसिंह प्रधान रामशरणदास मन्त्री दयाराम कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्यसमाज कृष्ण पोल बाजार जयपुर (राज०) ओमशरन विजय प्रधान रामजीलाल सिंघल मन्त्री सूरजनारायण गुप्त कोषाध्यक्ष चुने गये।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१ | दयानन्दाब्द १६६ | दूरभाष : ३२७४७७१ | वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे

वर्ष २९ अंक ४७] | पौष कृ० ८ सं० २०४७ ९ दिसम्बर १९९०

दयानन्द उवाच

* आजकल बहुतसे विद्वान् प्रत्येक मत में हैं वे पक्षपात छोड़ सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् जो-जो बातें सबके अनुकूल वास्तव में सत्य हैं उनको ग्रहण और जो-जो एक दूसरे के विरुद्ध बातें हैं—उनको त्याग कर परस्पर वर्तें तो जगत् का पूर्ण हित होवे, क्योंकि विद्वानों के विरोध से अविद्वानों में विरोध बढ़कर अनेक विधि दुःख की वृद्धि और सुख की हानि होती है।
* "ओ३म्" यह तो केवल परमात्मा का नाम है और अग्नि आदि नामों से परमेश्वर के ग्रहण में प्रकरण और विशेषण नियम कारक हैं।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा राजीव के सुझाव का स्वागत : न्यायाधीशों के साथ पुरातत्ववेत्ताओं को भी शामिल करने का अनुरोध

सुखी समाज

वेदों का ज्ञान चारों वर्णों के लिए

यथेमां वाचं कल्याणीम्, आवदानि जनेभ्यः । ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च, स्वाय चारणाय च ॥

यजु० २६।२॥

हिन्दी अर्थ— इस कल्याणकारी (पवित्र) वेदवाणी का ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य शूद्र, आत्मीय (सेवक आदि) और पराए (असबद्ध विदेशी आदि) सभी लोगों को उपदेश दे।

अनुशीलन—इस मन्त्र का अभिप्राय है कि परमात्मा ने मानवमात्र के कल्याण के लिए वेदज्ञान दिया है। मन्त्र में वेदज्ञान को 'कल्याणी वाचम्' अर्थात् कल्याण करने वाली वाणी कहा गया है। यह किसी देश, किसी जाति या वर्ग-विशेष की सम्पत्ति नहीं है। इसका प्रचार-प्रसार चारो वर्णों के लिए होना चाहिए। मन्त्र में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रो के अतिरिक्त देशी-विदेशी, परिचित, स्वामी और सेवक सबके लिए वेदज्ञान सुलभ होना चाहिए, ऐसा आदेश है।

संसार में मानव के कर्त्तव्यो का निर्देशक वेद से बढ़कर और कोई धर्मग्रन्थ नहीं है। वेदो का किसी देश, जाति या समुदाय से सम्बन्ध नहीं है, अतः वे मानवमात्र के लिए धर्मग्रन्थ हैं। वेदो की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें मनुष्य की सभी समस्याओ

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

नई दिल्ली, २ दिसम्बर। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने श्री राजीव गांधी के वक्तव्य का स्वागत करते हुए कहा कि प्रस्तावित पांच न्यायाधीशो की समिति में पुरातत्त्व वेत्ताओं को अवश्य सम्मिलित किया जाना चाहिए। आर्य समाज का यह स्पष्ट मत है कि भगवान श्री राम के जन्म स्थान पर मन्दिर का निर्माण करके इस देश के बहुसंख्यक रामभक्तो की भावनाओ का आदर करना, आज की परिस्थितियों मे पूर्णतः प्रासंगिक है। राम हमारी सांस्कृतिक अस्मिता के पूर्ण पुरुष हैं। वे मर्यादा पुरुषोत्तम हैं।

उन्होंने यह भी कहा कि यदि अयोध्या में राम जन्म स्थान पर मन्दिर बनाने की सरकार अनुमति नही देती तो आर्य समाज की ओर से सशक्त आन्दोलन ठीक उसी प्रकार किया जाएगा जैसा कि पचास वर्ष पूर्व धर्म की रक्षा के लिए निजाम शाही के विरुद्ध किया गया था।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने यह भी कहा कि आगामी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर आर्यसमाज का घोषणा पत्र जारी किया जाएगा। उन्होने यह भी अपील की कि सभी धर्मों के नेताओं को वर्तमान परिस्थितियों में इस प्रस्ताव पर खुले दिल से विचार करना चाहिए। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने इस प्रस्ताव का अनुमोदन करते हुए कहा कि ३० अक्तूबर एव २ नवम्बर को हुए जघन्य हत्याकाण्ड की न्यायिक जांच की जानी चाहिए तथा मृतकों के परिवारो को न्यूनतम दो लाख रुपये की सहायता प्रति परिवार को दी जानी चाहिए।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने के लिए धन की अपील

१९७५ में आर्यसमाज स्थापना शताब्दी महोत्सव की यादगार को देश-विदेश के आर्य बन्धु भूले नही होंगे।

अब पुनः भारत की राजधानी में होने जा रहा है, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन २३ दिसम्बर से २६ दिसम्बर १९९० तक देश-विदेश से लाखों आर्य जन समारोह में सम्मिलित होगे। आर्य समाज के संगठन शक्ति का यह ऐतिहासिक संगम आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। इतने विशाल पैमाने पर समारोह की व्यवस्था मे अपार धनराशि खर्च हो रही है।

आर्य जनों, माताओं और आर्य समाजों का परम कर्त्तव्य है कि संगठन के इस कार्य में बूंद-बूंद सहयोग करके इस विशाल कार्यक्रम को सफल बनाने में तन, मन और धन का सहयोग करें। राशि मनीआर्डर, चैक अथवा बैंक ड्राफ्ट द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम निम्न पते पर भेजें।

निवेदक:

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती	डा० सच्चिदानन्द शास्त्री	ओमप्रकाश गोयल
प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-११०००२

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में मारीशस से आर्य जनों का बहुत बड़ा शिष्टमण्डल मोहनलाल मोहित के नेतृत्व में भारत पधार रहा है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का ७ वां आर्य युवा महासम्मेलन सम्पन्न

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम मे ७वें आर्य युवा महासम्मेलन का भव्य समापन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि आज देश व समाज के सामने बडी विकट परिस्थितियां हैं। उन्होने छात्रो एव युवाओ का आहवान किया कि वे समाज व राष्ट्र उत्थान के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती के सिद्धातो एव आर्य समाज के कार्यक्रमो को आगे बढाने की प्रतिज्ञा करें। स्वामी जी ने प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित इस आकर्षक व भव्य कार्यक्रम के आयोजन के लिए सभा अधिकारियो को हार्दिक बधाई दी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने सभा के श्रेष्ठ कार्यों गतिविधियो एव कार्यक्रमो की जानकारी दी। आर्य जगत के प्रख्यात पत्रकार प० क्षितीश वेदालकार ने कहा कि युवको को अपने मन से निराशा की भावना निकाल देनी चाहिए और अपनी समस्याओ के समाधान के लिए आत्मदाह का मार्ग त्याग देना चाहिए। देश व समाज से यदि उन्हे कोई शिकायत है तो वे अपने प्रयासो द्वारा परिस्थितियो को बदल दें। उन्होने युवको से आवाहन किया कि वे समाज व देश सेवा का सकल्प लें।

स्वामी दीक्षानन्द ने प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओ के ३५० विजेताओ को शील्ड, पदक, वैदिक साहित्य आदि भेंट कर सम्मानित किया। स्वामी जी ने बच्चो को आशीर्वाद देते हुए कहा कि वे आर्य समाज की छत्र-छाया मे उनका सर्वागीण विकास हो रहा है। स्वामी जी ने छात्रो व ब्रह्मचारियो द्वारा भव्य प्रदर्शन के लिए तथा आयोजन के लिए सभा को साधुवाद दिया।

प्रख्यात वैदिक विद्वान प० यशपाल सुधाशु ने बच्चो को राष्ट्र का कर्णधार बताया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने कार्यक्रम का सचालन करते हुए कहा कि यह धारणा गलत है कि आर्य समाज मे बच्चे नही आते है। ५ अक्तूबर से ६ नवम्बर तक एक मास तक चले इन कार्यक्रमो मे दिल्ली के ५० स्कूलो के हजारो बच्चो ने उत्साहपूर्वक भाग लिया है। श्री सूर्यदेव ने २३ से २६ दिसम्बर ९० तक होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के लिए ५१ ०००) की सहायता राशि आर्य समाज दीवानहाल की ओर से दी। उन्होने सभी उपस्थिति महानुभावो से तन-मन-धन से राजधानी मे हो रहे इस सम्मेलन को हर दृष्टि से सफल बनाने का आवाहन किया।

—विमल कान्त शर्मा, प्रचार मन्त्री

वेद-मन्त्र का अनुशीलन

(पृष्ठ १ का शेष)

का समाधान है। जीवन के लिये जिन उपयोगी तत्त्वो की आवश्यकता है, उनका विस्तृत वर्णन वेदो मे मिलता है। जीवन सम्बन्धी ऐसी कोई समस्या नही है, जिसका हल वेदो में न मिलता हो।

जीवन को प्रगतिशील, प्रकाशमय और सुखी बनाने के लिए वेद ही एकमात्र साधन है। अतएव मनु ने कहा है कि सारे धर्मों का मूल वेद है। वेद ही ज्ञान की प्रतिष्ठा है।

वेदोऽखिलो धर्ममूलम्। मनु० २—६
सर्वज्ञानमयो हि स। मनु० २—७

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का चुनाव सम्पन्न

१-प्रोफेसर शेरसिंह प्रधान, २—श्री सूबेसिंह मन्त्री, ३—श्री रामानन्द सिंगला कोषाध्यक्ष तथा श्री हरिराम आर्य पुस्तकाध्यक्ष सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की साधारण सभा की बैठक २५ नवम्बर को दयानन्द मठ रोहतक में सम्पन्न हुई। इसमे प्रो शेरसिंह पूर्व रक्षा राज्य मन्त्री को छठी बार सभा का प्रधान सर्वसम्मति से चुना गया उन्हें ही शेष पदाधिकारियों के चुनाव का अधिकार दिया गया। इस प्रकार आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का आगामी तीन वर्षों के लिए चुनाव निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ।

१. प्रो० शेरसिंह प्रधान
२. म० भरतसिंह उपप्रधान
३ बहन सुभाषिणी देवी उपप्रधान
४ लाला लक्ष्मनदास उपप्रधान तथा डा० रणवीरसिंह सायवान सिरसा उपप्रधान
५. चौ० सूबेसिंह सेवानिवृत्त उपमण्डल अधिकारी रोहतक मन्त्री
६ डा० सोमवीर सेवानिवृत आयुर्वेदिक चिकित्सा अधिकारी उपमन्त्री
७. श्री सत्यवीर शास्त्री मढी बोहर उपमन्त्री
८ लाला रामानन्द सिंगला पानीपत कोषाध्यक्ष
९ श्री हरिराम आर्य करोली रेवाडी पुस्तकाध्यक्ष

महर्षि निर्वाण दिवस सम्पन्न

आर्य उप प्रतिनिधि सभा, कानपुर महानगर के तत्वावधान में आर्यसमाज मन्दिर,लाजपतनगर, कानपुरमे महर्षि दयानन्द निर्वाणदिवस मनाया, जिसमे बोलते हुए आचार्या डा० आशारानी राय उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती युग निर्माता थे, उन्होंने अपने जीवन व कृतित्व से नये युग का सूत्रपात किया, स्वभाषा (हिन्दी) स्वराज्य स्वधर्म (वेद) व स्वराज्य का नारा सवप्रथम उन्होने दिया। डा० हरपालसिंह, प्रधान आर्य उपप्रतिनिधि सभा, ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि आज की परिस्थितियो में वैदिक सस्कृति व शिक्षा के प्रचार-प्रसार से शान्ति सम्भव है।

अगर हिन्दू समाज सहिष्णु न होता

—ज्योतिर्मय—

सचमुच यदि हिन्दू समाज में आक्रामकता उभर रही होती तो मनचले मसीहाओं को उसके विश्वासों और प्रतीकों पर कोई भी उद्दण्ड-अश्लील टिप्पणी करने से पहले हजार बार सोचना पड़ता। आरोप है कि हिन्दू समाज में कट्टर और असहिष्णु प्रवृतियां उभर रही हैं। उनके हावी होते जाने से इस धर्म के उदार, लचीले और सर्वग्राही स्वरूप की भी क्षति हो रही है। इन प्रवृतियों को पिछले दो साल में ही ज्यादा उभरा देखा-दिखाया जाता है। लेकिन इन दो सालों में ही हिन्दू धर्म और समाज के बारे में कही गई बातों, दिए गये सुझावों और कसे गये फिकरों को देखें तो पायेंगे कि धर्म और समाज को लांछित करने की यह प्रवृति चिढ़ाने और खिझाने ही नहीं, छेड़छाड़ करने के अन्दाज में भी उभरी है। सचमुच यदि हिन्दू समाज में कट्टरता और उद्दंडता की भावना जागृत रही होती तो उस प्रवृति पर प्रतिक्रिया होनी चाहिए थी।

कुछ टिप्पणियों का उल्लेख करें तो बात स्पष्ट हो सकेगी। उदाहरण के लिये 'इंडिया टुडे' पत्रिका ने हाल के अंक में भारतीय जनता पार्टी की सांसद उमा भारती को 'सेक्सी संन्यासिन' लिखा है। उमा भारती संन्यासिन नहीं है इसलिए सम्बोधन का उनके सन्दर्भ में विशेष महत्व नहीं है। वे संन्यासी होतीं तो भी टिप्पणी की गम्भीरता घट या बढ़ नहीं जाती क्योंकि संन्यासी शब्द ही स्वयं में इतना गरिमावान है कि उस पर अश्लील विशेषण चिपकाना अशोभनीय समझा जाना चाहिए। न केवल अशोभनीय बल्कि कुत्सित और निंदनीय भी। सैक्सी शब्द का सीधा सा अर्थ है कामुक और कामोत्तेजक। किसी भद्र महिला के लिये ही नहीं मां, बहन, पुत्री और यहां तक कि पत्नी-प्रेयसी के लिये भी इस विशेषण को अपशब्द मूलक समझा जाता है। कोई भी स्त्री जब तक कि स्वयं इस विशेषण को अपने साथ जोड़ना न चाहे (जैसे फिल्म अभिनेत्रियां) तब तक इसे किसी पर चस्पां नही किया जाता। फिर संन्यासी पद किसी सम्बन्ध या व्यक्तित्व का बोधक नहीं है। उसे भारतीय धर्म और संस्कृति ने निर्मलता और तेजस्विता प्रदान की है। वह भारतीय धर्म का सर्वोच्च आदर्श है। इस आदर्श के साथ एक कुत्सित विशेषण जुड़ते देख कर भी कोई व्यक्ति हिन्दू धर्म और समाज मे कट्टरता का आरोप कैसे लगा सकता है?

पिछले दो वर्षों में अयोध्या में राम जन्मभूमि मन्दिर के निर्माण का आग्रह प्रबल हुआ है। इस आग्रह के साथ चलने वाले आन्दोलनो और कार्यक्रमों को ही कट्टरता-असहिष्णुता के प्रमाण में उद्धृत किया जाता है। लेकिन इन दो वर्षों मे ही राम और सीता जैसे चरित्रों पर सबसे ज्यादा छींटाकशी भी हुई है। कट्टरता का आरोप लगाते हुए इन पात्रों की अभियुक्त कट्टर समाज के सामने ही जैसी छीछालेदर की गई है उसकी दूसरे धर्म समाजों के बारे में कल्पना भी नहीं की जा सकती। इस दौरान कम से कम दर्जन भर ऐसे लेख और पर्चे तैयार किये गये जिनके अनुसार राम अत्याचारी, आततायी शासक है और उनके इर्द-गिर्द प्रयत्न पूर्वक ऐसा वातावरण तैयार किया गया जिसके सम्मोहन में लोग उनके वास्तविक स्वरूप को भूले ही रहें। इस निष्कर्ष को सिद्ध करने के लिए जमीन-आसमान एक करने के बावजूद किसी को भी शंबूक वध और सीता निर्वासन के अलावा तीसरा कोई प्रसंग नहीं मिला है। लेकिन छीछालेदर करना हो तो तीसरे प्रसंग की क्या जरूरत है? दो की भी जरूरत नहीं है, फकीर की गुदड़ी की तरह एक ही पर्याप्त है जो ओढ़ने, बिछौने, छाया करने और जगह घेरने के सभी प्रयोजन करते रह सकते हैं।

शम्बूक वध और सीता निर्वासन के विशिष्ट सन्दर्भ हैं। उन्हें जानने के लिए रामायण के प्रयोजन, विषय, उपाय और सम्बन्ध चारों अंगों को समझना आवश्यक है। किसी भी शास्त्र में प्रवेश के लिए इन चारो अंगों की पूर्व तैयारी होनी चाहिये। इनके विस्तार में न जाकर आक्षेपकर्ताओं के आशय को ही ग्रहण करें तो सम्पूर्ण रामकथा में १०८ प्रसंग हैं। इनमें से प्रत्येक प्रसंग में राम न्यायकारी, दृढ़प्रतिज्ञ, सत्यव्रती, मर्यादापरायण, अहैतुक वत्सल, पराक्रमी और नीति धर्म के प्रतिष्ठापक रूप में ही उभरते है। उक्त दो प्रसंग अपवाद हैं तो इनके कारण शेष एक सो छह प्रसग उपेक्षणीय क्यो मान लेना चाहिए? उल्लेखनीय है कि इनमें से एक शंबूक वध तो रामायण की उपलब्ध प्राचीनतम प्रतियों में भी प्रक्षिप्त बताते हुए सम्मिलित किया गया है। इसलिये मूल प्रति में सीता निर्वासन का प्रसंग ही शेष रह जाता है और उसकी व्याख्या राजधर्म को दाम्पत्य धर्म से वरीय बनाने के रूप मे की गई है। निर्वासन तो वह फिर भी नहीं है।

आक्षेपमूलक टिप्पणियों के सदर्भ में यह स्पष्टीकरण कतई जरूरी नहीं है। इन आक्षपों से राम की उस छवि पर खरोंच भी नहीं आई है जो लोकमानस में मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में विराजी हुई हैं। उस छवि और राम के महिमा-गरिमापूर्ण चरित्र को जानने के बारे में भी उक्त दो प्रसंगों के कारण उन्हें आततायी, अत्याचारी निरूपित किया जाए तो फिर रावण और कंस ही मर्यादा पुरुष हो सकते हैं। नए विचार देने की झोंक में इस लीक पर भी चला जा चुका है और कुछ अवसरों पर तो बाकयदा रावण को राम से श्रेष्ठ बताया गया है। इस घोर अवहेलना को भी हिन्दू मानस ने अविचलित भाव से देख लिया तो आखिर किस आधार पर उसे कट्टर असहिष्णु और अनुदार बताया जा सकता है?

कट्टरता, असहिष्णुता के सन्दर्भ मे 'द सैटेनिक वर्सेज' लिखने के लिए लेखक सलमान रुश्दी को मौत का फतवा देने वाले और उसका लिहाज करते हुए भारत में भी उस पुस्तक पर पाबन्दी लगा देने के फैसले की चर्चा क्यो नही होती? इन्हीं मसीहाओ ने 'द सैटेनिक वर्सेज' पर पाबन्दी के खिलाफ और लेखक की दुर्दशा पर एक शब्द भी नहीं कहा है। पुस्तक में इस्लाम धर्म के प्रवर्तक पैगम्बर मोहम्मद की जीवनी लेखक ने अपने अदाज मे लिखी है। औपन्यासिक ढग से लिखी गई यह जीवनी पैगम्बर साहब के अनुयायियों को रास नहीं आई। इस रास न आने के कारण पुस्तक की दुनियां भर में निन्दा हुई। उस पर पाबन्दी लगाने की मांग उठी और सबसे पहले भारत में प्रतिबन्ध लगाया गया। पुस्तक में जो लिखा गया उमसे हजार गुना वीभत्स और कुत्सित ढग से भारत में सीना तानकर लिखा गया। फर्क सिर्फ इतना है कि यहां राम और कृष्ण के बारे में लिखा गया। इस तरह के लेखन और प्रतिपादन पर हिन्दू समाज में प्रतिक्रिया

पंजाब में छिद्मवेशी सिखों की घुसपैठ

पंजाब में हिन्दू सिख का भाईचारा पाकिस्तान के लिए शुरू से ही गले का कांटा बनकर चुभता रहा है। इसीलिए इस चुभन को दूर करने के लिए पाकिस्तान अपने प्रशिक्षित आतंकवादियो को पजाब भेजकर वहां आतंक फैलाने की चेष्टा करता रहता है ताकि हिन्दू-सिखों के बीच वैमनस्य और विद्वेष का वातावरण उत्पन्न हो सके। गुप्तचर सूत्रो के अनुसार इस कार्य के लिए लगभग सौ पाकिस्तानी पिछले दिनो छद्म सिख वेश धारण कर भारत में घुस आये हैं।

बताते हैं कि तेरह नवम्बर को जालन्धर के आदर्श नगर और अजीत नगर के गुरुद्वारो में गुरुग्रन्थ साहिब की पवित्र बीड़ो को जलाने में इन्हीं छद्म वेशधारी घुसपैठियों का हाथ था। कुछ आतंकवादी संगठनो ने इस घृणित काम में इन घुसपैठियो की खुलकर सहायता की। कहा तो यह भी जा रहा है कि घुसपैठियों के रहने की व्यवस्था भी आतकवादी सगठनो के सरगनाओ ने अपने घरों मे की हुई है। इनके छुपने के लिए राज्य के अनेक होटलो मे झूठे नामों से कमरे भी आरक्षित कराये हैं।

गुरुग्रन्थ साहिब की बीड़ो को आग लगाने की दोनो घटनाए लगभग एक ही समय घटी। आश्चर्य की बात तो यह है कि पवित्र गुरुग्रन्थ को जिस समय आग के हवाले किया गया उस समय सम्बन्धित गुरुद्वारो मे कोई भी सेवादार उपस्थित नही था।

नही है । इसके बावजूद यह प्रलाडना है कि हिन्दू कट्टर असहिष्णु हो रहा है ।

अयोध्या मे राम जन्मभूमि मन्दिर के सम्बन्ध मे हजार तरह के सुझाव दिए गए और प्रत्येक सुझाव मन्दिर निर्माण की भावना अनदेखी करते हुए दिए गए । इन सुझावो का उद्देश्य भी दूसरे पक्ष के कट्टरपथी आग्रहो का बचाव करना ही है । बचाव की इस कोशिश मे बडी चतुराई से सुझाया जाता है कि स्थापित देव मूर्तियो को अपने स्थान से हटा लिया जाए और वह जगह छोड कर पास ही या कही और मन्दिर बना लिया जाए । एक महत्वहीन इमारत का ढांचा इतना महत्वपूर्ण क्यो है कि उसे अक्षुण रखने के लिए हिन्दू समाज अपनी आस्था और परम्परा को तिलांजलि दे दे ?

विडम्बना देखिये कि इस सुझाव पर गौर न करते हुए लाखो लोग अयोध्या पहुचते हैं तो वे राज्य और सेकुलरिस्टो की जमात द्वारा अपराधी करार दिए जाते हैं । उन्हें रोकने के लिए बीसियो शहर और सैकडो परिसर बन्दीगृह में बदल दिए जाते हैं । इस पर भी लोग नही रुकते तो बन्दूक की गोलियो से कितने ही शव बिछा दिए जाते हैं । अब अपेक्षा यह है कि इस दमन की निन्दा नही की जाए क्योकि निन्दा की गई तो कट्टरपन्थी आग्रहो का मनोबल बढेगा और जिन विग्रहो को हटाने के लिए उनसे कहा जा रहा है उन्हें नही हटाएगे । विग्रह हटाने की बात सीधे नही की जाती । कहा जाता है कि अन्यत्र मन्दिर बना लो और वह जगह छोड दो जहा मूर्तिया हैं । इस जगह को छोड कर दूसरी जगह मन्दिर बनाने का अर्थ ही यह है कि अपनी मूर्तिया उखाड कर ले जाओ ।

सुझाव यह भी राम जन्मभूमि मन्दिर की जगह अस्पताल बना दिया जाए । अनाथालय, शिक्षण सस्थान और अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र बनाने की प्रेरणा भी कई मसीहाओ ने दी है । एक सुझाव यह भी है कि वहा राम की याद मे एक मीनार बना दिया जाए और उन्हे इमामे हिन्दू बताते हुए मीनार पर एक गजल लिख दी जाए । इन सुझावो मे से एक को भी मान लिया जाए तो कथित बाबरी मस्जिद फिर भी हटानी पडेगी । सुझाव देने से पहले क्या यह सुनिश्चित कर लिया गया है कि जो राजनैतिक आग्रह आज रुकावट बन रहे है वे सब रास्ते से हट जायेगे ? उत्तर निश्चित ही नही मे होगा और सुझाव उसी सेक्यूलर छेडछाड करने वाली मनोवृत्ति से उभरे हैं जिनके लिए हिन्दू हास परिहास और व्यग्य विनोद का ही विषय है ।

निन्दा भर्त्सना के लिए जो आक्षेप पिछले दिनो खड किए गए उनमे कुछ मण्डल आयोग की रिपोर्ट लागू किए जाते समय उछाले गए । मसलन कहा गया कि हिन्दू समाज ने प्रारम्भ से ही बहुसख्यक पिछडो को दबाए रखा और उन्हे आगे नही बढने दिया । जैसे हजारो साल से भारतीय समाज यथावत हो और उसमे कभी कोई परिवर्तन हुआ नही आया हो । एक हजार साल पहले शुरू हुए विदेशी आक्रमणो का भी उस पर कोई असर नही हुआ अर्थात भारत कभी गुलाम ही नही हुआ या अग्रेज यहा हमेशा से राज करते रहे क्योकि हजारो साल से भारत ज्यो का त्यो है ।

माना कि समाज मे विषमता है अन्याय है और उसे दूर करने के लिए निर्बल असहाय उपेक्षित लोगो को विशेष सुविधाए भी दी जानी चाहिए । लेकिन इस विषमता और अन्याय का दोष मनु नामक चरित्र पर क्यो मढ दिया जाना चाहिए जिनका रचा हुआ धर्मशास्त्र भी आज उपलब्ध नही है । उपलब्ध मनुस्मृति भृगु नामक द्वारा सकलित है । फिर इस बात के भी कोई प्रमाण नही हैं कि समाज मे किसी भी समय मनु के विधान का पालन किया जाता हो । मनु ही क्या किसी भी शास्त्र और विधान को भारत में पत्थर की लकीर बना कर लागू नही किया गया । वरना वेद उपनिषद के बाद छह शास्त्र अठारह पुराण ५६ स्मृतिया और निबन्ध आदि रचने की क्या आवश्यकता थी ? मजे की बात है कि जिस एक शास्त्र की पहली बार अत्यधिक दुहाई दी जाने लगी है वह चालीस वर्ष पहले रचा गया भारत का सविधान है । मनु की कोई व्यवस्था इस जाने के आडे नहीं आई और किसी ने इसका विरोध भी नहीं किया । आधुनिक जीवन और समाज व्यवस्था मे मनु का कोई दखल न होते हुए भी वे आक्रमण का शिकार बनते हैं तो कारण सिर्फ कोसने के लिए कोसना ही है । न्याय और मानवीय गरिमा ही प्रेरित करती है तो मुस्लिम समाज मे प्रचलित शरीयत की ओर ध्यान क्यो नही जाता जिसके कारण महिलाओं की स्थिति मे सुधार की काई मनचाही पहल भी पूरे समाज को नाराज कर देती है । और उस नाराजी को दूर करने के लिए माफी मागते हुए सुप्रीम कोर्ट का फैसला उलटना पड जाता है ।

उधर हिन्दू धर्म की शून्य व्याख्याए भी बहुत हुई हैं । जैसे कहा जाता रहा कि हिन्दू धर्म का कोई निश्चित स्वरूप नही है । और कोई तन्त्र नहीं है, कोई एक दर्शन नही है और कोई प्रवर्तक भी नही है । यह व्याख्या ईसाई और इस्लाम धर्म के सामने रख कर ही की जाती है जिसका निष्कर्ष है हिन्दू धर्म विधिवत अर्थों मे कोई धर्म ही नहीं है अर्थात हिन्दू होने का मतलब कुछ भी करने और मानने की छूट है इस व्याख्या से क्या आशय समझे ।

व्याख्या कहती है कि हिन्दू धर्म निर्गुण, निराकार है । भारतीय दर्शन के प्रारम्भिक छात्र भी जानते हैं निर्गुण निराकार अतिक्रान्त स्तर है, उपक्रम सगुण साकार से ही करना पडता है और वही सहज भी है । शील, सदाचार, चर्या अनुशासन और आस्था हिन्दू होने की न्यूनतम शर्त है । इस न्यूनतम मे भी कोई रुझान नही है तो उक्त व्याख्या का लाक्षणिक अर्थ यह है कि हिन्दू होने का अर्थ निर्द्वन्द्व उच्छृखल होना है । अब इससे ज्यादा उपहास क्या हो सकता है कि एक समग्र जीवन पद्धति और तत्व दर्शन को समस्त उच्छृखलताओ की छूट वाला क्षेत्र घोषित कर दिया जाए । हिन्दू धर्म और समाज मे कट्टरता या असहिष्णुता के खण्डन-मण्डन की बात छोडिए, समाज मे जीवन और स्वाभिमान भी होता तो इन उद्दण्डताओ का उत्तर तो दिया ही जाना चाहिए था ।

विदेशी मिशनरियां

साम्प्रदायिकता फैलाने की एजेंसी हैं

—योगेशचन्द्र शर्मा

नई दिल्ली, १७ नवम्बर भारतीय सविधान की धारा २५ (१) मे नागरिकों को अपनी इच्छानुसार धार्मिक मत रखने और उसके प्रचार-प्रसार के लिए निर्बाध स्वतन्त्रता प्राप्त है। जिसका विदेशी मिशनरियो ने दुरुपयोग की सीमा तक भरपूर लाभ उठाया और उठा रही है। अनेक बार अनेक धर्मप्रचारकों को राष्ट्रविरोधी गतिविधियो मे लिप्त रहने तथा विद्रोही को उभारने वाले पादरी स्काट को रातों रात, देश से निष्कासित कर दिया गया था। उन्ही के एक अन्य सहयोगी पादरी फरेर की गतिविधिया काफी चर्चित रही। १९८० मे प० बगाल की सरकार ने अपने आदिवासी मिशनरियो पर प्रतिबन्ध लगा दिया था। असम सरकार से भी इन मिशनरियो की गतिविधियो को आपत्तिजनक माना और उन पर प्रतिबन्ध लगाये। १९८५ में मध्यप्रदेश की सरकार ने छ विदेशी ईसाई धर्म प्रचारको को निष्कासन के आदेश दे दिये। जिनके नाम हैं—लूक वर्स्टरेट, लुईस देरात, वाववावलाट (सभी बेल्जियम के), जाक सोमस (हालेंड), पेटर एव श्रीमती पेटर (अमरीका)। ये सभी पिछले चालीस वर्षों से इस प्रकार की गतिविधियो में सलग्न थे। मगर विभिन्न ईसाई सस्थाओ के दबाव मे म० प्र० सरकार ने इस आदेश की तत्काल क्रियान्वित को रोक दिया। विदेशी धर्म प्रचारकों के कारनामो को अध्ययन करने के लिए बनाये गये विभिन्न आयोग और समितियो ने भी एक स्वर से इन विदेशी धर्म प्रचारको की गतिविधियो को सन्देहास्पद माना और उन पर नियन्त्रण लगाने की सिफारिश की। नियन्त्रण लगाये भी गये, किन्तु वे बहुत सीमित और छोटे पैमाने पर रहे। मिजोरम, नागालैंड, तथा असम आदि क्षेत्रो में विद्रोहियो की गतिविधियो के पीछे मुख्य हाथ विदेशी मिशनरियो का ही है। मध्य प्रदेश, बिहार, उत्तर प्रदेश तथा राजस्थान सहित अनेक राज्यो में इन्होने अपना प्रभाव जमाया हुआ है। इन विदेशी ईसाई मिशनरियो के प्रभाव का ही यह परिणाम है कि नागालैंड मे विदेशी भाषा, अंग्रेजी को राज्य भाषा के रूप मे स्वीकार किया गया है।

एक सोवियत साप्ताहिक पत्र ने कुछ समय पूर्व कहा था कि—भारत में काम कर रही विदेशी मिशनरियो का सम्बन्ध सी आई ए से है। बात सोवियत सघ की है, इसलिए इसे असत्य और प्रचारात्मक कहा जा सकता है, किन्तु इग्लैंड के दो प्रख्यात लेखक पत्रकारो गार्डेन थामस और मार्गन विट्स ने सीधे पोप जान पाल पर अपनी एक पुस्तक में यह गम्भीर आरोप लगाया है कि उनके सी. आई. ए. से गहरे सम्बन्ध है और प्रत्येक शुक्रवार को वे उसके प्रतिनिधियो से विचार विमर्श करते हैं।

रोम स्थित सी०आई०ए० के स्थानीय प्रमुख सस्था सी०आई०ए० से यह निकटता चालीस साल पूर्व उस समय से है, जब सी०आई०ए० के सस्थापकों मे से एक, जनरल विलियम डोनोवन ने पोप पायस बारहवे के सामने आकर अपना मस्तक झुकाया था। इसी प्रकार के आरोप एक अन्य पूर्व प्रकाशित पुस्तक "पोंटिफ" मे लगाये जा चुके थे। आरोपों की सत्यता विवादास्पद हो सकती है, किन्तु यह बात सर्वविदित है कि पोप का समर्थन प्राय हमेशा ही अमरीका के पक्षधरो को प्राप्त रहता है, विरोधियो को नही। चीले, ग्वाटेमाला तथा अन्य देशो के उन नागरिको के प्रति पोप ने अपनी दिली हमदर्दी कम ही प्रकट की है, जो साम्राज्यवादी या तानाशाही शक्तियो के अत्याचार के शिकार रहे हैं। इसी तथ्य को सामने रखते हुए तीसरी दुनिया के कैथोलिक चर्च में एक नयी धारा ने जन्म लिया है, जिसका नामकरण किया गया है-'लिबरेशन थियोलाजी' (मुक्ति प्रिय धर्म विज्ञान)। इस धारा के समर्थक, शोषित जनता के साथ हैं और उसके विभिन्न आंदोलनो का समर्थन करते हैं।

भारत में कार्यरत विदेशी ईसाई मिशनरियों के कारनामों को देखकर यह निश्चित-रूप से कहा जा सकता है कि ये देश में अलगाववादी प्रवृत्तियों को तेजी से उभारती हैं तथा उन्हें कहीं भी राष्ट्रविरोधी चिंगारी देखने को मिलती है, उसे वे हवा देने से नहीं चूकती। उन्होने "दलित मुक्ति सेना" तथा 'भीम सेना" जैसी जुझारू सस्थाए भी बनाई हुई हैं, जो आवश्यकता पडने पर सघर्ष को किसी भी स्तर तक ले जाने के लिए तैयार रहती है।

महाराष्ट्र मे कार्यरत इसी प्रकार की एक सस्था 'दलित शोषित समाज सघर्ष समिति" के नेता काशीराम ने कुछ समय पूर्व एक पृथक और समानान्तर ससद की माग की थी। इतना ही नही, देश मे पिछले लगभग दस पन्द्रह वर्षों मे एक स्वतन्त्र 'दलित स्थान" के लिए भी बारूद तैयार की जा रही है जो कब फट पडे, कहना कठिन है। बगलूर मे १९८१ मे १८ मई से २८ मई तक एशियाई चर्च परिषद की अधिवेशन में हुआ था, जिसमे स्वतन्त्र "दलित स्थान" की माग का समर्थन करते हुआ कहा गया कि चर्च के पास इसके अलावा कोई विकल्प नही है कि वह सत्ता के वर्तमान ढांचे से टकराने मे हरिजनो की सहायता करे। इस अधिवेशन मे अछूतो की समस्या का अन्तर्राष्ट्रीयकरण करने की भो माग की गई थी। इसी अधिवेशन मे एक प्रमुख वक्ता वी०टी० राजशेखर शेट्टी ने अपने भाषण मे राष्ट्रविरोधी तथा अलगाववादी आग उगलते हुए यहा तक कहा था "हमे विश्वास है कि भारत मे हमारे मित्र नही मिल सकने। यदि इस्लाम और ईसाई धर्म विदेसी हैं तो हिन्दू धर्म भी विदेशी है। इसलिए हमे सघर्ष करने के लिए मित्र खोजने होंगे और विभिन्न देशो के नेताओ से बातचीत के आधार पर मैं यह कह सकता हू कि इस सघर्ष में ईसाई देश और चीन हमे पूरा समर्थन देंगे।"

'दलित स्थान" के प्रमुख प्रवक्ता वी० टी० राजशेखर शेटी ने अपनी इन अलगाववादी भावनाओ को अन्य अवसरो पर भी प्रकट किया है।

उनके अनुसार तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश तथा महाराष्ट्र के कुछ हिस्सो को मिलाकर स्वतन्त्र "दलित स्थान की स्थापना की जानी चाहिए। इसके अतिरिक्त ईसाई मिशनरियो के सहयोग से, "दलित स्थान' के समर्थक उत्तर प्रदेश, बिहार और मध्यप्रदेश को भी टुकडो मे बाटना चाहते हैं। यह योजना कुछ इसी प्रकार की है, जैसी कि १९३२-३३ के आसपास रहमत अली नामक एक लीगी नेता ने पाकिस्तान के लिए बनाई थी जिसमे इस देश को लगभग आधा दर्जन हिस्सो मे बाटने का सुझाव दिया था। अपने इस दुष्प्रचार में विदेशी चर्च के एजेण्टो ने महात्मा गाधी तक को नही छोडा। दलित साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित एक पुस्तिका "जाति पद्धति कैसे समाप्त की जाए' मे वी टी० राजशेखर शेट्टी ने लिखा है गाधीवाद ब्राह्मणवाद का ही दूसरा नाम है और ब्राह्मणवाद को फैलाने के लिए दी गयी सेवाओ के बदले ही गाधी के साथ 'महात्मा शब्द जोडा गया था।' इसी पुस्तक में जाति व्यवस्था को समाप्त करने का सुझाव देते हुए कहा गया जाति व्यवस्था को तोडने का सबसे बडा रास्ता गोमास खाना ही हो सकता है। इससे यह भी लाभ होगा कि मुस्लिम और ईसाई सगठनो का सहयोग भी हमे इस सघर्ष के लिए मिल सकेगा।"

(क्रमश)

सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत : स्थिर निधियां

(गतांक से आगे)

श्रीमती रम्भादेवी अनुविश वेद प्रचार निधि

यह निधि हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश) के श्री प० मुन्नालाल जी ने ११२००) की राशि से स्थापित कराई है। यह राशि सभा के नाम मे कैनारा बैंक दीनदयाल उपाध्याय मार्ग नई दिल्ली में जमा है जो १९८६ मे १० वर्ष के बाद ३० हजार के ऊपर हुई। पुन १० वर्ष के लिए रख दी गई है। इसकी ब्याज सभा जहा भी उचित समझेगी वैदिक धर्म के प्रचारार्थ खर्च किया जायेगा। १० जुलाई १९७७ की अन्तरग से इसकी स्वीकृति दी।

श्री मुन्नालाल जी ने इस निधि से वृद्धि कर ६७५७)०६ का १ कैश सर्टिफिकेट क्रय करके दिया है जिसका धन आन्ध्र प्रदेश महेश कोआपरेटिव अरबन बैंक लिमिटेड बेगम बाजार हैदराबाद मे जमा है और सभा को २-४ १९९१ मे २०,०००) प्राप्त होगा।

इन राशियो को पुन फिक्स डिपोजिट मे रखना होगा और जनवरी २००१ मे यह राशि १ ८०००००) एक लाख अस्सीहजार मात्र) हो जायेगी। उसके पश्चात सभा उक्त शर्तों के अनुसार इसका ब्याज खर्चकर सकेगी।

इस सर्टिफिकेट के परिवर्तन की स्वीकृति २१-२-८२ की अन्तरग बैठक ने दी।

श्री बख्शी खुशहाल स्वाध्यायानन्द स्थिर निधि,

यह स्थिर निधि ५०००) (पाच हजार रुपया मात्र) की राशि से बख्शी खुशहाल जी ने स्थापित की है। जिसकी १७-१-७७ की अन्तरग बैठक ने स्वीकृति दी। इस निधि के ब्याज से बख्शी जी की निजी पुस्तके छपा करेंगी।

दयानन्द दलितोद्धार निधि

यह निधि ३०७०) की है जो स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने दलितोद्धार के कार्यार्थ १९२१ मे स्थापित की थी। इसका ब्याज दलित कहे जाने वाले बन्धुओ एव छात्र-छात्राओ की सहायता पर खर्च किया जाता है।

स्वामी ब्रह्ममुनि जी की वसीयत

१९८० मे निधन से पूर्व श्री स्वामी ब्रह्ममुनि जी ने अपनी धन राशि की पुस्तको के स्टाक तथा उनके प्रकाशन के अधिकार की वसीयत इस सभा के नाम मे की थी। इस वसीयत के अनुसार नकद (बैंको में जमा) धन पुस्तको का स्टाक वा बिक्री की राशि प्राप्त करन का अधिकार सभा को है। सहारनपुर मे एक कोर्ट से प्रोबेट प्राप्त कर लिया गया तथा डाकखाना व बैंको आदि से १,०१७३०)०५ रु० प्राप्त हुए थे।

डा० नन्दलाल व श्रीमती सावित्री देवी स्थिर निधि

१० हजार की यह स्थिर निधि १६-११-७९ की अन्तरग सभा द्वारा स्वीकृत हुई थी। इस निधि के दो भाग हैं। प्रथम ५०००) की निधि के ब्याज से आर्य सन्यासियो उपदेशको तथा भजनीको के रोगग्रस्त होने पर चिकित्सा कराई जायेगी। दूसरी ५०००) की निधि का ब्याज पहाडी क्षेत्रो वा नेत्र रोग की रोकथाम पर खर्च किया जायेगा।

श्री रामरखामल मथुरा कलेरकलां स्थिर निधि तीन हजार रुपये, श्री नानकचन्द मथुरा एवं श्रीमती मथुरा देवी स्थिर निधि पांच हजार रुपये

ये निधिया वेद प्रचार, हिन्दी भाषा प्रचार व समाज कल्याण के कार्यों सम्पादनार्थ स्थापित की गई है। इनकी स्वीकृति १०-११-७९ की अन्तरग द्वारा हुई।

श्री मनोहरसिंह पनगड़िया अनेका राजस्थान स्थिर निधि

यह निधि श्री गुमानसिंह जी (पूर्व एकाउन्टेण्ट जनरल लाइफ इन्श्योरेन्स कम्पनी) ११ दरियागंज, नई दिल्ली तथा लेखा निरीक्षक देहली राज्य आर्य केन्द्रीय सभा ने ५ हजार रुपये के दान से अपने अग्रज श्री मनोहरसिंह के नाम से १९६७ मे स्थापित की थी। ५ १ ६७ को अन्तरग सभा ने इसकी स्वीकृति दी थी।

इसका ब्याज निर्धन छात्र छात्राओ को जिनके अभिभावको की अथवा माता-पिता की मासिक आय ७५०) वा इससे कम होवी और पुस्तकें खरीदने मे जो असमर्थ होवे उनको पुस्तको के क्रय कराने में व्यय होना निश्चित हुआ है। सहायता प्राप्त करने वाले छात्र को निश्चित फार्म पर आवेदन पत्र देना होता है जिसकी स्वीकृति अब श्री गुमानसिंह जी के सुपुत्र श्री पृथ्वीसिंह पनगडिया १२१ तानसेन नगर ग्वालियर देते हैं। यदि ब्याज की राशि पुस्तको के रूप मे खर्च न हो तो दो वर्ष बाद यह राशि पृथ्वीसिंह जी पनगडिया की अनुमति लेकर सभा किसी दीन, हीन विधवा अथवा अबला आदि की सहायता मे खर्चकर सकेगी।

श्री धन्नाराम कुकरेजा वेद प्रचार स्थिर निधि

श्री सेठ प्रीतमदेव कुकरेजा ने अपने माता-पिता श्री धन्नाराम कुकरेजा की स्मृति मे ११००) की स्थिरनिधि सभा में कायम की थी जिसकी स्वीकृति ३-४-७८ की अन्तरग बैठक में दी थी। इसका ब्याज आर्यसमाज के प्रचारको अथवा उनको आर्थिक सहायता पर खर्च किया जायेगा।

दानी को इस राशि मे वृद्धि करने की भी अनुमति दी गई थी।

स्त्री आर्य समाज लोहगढ़ अमृतसर स्थिर निधि

यह निधि १०,०००) की है। २६-११-७८ की अन्तरग द्वारा स्वीकृति हुई। इस निधि का ब्याज निर्धन छात्रो की छात्रवृत्ति पर व्यय होगा।

श्रीमती विद्यावती बहल सम्मन निवासी स्थिर निधि (पाच हजार)

यह निधि महाविद्यालय ज्वालापुर के छात्रो की छात्रवृत्ति के लिए है इसकी स्वीकृति २६-४ ८० की अन्तरग द्वारा हुई।

श्री अर्जुनलाल आचार्य का दान

श्री स्वर्गीय अर्जुनलाल आचार्य रिटायर्ड रेलवे गार्ड ने अपना मकान जो सदर बाजार नीमच छावनी मे स्थित है जिसका म्यूनिसिपल नम्बर १०१७ तथा मूल्य लगभग दस हजार रुपया है आर्य समाज नीमच छावनी के उपयोग के लिए सार्वदेशिक सभा को दान किया हुआ है। इस मकान का उपयोग आर्य समाज नीमच छावनी करता है।

श्री किशोरीलाल पुरी की वसीयत

इस वसीयत से सभा को नकद और विविध कम्पनियो तथा सस्थानो के ५२८३)६० के शेयर्स प्राप्त होने थे जिनका डिस्ट्रिक्ट जज दिल्ली की अदालत से प्रोबेट मिल गया। निम्न प्रकार नकद धन मिला और सभा के नाम शेयर्स परिवर्तित हुए।

१—मोहिनी शुगर मिल्स कलकत्ता	१०००)१०० शेयर्स
२—अपर इण्डिया पेपर कूपर मिल लखनऊ	१००)१ शेयर्स
३—यूनाइटेड कमर्शियल बैंक दिल्ली	११७)०४ नकद
४—पजाब नेशनल बैंक, करोलबाग, नई दिल्ली	२२१)२४ नकद
५—हिन्दुस्तान कमर्शियल बैंक कानपुर	२५०)५ शेयर्स
	९० प्रतिशत भुगतान

६—न्यू इण्डिया एश्योरेंस कम्पनी से १५०) मिलने थे २६०)५० मिले। यूनिवर्सल फायर एण्ड जनरल इन्श्योरेंस कम्पनी से ७५) मिलने थे १८७)८१ प्राप्त हुए। अब कोई शेयर नहीं रहा।

७—श्रीविजय आटो मोबिल लिमिटेड बम्बई का १०८) का एक शेयर एक शेयर्स २ पूरे भुगतान तथा १० शेयर्स १/४ भुगतान (१५०) अब इस वसीयत का कोई धन तथा शेयर प्राप्तव्य नहीं रहा। (क्रमशः)

मारीशस में आर्यसमाज : स्थापना की ८०वीं वर्षगांठ

पण्डित धर्मवीर धूरा, शास्त्री, मन्त्री उपदेशक मण्डल आर्य सभा मारीशस द्वारा

[गतांक से आगे]

मारीशस हिन्द महासागरमें ७२० वर्गमील का टापू है। यहां पर 10 लाख ५० हजार की संख्या में हम बसते हैं ५२ प्रतिशत हमारे हिन्दू तथा आर्य परिवार के लोग हैं। विश्व के सभी प्रमुख धर्मों के लोग यहां पर मेल-मिलाप के साथ रहते हैं। आर्यसमाज के ६० पण्डित पुरोहित प्रचार कार्य में लगे हैं। १० बहनें भी हैं जो सेविकाओं का कार्य करती हैं। आर्यसमाज की ४५५ शाखाएं हैं, ५० स्त्री मण्डलियां हैं, ३० आर्य युवक संघ भी हैं जो आर्य समाजी परिवार हैं सबके साथ मिल-जुलकर कार्य कर रहे हैं। साथ में २५० प्राथमिक पाठशालाएं हैं जहां कि शाम को और रविवारों को हिन्दी और संस्कृत की भी पढ़ाई की जाती है। बच्चों को संध्या कराई जाती है।"

८० वीं वर्षगांठ जब हम मनाने लगे तो डा० रुद्रसेन निऊर जी जो आर्य सभा के प्रधान हैं (आपके भाई आनन्द प्रिय निऊर जी चाणक्यपुरी, नई देहली में मारीशस के राजदूत हैं) आपने कहा था कि "जब स्व० डा० शिवसागर रामगुलाम जी लन्दन से शिक्षा प्राप्त कर यहां लौटे थे तो सन १९१५ ई० में आर्यसमाज ने उन्हें अपना कार्य करने के लिए क्षेत्र तैयार करके प्रदान किया था।

सन १९७२ की बात है, भारत अलवर में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा ११वां आर्य महासम्मेलन किया जा रहा था तो, हमारे तत्कालीन प्रधानमन्त्री डा० शिवसागर रामगुलाम जी को प्रधान आसन ग्रहण करने के लिए आमन्त्रित किया गया था। वहां पर आपने यह ऐलान किया था कि–

आर्य समाज वह आन्दोलन है जिसका सूत्रपात महर्षि दयानन्द जी ने वैदिक ध र्म के पुनरुद्धार के लिए किया था।"

डाक्टर रामगुलाम जी ने भारत से वापस होकर मारीशस के हवाई अड्डे पर यह विचार व्यक्त किया था कि "मैं उस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन से बहुत प्रभावित हुआ। वहां सम्मेलन का आयोजन शानदार रहा।"

सन् १९७१ की बात है, मारीशस मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की मन्त्रणा से एक आर्य महासम्मेलन किया गया था। इसमें आर्य सभा और आर्य रविवेद प्रचारिणी सभा का पूरा सहयोग रहा। पटना बिहार से डाक्टर दु:खनराम जी भी पधारे थे। इस सम्मेलन का अध्यक्षीय पद सूरत, भारत के श्री बल्लभदास प्रताप-सिंह सूरजी ने किया था। इस सम्मेलन का उदघाटन मारीशस के तत्कालीन स्वास्थ्य प्रधानमन्त्री श्री अबदुल रजाक मोहम्मद जी ने किया था। भारत से ५०० और दक्षिण अफ्रीका के १०० प्रतिनिधि पधारे थे। हैदराबाद के स्व० पण्डित नरेन्द्र जी, बड़ोदा के आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री जी, देहली के आचार्य श्रीकृष्ण जी (अब आपने संन्यास ग्रहण कर लिया है) भी विराजे थे, देहली से सार्वदेशिक का दफ्तर भी यहां पर चला आया था। दक्षिण अफ्रीका का आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्व० श्री छुट्टे जी ने वहां के दल का प्रतिनिधित्व किया था।

गत अक्तूबर मास के अन्त में मारीशस में आर्यसमाज स्थापना की ८०वीं वर्षगांठ के शुभावसर पर प्रमुख आयोजन में यहां के गवर्नर जनरल श्री वियास्वामी रिंगाड जी ने कहा था कि मैं गत ४० वर्षों से आर्य समाज के कार्यों से प्रभावित हुआ हूं। स्व० डा० रामगुलाम जी भी आर्यसमाज के कार्यों से बहुत खुश होते थे। महर्षि दयानन्द जी ने लोगों को एकता से जीना सिखाया। एक समय ऐसा भी था जब कि समाज के कार्यों को करने वालों को मान सम्मान नहीं था, पर अब कुछ भूलकर इस समाज के सेवकों ने एकता के साथ कार्य किया।"

सामाजिक सांस्कृतिक और राजनैतिक क्षेत्रों में आर्य समाज के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर काम करने वाले महानुभावों के प्रति आपने आभार प्रगट किया।

आपने आर्यसमाज के नेता मारीशस के नागरिक श्री मोहनलाल मोहित जी, आर्य रत्न, ओ०बी०ई० के सामाजिक कार्यों के लिए प्रशंसा की और उन्हें बधाई भी दी। उनके राष्ट्रीय कार्यों के लिए बधाई दी।

दक्षिण अफ्रीका आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एक शिष्टमण्डल के साथ पधारे थे आपने कहा कि "यहां के आर्य समाजी नेताओं को बधाई। यहां पर आर्य समाज की जो ८०वीं वर्षगांठ आप लोग मना रहे हैं उससे हमें खुशी है।

मातृ देवो भव:
पितृ देवो भव:
आचार्य देवो भव:

महर्षि दयानन्द जी ने माता-पिता और गुरु को क्यों उतनी महानता दी है? क्योंकि किसी मानव को सुसंस्कार के लिए उनकी अच्छी जिम्मेवारी होती है। आपने इस बात पर बल दिया कि भारत में वर्णव्यवस्था को बढ़ावा दे रहा है इन दिनों में, उसके विरुद्ध में प्रस्ताव पारित करके वहां पर भेजना चाहिए, क्योंकि महर्षि दयानन्द जी ऐसी खोखली बातों के विरोधी थे। दक्षिण अफ्रीका आर्य प्रतिनिधि सभा के आमन्त्रण पर भारत के विद्वानों को वहां आने के लिए विजा की कठिनाई बताई।

भारतीय हाईकमिश्नर श्री शिवसिंह राणा जी ने कहा कि "उन पूर्वजों ने यहां पर आकर निस्वार्थ सेवा की। मारीशस के विकास और स्वतन्त्रता में उनका बहुत हाथ रहा है। यहां पर और भारत में शिक्षा प्रचार वैदिकधर्म प्रचार प्रसार में उन्होंने बहुत कार्य किया देश की स्वतन्त्रता के साथ आर्थिक स्वतन्त्रता भी बहुत बड़ी समस्या है,यदि महर्षि दयानन्दजी आज जीवित होते तो उनको पता चलता कि यह आर्थिक समस्या कितनी बड़ी समस्या है, भारत हमेशा से मोरिशस के साथ है, और भविष्य में जो कुछ हो सकेगा हम करेंगे।

मारीशस के प्रधान मन्त्री श्री सर अनिरुद्ध जगन्नाथ जी ने कहा कि "हमारे पूर्वज अपने साथ हमारी संस्कृति और सभ्यता लाये सन्१९१० में जब से आर्यसमाज की स्थापना हुई तब से प्रगति होने लगी। हमारे पूर्वज सत्यार्थप्रकाश और वेद बाद में पढ़ने लगे यह गौरव की बात है कि यहां पर आर्यसमाज द्वारा आर्योदय निकल रहा है। बाल विवाह नहीं हो रहा है। आप लोगों ने ८० वर्षों तक काम किया हो सके और काम करें, ताकि अधिक प्रगति हो आप लोग साल २००० के लिए भी काम करें ताकि देश में शान्ति भी मिले।" आपने भी मोरिशस आर्यसमाज के प्राण श्री मोहनलाल मोहित जी के कार्यों के प्रति श्रद्धा के फूल चढ़ाये।

मोके के लिए भारत से स्वामी सत्यकाम जी पधारे थे। आपने महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के कार्यों पर प्रकाश डाला और कहा कि मैं आप लोगों से मांग करता हूं कि आप के देश के प्रधान मन्त्री सर्वत्र जाते हैं उनकी रक्षा हो। भाई अनिरुद्ध जगन्नाथ जी को बड़े प्यार से आदर से आशीर्वाद करता हूं कि, आप हमारे प्यार की विशेषता को हमेशा याद करें।

आर्य सभा के मन्त्री श्री सत्यदेव प्रियतम जी ने सबके प्रति आभार प्रकट करते हुए सबको धन्यवाद किया। इन कार्यक्रमों में जिन-जिन समाजों में संस्थाओं ने सहयोग दिया उनके प्रति भी

(शेष पृष्ठ ८ पर)

साम्प्रदायिकता विरोधी आयोजन (२)

—आचार्य रामकिशोर शर्मा

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के समान योगिराज श्रीकृष्ण भी ससार भर की कोटि जनता के श्रद्धा केन्द्र हैं। मथुरा में इनका जन्म हुआ था। इनके जन्म स्थान पर भी महाराज वीरविक्रमादित्य ने भव्य मन्दिर का निर्माण कराया था। उस समय इस मन्दिर का अभूतपूर्व वैभव था। फ्रान्स के टेवर्मियर और इटली के मनूची ने अपनी यात्रा के प्रसगो मे इनका वर्णन किया है। सर्वप्रथम महमूद गजनवी ने १०१७ मे इस मन्दिर को ध्वस्त कराया और मथुरा वृन्दावन को २० दिनो तक लूटा। फिर यह हिन्दुओ के अधिकार में आ गया किन्तु औरगजेब की क्रूर दृष्टि इस पर भी पडे बिना न रही और १६६९ में उसने इसे फिर तुड़वा कर वही मस्जिद बनवा दी श्री कृष्ण का जन्म चन्द्रवंश के प्रतापी राजा यदु के कुल मे हुआ था। श्री नन्द जी के यहा उनका पालन पोषण हुआ था। वे यादव मात्र के पूर्वज थे। वे विलक्षण व्यक्तित्व के धनी थे। महाभारतादि ग्रन्थो मे उनके दिव्य चरित्र का वर्णन है। कुरुक्षेत्र के मैदान मे उन्होने अर्जुन को जो उपदेश दिया था, वह गीता के नाम से विश्व विख्यात है। वे केवल वीर पुरुष ही नही महान मनीषी अनुपम राजनीतिज्ञ परम देशभक्त तथा योगिराज थे। उन्होने विश्व को प्रभावित किया था। जिन मज़हब के उन्मादियो ने मन्दिर को तोडा उनके अनुयायियो ने देश को बाट लिया अपने हिस्से का नाम पाकिस्तान रखकर इस्लामी राष्ट्र बना दिया। अब यदि यहा के निवासी अपने पूर्वज श्रीकृष्ण जी के जन्म स्थान राष्ट्रीय महापुरुष के नाते मन्दिर बनाना चाहते हैं तो ठीक ही तो है यदि उनका मन्दिर यहा नहीं बनेगा तो क्या पाकिस्तान में बनेगा।

गुजरात की जनता के निर्वाचित प्रतिनिधि श्री पटेल ने गृहमन्त्री बनते ही श्री सोमनाथ मन्दिर का पुनरुद्धार करा दिया। उत्तर प्रदेश की जनता द्वारा निर्वाचित कई प्रतिनिधि प्रधानमन्त्री गृहमन्त्री बने परकुछ नही हुआ। यदि यहा से भी श्री पटेल जैसे प्रतिनिधि चुने जाते तो यह सब क्यों देखना पडता? जिन्हे यहा की सस्कृति का अभिमान है जो यहा के पूर्वजो का सम्मान करते हैं जिनकी मातृभूमि और पुण्यभूमि भी भारत है जिनका समर्थन इसी के लिये वे साम्प्रदायिक और जो विदेशी सस्कृति के उपासक हैं यहा के पूर्वजो का अपमान करते हैं भारत को दारुलउलूम बनाना चाहते हैं पाकिस्तान जिन्दाबाद कहते हैं वहा का ध्वज फैहराते हैं विदेशी घुसपैठियों और आतकवादियो के रक्षक हैं साम्प्रदायिक दगे करवाते हैं और भारत माता को डायन कहते हैं, वे राष्ट्रभक्त कहे जा रहे हैं। कैसी विडम्बना है कुर्सी के भूखे भेडिये उन्ही विदेशी एजेन्ट और साम्प्रदायिकों के साथ मिलकर साम्प्रदायिकता विरोधी आयोजन कर रहे हैं। शासन द्वारा अपने स्वार्थ के लिये सम्प्रदायो मे बाटे हुये देश मे मण्डल आयोग का नाम लेकर हिन्दुओ को भी दो भागो मे बाटना प्रारम्भ कर दिया है। सभी राष्ट्रवादी हिन्दू मुस्लिम, सिख और ईसाई आदि को इन कुर्सी के भक्तो से कहने का समय आ गया है कि काफी समय हमें बहकाकर शासन का सुख भोगते रहे हो अब हम सजग हैं छल बल एव प्रलोभन से हिन्दुओं को विधर्मी बनाकर राष्ट्र की मुख्यधारा से अलग कर देने वाले विदेशी एजेन्टो की अब यहा दाल नही गलेगी। अपने ही देश में अपने ही पूर्वज श्री राम और श्री कृष्ण आदि का अपमान सहन नही किया जायेगा। अब हमें आस्तिन के सापो की पहचान हो गई है।

मारीशस में आर्यसमाज

(पृष्ठ ७ का शेष)

धन्यवाद किया। आपका भाई डा० प्रियतम जी मारीशस के प्रतिनिधि के रूप में न्यू यार्क, अमेरिका में कार्यरत हैं) निम्न आर्य सेवियों को आर्य समाज की सेवा के लिए सम्मानित किया गया जैसे—

(क) माता यशोदा दशरथ जी 'आर्य रत्न
(ख) श्री रामसुभग गोवरधन जी
(ग) श्री प्रसाद ठाकुरदयाल जी
(घ) प० गोपीनाथ चिंतामन जी
(ङ) श्री यशकरण मोहित जी
(च) श्री हुसीलाल चुड़ामणी जी
(छ) श्रीमती देवन्ती डोमा जी

इन लोगो ने गत ४० ५० वर्षों तक मारीशस में आर्यसमाज की सेवा तन मन धन लगा कर सेवा की है। माता देवन्ती के सुपुत्र न्यायाधीश श्री सत्यभूषण गुप्त डोमाजी ने मौके पर एकसार गर्भित भाषण के दौरान कहा था कि—

"महर्षि दयानन्द जी ने भारत की प्रगति के साथ सारे विश्व की प्रगति के लिए कार्य किया है।" इस बात पर आपने बल देकर कहा कि—

"यदि आप सच्चे आर्य समाजी हैं तो आपको जागते रहना चाहिए।"

केवल भारत ही एक ऐसा देश है जो एक ऐसे महापुरुष को जन्म दिया है, दयानन्द ने न्याय के लिए काम किया है। आपने प० वासुदेव विष्णुदयाल जी के कार्यों की भी चर्चा की। आपने बताया कि महात्मा गांधी जी ने इस युग मे अहिंसा का प्रचार किया, पर महर्षि दयानन्द जी ने उन्हे विष देने वाले जगन्नाथ की जान बचाई।

श्री डोमा जी ने राष्ट्र सघ मे मानव हितो के लिए जो नियम चालू है उनकी चर्चा गत शताब्दि में दयानन्द जी ने काफी अर्थों में की है। दयानन्द जी एक ऐसे निर्भिक वीर थे जिन्होंने सबके लिए शिक्षा का द्वार खोल दिया है। विदेशियों के सुराज्य की जगह स्वराज की बात बताई।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में हैदराबाद के आर्य सत्याग्रहियों को प्रमाण-पत्र दिए जायेंगे

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आगामी २३ से २६ दिसम्बर १९९० तक होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में उन सभी आर्य सत्याग्रहियों को प्रमाण पत्र दिए जायेंगे, जिन्होंने १९१८-३९ में आर्य सत्याग्रह के सिलसिले में हैदराबाद निजाम की जेलों में सजा भोगी थी।

अत. सभी सत्याग्रहियों को सूचित किया जाता है कि वह अपना नाम, पिता का नाम और पूरा पता लिखकर १८ दिसम्बर १९९० तक सार्वदेशिक सभा के कार्यालय मे भिजवा द ताकि प्रमाण पत्र तैयार करने के लिए उनका नाम सूची में अंकित किया जा सके।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
सभा-प्रधान

यशस्वी डा० सुधाकर जी चौधरी को श्रद्धांजलि

१९ अक्तूबर १९९० के दिन प्रातः एक मोटर बस दुर्घटना में सोनी रोड पर आयुर्वेद एवं सिद्ध के एक यशस्वी चिकित्सक डा० सुधाकर जी की असामयिक मृत्यु से एक होनहार चिकित्सक एव जिन्दादिल इन्सान हमेशा के लिए विदा हो गया। मोहननगर के एवं दिल्ली के मतराम चिकित्सालयों में उनकी प्राणरक्षा की भरसक कोशिश की गई, परन्तु उनकी प्राणरक्षा सम्भव न हो सकी।

डा० सुधाकर जी, जो व्यावहारिक जीवन मे डा० एस० के० चौधरी के नाम से जाने-बूझे जाते थे एक शिक्षा शास्त्री एवं दर्शनों के उद्भट विद्वान गुरुकुल कांगड़ी के दर्शनोपाध्याय प्रो० सुखदेव जी विद्यावाचस्पति एव प्रसिद्ध समाज सुधारिका एव प्रचारिका माता प्रभावती जी की द्वितीय सन्तान थे। उनका जन्म २८ दिसम्बर १९३१ को डेरागाजीखां में हुआ था। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा कुरुक्षेत्र और इन्द्रप्रस्थ के गुरुकुलो मे हुई थी। सन् १९५४ मे उन्होंने गुरुकुल कांगड़ी से आयुर्वेदालंकार की उपाधि प्राप्त की। आयुर्वेद की स्नातकोत्तर परीक्षा एच०पी०ए० उन्होने जामनगर के आयुर्वेद संस्थान से ग्रहण की।

आयुर्वेद की उच्चतम शिक्षा प्राप्त करने के बाद वह जामनगर के संस्थान में ही आयुर्वेद के प्राध्यापक बन गए। सन् १९६१ से १९७२ तक उन्होने सरदार शहर की प्रसिद्ध शिक्षा संस्था गांधी विद्यामन्दिर के तत्वावधान मे आयुर्वेद विश्वभारती मे शिक्षा सम्बन्धी सभी विषयों का योग्यता एव निष्ठा के साथ अध्यापन किया। सन् १९७२ से वह आयुवेद एव सिद्ध के केन्द्रीय अनुसन्धान संस्थान में कार्यरत हो गए। उन्होने अनेक वर्षों तक नागपुर और दिल्ली मे सस्थान की विविध शोधात्मक एवं सम्बन्धी गतिविधियों की सफलतापूर्वक व्यवस्था एव निर्देशन किया। आतंकवाद से आक्रान्त पटियाला मे भी वह कुछ समय तक उपयोगी कार्य करते रहे।

उनके पीछे उनकी धर्मपत्नी और सुपुत्री रह गई हैं। भगवान से यही प्रार्थना है कि वह दिवंगत विद्वान डा० साहब की आत्मा को सद्गति एवं सच्ची मुक्ति दें एव उनकी सुपुत्री एव धर्मपत्नी का भावी मार्ग प्रशस्त कर उन्हें यशस्वी बनाएं।

उनकी यशस्वी स्मृति में हार्दिक भावांजलि प्रस्तुत है।

—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के लिए दुकानों की बुकिंग

दिल्ली के रामलीला मैदान में २३ से २६ दिसम्बर १९९० तक आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के लिए दुकान के इच्छुक महानुभावों से निवेदन है कि वे सार्वदेशिक सभा के कार्यालय में आकर सम्पर्क करें। दुकानें १०×१० फ़ीट और १०×२० फीट में होंगी। किराया ४ दिन का छोटी दुकान ४००) और बड़ी का ८००) रुपया होगा।

किराया राशि अग्रिम सभा में प्राप्त होने पर सम्बद्ध पार्टी के नाम दुकान का आरक्षण कर दिया जायेगा।

सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी शताब्दी समारोह सम्पन्न

लुधियाना, १२ नवम्बर

कल यहां आर्य युवक सभा पंजाब ने पं० मुनिवर गुरुदत्त जी विद्यार्थी शताब्दी समारोह का आयोजन स्थानीय आर्यसमाज, महर्षि दयानन्द बाजार मे सम्पन्न हुआ, जिसकी अध्यक्षता श्री एस. सी. नन्दा, प्रिंसीपल आर्य कालेज ने की।

समारोह को सम्बोधित करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कार्यालय मन्त्री श्री सरदारीलाल आर्यरत्न ने युवको को आह्वान किया कि जाति पाति को समाप्त करने, दहेज जैसी सामाजिक बुराईयो को समाप्त करने के लिए संघर्ष करे। समारोह के मुख्य अतिथि श्री जे बी. गोयल, पी सी एस अतिरिक्त उपायुक्त लुधियाना ने कहा कि आर्य समाज ने शिक्षा के क्षेत्र में, सामाजिक उत्थान एवं अन्धविश्वास समाप्त करने, देश को आजाद कराने के लिए सराहनीय भूमिका निभाई हैं। आज की विषम परिस्थितियो मे आर्य युवको को रचनात्मक भूमिका निभानी चाहिये।

श्री सतीशचन्द्र जी नन्दा प्रिंसीपल ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे कहा कि महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तो पर चलते हुए यदि सभी को शिक्षा के समान अवसर दिये जाये तो मण्डल कमीशन की कोई आवश्यकता नही रह जाती है। उन्होने युवको को चरित्र निर्माण तथा भेदभाव को समाप्त करने के लिए प्रेरित किया।

इस अवसर पर देशकी एकता और अखण्डता और साम्प्रदायिक सद्भाव बनाये रखने तथा युवको को सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करने के लिए अमृतसर से डा हरभगवान आर्य, लुधियाना से गरीबदास महेन्द्रप्रताप आर्य राजेन्द्र महेन्द्र, वीरेन्द्र ढींगरा बरनाला से रामशरणदास गोयल, सतीश सिंगलानी, फिरोजपुर　　लाल बजाज, तथा चांदराम विद्यालंकार, मलेरकोटला से रमेश कौशल आदि ने युवको को सम्बोधित किया।

इस समारोह मे आर्य युवक सभा पंजाब के प्रधान श्री रोशनलाल आर्य ने श्री सतीश नन्दा, श्री जे बी गोयल, अतिरिक्त उपायुक्त, श्री सरदारीलाल आर्यरत्न को स्मृति चिन्ह भेंट करके सम्मानित किया।

यजुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ

श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय ११९ गौतमनगर, नई दिल्ली ४९ यजुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ का शुभारम्भ दिनांक २५ नवम्बर रविवार को प्रात ध्वजारोहण का कार्यक्रम प्रसिद्ध उद्योगपति श्री लाला इन्द्रनारायण जी हाथी दांत वालों के करकमलो से सम्पन्न हुआ। इस शुभ अवसर पर आर्य जगत् के यशस्वी सम्पादक श्री पं० क्षितीशकुमार जी वेदालंकार ने सभी उपस्थित श्रोताओं को प्रेरणात्मक उद्बोधन दिया। आर्य जगत् के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् जिनके ब्रह्मत्व मे यह महायज्ञ सम्पन्न हो रहा है श्री पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

इस महायज्ञ की पूर्णाहुति विभिन्न सम्मेलनो व्यायाम-सम्मेलन गुरुकुल सम्मेलन एवं आर्य महासम्मेलन के साथ दिनांक १६ दिसम्बर रविवार को प्रात ८ बजे तक सम्पन्न होगा।

अत आप सभी धर्म प्रेमी बन्धुओ से सादर निवेदन है कि आप भी इस शुभ यज्ञ मे भाग लेकर तन, मन, धन से संस्था को भरपूर सहयोग प्रदान कर पुण्य के भागी बनें।　　—हरिदेव आचार्य

आर्यों का राष्ट्र गीत

जय जय जय जय हे ! आर्य राष्ट्र निर्माता ।
जन जन की आशा केसरिया स्वस्तिक मगल दाता ॥
जय जय जय जय हे ।।।

भारत वर्ष महादेश के, भरत खण्ड अन्तर्गत ।
आर्यावर्त पुनीत देश के, ब्रज प्रदेश से निर्गत ॥
सकल्प हमारे आर्य जाति के नवयुग के निर्माता ।
आर्यस्थान महान् राष्ट्र के, नवजीवन के दाता ॥
जय जय जय जय हे ।।।

जनगण में चेतना फूक दो, राष्ट्र बनाने को महान् ।
आकाश विश्व का गूज उठे, जय आर्य जाति जय आर्य स्थान ॥
वेद शास्त्र मनुस्मृति गीता, समत धर्म प्रणेता ।
चार युगो के प्रतीक स्वस्तिके, शक्ति पथ के नेता ॥
जय जय जय जय हे ।।।

समान भक्षी अर्थव्यवस्था, सर्व लोक हितकारी ।
भोजन वस्त्र निवास प्राप्ति के, सभी लोग अधिकारी ॥
सभी सुखी हो सभी निरामय, हे कल्याण प्रदाता ।
कोटि-कोटि कठो जय जय हे, जनगण के सुखदाता ॥
जय जय जय जय हे ।।।

मनुप्रतिपादि कर्मवाद पर, ही समाज यह निर्मित ।
सुदृढ राष्ट्र निर्माण हेतु हम सदा सर्वदा सकल्पित ॥
विश्व विजेता आर्य दल हो, आर्य राष्ट्र की शान ।
राष्ट्र घात उप शमन हेतु, हम करे महा-अभियान ॥
जय जय जय जय हे ।।।

—ओम प्रकाश तिवारी, अधिवक्ता उच्चतम न्यायालय
सयोजक अध्यक्ष, आर्यन नेशनलिस्ट पार्टी

वेद प्रचार

गुरुकुल अयोध्या के पूज्य आचार्य ब्रह्मचारी शकर मित्र जी शास्त्री द्वारा पूज्य आर्यमुनि जी वानप्रस्थ के निर्देशन मे निम्नानिम्न ग्रामो मे मुक्तिपुरम् श्री पारसनाथ जी पाठक व श्री राजकमल जी पाठक, सिहौली श्री कन्हैयालाल जी आर्य, सैदखानपुर डा० त्रिलोकीनाथ आर्य, औरी श्री सत्यदेव जी आर्य केराकत नगर, श्री रामाशकर जी आर्य, श्री ज्ञानचन्द्र जी आर्य, श्री प्रेमचन्द्र जी सेठ, महिला आर्य समाज केराकत दयानन्द बाल मन्दिर केराकत आर्य समाज मन्दिर केराकत, आर्य वीर दल शाखा केराकत में यज्ञ वेदोपदेश उपनयन से सस्कारादि कार्यक्रम वैदिक रीत्यानुसार सुसम्पन्न हुए जिसका प्रभाव नवयुवको व महिलाओ मे अच्छी प्रकार हुआ ।

उत्सव सम्पन्न

आबूरोड दिनाक ६-११-६० आर्य समाज आबूरोड का वार्षिक उत्सव एव श्री वैदिक कन्या सीनियर हायर सैकण्डरी स्कूल आबू रोड का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव (अर्द्धशताब्दी समारोह) दिनाक २ नवम्बर ६० से ५ नवम्बर ६० तक सम्पन्न हुआ इस समारोह में प्रोफेसर श्री कृष्णपालसिंह जी के आचार्यत्व में २१ अक्टूबर से ५ नवम्बर ६० तक यजुर्वेद के मन्त्रो से यज्ञ सम्पन्न हुआ व श्री केशवदेव जी भजनोपदेशक व श्री मुकुन्ददास जी वानप्रस्थी के सुमधुर भजनोपदेश हुए।

—आर्य समाज सांडी जिला हरदोई का ५३ वां वार्षिकोत्सव बडी धूम-धाम के साथ दिनांक ३०-६-६० से ४-१०-६० तक मनाया गया। जिसमें बाहर से आये हुए सन्यासियो विद्वानों और भजनोपदेशकों ने सम्बोधित किया। अछूतोद्धार सम्मेलन सम्प्रदाय विरोध सम्मेलन वेद सम्मेलन और महिला सम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए। आस पास की ग्रामीण जनता एवम् नगर की जनता की उपस्थिति मे क्षेत्र में जनजागरण कर आर्य समाज की धाक जमा कर कुछ स्थानों पर नवीन आर्य समाजें शीघ्र ही स्थापित करने हेतु वातावरण बना तथा वैदिक साहित्य वितरित किया गया।

—केशवदेव शास्त्री वानप्रस्थ महो० सभा

शोक-श्रद्धांजलि

श्री श्यामबली पण्डित पिता श्री तेतर पण्डित ग्राम एव पत्रा० जलका जकुहा, पटना निवासी जो कि सूचना एव जन सम्पर्क विभाग, मजुषा (सासाराम) मे लिपिक पद पर कार्यरत थे, को कुछेक अनार्य, असामाजिको द्वारा दिनाक १७-६-६० को रात्री मे उनके निवास कक्ष मे शयनित अवस्था मे हत्या कर जलाने का उपक्रम किया। उसका आर्य समाज के वे अग्रणी श्री पण्डित प्रथम स्थापना दिवस के सर्वप्रथम यज्ञोपवीत धारी थे। वे एक कर्मठ, सत्य निष्ठावान तथा सामाजिक व्यक्ति थे।

योग शिविर सम्पन्न

मनपुरी, ११-११-६०। स्थानीय आर्य समाज मन्दिर मे, दिनाक ४ नवम्बर से, पातञ्जलि योगधाम ज्वालापुर के अध्यक्ष योगीराज स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती के निर्देशन तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के मुख्य निरीक्षक कु० ध्रुवपालसिंह जी 'अटल' के सयोजन में प्रारम्भ हुआ, अष्टागायोग प्रशिक्षण शिविर आज सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

—शालिनी गुप्ता, मन्त्री

आर्य डायरी १९९१

आर्य डायरी प्रकाशित हो गई है बडे आकार की, १ पृष्ठ पर १ तारीख स्वस्ति वाचन, शान्ति प्रकरण, प्रार्थना मन्त्र, सध्या, दैनिक यज्ञ, विशेष यज्ञ, आर्य समाज के नियम, भजन आदि दिये हैं। मूल्य १ डायरी १०) चार डायरी पर डाक खर्च १८) १०) अग्रिम भेजकर मंगाव।

ऋषिराज कलेन्डर १२ पेज का प्रत्येक पृष्ठ पर स्वामी दयानन्द विरजानन्द का चित्र, बड अक्षर में ओ३म्, गायत्री मन्त्र है। १ कलेन्डर एक रुपया १०० कलेन्डर ८० रुपये।

पता:—वेद प्रचार मण्डल
६०/११ रामजस रोड करोल बाग, दिल्ली-५

स्वर्गीय पं० चमूपति एम० ए० की महान रचना
चौदवीं का चान्द (हिन्दी)
हिन्दी रूपान्तरकार
आचार्य शिवराज शास्त्री एम. ए. मौलवी फाजिल
मूल्य १२)
प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
रामलीला मैदान नई दिल्ली-११०००२

महानगर पालिका स्कूलो म अ०... निन्दा

मुम्बई ११ नवम्बर, आर्य वीर दल और आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओ का सम्मेलन स्वामी सत्यपति जी महाराज की अध्यक्षता मे घाटीकार वाडी घाटकोपर में हुआ। जिसमे वक्ताओ ने मनपा स्कूलो में छोटे बच्चो को अण्डा खिलाने की तीव्र निन्दा की। कई विद्वानो के प्रमाण देकर बताया कि अण्डा स्वास्थ के लिये हानिकारक है। तथा इससे हृदयरोग और कैंसर जैसे जान लेवा बीमारिया पैदा हो सकती हैं।

सम्मेलन में जिन वक्ताओं ने अपने विचार दिये उनमें आ० प्र० सभा के मन्त्री श्री धर्मवीर गुलाटी, डा० सोमदेव शास्त्री, विश्व भूषण, प० देवव्रत जी शास्त्री, त्रिभुवनसिंह आर्य, प० धर्मवीर जी शास्त्री,, इन्द्र कुमार ग्रोवर, सतीश शर्मा तथा आर्य वीर दल मुम्बई के मन्त्री ओमप्रकाश आर्य प्रमुख थे।

—ओमप्रकाश आर्य, मन्त्री

गुणगान से राष्ट्रोत्थान आर्य समाज

७ नवम्बर, दिल्ली। यहा आयोजित एक सभा मे ७ नवम्बर १९६६ के शहीद गौ-भक्तो तथा अब ३० अक्तूबर १९९० व बाद में शहीद रामभक्तो को भावभीनी श्रद्धाजली दी गई व अत्याचार पर आक्रोश व्यक्त किया गया।

आर्य समाज बिरला लाईन्स के प्रधान आर्यबन्धु श्री जयप्रकाश जी ने स्पष्ट किया कि सभी हिन्दू सम्प्रदाय व जातिवादी लोग, वोटलोलुप राजनीतिज्ञो से बोगस धर्म-निरपेक्षता की आड मे तुष्टीकरण की आत्मघाती लालसा रखते हैं। इसी कारण कई राष्ट्रघाती समस्याए (यथा मण्डल-आयोग, शाहबानो काड, पजाब, कश्मीर, असम आदि) उत्पन्न होती रहती है। अशिक्षा अभाव व अन्याय के विरुद्ध सघर्ष के स्थान पर भारतीय राजनीतिज्ञ गन्दी राजनीति से देश व अराजनैतिक व्यवस्थाओ का भी खिलवाड कर रहे हैं।

—आर्यबन्धु जयप्रकाश

सार्वदेशिक प्रस दरियागंज नई दिल्ली मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुखपत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१ दयानन्दाब्द १६६ दूरभाष : ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष २९ अंक ४९] पौष सु० ६ सं० २०४७ २१ दिसम्बर १९९०

देशकी वर्तमानस्थितिपर आर्यसमाज घोषणा-पत्र जारीकरेगा

सार्वदेशिक सभा के प्रधान व उपप्रधान का पत्रकार सम्मेलन में संयुक्त वक्तव्य

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा जिसके अन्तर्गत देश-विदेश में लगभग ८ हजार आर्यसमाज की इकाईयां काम कर रही हैं की ओर से आगामी २३ से २६ दिसम्बर १९९० तक दिल्ली में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। सम्मेलन में कई लाख लोग शामिल होंगे। अमेरिका मारीशस इंग्लैण्ड, दक्षिण अफ्रीका तथा नेपाल आदि देशों से बड़ी सख्या में प्रतिनिधि भाग लेने हेतु पहुंच रहे हैं। भारत के माननीय प्रधान मन्त्री श्री चन्द्रशेखर आर्य महासम्मेलन का उद्घाटन करेंगे।

इस अवसर पर दिल्ली के पास गाजीपुर मे विशाल भूखण्ड पर "महर्षि दयानन्द गोसंवर्द्धन दुग्ध केन्द्र का शिलान्यास पूर्व प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी करेंगे। वहां पर राष्ट्रीय स्तर का दुग्ध केन्द्र स्थापित करने के लिए प्रारंभ मे १००० अच्छी नस्ल की दूध देने वाली गायों को रखने की योजना है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा अनुभव करती है कि वर्तमान परिस्थितियों के लिए राजनैतिक पार्टियों की सत्ता प्राप्ति हेतु सघर्ष की भावना उत्तरदायी है। राजनैतिक पार्टियों के लिए इस बात का कोई महत्व नहीं है कि लोगों के कल्याण के लिए क्या आवश्यक है। उनके लिए ज्यादा महत्वपूर्ण राजनैतिक सत्ता प्राप्त करना है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा राजनैतिक पार्टियों की किसी भी कीमत पर सत्ता को हथियाने की प्रवृत्ति की भर्त्सना करती है। सभा सामान्य जन मानस का आह्वान करती है कि वह इस बात पर विचार करे और उन्हें सबक सिखाने के लिए तैयार रहे।

हमें इस बात की प्रसन्नता है कि सरकार ने आपरेशन बुडरोज प्रक्रिया पंजाब मे आतकवादियों की गतिविधियों पर नियन्त्रण करने के लिए प्रारम्भ कर दी है। परन्तु हमारा विचार है कि रन आफ कच्छ' से लेकर काश्मीर तक एक सुरक्षा पट्टी बनाई जाये। काश्मीर में 'मार्शल ला" लागू करने के सिवाय और कोई दूसरा रास्ता हालात सुधारने का नहीं है। पंजाब के आकाशवाणी और दूरदर्शन पर सरकार द्वारा हिन्दी समाचारों का प्रसारण रोकने का निर्णय इस बात का प्रमाण है कि सरकारी तन्त्र ने आतकवादियों की धमकियों के सामने समर्पण कर दिया है। वर्तमान सरकार जनता के हित में मण्डल आयोग की सिफारिशों का कार्यान्वयन न होने दे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में २३ से २६ दिसम्बर १९९० तक अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया है इस महासम्मेलन में देश की वर्तमान परिस्थितियों तथा सगठनात्मक स्वरूप पर विचार करने के अतिरिक्त आर्यसमाज का घोषणा पत्र प्रस्तुत किया जायेगा।

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस की शोभायात्रा



अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी के पावन बलिदान दिवस २५ दिसम्बर को आर्य जनता बड़े उत्साह के साथ शहीदी शोभा-यात्रा में सम्मिलित होकर अपनी श्रद्धा और सगठन की शक्ति का परिचय दे।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने के लिए तन-मन-धन से सहयोग दें।

देश-विदेश से लाखों नर-नारी इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए पधार रहे हैं।

सम्पादक डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सार्वदेशिक आर्य सम्मेलन में दिल्ली चलो

हे आर्य जनो ! सब दिल्ली चलो ! सार्वदेशिक आर्य सम्मेलन में ।
यह शुभ अवसर, ऐसा मेला दुर्लभ ही मिलेगा जीवन मे ॥
संसार भर के आर्य समाजी इस सम्मेलन में आयेंगे ।
ऋषि दयानन्द व वेद धर्म की जय-जयकार गुंजायगे ॥
दिल्ली की गली, बाजारो मे ओम् का ध्वज फहरायेंगे ।
आर्यों की संगठन शक्ति का सबको आभास करायेंगे ॥
देश धर्म की रक्षा की ज्योति को जगाने जन-जन में ।
हे आर्य जनो ! सब दिल्ली चलो ! सार्वदेशिक आर्य सम्मेलन मे ॥
केवल शान्ति का पाठ नही अब क्रान्तिनाद गुंजाना है ।
इन देश धर्म द्रोही जन से प्रिय देश धर्म बचाना है ॥
किस भांति देश विदेशों में वैदिक मत को फैलाना है ।
ऐसा निश्चय हम सब ही को अब दृढ़ता से करवाना है ॥
तेईस दिसम्बर से लेकर छब्बीस दिसम्बर के दिन मे ।
हे आर्य जनो ! सब दिल्ली चलो ! सार्वदेशिक आर्य सम्मेलन मे ॥
बलिदान दिवस श्री श्रद्धानन्द का इन्हीं दिनो में आताहै ।
जो देश धर्म पर बलि देने की हमको याद दिलाता है ॥
शुद्धि और संगठन करने का जीवन पथ बतलाता है ।
इसके बल पर ही रक्षा का जो सही उपाय सिखाता है ॥
इसे क्रियान्वित करने पर ही शक्ति आयेगी संगठन में ।
हे आर्य जनो ! सब दिल्ली चलो ! सार्वदेशिक आर्य सम्मेलन मे ॥
ऋषि दयानन्द व वेद धर्म का सब मिलकर गुणगान करें ।
इस शुभ आयोजन के कर्ता, नेतागण का सम्मान करें ॥
सद्भाव से उनको समझावें जो जन इसमें व्यवधान करें ।
हम आर्य जाति के स्वाभिमान सम्मान हेतु बलिदान करें ॥
कर स्वीकार चुनौती सब ही निर्भय उतरें अब रण में ।
हे आर्य जनो ! अब दिल्ली चलो ! सार्वदेशिक आर्य सम्मेलन मे ॥
सम्मेलन को सफल बनाने में सब शक्ति जुटा डालो ।
देश धर्म के कष्ट मिटाने सब मतभेद मिटा डालो ॥
ईर्षा द्वेष के सब पर्दे व सब दीवार हटा डालो ।
संगच्छध्व व संवदध्व का सबको पाठ रटा डालो ॥
"सिद्धान्त भास्कर" यही भाव भर लें जन-जन अपने मन में ।
हे आर्य जनो ! सब दिल्ली चलो ! सार्वदेशिक आर्य सम्मेलन मे ॥

—भगवतीप्रसाद सिद्धान्त भास्कर, जयपुर

हे अजेय बलिदानी

श्रद्धा व आनन्द समन्वित तुम थे स्वामी श्रद्धानन्द ।
त्याग तथा उत्सर्ग भावना कभी न होने दी थी मन्द ॥
दिव्य धर्म की बलिवेदी पर तुमने किया समर्पित तन ।
देश तुम्हारा बलिपथ पावन ईर्ष्या करता भूमि गगन ॥
शोणित से आपने सींचा था तुमने स्वामिनि ! वैदिक धर्म ।
मार्ग दिखाते सदा रहेंगे तेरे, युगों-युगों तक कर्म ॥
सत्य धर्म के रक्षक थे तुम सच्चे जीवन के अधिकारी ।
ज्ञान प्रभा से नष्ट किया था अज्ञानो की रजनी कारी ॥
प्रेम दया-ममता का तुम मे अद्भुत रहा समन्वय ।
राष्ट्रवाद का सत्य धर्म का किया अभीष्ट सा अन्वय ।
सांस्कृतिक-नैतिक-सामाजिक किये अनेकानेक सुधार ।
क्रांति भावना हुई सुविकसित जन गण मन अमिट अपार ॥
स्वातन्त्र्य हेतु भारत माता की चहुंदिशि अलख जगायी ।
किया प्रभावित उपदेशो से जगी जवानो की तरुणायी ॥
हे अजेय बलिदानी ! तुमने भारत भाग्य संवारा ।
मानवता को निर्भय होकर तुमने दिया सहारा ॥
इस बलिदान दिवस पर युग का, कोटिक आज नमन है ।
श्रद्धा-सेवा के भावो का विह्वल होता मन है ॥

—राधेश्याम आर्य' विद्यावाचस्पति, सुल्तानपुर

सुखी समाज

वेदोक्त कर्म करें

नकिर्देवा मिनीमसि, नकिरा योपयामसि ।
मन्त्रश्रुत्यं चरामसि ॥

ऋग्० १० ११४-७ साम० १७६ ॥

वेद मन्त्रों का अनुशीलन

समाज को सुखी बनाने के लिए मन्त्र मे दो शिक्षाएं दी गई है। ये हैं—१ प्राकृतिक नियमो को न तोडें । २ वेद की शिक्षाओं के अनुसार कर्म करें। जो भी व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र इन नियमो का पालन करता है वह सदा समृद्ध होता है ।

प्राकृतिक नियमो को न तोड़ें । प्राकृतिक नियम क्या हैं ? प्राकृतिक के अनुकूल कार्य करना । प्राकृतिक नियमो को ही ऋतु कहते है । प्राकृतिक नियम है कि शुभ कर्म का फल शुभ होता है और बुरे कर्म का फल बुरा । संयम से तेजस्विता आती है और असंयम से रोग, बलक्षय, स्मरणशक्ति का नाश और अल्पायु । जो जिस मार्ग को अपनाता है उसे वैसा ही फल मिलता है । मन्त्र का आदेश है कि प्राकृतिक नियमो को न तोड़ और न नष्ट होने दें ।

मन्त्र की दूसरी शिक्षा है कि वेद के आदेशो के अनुसार अपना आचरण रखें। वेदो मे व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व के लिए आचार-संहिता दी हुई है । जो इसका पालन करते हैं, वे जीवन मे सदा सफल होते है, उन्नत होते हैं और सुखमय जीवन व्यतीत करते हैं । इसलिए मनुस्मृति में कहा गया है कि वेदो मे धर्मका सार दिया गया है । वेदो मे सबके कर्तव्यो का उल्लेख है । जो वैदिक शिक्षा के अनुसार काम करता है, वह इस लोक मे कीर्ति पाता है और मृत्यु के बाद दिव्य सुख ।

य कश्चित कस्यचिद् धर्मो, मनुना परिकीर्तित ।
स सर्वोऽभिहितो वेदे, सर्वज्ञानमयो हि स ॥ मनु० २-७
श्रुति स्मृत्युदित धर्मम्, अनुतिष्ठन् हि मानव ।
इह कीर्तिमवाप्नोति प्रेत्य चानुत्तम सुखम् ॥ मनु० २-९

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने के लिए धन की अपील

१९७५ मे आर्यसमाज स्थापना शताब्दी महोत्सव की यादगार को देश-विदेश के आर्य बन्धु भूले नहीं होंगे ।

अब पुन भारत की राजधानी में होने जा रहा है, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा-सम्मेलन २३ दिसम्बर से २६ दिसम्बर १९९० तक देश-विदेश से लाखो आर्य जन समारोह मे सम्मिलित होंगे । आर्यसमाज के संगठन शक्ति का यह ऐतिहासिक संगम आपकी प्रतीक्षा कर रहा है । इतने विशाल पैमाने पर समारोह की व्यवस्था मे अपार धनराशि व्यय हो रही है ।

आर्य जनो, माताओ और आर्य समाजो का परम कर्त्तव्य है कि संगठन के इस कार्य मे बूंद बूंद सहयोग करके इस विशाल कार्यक्रम को सफल बनाने में तन मन और धन का सहयोग करें । राशि मनीआर्डर चैक अथवा बैंक ड्राफ्ट द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम निम्नपते पर भेजें ।

निवेदक .

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती — प्रधान
डा० सच्चिदानन्द शास्त्री — मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन
रामलीला मैदान, नई दिल्ली-११०००२

स्वामी श्रद्धानन्द अब अधिक प्रासंगिक है

—मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति, इंदौर

हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए कबीर से लगाकर नानक तथा नानक से लगाकर अकबर और महात्मा गांधी ने बड़े प्रयास किये। परन्तु मर्ज बढ़ता ही गया, ज्यो-ज्यो दवा की। आज विभाजन के पश्चात भी अलगाव, साम्प्रदायिक उन्माद तथा विद्ध्वंस की कार्यवाहिया इन चारो विभूतियो की असफलता की ओर सकेत कर रही हैं। अब देश मे यह नारा लगाना बिलकुल निरर्थक है।

भारतीय इतिहास मे इस २० वी शताब्दी की तीन तारीखे सदैव स्मरण रखी जायेंगी। प्रथम २३ दिसम्बर १९२६, द्वितीय ३० जनवरी १९४८ तथा तीसरी ३० अक्टोबर १९८४। इस देश के स्वच्छ क्षितिज के दैदीप्यमान नक्षत्र स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज को साम्प्रदायिक उन्माद मे आकर यहाँ के मुसलमानो ने अब्दुल रशीद के माध्यम से दिल्ली के भीड भरे नये बाजार (वर्तमान श्रद्धानन्द बाजार) मे दोपहर को २३ दिसम्बर १९२६ को उस समय गोली मार शहीद कर दिया, जब वे निमोनिये से पीडित थे। देश-विभाजन के पश्चात ५५ करोड रुपए पाकिस्तान को भेट स्वरूप दिलवाने से दु खी एव सन्तप्त हिन्दू समाज के गोपाल गोडसे के बडे भाई नाथूराम गोडसे ने विश्व वद्य महात्मा गाधी को उस समय गोली मार दी, जब वे सायकालीन प्रार्थना के लिए दिल्ली स्थित बिरला मन्दिर मे जा रहे थे। ३० जनवरी १९४८ का वह काला दिवस हमारे इतिहास मे एक अमिट कलक के समान लग गया। बापू शहीद हो गए और उनकी कीर्ति अमर हो गई। इसी प्रकार ३० अक्टूबर १९८४ को ब्लू स्टार आपरेशन से विक्षुब्ध होकर एक सिख सिपाही ने तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी को उस समय गोली मार दी, जब वे अपने निवास के परिसर मे प्रात ८ बजे अपने कार्यालय मे पैदल ही जा रही थी।

इन तीनो विभूतियो का महान बलिदान केवल इसलिए हुआ कि इन्होने भारतीय समाज की धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक सेवा का उत्तरदायित्व अपने कधो पर लिया था। परन्तु समाज के एक वर्ग ने इन महापुरुषो की सेवाओ को नकारात्मक रूप मे लिया और इन्हे ससार से विदा कर ही चैन की सास ली। परन्तु पवित्र उद्देश्य के लिए यदि बलिदानो की यह परम्परा समाप्त हो जावेगी, तो यह देश निष्प्राण हो जावेगा। बलिदानी भावना देश का सुदृढ सोपान (पायदान) है, शिखर की ओर बढने की दिशा सूचक हैं। वीरों की भाति देश, जाति तथा धर्म पर बलिदान हो जाना मानो नया जीवन प्राप्त कर विश्व मानवता की सेवा के लिए पुन पवित्र प्रयास करना है। जीवन और मृत्यु यह एक क्रम है।

वर्तमान परिस्थितियो के सन्दर्भ मे स्वामी श्रद्धानन्द (लाला मु शीराम) पहिले से अधिक इसलिए प्रासगिक हे कि स्वामी जी ने अपने बहुमुखी व्यक्तित्व के द्वारा इस देश की अनेक समस्याओ की जडा को गहराई से देखकर पहिचान लिया था। उन्होने सामाजिक रोग का न केवल निदान ही किया, अपितु एक कुशल वैद्य के समान उसका उपचार भी किया। यह एक बात अलग है, कि रोगी ने ही वैद्य का गला घोट कर रोग के सबल होने का पागल जैसा व्यवहार कर समाज और देश का बहुत अहित कर डाला।

पिछले २ ३ दशको से देश से अल्प सख्यक, धर्म नि पेक्ष, साम्प्रदायिकता, कमजोर और पिछडा वर्ग आदि कुछ राजनीतिक शब्दो का प्रयोग आवश्यकता से अधिक होने लगा है। इन पेशेवर राजनतिज्ञो ने अल्पसख्यको के शुभ चिन्तक बनने क नाम पर उन्हे अपना वास्तविक 'रक्षक' बताया। इन्हे अपना मत-कोष [वोट बैंक] बनाकर इन्हे भ्रमित कर इनका दिमाग आसमान पर चढा दिया। यहा तक कि हिन्दू का हिन्दू न कहकर गैर मुस्लिम शब्द का प्रयोग कर इस इस देश क अस्मिता को घायल करने का प्रयास किया जाने लगा। आज भी राजनैतिक दलो को मुस्लिम वर्ग वह चटपटी चटनी बन गया है, जिसके बिना कोई भी राजनयिक इन्हे बिना चाटे सन्तुष्टि प्राप्त नही कर पाता। यही हमारा चटोरा आदत देश को भयकर विनाश के कगार पर ले आयी है।

स्वामी श्रद्धानन्द ने आज से ६ दशक पूर्व इस वर्ग का निदान कर इन्हे अपने मे हूण, शक, किरात आदि क समान हजम करने के लिए सुदर्शन चक्र रूपी शुद्धि चक्र चलाया था। केवल उपासना, पूजा, म शा कर्मकाड की भिन्नता के कारण किसी जाति के महापुरुष नही बदल जाते। परन्तु न तो हिन्दू समाज ने उस समय स्वामी श्रद्धानन्द की 'शुद्धि'की बात मानी और न इन मुसलमानो [अल्प सख्यक] का राष्ट्र विरोधी गतिविधियो पर ही ध्यान दिया। देश विभाजन के पश्चात भी आज कश्मीर, प जाब, असम तथा पश्चिमी ब गाल एक महान समस्या के रूप रूप मे हमारे सामने खडे हैं ? राजनीतिक के अध्येता भलीभाति जानते हैं कि केन्द्र मे केवल दलविशेष की सत्ता बदल देने से, केवल दल बदल देने से देश का कायाकल्प नही होता, अपितु दल की अपेक्षा दिल के विचार बदलने से ही देश एक नई करवट ले सकता है। जिस देश में व्यक्ति पूजा और मूर्तिपूजा प्रचलित रहती है। वह देश कभी भी उन्नति नही कर सकता। ऐसा प्रतीत होता है कि अब नैतिक मूल्यो के आधार पर राजनैतिक लडाई समाप्त हो गई है और अब व्यक्ति केन्द्रित राजनैतिक दल केन्द्रीय सरकार बनाने की प्रतियोगिताए कर रहे हैं। यह एक बडा भारी खतरा है, जिसकी ओर सभी देश भक्तो का ध्यान जाना जरूरी हैं।

शिक्षा के क्षेत्र मे निरुद्देश्य शिक्षा-पाठ्यक्रम चलाकर लाखो-करोडो युवको को नौकरी मात्र का इच्छुक बना डाला। जिसमे न तो नैतिक मूल्यो को ही स्थान है और न चरित्र, देश-भक्ति तथा आस्तिकता की चर्चा है। गुरुकुलो मे जिस शिक्षा पाठ्यक्रम का स्वीकार किया गया था, उसमें स्नातक बनने के पश्चात न तो नौकरी ढू ढने की दरकार थी और शिक्षितो को बेकारी, भत्ता देने की गु जाइश थी। गुरुकुल की शिक्षा समाप्त कर युवक देश, समाज, साहित्य पत्रकारिता आदि अन्य विधाओ की ओर स्वमेव ही चला जाता था। आज भी शिक्षा व्यवस्था के नाम के सम्मुख प्रश्न वाचक चिन्ह लगा हुआ है।

स्वामी श्रद्धानन्द ने अपने धार्मिक तथा सामाजिक कार्य कलापो के द्वारा जाति-पाति को समूल नष्ट करने का बीडा उठाया था। कोई भी मनुष्य जन्म से न तो नीच होता है और न ऊचा। समाज मे प्रत्येक को अपनी योग्यता प्रतिभा के विकास का पूर्ण अवसर दिया जाये उसे देश और समाज के लिए उपयोगी बनाया जाना चाहिए। गुरुकुलो मे जाति-पाति का नामोनिशान जड से नष्ट कर दिया गया था। ठीक इसके विपरीत अवसरवादियो तथा स्वार्थियो पदलोलुपो ने मडल का कमण्डल बनाकर देश को ऐसा ब डल दे दिया जिसमे विशाल हिन्दू जाति का सैकडा जाति उप-जाति आदि मे विभाजित कर आरक्षण का नाम दे दिया। स्वामी श्रद्धानन्द आरक्षण नही अपितु दलितो, दीनो, गरीबो को सरक्षण दिलाने वाले महापुरुष थे। जाति और वर्ग सघर्ष की भावना के कारण ही देश की रीढ टूटती है और देश पराधीन हो जाता है। परन्तु धूर्त राजनीतिज्ञो की देश स्वतन्त्रता की तनिक भी परवाह न कर जातिवाद का भूत पैदा कर दिया। इसे जितनी जल्दी हो सके, उतनी ही जल्दी समाप्त कर हिन्दू समाज की एकता को अत्यधिक बल देना चाहिए।

वतमान मे भाषावाद, प्रान्तवाद, साम्प्रदायिकता, अगला-पिछडा सामाजिक असामाजिक आदि ऐसे उन्माद खडे कर दिये गये है, जिससे देश और समाज विघटन की ओर चला जा रहा है। युवा वर्ग में भोगवाद तथा नशीली वस्तुओ का सेवन तथा तस्करी जैसे अपराध देश को खोखला किए दे रहे है। हमे इन सारी बुराइयो की जडा पर कुठाराघात करना है। स्वामी श्रद्धानन्द ने स्वय निर्व्यसनी बनकर अपने गुरकुला और शिष्यो को श्रेष्ठ सदाचारी तथा देशभक्त बनने को शिक्षा दी थी।

आज देश की विभिन्न समस्याओ को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि स्वामी श्रद्धानन्द और उनका जीवन दर्शन, उनका सन्देश तथा कार्यपद्धति पहले से कही अधिक उपयोगी और प्रासगिक है। यही घडी, हमारे लिए आत्म-चिन्तन तथा प्रतिज्ञा बद्ध होने की है। इतने पर ही हम हमारे राष्ट्र की स्वतन्त्रता, अखण्डता तथा सस्कृति की रक्षा कर सकते हैं।

अ/६३, सुदामानगर, इदौर ६

प्रतिभा का चमत्कार

विमल वधावन, एडवोकेट

परिष्कृत प्रतिभा, दुर्बल सहयोगियों की सहायता से और कभी-कभी तो बिना किसी सहयोगी के भी, बड़े से बड़े काम सम्पन्न कर लेती है, जबकि डर कर समर्थ व्यक्ति भी हाथ पैर फुला बैठते हैं। प्रतिभा वस्तुतः वह सम्पदा है जो व्यक्ति की मनस्विता, ओजस्विता और तेजस्विता के रूप में बहिरग में प्रकट होती है। आध्यात्म विज्ञान का यह एक सुनिश्चित सिद्धांत और अटल सत्य है कि यदि प्रसुप्त को उभारा जाए तो कोई भी साधारण मनुष्य असम्भव को भी सम्भव बना सकता है। जैसे वर्षा चाहे कितनी भी मूलाधार क्यों न हो हम उतना ही पानी इकट्ठा कर पाएंगे जितना बड़ा हमारा बर्तन होगा, उसी प्रकार अध्यात्मिकता रूपी बर्तन को बड़ा करके जितना प्रतिभा को उभारा जाए उतने ही बड़े कार्य मनुष्य सम्पन्न कर सकता है। अध्यात्मिकता को बढ़ाने का एक मात्र उपाय है गीता का कर्म-योग का सिद्धान्त, जिसके अनुसार "कर्म ज्ञान पर आधारित होना चाहिए" और ज्ञान की प्राप्ति वैराग्य और अभ्यास से हो सकती है। वैराग्य अर्थात स्वयं को कार्य के परिणाम के साथ न जोड़ना क्योंकि परिणाम अर्थात फल की इच्छा से किए गए कर्म करने वाले व्यक्ति में अज्ञानता (अच्छे और बुरे मे भेद न करना) आना स्वाभाविक है। दूसरा अभ्यास अर्थात एकाग्र मन से कर्म करना। सूर्य का प्रकाश चाहे कितना भी तेज क्यों न हो वह रुई के एक गट्ठर को जला नहीं सकता परन्तु एक लैंस की मदद से यदि उस प्रकाश को एकाग्र करके उस रुई पर डाला जाए तो सारे गट्ठर को आग लगाई जा सकती है। अतः स्पष्ट है कि वैराग्य और अभ्यास के द्वारा ही व्यक्ति प्रतिभा सम्पन्न हो सकता है।

कालीदास की दिमागी क्षमता कितनी उपहासास्पद थी परन्तु जब नया उत्साह समेट कर उन्होने नए सिरे से विद्या अध्ययन प्रारम्भ किया तो मूर्धन्य विद्वानों में गिने जाने लगे और महाकवि कहलाए। मा० चन्दगीराम भी एक साधारण सा अध्यापक और बहुत ही क्षीण काय वाला व्यक्ति था परन्तु उसने भी जब अपने मनोबल से नई रीति नीति अपनाई तो न केवल अपनी सेहत अच्छी कर सका अपितु इतनी बढ़ा सका कि हिन्द केसरी की उपाधि से विभूषित हुआ। राणा सांगा के शरीर में ८० गहरे घाव लगे फिर भी वे पीड़ा की परवाह न करते हुए अन्तिम सांस तक युद्ध मे जूझते रहे। हमारे आर्य नेता और वीर स्वतन्त्रता सेनानी पंडित वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने भी तो गीता के श्लोक "नैनं छिन्दन्ति शास्त्राणि नैनं दहति पावकः, न चैन क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः" से प्राप्त मनोबल के आधार पर १७ कोड़े और फिर बाकी के ६ कोड़े "वन्देमातरम्" नारे के बल पर ही सहन किए थे।

आर्यसमाज के जनक महर्षि दयानन्द का मनोबल तो सर्वविदित है हो। महर्षि दयानन्द ने ब्रह्मचर्य से अत्यधिक शारीरिक तथा मानसिक बल अर्जित किया था। वे जीवन पर्यन्त कर्म योग में समाधीस्थ रहे। इसी मनोबल के ही कारण उन्हें कई बार जहर दिए जाने के बावजूद वे स्वयं को हानि रहित बनाए रख सके।

सीताहरण के उपरान्त रावण को परास्त करने के लिए जब श्रीराम ने जंगलो से सहायता मांगी तो समर्थन के नाम पर वानर रूप वनवासियों की सेना ही नजर आई। ईश्वर उन्हीं की सहायता करता है जो स्वय अपनी सहायता करते हैं। श्रीराम के अपने मनोबल का ही परिणाम था कि वनवासियों ने लकड़ी पत्थर इकट्ठे किए और इन्जीनियर की भूमिका निभाई तो समुद्र पर भी पुल बांध दिया गया। प्रतिभा के सामने आने पर प्रतिकूलताएं दूर हटती जाती है और परिस्थितिया अनुकूलता हो जाती हैं। थोड़ी बहुत कठिनाईया तो प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति झेल ही लेता है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने भी अपने जीवनकाल मे असख्य छोटे-बड़े कार्य अपनी प्रतिभा और विलक्षण बुद्धि के बल पर ही सम्पन्न कर दिखाए। चाहे वो १९४७ में एक भारतीय विमान के पाकिस्तानी दगाईयों द्वारा अपहरण से यात्रियो की रक्षा का कार्य था या १९६८ मे राष्ट्रपति भवन में मस्जिद निर्माण रुकवाने का कार्य था या फिर मात्र ४५ दिन की तैयारी से सन् १९७५ में सफलतापूर्वक दिल्ली में आयोजित आर्य समाज शताब्दी सम्मेलन का। प्रत्येक मौके पर लाला रामगोपाल शालवाले (स्वामी जी का पूर्व नाम) ने अपनी अभूतपूर्व प्रतिभा और प्रबन्धकीय क्षमता का प्रदर्शन जनता के समक्ष किया।

आज देश की राजनीतिक विषमताएं ही नहीं, आर्य समाज के संगठन को अनुचित हानि पहुंचाने के उद्देश्य से कई स्वार्थी तत्व भी कार्यरत हैं। ऐसे हालात में आर्यसमाज के त्रिस्तरीय संगठन में पूर्ण तालमेल, एकात्मकता और सहयोग होना अत्यन्त आवश्यक है, विशेष रूप से इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन १९९० के अवसर पर। मुझे ही नहीं समस्त आर्य जगत को यह विश्वास है कि इस बार फिर स्वामी जी की कार्य शैली का बेहतर प्रदर्शन होगा क्योंकि प्रतिभा जिधर भी मुड़ती है उधर ही बुलडोजर की तरह मैदान साफ करती चलती है बड़े कार्य बड़े व्यक्तियों से ही बन पड़ते हैं। भारी वजन उठाने के लिए हाथी जैसे सशक्त ही काम आते हैं। बकरों और गधों से उतना नहीं बन पाता, भले ही वे कल्पना करते रहें, या डींग हांकते रहें।

दिया बलिदान श्रद्धानन्द ने

कैसे भूलें किया जो अहसान श्रद्धानन्द ने।
देश के हित में दिया बलिदान श्रद्धानन्द ने॥

अनेकों लाल जाति के गैरों में जा रहे।
कोई भय से या लालच से बहकावे में आ रहे॥
शुद्धि का चलाया था, अभियान श्रद्धानन्द ने।
देश के हित में दिया बलिदान श्रद्धानन्द ने॥

आतक था विदेशियो का देश भर में छा रहा।
बच्चा बच्चा हिन्द का बहुत ही घबरा रहा॥
अंग्रेज को ललकारा छाती तान श्रद्धानन्द ने।
देश के हित में दिया बलिदान श्रद्धानन्द ने॥

अज्ञान और अन्धकार का सभी ओर छा रहा।
पथ भ्रष्ट हो गए थे, सूझता न रास्ता॥
दी सीधी वेद पथ की पहचान श्रद्धानन्द ने।
देश के हित मे दिया बलिदान श्रद्धानन्द ने॥

उसी पथ पर "पाल" हमने आगे बढ़ते जाना है।
ऋण जो संन्यासी का है हमने ही चुकाना है॥
पूरा करना किया जो आह्वान श्रद्धानन्द ने।
देश के हित मे दिया बलिदान श्रद्धानन्द ने॥

—धर्मपाल आर्य
नरवाना (हरियाणा)

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के लिए, दुकानों की बुकिंग

दिल्ली के रामलीला मैदान में २३ से २६ दिसम्बर १९९० तक आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में पुस्तकों, भोजन तथा अन्य खाने-पीने, चाय, हवन सामग्री आदि अन्य वस्तुओं के लिए दुकान के इच्छुक महानुभावों से निवेदन है कि वे सार्वदेशिक सभा के कार्यालय में आकर सम्पर्क करें। दुकानें १०×१० फीट और १०×२० फीट में होगी। किराया ४ दिन का छोटी दुकान ४००) और बड़ी का ८००) रुपया होगा।

किराया राशि अग्रिम सभा में प्राप्त होने पर सम्बद्ध पार्टी के नाम दुकान का आरक्षण कर दिया जायेगा।

सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

दृढ़ राष्ट्रीय एकता के सूत्रधार अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज

आचार्य धर्म विज्ञान मुनि

भारत के इतिहास में २३ दिसम्बर, १९२६ ई० अत्यन्त अशुभ दिन माना जाता है। उस दिन एक धर्मान्ध मुसलमान अब्दुल रशीद, ने स्वामी श्रद्धानन्द महाराज पर तीन गोलियां मार कर उनके प्राण हर लिए। वे उस समय रोग ग्रस्त अवस्था मे शय्या पर लेटे थे।

सुना जाता है कि असगरी बेगम नामक मुस्लिम महिला को शुद्ध कर हिन्दूत्व मे ग्रहण कर उसको सरक्षण प्रदान किया था। मुसलमान उद्वेलित हुए। अत एक धर्मान्ध मुसलमान ने उनकी हत्या कर दी। स्वामी जी महाराज उन दिनो मुसलमान बने हिन्दुओ को पुन हिन्दू मत में वापिस लाने वाले शुद्धि आन्दोलन का कार्य अत्यन्त उत्साह और तत्परता से कर रहे थे। इससे मुसलमान उद्वेलित रहते थे।

यह तर्क हम भारतीय ६३ वर्ष से सुनते चले आ रहे हैं। इस पर विश्वास करते रहे हैं। जरा गहराई से विचार करे तो विश्वास का आधार यह प्रतीत नहीं होता। निम्न तथ्य विचारणीय है —

(१) स्वामी जी महाराज अमृतसर मे होने वाले काग्रेस के महाधिवेशन के स्वागताध्यक्ष बने। उस समय जलियावाला काण्ड मे नृशस नर-सहार हो चुका था। काग्रेस के बडे-बडे नेताओ का मनोबल गिर चुका था। अधिवेशन का दायित्व कोई भी नेता लेने का साहस नहीं कर रहा था। इस दयनीय दशा को देखकर स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने यह गुरु दायित्व स्वयम् स्वीकार किया। उन्होने मात्र अधिवेशन की व्यवस्था ही नहीं की, अपितु घर-घर जाकर प्रचार किया। अधिवेशन की व्यवस्था तो प्रशसनीय थी ही, उपस्थिति भी आशा से अधिक थी। प्रत्येक वक्ता-नेता के आवास की व्यवस्था गृहस्थों के घरों मे थी। इस असाधारण साहस और अपूर्व सफलता से कांग्रेस के अधिकारियो कार्यकर्ताओ और जनता का मनोबल बढ़ा।

इसके साथ ही इतना अदम्य साहस को धारण करने वाला, कुशल व्यवस्थापक, जनप्रिय व्यक्ति-स्वामी श्रद्धानन्द महाराज, अग्रेजो की दृष्टि में सन्दिग्ध व्यक्ति बन गया।

(२) एक दिन ऐसा भी आया कि स्वामी जी महाराज ने उसी काग्रेस को छोड दिया। मुहम्मदी और शौकत अली, मुस्लिम नेता काग्रेस से प्रतिष्ठा प्राप्त किए हुए थे। उन्होने कुछ हिन्दुओ को मुसलमान बनाया। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने मुसलमान बने हिन्दुओं को पुन हिन्दू धर्म में दीक्षा दे दी। अली बन्धुओ ने महात्मा गाधी से स्वामी जी की शिकायत की। महात्मा गाधी स्वामी जी से सहमत नही हुए। स्वामी जी को बहुत कष्ट हुआ। पक्षपात पूर्ण, न्यायविरुद्ध और हिन्दुत्व के लिए घातक प्रतीत हुआ। स्वामी जी ने काग्रेस छोड दी।

शासक अग्रेज हिन्दुओ और मुसलमानो मे फूट डालकर शासन कर रहे थे। चोर से कहे कि चोरी कर और साध को सावधान करते। मुसलमानो को हिन्दुओ के विरुद्ध उभारते और हिन्दूओ को मुसलमानो से सावधान करते। दोनो को लडाते और स्वय धर्मनिरपेक्ष न्यायकर्ता बन फैसला करते। कभी मुसलमानो का पक्ष लेते और कभी हिन्दुओ का। दोनो समझते कि अग्रेजी शासक न्यायकारी हैं।

काग्रेस का हिन्दु वर्ग, राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से मुसलमानो को सन्तुष्ट रखना चाहता था। अत उनके अन्याय पूर्ण रवैये का विरोध न कर चुप रहा जाता। यह तुष्टीकरण की नीति स्वामी श्रद्धानन्द जी की रुचि के अनुकूल नहीं थी। अग्रेज शासक हिन्दू मुसलमानो में गहरी फूट डालकर शासन करना चाहता है काग्रेस ने इसका उपाय सोचा कि मुसलमानों को उनकी अन्यायपूर्ण बात मानकर भी, उन्हे सन्तुष्ट रखकर देश की एकता स्थापित कर अग्रेजी शासन को समाप्त किया जाय। जैसे लाडले बेटे की इच्छा पूरी करने से समाप्त न होकर बढ़ती हैं, ऐसी प्रवृत्ति मुसलमानो की बन गई। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कांग्रेस को त्यागा। वैदिक सिद्धांतों के आधार पर—समान गुणशील व्यसनेषु सख्यम्—हिन्दुओ और मुसलमानों मे एकता स्थापित करने का अभियान छेड़ा। उन्होने घोषणा की कि मुसलमान इस देश के समान नागरिक हैं।

स्वामी जी सन् १९११ के प्रारम्भ में काग्रेस मे प्रविष्ट हुए और १९२२ मे काग्रेस छोड अलग हो गए। इससे भी २२ वर्ष पूर्व सन् १८९४ मे प० लेखराम की शहादत के बाद प० लेखराम द्वारा सग्रहीत महर्षि दयानन्द के जीवन सम्बन्धी तथ्यो को पुस्तक रूप प्रदान करते हुए, पुस्तक की भूमिका मे सन् १८९७ मे स्वामी श्रद्धानन्द जी (उस समय वे श्री मुशीराम थे। महात्मा मुशीराम भी नही बने थे।) ने मुसलमानो और ईसाइयो का आह्वान निम्न शब्दो मे किया —

'हे मेरे बिछुडे हुए मोहम्मदी और ईसाई मित्रो। अविद्या अन्धकारमयी रात्रि मे जब कि हाथ पसारा नही सूझता था उस समय तुमने अपने भाइयों का हाथ छोडकर अन्यो के हाथ मे अपना हाथ दे दिया। जब क्रियात्मक रूप का मे तुम्हे विदित हो गया कि तुमने मूर्खता की है और तुम्हारी आत्माओ ने साक्षी दी कि तुम निज गृह से दूर जा रहे, तो तुमने व्याकुल होकर, आतुर नयनो से अपने भाईयो की ओर देखा। तुम्हारे भाई उस समय स्वय देखने योग्य न थे। फिर तुम्हारा हाथ क्योकर पकडते। अब अन्धकार दूर हो गया है। वेद रूपी सूर्य का प्रकाश हो गया है। जीवन के उद्देश्य को समझो, अपने इस भाई (स्वामी दयानन्द) के जीवन वृतान्त को पढो। जिसने कि तुम्हारे लिए—नही, नहीं केवल तुम्हारे लिए नहीं, परन्तु सत्य की खोज करने वाले के लिए—

अपनी जान को हेय समझा,
सासारिक सुख तथा आनन्द (मोक्ष) को हेय समझा,
और परमेश्वर के अटल नियम के आगे सिर झुकाए हुए अपने मिशन को पूरा किया।'

इस लेख का लिखने वाला निरन्तर २२ वर्षों तक अपने बिछुड़े भाइयो में आत्मीयता उत्पन्न करने की तीव्र आतुरता लिए कितना दृढ प्रयत्नशील रहा होगा ? और बिछुड मित्र एव भाई उसके हृदय की वेदना और सासारिक कठोर सत्यो को समझ कर आपस मे मिलने को आतुर हुए होगे। भाव कल्पना कर कितनी विचित्र प्रसन्नता होती है। (क्रमश)

आर्य समाज आज के परिप्रेक्ष्य में (२)

—आचार्य प्रेमभिक्षु एम. ए., मथुरा (उ.प्र.)

आर्य समाज का नारी जागरण-अभियान अपने मूल वैदिक (भारतीय) सस्कृति से कटकर आज पाश्चात्य सभ्यता से अभिभूत है। फलत देवियो के स्थान पर लेडिया) उसे नेतृत्व दे रही हैं। हर क्षेत्र मे पुरुष के साथ प्रतिस्पर्धा जैसे उनकी टेक हो। आर्य समाज ने पर्दा प्रथा के विरुद्ध आन्दोलन किया था, पर आज बेपर्दगी चरम सीमा पर है। अर्द्धनग्न फिल्मी सभ्यता, कला के नाम पर कामाराधना और नारी विज्ञापन के खिलाफ आज मोर्चा लेने की आवश्यकता हो गई है। इसी प्रकार आर्य समाज का दलितोद्धार का कार्य भी "अज्येष्ठा सो अकनिष्ठास रग्ते स भ्रातरो वाहधु" (न कोई बडा है, न छोटा हैं सभी आपस मे भाई-भाई हैं) पवित्र वेद की पावन ऋचाओ पर आधृत मानव समता-मूलक एव विशुद्ध मानवतावादी था। दलितो को 'हरिजन' सज्ञा देकर और इस प्रकार एक नया वर्ग बनाकर उसे आज राजनैतिक खिलाडियो ने जो विकृत रूप दिया है उसी का परिणाम पनवारी(आगरा)जैसे दुर्भाग्यपूर्ण काण्ड,और उसी का दुष्फल जातीय आधार पर आरक्षण (मण्डल आयोग) की विकटतम समस्या है। इन सबका एकमात्र समाधान आर्य समाज द्वारा प्रस्तुत गुण, धर्म स्वामीनिर्देशित वैदिक वर्ण व्यवस्था ही है, जिसमे जन्मगत जाति-पाति की विद्वेष, अन्याय मूलक अमानवीय मान्यता के लिए कोई स्थान नही है। आर्य समाज को भी अभी इस दिशा मे क्रियात्मक रूप से बहुत कुछ करना है।

आज का ज्वलन्त प्रश्न होने,के कारण यहा हम इस सम्बन्ध में कुछ विस्तार से विचार कर रहे हैं। सभी जानते हैं कि वर्ण चार हैं, तीन नहीं। पर कैसा दुर्भाग्य है कि राजनीति,के पण्डो द्वारा 'सवर्ण' शब्द का प्रयोग मात्र ब्राह्मण-क्षत्रिय-वश्य के लिए हो रहा है, शूद्र के लिए नही। आखिर शूद्र भी तो एक वर्ण, वर्ण के अन्तर्गत है, फिर सवर्ण क्यो नही ?

"यथेमा वाच कल्याणी मावदानि जनेभ्य । ब्रह्म राजकन्याभ्या शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय ।। इस पवित्र वेद मन्त्र तथा अन्य अनेको मन्त्रो मे ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य की भाति ही शूद्र और स्त्री अर्थात् सभी मनुष्य मात्र को समान रूप से वेदाध्ययन की व्यवस्था है महर्षि मनु तो सुस्पष्ट घोषणा करते हैं—शूद्रो ब्राह्मण तामेति ब्राह्मण श्चैति शूद्रताम्" अर्थात शूद्र कुल मे उत्पन्न व्यक्ति (अपने गुण-कर्म स्वभावानुसार) ब्राह्मणत्व को प्राप्त कर लेता है तथा ब्राह्मण कुलोत्पन्न शूद्रत्व करें। हमारा इतिहास ऐसे उदाहरणो से भरा पडा है। शूद्र कुलोत्पन्न वाल्मीकि, गणिका (वैश्या) के गर्भ से उत्पन्न वशिष्ठ क्या ऋषि, क्या महर्षि, महर्षि, महामुनि (कुलगुरु) नहीं बन गये ? गोत्रहीन जाबालि पुत्र सत्यकाम ब्राह्मण पद पाता है। और ऋषि या ब्राह्मण कुल मे उत्पन्न रावण तो शूद्रत्व से भी पतित होकर अनार्य (दस्यु) बन गया है। राम क्षत्रिय होकर सर्वपूज्य बन गए तथा क्षत्रिय कुलोत्पन्न विश्वामित्र राजर्षि और फिर ब्रह्मर्षि बने।

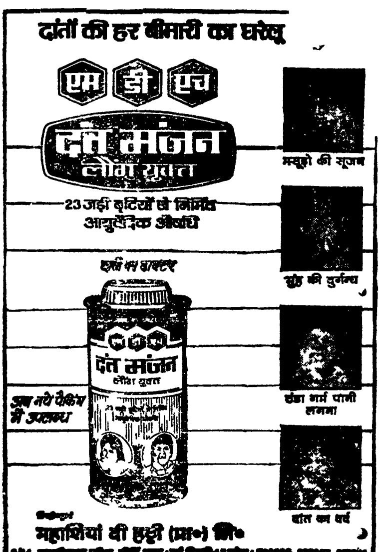
पवित्र वेद मे चारो वर्णों की तुलना राष्ट्र-पुरुष के विभिन्न अ गो से की गई है ब्राह्मणोस्य मुखमासीद बाहू राजन्य कृत । ऊरू तदस्य यद्वैश्य पद्भ्या शूद्रो अजायत ।।यजुर्वेद ३१ ११

यहा ब्राह्मण को राष्ट्र पुरुष का मुख क्षत्रिय को उसकी भुजा और वैश्य को उरू (पेट मध्य भाग) तुल्य कहा है। शूद्र को राष्ट्र पुरुष को खडा रखने वाले के तुल्य माना गया है। वह राष्ट्र पुरुष का आधार है। इसी से सभी चरण वन्दना ही करते है। पैर मे काटा लगता है तो आख मे आसू आता है। पौराणिक काल मे भी राष्ट्र की रक्षा करने वाली "अष्ट भुजी दुर्गा" की कल्पना (कार्टून) द्वारा बताया है कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इनमे से प्रत्येक के दो-दो हाथ मिलकर जब "अष्टभुजी दुर्गा' के रूप मे सिंहवाहिनी अर्थात् एक शक्ति बन जाते हैं तभी राष्ट्र रक्षा सम्भव है।

इन सभी उद्धरणो मे कही भी छोटे-बडे (ऊ च-नीच) की दुष्ट कल्पना नही है। महाभारत के पश्चात मध्य युग या वाम मार्ग काल मे जब हमारा नाम-धाम, एक उपास्यदेव, एक धर्मग्रन्थ, एक धर्म, एक गुरुमन्त्र, एक अभिवादन आदि सभी कुछ उलट गया तभी सामाजिक क्षेत्र मे भी 'पूजिय विप्र-शील गुण होना, शूद्र न पूजिय वेद प्रवीना। जैसी अवैदिक मान्यताएँ चल पडी। यज्ञो मे पशुबलि नारी-अपमान जाति पाति की स्थिति तभी बनी। महावीर स्वामी और महात्मा बुद्ध जैसे युग पुरुषो ने इन अवैदिक मान्यताओ के विरुद्ध स्वर ऊचे किये, पर पवित्र वेद से परिचय न होने के कारण कालान्तर में मूर्तिपूजा के एक अन्य भयकर रोग को और साथ लेकर वही विकृतिया नये रूप मे पुन आ गई। सन्त कबीर, भक्त रैदास, दाऊ दयाल, गुरु नानक आदि ने पुन इन बुराइयो के विरुद्ध स्वर बुलन्द किये, पर पौराणिक मतवाद के रूप मे मनुष्य का स्वार्थ फिर ह सने लगा और आज तो राजनीतिक की गोटी लाल करने के लिए भाई को भाई से अलग करके सडको पर युद्ध-रत किया जा रहा है। मण्डल आयो। योजना के आरक्षण के पीछे यही फूट डालो और राज करो की दुर्नीति चल रही है। इसका एकमात्र समाधान, जैसाकि पहले भी बतायाहै, गुणकर्म आधारित वेदविहित एव योगेश्वर कृष्ण द्वारा गीता मे अनुमोदित वैदिक वर्ण व्यवस्था है।

जन्मगत जाति मूलक हमारी इस दुर्बलता का लाभ विदेशी आक्रान्ताओ मुसलमान ईसाईयो ने भरपूर उठाया। ईश्वर की महती कृपा से युगो के बाद महर्षि दयानन्द आए। उन्होने सदियो, सहस्राब्दियो के बाद वैदिक शखनाद किया। वेदो की ओर लौटो का सन्देश दिया। जो हम भूल गये थे उसे पुन याद कराया और अभिनव क्रांति के साथ नवयुग आया। उसी क्रम मे शुद्धि सगठन के स्वर गू जे। वैदिक धर्म का द्वार पुनः एक बार मानव मात्र के लिए खुला। स्वामी श्रद्धानन्द के सफल नेतृत्व मे जो लाखो शुद्धिया हुई—हमारे ही जनपद मथुरा मे उम्बी, गौधाव, बरोली, तेहरा आदि जो गाँव के गाव नवमुस्लिमों के शुद्ध हुए वे आज भी हिन्दू समाज के गौरवमय अ ग बन राष्ट्रीय धारा के साथ अभिन्न हैं। पिछले दिनों ही मथुरा जनपद के नवका दुरावई (छोटी कोसी) गाँव को शुद्ध किया गया। करसौरा उस पार के जाटव बन्धुओ की ईसाइयत के वार से रक्षा की गई। बावना

(शेष पृष्ठ ८ पर)



सर्वतोन्मुखी प्रतिभा के धनी स्वामी श्रद्धानन्द

वीरेन्द्र कुमार आर्य

"एक उन्नत कार्य सजीव मूर्ति (प्रभावपूर्ण सौन्दर्य की प्रतिमा) हमसे भेंट करने आती है। आधुनिक सम्प्रदाय का कलाकार ईसा मसीह की प्रतिकृति गढ़ने के लिये आदर्श के रूपमें इसका स्वागत करता है और मध्यकाल की रुचि का चित्रकार इसमें सन्त पीटर का रूप देखता है।" इग्लैण्ड के प्रसिद्ध लेबर लीडर (जो बाद में चलकर इग्लैण्ड के प्रधानमन्त्री थे।) मि० रेम्जे मेकडानल्ड ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के सम्बन्ध में उपरोक्त कथन १९१४ ई० में लिखा था।

महान शिक्षा शास्त्री

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने भारत के शैक्षणिक इतिहास में एक अद्भुत और नवीन प्रयोग किया था। वह एक सफल प्रयोग था। वह तत्कालीन प्रचलित शिक्षा पद्धति के विरुद्ध विद्रोही पग था—लार्ड मैकाले की बनाई हुई शिक्षा योजना का प्रत्युत्तर था। स्वामी जी की शिक्षा योजना को "गुरुकुल शिक्षा योजना" का नाम दिया जा सकता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने "सत्यार्थ प्रकाश" में शिक्षा के सम्बन्ध में जो महत्वपूर्ण विचार प्रकट किये हैं, उनको मूर्तरूप देने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी ने १६ मई, १९०० ई० को "गुरुकुल कांगड़ी" की स्थापना की।

गुरुकुल में स्वामी जी ने लार्ड मेकाले द्वारा संपुष्ट शिक्षा नीति के एकदम विपरीत शिक्षा नीति को अपनाया था। गुरुकुल कांगड़ी एक स्वतन्त्र विश्वविद्यालय था। सरकार से एक पैसा भी सहायता के रूप में नहीं लिया था। जनता को इस बात से बहुत आश्चर्य हो रहा था कि यहां एक भी अध्यापक अंग्रेज नहीं है। सरकारी यूनिवर्सिटियों में प्रचलित पाठ्य-पुस्तकें भी यहां प्रयोग में नहीं आती थी। अंग्रेजी साहित्य और विज्ञान की पुस्तकें भी गुरुकुल ने अपने आप तैयार कर ली थी। यहां के विद्यार्थी किसी भी यूनिवर्सिटी की परीक्षा मे सम्मिलित नही होते थे। गुरुकुल ने अपनी डिग्रियो को स्वतन्त्र नाम दे रखे थे और सबसे बढ़कर जो असम्भव कार्य समझा जाता था वह था माध्यम का प्रश्न। यहां शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी नहीं था। हिन्दी था। यह देशकी सबसे पहली यूनिवर्सिटी थी, जहां उच्च शिक्षा का माध्यम एक भारतीय भाषा हिन्दी को बनाया गया था। वस्तुत: यह सरकार की खुली अवज्ञा थी, एक खुली चुनौती थी—मैकाले को स्वामी जी महाराज की।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने हिन्दी माध्यम से गुरुकुल की पढाई का प्रबन्ध करके राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

छुआछूत विरोधी—

बीसवी शताब्दी के प्रारम्भ में जब छुआछूत व ऊच-नीच का भाव तीव्र था तब स्वामी जी के गुरुकुल मे गौड़ ब्राह्मण और अछूत मेघ के पुत्र एक साथ रहते थे, एक साथ भोजन करते थे। सबके एक जैसे वस्त्र, एक जैसा भोजन और एक-सा-रहन-सहन था। सब एक दूसरे को भाई-भाई समझते थे।

स्वाधीनता सेनानी व प्रखर राजनेता—

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने राजनीति को धार्मिक कार्य समझकर ग्रहण किया। लाखों आर्य समाजियों ने उनका अनुगमन कर कांग्रेस द्वारा प्रवर्तित असहयोग एवं स्वदेशी आन्दोलनों मे भाग लिया। हिन्दू महासभा, स्वराज सभा और नेशनलिस्ट दलों में आर्य समाज के प्रवेश से बसन्त बहार सी आ गई। खिलाफत आन्दोलन, जलियांवाला बाग आन्दोलन आदि को सर्वत्र आर्य समाजी भावना एक नवीन चेतना प्रदान करने लगी।

यहीं नहीं दिल्ली के घण्टाघर पर अंग्रेजी संगीनो के समक्ष छाती खोल कर उपस्थित होने वाले संन्यासी ने जामा मस्जिद के मिम्बर से वेद के मन्त्रोच्चारपूर्वक हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य द्वारा स्वाधीनता प्राप्ति का मार्ग बताया। अमृतसर पहुंचकर "गुरु का बाग" सत्याग्रह में सम्मिलित होकर सिखों को अपने वृहत् समाज की सहायता का आश्वासन दिया और जेल गए।

साहित्यसेवी और पत्रकार—

अपने जीवन के पूर्वार्द्ध में स्वामी जी ने "कल्याण मार्ग का पथिक" जैसे हिन्दी के गौरव ग्रन्थ में आत्म कथा रूप में शब्द चित्रित किया। अपने पतन और उत्थान को अंकित करने का यह महाप्रयास साहित्य जगत् में निरुपम है। "सुबह उम्मीद" (उर्दू), "ब्रह्मचर्य सूक्त की व्याख्या" (आचार्य रामदेव के सहयोग से), आर्य समाज एण्ड इट्स डिट्रैक्स (अंग्रेजी), स्वामी श्रद्धानन्द धर्मोपदेश, "हिन्दू संगठन मरणोन्मुख जाति का रक्षक" (अंग्रेजी), आर्य समाज के इतिहास की सामग्री (जिसके आधार पर उनके पुत्र इन्द्र विद्यावाचस्पति ने आर्य समाज का इतिहास लिखा। तथा 'सद्धर्म प्रचारक', "अर्जुन", "श्रद्धा", दी लिबरेटर आदि पत्रों में प्रकाशित उनके लेख तथा लेखमालाए उनके साहित्यानुराग के प्रमाण हैं। अमृतसर कांग्रेस के स्वागताध्यक्ष के रूप मे पढ़ा गया अभिभाषण तथा भागलपुर हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति के रूप में पढ़ा गया अभिभाषण तात्कालिक समस्याओं के प्रति उनकी जागरूकता के प्रतिबिम्ब हैं। अंग्रेजी, हिन्दी और उर्दू के सिद्धहस्त लेखक थे। पंजाबी और संस्कृत के सुधी अध्येता एवं प्रयोक्ता थे। कुशल पत्रकार थे। हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि के प्रचार-प्रसार एवं उसे राष्ट्रभाषा बनाने में उन्होने रचनात्मक एवं प्रचारात्मक दोनो धरातलो पर बढ़-चढ़कर काम किया।

कट्टर सिद्धान्तवादी—

स्वामी जी कट्टर सिद्धांतवादी व्यक्ति थे, कभी भी अपने किसी व्यक्तिगत स्वार्थ हित सिद्धांतों की बलि नहीं देते थे। अपनी इसी सिद्धांत प्रियता के कारण ही उन्हें महात्मा गांधी एवं कांग्रेस दोनों का त्याग करना पड़ा था।

प्रसिद्ध गोभक्त लाला हरदेव सहाय जी ने एकबार स्वामी जी ने कहा, "नित्य आपको मारने की धमकियां मिलती हैं। गांधी जी जैसे नेता भी आपसे रुष्ट हैं।" इसके उत्तर में स्वामी जी ने गरजकर कहा—

"क्या हुआ जो गांधीजी रुष्ट हैं? क्या हुआ जो धमकी भरे पत्र आते हैं? जब परमात्मा मेरे पास है, उनका वरदहस्त मेरी पीठ पर है और जब मेरा पक्ष सत्य है तो मुझे किसका भय?…मैं देश धर्म के कल्याण के लिए हर प्रकार के विरोध का सामना करूंगा।"

स्वामी जी जीवन भर देश, धर्म एवं आर्य समाज के लिए तिल-तिल जलते रहे एव अन्त मे एक दिन राष्ट्रहित में ही अपने प्राणो की आहुति दे दी। स्वामी श्रद्धानन्द जी की हत्या का समाचार जब गोहाटी मे हो रहे कांग्रेस सम्मेलन मे पहुचा तो सभी स्तब्ध रह गए। महात्मा गांधी ने शोक-प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए कहा कि भारत माता के एक देश भक्त और वीर सपूत की दुखद मृत्यु से ऐसी क्षति हुई है जिसकी पूर्ति सम्भव नही है। उनका जीवन और जीवन की विशेषताए अपने देश और धर्म की सेवा पर अर्पित रही है। उन्होने निर्भीकता और दृढ़ता के साथ असहायो पतितो और दीन दुखियों को सहारा दिया।

मानवता के पुजारी, स्वतन्त्रता के पक्षधर, क्रांति और शांति के प्राण, शिक्षाक्षेत्र मे हिन्दी के प्रबल समर्थक, ऋषि दयानन्द के महान शिष्य अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज को कृतज्ञ राष्ट्र की ओर से श्रद्धावनत हृदय से कोटिश: श्रद्धाञ्जलियां उनकी पावन स्मृति मे सादर समर्पित हैं।

आर्यसमाज आज के परिप्रेक्ष्य में

(पृष्ठ ७ का शेष)

व चन्दू नगला मे श्री दयानन्द सेवाश्रम चलाकर अराष्ट्रीयकरण का सफल सामना किया गया। उत्कल प्रदेश में गत वर्ष ही स्वामी धर्मानन्द जी (गुरुकुल आमसेना) द्वारा ७ हजार सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में शुद्धि हुई। इतना ही नहीं मुसलमानों, ईसाइयों के कई प्रसिद्ध विद्वान भी पिछले दिनों वैदिक विद्वान के रूप में दीक्षित हुए हैं, जिन्हें श्री प० जयप्रकाश जी आर्य डा० आनन्द सुमन, पं० महेन्द्रपाल आर्योपदेशक, प० जीवनमित्र एवं पं० अमरेश आर्य आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। ये सभी सर्वात्मना वैदिक सधर्म प्रचार में संलग्न हैं।

जहां तक जाटव बन्धुओं का सम्बन्ध है ये तो हमारे समाज के अभिन्न अंग हैं। फिर सिद्धान्तः आर्यसमाज पूर्ण समतावादी और मानवतावादी है।

आर्य समाज के गुरुकुलों में शिक्षित अनेक जाटव बन्धु आज शास्त्री और आचार्य हैं। अनेकों उपदेशक, भजनोपदेशक तथा संन्यासी हैं, जिनकी चरण वन्दना कर लोग स्वयं को धन्य समझते हैं। बुरा हो आज की कुर्सी-वादी राजनीति का जिसने आचार्य शास्त्री स्नातक बने आर्य विद्वानों को भी सुरक्षित सीट (आरक्षण) के लालच में पुनः जाटव मेहतर आदि की श्रेणी में खड़ा कर दिया। इस प्रकार आज की दुष्ट राजनीति ने जन्मगत जातिवाद को सींचा है।

आर्य समाज आज भी दलितोद्धार-पतितोद्धार, मानव निर्माण और स्वराज्य को सुराज बनाने के अपने राष्ट्रोद्धार और लोक कल्याण कार्य मे लगा है। हां आर्य जनों द्वारा यह मान लिये जाने पर कि बड़े अंशों में उनके सुधार कार्य को सभी ने अपना लिया है उनमें कुछ शिथिलता आई है। आर्यसमाज के अनेको ज्वलन्त जीवनों के राजनीति में चले जाने से भी शिथिलता आई है। पर अमेरिकन विद्वान डेविड महोदय के शब्दों में-"आर्य समाज आग की वह भट्टी है, जिसे स्वामी दयानन्द ने जलाया था और उसमें संसार भर का (सांसारिक) कूड़ा कचरा जलकर भस्मसात हो जायेगा। फीकी सी राख को (शैथिल्य) की परत उस पर आ गई है। आर्ये हम भी मानवता और राष्ट्रीयता प्रेमी उसे मिलकर हटायेंगे तो हम देखेंगे कि आर्य समाज वही आग का शोला है और कि आर्य समाज की परिपेक्ष्य में सर्वाधिक आवश्यकता है।

आचार्य उदयवीर शास्त्री : जीवन परिचय (२)

डा० जयचन्द्र राय

ओरियण्टल कालेज में :

लाहौर उन दिनों संस्कृत विद्या का प्रसिद्ध पीठ था। वहां का ओरियंटल कालिज जिसके प्राचार्य प्रोफेसर ए०सी० वुलनर महोदय थे, प्राच्य विद्या का विख्यात संस्थान था। युवक उदवीर के मन में उस कालिज में प्रवेश लेकर, संस्थागत छात्र के रूप में परीक्षा देने की प्रबल इच्छा हुई। पर वहां प्रवेश पाना सरल नही था। ज्वालापुर के ही किसी साथी के सहयोग से उदयवीर जी ने अंग्रेजी भाषा में तैयार कराकर एक पत्र वुलनर महोदय की सेवा में भेजा। संयोगवश ग्रीष्मावकाश प्रारम्भ हो चुका था। प्रोफेसर महोदय छुट्टियां बिताने के लिए गुलमर्ग (काश्मीर) जा चुके थे। पत्र वहां पहुंच तो गया किन्तु प्रवास में रहने के कारण वुलनर साहब उसका उत्तर न भिजवा सके। बात आई-गई होगई।

जुलाई में जब नया सत्र प्रारम्भ हुआ तो किसी सहपाठी की सलाह पर उदयवीर जी लाहौर पहुंच गए। प्रवेश के विषय में पूछने पर पता लगा कि उस सत्र में नवीन छात्रों का प्रवेश तो ग्रीष्मावकाश से पूर्व ही पूर्ण कर लिया गया था। अब समस्या कठिन थी। फिर भी कार्यालय के कर्मचारियों ने परामर्श दिया कि आप प्राचार्य महोदय से मिलकर देख लें। मिलने का समुचित उपाय और समय भी सुझा दिया गया। निदान उदयवीर जी उस रास्ते के मोड़ पर खड़े हो गए जिससे होकर वुलनर महोदय मध्याह्न में घर आया करते थे। जब वे निकले तो साहस करके, वे उनके पास चले गए और बोले—"मैं संस्थागत विद्यार्थी के रूप में शास्त्री कक्षा में प्रवेश चाहता हूं और गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर से आया हूं।" उन्हें गुलमर्ग में मिला पत्र याद हो आया और अपनी स्मृति पर जोर डालते हुए—वे बोले—"तुम वह विद्यार्थी तो नहीं हो जिसने ग्रीष्मावकाश में ज्वालापुर से प्रवेश के लिए मुझे पत्र लिखा था?" उदयवीर जी आशान्वित हो आह्लादित हो उठे। औत्सुक्य सहित शीघ्रता में बोले—"जी हां, मैं वही उदवीर हूं। प्रवेश के लिए आया हूं।" वुलनर साहब अपने कार्यालय की ओर लौट पड़े और सस्नेह बोले— मेरे साथ आओ" प्रवेश उसी दिन हो गया।

अगले वर्ष परीक्षा में ससम्मान उत्तीर्ण होकर वे सन् १९१७ जुलाई में ज्वालापुर गुरुकुल में अध्यापक बनकर आये और अगले ४ वर्षों तक वहीं अध्यापन-कार्य में लगे रहे।

विवाह :

सन् १९२१ ई० में शास्त्री जी का विवाह हुआ और श्रीमती विद्याकुमारी जी वधू बनकर आई। यहां एक मनोरंजक तथ्य का उल्लेख आवश्यक होगा। विद्याकुमारी जी के पिता ठाकुर प्रतापसिंह पुलिस-सेवा में एस०पी० थे, कालान्तर में वे कलक्टर भी हुए। उन्हें शिकार का शौक था और उनका पूरा परिवार मांसाहारी था। केवल विद्याकुमारी ही ऐसी कन्या थी जिन्हें शुद्ध शाकाहार ही प्रिय था। मांसाहार वे नहीं कर सकती थी। प्रतापसिंह जी कभी-कभी उनके विवाह का प्रसंग उठ जाने पर सहज विनोदवश कह दिया करते थे कि ठाकुरों के परिवार में से इस कन्या के लिए मैं ब्राह्मण देवता को कहां से ढूंढ़कर लाऊंगा! विवाह के बाद उन्हें बोध हुआ कि उन्हें वास्तविक अर्थों में ब्राह्मण वर प्राप्त हुआ! जाति से नहीं, कर्म से!

विद्यावती के व्यक्तित्व में अद्भुत सौम्यता और शालीनता का विकास हुआ। उन्होंने दीर्घकालीन दाम्पत्य जीवन में आदर्श पत्नी की भूमिका का निर्वाह किया।

क्रान्तिकारियों के बीच :

सन् १९२१ ई० के असहयोग आन्दोलन के सिलसिले में अनेक नवयुवकों ने कालिजों और विश्वविद्यालयों की शिक्षा को तिलांजलि देकर जेलों की यात्रा की। स्वातन्त्र्य समर क्रमशः व्यापक होने लगा और विशाल जन-समुदाय उसमें अपनी भागीदारी का निर्वाह करने के लिए आगे आया। राष्ट्र के कर्णधारों ने युवा पीढ़ी को शिक्षित एवं प्रशिक्षित करने के लिए राष्ट्रीय महाविद्यालयों की स्थापना आवश्यक समझी। ऐसा ही एक विद्यालय लाहौर में लाला लाजपत राय ने भाई परमानन्द के सहयोग से स्थापित किया था जो आगे चलकर मूर्धन्य क्रान्तिकारियो का साधना पीठ बना। सन् १९२१ मे ही श्री उदयवीरसिंह शास्त्री ज्वालापुर गुरुकुल से आकर इसी विद्यालय मे संस्कृताध्यापन करने लगे। यहां यह ध्यान में रखना है कि हमारे राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन ने देश की प्रतिभा और वैदुष्य को अपनी ओर आकृष्ट किया था। यह वह युग था जब ज्ञान साधना और सारस्वत अनुष्ठान मातृभूमि के प्रति समर्पित हो जाया करते थे। यही कारण है कि शास्त्राभ्यासी उदयवीरसिंह, शास्त्राभ्यासी युवा क्रान्तिकारियों के निष्ठावान् आचार्य और विश्वसनीय संरक्षक बन गए। लाहौर का, उनका यह प्रवास-काल उनके जीवन के उन अलिखित गोपनीय प्रकरणों को अपने आभोग में छिपाये हुए हैं जिनका हमारे क्रान्तिकारी आन्दोलन के इतिहास मे विशेष महत्त्व है और जिन्हें न छिपाने का प्रयत्न शास्त्री जी ने सहज विनम्रतावश किया लेकिन जिन्हें छिपावा चाहकर भी वे छिपा नही पाये। उसके न जाने कितने साक्षी आज भी मौजूद हैं! यह सम्भव नही कि यहां उन सब प्रसंगों का संक्षिप्त उल्लेख भी किया जा सके, उनके सविस्तार वर्णन की तो बात बहुत दूर की है। केवल कुछ प्रसग इस उद्देश्य से यहां उल्लेखित हैं कि शास्त्री जी के व्यक्तित्व के परोक्ष पक्षों को उजागर किया जा सके।

(क्रमशः)

शालीमार बाग आर्यसमाज का उत्सव सम्पन्न

इस अवसर पर साम्प्रदायिक सद्भावना सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन मे वैदिक विद्वान डा० महेश विद्यालंकार, सुप्रसिद्ध पत्रकार प० क्षितीश वेदालंकार, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल, आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री डा० शिवकुमार शास्त्री ने आर्य जनता को सम्बोधित किया।

सम्मेलन से पूर्व आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान दानवीर महाशय धर्मपाल जी ने ध्वजारोहण किया। एक सप्ताह तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ एव वेदकथा युवा विद्वान, अन्तर्राष्ट्रीय कथाकार प० यशपाल सुधांशु ने की। श्री विजयभूषण जी के भजनोपदेश हुए। शनिवार १ दिसम्बर १९९० को आर्य महिला सम्मेलन श्रीमती सरला मेहता की अध्यक्षता में हुआ। श्रीमती प्रकाश आर्या श्रीमती प्रेमशील महेन्द्र, श्रीमती कृष्णा चड्ढा, डा० शशिप्रभा, श्रीमती शान्तिदेवी अग्निहोत्री ने अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर वेदमन्त्रोच्चार के साथ यज्ञशाला का शिलान्यास श्रीमती शोभातायल धर्मपत्नी श्री ब्रजभूषणतायल स्वास्वाधिकारी पाइटेक्स, वजीरपुर इडस्ट्रियल एरिया नई दिल्ली के कर कमलो से सम्पन्न हुआ। श्री तायल के पुत्रो श्री प्रदीप तायल एव श्री प्रवीण तायल तथा पौत्रो ने भी इस आयोजन मे सहयोग दिया। श्री ब्रजभूषण तायल ने इस यज्ञशाला के निर्माण का पूर्ण व्यय वहन करने का दायित्व लिया है। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि उनमें इसी प्रकार शुभ कार्यों को करने की सामर्थ्य बनाए रखें। वे सुखी तथा स्वस्थ रहें। वेद पारायणयज्ञ श्री पं० यशपाल सुधांशु के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ।

—विमलकान्त शर्मा

स्वामी आत्मानन्द जी गम्भीर रूप से अस्वस्थ

भागलपुर, देवरिया १६ नव०। आर्य जगत के कर्मठ सन्यासी स्वामी आत्मानन्द जी सरस्वती (केन्द्र आर्यमगढ) गम्भीर रूप से अस्वस्थता की स्थिति मे, मऊ आर्य समाज मन्दिर मे उपचार करा रहे हैं।

युवा आर्य नेता श्री रामाज्ञा 'आर्यपुत्र' ने गत दिनो उनसे मुलाकात कर उनके स्वस्थ्य व दीर्घायु जीवन के लिए सर्वज्ञ प्रभु से प्रार्थना की है।

आर्य डायरी १९९१

आर्य डायरी प्रकाशित हो गई है बडे आकार की, १ पृष्ठ पर १ तारीख स्वस्ति वाचन, शान्ति प्रकरण, प्रार्थना मन्त्र, सन्ध्या, दैनिक यज्ञ विशेष यज्ञ, आर्य समाज के नियम, भजन आदि दिये हैं। मूल्य १ डायरी १०) चार डायरी पर डाक खर्च १८) १०) अग्रिम भेजकर मगाव।

ऋषिराज कलेन्डर १२ पेज का प्रत्येक पृष्ठ पर स्वामी दयानन्द विरजानन्द का चित्र, बडे अक्षर में ओ३म्, गायत्री मन्त्र है। १ कलेन्डर एक रुपया १०० कलेन्डर ८० रुपये।

पता:—वेद प्रचार मण्डल
९०/१३ रामजस रोड करोल बाग, दिल्ली-५



अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द की याद में

गुरुकुल की भूमि प्यारी थी तुमको।
आयि स्वामी उसे तुम कहां भूल गयेहो॥
पीकर हलाहल जहर का प्याला।
सुधादाता शंकर कहां तुम गये हो॥१॥

किया था वह पौधा जिसे तूने पालित।
उम्मीदों की थाती जहां रख गये हो॥
खड़ा जो धरा में अभी हो न पाया।
झंझा विरह की दुःसह दे गये हो॥२॥

पर्वतारण्य भूमि गहन वन समावृत।
निकट सुरसरि के सलिलामि सिंचित॥
हिंस्रादि जन्तु की विपिन स्थली में।
बच्चों के प्यारे कहां तुम गये हो॥३॥

ऋषि-साधना थी त्याग की भावना थी।
पुरानी थी पद्धति नये थे तराने॥
विदेशी थे शासक पद-पद पर रोड़े।
पुरा संस्कृति को चले थे जगाने॥४॥

वे अछूतों के साथी गरीबों के थे भाई।
वे जन्म भूमि के लाल प्यारे॥
"आनन्द दया" के सच्चे सिपाही।
वे मातृभूमि के लाल न्यारे॥५॥

बच्चे अभी भी तुम्हें याद करते।
तेरी ही चर्चा में दिन बिताते॥
अंधेरी वे रातें वे काली घटायें।
आतीं सदा हैं, पर स्वामी न आते॥६॥

—रामदेव शास्त्री वेदालंकार एम०ए०

शुद्धि समाचार

बेतिया आर्य समाज में दिनांक ४-११-९० को रात्रि ८ बजे २६ वर्षीय आर्य युवक कृष्णाप्रसाद गुप्त वल्द बनारस प्रसाद गुप्त का विवाह २२ वर्षीय फातमा खातुन (प्रतिभा) वल्द मुहम्मदीन मियां बेतियां निवासी के साथ सम्पन्न हुआ, फातमा खातुन की शुद्धि एवं वैवाहिक कार्य श्री रामचन्द्र जी (मन्त्री आर्य समाज बेतिया के पुरोहित्य में सम्पन्न हुआ, फातमा खातुन का शुद्धि कर नया नाम प्रतिभा रखा गया। इस अवसर पर विजय कुमार, रघुनाथ जी आदि आर्य नवयुवकों का सहयोग सराहनीय रहा।

—नन्दलाल गुप्ता

आर्य समाज में नेत्र चिकित्सा शिविर सम्पन्न

दिल्ली। आर्यसमाज रोहतासनगर, शाहदरा में सुप्रसिद्ध ९० वर्षीय आर्योपदेशक पं० आशानन्द भजनीक की सत्प्रेरणा से "साप्ताहिक नेत्र चिकित्सा शिविर" भारत के राष्ट्रपति के आनरेरी सर्जन डा० पी०एन० सेठ की देखरेख में लगाया गया।

शिविर में मोतिया, पड़वाल, फोला, नासूर आदि नेत्र रोगों के प्रसिद्ध डा० कुमारी सुमित्रा गोयल, डा० जीवनदास जेतली, श्री गोपाल कृष्ण ने लगभग २०० रोगियों की चिकित्सा व जांच की तथा ४२ लोगों के सफल आपरेशन किये गये। डा० शिवदयाल वर्मा ने जरूरतमन्दों को निःशुल्क चश्में दिये।

—चन्द्रमोहन आर्य

शोक समाचार

आर्य जगत को यह जानकर बड़ा दुःख होगा कि पं० धर्मपाल विद्यालंकार जी, जो कि ८५ वर्ष से ऊपर की आयु के थे, वे वृद्धावस्था तथा अस्वस्थ होने के कारण उनका १९-११-९० को देहावसान हो गया वे पुरानी पीढ़ी के उन व्यक्तियो मे से थे जिन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द के कातिल को रंगे हाथों पकड़ा था। आज वह भी हमसे अलग हो गये। प्रभु से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति व पारिवारिक जनो को कष्ट सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

--सम्पादक

—श्रीमती अक्षयकुमारी शास्त्री मुख्याधिष्ठात्री कन्या गुरुकुल हाथरस का देहान्त १४-१२-९० को हो गया। शान्ति यज्ञ दिनांक १७-१२-९० को सम्पन्न हुआ। शुद्धियज्ञ दिनांक २४-१२-९० को प्रातः १० बजे कन्या गुरुकुल हाथरस में होगा।

—सम्पादक

दि० न० न० बा० (सा०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२३ १२-१९९०) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस U नं० ९३
R 626/57 Licensed to post without Prepayment License No U 93 Post in N.D P.S O.on 20-12-1990

दिल्ली के रा

२३ से २६ दिस...

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

देश की वर्तमान स्थिति में आर्यसमाज का दायित्व

और

विविध सम्मेलनों का आयोजन

वृहद् यज्ञ—विशाल शोभा यात्रा

महर्षि दयानन्द गोसंवर्धन दुग्ध केन्द्र का शिलान्यास

काश्मीर और पंजाब की विस्फोटक अवस्था पर

आर्यसमाज का घोषणा-पत्र

२४ दिसम्बर ९० को प्रातः १०-३० बजे आर्य महासम्मेलन का

खुला अधिवेशन

देश के पूज्य संन्यासी, वैदिक विद्वान तथा मान्य नेताओं का शुभागमन

—: निवेदक :—

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री, मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म् सार्वदेशिक साप्ताहिक

सुखी समाज

जीवन भर पुरुषार्थी रहें

कुर्वन्नेवेह कर्माणि, जिजीविषेच्छतं समाः ।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति, न कर्म लिप्यते नरे ॥
यजु० ४०-२ ॥

हिन्दी अर्थ—इस ससार में मनुष्य कर्म करता हुआ ही सौ वर्ष जीने की इच्छा करे । इस प्रकार से तुम्हरी मुक्ति होगी । इसके अतिरिक्त अन्य प्रकार से मुक्ति नहीं होती है । निष्काम-भाव से किया हुआ कर्म मनुष्य मे लिप्त नहीं होता है अर्थात् निष्काम भाव से कर्म करने वाला व्यक्ति कर्म बन्धन में नहीं पड़ता ।

(अनुशीलन शेष पृष्ठ १२ पर)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र   दूरभाष : ३२७४७७१   वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष २६ अंक ५०]   दयानन्दाब्द १६६   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१   पौष सु० १४   स० २०४७ ३० दिसम्बर १९९०

देश की आजादी के संघर्ष में : राष्ट्रीय आन्दोलन और आर्यसमाज को एक दूसरे का पर्याय माना जाता था

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के समारोह में प्रधानमंत्री श्री चन्द्रशेखर का आह्वान

नई दिल्ली २४ दिसम्बर । प्रधानमन्त्री श्री चन्द्रशेखर ने कहा कि आज जाति, धर्म आदि के नाम पर भाई-भाई के खून का प्यासा हो रहा है, ऐसे विकट समय मे सद्भावना पैदा करने एव राष्ट्र को जोड़ने के लिए आर्य समाज को आगे बढ़कर एक विशेष दायित्व निभाना है । श्री चन्द्रशेखर आज सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का रामलीला मैदान में उद्घाटन कर रहे थे । स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने सम्मेलन की अध्यक्षता की ।

श्री चन्द्रशेखर ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने समाज मे अन्ध-विश्वास, जातपात, कुरीतियो आदि को दूर करने के लिए सघर्ष छेड़ा था और उन्होंने धर्म को एक नया आयाम दिया था, स्वामी दयानन्द ने स्त्री शिक्षा पर विशेष बल दिया था । प्रधानमन्त्री ने यह गर्व से बताया कि उनकी शिक्षा एक वैदिक स्कूल में हुई थी और उन दिनों राष्ट्रीय आन्दोलन और आर्य समाज को एक दूसरे का पर्याय समझा जाता था । उन्होंने स्वाधीनता सग्राम में आर्य समाज की महत्वपूर्ण भूमिका की सराहना की । उन्होंने आगे कहा कि स्वामी दयानन्द ने हमें पुरुषार्थ शौर्य एव सयम का एक सन्देश दिया था और आज हमें आर्थिक क्षेत्र में सयम बरतकर देश को आगे ले जाना है ।

इस अवसर पर पूर्व प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी ने मुख्य अतिथि के रूप में अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि आर्य समाज ने आजादी की लड़ाई और अंग्रेजो को देश से भगाने में विशेष सहयोग दिया था और इसी प्रकार आज देश को बचाने के लिए आर्यसमाज को कार्य करना है । आर्यसमाज द्वारा महिलाओ को समाज मे सम्मान जनक स्थान दिलवाने की सराहना की ।

इस अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने आर्यसमाज का घोषणा-पत्र प्रस्तुत करते हुए उसके मुख्य अंशो पर प्रकाश डाला और कहा कि सरकार धर्म निरपेक्षता, तुष्टीकरण की नीति, राम० जन्म भूमि, राष्ट्रवाद जैसे मुद्दो पर नये सिरे से विचार करके नीतियो मे शुद्ध राष्ट्रवादी विचारधारा को प्रोत्साहित करे ।

सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष पूर्व लोकसभा अध्यक्ष डा० बलराम जाखड़ ने कहा कि आर्यसमाज ने स्वराज्य प्राप्ति के लिए जो कुर्बानियां दी थी, वे अद्वितीय हैं और आज सभी का सकल्प लेना चाहिए कि चाहे हमारा जीवन रहे या न रहे, हमारी मातृभूमि रहनी चाहिए । उन्होंने सम्मेलन मे देश विदेश से पधारे हुए हजारो प्रतिनिधियो को धन्यवाद देते हुए सम्मेलन के आयोजको के प्रति आभार व्यक्त किया । इस अवसर पर पूव केन्द्रीय मन्त्री श्री कृष्णचन्द्र पन्त, एच० के० एल० भगत श्री वीरेन्द्र, प्रो० शेरसिंह, प० राजगुरु शर्मा, डा० सच्चिदानन्द शास्त्री आदि ने भी विचार व्यक्त किए । कार्यक्रम का सचालन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल जी ने किया ।

सम्मेलन में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित भव्य व आकर्षक स्मारिका का विमोचन प्रधानमन्त्री श्री चन्द्रशेखर ने किया ।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर जारी आर्यसमाज का घोषणा-पत्र

आर्य समाज की सर्वोच्च सस्था "सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा" आर्य शब्द को परिभाषित करते हुए कहती है कि आर्य वह लोग हैं जो किसी विशेष पन्थ के अनुयायी हो, जो जातिवाद को नहीं मानते हों, और जिनका इतिहास शुद्ध चरित्र उच्च शिष्टाचार और विवेकशीलता से परिपूर्ण था । यह परिभाषा आर्यसमाज के सस्थापक, महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा आर्य शब्द की व्याख्या पर आधारित है ।

१४ वें अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के शुभ अवसर पर सार्वदेशिक आर्य

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्यसमाज का घोषणा-पत्र

(पृष्ठ १ का शेष)

प्रतिनिधि सभा समस्त विश्व के आर्य समाजियो को आह्वान करती है कि वे आर्य शब्द की इस वास्तविक परिभाषा के अनुसार आचरण के सकल्प को दोहराए और वास्तव मे आर्य कहलाने के अधिकारी बने।

मातृभूमि की धारणा :-

आर्य धर्म (वैदिक धर्म) का अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण है परन्तु अपने इस दृष्टिकोण के आधार पर आर्य धर्म लोगो की भौगोलिक इकाईयो पर आधारित राष्ट्रीय पहचान की अवहेलना नही करता। मातृभूमि की धारणा आर्यो के लिए नई नहीं है। अथर्ववेद के "भूमि सूक्त" मे इसकी सजीव व्याख्या की गई है। खण्ड १२ मन्त्र २७ के अनुसार जिस पृथ्वी पर हमारे उपकार के लिए फल, फूल पत्र आदि वाले वृक्ष उत्पन्न होते हैं उस भूमि की हम सावधानी सदा करते रहे।

आर्यावर्त (भारत) नामक भौगोलिक इकाई पर आर्य सबसे पहले निवासी थे। राष्ट्र की एकता तथा अन्य विशेषताओ की रक्षा के लिए इन्होने किसी भी बडे से बडे बलिदान को महान नहीं समझा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा यह प्रयत्न करेगी कि भारतीय सविधान म सशोधन करके आर्यावर्त का देश के मूल नाम की तरह अनुच्छेद (१) मे मिल किया जाए, तथा आर्यों को आक्रमणकारी और आर्यावर्त के मूल निवासी नही हैं कहकर इतिहास का अशुद्ध वर्णन करना कानून दृष्टि मे एक दण्डनीय अपराध माना जाए।

धर्म चर्चा :-

धर्म से हमरा अभिप्राय आचार सहिता से है। कुछ लोग इसका अभिप्राय सर्वोच्च प्राकृतिक सत्ता मे विश्वास और एक निश्चित पद्धति के अनुसार उसकी पूजा से लेते हैं। इस प्रकार के लोग अपने धार्मिक विश्वासो को पूर्ण सत्य समझते हैं जिनमे किसी भी कीमत पर परिवर्तन नहीं किया जा सकता। आर्य समाज सस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती धर्म के इस दृष्टिकोण पर समस्त मुख्य धर्म समुदायो के उच्चाधिकारियो से आपसी विचार-विमर्श के इच्छुक थे। सार्वदेशिक सभा उन्ही प्रयत्नो को पुन सचेत करना चाहती है। यह सब सत्य है कि राष्ट्रीय एव अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इस प्रकार का विचार-विनिमय आसान कार्य नही है, परन्तु सभा की दृष्टि मे विश्व को धार्मिक कट्टरतावाद की बुराईयो से बचाने का यही एक मात्र तरीका है। अत' इस दिशा मे कार्यरत अन्य विश्वव्यापी सगठनों की सहायता लेकर सार्वदेशिक सभा का यह सकल्प है कि निर्धारित परिणाम प्राप्त करने के लिए अब गम्भीर प्रयत्न किए जाने चाहिए।

संस्कृति :-

सस्कृति से हमारा अभिप्राय लोगो की मानसिक शुद्धता से है जो कि उनके व्यवहारो, भाषाओ परम्परागत रीतियो, विश्वासो और अन्य कार्य कलापो मे दृष्टिगोचर होती हैं। सस्कृति शब्द धर्म का पर्यायवाची नही है। परन्तु भिन्न-भिन्न धार्मिक विश्वास, सस्कृतिके विकास या ह्रास में योगदान अवश्य करते है। आर्यावर्त मे रहने वाले लोगो की एक विशेष सस्कृति है। नेपाल के वर्तमान सविधान में भी राजा को आर्य सस्कृति का रक्षक कहा गया है जिसके लिए सार्वदेशिक सभा नेपाल के लोगो तथा सरकार को हार्दिक बधाई देती है।

धर्म निरपेक्ष संस्कृति :-

भारत की सस्कृति को धर्म निरपेक्ष सस्कृति कहा जाता है। भारत के सविधान मे सन् १९७६ के सविधान सशोधन के फलस्वरूप 'धर्म निरपेक्ष" शब्द को जोडा गया था परन्तु कही पर भी इस शब्द को परिभाषित नहीं किया गया। "धर्म निरपेक्ष" शब्द पर विस्तृत चर्चा करने के हर प्रकार के प्रयत्नो का सार्वदेशिक सभा स्वागत करेगी और इसमें भाग लेकर हर प्रकार का सम्भव योगदान भी दिया जायगा।

हमारे कुछ राजनीतिक नेताओ की दृष्टि मे भी "धर्म निरपेक्षता' से अभिप्राय धर्म-विरोध से नही है, वे इसे सर्व-धर्म सम्भाव की सज्ञा देते हैं जिससे समस्त धार्मिक विश्वासो के लिए समान आदर की भावना पैदा हो?

सैद्धान्तिक रूप से सार्वदेशिक सभा इस दृष्टिकोण का विरोध नहीं करती परन्तु जिस प्रकार से हमारे देश में धर्म-निरपेक्षता का पालन किया गया है वह दोहरे माप की प्रक्रिया का सूचक सिद्ध हुआ है।

सार्वदेशिक सभा अपने इस विचार के समर्थन में भारतीय सविधान के अनुच्छेद ४४ तथा विधि आयोग के पूर्व सदस्य श्री टी के टोपे की टिप्पणी का उल्लेख करती है। अनुच्छेद ४४ के अनुसार समस्त भारत के नागरिको को भारत सरकार एक समान नागरिक सहिता देने के लिए प्रयत्नशील रहेगी। श्री टोपे ने इस बात पर गहरा शोक व्यक्त किया है कि समस्त नागरिको के लिए समान सहिता देने मे भारत सरकार की अरुचि इस पर आधारित है कि इस कार्य से उन्हे मुसलमानो का समर्थन चुनावो मे नही मिलेगा।

मुसलमान लोग अपने इस्लामिक कानून से किसी भी प्रकार हटने का विरोध करते हैं क्योकि इसमे उन्हे एक ही समय पर चार पत्निया रखने की अनुमति दी गई है। इस सम्बन्ध मे उनकी जिद (कठोर हठधर्मिता) सविधान की धर्म निर्पेक्ष पद्धति का हनन करती है। इन लोगो को अन्य नागरिको के समान अधिकार एव कर्तव्य देने के लिए हमारे शासक दृढ निश्चय लेने मे असमर्थ हैं।

तुष्टीकरण नीति :-

आर्यावर्त के मुख्य समुदाय से भिन्न इस मुस्लिम समुदाय के लिए शासको की तुष्टीकरण की नीति के कारण ही १९४७ मे मजहब पर आधारित पाकिस्तान बना। इस पाकिस्तान में से एक अन्य राज्य बगला देश बना जो कि मजहब पर ही आधारित है।

इस तुष्टीकरण की नीति मे जिस पर आज भी हमारे शासक चल रहे हैं, एक बार फिर उसी प्रकार के हालात बना दिए हैं, जैसे इस विभाजन से पहले थे। वही पाकिस्तान आज हमारे देश के आतरिक सामाजिक एव राजनैतिक आदोलनो को सुलगा रहा है। इसके विपरीत हमारे शासको को पाकिस्तान के विरुद्ध बयानबाजी या आरोप लगाने से ही सन्तोष हो जाता है। सार्वदेशिक सभा का यह सुझाव है कि सीधी प्रतिक्रियात्मक कार्यवाही से ही इस सकट का निवारण होगा।

राष्ट्रीय मोर्चा सरकार ने वोट बैंक बनाने की आकुलता मे मण्डल आयोग की सिफारिशो को लागू करके देश को गृह युद्ध के कगार पर खडा कर दिया है। हमें इस भ्रम में नहीं रहना चाहिए कि हमारे समाज मे हिसात्मक प्रवृत्तिया राष्ट्रीय मोर्चा सरकार के समय में सर्वाधिक थी और ये पुन प्रारम्भ नहीं होगी, क्योकि वतमान सरकार ने भी अभी देश को इस सकट से उभारने के लिए कोई ठोस निर्णय नहीं लिए।

राष्ट्रवाद :-

वर्तमान परिस्थितियो से जूझने के लिए देश को योग्य, ईमानदार तथा उत्तरदायी नेतृत्व की आवश्यकता है। सार्वदेशिक सभा यह महसूस करती है कि राष्ट्रवाद की गलत धारणा ही इस वर्तमान सकट के लिए जिम्मेदार है। अनेकता से भरे राष्ट्र मे इस प्रकार के सकट शीघ्र पैदा हो जाते हैं। इसलिए हम समान सस्कृति पर आधारित राष्ट्रवाद को विकसित करने पर बल देते हैं।

श्री रामजन्म भूमि :-

यदि इस प्रकार के सास्कृतिक राष्ट्रवाद का पूर्ण विकास आज तक कर लिया गया होता तो राम जन्म भूमि का विवाद इस खतरनाक अवस्था तक न पहुचता। ऐसा प्रतीत होता है कि आज के मुल्ला, मौलवी राष्ट्रीय अपमान की उस कडी को एक यादगार बनाना चाहते हैं जो विदेशी

(शेष पृष्ठ १२ पर)

आदर्श संन्यासी, आदर्श नेता, लौह पुरुष—

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज

—प्रा० राजेन्द्र 'जिज्ञासु' वेदसदन अबोहर-१५२११६

श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ने ५५ वर्ष लगातार आर्यसमाज की सेवा की। आर्य जगत ३० दिसम्बर को उनका जन्म दिवस मनाने जा रहा है। महर्षि दयानन्द की शिष्य परम्परा मे जिस विद्वान्, नेता व बाल-ब्रह्मचारी ने सवप्रथम सन्यास लेकर वैदिक धर्म के लिए अपना जीवन भेट किया, वे स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ही थे। आपका पूर्व नाम केहर-सिंह था। एक समृद्ध जाट सिख कुल मे आपका जन्म हुआ। सन्यास लेकर आत्मपुरी नाम पाया फिर स्वतन्त्रानन्द कहलाए। मोही ग्राम मे जन्मे इस निर्मोही साधु ने अपने रक्त की धार देकर ऋषि उद्यान को सींचा।

ऋषि मिशन के लिए ऐसा कौन सा करणीय कार्य है जो उस पुण्यात्मा ने नही किया? आजीवन ब्रह्मचारी रहे। देश विदेश मे वेद-प्रचार किया। पैदल घूम घूम कर ग्राम-ग्राम, नगर-नगर, डगर-डगर और पर्वतो की चोटियो तक वेद-सन्देश सुनाया। सस्कृत भाषा का प्रचार किया। महाशय रामचन्द्र जी के बलिदान पर विषम परिस्थितियो मे जान जोखिम मे डाल-कर दलितोद्धार के लिए जम्मू क्षेत्र मे पहुचे। शोध कार्य किया व करवाया। साहित्य सृजन किया व करवाया। शुद्धि कार्य में सदा आगे आगे रहे। दस वर्ष तक भिक्षा के भोजन पर निर्वाह करते हुए श्रीमद्दयानन्द उपदेशक विद्यालय लाहौर के आचार्य पद को सुशोभित किया। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के अधिष्ठाता वेद प्रचार का आसन भी ग्रहण किया। उन दिनो इस सभा मे इतने प्रचारक उपदेशक थे कि आज सारी सभाओ के पास भी इतने उपदेशक नही।

आर्य समाज के इतिहास मे सर्वाधिक सन्यासी व वानप्रस्थी दिये सर्वाधिक उपदेशक व विद्वान् दिये, अनेक शास्त्रार्थ महारथी व ब्रह्मचारी दिये। किस किसका नाम ले और किसका छोडे? वैदिक तोप प० मनसाराम जी, स्वामी रुद्रानन्द जी, श्री प० शान्तिप्रकाश जी, प० मुनीश्वरदेव जी, प० ज्ञानेन्द्र जी गुजरात, प० नरेन्द्र जी हैदराबाद, प० प्रियदर्शन जी गुजरात, स्वामी पूर्णानन्द जी उ० प्र०, प० हरिदेव जी सिद्धान्त भूषण, प० चन्द्रभानु, जी सिद्धान्त भूषण देहली, प० शिवदत्त जी, प० नरदेव जी आदि सब आपकी देन हैं।

आपके सन्यासी शिष्यो की सूची बहुत लम्बी है। आर्य समाज पर जब जब विपत्ति आई आपके सकेत मात्र पर आपके शिष्य शीश तली पर धर-कर आगे निकले। देवता स्वरूप भाई परमानन्द जी व प० चमूपति जी के घर सुरक्षित नही थे। लाहौर मे दगा हो गया। पूज्य स्वामी जी ने अपने शिष्यो से कहा कि इन दो महापुरुषो की रक्षा के लिए उनके निवास पर पहरा देना है। प० जगदेव सिंह सिद्धान्ती सरीखे रणबाकुरे उनके प्रति अटूट श्रद्धा रखते थे। वे इन दोनो विभूतियो के हा उनकी रक्षा के लिए पहुचे। यह क्या कोई साधारण सी बात है? स्वामी जी महाराज स्वय करफ्यू मे टेढे-मेढे मार्गों मे से होकर सिद्धान्ती जी को भाई जा के घर पर छोड कर आए।

वैदिक धर्म ग्रहण करके स्वामी जी वैधानिक रूप से आर्य समाज से अभी नही जुडे थे। बिना किसी सभा सस्था की सहायता के आज एशिया के कई देशो मे तीन चार वर्ष तक वेद प्रचार के लिए भ्रमण करते रहे। वहा से लौटे तो फिर देश भर मे पैदल भ्रमण करके वेद प्रचार की ठानी। सन् १९०६ से १९०९ तक लगातार तीन वर्ष तक फिर किसी सभा सस्था के सहयोग के बिना देश के सब भागो मे विचरण करके ऋषि का सन्देश दिया। श्री महाराज साधु मण्डली मे ही घूमा करते थे। इसी काल मे आपने गुजरात मे ऋषि के जन्म स्थान, माता पिता के नाम की खोज करने का काम किया। जहा ऋषि गये थे, उन उन नगरो व ग्रामो की यात्रा की। ये सब कार्य स्वय स्फूर्ति से किए थे।

दीनानगर के स्वर्गीय ला० देवदत्त जी एक अनुभवी आर्य पुरुष थे। आपने एक बार हमे बताया कि आर्य समाज मे जितना स्वामी जी महाराज ने भ्रमण किया इतना सम्भवत किसी भी और सन्यासी महात्मा ने नही किया। यातायात की सुविधाओ के कारण अब तो अनेको ने बहुत भ्रमण कर लिया है। स्वामी जी के जीवन काल में ही मेहता जैमिनी जी ने सारे विश्व का भ्रमण किया परन्तु स्वामी जी महाराज ने तो वेद प्रचार के लिए पैदल लम्बी लम्बी यात्राये की। केरल के श्री प० नारायण दत्त जी ने बताया कि चार बार तो आपने केरल की यात्राये की।

समृद्ध परिवार मे जन्मे श्री स्वामी जी महाराज ने आजीवन भिक्षा वृति का आदर्श सामने रखकर परोपकार मे जीवन दे दिया। अनेक बार भिक्षा करते हुए बहुत तिरस्कार हुआ। आपकी सहन शीलता ऐसी थी कि मान अपमान से किञ्चित न डोले। आप कहा करते थे कि हम किसी का दिया हुआ नही खाते किसी का कार्य नही करते। हम परमेश्वर का दिया खाते है और परमेश्वर का ही कार्य करते है।

श्री महाराज मे बलिदान का भव्य भाव था। स्वर्गीय श्री ला० हरदेव सहाय जी ने हमे एक बार कहा था कि हिन्दू जाति मे अब स्वामी स्वतन्त्रा नन्द जी महाराज जैसा अडिग, साहसी, अद्वितीय शूर बलिदानी नेता कोई भी नही। जब लोहारू में आप पर प्राण घातक आक्रमण हुआ तो सिर पर कुल्हाडा भी चलाया गया और लाठियो की तो भीषण वर्षा की गई। तब दीनानगर के ला० भद्रसेन जी आपका पता करने देहली इर्विन हस्पताल मे गये। लाला जी आपको देखकर रो पडे। इससे पाठक अनुमान लगा सकते हैं कि इस आजन्म ब्रह्मचारी पर दानव दल कैसे टूट पडा होगा। स्वामी जी ने तब वीरो व फकीरो वाली मस्ती से कहा, 'भद्र मार खाई है और खूब खाई है।"

सैकडो लाठिया खाकर भी ब्रह्मचारी खडा रहा। ६५ वर्षीय बाल ब्रह्मचारी की इस शूरता पर किस आर्य को अभिमान नही होगा?

महाशय राजपाल जी पर छुरे का वार करने वाले पहलवान खुदा बख्श को लाहौर मे ऐसे कसकर पकडा कि दुष्ट हत्यारा वहा छटपटाता ही रह गया। ब्रह्मचारी के पजे उसकी कलाई पर कील की भाति गड गये। आर्य जगत् में शूरता के लिए सर्वप्रथम आप ही का अभिनन्दन किया गया। महा-मना मालवीय जी आपकी शूरता के लिए आपका बडा सम्मान किया करते थे।

हैदराबाद सत्याग्रह के सफल सूत्र धार फील्ड मार्शल स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का उपकार किन शब्दो मे यहा वर्णन करे? चारपाई त्याग दी, जेल जैसा भोजन लेते रहे, वस्त्र त्याग दिये और क्षौर करवाना भी छोड दिया। जेल जाने का निश्चय कर लिया तो आर्य नेताओ ने महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज की मृत्यु-इच्छा (Death will) की दुहाई देकर आपको जेल जाने से रोका। महात्मा जी की मृत्यु इच्छा मे ऐसा लिखा था कि मेरे पश्चात् स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी किसी भी स्थिति मे जेल न जावे। ऐसे बलिदानी नेता को पाकर ऋषि के समाज को इतनी कीर्ति प्राप्त हुई।

आप अपने कुल परिवार जाति-पाति, जन्म स्थान आदि की कभी भी चर्चा नही किया करते थे परन्तु हैदराबाद सत्याग्रह की विजय पर जब देहली मे आपका अभिनन्दन किया गया तो उसके उत्तर मे ऋषि भक्ति से छलकते हृदय से ये शब्द कहे थे —पिता जी ने कभी कहा था कि तूने सन्यास लेकर कुल को कलकित कर दिया है। हम तो तुझे जरनैल करनैल बनाना चाहते थे।"

स्वामी जी ने कहा, "परिवार के लोग तो सम्भवत मुझे जरनैल-करनैल न बना पाते परन्तु आर्यसमाज ने तो मुझे फील्ड मार्शल बना कर दिखा दिया।"

कितना प्यार था महाराज को समाज से! देश के स्वाधीनता सग्राम मे १९३० ई० मे कांग्रेस के सत्याग्रह के पजाब मे डिक्टेटर बनाए गये। सत्याग्रह के सूत्रधार बनकर इसका सफल सचालन किया। स्वय जेल गये। हमारे उपदेशक विद्यालय की पुलिस ने तलाशी Search) ली। यह सौभाग्य

(शेष पृष्ठ ११ पर)

काश्मीर हाथ से जा रहा है

—डा० कैलाश

गजरौला से ईसाई स्कूल की दो ननो के साथ कथित बलात्कार को लेकर भारत भर के ईसाई समाज ने रोष एव आक्रोश प्रकट किया। इस घटना को ऐसा रूप दे दिया गया मानो ईसाई समाज पर भारत मे अत्याचार हो रहा है। इस आन्दोलन के परिणामस्वरूप उत्तरप्रदेश के मुख्यमन्त्री तथा केन्द्र से श्री जार्ज फर्नांडीज वहा पहुचे। सरकार ने अल्प सख्यको के हितो की रक्षा का वचन दिया तथा इस ईसाई सस्था को ३ लाख रुपये का अनुदान भी दिया।

किन्तु कश्मीर मे अनेक स्थानो पर पाकिस्तानी नारे लगाने वाले एक विशिष्ट समुदाय द्वारा वहा के हिन्दू नर नारियो पर जो भीषण अत्याचार किये जा रहे हैं उनके विरुद्ध न सरकार ही बोलती है और न ही भारत भर के हिन्दू समाज ने सम्पूर्ण भारत मे कोई आन्दोलन ही किया। केन्द्र सरकार तो यह कह कर लोगो को धोखा दे रही है कि काश्मीर की घटनायें साम्प्रदायिकता से प्रेरित नही है अर्थात मजहबी जनून के कारण कश्मीरी मुसलमान विद्रोह नही कर रहे। मुफ्ती साहब ने कई बार वक्तव्य दिया कि कश्मीर में हिन्दू मुसलमान का कोई झगडा नही किन्तु वास्तविकता तो बिल्कुल इसके विपरीत है। जैसे—

२६ अप्रैल को ग्राम कडी खास तह० हल्दवाडा के महत बजनाथ गोस्वामी का मुख सीकर वृक्ष पर उल्टा कर फासी दे दी गई। इस ग्राम मे फिर तीन हिन्दुओ को मार डाला किन्तु शिकायत करने पर भी पुलिस ने कुछ नही किया बल्कि वहा बसे सभी हिन्दुओ को ग्राम छोड कर चले जाने को ही कहा। भरीपुरा क्षेत्र के प० प्रेमनाथ प्रेमी के सम्मुख ही उनके परिवार की महिला के साथ सामूहिक बलात्कार किया गया फिर इस महिला को आरे से चीर डाला। इस क्षेत्र की अनेक महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार कर के उनके स्तन काटने, आंखे निकालने और गर्म लोहे से शरीर के अगो को जलाने हाथ पैर काट देने की घटनाये हुयी हैं।

तीस अप्रैल को विख्यात लेखक और कवि प० सर्वानन्द कौल तथा उनके पुत्र की आखे निकाल ली गई फिर जख्मो पर मिर्चे डाली गई, उनके मस्तक को जहां तिलक लगता था एक गर्म लोहे के सांचे से बीधा गया।

आस्ट्रेलिया मे प्राध्यापक, श्री बी० एल० गजू कश्मीर आये तो उन्हे अनेक यातनाए देकर पानी मे डुबो दिया। उनकी पत्नी जो अध्यापिका है से कई दिनो तक सामूहिक बलात्कार कर के स्तन काट डाले उनके शरीर पर जलती सिगरेटे लगाकर तडफाया गया। फिर उन्हे पानी मे डुबो दिया। कई लोगो के कान जिह्वा बाहु और टागे काटी गई हैं। ऐसी सैकडो घटनायें हो रही हैं। फिर भी सम्पूर्ण भारत का हिन्दू समाज रोष और आक्रोश प्रकट नही कर रहा है। यदि हिन्दू समाज आ हिन्दुओ पर हो रहे इन पाशविक अत्याचारो के विरुद्ध सम्पूर्ण भारत मे आक्रोश प्रकट करने लगे तो भारत मे स्थान स्थान पर चल रहा आतकवाद और देशद्रोही षडयन्त्र सब बन्द हो जावें। देश मे शान्ति तथा व्यवस्था हो जावे और हिन्दुओ की मजहबी जनून की क्रूरता से रक्षा भी हो जावे।

स्वामी श्रद्धानन्द वीर महान

भारत मा के तप पूत, स्वामी श्रद्धानन्द वीर महान।
भूलेगा ना जगत आपका, देशभक्त नेता बलिदान ॥

वैदिक मर्यादा के पालक, धर्म नीतिक शुभ सचालक।
देशभक्त, बलवान बनाए, नाथ आपने लाखो बालक ॥
गुरुकुलो की प्रथा डाली, किया अचम्भित सकल जहान।
भूलेगा ना जगत आपका, देशभक्त, नेता बलिदान ॥१॥

तुम जो कहते थे करते थे, दुखियो के सकट हरते थे।
पक्के ईश्वर विश्वासी थे नहीं पापियो से डरते थे ॥
सुनकर नाम आपका थर्राते थे लीडर बेईमान।
भूलेगा ना जगत आपका, देशभक्त नेता बलिदान ॥२॥

ऋषिवर दयानन्द के चेले, देश, धर्म हित सकट झेले।
अत्याचारी अग्रेजो के, शोणित से थे होली खेले ॥
स्वतन्त्रता का नाद बजाया, जगा दिया था हिन्दुस्तान।
भूलेगा ना जगत आपका, देशभक्त नेता बलिदान ॥३॥

स्वामी तुम थे सच्चे नेता, अद्भुत त्यागी, वीर, विजेता।
परम तपस्वी, महा साहसी, नाम विश्व श्रद्धा से लेता ॥
मानवता के आप पुज थे, ऊची की भारत की शान।
भूलेगा ना जगत आपका, देशभक्त, नेता बलिदान ॥४॥

जाति-पाति का रोग मिटाया, छुआ-छूत कलक बताया।
मनुष्यमात्र की जाति एक है, जग का वैदिक पथ दर्शाया।
'कर्म प्रधान जगत मे' तुमने दिये हजारो थे व्याख्यान।
भूलेगा ना जगत आपका, देशभक्त नेता बलिदान ॥५॥

शुद्धि की तलवार चलाई, मिटती हिन्दू कौम बचाई।
देख वीरता विकट तुम्हारी, दुश्मन की सेना घबराई ॥
धर्म की रक्षा में हे स्वामी, हसकर हुए आप कुर्बान।
भूलेगा ना जगत आपका, देशभक्त नेता बलिदान ॥६॥

नेता अब यदि धर्म जानले, अगर आपकी बात मानले।
जिए देश हित, मरे देश हित, हृदय मे यदि ठान ठानलें ॥
ऋषियो के प्यारे भारत का, हो जाएगा फिर कल्याण।
भूलेगा ना जगत आपका, देशभक्त, नेता बलिदान ॥७॥

—प० नन्दलाल 'निर्भय'' सिद्धान्त शास्त्री भजनोपदेशक
ग्राम पोस्ट बहीन जिला फरीदाबाद (हरियाणा)

दृढ़ राष्ट्रीय एकता के सूत्रधार अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज (२)

आचार्य धर्म विज्ञान मुनि

हिन्दू-मुसलमान-ईसाइयों को आपस मे मिला, एकता स्थापित करने की टीस बहुत गहरी बैठ चुकी थी। उनके जीवन के आचरण मे यही टीस थी, जिसे मुसलमानो ने अपने हृदय में गहराई और सच्चाई से अनुभव किया। और ४ अप्रैल १९१९ के शुभ दिन स्वामी जी को मुसलमान अपनी विश्व विख्यात जामा मस्जिद मे बुलाकर ले गए। ऐसा नहीं था कि मुसलमान जामा मस्जिद मे इकट्ठे थे, स्वामी जी उधर से गुजर रहे थे, तो उन्हें भी बुला लिया। मस्जिद मे उपस्थित हजारो मुसलमानो ने एक स्वर से माग की कि स्वामी श्रद्धानन्द को बुलाया जाय। उस माग के अनुसार, लोग तागा लेकर नये बाजार गए और स्वामी जी को अपने तागे पर लेकर आए। मुसलमान शासक अग्रेजो से परेशान, उद्विग्न और चिन्तित थे। उन्हे सहारे की, मार्गदर्शन की आवश्यकता थी। डा० अन्सारी और हकीम अजमल खां, मुहम्मद अली और शौकत अली उन दिनो मुसलमानो के अग्रणी प्रसिद्ध, सर्वमान्य नेता थे। बडे मौलवी और दूसरे लोग भी थे। पर मुसलमान उन्हें छोड स्वामी जी दिशा-निर्देश चाहते थे। उन्हे सादर एव ससम्मान बुला लाए। जामा मस्जिद की वेदी पर मुसलमान को पथ-प्रदर्शन करने वाला गैर-मुसलमान स्वामी श्रद्धानन्द महाराज पहले और अन्तिम व्यक्ति हैं। इतिहास की वह अभूतपूर्व और भविष्य शून्य एकमात्र अनुपमेय घटना है। स्वामी जी महाराज ने वेदी पर से अपना व्याख्यान ऋग्वेद (८-९७-११) के निम्न मन्त्र से प्रारम्भ किया.

"त्व हि न. पिता वसो, त्व माता शतक्रतो बभूविथ।
अधा ते सुम्नमीमहे।"

'हम सब एक ही पिता-परमात्मा की सन्तान हैं। हजारो प्रकार से सुख देते हुए पालना करने वाली हमारी मा भी वही है। आओ, हम उसकी गोद मे, आपस मे मिलकर, भरपूर सुखो को पावें।'

सारे व्याख्यान में बार २ कहा गया, इस मन्त्र के आधार से अनुमान लगाया जा सकता है। मुसलमान इस व्याख्यान से इतने प्रभावित हुए कि इससे तीसरे दिन ६-६-१९१९ को, मुसलमानों ने उन्हे मस्जिद फतहपुरी, दिल्ली में भी बडे आग्रह से आमन्त्रित किया।

एक मुसलमान ने पूछा—'वेद बड़े हैं या कुरान ?"

स्वामी जी ने अत्यन्त शान्त भाव से उत्तर दिया—'मैं उस पुस्तक को बडा मानता हू जिसमे जन्म से नही, कर्म से प्रधानता बनाई हो।"

इसी प्रसग मे, हिन्दू मुस्लिम एकता सम्बन्ध मे उनके सुपुत्र श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति ने अपने सस्मरण इस प्रकार लिखे है—

"जिस समय इधर अब्दुल रशीद अपनी मूर्खता भरी चेष्टा से इस्लाम के मुखड़े पर कलक का टीका लगा रहा था, उधर गोहाटी मे आदिवासी भारतीय राष्ट्रीय महासभा के अधिवेशन में अपना सन्देश, तार द्वारा, निम्न प्रकार भेजा

'On Hindu-Muslim unity depends future well being of India' "भारत का भावी सुख हिन्दू-मुस्लिम एकता पर आश्रित है।' स्वामी जी का विश्वास था कि तब तक एकता नही रह सकती, जब तक निर्बल हिन्दू, सबल मुसलमानो के मित्र नही बन सकेंगे। इस कारण वे हिन्दुओं को मुसलमानो के समान मित्र बनाने के पक्षपाती थे। उनके हिन्दू संगठन का अभिप्राय मुस्लिम विरोधी नही था, अपितु जाति के आन्तरिक दोषों को दूर करना था।"

[illegible] स्वभाव और कर्म वाले व्यक्तियों में होती है। [illegible] [illegible] [illegible]

(३) दलितोद्धार—सन १८८६ ई० मे स्वामी श्रद्धानन्द (उस समय श्री मुशीराम) ने छुआछूत का विरोध प्रारम्भ कर दिया था। (यह राजनैतिक दृष्टि से नही किया था। स्वामीजी१९१९मे राजनीति मे आए थे।) उस समय 'अछूत' कहलाने वालो का नाम स्वामी जी ने 'दलित रखा, जिसे १९२२ मे महात्मा गांधी ने 'हरिजन' नाम दिया। 'जात-पात-तोडक' मण्डल की स्थापना बहुत पहिले ही की थी। अपनी लडकी अमृतकला का विवाह, अपने से भिन्न जाति वाले डा० सुखदेव से कराया।

कोकीनाडा काग्रेस के अध्यक्ष पद से दिए गए भाषण मे मोहम्मद अली ने अछूतो को लावारिस कहा। साढे छ करोड अछूतो को ईसाइयो के साथ आधा-आधा बाटने की योजनाए बनाई। तब स्वामी जी ने काग्रेस छोड दी। साधु समाज और हिन्दू महासभा में प्रवेश किया। वहा भी उनकी मान्यताओ से मेल न खाया तो आगरा मे हिन्दू शुद्धि सभा की स्थापना की। साथ ही दलितोद्धार का कार्य भी तेज कर दिया। काग्रेस ने मोपला काण्ड की निन्दा नहीं की तो स्वामी जी चमके। फिर मलकानो की शुद्धि से मुसलमान चमके। दलितो को समाज में सम्मान मिले। अत उनका यज्ञोपवीत सस्कार प्रारम्भ कर दिया। उनकी आर्थिक स्थिति सुधारने के भी अनेको प्रयत्न किये। १९१७ से १९१९ तक, काग्रेस में प्रवेश से पूर्व, उन्होने दलितोद्धार का कार्य प्रबल वेग एव सम्पूर्ण शक्ति से किया। गुरुकुल कागडी में बिना किसी भेदभाव के होनहार छात्रो को प्रवेश दिया।

हिन्दुओ का यही कमजोर वर्ग, दबाव या लालच मे मुसलमान बनता। हिन्दुओ द्वारा सर्वथा उपेक्षित था। इतनी दयनीय दशा थी कि मात्र छू लेने से व्यक्ति धर्मभ्रष्ट मान लिया जाता और हिन्दू समाज उसे किसी शर्त पर स्वीकार न करता। स्वामी के जीवन तीन मुख्य कार्यों मे से एक यह भी था। सन् १८९४ मे प० लेखराम जी इसी कार्य मे बलिदान हुए। सन् १८९७ से 'सद्धर्म प्रचारक' पत्र मे स्वामी जी ने इसी विषय के लिए चार पृष्ठ बढ़ा दिए।

दलितोद्धार और शुद्धि आन्दोलन एक दूसरे के पूरक हैं। प्रथम कार्यक्रम कमजोर हिन्दुओ को धर्म परिवर्तन से रोकता है। तो दूसरा धर्मान्तरित व्यक्तियो को पुन हिन्दू सम्प्रदाय मे वापिस लाता है।

नारी शिक्षा—मनुष्य का निर्माण मा करती है। अशिक्षित माता बच्चे का उचित निर्माण नही कर सकती। समग्र जाति को दृढ निश्चयी, अपना तनु बनाने से पहले नारी मात्र का शिक्षित होना आवश्यक है। उस काल, कन्याओ को शिक्षित करना सामाजिक अपराध था। दृढ निश्चयी मुशीराम ने श्री देवराज द्वारा जालन्धर में कन्या पाठशाला खुलवा दी। मुशीराम जाति से बहिष्कृत किए गय। उन्होने इस कष्ट की चिन्ता ही नही की। परिणाम यह हुआ कि प्रत्येक आर्य समाज मे कन्या पाठशाए खुल गई। आज यह कल्पना करना विचित्र लगता है कि लडकियो को न पढाया जाय।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली—जाति के उत्थान में बालको की शिक्षा का महत्वपूण योगदान होता है स्वामी जी इसे भली प्रकार अनुभव करते थे। बचपन मे उनकी शिक्षा की व्यवस्था ठीक नही हो पाई थी। मैकाले की शिक्षा हिन्दू समाज मे हीन भावना ही पैदा कर रही थी।

गुरुकुल खोलने के लिए मुशीराम जी (श्रद्धानन्द जी का पूर्व नाम) के मन की अवस्था को समझने के लिए निम्न घटना पर ध्यान देना आवश्यक है। डी० ए० वी० स्कूल खोलने के लिए धन सग्रह श्री मुशीराम और प० गुरुदत्त ने किया था। उन्होने निम्न उद्देश्य बताये। वेद एव अन्य शास्त्रों का अध्ययन एव अनुसधान होगा। उपदेशक तैयार होंगे। सस्कृत शिक्षा का ऐसा पाठ्यक्रम होगा कि छात्र वेदों के विद्वान होंगे। परन्तु जब विद्यालय [illegible] [illegible]

(शेष पृष्ठ ९ पर)

सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत : स्थिर निधियां

(गतांक से आगे)

महाशय लेखराम सत्यार्थ प्रकाश प्रचार स्थिर निधि

यह निधि महाशय लेखराम, मन्दोला, रिवाड़ी जिला महेन्द्रगढ़ द्वारा दो हजार रुपये की स्थापित की गई। इसका ब्याज सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन व प्रचार पर व्यय किया जायेगा। स्वीकृत अन्तरंग सभा १३ जून ८७ द्वारा।

श्रीमती कमला देवी स्थिर निधि

यह निधि श्री खूबीराम गुप्ता २१ स्टेट कालोनी जी टी करनाल रोड, दिल्ली द्वारा पांच हजार रुपये की स्थापित की गई। इसका ब्याज संस्कृत के विद्यार्थियो की छात्रवृत्ति या धर्म रक्षा अभियान या किसी ट्रस्ट पर व्यय किया जाना है। जून ८७ की अन्तरंग द्वारा स्वीकृत।

वैद्य प्रहलाददत्त (दिल्ली) सहायता स्थिर निधि

यह स्थिर निधि वैद्य इन्द्रदेव ३३।४१४६ डिप्टीगंज, सदर बाजार दिल्ली द्वारा १० हजार रुपये की अपने पिता जी के नाम से स्थापित की गई है। इस निधि का ब्याज गुरुकुल नरेला (दिल्ली) की छात्राओ के अध्ययन पर व्यय करना है। अन्तरंग सभा १३ जून १९८७ द्वारा स्वीकृत।

श्रीमती जमुना देवी स्मृति स्थिर निधि

यह स्थिर निधि श्री रामप्रसाद विलासीप्रसाद बोरले आर्य, जय स्तम्भ के पास मु० पो० तालुका कारंजा जिला अकोला (महाराष्ट्र) द्वारा अपनी स्व० माता जी की स्मृति में स्थापित की गई। निधि ८ हजार रुपये की है। इसका ब्याज महिला उत्थान के साहित्य प्रकाशन मे व्यय किया जाना है। मुद्रित साहित्य की एक प्रति निधि कर्ता को भेजनी है। स्वीकृति अन्तरंग सभा २० सितम्बर १९८९ द्वारा।

स्व० बलीरचन्द डावर तथा स्व० लक्ष्मीदेवी स्मृति स्थिर निधि

यह निधि श्री मुलकराज डावर डी० २७ अमर कालोनी लाजपत नगर, नई दिल्ली द्वारा अपने स्व० माता-पिता की पुण्य स्मृति मे ११ हजार रुपये की स्थापित की गई है। ९ हजार और देकर बीस हजार किया जायेगा। इस निधि के ब्याज भूकम्प, बाढ पीडित तथा सूखा राहत आदि सहायता कार्यों मे व्यय किया जायेगा। अन्तरंग सभा २० सितम्बर १९८७ द्वारा स्वीकृत।

स्व० चुन्नीलाल मसीन एवं श्रीमती सुहागवती स्मृति स्थिर निधि

यह निधि श्री रामवीर मसीन द्वारा अपने स्व० माता-पिता की पुण्य स्मृति मे पांच हजार रुपये की स्थापित की गई है। इसका ब्याज दयानन्द वैदिक सन्यास आश्रम, गाजियाबाद मे दैनिक यज्ञ सामग्री के लिए उपयोग मे लाया जायेगा। आश्रम न रहने की अवस्था मे सभा आर्य अनाथालय के बच्चो के वस्त्र भोजन आदि पर व्यय कर सकेगी। अन्तरंग सभा २४ जनवरी १९८८ से स्वीकृत इस वर्ष व्यय १३३)३३ हुआ।

श्रीमती विद्यावती मदनलाल खोटड़ा स्थिर निधि

श्री मदनलाल (आश्रम वासी) ने ५ हजार रुपये की एक निधि अपने व अपनी स्व० धर्मपत्नी श्रीमती विद्यावती के नाम पर, सन्यास आश्रम गाजियाबाद में स्थापित की हुई थी। श्री रामवीर मसीन वाली की प्रार्थना पर श्री जनार्दन भिक्षु ने यह राशि इस सभा में जमाकर उक्त निधि स्थापित कर दी है। इस निधि का ब्याज आश्रम को दिया जाता रहेगा। इस वर्ष व्यय ११११)११ हुआ।

पं० रघुनाथ प्रसाद पाठक स्मृति स्थिर निधि

स्व० प० रघुनाथ प्रसाद जी पाठक जो कि सार्वदेशिक सभा के जीवित दल थे और ६० वर्ष तक सार्वदेशिक सभा मे कार्यरत रहे, के निधन पर उनकी स्मृति में स्थिर निधि ८३८४) रुपये की स्वीकृत की गई। अन्तरंग सभा ११ अगस्त १९८१ द्वारा स्वीकृत।

श्री जयन्ती भाई राजदेव स्थिर निधि

यह निधि श्री जयन्ती भाई राजदेव ४ गुजरात सोसायटी वेद मन्दिर कांकरिया मार्ग अहमदाबाद द्वारा २१०००) से स्थापित की गई है। इसका ब्याज अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ द्वारा वनवासी एवं गिरीजन बालक बालिकाओं के गुरुकुल मे पढ़ाई पर व्यय किया जावेगा। शेष राशि शुद्धि कार्य पर व्यय करने का प्रावधान है। यह निधि १७ अप्रैल १९८८ की अन्तरंग स्वीकृत हुई।

स्व० आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री स्मृति स्थिर निधि

स्व० आचार्य जी की स्मृति में उनकी पत्नी श्रीमती उर्मिला शास्त्री ने पांच हजार रुपये की स्थिर निधि सभा मे स्थापित की है। इसका ब्याज वेद सिद्धान्तो की रक्षा के कार्य मे व्यय किया जावेगा ताकि स्व० आचार्य जी द्वारा जीवन भर किये गये वैदिक सिद्धान्तो की रक्षा तथा प्रचार प्रसार के कार्यों को प्रोत्साहन मिलता रहे। अन्तरंग सभा १७-४-८८ द्वारा स्वीकृत।

स्व० श्रीमती कमलेश धर्मपत्नी श्री ओंकारनाथ जालवाले स्मृति स्थिर निधि

श्री ओंकारनाथ जालवाले द्वारा अपनी धर्मपत्नी स्व० श्रीमती कमलेश की स्मृति मे पांच हजार की स्थिर निधि स्थापित की गई है। इसका ब्याज वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार अथवा सत्यार्थ प्रकाश के मन्तव्यों के संस्करण प्रकाशित करने मे व्यय किया जायेगा। यदि इस निधि के ब्याज से कोई ट्रैक्ट प्रकाशित किया जावे, तो उस पर निधि का उल्लेख भी किया जावे। अन्तरंग १७-४-८८ द्वारा स्वीकृत।

स्व० श्री बाबूराम सूद स्मृति स्थिर निधि

डा० बाबूराम सूद डी०-२१ दयानन्द नगर गाजियाबाद द्वारा स्व० बाबूराम सूद की स्मृति मे पांच हजार रुपये की निधि सभा में स्थापित की गई। उसके वार्षिक ब्याज का आधा भाग सम्भवतया दयानन्द वैदिक सन्यास आश्रम गाजियाबाद तथा चौथाई आर्य समाज दयानन्द नगर गाजियाबाद एवं चौथाई गुरुकुल महाविद्यालय झज्जर (रोहतक) को दिया जायेगा। अन्तरंग २७ जून १९८८ द्वारा स्वीकृत। (क्रमश)



आचार्य उदयवीर शास्त्री : जीवन परिचय (३)

डा० जयचन्द्र राय

नेशनल कालिज, लाहौर में प्रसिद्ध क्रान्तिकारी भगवतीचरण वोहरा छात्र थे, भगतसिंह भी वहीं पढ़ते थे। यशपाल भी इन्हीं के साथ थे। भगतसिंह ने वैकल्पिक विषयों में संस्कृत भी चुना था, अतः वे शास्त्रीजी की संस्कृत कक्षा के नियमित छात्र बने। भगवती चरण के साथ तो शास्त्री के सम्बन्ध बिल्कुल परिवार जैसे थे— एक दूसरे के सुख दुःख के सहभागी और राष्ट्रीय सरोकारों के प्रत्यक्ष एवं परोक्ष सहकर्मी। भगतसिंह ने भी निश्छल विश्वास के साथ अपने कक्षागुरु को सदैव समुचित सम्मान दिया और आवश्यकता पड़ने पर उनके आश्रय को भयमुक्त हो स्वीकार किया। यह सर्वविदित है कि प्रसिद्ध काकोरीकाण्ड के पूर्व लाहौर में पुलिस सरगर्मी अधिक बढ़ जाने के कारण भगतसिंह कानपुर चले आये थे और अमर शहीद श्री गणेश शंकर विद्यार्थी के 'प्रताप' में कार्य करने लगे थे। यद्यपि वे लाहौर से परिचय-पत्र साथ लाये थे तथापि एक अपरिचित युवक को किन्हीं गुप्त कार्यों में नियोजित करने के पूर्व यह आवश्यक था कि उसके विषय में सभी ज्ञात सूत्रों से ठीक-ठीक पता लिया जाय। इसी उद्देश्य से एक पत्र श्रद्धेय विद्यार्थी जी ने शास्त्री जी को भी लिखा था। उसमें यह लिखते हुए कि लाहौर से एक ऐसे युवक यहां आये हैं और आपका भी सदर्भ प्रस्तुत कर रहे हैं, यह पूछा गया था कि आपकी सम्मति में इन्हें किस योग्य समझा जाय? शास्त्री जी ने स्पष्ट ही इंगित कर दिया था कि उक्त युवक को कोई भी कार्य विश्वासपूर्वक सौंपा जा सकता है। वे कर्मठ और साहसी हैं।

नेशनल कालिज के बन्द हो जाने के बाद शास्त्री जी लाहौर के डी० ए० वी० महाविद्यालय में पढ़ाने लगे थे। साण्डर्स हत्याकाण्ड के बाद पुलिस की निगाह से बचकर जब क्रान्तिकारी युवक एक-एक कर लाहौर से बाहर चले गये, तब लाहौर में उन लोगों की धरपकड़ होने लगी जो ब्रिटिश साम्राज्य की अपार शक्ति को चुनौती देने वाले क्रान्तिकारियों को परोक्ष रूप से सहयोग और सरक्षण दिया करते थे। लाहौर में अधिक दिन तक ठहरना और नौकरी करना शास्त्रीजी के लिए भी निरापद नहीं रहा। उन्होंने कालिज से त्याग-पत्र दे दिया। नाहन में शास्त्री जी के ससुराल वालों की जमींदारी थी। ठाकुर प्रतापसिंह वहां रहा भी करते थे। उसी समय की बात है जब उदयवीर जी भी नाहन गये हुए थे। भगतसिंह को यह बात मालूम थी। पुलिस की निगाह से बचने के लिए वे सीधे नाहन पहुंचे और शास्त्री जी से कुछ दिन ठहरने के लिए सुरक्षित स्थान मांगा। शास्त्री जी स्वयं पराये घर में थे, जिसके सदस्य सरकारी सेवा में थे। बात को गोपनीयता भी बनाये रखनी थी। अत वे अपने शिष्य के साथ कालसी के निकट खोटरीमाझरी गांव गये और वहां अपने विश्वसनीय परिचित श्यामसिंह के यहां शरण दिलाई। भगतसिंह लगभग दो सप्ताह वहां रुके और यह कहकर चलते बने कि कोरे एकान्तवास से क्रान्तिकारी कार्यक्रम में गति-रोध आ जाएगा। आज ये प्रकरण बड़े सहज और सामान्य लगते हैं किन्तु क्रान्तिकारियों के गहरे सानिध्य एवं उनके गोपनीय रहस्यों की गोपनीयता को यथावत् बरकरार रखने में जिस जोखिम-भरी भूमिका का निर्वाह उन दिनों करना पड़ता था उससे यत्किंचित् परिचित व्यक्ति इन घटनाओं के अन्तर्निहित महत्त्व को समझ सकते हैं। पुलिस को जरा-सा सुराग मिल जाने का मतलब था निर्मम और [illegible] का कठोर भोग और फिर जेल या फांसी! [illegible] ऐसे [illegible] तब थे, जो यह कर सके! और [illegible] ऐसे शिष्य मिले [illegible] भगतसिंह ने [illegible] की कोठरी से एक पुस्तक अपने गुरु के पास किसी माध्यम से पहुंचाई थी जिस पर अपने हस्ताक्षरों-सहित समर्पण लिखा था। शिष्य की दी हुई वह अनन्य साधारण अमूल्य निधि शास्त्री जी के पास आज भी सुरक्षित है।

८ अप्रैल सन् १९२९ ई० को असेम्बली-बमकाण्ड हुआ और बटुकेश्वर दत्त तथा भगतसिंह गिरफ्तार हुए। शास्त्री जी उस समय किसी काम से गांव (बनैल) गये थे और वापस दिल्ली की ओर आ रहे थे। उन्हें ऐक्शन की आशंका तो थी, किन्तु उसके स्वरूप और समय का ज्ञान नहीं था। वे मार्ग में दादरी कस्बे के निकट एक गांव धूम में ठहरे, वहां उक्त काण्ड के घटित हो जाने की चर्चा चली। वहां और लोगों के बीच स्पष्ट रूप से शास्त्री जी ने यही कहा कि यह पागल और दिग्भ्रमित नवयुवकों का उत्तर-दायित्वहीन कार्य है। भला ऐसे बम-विस्फोटों से डरकर अंग्रेज देश छोड़कर चले जायेंगे? किन्तु उनके मन में शीघ्रातिशीघ्र दिल्ली पहुंचकर भगतसिंह के विषय में जानकारी प्राप्त करने की प्रबल लालसा उत्पन्न हुई। दिल्ली में उनके एक पूर्व-परिचित मजिस्ट्रेट थे ठाकुर जगदीशसिंह। संयोगवश उन्हीं के निर्देशन या सरक्षण में सरदार भगतसिंह कारागृह में रखा गया था। अतएव शास्त्री जी को पूर्ण विवरण उन्हीं से मिल गया। उन्हें सावधानी बरतनी पड़ी थी। ठाकुर जगदीश सिंह को पता था कि शास्त्री जी भगतसिंह को इतने निकट से जानते हैं। उनका विचार था कि बातचीत के सहज क्रम में वह प्रसंग आ गया था। गोपनीय रहस्यों की ओर से सावधान रहते हुए ही उदयवीर जी ने कहा कि इस प्रकार का बम-विस्फोट कुछ दिग्भ्रमित नवयुवकों के दिमाग का पागलपन है, इससे सिवाय हानि के कोई लाभ नहीं हो सकता। लेकिन ठाकुर जगदीशसिंह मजिस्ट्रेट की अप्रत्याशित प्रतिक्रिया जानकर एक बार शास्त्री जी भी चौंक गए—उन्होंने रोमांचित होकर कहा था कि "शास्त्री जी! आपको नहीं मालूम, वे ऐसे नौजवान हैं कि इनके चरणों को धोकर पीने से भी पुण्य लाभ होगा। यही राष्ट्र-भक्त और पूर्ण मानव हैं। इसलिए देवता हैं।" एक सरकारी उच्चा-धिकारी से ऐसे वचन सुनकर शास्त्री जी भी हर्ष-विह्वल हो उठे।

बम-प्रयोग में अपने प्राणों की आहुति देने वाले साहसी क्रान्ति-कारी भगवतीचरण वोहरा के परिवार से शास्त्री जी के परिवार का विशेष लगाव हो गया था। २८ मई सन् १९३० ई० को रावी तट के निर्जन में उन्होंने वीर गति प्राप्त की थी। इससे पूर्व ही उनकी क्रान्तिकारिणी धर्मपत्नी दुर्गादेवी वोहरा जो 'दुर्गा भाभी' के नाम से क्रान्तिकारी आन्दोलन में प्रसिद्ध रही हैं शास्त्री जी की पत्नी विद्यादेवी के आश्रय में अपने एकमात्र पुत्र शची वोहरा को छोड़कर निश्चिन्त हो जाया करती थी। दुर्गाजी क्रान्तिकार्यों को निर्बाध गति से चलने की स्वतन्त्रता इस व्यवस्था से ही मिली थी। विद्या जी ने ही शैशव में इस बालक का लालन-पालन एक अर्से तक किया था। इसके रोचक संस्मरण हैं किन्तु उन्हें छोड़कर स्वयं 'दुर्गा भाभी' से सम्बन्धित उन प्रकरणों की ओर लौटते हैं जिनमें शास्त्री जी का अप्रत्याशित सरक्षण और अमूल्य सहयोग क्रान्ति-कारिणी महिला के लिए वरदान ही सिद्ध हुआ।

लाहौर से हटने के बाद अध्यापन कार्य छोड़कर शास्त्री जी देहरादून में औषधालय का संचालन करने लगे। उन्हें औषधियों के बदले में दाम लेना रोगियों के प्रति अन्याय लगता था, किन्तु वे जीवन-यापन की दृष्टि से उतना ले लेते थे जिससे काम चल जाय। फरारी की अवस्था में उन्हीं दिनों सम्पूरणसिंह के साथ दुर्गाजी भी देहरादून आईं। कुछ दिनों तक दोनों को एक-दूसरे का पता नहीं लगा। इधर ब्रिटिश गुप्तचर पुलिस दुर्गा जी के पीछे लगी थी। उनके अस्तित्व को सूंघती फिर रही थी। गुप्तचर ने उनके आवास

के निकट ही एक मकान किराये पर ले लिया था और रात-दिन परछाईं की तरह उनके पीछे लगा रहता था, लेकिन कभी मुठभेड़ का साहस नहीं कर पाता था। वह इस प्रतीक्षा में था कि पंजाब पुलिस आ जाय, तब फरार महिला को गिरफ्त में ले लिया जाय। लुका-छिपी के इस प्रसंग में एक दिन शास्त्री जी दीख गये। दुर्गाजी उनके घर में इस ढंग से चली गईं कि उसे पता न लगे, किन्तु वहां अधिक समय तक छिपकर रहना असम्भव हो गया। अतः एक रात शास्त्री जी उन्हें साइकिल पर बिठाकर सम्पूरसिंह के साथ हरिद्वार के लिए निकल पड़े। डोईवाला तक अंधेरे में साइकिल पर आ गये, किन्तु यह सोचकर कि आगे किसी को सन्देह हो सकता है, साइकिल निकटवर्ती गांव में छोड़कर यह यात्री दल पैदल ही ऋषिकेश की ओर चल पड़ा। कुछ दूर चलने पर मालूम हुआ कि दुर्गा जी की चप्पलों ने पांवों को काट डाला है। अतः चप्पलों को हाथ में लेकर चलना शुरू किया। उषा की लाली आकाश पर छिटकने लगी थी, किन्तु ऋषिकेश अब भी कुछ दूर था। ककरीली-पथरीली जमीन पर नंगे पांव चलते-चलते दुर्गा जी के पांवों में छाले पड़ गये। विवश होकर वे पांव पकड़कर बैठ गईं। छाले फूटने भी लगे थे। वहां भी एक उपाय निकल आया। पहाड़ी ढलान पर से छोटे पेड़ की एक डाल तोड़कर एक बहंगी बनाई गई और चादर तथा धोती का आश्रय लेकर शास्त्री जी और सम्पूरनसिंह ने, दुर्गाजी को उस पर बिठाया और कहारों की भांति ढोते हुए चले। किसी के पूछने पर यह कहना सरल था कि कोई रोगिणी तीर्थस्नान के लिए जा रही थी। किसी प्रकार सड़क तक गये। तदन्तर एक तांगे में बैठकर सब लोग हरिद्वार पहुंचे। वहां शास्त्री जी ने एक सुरक्षित स्थान की खोज की और उन्हें ठहराया। स्वयं देहरादून लौट आये।

यहां एक छोटा-सा प्रसंग उल्लेखनीय है। श्री जे०एम० चटर्जी (वहां के एक वकील) शास्त्री जी के हितैषी और निकट परिचित थे। वे गुप्तचर विभाग के लोगों से भी सम्पर्क बनाये हुए थे। उन्होंने शास्त्री जी को एक दिन आगाह किया कि उनकी डाक सेंसर हुआ करती थी उन्हें सावधान रहना चाहिए। लिफाफों पर गौर से दृष्टि डालें तो यह बात छिपी नहीं रहती थी। पर शास्त्री जी को आगाह करने की आवश्यकता नहीं थी। वे अतिशय सजगता से काम ले रहे थे। वे पत्र लिखने के बजाय स्वयं जाकर मिल लेना श्रेयस्कर समझते थे। पर लेखन और प्रकाशन-सम्बन्धी पत्राचार तो निरापद था। शास्त्रचर्चा में क्या कठिनाई हो सकती थी? ऐसे ही किसी पत्राचार में एक पत्र आया कि यदि आप परीक्षा कर देखें तो हम लोग पांडुलिपि आपकी सेवा में भेज दें। गुप्तचर शाखा ने अनुमान लगाया कि 'पांडुलिपि' शब्द सांकेतिक भाषा का है और इसका वास्तविक अर्थ है 'पिस्तोल'। भेजने वाला कोई क्रान्तिकारी युवक का समुदाय है। अतएव जब शास्त्री जी ने यह लिखा कि आप पांडुलिपि भेज दें, मैं उसकी जांच कर लूंगा, तब गुप्तचर विभाग को यह आशा हुई कि अब यह शास्त्री भी हाथ आ गया। वहां पांडुलिपि-रूप पिस्तौल की प्रतीक्षा हो रही थी कि अगली डाक में वांछित पैकेट आ गया! उसे विभाग ने सावधानी से एकान्त में खोला, पर पिस्तोल न मिलकर पुस्तक ही मिली। विभाग अपनी मूर्खता पर पछताया। इस रहस्य का उद्घाटन भी श्री जे०एम० चटर्जी महाशय ने ही किया था।

चिन्तन के पथ पर :

शास्त्राभ्यासी उदयवीर की सारस्वत साधना का शुभारम्भ सन् १९२१ ई० में कौटलीय अर्थशास्त्र की 'जयमंगला' नाम्नी टीका के सम्पादन और प्रकाशन के साथ ही हुआ था। तदनन्तर सन् १९२५ ई० में अर्थशास्त्र का हिन्दी रूपान्तर प्रकाशित हुआ जिसमें मूल ग्रन्थ के स्वरूप और उसके मर्म के उद्घाटन का मौलिक प्रयत्न किया गया था। वाग्भट्टालंकार की संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सन् १९२६ ई० में प्रकाशित हुई। उधर शास्त्री जी नेशनल कालिज लाहौर में अध्यापन भी कर रहे थे। फिर ब्राह्म महाविद्यालय लाहौर में पढ़ाने लगे थे। संयोग की बात कि उसी समय लाहौर में (सन् १९२८ ई०) भारतीय प्राच्य विद्या सभा का महाधिवेशन हुआ था जिसके अध्यक्ष थे महामहोपाध्याय पण्डित हरप्रसाद शास्त्री। शास्त्री जी ने सांख्य-सूत्रों की प्राचीनता पर अपना लेख अनुदित कराकर सम्मेलन में प्रस्तुत किया था। उन्होंने पण्डित हरप्रसाद शास्त्री से मिलकर किसी प्रश्न पर अपने मौलिक किन्तु चौंकानेवाले तर्क पेश किए थे जिसे सुनते ही महामहोपाध्याय जी के मुंह से निकल पड़ा कि 'शास्त्रिन प्रति भयकरमेतत'।

सांख्यदर्शन पर शास्त्री जी का चिन्तन क्रमिक रूप से चलता रहा और वर्षों बाद उनकी प्रसिद्ध कृति—सांख्य दर्शन का इतिहास सन् १९५० ई० में प्रकाशित हुई। उस पर हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने मंगलाप्रसाद पुरस्कार प्रदान किया। इस पुस्तक ने शास्त्री जी को दर्शन के क्षेत्र में अच्छी ख्याति उपलब्ध कराई।

देश-विभाजन के उपरान्त लाहौर छोड़कर जब वे लौटे, तब लगभग दो वर्षों तक जालन्धर में अध्यापन कार्य करते रहे। तत्पश्चात् वहां से अलग हो गये। तदुपरान्त ज्वालापुर, बीकानेर, देहरादून आदि नगरों में अध्यापन-कार्य करते रहे।

सन् १९५८ शास्त्री जी ने गाजियाबाद को ही अपना शोध-पीठ बनाया और श्री विरजानन्द शोध संस्थान से जुड़कर षड्दर्शन के तत्त्वों का सारपूर्ण विवेचन और उनके विकास का सांगोपांग इतिहास तैयार करने का सफल प्रयत्न किया। निरन्तर १४-१५ घण्टे प्रतिदिन स्वाध्याय एवं लेखन-कार्य सम्पन्न कर उन्होंने विभिन्न दर्शनों के 'विद्योदय भाष्य' प्रकाशित किये और हिन्दी भाषा के भंडार को दर्शन-विषय मौलिक साहित्य से श्रीसम्पन्न बनाया।

उनका यह कार्य आज भी अबाधगति से चल रहा होता किन्तु नेत्रों की ज्योति समाप्त हो जाने से इसमें रुकावट उत्पन्न हो गई है। दूसरा कारण है बाधा उत्पन्न होने का, उनकी पत्नी का पक्षाघात से पीड़ित हो मृत्यु को प्राप्त हो जाना। उन्हें अपनी पुत्री के पास अजमेर में शरण लेनी पड़ी है क्योंकि शुश्रूषा-परिचर्या की कोई वैकल्पिक व्यवस्था चल नहीं सकी। निदान शास्त्री जी को श्री विरजानन्द वैदिक शोध-संस्थान का आश्रय-स्थल छोड़ने के लिए विवश होना पड़ा है। हम सबकी भगवान् से यही प्रार्थना है कि विद्या-वयोवृद्ध यह मनीषी अपनी सारस्वत-साधना का सुफल समाज को प्रदान करता रहे और अपनी आर्ष-प्रकृति का आलोक भारतीय अनुसन्धानाओं मे भरता रहे। ●

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द

(पृष्ठ ५ का शेष)

जाति और धर्म पर समर्पित हो—तैयार करने के उद्देश्य से सन् १९०० में, गंगा के किनारे, जिला बिजनौर, उ०प्र० के ग्राम कांगड़ी में गुरुकुल की स्थापना की गई। इससे पूर्व इस योजना के लिए ३० हजार रुपए एकत्रित करने मुंशीराम जी निकले और कुछ ही मासो में ४० हजार रुपए हो गए। यह अपने आप में असम्भव कार्य, सम्भव हो सका। यह उनकी दृढ़ इच्छा शक्ति का परिचायक है। सबसे पहले अपने ही दोनो पुत्रो को प्रविष्ट किया। धीरे-२ अपनी समस्त सम्पत्ति, जालन्धर की कोठी और प्रेस भी गुरुकुल को दे दिया।

यह कार्य मैकाले शिक्षा पद्धति से विपरीत था। मैकाले की शिक्षा पद्धति सस्ते, अग्रेज-भक्त-सेवक तैयार करके भारत पर शासन करने की योजना थी। जन्म से भारतीय, मन, बुद्धि एव आचरण से भारत विरोधी अंग्रेज भक्त बनाने की योजना थी। गुरुकुल शिक्षा पद्धति बालकों को तन्त्र-यत्र बुद्धि से दृढ़ एव स्वाभिमाना बनाने वाली थी। सुविधा और सुशिक्षा द्वारा बालक कपिल, कणाद, व्यास, गौतम, पतजलि और पाणिनी सदृश विद्वान बनने के साथ-साथ अपनी सभ्यता, सस्कृति, साहित्य, कला पर अभिमान कर सिर ऊंचा करेंगे और हीन भावना को दूर कर भारत को स्वतन्त्र यशस्वी बना सकेंगे।

अपने जन्म काल से ही गुरुकुल अग्रेजो का कोपभाजन रहा। निरन्तर जासूसो की गतिविधियो का केन्द्र रहा। यहां तक कि भारत के गवर्नर सर चेम्सफोर्ड तथा इगलैण्ड के भावी प्रधानमन्त्री लार्ड रैम्जे मैकडानाल्ड भी गुरुकुल आए। उनका भरपूर स्वागत हुआ। सारा गुरुकुल दिखाया गया। जब नहीं रहा गया तो पूछ ही बैठे—'सुना है कि गुरुकुल में बम बनते हैं।'

स्वामी जी—'जी, हां।'

रैम्जे मैकडानाल्ड ने आश्चर्य से पूछा—'क्या मैं देख सकता हूं?'

स्वामी जी—'अवश्य।'

थोड़ी ही देर मे कुछ ब्रह्मचारी, नगे सिर, नगे पैर, खद्दर के श्वेत वस्त्र पहिने, चमकते चेहरे और पुष्ट शरीर वाले सामने खड़े थे। लार्ड महोदय और स्वामी जी परस्पर देख मुस्कराये।

भारत का वायसराय समझ गया कि ये वे बम नही जो एक बार धमाका करके निर्वीर्य हो जाते हैं। ये प्रतिदिन न जाने कितने धमाके करेंगे? तब क्या ब्रिटिश सरकार भारत में रह पायेगी?

गुरुकुल शिक्षा पद्धति की निम्न विशेषताएं थी—

(१) गुरु और शिष्य का निरन्तर परस्पर सहवास, जिसमे गुरु, शिष्य की छोटी से छोटी कमजोरी को दूर करता है और शिष्य का सर्वांगीण विकास सम्भव होता है।

(२) हिन्दी, सस्कृत, साहित्य, वेद शास्त्रो एव उपनिषदो का अध्ययन।

(३) भौतिकी, रसायन, आयुर्विज्ञान आदि का हिन्दी माध्यम से शिक्षण।

(४) भारतीय समाज, सस्कृति एव राजनीति सम्बन्धी तथ्यो के इतिहास का पुनर्लेखन।

(५) शिल्प शिक्षण।

(६) देश को स्वतन्त्र और उन्नत कराने वाले कार्य हिन्दुओं में आत्म विश्वास और उत्साह का सचार करते है। उनका उल्लेख निम्न है—

(क) आर्य समाज को राजद्रोही घोषित कर, उन पर किये गये अत्याचारों का अपने-तन, मन, धन तथा समाचार वर्गो द्वारा निवारण—

१. आर्य समाज झासी के उपदेश श्री दौलत राम पर चलाया गया मुकदमा।
२. १९०२ ई० मे पटियाला से आर्य समाज के ८४ सदस्यो का निष्कासन।
३. सन १९१२ में जोधपुर आर्यसमाज का ओम् ध्वज पुलिस ने उतारा।
४. सन् १९१८ में जोधपुर आर्य समाज मन्दिर की दीवार गिरने पर, दूसरों द्वारा किये जाने पर सत्याग्रह।

(ख) हिन्दी भाषा का प्रचार—
१. गुरुकुल मे सन १९०० से हिन्दी को शिक्षा का माध्यम बनाया।
२. सन् १९०७ मे अपने साप्ताहिक "सद्धर्म प्रचारक" की भाषा उर्दू के स्थान पर हिन्दी की।
३. सन १९१९ में अमृतसर कांग्रेस अधिवेशन के अवसर पर स्वागताध्यक्ष का अपना भाषण हिन्दी में पढा।
४. भागलपुर में हिन्दी साहित्य सम्मेलन से अध्यक्षीय भाषण।
५ सन १९२४ मे दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचार-प्रसार का कार्य।

(ग) अन्य कार्य—
१. सन १९१८ में गढ़वाल दुर्भिक्ष मे सहायता कार्य, यह ब्रिटिश सरकार की इच्छा के विपरीत था।
२. १९२२ में मोपला काण्ड पर चिन्ता एव सहायता।
३. सन १९२२ मे 'गुरु का बाग' सिखो के आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने पर १६ मास का कारावास सहा।
४. सन १९२२ में मलकानो की सामूहिक शुद्धि।
५. सन् १९२४ मे मद्रास प्रान्त में दलितोद्धार तथा शुद्धि आन्दोलन का प्रचार किया।
६ समाचार पत्रो—उर्दू में तेज, हिन्दी में विजय और अर्जुन तथा अग्रेजी मे लिबरेटर-का प्रकाशन कर अपने उद्देश्यों का प्रचार-प्रसार।

ये समस्त उपरिलिखित कार्य हिन्दुओ को संगठित करने, भारत को स्वतन्त्र कराने और अग्रेजी राज्य को ध्वस्त करने के रूप में महत्वपूर्ण थे। अनायास अग्रेजो को नाराज करने वाले थे। अग्रेज बड़ा समझदार है। वह अपने ऊपर जिम्मेदारी नही लेता। दूसरो के द्वारा कराकर उन्हे फसाता है, स्वय बच जाता है और प्रशसा भी पा लेता है।

अब जरा अब्दुल रशीद की ओर पुन: ध्यान दिया जाय। उसकी हरकतो से ऐसा प्रतीत नहीं होता कि उसके हृदय में प्रतिशोध की आग जल रही थी, अपने नृशस कार्य की सफलता पर गर्व था। प्रतिशोधी व्यक्ति वीरता के साथ आता है, वीरता से कार्य करता है, अभियान पूर्वक लौटता है, अन्तिम क्षण तक प्रसन्न रहता है। उसकी आत्मा को सन्तोष होता है, चाहे कोई कुछ भी कहे। धर्म और देश पर बलिदान होने वाले ऐसे ही होते हैं। फांसी के तख्ते पर भी, पुनर्जन्म लेकर पुन: वैसा ही कार्य करने की शपथ लेते हैं।

अब्दुल रशीद ने ऐसी कोई हरकत नहीं की। जब वह आया तो घबड़ाया हुआ था। पौष मास की सर्दी में इतनी अधिक उसे प्यास लगी थी कि एक लोटा भर पानी पी गया। गोली मार कर भाग न सका, अपने को छुड़ा न सका। आत्मग्लानि से तड़पता रहा। घटना स्थल पर डा० अंसारी आए। उन्हे देख उसने सिर झुका लिया। न उसके बयानो मे जोश या सन्तोष था। वह फासी के फदे पर जाते हुए गमगीन था। वह हिन्दू और मुसलमानो के समान रूप से हितचिन्तक का हत्यारा था। उनकी एकता का हत्यारा था।

क्या यह सम्भव नही कि वह लालच से अथवा दबाव मे यह कुकर्म करने के लिए मजबूर किया गया। यह अदृश्य दबाव किसका था? उसे अपने कर्म का पछतावा क्यो था? हिन्दू-मुस्लिम एकता, भारतीयो का उत्थान, उत्तम शिक्षा किसके लिए हानिकारक थी? हमें शिक्षा और विद्या एव सभ्यता का पाठ पढाने वाले कौन अपने लिए प्राणघातक समझने लगे थे? यह अपराजेय शक्ति, अनुपम बुद्धि चातुर्य, विलक्षण कूटनीति वाला सिवाय अंग्रेज के और कौन हो सकता है? असली हत्यारा इतना समझदार है कि आज तक लगभग ६० वर्षो तक किसी को उस पर शक नही हुआ।

अत: यह सत्य प्रतीत नही होता कि धार्मिक भावना के वशीभूत होकर, विवेक खोकर एक व्यक्ति ने प्रतिशोध लिया है। यह तो पूर्व योजनाबद्ध कार्य है। यह मानने में अतिश्योक्ति नही कि स्वामी श्रद्धानन्द महाराज कूटनीति के शिकार हुए है। भारत की एकता, अखण्डता और स्वतन्त्रता पर बलिदान हुए। उनके बलिदान ने भारत के नवयुवकों—भगतसिंह, अशफाकउल्लाह खां, रोशनसिंह, चन्द्रशेखर आजाद को आत्मोत्सर्ग के लिए प्रेरित किया। ★

कश्मीर विस्थापितों की सहायता

दिल्ली मे कश्मीर के अनेक भाई-बहनो को आतंकवादियो के अत्याचारा के कारण अपना घर-बार छोड़कर आना पड़ा है। दिल्ली की आर्य समाजो की ओर से उन्हे समय समय पर बिस्तर, रजाई कम्बल तथा खाद्य वस्तुओ की सहायता दी गई है।

सोमवार १० दिसम्बर १९९० को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती मगोलपुरी और सुलतानपुरी के राहत शिविरो का निरीक्षण करने गए। श्री स्वामी जी महाराज के साथ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल भी गए। वहा पर आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के वरिष्ठ उपप्रधान श्री हरबश लाल शर्मा के सौजन्य से श्री स्वामी आनन्द-बोध सरस्वती को १२५ कम्बल वितरित किए गए। श्री स्वामी जी ने कहा कि काश्मीर के भाई-बहनों की समस्या से हम सभी का हृदय द्रवित है। हमने सरकार से भी निरन्तर आग्रह पूर्वक अनुरोध किया है कि इस समस्या का शीघ्र समाधान किया जाएगा।

—विमलकान्त शर्मा

आर्य कन्या खेल कद प्रतियोगिता

सिकन्दरा राऊ (अलीगढ) २९.११.९० । आज आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के मुख्य निरीक्षक श्री ध्रुवपालसिंह जी अटल के सौजन्य से स्थानीय आर्य कन्या कालेज मे विभिन्न प्रकार की दौडो कूदो फैको बेडमिन्टन, खो-खो तथा कबड्डी आदि खेलो की प्रतियोगित ए कराई गई। प्रतियोगिता का उद्घाटन कालेज क अध्यक्ष श्री रमेशच द्र (दरगन) सम्पादन अध्यापिका श्रीमती लक्ष्मीदेवीजी, पुरस्कार वितरण सब डिवीजनल मजिस्ट्रेट महोदय तथा समापन श्री अटल जी ने किया।

—श्रीमती रमा राठी प्रधानाचार्य

डा० राजेन्द्र एरन विदेश रवाना

मध्यभारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान व सार्वदेशिक सभा के प्रतिनिधि श्री जगदीशप्रसाद एरन के अनुज श्री हरिलाल एरन के सुपुत्र श्री डा० राजेन्द्र कुमार एरन (एम०बी०बी०एस०एम० एस०) उच्च शिक्षा ग्रहण करने हेतु विदेश को रवाना हो गये हैं।

अनेक सामाजिक, धार्मिक व समाज सेवी सस्थाओ तथा प्रतिष्ठित सस्थाओ ने शुभ कामना व्यक्त करते हुए आपके उज्जवल भविष्य की मगल कामना की।

—भगवती प्रसाद कालानी
प्रधान आर्यसमाज नीमच

स्वास्थ्यायन

पत्र— यह मन मुझे बार-बार विषय भोगो की ओर ले जाता है। स्वप्नदोष कब्ज हृदय धडकन और शीघ्रपतन रोग मेरे शरीर मे लगे हुए हैं।

—एक युवक बोघट (मेरठ)

पत्रोत्तर—प्रात मनोमय कोश के प्राणायाम (योग साधना पुस्तक गुरुकुल आश्रम ब्रह्मावत बिठूर-कानपुर) के अनुसार करे। नियो (चरक) दो गोली प्रत्येक भोजन के बाद लेकर अर्जुनारिष्ट दो ढक्कन समान जल के साथ पिया कर। रात्रि भोजन के आध घण्टा बाद बडी हरड का दस ग्राम चूर्ण जल के साथ लेव।

पत्रोत्तर व पत्रिका हेतु डाक लिफाफे स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती आर्य समाज पिथौरागढ (उ० प्र०) को भेज।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज

(पृष्ठ ३ का शेष)

केवल आर्यसमाज को ही प्राप्त है। किसी भी अन्य सस्था के उपदेशक विद्यालय की अग्रेज ने कभी तलाशी न ली। भारत छोडो आन्दोलन मे आप वायसराय के आदेश से पकडे गये। सेना मे विद्रोह फैलाने का आप पर दोष लगाया गया।

मानव-निर्माण कला के इस शिल्पी ने आर्यसमाज को ऐसे-ऐसे रत्न दिये कि जिनके नाम व काम की चर्चा करके हम आज फडक उठते हैं। पूजनीय श्री स्वामी सर्वानन्द सरीखे तपस्वी, विद्वान्, वीतराग सन्यासी के रूप मे आपने समाज को अपना उत्तराधिकारी दिया है। आज आपके दयानन्द की दो शाखाये हिमाचल में वैदिक धर्म प्रचार के सुदृढ केन्द्र है। श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज को परमेश्वर व उसकी पवित्र वाणी वेद मे अखण्ड निष्ठा थी। गढमुक्तेश्वर के गगा स्नान के मेला पर एक विशाल कृषक सम्मेलन मे आपको हाथी पर बिठा कर शोभा यात्रा निकालने का निर्णय किया गया। आप ही को हाथी पर बिठाने से कृषको का परस्पर का विवाद मिट सकता था। उनका विवाद मिटाने के लिए श्री स्वामी जी ने हाथी पर बैठना मान लिया। कृषको ने अपना किसान मजदूर पार्टी का झण्डा स्वामी जी के हाथ मे देना चाहा। आपने किसी भी पार्टी का झण्डा हाथ मे लेने से इनकार कर दिया। आपने कहा कि हम तो साधु हैं। केवल परमेश्वर के ओ३म् नाम का झण्डा ही हाथ में ले सकते है। शोभा यात्रा निकले या न हाथी पर बैठना मिले या पैदल चलना पडे। इसकी मुझे कुछ भी चिन्ता नही। इतिहास साक्षी है कि पूज्य स्वामी जी ने कृषक नेताओ के प्रबल आग्रह पर भी उनकी पार्टी का ध्वज हाथ मे न लिया। आज भी समाज को ऐसे ही तेजस्वी सन्यासी नेता की आवश्यकता है।

लौहपुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी —

वह बाल ब्रह्मचारी गुरुदेव थे हमारे

जिनको था वेद प्यारा, ईश्वर के थे जो प्यारे।
वह बाल ब्रह्मचारी गुरुदेव थे हमारे॥
निर्बलो के थे सहारा, दलितो के दिल की बस्ती।
सब इन्द्रियो को जीता, ऐसी महान् हस्ती॥
लोही में जन्म पाया, निर्मोही सन्त न्यारे
सबके भले की खातिर, दु.ख कष्ट सब उठाए।
जब सामने वह आए, अग्रेज लडखडाये॥
स्वामी कोपीनधारी, राजों के मद उतारे··
ऐ देश के जवानो, भूलो न यह कहानी।
कैसे तुम्हें सुनाएं, नयनो में बहता पानी॥
जिसने सहे कुल्हाडे, स्वामी वह थे हमारे······
ब्रह्मचारियों मे नामी, ज्ञानी गुणी सुनामी।
वह एकता के हामी, भारत की शान स्वामी॥
ऋषियो के नाम लेवा, वह देव के दुलारे · ·

रचयिता—प्रो॰ राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

आर्य वीर दल का द्विदिवसीय सम्मेलन सम्पन्न

सुलतानपुर गत दिवस सार्वदेशिक आर्य वीर दल पूर्वी उ॰प्र॰ के मन्त्री श्री प्रयागदीन जायसवाल की विज्ञप्ति के अनुसार आर्यवीर दल परिमण्डल गोरखपुर का दो दिवसीय सम्मेलन रानीपुरमऊ, मऊ घोसीमऊ, पोपागाव मऊ, दगालीमऊ, मोठामऊ, तिन्दुलीमऊ बरलाईमऊ, आजमगढ फूलपुर रानी की सराय भतरौलिया लार बाजार (देवरिया), भागलपुर, बेल्थरा रोड, बस्ती, लालगज, कप्तानगज, केराकत, बढहलगज, फैजाबाद वाराणसी, सुलतानपुर के चुने हुए २०० प्रतिनिधियो के बीच उत्साहपूर्ण वातावरण मे अनेक प्रकार के शारीरिक, सास्कृतिक बौद्धिक कार्यक्रमो के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का उद्घाटन रामप्रसाद पूर्व प्रधान आजमगढ द्वारा ध्वजा-रोहण के साथ किया गया। दूसरे सत्र मे आयोजित गोष्ठी मे बोलते हुए रमाशकर आर्य (केराकत) ने महर्षि दयानन्द के पाखण्ड, खण्डनीय वैदिक, वैज्ञानिक सिद्धान्तो की चर्चा करते हुए आर्य वीरो को निष्ठा एव अनुशासन से आर्य वीर दल के कार्यक्रमो को बढाने का आह्वान किया।

—प्रयागदीन जायसवाल, मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य वीर दल पूर्वी उ० प्र०

रजि० न० डी० (डी०) १०८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (३०-१२-१९९०) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस U न० ९३
R 626/57 Licensed to post without Prepayment License No U 93 Post in N,D P.S.O.on 28-12-1990

आर्यसमाज का घोषणा-पत्र

(पृष्ठ २ का शेष)

आक्रान्ताओ ने इस देश को लूटकर खा जाने के हर प्रकार से प्रयत्न किए।

सार्वदेशिक सभा इस देश के किसी भी धर्म के लोगों की साम्प्रदायिक भावना को ठेस पहुचाना नहीं चाहती परन्तु राष्ट्रीय सम्मान को किसी भी कीमत पर खोना पसन्द नहीं करेगी।

मुस्लिम तथा ईसाई सम्प्रदाय के लोग अपने को अल्पसख्यक मानते हैं और सविधान उन्हे कुछ विशेषाधिकार देता है परन्तु अल्पसख्यक शब्द को वह कही भी परिभाषित नही करता और न ही कोई प्रतिशत सख्या निर्धारित की गई है जिससे कम रहने पर एक समुदाय के लोगो को अल्पसख्यक माना जाए।

साधारणत आधे से कम सख्या वाले समूह को अल्पसख्यक घोषित करके हमारे सविधान ने विभाजन का कदम उठाया है अत इस प्रकार के प्रावधानो को जितनी जल्दी हटा दिया जाए इस देश की एकता के लिए उतना ही अच्छा होगा।

सार्वदेशिक सभा शिक्षा प्रणाली मे भी कुछ परिवर्तन करवाने के लिए प्रयत्नशील रहेगी जिससे इस प्रकार की जागृति जनता में पैदा की जा सके कि सभी हिन्दू (आर्य) चाहे वह अभी भी हिन्दू है या मुसलमान और ईसाई धर्मों म जा चुके हैं। सास्कृतिक एव परम्परागत रूप मे एक हैं। सभा इस बात के लिए भी सरकार पर दबाव डालेगी कि भारतीय सविधान के वे सभी अनुच्छेद जो नागरिको को धार्मिक समूह क्षेत्रियता जाति और भाषा के आधार पर बाटते है, उन्हे तुरन्त सविधान मे सशोधन करके हटाया जाए।

समाज के पुनर्निर्माण के लिए सामाजिक व्यवस्था

वर्तमान परिस्थितियो का गहरा अध्ययन करने के फलस्वरूप सार्वदेशिक सभा आर्य समाज को इस प्रकार पुनर्गठित करना चाहती है जिससे सास्कृतिक राष्ट्रवाद से जुडे धार्मिक रूप से स्वतन्त्र तथा शोषण रहित समाज के पुनर्निर्माण के लिए प्रयत्न तेज किये जा सकें, जिससे सबको रोजगार उपलब्ध हो, प्राकृतिक ससाधनो का उच्चतम उपयोग सम्भव हो और समाज के सर्वांगीण विकास के साथ-साथ समस्त विश्व में शान्ति स्थापित करने के लिए प्रयत्न किए जाए।

वेदो मे वर्णित वर्णाश्रम पद्धति पर आधारित सामाजिक व्यवस्था को इसके प्राचीन शुद्ध रूप मे लागू करने से ही इन उद्देश्यो को प्राप्त किया जा सकता है। इसके लिए एक ऐसी कानून पालक प्रक्रिया की भी आवश्यकता है, जो इस प्रकार की सामाजिक व्यवस्था की रक्षा के साथ-२ मनुष्यो में बढती पशु वृत्तियो पर नियन्त्रण और उनके सामूहिक विकास के लिए जिम्मेदार हो।

भारतीय सविधान के निर्माताओ ने अनुच्छेद ३८ मे एक ऐसी ही सामाजिक व्यवस्था की कल्पना की है जिसमें सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय राष्ट्रीय जीवन की सभी सस्थाओ को अनुप्राणित करे। इस प्रकार की सामाजिक व्यवस्था की स्थापना और सरक्षण के द्वारा लोक कल्याण का नैतिक दायित्व सरकार पर डाला गया है।

सार्वदेशिक सभा यह स्पष्ट कहना चाहती है कि इस अनुच्छेद के पीछे वर्णाश्रम पद्धति की ही भावनाए हैं, इसलिए सरकार को अपने नैतिक दायित्वो का पालन करने के लिए अविलम्ब इस पद्धति के शुद्ध रूप का प्रचार एव प्रसार करके इसे राष्ट्रीय प्रणाली बनाने के लिए प्रयत्न करने चाहिए।

सार्वदेशिक सभा वर्णाश्रम पद्धति पर आधारित सामाजिक व्यवस्था को सर्वस्व मानवता के कल्याण के लिए लागू कराने के विशेष प्रयास करेगी।

सार्वदेशिक सभा प्रजातन्त्र मे अपना पूर्ण विश्वास व्यक्त करती है तथा आर्थिक ताकत और तुष्टीकरण जैसी नीतियो का चुनावो में प्रयोग करने का विरोध करती है। देश का चुनाव तन्त्र हर प्रकार के प्रभावो से मुक्त होना चाहिए।

हम आशा करते हैं कि १४वे अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर जारी इस घोषणा पत्र का सरकार सावधानी से अध्ययन करे तथा अपनी नीतियो मे उचित परिवर्तन करके शुद्ध राष्ट्रवादी विचारधारा को प्रोत्साहित करे। राजकार्यों तथा शिक्षा के क्षेत्र मे हिन्दी, जिसे हमने एक सम्पर्क भाषा के रूप मे स्वीकार किया है तथा अन्य भारतीय भाषाओ को उचित स्थान दिया जाए।

सीमान्त क्षेत्रो मे घुसपैठ बन्द करने और देश के अन्दर राजद्रोही ताकतो को उखाडने जैसे तरीको से ही वर्तमान हिंसा को रोका जा सकता है।

वेद-मन्त्र का ...

(पृष्ठ १ का शेष)

यह चारो वेदो के मन्त्रो में बहुत महत्त्वपूर्ण मन्त्र है। कर्म ही जीवन है कर्म ही शक्ति है, कर्म ही रक्षक है और कर्म ही गति है। जीवन की सफलता कर्म या पुरुषार्थ पर निर्भर है। अत - मन्त्र का आदेश है कि सौ वर्ष तक सदा कर्मठ, पुरुषार्थी और उद्योगी रहे। जीवन मे आलस्य को स्थान न दे, हीनता और निराशा की भावना को स्थान न दे। जहां पुरुषार्थ है, ... का निवास है, वहा सुख और सम्पत्ति है और वहीं पर ... मन्त्र में यह भी निर्देश दिया गया है कि कर्म मे आसक्ति नही होनी चाहिए। कर्तव्य बुद्धि से कर्म किया जाए, अनासक्ति के भाव से कर्मों मे प्रवृत्ति हो और नि स्वार्थ भाव प्रधान हो। अनासक्ति भाव के उदय होने से जीवन मे पवित्रता आती है, शान्ति और स्थिरता आती है। यह मन्त्र ही भगवद्गीता के अनासक्ति-योग एव कर्मयोग का आधार है। इसका भाव ही गीता मे—कर्मण्येवाधिकारस्ते० श्लोक मे दिया गया है। जीवन मे पुरुषार्थ को कभी न छोडे। यही जीवन है, यही जागृति है और यही सुख का मूल है।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

आर्य समाज सोरिख का वार्षिकोत्सव

सोरिख (फर्रुखाबाद)—राम जन्म विवाद से उत्पन्न विषम परिस्थितियो मे भी आर्य समाज सोरिख का वार्षिकोत्सव २१ २२, २३ अक्टूबर १९९० को माननीय हीरासिंह जी चाचाध्यक्ष की अनुकम्पा से विधिवत सम्पन्न हुआ। स्वामी वेदानन्द जी, स्वामी चेतनानन्द जी, राही, प० आत्मानन्द जी पुरोहित, प० कुशराम जी, प० राजकुमार जी, रामदेव ब्रह्मचारी, प० मदनलाल जी एव यज्ञमुनि जी वानप्रस्थी ने अपने प्रवचनो, उपदेशो एव भजनो से श्रोतागण को मुग्ध किया।

—सुरेन्द्रनाथ आर्य, मन्त्री

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।